कम्ब रामायणम्

(तमिऴ)

अयोध्या काण्ड - अरण्य काण्ड

(नागरी लिप्यन्तरण, अन्वय एवं हिन्दी अनुवाद)

रचयिता

महर्षि कम्बर्

लिप्यन्तरण एवं अनुवाद

आचार्य ति० शेषाद्रि, एम० ए०

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

भुवन वाणी ट्रस्ट द्वारा प्रयुक्त

(तमिऴ) वर्णमाला का देवनागरी रूपान्तर

तमिऴ के विशिष्ट व्यञ्जन 'ऴ' के स्थान पर, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने, २३-६-६६ में प्रकाशित अपने 'परिवर्द्धित नागरी' पत्रक में, 'ष़' रूप निर्धारित किया था। मैंने उस पर आपत्ति करके 'ऴ' का सुझाव दिया था। तब से संभवत: और भी आपत्तियाँ 'निदेशालय' अवश्य पहुँची होंगी।

विदित हो कि ५-६ फ़रवरी, १९८० की निदेशालय की बैठक में, जिसमें मैं भी सम्मिलित था, यह निर्णय लिया गया कि अब 'ष़' के स्थान पर 'ऴ' ही प्रयुक्त किया जाय। आशा है लिप्यन्तरणकार भविष्य में इसका ध्यान रखेंगे।

तमिऴ-देवनागरी वर्णमाला

அ अ क	ஆ आ का	இ इ कि	ஈ ई की
உ उ कु	ஊ ऊ कू	எ ऎ कॆ	ஏ ए के
ஐ ऐ कै	ஒ ऒ कॊ	ஓ ओ को	ஔ औ कौ
	ஃ अक्		
க क	ங ङ	ச च	ஞ ञ
ட ट	ண ण	த त	ந न
ப प	ம म	ய य	ர र
ல ल	வ व	ழ ऴ,ऴ	ள ळ
ற ऱ,ऱ	ன ऩ,ऩ	ஷ ष	ஸ स
ஹ ह	ஜ ज	க்ஷ क्ष	

☞ तमिऴ वर्णाक्षरों के स्थान-भेद से विभिन्न उच्चारणों को समझने के लिए विद्वान् अनुवादक की 'कम्ब रामायण बालकाण्ड' पर भूमिका पृष्ठ २३-२४ दृष्टव्य। क, च, ट, त, प —ये अक्षर समान लिखे जाकर भी स्थान-भेद से क-ग-ह, च-ज-श, ट-ड, त-द, प-ब बोले जाते हैं।

नन्दकुमार अवस्थी
मुख्यन्यासी सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट

❀ श्री राम जयम् ❀

कम्ब रामायणम्

अयोध्या काण्डम्

ईश्वर वन्दना

❀ वानित्त् ऱिळिन्दु वरम्बिहन्द माबू दत्तिन् वैप्पॆङ्गुम्
ऊनु मुयिरु मुणर्वुम्बो लुळ्ळुम् बुऱत्तु मुळन्ॆन्ब
कूनुञ् जिऱिय कोत्तायुङ् गॊडुमै यिळैप्पक् कोऱुऱन्दु
कानुङ् कडलुम् कडन्दिमैयो रिडुक्कण् डीर्त्त कळल्वेन्दै 1

कूनुम्–कुब्जा मन्थरा और; चिऱिय को तायुम्–छोटी रानी और माता कैकेयी के; कॊडुमै इळैप्प–अनिष्ट करने से; कोल्–राज-दण्ड (शासन के अधिकार) को; तुऱन्तु–छोड़कर; कानुम्–जंगल और; कटलुम्–समुद्र को; कटन्तु–पार करके; इमैयोर्–देवों का; इटुक्कण्–संकट; तीर्त्त–(जिन्होंने) दूर किया (उन); कळल् वेन्तै–पायलधारी राजा (श्रीराम) को; वान् निन्ऱु इऴिन्तु–आकाश से उतरकर; वरम्पु इकन्त–सीमा पार; मा पूतत्तिन्–पाँच महाभूतों के बने; वैप्पु ऍङ्कुम्–प्रपंच भर में; ऊनुम् उयिरुम् उणर्वुम् पोल्–शरीर, प्राण और आत्मा के समान; उळ्ळुम् पुऱत्तुम्–अन्दर और बाहर; उळन्–रहनेवाले; ऍन्प–कहते है। १

कुब्जा मंथरा और श्रीराम की छोटी माँ, रानी कैकेयी दोनो ने निष्ठुरता के साथ अहित किया और उससे श्रीराम को राज्य त्यागकर जंगल, समुद्र आदि पार कर जाना पड़ा। इस प्रकार उन्होंने देवताओं का संकट दूर किया। ऐसे, पायलधारी राजा राम को (ज्ञानी लोग) पंचभूतों से बने इस पंच भर में, शरीर, आत्मा और अहंकार के समान अन्दर और बाहर रहनेवाले (तत्व) कहते हैं। (शरीर, आत्मा और अहंकार के जैसे का अर्थ करना कुछ कठिन है। एक अर्थ है— शरीर और अहंकार के समान भगवान क्रमशः सृष्टि के बाहर भी हैं और अन्दर भी, और आत्मा के समान एक साथ बाहर और अन्दर भी)। १

1. मन्दिरप्पडलम् (मन्त्रणा पटल)

❀ मण्णुरु मुरशिन् मऴैयि नार्प्पुरप्, पण्णुरु पटर्शिनप् परुम यानयान्
कण्णुरु कवरियिन् कट्रै शुट्रुर, अँण्णुरु शूऴ्च्चियि निरुक्कै यॅय्दिनान् 2

पण् उरु–अलंकृत; पटर् चिनम्–वर्धनशील कोप; परुमम्–और हौदे वाले; यानैयान्–गजों के स्वामी (दशरथ); मण् उरु–मिट्टी का लेप-लगे; मुरचु इनम्–भेरियों की राशि के; मऴैयिन्–मेघों के समान; आर्प्पु उरु–नर्दन करते; कण् उरु–दर्शनीय; कवरियिन् कट्रै–सुरागाय की पूँछ के बने चामरों के; चुट्रु उरु–पार्श्व में डुलते; अँण् उरु–मन्त्रणा के लिए बने; चूऴ्च्चियिन् इरुक्कै–मन्त्रणागृह में; अँय्तिनान्–पहुँचे। २

[किसी-किसी संस्करण में दो अतिरिक्त पद पाये जाते हैं। उनका सार यह है— राजा के कर्णमूल में एक बाल श्वेत बन गया मानो उसने राजा को समझाया कि राजा! राज्य को पुत्र को सौंपकर वन में जाकर आपका तपस्या करने का समय आ गया। रावण के पाप ही वहाँ एक पके केश के रूप में आये हों, ऐसा वह बाल पका था। उसको राजा ने मुकुट में देखा।]

चक्रवर्ती मंत्रणा-गृह में आ पहुँचे। वे अलंकृत, क्रोधशील और हौदेदार गज के स्वामी थे। जब वे आये तब वे ढोल मेघों के समान बज उठे जिनके चमड़े पर मिट्टी का बना लेप लीपा गया था। दर्शनीय चामर भी डुलवाये गये। वे कुछ मंत्रणा करने आये। २

❀ पुक्कपिन् निरुबरुम् पौरुविल् शुट्रमुम्
पक्कमुम् पॅयर्हॅनप् परिवि नीक्किनान्
औक्कनिन् रुलहळित् तियोगि नॅय्दिय
शक्करत् तवनॅनत् तमिय नायिनान् 3

पुक्क पिन्–प्रवेश के बाद; निरुपरुम्–नृप; पौरु इल्–श्रेष्ठ; चुट्रमुम्–बन्धु; पक्कमुम्–और प्रिय मित्र; पॅयर्क–यहाँ से हट जायें; अॅन–कहकर; परिविन्–स्नेह के साथ; नीक्कितान्–अलग किया; औक्क निन्रु–समरस और तटस्थ रहकर; उलकु अळित्तु–लोक-पालन करके; योकिन् अॅय्तिय–योग-निद्रा में लीन रहनेवाले; चक्करत्तवन् अॅन–चक्रधारी श्रीविष्णु के समान; तमियन् आयितान्–एकाकी हुए। ३

वहाँ आने के बाद उन्होंने बहुत मीठे ढंग से आज्ञा दी कि राजा लोग, श्रेष्ठ बन्धु-बान्धव सब वहाँ से हट जायें। फिर वह उन चक्रधारी भगवान विष्णु के समान एकाकी हुए जो समरसता के साथ लोकों का पालन करते हुए योगनिद्रा में लीन हैं। (आज्ञाचक्र चलाने, लोकपालन करने और अकेले रहने के धर्मों के कारण चक्रवर्ती विष्णु तुल्य बताये गये हैं।)। ३

❀ शन्दिरट् कुवमैशॆय् तरळ वॆण्गुडै, अन्दरत् तळवुनिन् ऱळिक्कु माणैयान्
इन्दिरट् किमैयवर् गुरुवै येय्न्ददन्, मन्दिरक् किळवरै वरुहॆन् ऱेवितान् 4

चन्तिरट्कु उवमै चॆय्–चन्द्र से उपमित करने योग्य; तरळम्–मुक्ताओं का; वॆण् कुटै–श्वेत छत्र; अन्तरत्तु अळवु नित्रु–आकाश तक उन्नत रहकर; अळिक्कुम्–पालन करनेवाले; आणैयान्–आज्ञापक; इन्तिरट्कु–देवराज के; इमैयवर् कुरुवै एय्न्त–देवगुरु बृहस्पति के समान; मन्तिरम् किळवरै–मन्त्रीमण्डल को; वरुक ऎन्ऱु–आयें, ऐसी; एवितान्–आज्ञा की। ४

राजा का चंद्र-सम मुक्तामंडित श्वेत छत्र आकाश तक व्याप्त था। यानी उनका पालन का काम स्वर्ग में भी व्याप्त था। जैसे देवेन्द्र के बृहस्पति थे वैसे इनके भी गुरु अमात्यादि मंत्रीगण थे। चक्रवर्ती ने उनको आने की आज्ञा दिलायी। ४

❀ पूवरु पॊलङ्गळट् पॊरुविन् मन्नवन्, कावलि नाणैशॆय् कडवु ळामॆनत्
तेवरु मुनिवरु मुणरुन् दॆवर्हळ्, मूवरि नाल्वना मुनिवन् दॆय्दिनान् 5

पू वरु–शोभायुक्त; पॊलम् कळल्–स्वर्णपायलधारी; पॊरुवु इल् मन्नन्–उपमाहीन चक्रवर्ती के; कावलिन्–शासन कार्य में; आणै चॆय्–आज्ञा देनेवाले; कटवुळ् आम् ऎन–ईश्वर हैं ऐसा; तेवरुम् मुनिवरुम् उणरुम्–देव और मुनि जिनके सम्बन्ध में अनुभव करते हैं उन; तेवर्कळ् मूवरिन्–(अज, हरि, हर) तीन की श्रेणी में; नाल्वन् आम्–चौथे के रूप में माननीय; मुनि–महर्षि (वसिष्ठ); ऎय्तिनान्–पधारे। ५

पहले वसिष्ठजी पधारे। उज्ज्वल पायलधारी और अप्रमेय चक्रवर्ती दशरथ के शासन में उनका नियंता का (ईश्वर का-सा) विशिष्ट स्थान था। वे देवताओं के और मुनियों के ज्ञात त्रिदेव— अज, हरि और हर —के साथ चौथे ईश्वर के रूप में सम्मानित थे। ५

❀कुलमुदट् टॊन्मयुङ् गलैयिन् कुप्पयुम्, पलमुदट् केळ्वियुम् पयनु मॆय्दिनार्
नलमुद नलियिनु नडुवु नोक्कुवार्, शलमुद लऱुत्तरुन् दरुमन् दाङ्गिनार् 6

कुलम् मुतल् तॊन्मैयुम्–कुल के क्रम में प्राचीनता; कलैयिन् कुप्पैयुम्–शास्त्रों की ज्ञानराशि; पल मुतल् केळ्वियुम्–अनेक श्रेष्ठ श्रौतज्ञान; पयनुम्–उनका लाभ; ऎय्तिनार्–जो पा चुके थे (वे मन्त्रीगण); नलम् मुतल् नलियिनुम्–अपना हित आमूल नष्ट हो जाय तो भी; नटुवु नोक्कुवार्–तटस्थता बरतनेवाले; चलम् मुतल् अऱुत्तु–क्रोधादि काटकर; अरु तरुमम् ताङ्कितार्–उत्तम धर्मावलम्बी। ६

बाद अमात्य आये। उनके पास कुल की प्राचीनता थी; शास्त्रों की ज्ञानराशि थी। अनेक विषयों पर प्रथम श्रेणी का श्रुत-ज्ञान था। वही नहीं; इन सबका प्रभाव भी उन पर खूब पड़ा था। चाहे उनका हित बिलकुल नष्ट हो जाय तो भी वे तटस्थता से हटनेवाले नहीं थे। क्रोध आदि को उन्होंने दूर किया था और उत्तम धर्मावलंबी थे। ६

उऱ्ऱतु कॉण्डु मेल्वन् दुरुपॉरु ळुणरुङ् गोळार्
मऱ्ऱदु विनैयिन् वन्द दायिनु माऱ्ऱ लाऱ्ऱुम्
पॅऱ्ऱियर् पिऱप्पिन् मेन्मैप् पॅरियव ररिय नूलुम्
कऱ्ऱवर् मान नोक्किऩ् कवरिमा वनैय नीरार् 7

उऱ्ऱतु कॉण्टु–जो हो गया उसको शोधकर; मेल् वनतु उरु पॉरुळ्–आगे जो होगी उस बात को; उणरुम्–बुद्धि द्वारा समझनेवाले; कोळार्–चातुर्य रखनेवाले; अतु–वह बात; विनैयिन् वन्ततु आयिनुम्–प्रारब्ध कर्म से हो गई तो भी; माऱ्ऱल् आऱ्ऱुम्–बदल सकने की; पॅऱ्ऱियर्–शक्ति रखनेवाले; पिऱप्पिन् मेन्मै पॅरियवर्–कुल-जन्म के अनुरूप गौरवशाली; अरिय नूलुम् कऱ्ऱवर्–सूक्ष्म ग्रन्थों के अध्येता; मानम् नोक्किन्–अपने मान के विचार में; कवरि मा अनैय नीरार्–चामर हिरन के-से स्वभाव वाले। ७

वे संभूत काम देखकर भविष्य को समझने का चातुर्य रखनेवाले और प्रारब्ध-कर्म के कारण कुछ हो भी जाय तो उसका परिहार जाननेवाले, अपने कुल की मर्यादा और गौरव उनमें यथेष्ट था। साथ-साथ सूक्ष्म ग्रंथों का अध्ययन कर चुके थे। जहाँ तक गौरव का सम्बन्ध था वे चामर-मृग (सुरा गाय ?) के स्वभाव के थे, जिसके सम्बन्ध मे कहा जाता है कि एक वाल भी खोना पड़ा तो वह अपनी जान दे देगा। (यानी अपमान हो जाने के पहले अपना प्राण दे देनेवाले थे।)। ७

कालमु मिडनु मेऱ्ऱ करुवियुन् दॅरियक् कऱ्ऱ
नूलुऱ नोक्कित् तॅय्व नुन्नित्तरङ् गुऱित्त मेलोर्
शीलमुम् पुहऴ्क्कु वेण्डुम् जॅय्हयुन् दॅरिन्दु कॉण्डु
पाल्वरु मुऱुदि यावुन् दलैवऱ्क्कुप् पयक्कु नीरार् 8

एऱ्ऱ कालमुम् इटनुम् करुवियुम्–उचित काल, स्थान और साधन को; कऱ्ऱ नूल् उऱ–अपने पठित ग्रन्थों के अनुकूल; तॅरिय नोक्कि–खूब समझकर; तॅय्वम् नुनित्तु–ईश्वर का ध्यान करके; अऱम् कुऱित्त मेलोर्–धर्म में आचरण वाले श्रेष्ठों के बताये; चीलमुम्–शील और; पुकऴ्क्कु वेण्टुम् चॅय्कैयुम्–यश देनेवाले कार्यों को; तॅरिन्तु कॉण्टु–जानकर; पाल् वरुम् उऱुति यावुम्–इनके हक में आनेवाले सारे शुभ फलों को; तलैवऱ्कु–अपने स्वामी, राजा को; पयक्कुम्–प्राप्त करानेवाले; नीरार्–स्वभाव वाले। ८

वे उचित काल, स्थान और साधनों का विचार कर, शास्त्र के प्रमाणों को भी लेकर, धर्म के आचार्यो के भी शील और प्रशंसा योग्य सम्बन्धी उपदेशों का लाभ उठाते हुए ऐसे काम करते जिससे सुफल अपने नायक को मिल जायँ। ८

तम्मुयिर्क् कुऱुदि यॅण्णार् तलैमहन् वॅहुण्ड पोदुम्
वॅम्मयैत् ताङ्गि नीदि विडादुनिन् ऱुरैक्कुम् वीरर्

शॆम्मयिऱ् ऱिऱम्बल् शॆल्लात् तेऱ्ऱत्तार् तॆरियुङ् गालम्
मुम्मयु मुणर वल्लो रॊरुमये मॊऴियुम् नीरार् 9

तलै मकन्-राजा के; वॆकुण्ट पोतुम्-कुपित होने पर भी; तम् उयिर्क्कु-अपने प्राणों का; उऱुति ऍण्णार्-हित नहीं सोचते; वॆम्मैयै ताङ्कि-(कोप की) गर्मी को सहकर; विटातु निन्ऱु-कर्तव्य न छोड़ते हुए अचल रहकर; नीति उरैक्कुम्-नीति समझानेवाले; वीरर्-वीर हैं; चॆम्मैयिल्-नेकनीयती से; तिऱम्पल् चॆल्ला-हटकर न जानेवाले; तोऱ्ऱत्तार्-समझदार है; तॆरियुम्-शास्त्रज्ञान से ज्ञातव्य; कालम् मुम्मैयुम्-भूत, वर्तमान और भविष्य (के व्यापारों) को; उणरवल्लोर्-समझ सकनेवाले; ऒरुमैये मॊऴियुम्-स्थिर रूप से एक ही बात कहने का; नीरार्-स्वभाव वाले। ६

जब राजा या नायक कोप करते तव ये अपने प्राणों की परवाह नहीं करते। पर कोप की आँच (उग्रता का) सहन करके, अपने अभिप्राय में अचल रहकर नीति वताने से पीछे न हटनेवाले वीर थे। उनकी बुद्धि इतनी सुलझी हुई थी कि नेक रास्ते से वे कभी नहीं हटते। ग्रंथों, अनुमान आदि से ज्ञातव्य भूत, वर्तमान और भविष्य के कार्यो को समझने की शक्ति के साथ वे स्थिर रूप से असंदिग्ध एक ही बात कहने का स्वभाव भी रखते थे। ९

❀ नल्लवुन् दीयवु नाडि नायहऱ्, कॊल्लैयिन् मरुत्तुव रियल्बि नॆण्णुवार्
ऒल्लैवन् दुरुवन वुऱ्ऱ पॆऱ्ऱियिन्, तॊल्लैनल् विनैयॆन्न वुदवुञ् जूऴ्च्चियार् 10

नायकर्कु-अपने नायक का; नल्लवुम् तीयवुम् नाटि-हित, अहित सोचकर; ऍल्लैयिल्-अन्त में; मरुत्तुवर् इयल्पिन्-वैद्यों के-से गुण के साथ; ऍण्णुवार्-(नायक का हित ही) सोचते; ऒल्लै वन्तु उरुवन-अकस्मात आनेवाली हानियाँ; उऱ्ऱ पॆऱ्ऱियिन्-जब आ जाती हैं; तॊल्लै नल् विनै ॲन-पूर्वकृत पुण्य के समान; उतवुम् चूऴ्च्चियार्-सहायक उपाय बतानेवाले। १०

नायक के लिए क्या हित है क्या अहित है —यह खूब सोचकर अच्छे वैद्य के समान जो रोगी के हित की दवा देते हैं, उनका हित ही करनेवाले थे। अकस्मात आई हुई हानि के सम्बन्ध में भी वे पूर्वकृत पुण्य के समान आकर कोई न कोई उपाय करके उसको दूर करने का सामर्थ्य रखते थे। १०

❀ अऱुपदि नायिर रॆन्निनु माण्डहैक्
कुऱुदियि नॊन्ऱिवरक् कुणर्वॆन्न् रुन्नलाम्
पॆऱलरुञ् जूऴ्च्चियर् तिरुविन् पॆट्पिनर्
मऱिदिरैक् कडलॆन्न वन्दु शुऱ्ऱिनार् 11

तिरुविन् पॆट्पिनर्-श्री समन्वित हैं; अऱुपतिनायिरर् ऍन्निनुम्-(संख्या में) साठ हजार थे तो भी; आण् तकैक्कु-पुरुष श्रेष्ठ (दशरथजी) को; उऱुतियिन्-भला

पहुँचाने में; इवर्क्कु उणर्वु ऑन्ऱु–इनका चित्त एक है; ऍन्ऱु–यह; उन्नतन् आम्–मान सकते हैं ऐसा; पॅऱल् अरुम्–(पाने में) दुर्लभ; चूऴ्च्चियर्–मतिमान हैं; मऱि तिरै कटल् अँत–मुड़ आनेवाली लहरों वाले सागर के समान; वन्तु चुऱ्ऱितर्–(वे) आकर घेरे रहे। ११

वे साठ हजार थे। तो भी अपने नायक के हितचिंतन में मानो वे सब मिलकर एक ही मन रखते थे, ऐसे सलाहकारिता में अपूर्व दक्षता दिखाते थे। वे मुड़-मुड़कर लहरानेवाली तरंगों से युक्त समुद्र के समान आकर उनको घेर गये। ११

❀ मुऱैमयि नॅय्दिनर् मुन्दि यन्दमिल्, अऱिवनै वणङ्गितत्तम् मरशैक् कैदॊऴु
दिऱैयिडै वरन्मुऱै येऱि येऱ्ऱशॊल्, तुऱैयऱि पॅरुमया नरुळुञ् जूडिनार् 12

मुऱैमैयिल्–यथाक्रम; ऍय्तिनर्–आकर; अन्तम् इल् अऱिवनै–अनन्त बुद्धिमान वसिष्ठ को; मुन्ति वणङ्कि–प्रथमतः नमस्कार करके; तम् अरचै कै तॊऴुतु–अपने राजा को अंजलि समर्पित करके; इऱै इटै–आसनों पर; वरल् मुऱै–अपने पदों के अनुसार; एऱि–(चढ़कर) आसीन होकर; एऱ्ऱ चॊल् तुऱै–उचित शिष्ट वचन की रीतियों के; अऱि पॅरुमैयान्–ज्ञाता, गौरवान्वित दशरथ की; अरुळुम्–कृपादृष्टि भी; चूटिनार्–(उन्होंने) प्राप्त की। १२

वे यथाक्रम आये। पास आकर उन्होंने अथाह बुद्धिमान वसिष्ठजी को नमस्कार किया और फिर राजा को अंजलि समर्पित की। बाद में वे अपने-अपने उचित आसन पर आसीन हुये। राजा ने, जो योग्य शिष्टाचार के वचन कहने में समर्थ थे उचित रूप से स्वागत किया। उन्हें राजा की कृपादृष्टि मिल गई। १२

❀ अन्नव ररुळमैन् दिरुन्द वाण्डयिल्, मन्ननु मवरमुह मरवि नोक्किनान्
उन्निय दरुम्बॅऱ् लुरुदि यॊन्ऱुळ, दॆन्नुणर् वनैयनी रिनिदु केट्कॆन्ना 13

अन्नवर्–(जब) वे; अरुळ् अमैन्तु–कृपाप्राप्त हो; इरुन्त आण्टैयिन्–आसीन रहे तब; मन्ननुम्–चक्रवर्ती भी; अवर् मुकम्–उनके मुखों को; मरपिन्–क्रम से; नोक्किनान्–देखकर; उन्नियतु–मेरा सोचा; पॅऱल् अरुम्–दुर्लभ; उऱुति ऑन्ऱु–हितकार्य एक; उळतु–है; ऍन् उणर्वु अनैय नीर्–मेरी ही प्रज्ञा रहनेवाले आप लोग; इनितु केट्क–सन्तोष से सुनिये; ऍन्ना–कहकर आगे। १३

जब वे राजा की कृपादृष्टि प्राप्त करके अपने-अपने आसन पर बैठे थे तब राजा ने उन सबके मुखों को उचित क्रम से देखा। "मैंने एक पुरुषार्थ का काम सोचा है। आप मेरी ही मतिवत है। आप संतोष के साथ सुनिये।" —यह कहकर आगे बोले। १३

❀ वॅय्यवन् कुलमुदल् वेन्दर् मेलवर्, शॅय्हयि नॊरुमुऱै तिऱम्ब लिन्ऱिये
वैयमॆन् पुयत्तिडै नुङ्गण् माट्चियाल्, ऐयिरण् डायिरत् ताऱु ताङ्गिनेन् 14

नुङ्कळ् माट्चियाल्–आप लोगों (की सलाह) की महिमा से; वॆय्यवन् कुलम्–सूर्यकुल के; मुतल् वेन्तर्–अग्रगण्य राजा; मेलवर्–मेरे पूर्वजों के; चॆय्कैयिन्–कार्यों (की पद्धति) से; ऒरु मुऱै–किसी विधि; तिऱम्पल् इन्ऱि–हटे बिना; वैयम्–भूमि का; ऐ इरण्टु आयिरत्तु आऱु–(५×२×१०००×६) साठ सहस्र वर्ष; ॲन् पुयत्तिटै–अपनी भुजाओं पर; ताङ्कित्तेन्–धारण किया। १४

आपकी संगति के महत्व के कारण मैंने साठ सहस्र वर्ष इस भूमि को अपनी भुजाओं में धारण किया। उसमें सूर्यकुल के मेरे पूर्वजों ने जो नीति-रीति अपनायी थी उससे थोड़ा भी विचलित न हुआ। १४

❀कन्नियर्क् कमैवरुङ् गऱ्पिन् मानिलम्, तन्नयित् तकैयदात् तरुमङ् गैदर
मन्नुयिर्क् कुरुवदे शॆय्तु वैहिन्नेन्, ॲन्नुयिर्क् कुरुवदुञ् जॆय्य वॆण्णिन्नेन् 15

कन्नियर्क्कु–कन्याओं के लिए; अमैवरुम्–उचित; कऱ्पिन्–चरित्र के समान; मा निलम् तन्नै–इस विशाल भूमि को; इ तकैयता–यह स्थिति देते हुए; तरुमम् कै तर–धर्म ने भी हाथ बँटाया, इसलिए; मन् उयिर्क्कु–स्थायी जीवों को; उऱुवतु–हितकारी काम; चॆय्तु वैकित्तेन्–करता रहा; ॲन् उयिर्क्कु–अपनी आत्मा के लिए; उऱुवतुम्–हितकारी काम; चॆय्य ॲण्णित्तेन्–करना चाहा। १५

इस भूमि को इस रीति से पाला कि यह भूमि कन्योचित पातिव्रत्य व्रतशीला-सी रही। यानी उसके दो स्वामी नहीं रहे। धर्म ने भी साथ दिया और अब तक मैं प्रजाजन का हित करता रहा। अब मैं अपनी आत्मा का हितकारी कार्य करना चाहता हूँ। १५

❀ विरुम्बिय मूप्पॆनुम् वीडु कण्डयान्
इरुम्बिय लन्नन्दनु मिन्नत्त यानैयुम्
पॆरुम्बॆयर्क् किरिहळुम् पॆयरत् ताङ्गिय
अरुम्बॊऱै यिन्निच्चिऱि दाऱ्ऱ वाऱ्ऱलेन् 16

विरुम्पिय–(मैंने जो) चाहा; मूप्पु ॲनुम्–वह वार्द्धक्य रूपी; वीटु–स्वतन्त्रता; कण्ट यान्–देखकर मैं; इरु पियल् अनन्ततनुम्–विशाल गर्दन वाला अनन्तनाग; इनत्त यानैयुम्–एक ही जाती के (दिग्-) गज; पॆरु पॆयर् किरिकळुम्–बड़े ही प्रसिद्ध (अष्ट) कुलशैल; पॆयर–इनको छुट्टी देकर; ताङ्किय अरुपॊऱै–जो मैंने धारण किया उस भार को; इन्नि चिऱितु–अब जरा भी; आऱ्ऱ–भरण करने में; आऱ्ऱलेन्–समर्थ नहीं हूँ। १६

मैं इस वार्द्धक्य की प्रतीक्षा में था ताकि मुझे स्वतंत्रता मिले। वह अब आ गया। इसलिए विशाल गर्दन वाला अनंत नाग, अष्ट दिग्गज, सप्तकुल शैल —इनको अपने काम से छुट्टी देकर मैं भू-भार वहन करता रहा। अब सोचता हूँ कि आगे किंचित भी वह भार सह नही सकूँगा। १६

❀ नङ्गुलक् कुरवर्ह णवैयि ऩीङ्गिऩार्
तङ्गुलप् पुदल्वरे तरणि ताङ्गप्पोय्
वॆङ्गुलप् पुलऩ्कॆड वीडु नण्णिऩार्
ऎङ्गुलप् पुरुवरॆऩ् ऱॆण्णि नोक्कुहेऩ् 17

नम् कुलम् कुरवर्कळ्–मेरे कुल के पूर्वज; नवैयिऩ् नीङ्किऩार्–(जो) दुर्गुण-त्यागी (थे); तरणि–भूमि को; तम् कुलम् पुतल्वरे–अपने श्रेष्ठ पुत्रों के; ताङ्क–पालन करने (देकर); पोय्–जाकर; वॆम् कुलम् पुलऩ् कॆट–अत्याचारी इन्द्रियों के कुल को दमन करके; वीटु नण्णिऩार्–मोक्ष को प्राप्त हुए; ऎङ्कु उलप्पु उऱुवर्–कहाँ जा के (संख्या में) अन्त होंगे; ऎऩ्ऱु–यह सोचकर; नोक्कुकेऩ्–(मैं भी वह पुरुषार्थ) खोजता हूँ। १७

मेरे कुल के पूर्वजों ने काम, क्रोध और मोह के दोषों से निवृत्त होकर अपने-अपने पुत्रों के पास राज्य-भार सौंपकर वनवास किया और इंद्रियों का दमन करके तपस्या की। फिर वे मुक्ति को प्राप्त हुए। ऐसे राजाओं की गणना का अंत कहाँ? असंख्यक उनका अनुकरण करके मैं भी मुक्ति के पुरुषार्थ-साधन में लग जाना चाहता हूँ। १७

❀ वॆळ्ळनी रुलहिनिल् विण्णि ऩाहरिल्
तळ्ळरुम् बहैयॆलाऩ् दविर्त्तु निऩ्ऱयाऩ्
कळ्वरिऱ् करन्दुऱै काम मादियाम्
उळ्ळुऱु पहैवरुक् कॊदुङ्गि वाळ्वॆऩो 18

वॆळ्ळम् नीर् उलकित्तिल्–अपार (सागर) जल से घिरी हुई भूमि में; विण्णिल्–आकाश में; नाकर् इल्–नागलोक में; तळ्ळ अरुम् पकै ऎल्लाम्–दूर (जिनको) करना कठिन है उन शत्रुओं को; तविर्त्तु निऩ्ऱ–हराकर (जो) रहा; याऩ्–(वह) मैं; कळ्वरिल्–चोरों के समान; करन्तु उऱै–छिपकर रहनेवाले; कामम् आति आम्–काम आदि; उळ् उऱु पकैवरुक्कु–अन्तःशत्रुओं से; ऒतुङ्कि वाळ्वॆऩो–(हार मानकर) दूर रहूँगा क्या। १८

इस भूलोक में, जिसे विपुल जलराशि, सागर घेरे रहता है, आकाश के सुरलोक मे और नाग-(पाताल-)लोक मे जितने भी शत्रु थे उन सब पर मैने विजय पा ली है। ऐसा मैं क्या उन कामादि अंतश्शत्रुओं से हार मानकर बैठा रहूँगा जो चोरों के समान मेरे ही अंदर छिपे रहते है। १८

❀ पञ्जिमॆऩ् ऱळिरडिप् पावै कोल्हॊळ
वॆञ्जिऩत् तवुणर्देर् पत्तुम् वॆऩ्ऱुळेऱ्
कॆञ्जलिऩ् मऩमॆऩु मिळ्दै येऱिय
अञ्जुतेर् वॆल्लुमा दरुमै यावदो 19

पञ्चि–महावर लगे; मॅल् तळिर् अटि—पल्लव-मृदु-चरण; पावै—प्रतिमा-सी कैकेयी के; कोल् कोळ–(सारथी का) वेत हाथ में लेते (सारथ्य में); वॅम् चिन्नत्तु–भयंकर क्रोधी; अवुणर् तेर् पत्तुम्–असुरों के दशों रथों को; वॅन्रुळेर्कु–जिसने हराया उस मुझे; ऐञ्चल् इल् मत्तम् ॲतुम्–अथक मनरूपी; इळुतै एरिय–भूत जिन पर चढ़ा है उन; अञ्चु तेर्–(इन्द्रिय रूपी) पाँच रथों को; वॅल्लुम् ईतु–जीतने का यह काम; अरुमै आवतो–कठिन हो जायगा। १९

(शम्बरासुर दस रूप लेकर दस रथों पर सवार हो आया।) उसके साथ मैंने लड़ाई की। मेरी पत्नी लाक्षारसरंजित, पल्लव समान मृदु चरण वाली कैकेयी ने हाथ से चाबुक लेकर सारथ्य किया। मैंने दसों रथों पर विजय पायी और दानवों का नाश किया। उधर तो दस रथ थे, इधर इंद्रियरूप में पाँच ही रथ हैं, जिन पर मन भूत के समान सवार है। क्या दस के विजयी के लिए पाँच पर विजय पाना कठिन है? । १९

※ ऑट्टिय पहैञर्वन् दुरुत्त पोरिडैप्
पट्टव रल्लरेर् परम ञातम्बोय्त्
तॅट्टव रल्लरेर् चॅल्व मीण्डॅन
विट्टव रल्लरेल् यावर् वीडुळार् 20

वन्तु ऑट्टिय–आकर टकरानेवाले; पकैञर्–शत्रु; उरुत्तपोर् इटै–(जो) करते हैं, उस लड़ाई में; पट्टवर्–मर चुके; अल्लरेल्–नहीं तो; परम ञातम्–परम-ज्ञान के; पोय्–अधिक होने पर; तॅट्टवर्–समझदार हुए हैं; अल्लरेल्–नहीं तो; चॅल्वम् ईण्टु अॅत्त–अर्थ आदि यहीं तक, यह जानकर; विट्टवर्–छोड़ चुके हैं; अल्लरेल्–वे नहीं तो; वीटु उळार् यावर्–मुक्ति के अधिकारी कौन है। २०

मुक्ति के अधिकारी तीन तरह के लोग ही होते हैं। शत्रुओं के साथ युद्ध में मरनेवाले; या परम ज्ञान प्राप्त करके आत्म-अनात्म-विवेक जो पा चुके वे; ये दोनो नहीं हों तो "यहाँ का धन आदि इसी भूमि में रहते समय तक हमारा साथ दे सकता है" यह ज्ञानकर जो मोह छोड़ चुके हैं वे —ये तीनों ही वे अधिकारी हैं। इन तीनो में नही है तो कौन मुक्ति पाने के योग्य हो सकता है? । २०

इऱप्पॅन्तु मॅय्म्मयै यिम्मै यावर्क्कुम्
मऱप्पॅन्तु मदनिन्मेऱ् केडु मऱ्ऱुण्डो
तुऱप्पॅनुन् दॅप्पमे तुणैयॅय् याविडिन्
पिऱप्पॅनुम् बॅरुङ्गडल् पिळैक्क लावदो 21

यावर्क्कुम्–सब किसी के लिए; इऱप्पु ॲतुम् मॅय्म्मैयै–मृत्यु है इस तथ्य को; इम्मै–इस जन्म में; मऱप्पु ॲतुम्–भूल जाने का; अततिन् मेल्–जो है उससे बढ़कर; मऱ्ऱु–अन्य; केटु उण्टो–हानि है क्या; तुऱप्पु ॲनुम् तॅप्पमे–संन्यास नाम की डोंगी ही; तुणै–चॅय्या विटिन्–सहायता न करे तो; पिऱप्पु ॲनुम् पॅरु कटल्–जन्म नामक बड़ा सागर; पिळैक्कल् आवतो–बचाना हो सकता है क्या। २१

किसी के लिए इस बात को भूल जाने से कि मरण ध्रुव है, अधिक हानिकारक कोई चीज़ नहीं है। वैराग्य की डोंगी का सहारा न लिया जाय तो जन्म नामक विपुल सागर का तरण संभव है क्या ? । २१

अरुऩ्जिऱप्	पमैवरुन्	दुऱवु	मव्वऴित्
तॆरिऩ्जुऱ	वॆनमिहुन्	दॆळिवु	माय्वरुम्
पॆरुऩ्जिऱै	युळवॆनिऱ्	पिऱवि	यॆऩ्ऩुमिव्
विरुऩ्जिऱै	कडत्तलि	ऩिऩिय	दियावदो 22

अरुम् चिऱप्पु–श्रेष्ठ (मोक्ष का) गौरव; अमैवरुम् तुऱवुम्–दिलानेवाला वैराग्य; अ वऴि तॆरिऩ्चु–वह मार्ग जानकर; उऱवु अंत–उसका सहायक रहनेवाला; तॆळिवुम्–तत्वज्ञान-विवेक; आय् वरुम्–ऐसे रहनेवाले; पॆरु चिऱै उळ ऎऩिल्–बड़े पक्ष हैं तो; पिऱवि ऎऩ्ऩुम्–जन्म नाम के; इ इरु चिऱै–इस बड़ी कारा को; कटत्तलिऩ् इऩियतु–पार करके जाने से सुखद; यावतो–कौन सी वस्तु है। २२

मानव जीवन की गरिमा मुक्ति पाना है। उसका हेतु वैराग्य है। उसका सहायक है आत्म-अनात्म-विवेक। वैराग्य और विवेक दो पंख हैं। अगर ये दोनो पंख हों तो जन्म नाम की कारा से छूटना आसान हो जायगा। इस कारा से छूटने से बढ़कर सुखद क्या हो सकता है ? । २२

इऩियतु पोलुमिव् वरशै यॆण्णुमो, तुऩिवरु पुलऩॆनत् तॊडर्न्दु तोऱ्कला
ननिवरु पॆरुम्बहै नवैयि ऩीङ्गिय, तऩियर शाट्चियिऱ् ऱाऴ्‌ मुळ्ळमे 23

तुऩिवरु–दुखदायक; पुलऩ् ऎऩ–इन्द्रियों के रूप में; तॊटर्न्तु–जीवन में अनुवर्ती बनकर; तोऱ्कला–कभी न हारकर; नऩिवरु–अधिक आनेवाली; पॆरुम् पकै–बड़ी शत्रुता से उत्पन्न; नवैयिऩ् नीङ्किय–दोषों से दूर; तऩि अरचाट्चियिऩ्–विशिष्ट (मोक्ष-)साम्राज्य में; ताऴुम्–मग्न; उळ्ळम्–मेरा मन; इऩियतु पोलुम्–सुखद दिखनेवाले; इव्वरचै–इस राज्य को; ऎण्णुमो–(कोई वस्तु) मानेगा क्या। २३

मेरा मन अब मोक्ष-साम्राज्य में लग गया है। वह दुखदायी इंद्रियों रूपी अक्षय और अजेय रूप से सतानेवाले बड़े शत्रुओं के कारण हो जानेवाले दोषों से छूटने पर प्राप्त होती है। उसमें लगा मेरा मन अब क्या दिखावे के सुख वाले इस राज्य को कोई (मूल्यवान) पदार्थ मानेगा ? नहीं। २३

❀ उम्मैया ऩुडैमयि ऩुलहम् यावैयुम्, चॆम्मैयि ऩोम्पिनल् लऱमुञ् जॆय्दऩॆऩ्
इम्मैयि ऩुदवियॆऩ् निशैन डायनीर्, अम्मैयु मुदवुदऱ् कमैय वॆण्डुमाल् 24

यान्–मैं; उम्मै उटैमैयिऩ्–आप लोगों को (मन्त्रियों के रूप में) प्राप्त किए रहने के कारण; उलकम् यावैयुम्–सारे लोकों को; चॆम्मैयिऩ्–ठीक तरह से; ओम्पि–रक्षित करके; नल् अऱमुम् चॆय्तऩॆऩ्–अच्छे धर्म-कार्य भी कर चुका; इम्मैयिऩ् उतवि–इह जीवन में मेरी सहायता करके; ऎऩ् इचै नटाय–मेरी कीर्ति को फैलानेवाले;

नीर्—आप लोग; अम्मैयुम् उतवुतऱ्कु—परलोक जीवन में भी सहायता देने को; अमैव वेण्टुम्—सम्मन हों। २४

आपको मैंने अपने मंत्रियों के रूप में पाया। इसीलिए मैं भूमि का ठीक तरह से पालन करके अच्छे धार्मिक कार्य पूरा कर सका। इह-जीवन में सहायक रहकर मेरी कीर्ति को बढ़ाने के आप ही हेतु रहे। ऐसे आप मेरे पारलौकिक जीवन में भी भला दिलाने में सहायक बनने की इच्छा करें। २४

इऴैत्ततॊल् विऩैययुङ् गडक्क वॆण्णुदल्
तऴैत्तपे ररुळुडैत् तवत्ति ऩाहुमेल्
कुऴैत्तदो रमुदिऩैक् कोड ऩीङ्गिवे
ऱऴैत्तती विडत्तिऩै यरुन्द लाहुमो 25

इऴैत्त—(पूर्व-)कृत; तॊल् विऩैयैयुम्—प्राचीन कर्मों के फल को; कटक्क—लाँघने के लिए; अॆण्णुतल्—विचार करना; तऴैत्त—अधिक; अरुळ् उटै तवत्तिऩ्—भूत-दया पर आधारित तपस्या से; आकुमेल्—सफल हो सकता है तो; कुऴैत्तु ओर् अमुतिऩै—औषधि डालकर, मथकर निकाले गये अमृत को; कोटल् नीक्कि—लेना छोड़कर; वेऱु अऴैत्त—दूसरी रीति से प्राप्त; ती विटत्तिऩै—भयंकर विष को; अरुन्तल् आकुमो—खाना ठीक हो सकता है क्या। २५

प्रारब्ध (संचित) कर्म भी भूत-दया से प्रभावित तपस्या के फलस्वरूप काट लिया जा सकता है। तब औषधि-सहित सागर-मथन से प्राप्त अमृत को छोड़कर विष पीने को उद्यत होना कहाँ तक उचित है? (तपस्या अमरता देगी। जीवन भोग कर्म को बढ़ायेगा, अतः वह विषतुल्य है।)। २५

कच्चयङ् गडहरिक् कऴुत्तिऩ् कण्णुऱप्
पिच्चमुङ् गविहयुम् वॆय्यु मिऩ्ऩिऴल्
निच्चय मऩ्ऱॆऩि नॆडिदु नाळुण्ड
अॆच्चिलै नुहरुव दिऩ्ब माहुमो 26

कच्चै—रस्सी बंधे; अम् कटम् करि—सुन्दर मत्तगज के; कऴुत्तिऩ् कण् उऱ—गर्दन पर बैठे; पिच्चमुम्—मोरछल; कविकैयुम्—श्वेतछत्र; पॆय्युम्—जो देते हैं उस; इऩ् निऴल्—सुखद छाया में रहनेवाला जीवन; निच्चयम् अऩ्ऱु ॲनिऩ्—शाश्वत नहीं है तो; नॆटितु नाळ् उण्ट ॲच्चिलै—दीर्घकाल से खाये हुए जूठन को; नुकरुवतु—भोगता रहना; इऩ्पम् आकुमो—सुख हो सकता है क्या। २६

गले में बँधी रस्सी के साथ रहनेवाले मत्त गज पर सवारी और मोरछल, श्वेतछत्र आदि की छाया, अर्थात राजा का जीवन शाश्वत नहीं है। यह जानकर भी जूठन के भोग में लगा रहना आनन्ददायक हो सकता है क्या? यह भोग भी काफ़ी दिनों तक भोगा जा चुका है! । २६

मैन्दरै यिन्मयित् वरम्बिल् कालमुम्
नौन्दनॅन् निरामनॅन् नोवै नीक्कुवान्
वन्दन नवनिनि वरुन्द यान्पिळैत्
तुय्न्दनॅन् पोवदो रुरुदि यॅण्णिनेन् 27

मैन्तर् इन्मैयित्–सन्तान के न होने से; वरम्पु इल् कालमुम्–असीम काल तक; नौन्ततॅन्–दुखी रहा; ॲन् नोयै नीक्कुवान्–मेरा (दुख-) रोग दूर करने; इरामन् वन्तनन्–श्रीराम आया है; इति–अब; अवन् वरुन्त–वह कष्ट उठावे; यान्–मैं; पिळैत्तु उय्न्ततॅन् पोवतु–वचकर तर जाने का; ओर् उरुति–एक हित; ॲण्णितेन्–सोचा। २७

मैं सन्तान के न होने से कितने ही वर्षों से (असीम काल तक) दुखी रहा। मेरे दुख-रोग को दूर करने के लिए राम आकर पैदा हो गया। अब वह भार अपने ऊपर ले लेगा और मैं इससे मुक्त हो जाऊँ —यह हित-साधन करने की बात मैंने सोची है। २७

इऱन्दिलन् शॅरुक्कळत् तिरामन् ऱादैदान्
अऱन्दलै निरम्बमूप् पडैन्द पिन्नरुम्
तुऱन्दिल नॅन्बदोर् शॊल्लुण् डान्पिन्
पिऱन्दिल नॅन्वदिऱ् पिऱिट्टुण् डाहुमो 28

इरामन् तातै–राम का पिता; चॅरुक्कळत्तु इऱन्तिलन्–समरभूमि में न मरा; तान् मूप्पु अटैन्त पिन्नरुम्–वार्द्धक्य प्राप्त करने के बाद भी; अऱम् तलै निरम्प–धर्म के पूर्ण-साधन में; तुऱन्तिलन्–विरक्त नहीं हुआ; ॲन्पतु ओर् चॊल्–ऐसी एक (निन्दा की) बात; उण्टान पिन्–हो जाने के बाद; पिऱन्तिलन् ॲन्पतिन्–जन्म नहीं लिया, इस (अपयश) के सिवा; पिऱितु उण्टाकुमो–और कुछ हो सकता है क्या। २८

अब भी मैं वानप्रस्थ न बनूँ तो अपयश हो जायगा। लोग कहने लगेंगे कि बूढ़ा दशरथ न किसी समर में मरा; न वार्द्धक्य प्राप्त करने के बाद पूर्ण धर्म साधनार्थ उसने संन्यास लिया। ऐसी अपकीर्ति हो गई तो मानव-जन्म व्यर्थ गया। इसके अतिरिक्त क्या मिल सकता है ? । २८

❀ पॅरुमह नॅन्वयिऱ् पिऱक्कच् चीदयाम्
तिरुमहण् मणविनै तॅरियक् कण्ड यान्
अरुमह निऱैकुणत् तवत्ति मादॅनुम्
ऑरुमहण् मणमुङ्गण् डुवप्प वॅण्णिनेन् 29

पॅरुमकन्–पुरुषोत्तम (राम); ॲन् वयिऱ् पिऱक्क–मेरा पुत्र पैदा हुआ और; चीतै आम् तिरुमकळ्–सीता नाम की लक्ष्मीदेवी के साथ (उसका); मणविनै–विवाह हुआ, उसको; तॅरिय कण्ट यान्–प्रत्यक्ष देखा मैंने; ऐसा मैं; अरु मकन्–श्रेष्ठ पुत्र का; निऱै कुणत्तु–पूर्ण-गुण वाली; अवत्ति मातु ॲनुम्–भूमि देवी रूपी; ऑरु

मकळ् मणमुम्–एक देवी के साथ विवाह भी; कण्टु उवप्प–देखकर आनन्दित होने की बात; अॅण्णिनॅन्–सोची। २८

राम पुरुषोत्तम है। वह मेरा पुत्र पैदा हुआ। उसका श्रीलक्ष्मी देवी और भूदेवी दोनों के साथ परिणय हो, यही उचित है। सीता के साथ उसका विवाह कराकर मैंने अपनी आँखों से लक्ष्मी का विवाह देख लिया। अव सर्वगुणसम्पन्न भूदेवी से भी उसका विवाह देखकर आनन्द पाना चाहता हूँ। (श्रीविष्णु के दो देवियाँ मानी जाती हैं— श्रीदेवी और भूदेवी। श्रीराम विष्णु के अवतार थे। इसलिए भूदेवी से उनके व्याह की वात उचित है। अलावा साहित्य में राजा को भूमि का पति मानना प्रचलित है।) । २९

निवप्पुरु निलत्तॅनु निरम्बु नङ्गयुम्
शिवप्पुरु मलर्मिशैच् चिरन्द शॅल्वियुम्
उवप्पुरु कणवनै युयिरि नॅय्दिय
तवप्पयन् ऱाळ्प्पदु दरुम मन्ऱरो 30

निवप्पु उरु–उत्कृष्ट; निलत् अॅतुम्–भूमि रूपी; निरम्पु नङ्कैयुम्–सर्वगुणपूर्णा देवी भी; चिवप्पु उरु मलर् मिचै–ललाई लिए रहनेवाले (कमल) फूल पर; चिरन्त–शोभने वाली; चॅल्वियुम्–श्रीदेवी; उवप्पु उरु–मन भानेवाले; कणवतै–नायक को; उयिरिन्–अपने प्राणों के समान; अॅय्तिय तवम् पयन्–प्राप्त करानेवाले तप के फल की प्राप्ति को; ताळ्प्पतु–स्थगित कराना; तरुमम् अन्ऱु–धर्म नहीं होगा। ३०

अब दोनो देवियाँ— उत्कृष्ट भूमि की देवी और लाल-कमल-निवासिनी श्रीदेवी अपनी इच्छा-योग्य पति को, जो उनके प्राणों के समान उन्हें प्यारा है, अपनी तपस्या के फल के आधार पर पानेवाली हैं। उसमें देरी कराना धर्म नहीं होगा। ३०

*** आदला लिरामऩुक् करशै नल्हियिप्**
पेदमैत् तायवरुम् बिऱप्पै नीक्कुवाऩ्
मादवन् दॉडङ्गिय वनत्तै नण्णुवेऩ्
यादुनुङ् गरुत्तॅन विनैय कूऱिनाऩ् 31

आतलाल्–इसलिए; अरचै–राज को; इरामतुक्कु नल्कि–राम को देकर; पेतैमैतु आय् वरुम्–अविद्या से प्राप्य; पिऱप्पै–जन्म को; नीक्कुवान्–रोकने के लिए; मा तवम् तॉटङ्किय–बड़ी तपस्या करने के हेतु; वनत्तै नण्णुवेन्–वन में जाऊँगा; नुम् करुत्तु यातु–आपकी राय क्या है; अॅन्–ऐसा; इनैय कूऱिनान्–ये बातें कहीं, (दशरथ ने)। ३१

इसलिए राज्य को राम के पास सौंपकर, अविद्याजन्य जन्म को रोकने

के हेतु बड़ी तपस्या करने की इच्छा से मैं वन में जाना चाहता हूँ। इसमें आपकी राय क्या है ? दशरथ ने सारी बातें कहकर यह प्रश्न किया। ३१

तिरण्ड तोळिन् निप्पडिच् चॅप्पवुम् जिन्दै
पुरण्डु मीदिडप् पॉङ्गिय वुवहय राङ्गे
वॅरुण्डु मन्नवन् पिरिवॅनुम् विम्मुरु निलैयाल्
इरण्डु कन्ऱिनुक् किरङ्गुमो रावॅन विरुन्दार् 32

तिरण्ट तोळितन्–पुष्ट कन्धों वाले (दशरथ) के; इप्पटि चॅप्पवुम्–ऐसा कहने पर; चिन्तै–मन में; पुपण्टु मीतु इट–उठकर ऊपर; पॉङ्किय–उमड़ते हुए; उवकैयर–आनन्द से पूरित हो; आङ्के–तभी; मन्नवन् पिरिवु ॲन्नुम्–राजा का बिछोह रूपी; विम्मुरु निलैयाल्–दुखदायक स्थिति से; वॅरुण्टु–घबड़ाकर; इरण्टु कन्ऱिनुक्कु–दो बछड़ों के बीच; इरङ्कुम् ओर् आ ॲन–स्नेहार्द्र गाय के समान; इरुन्तार्–रह गये। ३२

पुष्ट कंधों वाले दशरथ के यों कहने पर मन्त्री लोगों के मन में अपार हर्ष उमड़ आया। लेकिन तभी राजा का विछोह भी उन्हें खलने लगा। तव वे उस गाय की-सी दशा में पड़ गये जो दो वछड़ों से स्नेह करके असमंजस में पड़ जाती हो। वे भ्रमित रह गये। ३२

अन्न रायिनु मरशनुक् कदुवल्ल दुरुदि
पिन्न रिल्लॅनक् करुदियुम् बॅरुनिल वरैप्पिन्
मन्नु मन्नुयिर्क् किरामनिन् मन्नव रिल्लै
ॲन्न वुन्नियुम् विदियदु वलियिनु मियैन्दार् 33

अन्नर् आयितुम्–वैसी दशा में रहने पर भी; अरचनुक्कु–राजा का; पिन्नर् उरुति–पर-जीवन-हित; अतु अल्लतु इल्–वह (तपस्या) छोड़ दूसरा नहीं; ॲन करुतियुम्–यह सोचकर, और; पॅरु निल वरैप्पिल्–विशाल भूतल में; मन्नुम्–रहनेवाले; मन् उयिर्क्कु–अक्षय जीवों के लिए; इरामनिन्–श्रीराम के समान; मन्नवर्–राजा; इल्लै–नहीं मिलेंगे; ॲन्न उन्नियुम्–यह भी सोचकर; विदियतु वलियितुम्–और विधि के प्रभाव से; इयैन्तार्–सहमत हुए। ३३

दशरथ-वियोग को दुख मानते हुए भी उन्होंने उनके सुझाव को सहमति दी क्योंकि दशरथ का हित तपस्या को छोड़ और किसी में नहीं था। विशाल भूमि पर रहनेवाले सभी अक्षय जीवों के लिए श्रीराम के समान कोई भला राजा नही मिल सकता था। उन्होंने यह सोचा और प्रवल विधि का भी विधान वही था। ३३

❀ इरुन्द मन्दिरक् किळवर्द मॅण्णमु महन्पाल्
परिन्द शिन्दयम् मन्नवन् करुदिय पयनुम्

पॉरुन्तु मन्नुयिर्क् कुऱ्ऱियुम् पॉदुवुऱ नोक्कित्
तॉरिन्द नान्मऱैत् तिशैमुहन् ऱिरुमहन् चॅप्पुम् 34

तॉरिन्त नाल् मऱै–पठित चारों वेदों का ज्ञान रखनेवाले; तिचैमुकन् तिरु मकन्–चतुर्मुख के पुत्र; इरुन्त–(सभा में) रहनेवाले; मन्तिरम् किळवर् तम् ऍण्णमुम्–(मन्त्रणा देनेवाले) मन्त्रियों का विचार और; मकन् पाल्–अपने पुत्र पर; परिन्त–वात्सल्य रखनेवाले; चिन्तै–मन के; अ मन्तवन्–उन राजा (दशरथ) के; करुतिय–सोचे हुए; पयनुम्–सुफलदायी कार्य को; मन् उयिर्क्कु–(और उससे) स्थायी प्रजाजनों को; पॉरुन्तुम् उऱ्ऱियुम्–प्राप्य भले को; पॉतु उऱ नोक्कि–तटस्थता से देखकर; चॅप्पुम्–बोले। ३४

तब वसिष्ठजी बोले। वेदज्ञ और ब्रह्मा के पुत्र उन्होंने सभी सलाहकार मन्त्रियों का विचार, अपने पुत्र पर अगाध वात्सल्य रखनेवाले दशरथ का सोचा हुआ शुभकार्य, और अक्षय प्रजाजनों का हित —इन सब पर तटस्थता से विचार किया। उन्होंने यों कहा। ३४

[तमिळ में "मन् उयिर" कहने की परिपाटी है। जीवात्मा भी परमात्मा के समान शाश्वत है, यह हिन्दू धर्म में जाना जाता है। दूसरा जब तक लोक है तब तक जीव रहेंगे ही]।

❀ निरुब निन्कुल मन्नवर् नेमिपण् डुरुट्टिप्
पॅरुमै येय्दिनर् यावरे यिरामनैप् पॅऱ्ऱार्
करुम मुम्मिदु कऱ्ऱुणर्न् दोर्हट्कुक् कडव
दरुम मुम्मिदु तक्कदे निनैन्ददै तहवोय् 35

तकवोय्–महिमावान; निरुप–नृप; पण्टु–पहले; नेमि उरुट्टि–(आज्ञा-) चक्र चलाकर; पॅरुमै ऍय्तितोर्–कीर्ति प्राप्त; निन् कुलम् मन्नवर्–आपके कुल के राजाओं में; यावर् इरामनै पॅऱ्ऱार्–किसने राम को (पुत्र के रूप में) पाया; करुममुम् इतु–कर्म यही है; कऱ्ऱुणर्न्तोर्कट्कु–धर्मशास्त्र का अध्ययन कर जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया है उन्हें; कटव–कर्तव्य; तरुममुम् इतु–धर्म भी यही है; तक्कते निनैन्ततै–उचित ही (आपने) सोचा है। ३५

हे महिमावान! आपका भाग्य अभूतपूर्व है। आपके पहले जितने भी राजा आज्ञाचक्र चलाकर गौरवान्वित हुए उनमें किसका भाग्य था कि श्रीराम उसके पुत्र पैदा होते? अब यही यानी तप करना आपका श्रेष्ठ कर्म भी है; और शास्त्रज्ञों का कर्तव्य धर्म भी है। आपने बहुत ही उचित बात सोची है!। ३५

पुण्णि यम्बुरि वेळ्विहळ् यावयुम् बुरिन्द
अण्ण लेयिनि यरुन्दव मियऱ्ऱवु मडुक्कुम्
वण्ण मेहलै निलमहण् मऱ्ऱिनैप् पिरिन्दु
कण्णि ळन्दिल ळॅतच्चॅयु नीतन्द कळ्ळोन् 36

पुण्णियम् पुरि–पुण्यकारी; वेळ्विकळ् यावैयुम्–(कर्तव्य) सभी यज्ञ; पुरिन्त–(जो) कर चुके; अण्णले–हे महिमावान; इनि–आगे; अरु तवम्–उपादेय तप; इयर्र्वुम् अट्कुम्–करना भी उचित ही होगा; वण्णम् मेकलै–सुन्दर मेखलाधारिणी (समुद्र-मेखला); निलम् मकळ्–पृथ्वी देवी; उन्नै पिरिन्तु–आपको छोड़कर; कण् इळन्तिलळ्–आँखों से हीन नहीं हुई; अँन–ऐसा; नी तन्त कळलोन्–आपके (पुत्र) पायलधारी श्रीराम; चेंयुम्–(कार्य) करेंगे। ३६

पुण्यप्रद सभी यज्ञों के याजी! अब तपस्या करना भी उपयुक्त ही है। सुन्दर (समुद्र–)मेखला पृथ्वी आपसे विछुड़ने से आँखों से हीन नहीं हो जाय यह व्यवस्था आपके पुत्र वीर पायलधारी श्रीराम कर देंगे। ३६

❀ पुऱत्तु नामॊरु पॊरुळिऩिप् पुहल्हिऩ्ऱ दॆवऩ्
अऱत्तिऩ् मूर्त्तिवऩ् दवदरित् ताऩॆऩ्व दल्लाल्
पिऱत्ति यावयुङ् गात्तवै पिऩ्ऩिऩ्ऱु तुडैक्कुम्
तिऱत्तिऩ् मूवरुन् दिरुत्तिऩ तिरुत्तुमत् तिऱलोऩ् 37

अऱत्तिऩ् मूर्त्ति–धर्मस्वरूप परात्पर; वन्तु–(स्वेच्छा से) आकर; अवतरित्तान् अँन्पतु अल्लाल्–अवतरित हुए हैं, इसके सिवा; पुऱत्तु–और; नाम–हम; ऑरु पॊरुळ्–कोई बात; पुकल्किन्ऱ्रु अँवन्–कहें क्या; यावैयुम् पिऱत्तु–सबको उत्पन्न करके; पिन् निन्ऱु कात्तु–बाद उन सब की रक्षा कर; अवै तुटक्कुम्–उन सब को मिटाने का; तिऱत्तिन् मूवरुम्–सामर्थ्य रखनेवाले तीनो के; तिरुत्तिन–कृत्यों को; अ तिऱलोन्–वह सर्वशक्तिमान; तिरुत्तुम्–स्वयं अकेले पूरा करेंगे। ३७

'स्वयं परात्पर भगवान, धर्ममूर्ति अपनी इच्छा से अवतरित हुए हैं' इसके अलावा हम और क्या कह सकेंगे? सृष्टि, स्थिति और संहार के तीनो के कर्ता ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तीनो जो करने का सामर्थ्य रखते हैं उन तीनो के कार्य को ये अकेले ही कर चुकेंगे। ३७

पॊऩ्ऩु यिर्त्तपू मडन्दयुम् बुवियॆनुन् दिरुवुम्
इन्नु यिर्त्तुणै यिवनॆन निनैक्किन्ऱ विरामन्
तन्नु यिर्क्कॆन्ऱॆ पुल्लिदु तर्पयन् दॆडुत्त
उन्नु यिर्क्कॆन नल्लन्मन् नुयिर्क्कॆला मुरवोय् 38

उरवोय्–शक्तिमन्त; पॊन् उयिर्त्त–सुन्दरता की जननी; पू मटन्तैयुम्–कमला श्रीदेवी; पुवि अँनुम् तिरुवुम्–और भूदेवी; इवन् इन् उयिर् तुणै–ये हमारे प्यारे प्राणाधार हैं; अँन निनैक्किन्ऱ–ऐसा (जिनको) मानती हैं; इरामन्–वे श्रीराम; तन् उयिर्क्कु–मेरे प्राणों का; (नल्लन्–हितकारी); अॅन्ऱॆ पुल्लितु–कहना छोटी बात है; (अवन्) तन् पयन्तु अॅटुत्त–उनको जिन्होने जन्म दिया; उन् उयिर्क्कु अॅन–उन आपके प्राणो के लिए, जैसे; मन् उयिर्क्कु अॅल्लाम्–अक्षय सभी जीवों के लिए; नल्लन्–हितू हैं। ३८

शक्तिमान! शोभाशालिनी श्रीदेवी और भूदेवी दोनो इनको अपने-अपने प्राण-प्यारे नाथ समझती हैं। ऐसे श्रीराम को आप अपने प्राणों का

हितकारी समझते हैं, यह छोटा विचार है। उनके जन्मदाता आपके लिए जैसे वे हितरक्षक हैं उतने ही सभी जीवों के धाता हैं। ३८

वार मॅन्निनिप् पहर्वदु वैहलु मनैयान्
पेरि नाल्वरु मिडरॅलाम् बॅयर्हिन्र पयत्ताल्
वीर निन्कुल मैन्दनै वेदियर् मुदलोर्
यारुन् दाज्जॅय्द नल्लरप् पयनॅन विरुप्पार् 39

वीर-प्रतापी; वैकलुम्-रोज; अतैयान्-उनके; पेरिनाल्-नामस्मरण से; वरुम् इटर् ॲलाम्-आनेवाले संकट सब; पॅयर्किन्र पयत्ताल्-हट जाते हैं, इस फल से; नित् कुलम् मैन्तनै-आपके उत्तम पुत्र को; वेतियर् मुतलोर् यारुम्-वेदज्ञ ब्राह्मण आदि सब; ताम् चॅय्त नल् अरम् पयन् ॲन-हमारे किये श्रेष्ठ धर्मो का फल समझते; इरुप्पार्-रहते हैं; वारम्-प्रजाजनों का; ॲन् इति पकर्वतु-आगे क्या कहा जाय। ३९

हे वीर! आनेवाले सभी संकट श्रीराम के दैनिक नामस्मरण से दूर हो जाते हैं। इस कारण वेदज्ञ विप्र सब श्रीराम को अपने सुकृतों का सुफल जानकर उनसे भक्ति करते रहेंगे। तो मामूली प्रजाजनों की बात कहने की आवश्यकता है क्या? वे भी उन पर अगाध भक्ति रखेंगे। ३९

मण्णि नुन्नलण् मलर्महळ् कलैमहळ् कलैयूर्
पॅण्णि नुन्नलळ् पॅरुम्बुहळ्च् चनहियो नल्लळ्
कण्णि नुन्नलन् कर्रवर् कर्रिला दवरुम्
उण्णु नीरिनु मुयिरिनु मवनैये युहप्पार् 40

मण्णिलुम् नल्लळ्-(क्षमा में) पृथ्वी से अधिक भली; मलर् मकळ्-कमला; कलैमकळ्-सरस्वती; कलै ऊर पॅण्णितुम्-हरिणवाहना (सती) देवी से; नल्लळ्-(क्रमशः सौंदर्य, बुद्धिशक्ति और चारित्र्य में) अधिक श्रेष्ठ; चनकियाम् नल्लळ्-जानकी जो उत्तम है, उनकी; कण्णितुम् नल्लन्-आँखे भी श्रेष्ठ हैं; कर्रवर् कर्रिलातवरुम्-शिक्षित और अशिक्षित; उण्णुम नीरितुम्-पेय जल से भी; उयिरितुम्-अपनी जान से भी; अवनैये उकप्पर्-उनको चाहते है। ४०

सीताजी क्षमा में पृथ्वी से, सौन्दर्य में कमला से, बुद्धि-शक्ति में सरस्वती से और सतीत्व में स्वयं सतीदेवी से बढ़कर भली हैं। उनकी भी आँखो में श्रीराम श्रेष्ठ हैं। शिक्षित और अशिक्षित सभी लोग उन्हें अपने पेय जल से भी अधिक, अपने प्राणों से भी अधिक मानकर आनन्द अनुभव करेंगे। ४०

मन्निदर् वानवर् मर्रुळो रर्रङ्गात् तळिप्पार्
इन्निय मन्नुयिर्क् किरामनिर् चिरन्दव रिल्लै
अन्नैय नादलि नरशनिर् कुरुपॅरु ळरियिन्
पुन्निद मादव मल्लदॅन् रिल्लॅनप् पुहन्रान् 41

अरच–राजन; मत्तिर्–मनुष्य; वातवर्–देव; मर्ऱु उळ्ळोर–अन्य सबों के; इनिय मन् उयिर्क्कु–प्रिय और शाश्वत जीव (आत्मा) को; अऱ्ऱम् कात्तु हानियों से बचाकर; अळिप्पार्–सुरक्षित करनेवाले; इरामऩिऩ्–श्रीराम से बढ़कर; चिऱन्तवर् इल्लै–श्रेष्ठ (कोई) नहीं है; अत्तैयन् आतलिन्–वैसे हैं, इसलिए; निऩ्कु उऱु पॊरुळ् अऱियिऩ्–आपका हित सोचें तो; पुनितम् मातवम् अल्लतु–पवित्र तप का आचरण छोड़कर; ऒन्ऱु इल् अॆत्त–दूसरा कोई नहीं है, यह; पुकन्ऱान्–कहा। ४१

राजन् ! मानव हों, सुर हों या अन्य; सभी प्राणियों को हानि से बचाकर अपनी कृपा का पात्र बनाकर पालन करनेवाले, श्रीराम से बढ़कर कोई नहीं मिल सकते। चूँकि वे ऐसे है, आपको अपने हित में पवित्र तपस्या करने जाने के अतिरिक्त कोई दूसरा कर्तव्य नही है। —महर्षि वसिष्ठजी ने यों कहा। ४१

❀ मऱ्ऱ वन्शॊन्न वाशहङ् गेट्टलु महत्तैप्
पॆऱ्ऱ वन्ऱिनुम् बिऩ्ऩहन् पिडित्तवप् पॆरुविल्
इऱ्ऱ वन्ऱिनु मॆऱिमऴु वाळव निऴुक्कम्
उऱ्ऱ वन्ऱिनुम् पॆरियदो रुवहैय नानान् 42

अवन् चॊन्न वाचकम् केट्टलुम्–उनके वचन सुनते ही; मकत्तै पॆऱ्ऱ अन्ऱिनुम्–उनके जन्म के दिन से; पिऩ्ऩकन् पिटित्त–शिवगृहीत; अ पॆरु विल्–उस बड़े चाप के; इऱ्ऱ अन्ऱिनुम्–भंजन के दिन से; ऍऱि–फेंके जानेवाले; मऴु वाळवन्–परशुशस्त्रधारी परशुराम; इऴुक्कम् उऱ्ऱ अन्ऱिनुम्–(जब) परास्त हुए उस दिन से भी; पॆरियतु ओर्–अधिक बड़ा; उवकैयन् आतान्–आनन्दित हुए। ४२

दशरथ ने उनके कथन सुने तो उन्हें अपार हर्ष हुआ। पुत्र-जन्म के दिन, शिवचाप-भंजन के दिन, और परशुरामगर्व-भंग के दिन, जो आनन्द उन्हें हुआ था उससे कई गुना अधिक आनन्द अब हुआ। ४२

अन्नय दाहिय वुवहयन् कण्गणी ररुम्ब
मुनिवन् मामलर्प् पादङ्गण् मुऱैमैयि निऱैञ्जि
इनिय शॊल्लिनै यॆम्बॆरु मान्ऱुळ् वऴियिन्
तनिय नान्निलन् दाङ्गिय दवऱ्कदु तहादो 43

अत्तैयतु आकिय–उस प्रकार के; उवकैयन्–आनन्दयुक्त दशरथ; कण्कळ् नीर् अरुम्प–आँखों में (अश्रु-) जल के ढलकते; मुनिवन्–मुनिवर के; मा–उत्तम; मलर् पातङ्कळ्–कमल चरणों की; मुऱैमैयिन् इऱैञ्चि–उचित रीति से वन्दना करके; ऍम् पॆरुमान्–मेरे नाथ; इनिय चॊल्लितै–हितवचन कहे; वऴियिन्–(आप से निर्दिष्ट) मार्ग पर; तनियन्–(चलकर) अकिंचन मैंने; नातिलम् ताङ्कियतु–भूमि का भरण किया; अरुळ् वऴियिन्–आपके कृपा से निर्दिष्ट मार्ग से ही; अतु–वह (मार्गदर्शन की कृपा); अवऱ्कु–श्रीराम को भी; तकातो–प्राप्य नहीं होगा क्या। ४३

ऐसे आनन्द से भरकर राजा ने अश्रुमय आँखों के साथ-साथ मुनिवर के कमल-चरणों की यथाविधि वन्दना की। "मेरे नाथ! आपने वहुत ही हित-वचन कहे। आपके निर्दिष्ट मार्ग पर चलकर ही, अकिंचन मैंने भू-भार वहन किया। अब वही आपकी मार्गदर्शन की कृपा श्रीराम को भी प्राप्य नहीं होगी क्या? अवश्य होगी। वह भी उसके योग्य रहेगा। ४३

अॅन्दै नीयुवन् दिदञ्जॉल वॅङ्गुलत् तरशर्
अन्द मिल्लदोर् पॅरुम्बुह ळ्वनियि निरुत्ति
मुन्दु वेळ्वियु मुडित्तुत्तम् मिरुविनै मुडित्तार्
वन्द दव्वरु ळॅनक्कुमॅन् रुरैशॅय्दु महिळ्न्दान् 44

अॅन्नै–पितृतुल्य; अॅम् कुलत्तु अरचर्–मेरे कुल के राजाओं ने; नी उवन्तु इतम् चॉल–आपके सन्तुष्ट होकर हितोपदेश करते; अवनियिल्–अवनि में; अन्तम् इल्लतु–सीमाहीन; ओर् पॅरु पुकळ् निरुत्ति–एक बड़ा यश स्थापित करके; मुन्तु वेळ्वियुम् मुटित्तु–पहली श्रेणी के अनेक यज्ञ पूरा करके; तम् इरु विनै मुटित्तार्–अपने दोनो कर्म-(वासना-)क्षय कर लिया; अ अरुळ्–वह कृपा; अॅनक्कुम् वन्ततु–मुझे भी मिली; अॅन्रु उरै चॅय्तु–ऐसा कथन करके; मकिळ्न्तान्–आनन्दमग्न हुआ। ४४

मेरे पितृतुल्य! मेरे पूर्वजों ने आपके तत्व-हितोपदेश के कारण भूमि पर वड़ा यश अर्जित कर स्थायी वनाया; अनेक श्रेष्ठ यज्ञ सम्पन्न किये और अपने पाप-पुण्य दोनो कर्मों का क्षय करा लिया (मुक्ति के योग्य वने)। वह कृपा मुझे भी प्राप्त हुई।" —यह दशरथ ने सानन्द कहा। ४४

❁ पळुदिन् मादवन् पिन्नॊन्रुम् पणित्तिल निरुन्दान्
मुळुदु मॅण्णुरु मन्दिरक् किळवर्तम् मुहत्ताल्
अॅळुदि नीट्टिय विङ्गिद मिरैमहर् केरत्
तॊळुद कैयिनन् सुमन्दिरन् मुन्निन्रु शॊल्लुम् 45

पळुतु इल् मातवन्–निर्मल और महान तपस्वी; पिन् ऑन्रुम् पणित्तिलन्–फिर कुछ नहीं बोले; इरुन्तान्–चुप रह गये; मुळुतुम् अॅण्णुरु–सभी ओर से (वात का) विचार करनेवाले; मन्तिरम् किळवर्–परामर्शदाता मन्त्रियों के; तम् मुकत्ताल् अॅळुति नीट्टिय–अपने-अपने मुखों (भावप्रदर्शन) से लिखकर वढ़ाये हुए (प्रकट किये गये); इङ्कितम्–इंगित को; इरै मकर्कु–राजा को; एर–समझाते हुए; तॊळुत कैयिनन्–हाथ जोड़कर; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र; मुन् निन्रु–सामने खड़े होकर; चॊल्लुम्–कहने लगे। ४५

पवित्र और महान तपस्वी वसिष्ठजी ने आगे कुछ नहीं कहा। वे मौन रह गये। तव मन्त्रिमण्डल के सभी सदस्यों की सम्मिलित राय को,

उनके मुखों पर अंकित भावों के प्रतिफलन से समझकर सुमंत्र नाम के मन्त्री हाथ जोड़कर खड़े हो गये और दशरथ के सामने निम्नलिखित वचन कहने लगे। ४५

❀ उऱत्त	हुम्मर	शिरामऱ्कॅन्ऩ्	ऱुवक्किऩ्ऱ	मऩत्तै
तुऱत्ति	नीयॅन्ऩुम्	जॉऱ्चुडु	मुऩ्गुलत्	तॉल्लोर्
मऱत्तल्	शॅय्हलात्	तरुमत्तै	मऱप्पदुम्	वळक्कऩ्
ऱऱत्ति	ऩूङ्गितिक्	कॉडिदॅन	लावदॉन्ऱ्	ऱियादे 46

अरचु इरामऱ्कु उऱ तकुम्–राज्य श्रीराम का होना उपयुक्त है; अॅऩ्ऱु–ऐसा; उवक्किऩ्ऱ मत्तत्तै–मोद करनेवाले मन को; नी तुऱत्ति–आप वैराग्य ले रहे हैं; ॲन्ऩुम् चॉल्–यह कथन; चुट्टुम्–जलाता है (क्लेश देता है); उन् कुलम् तॉल्लोर्–आपके कुल के पूर्वजो ने; मऱत्तल् चॅय्कला–(जिसको) नहीं भुलाया; तरुमत्तै–उस धर्म को; मऱप्पतुम्–(आपका) भूल (छोड़) जाना भी; वळक्कु अऩ्ऱु–योग्य नहीं है; इति–अब; अऱत्तिन् ऊड्कु–धर्म से बढ़कर; कॉटितु ॲन्तल् आवतु–क्रूर (दुख देनेवाला) कहलाने योग्य; ऑन्ऱु यातु–एक क्या है। ४६

श्रीराम को राज मिलेगा और वे उसके परम योग्य है —इस विचार से हुलसित-मन आप संन्यास ले लेंगे —यह बात सुनकर मन विदग्ध हो जाता है। आपके पूर्वजों ने ज्येष्ठ पुत्र को राज देकर स्वयं तपस्या करने की परिपाटी चलाई है और वह अचूक चलती है। उसको भुलाना भी सही नहीं होगा। धर्म भी कितना निष्ठुर है! उससे बढ़कर निर्मम कौन सी वस्तु है ? । ४६

पुरैशै	माल्करि	निरुबरुम्	बुरत्तुऱै	वोरुम्
उरैशॅय	मन्दिरक्	किळवरु	मुऩिवरु	मुवप्प
मुरैश	मार्प्पनिऩ्	मुदऩ्मणिप्	पुदल्वनै	मुऱैयाल्
अरैश	ऩाक्किय	पिऩ्बुनक्	कडुत्तदु	पुरिवाय् 47

पुरैचै माल् करि–रस्सी सहित बड़े गजों के; निरुपरुम्–स्वामी राजा लोग और; पुरत्तु उरैवोरुम्–नगरवासी; उरै चॅय् मन्तिरम् किळवरुम्–परामर्श देनेवाले मन्त्रीगण; मुनिवरुम्–मुनि; उवप्प–इनको आनन्द देते हुए; मुरैचम् आर्प्प–भेरियों के नर्दन के साथ; निन्–आपके; मुतल् मणि पुतल्वनै–ज्येष्ठ नीलीमणि-सम पुत्र को; मुऱैयाल्–वेदोक्त रीति से; अरचन् आक्किय पिन्पु–राजा बनाने के बाद; अट्टुत्तु–अपना उपयुक्त (तप का) कार्य; पुरिवाय्–कीजिए। ४७

आप कृपया एक काम कीजिये। पहले आप वेदोक्त रीति से अपने ज्येष्ठ पुत्र, नीलमणिवर्ण श्रीराम को राजा बना दीजिए ताकि गजपति राजा लोग, नगरवासी, मन्त्रीगण, मुनि, सबको सन्तोष हो जाय। फिर आप तपस्या करने जाइये। ४७

❀ ऍऩ्ऩ्र वाशहन् जुमन्दिर ऩियम्बलु मिऱैवऩ्
नऩ्ऱु शॊल्लिऩै नम्बियै नळिमुडि शूट्टि
निऩ्ऱु निऩ्ऱदु शॆय्वदु विरैविऩि ऩीये
शॆऩ्ऱु कॊण्डणै तिरुमहळ् कॊऴुनऩै ऍऩ्ऱाऩ् 48

ऍऩ्ऱ वाचकम्–ऐसे वाक्य; चुमन्तिरऩ् इयम्पलुम्–सुमन्त्र के कहने पर; इऱैवऩ्–राजा ने; नऩ्ऱु चॊल्लिनै–भला कहा; नम्पियै–नायक को; नळि मुटि चूट्टि निऩ्ऱु–गौरवपूर्ण मुकुट पहना चुककर; निऩ्ऱतु चॆय्वतु–बचा रहा काम करना; नीये–आप ही; विरैविऩिल् चॆऩ्ऱु–सत्वर जाकर; तिरुमकळ् कॊऴुनऩै–श्रीपति को; कॊण्टु अणै–ले आइये; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । ४८

सुमंत्र के ये वचन सुनकर राजा ने उनसे कहा कि आपने ठीक कहा। श्रीराम को श्रेष्ठ गौरव बढ़ानेवाले मुकुट पहनाने के बाद ही दूसरा कार्य करूँगा। आप ही सत्वर जाकर श्रीपति को ले आयें। ४८

❀ अलङ्गल् मऩ्ऩऩै यडितॊऴु दवऩ्मऩ मऩैयाऩ्
विलङ्गल् माळिहै वीदियिऩ् विरैवॊडु शॆऩ्ऱाऩ्
तलङ्गळ् यावयुम् पॆऱ्ऱनऩ् ऱाऩॆऩत् तळिर्प्पाऩ्
पॊलङ्गॊ डेरॊडु मिराहवऩ् तिरुमऩै पुक्काऩ् 49

अवऩ् मऩम् अनैयाऩ्–उनके ही मन के समान मन वाले; अलङ्कल् मऩ्ऩऩै–मालाभूषित राजा के; अटि तॊऴुतु–चरणों पर प्रणाम करके; तलङ्कळ् यावैयुम्–भूतल सब; ताऩ् पॆऱ्ऱऩऩ् ऍऩ–खुद प्राप्त कर लिया जैसे; तळिर्प्पाऩ्–हुलसकर; पॊलम् कॊळ् तेरॊटु–स्वर्णनिर्मित रथ के साथ; विलङ्कल् माळिकै–पर्वत-सम सौधों वाले; वीतियिऩ्–मार्गों में; विरैवॊटु–सत्वर; चॆऩ्ऱाऩ्–गये; इराकवऩ् तिरुमऩै–श्रीराघव के महल में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुए। ४९

राजा के मन के अनुकूल ही सुमंत्र का मन भी सोचने का आदी था। उन्होंने मालाधारी राजा दशरथ के चरणों पर प्रणमन करके श्रीराम के महल की ओर प्रस्थान किया। उनके मन में ऐसा आनन्द उमड़ा मानो उन्हीं को सारी भूमि पर अधिकार मिल गया हो। वे रथ पर गये और रथ उस राजमार्ग पर गया जिसके दोनों किनारों पर पर्वत के समान उन्नत प्रासाद बने थे। स्वर्णमय रथ श्रीराम के महल को पहुँचा और सुमंत्र श्रीराम के महल के अन्दर प्रविष्ट हुए। ४९

❀ पॆण्णि निऩ्ऩमु दऩ्ऩव ऩऩ्ऩॊडुम् बिरिया
वण्ण वञ्जिलैक् कुरिशिलु मरुङ्गिनि दिरुप्प
अण्ण लाण्डिरुन् दाऩ्ऱ्ळ हरुनऱ् वॆऩ्ऩत्तऩ्
कण्णु मुळ्ळमुम् वण्डॆऩक् कळिप्पुऱक् कण्डाऩ् 50

अण्णल्–पुरुष श्रेष्ठ; पिरिया–अपने से कभी अलग न होनेवाले; वण्णम् वॆम् चिलै कुरिचिलुम्–सुन्दर और भयंकर धनुष के लघराज (लक्ष्मण) के; मरुङ्कु इऩितु

इरुप्प–पार्श्व में सुख से रहते; पॅण्णिऩ्–स्त्रियों में; इऩ् अमुतु अऩ्नवळ् तऩ्ऩॊटुम्–प्रिय सुधासम देवी (जानकी) के साथ; आण्टु–वहाँ; इरुन्ताऩ्–विराजे रहे; अऴकु–उनके सौंदर्य को; अरु नऱवु अॅऩ्ऩ–अपूर्व शहद के समान; वण्टु अॅऩ्ऩ–भ्रमर जैसे; तऩ् कण्णुम् उळ्ळमुम्–आँखें और मन; कळिप्पु उऱ–आनन्द से पूर्ण हो जायें, ऐसा; कण्टाऩ्–दर्शन किया। ५०

वहाँ श्रीराम अपनी पत्नी सीताजी के साथ, जो स्त्रियों में अमृत के समान श्रेष्ठ थी, विराजमान थे। उनके पास लघुराज लक्ष्मण भी, जो उनसे कभी अलग नही जाते थे, विराजमान थे। श्रीराम का सौन्दर्य सुमंत्र के नेत्रों और मन के लिए श्रेष्ठ शहद के समान सावित हुआ। सुमंत्र ने मन में उल्लास के साथ उनको देखा। ५०

❀ कण्डु कैतॊऴु दैयविक् कडलिडैक् किऴवोऩ्
उण्डोर् कारियम् वरुहॆऩ्ऩ वुरैत्तन ऩॆऩ्ऩलुम्
पुण्ड रीकक्कट् पुरवलऩ् पॊरुक्कॆऩ वॆऴुन्दोर्
कॊण्डल् पोऱ्चॆऩ्ऱु कॊडिनॆडुन् देर्मिशैक् कॊण्डाऩ् 51

कण्टु–देखकर; कै तॊऴुतु–हाथ जोड़कर; ऐय–मेरे नाथ; इ कटल् इटै–इस समुद्र-मध्य; किऴवोऩ्–(भूमि के) पति ने; ओर् कारियम् उण्टु–एक कार्य है; वरुक अॅऩ्ऩ–आओ, यह; उरैत्तततऩ्–कहा; अॅऩ्ऩलुम्–कहते ही; पुण्टरीकम् कण् पुरवलऩ्–पुण्डरीकाक्ष प्रभु; पॊरुक्कॅऩ–झट; अॅऴुन्तु–उठकर; ओर् कॊण्टल् पोल् चॆऩ्ऱु–एक मेघ समान चलकर; कॊटि नॅटु तेर् मिचै–ध्वजायुक्त व उन्नत रथ पर; कॊण्टाऩ्–सवार हुए। ५१

सुमंत्र ने श्रीराम के दर्शन करके हाथ जोड़कर नमस्कार किया। बाद सन्देश सुनाया कि समुद्रमध्यस्थ पृथ्वी के पति, आपके पिता ने यह कहला भेजा है कि कोई काम है, आओ। यह कहते ही, पुण्डरीकाक्ष, प्रभु श्रीराम तुरत उठे। मेघ जैसे चलकर ध्वजायुक्त ऊँचे रथ पर आरोहण किया। ५१

❀ मुऱैयिन् मॊय्म्मुहि लॆऩ्ऩमुर शार्त्तिड मडवार्
इऱैह ऴन्ऱशङ् गार्त्तिड विमैयव रॆङ्गळ्
कुऱैमु डिन्दॆऩ्ऩ ऱार्त्तिडक् कुञ्जियैच् चूऴ्न्त
नऱैय लङ्गल्वण् डार्त्तिडत् तेर्मिशै नडन्दाऩ् 52

मुऱैयिऩ्–क्रमेण; मॊय् मुकिल् अॅऩ्ऩ–लसे मेघों के समान; मुरचु–ढोल; आर्त्तिट–बज उठे, तव; मटवार्–स्त्रियों के; इऱै कऴऩ्ऱ–हाथों से खिसके; चङ्कु–कंकण; आर्त्तिट–शब्द कर उठे; इमैयवर्–देवता लोग; अॅङ्कळ् कुऱै–हमारा संकट; मुटिन्ततु अॅऩ्ऱु–मिटा, यह कहकर; आर्त्तिट–हल्ला मचा उठे; कुञ्चियै चूऴ्न्त–केश को आवृत्त करनेवाली; नऱै अलङ्कल्–शहद ढलकनेवाली मालाओं पर के; वण्टु–भ्रमर; आर्त्तिट–गुंजार उठे, तव; तेर् मिचै नटन्ताऩ्–रथ पर गये। ५२

जब वे वीथी पर चलने लगे तब मर्यादा के अनुसार क्रम से ढोल बज उठे। स्त्रियों के हाथों से खिसककर गिरनेवाले कंकण स्वर कर उठे। देवता लोग, हमारा संकट मिट गया, यह कहते हुए शोर मचाने लगे। श्रीराम के केश पर माला का वलय था; उससे शहद झरता था। उस पर मँडरानेवाले भ्रमरों ने गुंजार किया। इस रीति से श्रीराम रथ पर बढ़ते गये। ५२

पणैनि रन्दत्त पाट्टॊलि निरन्दत्त वत्तङ्गन्
कणैनि रन्दत्त नाणॊलि करङ्गित्त निरैप्पेर्
अणैनि रन्दत्त वरिवॆनुम् पॆरुपुत्त लत्तैयार्
पिणैनि रन्दॆत्तप् परन्दत्तर् नाणमुम् बिरिन्दार् 53

पणै–ढोल (-नाद); निरन्तत्त–(फैल) भर गये; पाट्टु ऑलि–संगीत-नाद; निरन्तत्त–फैल गया; अत्तङ्कन् कणै–अनंग-शर; निरन्तत्त–व्याप गये; नाण् ऑलि–(अनंगचाप की) प्रत्यंचा का नाद; करङ्कित्त–सुनाई दिया; अरिवु ऍन्नुतुम्–बोध रूपी; पॆरु पुत्तल्–विपुल जलराशि; निरै–संयम रूपी; पेर् अणै–बड़े बाँध को; निरन्तत्त–लाँघकर बह गई; अत्तैयार्–वे; नाणमुम् पिरिन्तार्–लाज खोकर; पिणै निरन्त ऍत्त–हरिणियाँ जमा हुईं, जैसे; परन्तत्तर्–आ जमा हुईं। ५३

श्रीराम के चलते समय राजमार्ग पर ढोल-नाद फैला; संगीत का नाद फैला; अनंग शर (अंगनाओं के मनों में) भरे; अनंग के चाप की प्रत्यंचा (भ्रमरों) का टंकार (गुंजार) भरा। स्त्रियों को श्रीराम का बोध रहा और तदुत्पन्न प्रेमाधिक्य की जलराशि संयम रूपी बाँध को लाँघकर बहने लग गई। स्त्रियों का संयम छूट गया और उनकी लाज भी तिरोहित हो गई। वे धैर्य और लाज खोकर भाग आईं और वीथी में हरिणियों के समान जुट गईं। ५३

❀ नीळॆ ळुत्तॊडर् वायित्तुङ् गुळैयॊडु नॆहिळ्न्द
आळ हत्तित्तो डरमियत् तलत्तित्तु मलर्न्द
वाळ रत्तवेल् वण्डॊडु कॆण्डैहण् मयङ्गच्
चाळ रत्तित्तुम् बूत्तत्त तामरै मलर्हळ् 54

नीळ् ऍळु तॊटर् वायित्तुम्–दीर्घ स्तम्भों वाले (प्रासादों के) द्वारों पर; अरमियम् तलत्तित्तुम्–चन्द्रशालाओं पर; कुळैयॊटुम्–कर्णकुण्डलों के साथ, और; नॆकिळ्न्त–खुले; अळकत्तित्तॊटुम्–केश के साथ; तामरै मलर्कळ्–(मुख-) कमल; अलर्न्त–खिले; चाळरत्तित्तुम्–गवाक्षों में भी; वाळ् अरत्तम्वेल्–तलवारों और रक्तरंजित भालों और; वण्टॊटु कॆण्टैकळ्–भ्रमरों के साथ कॆण्टै नाम के मीन; मयङ्क–मिश्रित; पूत्तत्त–खिले। ५४

उन प्रासादों के द्वारों पर, जिनके खंभे अत्युन्नत थे, और उन प्रासादों की चन्द्रशालाओं में कमल विकसित दिखे। वे कमल कुंडलों और बिखरे

केश के साथ खिले थे। वैसे ही गवाक्षों में भी कमल खिले थे और वे तलवारों, रक्तरंजित भालों, भ्रमरों और कॅण्टै नाम की मछलियों से युक्त रहे। वे विचित्र कमल स्त्रियों के मुख थे। तलवारें, भाले, भ्रमर और मीन उनके नेत्र थे। ५४

मण्ड लन्दरु मदिहॅळ् मळैमुहि लनैय
अण्डर् नायहन् वरैपुरै यहलत्तु ळलङ्गल्
तॉण्डै वाय्च्चियर् निरैयॉडु नाणॉडुन् दॉडर्न्द
कॅण्डै युम्मुळ किळैपयिल् वण्टॉडु किडन्द 55

मण्तलम् तरु–भूतलदत्त; मति कॅळु–चन्द्रयुक्त; मळैमुकिल् अनैय–काले मेघ के समान; अण्टर् नायकन्–देवों के नायक, श्रीराम के; वरै पुरै अकलत्तुळ्–पर्वत-सम वक्ष पर शोभित; अलङ्कल्–मालाएँ; तॉण्टै वाय्च्चियर्–बिंब (-फल) सदृश अधरों वाली प्रमदाओं के; निरैयॉटुम्–संयम और; नाणॉटुम्–लाज के साथ; तॉटर्न्त–अनुगमन करते हुए; कॅण्टैयुम् उळ–कॅण्टै नाम के मीन भी हैं; किळै पयिल् वण्टॉटु–'कैकिळै' नाम की तान अलापनेवाले भ्रमरों के साथ; किटन्त–पड़ी रहीं। ५५

श्रीरामचन्द्र के वक्ष पर माला शोभित थी। उस पर स्त्रियों की आँखें लगी हुई थीं। कवि का वर्णन देखिये। भूतल पर अपूर्व रीति से उत्पन्न, चन्द्र सहित मेघ के समान थे श्रीराम। उनका श्रीवक्ष पर्वत के समान था। उनके वक्ष की माला पर स्त्रियों के संयम और लाज का पीछा करते आनेवाली कॅण्टै नाम की मछलियाँ भी पाई जाती थीं और 'कैकिळै' नाम का राग अलापनेवाले भ्रमर भी थे। (भ्रमरों को अभिधा अर्थ में भ्रमर भी ले सकते है या लक्षणा द्वारा प्राप्त आँख के अर्थ में भी ले सकते है।)। ५५

शरिन्द पूवुळ मळैयॉडु कलैयुऱत् ताळ्प्
परिन्द पूवुळ पनिक्कडै मुत्तिनम् पडैप्प
ऎरिन्द पूवुळ विळमुलै यिळैयिडै नुळैय
विरिन्द पूवुळ वन्दर वानिन्ऱु वीळ 56

मळैयॉटु–मेघों (रूपी केशों) और; कलै–पूर्णचन्द्र (मुखों) के; उऱ ताळ–(लाज से) खूब झुकने से; चरिन्त पू–(केशों से) छूटकर गिरे पुष्प; उळ–रहते हैं; पनि–शीतल; कटै–(स्त्रियों के) अपांगों के; मुत्तु इनम्–मोती (अश्रु) समूह को; पटैप्प–सृजित करते हुए; परिन्त–उनसे त्यक्त; पू उळ–पुष्प भी हैं; इळ मुलै–युवतियों के स्तनों के; इळै इटै नुळैय–आभरणों के मध्य घुस जाने से; ऎरिन्त–(स्तनों के ताप से) जलकर गिरे हुए; पू उळ–पुष्प हैं; अन्तरम् वान् निन्ऱु–आकाश मध्य से; वीळ–गिरने पर; विरिन्त पू–विकसित पुष्प; उळ–रहते हैं (वीथी पर ये सब बिछे रहते है)। ५६

उस मार्ग पर फूल बिछ गये। वे कैसे फूल थे और कहाँ से आ गिरे? प्रासादों के ऊपर स्थित स्त्रियों ने लाज से अपने मुख झुकाये। तब उनके मेघसम केश और चन्द्रसम मुख नीचे झुके। उस समय केशों की मालाओं से पुष्प छूटकर गिर गये। उन्होंने अपने अपांगों से मोतीसम अश्रुकण बरसाते हुए (प्रेमाधिक्य के कारण) स्वयं फूलों को उतार फेंका। वे फूल भी बिछे रहे। उनके युवास्तन तप्त रहे और जब वे मालाओं के मध्य प्रविष्ट हुए तब स्तनताप से, माला के फूल झुलस कर गिर गये। देवलोक के, जो आकाश-मध्य है, देवता लोगों ने फूल बरसाये। वे मार्ग पर गिरकर खूब खिले हुए थे। इन सब तरह के फूल वहाँ पड़े रहे। (यह अशुभशकुन है।)। ५६

वळ्ळ् रैहळ्ळित् तॉळिर्वन वाण्मिळिर् मदियम्
तळ्ळु रच्चुमन् दॅळुतरु तमन्नियक् कॉम्बिऱ्
पुळ्ळि नुण्पनि पॉडिप्पन पॉन्निऱिन् पॉदिन्द
ऑळ्ळु डप्पॉरि विरविन वुळशिल विळनीर् 57

वळ् उरै कळित्तु–(पलकें रूपी) मोटी म्याने निकालकर; ऑळिर्वन वाळ्–चमकती (आँख रूपी) तलवारों के साथ; मिळिर् मतियम्–प्रकाश देनेवाले चाँद को; तळ्ळुर चुमन्तु–लड़खड़ाते हुए ढोकर; ऍळुतरु तमतियम् कॉम्पिल्–उठनेवाली (प्रमदाएँ रूपी) स्वर्णलताओं पर; चिल इळनीर्–कुछ (जोड़ों के) डाभों पर; नुण् पनि–हल्के और शीतल; पुळ्ळि पॉटिप्पन–(पसीने के) कण बिन्दियों के समान लगते हैं; पॉन्निऱिल् पॉतिन्त–स्वर्ण (पीले) रंग की चित्तियों से भरे हैं; ऍळ् पॉरि विरविन उळ–तिल भी बीच-बीच में दिखाई देते हैं। ५७

श्रीराम को देखकर जो स्त्रियाँ लड़खड़ाती हुई आईं उनके चन्द्रमुख पर म्यान-विमुक्त तलवारें (आँखें) चमक रही थीं। वे स्वर्ण-लताओं के समान थीं जिन पर दो-दो कच्चे नारिकेल पाये जाते थे। उन स्तनों पर ओसकण के समान स्वेदकण झलक आये थे और पीले रंग के धब्बे काले रंग के तिलों के साथ उनकी शोभा बढ़ा रहे थे। (पीला रंग या स्वर्ण-वर्ण चमड़े पर जो धब्बों के रूप में पाया जाता है वह जवानी की शोभा समझा जाता है। वह कभी विरह से भी उत्पन्न होता है जो पीले से अधिक सफ़ेद रहता है। तिल भी सुन्दरता के चिह्न माने जाते हैं।)। ५७

❀ आय दव्वळि निहळ्दर वाडव रॅल्लाम्
तायै मुन्निय कन्ऱॅन निन्ऱुयिर् तळिर्प्पत्
तूय तम्बियुन् दानुमच् चुमन्दिरन् ऱेर्मेल्
पोय हङ्गुळिर् पुरवल निरुन्दुळिप् पुक्कान् 58

आयतु–(जो उन नारियों पर) बीता; अव्वळि–ऐसा; निकळ्तर–होता रहा, तब; आटवर् ऍल्लाम्–पुरुष सब; तायै मुन्निय कन्ऱु ऍन्न–माता गाय का

स्मरण करनेवाले बछड़ों के समान; निऩ्ऱु उयिर् तळिर्प्प–खड़े रहकर प्राण-पुलकित होते हैं, ऐसी रीति से; तूय तम्पियुम् ताऩुम्–पवित्र भाई और स्वयं; अ चुमऩ्तिरऩ् तेर् मेल् पोय्–उस सुमन्त्र के रथ पर जाकर; अकम् कुळिर्–(शीतल-) प्रफुल्लमन; पुरवलऩ्–धाता (दशरथ); इरुन्त उळि–(जहाँ) रहे (उस) स्थान में; पुक्काऩ्–प्रविष्ट हुए। ५८

स्त्रियों की हालत यह रही। उधर पुरुष लोग भी माता गाय को देखकर हुलसित होनेवाले बछड़ों के समान लहलहाये खड़े रहे। तब श्रीराम अपने लघुभाई, पवित्रमन लक्ष्मण के साथ सुमंत्र के रथ पर जाकर उस मण्डप में पहुँचे जहाँ दशरथ रहे। दशरथ का मन बहुत स्नेहार्द्र था। ५८

❀ माद वऩ्ऱऩै वरऩ्मुऱै वणङ्गिवा ळुळवऩ्
पाद पङ्गयम् पणिऩ्दऩऩ् पणिदलु मऩैयाऩ्
कादल् पॊङ्गिडक् कण्पऩि युहुत्तिडक् कऩिवाय्च्
चीदै कॊण्गऩैत् तिरुवुऱै मार्वहम् जेर्त्ताऩ् 59

वरल् मुऱै–परम्परागत रीति से; मातवऩ् तऩै वणङ्कि–महान तपस्वी को नमस्कार करके; वाळ् उळवऩ्–तलवार 'जोता'; पातपङ्कयम्–पादपंकजों पर; पणिन्तऩऩ्–विनत हुए; पणितलुम्–नमस्कार करने पर; अऩैयाऩ्–उन्होंने; कातल् पॊङ्किट–वात्सल्य के उमड़ते; कण् पति उकुत्तिट–आँखों से अश्रु बहाते हुए; कतिवाय् चीतै–(बिंब-) फलाधरा सीता के; कॊण्कऩै–पति (श्रीराम) को; तिरु उऱै मार्पु अकम्–श्रीमन्त अपने वक्ष से; चेर्त्ताऩ्–लगा लिया। ५९

वहाँ पहुँचकर श्रीराम ने परंपरागत क्रम के अनुसार महान तपस्वी वसिष्ठजी को नमस्कार किया। फिर वे तलवार 'जोता' (तलवार के धनी) दशरथ के चरण-कमलों पर विनत हुए। तब दशरथ ने उमड़ते वात्सल्य के साथ, आँखों से आनन्दाश्रु बहाते हुए बिंबफलाधरा श्री सीताजी के भर्त्ता श्रीराम को अपने श्रीविलसित वक्ष से लगा लिया। ५९

❀ नलङ्गॊण् मैन्दऩैत् तळुविऩ्ऩ ऩॆऩ्ऩवॆऩ् ऩळिनीर्
निलङ्ग डाङ्गुरु निलैयिऩै निलैयिड निऩैन्दाऩ्
विलङ्ग लऩ्ऩतिण् डोळैयु मॆय्त्तिरु विरुक्कुम्
अलङ्गल् मार्बयुन् दऩ्ऩदुतोण् मार्बुकॊण् डळन्दाऩ् 60

नलम् कॊळ् मैन्तऩै–सभी अच्छाइयों से पूर्ण अपने पुत्र को; तळुवितऩ् ऎऩ्पतु–आलिंगन किया कहना; ऎऩ्–क्या (मतलब) रखता है; नळि नीर् निलङ्कळ्–विशाल जलाशय, सागर से वलयित भूमि को; ताङ्कु उरु–भरण करने की; निलैयिऩै–स्थिति को; निलै इट–परखने का; निऩैन्ताऩ्–संकल्प करके; विलङ्कल् अऩ्ऩ–पर्वतसदृश; तिण् तोळैयुम्–बलवान कन्धों; मॆय् तिरु इरुक्कुम्–सच्ची विजयश्री का निलय; अलङ्कल् मार्पैयुम्–मालाभूषित वक्ष को; तऩतु–अपने; तोळ् मार्पु कॊण्टु–भुजाओं और वक्ष से; अळन्ताऩ्–नापकर देखा। ६०

सारी अच्छाइयाँ जिनके पास थीं उन श्रीराम का दशरथ ने आलिंगन कर लिया —यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता। असल में दशरथ ने उनकी लोक-भरण शक्ति की परीक्षा ली। विशाल सागर-मेखला, भूमि को पालने की शक्ति श्रीराम की भुजाओं और वक्ष में है क्या ? इसको आजमाने के लिए दशरथ ने अपनी भुजाओं और वक्ष से श्रीराम के पर्वततुल्य कंधों और सच्ची श्री का वासस्थान— उनके श्रीवक्ष को नापकर देखा। ६०

❀ आण्डु तन्मरुङ् गिरीइयुवन् दन्बुऱ नोक्किप्
पूण्ड पोर्मऴु वुडैयव नॅडुम्बुहऴ् कुऱुह
नीण्ड तोळिनाय् निऱ्पयन् दॅडुत्तया निन्नै
वेण्डि यॅय्दिड विऴैवदॊन् ऱुळदॆन विळम्बुम् 61

आण्टु–तब; उवनतु–(बहुत) मुदित होकर; तन् मरुङ्कु इरीइ–अपने पास बिठाकर; अऩ्पु उऱ नोक्कि–प्रेम के साथ देखकर; पोर् पूण्ट–युद्ध सन्नद्ध; मऴु उटैयवन्–परशुधर की; नॆटु पुकऴ् कुऱुक–दीर्घ कीर्ति को कम करके; नीण्ट तोळिनाय्–उठे हुए कन्धों वाले; निऩ् पयन्तु ऍटुत्त यान्–तुमको जन्म देनेवाले मैं; निऩ्नै वेण्टि–तुमसे माँगकर; ऍय्तिट विऴैवतु–प्राप्त करने की इच्छा करूँ; ऒन्ऱु उळतु–ऐसी एक बात है; ऍन–कहकर; विळम्पुम्–(आगे) बोले। ६१

फिर, उन्होंने श्रीराम को, बहुत आनन्द के साथ अपने पास बिठा लिया। वात्सल्यपूर्ण आँखों से उनको देखा। युद्धसन्नद्ध, परशुधर की कीर्ति को मिटानेवाले वीरबाहु ! तुम्हारे जनक, पिता —मेरी तुमसे एक प्रार्थना है। ६१

ऐय शालवु मलशितै नरुम्बॆरु मूप्पु
मॆय्य दायदु पियलिडम् बॅरुम्बरम् विशित्त
तॊय्यन् मानिलच् चुमैयुरुज् जिऱैतुऱन् दिनियान्
उय्य लावदोर् नॅऱिपुह वुदविड वेण्डुम् 62

ऐय–तात; अरु पॆरु मूप्पु मॆय्यतु आयतु–कष्टकर और आदर योग्य बुढ़ापा शरीर को मिल गया; चालवुम् अलचितॆऩ्–बहुत जर्जर हो गया; पियल् इटम्–गर्दन पर; पॆरुम् परम्–बड़ा भार; विचित्त–जो बँधा हुआ है; तॊय्यल्–दुखदायी; मा निलम् चुमै उरुम्–विशाल भूमि रूपी उस भार से युक्त; चिऱै–वद्ध जीवन से; यान् इनि तुऱन्तु–मैं अब विमुक्त होकर; उय्यल् आवतु–उज्जीवन के; ओर् नॆऱि पुक–एक (तप के) मार्ग में प्रवेश करूँ, इसमें; उतविट वेण्टुम्–तुमको मेरी सहायता करनी चाहिए। ६२

हे तात ! दुर्वह पर आदरणीय वार्द्धक्य मेरे शरीर को ग्रस गया है। मैं वहुत जर्जर हो गया हूँ। गर्दन पर बड़ा भू-भार बँधा हुआ है। यह कारा है जिस स्थिति से छूटकर मैं वैकुण्ठप्राप्ति के उज्जीवन का मार्ग अपनाना चाहता हूँ। उसमें तुम्हें मेरी सहायता करनी चाहिए। ६२

उरिमै मैन्दरैप् पॅरुहिन्ऱ् दुरुत्तुयर् नीङ्गि
इरुमै युम्बॅऱ्ऱ् कॅन्बदु पॅरियव रियऱ्कै
दरुम मन्ननिऱ् ऱन्दयान् ऱळर्वदु तहवो
करुम मॅन्वयिऱ् चॅय्यिनॅन् कट्टुरै कोडि 63

उरिमै मैन्तरै पॅऱुकिन्ऱतु–स्वकीय पुत्रों को प्राप्त करना; उऱु तुयर् नीङ्कि–दुख-निवारण पाकर; इरुमैयुम् पॅऱऱ्कु–इह-पर (सुख) लाभार्थ है; ऍन्पतु–यह; पॅरियवर् इयऱ्कै–बड़ों का सिद्धान्त है; तरुमम् अन्न निन्–धर्म देवता सदृश तुम्हें; तन्त यान्–(जन्म) दिया (जिसने वह) मैं; तळर्वतु तकवो–(वंचित रहकर) क्लेश उठाना उचित है क्या; ऍन् वयिन् करुमम्–मेरे प्रति कर्तव्य; चॅय्यिन्–तुम करना चाहो तो; ऍन् कट्टुरै कोटि–मेरा हित-वचन मान लो। ६३

बड़ों के बताये सिद्धांत के अनुसार स्वकीय पुत्रों का प्राप्त करना कठोर दुखों से निवृत्त होकर इह-पर दोनो सुखों का लाभ करने के लिए ही है। धर्मदेवता सदृश तुम्हें पुत्र के रूप में प्राप्त करने के बाद मेरा संकट में रहना उचित है क्या? मेरे प्रति तुम अपना कर्तव्य करना चाहो तो मेरा हितवचन मान लो। ६३

❀ मैन्द नङ्गुल मरबितिल् वन्दरुळ् वेन्दर्
तन्द मक्कळै कडैमुऱै नॅडुनिलन् दाङ्ग
ऐन्दॉ डाहिय मुप्पहै मरुङ्गऱ वहऱ्ऱि
उय्न्दु पोयिन्ना रुऴिनिन् ऱॅण्णिनु मुलवार् 64

मैन्त–पुत्र; नम् कुलम् मरपितिल्–हमारे कुल की परम्परा में; वन्तरुळ् वेन्तर्–क्रमागत राजा लोग; कटै मुऱै–अपने अन्तिम काल में; नॅटु निलम्–विशाल भू (भरण के) भार को; तम् तम् मक्कळै ताङ्क–अपने पुत्रों को ही वहन करने देकर; ऐन्तॉटु आकिय–पाँच (इन्द्रियों) से सम्बन्धित; मुप्पकै–(काम, क्रोध, लोभ) तीन शत्रुओं को; मरुङ्कु अऱ–पूर्णरूप से काटते हुए; अकऱ्ऱि–हटाकर; उय्न्तु पोयिनार्–(जो) तर गये; ऊऴि निन्ऱु ऍण्णितुम्–कल्पकाल तक रहकर गिनें तो भी, (वे); उलवार्–गिने नहीं जा सकते। ६४

हे मेरे पुत्र! हमारे कुल में पैदा होकर जो राजा अपने अंतिम समय में विशाल भूमि के शासन का भार अपने पुत्रों को उठाने देकर, इंद्रिय-सम्बद्ध काम, क्रोध और मोह रूपी तीनो शत्रुओं को मिटाते हुए तर गये उनकी संख्या, युग भर रहकर गिने तो भी पूरी नहीं हो सकती। ६४

मुन्नै यूऴ्विन्नैप् पयत्तिनु मुऱ्ऱिय वेळ्विप्
पिन्नै यॅय्दिय नलत्तिनु मरिदिनिऱ् पॅऱ्ऱेन्
इन्नम् यानिन्द वरशिय लिडुम्बय नॅन्ऱाल्
निन्नै यीन्ऱुळ पयत्तिनि निरम्बुव दियादो 65

मुन्तै–पूर्व के; ऊळ्वित्तै पयत्तित्तुम्–कर्मों के फल से; पिन्तै–बाद के (इस जीवन में); मुट्रिय–पूरा किये हुए; वेळ्वि–यज्ञों से; अयतिय नलत्तित्तुम्–प्राप्त सुफल से; अरितिनिल् पॅट्रेन्–दुर्लभ तुमको (मैंने पुत्र के रूप में) पाया है; यान्–मैं; इन्तम्–आगे भी; इनृत अरचियल् इटुम्पैयन्–इस राज्य की झंझट का भागी रहूँ; अन्राल्–तो; नितृतै–तुमको; ईन्रु उळ पयत्तितिन्–जन्म देने के फलस्वरूप; निरम्पुवतु यातो–दूर हुई कमी कौन सी। ६५

मेरे प्राचीन कर्म प्रबल थे। इस जन्म में भी मैंने कठिन यज्ञादि किये। उसी का शुभफल था कि मैंने तुम्हें पुत्र पाया। अब भी शासन के झंझट से मुक्त न हुआ तो तुम्हारे पैदा होने से क्या लाभ हुआ? कौन सी कमी पूरी हुई? । ६५

ऑरुतत लैप्परत् तॉरुत्तलैप पङ्गुवि नूट्दि
अॅरुत्ति नीङ्गुनिन् ट्रियल्वरक् कुळैन्दिड रुळक्कुम्
वरुत्त नीङ्गियव् वरम्बरु तिरुविनै मरुवुम्
अरुत्ति युण्डॅनक् कैयवी दरुळिड वेण्डुम् 66

ऑरु तलै–एक ओर; परत्तु–भार; ऑरु तलै–दूसरी ओर; पङ्कुवित्–पंगु रहनेवाले; ऊर्ति अॅरुत्तितिन्–सवारी के बैल के समान; ईङ्कु नित्रु–यहाँ से; इयल् वर कुळैन्तु–अवश्यम्भावी कष्ट उठाकर; चुमन्तु–भार ढोते हुए; इटर् उळक्कुम्–क्लेश सहने के समान; वरुत्तम्–(राज्य-भार की) झंझट से; नीङ्कि–मुक्त होकर; अ वरम्पु अरु तिरुवित्तै–उस निस्सीम (मोक्ष-) साम्राज्य-श्री को; मरुवुम् अरुत्ति–पाने की प्रबल इच्छा; अॅनक्कु उण्टु–मुझे है; ऐय–तात; ईतु–यह माँग; अरुळिट वेण्टुम्–तुमको पूरी करने की कृपा करनी चाहिए। ६६

मैं उस लँगड़े बैल के समान हूँ जो एक ओर पंगुता और दूसरी ओर बोझ का भार वहन करते हुए बड़ा संकट उठा रहा है। उस दुखदायक स्थिति से छूटकर निस्सीम मोक्ष-साम्राज्य को प्राप्त करने की मेरी बलवती इच्छा हो गयी है। तात! यह माँग पूरी करो। ६६

आळु नन्नॅरिक् कमैवरु ममैदियिन् ट्राह
ताळु नङ्गुल नायह नरैविरि कमलत्
ताळि नल्हिय गङ्गयैत् तन्दुतन् दयरै
मीळ्वि लावुल हेट्रिना नॉरुमहन् मेनाळ् 67

मेल् नाळ्–पहले एक दिन; ऑरु मकन्–उत्तम एक पुत्र (भगीरथ); आळुम् नल् नॅरिक्कु–भोग्यमान (मुक्ति के) श्रेष्ठ मार्ग के लिए; अमैवरुम्–आवश्यक; अमैति–योग्यता; इन्रु आक–नहीं हो जाने से; नाळुम्–सदा; नम् कुलम् नायकन्–हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के; नरै विरि कमलम् ताळिन्–शहद बहानेवाले कमल के समान चरणों से; नल्किय–(उनके द्वारा) दी गई; कङ्कैयै–(आकाश-) गंगा को; तन्तु–(इस भूमि में) लाकर; तन्तैयरै–अपने पितरों को; मीट्पु इला उलकु–(जहाँ से) पुनः आना नहीं है उस (मोक्ष) लोक को; एट्रिनान्–पहुँचा दिया। ६७

तुम्हें मालूम है। सगर-पुत्रों को मोक्षप्राप्ति की योग्यता का अभाव हो गया था। तब हमारे कुल के एक श्रेष्ठ पुत्र (भगीरथ) कड़ी तपस्या करके हमारे कुलदेवता श्रीरंगनाथ के चरणों से निःसृत गंगाजी को भूमि पर लाये। जिससे सगर-पुत्र तरे और श्रीवैकुंठ गये जहाँ मे पुनरावृत्ति नहीं होती (फिर से जन्म लेना नहीं होता)। ६७

मन्न राऩव रल्लर्मेल् वाऩवर्क् करशाम्
पॊन्ऩिन् वार्हळड् पुरन्दरन् पोलिय रल्लर्
पिन्नु मादवन् दॊडङ्गिऩोन् पिऴैत्तव रल्लर्
शॊन्म ड़ामहप् पॆड़्ड़व रेतुयर् तुड़न्दार् 68

तुयर् तुड़न्तार्—दुख-मुक्त; मऩ्ऩर् आतवर् अल्लर्—राजा जो बने हैं, वे नहीं हैं; मेल्—ऊपर (परलोक में); वाऩवर्क्कु अरचु आम्—देवों का राजा; पॊऩ्ऩिऩ् वार् कऴल्—स्वर्णरचित और लम्बी पायल के (धारक); पुरन्तरऩ् पोलियर् अल्लर्—पुरन्दर सदृश लोग भी नहीं; पिऩ्ऩुम्—और; मातवम् तॊटङ्कि—महान तपस्या आरम्भ करके; नोऩ्पु इऴैत्तवर् अल्लर्—अनेक व्रतों का पालन (जिन्होंने) किया, वे भी नहीं; चॊल् मड़ा—आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले; मकवु पॆड़्ड़वरे—पुत्र प्राप्त ही हैं। ६८

सचमुच (जन्म-मरण के) संकट से मुक्त होनेवाले नरपति नही हैं; स्वर्ण-पायलधारी देवेन्द्र-सम लोग भी नहीं है। महान तपस्वी और अटलव्रती भी नहीं हैं। पर वे ही पिता दुख-मुक्त होते हैं जिनके आज्ञाकारी (पिता की आज्ञा का उल्लंघन न करनेवाले) पुत्र पैदा हुए हैं। ६८

❀ अऩ्ऩैय दादलि नरुन्दुयर्प् पॆरुम्बर मरशन्
विऩ्ऩैयि नॆन्वयिन् वैत्तन ऩॆनक्कॊळल् वेण्डा
पुऩ्ऩैयु मामुडि पुऩ्ऩॆन्दिन्द नल्लड़म् बुरक्क
निऩ्ऩैयल् वेण्डुम्या निन्वयिड़् पॆरुवदी दॆन्ड़ान् 69

अऩ्ऩैयतु आतलिऩ्—(धर्म की रीति) ऐसी है, इसलिए; अरु तुयर् पॆरु परम्—अतिशय दुखदायी इस बड़े भार को; विऩ्ऩैयिऩ्—(कपट) नीति से; अरचऩ्—राजा ने; ऍऩ् वयिऩ्—मेरे ऊपर; वैत्ततऩ्—लाद दिया; ऍन—ऐसा; कॊळल् वेण्टा—मत लेना चाहिए; पुऩ्ऩैयुम् मा मुटि—धार्य श्रेष्ठ किरीट को; पुऩ्ऩॆन्तु—धारण करके; इन्त नल् अड़म्—इस श्रेष्ठ (पिता के प्रति) धर्म का; पुरक्क निऩ्ऩैयल् वेण्टुम्—पालन करने को सोचना चाहिए; निऩ् वयिऩ्—तुम्हारे पास; याऩ् पॆरुवतु—मेरी याचना; ईतु—यही; ऍऩ्ड़ाऩ्—कहा। ६९

श्रीराम ! धर्म की यही रीति है। इसलिए तुम पीछे यह मत कहो कि शासन का भार मेरे ऊपर कपटनीति से लाद दिया गया। धार्य-मुकुट का धारण यही धर्मनिर्वाहार्थ है। यह सोचना चाहिए। यही मेरी तुमसे याचना है। —दशरथ ने इतना कहा। ६९

❀ ताद यप्परि शुरैशॅयत् तामरैक् कण्णन्
काद लुऱ्ऱिल निह्ळ्न्दिलन् कडनिदॅन् ऱुणर्न्दुम्
यादु कॊऱ्ऱव नेविय दढुशॅय लन्ऱो
नीदि यॅऱ्कॅन निनैन्दुमप् पणितलै निन्ऱान् 70

तातै–पिता (के); अ परिचु उरै चॅय–ऐसा कहने पर; तामरै कण्णन्–पुण्डरीकाक्ष ने; कातल् उऱ्ऱिलन्–स्पृहा न की; इकळ्न्तिलन्–न उपेक्षा की; कटन् इतु–कर्तव्य यह; ऍन्ऱु उणर्न्तुम्–ऐसा सोचकर और; कॊऱ्ऱवन् एवियतु–राजा द्वारा आज्ञापित; अतु चॅयल् अन्ऱो–वह करणीय है न; ऍऱ्कु नीति–मेरा धर्म; ऍन निनैन्तुम्–ऐसा समझकर; अ पणि तलै निन्ऱान्–उस सेवा को शिरोधार्य किया। ७०

पिता के इतना कहने पर पुंडरीकाक्ष श्रीराम सहमत हुए; इसलिए नहीं कि उनमें राज्य की स्पृहा थी। न ही उन्होंने उसकी उपेक्षा की। "यह हमारा कर्तव्य है" —उनमें यह भाव था। साथ-साथ "चक्रवर्ती की आज्ञा का पालन करना ही मेरा धर्म है" —यह भी विचार था। अतः उन्होंने उस सेवा को शिरोधार्य मान लिया। ७०

❀ कुरुशिल् शिन्दयै मनक्कॊण्ड कॊऱ्ऱवॆण् गुडैयान्
तरुदि यिव्वर मॅनच्चॊल्लि युयिरुऱत् तळुविच्
चुरुदि यन्नदन् मन्दिरच् चुऱ्ऱमुन् ज़ुऱ्ऱप्
पॊरुविन् मेरुवुम् पॊरुवरुङ् गोयिल्पोय्प् पुक्कान् 71

कुरुचिल् चिन्तैयै–श्रीराम के मन को; मनम् कॊण्ट–जो जान गये वे; कॊऱ्ऱम् वॆण् कुटैयान्–विजयी (श्वेत-) छत्रधारी; इ वरम् तरुति–यह वर दो; ऍन चॊल्लि–यह कहकर; उयिर् उऱ तळुवि–प्राणों से प्राण मिलाते हुए आलिंगन करके; चुरुति अन्न–वेद-सम; तन् मन्तिरम् चुऱ्ऱमुम्–अपने मन्त्रीमण्डल के; चुऱ्ऱ–घेरे आते; पोय्–जाकर; पॊरु इल् मेरुवुम्–उपमाहीन मेरु भी; पॊरुवु अरु–जिसकी उपमा नहीं बन सकता (उस) अपूर्व; कोयिल्–पुक्कान्–महल में पहुँचे। ७१

विजयी छत्रधारी दशरथ ने श्रीराम का मन जान लिया। इसलिए उन्होंने फिर से कहा कि 'यह वर दो मुझे'। उनको मानो अपने प्राणों से उनके प्राण मिला रहे हों, ऐसा आलिंगन किया। फिर वे अपने महल की ओर जाने लगे। वेदसम उनके मंत्रियों का मंडल भी उनके साथ गया। वे अनुपम मेरु से भी अनुपमेय अपने महल में पहुँचे। ७१

❀ निवन्द वन्दणर् नॅडुन्दहै मन्नवर् नहरत्
तुवन्द मैन्दरहण् मडन्दय रुळ्ळैपुळ्ळै तॊडरच्
चुमन्दि रत्तडन् देर्मिशैच् चुन्दरत् तिरडोळ्
अमैन्द मैन्दनुन् दन्नॆडुङ् गोयिल्शॅन् ऱडैन्दान् 72

चुन्तरम्–सुन्दर (और); तिरळ् तोळ् अमैन्त–पुष्ट कन्धों से युक्त; मैन्तनुम्–राजकुमार (श्रीराम) भी; निवन्त अन्तणर्–उत्कृष्ट ब्राह्मण; नॅटु तकै मन्नवर्–श्रेष्ठतायुक्त राजा लोग; नकरत्तु–नगर के; उवन्त मैन्तर्कळ्–प्रसन्नता से पूरित तरुण लोग; मटन्तैयर्–ऐसी ही स्त्रियाँ; उळै उळै तॉटर–पास-पास आते; चुमन्तिरन्–सुमन्त्र (चालित); तट तेर् मिचै–विशाल रथ पर; चॅन्ऱु–जाकर; तन् नॅटु कोयिल् अटैन्तान्–अपने बड़े भवन में पहुँचे । ७२

बाद श्रीराम भी उठकर सुमंत्र-चालित उन्नत रथ पर सवार हुए । रथ जाने लगा । उनके साथ उत्कृष्ट ब्राह्मण लोग, श्रेष्ठ राजा लोग, प्रसन्न तरुण लोग और स्नेहार्द्र रमणियाँ भीड़ लगाकर चलीं । वे अपने श्रेष्ठ महल में पहुँचे । ७२

❀ वॅन्ऱि वेन्दरै वरुहॆन वुवणम्वीऱ् ऱिरुन्द
पॊन्ऱि णिन्दतोट् टरुम्बॆऱ लिलच्चिनै पोक्कि
नन्ऱु शित्तिर नळिमुडि कवित्तऱ्कु नल्लोर्
शॆन्ऱु वेण्डुव वरन्मुऱै यमैक्कॆनच् चॆप्प 73

वॆन्ऱि वेन्तरै–विजयशील राजाओं को; वरुक ऎन–आइए, कहकर; उवणम् वीऱ्ऱिरुन्त–गरुड़ांकित; पॊन् तिणिन्त तोटु–स्वर्णमय पत्र पर; अरु पॆऱल्–(दूसरों के लिए) अप्राप्य; इलच्चिनै पोक्कि–लांछन लगाकर, भिजवाकर; नल्लोर्–साधुश्रेष्ठ; चॆन्ऱु–जाकर; चित्तिरम् नळि मुटि–चित्र और बहुमूल्य किरीट को; नन्ऱु–भली रीति से; कवित्तऱ्कु–(श्रीराम के सिर पर) धराने के लिए; वेण्टुव–जो आवश्यक है; वरल् मुऱै–परम्परा के अनुसार; अमैक्क–वह प्रबन्ध कीजिए; ऎन चॆप्प–यह कहने पर । ७३

चक्रवर्ती ने गरुड़ांकित स्वर्णमय पत्र पर राजा के स्वत्व का लांछन लगाकर निमंत्रण लिखा कि सब पधारें । फिर वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि साधु महात्मा ! आप जाकर अलंकारयुक्त श्रेष्ठ किरीट को श्रीराम के सिर पर लगाने के लिए (मुकुट धारण के उत्सव के लिए) आवश्यक प्रबंध यथाक्रम करने की कृपा कीजिए । तब; । ७३

❀ उरिय मादव नॊळ्ळिदॆन् ऱुवन्दनन् विरैन्दोर्
पॊरुवि ऱेर्मिशै यन्दणर् कुळात्तॊडुम् बोह
निरुवर् केण्मिन्ग ळिरामऱ्कु नॆऱिमुऱै यदनाल्
तिरुवुम् बूमियुम् जिन्दयिऱ् चिऱन्दन वॆन्ऱान् 74

उरिय–(मुकुट लगाने के) अधिकारी; मातवन्–महान तपस्वी; ऒळ्ळितु–सही है; ऎन्ऱु–कहकर; उवन्तनन्–मुदित हुए; विरैन्तु–सत्वर; अन्तणर् कुळात्तॊटुम्–विप्रसमूह के साथ; पॊरु इल्–उपमारहित; ओर् तेर् मिचै–एक रथ पर; पोक–गये, तब; निरुपर्–राजे; केळ्मिन्कळ्–सुनें; तिरुवुम्–(राज्य) श्री और; पूमियुम्–राज्य; इरामऱ्कु–श्रीराम के; नॆऱि मुऱै–(कुल गत) परम्परा के अनुसार; चिन्तैयिल्–मेरे मन में; चिऱन्तन–श्रेष्ठ हैं; ऎन्ऱान्–कहा । ७४

वसिष्ठजी ही मुकुट धराने का अधिकार रखते थे। वे महान तपस्वी राजा से, 'बहुत अच्छा' कहकर बहुत ही आनन्द के साथ अनुपम एक रथ पर आरूढ़ होकर श्रीराम के पास जाने लगे। तब विप्रों का समूह भी उनके साथ गया। चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा कि राजा लोग! सुनिये। श्रीराम राज्य की संपत्ति और शासन की भूमि दोनो का अधिकारी है। इसलिए मेरे मन में वे ही विशेष रूप से चिन्त्य रहती हैं। ७४

❀ इरैवन् शॊल्लॆनु मिन्नर् वरुन्दिनर् यारुम्
मुरैयि निन्ऱिलर् मुन्दुरु कळियिडै मूळ्हि
निरैयु नॆञ्जिडै युवहैपोय् मयिर्वऴि निमिर
उरैयुम् विण्णह मुडलॊडु मॆय्दिन रॆन्नार् 75

इरैवन् चॊल् ॲनुम्–दशरथ के वचन रूपी; इन् नरवु–मधुर मधु को; अरुन्तिनर् यारुम्–(जिन्होंने) भोगा वे सब; मुन्तु उरु कळि इटै–अतिशय आनन्द रूपी प्रवाह में; मूळ्कि–डूबकर; नॆञ्चु इटै–मन में; निरैयुम् उवकै–भरा वह आनन्द; पोय्–(पार) जाकर; मयिर् वऴि निमिर–रोमकूपों में प्रकट हुआ तो; उरैयुम् विण् अकम्–(पीछे जाकर जहाँ) रहेंगे उस स्वर्गलोक को; उटलॊटुम् ॲय्तिनर्–सशरीर पहुँच गये; ऒन्नार्–ऐसे होकर; मुरैयिन् निन्ऱिलर्–अपने-अपने मर्यादित स्थान में नहीं रह पाये। ७५

राजा का वचन मधुर मधु-सम था। राजा लोगों ने मानो उसको पीकर अपार आनन्द पाया। वह आनन्द मानो उनके हृदय से छलककर रोमकूपों में भर गया, ऐसा उनके रोम पुलकित हो गये। सशरीर तभी स्वर्ग पहुँच गये हों, ऐसा वे आनन्द भरे हो गए। इस मोद-मोह के कारण वे अपनी व्यवस्था और मर्यादा भी भूलकर, ठीक स्थान में खड़े नही रह पाये। ७५

ऒत्त शिन्दय रुवहयि नॊरुवरि नॊरुवर्
तत्त मक्कुर्ऱ वरशॆनत् तळैक्किन्ऱ मनत्तार्
मुत्त वॆण्गुडै मन्ननै मुरैमुरै तॊऴुदार्
अत्त नन्ऱॆन वन्बिनो डरिविप्प दानार् 76

उवकैयिन्–आनन्द के कारण; ऒरुवरिन् ऒरुवर्–परस्पर; ऒत्त चिन्तैयर्–समचित्त होकर; तम् तमक्कु–अपने, अपने को; अरचु उऱ्ऱ ॲन–राज्य मिल गया हो, ऐसा; तळैक्किन्ऱ मनत्तार्–लहलहानेवाले मन के हुए; मुत्तम् वॆण् कुटै मन्ननै–मोतियों से अलंकृत श्वेतछत्र वाले चक्रवर्ती को; मुरै मुरै–बारी-बारी से; तॊऴुवार्–नमस्कार करके; अत्त–पितृतुल्य; नन्ऱु ॲन–आपका अभिप्राय सही है, यह; अन्पिनोटु–प्रेम के साथ; अऱिविप्पतु आनार्–(अपने-अपने विचार) प्रकट करने लगे। ७६

श्रीराम के राज्याभिषेक के सम्बन्ध में उनका एकसग विचार था। खुद उन्हें राज्य मिल गया हो, ऐसे वे संतोष से भर गये। उनके मन लहलहा उठे। वे वारी-वारी से, मोतियों से सज्जित श्वेत छत्रधारी दशरथ को नमस्कार कर उनको पितृतुल्य —ऐसा सम्बोधित करके प्यार के साथ यों बोले। ७६

मूवॅऴु मुऱैमयॅङ् गुलङ्गण् मुऱ्ऱऱप्, पूवॅऴु मऴुविनाऱ् पॊरुदु पोक्किय
शेवहन् शेवहम् जॅहुत्त शेवहऱ्, कावदिव् वुलहमी दऱनॆन् ऱाररो 77

मू ऍऴु मुऱैमै–तीन के सात (इक्कीस) पीढ़ियाँ; ऍम् कुलङ्कळ्–हमारे कुल; मुऱ्ऱु उऱ–नाश करके; पू ऍऴु मऴुविनाल्–तीक्ष्ण परशु से; पॊरुतु–युद्ध करके; पोक्किय–(जिन्होंने) निर्मूल किया; चेवकन् चेवकम्–उन वीर की वीरता को; चॅकुत्त–परास्त करनेवाले; चेवकऱ्कु–वीर राघव को; इ उलकम् आवतु–यह भूमि हो; ईतु–यह; अऱन्–धर्मसम्मत हो; ऍन्ऱार्–कहा। ७७

आपने श्रीराम को राजा वनाने का विचार किया है। श्रीराम ने उन परशुराम की वीरता को परास्त किया जिन्होंने हम क्षत्रियकुल के राजाओं की इक्कीस पीढियों से परशु लेकर युद्ध करके उनको मारा था। यह अवश्यमेव धर्म-सम्मत कार्य है। ७७

वेऱिला मन्नरुम् विरुम्बि यिन्नदु, कूऱिना रदुमनङ् गॊण्ड कॊऱ्ऱवन्
ऊऱिय वुवहयै यॊळिक्कुञ् जिन्दयान्, माऱुमो रळवैशाल् वाय्मै कूऱिनान् 78

वेऱु इला मन्नरुम्–असमान विचार न रखनेवाले वे राजा भी; विरुम्पि–चाहकर; इन्नतु कूऱिनार्–ऐसा बोले; अतु मनम् कॊण्ट कॊऱ्ऱवन्–उसको मन में धरकर चक्रवर्ती; ऊऱिय उवकैयै–उमड़ते आनन्द को; ऒळिक्कुम् चिन्तैयान्–छिपाने का विचार करके; माऱुम्–फिर भी; ओर् अळवै चाल् वाय्मै–थाह लेने की एक वार्ता; कूऱितान्–कही। ७८

आपस मे विचारवैषम्य न रखनेवाले राजाओं ने यह वात सच्चे प्यार के मन से कही। चक्रवर्ती ने यह जान भी लिया। तो भी दशरथ ने उमड़ते आनन्द को छिपाने का संकल्प करके उसे प्रकट नही होने दिया। उनके मन की और थाह लेने के विचार से एक वार्ता कही। ७८

महन्वयि नन्बिनान् मयङ्गि यानिदु, पुहलनीर् पुहन्ऱविप् पॊम्मल् वाशहम्
उहवयिन् मॊळिन्ददो वुळ्ळ नोक्कियो, तहवॆन निनैन्ददो तन्मै यादॆन्ऱान् 79

मकन् वयिन् अन्पिनाल्–(अपने) पुत्र के प्रति प्रेम के कारण; मयङ्कि–मोहित होकर; यान् इतु पुकल–मेरे इस प्रकार कहने से; नीर् पुकन्ऱ–आपके (उत्तर में) कहे हुए; इ पॊम्मल् वाचकम्–ये प्रकाशमय (मोदपूर्ण) वचन; उकवैयिन् मॊळिन्ततो–

सन्तोष से कहे हुए; उळ्ळम् नोक्कियो–(या) मेरा रुख देखकर; तकवु अँन्न नितैन्ततो–उचित ही समझने के कारण; तन्मै यातु–प्रकार क्या है; अँन्रान्–पूछा। ७६

चक्रवर्ती ने राजाओं से कहा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि मेरे अपने पुत्र के प्रेम के मोह में यह कहने पर आपने यह उत्साहवर्धक उत्तर यों ही अपने मौज में कहा है ? या मेरा मन रखने के लिए ? या आपने सचमुच इसको उचित समझा है ? कैसा है ? —यह बता दें। ७९

इव्वहै युरैशॅय विरुन्द वेन्दर्हळ्, शॅव्वियोय् निन्ट्रिरु महर्कुत् तेयत्तोर्
अव्ववर्क् कव्ववर्क् कमैन्द वारुरुम्, अॅव्वमि लन्बिनै यिनिदु केळॅना 80

इ वकै उरैचॅय–ऐसा कहने पर; इरुन्त वेन्तर्कळ्–(वहाँ जो) रहे (वे) राजा लोग; चॅव्वियोय्–नेक चक्रवर्ती; निन् तिरु मकर्कु–आपके श्रीमान पुत्र के प्रति; तेयत्तोर्–देशवासियों में; अव्ववर्क्कु अव्ववर्क्कु—उन-उन के; अमैन्तवारु–योग्य रीति से; उरुम्–होनेवाले; अॅव्वम् इल् अन्पितै–निर्दोष प्रेम को; इनितु केळ्–प्रसन्नता से सुनिए; अॅना–कहकर। ८०

दशरथ के ये वचन सुनकर राजाओं ने उत्तर में कहा कि नेक चक्रवर्ती ! इस देश के वासी आपके पुत्र श्रीराम पर अपनी-अपनी मर्यादा और स्थिति के अनुसार कैसा प्रेम रखते हैं ? उस निर्मल प्रेम की बात कहते हैं, सुनिये। ८०

दानमुन् दरुममुन् दहवुन् दन्मशेर्, ञानमु नल्लवर्प् पेणु नन्मयुम्
मानमु मैयनिन् महर्कु वैहुमाल्, ईन्मिल् शॅल्वम्वन् दियैव दॅन्नवे 81

ऐय–प्रभु; निन् मकर्कु–आपके पुत्र के प्रति; ईनम् इल् चॅल्वम्–अनिन्द्य (राज्य) श्री; वन्तु इयैवतु अॅन्न–आ मिल जाय, इस योग्य; तानमुम्–दान; तरुममुम्–धर्मपरायणता; तकवुम्–शील; तन्मै चेर् ञानमुम्–श्रेष्ठ तत्व-ज्ञान; नल्लवर् पेणुम् नन्मैयुम्–साधुओं का त्राण करने का अच्छा स्वभाव; मानमुम्–और मान; वैकुम्–(उन्हें) प्राप्त हैं। ८१

प्रभु ! आपके पुत्र में अक्षय राज्यश्री की प्राप्ति के लिए आवश्यक और अनुकूल सारे गुण हैं। दानशीलता, धर्मपरायणता, शील, श्रेष्ठ तत्वज्ञान, साधुत्राण का स्वभाव, मान —ये सब उनमें हैं। ८१

ऊरुणि निरैयवु मुदवु माडुयर्, पार्नुहर् पयन्मरम् पळुत्त दाहवुम्
कारमळै पॉळियवुङ् गळनि पायनदि, वार्पुनल् पॅरुहवु मरुक्किन् ड्रार्हळ् यार् 82

ऊरुणि निरैयवुम्–(बस्ती के) तालाब के भरने पर; उतवुम् माटु–सब के लिए सहायक (सुगम) स्थान में; उयर्–खूब बढ़े हुए; पार् नुकर् पयन् मरम्–लोक-खाद्य फलों वाले वृक्ष; पळुत्ततु आकवुम्–फलदार होने पर; कार् मळै पॉळियवुम्–मेघ वर्षा करने पर; कळनि पाय् नति–खेतों को सींचनेवाली नदी में; वार् पुनल् पॅरुकवुम्–अधिक जल के बहने पर; मरुक्किन्ड्रार्कळ–इनकार करनेवाले; यार्–कौन। ८२

वस्ती में सर्वभोग्य तालाव में जल भर जाय, ग्राम स्थल में रहने-वाले फलवृक्ष फलें, वर्षाकालीन मेघ वरसें, खेती को सीचनेवाली नदी में धार वढ़ जाय तो इनका सभी स्वागत करेंगे। कौन होगा जो इनसे अतृप्त होगा ? । ८२

पनैयवा नॆडुङ्गरप् परुम यानयाय्, निनैयवान् दहैयनाय् निमिर्न्द मन्नुयिर्क्
कॆनैयवा र्त्विन निराम नीण्डवर्, कनैयवा र्त्विन ववैयु मॆन्र्रनर् 83

पनै अवाम् नॆट्ु करम्–ताड़ के पेड़ के समान लम्बी सूंड़ और; परुमम्–हौदे से युक्त; यानैयाय्–राजगज वाले; इरामन्–श्रीराम; निन्नै अवाम् तकैयन् आय्–आपके समान योग्यता वाले होकर; निमिर्न्त–संसार में भरे; मन् उयिर्क्कु–अक्षय जीवों पर; ऎनैय आऱु अन्पिनन्–जिस प्रकार का प्रेम रखते हैं; अनैय आऱु–उसी प्रकार के; अवैयुम्–वे भी; अवर्कु–उन पर; ईण्टु अन्पित–खूब प्रेम करनेवाले हैं; ऎन्र्रतर्–कहा। ८३

उस गजराज के स्वामी जिसकी सूंड़ लंवे ताल-वृक्ष के समान है और जो हौदे से सजा है, आपके पुत्र आपके ही समान योग्यता और श्रेष्ठता रखते है। वे लोकों के अक्षय जीवों पर जितना स्नेह रखते हैं उतने ही वे जीव भी इनसे खूब प्रेम करते है। ८३

मॊऴिन्दद्ु केट्टलु मॊय्त्तु नॆञ्जिन्नैप्
पॊऴिन्दपे रुवहयन् पॊङ्गु कादलन्
कऴिन्ददोर् तुयरिनन् कऴिक्कुञ् जिन्दयन्
वऴिन्दकण् णीरिनन् मन्नन् कूऱुवान् 84

मॊऴिन्तत्तु केट्टलुम्–(राजाओं का) कथन सुनने पर; मन्नन्–चक्रवर्ती; नॆञ्चिनै मॊय्त्तु–मन में भरकर; पॊऴिन्त–छलकनेवाले; पेर् उवकैयन्–वड़े आनन्द से युक्त होकर; पॊङ्कु कातलन्–उमड़ते प्रेम वाले बनकर; कऴिन्तत्तु ओर् तुयरिनन्–(जो) छूट गया (उस) दुख वाले होकर; कऴिक्कुम् चिन्तैयन्–उमड़नेवाले चित्त के; वऴिन्त कण् नीरिनन्–वहनेवाले अश्रु की आँखो के बनकर; कूऱुवान्–वोलने लगे। ८४

राजाओं ने जव यह कहा तव दशरथ के मन में इतना आनन्द उमड़ आया कि वह उसमें नही समा सका। वात्सल्य वढ़ा। उनकी चिंता दूर हुई। प्रसन्नमन हुए। उनकी आँखों से आनन्द के आँसू ढलक आये। वे वोले। ८४

शॆम्मयिर् र्रुमत्तिर् चॆयलिर् रीङ्गिन्वाल्
वॆम्मयि नीळुक्कत्तिन् मॆन्मै मेविनीर्
ऎम्मह नॆन्वदॆन् नॆरियि नीङ्गिवन्
नुम्महन् कैयडै नोक्कु मीङ्गॆन्र्रान् 85

चॅम्मैयिल्–पक्षपात रहित रहने में; तरुमत्तिल्–और धर्मपालन में; चॅयलिल्–अच्छे कार्यों में; तीङ्कित् पाल् वॅम्मैयिन्–अन्याय के प्रति क्रोध में; ऑळुक्कत्तिन्–श्रेष्ठ आचरण में; मेन्मै मेवित्तीर्–उन्नत हुए लोगों; इवन्–यह श्रीराम; ईङ्कु–आगे; ऍम् मकन् ऍन्पतु–मेरा पुत्र है, यह कहना; ऍन्–क्या (अर्थ रखता है); नॅरियिन्–क्रम से; नुम् मकन्–आपका पुत्र है; कैयटै–आपका धरोहर है; ईङ्कु नोक्कुम्–उसी दृष्टि से देखिए; ऍन्ऱान्–कहा । ८५

(उन्होंने राजाओं से कहा—) निष्पक्षता में, धर्मपालन में, अच्छे कामों में, अन्याय के प्रति क्रोध की गर्मी दिखाने में, और आचरण में बढ़े हुए राजाओ ! आगे श्रीराम को मैं अपना ही पुत्र मानूँ इसका कोई अर्थ नहीं रहेगा। वह आपका ही पुत्र है। उसे आपका धरोहर मानता हूँ। आप भी उसी दृष्टि से उसको देखिये। —दशरथ ने यह कहा। ८५

अरचरै विट्टत्तबि नाणै मन्नवन्, पुरैतबु नाळोडुम् बॊळुदु नोक्कुवान्
उरैतॆरि कणिदरै यॊरुङ्गु कॊण्डॊरु, वरैपॊरु मण्डब मरुङ्गु पोयिनान् 86

अरचरै विट्टतपिन्–राजाओं को बिदा देने के बाद; आणै मन्नवन्–आज्ञापक चक्रवर्ती; पुरै तपु–निर्दोष; नाळोटु–नक्षत्र के साथ; पॊळुतु–मुहूर्त को; नोक्कुवान्–शोधने के लिए; उरै तॆरि–शास्त्रज्ञ; कणितरै–ज्योतिषियों को; ऑरुङ्कु कॊण्टु–साथ लेकर; वरै पॊरु–पर्वततुल्य; ऑरु मण्टपम् मरुङ्कु–एक मण्डप में; पोयिनान्–पहुँचे। ८६

आज्ञापक चक्रवर्ती ने उनको बिदा दिया। फिर वे निर्दोष नक्षत्र और मुहूर्त शोध लेने के विचार से, ज्योतिषियों को साथ लेकर एक पर्वततुल्य बड़े भवन में गये। ८६

*** आण्ड वन्निलै याह वरिन्दवर्, पूण्ड कादलर् पूट्टविळ् कॊङ्गयर्**
नीण्ड कून्दलर् नीळ्हलै ताङ्गलर्, ईण्ड वोडिन रिट्टिडै यिर्रिलर् 87

आण्टु–वहाँ; अवन् निलै आक–उनकी यह स्थिति रही तब; अरिन्तवर्–समाचार को जानकर (कुछ स्त्रियाँ); पूण्ट कातलर्–प्रेम-भरी; पूट्टु अविळ् कॊङ्कैयर्–(जिनका) अँगिया खुल गया, ऐसे स्तनों वाली; नीण्ट कून्तलर्–मुक्तकेश; नीळ् कलै ताङ्कलर्–ढीले पड़े वस्त्र को न सँभालनेवाली; ईण्ट–सत्वर; ओटिनर्–(कौसिल्या के पास) भागीं; इट्टु–भाग्य की बात थी; इटै इर्रिलर्–भग्नकमर नहीं हुई। ८७

राजा का समाचार यह रहा। तब कुछ चार स्त्रियों ने यह समाचार पाया तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। आनन्दातिरेक में उन्होंने अपने स्तनों का अँगिया के खुलने से बाहर प्रकट होना नहीं जाना, केश खुल गया उसकी परवाह नहीं की, वस्त्र ढीले होने लगे उनको नहीं संभाला, वे बहुत तेजी से भागीं। भाग्य था कि उनकी कमरें नहीं टूटीं। ८७

❀ आडु हिन्ऱनर् पण्णडै विन्ऱियै, पाडु हिन्ऱनर् पार्त्तवर्क् केकरम्
शूडु हिन्ऱनर् शॉल्लुव दोर्हिलार्, माडु शॅन्ऱनर् मङ्गयर् नाल्वरे 88

मङ्कैयर नाल्वर्–वे स्त्रियाँ चार थीं, वे; आटुकिन्ऱनर्–नाचतीं; पण् अटैवु इन्ऱियै–राग शुद्धि के विना ही; पाटुकिन्ऱनर्–गातीं; पार्त्त वर्क्कु–सामने जिनको देखती है, उन सवको; करम् चूटुकिन्ऱनर्–हाथ जोड़तीं; चॊल्वतु ओर्किलार्–क्या कहना, नहीं जानतीं; माटु चॅन्ऱनर्–पास गईं। ८८

वे नाचतीं, बिना राग की दुरुस्ती के ही गातीं। जो भी सामने आते उनके आगे हाथ जोड़तीं। उनसे क्या वात करती हैं—यह भी नहीं जानती। इस स्थिति में वे कौसल्यादेवी के पास पहुँचीं। ८८

❀ कण्ड मादरैक् कादलि नोक्किनाळ्, कॊण्डल् वण्णनै नल्हिय कोशलै
उण्डु पेरुव हैप्पॊरु ळन्नदु, तॊण्डै वायिनिर् शॊल्लुमि नीण्डॆन्ऱाळ् 89

कॊण्टल् वण्णनै–मेघवर्ण (श्रीराम को); नल्किय–देनेवाली; कोचलै–कौसल्यादेवी (ने); कण्ट मातरै–अपने सामने दृष्ट उन स्त्रियों को; कातलिन् नोक्किनाळ्–स्नेह से देखकर; तॊण्टै वायित्तीर्–(विंव-) फल-सम अधर वालियों; पेर् उवकै पॊरुळ् उण्टु–(इस) वड़े आनन्द का अर्थ होगा; अन्नतु–उसको; ईण्टु कूऱुमिन्–यहाँ वताओ; ऍन्ऱाळ्–कहा। ८९

कौसल्या ने अपने सामने आई उन सवको स्नेह से देखा। मेघ वर्ण श्रीराम की माता ने उनसे पूछा। तुम्हारे आनन्दप्रदर्शन का कोई महत्वपूर्ण अर्थ अवश्य होगा। वह क्या है—वताओ। ८९

❀ मन्नॆ डुङ्गळल् वन्दु वणङ्गिडप्, पन्नॆ डुम्बहल् पारळिप् पायॆन
निन्नॆ डुम्बुदल् वन्ऱै नेमियान्, तॊन्नॆ डुम्मुडि शूट्टुहिन् ऱान्ऱार् 90

नेमियान्–आज्ञाचक्र चलानेवाले (चक्रवर्ती) ने; मन्न् वन्तु–राजाओं के आकर; नॆटु कऴल् वणङ्किट–सम्मान्य पायलधारी पैरों पर नमस्कार करते; पल नॆटु पकल्–अति दीर्घकाल तक; पार् अळिप्पाय्–भूमि का पालन करो; ऍन–ऐसा; निन् नॆटु पुतल्वन् तनै–आपके श्रेष्ठ पुत्र को; तॊल् नॆटु मुटि–प्राचीन और उत्कृष्ट किरीट; चूट्टुकिन्ऱान्–पहनायेंगे; ऍन्ऱार्–कहा। ९०

उन्होने उत्तर दिया। आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती आपके पुत्र के सिर पर प्राचीन और गौरवान्वित किरीट पहनायेंगे। श्रीराम राजा राम वनेंगे। सभी राजा लोग उनके सम्मान्य पायलधारी चरणों पर अपने शीश नवावेंगे। "चिरकाल तक इस रीति से शासन करो" —यह चक्रवर्ती ने श्रीराम से कहा है। ९०

❀ शिऱक्कुम् जॆल्व महऱ्कॆनच् चिन्दयिल्, पिऱक्कुम् पेरुव हैक्कडल् पॆट्पर
वऱक्कु मावड वैक्कन लानदाल्, तुऱक्कुं मन्नव नॆन्नुन् दुणुक्कमे 91

मकर्कु–पुत्र को; चॅल्वम् चिऱक्कुम् अॅन्–राज्यश्री पाने का गौरव मिलेगा, यह सोच; चिन्तैयिल् पिऱक्कुम्–मन में उत्पन्न; पेर् उवकै कटल्–बड़े प्रेम के सागर को; पॅट्पु अऱ–अनचाहे रूप से; वऱक्कुम्–सुखानेवाली; मा वटवै कनल्–बड़ी बड़वाग्नि सी; मन्नवन् तुऱक्कुम्–राजा वानप्रस्थ होंगे; अॅन्नुम्–इससे; तुणुक्कम्–(मिलनेवाला) भय; आनतु–हुआ। ९१

कौसल्या के मन में यह सुनकर बड़ा आनन्द हुआ कि मेरे पुत्र को राज्य मिलेगा और वह सम्मानित बनेगा। वह बड़ा सागर-सा उमड़ा तो भी उसको अनचाहे रूप से सुखानेवाली बड़वाग्नि बना, यह डर कि राजा वानप्रस्थ होंगे और विरक्त बनेंगे। ९१

❀ अन्न ळायु मरुम्बॅऱ् लारमुम्, नन्नि दिक्कुवै युम्बल नल्हित्तन्
तुन्नु कादऱ् चुमित्तिरै योडुम्बोय्, मिन्नु नेमियन् मेविड मेविनाळ् 92

अन्नताळ् आयुम्–वैसी होने पर भी; आरमुम्–हार; नल् निति कुवैयुम्–धनराशि को; पल नल्कि–बहुत देकर; तन् तुन्नु कातल्–अपने अधिक प्यार का पात्र; चुमित्तिरैयोटुम्–सुमित्रा के साथ; पोय्–जाकर; मिन्नुम् नेमियन् मेवु इटम्–दीप्तिमान चक्रधारी (श्रीरंग जी) के श्रेष्ठ मन्दिर में; मेविनाळ्–पहुँचीं। ९२

मन की यह (मिश्रित) स्थिति होने पर भी कौसल्यादेवी ने उन्हें अनेक हार और धनराशि इनाम में दी। उन्हें विदा देकर वे अपनी प्यारी सौत सुमित्रा के पास आई। उनको भी साथ लेकर वे दीप्तिमान चक्रधारी श्री रंगजी के मंदिर में पहुँची। ९२

❀ मेवि मॅन्मल राणिल मादॅन्नुम्, तेवि मारॊडुन् दॆवर्हळ् यावर्क्कुम्
आवि युम्मऱि वुम्मुद लायवन्, वावि मामलर्प् पादम् वणङ्गिनाळ् 93

मेवि–पहुँचकर; मॅल् मलराळ्–कोमल कमला श्री देवी; निल मातु–भूदेवी; अॅन्नुम्–इति; तेवि मारॊटुम्–दो पत्नियों के साथ; तेवर्कळ्–देवों के और; यावर्क्कुम्–सभी के; आवियुम्–प्राण; अऱिवुम्–प्रज्ञा; मुतल्–और आदि; आयवन्–जो बने है; वावि मा मलर् पातम्–(उनके) तालाब में अभी खिले कमल के समान चरणों की; वणङ्किनाळ्–पूजा की (कौसल्या ने)। ९३

वहाँ पहुँचकर उन श्रीमन्नारायण के तालाब में विकसित कमलों के समान चरणों की पूजा की जो कोमल कमलजा श्रीदेवी और भूदेवी, दोनों पत्नियों के साथ शोभायमान थे और जो देवों और अन्य सभी जीवों के प्राण और प्रज्ञा थे और आदि कारण थे। ९३

❀ अॅन्व यिऱ्ऱुरु मैन्दऱ् किन्नियरुळ्, उन्व यत्तदॅन् ऱाळुल हियावयुम्
मन्व यिऱ्ऱि लडक्किय मायनैत्, तन्व यिऱ्ऱि लडक्कुन् दवत्तिनाळ् 94

उलकु यावैयुम्–सभी लोकों को; मन् वयिऱ्ऱिन् अटक्किय–वन्द्य अपने उदर में (जिन्होंने) रख लिया है; मायनै–उन मायावी श्रीमन्नारायण को; तन् वयिऱ्ऱिल्–

अपने गर्भ में; अटक्कुम्–रखने का; तवत्तिन्नाळ्–जिन्होंने तप (भाग्य) किया था, उन कौसल्या ने; अॅन् वयित्तु तरुम् मैन्तऱ्कु–आपकी कृपा से मेरे द्वारा उत्पन्न पुत्र (श्रीराम) को; इनि अरुळ्–अब सौभाग्य देना; उन् वयत्ततु–आपका ही काम है; अॅन्ऱाळ्–विनय की। ९४

फिर उन्होंने जिनका भाग्य इतना था कि सारी सृष्टि को उदर में समाये रखनेवाले श्रीमन्नारायण को अपने गर्भ में धारण किया था, उनसे प्रार्थना की कि आपने श्रीराम को मेरे पेट से जन्म दिलाने की कृपा की थी। अब उन्हें सारे सौभाग्यों को दिलाने की कृपा करना भी आपके ही वश का है। ९४

अॅन्ऱि रैञ्जियव् विन्दिरै केळ्वनुक्, कॊन्ऱु नान्मऱै योदिय पूशनै
नन्ऱि ळैत्तव णल्ल तवर्क्कॅलाम्, कन्ऱु डॆप्पशु विन्कड नल्हिनाळ् 95

अवळ्–उन्होंने; अॅन्ऱु–ऐसा; इरैञ्चि–प्रार्थना करके; अ इन्तिरै केळ्वनुक्कु–उन इन्दिरापति की; ऑन्ऱु–युक्त; नाल् मऱै ओतिय–चतुर्वेदविहित; पूचनै नन्ऱु इऴैत्तु–पूजा खूब करके; नल्ल तवर्क्कु अॅलाम्–अच्छे सभी तपस्वियों को; कन्ऱु उटै (य) पचुविन् कटन्–बछड़ो सहित गोदान; नल्किनाळ्–किया। ९५

यह प्रार्थना करके देवी कौसल्या ने उन इन्दिरापति की युक्त चारों वेदों मे कथित रीति से पूजा संपन्न करके, सभी तपस्वियों को बछड़ों के साथ गायो का दान किया। ९५

पॊन्नु मामणि युम्बुनै शान्दमुम्, कन्नि मारॊडु काशिनि यीट्टमुम्
इन्न यावयु मीन्दन ळन्दणर्क्, कन्न मुन्दळि राडयु नल्हिनाळ् 96

अन्तणर्क्कु–विप्रों को; पॊन्नुम्–स्वर्ण; मा मणियुम्–बहुमूल्य रत्न; पुनै चन्ततमुम्–चर्चायोग्य चन्दन; कन्नि मा रॊटु–कन्याओ के साथ; काचिनि ईट्टमुम्–भूमि की राशि; इन्न यावैयुम्–ऐसी (दान की) वस्तुएँ; ईन्तनळ्–दीं; अन्नमुम्–भोजन और; तळिर् आटैयुम्–कदलीपल्लव मृदुल वस्त्र भी; नल्किनाळ्–दिये। ९६

वाद ब्राह्मणों को स्वर्ण, रत्न, चंदन, कन्यायें और भूमि के खण्ड तथा अन्य वस्तुओ का दान किया। भोजन और कदलीपत्र के समान शोभित वस्त्र भी दिया। ९६

नल्हि नायह नाण्मलर्प् पादत्तैप्
पुल्लिप् पोऱ्ऱि वणङ्गिप् पुरैयिलाळ्
मल्लल् मामणिक् कोयिल् वलङ्गॊळात्
तॊल्लै नोन्बुहळ् यावुन् दॊडङ्गिनाळ् 97

पुरै इलाळ्–अनिन्द्य; नल्कि–दान करके; नायकन्–भगवान के; नाळ् मलर् पातत्तै–नवविकसित कमल चरण; पुल्लि–पकड़कर; पोऱ्ऱि वणङ्कि–स्तुति और नमस्कार करके; मल्लल्–समृद्ध; मा मणि–श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत; कोयिल्–

मन्दिर की; वलम् कॊळा—परिक्रमा करके; तॊल्लै—प्राचीन; नोऩ्पुकळ् यावुम्—सभी व्रत; तॊटङ्किऩाळ्—रखना आरम्भ किया । ९७

निर्मल स्वभाव वाली कौसिल्या ने यह सब दान करके भगवान के नवविकसित कमल-सम चरण पकड़कर स्तुति और दण्डवत की। फिर खूब श्रेष्ठ रत्नों से अलंकृत उस बड़े मन्दिर की परिक्रमा की। बाद वे प्राचीन अनेक व्रतों का पालन करने लगीं। ९७

2. मन्दरै शूऴ्च्चिप् पडलम् (मन्थरा षडयन्त्र पटल)

कडिहमऴ् तारिनाऩ् कणित माक्कळै
मुडिवुऱ नोक्कियोर् मुहमन् कूऱिप्पिऩ्
वडिमऴु वाळवऩ् कडन्द मैन्दऱ्कु
मुडिपुनै कडिहैनाण् मॊऴिमि ऩॆऩ्ऱनन् 98

कटि कमऴ् तारिनाऩ्—सुगन्धि छिटकती माला के धारी ने; कणित माक्कळै—ज्योतिषी लोगों को; मुटिवु उऱ नोक्कि—पूर्णरूप से देखकर; ओर् मुकमन् कूऱि—युक्त शिष्ट वचन कहकर; पिऩ्—पश्चात; वटि मऴुवाळऩ्—तीक्ष्ण परशु के रखनेवाले (परशुराम) के; कटन्त—विजयी; मैन्तऱ्कु—वीर राघव को; मुटि पुनै—किरीट पहनाने योग्य; कटिकै नाळ्—मुहूर्त के दिन को; मॊऴिमिऩ्—कहिये; ऎऩ्ऱनऩ्—कहा। ९८

सुवासित पुष्पों की माला से अलंकृत चक्रवर्ती ने अपने सामने रहे सभी ज्योतिषियों पर खूब दृष्टि डाली। अवसरानुकूल शिष्ट वचन कहे। फिर उनसे कहा कि तीक्ष्ण परशु के धारण करनेवाले परशुराम के जयी श्रीराम को किरीट पहनाने के लिए योग्य मुहूर्त और दिन शोध करके बताइये। ९८

पॊरुन्दुना णाळैयुन् पुदल्वऱ् कॆऩ्ऱलुम्
तिरुन्दिना रिनियशॊऱ् केट्ट शॆय्हऴऱ्
पॆरुन्दिण्मा लियानैयाऩ् पिऴैप्पिल् शॆय्दव
मरुन्दिनाऩ् वरुहॆन वशिट्ट नॆय्दिनाऩ् 99

उऩ् पुतल्वऱ्कु—आपके पुत्र के लिए; पॊरुन्तु नाळ्—अच्छे मेल का दिन; नाळै—कल ही; ऎऩ्ऱलुम्—कहते ही; तिरुन्तिनार्—(ज्योतिष शास्त्र में) कुशलता प्राप्त उनके; इतिय चॊल् केट्ट—मधुर (सुखद) वचन सुना (जिन्होंने) उन; चॆय् कऴल्—भूपक पायलधारी; पॆरु तिण् माल् यानैयाऩ्—बड़े, बलिष्ठ और मत्तगजों के स्वामी, (दशरथ) के; पिऴैप्पु इल्—दोषहीन; चॆय्तवम्—कृततप; मरुन्तु अऩ्ऩाऩ्—अमृत सम (वसिष्ठजी); वरुक ऎऩ—आजायँ, कहने पर; वचिट्टऩ्—वसिष्ठ; ऎय्तिऩाऩ्—पधारे। ९९

ज्योतिषियों ने खूब परीक्षा करके बताया कि आपके पुत्र के मुकुट-धारण के लिए योग्य दिन कल ही है। ज्योतिपशास्त्र में निपुण उनके सुखद वचन सुनकर भूषक पायलधारी गजपति दशरथ ने इच्छा प्रकट की कि निर्दोष तपस्वी श्री वसिष्ठजी इधर आ जायँ। वसिष्ठ भी पधारे। ९९

नल्लियन् मङ्गल नाळु नाळैयव्
विल्लिय ड्रोळवड् किन्रु वेण्डुव
ऑल्लयि नियड्रिनल् लुरुदि वाय्मयुम्
शौल्लुदि पॅरिदॅनन् तौऴुदु शौल्लिनान् 100

नल् इयल्–भलाइयों से युक्त; मङ्कल नाळुम्–शुभ दिन भी; नाळै–कल ही है; अ–उस; विल् इयल् तोळवड्कु–धनु से अभ्यस्त भुजा वाले; इन्ड्रु–आज ही; वेण्टुव–आवश्यक कार्य; ऑल्लैयिन् इयड्रि–सत्वर सम्पन्न करके; उरुति नल् वाय्मैयुम्–हितोपदेश भी; पॅरितु चौल्लुति–विशद रूप से करें; ऍन्–ऐसा; तौऴुतु चौन्नान्–नमस्कार करके कहा। १००

चक्रवर्ती ने वसिष्ठजी से कहा— सभी प्रकार से मंगलमय दिन कल ही है। इसलिए उस कोदण्डपाणी द्वारा जो भी वैदिक कर्म कराना है शीघ्र कराइये और आवश्यक हितोपदेश विस्तार से कीजिए। १००

मुनिवनु मुवहैयुन् दानु मुनडुवान्
मनुकुल नायकन् वायिन् मुन्निनान्
अनैयवन् वरवुकण् डलङ्गन् मार्वनुम्
इनिदॆदिर् कॊण्डुदन् निरुक्कै यॆय्दिनान् 101

मुनिवनुम्–मुनिवर भी; उवकैयुम् तानुम् मुनुवान्–आनन्द के साथ शीघ्र जाकर; मनुकुलम् नायकन्–मनुकुलनायक के; वायिल्–(महल के) द्वार पर; मुन्नितान्–पहुँचे; अनैयवन् वरवु कण्टु–उनका आगमन देखकर; अलङ्कल् मार्पनुम्–माला से अलंकृत श्रीवक्षवाले श्रीराम भी; इनितु ऍतिर् कॊण्टु–आदर के साथ अगवानी करके; तन् इरुक्कै ऍय्तिनान्–(उनके साथ) अपने स्थान गये। १०१

मुनिवर भी बहुत आनन्द के साथ शीघ्र गमन कर मनुकुलश्रेष्ठ श्रीराम के महल के द्वार पर पधारे। श्रीराम ने उनका आगमन देखा तो वे स्वयं अगवानी के लिए आये और उनको लेकर अन्दर अपने स्थान पर गये। १०१

ऑल्हि लात्तवत् तुत्तम नोदुनूल्, मल्हु केळ्वियव् वळ्ळलै नोक्किये
पुल्हु कादड् पुरवलन् पोर्वलाय्, नल्हु नानिल नाळै निनक्कॆन्ड्रान् 102

ऑल्कु इला–अचंचल; तवत्तु उत्तमन्–तपस्या के उत्तम मुनि; ओतुम् नूल्–अध्ययन योग्य शास्त्रों का ज्ञान; मल्कु केळ्वि–व भरपूर श्रौतज्ञान रखनेवाले;

अ वळ्ळै नोक्कि–उन प्रभु (श्रीराम) को देखकर; पोर् वलाय्–युद्धचतुर; पुल्कु कातल्–(आप पर) रखे प्रेम के; पुरवलन्–चक्रवर्ती; नाळै–कल; निन्तक्कु–आपको; नाल् निलम् नल्कुम्–चतुर्विध भूमि दिला देंगे; अॅन्ऱान्–बोले। १०२

वसिष्ठजी अचंचल तपोधन थे। श्रीराम अध्ययन और श्रवण के भरपूर ज्ञान के ज्ञानी थे। वसिष्ठ ने उनसे कहा कि हे युद्धनिपुण श्रीराम! आप पर गंभीर स्नेह रखनेवाले चक्रवर्ती कल आपके पास राज्य का अधिकार सौंपेंगे। १०२

अॅन्ऱु पिन्नु मिरामनै नोक्किनान्, ऑन्ऱु कूऱुव दुण्डुऱु दिप्पॉरुळ्
नन्ऱु केट्टुक् कडैप्पिडि नन्गॅन्ना‌त्, तुन्ऱु तारवर् चॉल्लुदन् मेयिनान् 103

अॅन्ऱु–यह कहकर; पिन्नुम् इरामनै नोक्कि–और श्रीराम को देखकर; नान् कूऱुवतु–मेरा कहा जानेवाला; उऱुतिप्पॉरुळ् ऑन्ऱु उण्टु–हित उपदेश एक है; नन्ऱु केट्टु–उसको ध्यान से सुनकर; नन्ऱु कटैप्पिटि–भलीभाँति (उसका) अनुसरण करो; अॅन्ना–ऐसा; तुन्ऱु तार् अवन्–घनी पुष्पमालाधारी श्रीराम से; चॉल्लुतल् मेयिनान्–कहने लगे। १०३

और भी आगे कहा। मुझे आपसे एक हितकारिणी बात कहनी है। आप उसे ध्यान से सुनिये और उस पर खूब अमल कीजिए। घनी माला-धारी श्रीराम से यह कहकर वे आगे बोले। १०३

करिय मालिनुङ् गण्णुद लानिनुम्, उरिय तामरै मेलुऱै वानिनुम्
विरियुम् बूदमॉ रैन्दिनु मॅय्यिनुम्, पॅरिय रन्दणर् पेणुदि युळ्ळत्ताल् 104

करिय मालिनुम्–श्यामलवर्ण तिरुमाल (श्रीनारायण) से भी; कण् नुतलानिनुम्–भालनेत्र (शिवजी) से भी; उरिय–स्वत्व के; तामरै मेल्–कमल पर; उऱैवानिनुम्–रहनेवाले (ब्रह्मा) से भी; विरियुम् पूतम् ओर् ऐन्तिनुम्–विस्तारशील पाँचों भूतों से; मॅय्यिनुम्–सत्य से भी; अन्तणर् पॅरियर्–ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं; उळ्ळत्ताल् पेणुति–(उनका) मन से आदर कीजिये। १०४

श्यामल श्रीविष्णु, भालनेत्र श्रीशिव, कमलासन ब्रह्माजी, विस्तृत पाँच भूत, सत्य —इन सबसे ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं। उनका मन से आदर कीजिए। १०४

अन्द णाळर् मुनियवु माङ्गवर्, शिन्दै यालरुळ् शॅय्यवुन् देवरुळ्
नॊन्दु ळारयु नॉय्दुयरन् दारयुम्, मैन्द वॅण्ण वरम्बुमुण् डाङ्गॉलो 105

मैन्त–पुत्र; अन्तणाळर् मुनियवुम्–ब्राह्मणों के कोप करने पर; आङ्कु–उसी प्रकार; अवर्–उनके; चिन्तैयाल् अरुळ् चॅय्यवुम्–मन से अनुग्रह करने पर; तेवरुळ्–देवों में भी (सही); नॊन्तु उळारैयुम्–(क्रम से) दुखी हुओं को; नॉय्तु उयर्न्तारैयुम्–शीघ्र उन्नति प्राप्त लोगों को; ऍण्ण–गिनने की; वरम्पुम् उण्टो–सीमा है क्या। १०५

पुत्र ! ब्राह्मणों के कोप का पात्र वनकर देवों में भी कितने अवनति को और दुख को प्राप्त हो गये ! उनकी कृपा का पात्र वनकर कितने ही उन्नत और सुखी हो गये ! उनकी संख्या का अंत भी है क्या ? नहीं। उनकी संख्या अनंत है । (इस पद में यथाक्रम अलंकार है ।) । १०५

अनैय रादलि नैयवव् वॅय्यती, विनैयि नीङ्गिय मेलवर् ताळिणै
पुनैयुञ् जॅन्नियै यायप्पुहळ्न् देत्तुदि, इनिय कूऱिनिन् ऱेयिन शॅय्दियाल् 106

ऐय–तात; अनैयर् आतलिन्–वे ऐसे हैं, इसलिए; वॅय्य–क्रूर; ती विनैयिन् नीङ्किय–पापों से मुक्त; अ मेलवर्–उन उत्तम लोगों के; ताळ् इणै–चरणद्वय को; पुनैयुम् चॅन्नियै आय्–धारण करनेवाले सिर के होकर; पुकळ्न्तु एत्तुति–गुणवर्णन और स्तुति कीजिये; इनिय कूऱि–मधुर भाषण करके; निन्ऱु–उनके वताये मार्ग में स्थित होकर; एयिन चॅय्ति–उनकी आज्ञा का पालन कीजिये । १०६

तात ! ब्राह्मण लोग ऐसे महिमावान हैं । इसलिए आप निष्पाप उन महानों के चरणद्वय को अपने सिर पर धारण कीजिए । सदा उनका गुणगान कीजिए और स्तुति कीजिए । उनसे मधुर भापण कीजिए और उनके वताये मार्ग पर रहकर उनकी आज्ञा का अनुसरण कीजिये । १०६

आव दऱ्कु मळिवदऱ् कुम्मवर्, एव निऱ्कुम् विदियुमॅन् ऱालिनि
आव दॅप्पॊरु ळिम्मयु मम्मयुम्, देव रॅप्पर वुन्दहै शीर्त्तदे 107

वितियुम्–(अकाट्य) विधि भी; आवतऱ्कुम्–वनाने और; अळिवतऱ्कुम्–विगाड़ने की; अवर् एव–उनकी आज्ञा पर; निऱ्कुम् ॲन्ऱाल्–(अधीन) रहेगी तो; इनि–अव; आवतु ॲ पॊरुळ्–(सहायक) रहेगी कौन सी वस्तु; इम्मैयुम्–ऐहिक जीवन के लिए हो; अम्मैयुम्–परलोक के लिए हो; तेवर् परवुम् तकै–भूसुरों का आदर करने की प्रवृत्ति; चीर्त्तते–श्रेष्ठ है । १०७

दुर्द्धर्ष विधि भी उनकी आज्ञा पाकर वनाती है या विगाड़ती है । फिर उनकी आज्ञा से वढ़कर हितैषिणी वस्तु क्या है ? ऐहिक जीवन के लिए हो चाहे पारलौकिक जीवन के लिए, भूसुरों का आदर करना श्रेष्ठ है । १०७

उरुळु नेमियु मॊण्गव रॅःकमुम्, मरुळिल् वाणियुम् वल्लवर् मूवर्क्कुम्
तॅरुळु नल्लऱ मुम्मनच् चॅम्मयुम्, अरुळु नीत्तपि नावदुण् डाहुमो 108

उरुळुम् नेमियुम्–सर्वत्र चलनेवाला चक्रायुध; ऑण्–उज्ज्वल; कवर्–(तीन) काँटोंवाले; ॲःकमुम्–शूल और; मरुळ् इल्–असंदिग्ध; वाणियुम्–वाणी में; वल्लवर्–समर्थ; मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों का भी; तॅरुळुम् नल् अऱमुम्–शुद्ध सद्धर्म; मनम् चॅम्मैयुम्–मन की नेकी; अरुळुम्–कृपा; नीत्तपिन्–छोड़ देने के वाद; आवतु–(उनसे) होनेवाला; उण्टु आकुमो–कुछ हो सकता है क्या। १०८

चक्रायुध (विष्णु देव) त्रिशूलभृत (शिवजी) पवित्र वाणी को अस्त्र के रूप में प्रयोग करनेवाले (वाणीपति) ब्रह्मा —ये भी शुद्ध धर्म, मन का आर्जव और दया को छोड़ देंगे तो उनसे किसी का कोई हित नहीं हो सकता। (ऐसी स्थिति में राजा के लिए ये गुण परमावश्यक हैं।)। १०८

शूदु मुन्दुरच् चॊल्लिय मात्तुयर्, नीदि मैन्द निनक्किलै यायिनुम्
एद मॆन्बन यावयु मॆय्दुदर्, कोदु मूल मवैयॆन वोर्दिये 109

नीति मैन्त–नीतिमान सुत; चतु मुन्तु उर–कपट आदि; चॊल्लिय–कथित; मा तुयर्–बड़े दुखदाई दुष्कर्म; निन्नक्कु इलै–आपके पास नहीं है; आयिनुम्–तो भी; एतम् ॲन्पत यावैयुम्–अपराध कहे जानेवाले सभी को; ॲय्तुतर्कु–प्राप्त करने के लिए; ओतुम्–(नीतिशास्त्रों में) कथित; मूलम् अवै ॲन–हेतु वे ही हैं, यह; ओर्ति–जान लीजिये। १०९

नीतिमान कुमार! कामादि बड़े दुखदायी गुण और कर्म आपके पास नहीं है। तो भी यह स्मरण रखें कि वे ही सभी अपराधों के मूल हैं। यह शास्त्रों का कथन है। १०९

यारॊ डुम्वहै कॊळ्ळल नॆन्ऱपिन्, पोरॊ डुङ्गुम् पुहऴॊडुङ् गादुतन्
तारॊ डुङ्गलॆय् यादडु तन्दपिन्, वेरॊ डुङ्गॆड वेण्डलुण् डाहुमो 110

यारॊटुम् पकै कॊळ्ळलन्–किसी से शत्रुता नहीं रखता; ॲन्ऱ पिन्–ऐसी स्थिति होने के बाद; पोर् ऑटुङ्कुम्–युद्ध नहीं रह जायगा; तन् तार्–उसकी सेना; ऑटुङ्कल् चॅय्यातु–कम नहीं होगी; पुकऴ् ऑटुङ्कातु–यश कम नहीं होगा; अतु तन्त पिन्–(ऐसी) वह स्थिति बना लेने के बाद; वेरॊटुम् कॅट वेण्टऴ्–जड़ के साथ नाश होने की स्थिति; उण्टाकुमो–होगी क्या। ११०

कोई राजा किसी का शत्रुत्व नहीं मोल लेता और उसके कोई शत्रु न रहे —ऐसी स्थिति हो जायगी तो उससे बड़े लाभ होते हैं। युद्ध नहीं होता और सेना नहीं घटती। यश भी कम नहीं होता। उस स्थिति में जड़ से नष्ट होने की दशा उत्पन्न होगी क्या? नहीं होगी। ११०

कोळु मैम्बॊऱि युङ्गुऱै यप्पॊरुळ्, नाळुङ् गण्डु नडुवुरु नोन्मयिन्
आळु मव्वर शेयर शन्नदु, वाळिन् मेल्वरु मादव मैन्दने 111

मैन्तने–वीर कुमार; ऐन्तु पॊऱियुम्–पाँच इन्द्रिय; कोळुम्–और उनके ग्राह्य (विषय); कुऱैय–कम हो तो; पॊरुळ् नाळुम् कण्टु–अर्थ (धार्मिक रीति से) रोज अर्जन करके; नटु उऱु नोन्मैयिन्–निष्पक्ष मनोभाव के साथ; आळुम्–शासन करने का; अ अरचे–वह राज्य ही; अरचु–सही शासन है; अन्नतु–वह शासन; वाळिन् मेल् वरुम्–तलवार की धार पर किया जानेवाला; मातवम्–महान तप है। १११

वीर सुत! इन्द्रियों और विषय-भोग की आसक्ति को दमन किया गया तो अर्थार्जन खूब होगा। दिनोंदिन सम्पत्ति बढ़ेगी। निष्पक्ष

मनोभाव के साथ शासन होगा। ऐसा शासन ही सच्चा शासन है। वह शासन तलवार की धार पर किया जानेवाला तप है। (वह उतना कठिन भी है।)। १११

उमैक्कु नादऱ्कु मोङ्गुपुळ् ळूर्दिक्कुम्, इमैप्पि नाट्टमो रॅट्टुडै यानुक्कुम्
शमैत्त तोळ्वलि ताङ्गिन रायिनुम्, अमैच्चर् शॉलवऴि याऱ्ऱुद लाऱ्ऱले 112

उमैक्कु नातऱ्कुम्–उमापति का; ओङ्कु पुळ् ऊर्तिक्कुम्–श्रेष्ठ पक्षी (गरुड़) पर आरूढ़ (विष्णु) का; इमैप्पु इल् नाट्टम्–पलक न मारनेवाली आँखें; ओर् ऍट्टु उटैयानुक्कुम्–एक आठ रखनेवाले ब्रह्माजी का; चमैत्त–मिला हुआ; तोळ् वलि–भुजवल; ताङ्कितर् आयिनुम्–रखनेवाले भी हों; अमैच्चर् चॉल् वऴि–मन्त्रियों की वात पर; आऱ्ऱुतले–कर्म करना ही; आऱ्ऱल्–वल है। ११२

समझिए कि कोई राजा उमापति शिवजी, ऊँचा उड़नेवाले गरुड़ पर आरूढ़ विष्णु और आठ अप्रमत्त दृष्टि वाले ब्रह्मा —इनका-सा भुजवल रखता है। तो भी मन्त्रियों की सलाह पर चलना ही सच्चा वल होगा। ११२

ऍऩ्बु तोलुडै यार्क्कुमॅल् लार्क्कुनदम्, वऩ्ब हैप्पुल माशऱ मायप्पदॅऩ्
मुऩ्बु पिऩ्बिऩ्ऱि मूऩ्ऱुल हत्तिनुम्, अऩ्बि ऩल्लदो राक्कमुण् डाहुमो 113

ऍऩ्पु तोल् उटैयार्क्कुम्–अस्थि-चर्ममय (मुनि) के लिए भी; ऍल्लार्क्कुम्–(क्यों) सभी के लिए; तम्–उनके; वऩ् पकै पुलम्–प्रवल शत्रु, इन्द्रियों को; आचु अऱ–अशेष; मायप्पतु–दमन करना; ऍऩ्–किस काम का; मुऩ्पु पिऩ्पु इऩ्ऱि–पहले, वाद का, यह भेद छोड़ (सर्वदा); मूऩ्ऱु उलकत्तितुम्–तीनो लोकों में; अऩ्पिऩ् अल्लतु–(पवित्र) प्रेम के सिवा; ओर् आक्कम्–एक उन्नति का हेतु; उण्टाकुमो–हो सकता है क्या। ११३

केवल अस्थिपंजर-से दिखनेवाले मुनियों के लिए क्या, सभी लोगों के लिए पाँचों इन्द्रियों का संपूर्णतः दमन करने से भी क्या मिलनेवाला है? पीछे या वाद की वात नहीं— सदा और सर्वत्र, तीनों लोकों में, पवित्र प्रेम को छोड़कर कोई हितकारी वस्तु हो सकती है क्या? नहीं हो सकती। ११३

वैय मऩ्नुयि राहवम् मऩ्नुयिर्, उय्यत् ताङ्गु मुडलऩ्ऩ मऩ्ऩनुक्
कैय मिऩ्ऱि यऱङ्गड वादरुळ्, मॅय्यि निऩ्ऱपिऩ् वेळ्वियुम् वेण्डुमो 114

वैयम्–प्रजाजन; मऩ् उयिराक–अक्षय जीव है, मानकर; अ मऩ् उयिर् उय्य–उन अक्षय जीवों के भले के लिए; ताङ्कुम्–उनको धारण करनेवाला; उटल् अऩ्ऩ–शरीर-सम; मऩ्ऩऩुक्कु–राजा के लिए; अऱम् कटवातु–धर्म का उल्लंघन न करके; अरुळ्–दया; मॅय्यिन्–और सत्य के मार्ग में; ऐयम् इऩ्ऱि निऩ्ऱ पिऩ्–असंदिग्ध रूप से रहकर व्यवहार करेगा तो; वेळ्वियुम् वेण्टुमो–यज्ञ भी चाहिए क्या। ११४

प्रजाजन अक्षय जीव या प्राण हैं। उन जीवों का भर्त्ता शरीर-सम राजा है। अगर वह धर्म का उल्लंघन नहीं करके करुणा और सत्य के मार्ग पर, संशयहीन प्रकार से स्थिर रहेगा तो कोई यज्ञ भी करना चाहिए क्या ? (नहीं।)। ११४

इऩिय शॊल्लिऩ ईहय नॆण्णिऩऩ्, विऩयऩ् ऱूयऩ् विळुमियऩ् वॆऩ्ऱियऩ्
निनयु नीदि नॆऱिहड वाऩॆऩिऩ्, अऩय मऩ्ऩऱ् कळिवुमुण् डाहुमो 115

इऩिय चॊल्लिऩऩ्–मधुर भाषी; ईकैयऩ्–दानी; ऍण्णिऩऩ्–विवेकी; विऩैयऩ्–और कार्यकुशल; तूयऩ्–पवित्र; विळुमियऩ्–उत्कृष्ट विचार वाला; वॆऩ्ऱियऩ्–और विजयी; निऩैयुम्–सबसे प्रशंसित; नीति नॆऱि कटवाऩ्–नीति मार्ग न छोड़नेवाला हो; ऍऩिल्–तो; अऩैय मऩ्ऩऱ्कु–ऐसे राजा का; अळिवुम् उण्टाकुमो–नाश (पतन) भी होगा क्या। ११५

कोई राजा मधुरभाषी, दानी, विवेकशील, कर्मण्य, विजयशील, प्रकीर्तित और नीतिमार्ग न त्यागनेवाला हो तो उसकी कोई हानि हो सकती है क्या ? । ११५

शील मल्लऩ नीक्किच्चॆम् बॊऱ्ऱुलैत्, ताल मऩ्ऩ तऩिनिलै ताङ्गिय
ञाल मऩ्ऩऱ्कु नल्लवर् नोक्किय, काल मल्लदु कण्णुमुण डाहुमो 116

चीलम् अल्लऩ नीक्कि–सदाचार जो नहीं है, उनको हटाकर; चॆम् पॊऩ् तुलै–उत्तम स्वर्ण-तुला के; तालम् अऩ्ऩ–(जीभ) काँटे के समान; तऩि निलै ताङ्किय–श्रेष्ठ निष्पक्ष स्थिति को अपनाकर रहनेवाले; ञालम् मऩ्ऩऱ्कु–देश-शासक राजा के; नल्लवर् नोक्किय–अच्छे मन्त्रियों द्वारा निर्दिष्ट; कालम् अल्लतु–काल के सिवा; कण्णुम् उण्टाकुमो–आँखें हो सकती हैं क्या। ११६

जो राजा कुचाल को हटाकर बहुमूल्य स्वर्ण-तुला के काँटे के समान उत्तम निष्पक्षता का आलंबन करके राज करेगा उसे अच्छे अमात्य जो काल बतावेंगे उसके सिवा उसके कोई आँख है क्या ? (इस पद्य में आँख का विचित्र प्रयोग हुआ है। राजा के शासन-कार्य में काल का बड़ा महत्व है। अमात्य लोग जब काल-निर्धारण करेंगे तब अच्छा राजा उसका ध्यान रखेगा। वह अपने तर्क या विवेक की आँख का भरोसा नहीं करेगा। इस अर्थ में यहाँ आँख विवेक या तर्क की शक्ति का संकेत करती है।)। ११६

ओर्वि ऩल्विनै यूऱ्ऱत्ति ऩारुरै, पेर्वि ऱॊल्विदि पॆऱ्ऱुळ दऩ्ऱरो
तीर्वि लऩ्बु शॆलुत्तलिऱ् चॆव्वियोर्, आर्व मऩ्ऩवऱ् कायुदमावदे 117

ओर्विऩ्–तर्कबुद्धि के साथ; नल्विऩै ऊऱ्ऱत्तिऩार्–सत्कर्मों में स्थिर रहनेवालों के; उरै–वचन की शक्ति; पेर्वु इल्–अचल; तॊल् विति–प्राचीन विधि ने भी; पॆऱ्ऱुळतु अऩ्ऱु–नहीं पाई है; तीर्वु इल् अऩ्पु चॆलुत्तलिऩ्–निरन्तर प्रेम करने से;

चॅव्वियोर् आर्वम्–उन उत्तम लोगों की सदिच्छा; मन्नवर्कु–राजा के लिए; आयुतम् आवतु–(शत्रुसंहारक) अस्त्र बनेगी (अरो)। ११७

तर्क और विवेक के साथ जो सोच-समझकर काम करते है उनकी वाणी मे जो शक्ति है वह अकाट्य प्राचीन विधि में भी नहीं है। अडिग प्रेम रखने के कारण उन कर्मठ अमात्यों का सौजन्य राजा की, अस्त्र के समान शत्रु-हनन में सहायता करेगा। ११७

तूम केदु पुविक्कॅन्नत् तोन्रिय, वाम मेकलै मङ्गय राल्वरुम्
काम मिल्लै यॅन्निर्कडुङ् गेडॅनुम्, नाम मिल्लै नरहमु मिल्लये 118

पुविक्कु तूमकेतु ॲन्न–पृथ्वी के लिए धूमकेतु (नाशक ग्रह) के समान; तोन्रिय–जो पैदा हुई है उन; वामम् मेकलै–सुन्दर मेखलाधारिणी; मङ्कैयराल्–स्त्रियों के कारण; वरुम्–उत्पन्न; कामम् इल्लै ॲन्निल्–काम नहीं रहा तो; कट्म् केटु ॲन्नुम् नामम्–कठोर आफ़त का नाम भी; इल्लै–नही रहेगा; नरकमुम् इल्लै–नरक भी नहीं है। ११८

मनोरम मेखलाधारिणी स्त्रियों के प्रति जो कामातुरता पैदा होकर बढ़ती है वह पृथ्वी को संकट देनेवाला धूमकेतु है। अगर वह नहीं होगी तो कष्ट का नाम तक नही रहेगा। नरकवास का मौका भी नही आयेगा। ११८

एनै नीदि यिन्नैयन वैयहप्, पोन हर्कु विळम्बिप् पुलङ्गॉळोई
आन वन्नॊडु मायिर मौलियान्, तान नण्णिनन् रत्तुव नण्णिनान् 119

तत्तुवम् नण्णितान्–तत्वदर्शी वसिष्ठ; वैयकम् पोनकर्कु–विश्वगर्भ श्रीराम को; इन्नैयन–ऐसी; एनै नीति–अन्य नीतियाँ; विळम्पि–बताकर; पुलम् कॉळीइ–ज्ञान उद्बुद्ध करके; आनवन्नॊटुम्–उनके साथ; आयिर मौलियान् तानम्–सहस्रशीर्ष श्रीरंगनाथ के मन्दिर को; नण्णितान्–पधारे। ११९

तत्वदर्शी ने भूगर्भ श्रीराम को ऐसे और अन्य उपदेश दिये। श्रीराम को ज्ञान दिया। फिर वे श्रीराम को साथ लेकर सहस्रशीर्ष भगवान श्रीरंगनाथ के मंदिर मे गये। ११९

नण्णि नाहणै वळ्ळलै नान्मरैप्, पुण्णि यप्पुन लाट्टिप् पुलमयोर्
ॲण्णु नल्विनै मुर्रुवित् तेर्रिनान्, वॅण्णि रत्त तरुप्पै विरित्तरो 120

नण्णि–पहुँचकर; नाकम् अणै वळ्ळलै–शेषशायी भगवान को; नाल् मरै–चतुर्वेदमन्त्रों से; पुण्णियम् पुनल् आट्टि–पवित्रीकृत जल से अभिषिक्त करके; पुलमैयोर् ॲण्णुम्–विद्वानों से आवश्यक माने जानेवाले; नल् विनै–वैदिक कर्मों को; मुर्रुवित्तु–सम्पूर्ण कराकर; वॅण् निरत्त–श्वेतवर्ण; तरुप्पै विरित्तु–कुश डसाकर; एर्रिनान्–उस पर आसीन कराया। १२०

वहाँ उन्होंने चतुर्वेद के मंत्रों से पवित्रीकृत पुण्यजल से श्रीराम

का मज्जन कराया। विद्वानों द्वारा अनुशासित सभी वैदिक कर्मों का श्रीराम से अनुष्ठान करवाया। फिर श्वेतवर्ण कुश बिछाकर उन पर उन्हें आसीन कराया। १२०

❀ एऱ्ऱिड वाण्डहै यिनिदि रुन्दपिन्, नूऱ्ऱड मार्बन् नोय्दि नॅय्दप्पोय्
आऱ्ऱल्शाल् मन्नवऱ् करिवित् तानवन्, शाऱ्ऱुह नहरणि शमैक्क वॅन्ऱनन् 121

एऱ्ऱिट–आसीन कराने पर; आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ; इनितु इरुन्त पिन्–सुख से (ध्यान मग्न) रहने के बाद; नूल्–यज्ञोपवीतधारी; तटमार्पन्तुम्–विशाल वक्ष वाले वसिष्ठजी; नोय्तिन्–शीघ्र; ॲय्त पोय्–जा पहुँचे और; आऱ्ऱल् चाल्–प्रतापी; मन्नवऱ्कु–चक्रवर्ती के पास; अऱिवित्तान्–समाचार दिया; अवन्–राजा ने; नकर् अणि चमैक्क–नगर का अलंकार करने का; चाऱ्ऱुक ॲन्ऱनन्–ढिंढोरा पिटवाओ, यह आज्ञा दी। १२१

श्रीराम दर्भासन पर बैठकर ध्यान करने लगे। तब यज्ञोपवीतधारी विशाल श्रीवक्ष के ऋषि वसिष्ठ शीघ्र शक्तिमान प्रतापी चक्रवर्ती के पास पधारे और सभी बातें सुनायी। तब राजा ने आज्ञा दी कि नगर सजाने की आज्ञा की मुनादी हो जाय। १२१

❀ एविय वळ्ळुव रिराम नाळये, पूमहळ् कॉळ्ळुननाय्प् पुनैयु मोलियिक्
कोनह रणिहॅन्क् कॉट्टुम् बेऱिहै, तेवरुङ् गळिहॉळत् तिरिन्दु शाऱ्ऱिनार् 122

एविय वळ्ळुवर्–आज्ञापित "वळ्ळुव" लोगों ने; इरामन्–श्रीराम; नाळैये–कल ही; पू मकळ् कॉळ्ळुनन् आय्–भूमिपति होकर; मोलि पुनैयुम्–मुकुट धरेंगे; इ को नकर्–इस राजधानी नगर को; तेवरुम् कळि कॉळ–देवों को भी आनन्द देते हुए; अणिक–सजाओ; ॲन–ऐसा; तिरिन्तु–घूम-घूमकर; कॉट्टुम् पेरिकै–ढोल पीटकर; चाऱ्ऱिनार्–घोषणा की। १२२

राजाज्ञा पाकर वळ्ळुव (ढिंढोरा पीटनेवाले, विशिष्ट जाति के) लोगों ने सब जगह घूमकर ढिंढोरा पिटवाया कि श्रीराम कल ही भूपति होंगे और किरीटधारण करेंगे। लोग इस राजधानी नगर को ऐसा सजायें कि देव लोग भी विस्मित हो जायँ। १२२

❀ कवियमै कीर्त्तियक् काळै नाळये, पुवियमै मणिमुडि पुनैयु मॅन्ऱशॉर्
चॅवियमै नुहर्च्चिय दॅनिनुन् देवर्तम्, अवियमु दाननद् नहरु ळार्क्कॅलाम् 123

कवि अमै कीर्त्ति–काव्य-योग्य यशस्वी; अ काळै–वे (पुरुष-) ऋषभ; नाळैये–कल ही; पुवि अमै–भूमि को अपने शासनाधीन करने के निशान रूपी; मणि मुटि पुनैयुम्–रत्नकिरीट पहनेंगे; ॲन्ऱ चॉल्–यह समाचार; चॅवि अमै नुकर्च्चियतु–श्रुति द्वारा ग्रहण करने योग्य बात ही थी; ॲनिनुम्–तो भी; अ नकर् उळ्ळार्क्कु ॲल्लाम्–उस नगर के सभी वासियों के लिए; तेवर् तम् अवि–देवों का खाद्य; अमुतु आनतु–अमृत-सा (भोग्य) बन गया। १२३

जिन पर काव्य की रचना हो सकती है ऐसे यशस्वी नरपुंगव श्रीराम कल ही भूमि के शासन के अधिकार को अपनाने का निशानरूपी मुकुट धारण करेंगे —यह घोषणा कानों में पड़नेवाली बोली मात्र है। पर अयोध्यानगर-वासियों के लिए यह केवल समाचार सुनना नहीं था। किन्तु देवों का भोग्य अमृत ही हो गया। वे बहुत आनन्दित हो गये। १२३

❀ आर्त्तनर् कळित्तन राडिप् पाडिनर्
वेर्त्तनर् तडित्तनर् शिलिर्त्तु मॅय्म्मयिर्
पोर्त्तनर् मन्ननैप् पुहऴ्न्दु वाऴ्त्तिनर्
तूर्त्तन रिरुनिदि शॊल्लि नार्क्कॅलाम् 124

आर्त्तनर् कळित्तनर्—हल्ला मचाया, मोद दिखाया; आटि पाटिनर्—गाये, नाचे; वेर्त्तनर्—पसीना हुए; तटित्तनर्—मोटे हुए; मॅय् मयिर् चिलिर्त्तु—बाल पुलकित हुए; पोर्त्तनर्—शरीर पुलक भरे हो गये; मन्ननै—चक्रवर्ती को; पुकऴ्न्तु—तारीफ़ करके; वाऴ्त्तिनर्—स्तुति की; चॊल्लिनार्क्कु ॲल्लाम्—समाचार देनेवाले सभी को; इरु निति तूर्त्तनर्—बड़ा धन दिया। १२४

नगरवासियों ने आनन्दारव किया। सब तरह से मोद प्रदर्शित किया। कुछ गाये, कुछ नाचे। कइयों के शरीर स्वेद से भर गये। लोगों के शरीर फूल गये। उनके शरीर के बाल पुलकित हो गये और सारे शरीर पुलक से भर गये। वे राजा की प्रशंसा करने लगे। उनकी सस्तुति की। जो भी आकर समाचार कहता (यद्यपि पहले ही उन्हें मालूम था तो भी) उसे अपार धन भेंट करते। १२४

❀ तिणिशुड रिरवियैत् तिरुत्तु मारुनऱ्
पणियिडैप् पळ्ळियान् परन्द मार्बिडै
मणियिनै वेहडम् वहुक्कु मारुम्बोल्
अणिनह रणिन्दन रुरुत्ति माक्कळे 125

अरुत्ति माक्कळ्—उत्साहपूर्ण उन लोगों ने; तिणि चुटर्—घनी किरणों वाले; इरवियै—सूर्य को; तिरुत्तुम् आरुम्—माँज लिया, ऐसा और; नल् पणि इटै—श्रेष्ठ शेषनाग पर; पळ्ळियान्—शयन करनेवाले (परमपुरुष) के; परन्त मार्पिटै—विशाल वक्षस्थल में रहनेवाले; मणियिनै—कौस्तुभमणि को; वॆकटम् वकुक्कुम् आरुम् पोल्—सान पर तराशकर और चमकदार बना रहे हों, इस प्रकार; अणि नकर्—सुन्दर नगर को; अणिन्तनर्—सजाने लगे। १२५

वे नगर को अलंकृत करने लगे। उनका प्रयास ऐसा रहा मानो अंशुमाली को नयी रौनक दी जा रही हो; या श्रेष्ठ शेषनाग-शायी श्रीविष्णु भगवान के विशाल वक्ष को भूषित करनेवाली कौस्तुभ मणि सान पर धरकर तराशी जा रही हो! अयोध्या नित्यसुन्दर नगर है। उसे और भी सुन्दर बनाया गया। १२५

❀ वॆळ्ळिय	करियत्त	शॆय्य	वेरुळ
कॊळ्ळवान्	कॊडिनहर्क्	कुळाङ्गॊण्	डाडुव
कळ्ळविळ्	कोदयान्	शॆल्वङ्	गाणिय
पुळ्ळॆलान्	दिरुनहर्	पुहुन्द	पोत्ऱवे 126

वॆळ्ळिय–श्वेत रंग की; करियत्त–काले रंग की; चॆय्य–लाल; वेरु उळ–अन्य विविध रंगों की; नकर्–नगर भर में; कॊळ्ळै कॊण्टु–बहुत बड़ी राशि में; आटुव–हिलनेवाली; वान् कॊटि–श्रेष्ठ पताकाएँ; कळ् अविळ् कोतैयान्–शहद के साथ खिले पुष्पों की माला के धारी श्रीराम का; चॆल्वम् काणिय–श्रीयुक्त होना देखने के लिए; पुळ ऍलाम्–पक्षीगण सब; तिरुनकर्–श्रीसम्पन्न नगर में; पुकुन्त पोत्ऱ–आ जुटे हों, ऐसा लगीं। १२६

कई पताकाएँ फहरायी गई। वे सफ़ेद, काली, लाल और अनेक रंगों की थीं। उनको देखकर ऐसा लगा मानो सारे खगगण शहद के साथ खिले पुष्पों की माला से शोभायमान श्रीराम का श्रीयुक्त होने का वैभव देखने आ पहुँचे हों। १२६

मङ्गयर् कुऱङ्गॆन्न वहुत्त वाळैहळ्, अङ्गवर् कळुत्तॆन्नक् कमुह मार्न्दन्न
तङ्गॊळि मुऱुवलिऱ् ऱाम नात्ऱन्न, कॊङ्गयि निरैत्तन कन्नह कुम्बमे 127

अङ्कु–वहाँ; मङ्कैयर् कुऱङ्कु ऍन्न–रमणियों के ऊरुओं के समान; वाळैकळ्–कदलीवृक्ष; वकुत्त–(यत्रतत्र) लगाये गये; अवर् कळुत्तु ऍन्न–उनके कण्ठों के समान; कमुकम्–पूग के वृक्ष; आर्न्तन–(गाड़कर) भर गये; ऒळि तङ्कु–प्रकाशमान; मुऱुवलिन्–(उनके) दाँतों के समान; तामम् नात्ऱन–मोतियों की मालाएँ लटकाई गईं; कॊङ्कैयिन्–उनके स्तनों के समान; कनकम् कुम्पम्–स्वर्णकलश; निरैत्तन–पंक्ति में रखे गये। १२७

उस नगर में कदली वृक्ष और पूग वृक्ष यत्रतत्र गाड़े गये। मुक्ता-मालाएँ लटकायी गईं। पूर्णकलश पंक्तियों में रखे गये। वे क्रमशः रमणियों की जाँघों, कंठों, दंतावलियों और स्तनों के समान थे। १२७

मुदिरॊळि युयिर्त्तन मुडुहिक् कालयिऱ्, कदिरवन् वेऱॊरु कविन्कॊण् डान्न
मदितॊड निवन्दुयर् महर तोरणम्, पुदियन वलर्न्दन पुदव राशिये 128

पुतियन–नवीन; मति तॊट–चन्द्रमण्डल को छूते हुए; निवन्तु उयर्–उन्नत बड़े ऊँचे; मकर तोरणम्–मकर तोरण; अलर्न्तन–जिन पर बने; पुतवम् राशिवे नगरद्वार; कालैयिल् कतिरवन्–उदय सूर्य ने; मुटुकि–सत्वर आकर; वेऱु ऒरु कविन् कॊण्टान्–दूसरा एक सुन्दर रूप धर लिया; ऍन्न–ऐसा; मुतिर् ऒळि उयिर्त्तन–अतिशय प्रकाश देने लगे। १२८

नगर द्वारों में नये मकर-तोरण वनाये गये। वे चंद्रमंडल को छूते-से उन्नत वनाये गये। वे ऐसे प्रकाश देने लगे मानो उदय सूर्य ने शीघ्र आकर अभूतपूर्व सुन्दर रूप धर लिया हो। १२८

तुनियरु शॅम्मणित् तूण नीरुतोय्, वनिदयोर् कूरिऩऩ् वडिवु काट्टिऩ
पुनैतुहि लुरैतोरुम् बॉलिनुदु तोन्ऱिन, पनिपोदि कदिरॅनप् पवळत् तूण्गळे 129

पुऩै तुकिल् उरै तोरुम्–अलंकृत वस्त्र की बनी खोलों के; तुऩि अरु–निर्मल; चॅम्मणि तूणम्–माणिकमय खम्भों ने; नीरु तोय्–भभूतधारी; वऩितै ओर कूऱिऩऩ्–और अर्धनारीश्वर के; वटिवु–रूप को; काट्टिऩ–दिखाया; पवळम् तूण्कळ्–मूंगे के खम्भे; पऩि पोति कतिर् ऍन–हिमाच्छादित सूर्य के समान; पोलिनुदु तोन्ऱिऩ–सुन्दर दिखे । १२९

खंभों के ऊपर नवीन (श्वेत) वस्त्र की खोलें चढ़ायी गई। कुछ खंभे माणिक्य-सज्जित थे। वे भभूतधारी अर्धनारीश्वर श्री शिवजी के समान लगे। कुछ लाल प्रवाल के खंभे थे। वे उस सूर्य के समान सुन्दर थे जिसको हिम ढँक रहा था। [वस्त्र की खोल भभूत (भस्म) और हिम से उपमित है और खंभे शिवजी और अंशुमाली से उपमित हैं।] । १२९

मुत्तिनाऩ् मुऴुनिला वॅऱिप्प मॉय्म्मणिप्
पत्तियि निऴवॅयिल् परप्प नीलत्तिन्
तॊत्तिऩ मिरुळ्वरत् तूण्डच् चोदिड
वित्तहर् विरित्तना ळॊत्त वीदिये 130

वीति–वीथियाँ; मॉय्मणि पत्तियिऩ्–पास-पास रखी गई लाल मणियों की पंक्तियों के कारण; इळ वॅयिल् परप्प–बाल धूप छिटकाती है; तॊत्तु नीलत्तिऩ् इऩम्–झुरमुटों में रहे नीले रत्न; इरुळ् वर तूण्ट–अन्धकार को उकसाते हैं; मुत्तिऩाऩ्–मोतियों से; मुऴुनिला ऍऱिप्प–पूर्णचाँदनी फैलती है; चोतिटम् वित्तकर्–ज्योतिष शास्त्र विद्वानों के; विरित्त–वर्णित; नाळ् ऑत्त–दिन के समान थीं । १३०

वीथियाँ रत्न, नीली मणियाँ, मोती आदि से भरी थीं। रत्नों से मंद धूप-सा प्रकाश, नीली मणियों से अधकार-सा और मोतियों से चंद्रिका का प्रकाश छूटता था। इसलिए वे वीथियाँ ज्योतिष-शास्त्रियों से वर्णित दिन के समान थीं। एक ही दिन में सूर्य की धूप, अंधकार और चाँदनी तीनों पायी जाती है। वैसे ही वीथियों में तीनों पाये जाते थे। तिथि, नक्षत्र, योग आदि की गणना ज्योतिषी करते है। १३०

❀ आडन्मान् ऱेर्क्कुळा मवनि काणिय
वीडॅन्नु मुलहिन्वीऴ् विमानम् बोन्ऱन
ओडैवॅङ् गडहळि रुदय मालवरै
तेडरुङ् गदिरॉडुन् दिरिव पोन्ऱवे 131

आटल्माऩ्–नर्तनशील अश्वों के; तेर् कुळाम्–(जुते) रथों का समूह; अवऩि काणिय–इस अवनी को देखने के लिए; वीटु ॲतुम् उलकिल्–मुक्ति के स्वर्ग के लोक से; वीऴ्–उतरकर आये हुए; विमाऩम् पोऩ्ऱऩ–देवयानों के समान थे; ओटै–मुखपट्ट पहने हुए; वॅम् कटम् कळिऱु–भयंकर मदमत्त गज; उतयम् माल् वरै–गुरु

उदयपर्वत अनेक; तेट अरु कतिरोंटुम्–अलभ्य सूर्यों के साथ; तिरिव पोऩ्ऱ–घूमते जैसे थे। १३१

नाचते-से सुन्दर चाल के साथ दौड़नेवाले अश्वों से जुते रथ पृथ्वी के दर्शनार्थ आगत देवयानों के समान लगे जो पापपुण्य-मुक्त स्वर्गलोक से चाव के साथ उतर आये थे। उज्ज्वल मुखपट्टों के साथ जो भयंकर मदमत्त गज घूमते थे वे अनेक उदयगिरियों के समान लगे जो अलभ्य अंशुमालियों के साथ आ रहे हों। १३१

वळङ्गॅळ्ळु तिरुनहर् वैहुम् वैहलुम्
पळिङ्गुडै नॅडुञ्जुव रडुत्त पत्तियिल्
किळर्न्दॅळ्ळु शुडर्मणि यिरुळैक् कीऱलाल्
वळर्न्दिल विरिन्दिल शॅक्कर् वाऩमे 132

वळम् कॅळ्ळु तिरुनकर्–सर्वसमृद्ध श्रीमन्त नगर में; वैकुम् वैकलुम्–वास के हर दिन; पळिङ्कु उटै(य)–स्फटिक की; नॅटु चुवर्–ऊँची दीवारों पर; पत्तियिल् अटुत्त–श्रेणियों में जड़ित; किळर्न्तु ॲळ्ळु चुटर्–छिटक उठनेवाली किरणों के; मणि–रत्न; इरुळै कीऱलाल्–अँधेरे को चीर देते हैं, इसलिए; वळर्न्तिल–नहीं बढ़ता; चॅक्कर् वाऩम्–लाल गगन; विरिन्तिल–नहीं फैलता। १३२

सर्वसमृद्ध उस नगर की स्फटिकमय दीवारों पर अनेक रत्न जटित थे। उनसे लगातार विपुल किरणराशि छूट रही थी। उसने अँधेरे को मिटाया। इसलिए किसी भी दिन न अन्धकार रहा, न (सांध्य-) गगन की लालिमा विस्तृत हुई। (न अँधेरा हुआ न संध्या आई)। दिन और रात एक समान थे। १३२

❀ पूमळै पुऩऩ्मळै पुदुमॅऩ् शुण्णत्तिऩ्
तूमळै तरळत्तिऩ् ऱोमिल वॅण्मळै
तामिळै नॅरिदलिऱ् ऱहर्न्द पॉऩ्मळै
मामळै निहर्त्तऩ माड वीदिये 133

माटम् वीति–प्रासादों से भरी वीथियों में; पू मळै–पुष्पों की वर्षा; पुऩल् मळै–(धूल थमाने के लिए सिंचित) सुवासित जल की वर्षा; तूम्–छिड़के हुए; पुतु मॅऩ् चुण्णत्तिऩ् मळै–नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा; तोम् इल–निर्मल; वॅण् तरळत्तिऩ् मळै–श्वेतमुक्ता के चूर्ण की बारिश; इळै ताम् नॅरितलिऩ्–आभरणों के, भीड़ के कारण, आपस में टकराने से; तकर्न्त पॉऩ् मळै–टूटकर गिरे स्वर्ण की वर्षा; मा मळै निकर्त्तऩ–(सब मिलकर) विपुल वर्षा-सी बन गई। १३३

प्रासादों से भरी अयोध्या की वीथियों में पुष्पों की वर्षा, सुवासित जल की वर्षा, नवीन सुगन्ध-चूर्ण की वर्षा, निर्मल मोतियों की वर्षा, भीड़ के कारण आपस में टकराकर आभरणों ने जो स्वर्णकण गिराये उनकी वर्षा —सब मिल गई और बड़ी भारी वर्षा-सी हो गई। १३३

कारॉडु तॉडर्मदक् कळिरु शॅन्ड्रन, वारॉडु तॉडर्हळ्ळन् मैन्द रामॅन्नत्
तारॉडु नडन्दन्न पिडिह डाळ्हलैत्, तेरॉडु नडक्कुमत् तॅरिवै मारिने 134

कारॉटु तॉटर्–मेघों से तुलनेवाले; मतम् कळिङ्–मत्तगज; वारॉटु तॉटर्–तस्मे से बँधी; कळ्ळल्–पायलधारी; मैन्तर् आम् ॲन्न–पट्ठों के समान; चॅन्ड्रन–चले; पिटिकळ्–हथिनियाँ; ताळ्‌ कलै–लटकते वस्त्रों से आवृत; तेरॉटु नटक्कुम्–रथों (नितम्बों) के साथ चलनेवाली; अ तॅरिवै मारिन्–उन स्त्रियों के समान; तारॉटु नटन्तन–कण्ठहार के साथ चलीं। १३४

वहाँ हाथी और हथिनियाँ घूम रही थीं। मेघसम वे हाथी तस्मों पर बँधी घुँघुरुओं की बनी पायल के धारी पट्ठों के समान घूमे। हथिनियाँ अपने गले के हारों के साथ उन स्त्रियों के समान घूमी जो ढीले वस्त्रों से आवृत नितंबों के साथ घूम रही थीं। १३४

ॐ एय्न्दॅळ्ळु शॅल्वमु मळ्हु मिन्बमुम्, तेय्न्दिल वन्नैयदु तॅरिहि लामयाल्
आय्न्दनर् पॅरुहवु ममर रिम्बरिऱ्, पोन्दवर् पोन्दिल मॅन्नुम् बुन्दियाल् 135

एय्न्तु ॲळ्ळु चॅल्वमुम्–लगी रहकर बढ़नेवाली सम्पत्ति; अळ्ळकुम्–और सौंदर्य; इन्पमुम्–आनन्द; तेय्न्तिल–घटे नहीं; अन्नैयतु–उसको; तॅरिकिलामैयाल्–न जानने से; इम्परिल् पोन्तवर्–इस लोक में आगत; अमरर्–सुर लोग; पोन्तिलम् ॲन्नुम् पुन्तियाल्–अभी नहीं पहुँचे, इस बोध से; पॅरुकवुम् आय्न्तनर्–बहुत सोच-विचार करने लगे। १३५

उस नगर में संपत्ति, सौन्दर्य और आनन्द हमेशा लगे रहे; कभी कम नहीं हुए। यह तथ्य सुर लोग नहीं जानते थे। इसलिए वे, जो अभिषेक के दर्शनार्थ आये थे, अयोध्या में पहुँचकर भी यह समझे कि हम अभी नहीं पहुँचे हैं— अपने देवलोक में ही है। इसलिए वे सोच-विचार में पड़ गये। १३५

ॐ अन्नह रणिवुरु ममलै वान्नवर्, पॉन्नह रिदुवॅनप् पॉलियु मेल्वयिल्
इन्नल्शॅ यिरावण निळ्ळैत्त तीमैपोल्, तुन्नरुङ् गॉडुमनक् कून्नि तोन्ड्रिनाळ् 136

अ नकर्–वह नगर; अणिवु उरुम् अमलै–जो सजाया जा रहा था, उस शोर-गुल में; वानवर् पॉन् नकर् इतु ॲन–देवों की स्वर्णपुरी यह है, ऐसा; पॉलियुम् एल्वॅयिल्–जब शोभित रहा, तब; इन्नल् चॅय् इरावणन्–(लोक-) हानिकारक रावण के; इळ्ळैत्त तीमै पोल्–किये दुष्कर्मो के रूप के समान; तुन्न अरु–अचिन्त्य; कॉटु मनम्–क्रूर मन की; कून्नि–कुब्जा (मंथरा); तोन्ड्रिनाळ्–प्रकट हुई। १३६

अयोध्या में अलंकार के कार्यो के कारण बड़ा शोरगुल मचा हुआ था। वह देवों की स्वर्णनगरी के ही समान शोभापूर्ण था। उस समय कुब्जा मंथरा प्रकट हुई। वह साक्षात उस आततायी रावण के सभी दुष्कर्मो के मूर्तरूप के समान थी। उसका मन अत्यंत और अचिंत्य रीति से क्रूर था। १३६

❀ तोन्ऱिय	कूनियुन्	दुडिक्कु	नॅञ्जिन्ताळ्
ऊन्ऱिय	वॅहुळिया	ळुळैक्कु	मुळ्ळत्ताळ्
कान्ऱॅरि	नयनत्ताळ्	कलिक्कुन्	जॊल्लिन्ताळ्
मून्ऱुल	हिनुक्कुमो	रिडुक्कण्	मूट्टुवाळ् 137

तोन्ऱिय कूत्तियुम्–प्रकट जो हुई वह कुब्जा; मून्ऱु उलकितुक्कुम्–तीनो लोकों को; ओर् इटुक्कण् मूट्टुवाळ्–एक आफत मचानेवाली; तुटिक्कुम् नॅञ्चिताळ्–उद्विग्न मन वाली; ऊन्ऱिय वॅकुळियाळ्–गम्भीर क्रोध वाली; उळैक्कुम् उळ्ळत्ताळ्–(क्रोध से) आक्रांत मन वाली; कान्ऱु अँरि नयनत्ताळ्–क्रोध से जलती-सी आँख वाली; कलिक्कुम् चॊल्लिन्ताळ्–उच्च स्वर वाली। १३७

जो सामने प्रकट होकर आई वह मंथरा तीनों लोकों पर सितम ढानेवाली थी। उसका मन उद्विग्न था; गंभीर क्रोध घर किये था। उसका चित्त क्रोधाक्रान्त था। उसकी आँखें जलती आग के समान थीं और वाणी उग्र थी। १३७

❀ तॊण्डवाय्क्	केहयन्	ऱोहै	कोयिन्मेल्
मण्डिनाळ्	वॅहुळियिन्	मडित्त	वायिन्ताळ्
पण्ड(य्)ना	ळिराहवन्	पाणि	विल्लुमिळ्
उण्डयुण्	डदन्नैत्तन्	नुळ्ळत्	तुळ्ळुवाळ् 138

पण्टै नाळ्–पूर्व समय में; इराकवन् पाणि–श्रीराम के हाथ के; विल् उमिळ् उण्टै–चाप से निकले गुलेले (मिट्टी की गोलियाँ); उण्टतै–खाने (मारे जाने) को; तन् उळ्ळत्तु उळ्ळुवाळ्–अपने मन में स्मरण करती; वॅकुळियिन्–उस कोप से; मटित्त वायिन्ताळ्–(अधर मोड़े) होंठ चबाती हुई; तॊण्टै वाय्–बिंबाधरा; केकयन् तोकै–केकय की मयूराभा पुत्री, कैकेयी के; कोयिल् मेल्–महल पर; मण्टिन्ताळ्–प्रचण्डवेग से आई। १३८

पहले कभी श्रीराम उस पर गुलेले (चाप से मिट्टी की गोलियाँ) मारते थे। उसे वह याद करती थी। उससे क्रोधोन्मत्त हुई। वह होंठ चबाते हुए केकयराजतनया, मयूराभा कैकेयी के महल पर प्रचंड गति से गई। (यह गुलेला मारने की बात वाल्मीकि ने नहीं कही है। लेकिन तमिळ् के वैष्णव संतों की कृतियों में इसका उल्लेख है।)। १३८

❀ नाऱ्कडऱ्	पडुमणि	नळिन्नम्	बूत्तदोर्
पाऱ्कडऱ्	पडुदिरैप्	पवळ	वल्लियै
पोऱ्कडैक्	कण्णरुळ्	पॊळियप्	पॊङ्गणै
मेऱ्किडन्	दाडनै	विरैवि	नॅय्दिन्ताळ् 139

नाल् कटल् पटु मणि–चारों ओर के समुद्र से प्राप्त रत्नों के साथ; नळिनम् पूत्ततु–कमल खिला हो जैसे; ओर् पाल् कटल् पटु तिरै–अनुपम क्षीरसागर की तरंगों के बीच रहनेवाली; पवळ वल्लियै पोल्–प्रवाललता के समान; पॊङ्कु अणै मेल्–

उन्नत एक शय्या पर; कटै कण् अरुळ् पोऴिय–अपांगों से कृपा प्रकट करते हुए; किटन्ताळ् तन्नै–लेटी हुई कैकेई को; विरैवित् अँय्तिनाळ्–शीघ्र नियराई। १३८

कैकेयी शय्या पर शयन करती सो रही थीं। वह रत्नाकरों से प्राप्य रत्नों के साथ खिले कमल के समान लगीं। और उस प्रवाल-वल्लरी के समान भी लगीं जो क्षीरसागर की तरंगों के मध्य फैली हो। कुब्जा उनके पास अति वेग से गई। १३९

❀ अँय्दियक् केहयन् मडन्द येडविऴ्
नॉय्दलर् तामरै नोट्र नोऱ्‌पिनाऱ्
शॅय्दपे रुवमैशाल् शॅम्बॊऱ् चीऱडि
कैहळिऱ् ऱीण्डिनाळ् कालक् कोळननाळ् 140

कालम् कोळ् अननाळ्–बुरा काल उत्पन्न करनेवाले बुरे ग्रह के समान वह; अँय्ति–पास पहुँचकर; अ केकयन् मटन्तै–उन केकयपुत्री के; एटु अविऴ्–खुली पंखुड़ियों के साथ; नॉय्तु अलर्–मृदु-विकसित; तामरै–कमलपुष्प; नोट्र नोऱ्‌पित्ताल्–अपनी की हुई तपस्या से; चॅय्त–प्राप्त; पेर् उवमै चाल्–श्रेष्ठ उपमा के योग्य (जिससे) बना; चॅम्पॊन् चिऱ् अटि–उत्तम स्वर्णाभूषण शोभित लघु चरण को; कैकळिन् तीण्टिनाळ्–हाथों से स्पर्श किया। १४०

बुरे काल के बुरे ग्रह के समान उस मंथरा ने उनके पास पहुँचकर कैकेयी के उस मृदु चरण का स्पर्श किया जिसकी उपमा पाने के लिए कमल ने तपस्या की थी। वह चरण पुष्ट पखुड़ियों के व विकासशील कमल के पुष्प के समान था। १४०

❀ तीण्डलु मुणर्न्दत् तॅय्वक् कऱ्‌पिनाळ्
नीण्डकण् णतन्दलु नीङ्गु हिऱ्‌ऱिलळ्
मूण्डॅऴु पॅरुम्बऴि मुडिक्कुम् वल्विनै
तूण्डिडक् कट्टुरै शॊल्लन् मेयिनाळ् 141

तीण्टलुम्–स्पर्श करते ही; उणर्न्त–निद्रामुक्त; अ–वे; तॅय्व कऱ्‌पित्ताळ्–दैवी पातिव्रत्यवती; नीण्ट कण्–लम्बी आँखों में; अतन्तलुम् नीङ्कुकिऱ्‌ऱिलळ्–तन्द्रा छुड़ा नहीं पाईं; मूण्टु ऍऴु–उठकर फैलनेवाले; पॅरु पऴि–बड़े निन्द्य काम को; मुटिक्कुम्–करा चुकनेवाली; वल् विनै तूण्टिट–बलवान विधि की प्रेरणा से; कट्टुरै–अपनी वार्ता को; चॊल्लल् मेयिनाळ्–(मंथरा) कहने लगी। १४१

स्पर्श होते ही उन दैवी पतिव्रता ने निद्रा त्यागी। पर अभी उनकी आँखों से तन्द्रा न छूटी थी। पीछे बड़ा अपयश लानेवाला कार्य होने को था। उसकी विधि की प्रबल प्रेरणा थी। इसलिए कुब्जा अपने मन की सोची बात यों कहने लगी। १४१

❀ अणङ्गुवाळ् विडवरा वणुहु मॆल्लयुम्
गुणङ्गॊडा दॊळिविरि कुळिर्वॆण् डिङ्गळ्पोल्
पिणङ्गुवान् पेरिडर् पिणिक्क नण्णवुम्
उणङ्गुवा यल्ल(य्)नी युरङ्गु वायॆन्राळ् 142

अणङ्कु–पीडक; वाळ् विटम्–भयंकर विषैला; अरा–राहु सर्प; अणुकुम् अॆल्लैयुम्–अपने पास आते तक; कुणम् कॊटातु–(शीतलता का) स्वभाव न खोकर; ऑळि विरि–प्रकाश देनेवाले; कुळिर् वॆण् तिङ्कळ् पोल्–शीतल श्वेत चन्द्र के समान; पिणङ्कु–विपरीत; वान् पेर् इटर्–बहुत बड़ा दुख; पिणिक्क नण्णवुम्–आपको ग्रसने आ रहा है, तो भी; उणङ्कुवाय् अल्लै–दुख नहीं समझतीं; नी उऱङ्कुवाय्–तुम सोओगी; अॆन्राळ्–पूछा । १४२

पीड़ा देनेवाले विष से युक्त राहु-सर्प जब आपको ग्रसने आता है तब भी चन्द्र अज्ञ रहकर अपना स्वभाव न छोड़कर प्रकाश देता रहता है। उस शीतल श्वेत राकापति के समान आप भी इस बात को नहीं समझतीं कि बड़ी विपदा आपको ग्रसने आ रही है। आप दुख का अनुभव नहीं करती। आप सोती रहती हैं। १४२

❀ वॆव्विड मन्नयवळ् विळम्ब वेऱ्कणाळ्
तॆव्वडु शिलैक्कयॆन् शिऱुवर् शॆव्वियर्
अव्ववर् तुऱैतॊऱु मऱन्दि ऱम्बलर्
अॆव्विड रॆन्नक्कुवन् दडुप्प दीङ्गॆना 143

वॆम् विटम् अन्नैयवळ्–भयंकर विषतुल्य उसके; विळम्प–कहने पर; वेल् कण्णाळ्–शक्ति-सम नेत्र वाली; तॆव् अटु–शत्रुसंहारक; चिलै कै–धनुर्हस्त; अॆन् चिऱुवर्–मेरे पुत्र (चारों); चॆव्वियर्–बलवान हैं; अव् अवर् तुऱै तॊऱुम्–उनके अपने-अपने क्षेत्रों में; अऱम् तिऱम्पलर्–धर्मविमुख न होनेवाले; ईङ्कु–तब यहाँ; अॆव् इटर्–कौन सी विपदा; अॆन्नक्कु वन्तु अटुप्पतु–मेरे पास आ लगेगी; अॆन्ना–यह कहकर। १४३

भयंकर विष-सी मंथरा ने जब यह बात कही तो शक्ति (बर्छी-) सी आँख वाली कैकेयी ने पूछा कि क्या बात कहती हो ? मेरे चार पुत्र हैं जो शत्रुसंहारक धनुर्धर है। वे प्रतापी हैं और अपने-अपने मार्ग के धर्म से हटनेवाले नहीं है। उनके रहते मुझ पर क्या विपदा आयेगी ? । १४३

❀ परावरुम् पुदल्वरैप् पयक्क यावरुम्
उरावरुन् दुयर(य्)विट् टुऱुदि काण्बराल्
विरावरुम् बुविक्कॊलाम् वेद मेयन
इरामनैप् पयन्दवॆर् किडरुण् डोवॆन्राळ् 144

यावरुम्–सभी कोई; परावु–जिनकी प्रशंसा करते है; अरु पुतल्वरै पयक्क–श्रेष्ठ पुत्र को पाने पर; उरावु–कठोर; अरु तुयरै विट्टु–और कठिन दुखों से छूटकर;

उरुति काण्पर्–श्रेष्ठ भलाई पायेंगे; विरावु–विविध जीवों से मिश्रित; अरु पुविक्कु ॲल्लाम्–उत्तम सभी लोकों के लिए; वेतमे अन्न–वेदों के ही समान; इरामनै पयन्त ॲऱ्कु–श्रीराम को पुत्र रूप में जिसने पाया है, उस मुझे; इटर् उण्टो–आफत होगी क्या; ॲन्ऱाळ्–कहा। १४४

संसार में कोई भी हों, उसके यशस्वी पुत्र पैदा हो जायँ तो वे प्रबल दुखों से निवृत्त हो जाते हैं और उनका परम सौभाग्य हो जाता है। मेरे तो श्रीराम पुत्र है जो विविध जीवों से भरे सभी लोकों के लिए वेद समान है। फिर मुझे भी कोई विपदा होगी क्या ? (वेद धर्मशास्त्र के मूल हैं जो विधि-निषेधों द्वारा मनुष्य को मार्ग वताते हैं। श्रीराम भी धर्मानुयायी ही नहीं धर्मप्रवर्तक भी हैं। वे "विग्रहवान धर्म" भी कहे जाते है।)। १४४

❀ आऴ्न्दपे रऩ्बिना ळनैय कूऱ्लुम्
शूऴ्न्दती विनैनिहर् कूनि शॊल्लुवाळ्
वीऴ्न्ददु निन्नलन् दिरुवुम् वीन्ददु
वाऴ्न्दनळ् कोसलै मदियि ऩालॆऩ्ऱाळ् 145

आऴ्न्त पेर् अन्पिनाळ्–गम्भीर तथा अतिशय वात्सल्यशीला के; अनैय कूऱ्लुम्–ऐसा कहते ही; चूऴ्न्त–आवृत; ती विनै निकर्–बुरे कर्म के समान; कूनि–कुब्जा; चॊल्लुवाळ्–फिर से कहनेवाली वनकर; निन् नलम् वीऴ्न्ततु–आपका भाग्य मिट गया; तिरुवुम् वीन्ततु–वैभव भी मिट गया; कोचलै–कौसल्या; मतियिनाल् वाऴ्न्तनळ्–बुद्धिचातुर्य से खुशहाल हो गई; ॲन्ऱाळ्–कहा। १४५

श्रीराम पर गंभीर और अतिशय प्रेम रखनेवाली कैकेयी ने यह वात कही तो मंथरा चुप नहीं रही। वह तो बुरे कर्म के समान उन्हें घेर आई थी। उसने कहा— आपका सौभाग्य मिट गया। आपका विभव मिट गया। कौसल्या अपनी बुद्धि-चातुर्य से उत्कर्ष पा गई। १४५

❀ अन्नशॊ लनैयव ळुरैप्प वायिऴै
मन्नवर् मन्ननेर् कणवन् मैन्दनेर्
पन्नरुम् बॆरुम्बुहऴ्प् परदन् पार्दनिल्
ॲन्निदन् मेलवट् कॆय्दुम् वाऴ्वॆन्ऱाळ् 146

अनैयवळ्–उस (मंथरा) के; अन्न चॊल् उरैप्प–वे शब्द कहने पर; आय् इऴै–चुने हुए श्रेष्ठ आभरणभूषित कैकेयी; कणवन्–(कौसल्या के) पति; मन्नवर् मन्ननेल्–राजाओं के राजा हैं; पन्न अरु–अवर्ण्य; पॆरु पुकऴ्–बड़े यशस्वी; परतन्–भरत; मैन्तनेल्–पुत्र है; पार् तनिल्–(तव) इस पृथ्वी पर; इतन् मेल्–इससे बढ़कर; अवट्कु ॲय्तुम् वाऴ्वु–उनको मिलनेवाला सौभाग्य; ॲन्–क्या है; ॲन्ऱाळ्–पूछा। १४६

श्रेष्ठ आभरणधारिणी कैकेयी ने इसके उत्तर में पूछा— कौसल्या के

पति राजाधिराज दशरथ हैं। अवर्ण्य यश के भागी भरत उनका पुत्र है। क्या यह कम है ? इससे बढ़कर कौन सा उत्कर्ष उन्हें मिलनेवाला है ? (कौसल्या भरत पर और कैकेयी राम पर समान प्रेम रखती थीं।)। १४६

❀ आड़वर् नहैयुऱ वाण्मै माशुऱत्, ताडहै यॆन्नुम्बॆयरत् तैय लाळ्पडक्
कोडिय वरिशिलै यिरामन् कोमुडि, शूडुव नाळैवाळ् विदॆन्नच् चॊल्लिनाळ् 147

आटवर् नकैयुऱ–पुरुष लोग परिहास करे; आण्मै माचु उऱ–पुंसत्व कलंकित हो जाय, ऐसा; ताटकै ऍन्नुम् पॅयर्–ताड़का नाम की; तैयलाळ् पट–स्त्री को मारने के लिए; कोटिय–झुकाये गये; वरि चिलै–बन्धनयुक्त धनु के; इरामन्–(धारण करनेवाले) श्रीराम; नाळै–कल; को मुटि चूटुवन्–राजमुकुट धारण करेगा; वाळ्वु इतु–(कौसल्या का) जीवनोत्कर्ष यही; ऍन्न–ऐसा; चॊल्लिनाळ्–कहा (मंथरा ने)। १४७

मंथरा ने कहा— पूछती है ? उनका पुत्र जो सब तरह से अयोग्य है कल राजमुकुट पहनेगा। ताड़का नाम की एक स्त्री पर उसने अपना धनुष झुकाकर बाण फेंका और उसे मारा। पुरुष लोग उसकी निन्दा करते हैं। पुंसत्व ही उसके इस काम से कलंकित हो गया। वह राम राजा बनेगा ! यही कौसल्या का उत्कर्ष है !। १४७

❀ माऱ्ऱमह(क्) (त्)तुरैशॅय मङ्गै युळ्ळमुम्
आऱ्ऱलुशाल् कोशलै यऱिवु मोत्तवाल्
वेऱ्ऱुमै युऱ्ऱिलळ् वीरन् ऱादैपुक्
केऱ्ऱव ळिदयत्ति निरुक्क वेकॊलाम् 148

माऱ्ऱम् अ..तु–उत्तर में वह; उरै चॅय–कहने पर; मङ्कै उळ्ळमुम्–देवी (कैकेयी) का मन; आऱ्ऱल् चाल् कोचलै अऱिवुम्–और सुदृढ़ कौसल्या की बुद्धि; ऑत्त–एक सम थी; वेऱ्ऱुमै उऱ्ऱिलळ्–भेद नहीं मानती थीं; वीरन् तातै–वीरराघव के पिता; अवळ् इतयत्तिन् पुक्कु–उसके हृदय में प्रवेश कर; एऱ्ऱु–वासस्थान मानकर; इरुक्कवे कॊल् आम्–वास करते थे, शायद उससे। १४८

यह सुनकर कैकेयी के मन में कोई वैषम्य उदित नहीं हुआ। उनके हृदय में दशरथजी वास करते थे। शायद उस कारण से उनका मन और कौसल्या की दृढ़ बुद्धि दोनों श्रीराम पर समान प्रेम रखते थे। इस पद में एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक बात कही गयी है। कैकेयी का राम पर प्रेम मन का और कौसल्या का भरत पर प्रेम बुद्धि पूर्वक था। इसका भेद हम पीछे देखते हैं। कैकेयी का राम-प्रेम चलित हो गया और कौसल्या का भरत-प्रेम अडिग रहा। १४८

❀ आयपे रन्बॆन्नु मळक्क राऱ्ऱॊळत्
तेय्विला मुहमदि विळङ्गित् तेशुऱत्

तूयव ऴुवहैपोय् मिहच्चु डर्क्कॅलाम्
नायह मन्नैयदोर् माले नल्हिनाळ् 149

तूयवळ्–पवित्र मन वाली; आय–अपने मन में रहे; पेर् अन्पु ॲन्नुम् अळक्कर्–वड़े प्रेमसागर के; आर्त्तु ॲळ–गर्जन कर उठते; मुकम्–मुख रूपी; तेय्वु इला मति–अक्षय चन्द्र के; विळङ्कि तोन्र–अधिक शोभायमान होते; तेचु उर–तेज से भर जाते; उवकै पोय् मिक–उल्लास के वढ़ते; चुटर्क्कु ॲल्लाम्–सभी ज्योतियों के; नायकम् अनैयतु–नायक जैसा (श्रेष्ठ); ओर् मालै–एक स्वर्णहार को; नल्किनाळ्–उपहार में दिया । १४६

पवित्र मन वाली कैकेयी के मन में जो प्रेम उठा वह समुद्र-सम कोलाहल के साथ उमड़ने लगा। उनका मुख अक्षय चन्द्र के समान अधिक शोभा। उसमें एक नया तेज स्फुरित हुआ। आनन्द का ठिकाना नही रहा। तव उन्होने ग्रह और नक्षत्र आदि ज्योतियों से भी वढ़कर तेजोमय एक स्वर्णहार उठाकर मंथरा को उपहार में दिया। १४९

❀ तॅऴित्तन्न ळुरप्पिनळ् शिरुकण् डीयुह
विऴित्तनळ् वैदनळ् वॅय्दु यिर्त्तनळ्
अऴित्तन्न ळऴुदन ळम्बॊन् मालयाल्
कुऴित्तन्न णिलत्तैयक् कॊडिय कूनिये 150

अ कॊटिय कूनि–वह क्रूर कुब्जा; तॅऴित्तनळ्–चिल्लाई; उरप्पित्तळ्–डाँटा; चिरु कण् ती उक–छोटी आँखों से आग उगलती हुई; विऴित्तत्तळ्–तरेरा; वैततळ्–गाली दी; वॅय्तु उयिर्त्तत्तळ्–गरम साँस छोड़ी; अऴित्तत्तळ्–अपना अलंकार बिगाड़ लिया; अऴुततळ्–रोयी; अम् पॊन् मालैयाल्–उस स्वर्णहार से; निलत्तै कुऴित्तत्तळ्–(पटककर) भूमि पर गड्ढा वना दिया। १५०

अव मंथरा का क्रोध सीमा पार हो गया। वह क्रूर कुब्जा यह देखकर चिल्ला उठी। उसने डाँटा, अपनी छोटी आँखों से अंगारे भरकर तरेरा, गाली दी, अपने अलंकार को विगाड़ लिया। वह खुलकर रोई। उसने उस हार को ऐसा जोर से पटका कि भूमि पर छोटा गड्ढा ही वन गया। १५०

❀ वेदनैक् कून्िपिन् वॅहुण्डु नोक्किये
पेद(य्)नी पित्तिनिर् पिरुन्द शेयॊडु
मादुयर्प् पडुहना नॅडिदुन् मार्रवळ्
तादियर्क् काट्चॅयत् तरिक्कि लेनॆन्राळ् 151

वेतनै कूनि–वेदनाविद्ध कुब्जा ने; पिन्–और; वॅकुण्टु नोक्कि–क्रोध के साथ देखकर; नी पेतै–आप अज्ञ है; पित्ति–पागल हैं; निन् पिरन्त चेयॊटु–अपने जनाये पुत्र के साथ; नॅटितु–दीर्घकाल तक; मा तुयर् पटुक–विपुल दुख उठाइए; नान्–मैं; उन् मार्रवळ्–आप की सौत के; तातियर्क्कु आळ् चॅय–दासियों की दासता करना; तरिक्किलेन्–सह नहीं सकूँगी; ॲन्राळ्–कहा। १५१

वेदनाविद्ध कुब्जा ने कैकेयी को क्रोध की दृष्टि से देखा। फिर कहा— आप मूर्ख हैं। आप पागल हैं। अपने पुत्र के साथ दीर्घकाल तक अत्यधिक संकट उठाइये। मैं आपकी सौत की दासियों की दासी बनकर जीना सह न सकूँगी। १५१

शिवन्दवाय्च् चीदयुङ् गरिय शॅम्मलुम्
निवन्दवा शऩत्तिऩि दिरुप्प निऩ्महऩ्
अवन्दऩाय् वॅरुनिलत् तिरुक्क लाऩपो
दुवन्दवा ऱॅऩ्ऩिदऱ् कुरुदि यादॅऩ्ऱाळ् 152

चिवन्त वाय् चीतैयुम्–लाल मुख वाली सीता और; करिय चॅम्मलुम्–काला प्रभु; निवन्त आचऩत्तु–उन्नत सिंहासन पर; इऩितु इरुप्प–सुख से रहेंगे, तब; निऩ् मकऩ्–आपका पुत्र; अवन्तऩ् आय्–अवन्द्य बनकर; वॅरुम् निलत्तु इरुक्कल्–कोरी भूमि पर (खड़ा) रहेगा, यह स्थिति; आऩपोतु–हो गई, तब; इतऱ्कु–इस पर; उवन्त आऱु–आनन्दित होने का हेतु; ऍऩ्–क्या; उऱुति यातु–लाभ क्या है; ऍऩ्ऱाळ्–पूछा। १५२

और भी पूछा— लाल मुख वाली सीता और काला रंग वाला राम दोनों ऊँचे सिंहासन पर बैठेंगे। तब आपका लाडला भरत अवन्द्य होकर कोरी ज़मीन पर खड़ा रहेगा। स्थिति ऐसी हो गई है। तो भी आप आनन्द भरी है, सो कैसा? इसमें आप क्या लाभ देखती है? । १५२

❀ मऱन्दिलळ् कोशलै युरुदि मैन्दनुम्
शिऱन्दऩऩ् ऱिरुविऩिऱ् ऱिरुवि नीङ्गिनाऩ्
इऱन्दिल ऩिरुन्दऩ ऩॅन्शॅय् दाऱ्ऱुवाऩ्
पिऱन्दिलऩ् बरदऩी पॅऱ्ऱ दालॅन्ऱाळ् 153

कोचलै–कौसल्या; उऱुति मऱन्तिलळ्–अपना हितसाधन नहीं भूलीं; मैन्तऩुम्–उनका पुत्र भी; तिरुविऩिऩ् चिऱन्तऩऩ्–विशेष श्रीमान हो गया; परतऩ्–भरत; नी पॅऱ्ऱताल्–आपका पुत्र होने से; तिरुविऩ् नीङ्किऩाऩ्–निर्धन हो गया; इऱन्तिलऩ् इरुन्तऩऩ्–मरा नहीं, इतना ही, मृतक समान रह गया; ऍऩ् चॅय्तु–क्या उपाय करके; आऱ्ऱुवाऩ्–धैर्य धरेगा; पिऱन्तिलऩ्–पैदा नही हुआ; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। १५३

कौसल्या हमेशा सतर्क रहीं और अपना हितसाधन कभी नहीं भूलीं। अब उनका पुत्र राजा बनता है और श्रीमान होता है। इसके विपरीत असावधान आपका पुत्र निर्धन हो गया। मरा नहीं पर मृतक से कोई भेद नहीं रखता। अब क्या उपाय करके वह धैर्य धारण करेगा? वह जन्मा ही नहीं। ऐसा ही मानना चाहिए। उसका जन्म निरर्थक है क्योंकि वह आपका पुत्र जन्मा है। १५३

शरदमिप् पुवियॆलान् दम्वि योडुमव्
वरदत्ते काक्कुमेल् वरम्विल् कालमुम्
बरदनु मिळवलुम् वदियि नीङ्गिप्पोय्
विरदमा दवञ्जॆय विडुद नन्ऱॆन्ऱाळ् 154

वरतत्ते–वरद श्रीराम ही; तम्पियोटुम्–अपने लघु भाई के साथ; इ पुवि ॲलाम्–यह भूमि सब की; वरम्पु इल् कालमुम्–असीम काल तक; काक्कुमेल्–रक्षा करेगा तो; चरतम्–सचमुच; परतनुम् इळवलुम्–भरत और उसका छोटा भाई; पतियिन् नीङ्कि–नगर से निकलकर; पोय्–(वन) जाकर; विरतम् मातवम् चॅय विटुतल्–व्रतसहित बड़ी तपस्या करने देना; नन्ऱु ॲन्ऱाळ्–भला है, कहा। १५४

आगे वरद राम अपने लघुभ्राता लक्ष्मण के साथ असीम काल सारी भूमि का शासन करता रहेगा। सच कहती हूँ, उस स्थिति में भरत को अपने भ्राता शत्रुघ्न के साथ नगर छोड़कर जंगल में जाकर लंबी तपस्या करने के लिए भेजना ही श्रेयस्कर है! —मंथरा ने कहा। १५४

पण्णुरु कडहरिप् परदन् पार्महळ्
कण्णुरुङ् गविनरा यिनिदु कात्तवम्
मण्णुरु मुरशुडै मन्नर् मालयिल्
ॲण्णुरप् पिऱन्दिल निऱत्त नन्ऱॆन्ऱाळ् 155

पण् उरु–अलंकृत; कटम् करि–मत्तगज का पति; परतन्–भरत; पार् मकळ् कण् उरुम्–भूमि देवी की आँखों में खुभनेवाले; कविन्र् आय्–सौंदर्यवान बनकर; इनितु कात्त–जो पालन करते थे; अ–उन; मण् उरु मुरचु उटै (य)–मृण्लेप लगे ढोल वाले; मन्नर्–राजाओं की; मालैयिल् ॲण् उऱ–श्रेणी में गिने जाने के लिए; पिऱन्तिलन्–पैदा नहीं हुआ; इऱत्तल् नन्ऱु–मरना ही श्रेष्ठ है; ॲन्ऱाळ्–कहा। १५५

भरत इक्ष्वाकुकुल में पैदा तो हुआ पर अलंकृत मत्त गजपति हमारा भरत उन राजाओं की श्रेणी में, जो भूमि देवी की आँखों में खुभकर उसका भरण करते थे, गिने जाने को पैदा नहीं हुआ! इसलिए उसका मर जाना ही अच्छा है। १५५

* पाक्कियम् बुरिन्दिलाप् परदन् ऱन्नैप्पण्
डाक्किय पॊलङ्गऴ लरश नाणयाल्
तेक्कुयर् कल्लदर् कडिदु शेणिडैप्
पोक्किय पॊरुळॆनक् किन्ऱु पोन्ददाल् 156

पाक्कियम् पुरिन्तु इला–जिसने पुण्य नहीं किया है; परतन् तन्नै–उस भरत को; पॊलम् आक्किय कऴल् अरचन्–स्वर्णपायलधारी राजा; पण्टु–पहले ही; तेक्कु उयर् कल् अतर्–सागौन के तरुओं से पूर्ण और पथरीले मार्ग के; चेण् इटै–दूर के (केकय) देश को; आणैयाल्–आज्ञा द्वारा; कटितु पोक्किय पॊरुळ्–शीघ्र जो भेजा, उसका अर्थ; ॲनक्कु–मुझे; इन्ऱु पोन्ततु–आज विदित हुआ। १५६

अव एक वात सूझती है। स्वर्णपायलधारी राजा ने आज्ञा देकर इस अभागे भरत को सुदूर उस केकय देश में भेजा जिसका लंबा मार्ग सागौन के तरुओं से पूर्ण और कंकड़ीला है। उसके पीछे जो रहस्यमय आशय था वह अभी मुझे मालूम हो रहा है ! । १५६

※ मन्दरै पिन्नरुम् वहैन्दु कूरुवाळ्
अन्दरन् दीर्न्दुल हळिक्कु नीरिनाल्
तन्दयुङ् गॉडियनर् ऱायुन् दीयळाल्
ॲन्दये बरदनै यॅन्शॅय् वायॅन्ऱाळ् 157

मन्तरै–मंथरा; पिन्नरुम्–आगे भी; वकैन्तु–गढ़कर; कूरुवाळ्–बोली; अन्तरम् तीर्न्तु–निष्पक्षता छोड़कर; उलकु–राज्य को; अळिक्कुम् नीरिनाल्–(श्रीराम के पास) देने की रीति से; तन्तैयुम्–पिता भी; कॉटियन्–निष्ठुर बने; नल् तायुम्–जननी भी; तीयळ्–क्रूरी बनीं; ॲन्तैये–मेरे तात; परतनै–भरत; ॲन् चॅय्वाय्–क्या करोगे; ॲन्ऱाळ्–कहा। १५७

मंथरा आगे भी बात गढ़कर वोली— निष्पक्षता छोड़कर राजा ने राज्य को श्रीराम के पास दिया और यह साबित कर दिया कि वह, हे भरत ! तुम्हारे प्रति क्रूर है। तुम्हारी माता भी क्रूर है ! तो मेरे तात ! तुम क्या करोगे ? —उसने ऐसा नाटकीय ढंग से प्रलाप किया। १५७

※ अरशरिर् पिऱन्दुपिन् नरश रिल्वळर्न्
दरशरिर् पुहुन्दुपे ररशि यान्नी
करयॅयर् करुन्दुयर्क् कडलिल् वीऴ्हिन्ऱाय्
उरयॅयक् केट्किलै युणर्दि योवॅन्ऱाळ् 158

अरचर् इल् पिऱन्तु–राजघराने में जन्म लेकर; पिन् अरचर् इल् वळर्न्तु–फिर राजा के घर में पलकर; अरचर् इल् पुकुन्तु–राजा के घर में (व्याही हो) प्रवेश करके; पेर् अरचि आन नी–महिषी जो वनीं वह आप; करै चॅयर्कु अरु–तीर (जिसका) देखना दुस्तर है, ऐसे; तुयर् कटलिल्–दुखसागर में; वीऴ्किन्ऱाय्–गिरने को है; उणर्तियो–समझती हैं क्या; उरै चॅय–मै समझाती हूँ तो भी; केट्किलै–सुनती नहीं है; ॲन्ऱाळ्–कहा। १५८

आप राजघराने में पैदा हुईं; फिर राजा के घर में ही पलीं। राजा के घर में वहू बनकर आईं और महिषी भी वन गई। फिर अब अनंत दुखसागर में गिरने को है। यह बात आप समझतीं क्या ? मै समझाती हूँ तब भी बात नहीं समझतीं। मंथरा ने ऐसा कहा। १५८

कल्वियु मिळमैयुङ् गणक्कि लाऱ्ऱलुम्
विल्विनै युरिमयु मळ्हुम् वीरमुम्
ॲल्लयिल् गुणङ्गळुम् बरदऱ् कॅय्दिय
पुल्लिडै युहुत्तनल् लमुदम् बोलुमाल् 159

कल्वियुम्–शिक्षा; इळमैयुम्–और यौवन; कणक्किल् आऱ्ऱलुम्–असीम शौर्य; विल् विनै उरिमैयुम्–धनु के प्रयोग में निपुणता; अऴकुम्–सौंदर्य और; वीरमुम्–वीरता; अॅल्लॅ इल् कुणङ्कळुम्–अपार अच्छे गुण; परतऱ्कु अॅय्तिय–सभी भरत को प्राप्त; पुल् इटै उकुतृत–तृण भरे गन्दे स्थान पर डाले गये; नल् अमुतम् पोलुम्–उत्तम अमृत के समान हो गये। १५९

भरत के पास विद्या है, यौवन है, निस्सीम शौर्य (या कौशल) है, धनु चलाने की कुशलता है, सौंदर्य, वीरता और अनंत अच्छे गुण प्राप्त है। पर ये सब अब तृणयुक्त गन्दे स्थान पर डाला हुआ श्रेष्ठ अमृत-सम हो गये। १५९

❀ वाय्क यप्पुऱ मन्दरै वऴङ्गिय वॅम्जॉल्
कायॢ नऱ्ऱलै नॅय्शॊरिन् दॅनक्कदङ् गऩ्ऱ्ऱक्
केह यर्क्किऱै तिरुमहळ् किळरिळ वरिहळ्
तोयॢ यऱ्कण्गळ् शिवप्पुऱ नोक्किनळ् शॊल्लुम् 160

मन्तरै–मंथरा; वाय् कयप्पु उऱ–मुख भी कड़ुआ हो, ऐसा; वऴङ्किय–एक दम लगातार कहे हुए; वॅम् चॊल्–निष्ठुर वचन; काय् कतल् तलै–जलती आग में; नॅय् चॊरिन्ततु अॅत–घी डाला गया, जैसे; कतम् कनऱ्ऱ–क्रोधाग्नि को उभाड़ते; केकयर्क्कु इऱै–केकयराजा की; तिरुमकळ्–श्रीतनया; किळर् इळ वरिकळ् तोय्–सुन्दर हल्की लकीरों से युक्त; कयन् कण्कळ्–मछली-सी आँखों को; चिवप्पु उऱ–(क्रोध से) लाल करते हुए; नोक्किनाळ्–देखती हुई; चॊल्लुम्–बोलीं। १६०

मंथरा की ये बातें स्वयं उसके मुख को भी कड़ुआ बनानेवाली थीं; उसने यह सब धड़ाधड कह दिये। उन सब वचनों ने जलती आग में पड़े घी के समान कैकेयी के क्रोध को उभाड़ दिया। केकयराजकुमारी की शोभायमान हल्के डोरों से युक्त मछली-सी आँखें लाल हो गईं। मंथरा पर कुपित दृष्टि डालती हुई वह बोलीं। १६०

वॅयिन्मु ऱैक्कुलत् तिऱयवन् मुदलिय मेलोर्
उयिर्मु दऱ्पॊरु डिऱम्बिनु मुरैतिऱम् बादोर्
मयिन्मु ऱैक्कुलत् तुरिमयेय् मनुमुदऩ् मरबैच्
चॅयिरु ऱप्पुलैच् चिन्दया लऩ्शॊनाय् तीयोय् 161

तीयोय्–क्रूरी; वॅयिल् मुऱै कुलत्तु–सूर्यवंश में उत्पन्न; इऱैयवन् मुतलिय मेलोर्–हमारे राजा आदि श्रेष्ठ; उयिर् मुतल् पॊरुळ्–प्राण आदि सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ; तिऱम्पितुम्–नष्ट हो जायँ तो भी; उरै तिऱम्पातोर्–वचन तोड़नेवाले नहीं हैं; मयिल् मुऱै कुलत्तु–मोर के जैसे (स्वभाव वाले) कुल की; उरिमै एय्–रीति से युक्त; मनु मुतल् मरपै–मनु से आनेवाले इस कुल को; चॅयिर् उऱ–कलंक लगाते हुए; पुलै चिन्तैयाल्–निकृष्ट बुद्धि के कारण; अॅन् चॊनाय्–क्या ही कह गई हो। १६१

री क्रूरी! सूर्यवंश के मेरे पति आदि सभी राजा, प्राण भी या अन्य ऐसी बहुमूल्य वस्तुएँ चली जायँ तो भी वचन छोड़नेवाले नहीं है। मोर

के कुल का-सा सम्प्रदाय है मनुकुल का सम्प्रदाय। इस पर कलंक लगाते हुए तुमने अपनी नीच बुद्धि के कारण क्या-क्या बातें कह डालीं ? १६१

[इसमें मयूरकुल की बात कही गई है। इस पर सालों से चर्चा है। कहा जाता है कि मोर के कुटुंब में अनेक अंडों से एक साथ शावक उत्पन्न होने पर भी सबसे ज्येष्ठ मोर के ही सबके पहले पंख लगते हैं। यह एक टीका है। यह भी कहा जाता है कि जब एक ही माता से उत्पन्न अनेक मोर एक जगह पर रहते हैं तब सबसे बड़ा मोर ही पहले अपने पंख खोलता है, बाद ही अन्य। इनसे अलग एक टीका भी है। कैकेयी के कुल में भी यही रिवाज था कि ज्येष्ठ पुत्र ही राजा बनता है। इसके आधार पर उस पंक्ति का ऐसा अर्थ किया जाता है कि केकय, यह शब्द 'केकी' से बना है, कुल की जैसी रीति मनुकुल की भी है। उस कुल पर कलंक लानेवाली ऐसी बात क्यों करती हो ?]

ॐ अँन्नक्कु नल्लयु मल्लैनी यॅन्महन् बरदन्
तन्नक्कु नल्लयु मल्लैयत् तरुममे नोक्किन्
उन्नक्कु नल्लयु मल्लैवन् दूऴ्विनै तूण्ड
मन्नक्कु नल्लन शॉल्लिनै मदियिला मनत्तोय् 162

नी–तुम; अॅन्नक्कु नल्लैयुम् अल्लै–मेरी हितकारिणी नहीं हो; अॅन् मकन्–मेरे पुत्र; परतन् तन्नक्कु–भरत की भी; नल्लैयुम् अल्लै–हितू नहीं हो; अ तरुममे नोक्किन्–उस राजधर्म को देखें तो; उनक्कु नल्लैयुम् अल्लै–अपने लिए भी हित करनेवाली नहीं हो; मति इला मनत्तोय्–बुद्धिहीन चित्त वाली; ऊऴ् विनै तूण्ट–पूर्व कर्म की प्रेरणा से; वन्तु–इधर आकर; मन्नक्कु नल्लन–अपने मन में जो भला लगा; चॉल्लिनै–वह बोलीं। १६२

कैकेयी ने और भी कहा— तुम मेरा हित नहीं करतीं; न मेरे पुत्र भरत की। राजधर्म की दृष्टि में तुम अपना भी हित नहीं करतीं। बुद्धि से वियुक्त चित्त वाली ! विधि की प्रेरणा से जो भी तुम अपने मन में सोचती हो उसे अच्छा समझकर बक रही हो। १६२

पिऱन्दि ऱन्दुपोय्प् पॅऱुवदु मिळप्पदुम् बुहऴे
निऱन्दि ऱम्बिनु नियायमे तिऱम्बिनु नॅऱियिन्
तिऱन्दि ऱम्बिनुञ् जॅय्दवन् दिऱम्बिनुञ् जॅयिर्दीर्
मऱन्दि ऱम्बिनुम् वरन्मुऱै तिऱम्बुदल् वऴक्को 163

पिऱन्तु–पैदा होकर; इऱन्तु पोय्–मर जाकर; पॅऱुवतुम्–पाना; इऴप्पतुम्–या खोना; पुकऴे–कीर्ति ही है; निऱम् तिऱम्पितुम्–स्वभाव बदल जाय; नियायमे तिऱम्पितुम्–(अन्य) न्याय भी टल जायँ; नॅऱियिन् तिऱम् तिऱम्पितुम्–मार्ग की दिशा भी बदल जाय; चॅय् तवम् तिऱम्पितुम्–पूर्वकृत तपस्या का फल चाहे न मिले; चॅयिर् तीर्–निर्दोष; मऱम् तिऱम्पितुम्–वीरता भी निष्फल हो जाय; वरन् मुऱै–परम्परागत धर्म को; तिऱम्पुतल्–छोड़ना; वऴक्को–उचित है क्या। १६३

आखिर जन्म और मरण का मूल्य कीर्ति पाने या खोने पर ही आँका जाता है। चाहे स्वभाव छोड़ना पड़े, चाहे कोई न्याय-मार्ग की दिशा बदलनी पड़े, चाहे तपस्या का फल त्यागना पड़े; चाहे निर्दोष वीरता भी निरर्थक हो जाय, कुल के परंपरागत सम्प्रदाय को छोड़ना उचित है क्या ? । १६३

❀पोदि　यॅन्नॅदिर्　निन्ऱनिन्　पुन्बॊऱि　नावैच्
चेदि　यादिडु　पॊरुत्तनॅन्　पुऱञ्जिल　रऱियिन्
नीदि　यल्लवु　नॅऱिमुऱै　यल्लवु　निनैन्दाय्
आदि　यादलि　नऱिविलि　यडङ्गुदि　यॅन्ऱाळ् 164

अऱिवु इलि–बुद्धिहीन; अॅन् ॲतिर् निन्ऱुम् पोति–मेरे सामने से चली जा; निन् पुन् पॊऱि नावै–तुम्हारी नीच इन्द्रिय जीभ को; चेतियातु–काटे विना; इतु पॊरुत्तॅन्–इसको सह लिया; पुऱम् चिलर् अऱियिन्–वाहर के कुछ लोग जान जायँ तो; नीति अल्लवुम्–जो नैतिक नहीं; नॅऱि मुऱै अल्लवुम्–उचित धर्मसम्मत नहीं; निनैन्ताय् आति–वह करने की अपराधिनी मानी जाओगी; आतलिन्–इसलिए; अटङ्कुति–वस करो; ॲन्ऱाळ्–कहा। १६४

बुद्धिहीन ! चलो, हटो मेरे सामने से। तुम्हारी नीच वागिन्द्रिय काटनी थी, पर मैं वह किये विना सब्र कर चुकी हूँ। वाहर वाले किसी के कानों में वात पड़ गई तो तुम अनैतिक और अधार्मिक वुरा काम सोचने का अपराध करनेवाली बन जाओगी। इसलिए वस करो। —यह कहा। १६४

❀अञ्जि　मन्दरै　यहन्ऱिल　ळम्मॊळि　केट्टुम्
नञ्जु　तीर्क्किनुन्　दीर्हिला　ददुनलिन्　दॅन्ऩत्
तञ्ज　मेयुनक्　कुरुपॊरु　ळुणर्त्तुहै　तविरेन्
वञ्जि　पोलियॅन्　ऱडिमिश　वीळ्न्दुरै　वळङ्गुम् 165

नञ्चु–विष; तीर्क्कितुम्–(जादू की क्रिया आदि से) निवारण करने का प्रयास करने पर भी; तीर्किलातु–प्रभावहीन न होकर; अतु–वह; नलिन्तवु ॲन्ऩ–पीड़ा देता रहा हो, ऐसा; मन्तरै–मंथरा; अ मॊळि केट्टुम्–वह (डाँट) वचन सुनकर भी; अञ्चि अकन्ऱिलळ्–डरकर नहीं हटी; वञ्चि, पोलि–हे लता-समाना; तञ्चमे–मेरी शरण्या; उनक्कु उरु पॊरुळ्–आपके हित की वात; उणर्त्तुकै तविरेन्–समझाना नहीं छोड़ूँगी; ॲन्ऱु–कहकर; अटि मिचै विळुन्तु–पैरों पर गिरकर; उरै वळङ्कुम्–अपनी (हाँक चलाने लगी) वात कहने लगी। १६५

मंथरा इससे न डरी, न हटी। वह उस विष के समान थी जो जादूक्रिया आदि चिकित्सा करने पर भी अपना प्रभाव नहीं छोड़ता और कष्ट देता रहता है। वह कहने लगी— लतासमाना ! मेरी शरण्या ! मै कैसे हटूँगी ? आपका जो हित है वह समझाने से मैं नहीं

रुकूँगी। वह उनके पैरों पर गिरकर नमस्कार कर उठी और बोली। १६५

मूत्त वड़्कुरित् तरशॅनु मुऱैमैयि नुलहम्
कात्त मन्ननि निळैयनन् ऱोकडल् वण्णन्
एत्तु नीण्मुडि पुनैवदऱ्कु इशैन्दनन् ॲन्ऱाल्
मीत्तरुञ् जॅल्वम् बरदनै विलक्कुमा ऱॅवनो 166

मूत्तवऱ्कु उरित्तु अरचु–सबसे बड़े के अधिकार का है राज; अन्नुम् मुऱैमैयिन्–इस रीति से; उलकम् कात्त मन्ननिन्–भूपालक हमारे राजा से; कटल् वण्णन् इळैयन् अन्ऱो–समुद्रवर्ण श्रीराम छोटा है नहीं; एत्तुम् नीळ् मुटि–प्रथित दीर्घ किरीट; पुनैवतऱ्कु–धारण करने को; इचैन्तनन्–सहमत हुए; अन्ऱाल्–तो; मीतरुम् चॅल्वम्–गौरवपूर्ण राज्यश्री को प्राप्त करने से; परतनै विलक्कुम्–भरत को रोकने का; आऱु ॲवनो–प्रकार (या धर्म) क्या है। १६६

आप कहती हैं कि आपके कुल में उम्र में सबसे बड़े का ही राज्य पर अधिकार होगा। उस रीति से देखा जाय तो अब राज्य का शासन जो कर रहे हैं उन दशरथ से समुद्रवर्ण श्रीराम छोटे है न? उनको यह गौरवपूर्ण मुकुट पहनाने को ये राजा सहमत हो गये है। फिर भरत कैसे वर्ज्य हुआ? उसको इस वैभवयुक्त राज्यश्री को प्राप्त करने से रोकनेवाली कैसी रीति है? । १६६

❀ अऱनि रम्बिय वरुळुडै यरुन्दवर्क् केनुम्
पॅऱल रुन्दिरुप् पॅऱ्ऱपिन् शिन्दनै पिऱिदाम्
मऱनि नैन्दुमै वलिहिल रायिनु मनत्ताल्
इऱलु ऱुम्बडि यियऱ्ऱुव रिडैयऱा विन्नल् 167

अऱम् निरम्पिय–संन्यास धर्म में बढ़े हुए; अरुळ् उटै–कृपायुक्त; अरु तवर्क्केनुम्–उत्तम तपस्वियों का भी; पॅऱल् अरु–दुष्प्राप्य; तिरु पॅऱ्ऱ पिन्–बड़े धन को प्राप्त करने पर; चिन्तनै पिऱितु आम्–मन विकृत हो जायगा; मऱम् निनैन्तु–आपकी हानी सोचकर; उमै वलिकिलर्–आपको नहीं सताया; आयितुम्–तो भी; मनत्ताल् इऱल् उऱुम्पटि–मन मारकर मर जायँ, ऐसा; इटै अऱा इन्नल् इयऱ्ऱुवर्–निरन्तर (आपको और भरत को, कौसल्या और राम) दुख देंगे। १६७

देखिए! संन्यास धर्म अपनाकर उसमें उन्नति जो कर चुके उन कृपालू तपस्वियों का मन भी दुष्प्राप्य बड़े धन को पाकर बिगड़ जायगा। कौसल्या और राम आपका अहित सोचते तो हैं पर अब तक आपकी कोई हानि नहीं की है। पर आगे वे आपको ऐसे दिक करेंगे कि आपको मन मारकर प्राण छोड़ने के सिवा दूसरा चारा नहीं रहेगा। १६७

❀ पुरियुन् दन्मह नरशॅनिऱ् पूदल मॅल्लाम्
ॲरियुज् जिन्दनैक् कोशलैक् कुडैमैया मॅन्ऱाल्

परियु निऩ्कुलप् पुदल्वर्कु निऩक्कुमिप् पार्मेल्
उरिय दॆऩ्ऩव ळुदविय वॊरुपॊरु ळल्लाल् 168

ऍरियुम् चिन्तनै कोचलैक्कु–जलनेवाले मन की कौसल्या का; तऩ् मकऩ् अरचु पुरियुम् ऍनिऩ्–उनका पुत्र राज करेगा तो; पूतलम् ऍल्लाम् उटैमै आम्–भूतल सब पर आधिपत्य हो जायगा; ऍऩ्ऱाल्–तो; इ पार् मेल्–इस भूमि पर; परियुम् निऩ्कुलम् पुतल्वर्कुम्–दयनीय, आपके अच्छे पुत्र को; निनक्कुम्–और आपको; अवळ् उतविय ऒरु पॊरुळ् अल्लाल्–उनके, सहायता में दिये गये पदार्थ के सिवा; उरियतु ऍऩ्–अपना क्या होगा। १६८

कौसल्या का मन पहले से ही जलता रहता है। उनका पुत्र राजा बनेगा तो भूतल सब उनके अधिकार मे आ जायगा। फिर आपकी और भरत की स्थिति दयनीय हो जायगी। दया करके जो भी वे देंगी उसको छोड़कर किस वस्तु पर आपका हक रहेगा? । १६८

❀ तूण्डु मिऩ्ऩलुम् वऱुमैयुन् दॊडर्दरत् तुयराल्
ईण्डु वनुदुनै यिरन्दवर्क् किऱुनिदि यवळै
वेण्डि यीदियो वॆळ्हुदि योविम्म नोयाल्
माण्डु पोदियो मऱुत्तियो वॆङ्ङतम् वाळ्दि 169

तूण्टुम् इऩ्ऩलुम्–(माँगने के लिए) प्रेरित करनेवाली (भूख की) पीड़ा और; वऱुमैयुम्–अभाव; तॊटर् तर–अपना पीछा करते; तुयराल्–वेदना के साथ; ईण्टु वनुतु–यहाँ आकर; उऩ्ऩै इरन्तवर्क्कु–आपसे याचना करनेवालों को; इरु निति–बड़े धन को; अवळै वेण्टि ईतियो–उनसे माँग लाकर दिलायेंगी; वेळ्कुतियो–शरमायेंगी; मऱुत्तियो–या इनकार करेंगी; विम्मल् नोयाल्–अपमान के दुख के रोग से; माण्टु पोतियो–मर जायेंगी; ऍङ्ङऩम् वाऴ्ति–किस तरह जीवित रहेंगी। १६९

और भी सोचिये। आपके पास याचक भूख और अभाव के कारण कुछ माँगने आयेंगे। आप उनको अधिक धन देना चाहेंगी। तब आप क्या कौसल्या से माँग लाकर इन्हें देंगी? या अपनी स्थिति पर शरम खाकर चुप रह जायँगी? या साफ़ इनकार कर सकेंगी? या अपमान के दुख से प्राणत्याग कर लेंगी? कहिए आप किस प्रकार जीवित रहेंगी? । १६९

शिन्दै यॆऩ्शॆयत् तिहैत्तनै यिनिच्चिल नाळिल्
तन्द मिऩ्मयु मॆळिमयु निऱ्कॊण्डु तविर्क्क
उन्दै यन्नैयुन् किळैञर्मऱ् ऱुऩ्गुलत् तुळ्ळोर्
वन्दु काण्बदुन् माऱ्ऱवळ् शॆल्वमो मदियाय् 170

ऍऩ् चॆय–क्या करने; चिन्तै तिकैत्तऩै–चित्तभ्रमित हे; इऩि चिल नाळिल्–आगे कुछ दिनों में; उन्तै–आपके पिता; अऩ्ऩै–माता; उऩ् किळैञर्–आपके

बन्धुबान्धव; मर्‌रु उन् कुलत्तु उळ्ळोर्–अन्य आपके कुल के लोग; तम् तम् इन्मैयुम्–अपना-अपना अभाव; ऍळिमैयुम्–दीनता को; निन् कॉण्टु–आपके द्वारा; तविर्क्क–दूर करने के विचार से; वन्तु–इधर आने पर; काण्पतु–जो देखेंगे वह; उन् मार्‌रवळ् चॅल्वमो–आपकी सौत का वैभव क्या; मतियाय्–सोचिए। १७०

क्या करने के विचार से आप भ्रमित खड़ी रहती हैं? आगे कुछ ही दिनों में आपके पिता, आपकी माता, आपके बन्धु-बान्धव और आपके कुल के अन्य लोग अपने अभाव और अपनी दीनता को आपकी सहायता से दूर करने के विचार से आपको देखने आयेंगे। तब वे आपकी सौत का वैभव देखें —क्या यही स्थिति हो? । १७०

काद लुन्बॅरुङ् गणवनै यञ्जियक् कनिवाय्च्
चीदै तन्दयुन् ऱादयैत् तॅरुहिल निरामन्
मादु लन्नव नुन्दय्क्कु वाळ्विनि युण्डो
पेदै युन्रुणै यारुळर् पळिबडप् पिऱन्दार् 171

अ कनिवाय् चीतै तन्तै–उस (बिम्ब-)फल-सम मुख (होंठ) वाली सीता के पिता; उन् पॅरुम् कातल् कणवन्तै अञ्चि–आपके बहुत प्यारे पति से डरकर; उन् तातैयै तॅरुकिलन्–आपके पिता को मिटा नहीं पाये; अवन् इरामन् मातुलन्–वे श्रीराम के मातुल (ससुर) हैं; उन्तैक्कु–आपके पिता को; इनि वाळ्वु उण्टो–आगे जीवन (सकुशल) रहेगा क्या; पेतै–नादान; पळि पट–निंदा सह लेने के लिए; पिऱन्तार्–उत्पन्न; उन् तुणै यार् उळर्–आपके समान कौन हैं। १७१

बिम्बफल-सी होंठ वाली उस सीता के पिता जनक ने आपके प्रिय पति से डरकर आपके पिता को नहीं मारा है। वे श्रीराम के ससुर हैं। (तमिऴ् में मामा कहते हैं ससुर को भी।) इस स्थिति में आपके पिता का (सुखमय) जीवन कहाँ? अबोध! आपके समान ऐसा कौन इस संसार में जन्मा है जिससे उसका और उसके अपनों का निन्दनीय जीवन हो गया? । १७१

मर्‌रु नुन्दैक्कु वान्बहै पॅरिदुळ मार्‌रार्
शॅर्‌र पोदिवर् शॅन्रुद वारॅनिऱ् चॅरुविऱ्
कॉर्‌र मॅन्बदोन् ऱॅव्वळि युण्डदु कूराय्
शुर्‌र मुऱ्ऱॅडक् कडुन्दुयरक् कडलवीळ्ळत् तुणिन्दाय् 172

नुन्तैक्कु–आपके पिता को; मर्‌रुम् वान् पकै पॅरितु–और भी बड़े शत्रु; उळ–हैं; मार्‌रार्–वे शत्रु; चॅर्‌रपोतु–जब लड़ने आएँगे तब; चॅरुविल्–उस युद्ध में; इवर् चॅन्रु उतवार् ऍनिल्–ये जाकर सहायता नहीं करेंगे तो; कॉर्‌रम् ऍन्पतु ऑन्रु–विजय नामक कोई चीज; ऍव्वळि उण्टु–किस प्रकार मिलेगी; अतु कूराय्–वह कहिए; चुर्‌रमुम् कॅट–अपने परिवार को नाश होने देते हुए; कटु तुयर् कटल्–भयंकर दुखसागर में; विळ तुणिन्ताय्–गिरने का निश्चय कर चुकी हैं। १७२

आपके पिता के, पहले ही से अनेक प्रवल शत्रु हैं। समझिए कि वे शत्रु उन पर युद्ध करने आते है। उस युद्ध में ये (श्रीराम) जाकर आपके पिता की सहायता नहीं करेंगे तो उन्हें विजय का गौरव मिलेगा कैसा ? आप ही कहिए। अपने वन्धुजनों को मटियामेट करते हुए आपने दुख-सागर में डूवने का निश्चय कर लिया न ! । १७२

कॅडुत्तॉ ळिन्दनै युनक्करुम् वुदल्वनैक् किळर्नीर्
उडुत्त पारह मुडॅयव नॉरुमहर्क् कॅनवे
कॉडुत्त पेरर शवन्गुलक् कोमय्न्दर् तमक्कुम्
अडुत्त तम्बिक्कु माम्पिऱर्क् काहुमो वॅन्ऱाळ् 173

उनक्कु अरु पुतल्वनै–अपने प्यारे पुत्र को; कॅटुत्तॉळिन्तनै–आपने बिल्कुल मिटा दिया है; किळर् नीर् उटुत्त–विपुल जल (सागर-)वसना; पारकम् उटैयवन्–भूमि के पति (हमारे राजा); ऑरु मकर्क्कु ऍनवे कॉटुत्त–एक पुत्र को जो देते हैं; पेर् अरचु–वह बड़ा राज्य; अवन् कुलम् को मैन्तर् तमक्कुम्–उसके वंश के राजकुमारों का; अटुत्त तम्पिक्कुम्–और उसके साथ के भाई का; आम्–होगा; पिऱर्क्कु आकुमो–दूसरों का होगा क्या; ऍन्ऱाळ्–कहा। १७३

आपने अपने पुत्र की स्थिति बिगाड़ दी। समुद्रवसना भूमि को उसके राजा, हमारे दशरथजी ने अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र को दिया तो वह विशाल राज्य उसका होगा, उसके कुल में उत्पन्न राजकुमारों का होगा और उसके साथी छोटे भाई का होगा। दूसरे का होगा क्या ? —यह पूछा। १७३

❀ तीय मन्दरै यिव्वुरै शॅप्पलुन् देवि
तूय शिन्दयुन् दिरिन्दद्दु शूळ्च्चियि निमैयोर्
मायै युम्मवर् पॅऱ्ऱनल् वरमुण्मै यालुम्
आय वन्दण रियऱ्ऱिय वरुन्दवत् तालुम् 174

तीय मन्तरै–क्रूर मंथरा के; इ उरै चॅप्पलुम्–यह वचन कहने पर; इमैयोर् मायैयुम्–देवों की माया से (और); अवर् पॅऱ्ऱ–उनके (श्रीविष्णु से) प्राप्त; नल् वरम् उण्मैयालुम्–श्रेष्ठ वर भी था, इसलिए; आय–विश्वासी (आस्तिक); अन्तणर् इयऱ्ऱिय–ब्राह्मणों का किया हुआ; अरु तवत्तालुम्–कठिन तप, उससे; तेवि तूय चिन्तैयुम्–देवी कैकेयी का पवित्र मन; चूळ्च्चियित्–(मंथरा के) षडयन्त्र के वचन से; तिरिन्ततु–विकृत हुआ। १७४

दुर्गुण क्रूरी मंथरा ने इतना कहा तो देवी कैकेयी का पवित्र मन विकृत हो गया। देवों की माया, उनका श्रीविष्णु से प्राप्त वर, तपस्वी ब्राह्मणों का तप और मन्थरा का षडयन्त्रभरा वाद —इन सवके कारण वे पलटा खा गईं। १७४

अरक्कर् पावमु मल्लव रियऱ्ऱिय वऱमुम्
तुरक्क नल्लरु डुऱन्दन डूमॊऴि मडमान्
इरक्क मिन्मयन् ऱोविन्ऱिव् वुलहङ्ग ळिरामन्
परक्कुन् दॊल्पुह ऴमुदित्तैप् परुहनिन् ऱुवे 175

अरक्कर् पावमुम्–राक्षसों का पाप और; अल्लवर्–अन्यों का; इयऱ्ऱिय–किया; अऱमुम्–धर्म-फल; तुरक्क–(दोनो की) प्रेरणा से; तू मॊऴि–पवित्र वाणी; मटम् मान्–बाल मृगी (सी कैकेयी); नल् अरुळ् तुऱन्तनळ्–अपनी कृपा से बिछुड़ गई; इरक्कम् इन्मै अन्ऱो–उनकी करुणाहीनता से तो; इ उलकङ्कळ्–ये सब लोक; इमामन्–श्रीराम की; परक्कुम्–सर्वव्यापी; तॊल् पुकळ् अमुतित्तै–प्राचीन कीर्ति रूपी अमृत को; इन्ऱु परुक निन्ऱतु–आज पान करते हुए स्थित है। १७५

राक्षसों का पाप, अन्यों का धर्म-प्रभाव इन दोनों की प्रेरणा भी थी कि पवित्रवाणी बालमृगी-सी कैकेयी ने अपनी कृपा को त्याग दिया। लेकिन, जो आज सारे लोक श्रीराम के विशाल और प्राचीन यश के अमृत को भोग रहे हैं तो वह क्या उनकी करुणाहीनता के ही कारण नहीं ? । १७५

❀ अत्तैय तन्मय ळाहिय केहय नन्नम्
वित्तैनि रम्बिय कूनियै विरुम्बिन णोक्कि
ऍत्तैयु वन्दनै यिनियऍन् महनुक्कु मत्तैयान्
पुत्तैयु नीण्मुडि पॆरुम्बडि पुहलुदि यॆन्ऱाळ् 176

अत्तैय तन्मैयळ् आकिय–ऐसी (विकृतमन और करुणात्यक्त) जो बन गई उन; केकयन् अन्नम्–केकयराज की हंसिनी-सी पुत्री ने; वित्तै निरम्पिय–कृत-कृत्य हुई; कूनियै–कुब्जा को; विरुम्पिनळ् नोक्कि–स्नेह के साथ देखकर; ऍत्तै उवन्ततै–मुझे चाहती हो; ऍन् मकनुक्कुम् इनियै–मेरे पुत्र की भी हितैषिणी हो; अत्तैयान्–वह (भरत); पुत्तैयुम् नीळ् मुटि–धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पॆरुम् पटि–प्राप्त करने का उपाय; पुकलुति–कहो; ऍन्ऱाळ्–पूछा। १७६

ऐसी, मन-बदली कैकेयी ने अब मन्थरा को बहुत स्नेहार्द्र दृष्टि से देखा। मंथरा सफल-मनोरथ हो गई। केकयराज की पुत्री हंसिनी के समान दृश्यमान कैकेयी ने मन्थरा से कहा कि मन्थरा तुम कितनी अच्छी हो ! मेरी हितैषिणी और मेरे पुत्र का हित चाहनेवाली हो ! अब बताओ कि किस उपाय से मेरा पुत्र भरत, उसको जो मिलना चाहिए वह श्रेष्ठ राजमुकुट पा सकता है ? । १७६

❀ माळै यॊण्गणि युरैशॆयक् केट्टमन् दरैयॆन्
तोऴि वल्लळॆन् ऱुणैवल्ल ळॆन्ऱडि तॊऴुदाळ्
ताऴु मॆन्निनि यॆन्नुरै तलैनिऱ्पि नुलहम्
एऴु मेऴुमु नीरुमहऱ् काक्कुवॆ नॆन्ऱाळ् 177

माऴै ऑण् कण्णि–टिकोरे की फांक के समान आँखों वाली ने; उरै चॅय–यह वचन कहा, उसको; केट्ट–जिसने सुना वह; मन्तरै–उस मंथरा ने; ऍन् तोऴि वल्लळ्–मेरी (प्यारी) सखी समर्थ है; ऍन् तुणै वल्लळ्–मेरी संगिनी समर्थ है; ऍन्ऱु–(प्रशंसा) कहकर; अटि तॊऴुताळ्–चरणों पर प्रणमन किया; ऍन् उरै तलै निऱ्पिन्–मेरे कहे अनुसार करेंगी तो; इनि ऍन् ताऴुम्–अब क्या देरी होगी; उलकम् एऴुम् एऴुम्–लोक सात और सात (चौदहों); उन् ऑरु मकऱ्कु–आपके श्रेष्ठ पुत्र के; आक्कुवेन्–(अधीन) बना लूंगी; ऍन्ऱाळ्–कहा। १७७

(आम के) टिकोरे की फाँक-सम आँख वाली कैकेयी ने यह कहा तो मन्थरा का मन कृतार्थता की तृप्ति से भर गया। उसने वात्सल्य के साथ कैकेयी की, "मेरी सखी है न, बड़ी चतुर है!, मेरी साथिन है न, बड़ी समर्थ है", यह कहकर प्रशंसा की। फिर उसने उनके चरणों पर गिरकर नमस्कार करके कहा कि आप मेरे कहे अनुसार निश्चित रूप से चलेंगी तो अब देरी क्या? ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों भुवन अब आपके अपने एकाकी पुत्र भरत के हो जायँगे। १७७

❀ नाडि यॊन्ऱुरन् गुरैशॆय्वॆ नळिर्मणि नहैयाय्
तोडि वर्न्दतार्च् चम्बरन् ट्रॊलैवुट्र वेलै
आडल् वॆन्ड्रिया नरुळिय वरमवै यिरण्डुम्
कोडि यॆन्ड्रन ळुळ्ळमुङ् गोडिय कॊडियाळ् 178

उळ्ळमुम् कोटिय–मन भी (जिसका) कुटिल (था) उस; कॊटियाळ्–क्रूरी मंथरा ने; नळिर् मणि नकैयाय्–शीतल (मनोरम) मोती समान दांत वाली; नन्कु नाटि–खूब सोचकर; ऑन्ऱु उरै चॅय्वॆन्–एक बात कहूँगी; तोटु इवर्न्त तार्–पुष्पलसी मालाधारी; चम्परन्–शम्बरासुर; तॊलैवुट्र वेलै–जब मिटा तब; आटल् वॆन्ऱियान्–युद्धविजयी आपके पति के; अरुळिय–दत्त; वरम् अवै इरण्टुम्–वर हैं दो, उनको; कोटि (अब) माँग लो; ऍन्ऱनळ्–कहा। १७८

मन्थरा का शरीर कुटिल था, उसका मन भी कुटिल था। उस क्रूर स्वभाव वाली ने आगे कहा— शीतल मुक्ता-सम दाँत वाली! मैं खूब सोच-विचारकर एक बात कहूँगी। आप सुन लीजिए। जब घने पुष्पों की मालाधारी शंबरासुर का वध हुआ तब उस युद्ध में विजयप्राप्त आपके नायक ने आपको दो वर दिये थे। उन दोनों वरों को आज माँग लीजिए। १७८

❀ इरुव रत्तिनु ळॊन्ड्रिना लरशुकॊण् डिरामन्
पॆरुव नत्तिडै येऴिरु परुवङ्गळ् पॆयर्न्दु
तिरिदरच् चॆय्व दॊन्ड्रिनार् चॆऴुनिल मॆल्लाम्
ऑरुव ऴिप्पडु मुन्महट् कुवाय मीदॆन्ड्राळ् 179

इरु वरत्तिनुळ्–दो वरों में; ऑन्ऱिनाल्–एक से; अरचु कॊण्टु–भरत के लिए राज्य लेकर; ऑन्ऱिनाल्–दूसरे (एक) से; इरामन्–श्रीराम को; पॆयर्न्तु–

(राज्य से) निकलकर; एऴ् इरु परुवङ्कळ्–सात के दो (चौदह) साल; पॆरुवत्तुतिटै–विशाल वन में; तिरि तर चॆय्वतु–भटकने देना; चॆऴु तिलम् ॲल्लाम्–समृद्ध देश सब; उन् मकऩ्कु–आपके पुत्र का; ऒरु वऴि पट्टुम्–एक साथ मिले, इसका; उपायम् ईतु–उपाय यही; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १७६

दो वरों में एक के द्वारा भरत को राज्य माँग लीजिए। दूसरे वर से श्रीराम को राज्य छोड़कर घने वन में भटकने के लिए भिजवा देने की व्यवस्था कर लीजिए। यह सारी समृद्ध भूमि आपके पुत्र की सम्पत्ति हो, उसका यही उपाय है। —मन्थरा ने कहा। १७९

❀ उरैत्त कूऩियै युवन्दऩ ळुयिरुऱत् तऴुवि
निरैत्त मामणि यारमु निदियमु नीट्टि
इरैत्त वेलयॆशू ळुलहमॆऩ् ऩॊरुमहऱ् कीन्दाय्
तरैक्कु नायहऩ् ऱायिनि नीयॆऩत् तणिया 180

उरैत्त कूऩियै–(उपाय जिसने) बताया उस कुब्जा को; उवन्तऩळ्–प्रसन्न होकर; उयिर् उऱ तऴुवि–प्राणों से मिलाकर गले लगाती हुई; मा मणि निरैत्त–बहुमूल्य रत्नजटित; आरमुम्–हार; नितियमुम्–और धन; नीट्टि–उपहार में देकर; इरैत्त वेलै चूऴ् उलकम्–गर्जनशील समुद्रवलयित भूमि को; ॲऩ् ऒरु मकऩ्कु ईन्ताय्–मेरे एकाकी पुत्र को दिया; इऩि–आगे; नी–तुम; तरैक्कु नायकऩ् ताय्–भूपाल की माता; ॲऩ–कहकर; तणिया–सन्तुष्ट हुई। १८०

मन्थरा ने यह उपाय बताया तो कैकेयी बहुत मुदित हो गई। उन्होंने मन्थरा को खूब कसकर हृदय से (मानो प्राणों से) लगा लिया। फिर उसे रत्नहार, धन आदि उपहार दिये। फिर उससे कहा कि गर्जनशील समुद्र से घिरी हुई इस भूमि को तुम्हीं ने मेरे भरत को दिया। इसलिए तुम्ही राजमाता हो। वह अत्यन्त तृप्त हुई। १८०

❀ नऩ्ऱु शॊल्लिऩै नम्बियै नळिमुडि शूट्टल्
तुऩ्ऱु काऩहत् तिरामऩैत् तुरत्तलिव् विरण्डुम्
अऩ्ऱ दामॆऩि लरशऩ्मु ऩारुयिर् तुऱन्दु
पॊऩ्ऱि नीङ्गुदल् पुरिवॆऩ्याऩ् पोदिनी यॆऩ्ऱाळ् 181

नऩ्ऱु चॊल्लिऩै–अच्छा कहा; नम्पियै–कुमार भरत का; नळि मुटि चूट्टल्–श्रेष्ठ मुकुट पहनाना; इरामऩै–राम को; तुऩ्ऱु काऩकत्तु–घने वन में; तुरत्तल्–भिजवा देना; इ इरण्टुम्–ये दोनो कार्य; अऩ्ऱु आम् ॲऩिल्–नहीं होंगे तो; याऩ्–मैं; अरचऩ् मुऩ्–राजा के सामने ही; आर् उयिर् तुऱन्तु–अपने मूल्यवान प्राण त्यागकर; पॊऩ्ऱि नीङ्कुतल्–मर जाने का काम; पुरिवॆऩ्–कर लूँगी; नी पोति–तुम जाओ; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। १८१

उन्होंने आगे यह भी कहा। तुमने बड़ा अच्छा उपाय बताया। भरत का मुकुटधारण, राम का वनगमन —ये दोनों हो नहीं सकेंगे तो मैं राजा के सामने ही अपना प्राणत्याग कर लूँगी। तुम जाओ। १८१

❀ कूऩि पोऩपिऩ् कुलमलर्क् कुप्पय्निऩ् ऱिऴिऩ्दाळ्
शोऩै वार्कुऴर् कर्रैयिर् चॊरुहिय मालै
वाऩ मामऴै नुऴैदरु मदिपिदिर्प् पाळ्पोल्
तेऩ वावुरुम् वण्डिऩ मलमरच् चिदैत्ताळ् 182

कूऩि पोऩ पिऩ्–कुब्जा के जाने के बाद; कुलम् मलर् कुप्पै निऩ्ऱु–श्रेष्ठ पुष्पों से सज्जित पलंग पर से; इऴिन्ताळ्–उतरकर; चोनै–काले मेघ के समान; वार् कुऴल् कर्रैयिल्–लम्बी केशराशि में खोंसे हुए; मालै–हार को; वानम्–आकाश में; मा मऴै नुऴै तरु–बड़े मेघ-मध्य प्रविष्ट; मति–चाँद को; पितिर्प्पाळ् पोल्–छीनकर पटकती-सी; तेन् अवा उरुम्–शहद चाहनेवाले; वण्टु इनम्–भ्रमरकुल; अलमर–घबड़ा जायें ऐसा; चितैत्ताळ्–छिन्न-भिन्न कर दिया। १८२

(मन्थरा निश्चिन्त होकर चली गई।) उसके जाने के बाद कैकेयी पुष्पसज्जित पलंग से उतरी। अपने लम्बे केश में खोंसी हुई पुष्पमाला को मानो आकाश के मेघमध्य से चन्द्र को छीन लेती हो ऐसा झट से छीना तो उस पर शहद की इच्छा से बैठे हुए भ्रमर घबड़ाकर उड़ने लगे। उन्होंने उस माला को छिन्न-भिन्न कर दिया। १८२

❀ विऴैयुन् दऩ्बुहऴ् वल्लियै वेररुत् तॆऩ्ऩक्
किऴयहॊण् मेहलै शिन्दिऩळ् किण्किणि योडुम्
वळैदु रुन्दऩण् मदियिऩिऩ् मरुत्तुडैप् पाळ्पोल्
अळह वाणुद लरुम्बॆरर् ऱिलहमु मऴित्ताळ् 183

विऴैयुम्–वर्धनशील; तन् पुकऴ् वल्लियै–अपनी कीर्ति-लता को; वेर् अरुत्तु ऍन्ऩ–जड़ से काट देती-सी; किऴै कॊळ्–लड़ियाँ रूपी शाखाओं से युक्त; मेकलै–मेखला को; चिन्तिनाळ्–तोड़कर फेंक दिया; किण्किणि योटुम्–पैंजनियों के साथ; वळै–हाथ के कंकणों को भी; तुरन्तनळ्–हटा दिया; मतियितिल् मरु–चन्द्रमध्य कलंक को; तुटैप्पाळ् पोल्–पोंछती-सी; अळकम्–सामने के बाल (अलक) जिस पर पड़े रहते है, उस; वाळ् नुतल्–उज्ज्वल ललाट पर के; पॆरल् अरुम्–दुष्प्राप्य (मंगल-चिह्न); तिलकमुम्–तिलक भी; अऴित्ताळ्–मिटा दिया। १८३

उन्होंने लड़ियों सहित अपनी मेखला को भी तोड़ दिया मानो अपनी ही बढ़ती कीर्तिलता को जड़ से काट रही हो! फिर पैर के नूपुर, हाथ के कंकण —उनको भी उतार फेंका। फिर अलकमण्डित भाल पर से मंगल-सूचक चिह्न को इस प्रकार पोंछा मानो चन्द्र से उसका कलंक हटा रही हो! वह तिलक भी कितना मूल्यवान था! उसको पोंछ दिया। १८३

❀ ताविऩ् मामणिक् कलऩ्मऱ्ऱुन् दनित्तनि शिदऱि
नावि योदियै नाऩिलन् दैवरप् परप्पिक्
कावि युण्डकण् णञ्जऩङ् गाऩ्ऱिडक् कलुऴाप्
पूवु दिर्त्तदोर् कॊम्बॆनप् पुविमिशैप् पुरण्डाळ् 184

ता इल्–निर्दोष; मा मणि कलन्कळ्–श्रेष्ठ रत्नाभरणों को; मर्रुम्–और अन्य अलंकारों को; तत्ति तत्ति चितरि–अलग-अलग फेंककर; नावि ओतियै–कस्तूरी-लगे केश को; नाल् निलम् तैवर परप्पि–भूमि पर लगाते बिछाकर; कावि उण्ट कण्–नीले पुष्प के समान आँखों के; अञ्चत्तम् कान्रिट–अंजन को गलकर रसने देते हुए; कलुळा–आँसू बहाते हुए; पू उतिर्त्तु ओर् कॉम्पु–पुष्पत्यक्त एक लता; अॅन–के समान; पुवि मिचै पुरण्टाळ्–भू पर लोटीं। १८४

अनेक निर्दोष रत्नाभरणों और अन्य अलंकारों को उन्होंने उठाकर अलग-अलग फेंक दिया। नीचे लेट गई और कस्तूरी लगे अपने केशजाल को खोलकर भूमि पर फैला दिया। आँखों से अंजन को अश्रु से गलाकर बहाते हुए वे एक पुष्पों से विमुक्त हुई लता के समान भूमि पर लोटीं। १८४

नव्वि वीऴ्न्दॅन्न नाडह मयिरुयिन्ऱॅन्नक्
कव्वै कूर्तरच् चन्नहियाङ् गडिहमळ् कमलत्
तव्वै नीङ्गुमॅन् ऱयोत्तिवन् दडैन्दवम् मडन्दै
तव्वै यामॅन्नक् किडन्दनळ् केहयन् ऱनयै 185

केकयन् तनयै–केकयतनया; नव्वि वीऴ्न्ततु अॅन्न–मृगी गिर गई, जैसे; नाटकम् मयिल्–नाचनेवाला मोर; तुयिन्रतु अॅन्न–सो गया हो जैसे; कव्वै कूर् तर–दुख के तेज बनते; चन्नकि आम्–जानकी रूपी; कटि कमळ् कमलत्तु–सुवासित कमल की; अव्वै–देवी (श्री); नीङ्कुम् अॅन्रु–छोड़ जाएगी, यह जानकर; अयोत्ति वन्तु अटैन्त–अयोध्या में जो आ पहुँची; अ मटन्तै तव्वै आम्–उन देवी की ज्येष्ठा है; अॅन–ऐसा; किटन्तनळ्–पड़ी रहीं। १८५

उनको देखने पर ऐसा लगा मानो हरिण चौकड़ी भरना छोड़कर म्लान पड़ा हो; या नाचनेवाला मयूर थक कर सो रहा हो। वे ज्येष्ठा (लक्ष्मी की बड़ी बहन जो दरिद्रता, अभाव और संकट की देवी मानी जाती हैं) के समान लगीं जो यह जानकर उधर आई हों कि सुवास-पूर्ण कमलपुष्प पर रहनेवाली जानकी नाम की देवी कमला, बढ़ते दुख के साथ, अयोध्या छोड़ जायेगी और हमारा अब यहाँ स्थान हो गया है। वे निश्चेष्ट पड़ी रहीं। १८५

3. कैकेयी शूऴ् विनैप् पडलम् (कैकेयी दुष्कर्म पटल)

❀ नाऴिहै कङ्गुलि नळ्ळ डैन्द वेलै
याऴिशै यन्जिय वञ्जों लेळै कोयिल्
वाऴिय वॅन्रियन् मन्नर् तुन्न वन्दान्
आऴि नॅडुङ्गै मडङ्ग लाळि यन्नान् 186

आऴि नॅटुकै–आज्ञा का चक्र धारण करनेवाले लम्बे हाथ का; आळि मटङ्कल् अन्नान्–पुरुष केसरी सदृश दशरथ; कङ्कुलिन् नाऴिकै–रात का समय; नळ् अटैन्त

वेलै–जव मध्य में आया तव; वाळ्िय ॲन्ऱु–जयजीव, ऐसा विरुद कहते हुए; मन्नर् अयल् तुन्न–राजा लोगों के पार्श्व में आते; याळ् इचै–वीणा का संगीत; अन्चिय अम् चौल्–जिससे डरता है, उस मधुर वचन की; एळै कोयिल्–स्वामिनी देवी के महल में; वन्तान्–आये। १८६

रात अपनी मध्यवेला पर आ गई। तव आज्ञाचक्रधर, दीर्घबाहु दशरथ कैकेयी के महल की तरफ़ चले आये। उनके साथ राजा लोग 'जयजीव' का विरुद कहते आये। कैकेयी मधुरभाषिणी थीं और उनकी वाणी की मधुरता के सामने वीणा का स्वर भी डरता था। तो भी वे अबोध थीं। (उनकी मधुर बोली का याद दिलाना इसलिए कि अब उनकी वाणी कठोर रहनेवाली है और अबोध इसलिए कि वह अपनी बुद्धि से कार्य करनेवाली नहीं थीं।)। १८६

❀ वायिलिन् मन्नर् वणङ्गि निऱ्प वन्दाङ्
गेयिन शॅय्यु मणङ्गिनर् शूळ वेहिप्
पाय ऱुऱन्द पडैत्त डङ्गण् मॅन्ऱोळ्
आयिळै तन्नै यडैन्दन नाळि मन्नन् 187

आळि मन्नन्–चक्रवर्ती; मन्नर्–राजाओं को; वणङ्कि–हाथ जोड़कर; वायिलिन् निऱ्प–द्वार पर खड़े होने देकर; आङ्कु–वहाँ; एयित चॅय्युम्–आज्ञाएँ बजा लानेवाली; अणङ्कितर्–दासियाँ; वन्तु चूळ–जब आकर घेर गईं, तब; एकि–जाकर; पायल् तुऱन्त–शय्या त्यागकर; पटै तट कण्–अस्त्र-सम विशाल आँखें और; मॅन् तोळ्–कोमल कंधे वाली; आय् इळै तन्नै–चुने हुए (श्रेष्ठ) आभरणधारिणी के पास; अटैन्तनन्–पहुँचे। १८७

राजा लोग कैकेयी के महल के द्वार पर ही हाथ जोड़े रुक गये। चक्रवर्ती आगे जाने लगे तो वहाँ आज्ञाकारिणी दासियाँ साथ लग गईं। वे उन कोमलांगी बर्छी-सम नेत्र वाली कैकेयी के पास पहुँचे जो पलंग त्यागकर नीचे भूमि पर लेटी थीं। १८७

❀ अडैन्दन नोक्कि यरन्दै यॅन्कोल् वन्दु
तॊडर्न्द दॅन्नत्तुयर् कॊण्डु शोरु नॅञ्जन्
मडन्दयै मानै यॅडुक्कु मानै येपोल्
तडङ्गैहळ् कॊण्डु तळीइ यॅडुक्क लुऱ्ऱान् 188

अटैन्तनन्–पास जाकर; नोक्कि–उनकी स्थिति देखकर; वन्तु तॊटर्न्ततु–इसे आ लगा; अरन्तै ॲन् कॊल्–दुख क्या है; ॲन–सोचकर; तुयर् कॊण्टु–व्याकुल होकर; चोरुम् नॅञ्चन्–खिन्नमन हो; मटन्तैयै–रमणी को; मानै ॲटुक्कुम् आनैये पोल्–हरिण को उठानेवाले गज के समान; तट कैकळ् कॊण्टु तळीइ–विशाल, लम्बे हाथों से बाँधकर; ॲटुक्कल् उऱ्ऱान्–उठाने लगे। १८८

चक्रवर्ती ने उनकी हालत देखी तो वे बड़े व्याकुल हुए और सोचने लगे

कि इन्हें क्या हो गया है ? खिन्नमन होकर उन्होंने उन्हें अपने दोनों पुष्ट हाथों से बांधकर ऐसा उठाने का प्रयास किया जैसे एक हाथी एक हथिनी को उठा रहा हो । १८८

❀ निन्ऱु तॉडर्न्द नॆडुङ्गै तम्मै नीक्कि
मिन्ऱुवळ् हिन्ऱदु पोल मण्णिल् वीळ्न्दाळ्
ऑन्ऱु मियम्बल णीडु यिर्क्क वुऱ्ऱाळ्
मन्ऱ लरुन्दॊडै मन्न नावि यन्नाळ् 189

मन्ऱल् अरु तॊटै मन्नन्–सुगन्धयुक्त अतिसुन्दर मालाधारी राजा की; आवि अन्नाळ्–प्राणसमाना; निन्ऱु–स्थिर रहकर; तॊटर्न्त–(दशरथ के) बढ़े हुए; नॆटु कै तम्मै–दीर्घ भुजाओं को; नीक्कि–हटाकर; मिन् तुवळ्किन्ऱतु पोल–मानो बिजली लचकती हो ऐसा; मण्णिल् वीळ्न्ताळ्–भूमि पर गिरीं; ऒन्ऱुम् इयम्पलळ्–कुछ नहीं बोलीं; नीटु उयिर्क्कल् उऱ्ऱाळ्–लम्बी साँसें छोड़ने लगीं । १८९

सुवासपूर्ण मालाधारी चक्रवर्ती की वे प्राण-सम प्यारी थीं । वे अब अपनी स्थिति में अटल रहीं । उन्होंने दशरथ के बढ़े हुए हाथों को निवारित किया और तड़पती बिजली के समान भूमि पर लचकती हुई गिरी । वे कुछ नहीं बोलीं; पर लम्बी-लम्बी साँसें छोड़ने लगीं । १८९

❀ अन्नदु कण्ड वलङ्गन् मन्न नञ्जि
ऎन्नै निहळ्न्ददिव् वेळु ञालम् वाळ्वार्
उन्नै यिहळ्न्दवर् माळ्व रुऱ्ऱ दॆल्लाम्
शॊन्नपि नॆन्शॆयल् काण्डि शॊल्लि ऎन्ऱान् 190

अन्नतु कण्ट–उस (कार्य) को देखकर; अलङ्कल् मन्नन्–मालाशोभित राजा; अञ्चि–डरकर; निकळ्न्ततु ऎन्नै–घटित हुआ क्या; इ एळु ञालम्–इन सातों लोकों में; वाळ्वार्–रहनेवालों में; उन्नै इकळ्न्तवर्–तुम्हारी निंदा करनेवाले; माळ्वर्–मर जायेंगे; उऱ्ऱतु ऎल्लाम्–जो भी हुआ वह सब; चॊन्न पिन्–तुम कहो, उसके बाद; ऎन् चॆयल् काण्टि–मेरा कृत्य देखो; चॊल्लिटु–कहो जल्दी; ऎन्ऱान्–कहा । १९०

यह देखकर चक्रवर्ती दशरथ डर गये । माला से शोभित राजा ने उनसे पूछा कि हुआ क्या ? तुम्हारी निन्दा करनेवाले इन सातों लोकों के वासियों में कोई भी हों, वे मेरे हाथों मारे जायेंगे । घटित सब बातें बताओ पहले; पीछे मेरा कृत्य देखो । कहो जल्दी । १९०

❀ वण्डुळर् तारवन् वाय्मै कॆट्ट मऱ्ऱै
कॊण्ड नॆडुङ्गणि नालि कॊडुमै कॊण्ड
वण्डुळै लामरु ळॆन्न पुण्मै नाडिन्
पण्डय विन्ऱु पयिन्द ळित्तुमि ऎन्ऱाळ् 191

वण्टु उळर् तारवन्–भ्रमरनुची मालाधारी राजा के; वाय्मै–वचनों को; केट्ट मङ्कै–जिन्होंने सुना वे देवी; नॆटुम् कण्–दीर्घ आँखों रूपी; कॊण्टलिन् आलि–मेघों के जल (अश्रु) कण; कॊङ्कै कोप्प–स्तनों पर गिराते हुए; ॲन् कण्–मुझ पर; अरुळ् उण्टु आम् कॊल्–दया भी है क्या; उण्मै नाट्टिन्–उसका रहना स्थापित करना चाहते हों तो; पण्टैय–पहले के (वादों को); इन्ऱु–आज ही; परिन्तु अळित्ति–प्रेम के साथ दे दीजिए; ऍन्ऱाळ्–कहा। १९१

भ्रमर जिनको नोच रहे थे उन पुष्पों की माला से अलंकृत राजा के निश्चयपूर्ण वचन सुनकर कैकेयी ने अपने नेत्र रूपी मेघ से आँसू के जल कणों को अपने स्तनों पर बरसाते हुए कहा कि क्या मुझ पर आपकी दया भी है ? अगर सचमुच है तो उन दो वरों को, जिनका वादा आपने पहले किया था, अभी दीजिए और स्नेह के साथ दीजिए। १९१

❀ कळ्ळविळ् कोदै करुत्तुण राद मन्नन्
वॆळ्ळ नॆडुञ्जुडर् मिन्निन् मिन्न नक्कान्
उळ्ळ मुवन्ददु शॆय्वॆ नीन्ऱु लोवेन्
वळ्ळ लिरामनुन् मैन्द नाणै यॆन्ऱान् 192

कळ् अविळ् कोतै–शहद बरसानेवाले (पुष्पों से अलंकृत) केश वाली के; करुत्तु उण्रात–मन से अनभिज्ञ; मन्नन्–राजा; वॆळ्ळम् नॆटु चुटर्–अतिशय प्रकाश वाली; मिन्निन्–बिजली के समान; मिन्न–प्रकाशमय रीति से; नक्कान्–हँसकर; उळ्ळम् उवन्तु चॆय्वॆन्–तुम्हारे मन की चाह पूरा करूँगा; ऒन्ऱुम् उलोवेन्–कुछ भी लोप नहीं करूँगा; उन् मैन्तन्–तुम्हारे पुत्र; वळ्ळल्–वदान्य; इरामन् आणै–राम की कसम; ऍन्ऱान्–बोला। १९२

राजा ने कैकेयी का, जिसके केश पर शहद रस रहा था, आन्तरिक अभिप्राय नहीं जाना। यह सुनकर वे हँस उठे और उनके दाँतों ने अतिशय प्रकाश वाली बिजली से भी अधिक चमक दिखाई। उन्होंने वादा किया कि तुम जो चाहोगी वह अवश्य करूँगा। कुछ भी लोप नहीं करूँगा। हाँ, राम की सौगन्ध ! । १९२

❀ आन्ऱव नव्वुरै कूऱ वैय मिल्लाळ्
तोन्ऱिय पेरव लन्दु डैत्त लुण्डेल्
शान्ऱिमै योर्कुल माह मन्न मुन्नी
एन्ऱ वरङ्ग ळिरण्डु मीदि यॆन्ऱाळ् 193

आन्ऱवन्–गुणश्रेष्ठ के; अ उरै कूऱ–वह वचन कहने पर; ऐयम् इल्लाळ्–संशय-छूटी; मन्न–राजन; तोन्ऱिय–उत्पन्न; पेर् अवलम्–मेरा बड़ा दुख; तुटैत्तल् उण्टेल्–दूर करना हो; मुन्–पहले; इमैयोर् कुलम् चान्ऱु आक–देवगणों को साक्षी बनाकर; नी एन्ऱ वरङ्कळ् इरण्टुम्–आपने जो वादे किये वे दो वर; ईति–अब दीजिए; ऍन्ऱाळ्–कहा। १९३

जब राजा ने राम की सौगन्ध खाई तो कैकेयी को विश्वास हो गया कि अब मनोरथ पूरा हुआ। संशय सब जाता रहा। तब उन्होंने कहा— हे राजन् ! अगर आप मेरा कठोर दुख दूर करना चाहेंगे तो आपने पहले किसी दिन, देवता लोगों को साक्षी बनाकर दो वर देने का जो वादा किया था, उन दोनों वरों को अभी दीजिए। १९३

❀ वरङ्गॊळ वित्तुणै मम्म रल्ल लॅय्दि
इरङ्गिड वेण्डुव दिल्लै यीव नॆन्बाल्
परङ्गॊड विप्पॊऴ्‌दु दॆब हर्न्दि डॆन्ऱान्
उरङ्गॊण् मनत्तवळ् वञ्ज मोर्हि लादान् 194

उरम् कॊळ् मनत्तवळ्—कठोरता से भरे मन की; वञ्चम्—वंचना का; ओर्किलातान्—जो अनुमान नहीं कर सके, उन दशरथ ने; वरम् कॊळ—वर लेने के लिए; इत्तुणै मम्मर् अल्लल् ॲय्ति—इतनी घबड़ाहट और इतना संकट पाकर; इरङ्किट वेण्टुवतिल्लै—दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी; ॲन् पाल् परम् कॊट—मेरा भार दूर हो जाय ऐसा; इ पॊऴुते ईवॆन्—अभी दे दूँगा; पकर्न्तिटु—बताओ; ॲन्ऱान्—कहा। १९४

राजा ने अब भी कठोरता से भरे कैकेयी का सच्चा मनोभाव नहीं जाना। उन्होंने कहा कि मुझसे वर लेने के लिए इतनी घबड़ाहट, इतना संकट क्यों ? इतना दुखी होने की आवश्यकता नहीं थी। अभी कहो। अपना भार हल्का करते हुए तुम्हें अभी दे दूँगा। १९४

❀ एय वरङ्ग ळिरण्डि नॊन्ऱि नालॆन्
शेयुल हाळ्वदु शीदै केळ्व नॊन्ऱाल्
पॊय्वन माळ्व दॆनप्पु हन्ऱु निन्ऱाळ्
तीयवै यावयि नुञ्जि ऱन्द तीयाळ् 195

तीयवै यावैयिनुम्—सभी क्रूर बातों से; चिऱन्त तीयाळ्—बढ़कर अधिक क्रूरता वाली; एय वरङ्कळ् इरण्टिन्—सहमत दो वरों में; ऒन्ऱिताल्—एक से; ॲन् चेय्—मेरा पुत्र; उलकु आळ्वतु—लोकशासन करे; ऒन्ऱाल्—(दूसरे) एक से; चीतै केळ्वन्—सीता का पति; पोय्—(राज्य छोड़) जाकर; वनम् आळ्वतु—वन का पालन करे; ॲन पुकन्ऱु—यह कहकर; निन्ऱाळ्—अचल रही। १९५

दुनिया में जो भी निष्ठुर और निर्मम चीजें हैं उन सबसे क्रूर निकलीं ककेयी। उन्होंने कहा कि आपने दो वर देने की सम्मति दी है। उनमें एक से मेरा पुत्र भरत राज्य का शासन करे; दूसरे से सीता का पति राज्य छोड़कर जाए और जंगल का शासन करे। यह कहते हुए वे काँपीं नहीं। अचल और अकम्पित रहीं। १९५

❀ नाह मॆनुङ्गॊडि याड नाविन् वन्द
शोह विडन्दॊड रत्तु णुक्क मॆय्दि

आह मडङ्गलुम् वॆन्द ळिन्द राविन्
वेह मडङ्गिय वॆळ् मॆन्न वीऴ्न्दान् 196

नाकम् ॲन्नम्—सर्प-सम; कॉटियाळ् तन्—निष्ठुर कैकेयी की; नाविन् वन्त—जीभ से निकले; चोक विटम् तीटर—शोकोत्पादक विष के लगने से; तुणुक्कम् ॲय्ति—दहलकर; आकम् अटङ्कलुम्—शरीर भर में; वॆन्तु—जलकर; अळिन्तु—निर्बल होकर; अराविन्—विषैले सर्प के (डसने के) कारण; वेकम् अटङ्किय—शक्ति खाये हुए; वेऴम् ॲन्न—हाथी के समान; वीऴ्न्तान्—(भूमि पर) गिरे। १९६

कैकेयी सर्प बन गई और उनकी जीभ से शब्द नहीं निकले, पर विष ही निकला। शोकोत्पादक उस विष के लगने से दशरथ दहल उठे। सारा शरीर तप्त हो गया और वे निर्बल हो गये। सर्प-दंशन से शक्ति के क्षीण होने से जैसे हाथी गिर जाता है वैसे राजा भी भूमि पर गिर पड़े। १९६

❀ पूदल मुऱ्ऱद ऩिऱ्पु रण्ड मन्नन्
मादुय रत्तिनै यावर् शॊल्ल वल्लार्
वेदनै मुऱ्ऱहम् वॆन्दु वॆन्दु कॊल्लन्
ऊदुलै यिऱ्कन लॆन्न वॆय्दु यिर्त्तान् 197

पूतलम् उऱ्ऱु—भूमि पर गिरकर; अतनिल् पुरण्ट—उस पर लोटनेवाले; मन्नन्—राजा के; मा तुयरत्तिनै—महान दुख को; चॊल्ल वल्लार् यावर्—बता सकनेवाले कौन हैं; वेतनै मुऱ्ऱु अकम्—वेदना भरे मन के; वॆन्तु वॆन्तु—बहुत तप्त होकर; कॊल्लन् ऊतु उलैयिल्—लुहार की भाथी के द्वारा हवा पाकर जलनेवाली भट्ठी की आग के समान; वॆय्तु उयिर्त्तान्—गरम श्वास छोड़े। १९७

चक्रवर्ती भूमि पर गिरकर लोटने लगे। उनके महान दुख का वर्णन कर सकनेवाला कौन है? मन असीम वेदना से भर गया। अत्यन्त दुख-तप्त हो गया। इसलिए उन्होंने जो साँसें छोड़ीं वे लुहार की उस भट्ठी की आग के समान गरम थी जिसे भाथी द्वारा लुहार हवा देकर जलाता रहता है। १९७

उलर्न्ददु नावुयि रोड लुऱ्ऱ दुळ्ळम्
पुलर्न्ददु कण्गळ् पॊडित्त पॊङ्गु शोरि
शलन्दलै मिक्कदु तक्क दॆन्गॊ लॆन्ऱॆन्
ऱलन्दलै युऱ्ऱ वरुम्बु लन्ग ळैन्दुम् 198

तक्कतु ॲन् कॊल् ॲन्ऱु ॲन्ऱु—(अब) उचित क्या है, यह सोच-सोचकर; ना उलर्न्ततु—जीभ (मुख) सूख गई; उयिर् ओटल् उऱ्ऱतु—प्राण निकलने को हुए; उळ्ळम् पुलर्न्ततु—मन मुरझा गया; कण्कळ्—आँखों ने; पॊङ्कु चोरि पॊटित्त—अधिक रक्त बहाया; चलम् तलै मिक्कतु—कोप सिर पर चढ़ा; अरु पुलन्कळ् ऐन्तुम्—श्रेष्ठ पाँचों इंद्रिय; अलन्तलै उऱ्ऱ—अस्तव्यस्त हुईं। १९८

'अब क्या करना उचित होगा ?' यह सोचते-सोचते चक्रवर्ती की जिह्वा सूख गई। प्राण निकलने को हो गये। मन मुरझा गया। आँखों से मानो रक्त के कण बरसने लगे। गुस्सा सिर पर चढ़ आया। श्रेष्ठ पाँचों इन्द्रियाँ अस्तव्यस्त हो गईं। १९८

❀ मेवि	निळत्ति	लिरुक्कु	निऱ्कुम्	वीऴुम्
ओविय	मॉप्प	वयिर्प्प	डङ्गि	योयुम्
पाविय	युऱ्ऱॅदिर्	पऱ्ऱि	यॅऱ्ऱ	वॅण्णुम्
आवि	पदैप्प	वलक्क	णॅय्दि	निन्ऱान् 199

आवि पतैप्प–प्राण छटपटाते; अलक्कण् ऍय्ति निन्ऱान्–कठोर दुख से पीड़ित जो रहे वे; निलत्तिल् मेवि इरुक्कुम्–(कुछ देर) भूमि पर बैठे रहते; निऱ्कुम्–(बाद) खड़े हो जाते; वीऴुम्–(फिर) गिरते; ओवियम् ऑप्प–चित्र की तरह; उयिर्प्पु अटङ्कि–साँस रोककर; ओयुम्–शिथिल रहते; पाविये–पापिन को; ऍतिर् उऱ्ऱु–सामने जाकर; पऱ्ऱि–पकड़कर; ऍऱ्ऱ ऍण्णुम्–पटकना चाहते। १९९

वे ऐसे दुखी हुए कि प्राण छटपटाने लगे। वे कुछ देर भूमि पर बैठे रहते, फिर उठकर खड़े होते। फिर भूमि पर गिर जाते। चित्र के समान साँस रोके निस्पंद खड़े रहते। पापिनी कैकेयी को सामने जाकर पकड़कर एक दम पटकने का विचार करते। १९९

पॅण्णॅन	वुट्कुम्	पॅरुम्ब	ऴिक्कु	नाणुम्
उण्णिऱै	वॅप्पॉ	डुयिर्त्तु	यिर्त्तु	लावुम्
कण्णिल	नॉप्प	वयर्क्कुम्	वन्गै	वेल्वॅम्
पुण्णुऴै	हिऱ्क	वुऴैक्कु	मानै	पोल्वान् 200

वन् कै वेल्–वलिष्ट हाथ से प्रेषित बर्छी के; वॅम् पुण् नुऴैकिऱ्क–पीडक व्रण में घुसने से; उऴैक्कुम्–लटनेवाले; आनै पोल्वान्–हाथी समान राजा; पॅण् ऍन–स्त्री समझकर; उट्कुम्–संकोच करते; पॅरुम् पऴिक्कु–(स्त्री-हत्या से होनेवाली) बड़ी निंदा से; नाणुम्–शरम खाते; उळ् निऱै वॅप्पोटु–आन्तरिक सन्ताप से; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–निश्वास छोड़ते, छोड़ते; उलावुम्–(इधर से उधर और उधर से इधर) चलते; कण्णिलन् ऑप्प–आँखों से हीन के समान; अयर्क्कुम्–निस्पन्द खड़े रहते। २००

फिर सोचते कि वह स्त्री है। उन्हें उतनी पीड़ा हुई जितनी वलवान हाथ से प्रेषित भाले के पके व्रण में घुसने से हाथी को होती है। तो भी वे सोचते है कि वह स्त्री है। इसलिए उन्हें मारने से डरते; स्त्रीहत्या का बड़ा दोष और उसकी बड़ी निन्दा होगी, इस बात से शरमाते। दुखतप्त मन के साथ वे बेचैन होकर इधर से उधर और उधर से इधर चलते थे। कुछ देर अन्धे के समान थके खड़े रहते। २००

कम्ब नॆडुङ्गळि यानै यन्न मन्नन्
वॆम्बि विऴुन्दयर् विम्मल् कण्डु वॆय्दुऱ्
ऱुम्बर् नडुङ्गिन रूऴि पेर्व दॆन्न
दम्बन कण्णव ळुळ्ळ मन्न दॆयाल् 201

कम्पम्–खूँटे से बँधे; नॆटु कळि यानै अन्न–अत्यन्त मदमत्त गज के समान; मन्नन्–राजा; वॆम्पि–दुखतप्त होकर; विऴुन्तु अयर् विम्मल्–गिरकर शिथिल होते है, यह दशा; उम्पर् कण्टु–देवता लोग देखकर; वॆय्तुऱ्ऱु–दुखी होकर; नटुङ्किनर्–काँप उठे; ऊऴि पेर्वतु ऒन्ऱतु–युगान्त हो गया, ऐसा लगा; अम्पु अन्न कण्णवळ् उळ्ळम्–(तब भी) शरसम आँख वाली का हृदय; अन्नते–वैसा ही (रहा)। २०१

आलान के साथ बँधे हुए अति मदमत्त हाथी की-सी स्थिति में पड़कर राजा मन मारकर लड़खड़ाते है, शिथिल पड़ जाते है —यह स्थिति देखकर देवों को दुख और डर हो गया। उन्हें लगा कि प्रलय का समय आ गया है। इतना होने पर भी शर-सम निर्मम आँखों वाली कैकेयी का मन टस से मस नही हुआ। वैसे ही निर्मम बना रहा। २०१

अञ्जल ळैयन दल्लल् कण्डु मुळ्ळम्
नञ्जिल णाणिल ळॆन्न नाण मामाल्
वञ्जनै पण्डु मडन्दै वेड मन्ऱो
तञ्जॆन मादरै युळ्ळ लार्ह डक्कोर् 202

ऐयनतु अल्लल् कण्टुम्–नायक का दुख देखकर भी; अञ्चलळ्–न डरी; उळ्ळम् नञ्चिलळ्–आर्द्रमना नहीं हुई; नाणिलळ्–न शरमाई; ऎन्न–(उनकी यह स्थिति) कहते; नाणम् आम्–हमें लज्जा होती है; पण्टु–पहले से ही; वञ्चनै–वंचकता; मटन्तै वेटम् अन्ऱो–स्त्रीरूप ही रही है न; तक्कोर्–योग्य बड़े लोग; मातरै–स्त्रियों को; तञ्चु ऎन–सहायक; उळ्ळलार्कळ्–नहीं मानते। २०२

अपने ही पति की वेदना देखकर भी कैकेयी नही डरी; न उनका मन ही नरम हुआ। वे नही लजाईं। उनकी यह स्थिति कहते हुए हमे लज्जा होती है! हाँ, पहले से ही वंचना स्त्रीरूपधारिणी ही रहती आई है। योग्य और विद्वान बड़े लोग स्त्री को कभी विश्वसनीय सहायक नही मानते। २०२

❀ इन्निलै निन्ऱव डन्नै यॆय्द नोक्कि
नॆय्न्निलै वेलव नीदि शैन्ऱ तुण्टो
पॊय्न्निलै योर्हळ् पुणर्न्त वञ्जमुण्डो
उन्निलै शॊल्लॆन दाणै युण्मै यॆन्ऱान् 203

नॆय्निलै वेलवन्–घृत-लगा भालाधारी; इ निलै निन्ऱवळ् तन्नै–इस स्थिति में रहीं उनको; ऎय्त नोक्कि–खूब देखकर; नी तिचैत्ततु उण्टो–तुम भ्रम में पड़

गई हो; पॉय् निलैयोर्कळ्–मिथ्याचारी; पुणर्त्त–कल्पित; वञ्चम् उण्टो–वंचना है; ॲन्तु आणै–मेरी शपथ; उन् निलै उण्मै चॊल्–अपनी इस स्थिति की सच्चाई कहो; ॲन्ऱान्–कहा। २०३

घी-लगे भाले के दशरथ ने इस स्थिति में खड़ी रही कैकेयी को घूर कर देखा। फिर प्रश्न किया कि क्या तुम्हारा मन भ्रमित हो गया? या मिथ्यावादी किन्हीने आकर तुम्हें गढ़कर वंचना बताई है? मेरी सौगन्ध! तुम अपनी इस स्थिति का असली कारण सच-सच बताओ। —दशरथ ने कहा। २०३

❀ तिशैत्तदु मिल्लै यॅनक्कु वन्दु तीयोर्
इशैत्तदु मिल्लैमु तीन्द वरङ्ग ळॅन्बाल्
कुशैप्परि योय्तरि निन्ऱु कॊळ्वॅ नन्ऱेल्
वशैत्तिऱ निन्वयि निऱ्क माळ्व नॆन्ऱाळ् 204

कुचै परियोय्–रासदार अश्वों के स्वामी; तिचैत्ततुम् इल्लै–भ्रमित होने की बात नहीं; तीयोर्–बुरे लोगों ने; ॲनक्कु वन्तु इचैत्ततुम् इल्लै–मेरे पास आकर गढ़न्त नहीं कहा है; मुन् ॲन् पाल् ईन्त वरङ्कळ्–पहले मुझे दिये गये वर; इन्ऱु तरिन्–आज देंगे तो; कॊळ्वॅन्–लूँगी; अन्ऱेल्–नहीं तो; वचै तिऱम् निन् वयिन् निऱ्क–अपयश का हेतु आपके पास छोड़कर; माळ्वॅन्–मर जाऊँगी; ॲन्ऱाळ्–कहा। २०४

कैकेयी ने अप्रमत्त रूप से उत्तर दिया। भ्रमित होने की कोई बात नहीं है! न किन्हीं बुरों ने आकर गढ़कर बातें बताई हैं। रासदार अश्वों के स्वामी! आपने पहले जो दो वर देने का वादा किया था, उन दोनो वरों को आज देंगे, तो लूँगी। नहीं तो आपको अपयश उठाने देते हुए प्राण त्याग दूँगी। २०४

❀ इन्द नॆडुञ्जॊलव् वेळै कूऱ मुन्ने
वॆन्द कॊडुम्बुणिल् वेनु ळैन्द दॊप्पच्
चिन्दै तिरिन्दु तिहैत्त यर्न्दु वीळ्न्दान्
मैन्द नलादुयिर् वेऱि लाद मन्नन् 205

इन्त नॆटुम् चॊल्–यह बड़ी बात; अ एळै कूऱ–(उन) अबोध नारी के कहने पर; मैन्तन् अलातु–पुत्र के सिवा; उयिर् वेऱु इल्लात मन्नन्–प्राण जो अलग नहीं रखते थे, वे राजा; मुन्ने वॆन्त कॊटुम् पुण्णिल्–पहले ही अग्नि के लगने से बने व्रण में; वेल् नुळैन्ततु ऑप्प–भाला घुस गया, ऐसा; चिन्तै तिरिन्तु–मन अस्त-व्यस्त होकर; तिकैत्तु–भ्रमित होकर; अयर्न्तु–निर्बल होकर; वीळ्न्तान्–भूमि पर गिरे। २०५

यह बड़ा निष्ठुर वचन था। कैकेयी ने यह कह दिया तो राजा का मन टूट गया। उनके तो श्रीराम ही प्राण थे। श्रीराम से अलग उनके प्राण

रह ही नहीं सकते थे। उन्हें ऐसा लगा मानो अग्नि के लगने से उत्पन्न व्रण में भाला घुसेड़ दिया गया हो। वे भ्रमित हो गये और थककर भूमि पर गिर गये। २०५

❀ आकॉडि यायॅनु मावि कालु मन्दो
ओकॉडि देयऱ् मॅऩ्ऩु मुण्मै यॉऩ्ऱुम्
शाहवॅ नावॅळु मॅय्त ळाट्टि वीऴुम्
माहमु नाहमु मण्णुम् वॅऩ्ऱ् वाळाऩ् 206

माकमुम्–आकाशलोक को; नाकमुम्–और पाताललोक को; मण्णुम्–भूलोक को; वॅऩ्ऱ् वाळाऩ्–जीतनेवाली तलवारधारी; आ कॉटियाय् ॲऩ्ऩुम्–हाय क्रूर (नारी) कहते; आवि कालुम्–प्राणाकुलित हो जाते; अन्तो–हाय; अऱम् ओ कॊटिते–धर्म अत्यन्त निर्मम है; ॲऩ्ऩुम्–कहते; उण्मै ऑऩ्ऱुम्–सत्य नाम का वह; चाक ॲऩा–मर जाय, कहकर; ॲऴुम्–उठते; मॅय् तळ्ळाटि–शरीर के लड़खड़ाने से; वीऴुम्–गिर जाते। २०६

चक्रवर्ती विख्यात वीर थे। उनकी तलवार को आकाश, भूलोक और पाताललोक तीनो को जीतने का गौरव प्राप्त था। वे प्रलाप कर उठे— हाय क्रूर नारी ! उनके प्राण सूख-से गये। "हाय! धर्म भी अत्यन्त निर्मम है ! सत्य नामक तथ्य का नाश हो !" —यह कहते हुए वे उठे। लड़खड़ाकर गिर गये। २०६

❀ नारिय रिल्लयिञ् ञाल मॅङ्गु मॅन्ऩक्
कूरिय वाळ्कॉडु कॊन्ऱु नीक्कि यानुम्
पूरिय रॅण्णिडै वीऴ्वॅ नॅन्ऱु पॊङ्गुम्
वीरियर् वीरम् विऴुङ्गि निन्ऱ् वेलान् 207

वीरियर् वीरम्–श्रेष्ठ वीरों की वीरता; विऴुङ्कि–कवलित करके; निन्ऱ्–रहनेवाला; वेलाऩ्–भालाभृत; इ ञालम् ॲङ्कुम्–इस भूतल भर में; नारियर् इल्लै ॲऩ्ऩ–स्त्रियाँ नहीं हों; कूरिय वाळ् कॊटु–तीक्ष्ण तलवार से; कॊन्ऱु नीक्कि–(इस तरह) मारकर हटाकर; यानुम्–मैं भी; पूरियर् ॲण्णिटै–नीच लोगों की गिनती में; वीऴ्वॅऩ् ॲन्ऱु–पतित हो जाऊँगा, कहकर; पॊङ्कुम्–विफर उठते। २०७

उनका भाला बड़े-बड़े सभी वीरों की वीरता को कवलीकृत कर रहनेवाला था। उनका क्रोध भड़क उठा। "संसार भर में नारियाँ ही न हों, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए अपनी तलवार से सभी नारियों को मारकर मिटा दूँगा। नीच लोगों की श्रेणी में गिना जाऊँगा तो कोई बात नही है।"। २०७

❀ कैयॊडु कैयैप् पुडैक्कुम् वायक डिक्कुम्
मॅय्युरै कुऱ्ऱ् मॅनप्पु ळुङ्गि विम्मुम्

नॆय्यॆरि पुऱ्ऱॆऩ नॆञ्ज ऴिऩ्ड्डु शोरुम्
वैयह मुऱ्ऱु नडऩ्द वाय्मै मऩ्ऩऩ् 208

वैयकम् मुऱ्ऱुम्–पृथ्वी भर में; नटन्त–व्याप्त; वाय्मै मन्नन्–सत्यव्रती के यश वाले; (चिनत्ताल्–क्रोध से;) कैयोटु कैयै–हाथ से हाथ; पुटैक्कुम्–जोर से बजाते; वाय् कटिक्कुम्–होंठ चबाते; मॆय् उरै कुऱ्ऱम्–सत्य-कथन अपराध है; ऎन–यह सोचकर; पुळुङ्कि–मनतप्त होकर; विम्मुम्–सिसकते; ऎरि नॆय् उऱ्ऱतु ऎत–आग में घी पड़ गया जैसे; नॆञ्चु अऴिन्तु–मन पिघलाकर; चोरुम्–लट जाते। २०८

दशरथ की सत्यवादिता का यश संसार भर में व्याप्त था। उन्होंने क्रोध से एक हाथ से दूसरे हाथ को जोर से मारा। होंठ चबाये। 'सत्य बोलना भी अपराध हो गया!' यह देखकर उनका मन संतप्त हुआ। सिसकियाँ भरने लगे। आग में लगे घी के समान उनका मन क्षीण हो गया। वे थक गये। २०८

ऒरुप्पिनु मन्दर मुण्मै यॊऩ्ऱु मोवा
मऱुप्पिनु मन्दर मॆऩ्ऱ वाय्मै मऩ्ऩऩ्
पॊरुप्पिनु मन्निलै पोहि लाळै यावि
इरुप्पिनु माव दिरप्प वॆऩ्ऱॆ ळुन्दाऩ् 209

ऒरुप्पिनुम्–इसे दण्डित करूँ तो भी; अन्तरम्–बुरा है; उण्मै ऒन्ऱुम् ओवा–सत्य से हटकर; मऱुप्पिनुम्–वर देने से इनकार कर दूँ तो भी; अन्तरम्–बुरा ही; ऎन्ऱ–ऐसा सोचकर; वाय्मै मन्नन्–सत्यव्रती चक्रवर्ती; पॊरुप्पिनुम्–कितना भी सब्र करने पर भी; अ निलै पोकिलाळै–उस स्थिति से न हटनेवाली उनको; आवि इरुप्पिनुम्–मारने से; इरप्पतु–याचना करना; आवतु–(लाभदायक) हो सकता है; ऎन्ऱु–सोचकर; ऎऴुन्तान्–उठे। २०९

राजा सोचने लगे। 'इसे दण्ड दूँ तो भी बुरा है। सत्य से हटकर वर देने से इनकार कर दूँ तो भी बुरा है।' सत्यसंध राजा ने यह निर्णय किया कि कितना भी सब्र के साथ इससे तर्क करूँ तो भी वह अपनी स्थिति को बदलनेवाली नहीं है। इसलिए उसको मारने से उससे प्रार्थना करना अच्छा है। यह सोचकर वे उठे। २०९

❋ कोन्मेऱ् कॊण्डुङ् गुऱ्ऱ महऱ्ऱक् कुडिकॊण्डार्
पॊन्मे लुऱ्ऱ दुण्डॆनि नन्ऱाम् पॊरैयॆन्नाक्
कान्मेल् वीऴ्न्दाऩ् कन्दुहोल् यानैक् कऴन्मन्नर्
मेन्मेल् वन्दु मुन्दि वणङ्ग मिडैताळाऩ् 210

कन्तु कोल् यानै–आलानभंजक हाथी वाले; कऴल्–पायलधारी; मन्नर्–राजा लोग; मेल् मेल् मुन्ति वन्तु–उत्तरोत्तर बढ़ते हुए आकर; वणङ्क मिटै–नमस्कार करने के लिए जिनके पास जुटते हैं; ताळान्–उन चरणों वाले; कोल् मेल्

कॉण्ट्टुम्–राजदण्ड रखते हुए भी; कुऱ्ऱम् अकऱ्ऱ–दोष से बचने का; कुऱि कॉण्टार् पोल्–लक्ष्य रखनेवाले के समान; मेल् उऱ्ऱतु उण्टु ऍऩिऩ्–आगे भला होगा तो; पॉऱै नऩ्ऱु आम्–क्षमाशीलता अच्छी है; ऍऩ्ऩा–सोचकर; काल् मेल् वीऴ्न्ताऩ्–कैकेयी के चरणों पर गिरे। २१०

राजा बड़े प्रतापी थे। वे खूँटे तोड़ सकनेवाले गजों के स्वामी थे। उनके चरण ऐसे थे कि राजा लोग "मैं, मै पहले," यह कहते हुए एक से पहले एक आकर उन पर नमस्कार करते थे। उनके हाथ में राजदण्ड, आज्ञा देने का अधिकार था। तो भी उन्होंने शायद सोचा कि हमारा व्यवहार दोष रहित होना चाहिए। 'आगे भला होगा तो क्षमा माँगना श्रेयस्कर है', यह विचार कर राजा कैकेयी के चरणो पर गिरे। २१०

❀ कॉळ्ळा निऩ्शे यिव्वर शऩ्नाऩ् कॉण्डालुम्
नळ्ळा दिन्द नानिल ञालन् दऩिलॅऩ्ऱुम्
उळ्ळा रॅल्ला मोद वुवक्कुम् पुहऴ्हॉळ्ळा
दॅळ्ळा निऱ्कुम् वऩ्वऴि कॉण्डॅऩ् पयऩॅऩ्ऱाऩ् 211

निऩ् चेय्–तुम्हारा पुत्र; इव् अरचु कॉळ्ळाऩ्–यह राज नहीं लेगा; अऩ्नाऩ् कॉण्टालुम्–वह ले भी तो; इन्त नाल् निलम्–यह चतुर्विधा भूमि; नळ्ळातु–सम्मत नहीं होगी; ञालम् तनिल् उळ्ळार् ऍल्लाम्–संसार के सभी वासी; ऍऩ्ऱुम् ओत–सदा कहते है उससे; उवक्कुम्–चाहनीय वने; पुकऴ् कॉळ्ळातु–यश को न लेकर; ऍळ्ळा निऱ्कुम्–सब (जिसको) निकृष्ट मानेंगे उस; वन् पऴि कॉण्टु–प्रबल अपयश प्राप्त कर; ऍन् पयन्–क्या लाभ होगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २११

उन्होंने कैकेयी को समझाया कि देखो, तुम्हारा पुत्र भरत राज्य नही लेगा। अगर वह ले भी तो यह भूमि सम्मत नही होगी यानी प्रजा उसे राजा नहीं मानेगी। यश इसलिए चाहनीय है कि दुनिया के सारे लोग उसका बखान करेगे। वह यश न अर्जन कर तुम सर्वनिन्द्य प्रवल अपयश लेने का प्रयास क्यों करती हो ?। २११

वानोर् कॉळ्ळार् मण्णव रुय्या रिऩिमऱ्ऱॅन्
एनोर् शॅय्है यारॉडु नीयिव् वरशाळ्वाय्
याऩे शॊल्लक् कॉळ्ळ विशैन्दाऩ् मुऱैयाले
ताऩे नल्हु मुऩ्महऩ् नुक्कुत् तरैयॅऩ्ऱाऩ् 212

वानोर् कॉळ्ळार्–देवता उसको नहीं मानेंगे; मण्णवर् उय्यार्–पार्थिव लोग (श्रीराम को छोड़कर) प्राणधारण नहीं करेंगे; एनोर् चॅय्कै–इनसे परे (जो पाताल-लोकवासी हैं), उनका काम; इनि मऱ्ऱु ऍऩ्–अव दूसरा क्या होगा; यारॉटु नी इ अरचु आळ्वाय्–किनके साथ रहकर तुम यह राज्य करोगी; याऩे चॊल्ल–मेरे ही कहने पर; मुऱैयाले–उचित क्रम था इसलिए; कॉळ्ळ इचैन्ताऩ्–(राम) लेने को

सहमत हुआ; उन् मकनुक्कु–तुम्हारे पुत्र को; तान्े तरै नल्कुम्–(तुम्हारी इच्छा मालूम होगी तो) खुद भूमि को दे देगा; ऍन्ऱान्–कहा। २१२

तुम्हारी बात देवता नहीं मानेंगे। इस पृथ्वी के लोग श्रीराम से बिछुड़कर जीवित नहीं रहेंगे। अन्य जो पातालवासी हैं, उनका क्या कहा जाय? वे भी सहमत नहीं होंगे। फिर किनको साथ रखकर शासन करोगी? राम ने मेरे कहने से और यही उचित समझकर अपनी सम्मति दी। अब उसे मालूम हो जाय कि तुम्हारी इच्छा यही है तो वह स्वयं राज्य को भरत के पास सौंप देगा। दशरथ ने यह कहा। २१२

कण्णे	वेण्डु	मॅन्ऩिनु	मीयक्	कडवेॅन्ऩ्
उण्णे	रावि	वेण्डिनु	मिन्ऱे	युनदन्ऱो
पॅण्णे	वण्मैक्	केहयन्	माने	पॅरुवायेल्
मण्णे	कॉण्णी	मऱ्ऱय	दॉन्ऱुम्	मऱवॅन्ऱान् 213

पॅण्णे–रमणी; वण्मै केकयन् माने–उदार केकयराज की मृगी-सी तनया; कण्णे वेण्टुम् ऍन्ऩिनुम्–आँखों को ही चाहोगी तो; ईय कटवेन्–देने का मेरा कर्तव्य है; ऍन् उळ् नेर् आवि वेण्टितुम्–मेरे अन्दर के रहनेवाले प्राणों को चाहो तो भी; इन्ऱे उन्तु अन्ऱो–वे आज ही तुम्हारे है न; नी पॅरुवायेल्–तुम लेना ही चाहो; मण्णे कॉळ्–भूमि को लो; मऱ्ऱैयतु ऑन्ऱुम्–दूसरा जो एक है; मऱ–उसे भूल जाओ; ऍन्ऱान्–कहा। २१३

दशरथ ने आगे कहा कि रमणी! उदार केकयराजतनया! मृगी-सी सुन्दरी! मेरी आँखें ही चाहो तो दे दूँगा, यह मेरा कर्तव्य है। मेरे प्राण भी माँगो तो अभी वे तुम्हारे हो जायँगे। इसलिए तुम मुझसे वर लेना चाहो तो दया करो राज्य को लो, दूसरे एक वर को भूल जाओ। २१३

वाय्तन्	देॅन्ऩ्	ऱेनिनि	यान्ो	वडुमाऱ्ऱेन्
नोय्दन्	दॅन्ऩै	नोवन	शॅय्दु	नुवलादे
ताय्दन्	दॅन्नन्	तन्ऩै	यिरन्दाऱ्	ऱळल्वॅङ्गट्
पेय्दन्	दीयु	नीयिदु	तन्दाऱ्	पिळैयामो 214

यान्ो वाय् तन्तेन् ऍन्ऱेन्–मैंने तो वचन दे दिया कि वर दे दिये; इनि अतु माऱ्ऱेन्–अब उससे नही मुकरूँगा; नोय् तन्तु–बड़ा रोग (सम दुख) देकर; ऍन्ऩै नोवन्न चॅय्तु–मुझे वेदना देनेवाला काम करके; नुवलाते–ऐसी बातें मत कहो; तळल् वॅम् कण् पेय्–आग-सी आँखों वाले भूत; तन्ऩै इरन्ताल्–आपसे याचना करने पर; ताय् तन्ततु ऍन्ऩ–माता ने दिया जैसे; तन्तु ईयुम्–(माँगी चीज) दे देगा; इतु तन्ताल्–यह (मेरी अर्थना) दोगी तो; पिळै आमो–अपराध होगा क्या। २१४

देखो। मैंने वचन दे दिया कि वर तुम्हें दे दिये। अब उससे नहीं मुकरूँगा। तुम मुझे दुख का रोग दिया, फिर मुझे वेदना देने का काम भी किया; तिस पर पीड़क बातें भी मत कहो। आग-सी आँखों वाला भूत

भी याचक के सामने माता-सा नरमदिल वन जाता है और माँगी चीज प्यार के साथ दे देता है। तो तुम यह छोटा-सा वर दे दो तो वह क्या तुम्हारे लिए अपराध हो जायगा ? । २१४

❀ इऩ्ऩे	यिऩ्ऩ	पऩ्ऩि	यिरऩ्दा	ऩिहल्वेऩ्दऩ्
तऩ्ऩे	रिल्लात्	तीयव	ळुळऴऩ्	दडुमाऱाळ्
मुऩ्ऩे	तऩ्दा	यिव्वर	नल्हाय्	मुऩिवायेल्
ॲऩ्ऩे	मऩ्ना	यारुळर्	वाय्मैक्	किऩ्ऩियॆऩ्ऱाळ् 215

इकल् वेऩ्तऩ्–शक्तिमान चक्रवर्ती ने; इऩ्ऩे–ऐसी; इऩ्ऩ–और इसी तरह की बातें; पऩ्ऩि–वार-वार कहकर; इरऩ्ताऩ्–प्रार्थना की; तऩ् नेर् इल्ला–अपनी सानी न रखनेवाली; तीयवळ्–अत्याचारिणी; उळ्ळम् तडुमाऱाळ्–कम्पितमन नहीं हुई; मऩ्ना–राजा; इ वरम् मुऩ्ऩे–ये वर पहले ही; तऩ्ताय्–दे दिये; नल्काय्–अव न देकर; मुनिवायेल्–कोप करेंगे तो; ॲऩ्ऩे–यह क्या है; वाय्मैक्कु–सत्यपालन के लिए; इऩि–अव; यार् उळर्–कौन हैं; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। २१५

शक्तिमान राजा ने ये वाते कही; ऐसी ही वहुत सी वातें कहकर मिन्नत की। पर कैकेयी तो क्रूरता में अपनी सानी रखनेवाली नहीं थीं। उस अत्याचारिणी ने निर्ममता से वात काटकर कहा कि देखिए राजा ! देने का वादा कर चुके है। अव विना वर दिये कोप दिखाएँगे तो क्या होगा ? फिर सत्यपालन के लिए दुनिया में रहेगा कौन ? । २१५

अच्चॊऱ्	केळा	वावि	पुळुङ्गा	वयर्हिऩ्ऱाऩ्
पॊय्च्चॊऱ्	पेणा	वाय्मॊऴि	मऩ्ऩऩ्	पॊऱैकूर
नच्चुत्	तीये	पॆण्णुरु	वऩ्ऱो	वॆऩ्नाणा
मुच्चऱ्	ऱाऱ्पोऱ्	पिऩ्ऩु	मिरऩ्दे	मॊऴिहिऩ्ऱाऩ् 216

पॊय् चॊल् पेणा–असत्य वचन कभी न कहनेवाले; वाय् मॊऴि मऩ्ऩऩ्–सत्य ही बोलनेवाले राजा; अ चॊल् केळा–(कैकेयी का) वह कथन सुनकर; आवि पुळुङ्का–प्राण संतप्त होकर; अयर्किऩ्ऱाऩ्–क्लांत हो जाते; पॊऱै कूर–सहनशील वनकर; नच्चु तीये–विष और अनल; पॆण् उरु अऩ्ऱो–स्त्री रूप में आये; ॲऩ्–यह सोचकर; नाणा–शरम का अनुभव करते हुए; मूच्चु अऱ्ऱार् पोल्–(योगी) वेहोशों के समान; पिऩ्नुम्–(कुछ देर) रहने के वाद; इरऩ्ते मॊऴिकिऩ्ऱाऩ्–प्रार्थना करते ही वोले। २१६

राजा असत्यवाचन को कभी स्थान देनेवाले नही थे। सदा सत्यवादी थे। उन्हें कैकेयी के वचन सुनकर अपार दुख हुआ। प्राण सूखने-से लगे। थक गये। तो भी सहनशीलता को अपनाकर वे कुछ देर चुप रहे मानो वे वेहोश या साँस रोके पड़े हों। उन्हें इस वात से शरम होती थी कि विष और आग दोनो मिलकर (इस) स्त्री के रूप में आये है। फिर वे वोलने लगे; तव भी प्रार्थना के स्वर मे ही वोले। २१६

* निऩ्मह् ताळ्वा नीयिऩि दाळ्वाय् निलमॅल्लाम्
उऩ्वय मामे याळुदि तऩ्दे नुरैहुऩ्ऱेऩ्
ऍऩ्मह ऩॆऩ्ग णॅऩ्ऩुयि रॅल्ला वुयिर्हट्कुम्
नऩ्मह निऩ्द नाडिऱ वामै नयवॆऩ्ऱाऩ् 217

निलम् ऍल्लाम् तन्तेऩ्–भूमि सब मैंने दिला दी; उरै कुऩ्ऱेऩ्–वचन नहीं टालूँगा; उऩ् वयमे आम्–(राज्य) तुम्हारे वश में हो जायगा; निऩ् मकऩ् आळ्वाऩ्–तुम्हारा पुत्र शासन करे; नी इनितु आळ्वाय्–या तुम ही सुख से पालन करो; आळुति–आज्ञा चलाओ; ऍऩ् मकऩ्–मेरा पुत्र; ऍऩ् कण्–मेरा नेत्र; ऍऩ् उयिर्–मेरा प्राण (राम); ऍल्ला उयिर्कट्कुम्–सभी जीवों के लिए; नल् मकऩ्–अच्छा पुत्र; इन्त नाटु इऱवामै–इस देश से बाहर न जाए; नय–यह वर दो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २१७

उन्होंने याचना की— मैंने अपना सारा राज्य दे दिया। अब वचन नहीं टालूँगा। राज्य तुम्हारा हो जायगा। तुम्हारा पुत्र भरत शासन करे; चाहे तुम ही सुख से शासन करो। मेरा पुत्र, मेरी आँख का तारा, मेरी जान, सभी जीवों के लिए अच्छा पुत्र (सम मित्र) इस देश को छोड़कर न जाए —यह वर दे दो। २१७

मॅय्ये यॆऩ्ऱऩ् वेरऱ नूरुम् विनैनोक्कि
नैया निऩ्ऱे नावु मुलर्ऩ्दे नळिऩम्बोल्
कैया निऩ्ऱॆऩ् कण्णॆदिर् निऩ्ऱुङ् गळिवानेल्
उय्ये नङ्गा युऩ्नब यम्मॆऩ् नुयिरॆऩ्ऱाऩ् 218

नङ्काय्–(देवी) नायिका; मॅय्ये–सत्यपालन ही; ऍऩ्ऱऩ् वेर् अऱ–मेरा मूल काटकर; नूरुम्–नाश करता है; विनै नोक्कि–ऐसा कर्म देखकर; नैया निऩ्ऱेऩ्–दुखी हूँ; नावुम् उलर्न्तेऩ्–मेरी जीभ भी सूख गई; नळिऩम् पोल् कैयाऩ्—कमल-सम हाथ वाला राम; इऩ्ऱु–अब; ऍऩ् कण् ऍतिर् निऩ्ऱुम्–मेरी आँख के सामने से; कळि वानेल्–अलग हो जायगा तो; उय्येऩ्–जीवित नहीं रहूँगा; ऍऩ् उयिर् उऩ् अपयम्–मेरी जान तुम्हारे अधीन है; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २१८

देवी! मेरा कर्म-भाग्य ऐसा हो गया कि मेरा सत्य ही मुझे निर्मूल करके नाश कर रहा है। यह देखकर मैं वेदना-विद्ध हो रहा हूँ। तुमसे याचना करते-करते मेरी जीभ सूख गई है! कमल-हस्त श्रीराम अब मेरे सामने से दूर हो जायगा तो मेरे प्राण नहीं रहेंगे। अब मेरे प्राण तुम्हारे अधीन, धरोहर, है। —दशरथ ने यह कहा। २१८

* इरन्दाऩ् शॊल्लु मिऩ्ऩुरै कॊळ्ळाण् मुनिवञ्जाळ्
मरन्दा नॆऩ्ऩु नॆञ्जिन णाणाळ् वशैपाराळ्
शरन्दाळ् विल्लाय् तन्द वरत्तैत् तविर्हॆन्ऱल्
उरन्दा नल्ला नल्लऱ मामो वुरैयॆऩ्ऱाळ् 219

मरम् तान्–काठ ही; ऍन्नुम् नॅञ्चित्तळ्–कहलाने योग्य (कठोर) चित्त वाली; इरन्तान् चॉल्लुम्–प्रार्थना करनेवाले के कहे; इन् उरै–मधुर वचन; कॉळ्ळाळ्–मन में नहीं लेतीं; मुनिवु अञ्चाळ्–उनके कोप से नहीं डरतीं; नाणाळ्–अपनी करनी पर नहीं शरमातीं; वचै पाराळ्–(आनेवाला) अपयश नहीं देखतीं; चरम् ताळ् विल्लाय्–शरनिलय चाप वाले; तन्त वरत्तै–दिये गये वरों को; तविर्क ऍन्ऱल्–छोड़ दो कहना; उरम अल्लाल्–साहस होगा, नहीं तो; नल् अऱम् आमो–सद्धर्म होगा क्या; उरै–आप ही कहिए; ऍन्ऱाळ्–कहा। २१९

कैकेयी का हृदय तो, काठ का है, ऐसा कहाने योग्य हो गया था। उन्होंने प्रार्थना करनेवाले दशरथ की स्निग्ध बात पर ध्यान नहीं दिया। न वह उनके सम्भवनीय कोप से डरी। न ही वह अपनी करनी पर शरमाईं। उन्होंने राजा से कहा कि हे शरनिलय धनुर्धर ! पहले वचनदत्त वरों को छोड़ दो कहना साहस का काम हो सकता है। पर वह धार्मिक हो सकता है क्या ? आप ही बतायें ! २१९

❀ कॉडिया ळिन्न कूऱिनळ् कूऱक् कुलवेन्दन्
मुडिशू डामल् वॅम्बरन् मॉय्हा निडैमॅय्ये
नॅडियो नीङ्गु नीङ्गुमॅ नावि यिनियॅन्ना
इडिये ऱुण्ड माल्वरै पोन्मण् णिडैवीऴ्न्दान् 220

कॉटियाळ्–निर्मम कैकेयी ने; इन्न कूऱिनळ्–ऐसा कहा; कूऱ–कहने पर; कुलम् वेन्तन्–उत्तम राजा; नॅटियोन्–त्रिविक्रम श्रीराम; मुटि चूटामल्–मुकुट पहने विना; मॅय्ये–सचमुच; वॅम् परल्–भयंकर कंकड़ों से; मॉय–भरे; कान् इटै–जंगल में; नीङ्कुम्–चला जायगा; इनि–आगे; ऍन् आवि नीङ्कुम्–मेरे प्राण चले जायँगे; ऍन्ना–यह समझकर; इटि एऱु उण्ट–अशनीप्रहत; माल् वरै पोल्–बड़े पर्वत के समान; मण् इटै वीऴ्न्तान्–भूमि पर गिरे। २२०

निर्मम कैकेयी ने ऐसा कह दिया। चक्रवर्ती को विश्वास हो गया कि अब त्रिविक्रम (विष्णु का) अवतार राम मुकुट-धारण न करके घने कंकड़ों से भरे जंगल में चला जायगा। मेरे प्राण भी चले जाएँगे। यह सोचकर राजा अशनि से आहत बड़े पर्वत के समान नीचे गिरे। २२०

❀ वीऴ्न्दान् वीऴा वॅन्दुय रत्तिन् कडल्वॅळ्ळत्
ताऴ्न्दा नाऴा वक्कड लुक्कोर् करैकाणान्
शूऴ्न्दा डुन्ब मक्कॉडि याळ्शॊऱ् कॊडुशित्तम्
पोऴ्न्दा ऴुळ्ळप् पुन्मयै नोक्किप् पुरळ्हिन्ऱान् 221

वीऴ्न्तान्–जो गिरे वे; वीऴा वॅम् तुयरत्तिन्–अनभ्यस्त भयंकर दुख के; कटल् वॅळ्ळत्तु–सागर के प्रवाह में; आऴ्न्तान्–मग्न हो गये; आऴा–मग्न होकर; अ कटलुक्कु–उस सागर का; ओर् करै काणान्–एक तीर (अन्त) नहीं देखते; तुन्पम् चूऴ्न्ताळ्–अपने को दुख देनेवाली; चॉल् कॊटु–वचन (अस्त्र) से; चित्तम्

पोळ्न्ताळ्–अपने मन को चीरनेवाली; अ कॉटियाळ्–उन निर्मम कैकेयी के; उळ्ळम् पुन्मैयै–मन की नीचता को; नोक्कि–देखकर; पुरळ्किन्ऱान्–लोटने लगे। २२१

राजा नीचे क्या गिरे, अब तक अननुभूत दुख के सागर में गिर गये। उसमें मग्न उन्हें न ओर दिखाई दिया, न छोर! वे उन कैकेयी के मन की नीचता पर, जिन्होंने उन्हें अत्यन्त दुख देने का संकल्प करके वचन रूपी तलवार से उनके हृदय को विदीर्ण कर दिया, अफ़सोस करते हुए लोटने लगे। २२१

❀ ऑन्ऱा निन्ऱ आरुयि रोडु मुयर्हेळ्वर्
पॉन्ऱा मुन्नम् पॉन्ऱिन रॅन्नुम् पुहळ्ल्लाल्
इन्ऱोर् काऱु मॅल्वळै यार्दम् मिऱैयोरैक्
कॉन्ऱा रिल्लैक् कॉल्लुदि योनी कॉडियोळे 222

ॲल् वळैयार्–प्रकाशमान चूड़ाधारिणी स्त्रियाँ; ऑन्ऱा निन्ऱ–अपने बने रहनेवाले; आर् उयिरॉटुम् उयर्–मूल्यवान प्राणों के समान श्रेष्ठ; केळ्वर्–पतियों के; पॉन्ऱा मुन्नम्–मरने के पहले; पॉन्ऱिनर्–मर गईं; ॲन्नुम्–यह; पुकळ् अल्लाल्–यश छोड़कर; इन्ऱु काऱुम्–आज तक; तम् इऱैयोरै कॉन्ऱार्–अपने पतियों को मारनेवालियाँ; इल्लै–नहीं (पाई जातीं); कॉटियाळे–क्रूर नारी; नी कॉल्लुतियो–तुम मार दोगी क्या। २२२

उन्होंने कैकेयी से कहा। उज्ज्वल कंकणधारिणी स्त्रियाँ अपने प्राणप्यारे पतियों के मरने से पहले मरकर यश प्राप्त करती हैं। इसके अलावा हमने कहीं सुना नहीं है कि अपने भर्त्ताओं को मारनेवाली स्त्रियाँ भी इस लोक में हैं। पर तुम हो ऐसी! मुझे मारकर ही छोड़ोगी क्या? २२२

एवम् बारा यिन्मुऱै नोक्का यऱमॅण्णाय्
आवॅन् बायो वल्लै मनत्ता लरुळ्हॉन्ऱाय्
नावम् बालॅन् ऩारुयि रुण्डा यिनिञालम्
पावम् बारा दिन्नुयिर् हॉळ्ळप् पडुहिन्ऱाय् 223

एवम् पाराय्–मेरा दुख नहीं देखतीं; इल् मुऱै नोक्काय्–इस कुल का गौरव नहीं देखतीं; अऱम् ॲण्णाय्–धर्म नहीं सोचतीं; आ ॲन्पायो अल्लै–हाय कहकर सहानुभूति नहीं दिखातीं; मनत्ताल् अरुळ् कॉन्ऱाय्–अपने मन में दया का हनन कर दिया; ना अम्पाल्–जीभ के शर से; ॲन् अरु उयिर् उण्टाय्–मेरा प्यारा प्राण (चूस) हर लिये; इनि–अब; ञालम्–इस लोक के वासियों द्वारा; पावम् पारातु–पाप का विचार त्यागकर; इन् उयिर् कॉळ्ळ पटुकिन्ऱाय्–प्यारे प्राणों को हरने से मारी जानेवाली हो। २२३

तुम मेरी वेदना नहीं देखतीं। इस कुल की गौरव परम्परा का विचार नहीं करतीं। धर्म भी नहीं सोचतीं। "हाय!" करके दुख या सहानुभूति

भी प्रदर्शित नहीं करतीं। अपने मन में दया का नाम ही मिटा चुकी हो। अपनी जीभ रूपी शर से मेरे प्राणों को हर चुकी हो। इनका फल क्या होगा, जानती हो ? लोकवासी स्त्रीहत्या के पाप की परवाह न करके तुमको मार देंगे और तुम अपने प्यारे प्राणों को छोड़ दोगी ! । २२३

एण्बा लोवा नाण्मड मच्च मिवयेतम्
पूण्बा लाहक् काण्ववर् नल्लार् पुहऴ्पेणि
नाण्बा लोरार् नङ्गयर् तम्वा नणुहारे
आण्बा लारे पॅण्वा लारो डडॅवम्मा 224

एण्पाल् ओवा–स्त्रियोचित विशिष्टता से अवियुक्त; नाण् मटम् अच्चम् इवैये–लाज, संकोच, डर ये ही; तन् पूण् पाल् आक–अपने अलंकार का अंश; काण्पवर्–समझनेवालियाँ; नल्लार्–श्रेष्ठ स्त्रियाँ हैं; पुकऴ् पेणि–अपने यश का संरक्षण करके; नाण् पाल् ओरार्–लाज का अंश न माननेवाली; नङ्कैयर् तम् पाल् नणुकार्–स्त्रियों की श्रेणी में नहीं जायेगी; आण् पालारे–पुरुष श्रेणी में भी गण्य हैं; पॅण् पालारोटु अटैवु–स्त्रियों की श्रेणी में केवल रूप के कारण कोष्ठबद्ध की जाती हैं। २२४

स्त्रियों के विशेष गुण है, लाज, संकोच और भय, जो उन्हें शक्ति और गौरव देते हैं। श्रेष्ठ स्त्रियाँ वे गुण रखनेवाली है। अपना यश चाहकर जो लाज को त्याग देती हैं वे स्त्रियों की श्रेणी में गिनी नहीं जायेंगी चाहे वे रूप के कारण स्त्रियों से कोष्ठबद्ध कर दी जाती है ! । २२४

❀ मण्णाऴ् हिन्ऱा रादि वलत्तान् मदियाल्वैत्
तॅण्णा नित्ऱा रियारयु मॅल्ला विहलालुम्
विण्णोर् काऱुम् वॅन्ऱ वॅन्नक्कॅन् मनैवाऴुम्
पॅण्णाल् वन्द तन्दर मॅन्नप् पॅऱुवेनो 225

मण् आऴ्किन्ऱार् आति–भूमि के शासकों से लेकर; विण्णोर् काऱुम्–देवलोक-वासियों तक; वलत्ताल्–बल में; मतियाल्–और बुद्धिचातुर्य में; वैत्तु ऍण्णा निन्ऱार्–श्रेष्ठ माने जानेवालों पर; ऍल्ला इकलालुम्–सभी तरह की शक्ति से; वॅन्ऱ ऍनक्कु–विजय पाये हुए मुझे; ऍन् मनै वाऴुम्–मेरे घर में रहनेवाली; पॅण्णाल्–स्त्री द्वारा; अन्तरम् वन्ततु–अन्त आ गया; ऍन्न पॅऱुवॅनो–ऐसा कहा जाऊँगा क्या। २२५

हाय ! भूमि के राजाओं से लेकर सुरलोकवासियों तक शारीरिक या बौद्धिक बल में बड़े समझे जानेवाले सभी को सभी रीतियों से मैंने हराया है। वैसे मेरा, मेरे ही घर की स्त्री से अन्त हो गया —इस लोकनिन्दा का भोगी हो जाऊँगा क्या ? । २२५

❀ ऍन्ऱॅन् ऱुन्नुम् वन्ति यिरङ्गु मिडर् तोयुम्
ऑन्ऱॊन् ऱॊव्वा विन्न लुऴक्कु मुयिरुण्डो

इन्ऱिन् ऍन्ऩुम् वण्ण मयङ्गु मिडैयुम्बॊन्
कुन्ऱॊन् ऱॊन्ऱो डॊन्ऱिय ऎन्ऩक् कुवितोळान् 226

पॊन् कुन्ऱु ऒन्ऱु—स्वर्णपर्वत एक; ऒन्ऱॊडु—दूसरे से; ऒन्ऱियतु ऎन्ऩ—जुड़ गया जैसे; कुवि तोळान्—पुष्ट कन्धों वाले; ऎन्ऱु ऎन्ऱु उन्ऩुम्—ऐसा-ऐसा सोचते हैं; पन्ऩि—कहकर; इरङ्कुम्—व्याकुल होते; इटर् तोयुम्—पीड़ामग्न हो जाते; ऒन्ऱु ऒन्ऱु ऒव्वा—परस्पर भिन्न; इन्ऩल्—शोक के विचारों से; उळक्कुम्—विक्षुब्ध होते; उयिर् उण्टो—प्राण हैं क्या; इन्ऱु इन्ऱु—नहीं, नहीं; ऎन्ऩुम् वण्णम्—ऐसा कहने योग्य प्रकार से; मयङ्कुम्—बेसुध हो जाते; इटैयुम्—क्लांत हो जाते। २२६

दशरथजी के कन्धे ऐसे पुष्ट और शोभायमान थे जैसे दो स्वर्णपर्वत एक स्थान पर आकर मिले हों। वे ऐसी-ऐसी बातें सोचते और कहते हुए दुखी हो रहे। व्याकुलता के सागर में डूबे; अनेक तरह के शोकों से उद्विग्न हुए। ऐसे थक कर बेहोश हो गये कि प्राण हैं या नहीं यह संशय होने लगा। २२६

❀ आऴिप् पॊऱ्ऱेर् मन्ऩव निव्वा ऱयर्वॆय्दिप्
पूऴिप् पॊऱ्ऱोण् मुऱ्ऱु मडङ्गप् पुरळ्पोदिल्
ऊऴिऱ् पॆऱ्ऱा यॆन्ऱुरै यन्ऱे लुयिर्मायॆन्
पाऴिप् पॊऱ्ऱार् मन्ऩव वॆन्ऱाळ् पशैयऱ्ऱाळ् 227

आऴि पॊन्तेर्—चक्रों से युक्त स्वर्णरथ के स्वामी; मन्ऩवन्—चक्रवर्ती; इव्वाऱु—इस प्रकार; अयर्वु ऎय्ति—श्रांत होकर; पॊन् तोळ् मुऱ्ऱुम्—स्वर्णमय कंधों पर; पूऴि अटङ्क—धूलि को लगने देकर; पुरळ् पोऴ्तिल्—जब लोटे तब; पचै अऱ्ऱाळ्—स्निग्धतामुक्त कैकेयी; पाऴि—गरिमामय; पॊन् तार्—स्वर्णहारधारी; मन्ऩव—राजा; ऊऴिल् पॆऱ्ऱाय्—(वर को) उचित रीति से प्राप्त किया; ऎन्ऱु उरै—ऐसा कहिए; अन्ऱेल्—नहीं तो; उयिर् मायॆन्—प्राणहीना हो जाऊँगी; ऎन्ऱाळ्—कहा। २२७

पहियों वाले स्वर्णमय रथ के स्वामी दशरथ क्लांत होकर भूमि पर लोटे जिससे उनके स्वर्णमय कन्धों पर धूलि लग गई। तब स्नेहहीना कैकेयी ने ये वचन कहे— मूल्यवान स्वर्णहारधारी राज्यपति! आप अपने मुख से साफ़ कहिए कि 'तुमने उचित क्रम से ही वर पाये हैं।' नहीं तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी। २२७

अरिन्दान् मुन्ऩोर् मन्ऩव नन्ऱे यरुमेनि
वरिन्दार् विल्लाय् वाय्मै वळर्प्पान् वरनल्हिप्
परिन्दा लॆन्ऩा मॆन्ऱनळ् पायुङ् गनलेपोल्
ऎरिन्दा ऱादे यिन्ऩुयि रुण्णु मॆरियन्ऩाळ् 228

पायुम् कनल् पोल्—फैलती आग के समान; ऎरिन्तु आऱाते—जलकर ठण्डा पड़े बगैर; इन् उयिर् उण्णुम्—प्यारी जान को खानेवाली; ऎरि अन्ऩाळ्—आग के समान

कैकेयी; वरिन्तु आर् विल्लाय्–वन्धन से युक्त धनुर्धर; मुन् ओर् मन्नवन्–(आपके कुल में) पहले एक राजा ने; वाय्मै वळर्प्पान्–सत्यपालन के हेतु; अरु मेनि–अपने मूल्यवान शरीर को; अरिन्तान् अन्ऱे–काटकर दिया न; वरम् नल्कि–वर देकर; परिन्ताल्–अब पछताइये तो; ॲन् आम्–क्या होगा; ॲन्ऱनळ्–कहा। २२८

कैकेयी एक विचित्र आग वनी थी जो नही फैलती और जलाकर शान्त होती पर केवल जला सकती थी ! उन्होंने राजा को याद दिलाया कि वन्धनयुक्त धनुर्धर ! क्या आपके कुल में पहले एक राजा (शिवि) नही हुए थे जिन्होंने वचन पालन के लिए अपने ही शरीर को काटकर दिया था ? ऐसे वंश में उत्पन्न आप पहले वर दें और अव पछताने लगें —यह क्या ? । २२८

❀ वीन्दा ळेयिव् वॅय्यव ळॅन्ना मिडल्वेन्दन्
इन्दे नीन्दे निव्वर मॅन्शेय् वनमाळ
माय्न्दे नान्पोय् वानर शाळ्वॅन् वशैवॅळ्ळम्
नीन्दाय् नीन्दाय् निन्मह नोडु नॅडिदॅन्ऱान् 229

मिटल् वेन्तन्–शक्तिमान राजा; वॅय्यवळ्–यह निर्मम स्त्री; वीन्ताळे–(वर न दूँ तो) मर जायगी; ॲन्ना–यह समझकर; इ वरम्–इस वर को; ईन्तेन्–दिया; ॲन् चेय् वनम् आळ–मेरा पुत्र जंगल का पालन करे; नान् माय्न्तु पोय्–मै मरकर, जाकर; वान् अरचु आळ्वॅन्–स्वर्ग का राज करूँगा; निन् मकनोटुम्–अपने पुत्र के साथ; वचै वॅळ्ळम्–निंदा की धार में; नॅटितु–दीर्घ काल तक; नीन्ताय् नीन्ताय्–तैरती रहो, तैरती रहो; ॲन्ऱान्–कहा। २२९

यह सब सुनकर राजा ने विश्वास कर लिया कि ये वर नही दूँ तो अपने प्राण छोड़ देंगी। इसलिए उन्होंने दुख के साथ कह दिया कि अच्छा मैंने वर दे दिये। मेरा पुत्र वन में जाकर उसका परिपालन करे। मैं भी स्वर्ग जाकर उसका शासन करूँगा (वहाँ का सुख भोगूँगा।) तुम अपने पुत्र को साथ लेकर लोकनिन्दा के प्रवाह में तैरती रहो— वहुत काल तक ! । २२९

❀ कूऱा मुन्नम् कूऱु पडुक्कुङ् गॊलैवाळिन्
एऱा मॅन्नुम् वन्ऱुय राहत् तिडैमूळ्हत्
तेऱा नाहिच् चॅय्है मऱन्दान् शॅयन्मुऱ्ऱि
ऊऱा निन्ऱ शिन्दयि नाळुन् दुयिल्वुऱ्ऱाळ् 230

कूऱा मुन्नम्–(दशरथ के) कहने के साथ-साथ; कूऱु पटुक्कुम्—खण्ड-खण्ड करनेवाली; कॊलै वाळिन् एऱु आम्–घातक तलवारों के राजा से काटे गये; ॲन्नुम्–जैसे; वन् तुयर्–प्रचण्ड पीड़ा के; आकत्तु इटै मूळक–हृदयमध्य पैठते; तेऱान् आकि–वेसुध होकर; चॅय्कै मऱन्तान्–निष्क्रिय हो गये; चॅयल् मुऱ्ऱि–अपना मनोरथ

पूर्ण होने से; ऊऱ्ऱा निऩ्ऱ चिन्तैयिनाळुम्–(संतोष) उमड़ता मन वाली भी; तुयिल्वु उऱ्ऱाळ्–नींद में मग्न हो गईं। २३०

दशरथ यह 'वर दिया' कहने के पूर्व ही (कहने के साथ-साथ) वेसुध हो गये क्योंकि उनके हृदय में ऐसा आघात लगा मानो काटकर खण्ड-खण्ड बनानेवाली अति तीक्ष्ण तलवार उनके हृदय को चीर गई हो ! वे एक दम निस्पन्द पड़े रह गये। उधर कैकेयी के मन में पूर्ण-मनोरथ होने के कारण आनन्द उमड़ आया। निश्चिन्त होकर वे सो गईं। २३०

❀ शेणु लाविय नाळॅ लामुयि रॉन्ऱु पोल्वऩ शॅय्दुपिऩ्
एणु लाविय तोळि ऩाऩिड रॅय्द वॉन्ऱु मिरङ्गिला
वाणि लाऩहै माद राळ्शॅयल् कण्डु मैन्दर्मु ऩिऱ्कवुम्
नाणि ऩाळॅऩ वेहि ऩाणळिर् कङ्गु लाहिय नङ्गये 231

चेण् उलाविय–लम्बे अरसे के; नाळ् ॲलाम्–सभी दिन; उयिर् ऑऩ्ऱु पोल्वऩ–एक ही प्राण सम; चॅय्तु–व्यवहार करते रहकर; पिऩ्–फिर; एण् उलाविय तोळिनाऩ्–सबल कंधों वाले पति को; इटर् ॲय्त–बहुत बड़ा दुख देते हुए; ऑऩ्ऱुम् इरङ्कला–कुछ भी दया न करनेवाली; वाळ् निला नकै मातराळ्–उज्ज्वल दाँतों वाली स्त्री (कैकेयी) का; चॅयल् कण्टु–काम देखकर; नळिर् कङ्कुल् आकिय नङ्कै–शीतल रात्रि रूपी स्त्री; मैन्तर् मुऩ् निऱ्कवुम् नाणिऩाळ्–पुरुषों के सामने खड़ा रहने से लजाती; ॲऩ–जैसे; एकिऩाळ्–हट गई। २३१

विवाह से लेकर इतने लम्बे काल तक कैकेयी और दशरथ एकप्राण रहे और वैसे ही व्यवहार करते रहे। अब सबल भुजाओं वाले दशरथ दुखी हैं, पर चन्द्रकला सदृश दाँत वाली कैकेयी कुछ भी नहीं पछतातीं। उनका यह काम देखकर शीतल रात्रि रूपी रमणी मानो लज्जित होकर, पुरुषों के सामने रहना नहीं चाहा हो, ऐसा हट गई। २३१

ऍण्ड रुङ्गडै शॅन्ऱ याम मियम्बु हिन्ऱऩ वेळ्याल्
वण्डु तङ्गिय तॉङ्गन् मार्बन् मयङ्गि विम्मिय वाऱॅलाम्
कण्डु नॅञ्जुक लङ्गि यञ्जिऱै याऩ कामर्दु णैक्करम्
कॊण्डु तम्वयि ऱॅऱ्ऱि यॅऱ्ऱि विळिप्प पोन्ऱऩ कोळिये 232

ऍण् तरुम्–गिना जानेवाला; कटै चॅऩ्ऱ याममम्–दिन का आखिरी पहर; इयम्पुकिऩ्ऱऩ–बतानेवाले; कोळि–कुक्कुट; एळैयाल्–अबला द्वारा; वण्टु तङ्किय तॊङ्कल् मार्पऩ्–भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले; मयङ्कि–भ्रमित हो; विम्मिय आऱु ॲलाम् कण्टु–सिसकने का प्रकार सब देखकर; नॅञ्चु कलङ्कि–चित्ताकुल होकर; अम् चिऱै आऩ–सुन्दर पंख रूपी; कामर् तुणै करम् कॊण्टु–मनोरम हस्तद्वय से; तम् वयिऱु ॲऱ्ऱि ॲऱ्ऱि–अपना पेट पीट-पीटकर; विळिप्प पोऩ्ऱऩ–मानो रोते थे। २३२

दिन के गिने हुए आठ यामों के अन्तिम याम को अपनी बाँग द्वारा

लोगों पर प्रकट करनेवाले मुर्गे अपने पंखों को जोर से मारने लगे। उसे देखकर ऐसा लगा कि नारी, कैकेयी, के कारण भ्रमरावृत मालाधारी वक्ष वाले दशरथ व्यथितमन होकर जो सिसक रहे थे उसको देखकर ये कुक्कुट दुखी होकर अपने सुन्दर पंख रूपी हाथों से छाती पीटते हुए रुदन कर रहे हों। २३२

तोय्ह यत्तु मरत्तु मॆन्शिऱै तुळ्ळि मीदॆऴु पुळ्ळॆलाम्
तेय्ह(य्) यॊत्त मरुङ्गुन् मादर् शिलम्बि निन्ऱु शिलम्बुव
केह यत्तर शन्ब यन्द विडत्तै यिन्नदोर् केडुशूऴ्
माह यत्तियै युट्कॊ दित्तु मनत्तु वैवन पोन्ऱवे 233

तोय् कयत्तुम्–(पक्षी जहाँ) ठहरते है, उन तालावों में; मरत्तुम्–तरुओं पर; मॆन् चिऱै तुळ्ळि–कोमल पंखों को पटकते हुए; मीतु ऍऴु–ऊपर उठनेवाले; पुळ् ऍलाम्–सभी पक्षी; तेय्कै ऑत्त मरुङ्कुल्–दिने-दिने क्षीण होती-सी लगनेवाली कमरों की; मातर्–स्त्रियों के; चिलम्पिन्–नूपुरो के समान; निन्ऱु चिलम्पुव–जो वोलते है; केकयत्तु अरचन् पयन्त–केकयराज जनित; विटत्तै–विष-सी; इन्नतु ओर् केटु चूऴ्–ऐसे एक क्रूर काम करनेवाली; मा कयत्तियै–वहुत नीच गुण वाली कैकेयी पर; मनत्तुळ्–मन में; कॊतित्तु–क्रोध से जलकर; वैवन पोन्ऱ–गाली देते-से लगे। २३३

जलाशयों में और तरुओं पर खगगण वोलने लगे। वे अपने कोमल पंख फड़काते हुए क्षीणकटि नारियों के नूपुरों की-सी ध्वनि में वोले। उनकी वह वोली ऐसी लगती थीं मानो वे दशरथ को इतना वड़ा दुख देनेवाली, विषसमाना केकयराजतनया नीच कैकेयी को कुढ़कर गालियाँ दे रहे हों। २३३

शेम मॆन्बन पऱ्ऱि यन्बु तिरुन्द विन्ऱुयिल् शॆय्दपिन्
वाम मेहलै मङ्गै योडु वनत्तुळ् यारुम ऱक्कला
नाम नम्बि नडक्कु मॆन्ऱु नडुङ्गु हिन्ऱ मनत्तवाय्
यामु मिम्म णिऱत्तु मॆन्बन पोलॆ ऴुन्दन यानये 234

यानै–गज; चेयम् ऍन्पत–सुरक्षित मान्य शालाओ में; अन्पु पऱ्ऱि–चाह के साथ; तिरुन्त इन् तुयिल् चॆय्त पिन्–खूव, सुखमय नीद सोने के वाद; यारुम् मऱक्क अल्ला–किसी के लिए भी अविस्मरणीय; नामम् नम्पि–नामी नायक; वामम् मेकलै मङ्कैयोटु–सुन्दर मेखलाधारिणी वाला (सीता) के साथ; वनत्तुळ् नटक्कुम् ऍन्ऱु–जंगल में चले जायँगे, यह जानकर; नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपते; मनत्त आय्–मन वाले हो; यामुम् इ मण् इऱत्तुम्–हम भी इस स्थल से चले जायँ; ऍन्पन पोल्–कहते जैसे; ऍऴुन्तन–उठ खड़े रहे। २३४

हाथी अपनी गजशालाओ मे रात भर सुख से सोने के वाद ऐसे उठे मानो वे 'सवसे अविस्मरणीय नामधारी श्रीराम सुन्दर मेखलाधारिणी

सीताजी के साथ जंगल चले जायँगे' —इस विचार से दहलते मन के साथ, 'हम भी इस स्थल को छोड़ जायँगे' —यह संकल्प करके उठे हों। २३४

* शिरित्त पङ्गय मॉत्त शॅङ्गणि राम नैत्तिरु मालयक्
करिक्क रम्बॉरु कैत्त लत्तुयर् काप्पु नाणणि दऱ्कुमुन्
वरित्त तण्गदिर् मुत्त दाहियिम् मण्ण नैत्तु निळऱ्ऱमेल्
विरित्त पन्दर् पिरित्त दामॅन मीनॉ ळित्तन वानमे 235

चिरित्त पङ्कयम् ऑत्त—हँसते से कमल-सम; चॅम् कण्—लाल आँखों वाले; तिरुमालै—श्रीराम के; करि करम् पोरु—गज की सूँड़ के समान; अ कै तलत्तु—उस सुन्दर हाथ में; उयर् काप्पु नाण्—श्रेष्ठ रक्षाबन्धन; अणितऱ्कु मुन्—पहनने के पूर्व; इ मण् अत्तैत्तुम् निळऱ्ऱ—इस भूतल भर में छाया करने के लिए; मेल् वानम्—ऊपर आकाश में; वरित्त—बनाया गया; तण् कतिर् मुत्ततु आकि—शीतल मुक्ताओं से निर्मित; विरित्त—विस्तृत; पन्तर्—पण्डाल को; पिरित्ततु आम् ॲन—खोलकर हटा दिया गया हो, जैसे; मीन् ऑळित्तन—नक्षत्र छिप गये। २३५

आकाश के नक्षत्र ओझल हो गये। नक्षत्रशून्य आकाश को देखकर यह भास होता था कि विकसितपुण्डरीक-सम आँखों वाले श्रीराम के करिशुण्ड-से हाथ में मंगलसूचक रक्षाबन्धन के पहले इस भूतल भर में छाया देने के लिए जो शीतल प्रकाशमय मोती का पण्डाल लगाया गया था वह विस्तृत पण्डाल अब उठा दिया गया हो। २३५

नाम विऱ्कै यिराम नैत्तॉळु नाळ डैन्द दुमक्कॅलाम्
काम विऱ्कुडै कङ्गुन् मालै कळिन्द दॅन्बदु कऱ्पियात्
तामॉ लित्तन पेरि यव्वॉलि तारै मारि तळङ्गलाल्
माम यिऱ्कुल मॅन्न वुळ्ळ मलर्न्दॅ ळुन्दनर् मादरे 236

उमक्कु ॲलाम्—तुम सभी को; कामन् विऱ्कु उटै—काम-धनुष से पीड़ित करनेवाली; कङ्कुल मालै कळिन्ततु—रात की बेला बीत गई; नामम् विल् कै—(शत्रु-) भयंकर धनुर्हस्त; इरामनै तॉळुम् नाळ्—श्रीराम को नमस्कार करने का दिन; अटैन्ततु—आ गया; ॲन्पतु—यह समाचार; कऱ्पिया—देते हुए; पेरि ऑलित्तन—भेरियाँ बज उठीं; अ ऑलि—वह ध्वनि; तारै मारि तळङ्कलाल्—जलमेघ के शोर के समान रही, इसलिए; मा मयिल् कुलम् ॲन्न—श्रेष्ठ मयूर-समूह सम; मातर्—स्त्रियों का; उळ्ळम् मलर्न्तु—चित्त फूलकर; ॲळुन्तनर्—उठी। २३६

भेरियाँ नर्दन कर उठीं। वे मानो स्त्रियों को यह बता रही थीं कि रात, जिसमें तुम लोग मन्मथ के धनु के सामने हार मानकर संकट उठाती रहीं, अब दूर हो गई और शत्रुपीडक धनुर्धर श्रीराम के दर्शन करने का दिन उदय हो गया। वह ध्वनि मेघध्वनि के समान रही और स्त्रियाँ मोरों के समान प्रसन्नमन होकर उठ गईं। २३६

इन्नम लर्क्कुलम् वाय्वि रित्तिळ वाश मारुदम् वीशमुन्
पुन्नैतु हिऱ्कलै शोर नॆञ्जु पुळुङ्गि नार्शिल पूवैमार्
मन्नव नुक्कम् विडत्त नित्तनि वळ्ळ लैप्पुणर् कळ्ळविन्
कन्नवि नुक्किडै यूऱ डुक्क मयङ्गि नार्शिल कन्निमार् 237

इन्नम्–विविध; मलर् कुलम्–पुष्प-समूह को; वाय् विरित्तु–मुख खोलते हुए; वाचम् इळम् मारुतम् वीच–सुवासित मन्द पवन के वहने से; चिल पूवैमार्–कुछ रमणियाँ; मुन् पुनै–पहले वेष्टित; तुकिल् कलै चोर–वस्त्र और मेखला के खिसकते; नॆञ्चु पुळुङ्कित्तार्–मन में (कामज्वर के कारण) तप्त हुईं; चिल कन्निमार्–कुछ कन्याएँ; मन्नम् अनुक्कम् विट–मन का रंज दूर करके; तनि तनि–अलग-अलग; वळ्ळलै पुणर्–(श्रीराम) प्रभु को मिलकर सुख उठाने का; कळ्ळम् इन् कनवुक्कु–झूठे और मधुर जो था, उस स्वप्न में; इटैयूरु अटुकक–बाधा पड़ने से; मयङ्कित्तार्–व्याकुल हुईं। २३७

सवेरे की सुगन्धित मन्द हवा कलियों को खिलाती हुई वहने लगी तो विवाहित स्त्रियों में कुछ लोगों को उससे वेदना हुई। उनके वस्त्र और मेखला ढीली हो गई थी। उनको खेद इसलिए हुआ कि जल्दी दिन हो गया और उनकी प्रणयेच्छा पूर्ण नहीं हुई थी। कुछ कन्याओं को इसलिए दुख हुआ कि वे श्रीराम के संग समय विताने के स्वप्न में मग्न हो रही थीं। उस मधुर और झूठे स्वप्न में वाधा पड़ गई। वे वहुत व्याकुल हुईं। २३७

शाय डङ्ग नलङ्ग लन्दु तयङ्गु तन्कुल नन्मयुम्
पोय डङ्ग नॆडुङ्गी डुम्बळि कॊण्ड रुम्वुहळ् शिन्दुमत्
तीय डङ्गिय शिन्दै याळ्शॆयल् कण्डु शीरिय नङ्गैमार्
वाय डङ्गिन वॆन्न वन्दु कुविन्द वण्कुमु दङ्गळे 238

चाय् अटङ्क–अपना गौरव खोते हुए; नलम् कलन्तु तयङ्कुम्–श्रेष्ठता के साथ रहनेवाले; तन् कुलम् नन्मैयुम्–अपने कुल का भी गौरव; पोय् अटङ्क–नष्ट हो जाय, ऐसा; नॆटु कॊटु पळि कॊण्टु–दीर्घ और भयंकर अपयश लेकर; अरु पुकळ् चिन्तुम्–श्रेष्ठ यश को दे देनेवाली; अ–उन; ती अटङ्किय चिन्तैयाळ्–अग्निगर्भित मन वाली कैकेयी का; चॆयल् कण्टु–काम देखकर; चीरिय नङ्कैमार् वाय्–श्रेष्ठ स्त्रियों के मुख; अटङ्किन ऎन्न–वन्द हो गये, जैसे; वण् कुमुतङ्कळ्–प्रफुल्ल लाल कुमुद; वन्तु कुविन्तन–दलों को समेटकर वन्द हुए। २३८

दिन के आने से लाल कुमुद वन्द हुए। वे उन कुलीना स्त्रियों के मुखों के समान वन्द हुए जो, अपने और अपने कुल के गौरव का नाश करते हुए यश के बदले दीर्घ और कठोर अपयश मोल लेनेवाली, अग्निमय मन वाली कैकेयी का अनुचित कार्य देखकर लज्जा के कारण अपने मुख वन्द कर लेती हों। २३८

मॊय्य राह् निरम्ब वाशै मुरुङ्गु तीयिन् मुळङ्गमेल्
वैय राविय मारऩ् वाळियुम् वाऩि लानॆडु वाडयुम्
मॆय्य राविड वावि शोर वॆडुम्बु मादर्द मॆन्शॆविप्
पैय रानुळै हिऩ्ऱ पोऩ्ऱऩ पण्क ऩिऩ्ऱॆळु पाडले 239

मॊय् अराकम् निरम्प–घना राग (काम) भरा, तो; आचै–वह इच्छा; मुरुङ्कु तीयिऩ्–अन्दर की आग के समान; मुळङ्क–बहुत जली, अतः; मेल्–ऊपर; वै अराविय मारऩ् वाळियुम्–तराशे गये और तीक्ष्ण सन्मथ-शर; वाऩ् निला–श्वेत चाँदनी; नॆटु वाटैयुम्–और लगातार बहनेवाली उदीची हवा (जाड़ा); मॆय् अराविट–(इनके) शरीरों को दुख देने से; आवि चोर–प्राण चलते से लगे; वॆतुम्पुम्–तप्त; मातर् तम्–स्त्रियों के; मॆऩ् चॆवि–कोमल कानों में घुसनेवाले; पण् कतिऩ्ऱु ऎळुम् पाटल्–रागयुक्त गाने; पै अरा–फन वाले सर्प; नुळैकिऩ्ऱ पोऩ्ऱऩ–घसते जैसे लगे। २३९

प्रात:कालीन गीत गाये जा रहे थे। वे गीत उन स्त्रियों के कर्ण-विवर में फणी सर्प के समान घुसे जिनके अन्दर काम आग के समान ज्वर दे रहा था और बाहर कामदेव के पैनाये गये शर, चाँदनी और निरन्तर बहनेवाली उदीची (ठंडी) हवा उन्हें तंग करके प्राणों को थका रही थी। २३९

आऴि याऩ्मुडि शूडु नाळिडै याऩ पावियि दोरिरा
ऊऴि यायिऩ वाऱॆ ऩावुयर् पोदिऩ् मेलुऱै पेदयुम्
एऴु लोहमु मॆण्ड वञ्जॆय्द कण्णु मॆङ्गण् मऩङ्गळुम्
वाऴु नाळि दॆऩावॆ ऴुऩ्दऩर् मञ्जु तोय्बुय मैन्दरे 240

मञ्चु तोय् पुयम्–सुन्दरता भरे कंधों के; मैन्तर्–पुरुष लोग; आऴियाऩ्–चक्रधारी; मुटि चूटुम् नाळ् इतु–मुकुट धारण करेंगे, आज का दिन; पोतिऩ् मेल् उऱै पेतैयुम्–कमल पर रहनेवाली देवी भी; ऒण् तवम् चॆय्त–(आवश्यक) मान्य तपस्या करनेवाले; एऴु लोकमुम्–सातों लोक; ऎङ्कळ् कण्णुम्–और हमारी आँखें; मतङ्कळुम्–मन भी; वाऴुम् नाळ् ऎऩा–जीवन (कृतकृत्य) पाने का दिन है; इटै आऩ पावि–आड़े आई पापिनी; इतु ओर् इरा–यह एक रात्रि; ऊऴि आयिऩ् आऱु–युग समान लम्बी हो गई, किस प्रकार; ऎऩ–कहते हुए; ऎऴुन्तऩर्–उठे। २४०

मनोरम भुजा वाले पुरुष लोग यह कहते हुए उठे कि चक्रधारी विष्णु भगवान के अवतार, श्रीराम के मुकुट-धारण का दिन आज है; आज ही कमलनिवासिनी (राज्य) लक्ष्मी के लिए, उन सातों लोकों के लिए जिन्होंने श्रीराम को राजा के रूप में पाने का उद्देश्य लेकर तपस्या की थी, और इनके साथ हमारी आँखों और मनों के लिए सौभाग्य का दिन है; और बीच में पड़ी रात भी एक युग के समान कितनी लम्बी हो रही ! । २४०

ऐयु ऱञ्जुडर् मेऩि याऩॆऴिल् काण् मूळु मवाविऩाल्
कॊय्यु ऱुङ्गुल माम लर्क्कुवै निऩ्ऱॆ ऴुन्दऩर् कूर्मैकूर्

नॅय्यु रुञ्जुडर् वेनॅ डुङ्गण् मुहिऴ्त्तु नञ्जि निनैप्पॉडुम्
पॉय्यु ऱङ्गु मडन्दै मार्हुऴल् वण्डु वॉम्मॅन विम्मवे 241

कूर्मै कूर्–अति तीक्ष्ण; नॅय् उरुम्–और घी लगे; चुटर् वेल्–उज्ज्वल भाले-समान; नॅटुकण्–आयत आँखों को; मुकिऴ्त्तु–वन्द करके; नॅञ्चिल् निनैप्पॉटुम्–मन में (श्रीराम के) स्मरण के साथ; पॉय् उऱङ्कु मटन्तैमार्–झूठी नींद सोनेवाली स्त्रियाँ; ऐ उरुम् चुटर् मेनियान्–विस्मयकारी कांतिवाले शरीर के श्रीराम की; ॲऴिल् काण–रूप-वैभव देखने के लिए; मूळुम् अवाविनाल्–उमड़नेवाले अनुराग के कारण; कॉय् उरुम् कुलम् मा मलर् कुवै निन्ऱु–(ढेंपुनी तोड़कर) चुनकर लाये गये विविध फूलों की शय्या से; कुऴल् वण्टु पॉम् ॲन विम्म–केश के भ्रमरों को गुंजार के साथ उठने देते हुए; ॲऴुन्तनर्–उठीं। २४१

स्त्रियाँ जो तीक्ष्ण और घी-लगे भालो के समान तीक्ष्ण और आयत आँखों को वन्द किये मन में श्रीराम का ध्यान करते हुए झूठी निद्रा सो रही थीं, विस्मयविमूढ करनेवाली देह कान्तियुक्त श्रीराम के किरीट-धारण के वैभव को और उनकी सुन्दरता को देखने की प्रवल इच्छा से ढेंपुनी रहित पुष्पों की शय्या से उठी, तो उनके केशों पर लगे रहे भ्रमर भी 'भनभन' गुंजार कर उठे। २४१

आड हन्दरु पूण ऴुन्दिड वञ्जि यञ्जि यनन्दराल्
एड हम्बॉदि तार्पॉ रुन्दिड याम पेरि यिशैत्तलाल्
शेड हम्वुनै कोदै मङ्गयर् शिन्दै यिर्चॅरि तिण्मयाल्
ऊडल् कण्डवर् कूडल् कण्डिलर् नैयु मैन्दर्ह ऴुय्यवे 242

चेटु अकम् पुनै कोतै–मनोहारिणी रीति से गुँथी हुई मालाधारिणी; मङ्कैयर्–(पत्नी-) स्त्रियाँ; चिन्तैयिन् चॅरि तिण्मैयाल्–मन की दृढ़ता से; ऊटल् कण्टु–रूठती है, यह देखकर; नैयुम् मैन्तर्कळ्–संकटग्रस्त पुरुष लोग; आटकम् तरुम् पूण्–स्वर्णनिर्मित आभूषण; अऴुन्तिट अञ्चि अञ्चि–(स्त्रियो के वक्ष में) दर्द करेंगे, इस डर से; अत्तन्तराल्–भ्रम के कारण; एटु अकम् पॉति तार् पॉरुन्तिट–पुष्पो की माला पहनते हैं, तव; यामम् पेरि इचैत्तलाल्–याम के वीतने का संकेत देनेवाली भेरी के वज उठने से; उय्य–(नैराश्य से) वच जाएँ, ऐसा; अवर्–वे; कूटल् कण्टिलर्–मिलन का आनन्द नहीं पा सके। २४२

रात को कितने ही दम्पतियो के यहाँ प्रणय-कलह हो गया था। मनोरम पुष्पमाला से अलंकृत स्त्रियाँ रूठ गईं। उनकी दृढ़ता देखकर पुरुष घवड़ा उठे और उनको मनाने के अनेक उपाय किये। उन्हें यह वात सूझी कि हमारे स्वर्णहार पत्नियों के वक्ष को दुख देंगे, इसलिए उन्हें उतारकर उन्होंने फूलों की माला पहन ली। तभी याम का संकेत देनेवाली भेरी वज गई। वेचारे अपनी पत्नियों से समागम कर नहीं पाये और उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई जिससे उनका दुख दूर नहीं हुआ। २४२

कळ्यॉ लित्तन्न वण्डॉ लित्तन्न कारॉ लित्तन्न बेरियाम्
मुळवॉ लित्तन्न तेरॉ लित्तन मुत्तॉ लित्तन्न मल्हुपेर्
इळयॉ लित्तन्न पुळ्ळॉ लित्तन्न याळॉ लित्तन्न वॆङ्गणुम्
मळयॉ लित्तन्न पोलॉ लित्त मन्नत्तिन् मुन्दुरु वाशिये 243

ॲङ्कणुम्–सब जगह; कळै ऑलितृतन–बाँसुरियाँ बजीं; वण्टु ऑलितृतन–भ्रमर गुंजार कर उठे; कार् ऑलितृत अन्न–मेघ गरजे, जैसे; पेरि आम् मुळवु ऑलितृतन्न–भेरियाँ रूपी बाजे बजे; तेर् ऑलितृतन्न–रथों की ध्वनि गूँज उठी; मुत्तु ऑलितृतन्न–मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए; मल्कु पेर् इळै–बहुतायत से पाये जानेवाले आभरणों ने; ऑलितृतन्न–नाद किया; पुळ् ऑलितृतन–पक्षीगण बोल उठे; याळ् ऑलितृतन्न–वीणाएँ बजीं; मन्नत्तिन् मुन्तु उरु–मन से भी अधिक वेग के साथ जानेवाले; वाचि–अश्व; मळै ऑलितृतन्न पोल–मेघ गरजे जैसे; ऑलितृत–हिनहिनाये। २४३

नगर में अनेक प्रकार के नाद हुए। विविध बाँसुरियाँ बजीं। भ्रमर गुंजार करते थे। मेघ समान भेरियाँ बजीं। रथों की घरघराहट उठी। मोती आपस में टकराकर ध्वनित हुए। बहुमूल्य आभरणों के आपस में टकराने से शब्द हुआ। पक्षीगण बोले। मनोवेग से अधिक तेज चलनेवाले अश्व मेघ-गर्जन के समान हिनहिनाये। २४३

वैय मेळुमॊ रेळु मारुयि रोडु कूड वळङ्गुमम्
मॆय्यन् वीररुळ् वीरन् मामहन् मेल्वि ळैन्दॆळ कादलाल्
नैय नैय नलम्बु लन्गळ विन्द डङ्ग नडुङ्गुवान्
दॆय्व मेन्नि पडैत्त शेयॊळि पोन्म ळुङ्गिन दीबमे 244

वैयम्–भुवन; एळुम् ओर् एळुम्–चौदहों को; अरु उयिरोटु कूट–अपने मूल्यवान प्राणों के साथ; वळङ्कुम्–जिन्होंने दिया; अ मॆय्यन्–वे सत्यसंध; वीररुळ् वीरन्–वीरों के वीर; मा मकन् मेल्–अपने महान पुत्र पर; विळैन्तु ॲळु कातलाल्–उठकर बढ़ते प्रेम के कारण; नैय नैय–अधिक व्यथित होने से; पुलन्कळ्–इन्द्रिय; नलम् अविन्तु–अपनी स्वस्थता खोकर; अटङ्क–निस्तेज हो गई; नटुङ्कुवान्–काँपनेवाले दशरथ के; तॆय्वम् मेन्नि पटैत्त–दिव्य शरीर को उपलब्ध; चेय् ऑळि पोल्–श्रेष्ठ दीप्ति (मन्द होती) जैसे; तीपम् मळङ्किन–दीप मन्द पड़ गये। २४४

चौदहों भुवनों को और अपने प्राणों को देनेवाले सत्यसंध और बड़े से बड़े वीर दशरथ अपने पुत्र पर अत्यधिक प्रेम रखते थे। इसलिए उनके वन में जाने की मजबूरी जो हो गई उसको लेकर वे बहुत दुखी हो गये। इसलिए उनकी इन्द्रियाँ निस्तेज हो गई। वे काँपते थे। उनके दिव्य शरीर की कान्ति जैसे मन्द हुई उसी तरह दीप भी मन्दप्रभ हो गये। २४४

वङ्गि यम्बल तेन्वि ळम्बिन वाणि मुन्दिन्न पाणियिन्
पङ्गि यम्बर मॆङ्गुम् विम्मिन्न पम्बै पम्बिन्न पल्वहैप्

पॉङ्गि यम्वल वुङ्ग इङ्गित्त नूबु रङ्गळ्पु लम्बवॅण्
शङ्गि यम्बिन कॉम्ब लम्बिन शाम गीद निरन्दवे 245

वङ्कियम् पल–विविध वेणुवाद्य, अनेक से; तेन् विळम्पित्त–मधु (-सम) संगीत उठे; वाणि मुन्तित्त–उनसे पहले मौखिक जय-गीत आये; पाणियिन् पङ्क्ति–विविध तानों की राशियाँ; अम्परम अॅङ्कुम्–आकाश (भर) में सर्वत्र; विम्मित्त–भर गईं; पम्पै पम्मिन–"पम्पै" (नामक बाजा-दुंदुभी ?) नदित हुए; पल् वकै–अनेक प्रकार के; पॉङ्कु इयम् पलवुम्–नाद देनेवाले बाजे, अनेक; कऱङ्कित्त–बजाये गये; नूपुरङ्कळ् पुलम्प–नूपुर क्वणित हुए; वॅण् चङ्कु इयम् पिन–श्वेत शंख बजाये गये; कॉम्पु अलम्पिन–तुरहियाँ बजी; चाम कीतम् निरन्त–सामवेद के गीत गाये गये। २४५

फूँककर बजानेवाले अनेक वाद्यों का मधुर संगीत, मौखिक संगीत, बधाई के गीतों का संगीत सब सभी दिशाओं में भर गये। 'पम्पै' नाम का (दुन्दुभी ?) बाजा बजाया गया। विविध उच्च स्वर के बाजे बजे। नूपुर और शंख की चूड़ियाँ खनखना उठी। शृंगियों का नाद उठा। सामवेद के गीत भी गाये गये। २४५

* तूब मुऱ्ऱिय कारि रुट्पहै तुळ्ळि योडिड वुळ्ळॅळ्ळुम्
दीब मुऱ्ऱु मॉळित्त हन्ऱन शेय दारुयिर् तेयवॅम्
बाब मुऱ्ऱिय पेदै शॅय्द पहैत्ति इत्तिनिल् वॅय्यवन्
कोब मुऱ्ऱि मिहच्चि वन्दन्न वॉत्त नन्गुण कुन्ऱिन्मेल् 246

चेयतु–अपने कुल के पुत्र दशरथ के; अरु उयिर् तेय–मूल्यवान प्राणों के क्षीण होने देते हुए; वॅम् पापम्–कठोर पाप-कर्म; मुऱ्ऱिय पेतै–पूर्ण जो कर चुकीं उन अबोध कैकेयी के; चॅय्त–किये हुए; पकै तिऱत्तिनिल्–शत्रुकृत्य से; कुण कुन्ऱिन् मेल्–उदयाचल पर; वॅय्यवन्–किरणमाली; कोपम् मुऱ्ऱि–क्रोध में बढ़कर; मिक चिवन्तनन्–अधिक लाल हो गये, ऐसा; ऑत्तनन्–लगे; तूपम् मुऱ्ऱिय–धुएँ के समान सर्वत्र व्याप्त; कार् इरुळ् पकै–काला अन्धकार-शत्रु; तुळ्ळि ओटिट–लपककर भाग जाय; उळ् ऑळुम्–(घरों के) अन्दर जले (जो); तीपम् मुऱ्ऱुम्–सभी दीप; ऑळित्तु अकन्ऱन–गुल हो गये। २४६

उदयगिरि पर जो सूरज उग आया उसको देखकर ऐसा लगा मानो वह क्रोध से लाल हो गया हो। उसे कैकेयी के सूर्यवंशज दशरथ के प्रति शत्रु का-सा काम करने पर कोप हुआ था। उसके उदय होने पर धुएँ के समान जो अँधेरा सर्वत्र फैला था वह भाग गया! घरों के अंदर जो दीप जलते थे वे भी बुझ गये। २४६

मूव रायुमुद लाहि मूलमु माहि ञालमु माहुमत्
तेव देवर् पिडित्त पोर्वि लॉडित्त शेवहन् शेणिलम्
कावन् मामुडि शूड मारॅळिल् काण लामॅनु माशैकूर्
पावै मार्मुह मॅन्न मुन्न मलर्न्द पङ्गय राशिये 247

मूवर् आय्–तीन (त्रिदेव) बनकर; मुतलाकि–उनके आदि बनकर; मूलमुम् आकि–सबका आधार बनकर; ञालमुम् आकुम्–प्रपंच भी जो बने रहते हैं; अ तेव तेवर्–और उन देवाधिदेव (शिवजी) का; पिटित्त–हस्तगृहीत; पोर् विल्–युद्धधनु को; ऑटित्त–जिन्होंने तोड़ा वे; चेवकन्–बड़े वीर; चेण् निलम् कावल्–विस्तृत भूमि का पालन करने के लिए; मा मुटि चूटुम्–महत्वपूर्ण किरीट धारण के; अरु ऍळिल्–अपूर्व वैभव को; काणलाम् ऍनुम्–देख सकेंगे, यह; आचै कूर्–आशायुक्त; पावैमार् मुकम् ऍन्न–स्त्रियों के मुखों के समान; पङ्कयम् राचि–पंकज समूह; मुन्नम् मलर्न्त–पहले खिल गये। २४७

सूरज के उगने पर कमल के पुष्प स्त्रियों के मुखों के समान खिल गये। स्त्रियों के मुख क्यों खिले? जो त्रिदेव, त्रिदेव के प्रधान, और त्रिदेव के आदि और प्रपंच के आधार देवाधिदेव और श्री शिवजी के युद्ध-धनुष को तोड़नेवाले श्रीराम के, विस्तृत भूमि के पालन के लिए किरीट-धारण करने की शोभा और वैभव को देखने की आशा से स्त्रियों के मुख खिले थे। २४७

इन्न वेलयि लेळु वेलयु मॊत्त पोल विरैत्तॆळुन्
दन्न मानहर् मैन्दन् मामुडि शूडुम् वैह लिदामॆन्नात्
तुन्नु काद लुरप्प वन्दवै शॊल्ल लाम्वहै यॆम्मनोर्क्
कुन्न लावन वल्ल वॆन्निनु मुट्रु पॆट्रि युणर्त्तुवाम् 248

इन्न वेलैयिन्–ऐसी वेला में; मैन्तन्–कुमार के; मा मुटि चूटुम् वैकल्–श्रेष्ठ मुकुटधारण करने का दिन; इतु आम् ॲन्ना–आज ही है, इसको; तुन्नु कातल्–भरी उमंग के; उुरप्प–प्रेरित करने से; अन्न मा नकर्–उस बड़े नगर के सभी वासी; एळु वेलैयुम् ऑत्त पोल–सातों समुद्र मिल गये जैसे; इरैत्तु ॲळुन्तु–आनन्दरव करते हुए उठकर; वन्तवै–जो आये उसका; चॊल्लल् आम् वकै–(विस्तार से) कहने का प्रकार; ॲम्मनोर्क्कु–हम जैसों के लिए; उन्नल् आवन अल्ल–सोचने के लिए सुलभ नहीं है; ॲन्निनुम्–तो भी; उट्र पॆट्रि–भरसक; उणर्त्तुवाम्–समझायेंगे। २४८

ऐसी स्थिति में उस महान नगर के वासी आकर भीड़ लगाने लगे। चक्रवर्ती के पुत्र श्रीराम मूल्यवान किरीट को आज ही धारण करेंगे —यह जानकर उस उत्सव को देखने की इच्छा से प्रेरित होकर, सातों समुद्रों के मिल आने के समान, शोरगुल के साथ उनका एकत्र होना, कवि कहते हैं, हमारे लिए वर्णनातीत है! तो भी भरसक उसका वर्णन करेंगे। २४८

कुञ्जर मन्नैयार् शिन्दयुहॊ ळिळैयार्, पञ्जिह ळणिवार् पाल्वळै तॆरिवार्
अञ्जन मॆन्वा ळम्बुह ळिडये, नञ्जिनै यिडुवार् नाण्मलर् पुनैवार् 249

कुञ्चरम् अन्नैयार्—गज-सम (मत्त) पुरुषों के; चिन्तै कॊळ्–मन हरनेवाली; इळैयार्–तरुण रमणियाँ; पञ्चिकळ् अणियार्–लाक्षारस लगाती हैं; पाल् वळै तॆरिवार्—दुग्ध-सम श्वेत चूड़ियाँ चुनकर पहनती हैं; अञ्चतम् ऍन–अंजन के नाम

से; वाळ् अम्पुकळ् इटै–तलवारों और बाणों (सी आँखों) में; नञ्चित्तै इटुवार्–विष लगा लेती हैं; नाळ् मलर् पुनैवार्–उसी दिन खिले फूल पहनतीं। २४९

तरुणियों का व्यवहार देखिये। कुंजर-सम तरुणों के मन को हरनेवाली तरुणियों ने पैरों में महावर लगाया। शंख की बनी चूड़ियाँ चुनकर पहनीं। अंजन कहकर विष को तलवारों और शरों के समान अपनी आँखों में लगा लिया। उसी दिन विकसित पुष्प पहन लिये। २४९

पॊङ्गिय वुवहै वॆळ्ळम् पॊऴितरक् कमलम् पूत्त
शङ्गयिन् मुहत्तार् नम्बि तम्बिय रनैय रानार्
शॆङ्गय नऱव मान्दिक् कळिप्पन शिवणुङ् गण्णार्
कुङ्गुमच् चुवडु नीङ्गाक् कुववुत्तोट् कुमर रॆल्लाम् 250

नऱवम् मान्ति–मधु पीकर; कळिप्पत–मुदित; चॆम् कयल् चिवणुम् कण्णार्–अच्छी ("कयल" की) मछली-सम मत्त आँखों वालियों का; कुङ्कुमम् चुवटु नीङ्का–कुंकुम का लगा चिह्न जिनसे धुला नहीं है; कुववु तोळ्–वे पुष्ट कंधों वाले; कुमरर् ऎल्लाम्–तरुण पुरुष, सब; कमलम् पूत्त–कमल-सम प्रफुल्लित; चङ्कै इल् मुकत्तार्–कपट-रहित मुख वाले होकर; पॊङ्किय–उमड़ा हुआ; उवकै वॆळ्ळम्–आनन्द का प्रवाह; पॊऴि तर–अश्रु के रूप में बहाते हुए; नम्पि–नायक श्रीराम के; तम्पियर् अनैयर् आनार्–छोटे भाइयों के समान हो गये। २५०

तरुण लोग ऐसे थे जिनके कंधों से कुंकुम का चिह्न नहीं छूटा था। शहद पीकर मत्त रहनेवाली 'कयल' नामक मछलियों के समान जिनकी आँखें थीं उन तरुणियों के वक्ष पर लगा था वह कुंकुम! वे पुष्ट कंधों वाले तरुण लोग निष्कपट मुख और आनन्दाश्रु बहानेवाली आँखों के साथ श्रीराम के छोटे भाइयों के समान बन गये (अत्यन्त आनन्दित हो गये।)। २५०

❀ मादर्हळ् कऱ्पिन् मिक्कार् कोशलै मनत्तै यॊत्तार्
वेदियर् वशिट्ट नॊत्तार् वेऱुळ माद रॆल्लाम्
शीदयै यॊत्ता रन्ना डिरुविनै यॊत्ता ळव्वूर्च्
चादुहै मान्द रॆल्लान् दयरदन् ऱन्नै यॊत्तार् 251

अ ऊर्–उस (अयोध्या) नगर में; कऱ्पिल् मिक्कार् मातर्कळ्–विवाहिता बड़ी उम्र की स्त्रियाँ; कोचलै मनत्तै ऒत्तार्–कौसल्यादेवी के-से मन वाली हो रहीं; वेऱु उळ मातर् ऎल्लाम्–अन्य सभी (कन्या) स्त्रियाँ; चीतैयै ऒत्तार्–सीताजी के समान हो गईं; अन्नाळ्–वे सीता; तिरुविनै ऒत्ताळ्–लक्ष्मीदेवी के समान हो गईं; चातुकै मान्तर् ऎल्लाम्–साध (उम्र में बड़े) पुरुष सभी; तयरतन् तन्नै–दशरथ से; ऒत्तार्–तुल्य रहे; वेतियर् वचिट्टर् ऒत्तार्–वेदज्ञ विप्र वसिष्ठ से तुले। २५१

उमर में बढ़ी सभी गृहिणियाँ (सधवाएँ) कौसल्यादेवी के समान

(मुदित) हुई। अन्य कन्याएँ सीता-सम हुईं। वे सीता भगवती श्रीलक्ष्मी के समान शोभीं। वयोवृद्ध साधू लोग दशरथ के समान रहे। और वेदपाठी सभी ब्राह्मण लोग वसिष्ठजी के समान हो रहे थे। २५१

❀ इमिऴ्तिरैप् परवै ञाल मॅङ्गणुम् वऱुमै कूर
उमिऴ्वदॊत् तुदवु काद लुन्दिड वन्द दन्ऱे
कुमिऴ्मुलैच् चीदै कॊण्गन् कोमुडि पुनैदल् काण्बान्
अमिऴ्दुणक् कुऴुमु हिन्ऱ वमररि नरश वॆळ्ळम् 252

अरच वॆळ्ळम्–राजाओं की बड़ी भीड़; कुमिऴ् मुलै चीतै कॊण्कन्–कलशस्तनी सीता के पति के; को मुटि पुनैतल् काण्पान्–राजमुकुट धारण करने को देखने के लिए; उमिऴ्वतु ऒत्तु–बाहर प्रकट होते से; उतवु कातल्–उमड़ते प्रेम के; उन्तिट–प्रेरित करने से; इमिऴ् तिरै परवै ञालम् ऍङ्कणुम्–ध्वनियुक्त लहरों वाले समुद्र से वलयित पृथ्वी के सभी स्थानों को; वऱुमै कूर–रिक्त बनाकर; अमिऴ्तु उण–अमृत अशन करने; कुऴुमुकिन्ऱ अमररिन्–एकत्र होनेवाले देवों के समान; वन्ततु–आने लगी। २५२

राजाओं की भीड़ अत्यधिक थी। उनके मन में मनोरम उरोज वाली सीताजी के पति, श्रीराम के मुकुटधारण के उत्सव को देखने की प्रवल लालसा रही। उससे प्रेरित होकर वे आ गये। संसार के अन्य भाग सभी रिक्त हो गये। वे राजा लोग उन देवों के समान अयोध्या में आने लगे जो अमृत का अशन करने के लिए क्षीरसमुद्र पर गये थे। २५२

पाहियल् पवळच् चॆव्वायप् पणैमुलैप् परवै यल्हुल्
तोहयर् कुळामु मैन्दर् शुम्मयुन् दुवन्ऱि यॆङ्गुम्
एहुमि न्ेहु मॆन्ऱॆन् ऱिडैयिडै निऱ्ऱ लल्लाल्
पोहलर् मीळ्ह लिल्लार् पॊन्नहर् वीदि यॆल्लाम् 253

पॊन् नकर्–लक्ष्मी के (वासस्थान, उस) नगर में; वीति ऍल्लाम्–सभी सड़कों पर; पाकु इयल्–चाशनी का मधुर स्वभाव; पवळम् चॆम् वाय्–और प्रवाल-सी लालिमा से युक्त मुख; पणै मुलै–पीन स्तन; परवै अल्कुल्–विशाल नितम्ब; तोकैयर् कुळामुम्–कलापी-सी आभावाली स्त्रियों की भीड़ और; मैन्तर् चुम्मैयुम्–पुरुषों की भीड़; ऍङ्कुम् तुवन्ऱि–सर्वत्र भरकर; एकुमिन् एकुम्–चलिए, चलो; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–कहते-कहते; इटै इटै निऱ्ऱल् अल्लाल्–यत्र-तत्र खड़ी ही रहती है, उसके सिवा; पोकलार्–आगे बढ़ नहीं पाते; मीळ्कल् इल्लार्–पीछे भी मुड़कर जा नहीं पाते। २५३

श्रीलक्ष्मी के वास के उस नगर की वीथियों में स्त्रियों और पुरुषों की वड़ी भारी भीड़ लग गई। स्त्रियाँ सुन्दर थीं। वे चाशनी-सम मधुर वोली वाली और प्रवाल-सम लाल अधर-होंठ वाली रमणियाँ थीं। उनके स्तन पीन थे और नितम्ब-प्रदेश विशाल। भीड़ के लोग कहते कि

"वढ़ो आगे, स्थान दो"; पर वे न आगे वढ़ पाते हैं, न पीछे मुड़ पाते हैं। उनको खड़ा रहना ही पड़ता है। इतनी भारी भीड़ थी। २५३

❀ वेन्दरे पॅरिदॅन् बारुम् वीररे पॅरिदॅन् बारुम्
मान्दरे पॅरिदॅन् बारु महळिरे पॅरिदॅन् बारुम्
पोन्ददे पॅरिदॅन् बारुम् पुहुवदे पॅरिदॅन् बारुम्
तेर्न्ददे तॅरिव दल्लाल् यावरे तॅरिय वल्लार् 254

वेन्तरे पॅरितु ॲन्पारुम्–राजाओं की संख्या ही अधिक है, कहनेवाले; वीररे पॅरितु ॲन्पारुम्–और वीरों की भीड़ ही वड़ी, कहनेवाले; मान्तरे पॅरितु–पुरुषों की भीड़ वड़ी; ॲन्पारुम्–कहनेवाले; मकळिरे पॅरितु–स्त्रियों का समूह ही विशाल है; ॲन्पारुम्–कहनेवाले; पोन्तते पॅरितु–आगत लोगों की संख्या वड़ी; ॲन्पोरुम्–कहनेवाले; पुकुवते पॅरितु ॲन्पारुम्–आनेवाले लोग ही अधिक कहनेवाले; तेर्न्तते तॅरिवतु अल्लाल्–अपने देखे हुओं को ही जानते हैं, उसको छोड़; तॅरियवल्लार् यावर्–संपूर्णता जाननेवाले कौन है। २५४

उस भीड़ को देखकर लोग कहते है कि राजाओं की भीड़ ही वड़ी है। सेना-वीरों की संख्या अधिक है; पुरुष लोगों की भीड़ वड़ी है; स्त्रियों का समूह ही विशाल है; जो आ चुके उनकी भीड़ भारी है; नहीं-नहीं जो आनेवाले है उनकी संख्या ही अधिक है। इस तरह लोग अपनी-अपनी जानकारी के आधार पर अनुमान लगा रहे थे। वहाँ कौन थे जो संपूर्ण भीड़ को देखकर वता सकें? । २५४

❀ कुवळयि नॅळिलुम् वेलिन् कॉडुमयुङ् गुळैत्तुक् कूट्टित्
तिवळुमञ् जनमॅन् ड्रेय्न्द नञ्जिनैत् तॅरियत् तीट्टित्
तवळवॊण् मदियिन् वैत्त तन्मशा ड्रडङ्ग णल्लार्
तुवळुनुण् णिडया राडुन् दोहयिन् कुळात्तिर् ड्रॊक्कार् 255

कुवळैयिन् ॲळिलुम्–नील कुवलय की छटा; वेलिन् कॉटुमैयुम्–भाले की क्रूरता; कुळैत्तु कूट्टि–मिलाकर घोलकर; तिवळुम–वने रहे; अञ्चनम् ॲन्ऱु एय्न्त–'अंजन' नाम के साथ, रहनेवाले; नञ्चिनै–विष को; तॅरिय तीट्टि–दरसाते हुए लगाकर; तवळम् ऑळ् मतियिन् वैत्त–श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जड़ित-सी; तन्मै चाल्–दृश्यवाली; तटम् कण्–विशाल आँखों की; नल्लार्–स्त्रियाँ; तुवळुम् नुण् इटैयार्–लचकती पतली कमरवालियाँ; आटुम् तोकैयिन् कुळात्तिन्–पंख फैलाकर नाचनेवाले मोरों के झुण्डों के समान; तॊक्कार्–आ एकत्र हुईं। २५५

पतली कमर वाली स्त्रियाँ नाचते मोरों के समान आ जुट गई। उनका शृंगार देखिये। नील कुवलय का रूप और भाले की क्रूरता से युक्त अंजन नामक विष को उन्होंने अपनी आँखों में लगा लिया है! उनको एक श्वेत, उज्ज्वल चन्द्र पर जटित कर लिया हो ऐसा उनका मुख है। उन आँखों की वे स्त्रियाँ अपनी कमर लचकाती आई है। २५५

नलङ्गिळर् बूमि यॆन्नु नङ्गयै नरुन्दु ळायिन्
अलङ्गलान् पुणरुज् जॆल्वङ् गाणवन् दडैन्दि लादार्
इलङ्गयि निरुद रेमऱ् ऱीरॆऴु पुवनत् तुळ्ळ
विलङ्गलु मरमु मादि वेऱुळ पॊरुळ्ह ळॆल्लाम् 256

नलम् किळर्–अच्छाइयों से युक्त; पूमि ऎन्नुम् नङ्कैयै–भूमि रूपी देवी को; नऱु तुळायिन् अलङ्कलान्–सुगन्धित तुलसी-मालाधारी; पुणरुम्–जो मिलते है उस; चॆल्वम् काण–वैभव को देखने के लिए; वन्तु अटैन्तिलातार्–जो अभी तक नहीं आ पहुँचे; इलङ्कैयिल् निरुतरे–लंका के राक्षस ही; मऱ्ऱु–उनके अलावा; ईर् एऴु पुवनत्तु–दो के सात (चौदह) भुवनों के; उळ्ळ–रहनेवाले; विलङ्कलुम् मरमुम् आति–पर्वत, पादप आदि; वेऱु उळ–(मानव देवादि से) भिन्न; पॊरुळ्कळ् ऎल्लाम्–निर्जीव पदार्थ सभी। २५६

इस बड़ी भीड़ में दुनिया के सभी थे। पर कौन नहीं थे? सौभाग्य-दायिनी पृथ्वीदेवी को तुलसीमाला-धारी श्रीराम वरमाला पहनानेवाले हैं। उस उत्सव को देखने के लिए जो नहीं आये, वे लंका के राक्षस ही थे। उनके अलावा चौदहों भुवनों के पर्वत और वृक्ष नहीं आये क्योंकि वे स्थावर थे। २५६

चन्दिरर् कोडि यॆन्नत् तरळवॆण् कविहै योङ्ग
अन्दरत् तन्न मॆल्ला माऱ्न्दॆन्नक् कवरि तुन्न
इन्दिरऱ् कुवमै शालु मिरुनिलक् किळव रॆल्लाम्
वन्दनर् मवुलि शूट्टु मण्डब मरबिऱ् पुक्कार् 257

इन्तिरऱ्कु उवमै चालुम्–इन्द्र से उपमेय; इरु निलम् किळवर् ऎल्लाम्–बड़े पृथ्वी भागों के अधिपति लोग; चन्तिरर् कोटि ऎन्न–करोड़ों चन्द्र हों ऐसे; तरळम् वॆण् कुटैकळ् ओङ्क–मोती के छत्रों के ऊपर रहते; अन्नम् ऎल्लाम्–संसार के सभी हंस; अन्तरत्तु आर्न्त–आकाश में भर गये; ऎन्न–ऐसा; कवरि तुन्न–चामरों के साथ; वन्तनर्–आये; मवुलि चूट्टुम् मण्टपम्–मुकुट-धारण के मण्डप में; मरपिन् पुक्कार्–क्रम के अनुसार पहुँचे। २५७

सभी महीपति अभिषेक के मण्डप में आ पहुँचे। उनके आने का ठाठ कैसा था? उनके करोड़ों छत्र, करोड़ों चंद्रों के समान थे। चामरों की संख्या इतनी थी और उनका डुलना ऐसा लगता था मानो संसार भर के हंस उधर आ गये हों। उन राजाओं से इन्द्र भी उपमित हो सकते थे! वे सब अपनी-अपनी मर्यादा के क्रम के अनुसार आ पहुँचे। २५७

मुऱ्पयन् दॆडुत्त कादऱ् पुदल्वनै मुऱैयि नोडुम्
इऱ्पयन् शिऱप्पिप् पारि नीण्डिय वुवहै तूण्ड
अऱ्पुदन् ऱिरुवैच् चेरु मरुमणङ् गाणप् पुक्कार्
नऱ्पयन् ऱवत्ति नुय्क्कु नान्मऱैक् किळव रॆल्लाम् 258

तवत्तिन्–तपोबल से; नल् पयन् उयक्कुम्–श्रेष्ठ उपकार (संसार को) करनेवाले; नाल् मऱै किऴवर् ॲल्लाम्–चारों वेदों के ज्ञाता सभी ब्राह्मण; मुन् पयन्तु ॲटुत्त–पहले जनाये; कातल् पुतल्वऩै–प्यारे पुत्र को; मुऱैयिनोटुम्–विधिवत; इल् पयन् चिऱप्पिप्पारिन्–गृहस्थ धर्म में (प्रवेश कराके) गौरव दिला रहे हों, जैसे; ईण्टिय उवकै तूण्ट–उमड़नेवाले प्रेम से प्रेरित होकर; अऱ्पुतन्–अद्भुत कुमार श्रीराम के; तिरुवै चेरुम्–(राज्य-) श्री के साथ मिलने के; अरु मणम्–श्रेष्ठ विवाह को; काण पुक्कार्–देखने के लिए (मण्डप में) पहुँचे। २५८

वेदपाठी ब्राह्मणों का आनन्द भी अधिक था। अपनी तपस्या के फल को लोक-हितार्थ समर्पण करनेवाले वे ऐसे आनन्दित हुए मानो वे अपने ज्येष्ठ पुत्र को वैवाहिक जीवन में प्रवेश करा रहे हों जिससे उसका और लोक का सौभाग्य बढ़े! वे भी श्रीराम तथा भूमिदेवी का विवाह (राज्याभिषेक) देखने की इच्छा से प्रेरित होकर मण्डप में आ पहुँचे। २५८

विण्णवर् विशुम्बु तूर्त्तार् विरितिरै युडुत्त कोल
मण्णवर् तिशैह डूर्त्तार् मङ्गल मिशैक्कुञ् जङ्गम्
कण्णहन् मुरशिन्नोदै कण्डवर् शॅविह डूर्त्त
ॲण्णरुङ् गन्नह मारि यॅऴुतिरैक् कडलुन् दूर्त्त 259

विण्णवर् विचुम्पु तूर्त्तार्–देवों से आकाश भर गया; विरि तिरै उटुत्त–विस्तृत सागर वेष्टित; कोलम्–सुन्दर; मण्णवर्–पृथ्वी के लोगों ने; तिचैकळ् तूर्त्तार्–दिशाओं को भर दिया; मङ्कलम् इचैक्कुम्–मंगलस्वन; चङ्कम्–शंख; कण् अकल्–विशाल "आँख" के; मुरचिन् ओतै–ढोल का नाद; कण्टवर् चॅविकळ् तूर्त्त–(इन्होंने) दर्शन करने के लिए आगतों के कान भर दिये; ॲण्ण अरु–अमाप; कन्नकम् मारि–कनक वर्षा; ॲऴुतिरै–उठनेवाली लहरों से पूर्ण; कटलुम् तूर्त्त–समुद्र को भर गई। २५९

आकाश देवों से भर गया। सागरवसना भूमि के लोगों से दिशाएँ भर गईं। मंगलमय शंखनाद और विशाल चमड़े के ढोलों के नाद से आगतों के कान भर गये। कनक-वर्षा जो लोगों के द्वारा की गई उससे लहरसंकुल (या सातो) सागर भर गये। २५९

विळक्कॉळि मऱैत्तु मन्नर् मिन्नॊळि महुड कोडि
तुळक्कॉळि विशुम्बि नूरुञ् जुडरयु मऱैत्तुच् चूऴ्न्द
अळक्कर् वॆण् मुत्त मूरन् मुरुवला रणियिन् शोदि
वळैक्कला मॆन्ऱव् वानोर् कण्णयु मऱैत्त वन्ऱे 260

मन्नर्–महीपतियों के; मिन् ऑळि–विद्युत-सी छटा वाले; मकुटम् कोटि–करोड़ों किरीटों के; तुळक्कु ऑळि–हिलने से उत्पन्न प्रकाश; विळक्कु ऑळि मऱैत्तु–दीपों का प्रकाश मन्द करके; विचुम्पिन् ऊरुम्–आकाशचारी; चुटरैयुम् मऱैत्तु–सूर्य को भी छिपाते हुए; चूऴ्न्त–(सर्वत्र) फैल गया; अळक्कर्–समुद्र में उत्पन्न;

वॆण् मुत्तम् मूरल्–श्वेत मुक्ता-सम दाँतों और; मुऱुवलार्–मन्दहास वाली स्त्रियों के; अणियिऩ् चोति–आभरणों की दीप्ति ने; वळैक्कलाम् ऎऩ्ऱु–उनको भी घेर लेंगे, इस विचार के साथ; अ वाऩोर् कण्णैयुम्–उन देवों की आँखों को भी; मऱैत्त–चौंध से भर दिया। २६०

आगत करोड़ों राजाओं के मुकुटों का हिलनेवाला प्रकाश दीपों को निस्तेज बनाते हुए, आकाशचारी सूर्य की प्रभा को भी छिपाते हुए सर्वत्र फैल गया। उन मुक्तादाँत वाली मंदहासिनी स्त्रियों के आभरणों की उन्मुक्त आभा ने देवों को भी घेर लेती हुई उनकी आँखों को मीच दिया। २६०

❀ आयदो रमैदि यिऩ्ग णैयऩै महुडञ् जूट्टऱ्
केयुमङ् गलङ्ग ळाऩ यावयु मियैयक् कॊण्डु
तूयनाऩ् मऱैहळ् वेद पारहर् शॊल्लत् तॊल्लै
वायिल्ह णॆरुक्क नीङ्ग मादवक् किळवन् वन्दाऩ् 261

आयतु ओर् अमैतियिऩ् कण्–ऐसे समय में; मा तवम् किळवऩ्–महान तपोधन वसिष्ठ; ऐयऩै–प्रभु श्रीराम को; मकुटम् चूट्टऱ्कु एयुम्–मुकुट धारण करने के लिए योग्य; मङ्कलङ्कळ् आऩ यावैयुम्–मंगल द्रव्य सब; इयैय कॊण्टु–उचित प्रकार से लेकर; वेतम् पारकर्–वेदपारगों के; तूय नाल् मऱैकळ् चॊल्ल–पवित्र वेदों का पाठ करते; तॊल्लै वायिल्कळ्–प्राचीन द्वारों में; नॆरुक्कम् नीङ्क–भीड़ के स्थान देते; वन्ताऩ्–आये। २६१

ऐसे समय में महान तपोधन वसिष्ठजी श्रीराम के मुकुटधारण के कार्य के लिए आवश्यक और योग्य मंगलपदार्थ लेते हुए मंडप में आये। उनके साथ वेदपारंगत ब्राह्मण आये। द्वारों में जो भीड़ थी उसने इनके लिए रास्ता छोड़ा। २६१

❀ गङ्गये मुदल वाहक् कऩ्ऩियी ऱाय तीर्त्त
मङ्गलप् पुनलु नालु वारियि ऩीरुम् बूरित्
तङ्गियिऩ् विऩैहट् केऱ्ऱ यावयु ममैत्तु वीरच्
चिङ्गवा दनमुम् वैत्तुच् चॆय्वऩ पिऱवुञ् जॆय्दाऩ् 262

कङ्कैये मुतलवाक–गंगा से लेकर; कऩ्ऩि ईऱु आय–"(कुमारी) कन्या" नदी तक के; तीर्त्तम्–नदियों के; मङ्कलम् पुनलुम्–पुण्यसलिल को; नालु वारियिऩ् नीरुम्–चारों ओर के समुद्रजल को; पूरित्तु–घटों में भरकर; अङ्कियिऩ् विऩैकट्कु–(अग्नि) होम-कार्य के लिए आवश्यक सब; अमैत्तु–सँभालकर; वीरम् चिङ्क आतऩम्–वीरसिंहासन भी; वैत्तु–लगाकर; चॆय्वऩ पिऱवुम्–करणीय सब; चॆय्ताऩ्–किया (वसिष्ठजी ने)। २६२

वसिष्ठजी ने गंगा (यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी) और कुमरी (दक्षिण की नदी जो, कहते हैं, समुद्र के अन्दर समा

गई है) की नदियों के जल, और चारों दिशाओं के समुद्रों के जल को कलशों में भर रखा। होम-कार्य के लिए (अक्षत, दर्भ, समित, घी, कलछी आदि) उपकरण संभालकर रखा। फिर एक वीरोचित सिंहासन डलवाकर अन्य आवश्यक तैयारियाँ कीं। २६२

❀ कणिदनू लुणर्न्द मान्दर् कालम्वन् दडुत्त दॅन्नप्
पिणियऱ नोऱ्ऱु निन्ऱ पॅरियवन् विरैवि नॆय्दि
मणिमुडि वेन्दन् ऱन्नै वल्लयिऱ् कॉणर्दि यॅन्नप्
पणिदलै निन्ऱ कादऱ् चुमन्दिरन् परिविऱ् चॅन्ऱान् 263

कणितम् नूल् उणर्न्त मान्तर्–ज्योतिष-शास्त्री (लोगों के); कालम् वन्तु अट्टुत्तु–मुहूर्त आ गया; ऍन्ऩ–कहने पर; पिणि अऱ–(भव-) रोग से मुक्ति पाने के लिए; नोऱ्ऱु निन्ऱ–तपस्या करके रहनेवाले; पॅरियवन्–महात्मा के; विरैविन् ऍय्ति–सत्वर जाकर; मणि मुटि वेन्तन् तन्नै–रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती को; वल्लैयिल् कॉणर्ति–शीघ्र लिवा लाइए; ऍन्ऩ–कहने पर; पणि तलै निन्ऱ–आज्ञा शिरोधार्य करके; कातल् चुमन्तिरन्–सबके स्नेहपात्र सुमन्त्र; परिविन् चॅन्ऱान्–श्रद्धा के साथ गये। २६३

ज्योतिष-शास्त्रियों ने सावधान किया कि मुहूर्त आ गया है। तब भव-रोग-मुक्ति के लिए जिन्होने तपस्या की उन वसिष्ठजी ने सुमन्त्र से कहा कि जल्दी चलिए और रत्नकिरीटधारी चक्रवर्ती दशरथ को यहाँ लिवा लाइए। सबके स्नेह-पात्र सुमन्त्र भी उस शासन को शिरोधार्य करके बड़ी उमंग के साथ गये। २६३

❀ विण्डॊड निवन्द कोयिल् वेन्दर्दम् वेन्दन् ऱन्नैक्
कण्डिलन् विन्नवक् केट्टान् कैहयळ् कोयि नण्णिक्
तॊण्डैवाय् मडन्दै मारिऱ् चॊल्लमऱ् ऱवरुम् जॊल्लप्
पॅण्डिरिऱ् कूऱ्ऱ मन्नाळ् पिळ्ळयैक् कॊणर्ह वॅन्ऱाळ् 264

विण् तॊट निवन्त–आकाश को छूता उन्नत; कोयिल्–महल में; वेन्तर् तम् वेन्तन् तन्नै–राजाधिराज को; कण्टिलन्–न पाकर; विन्नव–पूछने पर; केट्टान्–(उनका उत्तर) सुनकर; कैकयळ् कोयिल् नण्णि–कैकेयी के महल में जाकर; तॊण्टैवाय् मटन्तै मारिल्–बिम्बफलाधरा दासियों से; चॊल्ल–(सूचना देने को) कहा, तब; अवरुम्–उन्होंने भी; चॊल्ल–(कैकेयी के पास) कहा, तब; पॅण्टिरिल् कूऱ्ऱम् अन्नाळ्–स्त्रियों में यमदेव-सी उन्होने; पिळ्ळैयै कॊणर्क–सुत को लाओ; ऍन्ऱाळ्–कहा। २६४

सुमन्त्र पहले दशरथ के आकाशस्पर्शी महल में गये। वे वहाँ नही मिले। वहाँ रहनेवालों से पूछने पर उन्होंने उत्तर दिया। उसको सुनकर वे कैकेयी के महल में गये। द्वार पर रुककर उन्होंने बिम्बफलाधरा दासियों द्वारा अन्दर समाचार भेजा। स्त्रियों में यम के समान जो रहीं उन कैकेयी ने आज्ञा सुनाई कि सुत को यहाँ ले आइए। २६४

❀ ऍन्ड्रन ळॅन्नक् केट्टा ऍ़ळुन्दपे रुवहै पॉङ्गप्
पॉन्ड्रिणि माड वीदि पॉरुक्कॅऩ नीङ्गिप् पुक्कान्
तन्ड्रिरु वुळ्ळत् तुळ्ळे तन्ऩये निनैयु मऱ्ऱक्
कुन्ड्रिवर् तोळि नाऩैत् तॉऴुदुवाय् पुदैत्तुक् कूरुम् 265

ऍऩ्ऱतळ्–कहा तो; ऍऩ्ऩ केट्टाऩ्–उतना सुनकर; ऍऴुन्त पेर् उवकै–उठा बड़ा आनन्द; पॉङ्क–उमड़ आया, तब; पॊऩ् तिणि माटम् वीति–स्वर्णनिर्मित सौधों से भरी वीथी में; पॊरुक्कॅऩ–झट से; नीङ्कि–पार करके; पुक्काऩ्–(श्रीराम के महल में) प्रविष्ट हुए; तऩ् तिरु उळ्ळत्तु उळ्ळे–अपने मन में; तऩ्ऩैये निऩैयुम्–आत्मा का ध्यान लगाते हुए रहनेवाले (स्वात्मध्यान-मग्न); अ कुऩ्ऱु इवर् तोळिऩाऩै–गिरितुल्य कंधे वाले को; तॊऴुतु–नमस्कार करके; वाय् पुतैत्तु–मुख पर हाथ रखकर; कूऱुम्–बोले। २६५

सुमन्त्र ने उतना सुना तो समझ लिया कि श्रीराम को मुकुटधारण के लिए ही बुलाया जा रहा है। उन्हें अपार आनन्द हुआ। वे बहुत शीघ्र स्वर्णमय सौधों से शोभित राजमार्ग पार करके श्रीराम के भवन में पहुँचे। वहाँ श्रीराम आत्मध्यानमग्न थे। उन गिरितुल्य कंधों वाले श्रीराम को नमस्कार करके सुमन्त्र अपने मुख पर उँगलियाँ रखते हुए (मुख के सामने हाथ रखना विनय प्रदर्शन का शिष्टाचार है) बोले। २६५

❀ कॉऱ्ऱवर् मुनिवर् मऱ्ऱुङ् गुवलयत् तुळ्ळा रुऩ्ऩैप्
पॅऱ्ऱवन् ऱन्नैप् पोलप् पॅरुम्बरि वियऱ्ऱि निन्ड्रार्
शिऱ्ऱवै तानु माङ्गे कॉणर्हॅऩ्ऩच् चॅप्पि ऩाळप्
पॉऱ्ऱड महुडञ् जूडप् पोदुदि विरैवि ऩॅन्ड्रान् 266

कॉऱ्ऱवर्–राजा लोग; मुऩिवर्–मुनिगण; मऱ्ऱुम्–और; कुवलयत्तु उळ्ळार्–भूतलवासी; उऩ्ऩै पॅऱ्ऱवऩ् पोल–आपके जनक पिता के समान; पॅरु परिवु इयऱ्ऱि–बड़े प्रेम के साथ; निऩ्ऱार्–खड़े हैं; चिऱु अव्वैयुम्–छोटी माता भी; आङ्कु कॉणर्क ऍऩ–वहाँ लिवा लाने को; चॅप्पिऩाळ्–कहा है; अ पॊऩ् तट मकुटम् चूट–उस स्वर्ण के बड़े मुकुट को धारण करने के लिए; विरैविऩ् पोतुति–शीघ्र आइए; ऍऩ्ऱाऩ्–(सुमन्त्र ने) कहा। २६६

राजकुमार! वहाँ राजा लोग, मुनिगण, और संसार के सभी लोग आपके ही पिता के समान आनन्दभरे होकर आपकी प्रतीक्षा में खड़े हैं। आपकी छोटी (सौतेली) माता ने आपको लिवा लाने की आज्ञा दी है। इसलिए उस बड़े स्वर्णमुकुट के धारण करने के हेतु आप पधारिए —यह सुमन्त्र ने विनय के साथ कहा। २६६

❀ ऐयनु मच्चॉर् केळा वायिर मौलि याऩैक्
कैतॉऴु दरशर् वॅळ्ळङ् गडलॅऩत् तॉडर्न्दु शुऱ्ऱत्

तॆय्वगी दङ्गळ् पाडत् तेवरु महिळ्न्दु वाळ्त्तत्
तैयला रिरैत्तु नोक्कत् तारणि तेरिङ् पोनान् 267

ऐयनुम्–प्रभु (सुन्दर राज) श्रीराम भी; अ चॊल् केळा–वह वचन सुनकर; आयिरम् मौलियानै–सहस्रशीर्ष (श्रीरंगजी) का; कै तॊळुतु–हाथ जोड़कर नमस्कार करके; अरचर् वॆळ्ळम्–राजाओं की भीड़ के; कटल् ॲॅन–सागर के समान; तॊटर्न्तु चुट्र–पीछे और पार्श्व में आते; तॆय्व कीतङ्कळ् पाट–ईश्वर-स्तुति के गीत (गवैयो के) गाते; तेवरुम्–(आकाशस्थित) देवों के; मकिळ्न्तु वाळ्त्त–आनन्द के साथ वधाई कहते; तैयलार्–स्त्रियों के; इरैत्तु नोक्क–आनन्दनाद करते उनको देखते; तार् अणि तेरिल्–मालाओ से अलंकृत रथ पर; पोनान्–गये। २६७

सुन्दरराज प्रभु श्रीराम ने वह सुनकर सहस्रशीर्ष श्रीरंगजी को नमस्कार किया। फिर वे पुष्पमालाओं से अलंकृत रथ पर बैठकर जाने लगे। तव सागर के समान राजसमूह उनके पीछे और पार्श्व में लगे गये। गवैये प्रार्थना और मंगलगीत गाते गये। देव आकाश में स्थित होकर वधाई के वचन वोले। स्त्रियाँ आनन्दघोष करती हुई उनको देख रही थी। २६७

तिरुमणि महुडञ् जूडच् चेवहन् शॆल्हिन् ड्रानॆन्
ड्रॊरुवरि नॊरुवर् मुन्दिक् कादलो डुवहै युन्द
इरुहयु मिरैत्तु मॊय्त्ता रिन्नुयिर् यार्क्कु मॊन्ड्राय्प्
पॊरुवरु तेरिड् चॆल्लप् पुड्त्तिडैक् कण्डार् पोल्वार् 268

चेवकन्–प्रतापी वीर; तिरु मणि मकुटम् चूट–उत्तम मणिमुकुट धारण करने; चॆल्किन्ड्रान् ॲॅन्ड्र–जाते हैं, यह जानकर; कातलोटु उवकै उन्त–भक्ति के साथ आनन्द के प्रेरित करते; ऑरुवरिन् ऑरुवर् मुन्ति–एक के पहले एक वढ़कर; इरु कैयुम् इरैत्तु मॊय्त्तार्–दोनो किनारों पर कोलाहल के साथ जो एकत्र हुए वे सव; यार्क्कुम् इन् उयिर्–सभी की प्यारी जानें; ऑन्ड्र आय्–एक (श्रीरामरूप) होकर; पॊरु अरु तेरिल्–अनुपम रथ पर; पुड्त्तु इटै–वाहर (वीथी में); चॆल्ल कण्टार् पोल्वार्–जाती है, यह देखते से अनुभव करने लगे। २६८

श्रीवीरराघव मंगलमय मणिमुकुट धारण करने जा रहे हैं। यह जानने पर लोगों के मन में अपार हर्ष और प्रेम उत्पन्न हुए। उनकी प्रेरणा से वे-एक से पहले एक आकर मार्ग के दोनो ओर एकत्र हो गये। उनको ऐसा लगा कि हम सवकी जानें मिलकर एक रूप लेकर जा रही हैं। वे ऐसा उनको देख रहे थे। २६८

तुण्णॆनुञ् जॊल्लाळ् शॊल्लच् चुडर्मुडि तुड्न्दु तूय
मण्णॆनुन् दिरुवै नीङ्गि वळिक्कॊळा मुन्नम् वळ्ळल्
पण्णॆनुञ् जॊल्लि नार्तन् दोळॆनुम् पणैत्त वेयुम्
कण्णॆनुङ् गाल वेलु मिडैनॆडुङ् गानम् बुक्कान् 269

तुण् ॲतुम् चॉल्लाळ्–भय-चकित करनेवाले वचन की; चॉल्ल–(कैकेयी के) कहने से; वळ्ळल्–उदार प्रभु; चुटर् मुटि तुऱन्तु–दीप्त मुकुट त्यागकर; तूय मण् ॲतुम् तिरुवै–पवित्र भूश्री से; नीङ्कि–बिछुड़कर; वळि कोळा मुन्नम्–(वन का) मार्ग अपनाने से पहले; पण् ॲतुम् चॉल्लितार् तम्–संगीत-सम बोली वाली स्त्रियों के; तोळ् ॲतुम् पणैत्त वेयुम्–पुष्ट कंधों रूपी बाँसों; कण् ॲतुम्–आँखे रूपी; कालन् वेलुम्–यम से भालों के; मिटै–भरे; नॅटु कातम् पुक्कान्–विस्तृत वन में घुसे। २६९

श्रीराम-दिल दहलानेवाली बात कहने को जो प्रस्तुत थीं उनके कहने से शोभायमान मुकुट और राज्यश्री को छोड़कर वन में जाने से पहले ही एक विचित्र वन में घुस गये। इस विशाल वन में संगीतसम मधुरभाषिणी स्त्रियों के कंधे रूपी बाँस और उनकी आँखें रूपी घातक भाले भरे थे। २६९

चुण्णमु मलरुञ् जान्दुङ् गनहमुन् दूव वन्दु
वण्णमे हलैयु नाणुम् वळैहळुञ् जिन्दु वारुम्
पुण्णुऱ वनङ्गन् वाळि पुळैत्तदम् बुणर्मॅन् कॉङ्गै
कण्णुऱप् पॉळिन्द काम वॅम्बुनल् कळुवु वारुम् 270

चुण्णमुम्–गन्धचूर्ण; मलरुम्–और पुष्प; चान्तुम्–और चन्दन; कनकमुम्–स्वर्ण (के सिक्के); तूव वन्तु–बरसाने के लिए आकर; वण्णम् मेकलैयुम्–सुन्दर मेखलाएँ; नाणुम्–और लाज; वळैकळुम्–करकंकणों को; चिन्तुवारुम्–गिरानेवालियाँ; अनङ्कन् वाळि–मन्मथशर; पुण् उऱ–व्रण बनाते हुए; पुळैत्त–जिन पर चुभ गये; तम् पुणर् मॅन् कॉङ्कै–उन अपने सटे हुए स्तनद्वय को; कण् उऱपॉळिन्त–आँखों से खूब बहनेवाले; काम वॅम् पुनल्–कामोत्तेजित गरम आँसुओं से; कळुवुवारुम्–धुलानेवालियाँ बन के। २७०

स्त्रियाँ रास्ते में सुगन्धचूर्ण, पुष्प, चन्दन और कनककण बरसाने आई। पर वह भूल गई। उसके बदले उन्होंने अपनी मेखलाएँ, लाज और हाथ के कंकण गिरा दिये। मन्मथ ने अपने शरों से जिन स्तनों को विद्ध कर दिया उनको वे अपनी आँखों से वहनेवाली कामतप्त अश्रुधारा से धुलाने लग गई। ऐसी—। २७०

अङ्गण नवनि कात्तऱ् कामिव नॅन्न लामो
नङ्गणन् बिलनॅन् ऱुळ्ळन् दळ्ळुऱ नडुङ्गि नैवार्
शॅङ्गणुङ् गरिय कोल मेनियुन् देरु माहि
अॅङ्गणुन् दोन्ऱु हिन्ऱा नॅनैवरो विराम रॅन्बार् 271

अम् कण्णन्–सुन्दराक्ष; नम् कण् अन्पु इलन्–हमारे प्रति प्रेम नहीं रखते; इवन् अवनि कात्तऱ्कु आम्–यह भूमि का पालन करने योग्य है; ॲन्नल् आमो–कह सकते हैं क्या; ॲन्ऱु–ऐसा सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱ–मन के अस्तव्यस्त होते; नटुङ्कि–काँपकर; नैवार्–मुरझातीं; चॅम् कण्णुम्–लाल आँखे; करिय कोलम् मेनियुम्–नीला सुन्दर शरीर; तेरुम् आकि–और रथ बनकर; ॲङ्कणुम् तोन्ऱु

किन्ऱान्–सर्वत्र दिखाई देते हैं; इरामर्–श्रीराम; ऍत्तॅवरो–कितने ही हैं; ऍऩ्पार्–कहतीं। २७१

वे स्त्रियाँ कहती— सुन्दराक्ष ये राम हम पर किंचित भी स्नेह नहीं दिखाते। ऐसे ये अवनि की रक्षा कर सकेंगे —यह विश्वास करना उचित होगा क्या? देखिये— ललाई लिये ललचानेवाली आँखें और नीले और रूपवान शरीर और रथ बनकर सर्वत्र वे ही दिख रहे हैं! श्रीराम भी कितने है? अनेक हैं क्या? । २७१

इनैयरा महळि रॅल्ला मिरैत्तनर् निरैत्तु मॊय्त्तार्
मुऩैवरु नहर मूदूर् मुदियरु मिळैञर् तामुम्
अनैयवन् मेनि कण्डा रन्बिनुक् कॅल्लै काणार्
निऩैविनर् मनत्ताल् वाया निहळ्न्दद्दु निहळ्त्त लुऱ्ऱाम् 272

इनैयर् आम् मकळिर् ऍल्लाम्–ऐसी सभी स्त्रियाँ; इरैत्तनर्–शोर मचाते हुए; निरैत्तु मॊय्त्तार्–दल के दल पिल पड़ीं; मुऩैवरुम्–मुनिगण भी; नकरम् मुतु ऊर्–प्राचीन बड़े नगर के; मुतियरुम्–वृद्ध लोग; इळैञर् तामुम्–युवा भी; अनैयवन् मेनि कण्टार्–उनका रूप-सौंदर्य देखकर; अन्पित्तुक्कु–अनुराग की; ऍल्लै काणार्–सीमा नहीं देखते; मनत्ताल् निऩैविनर्–अपने मन में अनेक तरह की भावनाएँ करने लगे; वायाल् निकळ्न्ततु–मुख खोलकर जो उन्होंने कहा; निकळ्त्तल् उऱ्ऱाम्–हम कहने लगे। २७२

इस रीति से स्त्रियाँ आनन्द का शोर मचाती हुई दल के दल पिल पड़ीं। इनकी बात छोड़िये। निर्लिप्त मुनिगण, प्राचीन उस अयोध्या नगर के साधू, वृद्ध लोग और स्वयं युवक भी उनका दिव्य रूप-लावण्य देखकर असीम भक्ति से भर गये। तब उनके मन मे अनेक भाव उठे। हम उनको नही जान सकते। पर मुख खोलकर जिन भावों को उन्होने शब्दों द्वारा प्रकट किया उनको हम कहने की कोशिश करेंगे। २७२

❀ उय्न्ददिव् वुलह मॅन्बा रूळिहाण् गिऱ्पा यॅऩ्बार्
मैन्दनी कोडि यॅङ्गळ् वाळ्क्क(य्)नाळ् यावु मॅन्बार्
ऐन्दवित् तरिदिऱ् चॅय्द तवमुनक् काह वॅऩ्बार्
पैन्दुळाय्त् तॅरिय लाय्क्के नल्विनै पयक्क वॅऩ्बार् 273

इ उलकम् उय्न्ततु ऍन्पार्–यह लोक तर गया, कहते; ऊळि काण्किऱ्पाय्–युगांत देखेंगे (आप) कहते; मैन्त–प्रभु; ऍङ्कळ् वाळ्क्कै नाळ् यावुम्–हमारी आयु के दिन सभी; नी कोटि–आप लीजिए; ऍन्पार्–कहते; ऐन्तु अवित्तु–पाँच (इन्द्रियों का) दमन करके; अरितिऩ् चॅय्त तवम्–कष्ट के साथ किया तप (फल); उनक्कु आक–आपको मिले; ऍन्पार्–कहते; पचु तुळाय् तॅरियलार्क्के–हरी तुलसीमाला पहननेवाले आपको; नल् विनै पयक्क–मेरे सब सुकृतों का फल मिले; ऍन्पार्–कहते। २७३

लोग नानाविध बातें कहते थे। "यह संसार दुखविमुक्त हो तर गया; वीर! आप युगांत देखें। तात! हमारे आयु के पूरे दिन आप ले लीजिए।" ये उनमें कुछ विचार थे। कुछ लोगों ने कहा— पाँचों इन्द्रियों का दमन करके जो हमने तप किये हैं, उनका सारा फल आपको मिल जाय। कुछ लोगों ने कहा कि तुलसीमाला-धारी! हमारे सभी सुकृतों का पुण्य आपका हो जाय। २७३

❀ उयररु ळॊण्ग णॊक्कुन् दामरै निऱत्तै यॊक्कुम्
पुयल्पॊऴि मेह मॆन्न पुण्णियञ् जॆय्द वॆन्बार्
शॆयलरुन् दवङ्गळ् शॆय्दिच् चॆम्मलैत् तन्द शॆल्वत्
तयरदऱ् कॆन्न कैम्मा ऱुडयम्यान् दक्क दॆन्बार् 274

उयर् अरुळ्–उच्च करुणामयी; ऑण् कण् ऑक्कुम् तामरै–उज्ज्वल आँखों से तुल्य कमल; निऱत्तै ऑक्कुम्–रंग से तुल्य; पुयल् पॊऴि मेकम्–जल बरसाते मेघ; अॆन्न पुण्णियम् चॆय्त–क्या ही पुण्य कर गये हैं; अॆन्पार्–कहते; चॆयल् अरु तवङ्कळ् चॆय्तु–करने में कठिन तपस्याएँ करके; इ चॆम्मलै तन्त–इन महानुभाव को (राजा के रूप में) जिन्होंने दिया; चॆल्वम् तयरतऱ्कु–उन धनी दशरथ का; तक्कतु–योग्य; अॆन्न कैम्माऱु–कौन सा प्रत्युपकार; याम् उटैयम्–हमारे पास हैं; अॆन्पार्–कहते। २७४

कुछ लोग कहते कि कमल और काले जलवर्षी मेघ ने क्या ही पुण्य किया है कि कमल उनकी श्रेष्ठ, करुणामयी तेजपूर्ण आँखों की और मेघ उनके वर्ण की उपमा पा सके! कुछ लोग कहते कि दशरथ ने कितना दुस्तर तप करके इन नायक को हमारे राजा के रूप में हमें दिया है। उनका प्रत्युपकार करने के लिए हमारे पास क्या है ? । २७४

❀ वारण मऴैक्क वन्दु महरङ्गोळ् विडुत्त नेमि
नारण नॊक्कु मिन्द नम्बितन् करुणै यॆन्बार्
आरण मऱिद ऱॆऱ्ऱा वैयनै यणुहि नोक्किक्
कारण मिन्ऱि येयुङ् गण्गणीर् कलुळ निऱ्पार् 275

इन्त नम्पि तन् करुणै–इन नायक की करुणा; वारणम् अऴैक्क–गजराज के पुकारने पर; वन्तु–तुरत पधारकर; मकरम् कोळ् विटुत्त–मकरग्राह से बचानेवाले; नेमि नारणन् ऑक्कुम्–चक्रधारी भगवान नारायण (की करुणा) के समान है; अॆन्पार्–कहते; आरणम् अऱितल् तेऱ्ऱा–वेदों से भी अज्ञात; ऐयनै–प्रभु को; अणुकि नोक्कि–खूब तृप्ति भर देखकर; कारणम् इन्ऱियेयुम्–निर्हेतुक रूप से भी; कण्कळ् नीर् कलुळ–आँखों को आँसू बहाने देते हुए; निऱ्पार्–अवश खड़े रहते। २७५

इनकी करुणा उन भगवान नारायण की करुणा (सम) ही है जिन्होंने गजराज के पुकारने पर सत्वर आकर उसे ग्राह से छुड़ाया था। कुछ लोग वेदों को भी अज्ञात उनके अति समीप आकर देखते और निर्हेतुक रीति से गद्गद् होकर आँसू बहाते। २७५

नीलमा मुहिलन्̮ नान्̮ऱ् निऱैविनो डऱिवु निऱ्क
शीलमाऱ्क् कुण्डु कॅट्टेन्̮ ऱेवरि न̮डङ्गु वान̮ो
कालमाक् कणिक्कु नुण्मैक् कणक्कयुङ् गडन्̮दु निन्̮ऱ
मूलमाय् मुडिवि लाद मूर्त्तियिम् मुन्̮व न̮ॅन्̮बार् 276

नीलम् मा मुकिल् अन्̮नान् तन्-नीले बड़े मेघसम इनकी; निऱैविनोटु-गम्भीरता के साथ; अऱिवुम्-बुद्धि; निऱ्क-एक ओर रहे; चीलम् आऱ्क्कु उण्टु-इनका-सा शील (सदाचार) किसके पास है; इ मुन्̮पन-ये मुखिया; तेवरिन्̮ अटङ्कुवानो-देवों के अन्दर आयँगे; कालम् आक कणिक्कुम्-काल के माप की; नुण्मै कणक्कैयुम्-सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणना को भी; कटन्तु निन्̮ऱ-पार कर रहनेवाले; मूलम् आय्-मूलवस्तु होकर; मुटिवु इल्लात मूर्त्तिये-अनन्त मूर्ति ही; कॅट्टेन्̮-(अब तक बिना जाने) नष्ट हो गया; अॅन्̮पार्-कहते। २७६

बड़े, नीले मेघ के समान रंग वाले इनकी गम्भीरता और मेधा की बात छोड़ दीजिए। इनका-सा शील, सदाचार किसके पास है! क्या ये अग्रणी देवों की श्रेणी के अन्दर गिने जा सकते है? नहीं। काल के सूक्ष्मातिसूक्ष्म माप से भी परे रहनेवाले (कालातीत) मूलतत्व है! अनंत परब्रह्म है। इतने दिन तक मैने यह नही जाना। जन्म व्यर्थ कर दिया —ऐसा कुछ लोग कहते। २७६

❀ आऱ्हलि यहळ्न्̮दोर् गङ्गै यवनियिऱ् ऱन्̮दोर् मुन्̮दैप्
पोर्हॅळ्ळु देवर्क् काहि यशुररैप् पॉरुदु वॅन्̮ऱोर्
पेर्हॅळ्ळु शिऱप्पिन्̮ वन्̮द पॅरुम्बुहळ् निऱ्प दैयन्̮
तार्हॅळ्ळु तिरडो डन्̮द पुहळ्̮िनैत् तळ्̮ुवि यॅन्̮बार् 277

मुन्̮तै-पहले; आर् कलि अकळ्̮न्̮तोर्-सागर जिन्होंने खना वे सगरपुत्र; कङ्कै अवनियिल् तन्̮तोर्-गंगा जो भूमि पर लाये वे (भगीरथ); पॉर् कॅळ्̮ु तेवर्क्कु आकि-युद्ध-रत देवों के सहायक बनकर; पॉरुतु-घोर समर करके; अचुररै वॅन्̮ऱोर्-असुरों पर जिन्होंने विजय पाई, वे ककुत्स्थ मुचुकुंद आदि; पेर् कॅळ्̮ु चिऱप्पिन्̮ वन्̮त-इनकी गौरवपूर्ण श्रेष्ठता के कारण मिली; पॅरु पुकळ्̮-बड़ी कीर्ति; निऱ्पतु-स्थिर रहेगी; ऐयन्̮-प्रभु श्रीराम के; तार् कॅळ्̮ु-मालाशोभित; तिरळ् तोळ्-पुष्ट कंधों द्वारा; तन्̮त-अर्जित; पुकळ्̮ित्तै तळ्̮ुवि-कीर्ति के साथ मिलकर ही; अॅन्̮पार-कहते। २७७

पहले इनके कुल में पैदा होकर सगरपुत्रों ने सागर निर्मित करके, भगीरथ ने गंगाजी को अवनि में ला करके, राजा ककुत्स्थ, मुचुकुन्द जैसों ने युद्धग्रस्त देवों की सहायता के लिए जाकर असुरों पर विजय पा करके कीर्ति अर्जित की थी। वह सारी कीर्ति खड़ी रहेगी इनके माला से शोभित पुष्ट कन्धों द्वारा अर्जित कीर्ति पर ही! वीरों के वंश में वीर पैदा हो तभी कुल की वीरता की कीर्ति टिक सकेगी। २७७

शन्दमिवै ताविन्मणि यारमिवै यावुम्
शिन्दुरमु हङ्गिळर् तॅरिन्दमद वेळम्
पन्दिहळ् वयप्परि पशुम्बॉन्णि यावुम्
मैन्दवरि योर्हॉळ वळङ्गॅन्न निरैप्पार् 278

मैन्त–वीर कुमार; इवै चन्तम्–ये चन्दन के लेप; ता इल् मणि आरम्–निर्मल रत्नहार; इवै यावुम्–ये सब; चिन्तुरम् मुकम् किळर्–सिन्दूर के तिलकों के साथ शोभायमान रहनेवाले; तॅरिन्त–चुने हुए; मतम् वेळम् पन्तिकळ्–मत्तगज-पंक्तियाँ; वयम् परि–विजयशील अश्व; पचुमै पॊन् अणि–शुद्ध स्वर्ण के आभरण; यावुम्–इन सबको; वरियोर् कॊळ–अभावग्रस्त लोग ले ले उनको; वळङ्कु–देने की कृपा कीजिए; ॲन्न–यह कहकर; निरैप्पार्–कतार में ला रख देते। २७८

कुछ लोग कहते कि वीर कुमार! देखिए— ये चन्दन और सुगन्ध-पदार्थों के लेप हैं; ये निर्दोष रत्नहार हैं; ये चुने हुए मत्त हाथी हैं जिनके भाल पर सिंदूर के तिलक लगाये गये हैं। ये विजयी अश्व है। ये स्वर्णाभरण है। इन सबको आप लीजिये और अपने हाथों से अभावग्रस्त याचकों को दे दीजिये। ऐसा कहते हुए उनको लाकर सामने पंक्तियों में छोड़ देते। २७८

❀ मिन्बॊरुवु तेरिन्मिशै वीरन्वरु पॊळ्दिल्
तन्बॊरुविल् कन्ऱुतनि ताविवरल् कण्डाङ्
गन्बुरुहु शिन्दयॊडु मावुरुहु मापोल्
ॲन्बुरुह नॅञ्जुरुह यारुरुह हिल्लार् 279

वीरन्–वीर; मिन् पॊरुवु तेरिन् मिचै–विजली-सम रथ पर; वरु पोळ्तिल्–जब आ रहे थे, तब; तन् पॊरुविल् कन्ऱु–अपना अनुपम बछड़ा; तनि तावि वरल् कण्ट आङ्कु–अकेला चौकड़ी भरता आता (है, उसे) देख; आ–गाय; अन्पु उरुकु चिन्तैयॊटुम्–प्रेमार्द्र मन के साथ; उरुकुम् आऱु पोल्–द्रवीभूत होती जैसे; नॅञ्चु उरुक–मन के पिघलते; ॲन्पु उरुक–हड्डी के गलते; उरुककिल्लार्–न पिघलनेवाले; यार्–कौन। २७९

श्रीराम जब बिजली के समान चमकते हुए रथ पर आ रहे थे तब उनको देखकर दर्शकों की स्थिति उस गाय की-सी हो गयी जो अपने बछड़े को चौकड़ी भरते आते हुए देखती हो। उनका मन प्रेमार्द्र हो गया। हड्डी भी पिघल गयी। तब जो न पिघले वे कौन या कहाँ रहे? कोई वहाँ नही रहा जो पूर्णरूप से द्रवीभूत न हो गया!। २७९

शत्तिर निळऱ्ऱनिमिर् तानयॊडु नाना
अत्तिर निळऱ्ऱवरु ळोडवनि याळ्वार्
पुत्तिर रिन्निप्पॆरुदल् पुल्लिदॆन्न नल्लोर्
शित्तिर मॆन्नत्तनि तिहैत्तुरुहि निऱ्पार् 280

नल्लोर्–सज्जन; चत्तिरम् निऴर्र–छत्रों की छाया देते; निमिर् तानैयोटु–बड़ी सेना के साथ; नाना अत्तिरम् निऴर्र–विविध अस्त्रों के कांति बिखेरते; अरुळोटु–कृपा के साथ; अवनि आळ्वार्–भूमि का पालन करनेवाले; इनि–श्रीराम के वाद; पुत्तिरर् पॅरुतल्–पुत्र पैदा करना; पुल्लितु ॲन–लघुता है (व्यर्थ है); ॲन–यह कहते हुए; तनि–अलग-अलग; तिकैत्तु–चकित; उरुकि–पिघलकर; चित्तिरम् ॲन–चित्र के समान; निऱ्पार्–निष्क्रिय खड़े रहे। २८०

कई सज्जन कहते कि श्वेत छत्र और बड़ी सेना रखनेवाले उन राजा लोगों का, जो विविध अस्त्र चमकाते हुए कृपा के साथ भूमि का पालन करते है, अब पुत्र पैदा करना निरर्थक है (क्योंकि कोई भी पुत्र श्रीराम के समान गौरव बढ़ानेवाला नही होगा)। वे लोग अलग-अलग, श्रीराम के अतिशय सौन्दर्य से चकित, मुग्ध और द्रवणशील होकर चित्रसम खड़े रहते। २८०

❀ कार्मिन्नॊडु लायदॆन नूल्कजलु मार्वन्
तेर्मिशैनम् वायिल्कडि देहुदलॆय् यामल्
नेर्मिन्निमिर् कोडिमणि यालुनिदि यालुम्
तूर्मिन्नॆडु वीदियिनै यॆन्ऱुशॊरि वारुम् 281

कार् मिन्नॊटु उलायतु ॲन–मेघ विजली-सह सैर करता हो जैसे; नूल् कजलुम् मार्पन्–यज्ञोपवीत-शोभित वक्ष वाले श्रीराम; तेर्मिचै–रथ पर; नम् वायिल् कटितु एकुतल् चॅय्यामल्–हमारे द्वार को जल्दी पार कर न जाएँ, इस तरह; नेर्मिन्–रथ के सामने रहिए (रोकिये); निमिर् कोटि मणियालुम्–बहुत अधिक रत्नों से; नितियालुम्–स्वर्ण से; नॆटुवीतियिनै तूर्मिन्–लम्बी वीथी को पाट दीजिये; ॲन्ऱु–ऐसा कहते हुए; चॊरिवारुम्–उड़ेलते है। २८१

जैसे मेघ बिजली के साथ संचार करता हो उस तरह उपवीतधारी वक्ष वाले श्रीराम अपने रथ पर बैठकर हमारे द्वार के सामने से आगे जाने न पावें ! रथ के सामने जाकर खड़े हो जाइए। और अधिक संख्या में रत्न और स्वर्ण डालकर रास्ता दुर्गम बना दीजिये। ऐसा कहते हुए लोग वे वस्तुएँ लाकर मार्ग पर डाल रहे थे। ऐसे लोग कुछ थे। २८१

तायॆयिल् वळर्न्दिलन् वळर्त्तदु तवत्ताल्
केहयन् मडन्दैकिळर् जालमिव नाळ
ईहॆयि लुवन्दन ळियर्कयिदु वॆन्ऱाल्
तोहयवळ् पेरुवहै शॊल्लवरि दॆन्बार् 282

ताय् कैयिल् वळर्न्तिलन्–अपनी माता के पास पले नहीं; वळर्त्ततु–पालनेवाली; तवत्ताल्–पूर्वकृत तपस्या के फल से; केकयन् मटन्तै–केकयराज-तनया; किळर् जालम्–विभवपूर्ण इस भूमि को; इवन् आळ ईकैयिल्–इनके पास शासन करने के लिए देते समय; उवन्तनळ्–हर्षित हुई; इयर्कै इतु ॲन्ऱाल्–उनकी प्रकृति यह

है तो; तोकै अवळ्—मोर-सी छटा वाली उनका; पेर् उवकै—बड़ा आनन्द; चॊल्ल अरितु—वर्णनातीत है; ॲन्पार्—कहते । २८२

कुछ लोग कहते हैं कि ये श्रीराम माता कौसल्या के हाथ नहीं पले थे। कैकेयी ने उस भाग्य के लिए तपस्या की थी। उन्हींने इनको पाला था। इसलिए चक्रवर्ती श्रीराम को राज्य पालन के लिए दे देंगे —यह सुनकर उन्हें हर्ष हुआ। यही उनकी प्रकृति सच्ची है तो मयूरछटा उनके मन का बड़ा आनन्द वर्णन करना कठिन है। २८२

❀ पावमु मरुन्दुयरुम् वेर्पऱियु मॆन्बार्
पूवलय मिन्ऱुमुद लन्ऱुपॊदु वॆन्बार्
तेवर्पहै युळ्ळवुमिव् वळ्ळऱॆरु मॆन्बार्
एवल्शॆयु मन्नर्तवम् यावदुहॊ लॆन्बार् 283

पावमुम्—(इनके दर्शन से) पाप; अरु तुयरुम्—और कठिन क्लेश; वेर् परियुम्—निर्मूल हो जायँगे; ॲन्पार्—कहते; पू वलयम्—भूमण्डल; इन्ऱु मुतल्—आज से; पॊतु अन्ऱ—आम सम्पत्ति नहीं होगी; ॲन्पार्—कहते; इ वळ्ळल्—ये प्रभु; तेवर् पकै उळ्ळवुम् तॆरुम्—देवों के शत्रु जो है, उनका नाश करेंगे; ॲन्पार्—कहते; एवल् चॆयुम् मन्नर्—इनके आज्ञाकारी राजाओं का; तवम्—सुकृत (पुण्य); यावतु कॊल्—कैसा (बड़ा) है; ॲन्पार्—कहते । २८३

कुछ लोग कहते हैं कि इनके दर्शन से पाप और कठोर दुख निर्मूल हो जायँगे। अब भूमि इन्हीं की होकर रहेगी, कोई दूसरा उस पर अधिकार नही जता सकेगा। ये प्रभु देवों के सारे शत्रुओं का नाश कर देंगे। और कुछ लोग कहते कि इनके मातहत रहनेवाले राजाओं ने कैसी ही उत्कृष्ट तपस्या की है कि उन्हें इनके आज्ञाकारी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है! । २८३

❀ आण्डिनय रायिन्नय कूऱवडल् वीरन्
तूण्डुपुर विप्पॊरुविल् शुन्दर मणित्तेर्
माण्ड कॊडि माडनॆडु वीदिमऱै यप्पोय्प्
पूण्डपुहऴ् मन्ननुऱै कोयिलवै पुक्कान् 284

आण्टु—वहाँ; इनैयर् आय्—ऐसी स्थिति वाले बनकर; इन्नैय कूऱ—यह कहते थे, तब; अटल् वीरन्—विजयी वीर; तूण्टु पुरवि—त्वरितगामी अश्वों के; पॊरु इल्—उपमारहित; चुन्तरम्—सुन्दर; मणि तेर्—घण्टियाँ-बँधे रथ पर; माण्ट कॊटि माटम्—सम्मान के प्रदर्शक, पताकाओं से युक्त सौधों वाले; नॆटु वीति—राजमार्ग; मऱैय—आँखों से ओझल होने देते हुए; पोय्—जाकर; पूण्ट पुकऴ्—(आभरण के समान) पहनी हुई कीर्ति वाले; मन्नन् उऱै—चक्रवर्ती के रहने के; कोयिल्—मन्दिर के; अवै पुक्कान्—सभा-मण्डप में पहुँचे । २८४

मार्ग में लोग ऐसी स्थिति में पड़कर ऐसी बातें कर रहे थे।

विजयी वीर श्रीराम त्वरगामी अश्वों के जुते और घन्टियों से युक्त उन्नत रथ पर सम्मान-प्रदर्शक पताकाओं वाले बड़े सौधों के मार्ग शीघ्र तय करते हुए आगे निकल गये। राजमार्ग पीछे ओझल हो गया। वे यशोभूषित चक्रवर्ती दशरथ के महल के अन्दर सभामंडप में पहुँचे। २८४

आङ्गुवन् दडैन्द वण्ण लाशयिन् कवरि वीशप्
पूङ्गुऴन् महळिर् राडुम् पुदुक्कळि याट्ट नोक्कि
वीङ्गिरुङ् गादल् काट्टि विरियरि चुमन्द पीडत्
तोङ्गिय वुवहै योडु मरशन्वीऱ् ऱिरुप्पक् काणान् 285

आङ्कु वन्तु अटैन्त अण्णल्–वहाँ जो आ पहुँचे उन प्रभु ने; आचै इन् कवरि वीच–स्वर्ण-डण्ड के चामर डुले; पू कुऴल् मकळिर् आटुम्–पुष्पसज्जित कुंतल की नर्तकियाँ जो नाचती है उस; पुतु कळि आट्टम् नोक्कि–नवीन उल्लासदायी नाच देखते हुए; वीङ्किरु कातल् काट्टि–(श्रीराम के आगमन पर) बड़ा प्रेम दिखाकर; ओङ्किय उवकै योटुम्–बढ़ते हुए हर्ष के साथ; अरचन्–राजा को; विरि अरि चुमन्त पीटत्तु–विशाल सिंह (धृत) आसन पर; वीऱ्ऱिरुप्प–विराजमान; काणान्–नहीं देखा। २८५

वहाँ पहुँचकर उन्होने दशरथजी को नही देखा। वे होते तो स्वर्ण-डण्ड के चँवर डुलते होते। पुष्पालंकृत केश वाली नर्तकियों का नवीन और चित्ताकर्षक नाच होता रहता। वे श्रीराम के आगमन पर बड़े प्रेम और आनन्द का प्रदर्शन करते। वे नहीं थे और सिंहासन रिक्त था। श्रीराम ने सिंहासन पर राजा को विराजमान नहीं देखा। २८५

वेत्तवै मुनिव रोडुम् विरुप्पुऱक् कळिक्कु मॅय्म्मै
एत्तवै यिशैक्कुम् जॅम्बॊन् मण्डबत् तिनिदि नॅय्दान्
ओत्तवै युलहत् तॅङ्गु मुळ्ळवै युणर्न्दा रुळ्ळम्
पूत्तवै वडिवै यॊप्पान् शिऱ्ऱवै कोयिल् पुक्कान् 286

ओत्तु अवै–वेदसमूहों को; उलकत्तु ऍङ्कुम्–संसार भर में; उळ्ळवै–प्राप्त रहनेवाले; उणर्न्तार्–जाननेवालों के; उळ्ळम् पूत्तवै–मन में भावित; वटिवै–रूपों को; ऑप्पान्–धरनेवाले वे; वेन्तु अवै–राजमण्डली; मुनिवरोटुम्–मुनियों के साथ; विरुप्पु उऱ–इच्छा के साथ; कळिक्कुम्–(जहाँ) हुलसेंगे; मॅय्म्मै एत्तु–सच्ची कीर्ति के; अवै इचैक्कुम्–गान गाये जायेंगे; चॆम् पॊन् मण्टपत्तु–उस चोखे स्वर्ण से निर्मित मण्डप में; ॲय्तान्–न घुसकर; चिऱ्ऱवै कोयिल् पुक्कान्–छोटी माता के महल में गये। २८६

श्रीराम वेदसमूहों और संसार भर में प्रचार में रहनेवाले अन्य सभी शास्त्रों के ज्ञाता लोगों को, "जिन्ह की रही भावना जैसी", वैसे रूप में दर्शन देनेवाले थे। वे उस श्रेष्ठ स्वर्णमंडप में नही प्रविष्ट हुए, जहाँ उनके जाने पर यह आशा की जा सकती थी कि वहाँ एकत्रित राजदल मुनिवृंदों के साथ (मुकुट धारणोत्सव देखकर) प्रत्याशित आनंद का अनुभव करते

और स्वयं श्रीराम की यथार्थ महिमा गायी जाती। पर वे अपनी छोटी (सौतेली) माता कैकेयी के महल में प्रविष्ट हुए। २८६

पुक्कवऩ् ऱऩ्ऩै नोक्किप् पुरवलर् मुऩिव रॅल्लाम्
तक्कदे निऩैन्दाऩ् ऱादै तामरैच् चरणञ् जूडित्
तिक्किऩै निमिर्त्तत कोलच् चॅल्वऩे शॅम्बॊऩ् चोदि
मिक्कुयर् महुडञ् जूट्टच् चूडुदल् विऴुमि दॅऩ्ऱार् 287

पुक्कवऩ् तऩ्ऩै नोक्कि–(वहाँ) प्रविष्ट उनको देखकर; पुरवलर्–(मण्डप में रहे) राजा लोग; मुऩिवर्–मुनिगण; ॲल्लाम्–और अन्य सभी; तक्कते निऩैन्ताऩ्–उचित ही सोचा; तातै तामरै चरणम् चूटि–पिता के कमल-चरण (सिर पर) धारण करके; तिक्किऩै निमिर्त्तल कोल्–दिशाओं को सीधा करनेवाले (राज) दण्डधर; अ चॅल्वऩे–उन चक्रवर्ती के; चॅम् पॊऩ्–अच्छे स्वर्ण के; चोति मिक्कु–अधिक कांतिमय; उयर् मुकुटम्–उन्नत किरीट को; चूट्ट–पहनाने पर; चूटुतल्–पहन लेना; विऴुमितु–श्रेयस्कर है; ॲऩ्ऱार्–यह बोले। २८७

कैकेयी के महल में प्रवेश करनेवाले उनको देखकर सभामंडप में जो रहे उन राजाओं, मुनियों और अन्य लोगों ने यों सोचा। ठीक है। वे उचित कार्य ही कर रहे है। वे पहले पिता के चरण-कमलों पर नमस्कार करना चाहते हैं। बाद ही दशरथ द्वारा, जिनका राजदण्ड सभी दिशाओं में सीधापन (न्याय) स्थापित कर चुका है, अच्छे स्वर्ण के कांतिबहुल उन्नत किरीट का धारण किया जाना ही उचित और श्रेयस्कर है। २८७

आयऩ निहऴुम् वेलै यण्णलु मयर्न्दु तेऱात्
तूयव निरुन्द शूऴल् तुरुविऩऩ् वरुद नोक्कि
नायह नुरैयाऩ् वायाल् नाऩिदु पहर्वे ऩॅऩ्ऩात्
तायॅऩ निऩैवाऩ् मुऩ्ऩे कूऱ्ऱॅऩत् तमियळ् वऩ्दाळ् 288

आयऩ निकऴुम् वेलै–(वहाँ मण्डप में) ऐसा होता रहा, तब; अण्णलुम्–पुरुष-श्रेष्ठ; अयर्न्तु तेऱा–बेहोशी से जो सँभले नहीं थे; तूयवऩ्–उन पवित्र दशरथ के; इरुन्त चूऴल्–रहने के स्थान को; तुरुविऩऩ् वरुतल् नोक्कि–ढूँढ़ते हुए आते हैं, यह देखकर; नायकऩ् वायाल् इतु उरैयाऩ्–नायक अपने मुँह से यह नहीं कहेंगे; नाऩ् पकर्वेऩ्–मै कहूँगी; ॲऩ्ऩा–यह विचार करके; ताय् ॲऩ निऩैवाऩ् मुऩ्ऩे–माता समझनेवाले (श्रीराम) के सामने; कूऱ्ऱु ॲऩ–मृत्यु के समान; तमियळ् वन्ताळ्–एकाकिनी आईं। २८८

वहाँ लोग ये बातें कर रहे थे। प्रभु राम को कैकेयी ने देख लिया और जान लिया कि वे दशरथ को, जो अभी होश में नहीं आये थे, ढूँढ़ते हुए आ रहे हैं। वे सोचने लगीं— राजा अपने मुख से यह बात नहीं कहेंगे। उन्होंने निश्चय किया कि मैं स्वयं श्रीराम से बात कह दूँगी। यह संकल्प लेकर वे, उन राम के सामने जो इनको अपनी माता ही समझ रहे है, यम के समान एकाकिनी बनकर आईं। २८८

❀ वन्दव डन्नैच् चॆन्नि मण्णुऱ वणङ्गि वाशच्
चिन्दुरप् पवळच् चॆव्वाय् शॆङ्गयिऱ् पुदैत्तु मऱ्ऱैच्
चुन्दरत् तडक्कै तानै मडक्कुऱत् तुवण्डु निन्ऱान्
अन्दिवत् दडैन्द तायैक् कण्डवान् कन्ऱि नन्नान् 289

अन्ति वन्तु अटैन्त–सायंकाल आकर प्राप्त हुई; तायै कण्ट–माता को देखकर; आन् कन्रु अन्नान्–गाय के वछड़े-से वे; वन्तवळ् तन्नै–आगत कैकेयी को; चॆन्नि मण् उऱ–सिर भूमि पर लगाये; वणङ्कि–नमस्कार करके; वाचम्–सुवासपूर्ण; चिन्तुरम् पवळम्–सिन्दूर के समान; चॆवाय्–लाल मुंह को; चॆ कैयिन् पुतैत्तु–ललाई लिए (ललाम) हाथ से ढँककर; मऱ्ऱै चुन्तरम् तट कै–अन्य सुन्दर विशाल हाथ से; तानै मटक्कुऱ–वस्त्र को मोड़ लेकर; तुवण्टु निन्ऱान्–विनयशील मुद्रा में खड़े हुए। २८६

जब कैकेयी सामने आई तब श्रीराम ने भूमि पर सिर लगाकर दण्डवत की। शाम के समय माता गाय को देखकर बछड़े की जैसी स्थिति होती है वैसे मातृप्रेम से वे भर गये। उन्होंने विनयसूचक शिष्टाचार की मुद्राये धारण की— अपने एक ललाई लिये ललाम हाथ को अपने मुख के सामने रखा। दूसरे हाथ से वस्त्र को मोड़कर पकड़ा। फिर वे झुके हुए खड़े रहे। २८९

❀ निन्ऱवन् ऱन्नै नोक्कि यिरुम्बिना लियन्ऱ नॆञ्जिऱ्
कॊन्ऱुऴल् कूऱ्ऱ मॆन्नुम् बॆयरिन्ऱिक् कॊडुमै पूण्डाळ्
इन्ऱॆनक् कुणर्त्त लाव देयदे यॆन्नि नाहुम्
ऒन्ऱुनक् कुन्दै मैन्द वुरैत्तदो रुरैयुण् डॆन्ऱाळ् 290

इरुम्पिताल् इयन्ऱ नॆञ्चिन्–लौहनिर्मित मन के साथ; कॊन्ऱु उऴल्–जीवों को मारते फिरनेवाली; कूऱ्ऱम् ऎनुम् पॆयर् इन्ऱि–मृत्यु का नाम धरे विना ही; कॊटुमै पूण्टाळ्–(उसकी) क्रूरता रखनेवाली; निन्ऱवन् तन्नै नोक्कि–स्थित उनको देखकर; मैन्त–पुत्र; ऒन्ऱु उनक्कु–योग्य तुम्हें; उन्तै उरैत्तवु–तुम्हारे बाप का कहा हुआ; ओर् उरै–एक कथन; उण्टु–है; इन्ऱु–अब; उनक्कु उणर्त्तल् आवतु–तुमसे वह बताने का काम; एयते ऎन्निन्–(मेरे) योग्य (समझते) हो तो; आकुम्–(बताने का काम) मुझसे होगा; ऎन्ऱाळ्–बोलीं। २६०

ऐसी विनयमुद्रा मे स्थित उनको कैकेयी ने देखा। कैकेयी में यम की-सी, जो लौहदिल के साथ जीवों को मारकर फिर रहा है, क्रूरता थी। हाँ, यम का नाम धारण किये विना ही उन्होंने यम की क्रूरता अपना ली थी। उन्होंने कहा— वत्स! आज्ञाकारी योग्य तुम्हे जो तुम्हारे पिता बताना चाहते थे वह एक बात है। अगर तुम मेरा कहना उचित मानो तो मुझसे उसका कथन हो सकता है। (मैं कहूँगी।)। २९०

❀ ॲन्दये येव नीरे युरैशॅय वियैन्द दुण्डेल्
उयृन्दनॅ ऩडियेॅ नॅऩ्निऱ् पिऱन्दव रुळरो वाळि
वन्दर्दॅन् ऱवत्ति ऩाय वरुपयऩ् मऱ्ऱॊन् ऱुण्डो
तन्दयुम् दायु नीरे तलैनिऩ्ऱेन् पणिमि नॅऩ्ऱान् 291

ॲन्तैये एव–मेरे पितृदेव की आज्ञा; नीरे उरै चॅय–आप ही सुनाये; इयैन्ततु उण्टेल्–इसका संयोग हुआ तो; अटियेन् उय्न्तनॅन्–मै तर गया; पिऱन्तवर्–सफलजन्मा; ॲन्निन् उळरो–मेरे समान कोई होंगे (नहीं); ॲन् तवत्तिन् आय पयन् वन्ततु–मेरे तप का फल अब मिलने को हुआ है; वरुपयन् मऱ्ऱॊन्ऱु उण्टो–इससे बढ़कर मिलनेवाला (उत्कृष्ट) फल हो सकता है क्या; तन्तैयुम् तायुम् नीरे–पिता और माता आप ही हैं; तलै निन्ऱेन्–शिरोधार्य करूँगा; पणिमिन्–आज्ञा कीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। २६१

श्रीराम ने उत्तर में बड़ी विनय के साथ कहा कि मेरे पितृदेव आज्ञा दें और वह आज्ञा आप मुझे सुनावें —ऐसा एक संयोग हो गया तो मैं तर गया। मुझसे बढ़कर सफलजन्मा कौन हो सकता है? मेरे पूर्वकृत तपों का यह बहुत ही शुभ फल अब मिल गया। इससे बढ़कर कौन सा सुफल मिलनेवाला है? अब आप ही पिता हैं, माता भी। आपकी आज्ञा को शिरोधार्य मानकर उसके अनुसार चलूँगा। अब आप आज्ञा सुनाइये। २९१

❀ आळिशू ऴुलह मॅल्लाम् बरदऩे याळ नीपोय्त्
ताळिरुञ् जडैह डाङ्गित् ताङ्गरुन् दवमेऱ् कॊण्डु
पूळिवॅङ् गाऩ नण्णिप् पुण्णियत् तुऱैह ळाडि
एळिरण् डाण्डिन् वावॅन् ऱियम्बिऩ ऩरश नॅऩ्ऱाळ् 292

आळि चूऴ् उलकम् ॲल्लाम्–समुद्रवलयित भूमि सब; परतने आळ–भरत के ही राज करते; नी पोय्–तुम जाकर; ताऴ् इरु चटैकळ् ताङ्कि–लम्बी, बड़ी जटाएँ धारण करके; ताङ्क अरु–दुर्वह; तवम्–तपस्या; मेऱ् कॊण्टु–व्रत लेकर; पूळि वॅम् कानम् नण्णि–धूलि-भरा, तप्त जंगल जाकर; पुण्णियम् तुऱैकळ् आटि–पुण्य-सलिलों में स्नान करके; एऴ् इरण्टु आण्टिन् वा–दो के सात (चौदह) सालों में आ जाओ; ॲन्ऱु–ऐसा; अरचन् इयम्पितन्–राजा ने कहा; ॲन्ऱाळ्–कहा। २६२

कैकेयी ने कहा— सागर की घिरी इस सारी वसुन्धरा पर भरत का ही अधिकार होगा। तुम लम्बी, बड़ी जटा बना लो, दुर्वह तप का व्रत लो, धूलि भरे जंगल जाओ, पुण्यसलिलों में स्नान किया करो, और चौदह साल में लौट आओ। यही राजा ने कहा है। २९२

❀ इप्पॊऴु दॅम्म ऩोरा लियम्बुव दॅळिदो यारुम्
शॅप्परुङ् गुणत्ति रामन् तिरुमुहच् चॅव्वि नोक्किन्

ऑप्पदे मुऩ्बु पिऩ्बव् वाशह मुणरक् केट्ट
अप्पॊऴु दलर्न्द शॆन्दा मरैयिनै वॆन्ऱ दम्मा 293

यारुम्–कोई भी (भाषा पर अधिकार रखनेवाले); चॆप्प अरुम्–वर्णन न कर सके; कुणत्तु इरामऩ्–ऐसे गुण वाले श्रीराम के; तिरु मुकम् चॆव्वि नोक्किऩ्–श्रीमुख की शोभा देखने पर; मुऩ्पु–(कैकेयी-कथन से) पूर्व; पिऩ्पुम्–बाद भी; ऑप्पते–समान था (कमल); अ वाचकम्–वह वचन; उणर–समझते हुए; केट्ट अप्पॊऴुतु–जब सुना तब; अलर्न्त चॆन्तामरैयिनै–विकसित लाल कमल को; वॆऩ्ऱतु–जीत गया (शोभा में बढ़ गया)। २९३

श्रीराम पर इसका प्रभाव कैसे पड़ा ? यह सुनकर श्रीराम का मुखमंडल चमक उठा। श्रीराम किसी से भी अवर्णनीय श्रेष्ठ गुण वाले थे। उनके मुख की दिव्य शोभा देखिए। कैकेयी के वचन को सुनने के पहले और सुनकर जब जाने लगे उसके बाद भी उनके मुख की लाल कमल समता कर सकता था। पर जब उन्होंने कैकेयी का वचन खूब ध्यान देकर सुना और समझा तब उनका मुख सद्यविकसित कमल पर जीत पा गया। वह आज्ञा सुनकर श्रीराम अत्यन्त आनन्दपूरित हो गये। २९३

तॆरुळुडै मनत्तु मऩ्ऩ ऩेवलिऩ् ऱिऱम्ब वञ्जि
इरुळुडै युलहन् दाङ्गु मिऩ्ऩलुक् किशैन्दु निऩ्ऱाऩ्
उरुळुडैच् चहडम् बूट्टि युडयव नुय्त्त कारे
ऱुरुळुडै यॊरुव नीक्क वप्पिणि यविऴ्न्द वॊत्ताऩ् 294

तॆरुळ् उटै(य) मनत्तु–संशय-विमुक्त (विशुद्ध) मन वाले; मऩ्ऩऩ् एवलिऩ्–चक्रवर्ती की आज्ञा को; तिऱम्प अञ्चि–उल्लंघन करने से डरकर; इरुळ् उटैय–अज्ञानांधकार युक्त; उलकम् ताङ्कुम् इऩ्ऩलुक्कु–लोकभरण के संकट सहने के लिए; इचैन्तु निऩ्ऱाऩ्–सम्मत रहे; उरुळ् उटैय–पहियेदार; चकटम् पूट्टि–छकड़े से जोतकर; उटैयवऩ् उय्त्त–स्वामी का चलाया गया; कार् एऱु–काला बैल; अरुळ् उटै(य) ऑरुवऩ्–करुणामय किसी के द्वारा; अ पिणि नीक्क–वह बन्धन खोल देने पर; अविऴ्न्तत्तु ऑत्ताऩ्–जो मुक्त हो गया उस बैल के समान हो गये। २९४

वे कितने उल्लसित हुए ? पहले वे स्वच्छ मन वाले चक्रवर्ती की आज्ञा का उल्लंघन करने से डरे। इसीलिए वे अज्ञानांधकार-मग्न भूमि का भार वहन करने का दुख उठाने के लिए सम्मत हो गये थे। अब वे उस काले बैल के समान अनुभव करने लगे जिसको उसके स्वामी ने एक बड़े छकड़े में जोतकर उस छकड़े पर बड़ा भार लाद दिया था और जिसको किसी दयावान मनुष्य ने बधन काटकर छकड़े से मुक्त कर दिया। २९४

मऩ्ऩवऩ् पणियऩ् ऱाहि नुम्बणि मऱुप्प नॊवॆऩ्
पिऩ्ऩवऩ् पॆऱ्ऱ शॆल्व मडियनेऩ् पॆऱ्ऱ दऩ्ऱो

अँन्निदि नुरुदि यप्पा लिप्पणि तलैमेर् कॉण्डेन्
मिन्नॉळिर् कान मिन्ऱे पोहिन्ऱेन् विडैयुङ् गॉण्डेन् 295

मन्नवन् पणि अन्ऱु आकिल्–राजा का काम (हुक्म) नहीं हो तो (भी); नुम् पणि–आपकी आज्ञा; मऱुप्पनो–मैं इनकार करूँगा क्या; अँन् पिन्नवन् पॅऱ्ऱ चॅल्वम्–मेरे बाद के आये (कनिष्ठ) का प्राप्त विभव; अटियनेन् पॅऱ्ऱतन्ऱो–मुझ दास का प्राप्त नहीं है क्या; अँन् इनि उऱुति अप्पाल्–कौन सा पुरुषार्थ है, इससे बढ़कर; इ पणि तलै मेल् कॉण्टेन्–यह आज्ञा सिर पर धर ली; मिन् ऑळिर् कानम्–बिजली के समान जहाँ धूप रहेगी, उस जंगल को; इन्ऱे पोकिन्ऱेन्–आज ही जा रहा हूँ; विटैयुम् कॉण्टेन्–अब आपसे अनुमति लेता हूँ (अनुमति दीजिए)। २९५

(श्रीराम ने कहा।) चक्रवर्ती की आज्ञा नही हो, और यह आपकी ही आज्ञा हो तो मैं क्या उससे इनकार करूँगा? मेरे छोटे भाई का प्राप्त विभव क्या मेरा नही है? इस सौभाग्य से बढ़कर कौन सा पुरुषार्थ मुझे मिलेगा? अभी यह आज्ञा मैने सिर पर धारण कर ली! उस जंगल मे जाने को अभी निकला जिसमें बिजली के समान धूप पड़ती रहती है। आपसे विदा लेता हूँ। २९५

4. नहर् नीङ्गु पडलम् (नगर-निष्क्रमण पटल)

❀ अँन्ऱुकॉण् डिनैय कूऱि यडितॉळु दिऱैञ्जि मीट्टुम्
तन्ऱुणैत् तादै पाद मत्तिशै नोक्कित् ताळ्न्दु
पॉन्ऱिणि पोदि नाळुम् बूमियुम् पुलम्बि नैयक्
कुन्ऱिनु मुयर्न्द तोळान् कोशलै कोयिल् पुक्कान् 296

अँन्ऱु कॉण्टु इनैय कूऱि–यह और ऐसा कहकर; मीट्टुम्–फिर; अटि तॉळुतु–चरणो पर पड़कर; इऱैञ्चि–वन्दना करके; तन् तुणै तातै पातम्–स्वोपम पिता के चरणों को; अ तिचै नोक्कि ताळ्न्तु–उस दिशा की ओर झुककर; कुन्ऱिनुम् उयर्न्त तोळान्–पर्वत से भी अधिक उन्नत कंधे वाले; पॉन् तिणि पोतिनाळुम्–स्वर्णकमलवासिनी (श्रीलक्ष्मीदेवी) को; पूमियुम्–व भूदेवी को; पुलम्पि नैय–प्रलाप करते हुए दुखी रहने देकर; कोचलै कोयिल्–कौसल्या के मन्दिर (महल) में; पुक्कान्–पहुँचे। २९६

पर्वत से भी अधिक उन्नत कन्धों वाले श्रीराम ने यह इस रीति से कहकर कैकेयी के चरण फिर एक बार छुए। पिता को नमस्कार उस दिशा में मुख करके सिर झुकाकर मानसिक रूप से किया। फिर वे कौसल्यादेवी के महल में आये। इनका कार्यक्रम देखकर स्वयं स्वर्णकमलवासिनी लक्ष्मीदेवी और भूमिदेवी भी दुखी होकर प्रलाप करने लगीं। २९६

❀ कुळैक्किन्ऱ कवरि यिन्ऱिक् कॉऱ्ऱवण् कुडयु मिन्ऱि
इळैक्किन्ऱ विदिमुन् शॅल्लत् तरुमम्बिन् ऱिरङ्गि येह

मळैक्कुन्ऱ मनैयात् मौलि कवित्तनन् वरुमॆन् ऱॆन्ऱु
तळैक्किन्ऱ वुळ्ळत् तन्नाण् मुन्नॊरु तमियन् ऱॆन्ऱान् 297

मळै कुन्ऱम् अनैयान्–मेघाच्छन्न पर्वत-सम (श्रीराम); मौलि कवित्तनन्–मुकुट पहनकर; वरुम्–आयेंगे; ऍन्ऱु ऍन्ऱु–ऐसा सोच-सोचकर; तळैक्किन्ऱ उळ्ळत्तु–लहलहानेवाले चित्त की; अन्नाळ् मुन्–उनके सामने; कुळैक्किन्ऱ कवरि इन्ऱि–डुलनेवाले चामर के बिना; कॊऱ्ऱम् वॆण् कुटैयुम् इन्ऱि–विजयी श्वेतछत्र के बिना; इळैक्किन्ऱ विति–क्रियाशील विधि के; मुन् चॆल्ल–(उनके) आगे जाते; तरुमम् इरङ्कि–धर्म के दुख के साथ; पिन् एक–उनका पीछा करते; ऑरु तमियन् चॆन्ऱान्–एकाकी गये। २९७

उधर कौसल्यादेवी इनकी प्रतीक्षा में थीं। पर वे यह सोचते हुए आनन्दानुभव कर रही थी कि मेघाच्छादित पर्वत-सम श्रीराम किरीटधारी होकर राजा के ठाट के साथ आयँगे। पर ये तो गये, अकेले; चामर नहीं डुल रहे थे; विजयी छत्र भी नही था। साथ कौन थे? क्रियाशील विधि आगे जा रही थी और धर्म रोते हुए पीछे आ रहा था! । २९७

❀ पुनैन्दिलन् मौलि कुञ्जि मञ्जनप् पुनिद नीराल्
ननैन्दिल नॆन्गॊ लॆन्नु मैयत्ता णळिन पादम्
वनैन्दपॊऱ् कळऱ्काल् वीरन् वणङ्गलुङ् गुळैन्दु वाळ्त्ति
निनैन्ददॆन् निडैयू ऱुण्डो नॆडुमुडि पुनैदऱ् कॆन्ऱाळ् 298

मौलि पुनैन्तिलन्–मुकुट पहना नहीं है; मञ्चनम् पुनितम् नीराल्–अभिषेक-योग्य पवित्र जल से; कुञ्चि ननैन्तिलन्–केश भीगा नहीं है; ऍन् कॊल्–क्या कारण है; ऍन्नुम् ऐयत्ताळ्–यह संशयवाली; नळिनम् पातम्–कमलचरणों में; वनैन्त पॊन् कळल् काल् वीरन्–पहनी हुई पायल वाले चरणों के वीर राघव के; वणङ्कलुम्–नमस्कार करते ही; कुळैन्तु वाळ्त्ति–गद्‌गद होकर उसे आशीर्वाद देकर; निनैन्ततु ऍन्–सोचा क्या; नॆटु मुटि पुनैतऱ्कु–उन्नत किरीट पहनने में; इटैयूऱु उण्टो–कोई बाधा है; ऍन्ऱाळ्–यह प्रश्न किया। २९८

कौसल्या के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ। सिर पर किरीट नहीं था। और उनका केश अभिषेकजल से भीगा भी नही था। क्या कारण होगा? तब उनके कमलचरणों पर स्वर्ण-पायलधारी श्रीराम ने झुककर नमस्कार किया। वात्सल्य से गद्‌गद होकर कौसल्या ने पूछा कि अब तुमने इधर आने को सोचा क्यों है? दीर्घ काल से रहता आनेवाला (या उन्नत) राजकिरीट पहनने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या? । २९८

❀ मङ्गै यम्मॊळि कूऱलु मानवन्, सॆङ्गै कूप्पिनिन् कादऱ् ऱिरुमहन्
वङ्ग मिल्गुणत् तॆम्बि बरदने, तुङ्ग मामुडि शूडुहिन् ऱानॆन्ऱान् 299

मङ्कै–देवी के; अ मॊळि कूऱलुम्–वह वचन कहते ही; मानवन्–मनुकुल के, श्रेष्ठ श्रीराम; चॆम्कै कूप्पि–लाल हाथ जोड़कर; निन् कातल् तिरुमकन्–आपका

प्यारा पुत्र; पङ्कम् इल् कुणत्तु–कमीहीन गुणों वाले; ॲम्पि–मेरा छोटा भाई; परतन्–भरत ही; तुङ्कम् मा मुटि चूटुकिन्ऱान्–पवित्र, बड़े किरीट को धारण करेगा; ॲन्ऱान्–कहा। २६६

जब देवी ने यह बात कही तब मानव श्रीराम ने अपने सुन्दर हाथ जोड़कर उत्तर दिया कि आपका प्यारा पुत्र, अभंगी गुण वाला मेरा छोटा भाई भरत पवित्र श्रेष्ठ और बड़े किरीट को धारण करनेवाला है। (मानव— मान्य या मनुकुलोत्पन्न)। २९९

❀ मुऱैमै यन्ऱॅन्ब दॉन्ऱुण्डु मुम्मयिन्
निऱैहु णत्तव निन्निनु नल्लनोर्
कुऱैवि लन्नॅन्नक् कूऱिन नाल्वर्क्कुम्
मऱुवि लन्बिनिल् वेऱुमै माऱ्ऱिनाळ् 300

नाल्वर्क्कुम् मऱु इल् अन्पिनिल्–चारों पुत्रों पर के निष्कलंक प्रेम में; वेऱुमै माऱ्ऱिनाळ्–भेद-विचार जिन्होंने बदल दिया था, उन कौसल्या ने; मुऱैमै अन्ऱु–यह क्रमोचित नहीं; ॲन्पतु ऑन्ऱु–ऐसी एक बात (दोष); उण्टु–इसमें है; निन्निनुम्–तुमसे अधिक; मुम्मैयिन् निऱै कुणत्तवन्–तिगुना श्रेष्ठ गुण वाला है (भरत); नल्लन्–सब लोगों से अच्छा माना जाता है; ओर् कुऱैवु इलन्–कोई कमी नहीं, उसमें; ॲन–ऐसा; कूऱिनळ्–कहा। ३००

यह सुनकर कौसल्या उद्विग्न नहीं हुई। चारों पुत्रों के प्रति होने वाले उनके प्रेम में जो स्वभावतया भेद हो सकता था उसको उन्होंने अपने विवेक से दूर कर दिया था और वे चारों पर समान प्रेम रखती थीं। उन्होंने शान्ति के साथ कहा कि इसमें एक ही दोष है। यह कुल का क्रम नही है कि ज्येष्ठ के रहते कनिष्ठ को राजा बनाया जाय। नहीं तो भरत तुमसे गुण में तिगुना श्रेष्ठ है! उसमें कोई कमी नही है। वह मुकुट के योग्य ही है। ३००

❀ ॲन्ऱु पिन्नरु मन्नव नेविय, दन्ऱॅ नामै महन्ने युनक्करन्
नन्ऱु नुम्बिक्कु नानिल नीकॊडुत्, तॊन्ऱि वाऴ्दि यूऴि पलवॅन्ऱाळ् 301

ॲन्ऱु–यह कहकर; पिन्नरुम्–और भी; मकन्ने–पुत्र; मन्नवन् एवियतु–राजा का आज्ञापित; अन्ऱु ॲनामै–"नहीं-नहीं" कहना; उनक्कु अऱन्–तुम्हारा धर्म है; नुम्पिक्कु–तुम्हारे अनुज को; नाल् निलम्–इस भूमि को; नी नन्ऱु कॊटुत्तु–तुम प्रेम के साथ देकर; ऑन्ऱि–उसके साथ मेल करके; ऊऴि पल वाऴ्ति–अनेक युग जिओ; ॲन्ऱाळ्–कहा। ३०१

कौसल्यादेवी ने यह कहकर आगे कहा कि वत्स! राजा की आज्ञा से इनकार नही करना ही तुम्हारा धर्म है। इसलिए तुम यह भूमि अपने भाई भरत को उत्साह के साथ दे दो और उसके साथ मेल से अनेक युग जिओ। ३०१

❀ तायु रैत्तशोऱ् केट्टुत् तळैक्किन्ऱ्, तूय शिन्दयत् तोमिल् कुणत्तिनान्
नाय हन्नैनै नन्नॅऱि युय्प्पदऱ्, केय दुण्डॉर् पणियॅन् ऱियम्बिन्नान् 302

ताय् उरैत्त चॉल् केट्टु–माता का कहा वचन सुनकर; तळैक्किन्ऱ–आनन्द-वर्धित; तूय चिन्तै–पवित्र मन और; अ तोम् इल् कुणत्तितान्–निष्कलंक गुण वाले श्रीराम; ॲनै नल् नॅऱि उय्प्पतऱ्कु–मुझे सद्गति में पहुँचाने के निमित्त; नायकन् एयतु–राजा का आज्ञापित; ओर् पणि उण्टु–एक काम है; ॲन्ऱु इयम्पितान्–ऐसा कहा। ३०२

माता का यह कथन सुनकर श्रीराम का मन उल्लास से भर गया। पवित्रमन और निर्दोषगुण श्रीराम ने माता को दूसरी बात सुनाई। माताजी ! मुझे श्रेष्ठ गति में पहुँचाने के विचार से हमारे नायक ने मुझे एक आज्ञा दी है। ३०२

❀ ईण्डु रैत्त पणियॅन्नै यॅन्ऱवट्, काण्डॉ रेऴिनॊ डेऴहन् कानिडै
माण्ड मादवत् तोरुडन् वैहिप्पिन्, मीण्डु नीवर वेण्डुमॅन् ऱान्ऱान् 303

ईण्टु उरैत्त पणि ॲन्नै–(राजा का) यहाँ पर आज्ञापित कार्य क्या है; ॲन्ऱ वट्कु–यह पूछनेवाली (माता) से; ओर् एऴिनोटु एऴु आण्टु–एक सात के साथ सात (चौदह) साल; अकन् कान् इटै–विस्तृत जंगल में; माण्ट–महान; मातवत्तोरुटन्–बड़े तपस्वियों के साथ; नी वैकि–तुम रहो और; पिन् मीण्टु वर वेण्टुम्–फिर लौट आना चाहिए; ॲन्ऱान्–(राजा ने) कहा; ॲन्ऱान्–कहा। ३०३

कौसल्या ने अशंकमन से पूछा कि यहाँ उन्होंने तुम्हें क्या कार्य सौंपा है ? श्रीराम ने उन्हें उत्तर दिया कि सात और सात साल (चौदह वर्ष) वन में जाकर महिमायुक्त उत्तम तपस्वियों के साथ समय विताऊँ और बाद लौट आऊँ —यह पिताजी की आज्ञा है। ३०३

❀ आङ्गव् वाशह मॅन्नु मनल्कुऴै
तूङ्गु तन्शॅवि यिऱ्ऱॊड रामुनम्
एङ्गि ताळिळैत् ताडिहैत् ताण्मनम्
वीङ्गि ताळ् विम्मि नाळ्विऴुन् दाळरो 304

आङ्कु–तब; अ वाचकम् ॲन्नुम् अनल्–उस वचन रूपी आग के; कुऴै तूङ्कु–कुण्डल-शोभित; तन् चॅवियिल् तॊटरा मुन्नम्–अपने कानों में पड़ने के पूर्व ही; एङ्कित्ताळ्–दुखी हुईं; इळैत्तताळ्–कृश हुईं; मनम् तिकैत्तताळ्–भ्रम-चित्त हुईं; विम्मिनाळ्–सिसकने लगीं; वीङ्कित्ताळ्–(रोने से) सूजा मुख वाली हो गईं; विऴुन्ताळ्–नीचे गिर गईं। ३०४

वह कथन आग के समान कौसल्याजी के कुंडलशोभित कान में घुसा तो उनको अपार दुख हुआ। उनका मन भ्रमित हो गया। उनका शरीर कृश हो गया। सिसकने लगीं। रोते-रोते मुख सूज गया। वे अचेत होकर गिर पड़ीं। ३०४

* वञ्ज मोमह तेयुनै मानिलम्, तञ्ज माहनी ताङ्गॅन्ऱ् वाशहम्
नञ्ज मोविनि नानुयिर् वाळ्वॅन्नो, अञ्जु मञ्जुमॅन् नारुयि रञ्जुमाल् 305

मक्ते–सुत; उन्नै–तुमसे; मा निलम्–इस बड़ी भूमि को; तञ्चम् आक–शरण्य (रक्षक) रहकर; नी ताङ्कु–तुम भरण करो; ॲन्ऱ् वाचकम्–यह (राजा का) वचन; वञ्चमो–वंचना है; नञ्चमो–(या मुझे मारने आया) विष है; इनि नान् उयिर् वाळ्वॅन्नो–अब मैं क्या जिऊँगी; ॲन् अरु उयिर्–मेरे दुर्लभ प्राण; अञ्चुम् अञ्चुम्–डरते हैं, डरते। ३०५

(सम्हलकर कौसल्या ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी!) वत्स! इस विशाल भूमि का रक्षक रहकर उसका भरण करो —यह जो राजा का कहना था वह क्या वंचना थी? या मुझे मारने के लिए आया विष था? अब मैं जी सकूँगी क्या? मेरे प्राण काँपते हैं, हाँ काँपते है। ३०५

* कैयैक् कैयि नॅरिक्कुन्दन् कादलन्, वैहु मालिलै यन्न वयिऱ्ऱिनैप्
पॅय्व ळैत्तळि राऱ्पिशै युम्बुहै, वॅय्दु यिर्क्कुम् विळुन्दु पुळुङ्गुमाल् 306

कैयै कैयिन् नॅरिक्कुम्–एक हाथ को दूसरे हाथ से मसलतीं; तन् कातलन् वैकुम्–अपना प्यारा पुत्र जिसमें रहा उस; आल् इलै अन्न–वटपत्र-सम; वयिऱ्ऱै–पेट को; वळैपॅय् तळिराल्–वलयधारी पल्लव (-मृदुल कर) से; पिचैयुम्–दबातीं; पुकै वॅय्तु उयिर्क्कुम्–अग्नि-धूम के समान गरम साँस छोड़तीं; विळुन्तु–नीचे गिरकर; पुळुङ्कुम्–पीड़ा का अनुभव करतीं। ३०६

देवी एक हाथ से दूसरा हाथ पकड़कर मसलतीं। कभी अपने वटपत्र-सम पेट को, जिसमें उनका प्यारा पुत्र वास करता था, वलयधारी पल्लवमृदुल हाथ से मसलतीं। कभी आग से निकलनेवाले धुएँ के समान गरम साँस निकालतीं। कभी नीचे गिरकर मन मसोसतीं। ३०६

* नन्ऱु मन्नन् करुणै यॅन्नानहुम्, निन्ऱ मैन्दनै नोक्कि नॅडुञ्जुरत्
तॅन्ऱु पोव दॅन्नावॅळु मिन्नुयिर्, पॊन्ऱुम् पोदुऱ्ऱ दुऱ्ऱनळ् पोलुमे 307

मन्नन् करुणै नन्ऱु–राजा की दया भी भली है; ॲन्ना नकुम्–कहकर हँसतीं; निन्ऱ मैन्तनै नोक्कि–खड़े रहे तनय को देखकर; नॅटु चुरत्तु–विस्तृत जंगल में; ॲन्ऱु पोवतु–कब जाना है; ॲन्ना ॲळुम्–कहती हुई उठतीं; इन् उयिर् पॊन्ऱुम् पोतु–जब प्यारे प्राण चलने को होते हैं तब; उऱ्ऱतु–जो पीड़ा होगी; उऱ्ऱनळ् पोलुम्–उसको प्राप्त कर चुकी-सी बन गईं। ३०७

कहती— राजा की कृपा भी भली रही! कहकर हँसतीं! अपने सामने स्थित श्रीराम से पूछती कि विस्तृत जंगल में कब जाना है? कहती हुई उठतीं। उनकी मरणवेला की-सी अवस्था हो गई। ३०७

* अन्वि ळैत्त मनत्तर शऱ्कुनी, ॲन्बि ळैत्तनै यॅन्ऱुनिन् ऱेङ्गुमाल्
मुन्बि ळैत्त वरुमयिन् मुऱ्ऱिनोर्, पॊन्बि ळैक्कप् पॊदिन्दनर् पोलवे 308

अऩ्पु इऴैत्त मऩत्तु-(तुम्हारे प्रति) प्रेम रखनेवाले मन के; अरचऱ्कु-राजा को; नी ॲऩ् पिऴैत्तऩै-तुमने क्या अपराध किया; ॲऩ्ऱु-कहकर; निऩ्ऱु-(ठिठकी) खड़ी रहकर; मुऩ् पिऴैत्त वऱुमैयिल्-पूर्व पाप प्राप्त दरिद्रता में; मुऱ्ऱिऩोर्-वढ़े हुओं ने; पॊऩ्-प्राप्त स्वर्ण को; पिऴैक्क-हाथ से जाने देते हुए; पॊतिन्तत्तर् पोल-गाँठ में वाँध रखा जैसे; एङ्कुम्-तरसतीं; (आल्, ए)। ३०८

कभी पूछतीं— राजा तुम पर गहरा प्रेम रखते थे। ऐसे उनका तुमने क्या अपराध किया ? पूछती हुई चकित खड़ी रहतीं। वह पूर्वकृत पापों के कारण दरिद्रता में वढ़े हुए उन लोगों के समान मन मसोसने लगीं जिन्होंने कुछ स्वर्ण पाकर गाँठ में असावधानी से वाँध रखी हो कि वह स्वर्ण खो गया हो। ३०८

❀ अऱमॆ नक्किलै योवॆऩ्ऩु माविनैऩ्, दिऱव डुत्तदॆऩ् ऱॆय्वदङ् गाळॆऩ्ऩुम्
पिऱवु रैप्पदॆऩ् कऩ्ऱु पिरिन्दुऴिक्, कऱवै यॊप्पक् करैन्दु कलङ्गिऩाळ् 309

अऱम् ॲऩक्कु इलैयो-धर्म देवता मेरी सहायता करनेवाले नहीं हैं क्या; ॲऩ्ऩुम्-कहती; तॆय्वतङ्काळ्-देवताओ; आवि नैन्तु इऱ-प्राण क्षीण होकर मिट जायँ, इसका; ॲटुत्तत्तु ॲऩ्-हेतु क्या है; ॲऩ्ऩुम्-कहतीं; कऩ्ऱु पिरिन्त उऴि-वछड़ा जब विछुड़ गया तव; कऱवै ऒप्प-जैसे गाय, वैसे; करैन्तु-पिघलकर; कलङ्किऩाळ्-व्याकुल हुई; पिऱ उरैप्पतु ॲऩ्-फिर कहना क्या। ३०९

वे प्रलाप करती— क्या मेरा धर्म (सहायक) नहीं है ! देवताओ ! मेरे प्राणों को क्षीण करते हुए जो यह दुख सता रहा है उसका हेतु क्या है ? बछड़ा खोकर दुधार गाय जैसे छटपटाती है वैसे ही कौसल्याजी पिघलकर व्याकुल हुई। किं वहुना ? अपार दुखी हो रहीं। ३०९

❀ इत्ति ऱत्ति ऩिडरुऱु वाडनैक्, कैत्त लत्ति ऩॆडुत्तरुङ् गऱ्पिऩोय्
पॊय्त्ति ऱत्तिऩ् नाक्कुदि योपुहल्, मॆय्त्ति ऱत्तुनम् वेन्दऩै नीयॆऩा 310

इ तिऱत्तिऩ्-इस प्रकार; इटर् उऴवाळ् तऩ्ऩै-दुखनेवाली उनको; कै तलत्तिऩ् ॲटुत्तु-करतल से उठाकर; अरु कऱ्पिऩोय्-महार्घ पातिव्रत्य शीला; मॆय् तिऱत्तु नम् वेन्तऩै-सत्यनिष्ठ हमारे राजा को; नी-आप; पॊय् तिऱत्तिऩऩ्-असत्यवादी; आक्कुतियो-बना लेंगी क्या; पुकल्-कहिये; ॲऩा-ऐसा कहकर। ३१०

श्रीराम ने इस तरह दुख करनेवाली अपनी माता को अपने करतल से उठाया। आश्वस्त करते हुए कहा— महार्घ पातिव्रत्य वाली ! हमारे राजा सत्यनिष्ठ है। क्या आप उन्हें असत्यवादी वना लेंगी? कहिये। ३१०

पॊऱ्पु ऱुत्तऩ मॆय्म्मै पॊदिन्दऩ, शॊऱ्पु ऱुत्तर् कुरियऩ शॊल्लिऩाऩ्
कऱ्पु ऱुत्तिय कऱ्पुडै याडनै, वऱ्पु ऱुत्ति मऩङ्गॊळत् तेऱ्ऱुवाऩ् 311

कऱ्पु उऱुत्तिय-(वड़ों से) सिखाया गया; कऱ्पु उटैयाळ् तऩ्ऩै-पातिव्रत्यशीला को; वऱ्पुऱुत्ति-दृढ़चित्त वनाकर; तेऱ्ऱुवाऩ्-स्वस्थ वनाने के हेतु; पॊऱ्पु

उऱ्ऱतत्त–सुन्दरता भरे; मॅय्म्मै पॉतिन्तत्त–सत्यगर्भित; चॉऱ्पु उऱुत्तऱ्कु उरियत्त–वात समझाने के लिए आवश्यक; मतम् कॉळ–(तर्क) मन में लगे ऐसे; चॉल्लिनान्–(श्रीराम ने) वचन कहे। ३११

श्रीराम ने धारणा कर ली कि उत्तम गुरुओं से शिक्षित पातिव्रत्य रखनेवाली इनको धीरज बँधाना चाहिए। इसलिए उन्होंने ऐसे शब्दों में उन्हें समझाया जो तर्कयुक्त थे, सत्यगर्भित थे और उनके मन को व्यक्त करने की क्षमता रखते थे। ३११

❀ शिऱन्द तम्बि तिरुवुऱ वॅन्दयै, मऱन्दुम् पॉय्यिल नाक्कि वनत्तिडै
उऱैन्दु पेरु मुऱुदिपॅऱ् ऱेनिदिऱ्, पिऱन्दि यान्पॅरुम् बेऱॅन्ब दियावदो 312

चिऱन्त तम्पि–श्रेष्ठ अनुज के; तिरु उऱ–राज्यश्री प्राप्त करते; ऍन्तैयै–मेरे पिता को; मऱन्तुम् पॉय्यिलन् आक्कि–अप्रमत्त सत्यसंध बनाकर; यान् वनत्तु इटै उऱैन्तु–मैंने, वनवास करके; पेरुम् उऱुति पॅऱ्ऱेन्–लौट आने को तय किया है; पिऱन्तु–(इस कुल में) जन्म लेकर; पॅऱुम् पेऱु ऍन्पतु–पाने का सौभाग्य; इतिन् यावतु–इससे बढ़कर क्या होगा। ३१२

उन्होंने कहा— माताजी मैं जंगल हो आने का निश्चय कर चुका हूँ ताकि मेरा प्यारा भाई राज्य पा जाय और मेरे पिताजी भूलकर भी असत्य न बोलनेवाले अप्रमत्त सत्यवादी रह जायँ। इस वंश में जन्म लेकर, इससे बड़ा लाभ कौन सा होगा जो मुझे प्राप्य होगा ? ३१२

❀ विण्णुम् मण्णुमिव् वेलयु मऱ्ऱुम्वे, ऱॅण्णुम् बूद मॅलामळिन् देहिनुम्
अण्ण लेवन् मऱुक्क वडियनेऱ्, कॉण्णु मोविदऱ् कुळ्ळळि येलॅन्ऱान् 313

विण्णुम्–आकाश; मण्णुम्–और यह पृथ्वी; इ वेलैयुम्–और यह सागर; मऱ्ऱुम्–और; वेऱु ऍण्णुम्—अलग-अलग गिने जानेवाले; पूतम् ऍल्लाम्–भूत सब; अळिन्तु एकिनुम्–नाश हो जायँ तो भी; अटियनेऱ्कु–मुझ दास को; अण्णल् एवल्–चक्रवर्ती की आज्ञा; मऱुक्क ऒण्णुमो–टाली जा सकती है क्या; इतऱ्कु उळ् अळियेल–इसके लिए मन छोटा मत कीजिए; ऍन्ऱान्–ऐसा कहा। ३१३

आकाश, पृथ्वी, समुद्र यानी जल और (दो अनल और अनिल) अन्य भूत— अलग-अलग गिने जानेवाले ये सब— मिट जायँ (यानी प्रलय ही क्यों न हो जाय) मुझ दास से स्वामी राजा की आज्ञा टाली जा सकती है क्या ? फिर आप क्यों अपने मन मारें ? दुखी मत होइए। (तमिऴ में 'मैं' की जगह पर अडियेन्, जिसका अर्थ 'दास मैं' है, प्रयोग करने की प्रथा है। यह वैष्णव लोगों में अब भी प्रचलित है।)। ३१३

❀ आहि लैय वरशन्ऱ नाणयाल्, एह लॅन्ब दियानु मुरैक्किलेन्
शाह लावयिर् ताङ्गवल् लेनयुम्, पोहि लुन्नॉडुङ् गॉण्डनै पोहॅन्ऱाळ् 314

आकिल्–ऐसा है तो; ऐय–तात; अरचन् तन् आणैयाल्–राजा की आज्ञा से;

एकल् ऍऩ्पतु–(वन) मत जाओ, कहना; यातुम् उरैक्किलेऩ्–मैं भी नहीं कहती; पोकिल्–तुम जाओ तो; चाक अल्ला उयिर्–न मर जानेवाली इस जान को; ताङ्क वल्लेतैयुम्–न रख सकनेवाली मुझे भी; उऩ्तॉट्टुम् कॉण्टत्तै पोक–अपने साथ लेते जाओ। ३१४

यह सुनकर कौसल्या ने उत्तर में वेदना देनेवाली बात कही। हे आर्य ! हे राम ! अगर यही तुम्हारा निर्णय है तो मैं भी नहीं कहूँगी कि तुम राजा की आज्ञा के कारण वन मत जाओ। पर इतना कहूँगी कि तुम्हारे वनगमन के निश्चय की बात सुनकर तत्काल मेरे प्राण नहीं छूटे, तो भी तुम्हारे जाने के बाद ध्रुव है कि मैं अपने प्राण धारण नहीं कर सकूँगी। इसलिए तुम मुझे भी साथ लेते चलो। ३१४

❀ ऍऩ्ऩै नीङ्गि यिडर्क्कडल् वैहुरुम्, मऩ्ऩर् मऩ्ऩनै वऱ्पुरुत् तादुडऩ्
तुऩ्ऩु कातन् दॊडरत् तुणिवदे, अऩ्ऩै नीयऱम् बार्क्किलै यामॆऩ्ऱाऩ् 315

अऩ्ऩै–माताजी; ऍऩ्ऩै नीङ्कि–मुझसे बिछुड़कर; इटर् कटल् वैकु उऱुम्–दुख-सागर में डूबनेवाले; मऩ्ऩर् मऩ्ऩनै–राजाधिराज को; वऱ्पुऱुत्तातु–धीरज बँधाये बिना; तुऩ्ऩु कातम्–घने जंगल में; उटऩ्–मेरे साथ; नी तॊटर तुणिवते–आप आने का साहस करें; अऱम् पार्क्किलै आम्–धर्म नहीं देखा, यही बात है; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३१५

श्रीराम ने कहा— माताजी ! मेरे पिता मुझसे बिछुड़कर दुखसागर में मग्न हो जायँगे। उनको पास रहकर धीरज बँधाये बिना कैसे आप मेरे साथ जंगल आने का निश्चय करती हैं ? वैसा भी करेंगी ? तब इसका अर्थ यही होगा कि आपने धर्म पर ध्यान नहीं दिया है। ३१५

❀ वरिवि लॆम्बियिम् मण्णर शायवऱ्, कुरिमै मानिल मुऱ्ऱपिन् कॊऱ्ऱवऩ्
तिरुवि ऩीङ्गित् तवञ्जॆयु नाळुडऩ्, अरुमै नोऩ्बुह ळाऱ्ऱुदि यामऩ्ऱे 316

वरि विल् ऍम्पि–बन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा अनुज; इ मण् अरचु आय्–इस पृथ्वी का राजा बनकर; अवऱ्कु मा निलम् उरिमै उऱ्ऱ पिऩ्–उसका, यह बड़ा राज्य अपना हो जाने के बाद; कॊऱ्ऱवऩ्–चक्रवर्ती; तिरुविऩ् नीङ्कि–सम्पत्ति छोड़कर; तवम् चॆय्युम् नाळ्–तपस्या जब करेंगे तब; उटऩ्–उनके साथ; अरुमै नोऩ्पुकळ्–महार्घ व्रत; आऱ्ऱुति–पालन कीजिए; आम् अऩ्ऱे–यह उचित है न। ३१६

वन्धनयुक्त धनुर्धर मेरा भाई राजा बनेगा। सारा राज्य उसके अधिकार में आ जायगा। फिर राजा सांसारिक सुख-वैभव से छूटकर तपस्या करने वन में जायँगे। तब आप भी उनके साथ रहकर व्रतपालन कीजिए। यही न श्रेष्ठ होगा ! । ३१६

❀ शित्त नीतिहैक् किन्ऱदॆन् तेवरुम्, ऑत्त मादवञ् शॆय्दुयर्न् दारन्ऱे
ऍत्त नैक्कुळ वाण्डुह ळीण्डवै, पत्तु नालुम् पहलल वोवॆन्ऱान् 317

नी चित्तम् तिकैक्किन्ऱतु ॲन्—आप चित्ताकुल क्यों होती हैं; तेवरुम्—देवता लोग भी; ऑत्त मातवम् चॅय्तु—उचित बड़ा तप करके; उयर्न्तार् अन्ऱे—न वढ़े; ईण्टु—यहाँ; आण्टुकळ् ॲत्तत्तैक्कु उळ—वर्ष कितने है; अवै पत्तुम् नालुम्—वे दस और चार; पकल् अलवो—केवल (उतने ही) दिन है न; ॲन्ऱान्—कहा। ३१७

आपका मन क्यों चकित हो ? देवता भी उचित तपस्या करके न ऊँचे वढ़े ? यहाँ मेरे बनवास के वर्ष भी कितने है ? चौदह ही वर्ष हैं और वे उतने दिनों के समान बीत जायँगे। ३१७

मुन्नर्क् कोशिह ॲन्नु मुनिवरन्, तन्न रुट्टलै ताङ्गिय विज्जयुम्
पिन्न रॅय्दिय पेरुम् पिळ्ैत्तवो, इन्न नन्ऱवर्क् केयिन शॅय्दले 318

मुन्नर्—पहले; कोचिकन् ॲन्नुम् मुनिवरन् तन्—कौशिक नाम के मुनिवर की; अरुळ् तलै—दया से; ताङ्किय विज्चैयुम्—प्राप्त मेरी विद्याएँ; पिन्नर्—बाद को; ॲय्तिय पेरुम्—(उनकी कृपा से) प्राप्त सौभाग्य भी; पिळ्ैत्तनवो—क्या दोषपूर्ण हैं; इन्नम्—और भी; अवर्क्कु एयिन चॅय्तल्—उन (जैसे ऋषियों) की उचित सेवा करना; नन्ऱे—लाभदायक ही होगा। ३१८

देखिये। पहले कौशिक महर्षि की कृपा से मुझे विद्याएँ मिली और कितनी ही अन्य (यश, विवाह) उपलब्धियाँ हुई ! क्या वे कुछ कमी रखती हैं ! और भी ऐसे महर्षियों की संगति और सेवा लाभदायक ही होगी। ३१८

माद वर्क्कु वळिपा डिळैत्तरुम्, बोद मुऱ्ऱिप् पॉरुवरु विज्जहळ्
एद मऱ्ऱन ताङ्गि यिमैयवर्, कादल् पॅऱ्ऱिन् नहर्वरक् काण्डियाल् 319

मातवर्क्कु—महान तपस्वियों की; वळि पाटु इळैत्तु—पूजा-सेवा करके; अरु पोतम् मुऱ्ऱि—मूल्यवान ज्ञान से पूर्ण होकर; एतम् अऱ्ऱन—निर्दोष; पॉरुवु अरु—और अनुपम; विज्चैकळ् ताङ्कि—मन्त्रविद्या प्राप्त करके; इमैयवर कातल् पॅऱ्ऱु—देवों की कृपा का पात्र बनकर; इ नकर् वर काण्टि—इस नगर को लौट (आऊँगा) आना देखेंगी। ३१९

आप ही देखेंगी। महान तपस्वियों की चरणसेवा करके उनकी संगति और उनके उपदेशों से ज्ञान में पूर्ण होकर निर्दोष और अनुपम विद्यायें अर्जित करके, और देवताओं का प्रेमपात्र बनकर इस नगर को लौट आऊँगा। ३१९

महर वेलैमण् डॉट्टवण् डाडुतार्च्, चहरर् तादै पणितलै निन्ऱुतम्
पुहरिल् याक्कयि ऩिन्तुयिर् पोक्किय, निहरिन् माप्पुहळ् निन्ऱदन् ऱोवॅना 320

मकरम् वेलै—मकरालय सागर से वलयित; मण् तॉट्ट—भूमि को जिन्होंने खोदा वे; वण्टु आटु तार् चकरर्—भ्रमरावृत-मालाधारी सगरपुत्रों का; तातै पणि तलै निन्ऱु—पिता की आज्ञा शिरोधार्य करके; तम्—अपने; पुकर् इल् याक्कैयिन्—निर्दोष

शरीरों से; इन् उयिर् पोक्किय–अपने प्राणों को त्यागने का; निकर् इल् मा पुकऴ्–अप्रमेय महान यश; निन्ऱतु अन्ऱो–आज भी अचल है न; ॲना–ऐसा कहकर। ३२०

मकरालय-वलयित भूमि को भ्रमरावृत्तमाला-धारी सगरसूनुओं ने खोदा था। उन्होने अपने पिता की आज्ञा का पालन करके ही अपने शरीरों से प्राण अलग करा लिये। उनका यश आज भी अचल है न ? —यह कहकर आगे बोले। ३२०

मान्म ऱिक्करत् तान्मऴु वेन्दुवान्, तान्म ऱुत्तिलन् ऱादैशोर् ऱायये
ऊन ऱक्कुऱैत् तानुर वोनरुळ्, यान्म ऱुप्पदॅन् ऱॅण्णुव दोवॅन्ऱान् 321

मान् मऱि करत्तान् मऴु—मृगशावक-हस्त (शिवजी) का परशु; तान् एन्तुवान्–उसको अपने हाथ में रखनेवाले परशुराम ने; तातै चॊल् मऱुत्तिलन्–पिता की आज्ञा मानने से इनकार नहीं किया; तायैये–और माता को भी; ऊन् अऱ–शरीर के खण्ड करते हुए; कुऱैत्तान्–उनका सिर काटा; उरवोन् अरुळ मऱुप्पतु–मेरे बुद्धि-शक्ति में श्रेष्ठ पिता के कृपा-वचन (आज्ञा) का अनादर करना; ॲन्ऱु यान् ॲण्णुवतो–ऐसा मै सोचूं क्या; ॲन्ऱान्–कहा। ३२१

एक हाथ मे मृगशावक धारण करनेवाले शिवजी का हथियार परशु जो है उसको अपना हथियार बनाकर रखनेवाले परशुराम ने क्या किया ? अपने पिता की आज्ञा से (जो अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह हो जाने से क्रुद्ध हुए थे) अपनी माता का सिर काट लिया। इन उदाहरणों के सामने, मैं, अपने बुद्धिमान पिता की कृपापूर्ण आज्ञा मानने से इनकार करना सोचूं ? । ३२१

॥ इत्ति ऱत्त वॅनैप्पल वाशहम्, उय्त्तु रैत्त महन्नुरै युट्कॊळा
ॲत्ति ऱत्तु मिऱक्कुमिन् नाडॅना, मॅय्त्ति ऱत्तु विळङ्गिऴै युन्नुवाळ् 322

इ तिऱत्त–इस प्रकार के; ॲनै पल वाचकम्–और अन्य वचन; उय्त्तु उरैत्त–समझाकर जिन्होंने कहे उन; मकन् उरै–पुत्र की बात; उळ् कॊळ्ळा–मन में धरकर; ॲ तिऱत्तुम्–किसी भी विध; इ नाडु इऱक्कुम् ॲना–यह राज्य छोड़ देगा, यह सोचकर; मॅय् तिऱत्तु–सत्यपक्ष (या सत्यरूपी); विळङ्कु इऴै–शोभायुक्त आभरण वाली; उन्नुवाळ्–(उपाय) सोचने लगी। ३२२

कौसल्या ने इस प्रकार कहते हुए राम की बातें सुनीं। निश्चय जान लिया कि यह किसी विध राज्य छोड़ ही देगा। सत्यवादी और (या सत्य का ही) श्रेष्ठ आभरणधारिणी कौसल्या (उन्हें रोकने का) उपाय सोचने लगीं। ३२२

॥ अवनि कावल् बरदन दाहुह, इवनिऌ ञाल मिऱन्दिरुङ् गानिडैत्
तवनि लावहै काप्पॅन् ऱहविन्नाल्, पुवनि नादर् ऱॊऴुदॅन्ऱु पोयिनाळ् 323

अवनि कावल्–राज्यरक्षण; परतन्तु आकुक–भरत का हो; इवन्–यह;

इ ञालम् इऱन्तु–यह देश छोड़कर; इरु कान् इटै–बड़े वन में जाकर; तवन् निला वकै–तपोरत न हो, इस प्रकार; तकवित्ताल्–उचित क्रम से; पुवनि नातन् तॊऴुतु–भुवनपति से विनय करके; काप्पॆन्–रोकूँगी; ऍन्ऱु–सोचकर; पोयिनाळ्–गई। ३२३

उन्होंने सोचा कि भू-पालन भरत का हो, पर यह देश छोड़कर विशाल वन में जाकर तपस्या करता न रह जाय। मैं भुवनपति चक्रवर्ती से योग्य रीति से प्रार्थना करके इसको रुकवाऊँगी। यह मन में सोचकर वे निकलकर चलीं। ३२३

❀ पोहिन् ऱाळैत् तॊऴुतु पुरवलन्, आह मऱ्ऱिव ळन्नयु माऱ्ऱियिच्
चोहन् दीर्प्पव ळॆन्ऱु शुमित्तिरै, मेहन् दोय्मणिक् कोयिलै मेयिनान् 324

पोकिन्ऱाळै–जानेवाली का; तॊऴुतु–नमस्कार करके; पुरवलन्–राजा के साथ; इवळ् तन्नैयुम्–इनको भी; आकम् आऱ्ऱि–मन दृढ़ करके; इ चोकम् तीर्प्पवळ्–शोकमुक्त करनेवाली; ऍन्ऱु–समझकर; चुमित्तिरै–सुमित्रा के; मेकम् तोय्–मेघ-स्पर्शी; मणि कोयिलै–सुन्दर महल में; मेयिनान्–जा पहुँचे। ३२४

गमनशील उनको श्रीराम ने नमस्कार किया। उन्होंने सोचा कि सुमित्रादेवी ही इनको और राजा को धीरज देकर उनके दुःख को दूर कर सकती है। इसलिए वे सुमित्रा के मेघस्पर्शी सुन्दर महल की ओर गये। ३२४

❀ नडन्द कोशलै केहय नाट्टिऱै, मडन्दै कोयिलै यॆय्दिनण् मन्नवन्
किडन्द पार्मिशै वीऴ्न्दनळ् कॆट्टुयिर्, उडैन्द पोऴ्दि नुडल्विऴुन् दॆन्नवे 325

नटन्त कोचलै–जो चलीं वे कौसल्या; केकय नाट्टु इऱै मटन्तै–केकय देश के राजा की पुत्री के; कोयिलै ऍय्तिनळ्–महल में पहुँचीं; मन्नवन् किटन्त पार्मिचै–राजा जहाँ गिरे थे, उस स्थल पर; उयिर् उटैन्त पोतिन्–प्राणवियोग के अवसर पर; उटल् कॆट्टु विऴुन्ततु–शरीर अस्थिर होकर गिरा जैसे; वीऴ्न्तनळ्–गिर पड़ीं। ३२५

कौसल्यादेवी चलकर केकयराज-तनया के महल में पहुँची। (देखा कि राजा भूमि पर बेहोश पड़े हैं।) वे भी उसी स्थान पर, जहाँ राजा गिरे पड़े थे, धड़ाम से गिरी जैसे प्राण छूटने पर निर्जीव शरीर गिर जाता है। ३२५

पिऱियार् पिरिवे दॆन्नुम् पॆरियोय् तहवो वॆन्नुम्
नॆऱियो वडियो निलैनी निन्नैयाय् निनैवे दॆन्नुम्
वऱियोर् दनमे यॆन्नुन् दमियेन् वलियेॆ यॆन्नुम्
अऱिवो विनैयो वॆन्नु मरशे यरशे यॆन्नुम् 326

पिऱियार्–अब तक जो कभी विलग नहीं हुए हैं उनमें; पिरिवु एतु–अब विछुड़न का कारण क्या; ऍन्नुम्–कहतीं; पॆरियोय्–सर्वोत्तम; तकवो–क्या यह उचित है; नॆऱियो–नीतिसम्मत है; ऍन्नुम्–कहतीं; अटियोम् निलै–आपकी दासियाँ हमारी

स्थिति; नी नित्तैयाय्–आपने नहीं सोची; निनैवु एतु–आपका अभिप्राय भी क्या है; ऍऩ्ऩुम्–कहतीं; वऱियोर् तनमे ऍऩ्ऩुम्–निर्धनों के धन कहतीं; तमियेन् वलिए–मेरे, निर्बल के बल; ऍऩ्ऩुम्–कहतीं; अऱिवो–इसका ज्ञान आपको है क्या; वित्तियो–(दूसरे का) दुष्कर्म है; ऍऩ्ऩुम्–कहतीं; अरचे अरचे–राजा, राजा; ऍऩ्ऩुम्–यह पुकारतीं। ३२६

फिर वे विलाप करने लगीं। हम अब तक एक-दूसरे से अलग नही हुए थे। अब विलगाने का हेतु क्या है? सर्वोत्तम! क्या यह उचित है? नीतिसम्मत है? कभी कहतीं— हम चरणदासियों की स्थिति पर आपने विचार नही किया। आपका अभिप्राय क्या है? निर्धन के धन! मुझ निर्बल के बल! कभी पूछती कि यह जो हुआ वह आप के जानते हुआ या किसी का षडयन्त्र है? वे राजा, राजा कहकर प्रलाप करती। ३२६

इरुळऱ् ऱिडवुऱ् ऱॊळिरु मिरविक् कॆदिरुन् दिहिरि
उरुळत् तनियुयत् तॊरुको नडैयिऱ् कडैहा णुलहम्
पॊरुळऱ् ऱिडमुऱ् ऱुरुमप् पहलिऱ् पुहुदऱ् कॆन्ऱो
अरुळिऱ् करुदुऱ् ऱदुनी यरशर्क् करशे यॆन्ऩुम् 327

अरचर्क्कु अरचे–राजाधिराज; नी–आप; अरुळिऩ् करुतु उऱ्ऱतु–कृपा करके (श्रीराम वनगमन) जो सोचा वह; इरुळ् अऱ्ऱिट–अन्धकार दूर करते हुए; उऱ्ऱु–ऑळिरुम्–अधिक दीप्त; इरविक्कु ऍतिरुम्–सूर्य के समान; तिकिरि–अपने आज्ञाचक्र को; तनि उरुळ उय्त्तु–अनुपम रूप से चलाकर; ऒरु कोल् नटैयिल्–राजदण्ड प्रयोग में; कटै काण्–उच्चता देखनेवाला; उलकम्–यह लोक; पॊरुळ् अऱ्ऱिट–सभी वस्तुओं के नाश के साथ; मुऱ्ऱु उरुम्–पूर्ण नष्ट जिसमें हो जायगा; अ पकलिल्–उस समय में; पुकुतऱ्कु ऍऩ्ऱो–प्रवेश करने के लिए क्या; ऍऩ्ऩुम्–कहतीं। ३२७

राजन्! आपने जो कृपापूर्ण आज्ञा सुनाई है उसका फल क्या होगा, सोचा है? अन्धकार हटाते हुए दीप्त रहनेवाले सूर्य के समान आपका आज्ञाचक्र है। उस आज्ञाचक्र को चलाते हुए आप राजदण्ड धर रहे हैं। उस शासन में यह भूमि अत्युन्नत स्थिति पर है! अब आपकी आज्ञा उस भूमि पर प्रलय ला देगी! इसी हेतु आपकी आज्ञा निकली है क्या?। ३२७

तिरैयार् कडलशू ऴुलहिऩ् ऱवमे तिरुविऩ् ऱिरुवे
निरैयार् कलैयिन् कडले नॆऱियार् मऱैयिन् निलैये
करैया वयर्वे नॆत्तैनी करुणा लयने यॆन्ऩॆन्
ऱुरैया यिदुदा नऴहो वुलहे ऴुडैया यॆन्ऩुम् 328

तिरै आर्–लहरोंवाले; कटल् चूऴ्–सागर से घिरी; उलकिऩ् तवमे–पृथ्वी के तपोरूपी; तिरुविऩ् तिरुवे–धनों में धन; निरै ओर् कलैयिऩ्–श्रेणीबद्ध विद्याओं के; कटले–सागर; नॆऱि आर् मऱैयिऩ्–अच्छे नीतिवचनों से पूर्ण वेदों के; निलैये–निलय; करुणा आलयने–करुणा के आलय; उलकु एऴु उटैयाय्–सातों लोकों के स्वामी;

करैया अयर्वेन् ॲतै–पिघलकर श्रांत होनेवाली मुझे; नी–आप; ॲत् ॲन्रु उरैयाय्–क्यों नहीं पूछते; इतु अऴकु तानो–यह आपके लिए शोभा है क्या। ३२८

लहरोंवाले समुद्र से वलयित इस भूमि के तपोरूप ! धनों में श्रेष्ठ धन ! अनेक विद्याओं और शास्त्रों के सागर (आगार) ! श्रेष्ठ नीतिबोधक वेदों के निलय ! करुणा के आलय ! सातों लोकों के मालिक ! मैं पिघल कर श्रान्त हो रही हूँ। 'क्यों रो रही हो' —यह एक बात नहीं पूछते ! यह मौन आपको शोभा देता है क्या ? । ३२८

मित्नित्	ऱतैय	मेनि	वॅरिदा	यऴहऱ्	ऱऴिय
उत्नुन्	दहमैक्	कडैया	वुरुनो	युरुहित्	ऱुणरात्
ॲत्नॅत्	ऱुरैया	तॆन्ऩे	यिदुदा	तॆदॅत्	ऱरियेत्
मत्नत्	ऱत्मै	काण	वाराय्	महने	यॅत्नुम् 329

मित् नित्ऱ अतैय मेनि–स्थिर विद्युत-सम इनकी देह; वॅरितु आय्–प्रभाहीन होकर; अऴकर्ऱु अऴिय–सौंदर्यविहीन होकर नष्ट होता है; उन्नुम् तकैमैक्कु अटैया–अचिन्त्य रूप से; उरुनोय् उरुकिन्ऱु उणरान्–अत्यधिक वेदना भी नहीं समझते; ॲत् ॲन्ऱु उरैयान्–क्या हुआ यह भी नहीं कहते; ॲन्ते–यह क्या है; इतु तान् एतु ॲन्ऱु अरियेन्–यह क्यों यह मैं नहीं जानती; मकने–हे वत्स; मन्नन् तन्मै काण वाराय्–राजा की स्थिति देखने के लिए तुरत आओ; ॲन्नुम्–कहतीं। ३२९

वे राजा की निपट सुधि-हीन स्थिति से घबड़ा उठीं। स्थिर विद्युत समान कान्ति वाले इनकी देह निष्प्रभ हो गई है। सौन्दर्य चला गया है। अचित्य पीड़ा की भी सुध नहीं करते। मुख खोलकर, क्या बात है —यह भी नहीं कहते। यह कैसी स्थिति है जान नहीं पातीं। वे उच्च स्वर में चिल्लाने लगीं— हे पुत्र ! आओ। चक्रवर्ती की दशा देखो। ३२९

इव्वा	ऱऴुवा	ळिरियऱ्	कुरल्शॅन्	ऱिशैया	मुन्नम्
ऒव्वा	दॊव्वा	दॆन्ना	वॊळिर्वा	णिरुबर्	मुनिवर्
अव्वा	ऱरिवा	यॆन्न	वन्दात्	मुनिमन्	नवनुम्
वॆव्वा	ळरशऩ्	निलैहण्	डॆन्नो	विळैवॆन्	ऱुन्ना 330

इव्वाऱु अऴुवाळ्–इस प्रकार विलापती कौसल्या के; इरियल् कुरल्–रोने का स्वर; चॆन्ऱु इचैया मुन्नम्–जाकर लगने से पहले; ऒळिर् वाळ् निरुपर्–कांतियुक्त तलवार वाले राजा लोग; मुनिवर्–मुनि; ऒव्वातु ऒव्वातु–यह बेमेल है, अवद्य; ॲन्ना–कहते हुए; अ आऱु अरिवाय् ॲन्न–उसका हेतु जानिये, कहने पर; वन्तान् मुनि मन्नवनुम्–आये मुनिराज वसिष्ठ; वॆम् वाळ् अरचन् निलै–भयंकर तलवार वाले राजा की स्थिति; कण्टु–देखकर; विळैवु ॲन्नो–हुआ क्या; ॲन्ऱु उन्ना–यह सोचकर। ३३०

इस प्रकार विलापनेवाली देवी का रुदन-स्वर मण्डप में सुनाई दिया। उनके कान में पड़ते ही चमकती तलवार-धारी नरपति लोग और

मुनिगण सोचने लगे कि यह क्या बेमेल स्वर है ! बिलकुल प्रसंगविरोधी और अबद्ध ! उन्होंने वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि आप जाकर इसका पता लगा लें । मुनिराज वसिष्ठ भी वहाँ आये । उन्होंने भयंकर तलवार-धारी प्रतापी राजा की बेहोशी देखी तो उन्हें कुछ नही सूझा । यह क्या और क्यों हुआ ? इस पर विचार करके— । ३३०

इऱन्दा ऩल्ल नरश निऱवा दॊऴिवा नल्लऩ्
मऱन्दा नुणर्वॆऩ् ऱुऩ्ऩाळ् वण्के हयर्कोऩ् मङ्गै
तुऱन्दा डुयरऩ् दऩ्ऩैत् तुऱवा डुयर्हो शलैयिर्
पिऱन्दार् पॆयरुम् दऩ्मै पिऱरा लऱिदऱ् कॆळिदो 331

अरचऩ् इऱन्ताऩ् अल्लऩ्–राजा मरे नहीं है; इऱवातु ऒऴिवाऩ् अल्लऩ्–विना मरे नहीं रहेंगे भी; वण् केकयर् कोऩ् मङ्कै–समृद्ध केकय देश के राजा की पुत्री; उणर्वु मऱन्ताऩ्–सुध खो गये; ऎऩ्ऱु उऩ्ऩाळ्–यह नहीं सोचतीं; तुयरम् तऩ्ऩै तुऱन्ताळ्–दुख करना ही छोड़ दिया; कोचलै तुयर् तुऱवाळ्–कौसल्या दुख नहीं छोड़ेंगी; इल् पिऱन्तार्–अच्छी कुलोद्भवाएँ; पॆयरुम् तऩ्मै–परस्पर भिन्न है, इस स्वभाव को; पिऱराल्–दूसरों को; अऱितऱ्कु ऎळितो–जानना सुलभ है क्या । ३३१

(वसिष्ठ ने यों सोचा ।) राजा मरे नहीं; पर विना मरे रहनेवाले भी नही लगते ! राजा सुध खोये पड़े है, केकयराजकुमारी इसकी सुध नही लेतीं; दुख नही करती । पर कौसल्या है जो दुख नही छोड़ती । ये दोनो उच्च कुल की ही पुत्रियाँ है । पर इनमे इतना वैषम्य कैसे आया ? यह विचित्रता दूसरों के लिए जानने को सुलभ नहीं लगती । ३३१

ऎऩ्ऩा वुऩ्ना मुनिव ऩिडरा लऴिवा डुयरम्
शॊऩ्ना ळाहा ऎऩमुऩ् ऱॊऴुके हयर्कोऩ् महळै
अऩ्ना युरैया यरश नयर्वा ऩिलैये दॆऩ्ऩत्
तऩ्ना ऩिहऴ्न्द वॆल्लाऩ् दाऩे तॆरियच् चॊऩ्ऩाळ् 332

ऎऩ्ऩा उऩ्ना–यह सोचकर; मुनिवऩ्–मुनि (वसिष्ठजी); इटराल् अऴिवाळ्–दुख-पीड़ित; तुयरम् चॊऩ्ऩाळ् आकाळ्–(कौसल्या) दुख (का कारण) वता सकनेवाली नहीं होगी; ऎऩ–यह सोचकर; मुऩ् तॊऴु–सामने आकर नमस्कार करनेवाली; केकयर् कोऩ् मकळै–केकयराज-तनया से; अऩ्नाय्–माँ; अरचऩ् अयर्वाऩ्–राजा मूर्छित है; निलै एतु–यह स्थिति क्यों कर; उरैयाय् ऎऩ्ऩ–कहिए, कहने पर; तऩ्ऩाल् निकऴ्न्त ऎल्लाम्–अपने से जो हुआ वह सब; ताऩे तॆरिय चॊऩ्ऩाळ्–स्वयं समझाती हुई वोली । ३३२

यह सोचनेवाले वसिष्ठजी ने आगे सोचा कि दुख-पीड़ित कौसल्या दुख का कारण वताने की स्थिति मे नही है । तव तक कैकेयी ने सामने आकर महर्षि को नमस्कार किया । उनसे महर्षि ने पूछा कि माँ ! राजा मूर्छित क्यों है ? उनकी इस स्थिति का कारण क्या है; बताइए । तब कैकेयी ने अपने कारण जो भी हुआ वह सारा वृत्तान्त कह सुनाया । ३३२

शॊऱ्ऱाळ् शॊऱ्ऱा मुन्नम् जुडर्वा ळरशर्क् करशैप्
पॊऱ्ऱा मरैपोर् कैयार् पॊडिशूळ् पडिनिन् ऱॆळुविक्
कऱ्ऱा ययरे लवळे तरुनिन् कादर् करशै
ॲऱ्ऱे शॆयलिन् ऱॊळिनी यॆन्ऱॆन् ऱिरवा निन्ऱान् 333

चॊऱ्ऱाळ् चॊऱ्ऱामुन्नम्–जो कहने लगीं उनके कहने ही के पूर्व; चुटर् वाळ्–चमकती तलवार वाले; अरचर्क्कु अरचै–राजाधिराज को; पॊन् तामरै पोल–सुन्दर कमल-सम; कैयाल्–हाथों से; पॊटि चूळ् पटि निन्ऱु–मैली भूमि से; ॲळुवि–पकड़ उठाकर; कऱ्ऱाय्–शिक्षा प्राप्त; अयरेल्–दुखी मत होइए; अवळे–खुद वे ही; निन् कातऱ्कु अरचै तरुम्–आपके प्यारे को राज दे देंगी; चॆयल् ॲऱ्ऱु–यह आपका करना क्या है; इन्ऱु ऒळि नी–अभी (दुख करना) छोड़ दीजिए; ॲन्ऱु ॲन्ऱु–कई बार यह कहकर; इरवा निन्ऱान्–याचना की। ३३३

उनके पूरा कह चुकने के पहले ही मुनिवर ने अपने श्रेष्ठ कमल-सम हाथों से राजा को पकड़कर मैली भूमि से उठाया। "विद्वान राजा! आप क्लांत न हों। वे कैकेयी स्वयं आपके प्रिय पुत्र को राज्य दे देंगी। यह आपका दुख करना कैसा? अभी उसे दूर कर दीजिए।" ऐसा कई वार कहकर उन्होंने याचना की। ३३३

शीदप् पन्निनी रळवित् तिणगा लुक्क मॆन्कार्
पोदत् तळवे तवळ्वित् तिन्शॊऱ् पुहला निन्ऱान्
ओदक् कडनज् जनैया ळुरैनञ् जॊरुवा ऱवियक्
कादर् पुदल्वन् पॆयरे पुहल्वा नुयिरुङ् गण्डान् 334

चीतम् पनि नीर् अळवि–शीतल हिमजल छिड़काकर; तिण् काल्–दृढ़ (दस्ता) डण्ड वाले; उक्कम् मॆन् काल्–पंखे की मृदु हवा; पोततु्तु अळवु–सुध लौटते तक; तवळ्वित्तु–चलाकर; इन् चॊल् पुकला निन्ऱान्–मधुर वचन जो कह रहे थे उन्होंने; ओतम् कटल्–शीतल (क्षीर-) सागर के; नञ्चु अन्नैयाळ्–विषतुल्य कैकेयी का; उरै नञ्चु–वचनविष; ऒरु वाऱु अविय–कुछ हद तक मन्द पड़ा, तब; कातल् पुतलवन् पॆयरे पुकल्वान्–अपने प्यारे पुत्र का नाम ही कहते रहनेवाले राजा की; उयिरुम् कण्टान्–चेतना देखी। ३३४

उन्होंने राजा पर शीतल हिमजल छिड़का। पंखे से राजा के सचेत होते तक हवा की। उनसे, तब तक, बातें भी करते जाते थे। तब उनको पता लगा कि शीतल क्षीरसागर से निकले विष के समान कैकेयी के वचनविष का प्रभाव कुछ कम हो गया और राम का नाम बरावर लेने वाले दशरथ की सुध लौट आई है। मुनि ने देखा कि राजा श्रीराम का नाम लेते हुए सचेत हो रहे हैं। ३३४

काणा वैया विन्निनी यॊळिवाय् कळिपे रवलम्
आणा यहने यिनिना डाळ्वा न्ऱिडैयू ऱुळदो

मुनिगण सोचने लगे कि यह क्या वेमेल स्वर है ! बिलकुल प्रसंगविरोधी और अवद्ध ! उन्होंने वसिष्ठजी से प्रार्थना की कि आप जाकर इसका पता लगा लें। मुनिराज वसिष्ठ भी वहाँ आये। उन्होंने भयंकर तलवार-धारी प्रतापी राजा की वेहोशी देखी तो उन्हें कुछ नहीं सूझा। यह क्या और क्यों हुआ ? इस पर विचार करके— । ३३०

इऱन्दा नल्ल नरश निऱवा दॊऴिवा नल्लन्
मऱन्दा नुणर्वॆन् ऱुन्नाळ् वण्के हयर्कोन् मङ्गै
तुऱन्दा डुयरन् दन्नैत् तुऱवा डुयर्हो शलैयिऱ्
पिऱन्दार् पॆयरुन् दन्मै पिऱरा लऱिदऱ् कॆळिदो 331

अरचन् इऱन्तान् अल्लन्–राजा मरे नहीं हैं; इऱवातु ऒऴिवान् अल्लन्–विना मरे नहीं रहेंगे भी; वण् केकयर् कोन् मङ्कै–समृद्ध केकय देश के राजा की पुत्री; उणर्वु मऱन्तान्–सुध खो गये; ऎन्ऱु उन्नाळ्–यह नहीं सोचतीं; तुयरम् तन्नै तुऱन्ताळ्–दुख करना ही छोड़ दिया; कोचलै तुयर् तुऱवाळ्–कौसल्या दुख नहीं छोड़ेंगी; इल् पिऱन्तार्–अच्छी कुलोद्भवाएँ; पॆयरुम् तन्मै–परस्पर भिन्न हैं, इस स्वभाव को; पिऱराल्–दूसरों को; अऱितऱ्कु ऎळितो–जानना सुलभ है क्या। ३३१

(वसिष्ठ ने यों सोचा।) राजा मरे नहीं; पर बिना मरे रहनेवाले भी नही लगते ! राजा सुध खोये पड़े हैं, केकयराजकुमारी इसकी सुध नहीं लेतीं; दुख नही करती। पर कौसल्या है जो दुख नही छोडती। ये दोनो उच्च कुल की ही पुत्रियाँ है। पर इनमें इतना वैषम्य कैसे आया ? यह विचित्रता दूसरों के लिए जानने को सुलभ नही लगती। ३३१

ऎन्ना वुन्ना मुनिव निडरा लऴिवा डुयरम्
शॊन्ना ळाहा ळॆन्मुन् ऱॊऴुके हयर्कोन् महळै
अन्ना युरैया यरश नयर्वा निलैये दॆन्नत्
तन्ना निहऴ्न्द वॆल्लान् दाने तॆरियच् चॊन्नाळ् 332

ऎन्ना उन्ना–यह सोचकर; मुनिवन्–मुनि (वसिष्ठजी); इटराल् अऴिवाळ्–दुख-पीड़ित; तुयरम् चॊन्नाळ् आकाळ्–(कौसल्या) दुख (का कारण) बता सकनेवाली नहीं होंगी; ऎन–यह सोचकर; मुन् तॊऴु–सामने आकर नमस्कार करनेवाली; केकयर् कोन् मकळै–केकयराज-तनया से; अन्नाय्–माँ; अरचन् अयर्वान्–राजा मूर्छित है; निलै एतु–यह स्थिति क्यों कर; उरैयाय् ऎन्न–कहिए, कहने पर; तन्नाल् निकऴ्न्त ऎल्लाम्–अपने से जो हुआ वह सब; ताने तॆरिय चॊन्नाळ्–स्वयं समझाती हुई बोली। ३३२

यह सोचनेवाले वसिष्ठजी ने आगे सोचा कि दुख-पीड़ित कौसल्या दुख का कारण बताने की स्थिति मे नही है। तब तक कैकेयी ने सामने आकर महर्षि को नमस्कार किया। उनसे महर्षि ने पूछा कि माँ ! राजा मूर्छित क्यों है ? उनकी इस स्थिति का कारण क्या है; बताइए। तब कैकेयी ने अपने कारण जो भी हुआ वह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। ३३२

शॊऱ्ऱाळ् शॊऱ्ऱा मुन्नम् जुडर्वा ळरशर्क् करशैप्
पॊऱ्ऱा मरैपोर् कैयार् पॊडिशूळ् पडिनिन् ऱॆळुविक्
कऱ्ऱा ययरे लवळे तरुनिन् कादर् करशै
ऎऱ्ऱे शॆयलिन् ऱॊळिनी यॆन्ऱॆन् ऱिरवा निन्ऱान् 333

चॊऱ्ऱाळ् चॊऱ्ऱामुन्नम्–जो कहने लगीं उनके कहने ही के पूर्व; चुटर् वाळ्–चमकती तलवार वाले; अरचर्क्कु अरचै–राजाधिराज को; पॊन् तामरै पोल–सुन्दर कमल-सम; कैयाल्–हाथों से; पॊटि चूळ् पटि निन्ऱु–मैली भूमि से; ऎळुवि–पकड़ उठाकर; कऱ्ऱाय्–शिक्षा प्राप्त; अयरेल्–दुखी मत होइए; अवळे–खुद वे ही; निन् कातर्कु अरचै तरुम्–आपके प्यारे को राज दे देंगी; चॆयल् ऎऱ्ऱु–यह आपका करना क्या हैं; इन्ऱु ऒऴि नी–अभी (दुख करना) छोड़ दीजिए; ऎन्ऱु ऎन्ऱु–कई बार यह कहकर; इरवा निन्ऱान्–याचना की। ३३३

उनके पूरा कह चुकने के पहले ही मुनिवर ने अपने श्रेष्ठ कमल-सम हाथों से राजा को पकड़कर मैली भूमि से उठाया। "विद्वान राजा! आप क्लांत न हों। वे कैकेयी स्वयं आपके प्रिय पुत्र को राज्य दे देंगी। यह आपका दुख करना कैसा? अभी उसे दूर कर दीजिए।" ऐसा कई वार कहकर उन्होंने याचना की। ३३३

शीदप् पनिनी रळवित् तिण्गा लुक्क मॆन्काऱ्
पोदत् तळवे तवळ्वित् तिन्शॊल् पुहला निन्ऱान्
ओदक् कडतञ् जनैया ळुरैनञ् जॊरुवा ऱवियक्
कादऱ् पुदल्वन् पॆयरे पुहल्वा नुयिरुङ् गण्डान् 334

चीतम् पनि नीर् अळवि–शीतल हिमजल छिड़काकर; तिण् काल्–दृढ़ (दस्ता) डण्ड वाले; उक्कम् मॆन् काल्–पंखे की मृदु हवा; पोतत्तु अळवु–सुध लौटते तक; तवळ्वित्तु–चलाकर; इन् चॊल् पुकला निन्ऱान्–मधुर वचन जो कह रहे थे उन्होंने; ओतम् कटल्–शीतल (क्षीर-) सागर के; नञ्चु अनैयाळ्–विषतुल्य कैकेयी का; उरै नञ्चु–वचनविष; ऒरु वाऱु अविय–कुछ हद तक मन्द पड़ा, तब; कातल् पुतलवन् पॆयरे पुकल्वान्–अपने प्यारे पुत्र का नाम ही कहते रहनेवाले राजा की; उयिरुम् कण्टान्–चेतना देखी। ३३४

उन्होंने राजा पर शीतल हिमजल छिड़का। पंखे से राजा के सचेत होते तक हवा की। उनसे, तव तक, बातें भी करते जाते थे। तव उनको पता लगा कि शीतल क्षीरसागर से निकले विष के समान कैकेयी के वचनविष का प्रभाव कुछ कम हो गया और राम का नाम वरावर लेने वाले दशरथ की सुध लौट आई है। मुनि ने देखा कि राजा श्रीराम का नाम लेते हुए सचेत हो रहे है। ३३४

काणा वैया विनिनी यॊळिवाय् कळिपे रवलम्
आणा यहन्ने यिनिना डाळ्वा निडैयू ऱुळदो

माणा वुरैया डरुमा मऴैये यनैयान् महुडम्
पूणा दॊऴिवा नॆनिन्नुया मुळमो पॊन्ऱे लॆन्ऱान् 335

काणा–(सचेत हुए) देखकर; ऐया–आर्य; इनि नी कऴि पेर् अवलम्–आप यह बहुत बड़ा दुख; ऑऴिवाय्–छोड़ दीजिए; आण् नायकत्ते–पुरुषोत्तम ही; इनि नाट्टु आळ्वान्–अब राज करेंगे; इटैयूरु उळतो–और कोई बाधा है; माणा उरैयाळ्–अनादरयोग्य वचन जो बोलीं; तरुम्–वे स्वयं दे देंगी; मा मऴैये अनैयान्–काला मेघ-सम राम; मकुटम् पूणातु ऑऴिवान् ऎनिन्–मुकुट धारण किये बिना जायेंगे तो; याम् उळमो–हम (यहाँ) रहेंगे क्या; पॊन्ऱेल्–मन मत मारिए; ऎन्ऱान्–कहा। ३३५

राजा को सचेत देखकर मुनिवर ने कहा कि आर्य ! अब आप यह अत्यधिक दुख छोड़ दीजिए। पुरुषोत्तम ही राज्य करेंगे। कोई संकट नहीं रहेगा। रानी, जिन्होंने अनादर योग्य वचन कहा था स्वयं राज्य को श्रीराम के पास सौंप देंगी। मेघश्याम श्रीराम बिना मुकुट पहने, राजा बने बगैर जंगल चले जायेंगे तो क्या आप समझते हैं कि हम सब यहाँ रहेंगे ? आप मन छोटा न करें। (आर्य शब्द का जो अर्थ है वही तमिऴ 'ऐय' शब्द का भी है।)। ३३५

ऎन्ऱम् मुनिवन् ऱन्नै निनैया विनैये निनियान्
पॊन्ऱुम् मुन्नम् मवनैप् पुत्तैमा महुडम् पुनैवित्
तॊन्ऱुम् वनमॆन् ऱुन्ना वण्णञ् जॆय्दॆन् नुरैयुम्
कुन्ऱुम् पऴिपू णामऱ् कावाय् कोवे यॆन्ऱान् 336

ऎन्ऱ मुनिवन् तन्नै–यह जिन्होंने कहा उन मुनि से; निनैया–जिसकी सुध नहीं थी; विनैयेन्–ऐसे पाप का भागी हो गया; इनि नान् पॊन्ऱुम् मुन्नम्–अब मेरे मरने से पहले; अवनै–उनको; पुनै मा मकुटम्–धार्य श्रेष्ठ मुकुट को; पुनैवित्तु–धारण कराकर; वनम् ऎन्ऱु ऑन्ऱुम्–वनगमन की कोई बात; उन्ना वण्णम्–न सोचे, वह उपाय; चॆय्तु–करके; ऎन् उरै कुन्ऱुम् पऴियुम्–मुझ पर वचन-भंग की निन्दा; पूणामल्–न लगवाकर; कावाय्–बचाइए; कोवे–महाराज; ऎन्ऱान्–कहा। ३३६

राजा ने ऐसा ढाढस देनेवाले मुनिवर्य से कहा— महाराज ! मुझे इसका भान ही नहीं रहा ! मैं ऐसा पापी हूँ ! मेरे मर जाने से पहले आप एक सहायता करें। श्रीराम को मुकुट-धारण करके राजा बना लीजिए। वह वनगमन की बात सोचे ही नहीं उसका उपाय कीजिए और मुझे भी 'वचन तोड़नेवाला' —इस निन्दा से बचाइए। ३३६

मुनियुम् मुनियुञ् जॆय्हैक् कॊडियाण् मुहमे मुन्नि
इन्नियुन् पुदल्वर् करशुम् मेन्नै योरुक् कुयिरुम्
मनुवित् वऴिनिन् कणवर् कुयिरुम् मुदवि वशैतीर्
पुनिदम् मरुवुम् पुहऴे पुनैयाय् पॊन्ने यॆन्ऱान् 337

मुनियुम्–मुनि ने भी; मुतियुम् चॅय्कै–कोपजनक काम की; कॉटियाळ्–निर्मम (कैकेयी) का; मुकम् मुऩ्ऩि–मुख देखकर; पॉऩ्ऩे–स्वर्ण; इऩि–अब; उऩ् पुतल्वऱ्कु–आपके पुत्र श्रीराम को; मनुविऩ् वऴि अरचुम्–मनुकुल-परम्परागत राज को; निऩ् कणवऱ्कु उयिरुम्–अपने पति को जीवन; एऩै योरुक्कु उयिरुम्–अन्यों को भी उनके प्राण; उतवि–दान करके; वचै तीर्–निन्दारहित; पुऩितम् मरुवुम्–पवित्रता-मिलित; पुकऴे–कीर्ति को; पुऩैयाय्–धारण कीजिए; ॲऩ्ऱाऩ्–बोले। ३३७

मुनिवर तब कोपजनक वचन वाली कैकेयी को देखकर बोले। हे स्वर्णसमान मूल्य वाली! अब आप स्वयं आपके पुत्र राम को मनुकुल के परम्परागत राज्य को सौंपकर अपने पति को प्राणदान और अन्य प्रजाजनों को जीवनदान कीजिए और आप भी अनिंद्य पवित्र यश धारण कीजिए। ३३७

मॊय्म्माण् विऩैवे रऱ्वॆऩ् ऱुयर्वाऩ् मॊऴिया मुऩ्ऩम्
विम्मा वऴुवा ळरशऩ् मॆय्यिऱ् ऱिरिवा ऩॆऩ्ऩिऩ्
इम्मा वुलहत् तुयिरो डिऩिवाऴ् वुहवे ऩॆऩ्शॊल्
पॊय्म्मा णामऱ् किऩ्ऱे पॊऩ्ऱा दॊऴिये ऩॆऩ्ऱाळ् 338

मॊय् माण् विऩै–सशक्त दोनों (पाप, पुण्य) कर्मों को; वेर् अऱ वॆऩ्ऱु–जड़ तक नाश करके उन पर विजय पाकर; उयर्वाऩ्–उत्कृष्ट जो हुए थे उनके; मॊऴिया मुऩ्ऩम्–बात पूरा करने के पूर्व ही; विम्मा अऴुवाळ्–सिसकते हुए रोनेवाली; अरचऩ् मॆय्यिल् तिरिवाऩ् ॲऩ्ऩिऩ्–राजा सत्यपालन से मुकर जायँगे तो; इऩि इ मा उलकत्तु–अब इस विशाल पृथ्वी पर; उयिरोटु–प्राण लेकर; वाऴ्वु–जीना; उकवेऩ्–नहीं चाहूँगी; ॲऩ् चॊल्–मेरा वचन; पॊय् माणामऱ्कु–झूठा न बन जाए, इसके लिए; इऩ्ऱे पॊऩ्ऱातु ऒऴियेऩ्–आज ही मरे बिना नहीं रहूँगी; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ३३८

वसिष्ठजी वलवान कर्मबन्धन को पूर्णरूप से काट चुके महात्मा थे। उनकी बातें पूरी होते तक भी कैकेयी ने सब्र नहीं किया। उसके पूर्व ही वे बोलीं। सिसक-सिसककर रोते हुए उन्होंने कहा कि अगर राजा अपने सत्यपालन से मुकर जाएँगे तो इस विशाल पृथ्वी पर प्राणों के साथ जीना नहीं चाहूँगी। मेरी बात झुठलायी न जाय इसके लिए मैं मरे बिना नही रहूँगी। उन्होंने अपना दृढ़ निश्चय सुना दिया। ३३८

कॊऴुनऩ् ऱुञ्जुम् मॆऩ्वुङ् गॊळ्ळा दुलहम् मॆऩ्वुम्
पऴिनिऩ् ऱुयरुम् मॆऩ्वुम् पावम् मुळदा मॆऩ्वुम्
ऒऴिहिऩ् ऱिलैयऩ् ऱियुमॊऩ् ऱुणर्हिऩ् ऱिलैया ऩिनिमेल्
मॊऴिहिऩ् ऱनवॆऩ् ऩॆऩ्ऩा मुऩियुम् मुऱैयऩ् ऱॆऩ्बाऩ् 339

मुऩियुम्–(वसिष्ठ) मुनि भी; कॊऴुनऩ् तुञ्चुम् ॲऩ्वुम्–पति मर जाएँगे यह बात और; उलकम् कॊळ्ळातु–संसार सहन नहीं करेगा यह भी; पऴि निऩ्ऱु उयरुम् ॲऩ्वुम्–अपमान अचल होगा और बढ़ेगा यह भी; पावम् उळतु आम्–पाप होगा;

ऍन्नवुम्–यह भी सोचकर; ऑऴिकिन्ऱिलै–हठ नहीं छोड़तीं; अन्ऱियुम्–इसके अलावा; ऒन्ऱु उणर्किन्ऱिलै–(दूसरों की) एक भी नहीं मानतीं; यान् इनिमेल्–मेरे, आगे; मॊऴिकिन्ऱत–कथनीय; ऍन्–क्या है; ऍन्ना–कहकर; मुऱै अन्ऱु–यह ठीक नहीं है; ऍन्पान्–आगे भी बोले। ३३९

मुनिवर ने यह सुना तो उन्हें रंज हुआ। वे जरा डाँटते हुए बोले—आप यह नही देखती कि पति मर जायँगे, संसार सहन नहीं करेगा, अपयश बढ़ेगा और आप पर पाप लगेगा। यह समझकर आप अपना हठ नही छोड़ती। फिर दूसरों की भी एक नही सुनतीं। आगे मेरे पास कहने को क्या है ? यह न्यायसम्मत नही। फिर वे आगे भी कहने लगे। ३३९

कण्णो डादे कणव नुयिरो डिडर्का णादे
पुण्णू डोडुङ् गनलो विडमो वॆन्नप् पुहल्वाय्
पॆण्णा हुदियो मायप् पेयो कॉडियाय् नीयिम्
मण्णो डुन्नो डॆन्ना मनमे वलिदे यॆन्ऱान् 340

कॉटियाय्–निष्ठुर; कण्णोटाले–दाक्षिण्यरहित; कणवन् उयिर् ओट् इटर्–पतियों के प्राण निकलते-से है, उससे होनेवाला दुख भी; काणाते–नहीं देखतीं; पुण् ऊटु ओटुम् कनलो–व्रण में घुसनेवाली आग क्या; विटमो–विष; ऍन्न–ऐसा समझी जाइए ऐसा; पुकल्वाय्–बात करती हैं; नी पॆण् आकुतियो–आप भी स्त्री है क्या; मायम् पेयो–मायावी पिशाच; इ मण्णोटु–इस मट्टी से; उन्नोटु–आपका; ऍन् आम्–क्या (लाभ) होगा; मनम् वलिते–आपका मन कठोर है; ऍन्ऱान्–बोले। ३४०

हे निष्ठुर ! दया-दाक्षिण्य नहीं दिखाती। पति के प्राण-त्याग के दुख को भी नही देखती। क्या आप व्रण में घुसनेवाली आग है ? विष है ? —ऐसा पूछने योग्य रीति से बात करती है। आप स्त्री हैं, या माया-पिशाचिनी है ? इस मट्टी को लेकर आपका क्या लाभ होगा ? क्या आपका मन इतना कठोर है ? (आश्चर्य है !)। ३४०

वायान् मन्नन् महनै वनमे हॆन्ना मुन्नम्
नीये शॊन्ना यवनो निमिर्हा ऩिडैवन् नॆऱियिर्
पोयो पुहलो तविरान् पुहऴो डुयिरैच् चुडुवॆन्
दीयोय् निन्बोर् ऱीयो रुळरो शॆयलॆन् नॆन्ऱान् 341

मन्नवन्–राजा (के); वायाल्–अपने मुख से; मकनै–अपने पुत्र को; वनम् एकु–वन जाओ; ऍन्ना मुन्नम्–कहने के पहले; नीये चॊन्नाय्–आप ही ने कह दिया; अवनो–वे तो; निमिर् कान् इटै–विस्तृत वन में; वल् नॆऱियिल्–कठोर मार्ग में; पोय् पुकल्–जा पहुँचना; तविरान्–नहीं छोड़ेंगे; पुकऴोटु–यश के साथ; उयिरै चुटु–प्राणों का भी नाश करनेवाली; वॆम् तीयोय्–भयंकरअग्नि-समाना; निन् पोल् तीयोर्–आपके समान क्रूर; उळरो–होगे क्या; चॆयल् ऍन्–करनी भी कैसी; ऍन्ऱान्–कहा। ३४१

मुनिवर आगे बोले। चक्रवर्ती के अपने मुख से, 'वन जाओ' कहने से पहले ही आपने उनसे (राजा की आज्ञा के रूप में) कह दिया। श्रीराम भी विस्तृत जंगल में कठोर मार्ग तय करते हुए जा पहुँचने से नहीं रुकेंगे। आप भी कितनी क्रूर है कि आपने यश और चक्रवर्ती के प्राण दोनो को जला दिया है? आपके समान निर्मम स्त्री इस संसार में और कोई होंगी क्या? नहीं मिलेंगी। आपका भी कैसा काम है? । ३४१

ताविन् मुनिवन् पुहलत् तळरा नित्र्ऱ मन्नन्
नाविन् नञ्ज मुडैय नङ्गै तन्नै नोक्किप्
पावि नीये वॆङ्गान् पडर्वा यॆन्ऱॆन् नुयिरै
एवि नायो ववनु मेहिनानो वॆन्ऱान् 342

ताविन् मुनिवन्–निर्दोष मुनिवर के; पुकल–कहने पर; तळरा नित्र्ऱ मन्नन्–शिथिल (हुए) राजा; नाविल् नञ्चम् उटैय–विष-जिह्वा; नङ्कै तन्नै–स्त्री को; नोक्कि–देखकर; पावि–पापिनी; नीये–तुम स्वय ही; ॲन् उयिरै–मेरे प्राण (सम पुत्र) को; वॅम् कान् पटर्वाय् ॲन–भयंकर वन में जाओ, यह; एवित्तायो–आज्ञा दिला चुकीं; अवनुम्–वह भी; एकिन्नानो–चला गया क्या; ॲन्ऱान्–पूछा। ३४२

अनिंद्य मुनि ने यह बात कही तो चक्रवर्ती को सच्ची स्थिति मालूम हो गई। उन्होंने, बहुत पीड़ा का अनुभव करते हुए विकल होकर, विषजिह्वा कैकेयी से पूछा— क्या तुमने अपनी ओर से मेरे प्राणप्यारे पुत्र को जंगल जाने की आज्ञा दिला दी? वह भी चला गया क्या? । ३४२

कण्डे नॆञ्जङ् गळियार् कनिवाय् विडना नॆडुनाळ्
उण्डे नदना नीयॆन् नुयिरै मुदलो डुण्डाय्
पण्डे यॆरिमुन् नुन्नैप् पावी देवि याहक्
कॊण्डे नल्लेन् वेऱोर् कूऱ्ऱन् देडिक् कॊण्डेन् 343

पावी–पापिनी; नॅञ्चम् कण्टेन्–तुम्हारा मन जाना; कळियाल्–(काम, मोह) मस्ती के साथ; नान्–मैंने; कनिवाय् विटम्–(बिंब-) फल-सम मुख (अधर) का विष; नॅटु नाळ् उण्टेन्–बहुत काल तक पिया; अतनाल्–उससे (उसके बदले); नी मुतलोटु–तुमने मूल के साथ; ॲन् उयिरै उण्टाय्–मेरे प्राण पी लिये; पण्टे–पहले ही; ॲरि मुन्–अग्नि को साक्षी बनाकर; उन्नै तेवि आक कॊण्टेन् अल्लेन्–तुम्हें महिषी नहीं बनाया; वेऱु ओर् कूऱ्ऱम्–विलक्षण एक यम को; तेटि कॊण्टेन्–ढूँढ़ लिया। ३४३

चक्रवर्ती ने और भी कहा— पापिनी! तुम्हारा मन समझ लिया। बहुत दिन तक मैने तुम्हारा बिंबाधर-निसृत 'विष' पिया था। अब उसके बदले तुम मेरे प्राणो को मूल सहित पी चुकी हो। पहले अग्नि को साक्षी बनाकर तुमसे विवाह करके मैने रानी को नही वरा था; परन्तु एक

विलक्षण यम को ढूँढ़ लिया। (तुमको रानी समझा पर तुम यम निकली।)। ३४३

विळिक्कुङ् गणवे ऱिल्ला वॅङ्गा नॅन्कात् मुळैयैच्
चुळिक्कुम् विनैया लेहच् चूळ्वा यॅन्नैप् पोळ्वाय्
पळिक्कु नाणाय् माणाप् पावि यिनियॅन् पलवुन्
कळुत्ति नाणुन् महट्कुक् काप्पु नाणा मॅन्ऱान् 344

माणा पावि–अनादरयोग्य पापिनी; विळिक्कुम् कण्–देखनेवाली आँखें; तन्नैयन्ऱि वेऱु इल्ला–उसको छोड़कर मेरी कोई और नहीं ऐसे; ॲन् काल् मुळैयै–मेरे वंश के किसलय को; वॅम् कान् एक–भयंकर कानन में भेजने का; चुळिक्कुम् विनैयाल्–गोलमाल के काम द्वारा; चूळ्वाय्–षड्यन्त्र रचती हो; ॲन्नै पोळ्वाय्–मुझे काट रही हो; पळिक्कुम् नाणाय्–कलंक से नहीं डरती; इनि पल ॲन्–अब अनेक बातों से क्या; उन् कळुत्तिल् नाण्–तुम्हारे गले का मंगलसूत्र ही; उन् मकट्कु–तुम्हारे पुत्र का; काप्पु नाण् आम्–रक्षाबन्धन का सूत्र बन जायगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३४४

आदर के लिए अयोग्य पापिनी! श्रीराम मेरे वंश का वृक्ष का 'किसलय' है। मेरी आँखें ही है। तुम उसको भयंकर वन में भेजने का, अपने वंचक काम द्वारा षड्यन्त्र रच चुकी हो! उससे तुम मेरे प्राणों को चीर रही हो। तुम कलंक से नहीं डरतीं। हाँ, अब कितना भी कहूँ क्या लाभ है? पर यह समझ लो कि तुम्हारे गले का मंगल-सूत्र (विवाह के समय में पति द्वारा पत्नी के गले में पहनाया जाता है। यह एक ही बहुमुख्य अहिवात का सूचक है और मंगलकारी वस्तु है) तोड़ लेकर अपने पुत्र के अभिषेक के अवसर पर जो रक्षा-बन्धन किया जायगा उसके काम में लाया जानेवाला है (तुम विधवा बन जाओगी)। ३४४

इन्नै पलवुम् पहर्वा निरङ्गा दाळै नोक्किच्
चॊन्नै निन्ऱे यिवळॆन् ऱार मल्ल डुऱन्देन्
मन्नै यावान् वरुमप् परदन् ऱनैयुम् महनॆन्
ऱुन्नेन् मुनिवा ववनु माहा नुरिमैक् कॊन्ऱान् 345

इन्नै–इस प्रकार; पलवुम् पकर्वान्–विविध बातें कहकर; इरङ्काताळै–निर्दय को; नोक्कि–देखकर; मुनिवा–महर्षे; इन्ऱे चॊन्नेन्–अभी कहता हूँ; इवळ् ॲन् तारम् अल्लळ्–यह मेरी पत्नी नहीं है; तुऱन्तेन्–त्याग दिया; मन् आवान् वरुम्–राजा बनकर आनेवाले; अ परतन् तन्नैयुम्–उन भरत को भी; मकन् ॲन्ऱु उन्नेन्–पुत्र नहीं मानूँगा; अवन् उरिमैक्कुम् आकान्–वह मेरे पितृकृत्य करने का अधिकारी नहीं होगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३४५

दशरथ ने कितनी ही ऐसी बातें कही। पर कैकेयी कुछ भी नहीं पसीजी। तब राजा ने वसिष्ठजी से कैकेयी के सम्बन्ध में अपना फैसला

सुनाया। महर्षे! अभी कहे देता हूँ। यह मेरी धर्मपत्नी नहीं है। उसको मैं त्याग चुका। उसके पुत्र भरत को भी, जो राजा बनेगा, अपना पुत्र नहीं मानता। उसे दाहक्रिया आदि पितृकर्म करने का अधिकार नहीं होगा। ३४५

ऍन्नैक् कण्डु मेहा वण्ण मिडैयू रुडैयान्
उन्नैक् कण्डु मिलनो वॅन्ना वुयर्को शलैयैप्
पिन्नैक् कण्डा ननैयान् पिरियक् कण्ड तुयरम्
तन्नैक् कण्डे तविर्वा डळर्वा णिलैयिर् ऱळर्वान् 346

उयर् कोचलैयै–उत्कृष्ट (गुण वाली) कौसल्यादेवी से; ऍन्नै कण्टुम् एका वण्णम्–मुझसे मिलने के बाद जाने से रोकनेवाली; इटैयूरु उटैयान्–बाधा जिसको हुई थी वह; उन्नैयुम् कण्टिलनो–तुमसे भी नहीं मिला क्या; ऍन्ना–कहकर; पिन्नै–बाद; कण् अनयान् पिरिय–आँख-सम प्यारा छोड़ जाने से; कण्ट तुयरम्–उत्पन्न दुख; तन्नै कण्टु तविर्वाळ्–अपने को (दशरथ को) देखकर दूर करने के विचार से आकर; तळर्वाळ्–श्रांत होनेवाली उनकी; निलैयित्–स्थिति से; तळर्वान्–(प्रभावित हो) श्रांत पड़ गये। ३४६

फिर दशरथ ने गुणोन्नत कौसल्या से पूछा कि देवी! मुझसे मिलकर जाने में उसे बाधा हो गई थी। क्या वह तुमसे भी नहीं मिला? कौसल्या अपनी आँख के समान पुत्र के वियोग से दुखी होकर उस दुख को राजा की संगति में भूलने के विचार से आई थी। यह राजा ने जाना और उनकी स्थिति को देखकर विचलित हो गई। कौसल्या की स्थिति देखकर राजा भी व्याकुल हो गये। ३४६

माऱ्ऱाळ् शॅयला मॅन्ऱुङ् गणवन् वरमीन् दुळ्ळम्
आऱ्ऱा दयर्न्दा नॅन्ऱु मऱिन्दा ळवळुम् मवनैत्
तेऱ्ऱा निन्ऱाण् महनैत् तिरिवा नॅन्ऱा ळरशन्
तोऱ्ऱान् मॅय्यॅन् ऱुलहञ् जॉल्लुम् बळिक्कुञ् जोर्वाळ् 347

माऱ्ऱाळ् चॅयल् आम् ऍन्ऱुम्–सौत का काम है, यह और; कणवन् वरम् ईन्तु–पति ने वर देकर; उळ्ळम् आऱ्ऱातु–चित्तक्षमता खोकर; अयर्न्तान्–(संकटग्रस्त हो) बेहोश हुए, यह भी; अऱिन्ताळ् अवळुम्–जिन्होंने जाना वे भी; अवनै तेऱ्ऱा निन्ऱाळ्–उन्हें ढाढस देते हुए; मकनै–श्रीराम (को); तिरिवान्–लौट आयगा; ऍन्ऱाळ्–बोली; अरचन् मॅय् तोऱ्ऱान् ऍन्ऱु–राजा सत्य-पराजित हो गये, इस; उलकम् चॉल्लुम् पळिक्कुम्–लोक-निंदा से भी; चोर्वाळ्–मन में मुरझाईं। ३४७

कौसल्या ने जब यह जाना कि यह सब सपत्नी का काम है और राजा वर देकर संकट में पड़े बेहोश हो गये थे। यह जानकर उन्होंने राजा को धीरज बँधाते हुए कहा कि श्रीराम, हमारा पुत्र लौट आयगा। पर उससे राजा की सत्यवादिता की हानि हो जायगी। राजा की सत्य के क्षेत्र में

पराजय हो जायगी। लोकनिन्दा होगी। राजा के सत्यपालन की अभिलाषा रखनेवाली कौसल्या इस विचार से बहुत खिन्नमन हो गईं। ३४७

तळ्ळा निलैशान् मॅय्म्मै तळ्ुवा वहैता ऩॅय्दिऩ्
ॲळ्ळा निलैहूर् पॅरुमैक् किऴिवा मॅऩ्ला लुरवोय्
विळ्ळा निलैशे रऩ्बाऩ् महऩ्मेन् मॅलियिन् नुलहम्
कोळ्ळा दऩ्ऱो वॅऩ्ऱाळ् कणवऩ् कुऱैयक् कुऱैवाळ् 348

कणवऩ् कुऱैय–पति के कृश होने से; कुऱैवाळ्–खुद क्षीण होनेवाली; उरवोय्–बुद्धिवली; तळ्ळा निलै चाल् मॅय्म्मै–जिसका अनिवार्य रूप से पालन करने में ही गौरव है, उस सत्य को; तळ्ुवा वकै ॲय्तिऩ्–न पालने की स्थिति को प्राप्त होंगे तो (छोड़ देंगे तो); ॲळ्ळा निलै कूर् पॅरुमैक्कु–अनिंद्य आदर का स्थान प्राप्त आपके गौरव की; इऴिवु आम् ॲऩ्लाल्–हानि होगी, इसलिए; मकन् मेल्–पुत्र पर; विळ्ळा निलै चेर् अऩ्पाल्–अभिन्न स्थिति के प्रेम के कारण; मॅलियिऩ्–अव ढिलाई होगी तो; उलकम् कॊळ्ळातु अऩ्ऱो–संसार (के श्रेष्ठों का समुदाय) नहीं मानेगा न; ॲऩ्ऱाळ्–कहा। ३४८

राजा कृश हुए —यह देखकर कौसल्यादेवी भी निर्बल हुई। तो भी उन्होंने दशरथ को समझाया कि बुद्धिवली! अनिवार्य पालन से ही सत्य यशदायी बनता है। अगर आप उसके पालन को छोड़ देंगे तो अनिन्द्य आपके यश की हानि हो जायगी। इसलिए अकाट्य पुत्र-प्रेम के वश में पड़कर सत्यपालन में ढिलाई दिखायेगे तो संसार का श्रेष्ठ समाज उसको उचित नहीं मानेगा न! । ३४८

पोवा दॊऴिया नॆऩ्ऱाळ् पुदल्वन् ऱऩ्ऩैक् कणवन्
शावा दॊऴिया नॆऩ्ऱॆऩ् ऱुळ्ळन् दळ्ळुऱ् ऱयर्वाळ्
कावा यॆऩ्ऩाण् महनैक् कणवन् पुहळ्ुक् कऴिवाळ्
आवा वुयर्को शलैया मन्ऩ मॆऩ्ऩुऱ् ऱऩळे 349

उयर् कोचलै आम् अऩ्ऩम्–गुणोन्नत कौसल्या हंसिनी (सी देवी); पुतल्वऩ् तऩ्ऩै–अपने पुत्र को; पोवातु ऑऴियाऩ्–बिना गये नहीं रहेगा; ॲऩ्ऱाळ्–समझकर; कणवऩ् चावातु ऑऴियाऩ्–पति मरे बिना नहीं रहेगे; ॲऩ्ऱु ॲऩ्ऱु–ऐसा सोच-सोचकर; उळ्ळम् तळ्ळुऱ्ऱु–चित्ताकुल हो; अयर्वाळ्–लटतीं; कणवऩ् पुकळ्ुक्कु अऴिवाळ्–पति के यश के लिए मरतीं (उसकी उत्कट इच्छा करतीं); मकऩै कावाय् ॲऩ्ऩाळ्–पुत्र को बचाओ (रोको) नहीं कहतीं; आ, आ–हाय, हाय; ॲऩ् उऱ्ऱऩळ्–कैसी ही (दुखी) हो गईं। ३४९

गुणोन्नत हंसिनी-समान कौसल्या ने समझ लिया कि श्रीराम बिना वन गए नही रहेगा। "पति भी बिना मरे जीवित नहीं रहेंगे" यह बार-बार सोचकर वे विकलमन हुई और शिथिल हुई। पति के यश को प्राण-सम चाहनेवाली वे राजा से यह कह नही सकी कि पुत्र को वन जाने से

बचाइए (रोकिए)। हाय! उनकी स्थिति भी कैसी दयनीय हो गई? । ३४९

उणर्वा ननैया ळुरैयालु यरन्दा नुरैशाल् कुमरन्
पुणरा निलमे वनमे पोवा नेया मॅन्ना
इणरार् तरुदा ररश निडरा लयर्वान् विनैयेन्
तुणैवा तुणैवा वॅन्रान् रोन्रा रोन्रा यॅन्रान् 350

इणर् आर् तरु तार्–(फूलों के) गुच्छों से पूर्ण मालाधारी; अरचन्–राजा; अनैयाळ् उरैयाल्–उनके कथन से; उयर्न्तान्–गुणोत्कृष्ट (और); उरै चाल्–प्रकीर्तित; कुमरन्–कुँअर श्रीराम; निलम् पुणरान्–भूमि से विवाह नहीं करेगा; वनम् पोवाने आम्–वन जाएगा ही; ॲन्ना उणर्वान्–ऐसा सोचकर; इटराल् अयर्वान्–दुखी हो विकल होकर; विनैयेन् तुणैवा–पापी, मेरे सहायक; तुणै वा–सहायता के लिए आओ; ॲन्रान्–कहा; तोन्राल्–उत्तम कुमार; तोन्राय्–सामने आ जाओ; ॲन्रान्–कहा। ३५०

पुष्प के गुच्छों से मिली मालाधारी दशरथ ने कौसल्या के वचन से जान लिया कि गुणोत्कृष्ट और प्रकीर्तित श्रीराम भूपति नहीं बनेंगे और वन जाएँगे ही। यह जानकर दुख से लट गये और विलाप करने लगे कि हे राम! इस पापी के सहायक! आओ सहारा दो। उत्तम पुत्र! सामने आओ। ३५०

कण्णु नीरा युयिरु मॉळुहक् कळिया निन्रेन्
ॲण्णु नीरान् मरैयो रॅरिमुन् निन्मेऱ् चॉरिय
मण्णु नीराय् वन्द पुनलै महने विनैयेन्
उण्णु नीरा युदवि युयर्का नडैवा यॅन्रान् 351

मकने–हे पुत्र; कण्णुम् नीर् आय् ऑळुक–आँखों के (अश्रु) जल होकर बहते; उयिरुम् कळिया–प्राणों के भी निकलते; निन्रेन्–(ऐसी स्थिति में) रहता हूँ; ॲण्णुम् नीराल्–मान्य प्रकार से; मरैयोर्–वेदज्ञ; ॲरि मुन्–अग्नि के सामने; निन् मेल् चॉरिय–तुम्हारे ऊपर (अभिषक) जल डालें; मण्णुम् नीर् आय् वन्त–मज्जनजल जो आया है; पुनलै–उस सलिल को; विनैयेन्–मुझ पापी को; उण्णुम् नीर् आय्–(मृत्यु के बाद) तर्पण का जल; उतवि–देकर; उयर् कान् अटैवाय्–उच्चवृक्ष-जंगल में जाओ; ॲन्रान्–कहा। ३५१

दशरथजी ने राम को सम्बोधित करते हुए विलाप किया। हे राम! हे पुत्र! मेरी आँखें स्वयं द्रवीभूत हो बह रही हैं। प्राण भी जाने को छटपटा रहे हैं, सबकी प्रशंसा और वाहवाही के साथ, अग्नि के सामने वेदज्ञों द्वारा तुम्हारा अभिषेक करने के लिए मंगलमज्जन जल जो आया है उसको लेकर पापी, मेरा तर्पण करो; तब ऊँचे पेड़ों के वन में जाओ। ३५१

पडैमा णरशैप् पलहाल् मऴुवा ळदना लॅऱिवान्
मिडैमा वलिदा ननैयान् विल्ला लड्मा वल्लाय्
उडैमा महुडम् वुनैयॅन् ऱुरैया वुडने कॉडियेन्
शडैमा महुडम् पुनैयत् तन्दे नन्दो वॅन्ऱान् 352

पटै माण् अरचै–सेनाविशिष्ट राजाओं को; पल काल्–अनेक वार; मऴु वाळ् अतनाल्–परशु के अस्त्र से; ऍऱिवान्–चलाकर (जिन्होंने) परास्त किया उनका; मिटै मा वलि–सुदृढ़ और वड़े वल को; अनैयान् विल्लाल्–उन्हीं के धनुष से; अट्टम् आऱु वल्लाय्–मिटानेवाले समर्थ; कॉटियेन्–क्रूर मैंने; उटै मा मकुटम्–(तुम्हारे ही) स्वत्व का उन्नत किरीट; पुनै ऍन्ऱु उरैया–पहनो कहकर; उटने–तुरन्त; चटै मा मकुटम्–जटा का वड़ा किरीट; पुनैय तन्तेन्–पहनने को दिया; अन्तो–हाय; ऍन्ऱान्–कहा। ३५२

सेना सहित राजाओं को अनेक वार जिन्होंने अपना परशु फेंककर परास्त किया था उन परशुराम के कठिन वल को उन्हीं के धनु से नष्ट करनेवाले, हे राम! मै वड़ा क्रूर हूँ। पहले मैंने कहा कि यह उत्तम और उन्नत किरीट तुम्हारा है; धारण कर लो। पर तुरन्त आज्ञा दे दी कि जटा रूपी मुकुट धारण कर लो। ३५२

करुत्ता युरुवम् मनमुङ् गण्णुङ् गैयुञ् जॅय्याय्
पॉरुत्ताय् पॉऱैये यिऱैवन् पुरमून् ऱॅरित्त पोर्विल्
इरुत्ताय् तमिये नॅन्ना दॅन्नै यिम्मूप् पिडैये
वॅरुत्ता यिनिनान् वाणाळ् वेण्डेन् वेण्डे नॅन्ऱान् 353

उरुवम् करुत्ताय्–श्यामरूप; मनमुम् कण्णुम् कैयुम् चॅय्याय्–लाल मन, आँखों और हाथों वाले; पॉऱैये पॉरुत्ताय्–क्षमाशील; पुरम् मून्ऱु ऍरित्त इऱैवन्–त्रिपुरदाही परमेश्वर का; पोर् विल्–युद्धधनु; इरुत्ताय्–तोड़नेवाले; इ मूप्पिटै–इस वार्द्धक्य में; तमियेन् ऍन्नातु–निस्सहाय (हूँ इसका भी) विचार न करके; ऍन्नै वॅरुत्ताय्–मुझसे घृणा करते हो; इति–अव; नान्–मै; वाऴ्नाळ् वेण्टेन्–जीवन के दिन नहीं चाहता; वेण्टेन्–नही चाहता; ऍन्ऱान्–कहा। ३५३

दशरथ ने आगे कहा— श्याम रूप! मन के श्रेष्ठ! लाल (सुन्दर) आँखों और हाथों वाले; हे क्षमाशील! त्रिपुरान्तकधनु-भंजक! मेरे इस वार्द्धक्य में मेरी निस्सहायता का भी विचार न करके मुझे घृणा करके (त्याग कर) जाते हो अव और दिन जीना नही चाहता, नही चाहता। ३५३

पॉन्निन् मुन्न मॉऴिरुम् बॊन्ने पुहऴिन् पुहऴे
मिन्निन् मिन्नुम् वरिविऱ् कुमरा मॅय्यिन् मॅय्ये
ऍन्निन् मुन्नम् वननी यडैदऱ् कॅळिये नल्लेन्
उन्निन् मुन्नम् बुहुवे नयर्वा नहम्या नॅन्ऱान् 354

पॊन्निन् मुत्तम्–स्वर्ण से बढ़कर; ऑळिरुम्–चमकनेवाले; पॊन्ते–स्वर्ण; पुकळिन् पुकळे–यश से अधिक यशस्वी; मिन्निन् मिन्नुम्–बिजली से भी अधिक दमक वाले; वरिविल् कुमरा–बन्धनयुक्त धनुर्धर; मॆय्यिन् मॆय्ये–सत्य के विग्रह; ॲन्निन् मुन्नम्–मुझसे पहले; नी वनम् अटैतऱ्कु–तुम वन चले जाओ, इतना; ॲळियेन् अल्लेन–(मैं) क्षुद्र नहीं हूँ; उन्निन् मुन्नम्–तुमसे पहले; यान् उयर् वान् अकम्–मैं उच्च आकाशलोक (स्वर्ग) में; पुकुवेन्–पहुँचूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३५४

स्वर्ण से अधिक मूल्यवान स्वर्ण ! यश से अधिक यशस्वी ! बिजली से अधिक चमकनेवाले धनु के धारक ! सत्यमूर्ति ! तुमको मुझसे पहले, मुझे जीता छोड़कर, वन जाने दूँ मैं इतना क्षुद्र या मन का दुर्बल नहीं हूँ। तुम निकलो, इसके पहले ही मैं ऊपर स्वर्ग पहुँच जाऊँगा। ३५४

नहुदऱ् कौत्त नञ्जु नेयत् ताले यावि
उहुदऱ् कौत्त वुडलु मुडैये नुन्बो लल्लेन्
तहुदऱ् कौत्त शनहन् तैयल् कैयैप् पऱ्ऱिप्
पुहुदक् कण्ड कण्णाऱ् पोहक् काणे नॆन्ऱान् 355

नॆकुतऱ्कु ऑत्त नॆञ्चुम्–द्रवणशक्य मन; नेयत्ताले–स्नेह से; आवि उकुतऱ्कु ऑत्त उटलुम्–जीवन छोड़ सकनेवाला शरीर; उटैयेन्–मेरे पास है; उन् पोल् अल्लेन्–तुम्हारे समान नहीं हूँ; तकुतऱ्कु ऑत्त–योग्यता रखनेवाली; चनकन् तैयल्–जनक की पुत्री का; कैयै पऱ्ऱि–पाणीग्रहण करके; पुकुत कण्ट कण्णाल्–(नगर-) प्रवेश करते देखा (जिन्होंने) उन आँखों से; पोक काणेन्–नगर छोड़ जाना न देख सकूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३५५

मेरे पास द्रवणशील मन है। शरीर इतना दुर्बल हो गया कि प्राण छोड़ देने में कोई कष्ट नहीं होगा। तुम्हारे समान मेरे पास कठोरता नहीं है। मैंने तुमको अपने योग्य, जनकपुत्री के साथ हाथ में हाथ डाले नगर में प्रवेश करते देखा था। क्या उन्हीं आँखों से मैं तुम्हारा नगर-निर्गम देख सकूँगा ? नहीं —कहा। ३५५

ॲऱ्ऱे पहर्वे निन्निया नॆन्ने युन्निऱ् पिरिय
वऱ्ऱे युलहम् मॆन्निनुम् वाने वरुन्दा दॆनिनुम्
पॊऱ्ऱे ररशे तमियेन् पुहळे युयिरे युन्नैप्
पॆऱ्ऱे नरुमै यऱिवेन् पिळैयेन् पिळैये नॆन्ऱान् 356

पॊन् तेर् अरचे–स्वर्णरथ राजा; तमियेन् पुकळे–मेरे यश के हेतुभूत; उयिरे–मेरे प्राण (सम); ॲन्ने–(यह) क्या (हो गया); इनि–अब; यान् ॲऱ्ऱु पकर्वेन्–मैं कैसे बताऊँ; उलकम्–सारा संसार; उन्निल् पिरिय वऱ्ऱे ॲनिनुम्–तुमसे बिछुड़ा रह सकता है, तो भी; वान् वरुन्दातु–स्वर्ग नहीं पछतायेगा; ॲनिनुम्–तो भी; अरुमै–तुम्हारा मूल्य; पॆऱ्ऱेन् अऱिवेन्–जनक के नाते मै जानता हूँ; पिळैयेन्–जीता नहीं रहूँगा; पिळैयेन्–नहीं जिऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ३५६

दशरथजी आगे विलापते हुए कहते हैं— स्वर्णरथी ! मेरे यश के कारणभूत ! मेरे प्राण ! यह क्या हो गया ? मैं अपनी दशा कैसे कहूँ ? यह सारा संसार तुमसे विलग रह सके तो भी, आकाशलोक भी तुम्हारा वियोग सह सके तो भी मैं तुम्हारा जनक हूँ, मैं तुम्हारा मूल्य जानता हूँ; मैं नहीं वचूंगा, न वचूंगा। ३५६

अळ्ळऱ् पळ्ळप् पुनलुशू ऴहन्नमा निलमु मरशुम्
कॊळ्ळक् कुऱैया निदियिन् कुवैयु मुदला मॆवैयुम्
कळ्ळक् कैहे शिक्के युदविप् पुहऴ्हैक् कॊण्ड
वळ्ळऱ् ऱनमॆन् नुयिरै माय्क्कु माय्क्कु मॆन्ऱान् 357

अळ्ळल्–पंकिल; पळ्ळम्–गहरा; पुतल् चूऴ्–सागर-वलयित; अकल् मा निलमुम्–विस्तृत श्रेष्ठ राज्य; अरचुम्–उस पर शासन का अधिकार; कॊळ्ळ कुऱैया–लेने से कम न होनेवाली; नितियिन् कुवैयुम्–निधि की राशियाँ; मुतल् आम्–आदि; ऎवैयुम्–सवको; कळ्ळम् कैकेचिक्के–वंचक कैकेयी को ही; उतवि–दान करके; पुकऴ् कै कॊण्ट–यश ग्रहण का; वळ्ळल् तनम्–दातापन; ऎन् उयिरै माय्क्कुम्–मेरे प्राणों को हर लेगा; माय्क्कुम्–हर ही लेगा; ऎन्ऱान्–कहा। ३५७

मैंने पंकिल और गहरे सागर से घिरी हुई विस्तृत भूमि, उस पर शासन का अधिकार, अक्षय निधि की राशियाँ आदि वंचक कैकेयी को दिया और उससे अपार यश अर्जित किया भी, सही। पर यह दातापन मेरे प्राण हर लेनेवाला है; हाँ हर अवश्य लेगा। ३५७

ऒलियार् कडलुशू ऴुलहत् तुयर्वा न्ऱिडैना हरिनुम्
पॊलिया निन्ऱा रुन्नैप् पोल्वा रुळरो पॊन्ने
वलिया रुडैया रॆन्ऱान् मऴुवा ळुडैयान् वरवुम्
चलिया निलैया यॆन्ऱाऱ् ऱविर्वा रुळरो वॆन्ऱान् 358

ऒलि आर्—शब्द-समन्वित; कटल् चूऴ् उलकत्तु–समुद्रवलयित इस पृथ्वी पर; उयर् वान् इटै–ऊँचे आकाशलोक में; नाकरिनुम्–पाताल में; पॊलिया निन्ऱार्–विद्यमान लोगों में; उन्नै पोल्वार्–तुम्हारे समान रहनेवाले; उळरो–रहते हैं क्या; पॊन्ने—स्वर्ण-सम (श्रेष्ठ); मऴुवाळ् उटैयान्–परशुधर; वलि यार् उटैयार्–वली कौन है; ऎन्ऱान् वरवुम्–कहते हुए आने पर; चलिया निलैयाय्–अचल खड़े रहे; ऎन्ऱाल्–तो; तविर्वार् उळरो–ऐसे तुमको जाने देनेवाले कोई होंगे क्या; ऎन्ऱान्–कहा। ३५८

हे स्वर्णसम श्रेष्ठ ! शब्दायमान समुद्रवलयित इस भूलोक में, उन्नत सुरलोक में और पाताल में तुम्हारे समान सर्वश्रेष्ठ कोई है क्या ? परशुधर ललकारते हुए आये कि यहाँ कौन वलशाली है ? तव तुमने विना चलित हुए उनका सामना किया। ऐसे तुमको वन जाने देनेवाला कोई होगा क्या ? । ३५८

केट्टे यिरुन्दे नॅत्तिुङ् गिळर्वा निन्ऱे यडैय
माट्टे ताहि लन्ऱो वन्ग णॅन्कण् मैन्दा
काट्टे युरैवाय् नीयिक् कैहे शियैयुङ् गण्डिन्
नाट्टे युरैवे नॅन्ऱा तन्ऱॅन् ऱन्मै यॅन्ऱान् 359

केट्टे–सुनकर भी; इरुन्तेन् ॲन्निनुम्–जीवित रहा, तो भी; इन्ऱे–अभी; किळर् वान् अटैय माट्टेन् आकिल् अन्ऱो–प्रकाशमान आकाश नहीं जानेवाला रहा, तभी तो; ॲन् कण् वन् कण्–मेरी आँखें निष्ठुर आँखें होंगी; मैन्ता–मेरे सुत; नी काट्टे उरैवाय्–तुम जंगल में रहोगे; इ कैकेचियैयुम् कण्टु–इस कैकेयी को देखते हुए; इ नाट्टे–इस राज्य में; उरैवेन् ॲन्ऱाल्–रहूँगा तो; ॲन् तन्मै नन्ऱु–मेरा स्वभाव भी अच्छा है; ॲन्ऱान्–कहा। ३५९

दशरथ ने आगे भी कहा— तुम्हारे वनगमन की बात सुनकर भी मैं जीवित रहता हूँ। यह कठोर मन का द्योतक है। पर अभी स्वर्ग न पहुँच सकूँगा तभी तो मेरी आँखें कठोर कही जायँगी! हे प्यारे पुत्र! तुम जाकर जंगल में रहो और मैं इस क्रूर कैकेयी को अपनी आँखों से देखते हुए इस राज्य में मजे से रहूँ तो मेरा स्वभाव भी बड़ा अच्छा माना जायगा न! । ३५९

मॅय्यार् तवमे शॅय्दुन् वियन्मार् बरिदिऱ् पॅऱ्ऱ
शॅय्या ळॅन्नुम् बॊन्नु निलमा दॅन्नुन् दिरुवुम्
उय्या रुय्या विनैये नुन्नैप् पिरिन्दु मिरुन्दाल्
ऐया कैहे शियैने राहे नोना नॅन्ऱान् 360

ऐया–तात; मॅय् आर् तवम् चॅय्तु–सत्यसंयुक्त तपस्या करके; उन् वियल् मार्पु–तुम्हारा विशाल वक्षस्थल; अरितिन् पॅऱ्ऱ–अपूर्व रूप से जिन्होंने पाया है; चॅय्याळ् ॲन्नुम् पॊन्नुम्–वे, लक्ष्मी नाम की श्रीदेवी और; निलम् मातु ॲन्नुम् तिरुवुम्–भूदेवी की श्री; उय्यार्–(तुम्हारे बिछुड़ने पर), जीवित नहीं रहेंगी (श्रीहीन हो जायगा यह राज्य); उय्या विनैयेन्–जिससे बच नहीं पाता ऐसे कर्म का मैं; उन्नै पिरिन्तुम्–तुमसे वियुक्त होने पर भी; इरुन्ताल्–जीवित रहूँ तो; नान् कैकेयियै नेर् आकेनो–कैकेयी-सदृश न हो जाऊँगा क्या; ॲन्ऱान्–कहा। ३६०

तात! भूदेवी तथा श्रीदेवी दोनो ने बड़ी तपस्या करके तुम्हारा वक्ष-स्थल (भर्त्तापन) पाया है। वे तुमको छोड़कर वची नहीं रहेंगी। अगर पापी मैं, इस स्थिति से वचने का मार्ग ही न हो ऐसा काम जो कर चुका वह, मैं तुमसे वियुक्त होकर भी जीवित रह जाऊँ तो मैं भी कैकेयी के समान नही हो जाऊँगा क्या? मैं उतना निर्मम नही हूँ। ३६०

पूणा रणियुम् मुडियुम् पॊन्ना शनमुङ् गुडैयुम्
शेणार् मार्बुन् दिरुवुन् दॅरियक् काणक् कडवेन्

माणा मरवऱ् कलैयु मानिऩ् ऱोलुम् वऩैदल्
काणा दॉऴिवे नॅन्ऱा नऩ्ऱायत् तन्ऱो करुमम् 361

पूण् आर् अणियुम्–पहननेयोग्य आभरण; मुटियुम्–किरीट; पॊऩ् आचनमुम्–स्वर्ण (सिंह-) आसन; कुटैयुम्–श्वेत छत्र; चेण् आर् मार्पुम्–विशाल वक्षस्थल; तिरुवुम्–विजयश्री; तॅरिय काण कटवेऩ्–आँख भर देखने का अधिकार रखनेवाला मैं; माणा मरम् वऱ्कलैयुम्–क्षुद्र पेड़ की छाल का वस्त्र; माऩिऩ् तोलुम्–और मृगचर्म; वऩैतल्–पहनना; काणातु ऑऴिवेऩ् ऍऩ्ऱाल्–बिना देखे (संसार से) चला जाऊँ तो; करुमम्–वही कार्य; नऩ्ऱु आयत्तु अऩ्ऱो–अच्छा होगा न। ३६१

पहनने योग्य आभूषण, किरीट, स्वर्ण-सिंहासन, श्वेत छत्र, विशाल वक्ष, उसमें शोभित विजयश्री आदि के साथ तुम्हें देखने का मैं अधिकारी हूँ। पर क्षुद्र वल्कल और मृगचर्म पहने हुए तुमको देखना पड़ जाय तो उसको बिना देखे ससार छोड़ चला जाऊँ —वही काम श्रेष्ठ होगा न ? । ३६१

ऍन्ऱा वॊन्ऱॊन् ऱॊव्वा विशैदन् दरशऩ् नुयिरुम्
शॅऩ्ऱा निन्ऱो ड॓ऩ्नुन् दऩ्मै यॆय्दित् तेयन्दात्
मॅऩ्ऱोन् मार्बिन् मुनिवन् वेन्दे ययरे लवऩै
इऩ्ऱे येहा वण्णन् दहैवॆ नुलहो डॅऩ्ऱाऩ् 362

ऍऩ्ऱा–ऐसा; ऑऩ्ऱु ऑऩ्ऱु ऑव्वा–एक दूसरे से न मिलनेवाली बातें; इचै तन्नु–कहते हुए; अरचऩ् इऩ्ऱोटु उयिर् चॅऩ्ऱाऩ्–राजा आज मर जायेंगे; ऍऩ्ऩुम् तऩ्मै ऍय्ति–यह कहने योग्य दशा में आकर; तेय्न्ताऩ्–घुले; मॅऩ् तोल् मार्पिन् मुऩिवऩ्–मृदु (मृग-) चर्म वाले वक्ष के मुनिवर (वसिष्ठ); वेन्ते–राजा; अयरेल्–दुखी मत होइए; इऩ्ऱे–अभी; उलकोटु–श्रेष्ठ लोगों के साथ; अवऩै–(जाकर) उनको; एका वण्णम् तकैवॆऩ्–न जाएँ ऐसा रोकूँगा; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३६२

इस तरह के परस्पर असंबद्ध प्रलाप करते हुए राजा इतने श्रान्त हो गये कि यह सन्देह होने लगा कि राजा प्राणहीन हो गये है क्या ? उनको देखकर मृगचर्म-धारी वक्ष वाले वसिष्ठ ने कहा कि राजा ! दुखी मत होइए। अभी अन्य बड़े लोगों को साथ लेकर श्रीराम के पास जाऊँगा और उनको जाने से रोक लूँगा और राज्य-युक्त कर लूँगा। ३६२

मुऩिवन् शॊल्लु मळविऩ् मुडियुङ् गॊल्लॅन् ऱरशऩ्
तऩ्निनिन् ऱुळ्ऱन् नुयिरैच् चिऱिदे तहैवा ऩिन्दप्
पुऩिदन् बोना लिवनाऱ् पोहा दॊऴिवा नॅऩ्ना
मऩिदन् वडिवङ् गॊण्ड मनुवुन् दऩ्नै मऱन्दान् 363

मुनिवऩ् चॊल्लुम् अळविल्–मुनि के कहते समय; मुटियुम् कॊल्–मर जायेंगे क्या; ऍऩ्ऱ अरचऩ्–ऐसी स्थिति में जो रहे वे राजा; मऩितऩ् वटिवम् कॊण्ट मनुवुम्–मनुष्य रूप में मनु (सम रहनेवाले); इन्त पुनितऩ् पोऩाल्–यह पवित्रपुरुष जाएँगे तो; इवनाल्–इनके प्रयास से; पोकातु ऑऴिवाऩ्–बिना गये रह जायगा; ऍऩ्ऩा–समझकर;

तन्नि निन्ऱु उळ्ळल्–एकाकी रहकर कुढ़नेवाले; तन् उयिरै–अपने प्राण को; चिऱ्ऱिते तकैवान्–कुछ देर स्थिर करके; तन्नै मऱन्तान्–अपनी सुध खोकर मूर्छित हुए। ३६३

यह सुनकर राजा को थोड़ा विश्वास हुआ। 'मर ही गये' ऐसी स्थिति में जो रहे वे, मनु के समान राजा यह सोचकर कि पवित्र मुनि जायँगे तो शायद श्रीराम वन जाना छोड़ देगा कुछ देर अपने छटपटानेवाले प्राणों को स्थिर करके वेहोश हो गये। ३६३

मऱन्दा तुणर्वु मुयिरुम् मन्न नॆन्न मरुहा
इऱन्दान् कॊल्लो वऱियेॆ नॆन्ना विडरुऱ् ऱळिवाळ्
तुऱन्दान् महन्मुन् नॆन्नैयुन् दुऱन्दाय् नीयुन् दुणैवा
अऱन्दा निदुवो वैया वरशर्क् करशे यॆन्ऱाळ् 364

मन्नन् उणर्वुम् उयिरुम् मऱन्तान्–राजा की सुध और बुध लुप्त हो गई; ऍन्न यह सोचकर; मरुका–व्याकुल होकर; इऱन्तान् कॊल्लो–मर गये क्या; अऱियेन्–नहीं जानती; ऍन्ना–कहते हुए; इटर् उऱ्ऱु–दुखी होकर; अळिवाळ्–क्लांत होनेवाली (कौसल्या); ऐया–आर्य; अरचर्क्कु अरचे–राजाधिराज; मकन्–पुत्र ने; मुन्–पहले; ऍन्नैयुम् तुऱन्तान्–मुझे भी (आपके साथ) त्याग दिया; तुणैवा–जीवनसंगी; नीयुम् तुऱन्ताय्–आपने भी त्याग दिया; इतु अऱम् तानो–क्या यह धर्म है; ऍन्ऱाळ्–(ऐसा विलाप-वचन) कहा। ३६४

कौसल्या यह देखकर रोने लगीं। "राजा ने सुध-बुध खो ली; क्या वह मर गये ? नहीं मालूम कर पाती !" ऐसा सोचकर वे घबड़ा उठीं। वे विलाप करने लगीं। आर्य ! राजाधिराज ! पहले मेरे पुत्र ने (आपके साथ) मुझे (भी) छोड़ दिया। अब आप भी मुझे छोड़ जाएँगे क्या ? जीवनसंगी आप छोड़ जाएँ —क्या यह धर्म है ? । ३६४

मॆय्यिन् मॆय्ये युलहिन् वेन्दर्क् कॆल्लाम् वेन्दे
उय्युम् वहैनिन् नुयिरै योम्बा दिङ्ङन् ऱेम्बिन्
वैय मुळ्ळुन् दुयरान् मरुहुम् मुनिवन् नुडन्नम्
ऐयन् वरिनुम् वरुमा लयरे लरशे यॆन्ऱाळ् 365

मॆय्यिन् मॆय्ये–सत्यविग्रह; उलकिन् वेन्तर्क्कु ऍल्लाम्–लोक के राजाओं के; वेन्ते–राजा; उय्युम् वकै–(हमको) तारने के हेतु; निन् उयिरै ओम्पातु–अपने प्राणों की रक्षा न करके; इङ्ङन्–इस प्रकार; तेम्पिन्–दुख करेंगे तो; वैयम् मुळ्ळुम्–भूलोक सारा; तुयराल् मरुकुम्–दुख से विकल होगा; मुनिवन्नुटन्–मुनि के साथ; नम् ऐयन्–हमारा पुत्र; वरिनुम् वरुम्–आ भी सकता है; अयरेल्–शिथिल मत होइए; अरचे–राजा; ऍन्ऱाळ्–कहा। ३६५

वे और भी दुख करते हुए वोलीं— हे सत्यरूप ! सारे लोक के राजाओं के राजा ! हम सब जीवित और अच्छी स्थिति में रहें; इस हेतु आपको अपने प्राणों की रक्षा करनी चाहिए। बिना अपने प्राणों की

रक्षा किये अगर आप इस तरह मुरझा जाएँगे तो सारा लोक दुख से विकल हो जाएगा। हो सकता है कि हमारा लड़का मुनिवर के साथ आ जाय। इसलिए आप शिथिल न हों। ३६५

अॅन्ऱॅन् ऱरशन् मॅय्यु मिरुदा ळिणैयुम् मुहनुम्
तन्ऱन् शॅय्य कैयाऱ् ऱैवन् दिडुको सलैयै
ऑन्ऱुन् दॅरिया मम्म रुळ्ळत् तरशन् मॅळ्ळ
वन्ऱिण् शिलैनङ् गुरिशिल् वरुमे वरुमे यॅन्ऱान् 366

अॅन्ऱु अॅन्ऱु–ऐसा, ऐसा कहते हुए; अरचन् मॅययुम्–राजा का शरीर; इरु ताळ् इणैयुम्–दोनो चरणों; मुकनुम्–और मुख को; तन् चॅय्य कैयाल्–अपने लाल (सुन्दर) हाथों से; तैवन्तिटु–सहलाती हुई; कोचलैयै–कौसल्या को; ऑन्ऱुम् तॅरिया–कुछ भी न जाननेवाले; मम्मर् उळ्ळत्तु–अचेतमन; अरचन्–दशरथ ने; मॅळ्ळ–धीमे स्वर में; वल् तिण् चिलै–सवल और गफ़ धनु के; नम् कुरुचिल्–हमारा राजा; वरुमे, वरुमे–आयगा क्या, आयगा क्या; अॅन्ऱान्–कहा। ३६६

कौसल्यादेवी ऐसी-ऐसी बातें कहते हुए राजा के शरीर को, उनके दोनो पैरों को और मुख को (गरमी देते हुए) सहला रही थी। तब राजा वेसुध थे और उनका मन धूमिल पड़ गया था। तब वह कौसल्या से पूछने लगे कि क्या सुदृढ़ और सवल धनु का धारक हमारा राजा (पुत्र) आयगा ? आयगा क्या ? । ३६६

वन्मा यक्कै हेशि वरत्ता लॅन्ऱ नुयिरै
मुन्माय् विप्पत् तुणिन्दा ळॅन्ऱुङ् गूनि मॉळियाल्
तन्मा महनुन् दानुन् दरणि पॅरुमा ऱन्ऱि
अॅन्मा महनैक् कान्ने हॅन्ऱा ळन्ऱो वॅन्ऱान् 367

वल् मायम् कैकेचि–प्रबल मायाविनी कैकेयी ने; कूनि मॉळियाल्–कुब्जा के कहने से; वरत्ताल्–वर द्वारा; तन् मा मकनुम् तानुम्–अपना बड़ा पुत्र और आप; अॅन्ऱुम् तरणि पॅऱुम् आऱु अन्ऱि–सदा के लिए राज्य पाने के अलावा; अॅन् मा मकनै–मेरे बड़े पुत्र को; कान् एकु–जंगल जाओ; अॅन्ऱाळ् अन्ऱो–कहा न; अॅन् तन् उयिरै–मेरे प्राणों को; मुन् माय्विप्प तुणिन्ताळ्–पहले मारने का निश्चय कर लिया; अॅन्ऱान्–कहा। ३६७

धीरे-धीरे उनका मन अधिक सुलझा। तब उन्होंने कहा कि बड़ी मायाविनी कैकेयी ने कुब्जा मथरा का मार्गदर्शन पाकर अपने और अपने पुत्र का शासक का स्थान सदा के लिए निश्चित कर लिया। साथ-साथ उसने मेरे पुत्र से 'वन जाओ' कहा न ? उसके द्वारा उसने क्या कर लिया, मालूम है ? पहले मेरे प्राणों का अन्त कर लिया। ३६७

पॉन्नार् वलयत् तोळान् कानो पुहुद ऱविरान्
अॅन्ना रुयिरो वहला दॉळिया दिडुको शलैकेळ्

मुन्ना ऑरुमा मुनिवन् मॉऴिन्द शाब मुळदॅन्
इन्ना ळुर्र दॅल्ला मवळुक् करश नर्रैवान् 368

पॉन् आर् वलयम्–स्वर्णनिर्मित (बाहु-) वलय; तोळान्–धारी; कान् पुकुतल् तविरान्–जंगल जाना नहीं छोड़ेगा; ऍन् आर् उयिरो–मुझसे लगे प्राण तो; अकलातु ऑऴियातु–अलग हुए बिना नहीं रहेंगे; कोचलै–कौसल्या; इतु केळ्–यह सुनो; मुन् नाळ्–पहले किसी दिन; ऑरु मा मुनिवन्–एक बड़े मुनि का; मॉऴिन्त चापम्–दिया गया शाप; उळतु–है; ऍन्ऱु–कहकर; अन्नाळ् उऱ्ऱतु ऍल्लाम्–उस दिन जो हुआ वह सब; अरचन्–राजा; अवळुक्कु–उनको; अऱैवान्–सुनाने लगे। ३६८

स्वर्ण के बाहुवलय-धारी श्रीराम जंगल जाने से नहीं रुकेगा। मेरे प्राण भी चले बिना टिकनेवाले नहीं है। कौसल्या! एक बात सुनो। पहले कभी मुझे एक महामुनि का दिया शाप मिला था। —यह कहकर राजा वह सारा वृत्तान्त सुनाने लगे। ३६८

वॅय्य कानत् तिडैये वेट्टै वेट्कै मिहवे
ऐय शॅन्ऱे करियो डरिह डुरुवित् तिरिवेन्
कैयिर् चिलैयुङ् गणैयुङ् गॉडुहार् मिरुहम् वरुमोर्
शॅय्य नदियिन् करैवाय्च् चॅन्ऱे मऱैय निन्ऱेन् 369

वेट्टै वेट्कै मिक–आखेट की इच्छा के बढ़ने से; वॅय्य कानत्तिटै–भयंकर कानन में; चॅन्ऱु–जाकर; ऐय करियोटु–विस्मयकारी गजों के साथ; अरिकळ्–सिंहों को भी; तुरुवि तिरिवेन्–ढूँढ़ता फिरा; कैयिल् चिलैयुम् कणैयुम्–हाथ में धनुष और बाण; कॉटु–लेकर; कार् मिरुकम् वरुम्–करि जहाँ आ सकते हैं; ओर् चॅय्य नतियिन् करै वाय्–एक अच्छी नदी के किनारे पर; चॅन्ऱु–जाकर; मऱैय निन्ऱेन्–छिपा खड़ा रहा। ३६९

एक बार आखेट की मेरी इच्छा प्रबल हुई। मैं बड़े-बड़े विस्मयकारी आकार वाले गजों और सिंहों को ढूँढ़ता फिरा। उस सिलसिले में मैं, धनु और शर के साथ एक नदी के किनारे पर गया। वह नदी अच्छी नदी थी और हाथी आदि जल पीने के लिए उधर ही आएँ —इसकी संभावना थी। मैं वहाँ छिपा खड़ा रहा। ३६९

ऑरुमा मुनिवन् मनैयो डॉऴियॉन् ऱिलवा नयनम्
तरुमा महने तुणैयाय्त् तवमे पुरिपोळ् दिनिल्वाय्
अरुमा महने पुनल्कॉण् उणैवान् वरुमा ऱिऱियेन्
पॉरुमा कणैविट् टिडलुम् बुविमी दलरिप् पुरळ 370

ऑरु मा मुनिवन्–एक महामुनि; मनैयोटु–अपनी पत्नी के साथ; ऑऴि ऑन्ऱिल आम्–तेजहीन (अन्धी); नयनम् तरु–आँखों के स्थान में आँख का काम देनेवाले; मा मकने–श्रेष्ठ पुत्र को ही; तुणै आय्–सहायक बनाकर; तवम् पुरि पोऴ्तिन् वाय्–तपस्या करते रहे, तब; अरु मा मकने–वह उत्तम पुत्र ही; पुनल्

कॉण्टु अणैवान्–जल ले आने के लिए; वरुम् आऱु–आया, यह बात; अऱियेन्–न जानता; पॉरु मा कणै–घातक वड़ा अस्त्र (शब्दवेधी वाण); विट्टिटलुम्–छोड़ने पर; अलरि–चीखते हुए; पुवि मीतु पुरळ–भूमि पर (वह) लोटा तव। ३७०

तब वहाँ एक मुनि-वालक आया। एक महामुनि अपनी पत्नी के साथ पास में रहते तपस्या करते रहे। वे दोनो अन्धे थे। यही वालक उन दोनो अन्धों की आँख के समान उनकी सब विधि से सहायता करता था। वह उत्तम चरित्र वाला पुत्र जल ले जाने के लिए वहाँ आया। यह मैं नही जानता था। मैंने एक घातक वाण छोड़ा जो वालक पर लगा। लगते ही वह चीखते हुए गिर पड़ा और भूमि पर लोटने लगा। ३७०

पुक्कुप् पॅरुनीर् नुहरुम् बॉरुपो तहमॅन् ऱॉलिमेऱ्
कैक्कट् कणैशॅन् ऱदलाऱ् कण्णिऱ् ऱॅरियक् काणेन्
अक्कैक् करियिन् कुरले यन्ऱी दॅन्न वॅरुवा
मक्कट् कुरलॅन् ऱयर्वेन् मननॊन् दवणवन् दनॅनाल् 371

पुक्कु–वहाँ आकर; पॅरु नीर् नुकरुम्–अधिक जल पीनेवाला; पॉरु पोतकम्–झगड़ालू हाथी; ऍन्ऱु–समझकर; ऑलि मेल्–शब्द (की दिशा) में; कै कण् कणै–मेरे हाथ का अस्त्र; चॅन्ऱतु अल्लाल्–गया, उसे छोड़कर; कण्णिल्–अपनी आँखों से; तॅरिय काणेन्–देख न पाया; ईतु–यह स्वर; अ कैकरियिन् कुरले–उस हाथी का ही स्वर है; अन्ऱु ऍन्न–नहीं, यह; मक्कळ् कुरल्–और मानवी स्वर है; ऍन्ऱु–ऐसा जानकर; वॅरुवा–डरकर; मतम् नॊन्तु–खिन्नमन होकर; अयर्वेन्–श्लथ हुआ; अवण् वन्तनॅन्–वहाँ आया। ३७१

मैने यह सोचकर कि कोई बड़ा झगड़ालू हाथी आकर जोर से पानी पी रहा है उस दिशा में शर छोड़ा जहाँ से वह ध्वनि आ रही थी। अपनी आँखों से तो मैंने कुछ नही देखा था। जब यह ध्वनि आई तो लगा कि वह हाथी की नही थी और मानवी स्वर है। इसलिए भय-चकित और दुखी होकर मैं वहाँ गया। ३७१

कैयुङ् गुडमुन् नॅहिऴक् कणैयो डुरुऴ्वोर् काणा
वॅय्य तनुवु मननुम् वॅऱिदे किडवे वीऴा
ऐय नीतान् याव नन्दो वरुऴ्हॅन् ऱयरप्
पॉय्यॊन् ऱऱिया मैन्दन् केणी यॅन्नप् पुहल्वान् 372

कैयुम् कुटमुम् नॅकिऴ–हाथ से घट गिराकर; कणैयोटु–(शरीर पर) लगे शर के साथ; उरुऴ्वोन् काणा–लोटनेवाले को देखकर; वॅय्य तनुवुम्–भयंकर धनु; मननुम्–और मेरा मन; वॅऱितु एकिट–निर्बल हो गये, तव; वीऴा–(उसके पास) गिरकर; ऐय–आर्य; नी यावन्–तुम कौन हो; अन्तो–हाय; अरुळ्क–कहने की

कृपा करो; अॅन्रु–पूछकर; अयर–दुखी हुआ तो; पोय् ऑन्रु अरिया मैन्तन्–असत्य कुछ न जाननेवाले ऋषि-कुमार ने; केळ् नी–सुनिए आप; अॅन्त–कहकर; पुकल्वान्–कहने लगा। ३७२

वहाँ मुनिपुत्र अपने हाथ से जलघट गिराकर शरीर पर लगे शर-सह लोट रहा था। उसे देखकर मेरा धनु हाथ से छूटा और मन मेरे वश से। मैंने भी उसके पास तपाक से बैठकर पूछा कि आर्य! तुम कौन हो? हाय! कृपा करके बताओ। मेरा दुख देखकर असत्य से अभिज्ञ वह बोला कि सुनिए। ३७२

अन्नाण् मलरोन् वळिया लरुळ्का शिबनन् मैन्दन्
मिन्नार् पुरिनूल् मार्बन् विरुत्ते शतन्मॅय्प् पुदल्वन्
नन्नात् मरैनू रॅरियु नावान् शलबो शनॅनच्
चॉन्नात् मुनिवन् पुदल्वन् शुरोश ननिया नॅन्रान् 373

अ नाळ्–उन दिनों; मलरोन्–ब्रह्मा के; वळियाल् अरुळ्–क्रमवार सृष्ट; काचिपन् नल् मैन्तन्–काश्यप के श्रेष्ठ पुत्र; मिन् आर् पुरि नूल् मार्पन्–उज्ज्वल त्रिसूत्री उपवीत से शोभित वक्ष वाले; विरुत्तेचनन्–व्रतेश के; मॅय्पुतल्वन्–सत्पुत्र; नल् नाल्मरै–श्रेष्ठ चतुर्वेद; नूल्–और शास्त्र; तॅरियुम्–जाननेवाले; नावान्–वाग्मी; चलपोचन् ॲन–जलभोज (?); चॉन्नान् मुनिवन्–ऐसे कहलानेवाले मुनि का; पुतल्वन्–पुत्र; चुरोचनन् यान्–सुरोचन मैं हूँ; ॲन्रान्–कहा। ३७३

उन प्राचीन दिनों में ब्रह्माजी की क्रमवार सृष्टि में काश्यप पहले आये। उनके पुत्र यज्ञोपवीतालंकृत वक्ष वाले व्रतेश (?) थे। उनके पुत्र वेदों और शास्त्रों के विद्वान जलभोज (?) थे। उनका पुत्र मैं हूँ और मेरा नाम सुरोचन (?) है। ३७३

[इसके बाद एक पद किसी-किसी संस्करण में पाया जाता है जिसका सार यह है— वेदरक्षण के लिए मत्स्यावतार लेनेवाले विष्णु के नाभीकमल से उत्पन्न ब्रह्मा ने वेदोक्त प्रकार से विविध जीवों की सृष्टि की। उन्होंने मनुष्य के चार वर्ण बनाये। उनमें प्रथम वर्ण का हूँ मैं।]

इरुकण् कळुमिन् रियदाय् तन्दैक् कुम्मिङ् गवर्हळ्
परुहुम् पुनल्हॉण् डहल्वान् पडर्न्देन् पळुदा यिनदाल्
इरुहुन् रनैय पुयत्ता यिबमॅन् रुणरा दॅय्दाय्
उरुहुन् दुयरन् दविर्नी यूळिन् शॅयली दॅन्वे 374

इरु कण्कळुम् इन्रिय–दोनो आँखों से हीन; ताय् तन्तैक्कुम्–माता और पिता को; अवर्कळ् परुकुम् पुनल्–उनका पेय जल; कॉण्टु अकल्वान्–ले जाने के लिए; इङ्कु पटर्न्तेन्–यहाँ आया; पळुतु आयिनतु–निरर्थक हो गया; इरु कुन्रु अनैय पुयत्ताय्–दो पर्वतों के समान कंधों वाले; उणरातु–बिना जाने; इपम् ॲन्रु–हाथी समझकर; ॲय्ताय्–(शर) चलाया; ईतु ऊळिन् चॅयल्–यह विधि का काम है;

अँन–लेकर; नी उरुकुम् तुयरम्–आप विगलित करनेवाला दुख; तविर्–छोड़ दीजिए । ३७४

मेरे माता-पिता दोनो अन्धे है । उनके पीने के लिए जल ले जाने के लिए मै इधर आया था । पर काम विगड़ गया । पर्वतसम कन्धे वाले ! आपने भी अज्ञान मे हाथी समझकर शर प्रेपित किया । यह विधि का काम समझिए और दुख से विकल मत होइए । ३७४

उण्णीर् वेट्कै मिहवे युयङ्गु मॅन्दैक् कौरुनी
तण्णीर् कॉडुपो यळित्तॅन् शावु मुरैत्तुप् पुदल्वन्
विण्मी दडैवान् ऱॉळुदा नॅनवुम् मवर्पाल् विळम्बॅन्
ऱॅण्णीर् मैयिनान् विण्णो रॅदिर्हॉण् डिडवे हिननाल् 375

उण् नीर् वेटकै–प्यास; मिक–बढ़ी, तो; उयङ्कुम् अँन्तैक्कु–दुखी रहते मेरे पिता को; ऑरु नी–अप्रमेय आप; तण् नीर्–शीतल जल; कॉटु पोय्–ले जाकर; अळित्तु–देकर; अँन् चावुम् उरैत्तु–मेरा मरण बतलाकर; उम् पुतल्वन्–आपका पुत्र; विण् मीतु अटैवान्–स्वर्ग जानेवाला; तॉळुतान्–(उसने) नमस्कार कहा; अँनवुम्–यह भी; अवर् पाल् विळम्पु–उनके पास कहिए; अँन्ऱु–ऐसा; अँण् नीर्मैयिनान्–सबसे स्मरणीय स्वभाव वाला; विण्णोर् अँतिर् कॉण्टिट–देवों के स्वागत करते; एकिनन्–चला गया । ३७५

वहाँ मेरे पिताजी बढती प्यास से दुखी हो रहे हैं । अप्रमेय आप उनको पीने के लिए जल ले जाइए । उनसे मेरे मरण की बात कहिए, और कहिए कि आपके पुत्र ने, जो स्वर्ग जा रहा था, आपको अपना नमस्कार कहा है । अवश्य वह कुमार श्रेष्ठमान्य स्वभाव वाला था । देवों ने आकर उसका स्वागत किया और वह स्वर्ग सिधार गया । ३७५

मैन्दन् वरवे नोक्कुम् वळर्मा दवर्पान् महनो
डन्दण् पुनल्कॉण् डणुह वॅया विदुपो दळवाय्
वन्दिङ् गणुहा यॅन्नो वन्द दॅन्ऱे नॉन्देम्
शन्दङ् गमळ्ुन् दोळाय् तळुविक् कॉळवा वॅन्नवे 376

मैन्तन् वरवे नोक्कुम्–पुत्र के आने की ही प्रतीक्षा करनेवाले; वळर् मातवर् पाल्–वृद्ध महातपस्वियों के पास; मकनोटु–(उनके) पुत्र (के शरीर) के साथ; अम् तण् पुनल् कॉण्टु–स्वच्छ शीतल लेकर; अणुक–जाने पर; ऐया–तात; इतु पोतु अळवाय्–इतनी देर; इङ्कु वन्तु अणुकाय्–यहाँ आकर नहीं पहुँचे; वन्ततु अँन्तो–(बाधा) आई क्या; अँन्ऱु नॉन्तेम्–समझकर हम बहुत कुढ़ते रहे; चन्तम् कमळुम् तोळाय्–चन्दन-वासित भुजा वाले; तळुवि कॉळ वा–गले लगाने आओ; अँन्न–कहने पर । ३७६

वे वृद्ध तपस्वी अपने पुत्र की ही प्रतीक्षा में वैठे थे । मै उस मुनि-पुत्र का शरीर और स्वच्छ, शीतल जल लेकर वहाँ पहुँचा । मेरी आहट

पाकर वे अपना पुत्र समझकर कहने लगे— वत्स ! इतनी देर कर दी तो हमें डर हो गया कि कुछ विपदा हो गई है। वह क्या होगी —यह विचार करते हुए हम बहुत घबड़ाये रहे। चन्दनवासित भुजा वाले ! आओ। हृदय से लग जाओ। ३७६

ऐया यानो ररश नयोत्ति नहरत् तुळ्ळेन्
मैयार् कळबन् दुरुवि मरैन्दे वदिन्दे निरुळ्वाय्
पॉय्या वाय्मैप् पुदल्वन् पुनन्मॉण् डिडुमो दयिन्मेऱ्
कैयार् कणैशॅन् ऱदलाऱ् कण्णिऱ् ऱॅरियक् काणेन् 377

ऐया–आर्य; यान् ओर् अरचन्–मैं एक राजा हूँ; अयोत्ति नकरत्तु उळ्ळेन्–अयोध्या नगर में रहता हूँ; मै आर् कळपम् तुरुवि–काले रंग के गजों की खोज में; इरुळ् वाय्–अँधेरे स्थान में; मरैन्तु वतिन्तेन्–छिपा रहा; पॉय्या वाय्मै पुतल्वन्–आपका अप्रमत्त सत्यसंध पुत्र; पुनल् मॉण्टिटुम्–जल भरने की; ओतैयिन् मेल्–ध्वनि पर; कै आर् कणै चॅन्ऱतु–मेरे हाथ का बाण गया; अल्लाल्–उसके सिवा; कण्णिल् तॅरिय काणेन्–आँखों से न देख पाया। ३७७

तब मैं बोला— आर्य ! मैं एक राजा हूँ— अयोध्यावासी। काले रंग के हाथियों की खोज मे जाकर मैं एक अँधेरे स्थान में छिपा खड़ा रहा। तब अप्रमत्त सत्यवादी आपका पुत्र अपने घट में जल भरने लगा। उस शब्द की ओर मेरा अस्त्र गया। मैंने तो उसको अपनी आँखों से नही देखा। ३७७

वीट्टुण् डलरुङ् गुरलाल् वेळ्क् कुरलन् ऱॅनवे
ओट्टन् दॅदिरा नीया रॅनवुऱ् ऱदॅला मुरैया
वाट्टन् दरुनॅञ् जिननाय् निन्ऱान् वणङ्गि वानोर्
ईट्ट मॅदिर्वन् दिडवे यिऱन्दे हिनन्विण् णिडैये 378

वीट्टुण्टु–गिराया जाकर; अलऱम् कुरलाल्–(उसके) विलापनेवाले स्वर से; वेळम् कुरल् अन्ऱु–हाथी की ध्वनि नहीं; ऍन–जानकर; ओट्टन्तु–दौड़ जाकर; ऍतिरा–उससे मिलकर; नी यार् ऍन–तुम कौन हो, यह पूछने पर; उऱ्ऱतु ऍल्लाम् उरैया–हुआ सब कहकर; वाट्टम् तरु नॅञ्चिनन् आय्–दुखितमन होकर; वणङ्कि–आपको नमस्कार करके; निन्ऱान्–निस्पंद रहा; इऱन्तु–मरकर; वानोर् ईट्टम् ऍतिर् वन्तिट–देवगण के स्वागत के लिए आते; विण् इटै एकिनन्–स्वर्ग में चला गया। ३७८

उस अस्त्र से विद्ध होकर वह गिर गया। उसके रुदनस्वर से मैंने समझ लिया कि यह हाथी की ध्वनि नही है। इसलिए मैं सवेग दौड़ा। आपके पुत्र से मिलकर मैंने उससे पूछा कि तुम कौन हो ? उसने अपना सारा वृत्तान्त कह सुनाया। दुखपूरित मन के साथ उसने आपको नमस्कार कहा। फिर वह संज्ञाहीन होकर मर गया। देवगण आकर उसको ले गये और वह स्वर्ग सिधार गया। ३७८

अऱुत्ताय् कणैया लॅनवे यडियेऩ् ऱऩ्ऩै यैया
कऱुत्ते यरुळा यानो कण्णिऱ् कण्डे नल्लेऩ्
मऱुत्ता निल्लाऩ् वनमॊण् डिडुमो दयिनॆय् दनॆऩाल्
पॊऱुत्ते यरुळ्वा यॆन्ना विरुताळ् शॆऩ्नि पुनैन्देऩ् 379

ऐया–महात्मा; कणैयाल् अऱुत्ताय्–शर से मार दिया; ॲॅन–सोचकर; अटियेऩ् तऩ्ऩै–मुझ दास पर; कऱुत्ते अरुळाय्–कोप मत कीजिए; यानो कण्णिल् कण्टेऩ् अल्लेऩ्–मैने तो अपनी आँखों के सामने नहीं देखा था; मऱु ताऩ् इल्लाऩ्–निरपराध उसके; वनम् मॊण्टिटुम् ओतैयिऩ्–जल भरने की ध्वनि से; ॲॅय्तऩॆऩ्–शर चलाया; पॊऱुत्ते अरुळ्वाय्–क्षमा कीजिए; ॲॅऩ्ना–विनय करके; इरु ताळ्–उनके दोनो पैर; चॆऩ्नि पुनैन्तेऩ्–सिर पर धारण कर लिए। ३७९

हे महात्मा! 'तुमने मेरे पुत्र को शर से मारा' —यह कहकर दास पर न कोप करें। कृपा कीजिए। मैने प्रत्यक्ष देखा नहीं था। निरपराध आपके पुत्र के जल भरने का नाद सुना और (शब्दवेधी) बाण चला दिया। आप क्षमा कीजिए। यह विनय करके मैंने उनके दोनो चरणों पर अपना सिर रखकर दण्डवत की। ३७९

वीऴ्न्दा रयर्न्दार् पुरण्डार् विऴिपो यिऱ्ऱिऩ् ऱॆऩ्ऱार्
आऴ्न्दार् तुऩ्बक् कडलु ळैया वैया वॆऩ्ऱार्
पॊऴ्न्दाय् नॆञ्जै यॆऩ्ऱार् पोऩ्ना डदनिऱ् पोय्नी
वाऴ्न्दे यिरुप्पत् तरियेम् वन्देम् वन्दे मिनिये 380

वीऴ्न्तार्–वे भूमि पर गिरे; अयर्न्तार्–शिथिल हुए; पुरण्टार्–लोटे; इऩ्ऱु विऴि पोयिऱ्ऱु ॲॅऩ्ऱार्–अब आँखें चली गई, कहा; तुन्पम् कटलुळ् आऴ्न्तार्–दुखसागर में मग्न हुए; ऐया, ऐया ॲॅऩ्ऱार्–तात, तात पुकारा; नॆञ्चै पोऴ्न्ताय्–गला चीर दिया; ॲॅऩ्ऱार्–आर्त्तनाद किया; नी–तुम; पोऩ् नाटु अतनिल्–स्वर्ग में; पोय् वाऴ्न्तु इरुप्प–जाकर रहो, यह; तरियेम्–सहेंगे नहीं; इनिये–अभी; वन्तेम् वन्तेम्–आये, आये। ३८०

माता-पिता दोनो यह सुनकर नीचे गिर गये। लोटने लगे। 'हाय हमारी आँखें ही चली गयीं' —यह आर्तवचन कहा। दुख-सागर में मग्न हो गये। हाय वत्स वत्स —की पुकार मचायी। "तुमने हमारा गला चीर दिया। तुम जाकर स्वर्ग में रहो —यह हम सह नहीं सकते; इधर रह नही सकते। अभी हम भी आ गये, आ गये अभी।"। ३८०

ॲॅऩ्ऱॆऩ् ऱयरुन् दवरै यिरुताळ् वणङ्गि याने
इऩ्ऱुम् पुदल्वन् निनिनी रेवुम् पणिशॆय् दिडुवेऩ्
ऑन्ऱुन् दळरे लैया वॊऴिमिन् ऱुयरॆऩ् ऱिडलुम्
वन्ऱिण् शिलैयाय् कॆण्मो वॆऩ्ना वोरुशॊल् वहुत्ताऩ् 381

ॲॅऩ्ऱु ॲॅऩ्ऱु–ऐसा, ऐसा; अयरुम्–दुखनेवाले; तवरै–(वृद्ध) तपस्वियों को;

इरु ताळ् वणङ्कि–दोनो चरणों पर नमस्कृत करके; इन्ऱु–आज से; यान् उन् पुतल्वन्–मैं ही आपका पुत्र बनूँगा; इनि नीर् एवुम् पणि–अब से आपसे आज्ञापित सेवाएँ; चॅय्तिटुवेन्–कर दूँगा; ऐया–उत्तम मुनि; ऑन्ऱुम् तळरेल्–धीरज कुछ मत छोड़िए; तुयर् ऑऴिमिन्–दुख छोड़ दीजिए; ऍन्ऱिटलुम्–कहते ही; वल् तिण् चिलैयाय्–बलवान और कठोर धनुर्धर; केण्मो ऍन्ऱा–सुनिए कहकर; ऑरु चॉल्–एक बात; वकुत्तान्–बताई। ३८१

ऐसा-ऐसा विलाप करते हुए वे विगलित हो रहे थे। उनके पैर पड़कर मैंने विनय सुनाई— आज से मैं आपका पुत्र रहूँगा। आपकी आज्ञाएँ मानूँगा। आपकी सेवा करूँगा। महात्मा, आप धीरज न खोइए; यह दुख त्यागिए। मेरे यह कहने पर तपस्वी ने कहा कि बलवान और कठोर धनुर्धर! यह सुनिए। यह कहकर उन्होंने आगे एक बात कही। ३८१

कण्णुण् मणिबोन् महवै यिऴन्दु मुयिर्हा दलिया
उण्ण वॅण्णि यिरुन्दा लुलहो रॅन्नॅन् ऱुरैयार्
विण्णिन् ऱलैशे रुदुम्या मॅम्बोल् विडलै पिरियप्
पण्णुम् बरिमा वुडैया यडैवाय् पडर्वा नॅन्ना 382

कण्णुळ् मणि पोल्–आँखों के तारे के समान; मकवै इऴन्तुम्–पुत्र को खोकर भी; उयिर् कातलिया–जीवन चाहकर; उण्ण ऍण्णि–पेट भरने की इच्छा करते हुए; इरुन्ताल्–(जीवित) रहेंगे तो; उलकोर् ऍन् ऍन्ऱु उरैयार्–लोकवासी क्या (निन्दा) नहीं कहेंगे; याम् विण्णिन् तलै चेरुतुम्–हम स्वर्ग चले जाएँगे; पण्णुम् परि मा–अलंकृत अश्वों के; उटैयाय्–पति; ऍम् पोल्–हमारी ही भाँति; विटलै पिरिय–लड़का खोकर; पटर् वान् अटैवाय्–विशाल स्वर्गलोक पहुँचेंगे; ऍन्ना–ऐसा। ३८२

हम आँख का तारासम पुत्र को खोकर, इस लोक में पेट भरने के लिए जीवित रह जायँ तो दुनियावाले क्या कहेंगे ? निन्दा में क्या-क्या नहीं कहेंगे ? हम अभी स्वर्ग चले जायँगे। कोतल घोड़ों वाले राजा। आप भी हमारे जैसे, प्रिय पुत्र को गँवाकर स्वर्ग सिधारें। उन लोगों ने कहा। फिर वे आगे बोले। ३८२

तावा दॉळिरुङ् गुडैयाय् तवरिङ् गिदुनिन् शरणम्
कावा यॅन्ऱा यदनाऱ् कडिय शावङ् गरुदेम्
एवा महवैप् पिरिन्दिन् ऱॅम्बो लिडरुऱ् ऱलैनी
पोवा यहल्वा नॅन्नाप् पॊन्नाट् टिडैपो यिनराल् 383

तावातु ऑळिरुम् कुटैयाय्–मन्द हुए बिना उज्ज्वल रहनेवाले श्वेतछत्रधारी; इङ्कु इतु तवरु–यहाँ यह अपराध है; निन् चरणम्–आपकी शरण में आया; कावाय्–रक्षा करें; ऍन्ऱाय्–यह कहा; अतनाल्–उससे; कटिय चापम करुतेम्–कठोर शाप (देने) का विचार नहीं करते; इन्ऱु ऍम् पोल्–आज जैसे हम; नी–आप भी;

एवा–बिना आज्ञा की प्रतीक्षा किये, इंगित जानकर सेवा करनेवाले; मकवै–पुत्र से; पिरिन्तु–अलग होकर; इटर् उऱ्ऱत्तै–दुखी बन; अकल् वान् पोवाय्–विस्तृत स्वर्ग में जायँगे; ॲन्ऩा–कहकर; पॊन् नाट्टु इटै–स्वर्गलोक में; पोयिनर्–चले । ३८३

सदा उज्ज्वल रहनेवाला छत्र-पति ! "यह मेरा अपराध हो गया। आपकी शरण में आया हूँ" —ऐसा सत्य कहकर आपने विनय की। इसलिए हम कठिन शाप देना नही चाहते। आज जैसे हम, आप भी अपने आज्ञा के पहले ही इंगित जानकर सेवा-तत्पर रहनेवाले अपने पुत्र से विलग होकर दुख का अनुभव करके स्वर्ग सिधारेंगे। यह शाप देकर वे स्वर्ग सिधारे। ३८३

शिन्दै तळवुऱ् ऱयर्दल् शिऱिदु मिलना यिन्शॉल्
मैन्द नुळनॆन् ऱदनान् महिळ्ऴ्वो डिवण्वन् दनॆनाल्
अन्द मुनिशॊऱ् ऱदुवु मण्णल् वनमे हुदलुम्
ॲन्ऩ नुयिर्वी हुदलु मिऱैयुन् दवऱा वॆन्ऱान् 384

इन् चॊल् मैन्तन्–मधुरभाषी वत्स; उळन् ॲन्ऱतनाल्–होगा, इस कथन से; चिन्तै तळर्वुऱू–क्षुब्धमन होकर; अयर्तल् चिऱितुम् इलनाय्–आयास कुछ भी न करके; मकिळ्ऴ्वोटु–हर्ष के साथ; इवण् वन्तनॆन्–यहाँ आया; अन्त मुनि–उन मुनि ने; चॊऱ्ऱतुवुम्–जो कहा वह शापवचन और; अण्णल् वनम् एकुतलुम्–प्रभु का वन जाना; ॲन् उयिर् वीकुतलुम्–मेरे प्राणों का छूटना; इऱैयुम् तवऱा–कुछ भी न टलेंगे; ॲन्ऱान्–कहा। ३८४

दशरथजी ने कौसल्या से कहना जारी किया। इस शाप से यह ध्वनित होता था कि हमारे मधुर-तुतली बोली बोलनेवाला वत्स पैदा होगा। यह सोचकर मैं, जिसे शाप के कारण दुखी हो जाना था, दुखदग्ध नहीं हुआ। मेरा मन शोक से उद्विग्न नही हुआ। मै आनन्द के साथ लौटकर महल में आ गया। अब देखो— मुनि का शाप, श्रीराम का वनगमन और मेरा मरण तीनो जरा भी नही टलेंगे। ३८४

उरैशॆय् पॆरुमै युयर्दवत्तो रोङ्गल्
पुरैशै मदहळिऱ्ऱान् पॊऱ्कोयिन् मुन्नर्
मुरश मुळङ्ग मुडिशूट्ट मॊय्त्ताण्
डरश रिनिदिरुन्द नल्लवैयि नायिनान् 385

उरै चॆय् पॆरुमै–(सबसे) प्रशंसित यशस्वी; उयर् तवत्तु–उत्कृष्ट तपोमार्ग में; ओर् ओङ्कल्–एक पर्वत-समान (रहे) वसिष्ठजी; पुरैचै मतम् कळिऱ्ऱान्–गले की रस्सी के साथ मत्त रहनेवाले गजों की सेना के स्वामी के; पॊन् कोयिल् मुन्नर्–स्वर्ण-महल के सामने; मुरचम् मुळङ्क–ढोलों के बजते; मुटि चूट्ट–मुकुटधारण कराने के हेतु; अरचर् मॊय्त्तु–राजा एकत्र होकर; इनितु इरुन्त–जहाँ उत्साह से रहे; आण्टु–वहाँ; नल् अवैयिन्–उस सुन्दर मण्डप-प्रविष्ट; आयिनान्–बने। ३८५

उधर प्रकीर्तित (और पर्वतसम उन्नत महान तपस्या के कर्ता) महान तपस्वी वसिष्ठ सभामण्डप में गये जहाँ राजा लोग इस विचार से एकत्र हुए थे कि गजपति दशरथ के स्वर्णमहल के द्वार पर ढोल बजेंगे और श्रीराम का मुकुटधारण सम्पन्न होगा । ३८५

❀ वन्द मुनियै मुहनोक्कि वाळ्वेन्दर्
अँन्दै पुहुदर् किडैयूरुण् डायदो
अन्दमिल् शोहत् तळुदहुर रानॅन्कॉल्
शिन्दै तॅळिन्दोय् तॅळिवियॅमक् कॅन्ऱुरैत्तार् 386

वन्त मुनियै–आगत मुनि को; मुकम् नोक्कि–मुख पर देखकर; वाळ् वेन्तर्–तलवारधारी राजा लोगों ने; चिन्तै तॅळिन्तोय्–स्वच्छ मन वाले; अॅन्तै पुकतऱ्कु–हमारे पितृतुल्य दशरथ के आने में; इटैयूरु उण्टायतो–कोई बाधा हो गई क्या; अन्तम् इल् चोकत्तु–अपार शोक के साथ; अऴुत कुरल् तान् अॅन् कॉल्–जो रोने का स्वर आया वह क्या था; अॅमक्कु तॅळिवि–हमें साफ़ बताइए; अॅन्ऱु उरैत्तार्–ऐसा पूछा । ३८६

तलवारधारी नृपों ने आगत वसिष्ठजी के मुख को निहारकर प्रश्न किया कि निश्चल स्वच्छ चित्त वाले ! हमारे पितृतुल्य राजा के इधर आने में कोई बाधा उपस्थित हो गई क्या ? अपार शोक प्रदर्शित करते हुए कोई क्रन्दन-स्वर जो सुनाई दिया वह क्या है । हमें साफ़-साफ़ बताने की कृपा कीजिए । ३८६

❀ वेन्दन् पणियिनाऱ् कैहेशि मॅय्प्पुदल्वन्
पान्दण् मिशैक्किडन्द पार्काप्पा नायिनान्
एन्दु तडन्दो ळिरामन् ऱिरुमडन्दै
कान्द नॊरुमुऱैपोय्क् काडुऱैवा नायिनान् 387

वेन्तन् पणियिनाल्–राजा की आज्ञा से; कैकेचि मॅय् पुतल्वन्–कैकेयी के सत्यनिष्ट पुत्र; पान्तळ् मिचै किटन्त–शेषनाग पर धृत; पार् काप्पान् आयिनान्–भूमि के पति हो गये; तिरु मटन्तै कान्तन्–श्रीलक्ष्मी-पति; एन्तु तट तोळ् इरामन्–उन्नत व विशाल भुजा वाले श्रीराम; ऑरु मुऱै–एक रीति से; काटु पोय् उऱैवान्–वनवासी; आयिनान्–हो गये । ३८७

वसिष्ठ ने उत्तर दिया— राजा की जो आज्ञा हुई है उसके अनुसार कैकेयी का सत्यवादी (या असली) पुत्र शेषशीर्षस्थ इस भूमि के नायक बनेंगे । श्रीलक्ष्मी-कान्त, विशाल और उन्नत भुजा वाले श्रीराम एक क्रम से वनवासी हो जाएँगे । ३८७

❀ कॊण्डाळ् वरमिरण्डुङ् गेहयर्कोन् कॊम्बवट्कुत्
तण्डाद कादर् ऱयरदनुन् दानळित्तान्

ऑण्डार् मुहिलैवनम् बोहॅन् ऱ्रीरुप्पडुत्ताळ्
ॲण्डानुम् वेऱिल्लै ईदडुत्त वाऱॅन्ऱान् 388

केकयर् कोन् कॉम्पु–केकयराज की पुत्री ने; इरण्टुम् वरम् कॉण्टाळ्–दोनो वर माँग लिये; तण्टात कातल् तयरतनुम्–अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले दशरथ ने भी; अवट्कु अळित्तान्–उन्हें दे दिये; ऑळ् तार् मुकिलै–उज्ज्वल मालाधारी मेघ (सम श्रीराम) को; वनम् पोक–वन जाओ; ॲन्ऱु–कहकर; ऑरुप् पटुत्ताळ्–सम्मत कराया; ईतु अटुत्त आऱु–यही वृत्तान्त है; ॲण् वेऱु इल्लै–सोचने-समझने के लिए और कुछ नहीं है; ॲन्ऱान्–कहा। ३८८

उन्होंने आगे विवरण दिया। केकयराज-तनया ने राजा से दो वर माँगे। उन पर अगाध और अविच्छिन्न प्रेम रखनेवाले राजा ने भी उन्हें दो वर दे दिये। उनमें ही एक से कैकेयी ने उज्ज्वलमाला-धारी मेघसम श्रीराम को, 'वन जाओ' कहकर जाने को भी सम्मत करा लिया। इसमें आगे सोचने के लिए या इसके सम्बन्ध में और किसी प्रकार का अनुमान करने के लिए कुछ नहीं है। यही हुआ। —वसिष्ठ ने कहा। ३८८

❀ वारार् मुलैयारु मऱ्ऱुळ्ळ मान्दर्हळुम्
आराद काद लरशर्हळु मन्दणरुम्
पेराद वाय्मैप् पॅरियो नुरैशॅविपुळ्
शाराद मुन्नन् दयरदनैप् पोल्वीऴ्न्दार् 389

वार् आर् मुलैयारुम्–अँगिया-बद्ध स्तन वालियाँ (स्त्रियाँ); मऱ्ऱु उळ्ळ–और अन्य; मान्तर्कळुम्–पुरुष भी; आरात कातल् अरचर्कळुम्–अघट प्रेम रखनेवाले राजा; अन्तणरुम्–ब्राह्मण लोग; पेरात वाय्मै–अचल सत्यवादी; पॅरियोन्–महात्मा का; उरै–कथन; चॅविपुळ् चारात मुन्नम्–कान में पड़ने से पूर्व; तयरतनै पोल् वीऴ्न्तार्–दशरथ के समान नीचे गिरे। ३८९

स्त्रियाँ, जिनके स्तन अँगिया-बद्ध थे, पुरुष, श्रीराम के अत्यंत प्रेमी राजा लोग, और ब्राह्मण लोग, सभी; ज्योंही अचल सत्यवादी महात्मा वसिष्ठजी के कथन उनके कानों में लगे त्योंही दशरथ के समान भूमि पर गिर पड़े। ३८९

❀ पुण्णुऱ्ऱ तीयिऱ् पुहैयुऱ् ऱुयिर्पदैप्प
मण्णुऱ् ऱयर्न्दु मऱुहिऱ् ऱुडम्बॅल्लाम्
कण्णुऱ्ऱ वारि कडलुऱ्ऱ दन्निलैये
विण्णुऱ्ऱ दॅम्मरुङ्गुम् विट्टळ्द पेरोशै 390

उटम्पु ॲल्लाम्–शरीर सब; पुण् उऱ्ऱ तीयिन्–व्रण में आग लगी, जैसे; पुकैयुऱ्ऱु–झुलसकर; उयिर् पतैप्प–प्राणों के छटपटाते; अयर्न्तु–थककर; मण् उऱ्ऱु–भूमि पर पड़कर; मऱुकिऱ्ऱु–लोटे; अ निलैये–उस दशा में; कण् उऱ्ऱ वारि–आँखों से निकला (अश्रु-) जल; कटल् उऱ्ऱतु–बहकर समुद्र में गया; ॲ मरुङ्कुम्–

सब ओर; विट्टु अऴुत–खुलकर जो रोये; पेर् ओचै–वह जोर का स्वर; विण् उऱ्ऱतु–आकाश तक पहुँचा । ३८०

उनके शरीर व्रण में आग लगी जैसे झुलस गये, प्राण छटपटाने लगे। वे थकित होकर भूमि पर लोटने लगे। उस दशा में उनकी आँखों से जो आँसू का प्रवाह निकला वह समुद्र में जा मिला। सब ओर जो वे मुख खोलकर रोये उसका जोर का नाद आकाश से जा मिला। ३९०

❀ माद रुरुङ्गलमु मङ्गलमुम् शिन्दित्तङ्
गोदै पुडैपॅयरक् कूऱ्ऱनैय कण्शिवप्पप्
पाद मलर्पदैप्पत् ताम्बदैत्तुप् पार्शेर्न्दार्
ऊदै यॅऱियं वॉशिपूङ् गॉडिपोल्वार् 391

मातर्–स्त्रियाँ; अरु कलमुम्–बहुमूल्य आभरणों को; मङ्कलमुम्–अहिवात-सूचक आभरणों को भी; चिन्ति–गिराकर; तम् कोतै पुटै पॅयर–केश को बिखरने देते हुए; कूऱ्ऱु अनैय–यम-सम; कण् चिवप्प–आँखों को लाल करते हुए; पातम् मलर् पतैप्प–चरणकमलों के गड़बड़ाने से; ताम् पतैत्तु–खुद छटपटाकर; ऊतै–ऍऱिय–उदीची (ठण्डी) हवा के बहने से; ऑचि–मुरझाकर गिरनेवाली; पू कॉटि पोल्वार्–पुष्पलतायें जैसे; पार् चेर्न्तार्–भूमि पर गिर पड़ीं। ३८१

स्त्रियाँ इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने अपने सारे आभरण, अहिवात-सूचक आभरण तक —उतार फेंक दिया। उनके केश खुलकर बिखर गये। पुरुषों के हृदय-भेदक (यम-सी) आँखें रोने से लाल हो गई। चरण-कमल लड़खड़ाने लगे। वे खुद कंपित होकर उदीची हवा से मुरझायी हुई पुष्पलताएँ जैसे टूटकर भूमि पर गिर पड़ीं। ३९१

❀ आवा वरश नरुळिलने यामॅन्बार्
कावा दऱत्तैयिनिक् कैविडुवोम् यामॅन्बार्
तावाद मन्नर् तलैत्तलैवीऴ्न् देङ्गिनार्
मावादञ् जाय्त्त मरामरमे पोल्हिन्ऱार् 392

तावात मन्नर्–(श्रीराम के प्रति) अबाध (प्रेम वाले) राजा; आ, आ–हाय, हाय; अरचन्–चक्रवर्ती; अरुळ् इलने आम्–दयाहीन हैं; ॲन्पार्–कहते; याम्–हम भी; इनि–अब; अऱत्तै कावातु–धर्म को बिना पाले; कै विट्टुवोम्–छोड़ देंगे; ॲन्पार्–कहते; मा वातम् चाय्त्त–प्रबलप्रभंजन-निहत; मरा मरम् पोल् किन्ऱार्–सालवृक्ष के समान; तलै तलै वीऴ्न्तु–यत्र-तत्र गिरकर; एङ्कितार्–दुखी हुए। ३८२

श्रीराम पर जो राजा अचल प्रेम रखते थे वे भी, यह कहते हुए कि हाय, हाय! चक्रवर्ती भी निर्दय हैं। हम भी धर्म क्यों पालें? छोड़ देंगे, प्रचंड-प्रभंजन-प्रतिहत साल वृक्षों के समान यत्र-तत्र गिरकर रोये। ३९२

किळ्ळयॊडु पूवै यऴुद किळर्माडत्
तुळ्ळुऱैयुम् बूशै यऴुद वुणर्वरियाप्
पिळ्ळै यऴुद पॆरियोरै यॆन्शॊल्ल
वळ्ळल् वनम्बुहुवा नॆन्ऱुरैत्त माट्रत्ताल् 393

वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; वनम् पुकुवान्–वन जाएँगे; ऍन्ऱु उरैत्त माट्रत्ताल्–ऐसा कहे हुए वचन से; किळर्–शोभायमान; माटत्तु उळ् उऱैयुम्–महल के अन्दर रहनेवाले; किळ्ळैयॊटु–शुकों के साथ; पूवै–सारिकाएँ भी; अऴुत–रोईं; पूचै अऴुत–मार्जार रोये; उणर्वु अरिया–अबोध; पिळ्ळै अऴुत–शिशु रोये; पॆरियोरै ऍन् चॊल्ल–बड़ों का क्या कहूँ। ३६३

श्रीराम वन जाएँगे —यह सुनकर सुन्दर सौधों के अंदर रहनेवाले तोते रोये; सारिकाएँ भी रोयीं। बिल्लियाँ रोयीं। अबोध शिशु रोये। फिर बड़ों की हालत का कहना क्या है ? । ३९३

चेदाम्बर् पोदनैय शॆङ्गनिवाय् वॆण्डळवप्
पोदाम्बर् ऱोन्ऱप् पुणर्मुलैमेऱ् पूण्डरळ
मादाम्बर् ऱॆन्ऩ मऴैक्कण्णी रालियुह
नादाम्बर् ऱामऴलै नङ्गैमा रेङ्गिनार् 394

ना पऱ्ऱात मऴलै–जीभ पर अपरिपक्व तोतली बोली वाली; नङ्कैमार्–स्त्रियाँ; चॆम्मै आम्पल्–लाल कुमुद का; पोतु–फूल; चॆम् कनि–लाल बिंबफल; अनैय वाय्–जैसे मुखो में; वॆळ् तळवम् पोतु आम्–श्वेत कुन्दकली से; पल् तोन्ऱ–दाँत प्रकट करते हुए; पुणर् मुलै मेल्–संश्लिष्ट स्तनद्वय पर; पूण्–पहनी हुई; मा तरळम् ताम्पु–श्रेष्ठ मुक्तामाला; अऱ्ऱु ऍन्ऩ–टूटी हो जैसे; मऴै कण् नीर् आलि उक–शीतल आँखों से आँसू की बूँदें गिराते हुए; एङ्किनार्–रोईं। ३६४

अपरिपक्व जीभ से अस्पष्ट मधुर तोतली बोली निकालनेवाली (उच्चकुल की) स्त्रियाँ भी लाल कुमुद और बिंबफल-सम अपने मुख में कुन्दकली-सी दंतावली प्रकट करते हुए, और आभरण-मंडित श्लिष्ट स्तनद्वय पर मुक्तामाला से छूटकर मोती के दाने गिरते है जैसे, जलभरी आँखों से आँसू के कण गिराते हुए रो रही थी। ३९४

आवु मऴुदवदन् कन्ऱऴुद वन्ऱलर्न्द
पूवु मऴदपुनऱ् पुळ्ळऴुद कळ्ळॊऴुहुम्
कावु मऴुद कळिऱऴुद काल्वयप्पोर्
मावु मऴुदनवम् मन्नवनै मानवे 395

अ मन्नवनै मानवे–उन चक्रवर्ती के समान; आवुम् अऴुत–गायें रोईं; अतन् कन्ऱु अऴुत–उनके बछड़े रोये; अन्ऱु अलर्न्त–उसी दिन विकसित; पूवुम् अऴुत–फूल रोये; पुनल् पुळ् अऴुत—जल-पक्षी रोये; कळ् ऒऴुकुम् कावुम्–शहद चूनेवाले उद्यान रोये; कळिऱु अऴुत–गज रोये; काल् वय पोर् मावुम् अऴुतन–ताकतवर पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये। ३६५

गायें भी उन्हीं चक्रवर्ती के समान रोयी। उनके बछड़े रोये। सद्यविकसित फूल रोये। जल-पक्षी रोये। मधुस्रावी वृक्षों वाले उद्यान रोये। गज रोये और सशक्त पैरों वाले युद्ध-अश्व भी रोये। (रोये-मुरझाये, दुखी हुए।)। ३९५

नानीयु मुय्हला मॅन्ऱॅण्णि नायहऩैक्
कानीयु मॅन्ऱुरैत्त कैहेशि युड्गॉडिय
कूनीयु मल्लार् कॉडियार् पिऱरुळरो
मेनीयु मिऩ्ऱु वॅरुनीरे यायिनार् 396

नान्–मैं; नीयुम्–तुम भी; उय्कल आम्–उन्नत होंगे; ॲन्ऱु ॲण्णि–यह सोचकर; नायकनै–(श्रीराम) नायक को; कान् ईयुम्–वनवास दिला दीजिए; ॲन्ऱु उरैत्त–ऐसा जिन्होंने कहा उन; कैकेयियुम्–कैकेयी और; कॉटिय कूनियुम् अल्लाल्–क्रूर कुब्जा के सिवा; कॉटियार् पिऱर् उळरो–निर्मम कोई होंगे; मेनियुम् इन्ऱि–विदेह होकर; वॅरुम् नीरे आयिनार्–केवल जलप्राय हो गये। ३६६

"मैं और तुम दोनो फूलें और फलें" —इस विचार से कैकेयी और कुब्जा दोनो ने षडयंत्र रचकर श्रीराम को वनवास दिलाया। उन दोनो निर्मम स्त्रियों के सिवा वहाँ निर्मम कौन थे ? इसलिए अन्य सभी लोग विदेह वनकर जलप्राय हो गये! (वे शोक से एक दम दुखविगलित हो गये।)। ३९६

तेऱा दऱिवऴिन्दा रॅङ्गुलप्पार् तेरोड
नीऱाहिच् चुण्ण निऱैन्द तॅरुवॅल्लाम्
आऱाहि योडिन्न कण्णी ररुनॆञ्जम्
कूऱाहि योडाद वित्तनैये कुऱ्ऱमे 397

तेऱातु–फिर सचेत न हुए, ऐसे; अऱिवु अऴिन्तार्–जो अचेत हुए; ॲङ्कु उलप्पार्–कहाँ गिनती में आएँगे; तेर् ओट–रथ के दौड़ने से; नीऱु आकि–धूलि उठी; चुण्णम् निऱैन्त–उससे धूलि-भरी; तॅरु ॲल्लाम्–सभी वीथियों में; कण् नीर्–अश्रुजल; आऱु आकि ओटिन–नदी बनकर बहा; अरु नॆञ्चम्–उनके प्यारे हृदय; कूऱु आकि ओटात—खण्ड-खण्ड होकर नहीं भागे; इत्तनैये–इतनी ही; कुऱ्ऱम्–कसर थी। ३६७

जो इस तरह अचेत हो गये कि फिर सचेत होते नही दिखते उनकी गिनती कहाँ है ? (वे अनगिनत है।) रथों के चलने से जो वीथियाँ धूलि-भरी हो गई थीं उन पर लोगों के अश्रुजल की वनी नदियाँ वह रही थीं। उनके प्यारे हृदय के टुकड़े नहीं बने और भागे, इतनी ही कसर थी। ३९७

❀ मण्शॆय्द पाव मुळदॅऩ्बार् मामलर्मेल्
पॅण्शॆय्द पाव मदनिऱ् पॅरिदॆऩ्बार्

पुण्शॅय्द नञ्जॅ विदियॅन्बार् पूदलत्तोर्
कण्शॅय्द पावङ् गडलिऱ् पॅरिदॅन्बार् 398

मण् चॅय्त–पृथ्वी का कृत; पावम् उळतु–कोई पाप है; ॲन्पार्–कहते; मा मलर् मेल् पॅण्–उत्कृष्ट कमल पर स्थित देवी का; चॅय्त पावम्–किया हुआ पाप; अततिल् पॅरितु–उससे बड़ा है; ॲन्पार्–कहते; विति–विधि ने; नॅञ्चॅ पुण् चॅय्ततु–सभी के हृदयों पर घाव किया है; ॲन्पार्–कहते; पूतलत्तोर्–भूलोकवासियों की; कण् चॅय्त पावम्–आँखों का किया हुआ पाप; कटलिन् पॅरितु–सागर से भी विपुल है; ॲन्पार्–कहते (कुछ लोग)। ३९८

लोग विविध विचार प्रकट करते थे। कुछ लोग कहते कि पृथ्वी-देवी ने कोई पाप किया है; और कुछ कहते कि श्रेष्ठ कमल-निवासिनी श्रीदेवी ने उससे बड़ा पाप किया है। विधि ने सबके हृदयों को वेध दिया है —यह कुछ लोग कहते। भूतल के लोगों की आँखों का पाप, जिसकी वजह से उन्हें श्रीराम को जटावल्कल-धारी देखना पड़ा, सागर से भी बड़ा हो गया है। ३९८

❀ आळान् वरद नरशॅन्वा रैयनिनि
मीळा नहर्क्कु विदिकॉडिदॅ कार्णॅन्वार्
कोळाहि वन्दवा कॉऱ्ऱमुडि तानॅन्वार्
माळाद नम्मिन् मनम्वलिया रारॅन्वार् 399

परतन् अरचु आळान् ॲन्पार्–भरत राज नहीं करेगा, कहते; ऐयन्–आर्य; इनि नकर्क्कु मीळान्–अब नगर लौट नहीं आएँगे, कहते; विति कॉटितॆ–विधि क्रूर है; ॲन्पार्–कहते; कॉऱ्ऱम् मुटि तान्–विजयीमुकुट-धारण की बात ही; कोळ् आकि वन्त आऱु–बुरा ग्रह-फल बनके आया, किस प्रकार; ॲन्पार्–कहते; माळात नम्मिन्–यह सुनकर भी जो नहीं मरे हमसे; मनम् वलियार्–कठोरमन; आर् ॲन्पार्–कौन है, कहते। ३९९

'भरत राज्य नहीं करेंगे'; 'आर्य श्रीराम अब नगर नहीं लौटेंगे'; 'विधि बड़ी क्रूर है'; मुकुटधारण की बात ही इस प्रकार का बुरा फल देनेवाला दुर्ग्रह बन गया; 'यह समाचार सुनकर भी जो नहीं मरे, हमसे बढ़कर पत्थरमन कौन हो सकता है?' —ऐसे अनेक विचार उनसे व्यक्त किये गये। ३९९

❀ आदि यरश नरुङ्गे हयन्महण्मेऱ्
कादन् मुदिरक् करुत्तऴिन्दा नामॅन्वार्
शोदै मणवाळन् ऱन्नोडुन् दीक्कानम्
पोदु मदुवन्ऱेऱ् पुहुदु मॅरियॅन्वार् 400

आति अरचन्–हमारे नायक चक्रवर्ती; अरुम् केकयन् मकळ् मेल्–अपनी प्यारी केकयपुत्री पर; कातल् मुतिर–प्रेम की बढ़ती से; करुत्तु अऴिन्तान्–विवेकशून्य हो

गये; अँन्पार्–कहते; चीतै मणवाळन् तन्तोडुम्–सीता के पति के साथ; ती कानम् पोतुम्–हम भी तापक वन में जायँगे; अतु अन्रेल्–वह न हुआ तो; अँरि पुकुतुम्–अग्निप्रवेश करेंगे; अँन्पार्–कहते। ४००

और भी कुछ लोग कहते कि हमारे प्रमुख नायक कैकेयी पर के प्रेमाधिक्य के कारण विवेकहीन मन वाले हो गये। हम श्रीसीतापति के साथ संतापी वन में चले जायँगे। अगर वह संभव नहीं होगा तो आग में गिरकर जल जायँगे। ४००

❀ कैया निलन्दडविक् कण्णीर् मॅळुहुवार्
उय्याळ्पोऱ् कोशलैयॅन् ऱोवादु वॅय्दुयिर्प्पार्
ऐया विळङ्गोवे याऱ्ऱुदियो नीयॅन्बार्
नॅय्या रळ्लुऱ्ऱ दुऱ्ऱारन् नीणहरार् 401

कैयाल् निलम् तटवि–हाथों से धरती को मलकर; कण् नीर् मॅळुकुवार्–आँसुओं से लीपते; पॉत्त कोचलै उय्याळ्–स्वर्णसम कौसल्या जीवित नहीं रहेंगी; अँन्रु–कहते हुए; ओवातु वॅय्तुयिर्प्पार्–निरन्तर गरम उच्छ्वास छोड़ते; इळम् कोवे–लघुराज; ऐया–तात; नी आऱ्ऱुतियो–आप सह सकते हैं क्या; अँन्पार्–कहते; अ नीळ् नकरार्–उस बड़े नगर के वासी; नॅय् आर्–घी-लगी; अळल् उऱ्ऱतु–आग लगी जैसे; उऱ्ऱार्–(बहुत दुख की) स्थिति में पहुँचे। ४०१

कुछ लोग आँसू बहाकर भूमि को अपने हाथों से लीपते। (यह दुख के वर्णन की एक रीति है, जो तमिळ का विशेष मसल है।) कुछ लोग, 'स्वर्ण-सम श्रेष्ठ कौसल्या पुत्र से विलग होकर जी नहीं सकेंगी' —यह कहते हुए गरम निश्वास छोड़ते थे। कुछ लोग लक्ष्मण को पुकारकर कहते कि लघुराज! हमारे प्रभु! आप यह दुख सह सकेंगे क्या? इस तरह उस बड़े नगर के सभी लोग जैसे घी-लगी आग उन पर लगी हो वैसा दुखी हुए। ४०१

तळ्ळूरु वेऱिल्लै तन्महऱ्कुप् पार्कॉळ्वान्
अॅळ्ळूरु तीक्करुम नेर्न्दा ळिवळॅन्नाक्
कळ्ळूरु शॅव्वायक् कणिहयरुङ् गैहेशि
उळ्ळूरु काद लिलळ्पोलॅन् रुळ्ळळिन्दार् 402

कळ् ऊरु–मधुस्रावी; चॅम्मै वाय्–लाल अधरों वाली; कणिकैयरुम्–वेश्याएँ भी; तन् मकऱ्कु–अपने पुत्र के लिए; पार् कॉळ्वान्–भूमि दिलवा लेने के विचार से; कैकेचि–कैकेयी ने; अॅळ् ऊरु–गर्ह्य; ती करुमम्–बुरा काम; नेर्न्ताळ्–किया; तळ्ळूरु वेरु इल्लै–निवारण कुछ नहीं है; अँन्ना–कहकर; इवळ् उळ् ऊरु कातल्–ये अन्तस्थ सच्चा प्रेम वाली; इलळ् पोल्–नहीं हैं तो; अँन्ना–कहकर; उळ् अळिन्तार्–चिन्ताकुलित हुईं। ४०२

(मन न देकर) अधर-सुरा देनेवाली वेश्याएँ भी दुखी हुईं। वे कहतीं

पुण्शॅय्द नञ्जै विदियॅन्वार् पूदलत्तोर्
कण्शॅय्द पावङ् गडलिऱ् पॅरिदॅन्वार् 398

मण् चॅय्त–पृथ्वी का कृत; पावम् उळतु–कोई पाप है; ॲऩ्पार्–कहते; मा मलर् मेल् पॅण्–उत्कृष्ट कमल पर स्थित देवी का; चॅय्त पावम्–किया हुआ पाप; अततिल् पॅरितु–उससे बड़ा है; ॲऩ्पार्–कहते; विति–विधि ने; नॅञ्चॅ पुण् चॅय्ततु–सभी के हृदयों पर घाव किया है; ॲऩ्पार्–कहते; पूतलत्तोर्–भूलोकवासियों की; कण् चॅय्त पावम्–आँखों का किया हुआ पाप; कटलिऩ् पॅरितु–सागर से भी विपुल है; ॲऩ्पार्–कहते (कुछ लोग)। ३९८

लोग विविध विचार प्रकट करते थे। कुछ लोग कहते कि पृथ्वी-देवी ने कोई पाप किया है; और कुछ कहते कि श्रेष्ठ कमल-निवासिनी श्रीदेवी ने उससे बड़ा पाप किया है। विधि ने सबके हृदयों को वेध दिया है —यह कुछ लोग कहते। भूतल के लोगों की आँखों का पाप, जिसकी वजह से उन्हें श्रीराम को जटावल्कल-धारी देखना पड़ा, सागर से भी बड़ा हो गया है। ३९८

❀ आळाऩ् बरद नरशॅऩ्वा रैयनिऩ्ऩि
मीळा नहर्क्कु विदिकॉडिदॅ काणॅऩ्वार्
कोळाहि वन्दवा कॉऱ्ऱमुडि ताऩॅऩ्वार्
माळाद नम्मिऩ् मनम्वलिया रारॅऩ्वार् 399

परतन् अरचु आळान् ॲऩ्पार्–भरत राज नहीं करेगा, कहते; ऐयन्–आर्य; इत्ति नकर्क्कु मीळान्–अब नगर लौट नहीं आएँगे, कहते; विति कॉटिते–विधि क्रूर है; ॲऩ्पार्–कहते; कॉऱ्ऱम् मुटि तान्–विजयीमुकुट-धारण की बात ही; कोळ् आकि वन्त आरु–बुरा ग्रह-फल बनके आया, किस प्रकार; ॲऩ्पार्–कहते; माळात नम्मिन्–यह सुनकर भी जो नहीं मरे हमसे; मनम् वलियार्–कठोरमन; आर् ॲऩ्पार्–कौन हैं, कहते। ३९९

'भरत राज्य नहीं करेंगे'; 'आर्य श्रीराम अब नगर नहीं लौटेंगे'; 'विधि बड़ी क्रूर है'; मुकुटधारण की बात ही इस प्रकार का बुरा फल देनेवाला दुर्ग्रह बन गया; 'यह समाचार सुनकर भी जो नहीं मरे, हमसे बढ़कर पत्थरमन कौन हो सकता है?' —ऐसे अनेक विचार उनसे व्यक्त किये गये। ३९९

❀ आदि यरश ऩ़रुङ्गे हयऩ्महण्मेऱ्
कादन् मुदिरक् करुत्तऴिन्दा नामॅन्बार्
शोदै मणवाळऩ् ऱन्ऩोडुन् दीक्कानम्
पोदु मदुवन्ऱॅऱ् पुहुदु मॅरियॅन्बार् 400

आति अरचन्–हमारे नायक चक्रवर्ती; अरुम् केकयन् मकळ् मेल्–अपनी प्यारी केकयपुत्री पर; कातल् मुतिर–प्रेम की बढ़ती से; करुत्तु अऴिन्तान्–विवेकशून्य हो

गये; ॲन्पार्–कहते; चीतै मणवाळत् तन्नोटुम्–सीता के पति के साथ; ती कानम् पोतुम्–हम भी तापक वन में जायँगे; अतु अन्रेल्–वह न हुआ तो; ॲरि पुकुतुम्–अग्निप्रवेश करेंगे; ॲन्पार्–कहते। ४००

और भी कुछ लोग कहते कि हमारे प्रमुख नायक कैकेयी पर के प्रेमाधिक्य के कारण विवेकहीन मन वाले हो गये। हम श्रीसीतापति के साथ संतापी वन में चले जायँगे। अगर वह संभव नहीं होगा तो आग में गिरकर जल जायँगे। ४००

❀ कैया निलन्दडविक् कण्णीर् मॅळ्हुवार्
उय्याळ्पॉर् कोशलैयॅन् ऱोवादु वॅय्दुयिर्प्पार्
ऐया विळङ्गोवे यारुदियो नीयॅन्बार्
नॅय्या रळ्लुर्र दुर्रारन् नीणहरार् 401

कैयाल् निलम् तटवि–हाथों से धरती को मलकर; कण् नीर् मॅळ्कुवार्–आँसुओं से लीपते; पॊन्न कोचलै उय्याळ्–स्वर्णसम कौसल्या जीवित नहीं रहेगी; ॲन्रु–कहते हुए; ओवातु वॅय्तुयिर्प्पार्–निरन्तर गरम उच्छ्वास छोड़ते; इळम् कोवे–लघुराज; ऐया–तात; नी आर्रुतियो–आप सह सकते हैं क्या; ॲन्पार्–कहते; अ नीळ् नकरार्–उस बड़े नगर के वासी; नॅय् आर्–घी-लगी; अळल् उर्रतु–आग लगी जैसे; उर्रार्–(बहुत दुख की) स्थिति में पहुँचे। ४०१

कुछ लोग आँसू बहाकर भूमि को अपने हाथों से लीपते। (यह दुख के वर्णन की एक रीति है, जो तमिळ का विशेष मसल है।) कुछ लोग, 'स्वर्ण-सम श्रेष्ठ कौसल्या पुत्र से विलग होकर जी नही सकेंगी' —यह कहते हुए गरम निश्वास छोड़ते थे। कुछ लोग लक्ष्मण को पुकारकर कहते कि लघुराज ! हमारे प्रभु ! आप यह दुख सह सकेंगे क्या ? इस तरह उस बड़े नगर के सभी लोग जैसे घी-लगी आग उन पर लगी हो वैसा दुखी हुए। ४०१

तळ्ळूरु वेरिल्लै तन्महर्कुप् पार्कॉळ्वान्
ॲळ्ळूरु तीक्करुम नेर्न्दा ळिवळॅन्नाक्
कळ्ळूरु शॅव्वायक् कणिहयरुङ् गैहेशि
उळ्ळूरु कादलिलळ्पोलॅन् रुळ्ळळिन्दार् 402

कळ् ऊरु–मधुस्रावी; चॅम्मै वाय्–लाल अधरों वाली; कणिकैयरुम्–वेश्याएँ भी; तन् मकर्कु–अपने पुत्र के लिए; पार् कॊळ्वान्–भूमि दिलवा लेने के विचार से; कैकेचि–कैकेयी ने; ॲळ् ऊरु–गर्ह्य; ती करुमम्–बुरा काम; नेर्न्ताळ्–किया; तळ्ळूरु वेरु इल्लै–निवारण कुछ नहीं है; ॲन्ना–कहकर; इवळ् उळ् ऊरु कातल्–ये अन्तस्थ सच्चा प्रेम वाली; इलळ् पोल्–नहीं है तो; ॲन्ना–कहकर; उळ् अळिन्तार्–चित्ताकुलित हुईं। ४०२

(मन न देकर) अधर-सुरा देनेवाली वेश्याएँ भी दुखी हुईं। वे कहतीं

कि अपने पुत्र के लिए राज्य पाने की इच्छा से इन कैकेयी ने भी कितना निंदित और नीच और बुरा काम किया है? इसका कोई निवारण नहीं है। तब वे असल में उनसे मन से प्रेम नहीं करती थीं —यही लगता है। ४०२

❀ निऩ्ऱु तवमियऱ्ऱित् ताऩ्ऱीर नेर्न्ऩदो
अऩ्ऱि युलहत्तु ळारुयिराय् वाऴ्वारैक्
कॊऩ्ऱु कळैयक् कुऱित्त पॊरुळदुवो
नऩ्ऱु वरङ्गॊडुत्त नायहऩ्ऱ ऩॆण्णमॆऩ्बार् 403

वरम् कॊदुत्त—वर देनेवाले; नायकऩ् तऩ् ऎण्णम्—नायक का मतलब; ताऩ् निऩ्ऱु—आप जाकर; तवम् इयऱ्ऱि—तपस्या करके; तीर—प्राण छोड़ने का; नेर्न्ततो—सोचकर क्या; अऩ्ऱि—वह नहीं तो; उलकत्तुळ्—संसार में; आर् उयिराय्—प्यारे प्राण-सम; वाऴ्वारै—जीनेवाले प्रजाजनों को; कॊऩ्ऱु—मारकर; कळैय—दूर करने; कुऱित्त पॊरुळ् अतुवो—किया गया संकल्प है; नऩ्ऱु—बहुत अच्छा रहा; ऎऩ्पार्—कहते। ४०३

कुछ लोग कुछ निष्ठुर वचन कहते— राजा ने जो वर दिया उसके पीछे उनका विचार क्या है? वे क्या तपस्या करने जाकर अपने प्राणों को छोड़ना चाहते हैं या अपने प्राणप्यारे प्रजाजनों को मरवाने का उनका विचार है? । ४०३

❀ पॆऱ्ऱुडैय मण्णवळुक् कीन्दु पिऱन्दुलहम्
मुऱ्ऱुडैय कोवैप् पिरियादु मॊय्त्तीण्डि
उऱ्ऱुऱैदुम् यारु मुऱैयवे शिऩ्ऩाळिल्
पुऱ्ऱुडैय काडॆल्ला नाडाहिप् पोमॆऩ्बार् 404

पॆऱ्ऱु उटैय मण्—(वर द्वारा) प्राप्त भूमि को; अवळुक्कु ईन्तु—उन्हें देकर; यारुम्—हम सभी कोई; पिऱन्तु—जन्म (-सिद्ध अधिकार) से; उलकम् मुऱ्ऱुम्—सभी भुवनों के; उटैय कोवै—स्वामी राजा (राम) को; पिरियातु—अलग न छोड़कर; मॊय्त्तु ईण्टि—उनसे लगे एकत्र होकर; उऱ्ऱु उऱैतुम्—मिले रहेंगे; उऱैयवे—वैसे रहने से; चिल नाळिल्—कुछ दिनों में; पुऱ्ऱु उटैय काटु ऎल्लाम्—बाँबियों से पूर्ण जंगल सब; नाटु आकि पोम्—पुर बन जायगा; ऎऩ्पार्—कहते। ४०४

और कुछ लोग कहते कि ठीक! कैकेयी को वर द्वारा यह भूमि मिली है। लेने दो। पर हम जन्मसिद्ध अधिकार वाले राजा राम से अलग न होकर उनसे लगे रहकर वन मे चले जायँगे। वहाँ जाकर रहेंगे तो कुछ ही दिनों में वह वन पुर बन जायगा। बाँबियाँ महलों में परिवर्तित हो जाएँगी। ४०४

❀ ऎऩ्ऩे निरुब नियऱ्कै यिरुन्दवा
तऩ्ऩे रिलाद तलैमहऱ्कुत् तारणियै

मुन्ऩे कॉडुत्तु मुऱैतिऱम्बत् तम्बिक्कुप्
पिन्ऩे कॉडुत्ताऱ् पिऴैयादो मॅय्यॅन्बार् 405

तारणियै–धरणी को; मुन्ऩे–पहले; तन् नेर् इलात–जिनका सादृश्य अन्यत्र नहीं, उन; तलै मकऱ्कु–नायक और ज्येष्ठ पुत्र को, देकर; पिन्ऩे–बाद; मुऱै तिऱम्प–क्रम तोड़कर; तम्पिक्कु कॉटुत्ताल्–उनके छोटे भाई को दे दे तो; मॅय् पिऴैयातो–सत्य भ्रष्ट नहीं होगा क्या; निरुपन् इयऱ्कै–राजा का स्वभाव भी; इरुन्त आऱु ॲन्ऩे–रहता किस प्रकार का है; ॲन्पार्–कहते । ४०५

कुछ लोगों ने बहुत पते का प्रश्न पूछा । नरपति तो पहले धरणी को अप्रमेय नायक अपने श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम को दिया । फिर मुकरकर अब उनके छोटे भाई को देते हैं । तो क्या यह सत्य से भ्रष्ट होना नहीं है ? चक्रवर्ती की प्रकृति भी कैसी विचित्र है ? । ४०५

कोदै वरिविऱ् कुमरऱ् कॉडुत्तनिल, मादै महऩ्पुणर वॆण्णिये वञ्जित्त
पेदै शिऱुवऩैप् पिऩ्पार्त्तु निऱ्कुमे, शीदै पिरियिनुन्दाऩ् तीरा डिरुवॆन्बार् 406

कोतै–विजयमाला से अलंकृत; वरि विल्–बन्धनयुक्त धनु के; कुमरन् कॉटुत्त–कुमार को दी गई; निलम् मातै–भूमिदेवी का; मकन् पुणर ॲण्णि–मेरा पुत्र पति हो, यह सोचकर; वञ्चित्त–(जिन्होंने अपने पति को) धोखा दिया उन; पेतै चिऱुवनै–जड़मति (कैकेयी के) पुत्र को; तिरु–श्रीदेवी; पिन् पार्त्तु निऱ्कुमे–मुड़कर देखेगी और स्थिर रहेगी क्या; चीतै पिरियिनुम्–सीता विलग हो (रह) जाएँगी तो भी; तान् तीराळ्–वह नहीं बिछुड़ेंगी; ॲन्पार्–कहते । ४०६

कुछ लोग विस्मय करते कि क्या राज्यश्री, जो विजयीमाला से अलंकृत बंधनयुक्त धनुर्धर श्रीराम की वाग्दत्ता हो गई थीं, और जिसका अपने पुत्र भरत को बनाना चाहकर अपने पति को जड़मति कैकेयी ने ठग दिया, अब भरत पर मुड़कर भी दृष्टिपात करेंगी और उनके अधीन रहेंगी ? सीता भी चाहें तो राम से अलग रह जायँ पर राज्यलक्ष्मी उनको नहीं छोड़ेंगी । (भरत राज्य पर शासन नहीं कर सकेगा —यह संकेत है ।) । ४०६

* उन्दादु नॆय्वार्त् तुदवादु कालॆऱिय
नन्दा विळक्कि नडुङ्गुहिन्ऱ नङ्गैमार्
शॆन्दा मरैत्तडङ्गट् चॆव्वि यरुणोक्कम्
अन्दो पिरिदुमो वाविदिये योवॆन्बार् 407

उन्तातु–बिना उकसाये; नॆय् वार्त्तु उतवातु–घी डालकर सहायता किये बिना; काल् ॲऱिय–वात के बहने से; नटुङ्कुकिन्ऱ–काँपनेवाले; नन्ता विळक्किन्–अविरत जलते दीप के समान; नङ्कै मार्–उच्चकुल की स्त्रियाँ; अन्तो–हन्त; चॆम् तामरै तट कण्–लालकमल से विशाल नेत्रों की; चॆव्वि–सुन्दर; अरुळ् नोक्कम्–कृपादृष्टि से; पिरितुमो–वंचित हो जायँगे क्या; आ–हाय; वितियेयो–हमारा दुर्भाग्य है क्या; ॲन्पार्–कहतीं । ४०७

कुछ उच्च कुल की स्त्रियाँ उन अविरत जलनेवाले दीपों के समान थीं जिसकी वाती उकसायी नहीं गई हो और जिसमें घी (तेल) नहीं डाला गया हो, और जो प्रवल वेग से वहनेवाली हवा के सामने काँपते हैं। वे वैसे काँपने लगीं। वे इस वात का दुख करने लगीं कि अव वे श्रीराम के कमलसम आँखों की कृपापूर्ण सुन्दर दृष्टि से वंचित हो जायँगी। वे पछताने लगीं कि हन्त ! अब उनकी कृपादृष्टि के वगैर जी सकेंगी क्या ? हाय ! यह क्या हमारा दुर्भाग्य हुआ ? । ४०७

❀ केट्टा निळैयोऩ् किळर्ञालम् वरत्ति नाले
मीट्टा ळळित्ताळ् वऩन्दम्मुऩिऩ् वॆम्मै मुऱ्ऱित्
तीट्टाद वेऱ्कट् चिऱ्ऱायॆऩ याव रालुम्
मूट्टाद कालक् कडैत्तीयॆऩ मूण्डॆ ळुन्दाऩ् 408

तीट्टात वेल् कण्–बिना पैनाये (ही तीक्ष्ण रहनेवाले) भाले-सी आँखों की; चिऱ्ऱाय्–छोटी माता ने; तम् मुऩिऩ्–मेरे भाई के प्रति; वॆम्मै मुऱ्ऱि–द्वेष वढ़ाकर; किळर् ञालम्–उनकी अपनी रहनेवाली भूमि को; वरत्तिऩाले–वर के व्याज से; मीट्टाळ्–उनसे छीन लेकर; वतम् अळित्ताळ्–वनवास दे दिया; ॲऩ–यह वात; केट्टाऩ् इळैयोऩ्–अनुज (लक्ष्मण) ने सुना; यावरालुम्–किसी से; मूट्टात–न प्रज्वलित; कालम् कटै ती ॲऩ–युगान्त की अग्नि के समान; मूण्टु ॲळुन्ताऩ्–क्रोधोन्मत्त हो उठे। ४०८

लक्ष्मण के कानों में यह समाचार पड़ा। 'सौतेली माता ने जिनकी आँखें स्वाभाविक रूप से भाले के समान तीक्ष्ण है, मेरे वड़े भाई से वढ़ते द्वेष के कारण उनके अधिकार के इस राज्य को छीनकर उनको वनवास दिया' —यह सुनकर वे स्वयं, विना किसी के द्वारा प्रज्वलित हो, उठनेवाले प्रलयांत अनल के समान क्रोधोन्मत्त हो उठे। ४०८

कण्णिऱ् कडैत्तीयुह नॆऱ्ऱियिऱ् कऱ्ऱै नाऱ
विण्णिऱ् चुडरुञ् जुडर्नाणमॆय् नीर्वि रिप्प
उण्णिऱ् कुमुयिर्प् पॆऩ्ऩुमूदै पिऱक्क निन्ऱ
अण्णऱ् पॆरियोऩ् ऱऩदादियिऩ् मूर्त्ति यॊत्ताऩ् 409

कण्णिल् कटै ती उक–आँखों से युगान्त की (सी) अग्नि प्रकट होती थी; नॆऱ्ऱियिल् कऱ्ऱै–भाल पर भौंहें; नाऱ–चढ़ गईं; मॆय्–शरीर; नीर्–स्वेदजल; विरिप्प–अधिक परिमाण में निकालने लगा तब; उळ् निऱ्कुम्–भीतरी; उयिर्प्पु ॲऩ्ऩुम्–श्वास का; ऊतै पिऱक्क–प्रवल पवन प्रकट हुआ, तव; विण्णिल् चुटरुम्–आकाश में दीप्त; चुटर् नाण–सूर्य भी लजा जाए, ऐसा; निऩ्ऱ–(उग्र रूप में) खड़े जो रहे; अण्णल् पॆरियोऩ्–वड़े महिमावान (लक्ष्मण); तततु आतियिल् मूर्त्ति ऑत्ताऩ्–अपने आदि (अनन्तनाग के) रूप में जैसे लगे। ४०९

आँखों से प्रलयकाल की-सी आग निकलने लगी। भौंहें भाल पर

चढ़ गई। शरीर स्वेद से भीग गया। भीतर से साँसें आँधी के समान आने लगीं। उनको देखकर आकाशचारी तेजोमय सूर्य भी मानो लज्जा से ठिठक गया। इस उग्ररूप में स्थित लक्ष्मण, उनके, असली आदि रूप अनंतनाग के समान लगे। ४०९

शिङ्गक् कुरुळैक् किडुतीञ्जुवै यून् नायिन्
वॆङ्गट् चिरुकुट् टनुक्कूट्ट विरुम्बि नाळे
नङ्गैक् करिविन् रिरनन्रिदु नन्रि दॆन्नाक्
कङ्गैक् किरैवन् कडहक्कै पुडैत्तु नक्कान् 410

कङ्कैक्कु–गंगा के देश के; इरैवन्–पति (लक्ष्मण); चिङ्कम् कुरुळैक्कु–सिंहशावक को; इटु–देने योग्य; तीम् चुवै ऊनै–मधुर स्वाद के मांस को; वॆम् कण्–भयंकर आँख वाले; नायिन् चिरु कुट्टनुक्कु–कुत्ते के छोटे पिल्ले को; ऊट्ट–खिलाने को; विरुम्पिनाळे–चाहती हैं; नङ्कैक्कु–इस स्त्री की; अरिविन् तिरम्–बुद्धि का कौशल; नन्रु इतु–अच्छा है; नन्रु इतु–अच्छा है; ॲन्ना–कहकर; कटकम् कै पुटैत्तु–कंकणधारी हाथों को पीटते हुए; नक्कान्–ठठाकर हँसे। ४१०

गंगा के देश के पति वे, 'सिंहशावक के योग्य स्वादिष्ट मांस को लेकर क्रूराक्ष कुत्ते के पिल्ले को देना चाहती हैं वे देवी! उनकी बुद्धिमानी भी बड़ी अच्छी रही, अच्छी रही', यह कहते हुए तालियाँ पीटकर हँस उठे। ४१०

❀ शुट्रारन्द कच्चिर् चुरिहैपुडै तोन्र वार्त्तु
विट्राङ्गि वाळिप् पॆरुम्बुट्टिल् पुरत्तु वीक्किप्
पट्रारन्द शॆम्बॊन् कवशम्बत्ति मेरु वाङ्गोर्
पुट्रा मतवोङ् गियतोळॊडु मार्बु पोर्क्क 411

चुट्रु आर्न्त कच्चिल्–वलयित कर बँधे कमरबन्द में; चुरिकै–करवाल को; पुटै तोन्र आर्त्तु–पार्श्व में प्रकट बाँधकर; विल् ताङ्कि–(बाँयें हाथ में) धनु लेते हुए; पॆरु वाळि पुट्टिल्–बड़ा तूणीर; पुरत्तु वीक्कि–पीठ पर कस कर; पट्रु आर्न्त–चुस्त; चॆम् पॊन् कवचम्–चोखे स्वर्ण का कवच; पत्ति मेरु ओर पुट्रु आम्–(इसके सामने) हिमालय एक बाँबी है; ॲन्न ओङ्किय–ऐसा कहने योग्य रीति से उन्नत; तोळॊटु–कंधों के साथ; मार्पु–वक्ष को भी; पोर्क्क–ओढ़ते हुए (पहनकर)। ४११

वे युद्ध के लिए लस थे। कमरबंद में बँधकर तलवार लटक रही थी। बायें हाथ में धनुष, पीठ पर वड़ा तूणीर, और हिमालय को भी अपने सामने बाँबीसम दिखनेवाला वना दें ऐसे उन्नत कंधों और वक्ष को ढँकने वाला चोखे स्वर्ण का कवच —इनके साथ—। ४११

अडियिर् चुडर्पॊर् कळलार्हलि नाण वार्प्पप्
पिडियिर् रडवुञ् जिलैनाण्पॆरुम् पूश लोशै

इडियिऱ् ऱॉडरक् कडलेऴु मड्डुत्तु ञाल
मुडिविऱ् कुमुऱुम् मऴैमुम्मयिऩ् मेऩ्मु ऴङ्ग 412

अटियिल् चुटर्–पैरों में चमकनेवाली; पॉन् कऴल्—स्वर्ण-पायल; आर् कलि नाण–सागर-घोष को लज्जित करते हुए; आर्प्प–शब्द करे; पिटियिल् तटवुम्–(उँगलियों से) पकड़कर डोरी खींचने से; चिलै नाण्–धनु की प्रत्यंचा का; पेरु पूचल् ओचै–बहुत वड़ी ध्वनि (जो उठी); इटियिन् तॉटर–वज्रघोष के समान लगातार उठे; ञालम् मुटिविल्–भुवनों के नाश के कल्पान्त में; कटल् एऴुम् मट्टुत्तु–समुद्र, सातों को पीकर; कुमुऱुम्–गरजनेवाले; मऴैयिन् मेल्–मेघों से बढ़कर; मुम्मै मुऴङ्क–तिगुना शोर मचावे, ऐसा। ४१२

उनके पैरों में स्वर्ण-पायल बँधी थी जिसकी ध्वनि समुद्रगर्जन को भी हरा रही थी। धनुष की टंकार, जो उन्होंने अपनी उँगलियों से डोरी पकड़कर खीचने से उठी, वज्रगर्जन के समान ध्वनित हो रही थी। दोनो ध्वनियाँ मिलकर युगांतकाल के, जब सारे लोक मिट जाते है, सातों समुद्रों का जल पीकर गरजनेवाले मेघों के गर्जनध्वनि से तिगुनी जोर की थी। ४१२

वाऩुन् निलनुम् मुदलीऱिल् वरम्बिल् पूदम्
मेनिऩ्ऱु कीऴ्हाऱुम् विरिन्दऩ वीऴ्व पोलत्
ताऩुन् दनदम् मुऩ्ऩुमल्लदु मुम्मै ञालत्
तूऩु मुयिरु मुडैयार्ह ळुळैन्दों दुङ्ग 413

वाऩुम् निलऩुम्–आकाश और धरती; मुतल् ईऱिल्–आदि और अन्तिम; मेल् निऩ्ऱु कीऴ् काऱुम्–ऊपर से नीचे तक; विरिन्तऩ–व्याप्त; वरम्पु इल् पूतम्–अनन्त भूत; वीऴ्व पोल–मानो मिट रहे है, ऐसा हो गये; मुम्मै ञालत्तु–(उसे देख) तीनो लोकों में; ताऩुम् तन तम्मुऩुम् अल्लतु–आप (लक्ष्मण) और अपने ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम के सिवा; ऊऩुम् उयिरुम् उटैयार्कळ्–शरीर और प्राणों वाले जीव; उळैन्तु–डरकर; ऑतुङ्क–(छिपने को) हटकर भाग जाएँ, ऐसा। ४१३

ऊपर आकाश से नीचे भूमि तक व्याप्त पाँचों भूतों का नाश होने वाला है ऐसा समझकर त्रिभुवनवासी जीवधारी सव, श्रीराम और लक्ष्मण को छोड़, डरकर छिपने का स्थान ढूँढ़कर भागने लगें, ऐसा— (लक्ष्मण का भयंकर रूप था)। ४१३

❀ पुविप्पावै परङ्गॉडप् पोरिल्वन् दोरै यॅल्लाम्
अविप्पानु मवित्तव राक्कयै यण्ड मुऱ्ऱक्
कुविप्पानु मिन्ऱॆन् कुणक्कोविनैक् कोऱ्ऱमौलि
कविप्पानु निन्ऱे निदुकाक्कुनर् कामि नॆन्ऱान् 414

इऩ्ऱु–आज; पोरिल् वन्तोरै ऍल्लाम्–युद्ध में आनेवाले सभी को; पुवि पावै परम् कॅट–भूमिदेवी का भार दूर करते हुए; अविप्पानुम्–मार मिटाने के हेतु और;

अवित्तवर् आक्कैयै–ऐसा मारे गये लोगों के शरीरों के; अण्टम् मुट्ट्र कुविप्पानुम्–आकाश को छूते हुए ढेर लगाने के लिए; अँन् कुणम् कोवितै–(बाद) मेरे गुणपूर्ण राजा (राम) को; कॉट्ट्रम् मौलि कविप्पानुम्–विजयी किरीट पहनाने के निमित्त; नित्रेन्–सन्नद्ध खड़ा हूँ; इतु काक्कुत्तर्–इसको रोक सकनेवाले; कामिन्–आकर रोको; अँन्ट्रान्–ललकारा। ४१४

उन्होंने ललकारा। अब मैं, युद्ध करने आनेवालों को, भूभार-निवारण करते हुए मारने, और उनकी लाशों के आकाशस्पर्शी ढेर लगाने और उसके बाद मेरे गुणोन्नत श्रीराजाराम को विजयमुकुट पहनाने के लिए सन्नद्ध खड़ा हूँ। जो रोकना चाहें वे आवें। ४१४

विण्णाट्टवर् मण्णवर् विज्जयर् नाहर् मट्ट्रुम्
अँण्णाट्टवर् यावरु निट्क्वोर् मूव राहि
मण्णाट्टुनर् काक्कुनर् नीक्कुनर् वन्द पोदुम्
पॅण्णाट्ट मॉट्टे त्तिप्पेरुल हत्तु ळॅन्ना 415

विण् नाट्टवर्–स्वर्गवासी; मण्णवर्–भूलोकवासी; विज्चैयर्–विद्याधर; नाकर्–नाग लोग (पातालवासी); मट्ट्रुम् अँण् नाट्टवर् यावरुम्–और भी दूसरे (लोक) समझे जानेवाले लोकों के सभी वासी; निट्क–एक ओर रहें; ओर् मूवर् आकि–परमश्रेष्ठ त्रिमूर्ति बने; मण् नाट्टुत्तर्, काक्कुनर् नीक्कुत्तर्–भुवन की सृष्टि, पालन और संहार करते है; वन्त पोतुम्–वे आएँ तो भी; इ पेर् उलकत्तुळ्–इस विशाल संसार में; इत्ति–अब; पॅण् नाट्टम् ऑट्टेन्–एक नारी का मनचीता होने नहीं दूँगा; अँन्ना–कहते हुए। ४१५

स्वर्गवासी, भूलोकवासी, विद्याधर, पातालवासी और अन्य लोक-संज्ञित सभी लोकों के सभी वासियों को छोड़ो एक ओर; स्वयं सृष्टि, स्थिति और संहार का काम करनेवाले परमश्रेष्ठ त्रिदेव भी क्यों न आएँ, मैं कदापि एक नारी के संकल्प को चरितार्थ होने नहीं दूँगा। ४१५

❀ कालैक् कदिरो नड्डुवुट्ट्रदोर् वॅम्मै काट्टि
ञालत् तवर्को महत्तन्नह रत्तु नाप्पण्
मालैच् चिहरत् तनिमन्दर मेरु मुन्दै
वेलैत् तिरिहिन् ट्ट्रुपोट्ट्रिरि हिन्ट्र वेलै 416

कालै कतिरोन्–प्रातःकालीन सूर्य; नट्टु उट्ट्रतु–आकाश-मध्य आया; ओर् वॅम्मै काट्टि–तब का एक ताप प्रकट करते हुए; ञालत्तवर् को मकन्–लोकों के चक्रवर्ती के पुत्र; अ नकरत्तु नाप्पण्–उस नगर के मध्य; मालै चिकरम्–श्रेणीबद्ध शिखरों के साथ; तत्ति मत्तरम्–अनुपम मन्दर; मेरु–मेरुपर्वत का अंश; मुन्तै–पहले; वेलै तिरिकिन्ट्रतु पोल्–(क्षीर-) सागर में जैसा घूमता था; तिरिकिन्ट्र वेलै–वैसा घूमते जब रहे, तब। ४१६

प्रातःकालीन सूर्य के समान रहे लक्ष्मण अब आकाशमध्य के सूर्य के

समान हो गये। उनमें उतना क्रोधताप पैदा हो गया। भुवनपति चक्रवर्ती दशरथ के उस नगर के मध्य वे उस शिखरबहुल मेरु के (अंश-भूत) मंदरपर्वत के समान घूम रहे थे जो पहले क्षीरसागर मथते हुए घूमा था। ४१६

❀ वेऱ्ऱुक् कॊडियाळ् विळैवित्त विनैक्कु विम्मित्
तेऱ्ऱत् तॆळिया दयर्शिऱ्ऱवै पालि रुन्दान्
आऱ्ऱऱ् ऱुणैत्तम्बि तन्विऱ्पुय लण्ड कोळम्
कीऱ्ऱुऱ् ऱुडैयप् पडुनाणुरु मेरु केळा 417

वेरु कॊटियाळ्–रुख बदलकर जो अब निर्मम बन गई हैं, उनके; विळैवित्त–कृत; विनैक्कु–उत्पात से; विम्मि–सिसकती हुई; तेऱ्ऱ तॆळियातु–धीरज बँधाने पर भी धीरज न धरकर; अयर्–लटनेवाली; चिऱ्ऱवै पाल्–छोटी माता (सुमित्रादेवी) के पास; इरुन्तान्–जो रहे (वे श्रीराम); आऱ्ऱल्–बलवान; तुणै तम्पि तन्–साथी, छोटे भाई का; विल् पुयल्–धनु रूपी मेघ से; अण्ट कोळम् कीऱ्ऱु उऱ्ऱु उटैय–अण्डगोल चिरकर टुकड़े-टुकड़े हो जाय ऐसा; पटु–उत्पन्न; नाण् उरुम् ऐरु–टंकार रूपी (मेघ-) गर्जन; केळा–सुनकर। ४१७

तब श्रीराम अपनी छोटी विमाता सुमित्रा के पास उनको धीरज बँधाते हुए रहते थे। निर्मम बनी कैकेयी के दुष्कृत्य से सिसकनेवाली वे धैर्य का अवलंबन नहीं कर पा रही थी। उस स्थिति में श्रीराम ने सुना कि उनके सहचर भाई के धनु रूपी मेघ से ऐसी टंकार रूपी गर्जन निकल रहा है जिससे अंडगोल ही फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। ४१७

❀ वीऱाक् कियपॊऱ् कलन्विल्लिड वार मिन्न
माऱात् तनिच्चॊऱ् ऱुळिमारि वळङ्गि वन्दान्
काऱाक्क निमिर्न्दु पुहैन्दु कन्नऱु पॊङ्गुम्
आऱाक् कन्नलाऱ् ऱुमोरञ्जन मेह मॆन्न 418

वीरु आक्किय–विशिष्ट रूप से निर्मित; पॊन् कलन्–स्वर्णाभरण; विल् इट–इन्द्रधनुष की-सी आभा छिटक रहे थे; आरम् मिन्न–मोतियों के हार चमके; काल् ताक्क–हवा के आघात से; निमिर्न्तु पुकैन्तु–प्रज्वलित होकर धुएँ के साथ; कन्नऱु पॊङ्कुम्–ज्वाला के साथ उठनेवाली; आऱात कन्नल्–न बुझनेवाली आग को; आऱ्ऱुम्–शान्त करने में समर्थ; ओर् अञ्चनम् मेकम् ऎन्न–एक काले मेघ के समान; माऱात–जिनको सुनकर लोग विपरीत नहीं जा सकते ऐसे; तनि चॊल्–श्रेष्ठ वचन रूपी; तुळि मारि–बूँदों की वर्षा; वळङ्क–करने; वन्तान्–पधारे। ४१८

वे वहाँ चले। उनके विशेष रूप से निर्मित आभरण इन्द्रधनुष-सम विविध रंग के प्रकाश बिखेर रहे थे। मुक्तामालाएँ चमक रही थीं। वे ऐसे काले मेघ के समान आये जो हवा की सहायता पाकर भभक उठकर धुएँ के साथ अदम्य रीति से जलनेवाली अग्नि को शांत करने में समर्थ हो और जो अवार्य श्रेष्ठ वचन रूपी बूँदों की वर्षा करने आता हो। ४१८

❀ मिन्नौत्त शीऱ्ऱक् कनल्विट्टु विळङ्ग निन्ऱ
पॊन्नौत्त मेनिप् पुयलौत्त तडक्कै यानै
ऎन्नत्त नॊन्नी यिऱैयेनु मुनिन्दि लादाय्
सन्नत्त नाहित् तनुवेन्दुदऱ् केदु वॆन्ऱान् 419

मिन् ऑत्त–बिजली के समान; चीऱ्ऱम् कनल् विट्टु–कोपाग्नि निकालते हुए; विळङ्क निन्ऱ–सबको वह स्थिति कराते हुए खड़े (जो) रहे उनको; पॊन् ऑत्त मेनि–और स्वर्णवर्ण-शरीरी; पुयल् ऑत्त तट कैयान–मेघ-सम विशाल हाथों वाले उनको; ऎन् अत्तन्–मेरे तात; इऱैयेनुम् मुनिन्तु इलाताय्–किंचित भी कोप न करनेवाले; नी–तुम; चन्नत्तन् आकि–युद्धसन्नद्ध होकर; तनु एन्तुतऱ्कु–धनु उठा लेने का; एतु ऎन–हेतु क्या है; ऎन्ऱान्–पूछा। ४१६

आते ही उन्होंने बिजली के समान क्रोधाग्नि प्रकट करते हुए कुपित रहनेवाले, स्वर्णसम शरीर और मेघसम हाथों वाले लक्ष्मण से प्रश्न किया कि मेरे तात ! तुमने कभी ऐसा कोप नहीं किया था। अब युद्धसन्नद्ध ही हो गये हो और तुमने हाथ में धनु भी उठा लिया है। इसका हेतु क्या है ? । ४१९

❀ मॆय्यैच् चिदैवित्तु निन्मेन्मुऱै नीत्त नॆञ्जम्
मैयिऱ् करिया ळॆदिर्निन्नैयम् मौलि शूट्टल्
शॆय्यक् करुदित् तडैशॆय्हुनर् देव रेनुम्
तुय्यैच् चुडुवॆङ् गनलिऱ्चुडु वान्ऱु णिन्दॆन् 420

मॆय्यै चितैवित्तु–सत्य की हत्या करके; नित् मेल् मुऱै नीत्त–आपका परम्परागत स्वत्व का क्रम तुड़ानेवाले; नॆञ्चम् मैयिन् करियाळ्–चित्त (जिसका) अंजन से काला है उसके; ऎतिर्–सामने ही; निन्नै–आपका; अ मौलि चूट्टल् चॆय्य–वह मुकुट धारण कराना; करुति–सोचकर; तटै चॆय्कुनर्–बाधा देनेवाले; तेवरेनुम्–देव भी हों; तुय्यै चुटु–रुई को जलानेवाली; वॆम् कनलिन्–भयंकर आग के समान; चुटुवान् तुणिन्तेन्–उनको जलाने का निश्चय किया है। ४२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया— जिस कैकेयी ने सत्य का गला घोंट दिया, और आपका परंपरागत स्वत्वक्रम छीन लिया उस अंजनसम काले मन वाली कैकेयी के देखते, उसके सामने ही मैंने आपको मुकुट पहनाने का संकल्प कर लिया है। उसको रोकनेवाले चाहे देवता ही क्यों न हों उनको रुई को जलानेवाली आग के समान जलाकर राख बनाने को ठान लिया है। ४२०

वलक्कार्मुह मॆन्कैय दाहवव् वानु ळोरुम्
विलक्कारवर् वन्दु विलक्किनु मॆन्कै वाळिक्
किलक्कावॆरि वित्तुल हेळिनो डेळु मन्नर्
कुलक्कावलु मिन्ऱुनक् कियान्ऱरक् कोडि यॆन्ऱान् 421

वलम् कार्मुकम्–वलवान कार्मुक; ॲन् कैयतु आक–मेरे हाथ में रहता है, तब; अ वान् उळोरुम्–वे स्वर्गवासी देवता भी; विलक्कार्–मुझे नहीं रोकेंगे; अवर् वन्तु विलक्कितुम्–वे आकर रोकें तो भी; ॲन् कै वाळिकट्कु–मेरे हाथ के अस्त्र का; इलक्कु आ(क)–लक्ष्य बनकर; ॲरिवितु–मिटाकर; उलकु एऴिनोटु एऴुम्–लोक सात और सात, चौदहों को; मन्नर् कुलम् कावलुम्–उनके राजाओं का अधिकार भी; इन्रु उनक्कु यान् तर–मैं आज आपको दूंगा और; कोटि–ले लीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। ४२१

लक्ष्मण ने आगे कहा— जब तक सबल कार्मुक मेरे हाथ में है तब तक वे स्वर्गलोक-वासी देवगण भी मुझे रोकने नहीं आयेंगे। आयेंगे तो भी उनको अपने बाणों का निशान बनाकर जला दूंगा और उनको राख बना दूंगा। मैं चौदहों लोकों को और उनमें रहनेवाले राजाओं के अधिकार को आपका बना दूंगा। आप ग्रहण कर लीजिए। ४२१

※ इळैयानिदु	कूऱ	विराम	नियॆन्द	नीदि
वळैयावरु	नन्नॆऱि	नित्तऩ्ड़ि	वाहु	मन्ऱे
उळैयावऱम्	वऱ्ऱिड	वूऴ्वऴु	वुऱ्ऱ	शीऱ्ऱम्
विळैयाद	निलत्तुनक्	कॆङ्ङन्	विळैन्द	दॆन्ऱान् 422

इळैयान्–अनुज के; इतु कूऱ–यह कहने पर; इरामन्–श्रीराम; इयैन्त नीति–सर्वसम्मत नीति; वळैयातु वरुम्–जिसमें टल नहीं जाती; नल् नॆऱि–उस मार्ग में; निन् अऱिवु आकुम् अन्ऱे–तुम्हारी बुद्धि चलनेवाली है न; उळैया अऱम्–अचल धर्म को; वऱ्ऱिट–मिटाते हुए; ऊऴ् वऴुवु उऱ्ऱ चीऱ्ऱम्–क्रम का व्यतिक्रम करनेवाला क्रोध; विळैयात निलम्–न होनेवाले स्थान; उनक्कु–तुममें; ॲङ्ङन् विळैन्ततु–क्योंकर हुआ; ॲन्ऱान्–पूछा। ४२२

जब अनुज ने यह कहा तब श्रीराम ने पूछा कि भाई! तुम्हारी मति उसी अच्छे मार्ग में चलनेवाली है न जो सर्वसम्मत-नीति से युक्त और बिना वक्र हुए चलता आता है? फिर अब यह धर्मनाशक और क्रमभंजक क्रोध, अपने लिए अनुचित प्रदेश, तुममें उत्पन्न कैसे हुआ? (तमिऴ का जो 'इळैयान्' शब्द इस पद्य में प्रयुक्त है उसका 'छोटा' अर्थ भी है; अदम्य, अथक आदि अर्थ भी।)। ४२२

※ नीण्डा	नदुकूऱलु	नित्तिलन्	दोन्ऱ	नक्कुच्
चेण्डान्	ऱॊडर्मानिल	निऱ्कॆनत्	तादै	शॆप्पप्
पूण्डाय्	पहैयालिऴन्	देवनम्	वोदि	यॆन्ऱाल्
याण्डो	वडियेऱ्किनिच्	चीऱ्ऱ	मडुप्प	दॆन्ना 423

नीण्टान्–सर्वश्रेष्ठ श्रीराम के; अतु कूऱलुम्–वह कहने पर; नित्तिलम् तोन्ऱ–मोती (सम दाँत) प्रकट करते हुए; नक्कु–हँसकर; चेण् तॊटर् मा निलम्–(दूर से) बहुत काल से रहता आनेवाला विशाल राज्य; निऱ्कु ॲत–आपका, यह; तातै चॆप्प–

पिता के कहने पर; पूण्टाय्–मान लिया (आपने); पकैयाल् इळन्तु–(किसी के) द्वेष से खोकर; वऩम् पोति ॲऩ्ऱाल्–वन जाओ कहा गया तो; अटियेऱ्कु चीऱ्ऱम् अट्पपतु–मुझ दास का क्रोध करना; इऩि याण्टो–इसके सिवा कहाँ; ॲऩ्ऩा–कहकर। ४२३

सर्वोत्तम श्रीराम के यह कहने पर लक्ष्मण ने अपने मोतीसम दाँतों को प्रकट करते हुए हँसकर कहा कि आप भी खूब बोले ! परंपरा के क्रम से ज्येष्ठ पुत्र का होता हुआ आनेवाला यह विशाल राज्य पिताजी के कहने पर आपका हुआ। फिर किसी की शत्रुता के कारण आपको उसको खोना पड़ा और आप जंगल जा रहे हैं। तब क्रोध नहीं आएगा तो फिर कब मुझे कोप होगा ? । ४२३

❀ निऩ्कट्परि विल्लवर् नीळ्वऩत् तुऩ्ऩै नीक्कप्
पुऩ्कट्पॊऱि याक्कै पॊऱुत्तुयिर् पोऱ्ऱु हेनो
ॲऩ्कट्पुल मुऩ्ऩुऩक् कीन्दुवैत् तिल्लै यॆऩ्ऱे
वऩ्कट्पुलन् दाङ्गिय मऩ्ऩवऩ् पोल वॆऩ्ऱाऩ् 424

ॲऩ् कण् पुलम् मुऩ्–मेरी आँख के सामने; उऩक्कु ईन्तु वैत्तु–आपको देकर; इल्लै ॲऩ्ऱु–फिर 'नाहिं' करके; वऩ् कण् पुलम् ताङ्किय–कठोर हृदय बने हुए; मऩ्ऩवऩ् पोल–चक्रवर्ती के समान; निऩ् कण् परिवु इल्लवर्–आप पर स्नेह न रहनेवालों के; उऩ्ऩै–आपको; नीळ् वऩत्तु नीक्क–विशाल वन में भेजते; पुऩ् कण्पॊऱि–नीच इन्द्रियों वाला; याक्कै पॊऱुत्तु–शरीर धारण करके; उयिर् पोऱ्ऱुकेनो–प्राण रखूँगा क्या; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ४२४

लक्ष्मण ने आगे कहा कि मेरे ही समक्ष राजा ने आपको राज्य दिया; फिर नहीं कह दिया। इतने कठोरहृदय उन राजा के समान क्या मैं भी यह देखते हुए कि आपसे प्रेम न रखनेवाले आपको वन भेज रहे हैं, अपना इन्द्रियागार यह शरीर ढोता हुआ जीवन रखूँगा ? । ४२४

पिऩ्कुऱ्ऱ मऩ्ऩुम् बयक्कुम्मर शॆऩ्ऱल् पेणेऩ्
मुऩ्कॊऱ्ऱ मऩ्ऩऩ् मुडिकॊळ्हॆनक् कॊळ्ळ मूण्ड
वॆऩ्कुऱ्ऱ मऩ्ऱि यिहऩ्मऩ्ऩवऩ् कुऱ्ऱम् यादो
मिऩ्कुऱ् ऱॊळिरुम् वॆयिऱीक्कॊ डमैन्द वेलोय् 425

मिऩ् कुऱ्ऱु–बिजली (की चमक) मिटाकर (मन्द कर); ऑळिरुम् वॆयिल्–गरम धूप; ती कॊट्टु अमैन्त–और अग्नि-सह निर्मित; वेलोय्–भाला वाले; अरसु–राज; पिऩ् मऩ्ऩुम् कुऱ्ऱम्–फिर भी अधिक दोष; पयक्कुम्–दिलाएगा; ॲऩ्पतु पेणेऩ्–इसकी परवाह न करके; कॊऱ्ऱम् मऩ्ऩऩ्–विजयशील चक्रवर्ती के; मुऩ्–पहले; मुटि कॊळ्क ॲऩ–किरीट धारण कर लो कहने पर; कॊळ्ळ–मैंने मान लिया; मूण्टतु–ऐसा फल हुआ; ॲऩ् कुऱ्ऱम् अऩ्ऱि–मेरे अपराध के सिवा; इकल् मऩ्ऩवऩ् कुऱ्ऱम्–वीर राजा का कसूर; यातो–कौन सा है। ४२५

श्रीराम ने समाधान देते हुए कहा कि बिजली की कान्ति को मिटाने वाली कांति और उज्ज्वल धूप और गरम आग की-सी तापक शक्ति से युक्त भाला वाले ! मुझे यह सोचना चाहिए था कि राज्य कितने ही दोष पैदा करेगा। मैंने उसका विचार किये बिना ही, जब राजा ने कहा कि 'राज्य लो', तो मान लिया। उसी का यह फल है ! तब अपराध मेरा है। शक्तिमान राजा का इसमें अपराध क्या है ? । ४२५

❀ नदियिऩ्पिऴै यऩ्ऱु नऱुम्पुऩ लिऩ्मै यऱ्ऱे
पदियिऩ्पिऴै यऩ्ऱु पयन्दु नमैप्पु रन्दाळ्
मदियिऩ्पिऴै यऩ्ऱु महऩ्पिऴै यऩ्ऱु मैन्द
विदियिऩ् पिऴैनी यिदऱ्कॅन्नै वॅहुण्ड दॅऩ्ऱाऩ् 426

मैन्त–कुमार; नऱु पुऩल् इऩ्मै–अच्छा जल न रहे तो; नतियिऩ् पिऴै–नदी का दोष; अऩ्ऱु–नहीं है; अऱ्ऱे–उसी तरह; पतियिऩ् पिऴै अऩ्ऱु–राजा का दोष नहीं है; पयन्तु नम्मै पुरन्ताळ्–(हमको पुत्र रूप में) प्राप्त कर पालनेवाली (कैकेयी) की; मतियिऩ् पिऴै अऩ्ऱु–मति का दोष भी नहीं है; मकऩ् पिऴै अऩ्ऱु–उनके पुत्र का भी दोष नहीं है; वितियिऩ् पिऴै–विधि का दोष है; इतऱ्कु–इसमें; नी वॅकुण्टतु–तुम क्रोधित हुए; ऍऩ्ऩै–क्यों; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ४२६

श्रीराम ने आगे बहस की। नदी में जल सूख गया तो नदी का क्या दोष ? उसी तरह यह राजा का अपराध नहीं है; न उन कैकेयी माता की बुद्धि की भूल है जिन्होंने हमें पुत्र के रूप में प्राप्तकर (पुत्र मानकर) प्रेम से पाला था। भरत का भी कोई अपराध नहीं है। यह केवल विधि का दोष है। इसमें तुम क्रोध क्यों करते हो ? । ४२६

❀ उदिक्कुम् मुलैयुळ् ळुरुदीयॅऩ वूदै पॊङ्गक्
कॊदिक्कुम् मनमॆङ् ङऩमाऱुमिक् कोळि ऴैत्ताळ्
मदिक्कुम् मदियाय् मुदल्वाऩवर्क् कुम्व लीइदाम्
विदिक्कुम् विदियाहु मॆऩ्विऱ्ऱॊऴिल् काण्डि यॆऩ्ऱाऩ् 427

ऊतै पॊङ्क–(भाथी की) हवा के अधिक होने से; उलै उळ् उतिक्कुम्–भट्ठी के अन्दर प्रज्वलित; उरु ती ऍऩ–विपुल अग्नि के समान; कॊतिक्कुम् मऩम्–तपनेवाला मेरा मन; ऍङ्ङऩम् आऱुम्–कैसे शान्त होगा; इ कोळ् इऴैत्ताळ्–यह उत्पात मचानेवाली की; मतिक्कुम् मति आय्–बुद्धि की बुद्धि बनकर; मुतल् वाऩवर्क्कुम्–आदि त्रिदेव के लिए भी; वलितु आम्–प्रबल रहनेवाली; वितिक्कुम् विति आकुम्–विधि की विधि बननेवाले; ऍऩ् विल् तॊऴिल्–मेरे धनु का कार्य; काण्टि–देखिए; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ४२७

इसके उत्तर मे लक्ष्मण ने कहा— भाथी की हवा के अधिक लगने से उत्तेजित भट्ठी की अग्नि के समान मेरा मन तप्त है। वह शांत कैसे होगा ? आप कैकेयी की बुद्धि, विधि आदि की बात क्या करते हैं। मेरा

धनु उनकी मति को बुद्धि दिलायेगा और त्रिदेवों से भी अकाट्य विधि की भी विधि बनेगा। देखिए उसका कार्य। ४२७

❀ आय्तन्दव तव्वुरै कूऱलु मैय नित्ऱन्
वाय्तन्दत्त कूऱुदि योमऱै तन्द नावाल्
नीतन्ददन् ऱोर्नॅऱि यो्ह णिलाद दीन्ऱ
ताय्दन्दयॅन् ऱालवर् मेऱ्वलिक् कित्ऱ ऍन्नो 428

आय् तन्तवन्–शास्त्रानुशीलन-कर्ता के; अ उरै कूऱलुम्–वह वचन कहने पर; ऐयन्–आर्य बोले; मऱै तन्त नावाल्–वेदाभ्यस्त जिह्वा से; नित्ऱन् वाय् तन्तत–जो भी मुख में आए; कूऱुतियो–कहोगे; नी तन्ततु–अब जो तुमने (करने को) कहा; नॅऱियोर् कण् निलाततु अन्ऱो–सन्मार्गियों में पाया जायगा न; ईन्ऱ ताय् तन्तै ऍन्ऱाल्–जनक माँ-बाप हैं तब; अवर् मेल्–उनसे; चलिक्कित्ऱतु–क्रोध करना; ऍन्नो–क्या ठीक है। ४२८

लक्ष्मण स्वयं शास्त्रज्ञ तथा शास्त्रानुशीलन-कर्ता थे। श्रीराम ने उसका स्मरण दिलाते हुए कहा— वेदों से अभ्यस्त अपनी जीभ से तुम यह कैसे शब्द निकाल रहे हो ? अब जो करने की बात कह रहे हो क्या वह सन्मार्ग-गामियों के पास उचित रहेगा ? जब सम्बद्ध लोग हमारे माता-पिता हैं तब उन पर क्रोध करना कैसी बात है ? । ४२८

❀ नऱ्ऱा दयुनी तन्निनायह नीव यिऱ्ऱिऱ्
पॅऱ्ऱायु नीये पिऱरिल्लै पिऱर्क्कु नल्हक्
कऱ्ऱा यिदुहा णुदिनीयॅनक् कैम्म ऱित्तान्
मुऱ्ऱा मदियम् मिलैन्दानमुन्निन् दानै यन्नान् 429

मुन्निन्तान्–क्रोधशील; मुऱ्ऱा मतियम् मिलैन्तानै–बालचन्द्रधर शिव के; अन्नान्–सदृश रहनेवाले ने; पिऱर्क्कु नल्क कऱ्ऱाय्–दूसरों को (सब) दान कर देना आपने सीखा है; नल् तातैयुम् नी–मेरे लिए आप ही अच्छे पिता हैं; तन्नि नायकन् नी–अद्वितीय नायक आप है; वयिऱ्ऱिल् पॅऱ्ऱ आयुम् नीये–गर्भ में से जन्म देनेवाले भी आप ही; पिऱर् इल्लै–और कोई नहीं; इतु नी काणुति–यह आप ध्यान से देखिए; ऍन्न–यह कहकर; कै मऱित्तान्–हाथ हिलाया। ४२९

तब क्रोधशील, चंद्रशेखररुद्र-सम लक्ष्मण ने कहा— आपने सब कुछ दूसरों को देना सीख लिया है। (या सबको दान करने की शिक्षाप्राप्त हे उदार !) मेरे आप ही पिता है; जननी माता भी अद्वितीय नायक आप ही। और कोई नहीं हैं। अब मेरी करनी देखिए। यह कहकर लक्ष्मण ने अपना हाथ नकारात्मक उत्तर में हिला दिया। ४२९

वरदन् पहर्वान् वरम्बॅऱ्ऱव डान्निव् वैयम्
शरदम् मुडैया ळवळॅन्ऱनित् तादै शॅप्पप्

परदन् पॅरुवा निनियान्पडैक् किन्ऱ शॅल्वम्
विरदम् मिदिनल् लदुवेऱिनि याव दॅन्ऱान् 430

वरतन् पकर्वान्–वरद प्रभु ने कहा; इ वैयम्–इस राज्य की; वरम् पॅऱ्ऱवळ् तान्–जिन्होंने वर द्वारा प्राप्त किया है वे ही; चरतम् उटैयाळ्–सच्ची स्वामिनी हैं; अवळ्–वे; ॲन् तनि तातै–मेरे अनुपम पिता; चॅप्प–कहते हैं; परतन् पॅऱुवान्–भरत (राज्य को) प्राप्त करेगा; इऩि–आगे; यान् पटैक्किन्ऱ–जो मै प्राप्त करूँगा वह; चॅल्वम्–धन; विरतम्–तपस्या है; इतिन् नल्लतु–इससे अधिक अच्छा; इऩि वेऱु यावतु–अब क्या है; ॲन्ऱान्–कहा। ४३०

वरदप्रभु श्रीराम ने वहस जारी की। सच पूछा जाय तो इस भूमि की स्वामिनी कैकेयी ही है जिन्हें यह वर के रूप में प्राप्त हो गई। वे और मेरे श्रेष्ठ पिताजी इसको भरत को देते हैं तो वह भरत की हो गई। अब मेरा प्राप्य धन तप का धन है। अब इससे बढ़कर श्रेयस्कर वस्तु क्या है ? । ४३०

❀ आन्ऱान् पहर्वान् पिनुमैयविव् वैय मैयल्
तोन्ऱा नॅऱिवाळ् तुणैत्तम्बियैप् पोर्तॊ लैत्तो
शान्ऱोर् पुहळुन् दनित्तादैयै वाहै कॊण्डो
ईन्ऱाळै वॅन्ऱो विनियिक्कदन् दीर्व दॅन्ऱान् 431

आन्ऱान्–सर्वश्रेष्ठ श्रीराम; पिन्नुम्–फिर भी; पकर्वान्–कहा; ऐय–आर्य; इति–अब; इ वैयम् मैयल्–इस संसार-मोह से; तोन्ऱात नॅऱि वाळ्–रहित मार्ग में रहनेवाले; तुणै तम्पियै–सहचर अनुज (भरत) को; पोर् तॊलैत्तो–युद्ध में मारकर; चान्ऱोर् पुकळुम्–सभी बड़े लोगों से प्रशंसित; तनि तातैयै–अनुपम पिता पर; वाकै कॊण्टो–विजय पाकर; ईन्ऱाळै वॅन्ऱो–या जननी को हराकर; इ कतम् तीर्वतु–यह कोप दूर होगा क्या; ॲन्ऱान्–बोले। ४३१

पुरुषोत्तम ने आगे पूछा— उत्तम गुणों के आर्य ! क्या तुम्हारा कोप, सांसारिक मायाजाल से विमुक्त, अच्छे मार्ग में जानेवाले अपने साथी भ्राता भरत को युद्ध में मारकर, साधुओं से प्रशंसित हमारे पिता को हराकर, या जननी कैकेयी को हराकर ही शांत होगा ? । ४३१

❀ शॅल्लुञ्जॊल् वल्ला नॆदिर्तम्बियुन् दॆव्वर् शॊल्लुम्
शॊल्लुञ् जुमन्दे निरुतोळॆनच् चोम्बि योङ्गुम्
कल्लुञ् जुमन्दॆन् कणैप्पुट्टिलुङ् गट्ट मैन्द
विल्लुञ् जुमक्कप् पिऱन्दॆन्वॆहुण् डॆन्नै यॆन्ऱान् 432

चॅल्लुम् चॊल् वल्लान्–अमोघ भाषणकुशल के; ॲतिर्–सामने; तम्पियुम्–अनुज लक्ष्मण ने भी; तॅव्वर् चॊल्लुम् चॊल्लुम् चुमन्तेन्–शत्रुओं की निंदा के वचन सह रहा हूँ; इरु तोळ् ॲन–दो कंधे के नाम पर; चोम्पि आङ्कुम्–व्यर्थ बढ़े हुए; कल्लुम् चुमन्तेन्–पत्थर ढोता हूँ; कणै पुट्टिलुम्–शरों की थैली भी; कट्टु अमैन्त

विल्लुम्–बन्धन से युक्त धनु भी; चुमक्क पिऱन्तेन्–ढोने के लिए पैदा हुआ; वेकुण्टु ॲन्नै–मुझ पर गुस्सा करके क्या (लाभ) है; ॲन्ऱान्–कहा। ४३२

यह सुनकर अनुज लक्ष्मण अपनी निंदा करते हुए बोले— मैं अपने शत्रुओं की निंदा का वचन सहते हुए दो कन्धे के नाम पर व्यर्थ बढ़े हुए पत्थर, शरों की थैली और बंधनयुक्त धनुष ढोनेवाला हो गया। फिर आप मुझ पर कोप करके क्या करेंगे ! । ४३२

नन्शोऱ् कडन्दाण् डॅन्नैनाळुम् वळर्त्त तादै
तन्शोऱ् कडन्दॆऱ् करशाळ्वदु तक्क दन्ऱाल्
ॲन्शोऱ् कडन्दा लुनक्कियादुळ दूऱ्ऱ मॆन्ऱान्
तॆन्शोऱ् कडन्दान् वडशोऱ्कलैक् कॆल्लै तेर्न्दान् 433

तॆन् चॊल् कटन्तान्–दक्षिणी भाषा (तमिऴ) के पारंगत; वट चॊल् कलैक्कु–उत्तरी (संस्कृत) भाषा के वेदशास्त्रों के; ॲल्लै तेर्न्तान्–पूर्ण ज्ञानी; नन् चॊऱ्कळ् तन्तु–श्रेष्ठ वचन (विद्याएँ) सिखाकर; ॲन्नै आण्टु–मुझे पालकर; नाळुम् वळर्त्त–जिन्होंने पोषा; तातै तन् चॊल् कटन्तु–उन पिता का वाक्य टालकर; अरचु आळ्वतु–राज करना; तक्कतु अन्ऱु–उचित नहीं है; ॲन् चॊल् कटन्ताल्–मेरा वचन न मानोगे; उनक्कु यातु उळतु ऊऱ्ऱम्–तुम्हारा क्या बल होगा; ॲन्ऱान्–बोले। ४३३

तमिऴ और संस्कृत के पारंगत श्रीराम ने कहा कि 'मुझे अच्छी विद्याएँ सिखाकर जिन्होंने पालन-पोषण किया उन पिताजी के वाक्य का उल्लंघन करके राज्य करना मैं उचित नहीं समझता। तुम भी मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा बल क्या रह जायगा ? सोचो !' श्रीराम ने यह कह अपनी बात समाप्त की। ४३३

शीऱ्ऱन् दुऱन्दा नॆदिर्निन्ऱु तॆरिन्दु शॆप्पुम्
माऱ्ऱन् दुऱन्दान् मऱैनान्गॆन वाङ्गल् शॆल्ला
नाऱ्ऱॆण् डिरैवे लयिनम्बिद नाणै याले
एऱ्ऱन् दॊडङ्गाक् कडलिऱ्ऱणि वॆय्दि निन्ऱान् 434

नम्पितन्–नायक के; मऱै नान्कु ॲन–चतुर्वेद-सम; वाङ्कल् चॆल्ला–अकाट्य; आणैयाल्–आज्ञा से; चीऱ्ऱम् तुऱन्तान्–कोप छोड़कर; ॲतिर् निन्ऱु–समक्ष खड़े होकर; तॆरिन्तु चॆप्पुम्–सोचकर कहे हुए; माऱ्ऱम्–वचन; तुऱन्तान्–छोड़ दिये; नाल्, तॆळ् तिरै–चार, स्वच्छ लहरों वाले; वेलैयिन्–तीरों को; एऱ्ऱम् तॊटङ्का–पार कर जाना, जो नहीं करते; कटलिन्–उन समुद्रों के समान; तणिवु ॲय्ति–कोप थाम कर; निन्ऱान्–खड़े रहे। ४३४

नायक श्रीराम के वचन प्रभुसंहिता कहे जानेवाले चतुर्वेद के शासनों के समान अकाट्य थे। इसलिए लघुराज लक्ष्मण ने अपना क्रोध त्याग दिया। अपने ज्येष्ठ भ्राता के समक्ष खड़े होकर तर्क करना भी छोड़

दिया। वे तीर न पार करनेवाले, पारावार के समान कोप थामकर खड़े रहे। ४३४

अन्नान्ऱनै यैयत्तु मादियो डन्द मॆन्ऱुम्
तन्नालु मळप्परुन् दानुन्दन् पाह निन्ऱ
पॊन्मानुरि यानुन् दळीइयॆन्नप् पुल्लिप् पिन्नैच्
चॊन्माण्बुडै यन्नै शुमित्तिरै कोयिल् पुक्कान् 435

ऐयतुम्–आर्य भी; आतियॊटु अन्तम्–आदि और अन्त; ऎन्ऱुम्–कभी भी; तन्नालुम् अळप्पु अरुम्–स्वयं अपने लिए भी अगम; तानुम्–आप; तन् पाकम् निन्ऱ–अपने ही भाग के रूप में विद्यमान; पॊन्मान् उरियानुम्–स्वर्णमृगचर्मधारी; तळीइयतु ऎन–आलिंगन कर रहे हों, जैसे; अन्नान् तनै पुल्लि–उन (लक्ष्मण) को गले लगाकर; पिन्नै–बाद; चॊल् माण्पु उटैय–भाषण-गरिमा वाली; अन्नै–माता; चुमित्तिरै कोयिल् पुक्कान्–सुमित्रा के मन्दिर में जा पहुँचे। ४३५

श्रीराम ने लक्ष्मण का कसकर आलिंगन कर लिया। वे अपने लिए भी अगम श्रीविष्णु थे। लक्ष्मण उन स्वर्णमृगांबर-धारी शिवजी के समान थे, जो विष्णु के ही अर्द्धांग (समझे जाते) है। वह आलिंगन शिव-विष्णु का आलिंगन-सा था। फिर वे दोनो भाषण की गरिमा वाली सुमित्राजी के महल में जा पहुँचे। (दक्षिण में शंकर-नारायण की मिली हुई मूर्तियाँ और उनके मन्दिर भी हैं)। ४३५

कण्डाण् महनुम् महनुन्दन्न कण्गळ् पोल्वार्
तण्डा वनञ्जॆल् वदऱ्केशमैन् दाऱह डम्मैप्
पुण्डाङ्गु नॆञ्जत् तिन्नळाय्प् पुरण्डाळ् पडिमेल्
उण्डाय तुन्बक् कडऱ्कॆल्लै युणर्न्दि लादाळ् 436

तन् कण्कळ् पोल्वार्–अपने दोनो आँखों के समान रहनेवाले; मकनुम् मकनुम्–अपना पुत्र और दूसरा पुत्र; तण्टा वनम् चॆल्वतऱ्के–दण्डकारण्य जाने के ही लिए; चमैन्तार्कळ् तम्मै–उद्यत उनको; कण्टाळ्–देखकर; उण्टाय तुन्पम् कटऱ्कु–जो हुआ उस दुख के सागर की; ऎल्लै उणर्न्तिलाताळ्–सीमा न जाननेवाली; पुण् ताङ्कुम् नॆञ्चत्तिनळ् आय्–व्रणयुक्त मन वाली होकर; पटि मेल् पुरण्टाळ्–भूमि पर लोटने लगी। ४३६

सुमित्रादेवी ने अपनी दोनो आँखों के समान अपने दोनो पुत्रों को दण्डकवन जाने के लिए उद्यत हो आते हुए देखा। तब उनको जो दुख हुआ वे उसका अन्त नही पा सकीं। उनका हृदय व्रणयुक्त हो गया। वे दुख के अतिरेक से भूमि पर गिरी और लोटने लगी। ४३६

शोर्वाळै योडित् तॊळुदेन्दिनन् ऱुन्ब मॆन्नुम्
ईर्वाळै वाङ्गि मनन्देऱ्ऱुदऱ् केऱ्ऱ शॆय्वान्

पोर्वा ळरशर्क् किऱैपॊय्त्तन नाक्क हिल्लेन्
कार्वा नॆंड्ड्गा निरॆकण्डिवण् मीळ्वॆ नॆन्ऱान् 437

चोर्वाळै–शिथिल पड़नेवाली उनको; ओटि तॊळुतु–दौड़कर नमस्कार करके; एन्तितन्–(हाथ में) उठाया; तुन्पम् ॲन्तुम्–दुख रूपी; ईर् वाळै–चीरनेवाली कटार को; वाङ्कि–दूर कर; मतम् तेऱ्ऱतर्कु एऱ्ऱ–मन को धीरज देने योग्य; चॆय्वान्–(उपाय) करने के लिए; पोर्वाळ् अरचर्क्कु इऱै–युद्ध में प्रयुक्त तलवारों के राजाओं के राजा मेरे पिता को; पॊय्त्ततन्–असत्यवक्ता; आक्ककिल्लेन्–बना नहीं सकूँगा; कार् वान् नॆट्टु कान्–काले मेघों से भरे विशाल वन को; इऱै कण्टु–जरा देखकर; इवण् मीळ्वॆन्–यहाँ लौट आऊँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ४३७

श्रीराम शिथिल होनेवाली माता के पास दौड़े आये। उन्होंने माता को नमस्कार करके उन्हें अपने हाथों मे पकड़कर उठाया। सुमित्रा के मन को जो दुख तलवार के समान काट रहा था उसे हटाने का उपाय करने के विचार से श्रीराम ने उनसे कहा कि माताजी! तलवार-धारी राजाओं के राजा, अपने पिता को मै असत्यभाषी बनाना नही चाहता। वह मुझे असह्य होगा। इसलिए वन में, जहाँ काले मेघ मँड़राते रहते है, जाऊँगा; उसको जरा देखूँगा और यहाॅ लौट आऊँगा। ४३७

कान्पुक् किडिनुङ् गडल्पुक्किडि नुङ्ग लिप्पेर्
वान्पुक् किडिनु मॆंनक्कन्नवै माण योत्ति
यान्पुक्क दॊक्कु मॆंनैयार्नलि हिऱ्कु मीट्टार्
ऊन्पुक् कुयिर्पुक् कुणर्पुक्कुलै यऱ्क वॆन्ऱान् 438

कान् पुक्किटिनुम्–वन-गमन करूँ; कटल् पुक्किटिनुम्–समुद्र-प्रवेश करूँ; कलि पेर् वान् पुक्किटिनुम्–शब्दाधार बड़े आकाश में पहुँच जाऊँ; ॲनक्कु–मेरे लिए; अन्नवै–वे सब; माण् अयोत्ति–महिमायुक्त अयोध्या में; यान् पुक्कतु ऒक्कुम्–मेरे जाने के समान ही होंगे; ॲनै नलिकिऱ्कुम्–मुझे दुख देने की; ईट्टार्–शक्ति रखनेवाले; यार्–कौन है; ऊन् पुक्कु–शरीर के अन्दर प्रवेश करने; उयिर् पुक्कु–प्राणों के अन्दर प्रवेश करने; उणर् पुक्कु–आत्मा के अन्दर प्रवेश करने (दुख को) देकर; उलैयऱ्क–वेदना का अनुभव मत कीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। ४३८

माताजी मेरे लिए जंगल जाना क्या? समुद्र में प्रवेश, शब्दागार आकाश में गमन, सब अयोध्यावास के समान ही होंगे। कहीं भी मेरा अहित कर सकनेवाला कौन होगा? इसलिए आप दुख को अपने शरीर, प्राण और आत्मा तक को पीड़ा पहुँचाने मत दीजिए। आप चिन्ताग्रस्त न हों। —श्रीराम ने आश्वासन दिया। ४३८

तायाऱ् ऱुहिला डनैयाऱ्ऱुहिन् ऱाऱ्ह डम्वाल्
तोयाऱ्ऱु हिन्ऱा रॆंनच्चिन्दयि निन्ऱु तेऱ्ऱ
नोयाऱ्ऱ हिल्ला वुयिर्पोल नुडङ्गि डैयार्
मायाप् पऴियार् डरवऱ्कलै येन्दि वन्दार् 439

आऱ्ऱुकिलाळ् ताय् तन्नै–(दुख-) सहन न कर सकनेवाली (वि-) माता को; आऱ्ऱुकित्ऱार्कळ्–धीरज बँधानेवाले; तम् पाल्–उन (भाइयों) के पास; ती आऱ्ऱुकित्ऱार् अॅन्न–आग बुझानेवाले, जैसे; चिन्तैयिन् निन्ऱु तेऱ्ऱ–चिन्ता (दुख) से मुक्त कराने के लिए धीरज बँधाने पर भी; नोय्–पीड़ा-रोग से; आऱ्ऱ किल्ला–मुक्त हो धैर्य-धारण न कर सकनेवाली की; उयिर् पोल–जान के समान; नुटङ्कु–लचकनेवाली; इटैयार्–कमरों की (दासियाँ); मायात पऴियाळ्–अमरअपयश-पात्र; तर–(श्रीराम के पास) देने के लिए, दिये गये; वऱ्कलै–वल्कल को; एन्ति वन्तार्–ले आई। ४३९

अधीर माता सुमित्राजी की दुखाग्नि को श्रीराम और लक्ष्मण शान्त करने का प्रयास करने लगे। पर उनकी जान उस दुखरोग से मुक्त न हो सकी और क्षीण होती गई। तब उनकी ही जान के समान कृशकटि वाली दासियाँ, अमिट कलंकिनी कैकेयी द्वारा दिये हुए वल्कल लिये हुए आई। ४३९

कार्वान मोप्पान् ऱतैक्काण्डोरुम् काण्डोरुम् पोय्
नीरा युहक्कण् णिनुनॅञ्ज ऴिहिन्ऱ नीरार्
पेरा विडर्प्पट् टयलारुऱु पीळै कण्डुम्
तीरा मनत्ता डरवन्दन्न शीर मॅन्ऱार् 440

कार् वानम् ऑप्पान् तन्नै–काले मेघ-सम (श्रीराम) को; काण् तोरुम् काण् तोरुम्–ज्यों-ज्यों देखतीं त्यों-त्यों; कण्णिनुम् नीर् आय् उक–आँखों से आँसू बहाते हुए; नॅञ्चु पोय् अऴिकिन्ऱ नीरार्–मन अति व्याकुल होकर; पेरात इटर् पट्टु–अदम्य दुख के वश में होकर; अयलार् उऱु–अन्यों की सही हुई; पीळै कण्टुम्–पीड़ा देखकर भी; तीरात मनत्ताळ् तर–(अपने संकल्प से) न हटनेवाले मन की (कैकेयी) के देने से; वन्तन चीरम्–आये हैं, ये चीर; अॅन्ऱार्–कहा। ४४०

वे भी काले मेघ के समान रहनेवाले श्रीराम को देखकर दुख से भर गई। ज्यों-ज्यों वे उन पर दृष्टि डालती त्यों-त्यों उनकी आँखों से आँसू बहने लगते। कम न होनेवाले दुख से पीड़ित उन्होंने कहा कि दूसरों का दुख करना देखकर भी जिसका मन अपने बुरे और कठोर संकल्प से नहीं हटता ऐसी कैकेयी ने ये चीर दिये है। उनकी आज्ञानुसार हम इन्हें इधर लाई। ४४०

वाणित् तिलनन् नहैयार्हळै वळ्ळ ऱविम्
याणर्त् तिरुना डिळप्पित्तव रीन्द वॅल्लाम्
पूणप् पिऱन्दानु नित्ऱानदु पोर्वि लोडुम्
काणप् पिऱन्देनु नित्ऱेतवै काट्टु मॅन्ऱान् 441

वळ्ळल् तम्पि–प्रभु के भाई (या उदारमन लघुभ्राता); वाळ् नित्तिलम्–उज्ज्वल मोती-सम; नल् नकैयार्कळै–अच्छे दाँत वालियों को (देखकर); याणर् तिरुनाट्टु–आमदनीवाले विभवशील राज्य से; इळप्पित्तवर्–जिन्होने (श्रीराम को) वंचित कराया; ईन्त अॅल्लाम्–वे जो भी देते हैं; पूण पिऱन्तानुम्–उन्हें स्वीकार

करने के लिए जो पैदा हुए हैं, वे; निऩ्ऱाऩ्–इधर विद्यमान हैं; पोर् विल्लोटुम्–युद्धधनु के साथ; अतु काण पिऱन्तेतुम्–उसको देखते चुप रहने के लिए जो जन्मा हूँ, वह मैं भी; निऩ्ऱेऩ्–इधर खड़ा रहता हूँ; अवै काट्टुम्–उनको दिखाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ४४१

प्रभु के छोटे भाई लक्ष्मण ने सुन्दर मुक्तातुल्य दाँत वाली उनसे कहा— अच्छी आमदनी वाले विभवशील राज्य से जिन्होंने मेरे भाई को वंचित किया वे जो भी (भला-बुरा) भेजती हैं उनको अंगीकार करने के लिए मेरे भाई श्रीराम, मानो इसी के लिए पैदा हुए हों, ऐसे तैयार खड़े है। इधर मैं भी खड़ा हूँ, अपना धनुष व्यर्थ ढोते हुए उसको देखने के लिए मानो मैंने जन्म लिया हो। दिखाओ तो, सही उन चीरों को। ४४१

अऩ्ऩा नवर्तन् दऩ्ऩवादरत् तोडु मेन्दि
इऩ्ऩा विडर्तीर्न् दुडनेहॅऩ्ऩ वॅम्बि राट्टि
शॊऩ्ऩा लदुवे तुणैयामॅनत् तूय नङ्गै
पॊन्ना रडिमेऱ् पणिन्दानव ळुम्पु हल्वाळ् 442

अऩ्ऩाऩ्–वे; अवर् तन्तत–उनसे दिये हुए; आतरत्तोटुम् एन्ति–आदर के साथ ग्रहण करके; ऍम् पिराट्टि–मेरी मातादेवी; इऩ्ऩा इटर् तीर्न्तु–इस कठोर दुख से छूटकर; उटऩ् एकु–साथ चलो; ऍऩ चॊऩ्ऩाल्–यह कहेंगी तो; अतुवे तुणै आम्–वही मेरा सहायक होगा; ऍऩ–कहकर; तूय नङ्कै–पवित्रमना देवी के; पॊऩ् आर् अटि मेल्–सुन्दरता-युक्त चरणों पर; पणिन्ताऩ्–नमस्कार किया; अवळुम् पुकल्वाळ्–वे भी बोलीं। ४४२

लक्ष्मण ने उनसे दिये गये चीरों को आदर के साथ स्वीकार किया। फिर अपनी माता से बोले। माताजी! आप दुख छोड़कर यह कहेंगी कि 'तुम भी श्रीराम के साथ जाओ', तो वह मेरे लिए बड़ा उपकार होगा। यह कहकर उन्होंने अपनी माता के सुन्दर चरणों पर अपना मस्तक रखा। माता ने भी (यों) कहा। ४४२

आहाद दऩ्ऱा लुनक्कव्वऩ मिव्व योत्ति
माहाद लिराम ऩम्मऩ्ऩवऩ् वैय मीन्दुम्
पोहावुयिर्त् तायर्नम् पूङ्गुळऱ् चीदै यॆऩ्ऱे
एहायिनि यिव्वयि ऩिऱ्ऱलु मेद मॆन्ऱाळ् 443

उनक्कु–तुम्हारे लिए; अ वऩम्–वह वन; इ अयोत्ति–यह अयोध्या है; आकातु अऩ्ऱु–अयोग्य स्थान नहीं है; मा कातल् इरामऩ्–तुम्हारे प्रति अधिक प्रेम रखनेवाला श्रीराम; नम् मऩ्ऩवऩ्–हमारे पिता; वैयम् ईन्तुम्–राज्य दूसरों को देने के बाद भी; उयिर् पोकात–जो प्राण विमुक्त नहीं है; तायर्–वे माताएँ (कौसल्या और मै); नम् पू कुऴल् चीतै–हमारी पुष्पालंकृत केश वाली सीता; ऍऩ्ऱु–यह मानकर; एकाय्–तुम चलो; इऩि–अब; इ वयिऩ्–इस स्थान पर; निऱ्ऱलुम्–खड़ा रहना भी; एतम्–अपराध है; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ४४३

बेटे ! जाओ। उस वन को अयोध्या मानकर जाओ। वह ठीक स्थान नही है —ऐसा समझकर मत जाओ। तुम्हारे ऊपर अपार प्रेम रखने वाले इन श्रीराम को अपने राजा-पिता मान लो। श्रीराम को राज्यहीन देखने पर भी उसकी माताएँ हम जीवित है। तुम पुष्पालंकृत केश वाली सीता को अपनी माता मान लो। जाओ। आगे यहाँ खड़ा रहना भी अपराध होगा। सुमित्रा ने इतना कहा। ४४३

पिन्नुम् पहरवाण् महनेयिवन् पिन्शॆ ऱ्म्बि
ऒन्नुम् पडियन् ऱडियारिनु मेवल् शॆय्दि
मन्नुन् नहर्क्के यिवन् वन्दिडिन् वाव दन्ऱेल्
मुन्नम् मुडियॆन् ऱनळ्पान्मुलै शोर निन्ऱाळ् 444

मुलै पाल् चोर–स्तनों से दूध के स्रवते; निन्ऱाळ्–जो रहीं वे; पिन्नुम्–और भी; पकर्वाळ्–बोलीं; मकन्–पुत्र; इवन् पिन् चॆल्–इसके पीछे जाओ; तम्पि ऎन्नुम् पटि अन्ऱु–(छोटे) भ्राता के रूप में नहीं; अटियारिनुम्–दास से भी बढ़कर; एवल् चॆय्ति–सेवा करो; मन्नुम् नकर्क्कु–स्थायी इस नगर को; इवन् वन्तिटिन्–यह आएगा तो; वा–तुम भी आओ; अतु अन्ऱेल्–वह नहीं हो तो; मुन्नम् मुटि–उसके पहले तुम काम आ जाओ; ऎन्ऱनळ्–कहा। ४४४

वात्सल्य के कारण अपने स्तनों से दूध को वहने देते हुए वे चिन्ताहत सुमित्रा और भी बोलीं— वत्स ! इसके पीछे जाओ। पर उसके भाई के नाते नहीं। उसके दास की तरह जाओ और उसकी आज्ञाओं का पालन करो। इस स्थायी नगर को वह लौट के आयेगा तो तुम भी आओ। नहीं तो तुम पहले ही उनके काम आ जाओ। ४४४

इरुवरुन् दॊळुदन रिरण्डु कन्ऱॊरीइ
वॆरुवरु मावॆनत् तायुम् विम्मिनाळ्
पॊरुवरुङ् गुमररुम् पोयि नार्पुऱम्
तिरुवरैत् तुहिलॊरीइच् चीरै शात्तिये 445

इरुवरुम्–दोनो ने; तॊळुतनर्–प्रणमन किया; तायुम्–माता भी; इरण्टु कन्ऱु ऒरीइ–दो बछड़ों से छूटकर; वॆरुवरुम् आ ऎन–दुख उठानेवाली गाय के समान; विम्मिनाळ्–रोई; पॊरु अरु कुमररुम्–अप्रमेय वे कुमार भी; तिरु अरै–अपनी शोभायुक्त कमर से; तुकिल् ऒरीइ–वस्त्र उतारकर; चीरै चात्ति–वल्कल पहनकर; पुऱम् पोयिनार्–बाहर चले गये। ४४५

इसके बाद दोनो भाइयों ने उनको नमस्कार किया। वे भी अपने दोनो वछड़ों को एक साथ खोकर दुख करनेवाली गौ के समान रोई। अप्रतिम कुमारों ने अपनी शोभायमान कमर से वस्त्र उतारकर चीर पहन लिये। फिर वे वाहर चले गये। ४४५

❀ ताऩ्बुऩै शीरैयैत् तम्बि शात्तिडत्
तेऩ्बुऩै तॅरियलाऩ् शॅय्है नोक्किऩाऩ्
वाऩ्बुऩै यिशैयिनाय् मरुक्कि लादुनी
याऩ्बुह ऱुहैयदो रुरुदि केळॅना 446

ताऩ् पुनै चीरैयै–जैसे स्वयं आपने वल्कल पहना वैसे ही; तम्पि चात्तिट–अपने छोटे भाई को भी पहनते (देख); तेऩ् पुऩै तॅरियलाऩ्–शहद से युक्त मालाधारी राम ने; चॅय्कै नोक्कियाऩ्–उनका वह काम देखकर; वाऩ् पुऩै इचैयिनाय्–आकाश तक व्याप्त यशस्वी; याऩ् पुकल्–मेरी अब कथनीय; तकैयतु ओर् उऱुति–उचित एक हितवचन; नी मरुक्किलातु–तुम बिना असहमत हुए; केळ्–सुनो; अॅना–कहकर। ४४६

जब श्रीराम ने देखा कि वे जैसे वल्कल चीर पहन रहे हैं वैसे ही लक्ष्मण भी पहन रहे हैं, तो शहदभरी पुष्पमाला-धारी उन्होंने उनसे कहा— आकाश तक व्याप्त यश वाले, लक्ष्मण ! मेरा कहना सुनो। मैं बहुत ही उचित एक हितवचन कह रहा हूँ। मान जाओ। ४४६

❀ अऩ्नय रऩैवरु माऴि वेऩ्दनुम्
मुऩ्ऩय रल्लर्वॅन् दुयरिन् मूऴ्हिनार्
ॲऩ्ऩयुम् बिरिन्दन रिडरु ऱावहै
उऩ्ऩ(य्)नी यॅऩ्बॊरुट् टुदवु वायॅऩ्ऱाऩ् 447

अऩ्नैयर अऩैवरुम्–माताएँ सभी; आऴि वेन्तनुम्–और चक्रवर्ती; मुऩ्ऩैयर् अल्लर्–पहले की-सी स्थिति में नहीं; वॅम् तुयरिल्–कठोर दुख में; मूऴ्किऩार्–डूबे हुए हैं; ॲऩ्ऩैयुम् पिरिन्तनर्–मुझसे भी बिछुड़े हुए है; इटर् उऱा वकै–वे संकट न पाएँ, इसलिए; ॲऩ् पॊरुट्टु–मेरे लिए; उऩ्ऩै नी उतवुवाय्–तुम अपने को समर्पित करके सहायता करो; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ४४७

वह क्या है —उसे भगवान ने व्यक्त कहा। हमारी माताएँ और पिता, चक्रवर्ती पहले की-सी स्थिति में नही हैं। वे अब बहुत दुख-पीड़ित हैं। तिस पर मैं ही छोड़कर जानेवाला हूँ और मेरा वियोग उन्हें और भी दुख देगा। तुम इनको दुखी होने से बचाने के लिए यहीं रह जाओ और अपने को उनके सहायक रूप में उनको समर्पित कर लो। ४४७

❀ आण्डहै यम्मॊऴि यरुळ वऩ्बनुम्
तूण्डहु तिरळ्पुयन् दुळङ्गत् तुण्णॅऩ्ऩा
मीण्डदो रुयिरिडै विम्म विम्मुवान्
ईण्डुतक् कडियतॅन् पिऴैत्त दियादॅना 448

आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ के; अ मॊऴि अरुळ–वह वचन कहने की कृपा करने पर; अऩ्पतुम्–उनसे अचल प्रेम करनेवाले लक्ष्मण; तूण् तकु—स्तम्भ-सम; तिरळ् पुयम्

तुळङ्क–कन्धों को हिलाते; तुण ॲना–एक दम ठिठककर; मीण्टतु ओर् उयिर्–चलते-चलते बची जान; इटै विम्म–फिर चलनेवाली बनी हो, जैसे; विम्मुवात्–सिसककर; अटियऩेऩ्–दास मुझसे; ईण्टु–अब; उनक्कु पिऴैत्ततु यातु–आपके प्रति हुआ अपराध क्या है; ॲऩा–कहकर। ४४८

जब पुरुषोत्तम ने यह वाक्य कहा तो उन पर अपार प्रेम रखनेवाले लक्ष्मण रोने लग गये। उनकी सिसकियों से उनके स्तम्भसम कंधे भी हिलने लगे। चलती-चलती जो बची थी वह उनकी जान फिर चली जायगी ऐसी स्थिति का अनुभव करते हुए उन्होंने रोते-रोते अपने भाई से पूछा कि प्रभु! दास द्वारा अब क्या अपराध हो गया है ?। ४४८

नीरुळ वॆनिनुळ मीनु नीलमुम्, पारुळ वॆनिनुळ यावुम् पार्प्पुरिऩ्
नारुळ तऩुवुळाय् नानुज् जीदयुम्, आरुळ रॆनिनुळ मरुळु वायॆना 449

नीर् उळ ॲऩिऩ्–(जलाशय में) जल रहा तो; मीनुम् नीलमुम् उळ–मछलियाँ और नीलोत्पल आदि पुष्प होंगे; पार् उळ ॲऩिऩ्–भूमि रही तभी तो; यावुम् उळ–सभी वस्तुएँ है; पार्प्पु उऱिऩ्–सोचकर देखिए तो; नार् उळ–डोरे सहित; तऩु उळाय्–धनु वाले; नानुम् चीतैयुम्–मै और सीताजी; आर् उळर् ॲऩिऩ्–कौन रहेंगे तो; उळम्–जीवित रहेगे; अरुळुवाय्–श्रीवचन कहो; ॲना–कहकर। ४४९

आप ही सोचकर देखिए। जल रहा तो जलाशयों में मछलियाँ रह सकती है, नीलोत्पल आदि फूल भी पनप सकते हैं। मालाधारी धनुर्धर! भूमि रही तो सब वस्तुएँ रह सकती है। आप आधार नहीं रहेंगे तो मैं और सीता, किसके रहते, रह सकेंगे ? आप ही कहने की कृपा करें। यह कहकर उन्होंने आगे भी कहा। ४४९

❀ पैन्दॊडि	**यॊरुत्तिशॊऱ्**	**कॊण्डु**	**पार्मह़ळ्**
नैन्दुयिर्	**नडुङ्गवु**	**नडत्ति**	**काऩॆना**
उय्न्दन	**निरुन्दन**	**नुण्मै**	**कावलऩ्**
मैन्दनॆऩ्	**ऱिऩैयशॊल्**	**वळङ्गि**	**नायॆना 450**

पार् मकळ्–भूमिदेवी; उयिर् नैन्तु–प्राणों के क्षीण होते; नटुङ्कवुम्–काँप रही हैं, इस रीति से; पचु तॊटि–सुन्दर कंकणधारिणी; ऑरुत्ति–एक स्त्री का; चॊल् कॊण्टु–वाक्य मानकर; कान् नटत्ति–जंगल जाओ; ॲऩा–कहकर; उय्न्तऩन् इरुन्तऩन्–जीवित रहे; उण्मै कावलन्–सत्यपालक राजा; मैन्तन्–उनका पुत्र; ॲऩ्ऱु–हूँ, इसलिए; इतैय चॊल् वळङ्किऩाय्–ऐसा वाक्य कहा, शायद; ॲऩा–कहकर। ४५०

राजा ने कंकणधारिणी एक नारी का वचन मानकर आपसे कह दिया कि जंगल जाओ। उससे भूमिदेवी भी प्राण क्षीण कर काँप रही हैं। इतना होने पर भी वे जीवित रहते है। उनका पुत्र मैं हूँ —इसीलिए आपने ऐसा वाक्य कहा —शायद!। ४५०

❀ मारिति यॆन्नॆनी वनङ्गॊळ् वायॆन, एरिन वॆंहुळियै यादु मुर्रुरा
दारितै तविर्हॆन वैय वाणैयिन्, कूरिन सॊळ्ळियिनुङ् गॊडिय दामॆन्रान् 451

मारु इन्नि ॲन्नै—इसके अलावा कहना क्या है; ऐय—आर्य; नी वनम् कॊळ्वाय्—आप वन जाएँगे; ॲन्न—यह जानकर; एरिन वॆंकुळियै—जो चढ़ा, उस क्रोध को; यातुम् मुर्रु उरातु—(अपने विचारों के अनुसार) कुछ न करके; आरितै तविर्क्क—शान्त होकर छोड़ दो; ॲन्न—ऐसा; आणैयिन् कूरिय—आज्ञा का वचन जो आपने कहा, उससे बढ़कर; कॊटियतु आम्—कठोर है यह; ॲन्रान्—कहा। ४५१

"आर्य ! इसके उत्तर में मैं क्या कहूँ ? जब मुझे, यह जानने पर कि आप वन जाएँगे, क्रोध हुआ और वह बढ़ने लगा; तब आपने मेरे सब इरादे व्यर्थ करते हुए आज्ञा दी कि यह क्रोध थामो और बिलकुल छोड़ दो। उस आज्ञा से भी यह कथन अत्यधिक निर्मम है।" लक्ष्मण ने दुख के साथ ऐसा कहा। ४५१

❀ शॆय्दुडैच् चॆलवमो डियादुन् दीर्न्दॆमैक्
कैदुडैत् तेहवुङ् गडवै योवैया
नॆय्दुडैत् तडैयलार् नेय मादर्हण्
मैदुडैत् तुरैपुहुम् मरङ्गॊळ् वेलिनाय् 452

ऐया—आर्य; नॆय् तुटैत्तु—घी मलकर; अटैयलार्—शत्रुओं की; नेयम् मातर्—प्यारी पत्नियों का; कण् मै तुटैत्तु—आँखों का अंजन पोंछकर; उरै पुकुम्—कोश में आनेवाले; मरम् कॊळ्—सशक्त; वेलिनाय्—भाला वाले; चॆय्तु उटैय—सुकृत से प्राप्त; चॆल्वमोटु—राज्यविभव के साथ; यातुम्—और सभी सुख-भोगों को; तीर्न्तु—त्यागकर; ॲमैयुम् कै तुटैत्तु—हमसे भी हाथ धोकर; एक कटवैयो—जा पायँगे क्या; (ॲन्रान्—कहा)। ४५२

"प्रभु ! घी-मला, और शत्रुओं की पत्नियों की आँखों से काजल पुँछवाकर (उनकी पत्नियों को विधवा बनाते हुए शत्रुओं का संहार करके) कोश में आए हुए सशक्त भाले वाले ! आपने अपने सुकृत से प्राप्त राज्य छोड़ा; और अन्य सभी सुख-भोग छोड़े। इसके साथ क्या आप हमसे भी हाथ धोकर चले जायँगे ? यह उचित है ?" लक्ष्मण ने अपनी बात इस आर्तवचन के साथ समाप्त की। ४५२

❀ उरैत्तपिन् निरामनॊन् रुरैक्क नेर्न्दिलन्
वरैत्तडन् दोळिन्नान् वदन नोक्किनान्
विरैत्तडन् दामरैक् कण्णिन् मिक्कनीर्
निरैत्तिडै यिडैविळ नॆंडिदु निर्किन्रान् 453

उरैत्त पिन्—यह कहने के बाद; इरामन्—श्रीराम; ऒन्रुम् उरैक्क नेर्न्तिलन्—कुछ भी कह नहीं सके; वरै तट तोळिन्नान्—पर्वत-सम विशाल भुजा वाले (लक्ष्मण)

का; वतनम्–वदन को; नोक्किनात्–देखते हुए; विरै–सुवासित; तट तामरै–बड़े कमल के समान; कण्णित्–आँखों से; मिक्क नीर्–बहुत निकला अश्रुजल; निरैन्त–लगातार; इटै इटै विळ–भूमि पर गिराते हुए; नॅटितु निऱ्कित्ऱात्–बहुत देर खड़े रहे। ४५३

लक्ष्मण के ऐसे कथन के बाद श्रीराम क्या कह सकते थे ? कुछ कह नही पाये। पर्वतसम विशाल कंधे वाले अपने भाई के मुख को एकटक निहारते हुए खड़े ही रह गये और उनकी सुगन्धयुक्त कमल के समान विशाल आँखों से आँसू टप-टप भूमि पर गिरने लगे। ४५३

❀ अव्वयि नरशवै यहन्ऱु नॅञ्जहत्
तॅव्वमि लिरुन्दव मुनिव नॅय्दिनान्
शॅव्विय कुमररुञ् जॅन्नि ताळ्न्दनर्
कव्वयिन् पॅरुङ्गडल् मुनियुङ् गाल्वैत्तान् 454

अ वयिन्–उस समय; नॅञ्चु अकत्तु–मन में; ऍव्वम् इल्–दुख का अनुभव न करनेवाले (निर्लिप्त); इरु तव मुनिवन्–महान तपस्वी मुनि वसिष्ठ; अरचु अवै अकन्ऱु–राजसभामण्डप से निकलकर; ऍय्तिनान्–वहाँ आये; चॅव्विय कुमररुम्–श्रेष्ठ कुमार; चॅन्नि ताळ्न्तनर्–नतमस्तक हुए; मुनियुम्–मुनिवर ने भी; कव्वैयिन्–दुख के; पॅरु कटल्–बड़े सागर में; काल् वैत्तान्–पैर रखे। ४५४

तब दुख-सुख-निर्लिप्त मुनि वसिष्ठजी सभामण्डप से निकलकर वहाँ आ गये। महान तपस्वी उनके चरणों पर दोनो कुमारों ने अपने मस्तक नवाये। मुनि के मन में, इनको देखकर, दुख घर करने लगा। मुनिवर ने दुख-सागर में पैर रखा। ४५४

❀ अत्नवर् मुहत्तिनो डहत्तै नोक्किनान्
पॊन्ऩरैच् चीरयिन् पॊलिवु नोक्किनान्
ऍन्निनि युणर्त्तुव दॅडुत्त तुन्बत्ताल्
तन्नयु मुणर्न्दिल नुणरुन् दन्मयान् 455

उणरुम् तन्मैयान्–(किसी भी विषय का) सत्व जाननेवाले स्वभाव के; अन्नवर् मुकत्तिनोटु–उनके मुखभाव के साथ; अकत्तै–मन के भाव को भी; नोक्किनान्–देख, समझ गये; पॊन् अरै–सुन्दर कमर पर; चीरैयिन् पॊलिवुम्–वल्कलचीर की शोभा; नोक्किनान्–देखी; ऍटुत्त तुन्पत्ताल्–उठी वेदना से; तन्नैयुम् उणर्न्तिलन्–अपना वश (अपनी सुध को) खो दिया; इनियुम् ऍन् उणर्त्तुवतु–और क्या समझाया जाय। ४५५

तत्वदर्शी महर्षि वसिष्ठजी ने उनका मुख देखा, उनका मन जाना और कमर पर वल्कल की शोभा देखी। समझ गये कि क्या होनेवाला है। श्रीराम और लक्ष्मण दोनो वन जाने के लिए उद्यत हो गये। यह जानकर

मुनि के मन में अपार दुख उभर आया और वे अपनी सुध भूल गये। अव क्या वताया-समझाया जाय ? । ४५५

❀ वाऴ्वितै नुदलिय मङ्ग लत्तुनाट्
टाऴ्वितै यदुवरच् चीरै शात्तिनान्
शूऴ्वितै नान्मुहत् तॊरुवन् शूऴिनुम्
ऊऴ्वितै यॊरुवरा लॊऴिक्कऱ् पालदो 456

वाऴ्वितै नुतलिय–सुखमय जीवन के लिए जो वताया गया; मङ्कलम् नाऴ्–उस शुभ दिन में; ताऴ् वितै अतु वर–दुर्भाग्य के आने से; चीरै चार्त्तितान्–वल्कल पहन लिया; चूऴ् वितै–विधिविधायक; नाल् मुकत्तु ऒरुवन्–चतुर्मुख ब्रह्मा के; चूऴितुम्–उपाय का निर्णय करने पर भी; ऊऴ्वितै–प्रारब्ध कर्म; ऒरुवराल्–किसी से भी; ऒऴिक्कल् पालतो–निवारणीय है क्या। ४५६

वसिष्ठजी मन में सोचने लगे। यह क्या दुर्भाग्य और विडम्वना है ? मंगलकार्य के लिए शुभ दिन शोधा गया था। उसी दिन यह दुर्भाग्य हुआ और श्रीराम को वल्कल पहनना पड़ गया। चतुर्मुख ब्रह्माजी भी स्वयं कोई कार्य निर्णय क्यों न करें, जव विधि प्रवल है तो किसी से भी वह टाली न जा सकेगी। ४५६

वॆव्वितै यवडर विळैन्द देयुमन्
ऱिव्वितै यिवन्वयि नॆय्दऱ् पाऱ्ऱमन्
ऱॆव्वितै निहऴ्न्ददो वेव रॆण्णमो
शॆव्विदि नॊरुमुऱै तॆरियुम् बिन्नॆन्ना 457

इ वितै–यह कृत्य; वॆम् वितैयवऴ्–वुरे कार्य करनेवाली के; तर–कराने से; विळैन्ततुम् अन्ऱु–फलीभूत हुआ भी नहीं; इवन् वयिन्–इन (पुण्य-मूर्ति) का; ऎय्तल् पाऱ्ऱुम् अन्ऱु–होने योग्य भी नहीं है; ऎ वितै निकऴ्न्ततो–(इसका हेतु) कौन सा दुष्कर्म हुआ है; एवर् ऎण्णमो–किसका षडयन्त्र है; पिन्–वाद; ऒरु मुऱै–एक तरह से; चॆव्वितिन् तॆरियुम्–साफ़ विदित होगा; ऎन्ना–यह सोचकर। ४५७

अव श्रीराम वल्कल पहनकर जो वन में जा रहे है, यह विधान क्रूर-कर्मिणी कैकेयी के कार्य का फल नहीं है ! ये पुण्यमूर्ति हैं और वे ऐसे कष्ट के लिए अर्ह नहीं है। फिर यह किस कर्म का फल है ? इसका हेतु क्या हुआ है ? किसकी करनी का यह फल है ? यह सव, पीछे समय पड़ने पर साफ़-साफ़ प्रकट हो जायगा। ऐसा सोचते हुए— । ४५७

❀ विऱ्ऱडन् दामरैच् चॆङ्गै वीरनै
उऱ्ऱडैन् दैयनी यॊरुवि योङ्गिय
कऱ्ऱडङ् गाणुदि यॆन्निऱ् कण्णहन्
मऱ्ऱडन् दानयान् वाऴ्हि लानॆन्ऱान् 458

विल्–धनुर्धर; तट तामरै–विशाल कमल-सम; चॅम् कै–लाल हस्त वाले; वीरतै उऱ्ऱु अटैन्तु–वीर के बहुत पास जाकर; ऐय–आर्य; नी ऑरुवि–आप (इस राज्य को) छोड़कर; ओङ्किय कल्–उन्नत चट्टानों के; तटम् काणुति ऍन्ऱिन्–जंगल जायेंगे तो; कण् अकल्–विस्तृत; मल् तट तानैयान्–मल्लों की बड़ी सेना के स्वामी (हमारे राजा); वाऴ्किलान्–जीवित नहीं रहेंगे; ऍन्ऱान्–कहा। ४५८

वे धनुर्धर विशाल कमलहस्त श्रीराम के पास आये। 'आर्य! आप यह राज्य छोड़कर ऊँचे पर्वतों वाले वन मे चले जायेंगे तो मल्लयुद्ध-कुशल वीरों की बड़ी सेना के स्वामी आपके पिता जीवित नहीं रहेंगे।' —वसिष्ठ ने श्रीराम से कहा। ४५८

❀ अन्नवन् पणितलै येन्दि याऱ्ऱुदल्
ऍन्नदु कडनव निडरै नीक्कुदल्
निन्नदु कडनिदु नॅऱियु मॅन्ऱनन्
पन्नहप् पायलुट् पळ्ळि नीङ्गिनान् 459

पन्नकम् पायलुळ्–पन्नग-शय्या पर से; पळ्ळि नीङ्कितान्–शयन त्यागकर आये हुए; अन्नवन् पणि–(श्रीराम ने) उनकी आज्ञा; तलै एन्ति–सिर पर धारण करके; आऱ्ऱुतल्–अदा करना; ऍन्नतु कटन्–मेरा कर्तव्य है; अवन् इटरै नीक्कुतल्–उनका दुख दूर करना; निन्नतु कटन्–आपका कर्तव्य है; नॅऱियुम् इतु–क्रम भी यही है; ऍन्ऱनन्–कहा। ४५९

क्षीरसागर की पन्नगशय्या में योगनिद्रा त्यागकर जो अयोध्या में आकर श्रीराम बने थे, उन्होंने वसिष्ठजी से कहा कि मुने! राजा की आज्ञा शिरोधार्य कर उसका पालन करना मेरा कर्तव्य-धर्म है। उनका दुख दूर करना आपका धर्म है। यही तो उचित क्रम है। ४५९

वॅव्वरम् बयिल्शुरम् विरवॅन् ऱानलन्
तॅव्वरम् बनैयशॊऱ् ऱीट्टि ऩाडनक्
कव्वरम् बॊरुदवे लरश नाय्हिला
दिव्वरन् दरुवॅनॅन् ऱॆन्ऱ दुण्डॆन्ऱान् 460

तॅव्वर् अम्पु अनैय–शत्रुओं के सायक के समान; चॊल् तीट्टिताळ् तन्नक्कु–(वर के रूप में) वाक्य जिन्होंने कहा, उनको; अरम् पॊरुत–रेती से रगड़े हुए; वेल्–(तीक्ष्ण) भाले वाले; अ अरचन्–उन राजा का; आय्किलातु–बिना सोचे; इ वरम् तरुवॅन्–यह वर दूँगा; ऍनऱु–ऐसा; एन्ऱतु उण्टु–सम्मत होना अवश्य हुआ है; वॅम् अरम् पयिल्–भयंकर रेतियों के समान रहनेवाले कंकड़ जहाँ भरे रहते हैं; चुरम् विरवु–जंगल जाओ; ऍन्ऱान् अल्लन्–यह नहीं कहा; ऍन्ऱान्–कहा। ४६०

वसिष्ठजी को दशरथजी को दिये गये वचन का निर्वाह करना था। इसलिए उन्होंने कहा कि दशरथ ने, जिनका भाला रेती द्वारा तीक्ष्ण बना हुआ है कैकेयी से, जिन्होने शत्रु के शर के समान वर के रूप में वचन कहा

था कहा अवश्य था कि वर दूँगा। पर उन्होंने यह नहीं कहा था कि आप पैर में चुभनेवाले, रेती के समान कंकड़ों से भरे जंगल में जाइए। ४६०

❀ एन्ऱन नॆन्दयिव् वरङ्ग ळॆवित्ताळ्
ईन्ऱवळ् यानदु शॆन्ऩि येन्दिनेन्
शान्ऱॆन निन्ऱनी तडुत्ति योवॆन्ऱान्
तोन्ऱिय नल्लऱ निऱुत्तत् तोन्ऱिनान् 461

तोन्ऱिय नल् अऱम्–प्रकटित सद्धर्म के; निऱुत्त तोन्ऱिनान्–उत्थानार्थ जो अवतरित हुए थे, उन्होंने; ऍन्तै इ वरङ्कळ् एन्ऱनन्–मेरे पिता ये दोनों वर देने को सम्मत हुए; ईन्ऱवळ् एवित्ताळ्–जननी माता ने आज्ञा की; यान् अतु चॆन्नि एन्तिनेन्–मैंने सिर पर धारण की; चान्ऱु ऍन–साक्षीभूत; निन्ऱ नी–विद्यमान आप; तटुत्तियो–रोकेंगे क्या; ऍन्ऱान्–कहा। ४६१

सनातन धर्म के उत्थान के लिए अवतरित हुए श्रीराम ने इसके उत्तर में कहा कि मेरे पिताजी ने वर दिये। मेरी जननी माता ने मुझे वन जाने की आज्ञा की। मैंने उसको शिरोधार्य कर लिया। साक्षी रूप में विद्यमान आप बीच में पड़कर मुझे रोकेंगे क्या ? । ४६१

❀ ऍन्ऱपिन् मुनिवनॊन् ऱियम्ब नेर्न्दिलन्
निन्ऱन नॆडुङ्गणीर् निलत्तु नीर्त्तुहक्
कुन्ऱन तोळवन् ऱॊळुदु कॊऱ्ऱवन्
पॊन्ऱिणि नॆडुमदिल् वायिल् पोयिनान् 462

ऍन्ऱ पिन्–यह कहने के बाद; मुनिवन्–महर्षि; ऒन्ऱु इयम्प नेर्न्तिलन्–कुछ कह नहीं पाये; नॆटु कण् नीर्–अधिक अश्रु; नीर्त्तु निलत्तु उक–धारा के रूप में भूमि पर गिरा; निन्ऱनन्–(गिराते हुए) खड़े रहे; कुन्ऱु अन्न तोळ् अवन्–पर्वत-सम कन्धे वाले श्रीराम; तॊऴुतु–नमस्कार करके; कॊऱ्ऱम्–विजयशील; वल्–मजबूत; पॊन् तिणि–स्वर्णखचित; नॆटु मतिल्–लम्बे प्राचीर के; वायिल्–द्वार से होकर; पोयिनान्–जाने लगे। ४६२

श्रीरामजी के ऐसा कहने के बाद वसिष्ठजी क्या कहते ? उनके पास कहने को कुछ नहीं था। इसलिए आँखों से आँसू की धारा वहाते हुए, जो भूमि पर गिर रही थी; स्तम्भित-से खड़े रह गये। तब पर्वतोन्नत कन्धे वाले श्रीराम उनको नमस्कार करके, विजयी, सुदृढ़ और स्वर्णखचित प्राचीर के द्वार से होकर जाने लगे। ४६२

शुऱ्ऱिय शीऱ्यन् ऱॊडरुन् दम्बियन्
मुऱ्ऱिय वुवहयन् मुळरिप् पोदिनुम्
कुऱ्ऱमिन् मुहत्तिनन् कॊळ्है कण्डवर्
उऱ्ऱदै यॊरुवहै युणर्त्तु वामरो 463

चुऱ्ऱिय चीरैयन्–लपेटा हुआ वल्कल वाले; तोंटरुम् तम्पियन्–पीछे लगे भाई सह; मुऱ्ऱिय उवकैयन्—पूर्ण-आनन्दित; मुळरि पोतितुम्–नीरज पुष्प से अधिक (सुन्दर); कुऱ्ऱम् इल्–निर्मल; मुकत्तिऩन्–मुख वाले; कोळ्कै–(उनका) मनोभाव; कण्टवर्–जिन्होंने जाना, वे; उऱ्ऱतै–जिस स्थिति को पहुँच गये; ओरु वकै–(उसको) एक प्रकार से; उणर्त्तुवाम्–वताएँगे। ४६३

श्रीराम की कमर मे वल्कल वेष्टित था। भाई लक्ष्मण उनके पीछे जा रहे थे। वे आनन्दपूर्ण थे। उनका मुख कंजपुष्प से वढ़कर सुन्दर था। उनका मुखभाव निर्मल था। ऐसे श्रीराम के मनोभाव को समझ कर लोगों की जो दशा हुई उसका वर्णन अव करेगे। ४६३

❀ अन्दण रुन्दव रवनि कावलर्, नन्दलि नहरुळोर् नाट्टु ळोर्हडम्
शिन्दयॆन् पुहल्वदु तेव रुळ्ळमुम्, वॆन्दनर् मेल्वरु मुऱुदि वेण्डलर् 464

तेवरुम्–देवता भी; मेल् वरुम् उऱुति–आगामी हित; वेण्टलर्–नहीं चाहते हुए; उळ्ळम् वॆन्तऩर्–चिन्ताकुलित हुए; अन्तणर्–ब्राह्मण; अरु तवर्–उत्तम तपस्वी; अवनि कावलर्–अवनिपति; नन्तल् इल् नकर् उळोर्–अक्षय नगरवासी; नाट्टु उळोर्कळ् तम्–और कोसलदेश-वासी, इन सवके; चिन्तै–मन की स्थिति; ऎन् पुकल्वतु–क्या कही जाय। ४६४

स्वयं देवता भी अपने भावी का हित भूलते हुए दुख से झुलसे। ब्राह्मण, मुनि, राजा और अक्षय उस नगर के वासी और कोसल देश के सारे प्रजाजन —सवके मन की स्थिति का क्या कहा जाय ? । ४६४

ऐयनैक् काण्डलु मणङ्ग नारॆलाम्
मॊय्यिळन् दळिर्हळाऩ् मुळरि मेल्विळुम्
मैयलिऩ् मदुहरङ् गडियु मारॆनक्
कैहळिऩ् मदर्नॆडुङ् गण्णि ऩॆऱ्ऱिनार् 465

अणङ्कु अऩ्ऩार् ऎल्लाम्–देवियों के समान रहनेवाली सव स्त्रियों ने; ऐयनै काण्टलुम्–आर्य को देखते ही; मुळरि मेल् विळुम्–कमलपुष्प पर मँड़रानेवाले; मैयल् मतुकरम्–मधुमत्त मधुकरों को; मॊय् इळ तळिर्कळाल्–घने मृदु पल्लवों से; कटियुम् आऱु ऎऩ–मार भगाते हों, जैसे; कैकळिऩ्–अपने हाथों से; मतर् नॆट्टु कण्णिऩ्–मत्त आयत आँखों पर; ऎऱ्ऱिऩार्–पीट लिए। ४६५

सुरस्त्री-सदृश नगर की स्त्रियों ने श्रीराम को इस वेष में देखते ही अपने हाथों से अपनी मत्त और लवी आँखों को पीट लिया, मानो वे अपने मुखकमलों से मत्त मधुकरों को मृदुल पल्लवों से मारकर भगा रही हों। ४६५

तम्मयु मुणर्न्दिलर् तणप्पि लन्बिनाल्
अम्मयि निरुविऩै यहऱ्ऱ वोवन्ऱेल्

विम्मिय पेरुयिर् मीण्डिला मैहोल्
शॅम्मऱ्ऱ् ऱादयिऱ् चिलवर् मुन्दिऩार् 466

चिलवर्—कुछ लोग; तणप्पु इल् अऩ्पिनाल्—अभंग प्रेम के कारण; तम्मैयुम् उणर्न्तिलर्—अपनी सुध खोकर; चॅम्मल् तऩ् तन्तैयिऩ्—प्रभु के पिता दशरथ के भी; मुन्तिऩार्—पहले (स्वर्ग) गये; अम्मैयिऩ्—परवर्ती; इरु विऩै अकऱ्ऱवो—दोनों (पाप-पुण्य-)कर्म निवारणार्थ; अऩ्ऱेल्—नहीं तो; विम्मिय पेर् उयिर्—बाहर निकले प्राण; मीण्टु इलामै कॊल्—लौट नहीं आये, इसलिए क्या। ४६६

कुछ लोग श्रीराम के प्रति अभंगप्रेम के कारण सुध-बुध खो गये और दशरथ के पहले ही स्वर्गवासी हो गये। उनका ऐसा प्राणत्याग कर्मबन्धन काटने के लिए था? या उनके प्राण जो अकस्मात हुए दुख के कारण बाहर निकले लौट नहीं आये? यानी वे जान-बूझकर मरे या अवश ही मर गये? मालूम नहीं। ४६६

विऴुन्दनर् शिलर्शिलर् विम्मि विम्मिमेल्
ऍऴुन्दनर् शिलर्मुहत् तिऴिह णीरिडै
अऴुन्दिनर् शिलर्पदैत् तळह वल्लियिन्
कॊऴुन्दन लुऱ्ऱॅनत् तुयरङ् गूर्हिन्ऱार् 467

चिलर् विऴुन्तनर्—कुछ लोग गिरे; चिलर्—कुछ लोग; विम्मि विम्मि—सिसक-सिसक कर; मेल् ऍऴुन्तनर्—दुख के साथ उठे; चिलर्—(अन्य) कुछ; मुकत्तु इऴि—मुख से निकलनेवाले; कण् नीर् इटै अऴुन्तिऩर्—अश्रुजल में डूब गये; चिलर्—कुछ; पतैत्तु—तड़पकर; अळकम् वल्लियिल्—केश-लता पर; कॊऴुन्तु अऩल् उऱ्ऱाल् ऎऩ—अग्नि की ज्वाला लग गई, जैसे; तुयरम् कूर्किऩ्ऱार्—दुख से भर जाते। ४६७

कुछ लोग रोते हुए गिरे; कुछ लोग सिसकते हुए उठे; कुछ लोग अपनी आँखों से बही अश्रुधारा में डूब गये। कुछ लोग ऐसे तड़प उठे मानो उनकी केश-लता पर आग लग गई हो; अपार दुख से उद्विग्न हुए। ४६७

करुम्बन्न मॊऴियवर् कण्ब निक्किलर्
वरम्बरु तुयरिनाऩ् मयङ्गि येकॊलाम्
इरुम्बन्न मनत्तव रॅन्न निन्ऱनर्
पॅरुम्बॊरु ळिऴन्दवर् पोलुम् बॅऱ्ऱियार् 468

करुम्पु अऩ्ऩ मॊऴियवर्—ईक्षु (-रस) समान भाषण वाली कुछ स्त्रियाँ; पॅरु पॊरुळ्—बड़ा धन; इऴन्तवर् पोलुम्—खो चुकी हों, जैसे; पॅऱ्ऱियार्—ऐसी अवस्था में पड़कर; कण् पतिक्किलर्—आँखों से आँसू न निकालतीं; इरुम्पु अऩ्ऩ—लोहे के समान; मनत्तवर् ऎऩ्ऩ—मन वाली हों, ऐसा; निऩ्ऱनर्—अकम्पित खड़ी रहीं; वरम्पु अऱु—निस्सीम; तुयरिनाल्—दुख से; मयङ्कियेकॊल् आम्—चकित हो गईं, इसलिए ही। ४६८

इक्षुरसमधुर बोली वाली कुछ स्त्रियाँ ऐसे निस्तब्ध खड़ी हो गईं मानो उनका सारा धन खो गया हो। उनकी आँखों से अश्रु नहीं निकला। देखनेवाले को यही लगता कि उनका दिल लोहे का बना है। वे इसलिए ऐसे खड़ी रहीं कि श्रीराम पर अपार प्रेम के कारण वे संज्ञाशून्य हो गईं। ४६८

नक्कन वुटलुयिर् निलैयि नित्ऱिल, इक्कण मिक्कण मॆन्नुन् दन्मय
पुक्कन पुऱत्तन पुण्णिऱ् कण्मलर्, उक्कत्त नीर्वऱन् दुदिर वारिये 469

उटल् नॆक्कत-(कुछ लोगो के) शरीर ढीले हो गये; उयिर् निलैयिल् नित्ऱिल-प्राण स्थिर न रहे; इ कणम्-इसी क्षण; इ कणम्-इसी क्षण (चले जायेंगे); ऍन्नुम् तन्मैय-ऐसी स्थिति वाले; पुऱत्तन पुक्कन-बाहर निकले और भीतर आये; कण् मलर्-नेत्रपुष्पों ने; नीर् वऱन्तु-जल सूखकर; पुण्णिन्-व्रणों के समान; उतिरम् वारि-रक्तधारा; उक्कत्त-बहाई। ४६९

कुछ लोगों के शरीर ढीले हो गये। उनके प्राण डगमगाने लगे। प्राण अभी निकले, इसी क्षण निकले —ऐसी स्थिति उनकी हो गई। असल में जान बाहर जाती फिर भीतर प्रवेश करती —ऐसी लगी। आँखों में जल नहीं रहा; वे शुष्क हो गईं। वे व्रण के समान रक्त की धारा बहाने लगीं। ४६९

इरुकैयिऱ् करिनिह रॆण्णि ऱन्दवर्
पॆरुहैयिऱ् पॆयर्त्तनर् तलैयैप् पेणलर्
ऒरुकैयिऱ् कॊण्डन रुरुट्टु हित्ऱनर्
चुरिहैयिऱ् कण्मलर् चून्ऱु नीक्किनार् 470

इरु कैयिन् करि निकर्-दो सूँड़ों वाले हाथी के समान; ऍण् इऱन्तवर्-असंख्यक; तलैयै पेणलर्-अपने सिर की परवाह न करके; पॆरु कैयिन् पॆयर्त्तनर्-अपने बड़े हाथ से घुमाकर, नोचकर; ऒरु कैयिल् कॊण्टनर्-एक हाथ में लिये; उरुट्टुकित्ऱनर्-(गेंद की तरह) लुढ़काते; कण् मलर्—आँख-फूलों को; चुरिकैयिन्-कटार से; चून्ऱु-निकालकर; नीक्किनर्-फेंक देते। ४७०

अनेक वीर थे जो दो सूँड़ो वाले हाथी के समान थे और जिन्होंने अपने सिर का भला ही नहीं सोचा पर अपने ही हाथ से उसे घुमाकर तोड़ लिया। वे उसे अपने एक हाथ में लेकर, गेंद के समान उससे खेलने लगे। ऐसे वीर भी थे जिन्होंने अपनी कटार से अपनी कमल-सी आँखें नोचकर निकाल ली। ४७०

शिन्दिन वणिमणि शिदऱि वीऴ्न्दन
पॆन्दुणर् मालयिऱ् परिन्द मेहलै

नन्दिनर् नहैयोंळि विळक्क नङ्गैमार्
सुन्दर वदनमु मदिक्कुत् तोऱ्ऱवे 471

नङ्कैमार्–स्त्रियों के; अणि चिन्तिन–आभरण छितरे; मणि चितऱि वीळ्न्तन–रत्न गिरकर बिखरे; पचु तुणर् मालैयिन्–ताजे गुच्छों की माला के समान; मेकलै परिन्त–मेखलाएँ टूटीं; नकै ऑळि विळक्कम्–मुस्कुराहट की आभा से; नन्तिनर्–हीन हुईं; चुन्तर वतनमुम्–उनके सुन्दर आनन भी; मतिक्कु तोऱ्ऱन–चन्द्र के सामने हार गये। ४७१

स्त्रियों के आभरण बिखर गये। उनके रत्न बिखर गये। ताजे फूल के गुच्छों की माला के समान मेखलाएँ टूटकर अलग हो गईं। उनके मुख से मन्दहास की शोभा दूर हो गई। उनके सुन्दर वदन अब चन्द्र के सामने हार गये। ४७१

❀ अऱुपदि नायिर ररशन् ऱेवियर्
मऱुवऱु कऱ्पिनर् मळैक्कण् णीरिनर्
शिऱुवनैत् तॉडर्न्दनर् तिऱन्द वायिनर्
ॲऱिदिरैक् कडलॆन्न विरङ्गि येङ्गिनार् 472

मऱु अऱु कऱ्पिनर्–निष्कलंक पातिव्रत्य वाली; अरचन् तेवियर्–चक्रवर्ती की पत्नियाँ; अऱुपतिनायिरर्–साठ हज़ार स्त्रियाँ; मळैकण् नीरिनर्–वर्षा के समान आँख के आँसू वालियाँ; तिऱन्त वायिनर्–खुले मुख वालियाँ; चिऱुवनै तॉटर्न्तनर्–पुत्र (श्रीराम) के पीछे जाती हुईं; ॲऱि तिरै कटल्–तरंग फेंकनेवाले समुद्र; ॲन्न–के समान; इरङ्कि–उच्च स्वर में रोते हुए; एङ्किनार्–व्याकुल हुईं। ४७२

चक्रवर्ती की साठ हज़ार निष्कलंक पतिव्रता पत्नियाँ श्रीराम के पीछे मुख खोलकर रोते हुए, आँखों से अश्रु वरसाते हुए और लहरों से भरे समुद्र के समान उच्च दुख-रव निकालते हुए जाने लगीं। ४७२

❀ कन्निनन् मयिल्हळुङ् गुयिऱ्क णङ्गळुम्
अन्नमुम् जिऱैयिळन् दवनि शेर्न्दन
ॲन्नवीळ्न् दुळन्ऱन रिराम नल्लदु
मन्नुयिर्प् पुदल्वरै मऱ्ऱुम् बॆऱ्ऱिलार् 473

इरामन् अल्लतु–श्रीराम के सिवा; मऱ्ऱुम् मन् उयिर् पुतल्वरै–और अन्य प्राण-सम पुत्र; पॆऱ्ऱिलार्–जिनके नहीं हुए थे, वे; कन्नि नल् मयिल्कळुम्–श्रेष्ठ वालमयूर और; कुयिल् कणङ्कळुम्–कोकिल-समूह और; अन्नमुम्–और हंस; चिऱै इळन्तु–पंख खोकर; अवनि चेर्न्तन ॲन्न–भूमि पर गिरे, जैसे; वीळ्न्तु–गिरकर; उळन्ऱनर्–रोईं। ४७३

उनके अपने कोई पुत्र नहीं हुए थे। इसलिए वे श्रीराम पर प्राण-सम प्यार करती थी। वे अब मोर, कोकिल और हंस पक्षहीन होकर भूमि पर गिरे जैसे नीचे गिरकर छटपटाने लगीं। (देवियों की देह की

कान्ति मोर की-सी थी; स्वर कोयल का-सा और चाल हंस की-सी थी।) । ४७३

किळैयिनु नरम्बिनु निरम्बुङ् गेळ्न
अळविऱन् दुयिर्प्पुविट् टरऱ्ऱुन् दन्मयाल्
तॊळैपडु कुळ्लिनो डियाळ्क्कुन् दोऱ्ऱन
इळैयव रमुदिनु मिनिय शौऱ्कळे 474

इळैयवर्–कम उम्र वाली उनकी; अमुतित्तुम् इनिय चॊऱ्कळ्–अमृत से अधिक मधुर शब्द; किळैयिनुम्–बाँसुरी-नाद से; नरम्पिनुम्–वीणा के स्वर से; निरम्पुम् केळ्न–बढ़कर मधुर (पहले) रहे; अळवु इऱन्तु–अपार; उयिर्प्पु विट्टु–निश्वास छोड़ते हुए; अरऱ्ऱुम् तन्मैयाल्–विलाप करने से; तॊळै पटु कुळ्लितोटु–रंध्रसहित बाँसुरी के स्वर के सामने और; याळ्क्कुम्–वीणा के सामने; तोऱ्ऱन–हार गये। ४७४

कम उमर वाली उनका स्वर अमृत से भी बढ़कर मीठा था। वह पहले बाँसुरी और वीणा के स्वर से भी अधिक श्रुतिमधुर और मनोरम होता था। पर अब, अत्यधिक निश्वास छोड़ते हुए रोती-विलापती रही। इसलिए उनका स्वर अब बाँसुरी और वीणा के स्वर के सामने हार गया। ४७४

❀ पुहलिडङ् गॊडुवनम् बोलु मॆन्ऱुतम्
महन्वयि निरङ्गुऱु महळिर् वाय्हळाल्
अहन्मदि नॆडुमनै यरत्त वाम्बल्हळ्
पहलिडै मलर्न्ददोर् पळ्नम् बोन्ऱवे 475

पुकल् इटम्–वास का स्थान; कॊटु वनम् पोलुम्–भयंकर वन ही है क्या; ऎन्ऱु–कहते हुए; तम् मकन् वयिन्–अपने पुत्र के प्रति; इरङ्कु उऱुम्–शोक करनेवाली; मकळिर् वाय्कळाल्–स्त्रियों के मुखो के दृश्य से; अकल् मतिल्–विशाल प्राचीरों के; नॆटु मनै–बड़े सौध; अरत्तम् आम्पल्कळ्–लाल कुमुद; पकल् इटै मलर्न्तत्तु–दिन मे खिले हों (जिसमें), ऐसे; ओर् पळ्नम् पोन्ऱ–एक खेत के समान रहे। ४७५

वे अपने मुख खोलकर रो रही थी। 'क्या तुम्हारा वास-योग्य स्थान भयंकर वन ही है ?' —यह पूछती हुई वे विलाप रही थी। तव उनके खुले लाल मुखो के कारण वे सब सौध, जिनके चारों ओर चौड़े प्राचीर थे ऐसे खेत के समान लगे जिसमें रक्तकुमुद दिन में ही खिले हों। ४७५

तिडरुडैक् कुङ्गुमच् चेऱुञ् जान्दमुम्
इडैयिडै वण्डलिट् टार मीर्त्तन

मिडैमुलैक् कुवडॊरीइ मेहलैत् तडम्
कडलिडैप् परन्दहद् कलुऴि याऱ्रो 476

कण् कलुऴि आऱु–अश्रुजल की नदियाँ; मिटै मुलै कुवट्टु ऒरीइ–संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से छूटकर; तिटर् उटैय–उन पर टीले के समान लिप्त; कुङ्कुमम् चेरुम्–कुंकुम का लेप; चान्तुम्–चन्दन; इटै इटै वण्टल् इट्टु—बीच-बीच में तलौंछ छोड़ते हुए; आरम् ईर्त्तन–मोती के हारों को बहाते हुए; मेकलै तटम्–मेखला-वलयित विशाल; कटल इटै–(कटि) समुद्र में; परन्त–प्रवेश कर फैलीं। ४७६

उनकी आँखों से जो अश्रुनदियाँ निकली वे संश्लिष्ट स्तनों के शिखरों से होकर नीचे बह चली। उन पर से कुंकुम और चन्दन का लेप गलाकर वहा ले चलीं। इधर-उधर उसको तलौंछ के रूप में छोड़ती हुई आगे वढ़ी। मोती की मालाओं को वहा ले जाकर वे मेखला-वलयित कटितट रूपी विशाल सागर में प्रविष्ट होकर फैल गई। ४७६

तण्डलैक् कोशलत् तलैवन् मादरैक्, कण्डन ऩिरवियुङ् गमल वाण्मुहम्
विण्डलत् तुऱैयुनल् वेन्दर् कायिनुम्, उण्डिड रुऱ्ऱपो दॆन्नु ऱादन 477

तण्टलै–उद्यानों से घिरे; कोचलम् तलैवन् मातरै–कोसल देश के राजा की पत्नियों के; कमलम् वाळ् मुकम्—कमल-सम उज्ज्वल मुख; इरवियुम् कण्टनन्–रवि ने (आज ही) देखे; विण् तलत्तु उऱैयुम्–आकाश के वासी; नल् वेन्तर्कु आयिनुम्–श्रेष्ठ देवेन्द्र के लिए भी; इटर् उण्टु–दुर्भाग्य होगा; उऱ्ऱ पोतु–जब होता है; उऱातन ॲन्–न आनेवाले (अपमान) क्या हैं। ४७७

उपवनों से भरे कोसल देश के अधिपति दशरथ की उन पत्नियों के मुख सूर्य ने उस दिन देख लिए। (इसके पहले सूर्य ने भी उनको नहीं देखा था।) उनकी ऐसी संकट की दशा हो गई! हाँ देवेन्द्र के भी दिन फिरते है और दुर्भाग्य का दौर हो जाता है। कौन सी दुर्गतियाँ हैं, जो तब उन्हें प्राप्त नहीं होतीं? । ४७७

तायरुङ् गिळैञरुञ् जार्न्दु ळार्हळुम्, शेयरु मणियरुञ् शिऱन्द मादरुम्
कायॆरि युऱ्ऱन रनैय कव्वयर्, वायिलु मुन्ऱिलु मरैय मॊय्त्तनर् 478

तायरुम्–माताएँ (साठ सहस्र); किळैञरुम्–अन्य रिश्तेदार; चार्न्तु उळ्ळार्कळुम्–उनके परिवार; चेयरुम् अणियरुम्–दूर की और निकट की; चिऱन्त मातरुम्–श्रेष्ठ स्त्रियाँ; काय् ॲरि–जलनेवाली आग में; उऱ्ऱनर् अनैय–प्रविष्ट हुई, जैसे; कव्वैयर्–दुखिनी बनकर; वायिलुम् मुन्ऱिलुम् मरैय–द्वारों और आँगनों को ढँकते हुए; मॊय्त्तनर्–एकत्रित हुई। ४७८

वे साठ हजार माताएँ, उनकी रिश्तेदारिनें, उनके परिवार, और दूर और पास के रिश्ते की स्त्रियाँ जलती आग में प्रविष्ट-सी दुखी होकर सौधों के द्वारों और आँगनों में आ जुट गई। ४७८

इरैत्तन रिरैत्तॆऴुन् देङ्गि यॆङ्गणुम्
तिरैप्पॆरुङ् गडलॆनत् तॊडर्न्दु पिन्शॆल
उरैप्पदै युणर्न्दिल नॊऴिप्प दोर्हिलन्
वरैप्पुयत् तण्णऱन् मनैयै नोक्किनान् 479

इरैत्तनर्–शोर मचाया; इरैत्तु ऍऴुन्तु–शोर करते हुए उठकर; ऍङ्कणुम्–सब ओर; तिरै पॆरु कटल् ऍन–लहरों-सहित बड़े सागर के समान; पिन् तॊटर्न्तु चॆ..–पीछे लगे चलीं; वरै पुयत्तु अण्णल्—पर्वत-सम भुजाओं के प्रभु; उरैप्पतै उणर्न्तिलन्–(क्या) कहना (यह) जान न पाये; ऒऴिप्पतु ओर्किलन्–उनको रोकने का उपाय न सूझा; तन् मनैयै नोक्किनान्–अपने महल की तरफ़ (देखा) गया। ४७९

वे सब दुख का उच्च रव करते हुए, सब ओर, गर्जनयुक्त सागर के समान श्रीराम के पीछे चली। पर्वतसम भुजा वाले श्रीराम उनसे क्या कहते ? उन्हे क्या कहना है ? —यह नही सूझा। वे उनको रोकने का उपाय भी न सोच सके। वे चुपचाप अपने महल की तरफ़ जाने लगे। ४७९

❀ नन्नॆडु नळिमुडि शूड नन्मणिप्, पॊन्नॆडुन् देर्मिशैप् पवनि पोनवन्
तुन्नॆडुञ् जीरैयैच् चुऱ्ऱि मीण्डुमप्, पॊन्नॆडुन् दॆरुविडैप् पोद नोक्किनर् 480

नल् नॆटु नळि मुटि–उत्तम, बड़े, सम्मानित किरीट को; चूट–धारण करने के लिए; नल् मणि–चुने हुए अच्छे रत्नों से सज्जित; पॊन् नॆटु तेर् मिचै–स्वर्णमय बड़े रथ पर; पवनि पोनवन्–जो वीथी-यात्रा पर गये, वे; तुन् नॆटु चीरैयै–सिये हुए वल्कल को; चुऱ्ऱि–वेष्टित करके; मीण्टुम्–लौटकर; अ पॊन् नॆटु तॆरु–उस उज्ज्वल वीथी के; इटै पोतल्–मध्य जाते; नोक्किनर्–(सबने) देखा। ४८०

श्रीराम जिस वीथी से श्रेष्ठ सुन्दर और सम्मानित किरीट पहनने के लिए रत्नजटित स्वर्णमय रथ पर वीथी-यात्रा मे गये थे उसी वीथी से, वल्कलधारी बनकर पैदल जा रहे थे। इसको सबने देखा। ४८०

❀ अञ्जन मेन्नियिव् वळहर् कॆय्दिय
वञ्जनै कण्डपिन् वहिर्न्दु नीङ्गला
नॆञ्जिनुम् वलिदुयिर् निनैप्प दॆन्शिल
नञ्जिनुम् वलियनन् नलमॆन् ऱार्शिलर् 481

अञ्चनम् मेनि—काजल-सम शरीर के; इ अळकर्कु ऍय्तिय–इन सुन्दर पुरुषोत्तम को प्राप्त; वञ्चनै कण्ट पिन्–वंचना को देखने के बाद; वकिर्न्तु नीङ्क अल्ला–टूटा जो नहीं; नॆञ्चित्तुम्–उस हृदय से अधिक; उयिर् वलितु–प्राण कठोर हैं; चिल निनैप्पतु ऍन्–अन्य कुछ प्रकार से सोचा क्या जाय; नम् नलम्–हमारा भाग्य; नञ्चित्तुम् वलितु–विष से भी क्रूर है; ऍन्ऱार्–कहा; चिलर्–कुछ लोगों ने। ४८१

अंजनवर्ण सुन्दर पुरुष श्रीराम पर किसीकी वंचना से इतना भारी संकट आया है। यह देखकर भी हमारा हृदय टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ। यह बड़ा कठोर है! उससे भी निर्मम है हमारे प्राण। अन्य प्रकारों से क्यों सोचा जाय? हमारा भाग्य ही विष से अधिक क्रूर निकला। —ऐसा कुछ लोगों ने कहा। ४८१

❀ मण्कोंडु वरुमॅन वळियि रुन्ददियाम्
अॅण्कोंडु शुडर्वनत् तेहल् काणवो
पॅण्कोंडु विनैशॅय्प् पॅऱ्ऱ नाट्टिनिल्
कण्कोंडु पिऱत्तलुङ् गडैयॅन् ऱार्शिलर् 482

मण् कोंडु वरुम् अॅन्न–पृथ्वी साथ लेकर (मुकुट धरकर) आएँगे, यह सोचकर; याम् वळि इरुन्ततु–हम जो राह देखते रहे, वह; अॅण् कोंडु–हमारा हृदय लेकर; चुटर् वनत्तु–जलते जंगल में; एकल् काणवो-जाना देखने के लिए है क्या; पॅण्–एक स्त्री; कोंट विनै चॅय पॅऱ्ऱ नाट्टिनिल्–क्रूर काम करना जहाँ सम्भव हुआ, उस राज्य में; कण् कोंडु पिऱत्तलुम्–आँखों के साथ जन्म लेना भी; कटै–निकृष्टता है; अॅन्ऱार् चिलर्–कहा कुछ ने। ४८२

कुछ लोगों ने कहा— हम यह विश्वास करके उनकी राह देख रहे थे कि वे 'पृथ्वी के स्वामी बनकर आयेंगे' पर वे हमारा हृदय छीनकर गरम धूप के जंगल में जा रहे है। क्या यही देखने के लिए हम प्रतीक्षा में बैठे थे? इस देश में, जहाँ एक स्त्री का अनुचित रूप से क्रूर कर्म करना संभव हो गया, दृष्टिशक्ति के साथ जन्म लेना ही पाप था। ४८२

❀ मुळुवदे पिऱन्दुल हुडैय मॉय्म्बिनोन्
उळुवैशेर् कानहत् तुऱैवॅन् यानॅना
अॅळुवदे यॅळुदल्कण् डिरुप्प देयिरुन्
दळुवदे यळहिदिव् वन्बॅन् ऱार्शिलर् 483

पिऱन्तु–(ज्येष्ठ पुत्र के रूप में) जन्म लेकर; उलकम् मुळुवते उटैय–सारे भुवन के स्वामी जो हुए; मॉय्म्पिनोन्–वे वीर; उळुवै चेर्–बाघों का वासस्थान; कानकत्तु उऱैवॅन् यान्–जंगल में वास करूँगा; अॅन्न–कहकर; अॅळुवते–निकलें, (यह उचित है) क्या; अॅळुतल् कण्टु–निकलना देखकर; इरुप्पते–चुप रह जायँ क्या; इरुन्तु अळुवते–रहकर रोएँगे क्या; इ अन्पु अळकितु–यह स्नेह भी भला है; अॅन्ऱार् चिलर्–कहा कुछ ने। ४८३

कुछ लोगों ने कहा कि श्रीराम ज्येष्ठ पुत्र पैदा हुए हैं। सारा भुवन उनका है। वे योग्य वीरता भी रखते हैं। इतना होने पर भी वे, 'बाघ जहाँ वास करते है उस वन में जाकर वास करूँगा' —यह कहते हुए जा रहे हैं। क्या यह उचित है? उनको जाते हुए देखकर हम चुप रहें; निष्क्रिय रहकर रोएँ —यही हमारा उन पर स्नेह का निशान है? हमारा स्नेह भी भला रहा! । ४८३

वलङ्गडिन्	देेळ्ैशोंऱ्	कॉण्ड	मन्ननै
नलङ्गडिन्	दऱङ्गॅड	नयत्ति	योवॅनाक्
कुलङ्गडिन्	दान्वलि	कॉण्ड	कॉण्डलै
निलङ्गडिन्	दाळॉडु	निहरॅन्	ऱार्शिलर् 484

चिलर्–कुछ लोग; वलम् कटिन्तु–अपना बल त्यागकर; एऴै चॉल् कॉण्ट–एक स्त्री का वचन जिन्होंने माना; मन्ननै–उन राजा को; नलम् कटिन्तु–भलाई छोड़कर; अऱम् कॅट–धर्म बिगाड़ने की; तयत्तियो–सोची क्या; ॲना–ऐसा न पूछनेवाले; कुलम् कटिन्तान्–क्षत्रियकुल को हरानेवाले परशुराम का; वलि कॉण्ट–बल परास्त करनेवाले; कॉण्टलै–मेघश्याम को; निलम् कटिन्ताळॊटु–भूमि (का अधिकार) छीननेवाली कैकेयी के; निकर्–समान मानो; ॲन्ऱार्–कहा। ४८४

राजा अपनी शक्ति भूलकर एक स्त्री के वचन को मान गये। उनसे इन श्रीराम को पूछना चाहिए था कि हित का त्याग कर धर्म का गला घोंटने की बात आपने सोची है क्या ? पर क्षत्रियकुल-घाती परशुराम को परास्त करनेवाले मेघश्याम ने यह नहीं किया। उनमें और उनसे देश छीननेवाली कैकेयी में क्या भेद रहा ? दोनो समान समझिए। —यह कहा कुछ लोगों ने। ४८४

तिरुवरै	शुऱ्ऱिय	शीरै	याडैयन्
पॉरुवरुन्	दुयरिनन्	ऱॉडर्न्दु	पोहिन्ऱान्
इरुवरैप्	पयन्दव	ळीन्ऱ	कान्मुळै
ऑरुवनो	विवऱ्किव्वू	रुऱवॅन्	ऱार्शिलर् 485

इरुवरै पयन्तवळ् ईन्ऱ–दो पुत्रों की जननी के जन्मे; काल् मुळै–ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण; तिरु अरै चुऱ्ऱिय–अपनी शोभायमान कमर में; चीरै आटैयन्–वल्कल पहने हुए; पॉरुवु अरुम्–उपमाहीन; तुयरित्तन्–दुखी बनकर; तॉटर्न्तु पोकिन्ऱान्–(श्रीराम के) पीछे लगे जाते है; इवऱ्कु–इन श्रीराम के; इ ऊर्–इस नगर में; उऱवु ऑरुवनो–रिश्तेदार एक ही है क्या; ॲन्ऱार् चिलर्–कहा कुछ लोगों ने। ४८५

कुछ लोगों ने कहा कि सुमित्रादेवी दो पुत्रों की जननी है। उनके ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण ही वल्कल पहनकर, अत्यधिक दुख के साथ श्रीराम के साथ जा रहे है। इस विशाल नगर मे श्रीराम के स्नेही केवल वे एक ही है ? । ४८५

मुळुक्कलिन्	वलियनम्	मूरि	नॅञ्जिनै
मळुक्कळिऱ्	पिळत्तुमॅन्	ऱोडु	वार्वळि
ऑळुक्किय	कण्णिनिऱ्	कलुळि	यूऱ्ऱिडै
इळुक्कलि	निळुक्किवीळ्न्	दिडरुऱ्	ऱार्शिलर् 486

चिलर्–कुछ; मुळु कल्लिन् वलिय–बड़ी चट्टान से अधिक कठोर; नम् मूरि नॅञ्चिनै–हमारे सख्त हृदय को; मळुक्कळिन्–कुल्हाड़ियों से; पिळत्तुम् ॲन्ऱु–फाड़

देंगे, यह कहकर; ओटुवार्–दौड़नेवालों ने; वऴि–मार्ग में; ऑऴुक्किय–जो बरसाया; कण्णिऩिल् कलुऴि ऊऱ्ऱु–वह आँखों का झरना; इटै इऴुक्कलिऩ्–बीच-बीच से फिसलाता था, इसलिए; इऴुक्कि वीऴ्न्तु–फिसलकर गिरे; इटर् उऴ्ऱार्–और संकटग्रस्त हुए। ४८६

कुछ लोग चट्टान से कठोर अपने हृदय को कुल्हाड़ी से फाड़ दें, इस विचार से दौड़ रहे थे। तब उनकी आँखों से अश्रुधारा जो बही उसके कारण मार्ग कीचड़ से भर गया। वे उससे फिसलकर गिर गये और तंग हो गये। ४८६

पॊऩ्ऩणि मणियणि मॆय्यिऱ् पोक्किनर्
मिऩ्ऩॆऩ मीऩॆऩ विलक्कि मॆय्विलैप्
पऩ्निऱत् तुहिलिनैप् परित्तु नीक्किये
शिऩ्ऩनुण् डुहिलरैच् चॆऱिक्किऩ् ऱार्शिलर् 487

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; मिऩ् ऎऩ–बिजली के समान; मीऩ् ऎऩ–आकाश (की मछलियों) के नक्षत्रों की तरह; मॆय्यिल्–अपने शरीरों पर के; पॊऩ् अणि–स्वर्णाभरणों और; मणि अणि–रत्नाभूषणों को; विलक्कि पोक्किऩर्–उतारकर दूर करके; मॆय्विलै–अधिक दाम के; पल् निऱ–रंग-बिरंगे; तुकिलिऩै–वस्त्रों को; परित्तु नीक्कि–निकाल दूर करके; चिऩ्नम् तुण् तुकिल्–फटे-पुराने सादे वस्त्र; अरै चॆऱिक्किऩ्ऱार्–कमर में पहन लेती है। ४८७

कुछ स्त्रियों ने अपने शरीर पर से बिजली और नक्षत्रों के समान शोभनेवाले स्वर्ण तथा रत्नाभरणों को उतारकर फेंक दिया और महँगे और रंगीन वस्त्र हटाकर फटे-पुराने सादे कपड़े पहन लिये। ४८७

※ निऱैमह वुडैयवर् नॆऱिशॆ लैम्बॊऱि
कुऱैमहक् कुऱैयिनुङ् कॊडुप्प रामुयिर्
मुऱैमहन् वनम्बुह मॊऴियैक् काक्किन्ऱ
इऱैमहन् ऱिरुमन मिरुम्बॆन् ऱार्शिलर् 488

चिलर्–कुछ लोग; निऱै मक उटैयवर्–बहुत पुत्र वाले हों (तो भी); नॆऱि चॆल्–विषय पर चलनेवाली; ऐन्तु पॊऱि–पाँच इन्द्रियों में; कुऱै मक–एक भी से हीन पुत्र के; कुऱैयितुम्–मर जाने पर; उयिर् कॊटुप्पर्–अपनी जान दे देंगे; आम्–यह लोकरीति है; मुऱै मकऩ्–अधिकारी श्रेष्ठ पुत्र को; वऩम् पुक–जंगल जाने देकर; मॊऴियै काक्किऩ्ऱ–अपना वचन पालन करनेवाले; इऱैमकऩ्–(हमारे) राजा का; तिरु मऩम्–सुन्दर मन; इरुम्पु ऎऩ्ऱार्–लोहा है, कहते। ४८८

कुछ लोगों ने दशरथ की यों आलोचना की। किसी के अनेक पुत्र भी हों और उनमें एक लूला या लँगड़ा, काना या अन्धा पुत्र भी मर जाय तो वह अपनी जान दे देगा। यही लोकरीति देखी जाती है। पर

दशरथ को देखिए—। अपने ज्येष्ठ और श्रेष्ठ पुत्र राम को वन भेजकर अपना वचन-पालन करते हैं ! अवश्य उनका मन लोहे का होगा। ४८८

वानमे यनैयदोर् करुणै माण्बलाल्, ऊनम्वे ट्रिलानुड नुलहम् यावैयुम्
कानमे पुहुमॆनिऱ् कादन् मैन्दनुम्, तानुमे याळ्ङ्गॊ ड्ररैयॆन् ड्रार्शिलर् 489

वान्मे अनैयतु–मेघ के ही सम; ओर्–अप्रतिम; करुणै–करुणा; माण्पु–अन्य उत्तम गुण; अल्लाल्–इनके अलावा; वेऱु ऊऩम् इलातुटऩ्–जिनमें कोई कमी नहीं है, उन श्रीराम के साथ; उलकम् यावैयुम्–सारा देश; कानमे पुकुम् ऎऩिल्–वन में चला जायगा तो; कातल् मैन्तऩुम् तानुमे–अपने प्यारे पुत्र भरत और आप ही; तरै आळुम् कॊल्–खाली भूमि का शासन करेंगे क्या। ४८९

कुछ स्त्रियाँ कहतीं कि समझो कि मेघश्याम, करुणानिधि, श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण और बिल्कुल त्रुटिहीन श्रीराम के साथ सारे देश के लोग वन चले जाते है तो क्या चक्रवर्ती अपने प्यारे पुत्र के साथ रहकर खाली भूमि का शासन करते रहेंगे शायद ! । ४८९

वाङ्गिय मरुङ्गुलै वरुत्तुङ् गॊङ्गयार्
पूङ्गॊडि यॊदुङ्गुव पोलॊ दुङ्गिनार्
एङ्गिय कुरलिऩ रिणैन्द कान्तळिऩ्
ताङ्गिय शॆङ्गैदन् दलैयिन् मेलुळार् 490

वाङ्किय मरुङ्कुलै–धँसी हुई (पतली) कमर को; वरुत्तुम्–दुख देनेवाले; कॊङ्कैयार्–स्तनों की; एङ्किय कुरलिऩर्–रो-रोकर क्षीण हुए स्वर वालियाँ; इणैन्त कान्तळिऩ्–संश्लिष्ट 'कान्तळ्' पुष्पों के समान; तम् तलैयिऩ् मेल् ताङ्किय चॆम् कै–सिर पर जोड़े रखे गये लाल हाथों; उळ्ळार्–वालियाँ; पू कॊटि ऒतुङ्कुव पोल्–पुष्पलताएँ चलतीं जैसे; ऒतुङ्किऩार्–चलीं। ४९०

कुछ स्त्रियाँ जिनके स्तन अन्दर धँसी हुई कमर को कष्ट दे रहे थे, रोते हुए अपने दोनो हाथों को, कांतळ् पुष्पो के जोड़े के समान जोड़कर सिर पर रखे, पुष्पलता के समान चल रही थी। ४९०

तलैक्कुवट् टयन्मदि तवळु माळिहै
निलैक्कुवट् टिडैयिडै निन्ऱ नङ्गैमार्
मुलैक्कुवट् टिळिहणी रालि मॊय्त्तुह
मलैक्कुवट् टयर्वुरु मयिलिन् माळ्हिऩार् 491

तलै कुवटु अयल्–(जिनके) शीर्ष भागों के पास; मति तवळुम्–चन्द्र रेगता है; माळिकै–ऐसे सौधों के; कुवटु निलै–उच्च भागो पर; इटै इटै–बीच-बीच में; निन्ऱ–स्थित; नङ्कैमार्–रमणियों के; मुलै कुवटु इऴि–स्तनशिखरों पर से बहनेवाली; कण् नीर् आलि–आँसू की बूँदें; मॊय्त्तु उक–एकत्र होकर गिरीं; मलै कुवटु अयर्वु उरुम्–पर्वत-शिखरों पर कुम्हलानेवाले; मयिलिऩ्–मोरों के समान; माऴ्किऩार्–दुखतप्त हुईं। ४९१

कुछ प्रासादों के ऊपरी भागों में, जिनके पास चन्द्र चल रहा था (याने चन्द्रस्पर्शी, ऊँचे प्रासादों पर) स्त्रियाँ खड़ी थीं। उनकी आँखों से अश्रुधाराएँ निकलीं, स्तनों के ऊपरी भाग पर से होती हुई नीचे बह रही थीं। वे स्त्रियाँ पर्वत-शिखरों पर कुम्हलाते हुए मोर जैसे दुखतप्त दिख रही थीं। ४९१

मञ्जॆंन्न वहिऱ्पुहै वळ्ङ्गु माळिहै
अॆञ्जलिल् शाळरत् तिरङ्गु मिन्शॊलार्
अञ्जनक् कण्गणी ररुवि शोर्दरप्
पञ्जरत् तिरुन्दळुङ् गिळियिऩ् पन्निनार् 492

मञ्चु अॆन्न–मेघों के समान; अकिल् पुकै वळङ्कुम्–अगरु का धुआँ निकालनेवाले; माळिकै–प्रासादों की; अॆञ्चल् इल् चाळरत्तु–असंख्यक खिड़कियों के पास; इरङ्कुम्–दुख प्रकट करते हुए रहनेवाली; इऩ् चॊल्लार्–मधुर-भाषिणियाँ; अञ्चऩम् कण्कळ्–अंजन-लगी आँखों से; नीर् अरुवि चोर् तर–सरिता-सम आँसू बहाते हुए; पञ्चरत्तु इरुन्तु अळुम्–पिंजरे में रहकर रोनेवाले; किळियिऩ्–शुकों के समान; पऩ्ऩिऩार्–कई बातें कहती हुई विलाप करती थीं। ४९२

उन प्रासादों के, जिनके अन्दर से अगरु का धुआँ मेघ के समान निकल रहा था, झरोखों के पास स्त्रियाँ खड़ी होकर रो रही थी। वे मधुर-भाषिणी स्त्रियाँ, अपने काजल-लगे नेत्रों से आँसू-नदियाँ बहाते हुए पंजरस्थ शुकों के समान कई बातें कहकर विलाप रही थी। ४९२

नन्नॆंड्ड् गण्गळि नाऩ्ऱ नीर्त्तुळि
तन्नॆंडुन् दारैह ळ्ळत्तिन् वीऴ्दलाल्
अन्नॆंडुङ् गुमरतुक् कळुङ्गि माडमुम्
पॊन्नॆंडुङ् गण्कुऴित् तळुव पोन्ऱवे 493

नल् नॆंटु कण्कळिऩ् नाऩ्ऱ–(ऊपर रही स्त्रियों की) सुन्दर आयत आँखों से निकले हुए; नीर् तुळि तऩ्–अश्रुकणों की; नॆंटु तारैकळ्–मिली हुई धाराएँ; तळत्तिऩ् वीऴ्तलाल्–ऊपर से नीचे गिरने से; माटमुम्–अटारी भी; अ नॆंटु कुमरऩुक्कु अळुङ्कि–उन श्रेष्ठ कुमार से सहानुभूति करके; पॊऩ् नॆंटु कण् कुऴित्तु–सुन्दर आयत आँखों को धँसाकर; अळुव पोऩ्ऱ–रोते-से लगे। ४९३

प्रासादों की छतों पर खड़ी होकर स्त्रियाँ रो रही थी। उनकी आँखों से निकलनेवाले आँसू के कण धाराएँ बने और वे धाराएँ नीचे गिरने लगीं। तब ऐसा लगता था कि स्वयं प्रासाद भी उन श्रेष्ठ और बड़े चक्रवर्ती के कुमार श्रीराम से सहानुभूति करके आँखों में गड्ढे बनाते हुए रो रहे हों। ४९३

मक्कळै मऱ्ऱ्दनर् मादर् तायरैप्
पुक्किड मुणर्न्दिलर् पुदल्वर् पूशलिट्
टुक्कन रुयङ्गिन रुरुहिच् चोर्न्दनर्
तुक्कनिन् ऱऱिविनैच् चूऱै याडवे 494

तुक्कम् निऩ्ऱु–दुख ने स्थिर होकर; अऱिविनै चूऱै आटवे–बुद्धि को लूट लिया, इसलिए; मातर्–स्त्रियों ने; मक्कळै मऱ्ऱ्ततर्–अपने पुत्रों को भुला दिया; पुतल्वर्–पुत्रों ने; तायर् पुक्क इटम्–माताओं के गमनस्थान; उणर्न्तिलर्–न जाना; पूचल् इट्टु–रोते-चिल्लाते; उक्कतर्–आँसू वहाये; उयङ्किऩर्–कुम्हलाये; उरुकि चोर्न्ततनर्–विकल होकर थक गये। ४६४

दुख ने स्थायी रहकर लोगों की वुद्धि हर ली। इसलिए माताओं ने अपने पुत्रों को भुला दिया। वत्स भी अपनी माताओं के रहने के स्थान नहीं जान सके। सव रोते-चिल्लाते, आँसू वहाते-कुम्हलाते और विगलित होते थक जाते थे। ४९४

कामरङ् गनिन्दैनक् कनिन्द मैन्मौऴि, मामडन् दैयरैला मरुहु शेर्दलाल्
तेमरु नरुङ्गुऴर् ऱिरुवि नीङ्गिय, तामरै यौत्तन तवळ माडमे 495

कामरम् कतिन्ततु अैन–'श्रीकामर' नामक राग अपनी उच्च गति पर हो, ऐसा; कनित्त–मधुरतापूर्ण; मैल् मौऴि–मृदु वोली वाली; मा मटन्तैयर् अैल्लाम्–श्रेष्ठ लक्ष्मी-सम-स्त्रियाँ, सभी; मरुकु चेर्तलाल्–मार्ग पर जुट गई, इसलिए; तवळम् माटम्–धवल प्रासाद; तेम् मरु–मधुरता भरा; नऱु कुऴल्–सुवासित केश वाली; तिरुविन् नीङ्किय–श्री-विहीन; तामरै ऒत्तत–कमल-तुल्य हो रहे। ४६५

सभी स्त्रियाँ, जिनकी वाणी 'श्रीकामर' के खूव अलापे स्वर के समान मीठी थी सड़कों पर आ गईं। इसलिए स्त्रियों से विहीन धवल प्रासाद मधुर और सुवासित केश वाली श्री से परित्यक्त कमलों के समान शोभाहीन हो गये। ४९५

❀ मऴैक्कुलम् बुरैहुऴल् विरिन्दु मण्णुऱक्
कुऴैक्कुल मुहत्तियर् कुऴाङ्गॊण् डेङ्गिनर्
इऴैक्कुलञ् जिदऱिड वेवुण् डोय्वुरुम्
उऴैक्कुल मुऴैप्पत वौत्तोर् पालॆलाम् 496

ओर् पाल् अैलाम्–एक ओर; कुऴै–कुण्डलधारिणी; कुलम् मुकत्तियर्–उज्ज्वल मुख वाली स्त्रियाँ; कुऴाम् कॊण्टु–दलों में जुटकर; मऴै कुलम् पुरै–मेघ-समूह के समान; कुऴल्–केश को; विरिन्तु मण् उऱ–खुलकर भूमि पर विखरने देते हुए; इऴै कुलम् चितऱिट–और आभरण-जाल को छितरने देते हुए; ए उण्टु ओय्वु उरुम्–शराहत हो गिरनेवाले; उऴै कुलम्–हरिण-समूह; उऴैप्पत ऒत्तु–दुख करते जैसे; एङ्किनर्–दुखी हुईं। ४६६

एक ओर देखिए। उस तरफ़ सभी स्थानों में कुंडलधारिणी स्त्रियाँ

प्रभाहीन मुखों के साथ आ जुटी थीं। उनके मेघसम केश खुलकर नीचे भूमि पर बिखरे थे। उनके आभरण गिर गये थे। वे शराहत हरिण-समूह जैसे पीड़ा का अनुभव करती रही। ४९६

कॉडियडङ् गिन्नमन्नैक् कुन्ऱ्ऱङ् गोमुर
शिडियडङ् गिनमुळक् किळन्द पल्लियम्
बडियडङ् गलुनिमिर् पशुङ्गण् मारियाल्
पॉडियडङ् गिन्नमदिर् पुरत्तु वीदिये 497

मन्नै कुन्ऱम्–प्रासाद रूपी पर्वतों पर; कॉटि अटङ्किन–पताकाएँ स्थिर रहीं; को मुरचु–राजकीय ढोल; इटि अटङ्किन–वज्रसम घोष से विहीन रहे; पल् इयम्–विविध वाद्य; मुळक्कु इळन्त–बजे नहीं; पटि अटङ्कलुम्–भूमि पर सब जगह; निमिर्–विपुल; पचु कण् मारियाल्–ताजे आँसुओं की वर्षा के कारण; मतिल् पुरत्तु वीति–प्राकार से लगी वीथियों में; पॉटि अटङ्किन–धूलि थम गई। ४९७

पर्वतसम प्रासादों पर पताकाएँ नही फहरती थीं। राज-ढोल नहीं बज रहे थे। विविध वाद्य बजने से रह गये। भूमि भर में आँखों के आँसू की धारा बह रही थी अतः धूलि थम गई। (इसमे "अटङ्किन" शब्द विविध अर्थों में प्रयुक्त होकर बार-बार आया है।)। ४९७

❀ अट्टिलु मिळन्दन पुहैय हिऱ्पुहै
नॅट्टिलु मिळन्दन निऱैन्द पाल्किळि
वट्टिलु मिळन्दन मरुङ्गु कान्मणित्
तॊट्टिलु मिळन्दन् महवुञ् जोर्न्दवे 498

अट्टिलुम्–पाकशालाएँ भी; पुकै इळन्तन–धुएँ से रिक्त हो गईं; नॅटु इल्लुम्–ऊँचे प्रासाद भी; अकिल् पुकै इळन्तन–अगरु के धुएँ खो गये; किळि वट्टिलुम्–शुकाशनपात्र भी; निऱैन्त पाल् इळन्तन–दूध से पूर्ण रहने से रह गये; मरुङ्कु कान्–चारों ओर प्रकाश बिखरनेवाले; मणि तॊट्टिलुम्–रत्नमय पालने भी; मकवु इळन्त–शिशु-रहित हो रहे; मकवुम् चोर्न्त–शिशु भी थके पड़े रहे। ४९८

पाकशालाओं में (पकाने का काम नहीं होता था, इसलिए) धुएँ का अभाव था। ऊँचे माढ़ों में अगरु का धुआँ नही पाया जाता था। शुकों को खिलाने के लिए उपयुक्त कटोरे दूध से खाली थे। रत्नमय पालनों में, जिनसे चारों ओर कान्ति छूटती थी, शिशु नही थे। शिशु जो नीचे पड़े थे, किसी के द्वारा उठाये न जाने से थके पड़े रहे। ४९८

ऑळितुऱन् दन्नमुह मुयिर्त्तु ऱन्दॅन्नत्
तुळितुऱन् दन्नमुहिऱ् ऱीहैयुन् दूयवाम्
तळितुऱन् दन्नबलि दान यान्नैयुम्
कळितुऱन् दन्नमलर्क् कळ्ळुण् वण्डिने 499

मुकम्–मुख; उयिर् तुऱन्ताल् अँन–प्राणविहीन हुए जैसे; ऑळि तुऱन्तन–निष्प्रभ हुए; मुकिल् तॉकैयुम्–मेघ-समूह भी; तुळि तुऱन्तन–जलकण-रिक्त हो गये; तूय आम् तळि–पवित्र देवालय; पलि तुऱन्तन–पूजा खो गये; मलर्कळ् उण् वण्टिन्–पुष्प मे शहद पीनेवाले भ्रमरो के समान; तानम् यानैयुम्–मत्तगज भी; कळि तुऱन्तन–मस्ती छोड़ गये। ४९९

लोगों के मुख कान्तिहीन हो रहे। मेघो के दल जल-कण से रिक्त रहे। पवित्र देवालयों मे पूजा नही होती थी। फूलों पर मँड़राकर शहद पीनेवाले भ्रमरो के साथ मत्तगजो ने भी अपनी मस्तता खो दी। ४९९

निळल्पिरिन्	दन्तकुडै	नॅडुङ्ग	णेळयर् -
कुळल्पिरिन्	दनमलर्	कुमरर्	ताळिणै
कळल्पिरिन्	दनशिनक्	कामन्	वाळियुम्
अळल्पिरिन्	दन्तुणै	पिरिन्द	वन्ऱिले 500

कुटै निळल् पिरिन्तन–छत्र-छाया नहीं दे रहे थे; नॅटु कण्–लम्बी आँखों की; एळैयर् कुळल्–स्त्रियो का केश; मलर् पिरिन्तन–पुष्पो से रिक्त हो गया; कुमरर् ताळ् इणै–वीर नौजवानो के चरणद्वय; कळल् पिरिन्तन–पायलों से शून्य रहे; चिनम् कामन् वाळियुम्–क्रोधशील कामदेव के शरों से; अळल् पिरिन्तन—ताप-शक्ति छूट गई; अन्ऱिल्–क्रौंच; तुणै–अपने सहचर से; पिरिन्त–अलग हो गये। ५००

छत्रो ने छाया देना छोड़ दिया। (किसी ने छत्र का उपयोग नही किया।) लबी आँखो वाली स्त्रियों के केश पुष्पो से विहीन रहे। नौजवानों ने पायल पहनना छोड़ दिया। मन्मथ के शरों ने अपनी तापन-शक्ति खो दी। क्रौंच पक्षी भी अपने जोड़े से अलग हो गये। ५००

तारॉलि नीत्तन पुरवि तण्णुमै, वारॉलि नीत्तन मळैयिन् विम्मुरुम्
तेरॉलि नीत्तन तॅरुवुन् दॅण्डिरै, नीरॉलि नीत्तन नीत्तम् पोलुमे 501

पुरवि–अश्वों ने; तार् ऑलि नीत्तन–पाजेब की गुरियाओ की ध्वनि छोड़ दी; तण्णुमै–मृदंगों ने; वार् ऑलि नीत्तन–अपनी ऊँची ध्वनि छोड़ दी; मळैयिन् विम्मुरुम्–मेघ-गर्जन से अधिक स्वर करनेवाले; तेर् ऑलि–रथो की ध्वनि को; तॅरुवुम् नीत्तन–सड़को ने छोड़ दिया; तॅळ् तिरै–स्वच्छ तरंगों वाले; नीर् ऑलि नीत्तन नीत्तम् पोलुमे–जल से युक्त ध्वनिहीन नदियो के समान रही। ५०१

अश्वो को गले का हार नही पहनाया गया अतः उनसे गुरियों का क्वणन नही निकल रहा था। मृदंग नही बजाये गये, इसलिए वे ध्वनिहीन पड़े हुए थे। सडकों पर रथ नही दौड़ते थे, इसलिए रथो की, मेघसम घरघराहट सुनाई नही देती थी और सडके भी कल-कल ध्वनि से रिक्त नदी के समान पड़ी रही। ५०१

❀ मुळवॅळु मौलियिल मुरैयिन् याळ्नरम्
वॅळवॅळु मौलियिल विमैप्पिल् कण्णिनर्
विळवॅळु मौलियिल वेरु मौन्ऱिल
अळवॅळु मौलियॅळु मरश वीदिये 502

अरच वीति–राजमार्ग; मुरैयिन्–लगातार; मुळवु ॲळुम् औलि इल–ढोलों के नाद से खाली रहे; याळ् नरम्पु ॲळ–वीणा की तंत्रियों को झटका देने से; ॲळुम् औलि–उठनेवाला नाद; इल–नहीं रहा; इमैप्पु इल् कण्णिनर्–पलकहीन देवों के; विळवु ॲळुम् औलि इल–उत्सवों के कारण उठनेवाला शोर नहीं रहा; वेरु ऑन्ऱुम् इल–और कोई (मंगल) नाद नहीं उठा; अळ ॲळुम्–रोने से उठनेवाला; औलि ॲळुम्–नाद उठा। ५०२

राजमार्गों पर ढोल नहीं बजते थे। कोई वीणा नहीं बजाता था इसलिए वीणा का तन्त्रीनाद सुनाई नहीं दिया। पलक न झपनेवाले देवताओं के पूजा आदि उत्सव नहीं मनाये गये, इसलिए कहीं कुछ कोलाहल सुनाई नहीं दिया। केवल रुदन-स्वर ही सुनाई देता था और अन्य कोई मंगलध्वनि सुनाई ही नहीं देती थी। ५०२

तॅळ्ळौलिच् चिलम्बुहळ् शिलम्पु पौन्मनै
नळ्ळौलित् तिलनळिर् कलैयु मन्नवे
पुळ्ळौलित् तिलपुनल् पौळिलु मन्नवे
कळ्ळौलित् तिलमलर् कळिऱु मन्नवे 503

तॅळ् औलि चिलम्पुकळ्–साफ़ स्वर वाले नूपुर; चिलम्पु–जहाँ स्वरित हो रहे थे; पौन् मनै–उन स्वर्णप्रासादों; नळ्–के मध्य; औलित्तिल–स्वरित नहीं हुए; नळिर् कलैयुम् अन्नवे–श्रेष्ठ मेखलाओं की बात वही; पुनल्–जलाशयों में; पुळ् औलित्तिल–पक्षी बोले नहीं; पौळिलुम्–उद्यानों की बात भी; अन्नवे–वैसी ही; मलर्–पुष्पों पर; कळ् औलित्तिल–भ्रमरों ने गुंजार नहीं किया; कळिऱुम् अन्नवे–गजों की बात वही (पुष्प की तरह ही)। ५०३

जिन प्रासादों में स्त्रियों के पैरों के नूपुरों की मनोरम साफ़ ध्वनि होती थी उनमें अब नूपुर मौन थे। मेखलाओं की भी वही स्थिति हो गई। जलाशय खगरव-हीन हो गये और उद्यानों की हालत भी वही हो गई। पुष्प, जैसे मत्तगज, मधुपों से खाली हो रहे। ५०३

शॅय्म्मरन् दनपुनल् शिवन्द वाय्च्चियर्
कैम्मरन् दनपशुङ् गुळलि कान्दॅरि
नॅय्म्मरन् दनर्ऱि यरिजर् यावरुम्
मय्म्मरन् दनरौलि मरन्द वेदमे 504

चॅय्–खेत; पुनल् मरन्तन–जल भूल गये; चिवन्त वाय्च्चियर् कै–अरुणाधरा

स्त्रियों के हाथ; पचु कुळवि मऱन्तत्त–शिशु भूल गये; कान्तु ॲरि–जलनेवाली ज्वालाएँ; नॆय् मऱन्तत्त–घी भूल गईं; नॆऱि अऱिञर् यावरुम्–सन्मार्ग-वेदज्ञ सभी; मेय् मऱन्ततर्–अपने शरीर भूल गये; वेतम् ऑलि मऱन्त–वेदों ने स्वर भुला दिया। ५०४

खेत, काम करनेवालों के न होने के कारण सींचे नहीं गये थे अतः जल भूलकर सूखे पड़े थे। अरुणाधरा स्त्रियों के हाथों ने शिशुओं को भुला दिया। ज्वालाएँ घी भूल गईं क्योंकि होम-कार्य नहीं हुआ। वेदज्ञ ब्राह्मण अपने शरीर को भी भुलाए रह गये। इसलिए वेदध्वनि कहीं नहीं सुनाई दी। (सब तरह के लोग निष्क्रिय थे अतः कहीं कुछ आवश्यक कामों की भी आहट नहीं मिलती थी।)। ५०४

आडिन ऱळुदन रमुद वेऴिशै, पाडिन रळुदत्तर् परिन्द कोदैयर्
ऊडिन रळुदन रुयिरि नन्नवरैक, कूडिन रळुदनर् कुळाङ्गु ळाङ्गोडे 505

कुळाम् कुळाम् कोट्टु–दल के दल; आटिऩर् अळुतत्तर्–(स्त्रियाँ) जो नाच रही थीं, वे रोईं; अमुतम् एऴ् इचै पाटित्तर्–सुधा-सम सप्तस्वर संगीत गानेवाली; अळुतत्तर्–रोईं; परिन्त कोतैयर्–त्यक्त-माला वालियाँ; ऊटित्तर् अळुतत्तर्–रूठी हुई स्त्रियाँ रोईं; उयिरिऩ् अऩ्परै–प्राणसम प्रिय नाथों से; कूटित्तर्–जो मिली थीं, वे भी; अळुतत्तर्–रोईं। ५०५

नर्तकियाँ मिलकर रोईं। गानेवाली स्त्रियाँ गाना छोड़कर रोईं। पुष्पमाला निकाल फेंककर जो अपने पतियों से रूठी हुई थीं वे रोईं। जो पतियों से मिलन का आनन्द उठा रही थीं वे भी रोईं। ५०५

नीट्टिल कळिऱुकै नीरिऩ् वाय्पुदल्
पूट्टिल पुरविहळ् पुळ्ळुम् पार्प्पिनुक्
कीट्टिल विरैपुनिऱ् ऱीनऱ कन्ऱैयुम्
ऊट्टिल करवैनैन् दुरुहिच् चोर्न्दवे 506

कळिऱु–हाथियों ने; कै–सूँड़ें; नीरिऩ् नीट्टिल–पानी की तरफ़ नहीं बढ़ाईं; पुरविकळ्–अश्वों ने; वाय्–अपने मुखों पर; पुतल् पूट्टुतल् इल–घास नहीं रखी; पुळ्ळुम्–पक्षियों ने; पार्प्पितुक्कु–अपने शावकों के लिए; इरै ईट्टिल–चारा नहीं ढूँढ़ा; करवै–गायों ने; ईऩ्ऱ–नये ब्याये; पुनिऱु कन्ऱैयुम्–छोटे बछड़ों को; ऊट्टु इल–दूध नहीं पिलाया; नैन्तु उरुकि–विगलित होकर; चोर्न्त–मुरझाये रहे। ५०६

गजों ने सूँड़ो को पानी की तरफ़ नहीं बढ़ाया। अश्वों ने अपने मुख में घास का ग्रास नहीं लिया। पक्षी अपने शावकों के लिए चारा ढूँढ़ नहीं लाये। गायों ने अपने नये बछड़ों को भी दूध नहीं पिलाया। सब दुख से विगलित रहे। ५०६

मान्दर्द मौय्म्बितिन् महळिर् कौङ्गयाम्
एन्दिळ नीर्हळुम् वरुमै यॅय्दिन
शान्दमम् महिळ्नर्तम् मुडियिर् ऱैयलार्
कून्दलुम् वरुमैय मलरिन् कूलमे 507

मान्तर् तम् मौय्म्पितिल्–पुरुषों की भुजाओं के समान; मकळिर्–स्त्रियों के; कोङ्कै आम्–स्तन रूपी; एन्तु इळनीर्कळुम्–उन्नत (कच्चे) नारियल; चान्तम् वरुमै अॅय्तिन–चन्दन से रिक्त रहे; अ मकिळ्नर् तम्–उन पुरुषों के; मुटियिल्–केशों के समान; तैयलार् कून्तलुम्–स्त्रियों के केश भी; मलरिन् कूलम् वरुमैय–पुष्पों के समूह से रिक्त हो गये। ५०७

पुरुषों के कन्धे और स्त्रियों के नारियल के फलों जैसे स्तनों पर चन्दन नहीं लगा। दोनो के केश पुष्पों के अलंकार से शून्य पाये गये। ५०७

ओडै नल्लणि मुनिन्दन वुयर्हळि ऱुच्चि
शूडै नल्लणि मुनिन्दन शुडर्मणिक् कौडियिन्
आडै नल्लणि मुनिन्दन वम्बौन्शॅ यिञ्जि
पेडै नल्लणि मुनिन्दन मॅन्नडैप् पुऱवम् 508

उयर् कळिऱु–उत्तम गजों ने; ओटै–मुखपट्टों के; नल् अणि–सुन्दर अलंकार से; मुनिन्तन–गुस्सा किया; उच्चि–(स्त्रियों के) केशों ने; चूटै नल् अणि मुनिन्तन–श्रेष्ठ शिरोभूषणों से घृणा की (पहना नहीं); अम् पॊन् चॅय् इञ्चि–उत्तम स्वर्णनिर्मित प्राचीरों ने; चुटर् मणि कोटियिन् आटै–कान्तियुत सुन्दर पताकाएँ रूपी; नल् अणि–श्रेष्ठ अलंकार को; मुनिन्तन–त्याग दिया था; मॅल् नटै पुऱवम्–मृदु-चाल कपोतों ने; पेटै नल् अणि मुनिन्तन–कपोतियों की श्रेष्ठ कमनीयता दुत्कार दी। ५०८

हाथियों ने मुखपट्ट आदि अलंकार दुत्कार दिये; स्त्रियों के सिर के केश ने शिरोभूषण पसन्द नही किये। प्राचीरों पर पताकाओं का अलंकार नहीं पाया गया। मृदु चाल वाले कपोतों ने अपनी कमनीय कपोतियों का संग छोड़ दिया। ५०८

❀ तिक्कु नोक्किय तीविनैप् पयनॅनच् चिन्दै
नॅक्कु नोक्कुवोर् नल्विनैप् पयनॅन नेर्वोर्
पक्क नोक्कलॅन् परुवर लिन्बमॅन् ऱिरण्डुम्
ऑक्क नोक्किय योहरु मरुन्दुय रुळन्दार् 509

तीविनै पयन्–बुरे कर्म का फल (दुख); तिक्कु नोक्किय–तुम्हारी दिशा की ओर आ रहा है; अॅन्न–ऐसा किसी के कहने पर; चिन्तै नॅक्कु–मन को विगलित करके; नोक्कुवोर्–प्रतीक्षा करनेवाले; नल् विनै पयन् अॅन्न–सुकर्म का फल (सुख) आ रहा है, कहने पर; नेर्वोर् पक्कम्–स्वागत करनेवालों का स्वभाव; नोक्कल् अॅन–देखने से क्या; परुवरल् इन्पम् अॅन्ऱु इरण्टुम्–दुख, सुख दोनो को; ऑक्क

नोक्किय–समदृष्टि से देखनेवाले; योकम्–योगी भी; अरु तुयर् उळन्तार्–अत्यधिक दुख से पीड़ित हुए। ५०६

बुरे कर्मफल, दुख, का नाम सुनकर घबड़ानेवाले और अच्छे फल, सुख, का स्वागत करनेवाले मामूली लोगों की बात क्या कही जाय ? दुख और सुख को समदृष्टि से देखनेवाले योगीजन भी बहुत शोकाकुल हुए। ५०९

ओवि नल्लुयि रुयिर्प्पिनो डुडल्पदैत् तुलैय
मेवु तॊल्नऴ हॆऴिल्कॆड विम्मनोय् विम्मत्
तावि लैम्बॊऱि मऱ्हुऱत् तयरद नॆन्न
आवि नीक्किन्ऱ दॊत्तदव् वयोत्तिमा नहरम् 510

अ अयोत्ति मा नकरम्–वह अयोध्या नगर; ओवु इरा नल् उयिर्–न छूटनेवाले प्राणों के समान रहे जीव (प्रजाजन) सभी; उयिर्प्पिनोटु–निश्वास के साथ; उटल् पतैत्तु उलैय–शरीर के तड़पकर शिथिल होने से; मेवु तॊल् अऴकु–पहले के स्वाभाविक आकर्षण; ऎऴिल्–और अलंकार के आकर्षण के; कॆट–विकृत हो जाने से; विम्मल् नोय् विम्म–दुख के रोग के बढ़ने से; ता इऱ् ऐन्तु पॊऱि–निर्बल हुई पाँचों इन्द्रियों के; मऱुकु उऱ–क्षुब्ध होने से; तयरतन् ऎन्न–दशरथ के समान; आवि नीक्किन्ऱतु ऒत्ततु–प्राणों को छोड़ता-सा रहा। ५१०

उस अयोध्या नगर के सब जीव निश्वास छोड़ते हुए, स्वाभाविक सुन्दरता और अलंकार का आकर्षण —इनसे रिक्त होकर, कम्पायमान शरीरों के साथ दुखतप्त हुए और उनकी इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गईं। वह नगर उस अवस्था मे बिलकुल दशरथ के समान रहा। ५१०

❀ उयङ्गि यन्नह रुलैवुऱ वॊरुङ्गुऴैच् चुऱ्ऱम्
मयङ्गि येङ्गिनर् वयिन्वयिन् वरम्बिलर् तॊडर
इयङ्गु पल्लुयिर्क् कोरुयि रॆन्ननिन्ऱ विरामन्
तयङ्गु पूण्मुलैच् चानहि यिरुन्दुऴिच् चार्न्दान् 511

अ नकर्–वह नगर; उयङ्कि उलैवु उऱ–दुखी होकर छटपटाता रहा, तब; उऴै चुऱ्ऱम्–पास रहनेवाले सेवक; वयिन् वयिन्—इधर-उधर; वरम्पु इलर्–असंख्यक लोग; ऒरुङ्कु–एक साथ; मयङ्कि एङ्किनर्–भ्रान्त होकर रोते हुए; तॊटर–पीछा करते चले, तब; इयङ्कु पल् उयिर्क्कु–जीवन्त सभी विविध जीवों के; ओर् उयिर् ऎन्न निन्ऱ–एक प्राण के समान (जो) रहे (वे); इरामन्–श्रीराम; तयङ्कु पूण् मुलै–शोभायमान आभरण-भूषित स्तनों वाली; चानकि इरुन्त उऴि–जानकी जहाँ रही, उस स्थान को; चार्न्तान्–पहुँचे। ५११

वह नगर ही दुखाक्रांत हो गया। असंख्यक नौकर लोग भी यत्र-तत्र मिलकर बुद्धि-भ्रमित होकर श्रीराम का पीछा करते जा रहे थे। तब सब जीवों के एकप्राण श्रीराम आभरणभूषित स्तनों वाली जानकी के (रहने के) स्थान को गये। ५११

❀ अळुदु तायरो उन्दण रुन्दव ररशर्
पुळुदि याडिय मॆय्यिनर् पुडैवन्दु पॊरुमप्
पळुदु शीरैयि नुडैयिनन् वरुम्बडि पारा
ऑळुदु पावयत् ताण्मनत् तुणुक्कमो डॆळुन्दाळ् 512

तायरोटु–माताओं के साथ; अन्तणर्–ब्राह्मण लोग; अरु तवर्–श्रेष्ठ तपस्वी लोग; अरचर्–राजा लोग; पुळुति आटिय मॆय्यिनर्–धूल-धूसरित शरीर वाले; अळुतु पुटै वन्तु–रोते हुए पास आकर; पॊरुम–सिसकते खड़े रहे, तब; पळुतु चीरैयिन् उटैयिनन्–क्षुद्र वल्कल-वसन; वरुम्पटि पारा–आते है, देखकर; ऎळुतु पावै अन्नाळ्—चित्र-प्रतिमा-सी देवी; मनम् तुणुक्कमोटु–मन में भय के साथ; ऎळुन्ताळ्–उठ खड़ी हुई। ५१२

सीताजी ने देखा कि श्रीराम आ रहे है और उनके पीछे माताएँ, ब्राह्मण, मुनि, राजा आदि विविध प्रकार के लोग, धूल-धूसरित शरीरों के साथ पार्श्व में रोते हुए आ रहे है। स्वय श्रीराम क्षुद्र वल्कल धारण किये हुए थे। यह देखकर चित्रप्रतिमा-सी जानकीजी ठिठककर खड़ी हो गई। ५१२

❀ ऎळुन्द नङ्गैयै मामियर् तळुविन रेन्दिप्
पॊळिन्द कण्णणीर्प् पुदुप्पुन लाट्टिनर् पुलम्ब
अळिन्द शिन्दय ळन्नमु मिन्नदॆन् ऱऱियाळ्
वळिन्द नीर्नॆडुङ् गण्णिनळ् वळ्ळलै नोक्कि 513

ऎळुन्त नङ्कैयै–जो उठीं, उन देवी को; मामियर्–सासों ने; तळुविनर्–गले लगाते हुए; एन्ति–सम्हालकर; पॊळिन्त–बहनेवाले; उण् कण नीर् पुतु पुनल्–काजल से युक्त आँखों के नये (अश्रु-) जल से; आट्टिनर्–नहलाया; पुलम्प–और विलाप किया, तब; अन्नमुम्–हंसिनी (सीता) भी; इन्नतु ऎन्रु अऱियाळ्–क्या बात है, यह नहीं जानकर; अळिन्त चिन्तैयळ्—उद्विग्न-मन होकर; नीर् वळिन्त नॆटु कण्णिनळ्–आँसू बहानेवाली आँखो की होकर; वळ्ळलै नोक्कि–प्रभु श्रीराम को देखकर। ५१३

वहाँ सासे खड़ी थी। उन्होंने सीता को गले से लगा लिया। और अपनी आँखों से अश्रुजल बहाकर उन्हें नहला दिया। वे विलाप करने लगी। सीताजी को पता नही लग रहा था कि यह सब क्या अनर्थ है? इसलिए क्षुब्धमना और अश्रु-भरी आँख वाली बनकर (जानकीजी ने) श्रीराम से—। ५१३

❀ पॊन्नै युऱ्ऱ पॊलङ्गळ लोय्पुहल्
मन्नै युऱ्ऱदुण् डोमऱ्ऱिव् वन्दुयर्
ऎन्नै युऱ्ऱ दियम्बॆन् ऱिरैञ्जिनाळ्
मिन्नै युऱ्ऱ नडुक्कत्तु मेनियाळ् 514

मिन्नुनै उऱ्ऱ–बिजली के समान; नटुक्कत्तु मेतियाळ्–काँपनेवाली देह की बनकर; पॊन्नै उऱ्ऱ पॊलम् कळलोय्–स्वर्णरचित पायलधारी; इ वन् तुयर् उऱ्ऱतु ऎन्नै–यह बड़ा दुख क्यों कर हुआ; पकळ् मन्नै–प्रकीतित राजा पर; उऱ्ऱतु उण्टो–कुछ बीता क्या; इयम्पु ऎन्ऱु–कहिए, कहकर; इरैञ्चिनाळ्–विनय की। ५१४

बिजली के समान काँपनेवाली श्री सीताजी ने (श्रीराम से) पूछा कि स्वर्णरचित पायलधारी वीर ! यह कठोर और बड़ा दुख काहे का और क्यों कर हुआ ? प्रथित यशस्वी महाराजा पर कुछ बीता है क्या ? कहिए —यह विनय की। ५१४

❀ पॊरुवि लॆम्बि पुविबुरप् पान्पुहळ्
इरुव राणैयु मेन्दिनॆ निन्ऱुपोय्क्
करुवि मामलैक् कऱ्कडङ् गण्डु नान्
वरुवॆ नीण्डु वरुन्दलै नीयॆन्ऱान् 515

पॊरुवु इल् ऎम्पि–अप्रतिम मेरा अनुज; पुवि पुरप्पान्–भूमि का पालन करेगा; नान् पुकळ् इरुवर्–मैने यश के पात्र (माता-पिता) दोनो की; आणैयुम् एन्तिनॆन्–आज्ञा मान ली; इन्ऱु पोय्–आज ही चलकर; करुवि मा मलै–समूहों में मेघ-संचारित; कल् कटम् कण्टु–पर्वतों वाले वन को देखकर; वरुवॆन्–लौट आऊँगा; ईण्टु नी वरुन्तलै–यहाँ तुम दुख मत करो; ऎन्ऱान्–कहा। ५१५

श्रीराम ने उत्तर में कहा कि मेरा अनुपम भाई भरत राजा बनेगा और भूमि का पालन करेगा। मैंने यशोगान-योग्य अपने पिता और माता की आज्ञा मान ली है। उसके अनुसार मैं आज ही जाऊँगा और मेघ-मंडरित वन को देखकर लौट आऊँगा। तुम यहीं रहो और दुखी मत हो। ५१५

❀ नाय हन्वन नण्णलुऱ् ऱानॆन्ऱुम्, मेय मण्णिळन् दानॆन्ऱुम् विम्मलळ्
नीव रुन्दलै नीङ्गुवॆन् यानॆन्ऱ, तीय वॆञ्जॊल् शॆविशुडत् तेम्बुवाळ् 516

नायकन् वनम् नण्णल् उऱ्ऱान्–हमारे पति जंगल जाने लगे; ऎन्ऱुम्–यह सोचकर; मेय मण् इळन्तान् ऎन्ऱुम्–स्वत्व की भूमि खोई, इसके लिए भी; विम्मलळ्—दुख-भरी नहीं हुई; यान् नीङ्कुवॆन्–मै जाऊँगा; नी वरुन्तलै–तुम दुख न करो; ऎन्ऱ–इस; तीय वॆम् चॊल्–कठोर तापक वचन के; चॆवि चुट–कानों को जलाने से; तेम्पुवाळ्–रोने लगी। ५१६

सीताजी यह सुनकर रोने लगीं। उनको इस बात के दुख ने नहीं सताया कि उनके प्रिय पति जंगल जा रहे है। न यह बात उन्हें दुख दे रही थी कि उनके अधिकार की भूमि उन्हें नही मिली। पर 'मैं जा रहा हूँ। तुम दुख मत करो', यह निर्मम और तापक वचन उनके कानों को मानो जलाने लगा। वे अत्यन्त व्याकुल हुई। ५१६

* तुऱन्दु पोमॅन्ऱु शॉट्ऱशॉट् ऱेरुमो
उऱैन्द पाऱ्कडऱ् चेक्कै युडनॉरीइ
अऱन्दि ऱम्बल्कण् डैय नयोत्तियिल्
पिऱन्द पित्बुम् पिरिविल ळायिनाळ् 517

ऐयन्–मेरे प्रभु; अऱम् तिरम्पल् कण्टु–(पृथ्वी पर) धर्म की ग्लानि देखकर; उऱैन्त पाल् कटल्–अपने वास के क्षीरसागर पर; उटन् चेक्कै ऑरीइ–साथ-साथ शयन त्यागकर; अयोत्तियिल् पिऱन्त पिन्पुम्–अयोध्या में जन्म लेने के बाद भी; पिरिवु इलळ् आयिनाळ्–अलग न होकर साथ रहीं, ऐसी; तुऱन्तु पोम् ऍन्ऱु–तुमको छोड़कर जायँगे, यह; चॉट्ऱ चॉल्–कथन; तेऱुमो–उचित मानती क्या। ५१७

भगवान विष्णु धर्म की ग्लानि देखकर उसके संरक्षणार्थ, क्षीरसागर से, श्री लक्ष्मीदेवी के साथ का शयन छोड़कर अयोध्या मे श्रीराम बनकर आये। उसके बाद भी श्रीलक्ष्मी उनसे विलग नही हुई थीं। वियोग न सह सकनेवाली ऐसी देवी श्रीराम के इस कथन को कैसे सह्य मान सकेंगी कि 'मै तुमसे अलग जा रहा हूँ' ? । ५१७-

* अन्न तन्मैय ळैयनु मन्नयुम्, शॉन्न शॅय्यत् तुणिन्ददु तूयदे
ऍन्नै यॅन्नै यिरुत्तियॅन् ऱायॅन्ऱाळ्, उन्न वुन्न वुयिरुमि ळानिन्ऱाळ् 518

अन्न तन्मैयळ्–वैसी प्रकृति वाली ने; ऐयनुम् अन्नैयुम्–पिता और माता का; चॉन्न–कहा; चॅय्य तुणिन्ततु–करने को ठाना (आपने); तूयते–वह पवित्र (और श्लाघ्य) है; ऍन्नै ऍन्नै इरुत्ति–पर क्यों मुझे रहो; ऍन्ऱाय्–कहते है; ऍन्ऱाळ्–पूछा; उन्न उन्न–(वियोग की बात) ज्यों-ज्यों सोचतीं; उयिर् उमिळा निन्ऱाळ्–त्यों-त्यों प्राण निकालती-सी रहीं। ५१८

वैसी श्री सीताजी ने प्रभु से कहा कि आपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने का जो निश्चय किया है, वह अवश्यमेव पवित्र आचरण है। पर आप मुझे क्यों ठहर जाने को कह रहे हैं ? ज्यों-ज्यों वह उनकी बात पर सोचतीं त्यों-त्यों उनके प्राण निकलने-से लगते थे। ५१८

वल्ल रक्करिन् माल्वरै मेल्विळुन्, दल्ल रक्कि नुरुक्कळऱ् काट्टदर्क्
कल्ल रक्कुङ् गडुमय वल्लनिन्, शिल्ल रक्कुण्ड शेवडिप् पोदॅन्ऱान् 519

निन्–तुम्हारे; चिल्–छोटे; अरक्कु उण्ट–महावर लगे; चॅ अटि पोतु–लाल चरण कमल; वल् अरक्करिन्–सबल राक्षसों का; माल् वरै मेल् विळुन्तु–बड़े पर्वतों पर पड़कर; अल्–रात को भी; अरक्किन् उरुक्कु–लाख की तरह पिघलाने वाली; अळल्–गर्मी वाले; काटु अतर्–वन-मार्ग में; कल् अरक्कुम्–कंकड़ों का चुभना सहन करने योग्य; कटुमैय अल्ल–कठोर नहीं है; ऍन्ऱान्–कहा। ५१९

श्रीराम ने समझाया कि देखो। वन में बलवान राक्षस वास कर रहे हैं। हमेशा गर्मी लगी रहेगी। पर्वतों पर पड़कर पत्थर को लाख

की तरह पिघलानेवाली गर्मी होगी वह। ऐसे वन के मार्गों में चुभते हुए कंकड़ों पर चलने योग्य क्षमता तुम्हारे छोटे, लाक्षारस-लगे कोमल पैर नहीं रखते। ५१९

❀ परिवि हन्द मनत्तोडु पऱ्ऱिला, दीरुवु हित्ऱनै यूऴि यरुक्कनुम्
ऎरियु मॆन्बन याण्डय वीण्डुनिन्, पिरिवि नुञ्जुडु मोपॆरुङ् काडॆन्ऱाळ् 520

पऱ्ऱु इलातु–(मुझ पर) प्रेमरहित; परिवु इकन्त–दयाहीन; मनत्तॊटु–मन के साथ; औरुवुकित्ऱनै–मुझे त्यागते है; ऊऴि अरुक्कनुम्–प्रलयकाल का सूर्य और; ऊऴि ऎरियुम्–प्रलयाग्नि; ऎन्पत–संज्ञित वे भी; याण्टैय–कहाँ के; ईण्टु निन् पिरिविनुम्–इधर आपसे वियोग से अधिक; पॆरु काटु–बड़ा वन; चुटुमो–मुझे जला सकेगा; ऎन्ऱाळ्–पूछा। ५२०

देवी ने उत्तर दिया— आप मुझ पर प्रेम नहीं रखते। दया भी नहीं करते। मुझे छोड़ जाना चाहते है। इसके सामने प्रलय-कालीन सूर्य और अग्नि भी गर्मी में कहाँ रहेंगे ? आप जिस वन की गर्मी का बयान कर रहे है वह विशाल वन आपके वियोग से अधिक जला (ताप दे) सकता है क्या ? । ५२०

❀ अण्ण लन्नशॊऱ् केट्टन नन्ऱियुम्, उण्णि वन्द करुत्तु मुणर्न्दनन्
कण्णि नीर्क्कडऱ् कैविड नेर्हिलन्, ऎण्णि निन्ऱन नॆन्शॆयऱ् पाऱ्ऱॆना 521

अण्णल्–प्रभु श्रीराम ने; अन्न चॊल्–वह वचन; केट्टनन्–सुना; अन्ऱियुम्–अलावा; उळ् निवन्त–उनके मन में उभरा रहा; करुत्तुम् उणर्न्तनन्–इरादा भी पहचाना; कण्णिन् नीर् कटल्–अश्रु-सागर में; कै विट नेर्किलन्–हाथ छोड़ना नहीं चाहा; ऎन् चॆयल् पाऱ्ऱु ऎना–क्या करना चाहिए, यह; ऎण्णि निन्ऱनन्–सोचते खड़े रहे। ५२१

श्रीराम ने सीताजी का कथन सुना और उनका मन समझ लिया। वे उन्हें अश्रु-सागर मे हाथ (साथ) छोड़कर जाना नही चाहते थे। अब क्या किया जा सकता है ? —इस पर सोचते रहे। ५२१

❀ अनैय वेलै यहमनै यॆय्दिनळ्, पुनैयुञ् जीरै तुणिन्दु पुनैन्दनळ्
निनैयुम् वळ्ळल्पिन् वन्दय निन्ऱनळ्, पनैयि नीळ्करम् पऱ्ऱिय कैयिनाळ् 522

अनैय वेलै–उसी समय; अकम् मनै ऎय्तिनळ्–अन्तःपुर गई; पुनैयुम् चीरै–पहनने योग्य वल्कल; तुणिन्तु पुनैन्तनळ्–निश्चय के साथ पहन लिया; निनैयुम् वळ्ळल् पिन् वन्तु–सोचते जो रहे, उनके पीछे आकर; पनैयिन् नीळ् करम्–तालवृक्ष से अधिक लम्बे हाथ को; पऱ्ऱिय कैयिनाळ्–अपने हाथ से पकड़कर; अयल् निन्ऱनळ्–पार्श्व में खड़ी रहीं। ५२२

तब तक सीताजी अन्तःपुर में गई और दृढ़-चित्त हो पति के अनुकूल वल्कल पहने हुए आई और श्रीराम के पीछे पास खड़ी हुई। उन्होंने

श्रीराम का तालवृक्ष-सम लम्बा हाथ अपने हाथ से पकड़ लिया (जाने को तैयार)। ५२२

❀ एऴै तन्ऩॅयल् कण्डवर् यावरुम्, वीऴ़ु मण्णिडै वीऴ़्न्दन्ऩर् वीन्दिलर्
वाऴ़ु नाळुळ वन्ऩ्ऱबिन् माळ्वरो, ऊऴ़ि पेरिनु मुय्हुन रुय्वरे 523

एऴै तन् चॅयल्–देवी का यह कार्य; कण्टवर् यावरुम्–जिन्होंने देखा, वे सभी; वीऴ़ु मण् इटै वीऴ़्न्तनर्–मरकर गिरने योग्य धरती पर गिर पड़े; वीन्तिलर्–पर मरे नहीं; वाऴ़ुम् नाळ् उळ–आयु शेष रही; ॲन्ऩ्ऱ पिन्–तो उसके बाद; माळ्वरो–मरेंगे क्या: ऊऴ़ि पेरिनुम्–युग बदल जाय तो भी; उय्कुनर्–जिनको जीना है; उय्वरे–जीते ही रहेंगे। ५२३

देवी का कृत्य देखकर स्त्री-पुरुष सभी दुखाभिभूत हो गये। वे मरे-से भूमि पर गिरे। पर मरे नहीं क्योंकि आयु शेष थी। युगांत भी हो जाय तो जिनकी आयु शेष है और जिनको जीना है वे जीवित ही रहेंगे। ५२३

❀ तायर् तव्वयर् तन्ऩुणैच् चेडियर्, आय मन्ऩिय वन्ऩ्बिन रॅन्ऩ्ऱिवर्
तीयिन् मूऴ़्हिन रॊत्तनर् शॅङ्गणान्, तूय तैयलै नोक्किनन् शॊल्लुवान् 524

तायर्–माताएँ (रिश्ते, सेवा या उम्र में मातागण्य स्त्रियाँ); तव्वैयर्–बड़ी बहनें; तन् तुणै चेटियर्–साथिन चेरियाँ; आयम्–खेल की सखियाँ; मन्ऩिय अन्पितर्–गहरा प्रेम रखनेवाली अन्य; ॲन्ऩ्ऱ इवर्–ये सब; तीयिल् मूऴ़्किनर् ऑत्तनर्–आग में मग्न हो गई सी हो गईं; चॅम् कण्णान्–अरुणाक्ष; तूय तैयलै नोक्कितन्–पवित्र देवी को देखकर; चॊल्लुवान्–बोले। ५२४

देवी की मातासम स्त्रियाँ, बड़ी बहनेंसम स्त्रियाँ, साथिन चेरियाँ, खेल की सखियाँ और अन्य प्रेम रखनेवाली स्त्रियाँ —सभी आग में कूदी जैसे संकटग्रस्त हो गई। अरुणाक्ष श्रीराम उज्ज्वल चरित्र वाली पवित्र देवी से बोले। ५२४

❀ मुल्लै युङ्गडन् मुत्तु मॅदिर्प्पिनुम्, वॅल्लुम् वॅण्णहै याय्विळै वुन्ऩुवाय्
अल्लै पोद वमैन्दनै यादलिन्, ॲल्लै तीर्न्द विडर्दरु वायॆन्ऩ्ऱान् 525

मुल्लैयुम्–चमेली; कटल् मुत्तुम्–समुद्र के श्रेष्ठ मोती; ॲतिर्प्पिनुम्–टकराएँगे तो भी; वॅल्लुम्–उनको जीतनेवाले; वॅळ् नकैयाय्–श्वेत दन्तवती; विळैवु उन्ऩुवाय् अल्लै–जो होगा वह सोचती नहीं; पोत अमैन्ततै आतलिन्–जाने का निश्चय कर चुकी हो, इसलिए; ॲल्लै तीर्न्त इटर् तरुवाय्–असीम संकट दिलाओगी; ॲन्ऩ्ऱान्–कहा। ५२५

चमेली के फूल और समुद्रज मोती को भी हरानेवाले श्वेत दाँतों से शोभित प्रिये, सीता ! तुम अपने कार्य का नतीजा नहीं समझतीं। मेरे साथ आने का निश्चय कर लिया —इससे तुम मुझे अपार संकट दिलाओगी। ५२५

❀ कॉऱ्ऱ वन्नदु कूऱलुङ् गोहिलम्, शॅऱ्ऱ दन्न कुदलयळ् शीऱुवाळ्
उऱ्ऱु निन्ऱ तुयरमि दॊन्ऱुमे, ऎऱ्ऱु ऱन्दपि निन्वङ्गॊ लामॆन्ऱाळ् 526

कॉऱ्ऱवन् अतु कूऱलुम्—राजा राम के वह कहने पर; कोकिलम् चॅऱ्ऱतु अन्न—कोकिल को जीतती-सी; कुतलैयळ्—मधुर तोतली बोली वाली; चीऱुवाळ्—कुपित होकर; उऱ्ऱु निन्ऱ तुयरम्—आपको लगा रहा दुख; इतु ऒन्ऱुमे—यही एक है; ऎन् तुऱन्त पिन्—मुझे त्यागने के बाद; इन्पम् आम् कॊल्—सुख ही सुख होगा क्या; ऎन्ऱाळ्—कहा। ५२६

विजयी राजा राम ने जब यह कहा तो कोकिलवयनी सीताजी क्रुद्ध होकर बोलीं कि ऐसी बात! यही एक आपका संकट होगा क्या? यानी आप मुझे त्याग देंगे तो आपको सुख ही सुख होगा! यही है न? । ५२६

❀ पिऱिदॊर् माऱ्ऱम् बॅरुन्दहै पेशलन्, मऱुहि वीऴ्न्दऴ मैन्दरु मादरुम्
शॅऱुवित् वीऴ्न्द नॅडुन्दॅरुच् चॅन्ऱनन्, नॅऱिपॅ ऱामै यरिदिनि नीङ्गुवान् 527

पॅरुन्तकै—उदार श्रीराम; पिऱितु ओर् माऱ्ऱम्—उत्तर में कोई वाक्य; पेचलन्—नहीं बोले; मैन्तरुम् मातरुम्—पुरुष और स्त्रियाँ; मऱुकि वीऴ्न्तु—व्याकुल होकर भूमि पर गिरकर रोये, इसलिए; चॅऱुविन् वीऴ्न्त—(सिंचे) खेत के समान जो बन गया, उस; नॅटु तॅरु चॅन्ऱनन्—उस लम्बे मार्ग में जाने लगे तो; नॅऱि पॅऱामै—मार्ग न पाने से; अरितिनिन् नीङ्कुवान्—सायास तय करते हुए जाने लगे। ५२७

श्रीराम आगे उत्तर में कुछ कह नहीं सके। वे उनको साथ लेकर जाने लगे। पुरुष और स्त्री सब गिरकर रोने लगे। उनके अश्रु के कारण मार्ग सिंचित खेत के समान हो गया। अधिक भीड़ के कारण मार्ग रुक जाता था। श्रीराम सायास आगे बढ़ते चले। ५२७

❀ शीरै शुऱ्ऱित् तिरुमहळ् पिन्शॅल, मूरि विऱ्कै यिळैयवन् मुन्शॅलक्
कारै यॊत्तवन् पोम्बडि कण्डवव्, वूरै युऱ्ऱ दुणर्त्तव् वॊण्णुमो 528

तिरु मकळ्—भगवती; चीरै चुऱ्ऱि—वल्कल पहने हुए; पिन् चॅल—अनुगमन करती गई; मूरि विल् कै—बलवान धनुर्हस्त; इळैयवन्—अनुज लक्ष्मण; मुन् चॅल—आगे गये; कारै ऒत्तवन्—मेघश्याम; पोम् पटि—(उनके बीच) गये, वह प्रकार; कण्ट—जिसने देखा; अ ऊरै उऱ्ऱतु—उस नगर का जो हुआ; उणर्त्तवुम् ऒण्णुमो—(वह दुख) वर्णित करना सम्भव है क्या। ५२८

वल्कल पहने हुए सीताजी श्रीराम के पीछे जा रही थीं। हाथ में बलवान धनुष उठाए हुए लक्ष्मण उनके आगे जा रहे थे। बीच में श्रीराम के जाने का प्रकार देखकर वह नगर कैसे दुख में पड़ा, उसका वर्णन करना हमारे लिए सम्भव है क्या? (नहीं।) । ५२८

❀ आरुम् बिन्न रऴुदव लित्तिलर्, शोरुज् जिन्दयर् यावरुज् जूऴ्न्दनर्
वीरन् मुन्वन मेवुदुम् यामॆनाप्, पोरॊन् ऱॊल्लॊलि कॆमिहप् पोयिनार् 529

पिन्नर्–उसके बाद; आरुम् अऴुतु अवलित्तिलर्–रोते हुए दयनीय नहीं बने; चोरुम् चिन्तैयर् यावरुम्–खिन्नमन सभी; चूऴ्न्तनर्–एकत्र हुए; याम् वीरन् मुन्–हम, वीर के पहले ही; वनम् मेवुतुम्–वन जाएँगे; अॅना–कहते हुए; पोर् ऑन्रु ऑल् ऑलि–युद्ध में उठता-सा जोर का शोर; कैमिक–अधिक मचाते हुए; पोयिनार्–गये। ५२९

इतना हो जाने के बाद लोग रोते-कलपते दयनीय बने रहने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए दुखाक्रान्त सभी एकत्र हुए; निर्णय किया कि हम श्री वीर राघव के जाने से पहले ही वन चले जायँगे। और युद्ध का-सा जोर का शोर करते हुए त्वरित गति से चल पड़े। ५२९

❀ तादै वाशल् कुरुहिनन् शार्दलुम्, कोदै वेलवन् ऱायरैक् कुम्बिडा
आदि मन्ननै यार्ऱुमि नीरॅन्ऱान्, माद रारुम् विऴुन्दु मयङ्गिनार् 530

कोतै वेलवन्–माला से अलंकृत भालाधारी श्रीराम; तातै वाचल् कुरुकिनन्–पिता के महल के द्वार के निकट; चार्तलुम्–आने पर; तायरै कुम्पिटा–माताओं को नमस्कार करके; नीर्–आप; आति मन्ननै–प्रधान राजा को; आर्ऱुमिन्–धीरज बँधाइए; अॅन्ऱान्–कहा; मातरारुम्–माताएँ भी; विऴुन्तु मयङ्किनार्–गिरकर मूर्च्छित हुईं। ५३०

श्रीराम जो माला से अलंकृत भालाधारी थे, चलते-चलते अपने पिता के महल के द्वार के निकट पहुँचे। तब उन्होंने अपनी माताओं को नमस्कार करके उनसे विनय की कि आप अपने पति चक्रवर्ती को सांत्वना दीजिए। यह सुनकर माताएँ बेहोश होकर गिर गईं। ५३०

❀ वाऴ्त्ति नार्दम् महनै मरुहियै, एत्ति नारिळै योनै वऴुत्तिनार्
कात्तु नल्हुमिन् रॅय्वदङ् गाळॅन्ऱार्, नात्त ऴुम्ब वरर्ऱि नडुङ्गुवार् 531

ना तऴुम्प–जिह्वों पर घट्ठा पड़ जाय, ऐसा; अरर्ऱि–प्रलाप करके; नटुङ्कुवार्–काँपनेवाली माताओं ने; तम् मकनै–अपने पुत्र को; वाऴ्त्तिनार्–आशीर्वाद दिया; मरुकियै एत्तिनार्–वधू की प्रशंसा की; इळैयोनै–अनुज को; वऴुत्तिनार्–साधुवाद दिया; तॅय्वतङ्काळ्–देवताओ; कात्तु नल्कुमिन्–उनकी रक्षा करने की कृपा कीजिए; ऍन्ऱार्–(यह प्रार्थना) कही। ५३१

वे फिर सँभली। "जीभों में घट्ठा पड़ जाए" —इतना विलाप करती हुई रोईं। उन्होंने श्रीराम की प्रशंसा की; वधू सीता को आशीर्वाद दिया और लक्ष्मण को साधुवाद दिया। उन्होंने देवताओं से विनय की कि इन्हें आप रक्षा प्रदान करने की कृपा कीजिए। ५३१

❀ अन्न ताय ररिदिर् पिरिन्दपिन्, मुन्नर् निन्ऱ मुनिवनैक् कैदॊऴात्
तन्न दारुयिर्त् तम्बियुन् दामरैप्, पॊन्नुन् दानुमोर् तेर्मिशैप् पोयिनान् 532

अन्न तायर्–वैसी माताएँ; अरितिल् पिरिन्त पिन्–बहुत कष्ट के साथ अलग

हुईं, पश्चात्; मुन्नर् निन्ऱ–अपने सामने स्थित; मुनिवन्ै–महर्षि का; कै तोऴा–हाथ-जोड़कर नमस्कार करके; तन्नतु अरु उयिर् तम्पियुम्–अपने प्यारे प्राणसम अनुज; तामरै पोन्ऩुम्–पंकजा देवी; तानुम्–और स्वयं; ओर् तेर् मिचै पोयिन्नान्–एक रथ पर (सवार होकर) चले। ५३२

वे बहुत कष्ट के साथ श्रीराम से अलग हुईं। तब श्रीराम अपने सामने स्थित वसिष्ठ महर्षि को नमस्कार करके अपने प्राणसम अनुज और पंकजा श्री लक्ष्मीदेवी के साथ सुमंत्र से लाये गये एक रथ पर आरूढ़ होकर चल पड़े। ५३२

5. तैल माट्टु पडलम् (तैल निमज्जन पटल)

❀ एविय कुरिशिल्पिन् याव रेहिलार्, माविय ड्रानैयिन् मन्नै नीङ्गलात्
तेवियर् तविर्न्दनर् दॆय्व मानहर्, ओविय मोऴिन्दन वुयिरि लामयाल् 533

मा इयल् तानैयिन्–बड़ी प्रकीर्तित सेना के स्वामी; मन्नै–चक्रवर्ती को; नीङ्क अल्लात–जो छोड़ नहीं जा सकीं; तेवियर् तविर्न्तनर्–वे पत्नियाँ रह गईं; तॆय्वम् मा नकर्–दिव्य विशाल नगर के; ओवियम्–चित्र; उयिर् इलामैयाल्–प्राणहीन रहने से; ओऴिन्तन–अपवाद हुए; एविय कुरिचिल् पिन्–(वनगमन की) आज्ञा-प्राप्त श्रीराम के पीछे; एकिलार् यावर्–गये कौन नहीं। ५३३

पिता की आज्ञा से वन जानेवाले श्रीराम के साथ कौन-कौन गये? बहुत यशप्राप्त सेना के स्वामी चक्रवर्ती को जो छोड़ नहीं जा सकती थीं वे उनकी रानियाँ नहीं गईं। फिर उस दिव्य नगर के चित्र नहीं गये क्योंकि वे प्राणवंत नहीं थे। इनको छोड़ कौन थे जो उनके पीछे नहीं गये? । ५३३

कैहणीर् परन्दुका ऴोडरक् कण्णुहुम्, वॆय्यनीर् वॆळ्ळत्तु मॆळ्ळच् चॆऱ्ऱलाल्
उय्यवे ऴुलहुमान् ऱान नीरुलाम्, दॆय्वमी नॊत्तदच् चॆम्बॊर् ऱेररो 534

अ चॆम् पॊन् तेर्–वह लाल स्वर्ण का रथ; कैकळ्–पार्श्वों में; नीर परन्तु–जल फैलकर; काल् तॊटर–पहियों का पीछा करे, ऐसा; कण् उकुम्–आँखों से बहनेवाला; वॆय्य नीर् वॆळ्ळत्तु–गरम अश्रुप्रवाह में; मॆळ्ळ चॆऱ्ऱलाल्–धीरे-धीरे गया, इसलिए; एऴु उलकुम् ऒन्ऱु आत नीर्–सातों लोकों को अपने अन्दर समा लेनेवाले उस (युगान्त) जल-प्लावन में; उय्य–लोकोद्धरणार्थ; उलाम्–जो घूमता फिरता था; तॆय्वम् मीन् ऒत्ततु–उस दिव्य मत्स्य के समान लगता था। ५३४

जब श्रीराम का उत्तमस्वर्ण-रचित रथ चला, तब लोग अधिक रोये। उनके अश्रुजल का विपुल विस्तार हो गया। उसके बीच रथ उस मत्स्य के समान (जो विष्णुदेव का अवतार था) धीरे-धीरे चल रहा था, जो सातों

लोकों को अपने अन्दर समा लेकर फैले हुए प्रलय-जल पर जीवों का उद्धार करते हुए संचार करता था। ५३४

ꕥ मीऩ्पुहल् पॅऱ्वॅयि लॉदुङ्ग मेदियो, डाऩ्पुहक् कदिरव ऩत्तम् बुक्कऩऩ्
काऩ्पुहक् काण्गिले ऩॅन्ऱु कल्लदऱ्, ताऩ्पुह मुडुहिऩ ऩॅन्नुन् दन्मयान् 535

कतिरवऩ्–सूर्य; काऩ् पुक काण्किलेऩ्–(श्रीराम को) वन जाते न देख सकूँगा; ऍऩ्ऱु–सोचकर; ताऩ् कल् अतर् पुक–खुद पर्वत-मार्ग में जाने के लिए; मुटुकिऩऩ् ऍऩ्ऩुम् तऩ्मैयाऩ्–त्वरित रहा जैसे; मीऩ् पुकल् पॅऱ–नक्षत्र प्रकट होने देते हुए; वॅयिल् ऒतुङ्क–धूप को छिपने देते हुए; मेतियोटु आऩ्–भैंसों के साथ गायों के; पुक–(चरागाह से लौटकर) नगर में प्रवेश करते; अत्तम् पुक्कऩऩ्–अस्तगिरि पर पहुँच गया। ५३५

सूर्य अस्ताचल पर जाकर छिप गया मानो श्रीराम का वन जाना देख नहीं सकता हो और वह खुद पर्वतपूर्ण जंगल के रास्ते में जल्दी जाना चाहता हो। तब आकाश में तारे उदित हुए। धूप छिप गई। भैंसें और गायें चरागाहों से नगर के अन्दर आ गईं। ५३५

पहुत्तवाऩ् मदिहॊडु पदुमत् तण्णले, वहुत्तवा णुदलियर् वदऩ राशिबोल्
उहुत्तकण् णोरिन वॊळियु नीङ्गिड, मुहिऴ्त्तऴ हिऴन्दऩ मुळरि यीट्टमे 536

पकुत्त वाऩ् मति कॊटु–अर्धचन्द्र से; पतुमत्तु अण्णले–कमलासन ने, जो स्वयं; वकुत्त–रचाया; वाळ् नुतलियर्–उज्ज्वल ललाट वालियों की; वतऩम् राचि पोल्–वदनराशियों के समान; मुळरि ईट्टम्–कमल समूह; उकुत्त कण् नीरिन–अश्रु बहाते हुए; ऒळियुम् नीङ्किट–प्रभा-विहीन होकर; मुकिऴ्त्तु–बन्द होकर; अऴकु इऴन्तन–आकर्षण खो गये। ५३६

कमल के पुष्प अयोध्या नगर की स्त्रियों के समान जिनके ललाटों को ब्रह्माजी ने अर्द्धचन्द्र के आधार पर (या चन्द्र के खण्डों को लेकर) बनाया था, आँसू (शहद) बहाते हुए निष्प्रभ होकर मुकुलित हो गये। ("कण्णीर्" में श्लेष है। कण् नीर्— आँसू; कळ् नीर्— मधु का जल।)। ५३६

ꕥ अन्दियिऩ् वॅयिलॊळि यऴिय वाऩहम्, नन्दलिल् केहयऩ् पयन्द नङ्गैतन्
मन्दरै युरैयॅनुङ् गडुविन् मट्किय, शिन्दयि निरुण्डदु शॅम्मै नीङ्गिये 537

अन्तियिऩ् वॅयिल् ऒळि–सायंकाल की धूप के; अऴिय–छिप जाने से; वाऩ् अकम्–आकाश; मन्तरै उरै ऍनुम्–मन्थरा का वचन रूपी; कटुविऩ् मट्किय–विष के कारण मन्द हुए; नन्तल् इल्–दोषहीन; केकयऩ् पयन्त नङ्कै–केकय की पुत्री; तऩ् चिन्तैयिऩ्–के मन के समान; चॅम्मै नीङ्कि–(सिधाई) लाली से छूटकर; इरुण्टतु–अन्धकार से भर गया। ५३७

सन्ध्याकालीन धूप का प्रकाश भी चला गया। तब आकाश निर्दोष

केकयराज की पुत्री कैकेयी के मन के समान जो मंथरा के विषवाक्य से मैला होकर सिधाई छोड़कर कलुषित हो गया था, लालिमा छोड़कर अँधेरे से आवृत हो गया। (चॆम्मै— लालिमा, सिधाई।) । ५३७

परन्दुमी नरुम्बिय पशलै वानहम्
अरन्दयिन् मुनिवर नरैन्द शावत्ताल्
निरन्दर मिमैप्पिला नॆड्ड्ग णीण्डिय
पुरन्दर नुरुवॆनप् पॊलिन्द दॆङ्गुमे 538

मीत् परन्तु अरुम्पिय–नक्षत्रों से व्याप्त; पचलै वान् अकम्–ताजे रंग के आकाश भर में; अरन्तै इल् मुनिवरन्–शोक-रहित मुनि (गौतम) के; अऱैन्त चापत्ताल्–कहे (दिये) शाप से; निरन्तरम्–निरन्तर; इमैप्पु इला–अपलक; नॆट्टु कण् ईट्टिय–लम्बी आँखों से भरे; पुरन्तरन् उरु ऎऩ–पुरन्दर के शरीर के समान; पॊलिन्ततु–दिखा। ५३८

आकाश में सब जगह नक्षत्र उदित हो गये। तब वह पुरन्दर के शरीर के समान दिखा जिस पर दुख से अप्रभावित मन वाले गौतम ऋषि के शाप के फलस्वरूप अपलक लम्बी आँखों से पूर्ण था। ५३८

❀ तिरुनहर्क् कोशनै यिरण्डु शॆन्ऱॊरु
विरैशॆरि शोलैयै विरैवि नॆय्दिनान्
इरदनिन् ऱिऴिन्दुबि निराम निन्ऱुणै
उरैशॆरि मुऩिवरो डुऱैयुङ् गालये 539

इरामन्–श्रीराम; विरैविन्–जल्दी; तिरुनकर्क्कु–उस श्री-युक्त पुरी को; ओचनै इरण्टु चॆन्ऱु–दो योजन दूर जाकर; विरै चॆऱि–(पुष्प के) सुवासपूर्ण; ऒरु चोलैयै–एक उपवन में; ऎय्तिऩान्–पहुँचे; पिन्–पश्चात्; इरतम् निन्ऱु–रथ से; इऴिन्तु–उतरकर; इन् तुणै–सत्संगी बनकर; उरै चॆऱि–उपदेश के वचन कहनेवाले; मुनिवरोटु–मुनियो के साथ; उऱैयुम् कालै–ठहरे, तब। ५३९

श्रीराम आगे बढ़ते चले। अयोध्या के श्री-नगर से दो योजन दूर जाकर एक पुष्प-भरे उपवन में पहुँचे। वहाँ रथ से उतरकर वहाँ के ऋषि-मुनियों के सत्संग में उनके उपदेश सुनते हुए ठहरे। तब— । ५३९

❀ वट्टमो रोशनै वळैविऱ् रायनडु
वॆट्टनै यिडवुमो रिडमि लावहै
पुट्टहु शोलैयिन् पुऱत्तैच् चूऴन्दुताम्
विट्टिलर् कुरुशिलै वेन्दर् वेऱुळोर् 540

वेन्तर्–राजा लोग; वेऱु उळोर् ताम्–अन्य लोग सभी; वट्टम्–चारो ओर; ओर् ओचनै वळैविऱ्ऱु आय्–एक योजन का विस्तार बनकर; नटु–बीच में; ऎळ् तनै इटवुम्–तिल रखने के लिए भी; ओर् इटम् इला वकै–स्थान न रहा, ऐसा;

पुळ् तकु–खगों से पूर्ण; चोलैयिन् पुऱत्तै चूळ्न्तु–उपवन के चारों ओर घेरकर; कुरुचिलै विट्टिलर्–युवराज के पास से हटे नहीं। ५४०

राजा और अन्य लोग एक योजन के विस्तृत भू-भाग में ऐसे भर गये कि तिल रखने को भी स्थान नहीं रह गया। वे खगकुल-कलकल-कलित उस उपवन के चारों ओर घेरे रहे और श्रीराम से अलग नहीं हुए। ५४०

❀ कुयिन्ऱ्ऱ कुलमणि नदियिन् कूलत्तिल्
पयिन्ऱुयर् वालुहप् परप्पिऱ् पैम्बुलिल्
वयिन्ऱोरुम् वैहिना रोन्ऱुम् वाय्मडुत्
तयिन्ऱिलर् तुयिन्ऱिल रळुदु माळ्हिनार् 541

कुलम् मणि कुयिन्ऱ अन्न–श्रेष्ठ रत्नराशियाँ जटित हों, ऐसा; नतियिन् कूलत्तिल्–नदी के कूलों पर; पयिन्ऱ उयर् वालुकम् परप्पिल्–भरे, ऊँचे बालू के मैदानों पर; पचुमै पुल्लिल्–हरी घास पर; वयिन् तोऱुम्–स्थान-स्थान पर; वैकितार्–रहकर; ओन्ऱुम् वाय् मडुत्तु–कुछ भी मुख में रखकर; अयिन्ऱ इलर्–बिना खाये; तुयिन्ऱ इलर्–बिना सोये; अळुतु माळ्किनार्–रोये और व्यग्र हुए। ५४१

लोग (तमसा) नदी के कूलों पर, बालू के ऊँचे टीलों पर, हरी घास के मैदानों पर और स्थान-स्थान पर उन पर जड़ित श्रेष्ठ रत्नों की राशियों के समान ठहरे रहे। उन्होंने अपने मुख में (खाने के लिए) कुछ नहीं रखा— भूखे ही रहकर वे रोये और बिना सोये पड़े रहे। ५४१

❀ वाविविरि तामरैयिन् मामलरिन् वाशक्
काविविरि नाण्मलर् मुहिळ्त्तनैय कण्णार्
आविविरि पानुरैयि नाडैयणै याह
नाविविरि कूळैयिळ नव्वियर् तुयिन्ऱार् 542

वावि विरि–वापियों में खिले हुए; तामरैयिन् मा मलरिन्–कमल के श्रेष्ठ पुष्पों में; वाचम् विरि–सुवास बिखेरनेवाले; कावि नाळ् मलर्–नील कुवलय के सद्य-विकसित फल; मुकिळ्त्त अनैय–खिले हों, जैसे; कण्णार्–ऐसी आँखों वाली; नावि विरि कूळै–कस्तूरी का वासयुक्त केश वाली; इळ नव्वियर्–बालमृगी-सी तरुणियाँ; आवि विरि–धुआँ-सह; पाल् नुरैयिन् आटै–दूध के फेन के समान (महीन) वस्त्रों को; अणै आक–बिछावन बनाकर; तुयिन्ऱार्–सोईं। ५४२

(बहुत देर के बाद किसी तरह उनको नींद आ गई। तब निद्रा-मग्न उनका वर्णन किया जाता है।) वापियों पर खिले कमलों पर नील कुवलय खिले हों ऐसे लगनेवाले मुखों और आँखों वाली बालमृगी-सी स्त्रियाँ, जिनके केश से कस्तूरी की सुगन्धि छूट रही थी सुगन्धित धुएँ सहित दूध के फेन के समान वस्त्र को ही बिछावन बनाकर सो रहीं। ५४२

पॆरुम्बहल् वरुन्दिनर् पिरङ्गुमलै तॆङ्गिन्
कुरुम्बैहळ् पॊरुज्जॆविलि मङ्गयर् कुरङ्गिल्
अरुम्बनैय कॊङ्गययि लम्बनैय वुण्कण्
करुम्बनैय शॆञ्जॊनविल् कन्नियर् तुयिन्ऱार् 543

अरुम्पु अनैय कॊङ्कै–(सेमर) कली के समान स्तन; अयिल् अम्पु अनैय–तीक्ष्ण वाण के समान; उण् कण्—काजल-लगी आँखों वाली; करुम्पु अनैय–इक्षु (-रस)-तुल्य; चॆम् चॊल् नविल्–मधुरभाषी; कन्नियर्–वालाएँ; पॆरु पकल् वरुन्तिनर्–लम्बे दिन के समय में श्रम उठाकर; पिऱङ्कुम् मुलै–जिनके उभरे स्तन; तॆङ्किन् कुरुम्पैकळ् पॊरुम्–नारियल के कच्चे फलों के समान थे; चॆविलि मङ्कैयर्–उन धाइयो के; कुऱङ्किल्–ऊरुओं पर; तुयिन्ऱार्–(सिर रखे) सोईं। ५४३

सेमरकली के समान पयोधरों और तीक्ष्ण भाले के समान आँखों वाली, इक्षुरस-मधुरभाषिणी कन्याएँ दिन भर चलते आने से श्रांत होकर नारियल के कच्चे फलों के समान कुचों वाली धाइयों के ऊरुओं पर सिर रखकर सोयी पड़ी थी। ५४३

पूवह निऱैन्दपुळि नत्तिडर्ह डोरुम्
मावहिरि नुण्गणर् मडप्पिडियिन् वैहच्
चेवह मणैन्दशिरु हट्करिह ळॆन्नत्
तूवयि लिरुन्दमऱ मन्नर्ह डुयिन्ऱार् 544

पू अकम् निऱैन्त–फूलों से भरे; पुळित्तम् तिटर्कळ् तोऱुम्–नदियों के पुलिनों के टीलो पर; मा वकिरिन् उण् कण्णर्–टिकोरे की फाँक के समान और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियाँ; मटम् पिटियिन् वैक–छोटी हथिनियों के समान सोईं; तू अयिल् इरुन्त—मांसयुक्त भाले लिये हुए; मऱम् मन्नर्कळ्–वीर राजा लोग; चेवकम् अणैन्त—निद्रा-रत; चिऱु कण् करिकळ् ॲन्न–छोटी आँखों वाले हाथियों के समान; तुयिन्ऱार्–सोये। ५४४

नदी के बीच पुलिन थे जिनमें विकसित पुष्प-सह तरु, लताएँ आदि थीं। उन पर टिकोरे की फाँक-सी और काजल-लगी आँखों वाली स्त्रियाँ (राजकुल की स्त्रियाँ) छोटी हथिनियों के समान सो रही थीं। उनके पास मांसलिप्त भालों वाले वीर राजा लोग छोटी आँखों के गजों के समान सो रहे थे। ५४४

तहवुमिहु तवमुमिवै तळुववुयिर् कॊळुनर्
मुहमुमव ररुळुनुहर् हिलर्तुयरिन् मूळ्हि
अहवुमिळ मयिल्हळुयि रलशियन वनैयार्
महवुमुलै वरुडविळ महळिर्ह डुयिन्ऱार् 545

इळ मकळिर्कळ्–छोटी उम्र की स्त्रियाँ; तकवुम्–निष्पक्ष व्यवहार; मिकु

तवमुम्–और अधिक तपस्या; इवै तळुव–इनसे युक्त; उयर्–श्रेष्ठ; कॉळुनर् मुकमुम्–पतियों का मुख (उनकी कृपादृष्टि); अवर् अरुळुम्–उनकी कृपा (सहानुभूति); नुकर्किलर्–विना भोगे; तुयरिल् मूळ्कि–दुख में मग्न; मकवु मुलै वरुट–शिशु को स्तन सहलाने देते हुए; उयिर् अलचियन्न–प्राण दुर्बल पड़े; अकवुम् इळ मयिल्कळ् अन्नैयार्–नाचनेवाले छोटी उम्र के मयूरों के समान; तुयिन्ऱार्–थककर सो रहीं। ५४५

कुछ (सन्तानवती) स्त्रियाँ अपने पतियों की, जो श्रेष्ठ रीति से तपस्या के समान अपना गार्हस्थ्य जीवन विताते थे, सहानुभूतिपूर्ण कृपा-दृष्टि और उनके कृपा-वचन का सुख उठा न सकीं। वे इतनी व्याकुल थी। उनके शिशु उनके स्तनों के चूचुकों को पकड़कर घुमा रहे थे। उसकी भी उनको सुध नहीं थी। नाचकर थके हुए मोरों के समान वे श्रांत पड़ी सो रही थीं। ५४५

माहमणि वेदिहैयिन् मादविशॅय् पन्दल्
केहय नॅडुङ्गुल मॅन्नच्चिलर् किडन्दार्
पूहवन्न मूडुपडु हर्प्पुळिन मुन्ऱिल्
तोहैयिळ वन्ननिरै यिऱ्चिलर् तुयिन्ऱार् 546

चिलर्–कुछ लोग; वेतिकैयिन्–चबूतरों पर; माकम् अणि–आकाश तक ऊँचे, वढ़ी हुई; मातवि चॅय् पन्तल्–माधवी लता के वितान के नीचे; नॅटु केकयम् कुलम् ॲन्न–विशाल मयूरों के समूह के समान; किटन्तार्–पड़े रहे; चिलर्–कुछ (स्त्रियां); पूकम् वनमूटु–पूगवन-मध्य; पटुकर्–जलाशयों के निकट; पुळिनम् मुन्ऱिल्–वालू के टीलों पर; तोकै इळ अन्नम् निरैयिल्–पंखों वाले बाल-हंसों की श्रेणी के समान; तुयिन्ऱार्–सोती रहीं। ५४६

वहाँ के उद्यानों में चबूतरे थे। उन पर माधवीलताओं के वितानों के नीचे कुछ स्त्रियाँ विशाल मयूरसमूहों के समान पड़ी रहीं। कुछ स्त्रियाँ पूगवन-मध्य जलाशयों के पास वालू के टीलों पर हंसों की पंक्ति के समान सो रही थीं। ५४६

❀ चम्बह नऱुम्पॉऴिल्ह ळिऱ्ऱरुण वञ्जिक्
कॊम्बळ हॊशिन्दन्न वॅनच्चिलर् कुळैन्दार्
वम्बळवु कॊङ्गयॊडु वालुह वळाहत्
तम्बवळ वल्लिह ळॅन्नच्चिल रशैन्दार् 547

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; चम्पकम् नऱु पॊऴिल्कळिल्–सुवासित चम्पकवनों में; तरुणम् वञ्चि कॊम्पु–तरुण पुष्पलताएँ; अळकु ऒचिन्तन्न–मनोरम रीति से लचकी गिरी हों, जैसे; कुळैन्तार्–मुरझाई पड़ी रहीं; चिलर्–और कुछ; वम्पु अळवु कॊङ्कै यॊटु–अँगियाबद्ध स्तनों के साथ; वालुकम् वळाकत्तु–वालू के मैदानों पर; अम् पवळ वल्लिकळ् ॲन्न–सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान; अचैन्तार्–शिथिल पड़ी रहीं। ५४७

कुछ चम्पकवनों में मुरझाई पड़ी सुन्दर पुष्पलताओं के समान क्लेश-तप्त पड़ी रहीं। कुछ अन्य स्त्रियाँ अँगिया-बद्ध स्तनों के साथ वालू के मैदानों पर, सुन्दर प्रवाल-लताओं के समान थकी हुई पड़ी रहीं। ५४७

कुङ्गुम मलैक्कुळिर् पनिक्कुळ्मि यॅन्नत्
तुङ्गमुलै यिऱ्ऱुह ळुऱच्चिलर् तुयिन्ऱार्
अङ्गयणै यिऱ्पॉलि वळुङ्ग मुहमॅल्लाम्
पङ्गय मुहिळ्त्तन वॅन्नच्चिलर् पडिन्दार् 548

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; कुङ्कुमम् मलै–कुंकुम-पर्वत पर; कुळिर् पनि–शीतल हिम; कुळ्मि ॲन्नत–जमा रहा, जैसे; तुङ्कम् मुलैयिल्–तुंग स्तनों पर; तुकळ् उऱ–धूलि जमी रही; तुयिन्ऱार्–इस प्रकार सोईं; चिलर्–अन्य कुछ; मुकम् ॲल्लाम्–मुखों के; मुकिळ्त्तन पङ्कयम् ॲन–मुरझाकर बन्द हुए कमल-पुष्पों के समान; पॉलिवु अळुङ्क–प्रभा के छूटते; अम् कै अणैयिन्–सुन्दर हाथों के तकियों पर; पटिन्तार्–(सिर रखकर) भूमि पर लेटी रहीं। ५४८

कुछ स्त्रियाँ अपने तुंग स्तनों को, कुंकुम-पर्वत पर हिम जमा हो जैसे धूल-धूसरित करती हुई सो रही थी। कुछ स्त्रियाँ वन्द कमलसम, प्रभाहीन मुखों के साथ अपने हाथों पर, तकिये के समान, सिर रखे सो रही थीं। ५४८

तॉडुत्तकलि डैच्चिलर् तुवण्डनर् तुयिन्ऱार्
अडुत्तवडै यिऱ्चिल रळिन्दन रयर्न्दार्
उडुत्ततुहिल् शुऱ्ऱॊरु तलैच्चिल रुऱैन्दार्
पडुत्तकुळै यिऱ्चिलर्हळ् कण्पडै पयिन्ऱार् 549

चिलर्–कुछ (स्त्रियाँ); तॉटुत्त कल् इटै–पास-पास लगे रहे पत्थरों पर; तुवण्टनर् तुयिन्ऱार्–मुरझाई पड़ी सोती रहीं; चिलर्–कुछ; अटुत्त अटैयिल्–नीचे बिखरे रहे पत्तों पर; अळिन्तनर् अयर्न्तार्–मन मारकर सो रही थीं; चिलर् उटुत्त तुकिल् चुऱ्ऱु–पहने हुए वस्त्र की लपेटों से; ऑरु तलै–एक सिरे पर (दामन पर); उऱैन्तार्–सोईं; चिलर्कळ्–कुछ लोग; पटुत्त कुळैयिल्–खुद पत्ते बिछाकर उन पर; कण् पटै पयिन्ऱार्–आँख का उन्मीलन किया। ५४६

कुछ पास-पास लगे पड़े रहे पत्थरों पर चूर होकर पड़ी रही। कुछ स्त्रियाँ नीचे बिखरे रहे पत्तों पर क्लांत हो लेटी रही। कुछ स्त्रियाँ अपनी कमर पर लपेटी हुई साड़ी के दामन को बिछाकर उस पर सिर रखे सो रही थी। कुछ स्त्रियों ने खुद पत्ते बिछाये और उन पर लेटकर अपने को भूल गई। ५४९

※ एनयरु मिन्नण मुऱङ्गिन रुऱङ्गा
मानवन् मन्दिरिशु मन्दिरनै वाॅन्

रुनमिल् परुङ्गुण मौरुङ्गुडैय वुन्नाल्
मेनिहळ्व दुण्डवुरै केळॆन्न विळम्बुम् 550

एत्तैयरुम्–अन्य लोग भी; इन्नतणम्–इस तरह; उऱङ्किनर्–सोये; उऱङ्का मानवनुम्–जो नहीं सोये, वे 'मानव' (मनुकुल-सम्भूत) श्रीराम; मन्तिरि चुमन्तिरनै–मन्त्री सुमन्त्र को; वा ऎन्ऱु–आइए कहकर; ऊनम् इल्–दोषहीन; पॆरुम् कुणम्–श्रेष्ठ गुण; ऒरुङ्कु उटैय–एक साथ रखनेवाले; उन्नाल्–आपसे; मेल् निकऴ्वतु–आगे करने योग्य; उण्टु–काम है; अ उरै केळ्–वह कथन सुनिए; ऎन–कहकर; विळम्पुम्–कहने लगे। ५५०

अन्य लोग भी कहीं-कहीं किसी विध निद्रारत हो रहे। तब मनुकुल-श्रेष्ठ श्रीराम ने, जो सो नहीं रहे थे, मंत्री सुमंत्र को पास बुलाया और कहा कि निर्दोष और गुण-पूर्ण! आपके द्वारा एक काम होना है। वह सुनिए। यह कहकर वे आगे बोले। ५५०

❀ पूण्डपे रन्बि नारैप् पोक्कुव दरिदु पोक्का
दीण्डुनिन् ऱेहल् पॊल्ला दॆन्दैनी यिरद मिन्ने
तूण्डिनै मीळ्व दाक्किऱ् चुवट्टैयोर्न् दॆन्नै यङ्गे
मीण्डन ऩॆन्न मीळ्व रिदुनिन्नै वेण्डिऱ् ऱॆन्ऱान् 551

पूण्ट पेर् अन्पित्तारै–मेरे ऊपर बड़ा प्रेम रखनेवाले इनको; पोक्कुवतु–अलग कर भेजना; अरितु–सुलभ नहीं है; पोक्कातु–उनको भिजवाये बिना; ईण्टु निन्ऱु–यहाँ से; एकल्–हमारा जाना; पॊल्लातु–अन्याय होगा; ऎन्तै नी–पितृतुल्य आप; इरतम्–रथ को; इन्ने तूण्टिनै–अभी चलाकर; मीळ्वतु आक्किल्–नगर को लौट गया ऐसा करेंगे; चुवट्टै ओर्न्तु–चिह्न देखकर; ऎन्नै अङ्के मीण्टनन् ऎन्न–मुझे वहाँ लौटा हुआ मानकर; मीळ्वर्–वे भी लौटेंगे; निन्नै वेण्टिऱ्ऱु–आपसे प्रार्थना है; इतु–यह; ऎन्ऱान्–कहा। ५५१

मुझ पर अपार प्रेम रखनेवाले इनको वापस भेजना आसान नहीं लगता। उनको लौटा के भेजे बिना यहाँ से आगे जाना भी बुरा होगा। इसलिए मेरे पितृतुल्य आप हमारे रथ को लौटाकर नगर ले जाइए। लोग भी रथ-चिह्न देखकर मुझे अयोध्या लौटा हुआ मानकर अयोध्या चले जाएँगे। यही आपसे प्रार्थना है। (वाल्मीकि और तुलसी के अनुसार सुमंत्र यहाँ से वापस नहीं भेजे जाते। गंगा नदी पहुँचने के बाद भेजे जाते हैं।)। ५५१

चॆव्विय कुरुशिल् कूऱत् तेर्वला नुणर्त्तु वानव्
वॆव्विय तायिऱ् ऱीय विदियिनिन् मेलन् पोलाम्
इव्वयि निन्नै नीक्कि यिन्नुयिर् नीत्ते नल्लेन्
अव्वयि ननैय काण्डऱ् कमैदला लळिय नॆन्ऱान् 552

चॆव्विय कुरुचिल्–सुशील राजा राम के; कूऱ–यह कहने पर; तेर् वल्लान्–रथ-सारथ्य-चतुर; उणर्त्तुवान्–समझाते हुए; अळियन्–दयनीय मैं; इ वयिन् निन्ऱै नीक्कि–यहाँ, (इस तरह) आपको छोड़कर; .इन् उयिर् नोत्तेन् अल्लेन्–प्यारे प्राणों को बिना छोड़े; अ वयिन्–वहाँ (नगर में); अनैय काण्टर्कु–(वहाँ जो होंगे), उन दुख-दृश्यों को देखने के लिए; अमैतलाल्–(आपका कहना) मार्ग बनता है, इसलिए; अ वॆव्विय तायिन्–उन क्रूर माता से भी अधिक; तीय वितियिनिन्–बुरी विधि से भी अधिक; मेलन् पोल् आम्–बढ़ा हुआ क्रूर बनूँगा ही; ऎन्ऱान्–कहा। ५५२

यह सुनकर रथसारथ्य-चतुर सुमंत्र एक दम विचलित हो गये। श्रीराम सुशील राजा थे। उनके कथन का खण्डन हो नहीं सकता। इसलिए सुमंत्र उनको समझाते हुए कहने लगे। मैं बड़ा दयनीय हूँ। आपको इधर छोड़कर बिना जीवन त्यागे, उधर आपके वियोग से जो अनर्थ होंगे —उनको देखने के लिए मैं जाऊँ, यही आपकी सलाह का अर्थ है! तब मैं क्रूर कैकेयी से भी बढ़कर और निर्मम विधि से भी अधिक निष्ठुर हो गया! । ५५२

❀ देवियु मिळवलुन् दॊडरच् चॆल्वनैप्, पूवियल् कानहम् पुहवुय्त् तेन्ॆन्गो
कोविनै युडन्कॊडु कुरुहि नेन्ॆन्गो, यावदु कूऱुहे निरुम्बि नॆञ्जिनेन् 553

इरुम्पिन् नॆञ्चिनेन्–लोहे का दिल वाला मैं; तेवियुम् इळवलुम् तॊटर–देवी और अनुज के अनुसरण करते; चॆल्वनै–श्रीमान (राघव) को; पू इयल्–पुष्प भरे; कानकम् पुक–कानन में प्रविष्ट; उय्त्तेन्–कराया; ऎन्को–कहूँ क्या; कोविनै–राजा को; उटन् कॊटु कुरुकिनेन्–साथ लेकर आया; ऎन्को–कहूँ; यावतु कूऱुकेन्–क्या कहूँगा। ५५३

वहाँ जाकर मै क्या कहूँगा ? कहूँ कि लौहदिल वाला, मैंने देवी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ श्रीराम को पुष्पतरुपूर्ण जंगल में भेज दिया ? या यह (झूठ) कहूँ कि राजा राम को साथ लाया हूँ ? उनसे क्या कहूँगा ? । ५५३

❀ तारुडै मलरिनु मॊदुङ्गत तक्किला, वारुडै मुलैयॊडु मदुहै मैन्दरैप्
पारिडैच् चॆलुत्तिनेन् पळैय नण्बिनेन्, तेरिडै वन्दनॆन् ऱीदि लेनॆन्गो 554

पऴैय नण्पिनेन्–बहुत दिनों का स्नेही मैं; तार् उटै (य) मलरिनुम्–समान रूप से फैले हुए पुष्पों पर भी; ऒतुङ्क तक्कु इलात–चलने में असमर्थ; वार् उटै मुलैयॊटु–अँगियाबद्ध स्तनों वाली सीता के साथ; मतुकै मैन्तरै–बलिष्ठ नौजवानों को; पार् इटै चॆलुत्तिनेन्–भूमि पर चलने देते हुए; तीतु इलेन्–बिना आँच के; तेरिटै वन्तनॆन्–रथ पर सवार होकर आया; ऎन्को–कहूँ। ५५४

सुमंत्रजी आगे पूछते है कि क्या मैं उनसे यह कहूँ कि बहुत दिनों का

स्नेही मैं पुष्प पर भी न चल सकनेवाले मृदुल चरणों की और अँगिया-निविष्ट स्तनों वाली सीताजी के साथ वीर नौजवान श्रीराम और लक्ष्मण को पैदल चलने देकर, विना किसी आँच के रथ पर बैठकर सुखपूर्वक आ गया ? । ५५४

❀ वन्बुलक् कन्मन मदियिल् वञ्जनेन्
ॲन्बुलप् पुऱवुडैन् दिरङ्गु मन्नन्पाल्
उन्बुलक् कुरियशॊ लुणर्त्तच् चॆल्हॅनो
तॅन्बुलक् कोमहन् ऱूदिऱ् चॆल्हॅनो 555

वन् पुलम् कल्–कठोर स्थानों के पत्थर के समान; मनम्–मन का; मति इल् सद्बुद्धि-हीन; वञ्चनेन्–वंचक मैं; ॲन्पु उलप्पु उऱ–शरीर शिथिल हो, ऐसे; उटैन्तु–विदीर्णमन होकर; इरङ्कुम्–दुखी रहनेवाले; मन्नन् पाल्–राजा के पास; उन् पुलक्कु उरिय–आपके, अपनी बुद्धि में सही मानकर; चॊल्–वचनों को; उणर्त्त–कहने के लिए; चॆल्कॆन्तो–जाऊँ; तॅन् पुलम् कोमकन्–दक्षिण दिशा के राजा (यम) के; तूतिन्–दूत के समान; चॆल्कॆन्तो–जाऊँ। ५५५

मैं वड़ा कठोर-दिल हूँ। कठोर स्थल के पत्थर से भी कठिन मेरा चित्त है। बुद्धि भी मेरी नीच है। वंचक हूँ! आपके वियोग से शरीर को दुर्बल और मन को विदीर्ण होने देते हुए शोकसंतप्त रहनेवाले राजा के पास, आप जो अव अपनी सन्मति के अनुसार कह रहे है —उन वातों को कहने के लिए दक्षिण दिशा के देवता यम के दूत के समान जाऊँ मैं? । ५५५

नाऱ्ऱिशै मान्दरु नहर माक्कळुम्, तेऱ्ऱिनर् कॊणर्वरॆन् शिऱुवन् रन्नॆयॆन्
ऱाऱ्ऱिन वरशनै यैय वॆय्यवॆन्, कूऱ्ऱुऱऴ् शॊऩ्ऩलिनार् कॊलैशॆय् वेन्गॊलो 556

ऐय–प्रभु; नाल् तिचै मान्तरुम्–(आपके साथ) चारों दिशाओं के लोग (जो आये हैं); नकरम् माक्कळुम्–और नगर के लोग; ॲन् चिऱुवन् तन्नै–मेरे वत्स को; तेऱ्ऱिनर् कॊणर्वर्—समझा-बुझाकर लौटा लाएँगे; ॲन्ऱु–समझकर; आऱ्ऱिन अरचनै–धैर्य अवलम्बित कर रहनेवाले राजा को; वॆय्य–तापक; ॲन्–मेरे; कूऱ्ऱु उऱऴ्–यम के समान; चॊल्लिनाल्–वचनों से; कॊलै चॆय्वेनो–हत्या करनेवाला बनूं। ५५६

हे प्रभु! चक्रवर्ती यही सोचकर सान्त्वना पा रहे हैं और जीवन धारण कर रहे हैं कि चारों ओर से जो लोग आये थे, वे और अयोध्या नगर के वासी मिलकर मेरे वत्स श्रीराम को समझा-बुझाकर ले आएँगे। मै जाऊँ और उनसे प्राण सुखानेवाले, यम-सम वचन से उनके प्राण निकाल दूं ? । ५५६

❀ अङ्गिमेल् वेळ्विशॆय् दरिदि नीपॆऱ्ऱ
शिङ्गवे ऱहन्ऱदॆन् ऱुणर्त्तच् चॆल्हॆनो

अङ्गळ्को महर्क्किनि यॅन्निऱ् केहयन्
नङ्गये कडैमुऱै नल्लळ् पोलुमाल् 557

ऍङ्कळ् को मकऱ्कु–हमारे चक्रवर्ती के पास; नी अङ्कि मेल्–आप अग्नि पर; वेळ्वि चॅय्तु–अनेक यज्ञ करके; अरितिन् पॅऱ्ऱ–अपूर्व रीति से आपने जिनको प्राप्त किया; चिङ्कम् एऱु–पुरुषसिंह; अकन्ऱतु ऍन्ऱु–विछुड़ गये, यह; उणर्त्त चॅल्कॅनो–कहने के लिए जाऊँ; इनि–अब; कटै मुऱै–आखिर; केकयन् नङ्कैये–केकयपुत्री ही; ऍन्निऩ् नल्लळ् पोलुम्–मुझसे भली बनेगी शायद। ५५७

मैं अपने चक्रवर्ती के पास जाऊँ और यह कहूँ कि आपका पुत्र, जिसको आपने अग्नि पर अनेक यज्ञों के अंग-स्वरूप होम करके बहुत कष्ट के साथ प्राप्त किया है, वह पुरुष-सिंह आपको छोड़कर जंगल चला गया ? तब तो आखिर केकयतनया मुझसे भली बनी ! । ५५७

❀ मुडिवुऱ विन्नन मॊऴिन्द पिन्नरुम्
अडियुऱत् तऴुविन नऴुङ्गिप् पैयरा
इडियुऱत् तुवळुव दॆन्नु मिन्नलन्
पडियुऱप् पुरण्डनन् पलवुम् पन्निनान् 558

इन्तन मुटिवु उऱ–ऐसा, पूर्ण रूप से; मॊऴिन्त पिन्नरुम्–अपना (विचार) कहने के बाद भी; अऴुङ्कि–और दुखी होकर; पै अरा–फन वाला सर्प; इटि उऱ–वज्र के गिरने पर; तुवळुवतु ऍन्नुम्–तड़पता हो, जैसी; इन्नलन्–वेदना के साथ; अटि उऱ तऴुविनन्–उनके चरणों को खूब पकड़कर; पटि उऱ–भूमि पर; पुरण्टनन्–लोटते हुए; पलवुम् पन्निनान्–अनेक बातें कहीं। ५५८

सुमंत्र, जो कहना चाहते थे, वह सब कह चुके। फिर भी उनका दुख कम नहीं हुआ और वज्राहत सर्प जैसे तड़पता है वैसे दुखसंतप्त होकर वे श्रीराम के पैरों पर गिरे और उनको पकड़कर लोटे। और विविध बातें कहते हुए विलाप करने लगे। ५५८

❀ तडक्कया लॅडुत्तवऱ् ऱऴुविक् कण्णिनीर्
तुडैत्तुवे ऱिरुत्तिवैत् तिन्नैय शॊल्लिनान्
अडक्कुमैम् बॊऱियॊडु करणत् तप्पुऱम्
कडक्कुम्वा लुणर्विनुक् कणुहुङ् गाट्चियान् 559

अटक्कुम्–दाँत; ऐन्तु पॊऱियॊटु–पाँचो इन्द्रियों के साथ (इन्द्रिय-निग्रह करके); करणत्तु अ पुऱम्–अन्तःकरणों को पार कर, उस पार; कटक्कुम्–जो गया रहता है; वाल् उणर्विनुक्कु–शुद्ध ज्ञान के लिए; अणुकुम्–पास आनेवाले; काट्चियान्–रूप के (श्रीराम) ने; अवन्–उनको; तट कैयाल् ऍटुत्तु–विशाल हाथ से उठाकर; तऴुवि–गले लगाकर; कण्णिन् नीर् तुटैत्तु–आँखों से आँसू पोंछकर; वेऱु इरुत्ति वैत्तु–अलग ले जाकर, बिठाकर; इत्तैय चॊल्लिनान्–ये बातें कहीं। ५५९

श्रीराम इन्द्रियनिग्रह के द्वारा सारे अन्तःकरणों के पार जाकर शुद्धज्ञान-प्राप्त तपस्वियों के ही ज्ञानगम्य भगवान हैं। उन्होंने सुमंत्र को अपने विशाल हाथों से उठाया और गले से लगा लिया। उनकी आँखों से बहनेवाले आँसू को पोंछकर उनको अलग ले गये। फिर वे उनसे बोले। ५५९

❀ पिऱत्तलौन् ऱुऱ्ऱपिन् पॆऱुव यावैयुम्
तिऱत्तुळि युणर्वदोर् शॆम्मै युळ्ळत्ताय्
पुऱत्तुऱु पॆरुम्बऴि पोदुविन् ऱॆय्दवुम्
अऱत्तिऱ मऱत्तियो ववल मुण्डॆन्ना 560

पिऱत्तल् ऒन्ऱु उऱ्ऱ पिन्–जन्म लेने के बाद; पॆऱुव यावैयुम्–सहज-प्राप्य सभी (सुख-दुखों) को; तिऱत्तु उळ्ळि–खूब सोचकर; अऱिवतु ओर्–समझनेवाले; चॆम्मै उळ्ळत्ताय्–निष्पक्ष विवेकी; पुऱत्तु उऱु–बाहर से आनेवाले; पॆरु पऴि–बड़े अपयश को; पोतु इन्ऱु–असाधारण रूप से; ऎय्तवुम्–मैं प्राप्त करूँ, इस स्थिति में भी; अवलम् उण्टु ऎन्ना–दुख होगा, इस ख्याल से; अऱम् तिऱम्–धर्म का अंश; मऱत्तियो–भूल जायँगे। ५६०

हे सुमंत्रजी! आप विवेकशील महात्मा ज्ञानी हैं। आप जानते हैं कि जन्म ले लेने के बाद जीव को सुख-दुख प्राप्त होंगे ही। उनके सम्बन्ध में बिना किसी चंचलता के, सोच-समझनेवाले विवेकी! आप यह जानते हुए भी कि जंगल न जाऊँ तो मेरा असाधारण अपयश होगा, दुख से डरकर धर्म का प्रकार भूल जाएँगे? । ५६०

❀ मुन्बुनिन् ऱिशैनिऱीइ मुडिवु मुऱ्ऱिय
पिन्बुनिन् ऱुऱुदियैप् पयक्कुम् पेरऱम्
इन्बमव्वन् दुऱुमॆनि लियैव दायिडैत्
तुन्बमव्वन् दुऱुमॆनिऱ् ऱुऱक्कऱ् पालदो 561

मुन्पु निन्ऱु–(पुरुषार्थों में) पहला रहकर; इचै निऱीइ–यश स्थापित करके; मुटिवु मुऱ्ऱिय पिन्पुम्–(जीवन का) अन्त होने के बाद भी; निन्ऱु–उसके साथ रहकर; उऱुतियै पयक्कुम्–(जीव को) परलोक में भी हित करनेवाला; पेर् अऱम्–सम्मान्य धर्म को; इन्पम् वन्तु उऱुम् ऎनिल्–सुख मिलेगा तो; तुऱक्कऱ् पालतो–त्याज्य हो जायगा क्या। ५६१

धर्म प्रथम पुरुषार्थ है। वह इह-जीवन में यश दिलाता है और साथ रहकर पर-जीवन में भी हित करता है। क्या वह श्रेष्ठ धर्म (त्यागने पर), सुख मिलने की सम्भावना हो तो त्याज्य हो जायगा? (न वह दुख के कारण त्याज्य है, न सुख के कारण। वह हमेशा पालनार्ह है।) । ५६१

निऱप्परुम् वडैक्कल निऱत्ति नॆय्दवुम्
मऱप्पयन् विळैक्कुरुम् वन्मै यन्ऱरो
इऱप्पिनुम् दिरुवॆला मिऴप्प वॆय्दिनुम्
तुऱप्पिल रऱमॆनल् शूर रावदे 562

चूरर् आवतु–शूर बनते हैं; निऱम् पॆरु पटै–उज्ज्वल और सबल; कलम्–हथियार; निऱत्तितन् ऎय्तवुम्–वक्ष पर लगें; मऱम् पयन्–और वीरता का पुरस्कार; विळैक्कुरुम्–(विजय) दिलानेवाले; वन्मै अन्ऱु–साहस के कारण नहीं; तिरु ऎल्लाम् इऴप्प ऎय्तिनुम्–सारी सम्पत्ति खोनी पड़े, तो भी; इऱप्पिनुम्–मृत्यु हो जाय, तो भी; अऱम् तुऱप्पु इलर्–धर्म न त्यागेंगे; ऎनले–इस यश के कारण ही। ५६२

आखिर शूर कौन होते हैं ? उज्ज्वल भाले आदि का वार अपने वक्ष पर झेलकर वीरता का पुरस्कार, जो विजय है उसको प्राप्त करना ही शूरता है ? नही। पर शूरता सारी सम्पत्ति खोने पर भी, मृत्यु को गले लगाने की नौबत आने पर भी धर्म न त्यागना ही है ! । ५६२

❀ कान्पुरञ् जेऱलि नरुमै काण्डियाल्
वान्पिऱङ् गियपुहऴ् मन्नर् तॊल्हुलम्
यान्पिऱन् दऱत्तिनिन् ऱिऴुक्किऱ् ऱॆन्नवो
ऊन्ऱिऱन् दुयिर्गुडित् तॊळिरुम् वेलिनाय् 563

ऊन् तिऱन्तु–(शत्रु का) शरीर चीरकर; उयिर् कुटित्तु–प्राण पी (हर) कर; ऒळिरुम्–शोभनेवाले; वेलिनाय्–भाले वाले; कान् पुरम् चेऱलिन्–(मेरे) वन जाने में; अरुमै काण्टि–अधिक संकट का अनुमान करते हैं; वान् पिऱङ्किय–आकाश में भी (व्याप्त) रहनेवाले; पुकऴ् मन्नर्–यशस्वी राजाओं का; तॊल् कुलम्–प्राचीन कुल; यान् पिऱन्तु–मेरे जन्म लेने से; अऱत्तिन् निन्ऱु–धर्म से; इऴुक्किऱ्ऱु–डिग गया; ऎन्नवो–कहा जाय। ५६३

शत्रु-शरीर को चीरकर रक्त पीकर चमकनेवाले भाला के धारक ! आप मेरे वन जाने में दुख देखते है ! पर यह देखते नहीं कि स्वर्ग-व्यापी यशस्वी राजाओं का मेरा प्राचीन कुल मेरे जन्म से (अगर मैं वन नहीं जाऊँ तो, उस हालत मे) धर्म-विमुख हो जाने के अपयश का भागी हो जायगा। क्या लोगो को ऐसा कहने दूँ कि मेरे जन्म से मेरा कुलगौरव नष्ट हो गया ? । ५६३

❀ विनैक्करु मॆय्म्मयिन् वनत्तु विट्टनन्
मनक्करुम् बुदल्वनै यॆन्ऱन् मन्नवन्
तनक्करुन् दवमदु तलैक्कॊण् डेहले
ऎनक्करुन् दवमिदऱ् किरङ्ग लॆन्दैनी 564

विनैक्कु अरु–पालन-दुस्तर; मॆय्म्मैयिन्–सत्य-पालन के लिए; मनक्कु अरु

पुतल्वत्तै–मन (प्राण-)प्यारे पुत्र को; वत्तत्तु विट्टत्तन्–वन में भेज दिया; ऍन्ऱल्–यह कथन (इस कीर्ति के योग्य होना); मन्नवन् तनक्कु–राजा के लिए; अरु तवम्–बहुमूल्य तप है; अतु तलै कॉण्टु–(उनको आज्ञा) वह शिरोधार्य करके; एकले–वन में जाना ही; ऍन्नक्कु अरु तवम्–मेरी तपस्या है; ऍन्नै नी–मेरे पितृतुल्य आप; इतऱ्कु–इसका; इरङ्कल्–दुख न कीजिएगा। ५६४

कष्टसाध्य सत्य पालन के निमित्त अपने मन के बहुत ही प्यारे पुत्र को (राजा ने) वन भेजा; यह लोग कहें —ऐसी स्थिति राजा के लिए तपस्या है। उनकी आज्ञा को सिर पर धारण करके वन में जाना मेरे लिए तपस्या है। पितृतुल्य आप इसका दुख मत कीजिए। ५६४

मुन्दिनै मुनिवनैक् कुऱुहि मुऱ्ऱुमॅन्, वन्दनै मुदलिय माऱ्ऱङ् गूऱिप्पिन्
ऍन्दयै यवनॉडु मॅय्दि योण्डॅन, शिन्दयै युणर्त्तुदि यॅन्ऱु शॅप्पुवान् 565

मुन्तितै–आप शीघ्र जाकर; मुनिवनै कुऱुकि–मुनि (वसिष्ठ) के पास जाकर; ऍन् वन्तनै मुतलिय माऱ्ऱम् मुऱ्ऱुम् कूऱि–मेरा नमस्कार आदि सभी बातें कहकर; पिन्–उसके बाद; अवनॊटुम् ऍन्तैयै ऍय्ति–उनको साथ लेकर पिता के पास जाकर; ईण्टु ऍन चिन्तैयै–यहाँ के मेरे विचारों को; उणर्त्तुति–समझाइए; ऍन्ऱु–कहकर; चॅप्पुवान्–आगे भी बोले। ५६५

आप जाइएगा। पहले वसिष्ठजी के पास जाकर, उनको मेरा नमस्कार आदि कहिए। बाद उनको साथ लेकर मेरे पिताजी के पास जाइए। उन्हें मेरे विचार समझाइए। —यह कहकर वे आगे भी बोले। ५६५

मुनिवनै यॅम्पियै मुऱैयि निन्ऱुम्
पुनिदवे दियर्क्कुमे लुऱैपुत् तेळिर्क्कुम्
इनियन विळैत्तियॅन् ऱियम्बि यॅऱ्पिरि
तनिमयुन् दीर्त्तियॅन् ऱुरैत्ति तन्मयोय् 566

तन्मैयोय्–श्रेष्ठ स्वभाव वाले; ऍम्पियै–मेरे भाई (भरत) को; मुऱैयिल् निन्ऱु–धार्मिक नीति पर रहकर; अरु पुनितम् वेतियर्क्कुम्–श्रेष्ठ, पवित्र वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों के प्रति; मेल् उऱै पुत्तेळिर्क्कुम्–आकाश में रहनेवाले देवताओं के प्रति; इनियन इळैत्ति–मधुर व्यवहार करो; ऍन्ऱु इयम्पि–ऐसा कहकर; ऍन् पिरि–मुझसे बिछुड़ने से उत्पन्न; तनिमैयुम् तीर्त्ति–एकाकीपन का दुख भी दूर कीजिए; ऍन्ऱु–ऐसा; मुनिवनै उरैत्ति–मुनिवर से कहिए। ५६६

उत्तम प्रकृति वाले! मुनिवर से कहें कि वे मेरे अनुज भरत को उपदेश दें ताकि वह उत्तम, बहुमूल्य वेदों के ज्ञाता ब्राह्मणों और स्वर्गवासी देवताओं के प्रति मधुर व्यवहार करे। मुनिवर भरत को जो मेरे बिछुड़ने से एकाकीपन का क्लेश होगा उसको दूर करा दें। ५६६

वेंव्विय	दनूतयाल्	विळैन्द	दीण्डॅन
कव्वयॅन्	ड्रिइंयुम्दन्	करुतूति	नोक्कलन्
अॅव्वरु	ळॅन्वयिन्	वेतूत	दॅन्शीन्नाल्
अव्वरु	ळव्वयि	नरुळ्	हॅन्ड्रियान् 567

अनूनैयाल्–माता कैकेयी द्वारा; ईण्टु–अव; वेंव्वियतु और कव्वै–भयानक एक दुख; विळैन्ततु ॲन्रु–पैदा हो गया, समझकर; तन् करुतूतिल्–अपने मन में; इऱैयुम्–जरा भी; नोक्कलन्–न सोचकर; ॲन् चोल्लाल्–मेरे वाक्य से; ॲन् वयिन् वतूततु–मेरे प्रति रखी गई; ॲ अरुळ्–जैसी कृपा; अ अरुळ्–वैसा स्नेह; अ वयिन् अरुळुक–उनके प्रति भी कीजिएगा; ॲन्ड्रि–(मुनिवर से) कहें। ५६७

महर्षि यह न सोचें कि मेरी स्नेहशील जननी कैकेयी द्वारा कोई क्रूर काम हो गया है। ऐसा विचार वे किंचित भी न करें। जितनी कृपा वे मुझ पर रखते है उतनी कृपा उन पर भी रखें। —यह मुनिवर से विनय कीजिए। ५६७

वेण्डिनॅ	निव्वर	मॅन्ऱु	वेलवन्
ईण्डरु	ळॅम्बिपा	निऱवि	यॅन्पिरि
वीण्डिय	तुयरतविर्न्	दिरुक्क	वॅन्ड्रशॉन्
आण्डहैक्	कुरॅत्तव	नवल	माड्रिप्पिन् 568

इ वरम् वेण्टिनॅन्–यह वर मैंने उनसे माँगा; ॲन्ऱु–कहकर; मेलवन् ईण्टु अरुळ्–श्रेष्ठ उनकी पूर्ण कृपा को; ॲम्पि पाल् निऱवि–मेरे अनुज पर रखकर; ॲन् पिरिवु इणटिय–मेरे वियोग के कारण होनेवाले; तुयर् तविर्न्तु–दुख को भूलकर; इरुक्क–रहो; ॲन्ऱ चोल्–यह बात; आण् तकैक्कु उरैत्तु–पुरुषश्रेष्ठ (मेरे पिता) को कहकर; अवन् अवलम् माड्रि–उनका दुख कम करके; पिन्–बाद। ५६८

मुनिवर से यह मेरी प्रार्थना कहकर मेरे छोटे भाई भरत पर उनकी दया रखवा लीजिए। फिर मेरे पिता पुरुष-श्रेष्ठ चक्रवर्ती से मेरी विनय कहिए कि वे दुख करना छोड़कर शान्त रहें। उनका दुख भी मुनिवर शान्त करें और मेरा यह वचन कहकर आश्वासन दें कि। ५६८

❀ एळिरण्	डाण्डुनीत्	तीण्ड	वन्दुनैत्
ताळ्हुवॅन्	ड्रिरुवडि	तळर	लीण्डॅनच्
चूळिवॅङ्	गळिड्रिरै	तनक्कुच्	चोर्विला
वाळिमा	दवन्शीलाल्	मनन्	दॅरुट्टुवाय् 569

एळ् इरण्टु आण्टु–दो के सात (चौदह) साल; नीतुतु–बिताकर; ईण्ट वन्तु–शीघ्र लौटकर; उन्नै तिरुवटि ताळ्कुवॅन्–आपके चरणों पर विनत हो जाऊँगा; तळरल् ईण्टु ॲन–शोक मत कीजिए, ऐसा; चूळि वॅम् कळिऱु–मुखपट्ट-पहने भयंकर गजों के; इरै तनक्कु–स्वामी को; चोर्वु इला मातवन् चोल्लाल्–अमोघ, महर्षि के वाक्यों द्वारा; मनम् तॅरुट्टुवाय्–मन को निःशंक कर दीजिए। ५६९

"मैं (श्रीराम) चौदह वर्ष व्यतीत करके शीघ्र लौट आऊँगा और आपके चरणों पर विनत हो जाऊँगा, आप शोक मत कीजिए"। वसिष्ठजी मुखपट्टधारी भयंकर गजों के स्वामी राजा दशरथ को मेरी ओर से अपने मुख से कहकर उनके मन को दृढ़ व संशयहीन बना दें। ५६९

❀ मुऱैमया	लॆऩ्ऱपयऩ्	दडुत्त	मूवर्क्कुम्
कुऱैविला	वॆऩ्ऩॆडु	वणक्कङ्	गूऱिप्पिऩ्
इऱैमहऩ्	ऱुयर्दुडैत्	तिरुत्ति	माडॆऩ्ऱाऩ्
मऱैहळै	मऱैन्दुपोय्	वनत्तुळ्	वैहुवाऩ् 570

मऱैकळै मऱैन्तु–वेदों से भी छिपकर (अज्ञात); पोय्–जाकर; वनत्तुळ् वैकुवाऩ्–वन में रहनेवाले; ऍऩ् पयन्तु ऍटुत्त मूवर्क्कुम्–मेरी तीनों जननियों को; ऍऩ्–मेरा; कुऱैवु इल्ला–निर्मल; नॆटु वणक्कम्–दीर्घ नमस्कार; मुऱैमैयाल् कूऱि–क्रम से कहकर; पिऩ्–आगे; इऱै मकऩ् तुयर् तुटैत्तु–चक्रवर्ती के दुख को दूर करते हुए; माट्टु इरुत्ति–उनके पास रहिए; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ५७०

श्रीराम ने, जो वेदों के लिए भी अज्ञात हैं, और अब वन में जाकर लोगों से छिपे हुए हैं, सुमंत्र से कहा कि आप मेरी तीनों जननियों को क्रम से मेरा निर्मल, पवित्र और दीर्घ नमस्कार कहिए। बाद चक्रवर्ती का दुख दूर करते हुए उनके पास रहिए। ५७०

❀ आळ्विनै	याणयिऱ्	ऱिऱम्ब	लऩ्ऱॆनात्
ताळ्मुदल्	वणङ्गियत्	तनित्तिण्	डेर्वलाऩ्
ऊळ्वित्तै	वशत्तुयिर्	निलैयॆऩ्	ऱुऩ्नुवाऩ्
वाळ्वितै	नोक्कियै	वणङ्गि	नोक्किनाऩ् 571

अ तनि तिण् तेर्–अनुपम पक्के रथ के उन; वल्लाऩ्–समर्थ सारथी ने; आळ् वित्तै–किंकर का काम; आणैयिल् तिऱम्पल् अऩ्ऱु–आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं है; ऍऩ्ऩा–कहकर; ताळ् मुतल् वणङ्कि–श्रीराम की चरण-वन्दना करके; उयिर् निलै–जीव की स्थिति; ऊळ् वित्तै वचत्तु ऍऩ्ऱु–कर्मवश है, यह; उऩ्नुवाऩ्–सोचकर; वाळ्वित्तै नोक्कियै–(सुखी) जीवन-दायिनी (सीताजी) को; वणङ्कि–नमन कर के; नोक्किनऩ्–(कुछ सुनने के विचार से) देखा। ५७१

अनुपम और सबल रथ को चलाने में समर्थ सुमंत्र ने, कहा कि किंकर का धर्म स्वामी की आज्ञा टालना नहीं है। उन्होंने श्रीराम को नमस्कार किया। 'आखिर कोई भी जीव अपने कर्म के वश में ही है' यह तथ्य सोचकर वे एक तरह से परिस्थिति को मान गये। तब उन्होंने जीवों पर कृपादृष्टि रखनेवाली सीता की तरफ़ देखा, इस प्रतीक्षा में कि वे कुछ कहेंगी। ५७१

❀ अऩ्ऩवळ् कूऱुवा ळरशर्क् कत्तयर्क्
कॅन्ऩुडै वणक्कमुन् नियम्बि याऩुडैप्
पॊन्निऱप् पूवयुङ् गिळियुम् वोर्ऱुमिन्
ऍऩ्ऩमर् रॅङ्गयर्क् कियम्बु वायॅन्ऱाळ् 572

अऩ्ऩवळ् कूऱुवाळ्–वे बोली; अरचर्क्कु–चक्रवर्ती को; अत्तैयर्क्कु–और सासों को; ऍऩ्ऩुटै वणक्कम्–मेरी विनय; मुऩ् इयम्पि–पहले सुनाकर; ऍङ्कैयर्क्कु–मेरी बहनों से; याऩ् उटैय–मेरी पालित; पॊऩ् निऱम्–सुन्दरवर्ण; पूवैयुम्–सारिका को; किळियुम्–शुक को; पोर्ऱुमिऩ् ऍऩ्ऩ–पालो-पोसो, ऐसा; इयम्पुवाय्–कहिए; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। ५७२

देवी ने कहा कि चक्रवर्ती और मेरी सासों को मेरा विनीत नमस्कार कहिए। फिर मेरी बहनों से कहें कि वे मेरी पालित सारिका, शुक आदि सुन्दर पक्षियों को पालें-पोसें। ५७२

❀ तेर्वला ऩव्वुरै केट्टुत् तीङ्गुऱिऩ्
यार्वला रुयिर्तुऱप् पॅळिदन् ऱेयॅन्ऩाप्
पोर्वलात् ऱडुक्कवुम् पॊरुमि विम्मिनान्
शोर्विला ळऱिहिलात् तुयर्क्कुच् चोर्हिन्ऱान् 573

तेर्वलाऩ्–रथसारथ्य-चतुर; अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; चोर्वु इलाळ्–(वनगमन की बात से) न घबड़ानेवाली उनके; अऱिकिलात तुयर्क्कु–अज्ञात कष्टों को सोचकर; चोर्किऩ्ऱाऩ्–शोक करते हुए; तीङ्कु उऱिऩ्–(विधिवशात) हानि हो जाय तो; आर् वल्लार्–कौन रोक सकता है; उयिर् तुऱप्पु–(मेरे लिए) प्राण-त्याग भी; ऍळितु अऩ्ऱे–सुलभ नहीं; ऍऩ्ऩा–यह सोचकर; पोर्वलाऩ् तटुक्कवुम्–युद्ध में निपुण वीर के रोकने पर भी; पॊरुमि विम्मिनाऩ्–(जी) भरकर रोये। ५७३

उनका यह कथन सुनकर समर्थ सारथी सुमंत्र के मन में ये भाव उठे। ये वनगमन की कोई चिन्ता नहीं करतीं। उनको मालूम नहीं है कि क्या-क्या कष्ट सम्भवनीय है! इनकी कोई हानि हो गई तो कौन उनको बचा सकेगे? मरना भी आसान नहीं लगता। यह सोचकर उन्हें अपार दुख हुआ। यद्यपि युद्धवीर श्रीराम ने सांत्वना दी और उनको रोका तो भी वे अपने दुख को रोक नहीं सके और फूट-फूटकर रोये। ५७३

❀ आऱिनन् पोऱ्चिऱि दवल मव्वऴि, वेऱिला वन्बिनान् विडैतन् दीहॅना
एऱुशे वहऱ्ऱोळ्ळु दिळैय मैन्दनैक्, कूऱुव दियादॅन विनैय कूऱुवान् 574

वेऱु इला अऩ्पिऩाऩ्–अपरिवर्तनशील प्रेम रखनेवाले; अ वऴि–तब; अवलम् चिऱितु आऱिऩऩ् पोल्–दुख थोड़ा कम हुआ जैसे; एऱु चेवकऩ् तॊऴुतु–वर्धनशील वीरता के श्रीराम के चरणों को नमस्कृत करके; विटै तन्तीक ऍऩा–आज्ञा दीजिए, कहकर; इळैय मैन्तनै–कनिष्ठ पुत्र को; कूऱुवतु यातु ऍन–कहना (आपका) क्या है, पूछने पर; इऩैय कूऱुवाऩ्–ये बातें कहीं (उन्होंने)। ५७४

श्रीराम ने उनको धीरज बँधाया। तव उन पर अकम्पन प्रेम रखने वाले सुमंत्र थोड़ा धैर्यशील हुए। और श्रीराम से नमस्कार करके विदा ली। फिर उन्होंने छोटे राजकुमार लक्ष्मण से पूछा कि आपका संदेश क्या है ? । ५७४

❀ उरैशॅय्दॅङ् गोमहऩ् कुऱ्ऱिदि याक्किय
तरैशॅरि तिरुविलैत् तविर्त्तु मऱ्ऱॊरु
विरैशॅरि कुळलिमाट् टळित्त मॅय्यनै
अरशऩॆऩ् ऱिऩ्ऩमॊऩ् ऱुरैयऱ् पालदो 575

ॲम् कोमकऩ्कु–मेरे राजकुँअर श्रीराम को; उरै चॅय्तु–वचन देकर; उऱ्ऱि आक्किय–उनकी बनाई हुई; तरै चॅरि तिरुविलै–भूमि रूपी समृद्ध श्री को; तविर्त्तु–उनको छोड़कर; मऱ्ऱु ऑरु–दूसरी एक; विरै चॅरि कुळलि माट्टु–सुवासित केश वाली के पास; अळित्त–जिन्होंने दे दिया; उन; मॅय्यनै–सत्यवादी को; इऩ्ऩम् अरचऩ् ॲऩ्ऱु–अब भी राजा मानकर; ऑऩ्ऱु अरैयल् पालतो–कहने योग्य समाचार भी होगा क्या। ५७५

लक्ष्मण ने निष्ठुरता से पूछा कि क्या उनको मैं अब भी राजा मानूँ, जो हमारे राजकुँवर को अपने ही मुख से राज्य और सम्पत्ति का स्वामी घोषित करने के बाद उनको एक सुवासित केश वाली स्त्री को देकर सत्य व्रती बने है; और कोई सन्देश दूँ ? वे इसके अर्ह है क्या ? । ५७५

❀ काऩहम् बऱ्ऱिनऱ् पुदल्वन् कायुणप्
पोऩहम् बऱ्ऱुमप् पॉरुविल् मऩ्ऩवऩ्
कूऩहम् बऱ्ऱिय वुयिरॊ डिऩ्ऩम्बोय्
वाऩहम् बऱ्ऱिला वलिमै कूऱॆऩ्ऱाऩ् 576

नल् पुतल्वऩ्–अच्छे कुँवर; काऩ् अकम् पऱ्ऱि–वन में रहते हुए; काय् उण–(कन्द-मूल-) फल खाते रहें; पोऩकम् पऱ्ऱुम्–अच्छा भोजन भुगतनेवाले; अ पॉरुवु इल् मऩ्ऩवऩ्कु–उन अनुपम राजा से; ऊऩ् अकम् पऱ्ऱिय–मांसपिण्ड, शरीर से लगे रहनेवाले; उयिरॊटु–प्राणों के साथ; इऩ्ऩम् पोय्–अब भी जाकर; वाऩ् अकम् पऱ्ऱु इला–स्वर्ग में न पहुँच जाने का; वलिमै–कठोर स्वभाव; कूऱु–उनसे कहिए; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। ५७६

पुत्र वन में वास करते हुए कन्द, मूल फलादि खाते हैं। तव पिता स्वयं महल में रहकर षड्रस भोजन का मौज उठा रहे है ! राजा को प्राण उतने प्यारे है ! शरीर के साथ लगे रहे प्राणों को त्यागकर स्वर्ग जाने का उनके पास मनोवल नहीं है ! उस विषय को उन्हें समझाइए। ५७६

❀ मिऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दवाट् परद वेन्दऱ्कॆऩ्
मऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दिलॆन् मण्णॊण् डाळ्हिन्ऱ

तऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दिलॅऩ् इम्बि मुऩ्ऩलॅऩ्
ऍऩ्ऩुडऩ् पिऱन्दयाऩ् वलिय ऩॅऩ्ऱियाल् 577

मिऩ्ऩुटऩ् पिऱन्त वाळ्–चमक के साथ रहनेवाली तलवार के धारी; परतऩ् वेन्तऱ्कु–राजा भरत से; ऍऩ् मऩ्–अपने राजा राम का; उटऩ् पिऱन्तिलॅऩ्–सहोदर मैं जन्मा नहीं; मण् कॊण्टु–उनकी धरती (राज्य) लेकर; आळ्किऩ्ऱ–शासन करने को रहनेवाले भरत का भी; तऩ् उटऩ् पिऱन्तु इलॅऩ्–सहोदर जन्मा नहीं हूँ; तम्पि मुऩ्ऩलॅन–(अपने छोटे) शत्रुघ्न को भी भाई नहीं मानता; ऍऩ् उटऩ् पिऱन्त याऩ्–अपने साथ स्वयं जन्मा (अकेला) मैं; वलियऩ्–बड़ा स्वस्थ हूँ; ऍऩ्ऱि–कहिए; (ऍऩ्ऱाऩ्–कहा)। ५७७

चमकीले तलवार-धारी भरत को मेरा यह सन्देश दे दें। मैं न राजा राम का सहोदर पैदा हुआ हूँ (क्योंकि अपना भायपा मैं निर्वाह नहीं कर पाया); न भरत का मै सहोदर जन्मा हूँ। शत्रुघ्न को भी मैं अपना भाई नही मानता। मैं अपने आप का अकेला सहोदर हूँ (यानी मै एकाकी हो गया।) और मै स्वस्थ सबल हूँ!। ५७७

❀ आरिय निळवलै नोक्कि यैयनी, शीरिय वल्लन शॅप्प लॅऩ्ऱपिऩ्
पारिडै वणङ्गिनन् परियु नॅञ्जिनऩ्, तेरिडै वित्तहन् शेऱल् मेयिनान् 578

आरियऩ्–आर्य श्रीराम ने; इळवलै नोक्कि–अपने अनुज को देखकर; ऐय–तात; नी चीरिय अल्लन–तुम अभद्र बातें; चॅप्पल्–मत कहो; ऍऩ्ऱपिऩ्–कहने के बाद; तेर् इटै वित्तकऩ्–सारथी सुमन्त्र; पार् इटै वणङ्कि–भूमि पर पड़कर दण्डवत करके; परियुम् नॅञ्चिनऩ्–खिन्नमन हो; चेऱल् मेयिनाऩ्–जाने लगे। ५७८

तब आर्य श्रीराम ने अपने लघुभ्राता से कहा कि लक्ष्मण! तुम अभद्रवचन मत बोलो। उसके बाद समर्थसारथी सुमंत्र दण्डवत करके भारी मन के साथ निकलने को तैयार हो गये। ५७८

❀ कूट्टिनऩ् ऱेर्प्पॊऱि कूट्टिक् कॊण्मुऱै, पूट्टिनऩ् पुरवियप् पुरवि पोॅनॅऱि
काट्टिनऩ् काट्टित्तन् कल्वि माट्चियाल्, ओट्टिनऩ् ऩौरुवरु मुणर्वु ऱामले 579

तेर् पॊऱि कूट्टिनऩ्–रथ-यन्त्र तैयार किया; कूट्टि–करके; पुरवि–अश्व; कॊळ् मुऱै पूट्टिऩाऩ्–(उनको) मनाकर रथ में जोता; अ पुरवि–उन अश्वों को; पोम् नॅऱि–गम्य मार्ग; काट्टिनऩ्–बतलाया; काट्टि–मार्ग दिखाकर; तऩ् कल्वि माट्चियाल्–अपनी सारथ्य विद्या के विशेष ज्ञान से; ऒरुवरुम् उणर्वु उऱामल्–किसी के जाने-समझे बिना; ओट्टिनऩ्–चलाया। ५७९

सुमंत्र रथ के पास आये। उसका साज-बाज ठीक किया। फिर उसमें अश्वों को किसी तरह मनवाकर जोता। उन्होंने उनको उनके जाने का मार्ग दिखाया। अपनी सारथ्य-कुशलता से रथ को इस भाँति चलाया कि किसी को रथ के जाने का भान नहीं मिले। ५७९

❀ तैयरन् कऱ्पुन्दन् ऱहवुन् दम्बियुम्, मैयरु करुणयु मुणर्वुम् वाय्मयुम्
शॅय्यतन् विल्लुमे शेम माहक्कॉण्, डैयनुम् वोयिना नल्लि नाप्पणे 580

ऐयनुम्–प्रभु भी; तैयल् तन् कऱ्पुम्–देवी का पातिव्रत्य; तम्पियुम्–अनुज; तन् तकवुम्–अपना श्रेष्ठ आर्जव; मै अऱ्र करुणैयुम्–निर्मल कृपा; उणर्वुम्–मेधा; वाय्मैयुम्–और सत्य; तन् चॅय्य विल्लुमे–और अपने उत्तम धनुष को; चेमम् आक कॉण्टु–पाथेय (रक्षक) मानकर; अल्लिन् नाप्पण्–अर्धरात्रि में; पोयिनान्–चलते गये। ५८०

उनके जाने के बाद श्रीराम अर्धरात्रि के अन्धकार में वहाँ से रवाना होकर वन की ओर पैदल जाने लगे। उनके साथ उनके सहायक और संबल के रूप में सीताजी का पातिव्रत्य, श्रीराम के भाई, श्रीराम का आर्जव, उनकी पवित्र करुणा, उनकी मेधा, सत्य, और उनके हाथ का श्रेष्ठ धनुष —ये ही थे। ५८०

❀ पॉय्विनैक् कुदवुम् वाऴ्क्कै यरक्करैप् पॉरुन्दि यन्नार्
शॅय्विनैक् कुदवु नट्पार् चॅल्बवर्त् तडुप्प दॉक्कुम्
मैविळक् कियदे यन्न मयङ्गिरु ळुरक्क वानम्
कैविळक् कॅडुत्त दॅन्न वुदित्तदु कडवुट् टिङ्गळ् 581

पॉय् विनैक्कु–वंचक कार्यों में; उतवुम् वाऴ्क्कै–सहायक जीवन वितानेवाले; अरक्करै पॉरुन्ति–राक्षसों से मिलकर; अन्नार् चॅय्विनैक्कु–उनके दुष्कृत्यों में; उतवुम् नट्पाल्–सहायता करानेवाली मित्रता के कारण; चॅल्पवर् तटुप्पतु ऑक्कुम्–(उनको मारने) चलनेवाले को रोकता सा; विळक्कियतु मैये अन्न–निखरा अंजन ही सम; मयङ्कु इरुळ्–भ्रामक अन्धकार; तुरक्क–दूर करने के लिए; वानम्–आकाश ने; कै विळक्कु ऍटुत्ततु–हाथ में दीपक लिया; ऍन्न–ऐसा; कटवुळ् तिङ्कळ्–चन्द्र देव; उतित्ततु–उदित हुए। ५८१

तब चन्द्रदेव उदित हुए। वे देवलोक के दीप के समान लगे, जो वंचक कर्म करनेवाले राक्षसों के दुष्कर्मों का सहायक होकर, उनके विरुद्ध जानेवालों को रोकनेवाले काजलसम अन्धकार को दूर करने के लिए जलाया गया था। ५८१

मरुमत्तुत् तन्नै यून्रु मऱक्कॉडुम् बावन् दीर्क्कुम्
उरुमॉत्त शिलैयि नोरै यॉरुप्पडुत् तुदवि निन्ऱ
करुमत्तिन् विळैवै यॅण्णिक् कळप्पॉडुङ् गाण वन्द
तरुमत्तिन् वदन मॅन्नप् पॉलिन्दद्दु तनिवॅण् डिङ्गळ् 582

तन्नै मरुमत्तु ऊन्ऱम्–(धर्म) अपने को मर्म पर आघात करनेवाले; मऱम् कॉटु पावम्–विरुद्ध और क्रूर पाप को; तीर्क्कुम्–मिटा सकनेवाले; उरुम् ऑत्त चिलैयिनारै–वज्रसम धनुर्धरों को; ऑरुप्पटुत्तु–सम्मत कराकर; उतवि निन्ऱ–अपनी सहायता जिसने की; करुमत्तिन् विळैवै ऍण्णि–उस विधि का फल सोचकर;

कळिप्पॉट्टुम्–हर्ष के साथ; काणवन्त–(श्रीराम, लक्ष्मण को) देखने आये हुए; तरुमत्तिन् वतत्तम् ऑन्न–धर्म के मुख के समान; तत्ति वॅण् तिङ्कळ्–अनुपम श्वेत चन्द्र; पॉलिन्ततु–शोभित रहे। ५८२

और भी वे उस धर्मदेवता के मुख के समान शोभे, जो अपने मर्म पर प्रहार करनेवाले विरोधी क्रूर पाप के नाशक, वज्रसम धनुर्धर और अपने सहायक वीरों को वन जाने से सम्मत करानेवाले सुकृत की बात सोचकर हर्ष के साथ उन वीरों के दर्शनार्थ आया हो। ५८२

कामबुयर् कानञ् जॅल्लुङ् गरियवन् वरुमै नोक्कित्
तेम्बिन कुविन्द पोलुञ् जॅङ्गळु नीरुञ् जेरॅप्
पाम्बिन तलैय वाहिप् परिन्दन कुविन्दु शोर्न्द
आम्बलु मॅन्ऱ पोदङ् गम्बुय मलर्व दुण्डो 583

काम्पु उयर्–(जिसमें) बाँस ऊँचे उगे हुए थे; कानम् चॅल्लुम्–उस वन में जानेवाले; करियवन् वरुमै–काले (राम) की (दयनीय दशा) कंगाली; नोक्कि–देखकर; चॅङ्कळु नीरुम्–लाल कुमुद-पुष्प भी; तेम्पित्त–दुखी हुए; कुविन्त पोलुम्–जैसे मुकुलित रहे; आम्पलुम्–कुवलय भी; चेरै पाम्पिन तलैय आकि–"चेरै" नामक (विषहीन) साँप के सिरों के समान संकुचित होकर; परिन्तत–(श्रीराम की) सहानुभूति में; चोर्न्त–झुके रहे; ऍन्ऱ पोतु–तब तो; अङ्कु–वहाँ; अम्पुयम्–अम्बुजों का; अलर्वतु उण्टो–खिलना हो सकता है क्या। ५८३

जब श्रीराम उस वन में जा रहे थे, जिसमें बाँस के वृक्ष बहुत ऊँचे उगे थे तब रात में खिलनेवाले कुमुद, कुवलय आदि पुष्प कुम्हलाकर मुकुलित थे। उनकी दयनीय दशा देखकर रक्तकुमुद शोक करते-से बन्द रहे। कुवलय भी चेरै नामक (विषहीन) साँप के सिर के समान पिचककर मानो उनसे सहानुभूति करके मुरझाये रहे। रात में खिलनेवाले पुष्पों की यह स्थिति रही तो अम्बुज कैसे मुख खोलेंगे ? । ५८३

❀ अञ्जनक् कुन्ऱ मन्न वळहनु मळहन् ऱन्नै
ऍञ्जलिल् पॉन्बोर्त् तन्न विळवलु मिन्दु वॅन्बान्
वॅञ्जिलैप् पुरुवत् ताडन् मॅल्लडिक् केऱ्प वॅण्णूऱ्
पञ्जिडैप् पडुत्ता लॅन्न वॅण्णिलाप् परप्पप् पोनार् 584

इन्तु ऍन्पान्–इन्दु नाम के उन (चन्द्र) ने; वॅम् चिलै–कमनीय धनु-सम; पुरुवत्ताळ् तन्–भौंहें वाली सीताजी के; मॅल् अटिक्कु एऱ्प–मृदु चरणों के अनुकूल; वॅळ् नूल पञ्चु–श्वेत-सूत्र-जनक रुई को; इटै पटुत्ताल् ऍन्न–भूमि पर बिछाया हो, जैसे; वॅळ् निला परप्प-श्वेत चाँदनी फैलाई; अञ्चतम् कुन्ऱम् अन्त अळकतुम्–अंजनपर्वत-सम सुन्दरराज; अळकन् तन्नै ऍञ्चल् इल्–उन सुन्दर से किसी विध जो कम नहीं थे; पॉन् पोर्त्त अन्न इळवनुम–स्वर्णरंग के लघुराज; पोनार्–गये। ५८४

चन्द्रिका खूब फैली। वह ऐसी लगी, मानो इन्दु-संज्ञित चन्द्र ने कमनीय धनुसम ललाट वाली सीता के मृदुचरण-पात के योग्य श्वेत-सूत्रजनक रुई फैला रखी हो। सीताजी के साथ काजलगिरि जैसे सुन्दर-मूर्ति श्रीराम और उनके उतने ही सुन्दर, पर स्वर्णवर्ण लक्ष्मण भी चलते गये। ५८४

शिरुहिडै वरुन्दक् कॊङ्गै येन्दिय शॆल्व मॆन्नुम्
शॆरियिरुङ् गून्द नङ्गै शीरडि नीर्क्कॊप् पूळिन्
नरियन तॊडर्न्दु शॆन्रु नडन्दॆनि नवैयि नीङ्गुम्
उरुवलि यन्बि नूङ्गॊन् रुण्डॆन वुणर्व दुण्डो 585

चिरुकु इटै वरुन्त–छोटी कमर दुखी हो, ऐसा; कॊङ्कै एन्तिय–स्तन वहन करनेवाली; चॆरि इरु कून्तल्–घने, काले केश वाली; चॆल्वम् ॲन्नुम् नङ्कै–लक्ष्मीदेवी; नीर् कॊप्पूळिन्–जल के बुदबुदों से भी अधिक; नरियत चिरु अटि–मृदुल छोटे चरण; तॊटर्न्तु चॆन्रु–श्रीराम के साथ लगे हुए जाकर; नटन्तु ॲनिन्–चले तो; नवैयिन् नीङ्कुम्–दोषहीन; अन्पिन् ऊङ्कु–प्रेम से बढ़कर; उरु वलि ऒन्रु उण्टु–अधिक बलयुक्त कुछ है; ॲन–ऐसा; उणर्वतु उण्टो–सोचा जाय, ऐसा कुछ है क्या। ५८५

सीताजी स्वयं लक्ष्मीदेवी थीं। वे घने-घुँघराले केश वाली अपनी पतली कमर और उसको सतानेवाले पीन स्तनों का वहन करती हुई श्रीराम के साथ बिना किसी शिकायत के चलीं। उनके, जल के बुदबुदों से भी मृदु चरण इतनी दूर चल सके तो उसका कारण प्रेम ही है! प्रेम से भी बलवान या बलदायक कुछ और है —यह समझने के लिए कोई स्थान है क्या? । ५८५

❀ परुदिवा नवनुङ् गीळ्पाऱ् परुवरै पऱ्ऱा मुन्नम्
तिरुविना यहनुन् दॆन्बाल् योशनै यिरण्डु शॆन्ऱान्
अरुविपाय् कण्णुम् बुण्णा यळिहिन्ऱ मनमुन् दानुम्
तुरिदमान् ऱेरिऱ् पोनात् शॆय्ददु शॊल्ल लुऱ्ऱाम् 586

परुति वानवन्–सूर्यदेव; कीऴ् पाल्–पूर्व दिशा के; परुवरै–बड़े (उदय-) अचल को; पऱ्ऱा मुन्नम्–पहुँच जाएँ, इसके पहले; तिरुविन् नायकनुम्–श्रीलक्ष्मीपति; तॆन् पाल्–दक्षिण दिशा में; इरण्टु योचनै चॆन्ऱान्–दो योजन दूर चले; अरुवि पाय् कण्णुम्–धारा बहानेवाली आँखें; पुण्णाय्–व्रण बनकर; अऴिकिन्ऱ मनमुम्–मिटने वाला मन; तानुम्–और स्वयं; तुरितम् मान् तेरिल् पोनान्–(जो) त्वरितगति अश्वों के (जुते) रथ पर गये; चॆय्ततु–उन्होंने जो किया, वह; चॊल्लल् उऱ्ऱाम्–कहेंगे। ५८६

सूर्यदेव के बड़े उदयाचल पर पहुँचने के पहले ही श्रीलक्ष्मी-पति दक्षिण की ओर दो योजन चले गये। धारा-बनी आँखें और व्रण-बना

हृदय और स्वयं वे —ऐसी स्थिति में और जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर गये उनका क्या हुआ —यह बतलाएँगे। ५८६

❀ कडिहयो रिरण्डु मून्ऱिऱ् कडिमदि लयोत्ति कण्डान्
अडियिणै तॉऴुदा ऩादि मुनिवऩै यवनु मुऱ्ऱ
पडियॅलाङ् गेट्टा नॅञ्जिऱ् परुवर लुऴन्दान् मुन्नम्
मुडिवॅला मुणर्न्दा नन्दो मुडिन्दनऩ् मन्ऩन नॅन्ऱान् 587

कटिकै ओर् इरण्टु मून्ऱिल्—छः घड़ी के अन्दर; कटि मतिल् अयोत्ति कण्टान्—सुरक्षित (या रक्षक) प्राचीरों वाली अयोध्या पहुँच गये; आति मुनिवऩै—प्रधान मुनिवर के; इणै अटि तॉऴुतान्—चरणद्वय की वन्दना की; अवनुम्—उन्होंने भी; उऱ्ऱपटि ॲल्लाम्—घटित सब; केट्टान्—सुना; नॅञ्चिल् परुवरल् उऴन्तान्—मन में क्लेश पाया; मुटिवु ॲल्लाम्—भावी सब; मुन्नम् उणर्न्तान्—पहले ही मन में अनुमान करके; अन्तो—हाय; मन्ऩन् मुटिन्तनन्—राजा मर ही गये; ॲन्ऱान्—कहा। ५८७

वे (दो के तीन) छः (या दो और तीन, पाँच) घड़ियों में सुरक्षा के प्राचीर वाली अयोध्या में पहुँच गये। पहले उन्होंने प्रधान पुरुष, मुनिवर वसिष्ठ से भेंट की और उनको नमस्कार किया। वसिष्ठजी ने भी सारा वृत्तान्त सुना तो दुखसन्तप्त होकर भावी का अनुमान करके समझ लिया कि अब दशरथजी नहीं बचेंगे। 'वे मर ही गये, समझ लो'। ५८७

❀ निन्ऱुयर् पऴियै यञ्जि नेर्न्दिलन् ऱडुक्क वळ्ळल्
ऑन्ऱुना नुरैत्त नोक्कान् ऱरुमत्तुक् कुऱ्दि पार्प्पान्
वॅन्ऱव रुळरो मेलै विदियिऩै यॅन्ऱु विम्मिप्
पॊन्ऱिणि मन्नन् कोयिल् शुमन्दिर नोडुम् बुक्कान् 588

वळ्ळल्—श्रीराम; तरुमत्तुक्कु उऱुति पार्प्पान्—धर्म धारणार्थ; निन्ऱु उयर् पऴियै अञ्चि—स्थिर होकर बढ़ सकनेवाले अपयश से डरकर; तटुक्क—(मेरे) रोकने पर भी; नेर्न्तिलन्—(रुकने को) सहमत नहीं हुए; नान् उरैत्तल् ऑन्ऱुम् नोक्कान्—मेरा कहा कुछ नहीं माना; मेलै वितियिऩै—पूर्वकृत कर्मफल को; वॅन्ऱवर् उळरो—जीतनेवाले हैं क्या; ॲन्ऱु—सोचकर; विम्मि—दुख से भरकर; चुमन्तिरतोटुम्—सुमन्त्र के साथ; मन्ऩन्—चक्रवर्ती के; पॊन् तिणि कोयिल्—स्वर्णयुक्त महल में; पुक्कान्—पहुँचे। ५८८

"मैने प्रभु श्रीराम से कितना कहा! धर्म को सुस्थिति देनेवाले स्थायी रूप से वर्धित हो सकनेवाले अपयश से डरकर वे, मेरे रोकने पर भी रुकने को सहमत नहीं हुए। मेरा कहा एक न माना। हाँ— पूर्वकृत कर्म के फल को रोक सकनेवाला कौन है?" —यह सोचकर वसिष्ठजी अपार दुख से भरकर, सुमंत्र को साथ लिये हुए चक्रवर्ती के स्वर्णमय महल में पहुँचे। ५८८

❀ तेर्हॉण्डु वळ्ळल् वन्दा नॅन्रुदम् जिन्दै युन्द
ऊर्हॉण्ड तिङ्ग ळॆन्न मन्नत्तै युळैयर् शुर्रिक्
कार्हॉण्ड मेनि यानैक् कण्डिलर् कण्णिल् वर्रा
नीर्हॉण्ड नॅडुन्देर्प् पाह निलैहण्डै निलैयिर् रीर्न्दार् 589

तेर् कॉण्टु–रथ (का आना) लेकर; उळैयर्–मन्त्री लोग; वळ्ळल् वन्तान्–प्रभु आ गये; ऍन्रु–सोचकर; तम् चिन्तै उन्त–अपने मन के प्रेरित करने से; तिङ्कळ् ऊर् कॉण्टतु ऍन्न–चन्द्र को परिवेष ने घेरा, जैसे; मन्नत्तै चुर्रि–राजा को घेरकर; कार् कॉण्ट मेनियानै–श्यामशरीर (श्रीराम को); कण्टिलर्–न देखकर; कण्णिल्–आँखों में; वर्रा नीर् कॉण्ट–न सूखनेवाले जल के साथ; नॅटु तेर् पाकन् निलै कण्टु–बड़े रथ के सारथी की दशा देखकर; निलैयिल् तीर्न्तार्–(उत्साह की) स्थिति से बदल गये। ५८६

मंत्री आदि राजा के निकटस्थ लोगों ने रथ को देखा तो अनुमान कर लिया कि प्रभु श्रीराम भी आये होंगे। इसलिए अपने मन के प्रेरित करने से वे दशरथजी के पास आये और चन्द्र को परिवेष जैसे उनको घेरकर खड़े हो गये। पर वहाँ श्यामशरीर श्रीराम नहीं रहे। उनके स्थान में वे बड़े रथ के सारथी सुमंत्रजी को, जिनकी आँखों से अश्रु की अटूट धारा, जो सूखती नहीं थी, बह रही थी; देखकर उत्साह और हर्ष छोड़कर दुखी हो रहे। ५८९

❀ इरदम्वन् दुर्र दॅन्राङ् गियावरु मियम्ब लोडुम्
वरदन्वन् दुर्रा नॅन्न मन्नतु मयक्कन् दीर्न्दान्
पुरैदबु कमल नाट्टम् बॉरुक्कॅन विळित्तु नोक्कि
विरदमा दवनैक् कण्डान् वीरन्वन् दनन्नो वॅन्रान् 590

इरतम् वन्तु उर्रतु ऍन्रु–रथ आ गया, यह; आङ्कु–वहाँ; यावरुम् इयम्पलोटुम्–सब के कहने पर; वरतन् वन्तु उर्रान्–वरद-प्रभु पधारे; ऍन्न–सोचकर; मन्नतुम्–राजा भी; मयक्कम् तीर्न्तान्–मूर्च्छा से छूटे; पुरै तपु–निर्मल; कमलम् नाट्टम्–कमल-जैसी आँखों को; पॉरुक्कॅन विळित्तु–झट से खोलकर; नोक्कि–दृष्टि डालकर; विरतम् मातवनै कण्टान्–व्रती और महान तपस्वी को देखा; वीरन्–वीरराघव; वन्तननो ऍन्रान्–आया क्या, पूछा। ५६०

वहाँ सबने कहा कि रथ आ गया। यह सुनकर 'वरदप्रभु श्रीराम आ गये' —इस विचार से चक्रवर्ती मूर्च्छा से जागे। अपने निर्मल कमल-सम आँखें खोलकर उन्होंने दृष्टि दौड़ाई। वहाँ महान तपोव्रती वसिष्ठजी ही उनकी दृष्टि में पड़े। राजा ने महर्षि से पूछा कि वीरराघव आ गया क्या ? । ५९०

इल्लयॅन् ररैक्क लार्रा देङ्गिमा मुनिव निन्रान्
वल्लवन् मुहमे नम्बि वन्दिल नॅन्र मार्रम्

शौल्ललु मरशन् शोरन्दान् रुयरुरु मुनिव नानिव्
वल्लल्हाण् गिल्ले नॆन्ना वाङ्गुनिन् ऱहलप् पोनान् 591

इल्लै अॆन्ऱु–नहीं, यह; उरैक्कल् आऱ्ऱातु–कहने का साहस न होने के कारण; मा मुनिवन्–उत्तम मुनिवर; एङ्कि निन्ऱान्–व्याकुल खड़े रहे; वल्लवन् मुकमे–(दुख से अप्रभावित रहने में) समर्थ उनके मुख ने ही; नम्पि वन्तिलन्–नायक नहीं आया; अॆन्ऱ माऱ्ऱम् चॊल्ललुम्–यह उत्तर (अपने भावों से) व्यक्त किया तो; अरचन् चोर्न्तान्–राजा शिथिल हो गये; तुयर् उऱु मुनिवन्–दुखार्त्त मुनि; नान् इ अल्लल् काण्किल्लेन्–यह दुख देख नहीं सकूँगा; अॆन्ना–कहकर; आङ्कु निन्ऱु–वहाँ से; अकल पोना़ऩ्–हट गये। ५९१

महामुनि "नहीं" कहने का साहस नहीं कर सके। दुख-सहन-समर्थ होने पर भी उनका मुख ही बतला गया कि श्रीराम नहीं आये। राजा फिर से मूर्च्छित हो गये। राजा की स्थिति देखकर मुनिवर का मन अत्यधिक दुख से भर गया। यह संकट मैं देख नहीं सकूँगा —यह कहकर वे वहाँ से हट गये। ५९१

❀ नायहन् पिन्नु नऱ्ऱेर्प् पाहनै नोक्कि नम्बि
शेयनो वणिय नोवॆन् ऱुरैत्तलुन् देर्व लानुम्
वेयुयर् कानिऱ् ऱानुन् दम्बियुम् मिदिलैप् पॊन्नुम्
पोयिना नॆन्ऱा नॆन्ऱ पोळ्दत्ते आवि पोनान् 592

नायकन्–चक्रवर्ती के; पिन्नुम्–और; नल् तेर् पाकनै–श्रेष्ठ सारथी को; नोक्कि–देखकर; नम्पि–नायक; चेयनो–दूर है; अणियनो–या पास है; अॆन्ऱु–ऐसा; उरैत्तलुम्–पूछने पर; तेर् वल्लानुम्–सारथ्यसमर्थ भी; तानुम् तम्पियुम्–(वे) आप, छोटे भाई और; मितिलै पॊन्नुम्–मिथिला का स्वर्ण; वेय् उयर् कानिल्–उन्नत वंश (बाँस) के वन में; पोयिनान्–गये; अॆन्ऱान्–बोले; अॆन्ऱ पोऴ्तत्ते–वैसा कहते ही; आवि पोनान्–प्राणविमुक्त हो गये। ५९२

नायक दशरथ ने फिर होश में आकर चतुर सारथी सुमंत्र से पूछा कि श्रेष्ठ नायक श्रीराम दूर गये हैं (दूरस्थ है) या पास ही (निकटस्थ) है? सुमंत्र ने उत्तर दिया कि श्रीराम उनके भाई लक्ष्मण और मिथिला की निधि मैथिली तीनों ऊँचे बाँस के पेड़ों से भरे जंगल में चले गये। तभी राजा के प्राणपखेरू उड़ गये। ५९२

इन्दिरन् मुदल्व रान कडवुळर् यारु मीण्डिच्
चन्दिर ननैय दाङ्गोर् मानत्तिऱ् ऱलैयिऱ् ऱाङ्गि
वन्दन नॆन्दै तन्दै यॆन्मनङ् गळित्तु वाळ्त्ति
उन्दिया नुलहि नुम्बर् मीळ्हिला वुलहत् तुयत्तार् 593

इन्तिरन् मुतल्वर् आन–इन्द्रादि; कटवुळर् यावरुम् ईण्टि–सभी देवता एकत्र होकर; चन्तिरन् अनैयतु–चन्द्र के समान; ओर् मानत्तिल्–एक देवयान में (रख);

तलैयिल् ताङ्कि–अपने सिर पर वहन करके; अँन्तै तन्तै–हमारे पिता के पिता; वन्तनन् अँन्न–पधारे, यह कहते हुए; मत्तम् कळित्तु–हर्षितमन होकर; वाळ्त्ति–संस्तुति करके; उन्तियान् उलकत्तु उम्पर्–नाभी से उत्पन्न ब्रह्मा के लोक के परे; मीळ्किला उलकत्तु–(जहाँ से) लौट आना नहीं होता, उस लोक में; उय्त्तनर्–पहुँचाया। ५९३

देवेन्द्र आदि सभी देवता एकत्र हो आये। चन्द्रसमान एक देवयान पर उनके शरीर को अपने सिर पर ढोकर रखा। "हमारे धाता के पिता आये" यह हर्ष-घोष करते हुए उनको ले जाकर ब्रह्मा के लोक को पार कर उस मोक्षलोक में पहुँचाया, जहाँ से पुनरावर्तन नहीं होता। ५९३

❀ उयिर्प्पिलन् रुडिप्पु मिल्ल नॆन्रुणर्न् दुरुवन् दीण्डि
अयिर्त्तन णोक्कि मन्नर् कारुयि रिन्मै तेरि
मयिर्कुल मनैय नङ्गै कोशलै मरुहि वीळ्न्दाळ्
वॆयिर्चुडुङ् गोडै तन्नि लॆन्बिला वुयिरिन् वेवाळ् 594

कुलम् मयिल् अन्नैय–श्रेष्ठ मयूरतुल्य छटा वाली; नङ्कै कोचलै–देवी कौसल्या; अयिर्त्तनळ्–सन्देह करती हुई; उरुवम् तीण्टि नोक्कि–शरीर स्पर्श करके देखकर; उयिर्प्पु इलन्–श्वासहीन है; तुटिप्पुम् इल्लन्–स्पन्दनहीन भी है; अँन्रु उणर्न्तु–यह पहचानकर; मन्नरकु आर् उयिर् इन्मै–राजा की प्राणहीनता; तेरि–निश्चित रूप से जानकर; मरुकि–उद्विग्न होकर; वीळ्न्ताळ्–गिरीं; वॆयिल् चुटुम्–धूपतप्त; कोटै तन्निल्–ग्रीष्म में; अँन्पु इला उयिरिन्–अस्थिहीन जीव (कीड़े) के समान; वेवाळ्–तड़पने लगीं। ५९४

श्रेष्ठ कुलीन, और मयूराभा कौसल्या ने सन्देह करके राजा का शरीर स्पर्श कर देखा। 'श्वास नहीं छोड़ते; कोई स्पन्दन नहीं है; इसलिए मर ही गये है', यह निश्चय जानकर शोकाकुल होकर भूमि पर गिर पड़ी। उनकी स्थिति उस अस्थिरहित कीड़े की-सी हो गई, जो ग्रीष्म की धूप में छटपटाता है। ५९४

इरुन्द वन्दणनो डॆल्ला मीन्रवन् रन्नै यीन्नप्
पॆरुन्दवञ् जॅय्द नङ्गै कणवनैप् पिरिन्दु दॆय्व
मरुन्दिळन् दवरिन् विम्मि मणिपिरि यरविन् माळ्हि
अरुन्दुणै यिळन्द वन्रिर् पॆडैयॆन्न वरर्र लुर्राळ् 595

इरुन्त अन्तणनोटु–(अपनी नाभि में) रहनेवाले ब्रह्मज्ञ (ब्रह्मा) के साथ; ॲल्लाम्–सृष्टि सब; ईन्रवन् तन्नै–उत्पन्न करनेवाले (परब्रह्म) को; ईन्न–जन्म दिलाने योग्य; पॆरु तवम् चॆय्त–जिन्होंने बड़ी तपस्या की थी, वे; नङ्कै–देवी (कौसल्या); कणवनै पिरिन्तु–पति से अलग होकर; तॆय्वम् मरुन्तु–दैवी अमृत को; इळन्तवरिन्–खोनेवाले के समान; विम्मि–दुख से भरकर; मणि पिरि अरविन्–रत्न खोकर विषधर जैसे; माळ्कि–कुम्हलाकर; अरु तुणै–प्यारा साथी;

कावादु नीयॉऴियिऱ् पऴिपॅरिदो वन्ऱेऱ्
करुङ्गडलिऱ् कण्वळर्न्दोय् कैम्मारु मुण्डो 101

तेवा–देव; करुम् कटलिल्–(आपके रंग के कारण) काले (वने) या विशाल क्षीरसागर में; कण् वळर्न्तोय्–निद्रा करनेवाले; मेवातवर् इल्लै–आपके शत्रु नहीं हैं; मेवित्तरुम् इल्लै–मित्र भी नहीं हैं; वॆळियोटु इरुळ् इल्लै–प्रकाश के साथ अन्धकार भी नहीं है; मेल् कीऴुम् इल्लै–ऊपर, नीचे नहीं है; मूवामैयुम् इल्लै–उमर में कम होना भी नहीं; मूत्तमैयुम् इल्लै–वढ़ना भी नहीं; मुतल् इटै ओटु–आदि, मध्य के साथ; ईऱु इल्लै–अवसान भी नहीं; मुन् ऒट् पिन् इल्लै–पूर्व और पश्चात नहीं हैं; निन् तोन्ऱु निलै–आपके स्वरूप के लक्षण; इव्वो–ये हैं क्या; ऎन्ऱाल्–तो; नी चिलै एन्ति–आप धनुष लेकर; चेवटिकळ् नोव–लाल (मनोरम) पैरों को दुख देते हुए; वन्तु कावातु ऒऴियिल्–आकर रक्षा नहीं करेंगे तो; पऴि पॆरितो–वड़ा अपयश होगा क्या; अन्ऱेल्–या; कै माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार भी हो सकता है क्या। १०१

आप काल-देश-वस्तु-परिच्छेद रहित हैं। इसलिए आपके न शत्रु है, न मित्र है। देवाधिदेव ! क्षीरसागरशायी ! आपके लिए न प्रकाश है, न अँधेरा। ऊपर कुछ नहीं है, न आपके नीचे कुछ है (आप सर्वत्र व्याप्त हैं)। आपकी न जवानी होती है, न वार्द्धक्य होता है (आप कालातीत है)। आपका न आदि है, न मध्य, न अन्त। आपके पूर्व या वाद कुछ नहीं होता। आप सभी काल में वर्तमान है। आपके लक्षण ऐसे हैं न ? फिर क्या आश्चर्य है कि आप धनुप लेकर अपने श्रीचरणों को दुखाते हुए हमारे रक्षणार्थ इधर आये हैं। ऐसा रक्षण नहीं करेंगे तो आपका अपयश हो जायगा क्या ? या हम आपका कोई प्रत्युपकार करनेवाले हैं क्या ? । १०१

नाऴि नवैती रुलहमॆला माह
नळित्ततु नीतन्द नान्मुहत्ताऱ् तामे
ऊऴि पलपलवु निन्ऱळन्दा लॆन्ऱु
मुलवाप् पॆरुङ्गुणत्तॆ मुत्तमने मेनाळ्
ताऴि तरैयाहत् तण्डयिऱ् नीराहत्
तडवरैये मत्ताहत् तामरैक्कै नोव
आऴि कडैन्दमुद मॆङ्गळुक्के यीन्दा
यवुणर्हडा मुत्तक्कडिमै यल्लामै युण्डो 102

नी–आपने; नळित्ततु तन्त–अपनी नाभी-कमल से जिनको सृष्ट किया; नान् मुकत्ताऱ् तामे–वे चतुर्मुख; नवै तीर् उलकम् ऎलाम्–निर्दोष प्रपंच सव; नाऴि आक–माप वनाकर; ऊऴि पल पलवुम्–अनेक-अनेक युग; निन्ऱु अळन्ताल्–रहकर मापें तो भी; ऎन्ऱुम् उलवा पॆरुम् कुणत्तु–कभी पूरा न होनेवाले (अमाप) उत्तम गुणों के; ऎम् उत्तमते–हमारे पुरुषश्रेष्ठ; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; तरै ताऴि

आक–भूमि को मथनी (पात्र) बनाकर; नीर् तण् तयिर् आक–सागरजल को दही बनाकर; मतुतु तटवरैये आक–मथानी, बड़े मन्दरपर्वत को बनाकर; तामरै कै नोव–कमल-सम हाथों को दुखाते हुए; आऴि कटैन्तु–समुद्र को मथकर; अमुतम्–अमृत को; अॅङ्कळुक्के ईन्ताय्–हमें ही दे दिया; अवुणर्कळ् ताम्–दानव तो; उनक्कु अटिमै अल्लामै उण्टो–आपके दास नहीं हैं, ऐसा क्या। १०२

आपके, अपनी नाभि से सृजित चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं, निर्दोष लोकों को माप बनाकर अनेक युगों तक आपके गुणों का माप लगाने लगें, तो भी आपके गुणों का माप नहीं मिल सकता। ऐसे अमाप कल्याण-गुणपूर्ण ! पुरुषोत्तम ! प्राचीन काल में सारी पृथ्वी को मथनी बनाकर क्षीरसागरपय को दही बनाकर और मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर अपने कमल-सम हाथों को दुखाते हुए मथन किया; पर सुधा निकला तो उसे हम देवों को दे दिया ! तब क्या दानव आपके दास नहीं हैं —यह बात है क्या ?। १०२

ऑन्ऱाहि मूलत् तुरुवम् बलवाहि
युणर्वा युयिराहिप् पिऱिदाहि यूऴि
शॅन्ऱा शरुङ्गालैत् तन्निलैय दाहित्
तीर्न्दुलहन् दानाहिच् चॅव्वेता निन्ऱ
नन्ऱान ञानत् तनिक्कॉऴुन्दे यॅङ्ग
णवैदीर्क्कु नायहन्ने नल्विन्नैये नोक्कि
निन्ऱारैक् कात्ति ययलारैक् काय्दि
निलैयिल्लात् तीविनैयु नीतन्द दन्ऱे 103

मूलत्तु ऑन्ऱु आकि–मूल में एक रहकर; उरुवम् पल आकि–अनेक रूप बनकर; उणर्वु आय्–ज्ञानगोचर बनकर; उयिर् आकि–प्राण बनकर; पिऱितु आकि–इस तरह भिन्न-भिन्न होकर; ऊऴि चॅन्ऱु आचु उरुम् कालै–युगान्त में प्रपंच-नाश के समय; तन् निलैयतु आकि तीर्न्तु–अपनी पूर्व-स्थिति में आ (अपनी लीला) समाप्त करके; उलकम् तान् आकि–तब प्रपंच स्वयं आप होकर; चॅव्वे निन्ऱ–शोभित रहनेवाले; नन्ऱाय ञान तनि कॉऴुन्ते–श्रेष्ठ ज्ञान के पल्लव (सार) समान; अॅङ्कळ् नवै तीर्क्कुम्–हमारे अपराधों को दूर करनेवाले; नायकन्ने–नाथ; नल् विनैये नोक्कि निन्ऱारै–अच्छे कर्म ही करते रहनेवाले साधुओं को; कात्ति–आप रक्षा करते हैं; अल्लारै–इतरों को; काय्ति–दण्ड देते हैं; निलै इल्ला तीविनैयुम्–अस्थायी बुरे कर्म भी; नी तन्ततु अन्ऱे–आपके ही बने हुए है न। १०३

मूल में एक रहकर फिर अनेक रूप में बदले। भिन्न-भिन्न सृष्टि में ज्ञान से अनुभव में आनेवाले तत्व रहे। उसके प्राण रहे। इस तरह अनेक जीवों में बँटे से रहने के बाद युगांत में फिर आपने उन सबको अपने में समेट लिया। तब प्रपंच सब आप ही हो गया। उस स्थिति में शोभायमान जो रहते है, वे ज्ञानसार ! हमारे अपराधों को मिटानेवाले नायक ! अच्छे कर्म करनेवाले साधुओं को रक्षित और इतरों को दण्डित

करनेवाले हैं आप। पर क्या अस्थायी पाप भी आपके ही कारण स्थिति नहीं पाते ? । १०३

वल्लै वरम्बिल्लाद मायविऩै तऩ्ऩान्
मयङ्गिऩर् हळोडे मदिमयङ्गि मेऩाळ्
अल्लै यिऱैयवऩी यादियॆऩप् पेदुऱ्
ऱलमरु वेमुऩ्ऩै यऱ्प्पयऩुण् डाह
ऍल्लै वलयङ्गळ् नुम्मुळैयॆऩ् ऱऩ्ना
ऍरियोऩैत् तीण्डि यॆऴुव रॆऩनिऩ्ऱ
तॊल्लै मुदऩ्मुऩिवर् शूळुऱ्ऱ पोदे
तॊहैनिऩ्ऱ वैयन् दुडैत्तिलैयो वॆन्दाय् 104

ॲन्ताय्–हमारे पिता; वल्लै–वलवती; वरम्पु इल्लात–असीम; माय विऩै तऩ्ऩाल्–माया के कार्य से; मयङ्किऩर्कळ् ओटु–भ्रमित रहे (देवों) के साथ; मति मयङ्कि–मोहमग्न होकर; मेल् नाळ्–प्राचीन समय में; इऱैवन् नी अल्लै–आप आदि भगवान नहीं हैं; आति ॲन्ऩ–आदिदेव हैं, ऐसा; पेतुऱ्ऱु–संशय में पड़कर; अलमरुवेम्–संकट में रहे हमारे; मुऩ्ऩै अऱ पयन् उण्टाक–पूर्वकृत सुकर्म का फल सहायता करने आया; अन्नाळ्–उस दिन; ऍल्लै वलयङ्कळ्–सीमा पर स्थित सारे कुवलय; नुम् उळै ॲन्ऱु–आप ही पर स्थित हैं, ऐसा; ऍऴुवर् ॲन्ऩ निऩ्ऱ तॊल्लैमुतल् मुऩिवर्–"सप्तक" के रूप में प्रख्यात सप्तर्षियों ने; ऍरियोऩै तीण्टि–अग्नि को स्पर्श करके; चूळ् उऱ्ऱ पोते–शपथ कही; तॊकै निऩ्ऱ ऐयम्–तब घनीभूत रहा संशय; तुटैत्तिलैयो–आपने मिटाया नहीं क्या। १०४

धाता! पहले कुछ देवों ने बलवती और असीम माया के कार्य के वश में होकर आपके परत्व के सम्बन्ध में संशय किया। यह उनका भ्रम था। हम भी उनके साथ भ्रमित होकर आप परब्रह्म आदिदेव हैं, नहीं हैं, ऐसे संशय में पड़कर गड़बड़ा रहे थे। पर हमारा सुकृत था, जिसके फलस्वरूप (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगीरस आदि) सप्तर्षियों ने अग्नि में हाथ रखकर शपथ खायी कि सारे कुवलय आपके ही शरीर पर धृत है। तब परब्रह्म कौन है, इस पर उठा घनीभूत सन्देह मिट गया। आप ही न ऐसी व्यवस्था करके हमारा सन्देह मिटाया! (वाल्मीकी में ये बातें पायी नहीं जातीं।) । १०४

इऩ्ऩन पलनिऩैन् देत्तिऩ तियम्बात्
तुऩ्नुद लिडैयुळ दॆऩनि तुणिवान्
तन्ऩिहर् मुनिवऩैत् तरविडै यॆऩ्नाप्
पॊऩ्ऩॊळिर् नॆडुमुडिप् पुरन्दरऩ् पोनान् 105

पॊन् ऑळिर् नॆट्टु मुटि पुरन्तरन्–स्वर्ण की चमकदार दीर्घकिरीटी पुरन्दर ने; इन्ऩऩ पल–ऐसी अनेक बातें; निऩैन्तु–सोचकर; इयम्पा एत्तिऩऩ्–और कहकर

स्तुति की; इटै तुन्नुतल् उळतु—बीच में होनेवाली एक घटना है; अॅन—ऐसा; नत्ति तुणिवान्—खूब निश्चय करके; तन् निकर् मुनिवन्नै—स्वोपम महर्षि को; विटै तर—बिदा दें; अॅन्ना—कहकर (ले); पोनान्—सिधारे। १०५

स्वर्ण के कारण जाज्वल्यमान दीर्घ किरीटधारी पुरन्दर ने ऐसी बहुत सी बातों का स्मरण करके उनकी स्तुति की। उन्होंने सोच लिया कि बीच में घटनेवाली एक विशेष घटना है। इसलिए उन्होंने शरभंग मुनि को, जो अपनी उपमा स्वयं आप ही थे, नमस्कार करके विदा ली और वे वहाँ से चले गये। १०५

पोनव नहनिलै पुलमयि नुणर्वान्, वानवर् तलैवनै वरवॅदिर् कॉण्डान्
आनव नडितॉळ वरुळ्वर मुनिवन्, तानुडै यिडवहै तळुविन नुळैवान् 106

पोनवन् अक निलै—वैसे निर्गत देवेन्द्र का मनोभाव; पुलमैयिन्—अपनी ज्ञान-दृष्टि से; उणर्वान्—समझकर ऋषि ने; वानवर् तलैवनै—देवदेव श्रीराम को; वरवु ऍतिर् कॉण्टान्—अपने सामने आते पाया; आनवन्—(आगत) श्रीराम ने; अटि तॉळ—नमस्कार किया; मुनिवन् अरुळ् वर—मुनि ने कृपापूर्ण होकर; तळुविनन्—आलिंगन कर लिया; तानुटै इट वकै—अपने वासस्थान (कुटीर) को; नुळैवान्—प्रवेश करके। १०६

महर्षि ने, वहाँ से जो गये, उन पुरन्दर का मनोभाव अपनी ज्ञानदृष्टि से जान लिया। तब देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने पधारे। उन्होंने आकर महर्षि के चरणों में नमन किया। महर्षि उन्हें गले लगाकर अपने आश्रम में लिवा ले जाने लगे। १०६

एळैयु मिळवलुम् वरुहॅन विनिदा, वाळिय ववरॉडु वळ्ळलु महिळा
ऊळियिन् मुदन्मुनि युरैयुळै यणुह, आळियि लरितुयि लवनॅन महिळ्वान् 107

वळ्ळलुम्—श्रीराम ने; एळैयुम् इळवलुम् इनिता वरुक अॅन—देवी और छोटे भाई सुख से आवें, कहा, तब; अवरॉटु—उनके साथ; मकिळा—खुश होकर; ऊळियिन् मुतन् मुनि—युग के पूर्व से भी विद्यमान महर्षि के; उरैयुळै—कुटीर में; अणुक—श्रीराम आये तब; आळियिल् अरि तुयिल्—क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन रहनेवाले; अवन् अॅन—परब्रह्म, विष्णु भगवान है, समझकर; मकिळ्वान्—हर्षरत हुए। १०७

तब श्रीराम ने अपनी देवी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण को अपने साथ आने की आज्ञा दी। युगारम्भ के पहले से ही रहनेवाले मुनिवर उन सबको लेकर अपने कुटीर में आये। वे श्रीराम को क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान जानकर अत्यन्त हर्षित हुए। १०७

अव्वयि नळहनु वैहिन नरिजन्
शॅव्विय वरिवुरै शॅविवयि नुहरा
नव्वियिन् विळियव ळॉडुननि यिरुळैक्
कव्विय निशियॊरु कडैयुरु मळविल् 108

अ वयिन्–उस आश्रम में; अळ्कतुम्–सुन्दरराज; नव्वियिन्न विळि अवळोटु–मृगनयनी सीताजी के साथ; वैकित्तन्–ठहरे; अऱिजन्–ज्ञानी ऋषि के; चॅव्विय अऱिवु उरै–श्रेष्ठ उपदेशों को; चॅवि वयिन्न नुकरा–कानों से सुनकर; इरुळै नत्ति कव्विय–अन्धकार-ग्रस्त; निचि–निशा; ओरु कटै उऱुम् अळविल्–अन्त होने को आई, तब। १०८

आश्रम में सुन्दरराज श्रीराम, मृगनयना सीतादेवी के साथ ठहरे। (लक्ष्मण शायद कुटीर के वाहर ही रह गये थे।) महान ज्ञानी शरभंग ने अनेक श्रेष्ठ उपदेश दिये। उपदेशों को ध्यान से श्रीराम ने सुना। यों रात बीती और अन्धकारग्रस्त रात एक तरह से अपने अन्तिम समय में आ गयी। तब—। १०८

विलहिडु	निळलित्तन्	वॅयिल्विरि	ययिल्वाळ्
इलहिडु	शुडरव	न्निशैयन	तिशैदोय्
अलहिड	वरिदॅनु	मविर्हर	निरैयाल्
उलहिडु	निरैयिरु	ळुरैयिन्नै	युरिवान् 109

विलकिट्टु निळलित्तन्–फैलनेवाले प्रकाश के स्वामी; इलकिट्टु चुटरवन्न–व्यक्त गर्मी वाले; इचै अन्न–अपनी कीर्ति के समान; तिचै तोय्–चारों दिशाओं में व्याप्त; अलकु इट अरितु ॲनुम्–अगणित; वॅयिल् विरि–दीप्तियुत; अयिल् वाळ्–तीक्ष्ण तलवार-सम; अविर् कर निरैयाल्–शोभायमान किरण-हस्तों से; उलकु इट्टु–संसार पर आच्छादित; निरै इरुळ् उरैयिन्नै–घने अन्धकार रूपी चादर को; उरिवान्–उधेड़ लेने लगे। १०९

व्यापनेवाले प्रकाश के और जाज्वल्यमान तेज के स्वामी सूर्य ने अपनी ही कीर्ति के समान चारों दिशाओं में व्याप्त तलवार-सम धूप की किरण-करों से भूमि पर आच्छादित अन्धकार रूपी चादर को उधेड़ दिया। (अन्धकार सूर्य-रश्मि के पड़ते ही हट गया।)। १०९

आयिडै यऱिजनु मवनॅदि रळुवत्, तीयिडै नुळैवदोर् तॅळिविनै युडैयान्
नीविडै तरुहॅन निऱुविन नॅऱियाल्, कायॅरि वरन्मुऱै कडिदिनि लिडुवान् 110

अ इटै–तब; अऱिजनुम्–ज्ञानी; अवन् ॲतिर्–(श्रीराम) उनके सामने; अळुवम् ती इटै–अधिक पुष्ट अग्नि में; नुळैवतु ओर् तॅळिविनै उटैयान्–प्रवेश करने का एक शुद्ध संकल्प लेकर; काय् ॲरि–जलनेवाली अग्नि को; नॅऱियाल्–यथाक्रम; वरन्मुऱै–शास्त्रोक्त रीति से; कटितितिल् इटुवान्–जल्दी प्रज्वलित करके; नी विटै तरुकॅन–आप आज्ञा दे, यह; निऱुवित्तन्–माँग लिया। ११०

तब महान ज्ञानी शरभंग मुनि ने श्रीराम के सामने अधिक परिमाण में अग्नि जलाकर उसमें प्रवेश करने का संकल्प लेकर, उचित क्रम से, शास्त्रोक्त प्रकार से सत्वर प्रज्वलित किया। फिर श्रीराम से विदा माँगी। ११०

वरिशिलै युळवनु मऱैयुळ वत्तॅनी, पुरितॊऴि लॆत्तैयदु पुहलुदि यॆन्ऱलुम्
तिरुमह डलैवशॆय् तिरुविनै युऱयान्, ऎरिपुह निनैहुवॆ नरुळॆन विऱैवन् 111

वरिचिलै उळवनुम्–वन्धनयुक्त धनुष चलाने में दक्ष श्रीराम के; मऱै उळवत्ते–वेदकृषक को; नी पुरि तॊऴिल् ऎत्तै–आप करते है, वह कार्य क्या है; अतु पुकलुति–वह बतलाइए; ऎन्ऱलुम्–पूछने पर; तिरुमकळ् तलैव–श्रीलक्ष्मीपति; चॆय् इरुविनै–मेरे कृत दोनों कर्म; अऱ–नष्ट हो जायँ, इसलिए; यान् ऎरि पुक निनैकुवॆन्–मैं अग्निप्रवेश करना चाहता हूँ; अरुळ् ऎन–आज्ञा देने की कृपा करें, प्रार्थना करने पर; इऱैवन्–भगवान । १११

धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम ने वेदविद्याप्रवीण महर्षि से प्रश्न किया कि यह आप क्या करने जा रहे हैं ? कृपया बताइए तो । तब शरभंग ने कहा कि हे लक्ष्मीपति ! मैं अपने दोनों (पाप-पुण्य) कर्मों का नाश करने के लिए अग्नि में प्रवेश करना चाहता हूँ । आप कृपया अनुमति प्रदान करें । तब भगवान ने— । १११

यान्वरु ममैदियि लिदुशॆय लॆवनो, मान्वरु तनियुरि मार्बिनै यॆन्ऱलुम्
मीन्वरु कॊडियवन् विऱलडु मऱवोन्, ऊन्विडु मुवहैय नुरैनऩि पहर्वान् 112

मान् वरु–मृग के; तनि उरि मार्पिनै–श्रेष्ठ चर्म से आच्छादित वक्ष वाले; यान् वरुम् अमैतियिन्–मेरे आगमन के इस समय में; इतु चॆयल् ऎवन्–यह करना क्यों; ऎन्ऱलुम्–(श्रीराम के) यह पूछने पर; मीन् वरु कॊटि अवन्–मकरध्वज (मन्मथ) का; विऱल् अटु–प्रताप नष्ट करनेवाले; मऱवोन्–महर्षि; ऊन् विटुम् उवकै यिन्–शरीर-त्याग से उत्पन्न हर्ष के साथ; उरै–वचन; नऩि पकर्वान्–खूब बोले । ११२

मृगचर्मालंकृत वक्ष वाले ! यह अग्निप्रवेश का कार्य आप अब करना चाहते हैं, जब मैं इधर आया हूँ ! यह क्यों ? —यह पूछा । तब मकरध्वज मन्मथ के प्रताप-नाशक महर्षि, जो इस उल्लास में थे कि शरीर छूटनेवाला है, बोले । ११२

आयिर युहमुळ तवमयर् हुवॆन्यान्, नीयिवण् वरुहुदि यॆनुनिलै युडैयेन्
पोयिन दरुविनै पुहलुरु विदियान्, मेयिनै यिनियॊरु विनैयिलै विऱलोय् 113

विऱलोय्–विजयी वीर; यान्–मैं; आयिरम् उकम् उळ–सहस्र युगपर्यन्त; तवम् अयर्कुवॆन्–तपस्या करता रहा हूँ; नी इवण् वरुकुति–आप इधर पधारेंगे; ऎनुम् निलै उटैयेन्–इस स्थिरता पर रहा; पुकल् उऱु वितियान्–शास्त्र-विधि के अनुसार; पोयिनतु अरु विनै–मिटे मेरे कठिन कर्म; मेयिनै–आप भी पधारे; इनि ऒरु विनै इलै–अब कोई कर्म नहीं है । ११३

विजयी वीर ! सहस्र युग पर्यन्त मैंने तपस्या की साधना की है । आप इधर पधारेंगे, इस बात की दृढ़ प्रतीक्षा में रहा । शास्त्र-विधान के अनुसार मेरे दोनों कर्म कट गये । तभी तो आप पधारे हैं । आगे मेरा कर्तव्यकर्म कुछ नहीं है । ११३

इन्दिरन् नाळिन दिरुदिहळ् पहर, वन्दनन् मरुवुदि मलरय नुलहम्
तन्दन नॆन्नवदु शारलॆ नुरवोय्, अन्दमि लुयर्पद मडैदलै मुयल्वेन् 114

उरवोय्–बलवान; इन्तिरन्–देवेन्द्र के; नाळिनतु इरुतिकळ् पकर–मेरे जीवन का अन्त कहने के लिए; वन्ततन्–आये; मलर् अयन् उलकम्–कमलासन ने अपने लोक का वास; तन्ततन्–दिया; मरुवुति–आ जायँ; ऍन–कहने पर; अतु चारलॆन–वह नहीं चाहते हुए; अन्तम् इल् उयर पतम् अटैतलै–अक्षय परम (मोक्ष) पद प्राप्त करना; मुयल्वेन–साधूँगा। ११४

शक्तिमन्त ! अभी देवेन्द्र आये थे और मेरी आयु का अन्त जताकर उन्होंने कहा कि कमलोद्भव ने आपको अपने लोक में आमन्त्रित किया है। पधारिए। पर मैं वह लोक नहीं चाहता। पर अक्षर परमपद (मुक्ति-लोक) पाने के प्रयास में ही मैं साधना करता रहा हूँ। ११४

आदलि नदुपॆऱ् वरुळॆन वुरैयाक्, कादलि यवळॊडुङ् गदळॆरि मुळ्हिप्
पोदलै मरुविन नॊरुनॆऱि पुहला, वेदमु मऱिवरु मिहुपॊरु ळुणर्वान् 115

ऒरु नॆऱि पुकला–(केवल) एक मार्ग प्रतिपादित न करनेवाले; वेतमुम्–वेदों के भी; अऱिवरु–अज्ञात; मिकु पॊरुळ् उणर्वोन्–अनेक विषय के ज्ञानी महर्षि; आतलिन्–इसलिए; अतु पॆऱल् अरुळ्–उसकी प्राप्ति का वर दीजिए; ऍन उरैया–यह प्रार्थना करके; कातलि अवळॊटुम्–प्रिया के साथ; कतळ् ऍरि मूळ्कि–जलनेवाली आग में प्रवेश करके; पोतलै मरुविनन्–परमपदगमन में प्रवृत्त हुए। ११५

वेद भी, जो निश्चित रूप से एक मार्ग या एक पद की व्याख्या नहीं करते हैं, पर अनेक मार्गों और अनेक पदों का प्रतिपादन करते हैं, परमपद का मार्ग नहीं बताते। लेकिन महर्षि शरभंग उस परमपद (मुक्तिलोक) का लक्षण खूब जानते थे। इसलिए उन्होंने उसी पद-प्राप्ति की श्रीराम से प्रार्थना की और वे अपनी प्रिया पत्नी के साथ ज्वलन्त अग्नि में प्रवेश करके मोक्षपद जाने को उद्यत रहे। ११५

तेवरु मुनिवरु मुरुवतु तॆरिवोर्, मावरु नऱुविरै मलरयन् मुदलोर्
एवरु मुडिविनि लिरुविनै यॊरुविप्, पोवदु करुदुमव् वरु नॆऱिपुक्कान् 116

उरुवतु तॆरिवोर्–भवितव्य समझनेवाले; मा वरु–गौरवपूर्ण; नऱु विरै–सुवासित; मलर् अयन् मुतलोर्–कमलभव अज आदि; तेवर्–देवता लोग; मुनिवरुम्–मुनिगण; एवरुम्–कोई भी; इरुविनै ऒरुवि–दोनों कर्मों का नाश करके; मुटिविनिल्–अन्त में; पोवतु करुतुम्–जाना (जहाँ) चाहेंगे; अ अरु नॆऱि–उस परमगति को; पुक्कान्–पहुँचे। ११६

भावी की बातें जाननेवाले मूल्यवान और सुवासित कमल पर आसीन अजादि देवता लोग और मुनिगण —कोई भी अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों के नाश पर अन्तिम गति के रूप में जहाँ जाना चाहते है, उसी गति को शरभंग प्राप्त हो गये। ११६

अण्डमु महिलमु मऱिवरु नॆऱियाल्, उण्डव: नॊरुपॆय रुणर्हुन्न रुऱुपे
ऱॆण्डव नॆडिदुयि रिऱुदियि लवनैक्, कण्डव रुऱुपॊरुळ् करुदुव दॆळिदे 117

अण्टमुम्–सारे अण्ड; अकिलमुम्–और सारे लोक; अऱिवु अरु नॆऱियाल्–अनजानी रीति से; उण्टवन्न्–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था, उन श्रीराम का; ऑरु पॆयर्–एक (परमपावन) नाम; उणर्कुन्नर्–ध्यान करनेवाले; उऱु पेऱु–जिसको प्राप्त करते है, वह भाग्य; ऍण् तव नॆटितु–अपार और अत्यधिक है; नॆटितु उयिर् इऱुतियिल्–अपनी लम्बी आयु के अन्त में; अवनै कण्टवर्–जिन्होंने उनके दर्शन किये, वे; उऱु पॊरुळ्–जो प्राप्त करेंगे, वह वस्तु; करुतुवतु ऍळिते–सोचना सुलभ है क्या। ११७

अखिल अण्डों और लोकों को अपने पेट में प्रलयकाल मे समा लेनेवाले विष्णु भगवान के सहस्र रूप हैं और सहस्र नाम है। उनमें एक परम पवित्र नाम है श्रीराम ! उसके स्मरण मात्र से लोग जो भाग्य प्राप्त करते हैं, वह कल्पना के भी बाहर है; बहुत श्रेष्ठ है। तो अपनी लम्बी आयु के अन्त में, मरणावसर पर उनके दर्शन करने का भाग्य जिनका हुआ है, वे जिस पद को प्राप्त होंगे उसका महत्त्व कल्पना करना भी आसान है क्या ? । ११७

3. अहत्तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)

अन्नैयव निऱुदियि नमैवु नोक्कलिन्
इन्नियव रिन्नलि निरङ्गु नॆञ्जिन्नर्
कुनिवरु तिण्शिलैक् कुमरर् कॊम्बॊडुम्
पुन्निदन्न दुऱैयुणिन् ऱरिदिर् पोयिन्नार् 118

इन्नियवर्–सबके प्यारे (सबको सुख देनेवाले); कुनि वरु–नमनीय; तिण् चिलै–और सारयुक्त धनुष के; कुमरर्–(धारण करनेवाले) राजपुत्र; कॊम्पु ओटुम्–पुष्प-शाखा (सीतादेवी) के साथ; अन्नैयवन्न्–उन महर्षि के; इऱुतियिन्न् अमैव–अन्त की व्यवस्था; नोक्कलिन्न्–प्रत्यक्ष देखने से; इन्नलिन्न्–परिताप से; इरङ्कु नॆञ्चिन्नर्–खिन्नमन होकर; पुन्नितनतु उऱैयुळ् निन्ऱु–पवित्रात्मा के आश्रम से; अरितिल् पोयिन्नार्–निकलकर सायास चले। ११८

सर्वभूतरंजक प्यारे राजकुमार और नमनीय धनुष के धारक श्रीराम और लक्ष्मण, पुष्पलता-समाना श्रीसीतादेवी के साथ शरभंगदेह-वियोग देख रहे थे। उन्हें परिताप हुआ। बड़े खिन्नमन होकर वे उन पवित्र ऋषि के आश्रम से निकले और भारी मन के साथ सायास आगे जाने लगे। ११८

मलैहळु मरङ्गळु मणिक्कड् पाऱैयुम्
अलैपुन्न नदिहळु मरुविच् चारलुम्

इलैशेंरि पळुवमु मिनिय शूळ्लुम्
निलैमिहु तडङ्गळु मिनिदु नीङ्गिनार् 119

मलैकळुम्–पर्वत; मरङ्कळुम्–और अनेक तरु; मणि कल् पारैयुम्–और सुन्दर अनेक चट्टानों को; अलै पुनल् नतिकळुम्–तरंगसहित जल वाली नदियाँ; अरुवि चारलुम्–सरिताओ के साथ पर्वत-पाद-प्रदेश; इलै चेरि पळुवमुम्–पत्तों से पूर्ण वनप्रदेश; इनिय चूळ्लुम्–और सुन्दर स्थान; इनितिन्–सुख से देखते हुए; नीङ्कितार्–पार करके गये। ११९

वे अनेक पर्वत, वृक्ष, सुन्दर चट्टानें, तरंगसहित जल से पूर्ण नदियाँ, सरिताओं के साथ पर्वतों के पादप्रदेश और अन्य अनेक मनोरम स्थल —इनको देखते हुए सुख से आगे बढ़ते चले। ११९

❀ पण्डैय वयन्दरुम् वाल किल्लरुम्
मुण्डरु मोनरु मुदलि नोर्हळत्
तण्डह वनत्तुरै तवत्तु ळोर्ऱेलाम्
कण्डन रिरामनैक् कळिक्कुज् जिन्दैयार् 120

पण्टैय अयन् तरुम्–पुरातन ब्रह्माजी से सृष्ट; पालकिल्लरुम्–वालखिल्य; मुण्टरुम्–मुण्डी; मोनरुम्–मौनी; मुतलिनोर्कळ्–आदि; अ तण्टक वनत्तु उरै–जो उस दण्डक वन में रहते थे; तवत्तु उळ्ळोर्कळ् ऍल्लाम्–सब तपस्वी लोगों ने; इरामनै कण्टनर्–श्रीराम के दर्शन किये; कळिक्कुम् चिन्तैयर्–मुदितमन हुए। १२०

दण्डक वन में अनेक तरह के तपस्वी रहे। सृष्टि के आदिपुरुष ब्रह्माजी के (रोम से उत्पन्न) वालखिल्य (साठ हज़ार), मुण्डी, मौनी आदि तपस्वी थे। वे सब श्रीराम के दर्शन करके बहुत हर्षित हुए। १२०

❀ कनैवरु कडुञ्जिनत् तरक्कर् कायवोर्
विनैपिरि दिन्मैयिन् वेंदुम्बु हिन्ऱनर्
अनैवरु कानहत् तमुद ळाविय
पुनैवर वुयिर्वरु मुलवै पोल्हिन्ऱार् 121

कनै वरु–शीघ्र अभिभूत कर आनेवाले; कटुम् चिनत्तु–अत्यधिक क्रोध वाले; अरक्कर् काय–राक्षसों के सताने से; ओर् वित्तै पिरितु इन्मैयिन्–अपने पास कोई प्रतीकार-शक्ति न रहने के कारण; वॆंतुम्पुकिन्ऱनर्–तप्त; अनै वरु कानकत्तु–अग्नि-लगे कानन में; अमुतु अळाविय–अमृत-मिश्रित; पुनैवर–जल के आने से; उयिर् वरुम्–प्राणवन्त होनेवाले; उलवै पोल्किन्ऱार्–ठूँठ के समान बने। १२१

श्रीरामचन्द्र प्रभु का आगमन उनके लिए अग्निदग्ध कानन मे सुधा-मिश्रित जलधारा के प्रवाह के समान रहा। वहाँ के प्राणवन्त बने ठूँठों के समान उन्मत्त क्रोधी राक्षसों से पीड़ित वे निस्सहाय मुनिगण हरे हो उठे। १२१

※ आय्वरुम् वॅरुवलि यरक्कर् नाममे
वाय्वॅरीइ यलमरु मरुक्क नीड्गिनार्
तीवरु वन्नत्तिडै विट्टुत् तीर्न्ददोर्
ताय्वर नोक्किय कन्ऱिन् ऱन्मैयार् 122

आय् वरुम्—उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; पॅरुवलि अरक्कर्—बड़े बल वाले राक्षसों का; नाममे—नाम; वाय् वॅरीइ—कहने से भी डरकर; अलमरुम्—व्याकुल रहने की; मरुक्कम्—उद्विग्नता से; नीड्किनार्—मुक्त होकर; ती वरु वत्तत्तु इटै—(वे) जलनेवाले जंगल-मध्य; विट्टु—छोड़कर; तीर्न्तत्तु—जो गई थी; ताय् वरल्—उस माता गाय का आना; नोक्किय—देखते रहे; कन्ऱिन् तन्मैयार्—बछड़े के समान स्थिति वाले हुए। १२२

वे वर्धनशील बल से युक्त राक्षसों का नाम लेने से भी डरते हुए अपार संकटग्रस्त होकर राक्षसों के त्रास के कारण बहुत व्याकुल व उद्विग्न रहते थे। तब श्रीराम पधारे तो उनकी स्थिति उस बछड़े की-सी उत्साहपूर्ण हो गयी, जिसके सामने उसकी माता गाय, जो उसको जलने वाले जंगल में अकेले छोड़कर चली गयी थी, आ गयी हो। १२२

करक्करुङ् गडुन्दॉऴि लरक्कर् काय्दलिल्
पॉरर्किड मिन्मैयिर् पुऴुङ्गिच् चोरुनर्
अरक्करॅन् गडलिडै याऴ्हिन् ऱारॅरु
मरक्कलम् पॅऱ्ऱॅन मरुक्क नोक्किनार् 123

करक्क अरुम्—लुक-छिपकर नहीं पर खुले रूप से; कटुम् तॉऴिल्—नृशंसकारी; अरक्कर्—राक्षस; काय्तलिल्—वैर करके सताते रहे, इसलिए; पॉरर्कु इटम् इन्मैयिन्—वार करने का मौका न रहने के कारण; पुऴुङ्कि चोरुनर्—तप्त होकर वेदना उठानेवाले; अरक्कर् ॲन् कटल् इटै—राक्षस रूपी सागर में; आऴ्किन्ऱार्—गिरकर डूबनेवाले; ऒरु मरक्कलम् पॅऱ्ऱॅन—एक नाव मिल गई हो, जैसे; मरुक्कम् नीङ्कितार्—संकट से मुक्त हुए। १२३

उनकी स्थिति सागर-मध्य डूबनेवाले को नाव मिल गयी हो, ऐसी भी हो गयी। दिन-दहाड़े वे राक्षस उनको दिक कर रहे थे। इनके पास प्रतीकार का या अपनी रक्षा का कोई साधन नहीं था। इसलिए वे बहुत क्लेशित होकर राक्षस रूपी सागर में डूबते रहे। अब उनको श्रीराम रूपी नौका मिल गयी। १२३

※ तॆरिञ्जुऱ नोक्कितर् शॅय्द शॅय्दवम्, अरुञ्जिऱप् पुदवनल् लऱिवु कैदर
विरिञ्जुऱप् पऱ्ऱिय पिऱवि वॆन्दुयरप्, पॆरुञ्जिऱै वीडुपॆऱ् ऱनैय पऱ्ऱियार् 124

चॅय्त चॅय् तवम्—तव तक किया हुआ श्रेष्ठ तप; अरुम् चिऱप्पु उतव—उत्तम फल देने लगा तो; नल् अऱिवु कै तर—परमज्ञान के फलस्वरूप; तॆरिञ्चु—श्रीराम का परत्व पहचानकर; उऱ नोक्कित्तर—खूब दर्शन करके; विरिञ्चु उऱ पऱ्ऱिय—

(जाल के समान) फैलकर उन्हें जो पकड़े रहा; वॆम् पिऱवि तुयर्–भयंकर भवसंकट रूपी; पॆरुम् चिऱै–बड़ी कारा से; वीटु पॆऱ्ऱतैय–मोक्ष पा गये हों, ऐसी; पॆऱ्ऱियार्–दशा वाले हो गये। १२४

उन ऋषियों ने बहुत तप किया था। उसका फल अब उनकी सहायता करने आया। उनका ज्ञान उनका सहायक हुआ। वे पहचान गये कि श्रीराम परब्रह्म ही है। उन्होंने श्रीरामभद्र के खूब दर्शन कर लिये। अब उन्हें यही विश्वास हो गया कि जाल के समान फैलकर जिस भयंकर भवसंकट ने उन्हें ग्रस लिया था, उस बड़ी कारा से उनको मुक्ति मिल गयी। १२४

वेण्डिन वेण्डिनर्क् कळिक्कु मॆय्त्तवम्
पूण्डुळ रायिनुम् पॊऱैयि नाऱ्ऱलाल्
मूण्डॆळु वॆहुळियै मुदलि नीक्किनार्
आण्डुऱै यरक्करा ललैप्पुण् डाररो 125

वेण्टित्तवर्क्कु–प्रार्थियों को; वेण्टित्त अळिक्कुम्–प्रार्थित वस्तु दिलानेवाले; मॆय् तवम् पूण्टुळर्–यथार्थ तप के साधक थे; आयित्तुम्–तो भी; पॊऱैयिन् आऱ्ऱलाल्–क्षमा के बल से; मूण्टु ऍळुम् वॆकुळियै–अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को; मुतलिन् नीक्कित्तार्–जड़ से जिन्होंने काट दिया था, वे; आण्टु उऱैन्तु–(वन में) वहाँ रहकर; अरक्कराल्–राक्षसों द्वारा; अलैप्पु उण्टार्–कष्ट में पड़े रहे। १२५

उनकी तपस्या भी अमोघ थी। इच्छित वस्तु दिला सकनेवाली ही थी। तो भी क्षमा के बल से उन्होंने अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को जड़ से काटकर दूर कर दिया था। इसीलिए वे वहाँ, उस वन में रहकर राक्षसों के हाथ त्रास सहते रहे। १२५

❀ ऍळुन्दन रॆय्दिन रिरुण्ड मेहत्तिन्
कॊळुन्दॆन निन्ऱवक् कुरिशिल् वीरनैप्
पॊळिन्दॆळु कादलिऱ् पॊरुन्दि नारवन्
तॊळुन्दॊऱुन् दॊळुन्दॊऱु माशि शॊल्लुवार् 126

ऍळुन्तत्तर्–(वे) उठे और; ऍय्तित्तर्–श्रीराम के पास आये; इरुण्ट मेकत्तिन्–काले मेघ की; कॊळुन्तु ऍन–कोंपल के समान; निन्ऱ–अपने सामने शोभायमान (खड़े) रहे; अ कुरिचिल् वीरनै–उन वीर राजकुमार के; पॊळिन्तु ऍळु कातलिल्–आप्लावित कर उमड़नेवाले प्रेम के साथ; पॊरुन्तित्तार्–समीप आये; अवन् तॊळुम् तॊऱुम् तॊळुम् तॊऱुम्–ज्यों-ज्यों वे नमस्कार करते, त्यों-त्यों; आचि चॊल्लुवार्–(ऋषियों ने) आशीर्वचन कहे। १२६

वे उठे और श्रीराम के पास, जो काले मेघ की कोंपल के समान सुन्दर थे, आये। उनके मन में श्रीराम को आप्लावित करते हुए उमड़ने

वाला प्रेम उठा था। श्रीराम ने उनको अलग-अलग एक-एक करके नमस्कार किया। तो उन्होंने भी हर बार उनको आशीर्वाद किया। १२६

❀ इन्नियदोर् शालैकीण्ड् डेहि यिव्वयिन्
नन्नियुर्रै यॅन्ट्रवर् कमैय नल्हित्ताम्
तन्नियिडञ् जार्न्दन्नर् तङ्गि मर्रैनाळ्
अनैवरु मॅय्दिन्न रल्लल् शॊल्लुवान् 127

अनैवरुम्–सभी (ऋषि); इन्निय ओर् चालै कॊण्टु एकि–सुखद एक आश्रम में ले जाकर; इ वयिन्–यहाँ; नन्नि उर्रै ॲन्ट्रु–खूब विश्राम करें, ऐसा कहकर; अवर्कु अमैय नल्कि–उनको आवश्यक वस्तुएँ देकर; ताम् तन्नि इटम् चार्न्तन्नर्–स्वयं अलग-अलग स्थानों में जाकर; तङ्कि–ठहरे रहने के बाद; अल्लल् चॊल्लुवान्–अपना दुखड़ा कहने; ॲय्तिन्नर्–(श्रीराम के पास) आ पहुँचे। १२७

फिर वे श्रीराम आदि को एक सुखद पर्णशाला में ले गये। 'यहाँ ठहरकर विश्राम करें' —कहकर उन्होंने दिव्य अतिथियों को वहाँ ठहराया। फिर आवश्यक सामग्रियाँ देकर वे अपने-अपने अलग-अलग स्थानों में चले गये। रात विताकर वे सवेरे अपना दुखड़ा श्रीराम से बताने के लिए उनके पास पहुँचे। १२७

❀ ॲय्दिय मुन्निवरै यिरैञ्जि येत्तुवन्न्, दैयन्नु मिरुन्दन्न नरुळॅन् नॅन्ट्रलुम्
वैयहङ् गावलन्न् मैन्द वन्ददोर्, वॅय्यवॅङ् गॊडुन्दॊळ्िल् विळैवु केळॅन्ना 128

ऐयनुम्–प्रभु ने भी; ॲय्तिय मुन्निवरै–आगत मुनियों का; इर्रैञ्चि–नमस्कार करके; एत्तु उवन्तु–उनकी स्तुति करते हुए मुदित हो; इरुन्तन्नन्–रहकर; अरुळ् ॲन्–कृपा की आज्ञा क्या है; ॲन्ट्रलुम्–पूछने पर; वैयकम् कावलन्न् मैन्त–लोकपाल के पुत्र; वन्ततु–हम पर आये; ओर् वॅय्य वॅम् कॊटुम् तॊळ्िल्–वहुत ही भयंकर नृशंसकार्य की; विळैवु–अधिकता; केळ्–सुनिए; ॲन्ना–कहकर। १२८

श्रीराम ने आगत मुनियों को नमस्कार किया; स्तुति की और मोद के साथ रहकर पूछा कि आप कौन सी आज्ञा सुनाने की कृपा करेंगे? ऋषियों ने उत्तर में कहा कि लोकपालक पुत्र! हमारे ऊपर जो बीत रहा है, उस भयंकर कष्ट की अधिकता सुनिए। १२८

❀ इरक्कमॅन् ट्रॊरुपॊरु ळिलाद नॅञ्जिन्नर्
अरक्करॅन् ट्रुळर्शिल रर्रत्ति नीङ्गिन्नार्
नॅरुक्कवुम् याम्बडर् नॅरिय लानॅरि
तुरक्कवु मरुन्दवत् तुरैयुम् नीङ्गिनोम् 129

इरक्कम् ॲन्ट्रु–करुणा नाम का; ओरु पॊरुळ्–सर्वश्रेष्ठ गुण; इलात–से हीन; नॅञ्चिन्नर्–मन वाले; अर्रत्तिन् नीङ्किन्नार्–धर्म-मार्ग से दूर; अरक्कर्–राक्षस; ॲन्ट्रु उळर् चिलर्–कहे जानेवाले हैं कुछ लोग; नॅरुक्कवुम्–(उनके) हमें सताने से;

याम्–हम; पटर् नॅऱि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अलः नॅऱि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुऱैयुम् नीङ्कित्तोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे है। १२९

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम्	बलतिरि	वन्नत्तु	मान्नॅन
ऍल्लियुम्	बहलुनॊन्	दिरङ्गि	याऱ्ऱलॅम्
शॊल्लिय	वऱनॅऱित्	तुऱैयि	नीङ्गिनॆम्
विल्लियन्न्	मॊय्म्बिनाय्	वीडु	काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊय्म्पिन्नाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वन्नत्तु–जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान्न् ऍन्न–मृगों के समान; ऍल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॊन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॅम्–अशक्त होकर; चॊल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॅऱि—धर्म-मार्ग के; तुऱैयिन्न्–कर्मों से; नीङ्किनॆम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे?। १३०

❀ मादवत् तॊऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॅ मोदुवार्क् कुदव लाऱ्ऱलॅम्
मूदॅरि वळर्क्कलॅ मुऱैयि नीङ्गिनॆम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ऒऴुकलॅम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलॅम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॅम्–सहायता दे नहीं पाते; मूतु ऍरि वळर्क्किलॅम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिन्न् नीङ्कित्तॆम्–अपने कर्मो से हटे रहते हैं; आतलिन्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलेम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मो से हटे रह गये है। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर	न्नॅनिलव	न्नरक्क	रेविन्न
शिन्दैयिऱ्	चॅन्न्नियिऱ्	कॊळ्ळुञ्	जॅय्हैयान्
ऍन्दैमऱ्	ऱियारुळ	रिडुक्क	णीक्कुवार्
वन्दन्नै	याञ्जॅय्द	तवत्तिन्	माट्चियाल् 132

ऍऩ्तै–हमारे तात; इन्तिरन् ऍतिल्–इन्द्र हैं तो; अवऩ्–वे; अरक्कर् एवित्त–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॅऩ्नियिल्–सिर पर; कॊळ्ळुम् चॅय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले है; इटुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मट्रु यार् उळर्–और कौन हैं; यास् चॅय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॉरुळुडै मऩ्ऩवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोऩ्ऱिऩाय्, अरुळुडै वीरनिऩ् नबयस् यामॅऩ्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॉरुळ् उटै मऩ्ऩवऩ्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोऩ्ऱिऩाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निऩ् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ऍऩ्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिऩ्
अहल्व रेनुमॅऩ् ऩम्बॊडुम् वीऴ्वराल्
तहवि ऱुऩ्बन् दविरुदिर् नीरॅऩ्ऩाप्
पहल वऩ्गुल मैन्दऩ् पणिक्किऩ्ऱाऩ् 134

पकलवऩ् कुल मैन्तऩ्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयँगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ऍऩ् अम्पॊटुम् वीऴ्वर् आल्–मेरे वाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुऩ्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ऍऩ्ऩा–कहकर; पणिक्किऩ्ऱाऩ्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

याम्–हम; पटर् नॆंऱि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नॆंऱि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुऱैयुम् नीङ्कित्तोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं। १२९

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वनत्तु मानॆंन
ऍल्लियुम् बहलुनॊंन् दिरङ्गि याऱ्ऱलॆंम्
शॊंल्लिय वऱनॆंऱित् तुऱैयि नीङ्गिनॆंम्
विल्लियन् मॊंय्म्बिनाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊंय्म्पिनाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वनत्तु–जहाँ घूमते रहते है, उस वन में; मान् ऍंन–मृगों के समान; ऍल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॊंन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॆंम्–अशक्त होकर; चॊंल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॆंऱि–धर्म-मार्ग के; तुऱैयिन्–कर्मों से; नीङ्कितॆंम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर ! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये है। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे ? । १३०

❀ मादवत् तॊंऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॆं मोदुवार्क् कुदव लाऱ्ऱलॆंम्
मूवॆंरि वळर्क्कलॆं मुऱैयि नीङ्गिनॆम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलॆम् 131

मा तवत्तु ऒंऴुकलॆंम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलॆंम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॆंम्–सहायता दे नही पाते; मूतु ऍंरि वळर्क्किलॆंम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिन् नीङ्किनॆंम्–अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलिन्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलॆम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मो से हटे रह गये हैं। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर ऩॆंनिलव नरक्क रेविन
शिन्दैयिऱ् चॆंन्तियिऱ् कॊंऴ्ऴुऩ् जॆंय्हैयान्
ऍंन्दैमर् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दनै याज्ञॆंय्द तवत्तिन् माट्चियाल् 132

ऍन्तै–हमारे तात; इन्तिरन् ऍतिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित्त–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॅन्नियिल्–सिर पर; कॉळ्ळुम् चॅय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले हैं; इटुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मट्रु यार् उळर्–और कौन हैं; याम् चॅय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॉरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयम् यामॅन्ड्रार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होने किया; पॉरुळ् उटै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिनाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ऍन्ड्रार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेड़ पुड़त्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॅन् नम्बॉडुम् वीळ्वराल्
तहवि रुन्बन् दविरुदिर् नीरॅनाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ड्रान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयँगे तो; पुड़त्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ऍन् अम्पॉटुम् वीळ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ऍना–कहकर; पणिक्किन्ड्रान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

❀ वेन्दन् वीयवुम् याय्तुयर् मेववुम्, एन्द लॅम्बि वरुन्दवु मॅन्नहर्
मान्दर् वन्रुयर् कूरवुम् यान्वनम्, पोन्द दॅन्नुडैप् पुण्णियत् तालॅन्ड्रान् 135

वेन्तन् वीयवुम्–चक्रवर्ती दिवंगत हुए; याय् तुयर् मेववुम्–और मेरी माता दुखग्रस्त हुईं; एन्तल् अॅम्पि–महिमायुक्त मेरे लघु भ्राता भरत; वरुन्तवुम्–संकटग्रस्त है; अॅन् नकर् मान्तर्–मेरे नगर के लोग; वन् तुयर् कूरवुम्–कठोर वेदना का अनुभव करते है; यान् वनम् पोन्ततु–(यह स्थिति पैदा करते हुए) मेरा वन में आगमन; अॅन्तुटै पुण्णियत्ताल्–मेरे सुकृत (पुण्य) से ही; अॅन्ड्रान्–कहा। १३५

मुझे वन में आना पड़ा जिसके कारण मेरे पिता चक्रवर्ती दिवंगत हो गये। मेरी माता कौसल्यादेवी दुखग्रस्त हो गयीं। महिमावान मेरा लघुभ्राता भरत शोकपीड़ित हो गया। मेरे नगर के वासी दुख में पड़ गये। तो भी मैं समझता हूँ कि मेरा वन में आगमन मेरे सुकृत का ही फल है। १३५

❀ अऱन्द वानॅरि यन्दणर् तन्मैयै, मऱन्द पुल्लर् वलितॊलै येॅनॅनिल्
इऱन्दु पोहिनु नन्ऱिदु वल्लदु, पिऱन्दि यान्बॅरुम् वेऱॅन्वदि यावदो 136

अऱम् तवा नॅऱि–धर्म से न हटनेवाले आचरण में लीन; अन्तणर् तन्मैयै–ब्राह्मणों के महत्व को; मऱन्त–भूलकर (कष्ट देनेवाले); पुल्लर्–नीच राक्षसों का; वलि तॊलैयेन्–बल नहीं मिटाऊँगा; अॅनिल्–तो; इऱन्तु पोकिनुम्–मर जाना भी; नन्ऱितु–अच्छा; अल्लतु–नहीं तो; पिऱन्तु यान् पॅऱुम् पेऱु–जन्म लेकर पाने का भाग्य; यावतो–और क्या होगा। १३६

वे नीच राक्षस आपकी महिमा और आपका स्वभाव नहीं जानते और आपको बहुत कष्ट दे रहे है। उनका बल न मिटाऊँ तो मर जाना भी भला है। नही तो मैंने जन्म लेकर क्या पाया ? और कौन सा लाभ है जो मैं पाऊँ ? । १३६

निवन्द वेदियर् नीयिरुन् दीयवर्, कवन्द बन्दक् कळिनडङ् गण्डिड
अमैन्द विल्लु मरुङ्गणैत् तूणियुम्, शुमन्द तोळुम् पॊरैत्तुयर् तीरुमाल् 137

निवन्त–गुणोन्नत; वेतियर् नीयिरुम्–वेदज्ञ विप्र आप; तीयवर्–खलों के; कपन्त पन्तम्–कबन्ध-वृन्द का; कळि नटम् कण्टिट–मुदित नाच देखें तब; अमैन्त विल्लुम्–मेरे पास बेकार रहा धनु; अरुम् कणै तूणियुम्–अपूर्व शरों का तूणीर; चुमन्त–इनको ढोनेवाली; तोळुम्–मेरी भुजाएँ; पॊरै तुयर् तीरुम्–भार उठाने का दुख दूर होगा। १३७

आप गुणोन्नत ब्राह्मण उन खलों के कबन्ध-वृन्दों का मुदित नाच देख कर आनन्द मनावे, तभी भारस्वरूप बेकार यह धनु और उत्तम शरों का तूणीर —इनका बोझ व्यर्थ जो ढोती रही उन भुजाओं के भारवहन का दुख दूर होगा। १३७

आवुक् कायिनु मन्दणर्क् कायिनुम्, यावर्क् केनु मॆळियवर्क् कायिनुम्
शावप् पॆऱ्ऱब रेतहै वानुरै, देवर्क् कुन्दॊळुन् देवर्ह ळाहुवार् 138

आवुक्कु आयिनुम्–गायों के रक्षणार्थ हो; अन्तणर्क्कु आयिनुम्–या ब्राह्मणों के लिए हो; ऍळियवर् यावर्क्केनुम् आयिनुम्–निर्बल किसी के लिए भी हो; चाव पॆऱ्ऱवरे–जिनको मरने का भाग्य होता है, वे ही; तकै वान् उऱै–महिमायुक्त स्वर्ग में वास करनेवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के लिए भी; तॊऴुम्–वन्द्य; तेवर्कळ् आकुवार्–देव बनेंगे। १३८

वे ही मनुष्य देववन्द्य देव बनते हैं, जो गाय, ब्राह्मण या किसी और निर्बल की रक्षा में अपने प्राण खोते है। १३८

शूर रुत्त वनुज्जुडर् नेमियुम्, ऊर रुत्त वॊरुवनु मोम्बिनुम्
आर ऱत्तिनॊ डन्ऱिनिऩ् ऱारवर्, वेर रुप्पॆन् वॆरुवनुमि नीरॆन्ऱान् 139

चूर् अऱुत्तवनुम्–शूरपद्म के संहारक (कार्तिकेय) और; चुटर् नेमियुम्–ज्वलन्त चक्रधारी (विष्णुदेव); ऊर् अऱुत्त ऑरुवनुम्–और त्रिपुरांतक (शिवजी); ओम्पिनुम्–उनकी रक्षा करने आएँ (तो भी); आर्–जो; अऱत्तिनोटु अन्ऱि–धर्म से अलग होकर; निन्ऱार्–(पाप-कर्म में प्रवृत्त) रहते है; अवर्–उनको; वेर् अऱुप्पॆन्–जड़ से काट (मिटा) दूँगा; नीर् वॆरुवन्मिन्–आप मत डरिए; ऍन्ऱान्–कहा। १३९

शूरपद्म के संहारक कार्तिकेय, दीप्तचक्रधारी विष्णु, त्रिपुरान्तक शिव —ये सब सहायतार्थ क्यों न आएँ तो भी अधर्मी लोगों को निर्मूल करके ही छोड़ूँगा। आप डरें नहीं। श्रीराम ने यह सुदृढ़ आश्वासन दिया। १३९

उरैत्त वाशहङ् गेट्टुवन् दोङ्गिड, इरैत्त कादल रेहिय विन्नलर्
तिरित्त कोलिनर् तेमरै पाडिनर्, निरुत्त माडिनर् निन्ऱु विळम्बुवार् 140

उरैत्त वाचकम् केट्टु–श्रीराम का कहा हुआ कथन सुनकर; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ओङ्किट इरैत्त कातलर्–उत्कृष्ट और मुखर प्रेम वाले होकर; एकिय इन्नलर्–मुक्तदुख हो; तिरित्त कोलिनर्–दण्ड को घुमाते हुए; ते मऱै पाटिनर्–दिव्य वेदगान किया; निरुत्तम् आटिनर्–नृत्य किया और; निन्ऱु विळम्पुवार्–फिर खड़े होकर (वे) बोले। १४०

ये आश्वासन के वचन सुनकर मुनिगण तृप्त हुए। उनका प्रेम उमड़ा और मुखर हुआ। चिन्ताविमुक्त होकर उन्होंने अपने दण्डों को घुमाया, वेदगान और नृत्य किया। बाद वे बोले। १४०

तोन्ऱ नीमुनि यिऱ्पुव नत्तॊहै, मून्ऱु पोल्वन मुप्पदु कोडिवन्
देन्ऱ पोदु मॆदिरल वॆन्ऱलिन्, शान्ऱु वेदम् तवप्पॆरु ञानमे 141

तोन्ऱल्–नायक; नी मुनियिल्–आप कुपित हों तो; मून्ऱु पुवन तॊकै पोल्वन–तीन लोकों के समूह के समान; मुप्पतु कोटि वन्तु एन्ऱ पोतुम्–तीस करोड़ आकर

लड़े तो भी; ऍतिर् इलै ऍन्ऱलिऩ्–सामना नहीं कर सकेंगे, इसके; चाऩ्ऱु–साक्षी; वेतम् तव पॅरु ञात्तमे–वेदों का ज्ञान और उससे प्राप्त ज्ञान ही हैं; अरो–ऐसा है न। १४१

प्रभु ! आप कुपित हो जायें तो यह एक लोकत्नय क्या तीस करोड़ लोकत्नय भी आपका सामना नहीं कर सकते। इसके साक्षी वेद हैं और उनके ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हैं। १४१

अऩ्ऩ दादलि नेयिन वाण्डॅलाम्, इन्ऩल् कात्तिङ् गिनिदुऱै वायॅन्ऩच्
चॊन्ऩ मादवर् पादन् दॊऴुदुयर्, मऩ्ऩर् मऩ्ऩवन् मैन्दनुम् वैहिऩाऩ् 142

अऩ्ऩतु आतलिऩ्–ऐसा है, इसलिए; एयिन आण्टु ॲलाम्–वनवास के लिए नियत सारे दिन; इऩ्ऩल् कात्तु–हमारी संकट से रक्षा करने; इङ्कु इऩितु उऱैवाय्–यहाँ सुख से रहें; ऍऩ्ऩ–ऐसा; चॊऩ्ऩ–जिन्होंने कहा, उन; मातवर् पातम् तॊऴुतु–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; उयर् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्–सर्वश्रेष्ठ राजाधिराज (चक्रवर्ती) के; मैन्तनुम्–पुत्न भी; वैकिऩाऩ्–वहाँ ठहरे। १४२

बात ऐसी है। अतः आप वनवास के लिए निर्धारित अवधि भर यहीं सुख से वास करें और हमारी संकट से रक्षा करें। ऋषियों की यह प्रार्थना सुनकर सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ के पुत्न उनके चरणों पर विनत हुए और वहीं वास करने लगे। १४२

❀ ऐन्दु मैन्दु ममैदियि नाण्डवण्, मैन्दर् तीदिलर् वैहिऩर् मादवर्
शिन्दै यॆण्णि यहत्तियऩ् चेर्हॆन्ऩ, इन्दु नऩ्नुद ऱन्ऩॊडु मेहिऩार् 143

मैन्तर्–राजकुमार; अवण्–उस तपोवन में; ऐन्तुम् ऐन्तुम् आण्टु–पाँच और पाँच (दस) साल; तीतु इलर्–विना किसी कठिनाई के; अमैतियिऩ्–शान्ति के साथ; वैकिऩर्–ठहरे; मातवर्–महान तपस्वियों के; चिन्तै ऍण्णि–मन में सोचकर; अकत्तियऩ् चेर्क–अगस्त्य से जा मिले; ऍऩ्ऩ–कहने पर; इन्तु नल् नुतल् तऩ्ऩॊटुम्–इन्दु-सम भाल वाली सीताजी-सह; एकिऩार्–चले। १४३

वे राजकुमार पाँच और पाँच (दस) साल वहीं ठहरे। कोई असुविधा या कष्ट नहीं था। वे शान्ति के साथ वहाँ रहे। पश्चात उन ऋषियों ने मन में सोचकर श्रीराम को सुझाया कि आप अगस्त्यजी से जाकर मिलें। तब श्रीराम और लक्ष्मण इन्दुसम सुन्दर भाल वाली सीताजी के साथ चले। १४३

विडर हङ्गळुम् वेय्शॆऱि कानमुम्, पडरुञ् जिऩ्ऩॆऱि पयप्पय नीङ्गिऩार्
शुडरु मेनिच् चुदीक्कण ऩॆऩ्नुमव्, इडरि लाऩुऱै शोलैशॆऩ् ऱॆय्दिनार् 144

विटर् अकङ्कळुम्–पर्वत-घाटियाँ; वॆय् चॆऱि काऩमुम्–बाँसतरु-संकुल वन; पटरुम्–इनमें जानेवाले; चिल् नॆऱि–सँकरे मार्ग; पय पय नीङ्किऩार्–(तीनों ने)

धीरे-धीरे तय किये; चुटरुम् मेति–तेजोमय शरीर वाले; चुतीक्कणन् ॲंतुम्–सुतीक्ष्ण नाम के; अ इटर् इलान् उऱै–उत्तम दुख-निर्लिप्त ऋषि के वास के; चोलै चॅन्ऱु–आश्रम जाकर; ॲय्तिनार्–पहुँचे। १४४

पर्वत प्रदेशों, बाँस के वनों आदि से होकर जानेवाले सँकरे मार्ग धीरे-धीरे तय करके वे तेजोमय शरीरी सुतीक्ष्ण नाम के ऋषि के आश्रम में पधारे। १४४

अरुक्क नन्न मुनिवनै यव्वऴि, शॅरुक्किल् शिन्दैयर् शेवडि ताऴ्दलुम्
इरुक्क वीण्डॅन्ऱिनियन कूऱिनान्, मरुक्कोऴ् शोलैयिन् मैन्दरुम् वैहिनार् 145

चॅरुक्कु इल् चिन्तैयर्–घमण्डरहित मन वालों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; अ वऴि–वहाँ; अरुक्कन् अन्न मुनिवनै–सूर्योपम मुनि के; चे अटि–मनोहर चरणों पर; ताऴ्तलुम्–नमन करने पर; ईण्टु इरुक्क ॲन्ऱु–यहाँ रहें, ऐसा; इनियन कूऱिनान्–मधुर वचन कहे; मैन्तरुम्–राजकुमार भी; मरु कोऴ् चोलैयिल्–सुबासपूर्ण तपोवन में; वैकिनार्–ठहरे। १४५

अहंकारशून्य श्रीराम और लक्ष्मण सूर्य-सम तेजोवान उन ऋषि के उत्तम चरणों पर विनत हुए। तब ऋषि ने उन्हें आसन देकर विराजमान कराया। मधुर स्वागत-वचन कहे। सत्कारप्राप्त श्रीराम और लक्ष्मण भी अच्छे बास से युक्त उस आश्रम में ठहरे। १४५

वैहुम् वैहलिन् मादवन् मैन्दर्बाल्, शॅय्है यावॆयुम् जॅय्दिवण् शॅल्वनी
ॲय्द यान्शॅय्द दॆत्तव मॆन्ऱनन्, ऐय नुम्मवर् कन्बन कूऱिनान् 146

मातवन्–महान तपस्वी (सुतीक्ष्ण) के; वैकुम् वैकलिन्–वास के आश्रम में; मैन्तर् पाल्–राजकुमारों को; चॅय्कै यावैयुम् चॅय्तु–सत्कार सब करके; चॅल्व–धनवन्त; नी इवण् ॲय्त–आप इधर पधारे, इसके लिए; यान् चॅय्ततु ॲ तवम्–मेरा किया कौन सा तप था; ॲन्ऱनन्–बोले; ऐयनुम्–प्रभु ने भी; अवर्कु–उनसे; अन्पन–स्नेहपूर्ण; कूऱिनान्–बातें कहीं। १४६

ऋषि ने अपने आश्रम में आगत दिव्य अतिथियों का खूब सत्कार किया। फिर कहा कि धनवन्त! आप इधर पधारे हैं, तो मैंने कितनी विशिष्ट तपस्या की होगी और मेरी तपस्या का कितना ही शुभ फल मिला है! श्रीराम इसके उत्तर में मधुर वचन बोले। १४६

शॊन्न नान्मुहन् ऱन्वऴित् तोन्ऱिनर्, मुन्नै योरुण् मुयऱव मुऱ्ऱिनार्
उन्निल् यारुळ रुन्नरु ळॆय्दिय, ॲन्निन् यारुळ रिर्पिऱन् दारॆन्ऱान् 147

चॊन्न–प्रकीर्तित; नान्मुकन् तन् वऴि तोन्ऱिनर्–चतुर्मुख के वंश में उत्पन्न; मुन्नैयोरुळ्–प्राचीन मुनियों में; मुयल् तवम् मुऱ्ऱिनार्–कठिन तपस्या करके सुसम्पन्न करनेवाले; उन्निन् यार् उळर्–आपके समान कौन है; उन् अरुळ् ॲय्तिय–आपकी कृपा के पात्र; इल् पिऱन्तार्–गृहस्थों में; ॲन्निल् यार् उळर्–मेरे समान कौन हैं; ॲन्ऱान्–कहा। १४७

प्रकीर्तित ब्रह्मा के वंश में उदित अग्रगण्य महर्षियों में कौन हैं, जिन्होने आपके समान तप सम्पन्न किया है ? वैसे ही गृहस्थों में कौन ऐसा है, जिसे आपकी कृपा मिली है, जैसे मुझे ? । १४७

उवमै नीङ्गिय तोऩ्ऱ लुरैक्कॅदिर्, नवमै तोऩ्ऱिय नऱ्ऱवन् शॊल्लुवाऩ्
अवमि लाविरुन् दाहियॆऩ् ऩालमै, तवमॆ लाङ्गॊळत् तक्कनै यालॆऩ्ऱाऩ् 148

उवमै नीङ्किय–अनुपमेय; तोऩ्ऱल् उरैक्कु–प्रभु के कथन के; ऍतिर्–उत्तर में; नवमै तोऩ्ऱिय नल् तवऩ्–नये प्रकार की तपस्या के श्रेष्ठ तपस्वी; चॊल्लुवाऩ्–बोले; अवम् इला विरुन्तु आकि–अमोघ अतिथि बने आप; ऍऩ्ऩाल् अमै–मेरे अब तक सुसम्पन्न; तवम् ऍलाम्–तप सब; कॊळ तक्कनै–ग्रहण करने अर्ह हैं आप; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा । १४८

श्रीराम थे उपमाहीन । ऋषि थे अपूर्व और नयी तपस्या के कर्ता । ऋषि ने श्रीराम से कहा कि आप अमोघ अतिथि हैं । आप मेरी की हुई तपस्या का सारा फल ग्रहण कर लीजिए । आप इसके अर्ह हैं । १४८

मऱैव लाऩॆदिर् वळ्ळलुङ् गूऱुवाऩ्, इऱैव निऩ्ऩरु ळॆत्तवत् तिऱ्कॊळि
तऱैव दीण्डुण् डहत्तियर् काण्बदोर्, कुऱैहि डन्द दिनियॆनक् कूऱिऩाऩ् 149

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु; मऱैवलाऩ् ऍतिर्–वेदज्ञ उनके सामने; कूऱुवाऩ्–बोले; इऱैव–स्वामी; निऩ् अरुळ्–आपका अनुग्रह; ऍ तवत्तिऱ्कु ऍळितु–किस तप के लिए सुलभ (प्राप्य) है; ईण्टु–अब; अऱैवतु उण्टु–कथनीय एक विषय है; इति–अब; अकत्तियर् काण्पतु–अगस्त्य के दर्शन का; ओर् कुऱै किटन्ततु–एक इच्छा अपूर्ण रहती है; ऍऩ्ऩ कूऱिऩाऩ्–ऐसा कहा । १४९

वेदव्युत्पन्न मुनिवर से प्रभु ने कहा कि स्वामी ! आपकी कृपा मुझ पर हुई —वह क्या कम है ? कितनी ही बड़ी तपस्या का फल है वह उपलब्धि ! अब आपसे एक निवेदन करना है । अगस्त्यजी के दर्शन की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई । १४९

नल्ल देनिऩैन् दायदु नाऩुमुन्, शॊल्लु वाऩ्ऱुणि हिन्ऱदु तोऩ्ऱनी
शॆल्दि याण्डवर् चेरुदि शेर्न्दपिऩ्, इल्लै निऩ्वयि नॆय्दहि लादवे 150

तोऩ्ऱल्–प्रभु; नी नल्लते निऩैन्ताय्–आपने अच्छा ही सोचा है; अतु–वही; नाऩुम्–मेरे द्वारा भी; मुऩ् चॊल्लुवाऩ्–पहले कहने का; तुणिकिऩ्ऱतु–निश्चय किया हुआ था; आण्टु चॆल्ति–वहाँ पधारें; अवऩ् चेरुति–उनसे मिलें; चेर्न्तपिऩ्–उनसे मिलने के बाद; निऩ् वयिऩ्–आपके; ऍय्त किल्लातवे–अप्राप्य कोई हित; इल्लै–नहीं ही होंगे । १५०

मुनि ने उत्तर में कहा कि राजकुमार ! आपने ठीक ही सोचा है । मेरा भी वह अभिप्राय था । उधर पधारिए, उनसे मिलिए । उसके बाद आपको प्राप्त न हों, ऐसे कोई मंगल रहेंगे ही नहीं ! । १५०

अऩ्ऱि युन्निऩ् वरविऩै यादरित्, तिऩ्ऱु हाऱुनिऩ् ऱेमुऱु मालवर्
चॅऩ्ऱु शेरुदि शेरुदल् शॅव्वियोय्, नऩ्ऱु देवर्क्कुम् यावर्क्कु नऩ्ऱॆना 151

अऩ्ऱियुम्—इसके अलावा; चॅव्वियोय्—पुरुषश्रेष्ठ; निऩ् वरविनै—आपके आगमन की; आतरित्तुत्—प्रतीक्षा करके; इऩ्ऱु काऱुम्—आज तक; निऩ्ऱु—रहकर; एम् उऱुमाल्—तरसते होंगे; चॅऩ्ऱु—जाकर; अवर् चेरुति—उनसे मिलिए; चेर्न्त पिऩ्—मिलने के पश्चात; तेवर्क्कुम् नऩ्ऱु—देवों के लिए भी मंगल है; यावर्क्कुम् नऩ्ऱु—सबके लिए लाभकर है; ॲऩा—कहकर। १५१

और भी आपके आगमन की प्रतीक्षा में वे उतावले हो रहे होंगे। इसलिए आप उनसे जाकर मिलिए। उनसे आपका मिलन देवों के लिए भी भला करनेवाला है और अन्य सभी के लिए भी। १५१

❀ वऴियुङ् गूऱि वरम्बिल वाशिहळ्
मॉऴियु मादवऩ् मॉय्मलर्त् ताडॊऴाप्
पिऴियुन्. देऩिऱ् पिऱङ्गरु वित्तिरळ्
पॉऴियुञ् जोलै विरैविऩिऱ् पोयिऩार् 152

वऴियुम् कूऱि—मार्ग बताकर; वरम्पु इल—निस्सीम; आचिकळ् मॊऴियुम्—आशीर्वाद देनेवाले; मातवऩ्—महान तपस्वी के; मॊय् मलर् ताळ् तॊऴा—घना-कमल-सम चरणों की पूजा करके; पिऴियुम् तेऩिल्—छत से निचोड़े जानेवाले शहद की धारा के समान; पिऱङ्कु—वहाँ रहनेवाली; अरुवि तिरळ्—सरिताओं की राशि; पॊऴियुम्—जहाँ जल बहाती थी, उस; चोलै—आश्रम को छोड़कर; विरैविनिल्—वेग के साथ; पोयिऩार्—आगे चले। १५२

ऐसा कहकर उन्होंने श्रीराम को अगस्त्याश्रम जाने का मार्ग भी बताया। उन्हें पुष्कल आशीर्वाद भी किया। श्रीराम, उनके घने कमल-समान चरणों की वन्दना करके वहाँ से चल पड़े। उस आश्रम में शहद की धारा के समान स्वच्छ सरिताओं की राशि जल बहा रही थी। श्रीराम उस आश्रम से निकलकर वेग के साथ चलने लगे। १५२

❀ आण्डहैय रव्वयि ऩडैन्दमै यऱिन्दाऩ्
ईण्डुवहै वेलैतुणै येऴुलह मॆय्द
माण्डवर दऩ्शरण् वणङ्गवॆदिर् वन्दाऩ्
नीण्डतमि ऴालुहै नेमियि ऩळन्दाऩ् 153

नेमियिऩ्—चक्रधारी के त्रिविक्रम अवतार के समान; उलकै—(ज्ञान) लोक को; नीण्ट तमिऴाल्—बहुत प्राचीन तमिऴ भाषा से; अळन्ताऩ्—नापनेवाले (अगस्त्य); आण् तकै—पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का; अ वयिऩ् अटैन्तमै—वहाँ आगमन; अऱिन्ताऩ्—जानकर; तुणै एऴु उलकम्—चौदहों भुवनों को; ईण्टु उवकै वेलै ऎय्त—इधर सुखसमुद्र में मग्न करते हुए; माण्ट वरतऩ्—महिमावान वरद श्रीराम; चरण् वणङ्क—अपने चरण में वन्दना करें, यह सुविधा करते हुए; ऎतिर् वन्ताऩ्—श्रीराम के सामने (अपने कुटीर से निकलकर) आये। १५३

(वाल्मीकी में श्रीराम का पहले अगस्त्य के भाई सुदर्शन के आश्रम में जाने की चर्चा है। अगस्त्याश्रम जाने से पहले सीताजी ने श्रीराम को बताया कि अकारण राक्षसों को मारना पाप है —यह भी वृत्तान्त है।) अब वे अगस्त्याश्रम आ गये। अगस्त्य जिन्होंने, जैसे त्रिविक्रम ने तीनों लोकों को नापा था, तमिऴ भाषा द्वारा ज्ञानलोक को मापा था यानी तमिऴ में ज्ञान को समाहित किया था, जान गये कि श्रीराम अपने आश्रम में पधारे हैं। वे स्वयं उनके सामने आ गये ताकि महिमावान वरद श्रीराम चौदहों भुवनों को सन्तोष-सागर में मग्न करते हुए उनके चरणों पर विनत हों। १५३

❀ पण्डवुणर् मूऴ्हित्तर् पडार्हळॆन्न वानोर्
ऎण्डव वॆमक्करुळ् हॆन्नक्कुऱै यिरप्पक्
कण्डोरुहै वारित्तन्मु हन्दुकड लॆल्लाम्
उण्डवर्हळ् पिन्नुमिऴ्ह वॆन्ऱलु मुमिऴ्न्दान् 154

वानोर्—देव; पण्टु—पहले; अवुणर्—असुर लोग; मूऴ्कित्तर्—समुद्र में डूबे; पटार्कळ्—नहीं मरेंगे; ऎन्न—सोचकर; ऎण् तव—सम्मान्य तपोधन; ऎमक्कु अरुळ्क—हम पर कृपा करें; ऎन कुऱै इरप्प—ऐसा कष्ट निवेदन करने पर; कण्टु—विषय समझकर; कटल् ऎल्लाम्—सातों समुद्रों को; ऒरु कै वारित्तन् मुकन्तु—एक हाथ में उठा लेकर; उण्टु—घूँट लेकर; पिन्न् अवर्कळ् उमिऴ्क ऎन्ऱलुम्—फिर उनके 'बाहर उगल दीजिए' कहने पर; उमिऴ्न्तान्—बाहर थूक दिया। १५४

पहले कभी, वृत्रासुर आदि समुद्र में जाकर छिप गये। देवेन्द्र और अन्य देव समझ गए कि ये समुद्र में छिपे हैं। उनको मारना असम्भव है। इसलिए वे अगस्त्य के पास आये और प्रार्थना की कि सम्मान्य तपोधन! हम पर कृपा कीजिए। अगस्त्य ने बात समझ ली। उन्होंने सातों समुद्रों का जल अपने चुल्लू में भरकर घूँट लिया। फिर देवों के प्रार्थना करने पर ही उसे थूका और समुद्रों को जल-भरा बनाया। ऐसे महिमावान थे वे। १५४

तूयकड नीरैमुळ् दुण्डवै तुरन्दान्
आयवव नालमरु मॆय्युडैय नन्नान्
मायविनै वाळवुणन् वादवितन् वन्मैक्
कायमिनि दुण्डुलहि नारिडर् कळैन्दान् 155

तूय कटल् नीरै—पवित्र सागर-जल को; मुऴुतु उण्टु—पूरा घूँटकर; अवै तुरन्तान्—उसे थूकनेवाले; आयवतुम्—वे ऋषि भी; आल् अमरुम् मॆय् उटैयन्—वट-बीज-सम छोटी आकृति वाले हैं; अन्नान्—उन्होंने; माय विनै—मायावी कार्य करनेवाले; वाळ् अवुणन्—तलवारधारी असुर; वातवि—वातापि नाम के; वन्मै—शक्तियुक्त; कायम् इनितु उण्टु—शरीर को सुखपूर्वक खाकर; उलकिन् आर् इटर्—संसार का घोर संकट; कळैन्तान्—दूर किया था। १५५

सागरजल सारा एक घूँट में पीनेवाले वे आकृति में बहुत छोटे थे और जैसे वट-बीज में उतना बड़ा वटवृक्ष अव्यक्त रहता है, उसी तरह उस आकृति के अन्दर बड़ी महिमा छिपी थी। उन्होंने मायावी, कपटकर्मा वातापि का शरीर भक्षण करके उसकी मृत्यु द्वारा लोकहित किया था। कथा इस प्रकार है— इल्वल और वातापि दो दानव भाई थे। इल्वल वातापि को मेष बनाकर मारता और उसे पका देता। वह ब्राह्मणों को श्राद्ध कहकर निमन्त्रण देता और खिलाने के बाद वातापि को बुलाता। वातापि ब्राह्मण का पेट चीरकर बाहर आ जाता। दोनों मृतक ब्राह्मण को खा जाते। यही चाल उन्होंने अगस्त्य से भी चली। पर अगस्त्य वातापि को जीर्ण कर गये। संसार की आफ़त मिटी। १५५

❀ योहमुरु पेरुयिर्‌ह डामुलैवु ऱामल्, एहुनॅऱि यार्देन मिदित्‌तडियि नेॅऱि
मेहत्तॅडु मालैतवळ्‌ विन्दमॅनुम् विण्डोय्, नाहमदु नाहमुऱ नाहमॅन निन्ऱान् 156

योकम् उरु पेर् उयिर्कळ् ताम्–उद्योगशील बड़ी संख्या के जीव; उलैवु उऱामल्–बिना हानि के; एकुम् नॅऱि यातु–जायँ, ऐसा मार्ग क्या है; ॲॅन–(देवों के) पूछने पर; अटियिन् मितित्तु एऱि–अपने चरणों को रखते हुए उसके ऊपर चढ़कर; मेकम् नॅट्ट मालै तवळ्–मेघ-मालाएँ जिस पर रेंगती थीं, उस; विन्तम् ॲॅन्नुम्–विन्ध्य नाम के; विण् तोय्–गगनस्पर्शी; नाकम् अतु–पर्वत को; नाकम् उऱ–नागलोक (पाताल) तक धँसाते हुए; नाकमॅन–एक गज के समान; निन्ऱान्–खड़े रहे। १५६

(विन्ध्य पर्वत सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से वैर करके ऊँचा बढ़ा और ग्रहों की गति रुक गयी और जीवों का उद्यम भी बेकार होने लगा।) देवों ने अगस्त्य से प्रार्थना की कि इन उद्यमी जीवों का आना-जाना कैसे हो? तब अगस्त्य उस पर पग धरकर चढ़े और गज के समान उसके ऊपर खड़े हो गये। तब वह पर्वत धँसकर नागलोक पहुँच गया। (नाकम् के तीन अर्थ हैं— पर्वत, पाताललोक और गज।)। १५६

❀ मूशरवु शूडुमुद लोनुरैयिन् मूवा, माशिऱव वेॅह्न वडादुदिशै मेन्नाळ्
नीशमुऱ वानिन्नॅडु मामलय नेरा, ईशनिह रायुलहु शीर्पॅऱ विरुन्दान् 157

मेल् नाळ्–पहले किसी दिन; वटातु तिचै–उत्तर दिशा; नीचम् उऱ–नीचे चली गई, तब; मूचु अरवु चटु मुतलोन–घने नागाभरण देव (शिवजी) ने; मूवा–वार्द्धक्य से अप्रभावित; माचु इल् तव–और अकलंक तपस्वी; एकु ॲॅन–तुम (दक्षिण) जाओ, कहा, तब; वानिन् नॅटु मा मलयम्–आकाश तक ऊँचे बढ़े मलयपर्वत; नेरा–पहुँचकर; ईचन् निकराय्–शिवजी की समान स्थिति में; उलकु चीर् पॅऱ–भूमि को सम बनाते हुए; इरुन्तान्–बस गये। १५७

(एक बार परमेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी जीवराशियाँ उत्तर में आ गयीं और भूमि का उत्तरी भाग नीचा हो गया। भूमि का सन्तुलन बिगड़ गया। तब) अनेक सर्पों को आभरण के रूप में धारण

करनेवाले शिवजी ने अगस्त्यजी से कहा कि हे वार्द्धक्य से अप्रभावित तेज वाले ! अकलंक तपस्वी ! आप दक्षिण में चले जाइए। अगस्त्य दक्षिण गए और गगन तक उन्नत मलय पर्वत में रह गये। भूमि समतल हो गयी और अगस्त्य शिवजी की समानता की स्थिति में मान्य हो गये। १५७

उळक्कुमरै नालिनु मुयर्नदुलह मोदुम्
वळक्कितु मदिक्कवैयि नुम्मरवि ऩाडि
निळऱ्पॊळि कणिच्चिमणि नॆऱ्ऱियुमिळ् शॆङ्गण्
तळऱ्पुरै शुडर्क्कडवु ळन्दतमिळ् तन्दान् 158

निळल् पॊळि–प्रकाश वरसानेवाला; कणिच्चि–परशु (तप्त-आयस ?); मणि नॆऱ्ऱि–सुन्दर भाल पर; उमिळ् चॆम् कण्–लाली फैलानेवाली आँख; तळल् पुरै चुटर्–अग्नि-सम तेज; कटवुळ्–इनसे युक्त ईश्वर ने; तनृत–जो दिया (सिखाया) था; तमिळ्–उस तमिळ को; उळक्कु मरै नालितुम्–परिश्रम के साथ अध्येय चारों वेदों; उलकम् उयर्नतु ओतुम् वळक्कितुम्–संसार के श्रेष्ठ ज्ञानियों के प्रयोग-प्रणालियों; मति कवैयितुम्–और अपनी बुद्धि से किये हुए अन्वेषण के आधार पर; मरपिऩ्–उचित परिपाटी के अनुसार; नाटि–खूब खोजकर; तन्तात–व्याकरण शुद्ध बनाकर दिया था। १५८

जाज्वल्यमान परशु, सुन्दर भाल का लाल नेत्र और अग्निसम तेजोमय रूप —इनसे युक्त शिवजी ने अगस्त्यजी को तमिळ सिखायी। (पाणिनी को संस्कृत —ऐसा पुराण कहता है।) तब अगस्त्य ने बहुत परिश्रम से अध्येय वेद, लोकरूढ़ी और अपनी मेधा-शक्ति का प्रयोग कर उचित रीति से अन्वेषण किया और तमिळ को व्याकरण-बद्ध श्रेष्ठ भाषा बना दिया। १५८

❀ विण्णिऩि निलत्तिनिल् विहऱ्पवुल हिऱ्पेर्
ऍण्णिऩि लिरुक्किनि लिरुक्कुमॆन यारुम्
उण्णिनै करुत्तिनै युऱप्पॆरुवॆ नालॆन्
कण्णिनि लॆन्नक्कॊडु कळिप्पुरु मनत्तान् 159

विण्णिऩिल्–देवलोक में; निलत्तिऩिल्–भूलोक में; विकऱ्प उलकिल्–इनसे जुदा अन्य लोकों में; पेर् ऍण्णितिल्–बड़े गणित-शास्त्रों में; इरुक्किऩिल्–वेदों के ऋचाओं में; इरुक्कुम् ऍऩ–विद्यमान हैं, ऐसा; यारुम् उळ् निऩै करुत्तिऩै–सभी जिसका मन में ध्यान करते हैं, उस परमतत्व को; ऍऩ् कण्णिऩिल्–अपनी आँखों के; उऱ पॆरुवॆऩ्–गोचर बनते देखूँगा; ऍऩ्ऩ कॊटु–यह विचारकर; कळिप्पु उऱु मनत्तान्–हर्षितमन हुए। १५९

ऐसे अगस्त्य अब अपार हर्ष से भर गये। क्या आज मुझे ऐसा भाग्य मिल रहा है जिससे वह तत्व, जिसको देवलोक, भूलोक और इनसे अलग अन्य लोकों के लोग वेदों और श्रेष्ठ गणित (तर्क) शास्त्रों में ढूँढ़ते

हैं और सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं, आज दृष्टिगोचर होगा ? इस कल्पना से ही उनके मन में आनन्द उमड़ आया । १५९

❀ इरैत्तमऱै	नालिनों	डियैन्दपिऱ	यावुम्
निरैत्तनॅऱि	ञानिनिमिर्	कल्लिनॅडु	नाळिट्
टुरैत्तुमय	नारुमऱि	यादपॉरु	ळोविन्
ऱुरैत्तदुवु	मालॅन्नु	मुणर्च्चियि	नुवप्पान् 160

इरैत्त मऱै–उद्गीत वेद; नालिन् ओटु–चारों के साथ; इयैन्त पिऱ यावुम्–लगे रहनेवाले अन्य सभी शास्त्र, पुराण आदि में; निरैत्त–अभ्यस्त; नॅऱि ञानम्–सन्मार्ग से प्राप्त ज्ञान की; निमिर् कल्लिल्–उत्कृष्ट कसौटी में; नॅटु नाळ् इट्टु उरैत्तुम्–अनेक दिन कसकर देखने पर भी; अयनारुम् अरियात–ब्रह्मदेव को भी अज्ञात; पॉरुळो–वह परवस्तु क्या; इन्ऱु–आज; उरैत्तु–मेरे साथ सम्भाषण करके; उतवुम् आल्–कृपा करेगी; अॅन्नुम्–इस; उणर्च्चियिन्–भावोद्वेग में; उवप्पान–बहुत आनन्दमग्न हुए । १६०

उद्गीत चारों वेद और अन्य शास्त्र, पुराण आदि का खूब अध्ययन, अन्वेषण करके उससे प्राप्त ज्ञान की कसौटी पर बहुत दिन कसकर देखने पर भी ब्रह्मादि देवों से भी जिस परतत्व को वस्तुतः समझना कठिन है, क्या वह परब्रह्म आज मेरे साथ वार्तालाप करेगा और मुझ पर कृपा करेगा ! हा ! कितना भाग्यवान हूँ ! इस भावोद्वेग में वे हर्षविह्वल हो गये । १६०

❀ उयन्दन	रिमैप्पिल	रुयिर्त्तनर्	तवत्तोर्
अन्दण	रऱत्तिनॅऱि	निन्ऱनर्ह	ळानार्
वॅन्दिऱ	लरक्कर्विड	वेर्मुद	लऱुप्पान्
वन्दनन्	मरुत्तुव	नॅनत्तनि	वलिप्पान् 161

वॅम् तिऱल् अरक्कर्–भयंकर और शक्तिमन्त राक्षस रूपी; विट वेर् मुतल् अऱुप्पान्–विषैली जड़ को जो निर्मूल करेंगे; मरुत्तुवन्–वे वैद्य; वन्त तन्–आये; इमैप्पु इलर्–निर्निमेष (सुर); उयन्तनर्–तर गये; तवत्तोर् उयिर्त्तनर्–तपस्वी लोग प्राण-रक्षित हो गये; अन्तणर् अऱत्तिन् नॅऱि–ब्राह्मण धर्म-मार्ग में; निन्ऱनर्कळ् आनार्–चलनेवाले हो गये; अॅन–ऐसा सोचकर; तनि वलिप्पान्–विशेष साहसपूर्ण हो गये । १६१

भयंकर और बलवान राक्षस रूपी विष की जड़ को ही उखाड़ने के लिए वैद्य के समान श्रीराम आ गये । अब निर्निमेष आँखों वाले देवों का संकट मिट गया और वे दुखनिवृत्त हो गए । तपस्वीजन जीवन्त हो गए । ब्राह्मण लोग धर्ममार्गगामी बने । ऐसी धारणा करके वे उत्साही और साहसी बने । १६१

एनैयुयि रामुलवै यावुमिडै वेवित्, तूनुह ररक्करुरु मिऱ्चुडु शिनत्तिन्
आन्व न्ऱलैक्कडि दवित्तुल हळिप्पान्, वानमळै वन्ददॅन मैन्दुरु मनत्तान् 162

एनै उयिराम्–अन्य जीव; उलवै यावुम्–सभी मुरझाए (भयातुर) लोगों को; वेवित्तु–उबालकर; ऊन्. नुकर्–उनका मांस खानेवाले; अरक्कर्–राक्षस रूपी; उरुमिल् चुट्टु चितत्तिन्–वज्र के समान जलानेवाले क्रोध की; कान् अळलै–दावाग्नि को; कदितु अवित्तु–सत्वर बुझाकर; उलकु अळिप्पान्–लोकों की रक्षा करने के लिए; वान मळै वन्ततु–मेघों से वारिश आई; ॲन्–ऐसा; मैन्तु उरु मनत्तान्–उत्साह-भरे मन वाले। १६२

राक्षस लोग, पहले ही उनसे डरकर मुरझाते रहे जीवों को पकड़कर उन्हे उबालकर खा लेते थे। वे गाज के समान जलानेवाली दावाग्नि थे। उस दावाग्नि को बुझाने के लिए आकाश के मेघों से गिरनेवाले जल के समान श्रीराम लोकरक्षणार्थ आ गए। यह सोचकर अगस्त्य उत्फुल्लमन हो गए। १६२

❀ कण्डन न्रिरामनै वरक्करुणै कूरप्
पुण्डरिह वाणयन नीरपॉळिय निन्ऱान्
ॲण्डिशैयु मेळ्ळहु मॅव्वुयिरु मुय्यक्
कुण्डिहैयि न्ऱिऱ्पॉरुविल् काविरि कॉण्ऱ्न्दान् 163

ॲण् तिचैयुम्–आठों दिशाएँ; एळ् उलकुम्–सातों लोक; ॲ उयिरुम्–कोई भी जीव; उय्य–तरें, इसके लिए; कुण्टिकैयिऩिल्–अपने मण्डलु में; पॉरुवु इल्–उपमा-रहित; काविरि कॉणर्न्तान्–कावेरी नदी को (ब्रह्मलोक से) जो लाये, वे अगस्त्य; इरामनै वर कण्टनन्–श्रीराम को आते हुए देखकर; करुणै कूर–कृपा के उमगते; पुण्टरिक–कमलपुष्प के समान; वाळ्–प्रकाशमान; नयनम्–आँखों से; नीर् पॉळिय–आँसू बरसाते हुए; निन्ऱान्–खड़े रहे। १६३

अगस्त्य आठों दिशाओं और सातों लोकों में रहनेवाले जीवों के उद्धार के लिए ब्रह्मलोक से अपने कमण्डलु में कावेरी नदी को लाये थे। ये श्रीराम को आते देखकर आनन्दबाष्पाकुल कमलनेत्रों के साथ श्रीराम के सामने खड़े रहे। १६३

❀ निन्ऱवनै वन्दनॅडि योन्डि पणिन्दान्
अन्ऱवनु मन्वॉडु तळीइयळ्ळुद कण्णान्
नन्ऱुवर वॅन्ऱुपल नल्लुरै पहर्न्दान्
ॲन्ऱुमुळ दॅन्ऱमि ळ्रियम्बियिशै कॉण्डान् 164

निन्ऱवनै–वैसे स्थित उनके; वन्त नॅटियोन्–उधर जो पधारे, वे विष्णु श्रीराम; अटि पणिन्तान्–चरणों पर नतमस्तक हुए; अन्ऱु–तब; ॲन्ऱुम् उळ–सदा से रहनेवाली; तॅन् तमिळ्–(दक्षिणी या) मधुसम तमिळ; इयम्पि–रचकर; इचै

कॊण्टान्–कीर्ति जो पा चुके; अवन्नुम्–उन्होंने; अन्पॊटु तऴीइ–प्रेम के साथ गले लगाकर; अऴुत कण्णान्–बाष्पपूरित आँखों वाले बनकर; नन्ऱु वरवु–शुभ हो आपका आगमन; ऎन्ऱु–कहकर; पल नल् उरै–अनेक शिष्टाचार-वचन; पकर्न्तान्–कहे। १६४

आत्मविभोर होकर जो खड़े रहे उनके चरणों को, श्रीराम ने, जो वहाँ पधारे और जो त्रिविक्रम देवता ही थे, नमस्कार किया। तब नित्य रहनेवाली मधुर तमिऴ देकर जो कीर्तिमान बने, उन अगस्त्य ने उन्हें स्नेह के साथ गले लगाकर नेत्रों से आनन्द का बाष्प बहाते हुए कहा कि आपका आगमन शुभ हो। १६४

❀ वेदियर्हळ् वेदमौऴि वेरुपल कूरक्
कादन्मिह निन्ऱौऴिर् कमण्डलुवि नन्नीर्
मादवर्हळ् वीशिनॆंडु मामलर्ह डूवप्
पोदुमण नाऱुकुऴिर् शॊलैहॊंडु पुक्कान् 165

वेतियर्कळ्–वेदज्ञ ब्राह्मण लोगों ने; वेऱु पल–विभिन्न अनेक; वेत मॊऴि कूऱ–वेद (के) मंगलाशासन किया; मातवर्कळ्–महान तपस्वियों ने; कातल् मिक–प्रेम के बढ़ते; निन्ऱु–सामने खड़े होकर; ऒऴिर् कमण्टलुविन्–शुभकारी कमण्डलु के; नल् नीर् वीचि–पवित्र जल को (मन्त्रोच्चारण के साथ) छिड़काकर; नॆटु मा मलर्कळ् तूव–सुन्दर फूलों को देर तक बरसाया; पोतु कणम् नाऱुम्–(तब अगस्त्य) तभी खुले हुए पुष्पों की गन्ध से पूर्ण; कुऴिर् चोलै कॊंटु–शीतल आश्रम में ले जाकर; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १६५

वेदज्ञ ब्राह्मणों ने विविध वेदों के मन्त्र उच्चारण करते हुए मंगलाशासन किया। महान तपस्वियों ने बढ़ते प्रेम के साथ अपने कमण्डलुओं से पवित्र जल लेकर मंगलदायी मंत्रों को कहते हुए श्रीराम पर छिड़का। तब अगस्त्य श्रीराम (आदि) को लेते हुए नवीन, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से पूर्ण अपने तपोवन में ले गये। १६५

❀ पॊरुन्दवम लन्बॊऴि लहत्तिनिदु पुक्कान्
विरुन्दव णमैत्तपिन् विरुम्बिनन् विरुम्बि
इरुन्दव मिऴैत्तवॆन दिल्लिडैयिल् वन्दॆन्
अरुन्दव मुडित्तनै यरुट्करश वॆन्ऱान् 166

अमलन्–निर्मल श्रीराम; पॊऴिल् अकत्तु–तपोवन में; पॊरुन्त–चाव के साथ ठहरने; इनितु पुक्कान्–आनन्द के साथ पहुँचे; अवन्–वे महर्षि; विरुम्पिनन्–प्यार के साथ; विरुन्तु अमैत्त पिन्–भोजन कराने के बाद; अरुट्कु अरच–कृपालु प्रभु; इरुम् तवम् इऴैत्त–बड़ी तपस्या जहाँ करता रहा; ऎन्तु इल् इटैयिल्–मेरे इस कुटीर में; विरुम्पि वन्तु–आप ही चाहकर आये; ऎन् अरुम् तवम् मुटित्तनै–और मेरी तपस्या को सम्पन्न बना दिया; ऎन्ऱान्–बोले। १६६

पवित्र पुरुष श्रीराम भी उधर सुख से रहने का विचार करके आनन्द के साथ गये। महर्षि ने उनको भोजनादि सत्कार करने के बाद उनसे कहा कि कृपालु प्रभु ! मेरे इस तपोवन में, जहाँ मैं लम्बे अरसे से तपस्या कर रहा हूँ, आप पधारे और मेरे कुटीर को अपनी इच्छा से पवित्र किया है। आपने ऐसा करके मेरे तप को सुसंपन्न कराया है ! मेरी तपस्या सफलीभूत हुई। १६६

❀ ऎन्ऱ्मुऩि यॆत्तॊऴु दिराम ऩिमैयोरुम्
निन्ऱतव मुऱ्ऱुनॆडि योरिनॆडि योरुम्
उन्ऱनरुळ् पॆऱ्ऱिलर्ह ळुन्ऩरुळ् शुमन्देऩ्
वॆन्ऱऩ ऩऩैत्तुलहु मेलिनियॆ नॆन्ऱाऩ् 167

ऎन्ऱ मुऩियै–ऐसा जिन्होंने कहा उन मुनि को; इरामऩ्–श्रीराम; तॊऴुतु–नमस्कार करके; इमैयोरुम्–देवता लोग; निन्ऱ तवम् मुऱ्ऱु–क्रियमाण तपस्या को जो पूरा कर चुके; नॆटियोरिन् नॆटियोरुम्–श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ वे तपस्वी भी; उन्ऱऩ् अरुळ् पॆऱ्ऱिलर्कळ्–आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके; उऩ् अरुळ् चुमन्तेऩ्–मैं आपकी कृपा का पात्र बना हूँ; अनैत्तुलकुम्–सारे लोकों को; वॆन्ऱऩऩ्–जीतनेवाला बन गया; मेल्–इससे श्रेष्ठ; इनि ऎन्–अब क्या चाहिए; ऎन्ऱाऩ्–कहा। १६७

ऐसा शिष्टाचारवचन कहनेवाले अगस्त्यजी को नमस्कार करके श्रीराम ने कथन किया कि हे महर्षि ! देव क्या, अपनी तपस्या को सुसंपन्न कर चुके महान से महान तपस्वी क्या —वे भी आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके हैं। लेकिन मैं आपकी कृपा का पात्र बन गया। इसलिए सर्वलोक-जयी हो गया। इससे बढ़कर कौन सा भाग्य है, जो मैं पाना चाहूँ ? । १६७

❀ तण्डह वऩत्तुऱैदि यॆन्ऱुरै तरक्कॊण्
डुण्डुवर वित्तिशै यॆऩप्पॆरि दुवन्देन्
ऎण्डहु गुणत्तिऩै यॆऩक्कॊडुयर् शॆन्ऩित्
तुण्डमदि वैत्तवऩै यॊत्तमुनि शॊल्लुम् 168

उयर् चॆन्ऩि–अपने श्रेष्ठ सिर पर; तुण्ट मति–कलाचन्द्र को; कॊटु–लेकर; वैत्तवऩ्–धरनेवाले; ऒत्त–(शिवजी से) तुल्य; मुऩि–महर्षि; ऎण् तकु कुणत्तिऩै–प्रशंसनीय गुण वाले; तण्टक वऩत्तु उऱैति–दण्डकवन में रहते हैं; ऎन्ऱु–ऐसा; उरै तर कॊण्टु–वचन के कहे जाते सुनकर; उण्टु वरवु इ तिचै–आना होगा आपको इस दिशा में; ऎन–यह निश्चय करके; पॆरितु उवन्तेऩ्–बहुत आनन्दित हुआ; ऎन–कहा और; चॊल्लुम्–और आगे कहा। १६८

अपने सिर पर कलाचन्द्र धारण करनेवाले शिवजी-सदृश अगस्त्य ने कहा कि सबसे प्रशंसनीय गुण वाले श्रीराम ! यहाँ आगत मुनियों से यह समाचार मिला था कि आप दण्डक वन में वास कर रहे हैं। तब

सोचा कि इसी ओर आपका आगमन संभाव्य है। इस विचार से मैं बहुत आनन्दित हुआ। वे आगे बोले। १६८

❀ ईण्डुरैदि यैयविन्नि यिव्वयि न्निरुन्दाल्
वेण्डियत्त मादवम् विरुम्बिनै मुडिप्पाय्
तूण्डुशिन्न वाणिरुदर् तोन्ऱियुळ रॆन्ऱाल्
माण्डुह मलैन्दॆमर् मन्नत्तुयर् तुडैप्पाय् 169

ऐय–प्रभु; ईण्टु उऱैति–यहाँ ठहरिए; इ वयिन् इरुन्ताल्–इधर रहेंगे तो; इन्नि–आगे; वेण्टियत्त मातवम्–जो चाहेंगे वे महान तप; मुटिप्पाय्–सम्पन्न कर सकोगे; तूण्टु चिन–उकसाए हुए क्रोध के साथ; वाळ् निरुतर्–तलवारधारी राक्षस; तोन्ऱि उळर् ऎन्ऱाल्–प्रकट हो आयँगे तो; माण्टु उक–उनको मारकर गिराते हुए; मलैन्तु–उनसे लड़कर; ऎमर्–हम जैसों का; मन्न तुयर्–मन के क्लेश को; तुटैप्पाय्–दूर कर सकोगे। १६६

प्रभु ! यहीं ठहरिए। इधर रहने से आपको सुविधा होगी। आप अपने इच्छित तप, व्रत आदि का पालन कर सकेंगे। और भी उकसाये क्रोध वाले तलवारधारी राक्षस इधर प्रकट होंगे तो आप उन्हें मार मिटाकर हमारी रक्षा कर सकेंगे और हम जैसे मुनियों का क्लेश दूर कर सकेंगे। १६९

❀ वाळुमऱै वाळुमन्नु नीदियऱम् वाळुम्
ताळुमिमै योरुयर्वर् तान्नवर्ह डाळ्वार्
आळियुळ वन्बुदल्व वैयमिलै मॆय्ये
एळुलहम् वाळुमिनि यिङ्गुऱैदि यॆन्ऱान् 170

आळि उळवन् पुतल्व—आज्ञाचक्र-कृषक चक्रवर्ती के पुत्र; इनि मऱै वाळुम्–अब वेद जी गए; मन्नु नीति वाळुम्–मनुनीति स्थिर हो गई; अऱम् वाळुम्–(बत्तीस) धर्म जी जायँगे; एळ् उलकम् वाळुम्–सातों लोक जी जाएँगे; ताळुम् इमैयोर्–अवनत देवता लोग; उयर्वर्–उन्नत हो जायँगे; तान्नवर्कळ् ताळ्वार्–दानव अवनत हो जायँगे; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; मॆय्ये–यह सत्य है; इङ्कु उऱैति–यहाँ वास कीजिए; ऎन्ऱान्–(अगस्त्य) ऐसा बोले। १७०

आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती के पुत्र ! आगे वेद जी जायँगे। मनुनीति सुस्थापित हो जायगी। (बत्तीस ?) धर्म टिक जायँगे। सातों लोक पनपेंगे। अवनत देवता लोग उन्नत हो जायेंगे और राक्षस गिर जायँगे। हाँ, शक नही। यह ध्रुवसत्य है। इसलिए आप यहीं वास कीजिए। १७०

❀ शॆरुक्कुडै यरक्कर्पुरि तीमैशिदै वॆय्दन्
तरुक्कळि दरक्कडिदु कॊल्वदु शमैन्देन्

वरुक्कमऱ़ै योयवर् वरुन्दिशैयिन् मुन्दुऱ़्
ऱिरुक्कैनल नॆऱ़्करुळ्ह वॆन्ऱ़न निरामन् 171

इरामन्–श्रीराम ने; वरुक्क मऱ़ैयोय्–अंग-उपांगों के साथ वेदों के ज्ञाता; चॆरुक्कु उऱ़ै अरक्कर्–घमण्डी राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै–अत्याचार; चितैवु ऍय्त–उनको मिटाते हुए; तरुक्कु अऴि तर–गर्व चूर करते हुए; कट्टितु कॊल्वतु चमैन्तेन्–शीघ्र उनको मारने का संकल्प कर लिया है; अवर् वरुम् तिचैयिल्–उनके आने की दिशा में; मुन्तु उऱ़्ऱ़ु–पहले जाकर; इरुक्कै–प्रतीक्षा में रहना; नलन्–अच्छा होगा; ऍऱ़्कु अरुळ्क–हमें आज्ञा देने की कृपा करें; ऍन्ऱ़नन्–यह इच्छा सुनाई। १७१

श्रीराम ने अगस्त्य से कहा कि हे श्रेणीबद्ध वेदों के ज्ञाता! मैंने इन गर्वीले राक्षसों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए उनके घमण्ड को चूर करते हुए उन्हें मिटाने का संकल्प किया है। इसलिए उनके आने के मार्ग में सामने जाकर प्रतीक्षा में रहना सुविधाजनक होगा—ऐसा समझता हूँ। आप मुझे आशीर्वाद के साथ आज्ञा दें। १७१

❀ विऴुमियदु शॊऱ़्ऱ़नैयिव् विल्लिदिवण् मॆन्नाळ्
मुळ्मुदल्वन् वैत्तुळदु मूवुलहुम् यानुम्
वऴिपड विरुप्पदिदु तन्नैवडि वाळिक्
कुऴुवळुविल् पुट्टिलॊडु कोडियॆन नल्हि 172

विऴुमियतु चॊऱ़्ऱ़ै–श्रेष्ठ बात कही; इवण्–यहाँ; इ विल् इतु–यह धनु; मॆल् नाळ्–पहले किसी दिन; मुळु मुतल्वन् वैत्तु उळतु–परात्पर ब्रह्म ने रखा था; मू उलकुम्–त्रिभुवन; यानुम्–और मैं; वऴि पट इरुप्पतु–इसकी पूजा करते हैं, ऐसा; इतु तन्नै–इसको; वटि वाळि कुऴु–तीक्ष्ण शर-राशि; वऴुवु इल्–अक्षय; पुट्टिल् ऒटु–तूणीर के साथ; कोटि–ग्रहण कर लें; ऍन–कहकर; नल्कि–उन्हें प्रदान करके। १७२

अगस्त्यजी ने उत्तर में कहा कि हे श्रीराम! आपने अच्छा सोचा है! यहाँ यह जो धनुष है, यह परात्पर विष्णुदेव के पास रहा था। यह मेरे और त्रिभुवन द्वारा पूजित है। इसको और तीक्ष्ण अनेक शरों को अक्षय तूणीरों के साथ आप ग्रहण कर लीजिए। यह कहकर उन्होंने उनको श्रीराम के पास समर्पित किया। १७२

❀ इप्पुवन मुऱ़्ऱ़ुमॊरु तट्टिनिडै यिट्टाल्
ऒप्पुर विऱ़्ऱ़ैन वुरैप्परिय वाळुम्
वॆप्पुरुवु पॆऱ़्ऱ़वरन् मेरुवरै विल्ला
मुप्पुर मॆरित्तदनि मॊय्हणैयु नल्हा 173

इ पुवतम् मुऱ़्ऱ़ुम्–इस भुवन भर को; ऒरु तट्टिन् इटै–एक (तराजू के) पलड़े में रखकर; इट्टाल–(इसको दूसरे पलड़े में) रखें तो; ऒप्पु वरविऱ़्ऱ़ु ऍन–समान

होंगे; उरैप्पु अरिय–ऐसा कहने न योग्य; वाळम्–एक तलवार को; वॅप्पु उरुवु पॅरुइ–अग्नि रूप के; अरन्–हरदेव ने; मेरु वरै विल्ला–मेरुपर्वत को धनुष बनाकर; मुप्पुरम् ऍरितुत–त्रिपुर को जिससे जलाया; तत्ति मॉय् कणैयुम्–उस अनुपम सारयुक्त शर को भी; नल्का–देकर। १७३

और भी एक तलवार है। उसे तराजू के एक पलड़े में और तीनों लोकों को एक पलड़े में रखेंगे तो दोनों समान होंगे —ऐसा कहना सही नहीं होगा क्योंकि तलवार तीनों लोकों की विजय करने की शक्ति रखती है और महिमामय है। उन्होंने वह तलवार श्रीराम के पास दी। और अग्निमूर्ति शिवजी ने महामेरु को धनुष बनाकर जिस अप्रतिम शर से त्रिपुरदाह कराया था, उस बाण को भी उनके पास दिया। १७३

❀ ओङ्गुमर नोङ्गिमलै योङ्गिमण लोङ्गिप्
पूङ्गुलै कुलावुहुळिर् शोलैपुडै विम्मित्
तूङ्गुदिरै यारुतवळ् शूळलदोर् कुन्रिन्
पाङ्गरुळ दालुरैयुळ् पञ्जवडि मञ्ज 174

मञ्च–राजकुमार; ओङ्कु मरन् ओङ्कि–ऊँचे पेड़ जहाँ ऊँचे उगे हैं; मलै ओङ्कि–उन्नत पर्वत हैं; मणल् ओङ्कि–बालू के ऊँचे टीले पाये जाते हैं; पूम् कुलै कुलावु–पुष्पों के गुच्छे मिलते हैं; कुळिर् चोलै–शीतल उपवन; पुटै विम्मि–पार्श्वों में उगे रहते हैं; तूङ्कु तिरै आरु–हिलनेवाली लहरों से युक्त नदियाँ; तवळ्–बहती है; चूळलतु–ऐसे पार्श्वस्थलों के; ओर् कुन्रिन् पाङ्कर्–एक पर्वत के पास; पञ्चवटि–पंचवटी नाम का; उरै उळ्–एक वासयोग्य स्थान; उळतु–है। १७४

यह सब देने के बाद अगस्त्य ने सुझाया कि श्रीराम! पंचवटी नाम का एक स्थान है। वहाँ ऊँचे तरु हैं, उन्नत पर्वत है, उच्च सिक्ता-टीले हैं। वह ऐसे पर्वत पर है, जिसके पार्श्वों में पुष्प-भरे उपवन हैं और झलमलाती लहरों वाली नदियाँ बहती हैं। वह पंचवटी वासयोग्य स्थान है। १७४

कन्नियिळ वाळैकनि यीवकदिर् वालिन्, शॅन्नॅलुळ तेनॊळ्हु पोदुमुळ दॅय्वप्
पॊन्नियॅन लायपुन लारुमुळ पोदा, अन्नमुळ पॊन्निवळॊ डन्बिन्विळै याड 175

कन्नि इळ वाळै–बाल-कदलियाँ; कनि ईव–फल देनेवाली हैं; कतिर् वालिन्–प्रकाशमय पूँछ जैसे छोटे भाग के साथ; चॅन्नॅल् उळ–शालि के धान मिलेंगे; तेन् ऑळ्कु पोतुम् उळ–मधु बरसानेवाले पुष्प है; तॅय्व पॊन्नि ऍनल् आय–दिव्य कावेरी नदी के ही समान रहनेवाली; पुनल् आरुम् उळ–अच्छे जल की नदियाँ भी हैं; पॊन् इवळॊटु–श्रीलक्ष्मी इनके साथ; अन्पिन् विळैयाट–प्रेम के साथ मनोरंजन करने के लिए; पोता–सारस; अन्नम्–और हंस पक्षी; उळ–है। १७५

और भी वहाँ आपको कदली के बालवृक्ष मिलेंगे, जो मधुर फल दिलाएँगे। दुम के समान पतले अंग के साथ रहनेवाले लाल रंग के शालि के धान वहाँ पाये जाते हैं। मधु बरसानेवाले नवीन पुष्प हैं। दैवी

कावेरी नदी के समान पवित्र और मनोरम जल वाली नदियाँ हैं। इन श्रीलक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ प्रेमसहित खेलने के लिए सारस और हंस पक्षी रहते हैं। १७५

❀ ऐहियिनि यव्वयि निरुन्दुरैमि नॆन्ऱान्
मेहनिऱ वण्णनुम् वणङ्गिविडै कॊण्डान्
पाहनैय शॊल्लियॊडु तम्बिपरि विऱ्पिन्
पोहमुनि शिन्दैतॊड रक्कडिदु पोऩान् 176

इनि–आगे; अ वयिन् एकि–उधर जाकर; इरुन्तु उऱैमिन्–रहकर वास कीजिए; ऎन्ऱान्–(अगस्त्य ने) कहा; मेक निऱ वण्णतुम्–मेघवर्ण श्रीराम ने भी; वणङ्कि–नमन करके; विटै कॊण्टान्–विदा ली; पाकु अनैय चॊल्लि ऒटु–चासनी-सम बोली वाली श्री सीताजी के साथ; तम्पि–अनुज लक्ष्मण भी; परिविन्–श्रद्धा के साथ; पिन् पोक–उनका पीछा करते गये; मुनि चिन्तै तॊटर–(अगस्त्य) मुनि का मन भी पीछा करता चला; कटितु पोऩान्–वे शीघ्र वहाँ से गये। १७६

आप आगे वहीं जाकर वास करें। —अगस्त्य ने कहा। मेघवर्ण श्रीराम ने भी उनको नमस्कार करके उनसे विदा ली। जब वे जाने लगे, तो चासनी-सम बोली वाली देवी सीताजी और कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण उनके पीछे गये। अगस्त्य का मन भी उनका पीछा करता गया। श्रीराम शीघ्र चले। १७६

4. शडायु काण् पडलम् (जटायु-दर्शन पटल)

❀ नडन्दनर् कावदम् बलवु नन्नदि
किडन्दन निन्ऱन गिरिहळ् केण्मैयिल्
तॊडर्न्दन तुवन्ऱिन शूळल् यावैयुम्
कडन्दनर् कण्डनर् कळुहिन् वेन्दये 177

कावतम् पलवुम्–अनेक 'काद' (कोस) दूर; नटन्ततर्–पैदल चलकर; किटन्तत नल् नति–मार्ग में पड़ी रही अनेक श्रेष्ठ नदियाँ; निन्ऱत–(अकेले) स्थित; केण्मैयित् तॊटर्न्तत–मित्रों के समान परस्पर मिले रहे; किरिकळ्–अनेक पर्वत; तुवन्ऱिन चूळल् यावैयुम्–(बीच-बीच में) घने उपवन; कटन्ततर्–पार करके; कळुकिन् वेन्तै–गृध्रराज को; कण्टतर्–(उन्होंने) देखा। १७७

श्रीराम आदि तीनों अनेक कोस दूर गये। रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ी थी। पर्वत और पर्वतश्रेणियाँ पाई गयी। अनेक उपवन मिले। उन सबको पार करके उन्होंने जटायु के दर्शन किये। १७७

❀ मुन्दॊरु करुमलै मुहट्टु मुन्ऱिलिल्
शन्दिर नॊळियॊडु तळवच् चात्तिय

अन्दमिल् कलैहड लमरर् नाट्टिय
मन्दर गिरियॆन्न वयङ्गु वान्ऱनै 178

मुन्नु–पहले; अमरर्–सुर; अन्तम् इल्–अपार; कलै कटल्–गर्जनशील सागर में; चन्तिरन् ऑळि ऑटु तळुव–चन्द्र-किरण के साथ मिलाकर; चात्तिय नाट्टिय–आधार-स्तम्भ के रूप में स्थापित; मन्तर किरि ॲन–मन्दरपर्वत के समान; ऑरु करु मलै मुकट्टु मुन्ऱिलिल्–एक काली गिरि की चोटी पर खुले थल में; वयङ्कुवान् तनै–शोभायमान उनको। १७८

वे (जटायु) उस मन्दरपर्वत के समान शोभित थे, जिसको अमृतमंथन के उस समय गर्जनशील सागर-मध्य चन्द्र की किरणों से लगाते हुए आधार-स्तम्भ के रूप में गाड़ दिया गया था। वे एक काले (या बड़े) पर्वत की चोटी पर आँगन-सम खुले थल में शान के साथ विराजमान थे। १७८

उरुक्किय शुवणमॊत् तुदयत् तुच्चिशेर्
अरुक्कनि निळल्पडॆत् तलङ्गु तिक्कॆलाम्
तॆरिप्पुरु शॆऱिशुडर्च् चिऱैयि नाऱ्ऱिशै
विरित्तिरुन् दन्नॆन विळङ्गु वान्ऱनै 179

उरुक्किय चुवणम् ऑत्तु–पिघले हुए सोने के समान; उतयत्तु उच्चि चेर्–उदयगिरि के शृंग पर पहुँचे हुए; अरुक्कनिल्–सूर्य के समान; निळल् पटैत्तु–कान्ति से युक्त होकर; अलङ्कु तिक्कु ॲलाम्–अन्धकार के कारण व्यथित रहनेवाली सभी दिशाओं को; तॆरिप्पु उरु–प्रकाश दिलानेवाले; चॆऱि चुटर् चिऱैयिनाल्–घनी दीप्ति वाले पक्षों को; तिचै विरित्तु इरुन्ततन्–सभी दिशाओं में फैलाये रहे; ॲन–ऐसा कहने योग्य रीति से; विळङ्कुवान् तनै–दृश्यमान उनको। १७९

वे पिघला-स्वर्ण-सम थे। उदयगिरि पर आये सूर्य के समान कान्ति-युक्त थे। अन्धकार से आक्रान्त दिशाओं में प्रकाश करते हुए मानो वे अपने पक्ष फैलाए हुए थे, ऐसे दृश्यमान उनको श्रीराम आदि ने देखा। १७९

वानिऱ विशुम्बॆळिऱ् मऱैयत् तन्मणिक्
कानिऱच् चेयॊळि कतुवक् कण्णहल्
नीनिऱ वरैयिनिऱ् पवळ नीळ्हॊडि
पोनिऱम् बॊलिन्दिडप् पॊलिहिन् ऱान्ऱनै 180

वाल् निऱ विचुम्पु–विशाल और प्रभावान आकाश की; ऍळिल् मऱैय–छटा को छिपाते हुए; कण् अकल्–विस्तृत; नील् निऱ वरैयित्तिल्–नीलवर्ण पर्वत पर; तन् काल् निऱ–अपने पैरों का रंग; मणि चॆय् ऑळि–लाल सुन्दर आभा; कतुव–फैलाते हुए; पवळ नीळ् कॊटि पोल्–प्रवाल की लम्बी लताओं के समान; निऱम् पॊलिन्तिट–वहाँ शोभायमान करते हुए; पॊलिकिन्ऱान् तनै–तेज के साथ रहनेवाले उनको। १८०

उनके तेज के सामने विशाल और आभायुक्त आकाश की शोभा छिप

गयी थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर रहे थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान उनको; । १८०

❀ तूय्मैय निरुङ्गलै तुणिन्द केळ्वियन्
वाय्मैयन् मरुविलन् मदियिन् कूर्मैयन्
आय्मैयिन् मन्दिरत् तरिञ्ञ नामॅन्नच्
चेय्मैयि नोक्कुरु शिरुह णान्रनै 181

तूय्मैयन्–शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळ्वियन्–गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के साथ श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयन्–सत्यसंध; मरु इलन्–निर्दोष; मतियिन् कूर्मैयन्–सूक्ष्ममति; आय्मैयिन्–दीर्घदर्शी; मन्तिरत्तु अरिञ्ञन् आम् ॲन्न–मंत्रणा में कुशल मन्त्री के समान; चेय्मैयिन् नोक्कु उरुम्–दूर तक देख सकनेवाले; चिरु कण्णान् तनै–छोटे नेत्रों वाले उनको। १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त थे। सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले मंत्रणा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी आँखें थीं। १८१

❀ वीट्टिवा ळवुणरै विरुन्दु कूर्रिनै
ऊट्टिवीऴ् मिच्चिरा नुण्डु नाडॊरुम्
तीट्टिमे विन्दिरन् शिरुहण् यानैयिन्
तोट्टिपोर् रेय्न्दॊळिर् तुण्डत् तान्रनै 182

वाळ् अवुणरै–तलवारधारी दानवों को; वीट्टि–मारकर; कूर्रिनै विरुन्तु ऊट्टि–यम को दावत में खिलाकर; वीऴ्–बचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्–जूठन को; नाळ् तॊरुम् उण्टु–प्रतिदिन खाकर; चिरु कण् यानैयिन् मेवु इन्तिरन्–छोटी आँखों वाले (ऐरावत-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्–अंकुश के समान; तीट्टि–पैनायी जाकर; तेय्न्तु ऑळिर्–उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्टत्तान् तनै–चोंच के उनको। १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे और बचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचे छोटी-छोटी आँखों वाले ऐरावत गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई थी और उससे चमकदार लगती थीं। १८२

❀ कोळिरु नालिनो डॊन्रु कूडिय, आळुरु तिहिरिबो लारत् तान्रनै
नीळुयर् मेनियि तॆर्रि मुर्रिय, वाळिर विियिर्पॊलि मवुलि यान्रनै 183

इरु नालिन् ओटु–दो के चार के साथ; ऑन्रु कूटिय–एक मिलाकर (नौ) रहे; कोळ्–ग्रहों को; आळ् उरु तिकिरि पोल्–चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरत्तान् तनै–हार से अलंकृत उनको; नीळ् उयर् मेतियिन्–विशाल और दीर्घ शरीर के; नॅर्रि–शिखर पर; मुर्रिय–रखे गये; वाळ् इरवियित्–उज्ज्वल सूर्य के समान; पॉलि–शोभनेवाला; मवुलियान् तनै–किरीटधारी को। १८३

उनके वक्ष पर एक हार था। वह शिशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था। उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था। ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा)। १८३

❀ शॉर्पङ्ग मुरनिमि रिशैयिन् शुम्मैयै, अर्पङ्ग मुरवरु मरुणन् शॅम्मलैच्
चिर्पङ्गॉळ् पहलॅनक् कडिदु शॅन्रुतीर्, कर्पङ्ग ळॅनैप्पल कण्डु ळान्रनै 184

चॉल् पङ्कम् उर–शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्मैयै–उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उर–अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्–आनेवाले; अरुणन् चॅम्मलै–अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चॅन्रु तीर्–शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिर्पम् कॉळ् पकल् ॲन्न–अल्प दिन के समान; कर्पङ्कळ् ॲनै–कल्प कहलानेवाले काल; पल–अनेक; कण्टु उळान् तनै–जो देख चुके, उनको। १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे। वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे। उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे। ऐसे उनको; । १८४

❀ ओङ्गुयर् नॅडुवरै यॉन्रि निन्रदु, ताङ्गल दिरुनिलन् दाळ्न्दु ताळ्वुर
वीङ्गिय वलियिन निरुन्द वीरनै, आङ्गव रणुहिन रयिर्क्कुम् जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्–ऊँचे बढ़े हुए; नॅटु वरै ऑन्रित्–बड़े पर्वत पर; निन्रु–रहकर; अतु ताङ्कलतु–वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्न्तु–विशाल भूमि में धँसकर; ताळ्वु उर–अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलियिनिन् इरुन्त–बढ़े हुए बल के साथ रहे; वीरनै–वीर जटायु को; आङ्कु–वहाँ; अवर्–वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्–शंकितमन होकर; अणुकिनर्–उनके समीप गए। १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे। वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर धँस गया था। उतने वलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया। १८५

❀ इरुदियैत् तनवयि नियर्र वॅय्दिनान्
अरिविलि यरक्कना मल्ल ना मॅनिल्
ॲरुळ्वलिक् कलुळने यॅन्न वुन्नियच्
चॅरिहल्ल् वीररुम् जॅयिर्त्तु नोक्किनार् 186

चॅऱिकऴल् वीररुम्–ठोस पायलधारी वीर; तन्न् वयिऩ्–अपना; इऱुतियै–अन्त; इयऱ्ऱ–कराने के लिए; अॅय्तिऩाऩ्–जो आया; अऱिवु इलि अरक्कऩ् आम्–यह बुद्धिहीन राक्षस है; अल्लऩ् आम्–नहीं; अॅतिल–तो; अॅऱुऴ् वलि–अत्यधिक बलशाली; कलुऴऩ् आम्–गरुड़ होगा; अॅऩ्ऩ उऩ्ऩि–ऐसा सोचकर; चॅयिर्त्तु–कोप करके; नोक्किऩार्–उनको देखा। १८६

भारी चरणवलय-धारी वीरों ने अनुमान लगाया— "यह अपना अन्त कराने के लिए आया हुआ एक राक्षस ही होगा ! नही तो वह बलवान गरुड़ हो !" उन्होंने जटायु को खूब देखा। १८६

❀ वत्तैहऴल् वरिशिलै मदुहै मैन्दरै
अत्तैयवऩ् ऱानुङ्गण् डयिर्त्तु नोक्किऩाऩ्
विनैयऱु नोऩ्बिन रल्लर् विल्लिनर्
पुत्तैशडै मुडियिनर् पुलव रोवॆऩ्ऩा 187

अत्तैयवऩ् तानुम्–जटायु भी; वत्तै कऴल् वरि चिलै–पहनी हुई पायल और बन्धनयुक्त धनु के धारक; मतुकै मैन्तरै–बलवान राजकुमारों को; कण्टु–देखकर; वित्तै अऱ नोऩ्पिनर् अल्लर्–कर्म काटने के व्रती (तपस्वी) नहीं हैं; विल्लिनर्–धनुर्धर है; पुत्तै चटै मुटियिनर्–निर्मित जटाधारी है; पुलवरो–देव हैं क्या; अॅऩ्ऩ–ऐसा अयिर्त्तु–सन्देह करके; नोक्किऩाऩ्–देखा। १८७

जटायु ने भी पायलधारी धनुर्द्धर वीरों को देखा। प्रतापी उनको देखकर जटायु के मन में प्रश्न उठा कि ये कौन है ? 'ये कर्मनाशार्थ तप करनेवाले तपोव्रती नहीं है !- उनके हाथों में चाप है और सिरों पर जटा है। क्या ये देवता है ?' सन्देह के साथ उन्होंने उन पर दृष्टि दौड़ाई। १८७

❀ पुरन्दरऩ् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्, निरन्दर नोक्कुवॆऩ् ऩेमि यानुमव्
वरन्दरु मिऱैवनु मऴुव लाळनुम्, करन्दिल रॆऩ्ऩैया नॆऩ्ऱुङ् गाण्बॆनाल् 188

पुरन्तरऩ् मुतलिय पुलवर् यारैयुम्–पुरन्दर आदि सभी देवों को; निरन्तरम् नोक्कुवेऩ्–प्रतिदिन देख रहा हूँ; नेमियाऩुम्–चक्रधारी विष्णु और; अ वरम् तरु इऱैवऩुम्–वे वरदायी भगवान ब्रह्मा और; मऴुवलाळऩुम्–'मऴु' नामक (परशु ?) हथियारधारी (शिवजी) के भी; याऩ् अॅऩ्ऱुम् काण्पॆऩ् आल्–मैं रोज दर्शन करता हूँ, इसलिए; अॅऩ्ऩै करन्तिलर्–मुझसे अपना रूप नहीं छिपाएँगे। १८८

जटायु आगे भी सोचने लगे। पुरन्दर आदि देवों को तो मैं रोज देख रहा हूँ। चक्रधारी विष्णु, भक्तों को इच्छित वर देनेवाले ब्रह्मा, मऴु (परशु या तप्तलौह) आयुधधारी शिव —इनके तो प्रतिदिन दर्शन कर रहा हूँ। वे हमसे अपना यथार्थ रूप नही छिपा सकते। १८८

❀ कामऩॆऩ् बवत्तैयुङ् गण्णि नोक्किऩॆऩ्
तामरैच् चॆङ्गणित् तडक्कै वीरर्हळ्

पूमरु	पॊलङ्गळऱ्	पॊडियि	ऩॊडुमॊप्
पामलऩ्	वरुवव	रारॆऩ्ऱॊ	लामिवर् 189

कामऩ् ऎऩ्पवऩैयुम्–मन्मथ को भी; कण्णिऩ् नोक्किनेऩ्–आँखों से देखा है; तामरै चॆम् कण्–कमलदल-सम लाल आँखें; तट कै–दीर्घ भुजाएँ; इ वीरर्कळ्–(इनसे युक्त) इन वीरों के; पू मरु पॊलऩ् कऴल्–कमलगन्ध-युक्त उज्ज्वल चरणों की; पॊटियिऩॊटुम्–धूलि के साथ भी; ऒप्पु आम् अलऩ्–तुल्य नहीं हो सकता; वरुपवर् इवर्–आनेवाले ये; आर् कॊल्–कौन हैं। १८९

मैंने कामदेव को भी अपनी आँखों से देखा है। वह मन्मथ कमलदल के समान अरुण आँखें और दीर्घ विशाल हाथों के साथ मनोरम आभायुक्त इनके पास पायलधारी चरण पर लगी धूलि से भी तुल्य नहीं हो सकता। फिर ये कौन हैं, जो इस तरफ़ आ रहे हैं ? । १८९

❀ उलहॊरु	मूऩ्ऱुन्दम्	मुडैमै	याक्कुऱुम्
अलहऱु	मिलक्कण	ममैन्द	मॆय्यिऩर्
मलर्महट्	कुवमैया	ळॊडुम्	वन्दविच्
चिलैवलि	वीररैत्	तॆरिहि	लेऩॆना 190

उलकु ऒरु मूऩ्ऱुम्–स्वर्ग, भूतल और पाताल के तीनों लोकों को; तम् उटैमै आक्कुऱुम्–अपने अधीन बना सकनेवाला; अलकु अरुम्–अमाप; इलक्कणम् अमैन्त–सामुद्रिका लक्षणों से युक्त; मॆय्यिनर्–दिव्य रूप वाले हैं; मलर् मकट्कु उवमैयाळॊटुम्–कमलजा से तुल्य देवी के साथ; वन्त–जो इधर आये हैं; इ चिलै वलि वीररै–इन धनुर्धर बलवान वीरों को; तॆरिकिलेऩ्–जान नहीं पाता; ऎऩा–कहकर। १९०

इनके दिव्यशरीर अपार लावण्यमयी हैं। सभी सामुद्रिका लक्षणों के अनुसार सुघड़ बने हैं। उनकी सुन्दरता तीनों लोकों को अपने अधीन करनेवाली है। इनके साथ जो देवी आती हैं, वह कमलजा लक्ष्मीदेवी के समान हैं। ये वीर धनुर्धर कौन हैं ? मैं समझ नहीं पाता। १९०

❀ करुमलै	शॆम्मलै	यऩैय	काट्चियर्
तिरुमहिऴ्	मार्बिऩर्	शॆङ्गण्	वीरर्दाम्
अरुमैशॆय्	गुणत्तिऩॆऩ्	ऱुणैव	नाऴियाऩ्
ऒरुवऩै	यिरुवरु	मॊत्तु	ळाररो 191

करुमलै चॆम्मलै अऩैय–काली गिरि और लाल गिरि के समान; काट्चियर्–दर्शन देनेवाले; तिरु मकिऴ् मार्पिनर्–वीरश्री जिन पर मोद के साथ वास करती थी, वैसे वक्ष वाले; चॆङ्कण् वीरर्–अरुणाक्ष वली; अरुमै चॆय्–अभूतपूर्व रूप से प्राप्त; कुणत्तिऩ्–श्रेष्ठ गुणों के; ऎऩ् तुणैवऩ्–मेरे मित्र; आऴियाऩ्–चक्रवर्ती; ऒरुवऩै–उन अद्वितीय (दशरथ) के ही; इरुवरुम्–ये दोनों; ऒत्तुळार्–सदृश दिखाई देते है। १९१

ये काले पर्वत और लाल स्वर्ण-पर्वत के समान दर्शन देते हैं। इनके

वक्षस्थल वीरश्री का वासस्थान-सा लगते हैं। अरुणाक्ष ये दोनों अच्छे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण मेरे अत्यन्त मित्र चक्रवर्ती दशरथ के ही सदृश लगते हैं। १९१

❀ ऍऩ्ऩप्पल निऩैप्पिऩऩ् मऩत्तु ळॅण्णुवाऩ्
शिऩ्ऩप्पडै वीरर्मेऱ् चॅल्लु मऩ्बिऩाऩ्
कऩप्पडै वरिशिलैक् काळै यीर्हळ्यार्
मऩप्पड वॅऩ्ऩक्कुरै वळङ्गु वीरॅऩ्ऱाऩ् 192

ऍऩ्ऩ—ऐसे-ऐसे; मऩत्तुळ् ऍण्णुवाऩ्—मन में सोचते हुए; पल निऩैप्पिऩऩ्—विविध अनुमान करनेवाले; चिऩम् पडै वीरर् मेल्—क्रोधशील हथियारधारी उन वीरों पर; चॅल्लुम् अऩ्पिऩाऩ्—सहज उठते हुए प्रेम के साथ; कऩ पडै—भारी हथियार; वरि चिलै—और वन्धनसहित धनु के साथ रहनेवाले; काळै यीर्कळ्—ऋषभ-सम तरुण वीर; यार्—कौन हो; मऩम् पड—मेरे मन को समझाते हुए; ऍऩक्कु उरै वळङ्कुवीर्—मुझे उत्तर दो; ऍऩ्ऱाऩ्—(जटायु ने) कहा। १९२

इस तरह जटायु उधेड़बुन में लगे हुए अनेक विचार करते रहे। उन्होंने अनुभव किया, सहज ही उन भयंकर क्रोधशील हथियारधारी वीरों पर प्रेम पैदा हो रहा है। उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण से पूछ ही लिया कि भारी हथियार और वन्धनयुक्त शरासन रखनेवाले वीर! ऋषभ-सम तरुण तुम लोग कौन हो? मेरे मन में साफ़ ज्ञान हो, ऐसा मुझे प्रत्युत्तर दो। १९२

❀ विऩविय कालैयिऩ् मॅय्म्मै यल्लदु, पुऩैमलर्त् तारवर् पुहल्हि लामैयाल्
कऩैहडल् नॆडुनिलङ् गाव लाऴियाऩ्, वऩैहऴऱ् ऱयरदऩ् मैन्दर् यामॆऩ्ऱार् 193

विऩविय कालैयिऩ्—जब जटायु ने पूछा, तब; पुऩै मलर् तार् अवर्—सुन्दर पुष्पमाला से अलंकृत उन्होंने; मॅय्म्मै अल्लतु—सत्य के सिवा; पुकल्किलामैयाल्—नहीं बोल सकते, इसलिए; याम्—हम; कऩै कटल् नॆटु निलम्—गर्जनशील समुद्र से वलयित इस विशाल भूमि के; कावल्—रक्षक; आऴियाऩ्—चक्रवर्ती; वऩै कऴल् तयरतऩ्—वीर-चरण-कंकणधारी दशरथ के; मैन्तर्—पुत्र है; ऍऩ्ऱार्—कहा। १९३

जब जटायु ने यह प्रश्न किया, तब उन्होंने सच्ची बात कह दी। वे सत्य के सिवा असत्य बोलनेवाले नहीं थे। इसलिए उन्होंने बताया कि गरजते सागर से वलयित भूलोक के भर्त्ता चक्रवर्ती, वीरचरणकंकण-धारी दशरथ के पुत्र है। १९३

❀ उरैत्तलुम् पॊङ्गिय वुवहै वेलैयऩ्
तरैत्तलै यिऴिन्दवर्त् तऴुवु कादलऩ्
विरैत्तडन् दारिऩाऩ् वेन्दर् वेन्दऩ्ऱऩ्
विरैत्तडन् दोळिणै वलिय वोवॆऩ्ऱाऩ् 194

उरैत्तलुम्–कहते ही; पॉङ्किय उवकै वेलैयन्–उमड़नेवाले मोद-सागर के समान जटायु; तरै तलै इऴिन्तु–भूमि पर उतर आकर; अवर् तऴुवुन् कातलन्–उनको आलिंगन करके प्रेमातुर होकर; विरै तटम् तारिन्नान्–सुवासित और बड़ी माला से अलंकृत; वेन्तर् वेन्तन् तन्–राजाधिराज के; वरै तटम् तोळ् इणै–पर्वत-सम बड़े कंधे दोनों; वलियवो–वल से पूर्ण हैं क्या; ॲन्ऱान्–(जटायु ने) पूछा। १९४

ज्योंही राजकुमारों ने यह उत्तर दिया, त्योंही जटायु के मन में आनन्द उठा और सागर-सा वढ़ गया। वे नीचे भूमि पर उतर आये। उनको गले से लगाकर प्रेम के साथ जटायु ने प्रश्न किया कि सुवासित और बड़ी माला से शोभित राजाधिराज दशरथ की पर्वत-सम विशाल भुजाओं का जोड़ा वल संयुक्त है ? । १९४

* मऱक्कमुऱ् ऱाददन् वाय्मै कात्तवन्
तुऱक्कमुऱ् ऱानॆन विरामन् चॊल्ललुम्
इऱक्कमुऱ् ऱानॆन वॆक्क मॆय्दिनान्
उऱक्कमुऱ् ऱानॆन वुणर्वु नीङ्गिनान् 195

अवन्–वे; मऱक्क मुऱ्ऱात–अविस्मरणीय; तन् वाय्मै कात्तु–अपनी वचनसत्यता का; कात्तु–पालन करके; तुऱक्कम् उऱ्ऱान्–स्वर्गवासी हो गये; ॲन–ऐसा; इरामन् चॊल्ललुम्–श्रीराम के कहते ही; इऱक्कम् उऱ्ऱान् ॲन–(दशरथ) मर गये, कहकर; एक्कम् ॲय्तिनान्–तरस खाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱान् ॲन–निद्रामग्न हुए जैसे; उणर्वु नीङ्कितान्–अचेत हुए। १९५

चक्रवर्तीतनय श्रीराम ने उत्तर दिया कि चक्रवर्ती अविस्मरणीय अपनी सत्यवादिता के संरक्षण में स्वर्गवासी हो गये। ज्योंही श्रीराम ने यह कहा, त्योंही जटायु तरस खाकर निद्रामग्न हुए-से अचेत हो गये। १९५

*तऴुविन रॆडुत्तनर् तडक्कै यान्मुहम्, कऴुविन रिरुवरुङ् गण्णि नीरिनाल्
वऴुविय तन्नुयिर् वन्द मन्ननुम्, अऴिवुऱु नॆञ्जिन नरऱ्ऱि नानरो 196

इरुवरुम्–दोनों ने; तटम् कैयाल्–विशाल हाथों से; तऴुवितर्–लपेटकर; ॲटुत्तनर्–उठाया; कण्णिन् नीरिनाल्–आँखों के जल से; कऴुविनार्–(जटायु के मुख को) धोया; वऴुविय–खोई हुई; तन् उयिर्–अपनी जान को; वन्त मन्नतुम्–फिर से प्राप्त करके गृध्रराज भी; अऴिवु उऱु नॆञ्चितन्–विगलित मन के होकर; अरऱ्ऱितान्–विलाप करने लगे। १९६

श्रीराम और लक्ष्मण ने गिरे हुए उनको अपने हाथों से लपेटकर उठाया। उनकी आँखों से अश्रुजल उनके मुख को धुलाते हुए वहा। तव जटायु की खोयी हुई प्राणता फिर आयी। गृध्रराज विकलमन होकर विलापने लगे। १९६

* परवलरुङ् गॊडैक्कुनिन्ऱन् ऱनिक्कुडैक्कुम् बॊरैक्कुनॆंडुम् बणबु तोऱ्ऱक्
करवलरुङ् गऱ्पहमु मुडुपतियुङ् गडलिडमुङ् गळित्तु वाऴप्

पुरवलर्दम् पुरवलने पॊय्प्पहैये मॆय्क्कणिये पुहळ्ळिन् वाळ्वे
इरवलरु नल्लऱमुम् यानुमिनि यन्नवडनीत् तेहि नाये 197

पुरवलर् तम् पुरवलत्ते–पालकों के पालक; पॊय् पकैये–असत्य के शत्रु; मॆय्क्कु अणिये–सत्य के भूषण; पुकळ्ळिन् वाळ्वे–यश के वासस्थान; नित् तन्–आपकी; परवल् अरु–अप्रशंसनीय; कॊटैक्कुम्–दानशीलता और; तनि कुटैक्कुम्–अद्वितीय छत्र; पॊरैक्कुम्–और क्षमाशीलता, इनके सामने; नॆट्म् पण्पु तोट्र–अपने उच्च गुणों में जो हार गये, वे; करवल् अरु कट्पकमुम्–अवंचक कल्पवृक्ष; उटुपतियुम्–चन्द्र; कटल् इटमुम्–समुद्र की घिरी यह भूमि; कळित्तु वाळ–(अपने प्रतिद्वन्द्वी के अभाव में) गर्व-मोद के साथ रहें, ऐसा; इरवलरुम्–याचक लोग; नल् अऱमुम्–श्रेष्ठ धर्म को; यातुम्–और मुझे; इनि ॲंत् पट–अब कौन सा दुख भोगने देकर; नीत्तु–हमें छोड़कर; एकिताय्–चले गये। १९७

हे राजाधिराज ! असत्य के शत्रु ! सत्य के भूषण ! कीर्ति के वासस्थान ! आपकी अवर्णनीय दानशीलता, शीतल श्वेतछत्र और क्षमाशीलता के सामने क्रमशः अवंचक कल्पतरु, उडुपति और समुद्र की घिरी भूमि जो हार गयी थी, अब प्रतिद्वन्द्वी से रहित होकर उत्साह के साथ रह रही है। और याचक, श्रेष्ठ धर्म और मैं —तीनों को कौन सा दुख भोगने के लिए छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए है ? । १९७

अलङ्गार मॆनवुलहुक् कमुदळिक्कुन् दनिक्कुडैया याळि शूळ्न्द
निलङ्गाव लदुकिडक्क निलैयाद निलैयुडैये नेय नॆञ्जिन्
नलङ्गाण नडन्दनैयो नायहने तीविनैये नण्बि निन्ऱुम्
विलङ्गाने नादलिनाल् विलङ्गिने निन्नुमुयिर् विट्टि लेनाल् 198

नायकने–नायक; अलङ्कारम् ॲंत–साज-शृंगार है ऐसा; उलकुक्कु अमुतु अळिक्कुम्–(माने जाते हुए, पर असल में) लोकवासियों को कृपासुधा दिलानेवाला; तनि कुटैयाय्–अप्रतिम छत्रधारी; आळि चूळ्न्त निलम् कावल्–समुद्रवलयित पृथ्वी का शासन; अतु किटक्क–वह एक ओर रहे; निलैयात निलैयुटैयेन्–चंचल स्थिति वाले मेरे; नेय नॆञ्चिन् नलम्–प्रेमपूर्ण मन की (सच्चाई) स्थिति; काण ओ–परखने के लिए क्या; नटन्तनै–आप चल बसे; तीविनैयेन्–पापी मैं; विलङ्कु आनेन्–जानवर रह गया; आतलिनाल्–इसलिए; नण्पिन् निन्ऱुम्–उत्तम मित्रता से; विलङ्किनेन्–अलग रह गया; उयिर् विट्टिलेन्–और प्राण नहीं त्यागे। १९८

नायक ! आपका श्वेतछत्र केवल अलंकार की वस्तु नहीं था। सुधासम कृपा बरसानेवाले शासन का प्रतीक था। ऐसे छत्रधारी ! अब समुद्रमेखला भूमि अनाथ हो गयी; वह एक ओर रहे ! क्या आप मेरे मन के प्रेम की स्थिरता की परीक्षा करने के हेतु चले गये क्योंकि मैं चंचलमन हूँ ! मै पापी हूँ ! जानवर पैदा हुआ हूँ। तभी तो उत्तम मित्रता के अनुरूप उचित व्यवहार से डिगकर अब भी प्राण त्याग किये बिना जीवित रहता हूँ ! । १९८

※ तयिरुडैक्कु मत्तॅन्न वुलहैनलि शम्बरनैत् तडिन्द वन्नाळ्
अयिर्हिडक्कुङ् गडल्वलयत् तवरऱिय नीयुडल् यानावि यॅन्नच्
चॅयिर्हिडत्तल् शॅय्याद तिरुमनत्ताय् शॅप्पिनाय् तिऱम्बाय् नित्शॊल्
उयिरहिडक्क वुडलैविशुम् बेऱ्ऱिना रुणर्विरन्द कूऱ्ऱि नारे 199

चॅयिर् किटत्तल् चॅय्यात–दोष को स्थान न देनेवाले; तिरु मनत्ताय्–पवित्र मन के स्वामी; तयिर् उटैक्कुम् मत्तु ॲन्न–दही मथनेवाली मथानी के समान; उलकै नलि–लोकत्रासक; चम्परनै–शंबरासुर को; तटिन्त अ नाळ्–जिस दिन काट गिराया, उस दिन; अयिर् किटक्कुम्–काले वालू से युक्त; कटल् वलयत्तवर्–समुद्रवलयित भूतलवासियों को; अऱिय–जताते हुए; नी उटल् यान् आवि–तुम (दशरथ) शरीर, मै प्राण; ॲन्न–ऐसा; चॅप्पिनाय्–कहा; नित् चॊल् तिऱम्पाय्–आप अपना वचन भंग करनेवाले नहीं है; उणर्वु इऱन्त–भावना न समझ सकनेवाले; कूऱ्ऱितार्–यमदेव भी; उयिर् किटक्क विट्टु–प्राणों को इधर रहने देकर; उटलै–शरीर, आपको; विचुम्पु एऱ्ऱितारे–स्वर्ग पर चढ़ा ले गये। १९९

अकलंक पवित्र मन वाले ! दही को विलोडित करनेवाली मथानी के समान शंवरासुर लोगों को त्रास दे रहा था। जब आपने उनको मारा, उस दिन आपने सूक्ष्म काले बालुओं से युक्त समुद्र से वलयित भूमि के सारे लोगों के सामने उनके जाने, यह कहा कि जटायु तुम प्राण हो, मैं तुम्हारा शरीर हूँ। आप वचन भंग करनेवाले नहीं हैं। उस भावना की पवित्रता जड़मति यमदेव नहीं समझ सके। इसलिए प्राण— मुझे छोड़कर, शरीर— आपको उठा ले गये हैं। १९९

※ ॲळुवदो रिशैपॅरुह विप्पॊळुदे यॊप्परिय वॅरियुन् दीयिल्
विळुवदे निऱ्कमड मॅल्लियलार् तम्मैप्पो निलत्तिन् मेल्वीळ्न्
दळुवदो यानॅन्ना वऱिवुऱ्ऱा नॅन्नॅळुन् दवरै नोक्कि
मुळुवदे ळुलहुडैयान् मैन्दन्मीर् केण्मिन्नॅन मुऱैयिर् चॊन्नान् 200

ॲळुवतु ओर् इचै पॅरुक–उन्नत यश के बढ़ते; इप्पॊळुते–अभी; ऒप्पु अरिय–उपमाहीन; ॲरियुम् तीयिल्–जलनेवाली आग में; विळुवते निऱ्क–गिरना छोड़कर; मट मॅल्लियलार् तम्मै पोल्–अबोध सुकुमारी नारियों के समान; निलत्तिन् मेल् विळुन्तु–धरती पर गिरकर; यान् अळुवतो–मै रोता रहूँ; ॲन्ता–कहकर; अऱिवु उऱ्ऱान् ॲत–सूझ पा गये हों, ऐसा; ॲळुन्तु–उठकर; अवरै नोक्कि–उनको देखकर; एळ् उलकु मुळुवतु उटैयान्–सातों लोकों के अकेले स्वामी; मैन्तत्तमीर्–(दशरथ के) पुत्र; केण्मिन्–सुनिए; ॲत–ऐसा; मुऱैयिल्–(निम्नोक्त) प्रकार से; चॊन्तान्–बोले। २००

मुझे अभी खूब जलती आग में प्रवेश करके मरना चाहिए, उससे यश मिलेगा और मैं यशस्वी हो जाऊँगा। वह काम छोड़कर मैं अब अबोध सुकुमारी नारियों के समान भूमि पर गिरकर रोता-कलपता रहता हूँ।

क्या यह मुझे सोहता है ? फिर वे सहसा कोई बात सूझ गई हो ऐसे उठे। राजकुमारों को सम्बोधित किया— सातों लोकों के शासक दशरथ के तनयो ! सुनो मेरी बात ! फिर वे निम्नप्रकार से बोले। २००

❀ अरुणऩ्ऱऩ् बुदल्वऩ्या ऩवऩ्पडरु मुलहॅलाम् पडर्वॅ ऩाऴि
इरुण्मॊय्म्बु कॅडत्तुरन्द तयरदऱ्किऩ् नुयिर्त्तुणैव ऩिमैयो रोडुम्
वरुणङ्गळ् विरिहिऩ्ऱ कालत्ते वन्दुदित्तेन् कळुहिन् वेन्दन्
तरुणङ्गॊळ् पेरॊळियोर् शम्बादि पिऩ्पिऱन्द जडायु वॅऩ्ऱाऩ् 201

तरुणम् कॊळ् पेर् ऒळियोर्—तरुणाई से युक्त बड़े तेजोमय; याऩ्—मैं; अरुणऩ् तऩ् पुतल्वऩ्—अरुण का पुत्र हूँ; अवऩ् पटरुम्—वे जहाँ जाते हैं; उलकु ॲल्लाम्—उन सभी लोकों में; पटर्वेऩ्—जाने की शक्ति रखता हूँ; इमैयोर् ओटुम्—देवों के साथ; वरुणङ्कळ्—अनेक वर्ण-भेद; विरिकिऩ्ऱ कालत्ते—जब बँटे उसी (आदि) काल में; वन्तु उतित्तेऩ्—जनमा, वह मैं; कळुकिऩ् वेन्तऩ्—गृध्रराज; चम्पाति—सम्पाति; पिऩ् पिऱन्त—का अनुज; चटायु—जटायु हूँ; इरुळ् मॊय्म्पु—(शत्रु रूपी) अन्धकार का बल; कॅट—नाश करते हुए; आऴि तुरन्त—आज्ञाचक्र-चालक; तयरतऱ्कु—दशरथ का; इऩ् उयिर् तुणैवऩ्—प्राण-प्यारा मित्र हूँ; ॲऩ्ऱाऩ्—कहा। २०१

तरुण तेजोमय वीर ! मैं अरुण का पुत्र हूँ। अरुण जहाँ चलते है, उन सभी स्थानों में जाने की मेरी शक्ति है। देवों के साथ जिस दिन सभी विविध जातियों के जीवों का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्राचीनकाल में मेरा जन्म हो गया। गीधों के राजा सम्पाति का अनुज हूँ मैं। शत्रु रूपी अन्धकार को नाश करते हुए जिन्होंने आज्ञाचक्र चलाया, उन दशरथ का प्राण-प्यारा मित्र हूँ। २०१

[इसके बाद पाँच पद्य पाये जाते है, जो क्षेपक माने जाते है। उनमें जटायु की वंशावली का विवरण पाया जाता है। जानकारी हेतु उनका सार यहाँ दिया जाता है— दक्ष प्रजापति की पचास उभरे उरोजों वाली सुताओं में तेरह पुत्रियों से काश्यप का विवाह हुआ। उनमें अदिति ने तैंतीस करोड़ देवों को जन्म दिया। कजरारी आँखों वाली दिति ने दुगुने दैत्यों को जनाया।

दनु ने दानवों को, मति ने अपने अवयवों से मनुष्य की जातियों को और सुरभी ने धेनु, अश्व और अन्य जानवरों को पैदा किया। क्रोधवशा ने गर्दभ, मृग, उष्ट्र आदि को पैदा किया।

अभ्रकुंतला विनता से वज्र, अरुण, वैनतेय (गरुड़), उल्लू-गीध आदि बड़े-बड़े पक्षी जनमे। ताम्रा ने गौरैये, तीतर, बटेर आदि पक्षियों को जन्म दिया। कळा नाम की कोमलांगी ने तरु, लता आदि को जन्म दिया।

कद्रू ने फनियों और व्यालों को जन्म दिया। सुधा से भुजंग उत्पन्न

हुए। अरिष्ठा द्वारा गिरगिट, घोरपड़ आदि आये। इला ने जलचरों को जन्म दिया।

अदिति, दिति, दनु, अरिष्ठा, सुधा, कळा, सुरभी, विनता, मति, इला, कद्रू, क्रोधवशा और ताम्रा —इन स्त्रियों ने ये सब जीव-जन्तु पैदा किये। विनता-सुत अरुण ने रम्भा से विवाह किया और हम भूमि पर पैदा हुए।]

❀ आण्डवन्नी दुरैशॅय्य वञ्जलित्त मलर्क्कैया रत्बि तोडुम्
मूण्डपॅडरुन् दुन्बत्तान् मुरैमुरैयि निरैमलर्क्कण् मॉय्त्त नीरार्
पूण्डपॅरुम् बुहळ्निरुवित् तम्बॉरुट्टाड् पॉन्तुलहम् पुक्क तादै
मीण्डनन्वन् दानवनैक् कण्डनरे यॉत्ततनरव् विलङ्गर् ड्रोळार् 202

आण्टु—वहाँ; अवन्—उनके; ईतु उरै चॅय्य—यह कहते ही; विलङ्कल् तोळार्—पर्वत-सम कंधों वाले; अञ्चलित्त मलर् कैयार्—अञ्जलिबद्ध कमल-हस्त (वाले); अन्पिन् ओटुम्—प्रेम के साथ; मूण्ट—बढ़नेवाले; पॅरुम् तुन्पत्ताल्—बड़े दुख से; मुरै मुरैयिन्—उत्तरोत्तर; मलर् कण् निरै—कमल-सम आँखों में भर आनेवाले; मॉय्त्त नीरार्—अधिक अश्रुजल के साथ; पूण्ट पॅरुम् पुकळ् निरुवि—अपना धृत बड़ा यश इधर स्थापित करके; तम् पॉरुट्टाल्—अपने कारण; पॉन् उलकम् पुक्क—स्वर्ण (स्वर्ग) लोक जो गये, उन; तातै—अपने पिता ही; मीण्टतन् वन्तान् अवनै—लौट आये जो, उनको; कण्टतरे ऑत्ततर्—देख लिया हो, ऐसा हुए। २०२

जब जटायु ने यह वृत्तान्त कहा, तब पर्वत-सम कन्धों वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने कमल-हाथ जोड़ लिये। स्नेह-विह्वल उनकी आँखों से अश्रुकण बारी-बारी से भर आये। उनकी स्थिति ऐसी हो रही, मानो वे दशरथ से ही प्रत्यक्ष मिल रहे हों, जो अब स्वर्ग से अपने उन पुत्रों को देखने के लिए लौट आये हों जिनके (वियोग के ही) कारण वे इस संसार में बड़ा यश स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये थे। २०२

❀ मरुविनिय कुणत्तवरै यिरुशिरहा लुरत्तळुवि मक्का णीरे
उरियकडन् विनैयेरकु मुदवुवी रुडलिरण्डुक् कुयिरॉन् ड्रानान्
पिरियवुन्दान् पिरियादे यिनिदिरुक्कु मुडर्पॉरैयाम् बीळै पारा
तॅरियदनि लिन्रेपुक् किरवेने लित्तुयर मरवे नॅन्रान् 203

मरुवु इतिय—अपनाने-योग्य मधुर; कुणत्तु अवरै—स्वभाव वाले उनको (श्रीराम आदि को); इरु चिरकाल्—अपने दोनों पक्षों से; उर तळुवि—आलिंगन करते हुए; मक्काळ्—पुत्रो; नीरे—तुम ही; वितैयेर्कुम्—पापी मेरा भी; उरिय कटन्—आवश्यक शवकर्म; उतवुवीर्—करा दो; उटल् इरण्टुक्कु—दो शरीर का; उयिर् ऑन्रु आनान्—जो प्राण एक रहे; पिरियवुम्—उनके मरने पर; तान् पिरियाते—खुद मरे बगैर; इतितु इरुक्कुम्—सुख से जीता रहने का; उटल् पॉरै आम्—शरीर-वहन का; पीळै पारावु—दुख देखते हुए; ऍरि अततिल्—आग में; इन्रे—अभी; पुक्कु—प्रवेश कर; इरवेन् एल्—न मरूँगा तो; इ तुयरम् मरवेन्—यह दुख भूल नहीं पाऊँगा। २०३

पश्चात जटायु ने अपनाने योग्य अच्छे गुणों वाले उन कुँअरों को अपने विशाल पक्षों के अन्दर लेते हुए आलिंगन किया और कहा कि पुत्रो ! मैं बड़ा पापी हूँ । मेरा भी शव-संस्कार कर दो । यह मेरे प्रति उपकार होगा । दशरथ मेरे और उनके दोनों शरीरों का एकप्राण-सम रहे । उनकी मृत्यु होने के बाद मैं बिना मरे यह शरीर ढोता रहूँ, यह मेरे लिए असह्य है ! यह शरीरभार-वहन-दुख दूर करने के लिए आग में प्रवेश करके अभी मर जाऊँगा । नहीं तो यह वेदना भूल नहीं सकूँगा । २०३

* ऍऩ्ऱु रैत्त वॆरुवै यरशऩैत्, तुऩ्ऱु तारवर् नोक्कित् तॊऴुदुहण्
ऒऩ्ऱु मुत्त मुऱैमुऱै यायुह, निऩ्ऱु मऱ्ऱिऩ्ऩ नीर्मै निहऴ्त्तिऩार् 204

ऍऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा कहनेवाले; ऍरुवै अरचत्तै–गृध्रराज को; तुऩ्ऱु तार् अवर्–घनी माला से अलंकृत श्रीराम और लक्ष्मण; तॊऴुतु–विनय करके; कण् ऒऩ्ऱुम्–आँखों में लगी; मुत्तम्—मुक्तापंक्ति-सम अश्रुकण; मुऱै मुऱैयाय्–क्रम से; उक–टपके, ऐसा; निऩ्ऱु–जटायु के सामने स्थित होकर; इऩ्ऩ नीर्मै–इस प्रकार से; निकऴ्त्तिऩार्–बहस की । २०४

जब गृध्रराज जटायु ने अपना यह संकल्प सुनाया, तब मनोरम माला-धारी श्रीराम और लक्ष्मण शोकाकुल हुए । आँखों से मोतियों के समान अश्रुकण बहाते हुए उन्होंने जटायु के सामने खड़े होकर यों कहा । २०४

* उय्विडत् तुदवऱ् कुरिया ऩुन्दऩ्, मॆय्वि डक्करु दादुविण् णेऱिऩाऩ्
इव्वि डत्तिनि लॆम्बॆरु माअऩैमैक्, कैवि डिऱ्पिऩ्ऩै यार्कळै कण्णुळार् 205

उय्वु इटत्तु–रक्षा के अवसर पर; उतवऱ्कु उरियातुम्–रक्षा करनेवाले चक्रवर्ती भी; तऩ् मॆय् विट करुतातु–अपना वचन-परिपालन छोड़ना न चाहकर; विण् एऱिऩाऩ्–स्वर्गवासी हुए; इ इटत्तिऩिल्–इस स्थान (जंगल) में; ऍम् पॆरुमा अऩ्–हमारे नाथ; ऍमै कै विटिल्–हमको असहाय छोड़ जाएँगे तो; पिऩ्ऩै–फिर; कळै कण् उळार्–हमारे अवलम्ब (सहायक) रहनेवाले; यार्–कौन हैं । २०५

तात ! हमारी सहायता और रक्षण करने का भार जिन पर स्वयमेव था, वे हमारे सहायक और नाथ अपने वचन को छोड़ना न चाहकर स्वर्ग-वासी हो गए । हे हमारे नाथ ! यहाँ इस जंगल में आप भी हमें निस्सहाय करके छोड़ेंगे तो हमारे आधार कौन हैं ? । २०५

* तायि ऩीङ्गरुन् दन्दैयिऱ् ऱुण्णहर्, वायि ऩीङ्गि वनम् बुहुन् दॆय्दिय
नोयु नीङ्गिनै नुन्निनॆत् नॆङ्गळै, नीयु नीङ्गुदि योनॆऱि नीङ्गलाय् 206

नॆऱि नीङ्कलाय्—धर्म-मार्ग से न हटनेवाले; नीङ्कु अरु–जिनसे अलग होना कठिन है, उन; तायिऩ–माता से; तन्तैयिल्–पिता से; तऩ् नकर् वायिऩ्–अपने नगर के द्वार से; नीङ्कि–अलग होकर; वऩम् पुकुन्तु–जंगल में प्रवेश करके; ऍय्तिय–अब तक जो हमने भुगता है; नोयिऩ्–उस दुख से; नुऩ्ऩिऩ्–आपके मिलने

के कारण; नीङ्किन्निम्-विमुक्त हुए; अङ्कळै-ऐसे हमको; नीयुम्-आप भी; ऍन् नीङ्कुतियो-क्यों छोड़ जाएँगे। २०६

हे धर्म से कभी न हटनेवाले ! जिनसे अलग होना कठिन है उन माता से, पिता से और अपने नगर के द्वार से अलग होकर हम इधर आए। उससे हमारे मन में जो व्यथा हुई उससे, आपको देखने के बाद हम मुक्त हो पाये। इस स्थिति में आप हमें क्यों छोड़कर जायेंगे ? । २०६

❀ ऍन्ऱु शॉल्ल विरुन्दळि नॅञ्जिनन्, निन्ऱ वीररै नोक्कि निनैन्दवन्
अन्ऱ दॅन्नि लयोत्तियि लैयनीर्, शॅन्ऱ पिन्नवर् चेर्हुवॅन् यानॅन्ऱान् 207

ऍन्ऱु चॉल्ल-ऐसा (श्रीराम और लक्ष्मण के) कहने पर; इरुन्तु अळि नॅञ्चिनन्-जो दुख से विगलित मन वाले रहे, उन जटायु ने; निन्ऱ वीररै-सामने खड़े रहे वीरों को; नोक्कि-देखकर; निनैन्तवन्-विचार करते हुए; अतु अन्ऱु ऍनिन्-वह तुमको (पसन्द) नहीं तो; ऐय नीर्-प्यारो; नीविर्-तुम लोगों के; अयोत्तियिल् चॅन्ऱपिन्-अयोध्या में लौट जाने के बाद; यान् अवन् चेर्कुवॅन्-मैं उनके पास जाऊँगा; ऍन्ऱान्-कहा। २०७

जब श्रीराम और लक्ष्मण ने दुख के साथ अपनी यह बात कही, तब व्याकुलता से निर्बल हुए मन के जटायु ने उनको देखा और कुछ सोचा। फिर मन बदलकर उन्होंने कहा कि पुत्रो ! अगर मेरा मरना आपको ठीक नहीं लगता तो लो मेरे प्यारो ! तुम्हारे अयोध्या लौट जाने के बाद मैं अपने मित्र के पास जाऊँगा। २०७

❀ वेन्दन् विण्णडैन् दानॅनिल् वीरर्नीर्, एन्दु ञाल मिनिदळि यादिवण्
पोन्द दॅन्नै पुहुन्दवॅन् बुन्दिपोय्क्, कान्दु हिन्ऱदु कट्टुरै यीरॅन्ऱान् 208

वेन्तन्-चक्रवर्ती; विण् अटैन्तान् ऍनिल्-स्वर्ग सिधार गये तो; वीरर् नीर्-वीर तुम; एन्तु ञालम्-भरणयोग्य राज्य को; इनितु अळियातु-सुख से पालन किये बिना; इवण्-यहाँ; पोन्ततु ऍन्नै-आये क्यों; ऍन् पुन्ति-मेरा मन; पोय्-अस्थिर होकर; कान्तुकिन्ऱतु-दुखतप्त होता है; पुकुन्त ऍन्-बीच में हुए कौन से; कट्टुरैयीर्-समझाकर कहो; ऍन्ऱान्-पूछा। २०८

फिर जटायु को विचार आया कि ये जंगल क्यों आये हैं ? उन्होंने पूछा कि चक्रवर्ती स्वर्गवासी हुए तो वीर तुम्हारा कर्तव्य था कि भरण योग्य राज्य का पालन करो। पर सन्तोष के साथ राज्य-पालन करना छोड़कर यहाँ क्यों आये हो ? मेरा मन इधर-उधर भटककर दुखतप्त है ! क्या अनर्थ बीच में आये ? खूब खोलकर कहो। २०८

❀ तेवर् तानवर् तिण्डिऱ नाहर्वे, ऱेव राह विडरिळैत् तारॅनिल्
पूव रावु पॉलङ्गदिर् वेलिनीर्, शाव राक्कित् तरुवॅ नरशॅन्ऱान् 209

पू अरावु-रेतकर तेज किए हुए; पॉलन् कतिर् वेलितीर्-स्वर्ण-सम कान्ति

छिटकानेवाले भालों का धारण करनेवाले; तिण् तिऱल्–कठोर शक्तिमन्त; तेवर्–देव हों चाहे; तानवर्–दानव; नाकर्–नागलोक-वासी; वेऱु एवर् आक–अन्य कोई भी हों; इटर् इऴैत्तार् ॲतिल्–दुख दिया हो तो; चावर् आक्कि–उनको मृतक बनाकर; अरचु तरुवॅन्–राज्य दिला दूंगा; ॲन्ऱान्–कहा। २०६

खूब रेतकर तीक्ष्ण और स्वर्ण-सम कान्ति देनेवाले भाले के धारक कुँअर! आपको देवों ने कष्ट दिया हो, चाहे दानव; नागलोकवासी हों या और कोई —कहो कि अमुकों ने कष्ट दिया तो उनको मृतक बनाकर आपको राज्य दिला दूंगा। २०९

❀ तादै कूऱलुन् दम्बियै नोक्किनान्, शीदै केळ्व नवनुन्दन् शिऱ्ऱवै
मात रालवन्द शॅय्है वरम्बिला, ओद वेलै यॊऴिविन् ऱुणर्त्तिनान् 210

तातै कूऱलुम्–पिता के कहने पर; चीतै केळ्वतुम्–सीतापति ने भी; तम्पियै नोक्कितान्–अनुज को देखा; अवतुम्–उन्होंने भी; तन् चिऱ्ऱव्वै मातराल्–अपनी छोटी माता देवी कैकेयी द्वारा; वन्त चॆय्कै–किया हुआ कार्य; वरम्पु इला ओत–जो निस्सीम घोषयुक्त; वेलै–दुख-सागर था वह; ऑऴिवु इन्ऱु–बिना अन्तर के; उणर्त्तितान्–बताया। २१०

जब पिता-सम जटायु ने यह वचन कहा तब सीतापति ने अपने अनुज के प्रति अर्थभरी दृष्टि फेरी। लक्ष्मण ने भी अपनी सौतेली माता देवी कैकेयी के कृत्य का घोषपूर्ण समुद्र-सा दुखवृत्तान्त पूर्ण रूप से, बिना कुछ छोड़े-छुड़ाये, कह सुनाया। २१०

❀ उन्दै युण्मैय नाक्कियुन् शिऱ्ऱवै, तन्द शॊल्लैत् तलैक्कॊण्डु तारणि
वन्द तम्बिक् कुदविय वळ्ळले, ॲन्दै वल्ल दियावर्वल् लारॆन्ना 211

उन्तै उण्मैयन् आक्कि–अपने पिता को सत्यनिष्ठ बनाकर; उन् चिऱ्ऱवै तन्त चॊल्लै–अपनी सौतेली माता की आज्ञा; तलै कॊण्टु–सिर पर धारण करके; तारणि–(अपने स्वत्व के) राज्य को; वन्त तम्पिक्कु–अपने अनुज भरत को देकर; उतविय–उपकार करनेवाले; वळ्ळले–दानी प्रभु; ॲन्तै वल्लतु–मेरे तात (तुम) जो कर सके; यावर् वल्लार्–ऐसा कौन कर सकता है; ॲन्ना–कहकर। २११

यह सुनकर जटायु ने साधुवाद दिया! हे राम! तुमने अपने पिता को सत्यसंध बनाया और अपनी सौतेली माता की आज्ञा शिरोधार्य करके धरणी को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दिया! तुम दानियों में श्रेष्ठ दानी हो! हे मेरे तात! हा! मेरा पुत्र जो कर चुका वह कौन कर सकता है?। २११

❀ अल्लित् तामरैक् कण्णनै यन्बुऱप्
पुल्लि मोन्द पॊऴिन्दकण् णीरिनन्

वल्लै मैन्दवम् मन्नैयु मॅन्नैयुम्
ॲल्लै यिल्पुह ऴॅय्दुवित् तायॅन्ऱान् 212

अल्लि तामरै कण्णनै–पंखुड़ियों सहित कमल-सम आँखों वाले श्रीराम को; अन्पु उऱ पुल्लि–प्रेम के साथ आलिंगित करके; मोन्तु–माथे पर चूमकर; पॊऴिन्त कण् नीरितन्–अश्रु बहानेवाले नेत्रों के साथ; मैन्त–पुत्र; अ मन्नैयुम्–उन चक्रवर्ती को; ॲन्नैयुम्–और मुझे भी; ॲल्लै इल् पुकऴ्–असीम यश; ॲय्तुवित्ताय्–दिला दिया; वल्लै–तुम समर्थ हो; ॲन्ऱान्–कहा (जटायु ने)। २१२

जटायु ने हर्षातिरेक से पद्मदलाक्ष श्रीराम को गले लगाया और सिर सूँघा (माथा चूमा)। आँखों से आनन्दबाष्प बहाते हुए जटायु ने कहा— पुत्र ! तुमने चक्रवर्ती को और मुझे, दोनों को अपार यश दिला दिया ! तुम बड़े समर्थ हो ! । २१२

❀ पिन्न रुम्मप् पॅरियवन् पॅय्वळै, अन्न मन्न वणङ्गिनै नोक्किनान्
मन्नर् मन्नवन् मैन्दविव् वाणुदल्, इन्न ळॅन्न वियम्बुदि यालॅन्ऱान् 213

पिन्नरुम्–फिर भी; अ पॅरियवन्–उन बड़े ने; पॅय्वळै–कंकणधारिणी; अन्नम् अन्न–हंसिनी-सदृश; अणङ्कितै–देवी सीता को; नोक्किनान्–देखकर; मन्नर् मन्नवन् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इ वाळ् नुतल्–यह उज्ज्वल ललाट वाली; इन्नळ–अमुक (कौन) है ऐसा; इयम्पुति–बतलाओ; ॲन्ऱान्–कहा। २१३

फिर भी उन वृद्ध जटायु ने कंकणधारिणी मरालीतुल्य देवी सीता को देखा और श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र ! यह उज्ज्वल ललाट वाली कौन है ? यह बताओ। २१३

अल्लि ऱुत्तन ताडहै यादिया
विल्लि ऱुत्तङ् गरिवैयै मेलैनाळ्
पुल्लु ऱुत्तदि यावुम् बुहन्ऱुतन्
ऱॊल्लि ऱुत्तनन् ऱॊन्ऱल्पिन् ऱोन्ऱितान् 214

तोन्ऱल् पिन् तोन्ऱितान्–श्रीराम के अनुज (लक्ष्मण) ने; मेलै नाळ्–पहले, आरम्भ में; अल् इऱुत्तु अन–अन्धकारालय-सी; ताटकै आतिया–ताड़का (वृत्तान्त) आदि; विल् इऱुत्तु–धनुभंग करके; अङ्कु–उधर; अरिवैयै–सीतादेवी से; पुल् उऱुत्ततु–विवाह करना; यावुम् पुकन्ऱु–सभी सुनाकर; तन् चॊल् इऱुत्तनन्–अपना कथन पूरा किया। २१४

तब श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने सारा श्रीराम-चरित सुनाया। अन्धकार के आगार-सी ताड़का का वध, मिथिला में शिव-धनुष तोड़ना, सीताजी का विवाह आदि सभी घटनाएँ वर्णन करके श्रीलक्ष्मण ने अपना कथन समाप्त किया। २१४

केट्टु वन्द किळरॊळि मोलियान्, तोट्ट लङ्गलि नीर्तुऱन् दीर्वळम्
नाट्टु नीरिनि नण्णुदल् काऱुमिक्, काट्टिल् वैहुदिर् काक्कुवॆन् यानॆन्ऱान् 215

केट्टु उवन्त–सुनकर आनन्दित हुए; किळर् ऒळि मोलियान्–वर्धनशील प्रभा के किरीट के धारी; तोट्टु अलङ्कलितीर्–पुष्पमाला वाले; वळम् तुऱन्तीर्–धन-समृद्धि छोड़ आये हो; नाट्टु–अपने राज्य में; नीर् इति नण्णुतल् काऱुम्–तुम लोगों के आगे पहुँचते तक; इ काट्टिल् वैकुतिर्–इस जंगल में रहो; यान् काक्कुवॆन्–मैं रक्षा करूँगा; ऎन्ऱान्–कहा । २१५

जाज्वल्यमान किरीट से शोभायमान जटायु ने तुष्ट होकर वादा किया कि हे पुष्पदलमाला-धारी वीरो ! तुम लोग धन आदि वैभव त्यागकर आये हो ! जव तक तुम अयोध्या लौट नहीं जाओगे, तव तक इसी वन में वास करो । मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । २१५

इऱैव ऎण्णि यहत्तिय नीन्दुळ, तऱैयु नन्मणि याऱ्ऱि नहन्गरैत्
तुऱैयि नुण्डॊरु शूळ्लच् शूळ्ल्पुक्, कुऱैदु मॆन्ऱन नुळ्ळत् तुऱैहुवान् 216

उळ्ळत्तु उऱैकुवान्–अन्तर्यामी भगवान श्रीराम; इऱैव–नाथ; अकत्तियन्–अगस्त्य का; ऎण्णि–विचारकर; ईन्तु उळतु–वतलाया हुआ स्थान; अऱैयुम् नल् मणि–कलरवयुक्त सुन्दर; आऱ्ऱिन् अकन् करै–गोदावरी नदी के विशाल तट पर; ऒरु चूळल् उण्टु–एक स्थान है; अ चूळल् पुक्कु–उस स्थान में जाकर; उऱैतुम्–रहेंगे; ऎन्ऱनन्–कहा । २१६

सर्वान्तिर्यामी भगवान श्रीराम ने उत्तर में कहा कि हे नाथ ! अगस्त्य ने वासयोग्य कोई स्थान वताया है । वह कलरव सहित वहनेवाली श्रेष्ठ गोदावरी नदी के विशाल तट पर स्थित एक स्थान है । वहीं जाकर हम वास करेंगे । २१६

❀ पॆरिदु नन्ऱप् पॆरुन्दुऱै वैहिनीर्, पुरिदिर् मादवम् बोदुमिन् यानदु
तॆरिवु ऱुत्तुवॆ नॆन्ऱवर् तिण्शिऱै, विरियु नीळ्लिन् मेवविण् शॆन्ऱनन् 217

पॆरितुम् नन्ऱु–वड़ा अच्छा है; नीर् अ पॆरुन् तुऱै वैकि–तुम उस नदी के श्रेष्ठ घाट पर रहकर; मा तवम् पुरितिर्–महान तप करो; पोतुमिन्–चलो; यान् अतु तॆरिवुऱुत्तुवॆन्–मै वह स्थान दिखाऊँगा; ऎन्ऱु–कहकर; तिण् चिऱै निळलिल्–वलवान अपने पक्षों की छाया में; अवर् मेव–उनको आने देते हुए; विण् चॆन्ऱनन्–आकाश में उड़ता चला । २१७

जटायु ने उसे उचित समझा । कहा कि वह स्थान अवश्य बड़ा अच्छा है । तुम उसी घाट पर जाकर रहो और वड़ी तपस्या करो । चलो, मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा और वह स्थान दिखा आऊँगा । वे आकाश पर उड़ते चले और उनके वलवान और विशाल पक्षों की छाया के नीचे श्रीराम आदि सुख से गये २१७

❀ आय शूळ लरिय वुणर्त्तिय, तूय शिन्दैयत् तोमिल् गुणत्तवन्
पोय पिन्नैप् पोरुशिलै वीररुम्, एय शोलै यिनिदुशॅन् रॅय्दिनार् 218

आय चूळल्–उस (पंचवटी के) स्थान को; अरिय उणर्त्तिय–समझा-बुझाकर; अ तूय चिन्तै–वे पवित्रमन; तोम् इल् कुणत्तु–निर्मल गुणों वाले; अवन्–वे जटायु; पोय पिन्नै–चले गये, उसके बाद; पोरु विलै वीररुम्–युद्धोपयोगी धनुओं के स्वामी श्रीराम आदि; एय चोलै–वहाँ रहनेवाले एक उपवन में; इनितु चॅन्ऱु ऎय्तिनार्–सुख से जाकर रहे। २१८

उस स्थान, पंचवटी को दिखाकर और उसके सम्बन्ध में समझाकर पवित्रमन और उत्तम, निर्मल गुणों वाले जटायु चले गये। उसके बाद युद्धोपयोगी धनुष के रखनेवाले दोनों वीर देवी सीता के साथ वहाँ स्थित एक उपवन में गये। २१८

❀ वार्प्पॊर् कॊङ्गै मरुहियै मक्कळै
एर्प्पच् चिन्दनै यिट्टव् वरक्करदम्
शीर्प्पैच् चिक्करत् तेरिनन् शेक्कैयिल्
पार्प्पैप् पार्क्कुम् बरवैयिर् पार्क्कित्रान् 219

अ अरक्कर् तम् चीर्प्पै–वहाँ के राक्षसों की बलविशिष्टता को; चिक्कु अऱ–संशय के बिना; एर्प–खूब; चिन्तनै इट्टु–सोचकर; तेरिनन्–जो निश्चित रूप से जानते थे, वे जटायु; वार् पॊन् कॊङ्कै–अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली; मरुकियै–पुत्रवधू सीताजी को; मक्कळै–और अपने पुत्रों को; चेक्कैयिल् पार्प्पै पार्क्कुम्–घोंसलों में पोटों की देखरेख करनेवाली; परवैयिल्–मादा पक्षी के समान; पार्क्किन्ऱान्–देखते रहे। २१९

जटायु राक्षसों के बल का पूरा ज्ञान रखते थे। उन्होंने खूब सोचा और मन में धारणा बना ली (कि इनकी रक्षा का खूब ध्यान रखना आवश्यक है)। अतः वे अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली पुत्रवधू सीताजी और दोनों कुमारों पर, सावधानी से अपने बच्चों की देखरेख करनेवाली मादा पक्षी के समान उन पर निगरानी रखते थे। २१९

5. शूर्प्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)

पुवियिनुक् कणिया यान्ऱ पॊरुडन्दु पुलत्तिर् ऱाहि
आवियहत् तुऱैह डाङ्गि यैन्दिणै नॆऱियळाविच्
चवियुऱत् तॆळिन्दु तण्णॆन् ऱॊळुक्कमुन् दळुविच् चान्ऱोर्
कवियॆनक् किडन्द कोदा वरियिन्नै वीरर् कण्डार् 220

पुवियिनुक्कु अणियाय्–भूलोक का शृंगार (भूषण) बनकर; आन्ऱ पॊरुळ् तन्तु–श्रेष्ठ वस्तुएँ (पुरुषार्थ) प्रदान करते हुए; पुलत्तिल् तु आकि–खेतों (बुद्धि) का

पोषक रहकर; अवि अक तुरैकळ् ताङ्कि–अपने में बने हुए अनेकों घाटों के साथ (प्रसादगुणपूर्ण अनेक कथाप्रसंगों के साथ); ऐ तिणै नॆऱि अळावि–पाँचों भूभागों पर से बहती हुई (पाँचों अंगों का वर्णन करती हुई); चवि उऱ तॆळिन्तु–छविमान रूप से साफ़ रहते हुए (जल्दी समझ में आकर ज्ञान दिलानेवाले रूप से साफ़ रहते हुए); तण् ऍन्ऱ ऒऴुक्कमुम् तऴुवि–शीतल धारा-प्रवाह के साथ (रम्य शैली के साथ); चान्ऱोर् कवि ऍन्न–उत्तम कवियों के काव्य के समान; किटन्त–दृश्यमान; कोतावरियिनै–गोदावरी नदी को; वीरर् कण्टार्–वीरों ने देखा। २२०

(इस पद में गोदावरी नदी और उत्तम कवि के रचे काव्य का श्लिष्ट वर्णन है।) वीरों (सीताजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण) ने उस गोदावरी को देखा, जो उत्तम कवि के रचे काव्य के समान पड़ी (बहती) थी।

[भुवि का श्रृंगार, चारों पुरुषार्थों का दायक, बुद्धि का पोषक, श्रृंगार रस के सुन्दर उपांगों के प्रसंगों का वर्णनकारी, (श्रृंगार) रस भरे काव्य के प्रधान अंगों का (तिणै) चित्रण करनेवाला, मनोहारी छटा के साथ स्वच्छ और शीतल प्रवाहमयी शैली के साथ रहनेवाले उत्तम कवि के काव्य के समान भुवि का श्रृंगार बनकर अनेक पदार्थों को देती हुई या पैदा करने में सहायता देती हुई, खेतों की पोषक, ताप शान्त करनेवाले अनेक घाटों से युक्त, पाँचों (पर्वत, वन, नदी की कछार, समुद्र तट और मरु के) प्रदेशों से होकर सुन्दर रूप से स्वच्छ और शीतल सुखावह प्रवाह के साथ बहनेवाली गोदावरी नदी को वीरों ने देखा।]

[पॊरुळ्–पुरुषार्थ या पदार्थ; पुलम्–बुद्धि (ज्ञान) या खेत; तुऱैहळ–श्रृंगार-रस-कथा के उपांगों का वर्णन या घाट; तिणै–प्रधान भाग, प्रधान भूभाग]। २२०

वण्डुऱै कमलच् चव्वि वाण्मुहम् पॊलिय वाशम्
उण्डुऱै कुवळै यॊण्ग णॊरुङ्गुऱ नोक्कि यूऴिन्
तॆण्डिरैक् करत्तिऩ् वारित् तिरुमलर् तूविच् चॆल्वर्क्
कण्डडि पणिव दॆन्ऩप् पोलिन्ददक् कडवुळ् याऱु 221

अ कटवुळ् याऱु–वह दिव्य नदी; चॆल्वर् कण्टु–उन श्रीमानों को देखकर; वण्टु उऱै कमलम्–अलिकुलावृत कमल रूपी; चॆव्वि वाळ् मुकम्–सुन्दर उज्ज्वल मुख; पॊलिय–आनन्द से शोभित करके; वाचम् उण्टु–सुगन्धियुक्त; उऱै–वहाँ रहनेवाले; कुवळै ऒण् कण्–कुवलय रूपी प्रभापूर्ण आँखों से; ऒरुङ्कु उऱ नोक्कि–एकाग्रता से खूब देखकर; ऊऴिन् तॆळ् तिरै करत्तिन्–क्रम से उठनेवाली तरंग रूपी हाथों से; तिरु मलर् वारि–सुन्दर पुष्पों को लेकर; तूवि–बरसाकर; अटि पणिवतु ऍन्ऩ–चरणों पर विनत हो रही हो, ऐसा; पॊलिन्ततु–दर्शनीय रही। २२१

उस दिव्य नदी ने उन श्रीमंत कुमारों को देखा तो उसका अलिकुल-कलित कमल रूपी मुख विकसित हुआ। वह सुवासित वनप्राय कुवलय रूपी

आँखों द्वारा देखते हुए क्रमानुक्रम में उठनेवाली स्वच्छ तरंगों रूपी हाथों से पुष्पों को लेकर उनके चरणों पर डालते हुए प्रणमन कर रही हो —ऐसा लगा। २२१

अॆळुवुरु कादलारि निरैत्तिरैत् तेङ्गि येङ्गिप्
पळुवनाट् कुवळैच् चॆव्विक् कण्बनि परन्दु शोर
वळुविला वाय्मै मैन्दर् वनत्तुऱै वरुत्त नोक्कि
अळुवतु मॊत्त दालव् वलङ्गु नीराऱु मन्नो 222

अलङ्कु नीर्–हिलती बहनेवाली जलधारा की; अ आरु–वह नदी; वळु इला वाय्मै मैन्तर्–अचल सत्यसंध उन कुमारों का; वनत्तु उऱै वरुत्तम् नोक्कि–वनवास का दुख देखकर; अॆळु उरु कातलाल्–उठे हुए प्रेम के साथ; इरैत्तु इरैत्तु–लम्बी साँस लेते-लेते; एङ्कि एङ्कि–तरस खाते-खाते; पळुव–वन-सम घने; नाळ् कुवळै–उसी दिन विकसित कुवलय रूपी; चॆव्वि कण्–आकर्षक आँखों से; पनि–जलकण; परन्तु चोर–बरसाकर बहाते हुए; अळुवतु ऒत्ततु–रोती हो, ऐसा लगी। २२२

वह हिलती हुई बहनेवाली नदी सत्यनिष्ठ उन वीरों के वनवास-जनित दुख को देखकर लम्बी आहें भरते हुए तरस के साथ रो रही हो, ऐसा भी लगा। उनके वनप्राय कुवलय रूपी नेत्रों में हिमकण दिखाई दिये। २२२

नाळङ्गॊ णळिनप् पळ्ळि नयनङ्ग ळमैय नेमि
वाळङ्ग ळुऱैव कण्डु मङ्गैतन् कॊङ्गै नोक्क
नीळङ्गॊळ् शिलैयोन् मट्रन् नेरिळै नॆडिय नम्बि
तोळिन्ग णयनम् वैत्ताळ् शुडर्मणित् तडङ्गळ् कण्डाळ् 223

नीळम् कॊळ् चिलैयोन्–दीर्घ धनु के धारक श्रीराम ने; नाळम् कॊळ्–नाल सहित; नळिन पळ्ळि–कमल रूपी शय्या पर; नयनङ्कळ् अमैय–आँखें उन्मीलित करके; नेमि वाळङ्कळ्–चक्रवाक पक्षियों को; उऱैव कण्टु–रहते देखकर; मङ्कै तन् कॊङ्कै नोक्क–देवी के स्तनों पर दृष्टि लगाई, तब; अ नेरिळै–उन आभरणभूषिता देवी ने; चुटर् मणि–कान्तियुक्त नीले रत्नों से भरे; तटङ्कळ् कण्टाळ्–टीलों को देखकर; नॆटिय नम्पि–उन्नत नायक श्रीराम के; तोळिन् कण्–कन्धों पर; नयनम् वैत्ताळ्–आँखें डालीं। २२३

(पति-पत्नी दोनों विविध दृश्य देखते हैं और परस्पर अर्थभरी निगाहें डालकर रसानुभव प्राप्त करते हैं।) दीर्घ-धनुर्धर श्रीराम ने कमलों पर आँखें उन्मीलित करते हुए चक्रवाक पक्षियों के जोड़े को देखा और अपनी अर्द्धांगिनी के उरोजों पर दृष्टि चलायी। तो श्रेष्ठ आभरणालंकृता सीताजी ने उज्ज्वल नीले रत्नों से युक्त बालू के टीलों को देखा और सहज रूप से अपनी दृष्टि श्रीराम के सुडौल दीर्घ कंधों पर डाली। २२३

❀ ओदिम मॊदुङ्गक् कण्ड वुत्तम नुळैय ळाहुम्
शीदैतन् नडैयै नोक्किच् चिऱियदोर् मुऱुवल् शॆय्दान्
मादव डानु माण्डु वन्दुनी रुण्डु मीळुम्
पोदह नडप्प नोक्किप् पुदियदोर् मुऱुवल् पूत्ताळ् 224

ओतिमम्–हंस को; ऒतुङ्क कण्ट–किनारा खींचते देखकर; उत्तमन्–पुरुषोत्तम श्रीराम; उळैयळ् आकुम्–पास आनेवाली; चीतै तन् नटैयै नोक्कि–सीताजी की चाल देखते हुए; चिऱियतु ओर् मुऱुवल्–एक मन्दहास; चॆय्तान्–किया; मातु अवळ् तातुम्–देवी, उन्होंने भी; आण्टु–(उस नदी पर) वहाँ; वन्तु नीर् उण्टु मीळुम्–आकर जल पीकर लौटनेवाले; पोतकम् नटप्प नोक्कि–गज को डग भरते देखकर; पुतियतु ओर् मुऱुवल्–नया (विचित्र) एक हास; पूत्ताळ्–विकसित किया। २२४

वहाँ एक हंस (सीताजी की चाल देखकर) हटकर जाने लगा। श्रीराम ने वह देखा और पास आनेवाली सीताजी की चाल देखकर मन्दहास किया। देवी ने एक गज को देखा जो नदी पर आकर पानी पीने के बाद लौट जा रहा था और अनोखा अर्थ-भरा हास हँसीं। २२४

❀ विल्लियऱ् ऱडक्कै वीरन् वीङ्गु नीराऱ्ऱिन् पाङ्गर्
वल्लिह णुडङ्गक् कण्डान् मङ्गैदन् मरुङ्गु नोक्क
अॆल्लियङ् गुवळैक् कानत् तिडैयिडै मलर्न्दु निन्ऱ
अल्लियङ् गमलङ् गण्डा ळण्णरन् वडिवङ् गण्डाळ् 225

विल् इयल्–धनुर्विद्या में अभ्यस्त; तट कै वीरन्–विशालहस्त वीर; वीङ्कु नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–समृद्ध-जल नदी के पास; वल्लिकळ्–लताओं को; नुटङ्क कण्टान्–लचकते देखा; मङ्कैल् तन्–देवी की; मरुङ्कुल् नोक्क–कमर पर दृष्टि डाली तो; अॆल्लि अम् कुवळै कानततु–अन्धकार के समान फैले पड़े कुवलय वन के; इटै इटै–बीच-बीच में; मलर्न्तु निन्ऱ–विकसित रहे; अल्लि अम् कमलम्–पंखुड़ियों से भरे कमलों को; कण्टाळ्–देखनेवाली (देवी) ने; अण्णल् तन् वटिवु कण्टाळ्–महिमावान नायक के शरीर पर दृष्टि दौड़ाई। २२५

धनुर्धर श्रीराम ने समृद्धजल वाली नदी के पास लताओं को देखा और उसी स्मृति में सुमध्यमा की कमर निहारी! तब देवी ने अंधकार-सम रंग वाले कुवलय-वन को बीच-बीच में कमलों के साथ देखा और लगे हाथ महिमावान प्रभु के शरीर पर उनकी दृष्टि जा जमी। २२५

अनैयदोर् तन्मै यान वरुविनी राऱ्ऱिन् पाङ्गर्प्
पनिदरु दॆय्वप् पन्ज वडियॆनुम् वरुवच् चोलैत्
तनियिड मदनै नण्णित् तम्बियार् चमैक्कप् पट्ट
इनियपूत् जाल यॆय्दि यिरुन्दन नॆराम नॆप्पाल् 226

इरामन्-श्रीराम; अनैयतु ओर् तन्मैयान्-वैसी एक स्थिति की; अरुवि नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्-सरिताओं की मिलकर बनी गोदावरी नदी के पास; पत्ति तरु तॅय्व-शीतल और दिव्य; पञ्चवटि ॲन्नुम्-पंचवटी नाम के; परुव चोलै-सभी ऋतुओं में मनोरम रहनेवाले उपवन में; तन्नि इटम् अतनै-एकान्त स्थान को; नण्णि-जाकर; तम्पियाल् चमैक्क पट्ट-छोटे भाई द्वारा निर्मित; इत्तिय पूम् चालै ॲय्ति-प्यारी मनोरम, पर्णशाला में पहुँचकर; इरुन्ततन्-रहे; इप्पाल्-इसके बाद। २२६

ऐसी गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी नाम के स्थान में एक उपवन में, जो सभी ऋतुओं में मनोरम और सुखद रहता था, श्रीराम आदि गये। वहाँ छोटे भाई लक्ष्मण ने एक सुन्दर पर्णशाला निर्मित की। श्रीराम उसमें (अपनी प्रिया के साथ) रहने लगे। तब शूर्पणखा वहाँ आयी। २२६

नीलमा मणिनिऱ निरुदर् वेन्दनै
मूलना शम्बॅऱ मुडिक्कु मुन्बिन्नाल्
मेलैना ळुयिरोडुम् पिऱन्दु तान्विळै
कालमोर्न् दुडनुऱै कडिय नोयन्नाळ् 227

मा नील मणि निऱ निरुतर् वेन्तनै-बड़े नीले रत्न के समान रंग वाले राक्षस-राजा (रावण) को; मूल नाचम् पॅऱ-समूल नाश करने के लिए; मुटिक्कुम्-उपाय कर चुकने की; मुन्पिन्नाल्-प्रेरणा से; मेलै नाळ्-आरम्भ के दिन में ही; उयिरोटुम् पिऱन्तु-जन्म के साथ पैदा होकर; तान् विळै कालम् ओर्न्तु-फलदान का समय देखकर; उटन् उऱै-(जीव के) साथ रहनेवाली; कटिय नोय् अन्नाळ्-कठोर व्याधि के समान जो रही, ऐसी। २२७

शालीन नीले रत्न के समान काले रंग के राक्षस रावण का समूल नाश करने का उपाय करनेवाली विधि की प्रेरणा से शूर्पणखा वहाँ आयी। वह ऐसे रोग के समान थी, जो शरीर के साथ-साथ जन्म के अवसर पर पैदा हो जाता है और ऐन समय की प्रतीक्षा में उसके साथ लगा रहता है। २२७

शॅम्बरा हम्बडच् चॅऱिन्द कून्दलाळ्
वॅम्बरा हन्दनि विळैन्द मॅय्यिन्नाळ्
उम्बरा न्वर्क्कुमॉण् डवर्क्कु मोदनीर्
इम्बरा न्वर्क्कुमो रुरुदि योट्टुवाळ् 228

चॅम्पु अराकम् पट-ताम्र का रंग बिछुड़ जाय, ऐसे लाल; चॅऱिन्त-और घने; कून्तलाळ्-केश वाली; वॅम्पु-उष्णतप्त; अराकम् तनि विळैन्त-कामराग-विवर्धित; मॅय्यिन्नाळ्-शरीर वाली; उम्पर् आनवर्क्कुम्-देवों का; ऑण् तवर्क्कुम्-और श्लाघ्य तपस्वियों का; ओतम् नीर्-समुद्रजल से; इम्पर् आनवर्क्कुम्-(वलयित) इस लोक के वासियों का; ओर् उऱुति ईट्टुवाळ्-एक अपूर्व हित साधन करनेवाली। २२८

उसके केश ताँबे के रंग को मात देनेवाले अरुण वर्ण के थे। उसका

शरीर कामेच्छा के उष्ण से तप्त था। वह अनजान में ही देवों, श्रेष्ठ तपस्वी लोगों और इस समुद्र-मेखला पृथ्वी के वासियों का हित करनेवाली बनी आयी। २२८

❀ वॆय्यदोर् कारण मुण्मै मेविऩाळ्
वॆहुलुन् दमियळव् वऩत्तु वैहुवाळ्
नॊय्दिऩिव् वुलहॆला नुऴैयु नोऩ्मैयाळ्
ऐय्दिऩ ळिराहव ऩिरुन्द शूऴल्वाय् 229

वॆय्यतु ओर् कारणम्–अनर्थकारी एक कारण (कामवासना) के; उण्मै मेविऩाळ्–अस्तित्व को अपनानेवाली; तमियळ्–अकेली; अ वऩत्तिल्–उस वन में; वैकुवाळ्–वास करनेवाली; नॊय्तिऩ्–अनायास; इ–इस; उलकु ऎलाम् नुऴैयुम्–लोक में सर्वत्र पहुँचने का; नोऩ्मैयाळ्–सामर्थ्य वाली; इराकवऩ् इरुन्त चूऴल् वाय्–(जहाँ) श्रीराघव रहे, उस स्थान में; ऎय्तिऩळ्–आई। २२९

भयंकर एक कारण था, जिसके संपादनार्थ वह वन में अकेली रहती थी। (वह कारण उसकी कामलिप्सा हो सकता है या अपने पति को मारने वाले अपने भाई रावण के प्रति उसका क्रोध भी हो सकता है।) वह सारे लोक में घुसकर चलने की शक्ति और साहस रखती थी। वह अकस्मात उस स्थान पर आयी, जहाँ श्रीराम रहते थे। २२९

❀ ऎण्डरु मिमैयव ररक्क रॆङ्गण्मेल्
विण्डनर् विलक्कुदि यॆऩ्ऩ मेलऩाळ्
अण्डशत् तरुन्दुयि ऱुऱ्न्द वैयऩैक्
कण्डऩ ळ्तऩ्गिळैक् किऱुदि काट्टुवाळ् 230

तऩ् किळैक्कु–अपने परिवारों को; इऱुति काट्टुवाळ्–अन्त दिखाने (दिलाने) वाली ने; मेलै नाळ्–पहले कभी; ऎण् तरुम् इमैयवर्–सबसे प्रशंसित सुर लोगों के; अरक्कर् ऎङ्कळ् मेल् विण्टतर्–राक्षसों ने हमसे वैर किया है; विलक्कुति ऎऩ्ऩ–मिटाइए यह प्रार्थना करने पर; अण्टचत्तु–अण्डज नाग पर; अरुन्तुयिल् तुऱन्त–अपूर्व योगनिद्रा-त्यागी (अवतरित हुए); ऐयऩै–महाप्रभु को; कण्टऩळ्–देखा। २३०

अपने बन्धु-बान्धवों को अंत दरसानेवाली उसने श्रीराम पर दृष्टि लगायी। किस श्रीराम पर? एक समय पूजनीय देवों ने विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि राक्षस हमसे वैर करते हैं; हमें बचा लीजिए। तब परमात्मा ने अण्डज नाग पर अपना शयन और योगनिद्रा त्यागकर इस संसार पर श्रीराम का अवतार लिया था। ऐसे श्रीराम को उसने देखा। २३०

❀ शिन्दैयि लुऱैबवर् कुरुवन् दीय्न्ददाल्
इन्दिरङ् कायिर नयऩ मीशऱ्कु

मुन्दिय मलर्क्कणोर् मून्ऱु नान्गुतोळ्
उन्दियि लुलहळित् तार्कॅन् ऱुन्नुवाळ् 231

चिन्तैयिल् उरैपवर्कु–मन में वास करनेवाले (मन्मथ) का; उरुवम् तीय्न्ततु–शरीर जल गया; इन्तिरर्कु–देवेन्द्र के तो; आयिरम् नयनम्–सहस्र आँखें हैं; इचर्कु–ईश्वर शिव के; मुन्लिय–अपूर्व; मलर् कण्–कमल-सम नेत्र; ओर् मून्ऱु–तीन हैं; उन्तियिन्–नाभी से; उलकु अळित्तार्क्कु–लोकों को दिलानेवाले (विष्णुदेव) के; नान्कु तोळ्–चार हाथ है; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नुवाळ्–सोचती। २३१

वह विचार करने लगी कि ये कौन हैं ? मनोवासी मन्मथ है क्या ? पर उसका शरीर तो जल गया और वह अशरीरी है ! देवेन्द्र ? उसके तो सहस्र नेत्र हैं। शिवजी हैं क्या ? उनके तो तीन आँखें हैं। विष्णु भी नहीं हो सकते, जिन्होंने अपनी नाभि से लोकों की सृष्टि की क्योंकि उनके चार हाथ होते हैं और इसके तो दो ही है। २३१

❋ कर्ऱैयन् जडैयवन् कण्णिऱ् कायुदलाल्
इर्ऱव नन्ऱुतॊट् टिन्ऱु काऱुन्दान्
नर्ऱव मियर्ऱियव् वनङ्ग नल्लुरुप्
पॆर्ऱन नामॆनप् पॆयर्त्तु मॆण्णुवाळ् 232

कर्ऱै अम् चटैयवन्–जूट बनी सुन्दर जटा वाले की; कण्णिल्–(भाल की) आँख (की अग्नि) से; कायतलाल्–जला देने से; इर्ऱवन्–अरूप बना; अ अनङ्कन् तान्–वह अनंग ही; अन्ऱु तॊट्टु इन्ऱु काऱुम्–उस दिन से आज तक; नल् तवम् इयर्ऱि–अच्छा तप करके; नल् उरु पॆर्ऱनन् आम्–यह सुन्दर रूप पा गया हो; ऍन–ऐसा; पॆयर्त्तुम्–फिर भी; ऍण्णुवाळ्–सोचती। २३२

वह आगे सोचती— जटाधारी शिवजी के भाल के नेत्र से निकली आग से जलकर जो अरूप बन गया था, वह अनंग उस दिन से आज तक तपस्या करके यह सुन्दर रूप पा गया क्या ? । २३२

❋ तरङ्गळि नमैन्दुताळ्न् दुयर्न्द तालमा
मरङ्गळु निहर्क्किल मलैयुम् बुल्लिय
उरङ्गळि नुयर्दिशै योम्बु मानैयिन्
करङ्गळे यिवन्मणिक् करमॆन् ऱुन्नुवाळ् 233

इवन् मणि करम्–इसके सुन्दर हाथ; तरङ्कळिन् अमैन्तु–सम और श्रेष्ठ बनकर; ताळ्न्तु–दीर्घ रहते है; उयर्न्त ताल मा मरङ्कळुम्–ऊँचे तालवृक्ष भी; निकर्क्किल–तुलना नहीं कर सकते; मलैयुम् पुल्लिय–पर्वत भी अल्प है; उरङ्कळिल् उयर्–बल में बढ़े-चढ़े; तिचै ओम्पु–दिशाओं में रहकर पालन करनेवाले; यानैयिन्–गजों के; करङ्कळे–कर ही हैं; ऍन्ऱु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३३

इसके सुन्दर हाथ परस्पर सम, वडे ही सुन्दर और आजानु लम्बे हैं।

इनकी उपमा बड़े तालवृक्ष नहीं कर सकते; पर्वत भी अलग रह जायेंगे। इसलिए बल में बढ़े हुए दिग्गजों के कर ही हैं इनके हाथ ! । २३३

विल्मलै	वल्लवन्	वीरत्	तोळोडुम्
कल्मलै	निहर्क्किल	कनिन्द	नीलत्तिन्
नन्मलै	यल्लदु	नाम	मेरुवुम्
पॊन्मलै	यादलाल्	पॊरुवि	लादॆन्बाळ् 234

विल् मलै वल्लवन्–धनुर्युद्धसमर्थ इनके; वीर तोळ् ओडुम्–वीरता-भरे कन्धों से; कल मलै निकर्क्किल–मामूली पत्थर के पर्वत तुल्य नहीं सकते; कनिन्त नीलत्तिन्–पक्के नीले रत्नों के; नन् मलै अल्लतु–सुन्दर पर्वत के सिवा; नाम मेरुवुम्–नामी मेरु पर्वत भी; पॊन मलै आतलाल्–स्वर्ण-पर्वत होने के कारण; पॊरुवलातु–समान नहीं बन सकता; ऎन्पाळ्–कहती। २३४

धनुर्युद्ध में समर्थ इसके वीरतापूर्ण सबल कंधों की समता साधारण पत्थर का पर्वत नहीं कर सकता। न्हाँ प्रवृद्ध नीली मणि का श्रेष्ठ पर्वत कर सकता है। उसके सिवा नामी मेरु पर्वत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर्णमय है। —ऐसी राय कहती वह शूर्पणखा। २३४

ताळुयर्	तामरैत्	तळङ्ग	ळम्मोडुम्
केळुयर्	नाट्टत्तन्	गिरियिन्	ऱोङ्ऱत्तान्
तोळोडु	तोळिनैत्	तॊडर्न्दु	नोक्कुङ्रिन्
नीळिय	वल्लकण्	णॆडिदु	मार्बॆन्बाळ् 235

ताळ् उयर्–नाल के कारण ऊँचे रहनेवाले; तामरै तळङ्ङळ् तम् ओडुम्–कमल की पंखुड़ियों सहित; केळ् उयर्–उज्ज्वलता में बढ़ी; नाट्टत्तन्–आँखों वाला है; किरियिन् तोऱ्ऱत्तान्–गिरि-सम आकार का है; तोळ् ओडु तोळिनै–एक कन्धे के साथ दूसरे कन्धे को; तॊटर्न्तु नोक्कुऱिन्–बराबर एक ही दृष्टि में देखना चाहूँ तो; कण् नीळिय अल्ल–मेरी आँखें लम्बी नहीं हैं (दृष्टि में सामर्थ्य नहीं है); नॆटितु मार्पु ऎन्पाळ्–विशाल वक्ष वाला है, कहती। २३५

वह उनके रूप को अंग-अंग देखती और सराहती। इनकी आँखें कमलदल की शोभा लिये बहुत मनोरम हैं। पर्वत-समान आकार के इसके दोनों कंधों को एक साथ, एक दृष्टि में देखना कठिन है क्योंकि मेरी आँखें उतनी लम्बी नहीं रहतीं। इसका वक्ष बहुत विशाल है। २३५

अदिहनिन्	ऱॊळिरुमिव्	वळहन्	वाणुमुहम्
बॊदियविळ्	तामरैप्	पूवै	यॊप्पदो
कदिर्मदि	यामॆनिऱ्	कळैह	डेयुमम्
मदियॆनिन्	मदिक्कुमोर्	मऱुवण्	डॆन्नमाल् 236

निन्ऱु अतिकम् ऑळिरुम्–स्थिर रूप से अधिक दीप्तिमान; इ अळकन् वाळ् मुकम्–इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल मुख; पॉति अविळ् तामरै पूवै ऑप्पतो–पंखुड़ियाँ जिसकी विकसित हो रही हैं, उस कमल की उपमा बन सकता है; कतिर् मति आम्–(शीतल-) किरण (पूर्ण) चन्द्र है (कहूँ); ऍन्निल्–तो; कलैकळ् तेयुम्–कलाएँ लुप्त होती जाती हैं; अ मति ऍन्निल्–वह चन्द्र (सम) है, कहा भी जाय तो; मतिक्कुम्–पूर्ण चन्द्र में भी; ओर् मऱु उण्टु–एक कलंक है; ऍन्नुम्–ऐसा कहती। २३६

स्थिर रूप से अत्यधिक शोभायमान रहनेवाले इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल आनन विकासशील कमल से उपमित हो सकता है क्या ? नहीं। उज्ज्वल किरणों वाला पूर्ण-चन्द्र उपमान बन सकता है क्या? नहीं। क्योंकि दूसरे दिन से वह क्षीण होने लग जाता है। पूर्णता स्थायी न होने पर भी राका-चन्द्र की उपमा मान जायँ तो भी उसमें कलंक है। अतः राका-चन्द्र भी इसकी उपमा नहीं बन सकता। २३६

❀ ऍवन्शॅय विनियविव् वळहै यॅय्दिनान्
अवम्जॅय्दु तिरुवुडम् बलश नोऱ्किन्ऱान्
नवम्जॅय्त् तहैयविन् नळिन नाट्टत्तान्
तवम्जॅयत् तवम्जॅय्द तवमॅ ऩ्ऩ्गिऱाळ् 237

इत्तिय इ अळकै–मधुर इस सुन्दरता को; ऍय्तिनान्–जो प्राप्त है, यह; अवम् चॅय–अपना रूप बिगाड़ने के लिए; तिरु उटम्पु–श्रीशरीर; अलच–कष्ट उठाए, ऐसा; ऍवन् चॅय–क्या साधने के लिए; नोऱ्किन्ऱान्–तप करता है; नवम् चॅयत्तकैय–नित-नवीन; इ नळिन नाट्टत्तान्–यह कमल-सम आँखों वाला; तवम् चॅय–तपस्या करे, इसके लिए; तवम् चॅय्त तवम् ऍन्–तप ने किया कैसा तप है; ऍन्किन्ऱाळ्–कहती। २३७

इतनी सुन्दरता पाने का भाग्यशाली यह अपने लावण्य को नष्ट करते हुए और श्री शरीर को दुख देते हुए कौन सा कार्य साधने के लिए तपस्या करता है ? हा ! नितनवीन कमलसम आँखों वाला यह तप करे, इसके लिए तप ने क्या ही तप किया है ? —यह आश्चर्य करती ! । २३७

उडुत्तनी राडैय ळुरुवच् चॅव्वियळ्
पिडित्तरु नडैयिनळ् पॅण्मै नन्ऱिवन्
अडित्तलन् दीण्डलि नवनिक् कम्मयिर्
पॉडित्तन पोलुमिप् पुल्लॅन् ऱुन्नुवाळ् 238

उटुत्त नीर् आटैयळ्–समुद्रवसना; उरुव चॅव्वियळ्–रूपसौंदर्यवती; पिटि तरु नटैयिनळ्–हथिनी-सम चाल वाली (भूदेवी का); पॅण्मै नन्ऱु–स्त्रीत्व श्लाघनीय है; इ पुल्–ये घासें; इवन् अटित्तलम् तीण्टलिन्–इसके चरणों के स्पर्श से; अ मयिर्–उसके रोंगटे; पॉटित्तन पोलुम्–खड़े हुए हों, ऐसी लगती हैं; ऍन्ऱु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३८

समुद्रवसना, सौन्दर्यवती और हथिनी-सी चाल वाली भूमिदेवी का स्त्रीत्व भाग्यवान हो गया। इन घासों को देखो। भूमि के रोम के समान हैं जो इसके चरण-स्पर्श से पुलकित हो खड़े रहते हैं —यह कवित्वपूर्ण विचार करती। २३८

वाणिला मरुवलान् वयङ्गु शोदियैक्
काणल नेकॉलाङ् कदिरि नायहन्
शेणॅलाम् बुल्लॉळि शॅलुत्तिच् चिन्दैयिल्
नाणिलन् मीमिशै नडक्कु मॅन्गिन्ऱाळ् 239

वाळ् निला मुरुवलान्–उज्ज्वल चाँदनी-सम दाँतों वाले इसकी; वयङ्कु चोतियै–शोभायमान प्रभा को; कतिरिन् नायकन्–किरणनायक सूर्य ने; काणलते कॉलाम्–देखा नहीं है शायद; चेण् ॲलाम् पुल् ऑळि चॅलुत्ति–(तभी तो) दूर-दूर तक अपनी मन्द प्रभा फैलाते हुए; चिन्तैयिल्–मन में; नाण् इलन्–लाज-रहित; मी मिचै–आकाश में; नटक्कुम्–संचार करता है; ॲन्किन्ऱाळ्–यह निंदा करती। २३९

उज्ज्वल चाँदनी के समान दाँत वाले इसके शरीर की ज्योति को रश्मिपति सूर्य ने देखा नहीं है शायद क्या ? तभी तो वह दूर-दूर तक अपना मंद प्रकाश फैलाते हुए, निर्लज्ज होकर, आकाश में संचार करता है ! —ऐसा कहती। २३९

कुप्पुऱऱ् करियमाक् कुन्ऱै वॅन्ऱुयर्, इप्पॅरुन् दोळव तिदळ्क् केऱ्पदोर्
ऑप्पॅन वुलहमे युरैक्कि नॊण्णुमो, तुप्पिनिऱ् ऱुप्पुडै यादैच् चॊल्लुहेन् 240

कुप्पुऱक्कु अरिय–जिसको लाँघना मुश्किल है, उस; मा कुन्ऱै वॅन्ऱु–बड़े पर्वत को हराकर; उयर्–उन्नत हुए; इ पॅरुम् तोळवन्–बड़े कन्धों वाले इसके; इतळ्क्कु–अधरों की; ओप्पु ॲत–समता करनेवाला ऐसा; उलकमे उरैक्किन्–सारी दुनिया कहे तो भी; ऑण्णुमे–वह समान हो सकता है क्या; तुप्पितिल्–प्रवाल से बढ़कर; तुप्पु उटै–(उपमा होने का) सामर्थ्य रखनेवाला; यातै चॊल्लुकेन्–किसको कह सकूँगी। २४०

अलंघ्य पर्वत को भी नीचा दिखानेवाले कन्धों से शोभायमान इसके अधरों की तुलना प्रवाल से लोक करते है। तो क्या प्रवाल में वह सामर्थ्य है ? लेकिन प्रवाल से बढ़कर समर्थ उपमा कहाँ खोजूँ ? (तुप्पु—प्रवाल; सामर्थ्य)। २४०

नऱ्कलै मदियुऱ वयङ्गु नम्बितन्, ॲऱ्कलै तिरुवरै यॅय्दि येमुऱ
वऱ्कलै नोऱ्ऱन माशि लामणिप्, पॊऱ्कलै नोऱ्ऱिल पोलु मालॅन्ऱाळ् 241

नल् कलै मति–पूर्ण-(कला)-चन्द्र की; उऱ–तुलना करते हुए; वयङ्कुम्–शोभायमान; नम्पि तन्–इस पुरुष-नायक की; ॲल् कलै–सूर्य (प्रभा-) हारी; तिरु अरै–श्रीयुक्त कमर को; अय्ति–प्राप्त करके; एम् उऱ–आनन्द भोगने के लिए;

वऱ्कलै नोऱ्ऱत–वल्कल ने तप किया था; माचु इला मणि–निर्दोष और श्रेष्ठ; पॊॅन् कलै–स्वर्ण-वस्त्र ने; नोऱ्ऱिल पोलुम्–तप नहीं किया शायद; ॲन्ऱाळ्–कहती। २४१

वह वल्कल का भाग्य सराहती। कहती— सारी कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान 'इस पुरुषनायक की सूर्यप्रभाहारी श्रीकमर को लपेटकर सुखभोग करने का भाग वल्कल ने ही अपने तप द्वारा प्राप्त किया है। क्या स्वर्ण-वस्त्र ने तपस्या नहीं की है शायद ? । २४१

तॉडैयमै नॅडुमळैत् तॉड्ग लामॅन्क्
कडैहुळन् ऱिडैनॅऱि करिय कुन्जियैच्
चडैयॅनप् पुनैन्दिल नॅन्निऱ् ऱैयलार्
उडैयुयिर् यावैयु मुडैयु मालॅन्ऱाळ् 242

तॉटै अमै–बराबर और; नॅटु मळै तॉड्कल् आम् ॲन–लम्बी बारिश की धार के समान; कटै कुळन्ऱु–छोर कुंचित होकर; इटै नॅऱि–बीच में खूब घने; करिय कुन्चियै–काले केश को; चटै ॲन पुनैन्तिलन् ॲन्निल्–जटा बनाकर नहीं रखता तो; तैयलार् उटै–स्त्रियों के; उयिर् यावैयुम्–सारे प्राण; उटैयुमाल्–मिट जाते; ॲन्ऱाळ्–कहती। २४२

वह स्त्रियों पर तरस खाती, कहती। इनके काले केश मेघ से बराबर गिरनेवाली धार के समान लम्बे और छोर में कुंचित हैं। वे घने हैं। अगर यह उनको जटा के रूप में नहीं बाँधता तो स्त्रियों के प्राण मिट जाते (स्त्रियों के मन टूट जाते)। २४२

नाऱिय नहैयणि नल्ल पुल्लिनाल्
एऱिय शॅव्वियै यियऱ्ऱु मोवॅना
माऱहन् मुळुमणिक् करशिन् माट्चिदान्
वेऱोरु मणियिनाल् विळङ्गु मोवॅन्ऱाळ् 243

नाऱिय–शोभायमान; अणि नकै–सुन्दर आभरणों में; नल्ल–श्रेष्ठ; पुल्लिनाल्–इसके शरीर का आलिंगन करें; एऱिय चॅव्वियै–(तो वे) और अधिक सुन्दरता को; इयऱ्ऱुमो–प्रदान कर सकेंगे क्या; ॲना–सोचकर; माऱु अकल्–लाजवाब; मुळु मणिक्कु अरचिन्–सारे रत्नों के राजा श्रीकौस्तुभ का; माट्चि–शान; वेऱु ऒरु मणियिनाल्–दूसरी एक मणि से; विळङ्कुमो–प्रकाशित हो सकता है क्या; ॲन्ऱाळ्–कहती। २४३

वह उनको आभरणभूषित के रूप में कल्पना करती है और पूछती है कि क्या अति सुन्दर आभरणों में अति श्रेष्ठ आभरणों को चुनकर इसको पहनाएँ तो वे आभरण इसकी दर्शनीयता को बढ़ा सकेंगे ? वह निश्चय करती कि मणियों में श्रेष्ठ श्रीकौस्तुभमणि का शान और रूप-गौरव अन्य रत्नों द्वारा बढ़ाया जा नहीं सकता। २४३

करन्दिल तिलक्कण मॅडुत्तुक् काट्टिय
परन्दरु नान्मुहन् पळिप्पुड़् ड़ान्रो
इरन्दिव निर्णयडिप् पॉडियु मेड़्किलाप्
पुरन्दर नुलहॅलाम् पुरक्किन् ड़ान्ड़ाळ् 244

इवन् इणै अटि–इसके चरणद्वय की; पॉटियुम्–धूलि की महिमा; इरन्तुम् एड़्किला–याचना करने पर भी जो प्राप्त न कर सकेगा; पुरन्तरन्–वह पुरन्दर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों का; पुरक्किन्ड़ान्–पालन करता है; करन्तिलन्–बिना छिपाये; इलक्कणम् ॲट्टुत्तु काट्टिय–(सामुद्रिका-) लक्षणों के साथ इनकी रचना करनेवाले; परम् तरु नान्मुकन्–महिमायुक्त ब्रह्मा; पळिप्पु उड़्ड़ान् अरो–अपराधी हो गया न; ॲन्ड़ाळ्–कहती। २४४

इसके चरणद्वय की धूलि के समान भी पुरन्दर नहीं बन सकता। वह याचना कर पा लेने का प्रयास करे तो भी उसे इसकी-सी महिमा नहीं हो सकती। तो भी वह तीनों लोकों का पालन करता है! ब्रह्मा ने बिना किसी दुराव के सारे लक्षणों से युक्त कराके इसको रचा है तो क्या लाभ है ? इसको तपस्वी बनाने से ब्रह्मा को अपयश मिल गया है। २४४

नीत्तमुम् वानमुङ् गुरुह नॅञ्जिडैक्
कोत्तवन् बुणर्विडैक् कुळित्तु मीक्कॉळ
एत्तवुम् बरिविन्नॉन् ड़ीह लान्बॉरुळ्
कात्तवन् बुहळॅनत् तेयुङ् गड़्पिन्नाळ् 245

नीत्तमुम्–समुद्रजल; वानमुम्–और आकाश को; कुरुक–छोटा दिखने देते हुए; नॅञ्चु इटै कोत्त–अपने मन में अंकित; अन्पु उणर्वु इटै–कामेच्छा में; कुळित्तु–मग्न होकर; मी कॉळ–उस राग के बढ़ने से; एत्तवुम्–याचकों की प्रार्थना सुनकर भी; परिवित्–अनुताप करके; ऑन्ड़ु ईकलान्–कुछ न देनेवाले; पॉरुळ् कात्तवन् पुकळ् ॲन–धन के परिग्रही (रक्षक) के यश के समान; तेयुम् कड़्पिन्नाळ्–क्षीणप्राय स्त्रीत्व (शील-संयम) वाली। २४५

शूर्पणखा के मन में कामसागर इतना भर आया कि उसके विस्तार के सामने समुद्र का जल और आकाश का फैलाव छोटे दिखे। उसमें मग्न उसके मन में ज्यों-ज्यों कामेच्छा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों उसका स्त्रीसहज शील और संयम उस लोभी धनवान के यश के समान छीजने लगे, जो प्रार्थना करनेवाले याचक से सहानुभूति नहीं करता और न ही कुछ देता और धन की रक्षा करता है। २४५

※ वान्ड़निल् वरैन्ददोर् माद रोवियम्
पोन्ड़न णिन्ड़न्नळ् पुळङ्गु नॅञ्जिन्नाळ्
तोन्ड़ड़न् शुडर्मणित् तोळि न्नाट्टङ्गळ्
ऊन्ड़िन पड़िक्कवो रूड़्ड़म् बॅड़्ड़िलाळ् 246

पुळुङ्कुम् नॆञ्चित्ताळ्–(काम-) तप्तमना; तोन्ऱल् तन्–चक्रवर्ती-तनय के; ुटर् मणि तोळित्–दीप्त-मणि-सम भुजाओं में; ऊन्ऱित्त नाट्टङ्कळ्–गड़ी आँखों को; ़िक्क–निकालने की; ओर् ऊऱ्ऱम् पॆऱ्ऱिलाळ्–आवश्यक शक्ति नहीं रखती थी; ान् तनिल् वरैन्त–आकाश में खींचे हुए; ओर् मातर् ओवियम् पोन्ऱत्तळ्–एक स्त्री (प्रेम की स्त्री) के चित्र के समान लगी; निन्ऱनळ्–खड़ी रही। २४६

उसका मन कामतप्त हो गया। उसमें अपनी दृष्टि को, जो श्रीराम के कांतिमय कंधों पर गड़ गयी थी, उखाड़ लेने की क्षमता नहीं रह गयी थी। इसलिए वह बीच आकाश में ही निस्पंद-सी खड़ी रह गयी। तब वह आकाश में खींचे गये स्त्रीचित्र (या प्रेमचित्र) के समान दिखी। २४६

❀ निन्ऱन	ळिरुन्दव	नडिय	मार्बहम्
ऑन्ऱुवॆ	नन्ऱॆनि	लमुद	मुण्णितुम्
पॊन्ऱुवॆन्	पोक्किनि	यरिदु	पोलॆनाच्
चॆन्ऱॆदिर्	निऱ्पदोर्	शॆय्है	तेडुवाळ् 247

निन्ऱनळ्–स्तब्ध खड़ी रही; इरुन्तवन्–वहाँ स्थित उसका; नॆडिय मार्पु अकम्–विशाल वक्षस्थल पर; ऑन्ऱुवॆन्–लग जाऊँगी; अन्ऱु ऎनिल्–(वह) नहीं (हो सका) तो; अमुतम् उण्णितुम्–अमृत खाऊँगी तो भी; पॊन्ऱुवॆन्–(इस काम-वेदना के कारण) मर जाऊँगी; पोक्कु इनि अरितु पोल् ऎना–कोई गति दूसरी नहीं शायद, यह सोचकर; ऎतिर् चॆन्ऱु निऱ्पतु–सामने जाकर स्थित होने का; ओर् चॆय्कै तेटुवाळ्–एक बहाना ढूँढ़ती। २४७

चित्र के समान स्थिर जो खड़ी रही, उस शूर्पणखा के मन में यह संकल्प उठा। वहाँ रहनेवाले उस पुरुष के विशाल वक्षस्थल में लिपट जाऊँगी। अगर वह नहीं हो सकता तो अमृत भी मुझे जीवित नहीं रख सकता— मैं मर जाऊँगी। कोई दूसरा चारा नहीं दीखता। अब श्रीराम के सामने आकर खड़ी होने के लिए मन में एक योग्य बहाना ढूँढ़ने लगी। २४७

❀ ऍयिऱुडै	यरक्कियॆव्	वुयिर	मीट्टदोर्
वयिऱुडै	याळॆन	मऱुक्कु	मादलाल्
कुयिलॊडॆर्	कुदलैयोर्	कॊव्वै	वायिळ
मयिलॊड	रियलॆळिल्	मरुव	नन्ऱॆना 248

ऍयिऱु उटै अरक्कि–वक्रदाँत वाली राक्षसी; ऍ उयिरुम् इट्टतु–सभी जीवों को जिसमें दफ़ना लिया है, उस; ओर् वयिऱु उटैयाळ्–उदर वाली है यह; ऎन–समझकर; मऱुक्कुम् आतलाल्–इनकार कर देगा, इसलिए; कुयिल् तॊटर्—कोयल-सम; कुतलै–मधुर वाणी; ओर् कॊव्वै वाय्–बिम्बाधर; इळमयिल् तॊटर्–(इनके साथ) बालमयूर की-सी छटा वाली; इयल् ऎळिल्–स्वाभाविक शोभा को; मरुवल्–अपनाना; नन्ऱु ऎना–अच्छा, समझकर। २४८

उसे संशय था कि श्रीराम से इस रूप में मिलूँ तो वे अस्वीकार कर देंगे। वे यह सोचेंगे कि इस राक्षसी का पेट सभी जीवों को जीवित ही गाड़ देने का गड्ढा है। इसलिए उसने विचार किया कि मैं एक सुन्दरी का रूप धारण करूँगी। उसकी वाणी कोकिल की-सी होगी। उसके अधर बिंबफल के समान लाल होंगे। उसकी चमक-दमक बाल-मयूर की-सी होगी। और समूची सुन्दरता स्वाभाविक होगी। हाँ वही अच्छा कार्य होगा। २४८

❀ पङ्गयच् चॆल्वियै मऩत्तुप् पाविया
अङ्गैयि ऩायमन् दिरत्तै यायिऩ्दऩळ्
तिङ्गळिऱ् चिऱन्दॊळिर् मुहत्तळ् चॆव्वियळ्
पॊङ्गॊळि विशुम्बिऩिऱ् पॊलियत् तोऩ्ऱिऩाळ् 249

पङ्कय चॆल्वियै–पंकज की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी को; मऩत्तु पाविया–मन में ध्यान करके; अम् कैयिऩ् आय–खूब वश में रहे; मन्तिरत्तै–श्रीलक्ष्मी-मन्त्र को; आयिऩ्तऩळ्–जपा; तिङ्कळिल् चिऱन्तु–चन्द्र से बढ़कर; ऒळिर् मुकत्तळ्–शोभायमान मुख वाली; चॆव्वियळ्–और तरुण सुन्दरी बनी; पॊङ्कु ऒळि–अपनी छिटकती छटा को; विचुम्पिऩिल् पॊलिय–आकाश में फैलने देते हुए; तोऩ्ऱिऩाळ्–प्रकट हुई। २४९

उसने पंकजा श्रीलक्ष्मीदेवी का ध्यान किया। उसने लक्ष्मीदेवी का मंत्र वश कर रखा था। उसने वह मंत्र जपा। तब वह पूर्ण-चन्द्र से भी बढ़कर प्रभा छिटकानेवाला मुख, तरुण सौन्दर्य —इनसे युक्त होकर आकाश में अपना रूप-लावण्य-प्रकाश फैलाती हुई प्रकट हो गयी। २४९

पञ्जियॊळि विञ्जुकुळिर् पल्लव मऩुङ्गच्
चॆञ्जॆविय कञ्जनिहर् शीऱडि पॆयर्प्पाळ्
अञ्जॊलिळ मञ्जैयॆऩ वऩ्ऩमॆऩ मिऩ्ऩुम्
वञ्जियॆऩ नञ्जमॆऩ वञ्जमहळ् वन्दाळ् 250

ऒळि विञ्चु–आभा में बढ़कर; पञ्चि–लाल रुई व; कुळिर् पल्लवम्–शीतल पल्लव को; अऩुङ्क–(परास्तता का) दुख देते हुए; चॆम् चॆविय–लाल और सुन्दर; कञ्चम् निकर्—कंज-सम; चीऱटि–अपने छोटे पैरों को; पॆयर्प्पाळ्–रखती हुई; अम् चॊल् इळ मञ्ञै ऎऩ–सुन्दर बोली वाले बालमयूर के समान (छटा वाली); अऩ्ऩम् ऎऩ–हंस के समान (चाल वाली); मिऩ्ऩुम् वञ्चि ऎऩ–चमकती बिजली के समान; नञ्चम् ऎऩ–और विष के समान; वञ्च मकळ्–वंचकी नारी; वन्ताळ्–आई। २५०

फिर वह वंचकी निशाचरी श्रीराम के सामने आयी। कैसे? उसके लाल, कंजतुल्य छोटे पैर लाल रुई और शीतल पल्लवों को मात दे रहे थे। वह कोकिल के समान मधुर-मधुर बोलनेवाले बालमयूर के

मान आभा वाली थी। वह बिजली की लता के समान और विषतुल्य था। ऐसी वह मनोरम रूप से पग धरती हुई आयी। २५०

पॉन्ऩॉऴ्हु पूविन्नॉडु पूविलुऱै पूवै
पिन्ऩॉऴिल्हॉळ् वाळिणै पिऱऴ्न्दॉळिर् मुहत्ताळ्
कन्ऩियॅऴिल् कॉण्डदु कलैत्तड मणित्तेर्
मिन्ऩिऴिव तन्मैयदु विण्णिऴिव दॅन्ऩ 251

पॉन् ऑऴ्कु—स्वर्ण-वर्ण के साथ; पूविन् ऑट्टु—और कान्ति के साथ; पूविल् उऱै—कमल के फूल पर रहनेवाली; पूवै—देवी, श्रीलक्ष्मी को; पिन् ऍऴिल् कॉळ्—सौंदर्य में पीछे ढकेलनेवाली सुन्दरता लेकर; वाळ् इणै—तलवार (-सम आँखों) के जोड़े; पिऱऴ्न्तु ऑळिर्—जिसमें चलित होकर छवि दे रहे थे, वह; मुकत्ताळ्—मुख वाली; कन्ऩि ऍऴिल् कॉण्टतु—एक अनोखी सुन्दरता लिये; कलै तट मणि तेर्—चित्रमयी विशाल सुन्दर रथ; मिन् इऴिव तन्मैयतु—बिजली गिरती-सी; विण् इऴिवतु ऍन्ऩ—आकाश से उतरता हो, ऐसा। २५१

शूर्पणखा स्वर्णवर्ण, कमलजा से भी बढ़कर सुन्दरी बन गयी। उसका मुख दो चंचल और तलवार-सम आँखों के साथ बहुत ही छविमान दिखा। वह आकाश से नीचे जब उतरती आयी तब वह एक अनोखे, चित्र-प्रतिमाओं से अलंकृत विशाल और सुन्दर रथ के समान लगी, जो बिजली उतरती हो ऐसा आकर्षण लेकर आकाश से उतर रहा था। २५१

❀ कान्ऩिलुयर् कऱ्पह मुयिर्त्त कदिर्वल्लि
मेन्ऩिनन्ऩि पॅऱ्ऱुविळै कामनॅऱि वाशत्
तेन्ऩिन्मॉऴि युऱ्ऱिनिय शॅव्विनन्ऩि कॉण्डोर्
मान्ऩिन्विऴि पॅऱ्ऱुमयिल् वन्ददॅन्ऩ वन्दाळ् 252

ओर् मयिल्—एक मोर; कान्ऩिल् उयर्—सुगन्धि में बढ़े हुए; कऱ्पकम् उयिर्त्त—कल्पकतरु-सृष्ट; कतिर् वल्लि—उज्ज्वल कामलता का; मेऩि नन्ऩि पॅऱ्ऱु—रूप-सौंदर्य पाकर; काम नॅऱि—काम-मार्ग में; वाच तेनिन् मॉऴि उऱ्ऱु—सुवासपूर्ण शहद की-सी बोली के साथ; इऩिय चॅव्वि नन्ऩि कॉण्टु—मनोरम छटा से खूब पूर्ण होकर; मान् विऴि पॅऱ्ऱु—मृग के-से नयन ले; वन्ततु ऍन्ऩ—आया हो, ऐसा; वन्ताळ्—आई। २५२

फिर वह भूमि पर एक विचित्र मयूर के समान चलती आयी। कैसा मयूर? समझिए कि एक मयूर को सुवासित कल्पतरु द्वारा सृजित आभा-युक्त कल्पवल्ली का रूप मिल गया। सुवासपूर्ण शहद-सी मधुर बोली, बड़ी ही आकर्षक सुन्दरता और हरिण की-सी आँखें प्राप्त हो गयीं। ऐसा एक मयूर पैदल आता हो ऐसे आकर्षण के साथ वह आयी। २५२

❀ नूबुरमु मेहलैयु नूलुमऱ लोदिप्
पूमुरलुम् वणडमिवै पूशलिड मोदै

तामुरैशॅय् हिन्ऱदॊरु तैयल्वरु मन्ऩाक्
कोमहऩु मत्तिशै कुऱित्तनऩ् विऴित्ताऩ् 253

नूपुरमुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–और मेखला; नूलुम्–हार; अऱल् ओति–काले वालू के समान केश के; पू मुरलुम्–पुष्पों पर गुंजार करनेवाले; वण्टुम्–भ्रमर; इवै–इनके; पूचल् इटुम् ओतै–जो मचाते थे, वह शब्द; ऒरु तैयल् वरुम् ऎन्ऩा–एक स्त्री आ रही है, ऐसा; उरै चॅय्किन्ऱतु–घोषणा कर रहा है; कोमकऩुम्–चक्रवर्ती-सुत ने भी; अ तिचै–उस दिशा; कुरितूतनन्–को लक्ष्य करके; विऴितूताऩ्–देखा। २५३

उसके नूपुर, मेखला, हार, केशालंकार के पुष्प पर गुंजार करनेवाले अलिकुल सब हर्षरव कर रहे थे। वह शब्द यह घोषणा कर रहा था कि कोई स्त्री आ रही है। चक्रवर्तीसुत दाशरथी ने यह जाना और उस दिशा में दृष्टि दौड़ाई, जहाँ से यह ध्वनि आ रही थी। (तुलसीदासजी ने इस ध्वनि को मदनदुंदुभी कहा है, पर वह सीताजी के मिलन के मंगलमयी पवित्र प्रसंग में।)। २५३

❀ विण्णरुळ वन्ददॊरु मॅल्लमुद मॅन्ऩ
वण्णमुलै कॊण्डिडै वणङ्गवरु पोऴ्दत्
तॅण्णरुळि येऴमै तुडैत्तॆऴुमॅय्ञ् ञानक्
कण्णरुळ्शॆय् कण्णनिरु कण्णिनॆदिर् कण्डान् 254

विण्–आकाश (स्वर्ग); ऒरु मॅल् अमुतम्–अनुपम और नरम सुधा; अरुळ वन्ततु ऎन्ऩ–देने की कृपा करने आया जैसे; वण्ण मुलै कॊण्टु–आकर्षक उरोजों के साथ; इटै वणङ्क–कमर लचकाते हुए; वरु पोऴ्ततु–जब वह आई तब; ऍण् अरुळि–बुद्धिशक्ति प्रदान कर; एऴैमै तुटैत्तु–अज्ञान दूर करके; ऎऴुम्–ऊपर उगनेवाली; मॅय् ञान कण् अरुळुम्–सच्ची ज्ञान-दृष्टि दिलाने की कृपा करनेवाले; कण्णऩ्–सर्वनेत्र श्रीराम ने; इरु कण्णिन् ऎतिर् कण्टाऩ्–अपनी दोनों आँखों से (उसको) देखा। २५४

स्वर्ग अमृत दिलाने लाया हो, ऐसे स्तनों वाली और लचकती कमर वाली, शूर्पणखा जब आ रही थी तब श्रीराम ने, जो जीवों को विवेक देकर, तद्वारा अज्ञान मिटाकर, फलस्वरूप ज्ञानदृष्टि दिलानेवाले, सब नेत्रों के नेत्र, परब्रह्म हैं, अपनी दोनों आँखों से उसको देखा। २५४

❀ पेरुळैय नाहरुल हिऱ्पिऱिदु वाऩिल्
पारुळैयि ऩिल्लदॊरु मॅल्लुरुवु पारा
आरुळैय डङ्गुमऴ हिऱ्कवदि युण्डो
नेरिळैयर् यावरिव णॆरॅन्ऩ निनैन्दाऩ् 255

पेर् उळैय–बहुत विशाल थल वाला; नाकर् उलकिल्–नागलोक में; पिऱितु वाऩिल्–उससे भिन्न स्वर्गलोक में; पार् उळैयिल्–भूतल में; इल्लतु–अप्राप्य; ऒरु–

अनुपम एक; मॆल् उरुवु पारा–कोमल रूप को देखकर; आर्–कौन; उळै अटङ्कुम् अळकिर्कु–इसमें समाविष्ट सुन्दरता का; अवति उण्टो–ठिकाना है क्या; नेरिळैयर्–आभरणधारिणी नारियाँ; यार् इवळ् नेर्–कौन इसके समान हैं; ऎन्न निनैन्तान्–ऐसा सोचा (श्रीराम ने)। २५५

विस्तृत नागलोक में, उससे भिन्न स्वर्ग में, या भूलोक में कहीं भी अप्राप्य था एक ऐसा कोमल रूप। श्रीराम सोचने लगे कि यह कौन है? इसमें समाविष्ट सुन्दरता का ठिकाना भी है? कौन आभरणभूषिता नारियाँ हैं जो इसकी समानता कर सकती हैं? । २५५

❀ अव्वयिनव् वाशैतन हत्तुडैय वन्नाळ्
शॆव्विमुह मुत्तियडि शॆङ्गैयि त्तिरैन्जा
वॆव्विय नॆडुङ्गणयिल् वीशिययल् पारा
नव्वियि नॊदुङ्गियिरै नाणियय निन्राळ् 256

अ वयित्–उस समय; अ आचै–वह राग; तन्तु अकत्तु उटैय–अपने मन में रखनेवाली; अन्नाळ्–वह (शूर्पणखा); चॆव्वि मुकम् मुत्ति–श्रीराम के मनोहर मुख को देख; अटि–उनके श्रीचरणों को; चॆम् कैयिन् इरैञ्चा–लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करके; वॆव्विय–सालनेवाला; नॆटुम् कण्–दीर्घ आँखों का; अयिल्–(दृष्टि रूपी) भाला; वीचि–फेंककर; अयल् पारा–आँख चुराकर दूसरी ओर देखती हुई; नव्वियिन् ऒतुङ्कि–हरिण के समान एक ओर हटकर; इरै नाणि–थोड़ा लजाती हुई; अयल् निन्राळ्–(श्रीराम के) पास खड़ी रही। २५६

तब तक शूर्पणखा श्रीराम के मुख के सामने आ गयी। उसने अपने मनोरम हाथ जोड़कर श्रीराम के चरणों को नमस्कार किया। अपने लाल डोरों सहित नेत्रों की भाला-सम दृष्टि श्रीराम पर फेंकी। झट आँख चुराकर दूसरी ओर देखने लगी। भीरु मृगी के समान थोड़ा हटी। लाज का किंचित प्रदर्शन किया। इन सब नखरों के साथ वह उनके पास खड़ी रही। २५६

❀ तीदिल्वर वाहलिरु निन्वरवु शेयोय्
पोदवुळ दॆम्मुळैयॊर् पुण्णियम दन्रो
एदुपदि येदुपॆयर् यावरुर वॆन्रान्
वेदमुदल् पेदैयव डन्निलै विरिप्पाळ् 257

चेयोय्–अपरिचित (या श्रीलक्ष्मी-सम) स्त्री; निन् तिरु वरवु–तुम्हारा श्रेष्ठ आगमन; तीतु इल्–अमंगलहीन (शुभ); वरवु आक–आगमन हो; पोत–तुम आओ इसका; ऎम् उळै–हमारे पास; ओर् पुण्णियम् अतु अन्रो–एक सुकृत रहा है न; एतु पति–कौन सा स्थान; एतु पॆयर्–कौन सा नाम; यावर् उरवु–रिश्तेदार कौन हैं; वेत मुतल्–वेदमूल ने; ऎन्रान्–पूछा; पेतै अवळ्–अबोध ने; तन् निलै–अपना वृत्तान्त; विरिप्पाळ्–विस्तार से कहा। २५७

श्रीराम ने सम्भाषण आरम्भ किया। आगन्तुक अजनवी! (चेयोय् का अर्थ लक्ष्मी भी हो सकता है।) तुम्हारा वर आगमन अमंगलरहित शुभ आगमन हो! हमने पुण्य किया है, यह सच है तभी तो तुम आयी हो! तुम्हारा वासस्थान कौन सा? नाम क्या? तुम्हारे रिश्तेदार कौन हैं? —वेदमूल (वोध का आधार) श्रीराम ने प्रश्न किया। अवोध (बोध-हीन) शूर्पणखा अपना वृत्तान्त विस्तार से सुनाने लगी। २५७

❀ पूविलोऩ् पुदल्वऩ् मैन्दऩ् पुदल्विमुप् पुरङ्गळ् शॅऱ्ऱ
शेवलोऩ् तुणैव ऩाऩ शॅङ्गैयोऩ् ऱङ्गै तिक्किऩ्
मावॅलाऩ् दॉलैत्तु वॅळ्ळि मलैयॅडुत् तुलह मूऩ्ऱुम्
कावलोऩ् पिऩ्ऩै काम वल्लियाङ् गऩ्ऩि यॅऩ्ऱाळ् 258

पूविलोऩ्—कमलासन के; पुतल्वऩ् मैन्तऩ्—पुत्र के पुत्र की; पुतल्वि—दुहिता हूँ; मु पुरङ्कळ् चॅऱ्ऱ—त्रिपुरदाहक; चे वलोऩ्—ऋषभवाहन के; तुणैवऩ् आऩ—मित्र; चॅम् कैयोऩ्—लाल (दान देते-देते लाल बने) हाथ वाले कुबेर की; तङ्कै—छोटी बहिन; तिक्किऩ् मा—दिग्गज; ऑलाम् तॉलैत्तु—सारे भगाकर; वॅळ्ळि मलै ऍटुत्तु—चाँदी के पर्वत (कैलास) को उठाया (जिसने); उलकम् मूऩ्ऱुम् कावलोऩ्—लोकत्रयी का पालक; पिऩ्ऩै—उस रावण की अनुजा; काम वल्लि—कामवल्ली; आम्—नाम की; कऩ्ऩि—कन्या; ऍऩ्ऱाळ्—(अपना परिचय) कहा। २५८

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के पुत्र (विश्रवा) की पुत्री हूँ। त्रिपुर जलानेवाले ऋषभवाहन शिवजी के मित्र दान देते-देते लाल बने हाथ वाले कुबेर की बहिन हूँ। दिग्गजों को भगानेवाले, चाँदी के पर्वत (कैलास) को उखाड़नेवाले त्रिलोकाधिपति रावण की अनुजा हूँ। मेरा नाम कामवल्ली है। (बार-बार शिवजी की चर्चा त्रिपुरांतक, त्रिपुरदाहक आदि के साथ आयी है। उसका संक्षिप्त विवरण यों है— तारकासुर के पुत्र विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष थे। इन्होंने कठोर तपस्या की और अपार बल-वैभव पा लिया। मय ने इनके लिए स्वर्ण, चाँदी और लोहों के प्राचीरों से युक्त तीन नगर निर्मित किये। ये नगर जहाँ चाहे उड़े जा सकते थे। वे तीनों असुर इनका उपयोग कर सर्वत्र जाते और सितम ढाते। देवों और मुनियों ने मिलकर शिवजी से प्रार्थना की। शिवजी ने भूमि को रथ, वेदों को चार अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु को धनुष, आदिशेषनाग को प्रत्यंचा, विष्णु रूपी पंखों से युक्त अग्नि को अस्त्र और अन्य देवों को अन्य अस्त्र-शस्त्र बना लिया। फिर युद्धसन्नद्ध हो चले। उन्होंने एक विचित्र हास के साथ उन असुरों को मय उनके नगरों के जला डाला। शूर्पणखा ने अपनी वंशावली की तीन पीढ़ियों की चर्चा की। क्योंकि उसका उद्देश्य 'विवाह' था।)। २५८

अव्वुरै केट्ट वीर नैयुरु मनत्तान् शॅय्है
शॅव्विदन् ड्रियलाहुम् जिड्रिदि नॅन्रु णराच् चॅङ्गण्
वॅव्वुरु वमैन्दोन् ड्रङ्गै यॅन्ड्रदु मॅय्म्मै याहिल्
इव्वुरु वमैन्द तन्मै यियम्बुदि विरैवि नॅन्ड्रान् 259

अ उरै केट्ट–वह कथन सुनकर; ऐ उरु मनत्तान्–शंकितमन होकर; चॅय्कै चॅव्वितु अन्रु–इसके (हाव-भाव और) कार्य अच्छे नहीं; चिड्रितिन् अड्रितल् आकुम्–थोड़ा समझना आवश्यक है; ॲन्रु उणरा–ऐसा महसूस करके; चॅम् कण्–रक्तिम आँखों और; वॅम् उरु अमैन्तोन्–भयंकर रूप वाले (रावण) की; तङ्कै ॲन्ड्रतु–बहिन कहा जो, सो; मॅय्मै आकिल्–सच है तो; इ उरु अमैन्त तन्मै–यह रूप (कैसे) मिला, वह प्रकार; विरैविन् इयम्पुति–शीघ्र बताओ; ॲन्ड्रान्–पूछा। २५९

शूर्पणखा का यह कथन सुनकर (उसकी अदाओं से) श्रीराम के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ। श्रीवीरराघव ने सोचा कि इसका कार्य भला नहीं लगता। थोड़ा जाँचकर समझा जा सकता है। यह सोचकर उन्होंने शूर्पणखा से पूछा कि लाल आँखों वाले और भयंकर रूप वाले रावण की बहिन होने की बात सत्य है, तो तुम्हें यह रूप कैसे मिला ? शीघ्र बताओ। २५९

तूयवन् पणिया मुन्नम् जॉल्लुवाळ् शोर्वि लाळम्
मायवल् लरक्क रोडुम् वाळ्विनै मदिक्कि लादे
आय्वुरु मनत्ते नाहि यरन्दलै निरपदानेन्
तीविनै तीय नोर्रुत् तेवरिर् पॅर्ड्र दॅन्राळ् 260

तूयवन् पणिया मुन्नम्–पवित्र पुरुष श्रीराम के पूछने पर; चोर्वु इलाळ्–उत्सुक उसने; अ माय वल् अरक्करोटुम्–उन माया में समर्थ राक्षसों के साथ; वाळ्विनै–जीवन को; मतिक्किलाते–उचित न मानकर; आय्वु उरु मनत्तेन् आकि–विवेक से भरे मन वाली होकर; अरम् तलै निर्पतु आनेन्–धर्मावलम्बी बनी; तीविनै तीय–पाप जलाने (मिटाने) के लिए; नोर्रु–तपस्या करके; तेवरिल्–देवों की कृपा से; पॅर्ड्रतु–(जो) पाया (वह) यह है; ॲन्ड्राळ्–उत्तर दिया। २६०

पवित्र मन वाले श्रीराम ने जब ऐसा प्रश्न किया, तो शूर्पणखा समझ सकती थी कि श्रीराम इसके मन की बात माननेवाले अपवित्र-चरित्र नहीं है। तो भी वह हतोत्साह होनेवाली नहीं थी। उसने उत्तर दिया कि मैं उन मायाकार्य में प्रवृत्त और चतुर राक्षसों के साथ रहना उचित नहीं समझकर विवेकशीला बन गयी हूँ। धर्ममार्गावलम्बी हो गयी। अपने सभी पापों को, तपस्या करके जला दिया। देवों की कृपा से प्राप्त यह रूप है। २६०

इमैयवर् तलैव नेयु मॅळिमैयि नेवल् शॅय्युम्
अमैदियि नुलह मून्रु माळ्बवन् ड्रङ्गै याहिल्

शुमैयुरु शॆल्वत् तोडुन् दोन्ऱलै तुणैयु मिन्ऱित्
तमियणी वरुदऱ् कॊत्त तन्मैयॆन् ऱैय लॆन्ऱान् 261

तैयल्–नारी; इमैयवर् तलैवन् ए उम्–देवेन्द्र भी; ऍळिमैयिन्–दीन बनकर; एवल् चॆय्युम्–जिसकी सेवा करता है; अमैतियिन्–उस स्थिति में; उलकम् मून्ऱुम् आळ्पवन्–जो त्रिलोकाधिपत्य करता है, उस रावण की; तङ्कै आकिल्–बहिन हो तो; चुमै उरु–गुरु; चॆल्वत्तोटुम्–धन-वैभव के साथ; तोन्ऱलै–नहीं दिखाई देतीं; तुणैयुम् इन्ऱि–सहायक से रहित; तमियळ्–अकेली; वरुतऱ्कु–आओ, इसका; ऑत्त तन्मै–योग्य कारण; ऍन्–कौन सा है; ऍन्ऱान्–पूछा। २६१

श्रीराम ने आगे पूछा— हे नारी ! तुम कहती हो कि रावण की भगिनी हूँ। रावण त्रिलोकाधिपति है। देवों के राजा देवेन्द्र भी उसका किंकर होकर उसकी सेवा-टहल करता है। वह बड़ा ही श्रीमंत है। उसके भारी धन-वैभव के योग्य रूप में तुम नहीं दिखाई देतीं। और भी तुम अकेली और कोई साथी-संगी के विना आयी हो। ऐसा दीन-हीन और असहाय आना क्योंकर हुआ ? कारण क्या है ? । २६१

वीरनः(ह्) दुरैत्त लोडु मॆय्यिलाळ् विमल यानच्
चीरिय रल्लार् माट्टुच् चॆर्हिलॆन् ऱेवर् पालुम्
आरिय मुनिवर् पालु मडैन्दनॆ निऱैव वीण्डोर्
कारिय मुण्मै निन्नैक् काणिय वन्दे नॆन्ऱाळ् 262

वीरन्–वीर के; अ॰.तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मॆय् इलाळ–असत्यवादी ने; विमल–निर्मल; यान्–मैं; अ चीरियर् अल्लार् माट्टु–उन श्रेष्ठताहीन (नीच) लोगों से; चेर्किलॆन्–नहीं मिल सकती; तेवर् पालुम्–देवों के पास और; आरिय मुनिवर् पालुम्–सुशील मुनियों के पास; अटैन्तनॆन्–आकर रहती हूँ; इऱैव–नाथ; ईण्टु ओर् कारियम् उण्मै–इधर मेरा एक कार्य है, इसलिए; निन्नै काणिय वन्तेन्–तुमको देखने आई; ऍन्ऱाळ्–कहा। २६२

श्रीवीरराघव के इस प्रश्न के उत्तर में उस मिथ्याभाषिणी ने कहा कि विमल वीर ! मैं उन नीच लोगों से नहीं मिलती। देवों और मुनियों से ही सम्पर्क रखती हूँ। प्रभु ! मेरा एक कार्य है। उसी के सिलसिले में मैं तुमसे भेंट करने आयी हूँ। २६२

अन्नव ळुरैत्त लोडु मैयनु मऱिदऱ् कॊव्वा
नन्नुदन् महळिर् शिन्दै नन्नॆरिप् पाल वल्ल
पिन्निदु तॆरियु मॆन्नाप् पॆय्वळैत् तोळि यॆन्बाल्
ऍन्नका रियत्तै शॊल्लः(ह्) दियैयुमे लिळैप्प लॆन्ऱान् 263

अन्नवळ्–उसके; उरैत्तलोटुम्–कह चुकते ही; ऐयनुम्–प्रभु ने भी; नल् नुतल् मकळिर् चिन्तै–सुन्दर भाल वाली इस स्त्री का अभिप्राय; अऱितऱ्कु ऑव्वा–

जानने में आनेवाला नहीं होता; नल् नॅरि पाल अल्ल–अच्छे पथ पर जानेवाला नहीं लगता; इतु–यह (इसका सत्य); पिन् तॅरियुम्–पीछे मालूम होगा; ॲन्ऩा–विचार करके; पॅय् वळै तोळि–भुजवलय-भूषित कंधों वाली; ॲन् पाल्–मेरे पास; ॲन्ऩ कारियत्तै–कौन से कार्य की अपेक्षा करती हो; चॊल्–कहो; अ॰॰तु इयैयुमेल्–वह युक्त हो तो; इळैप्पल्–करूँगा; ॲन्ऩान्–कहा। २६३

उसका वह उत्तर सुनकर श्रीराम ने सोचा कि इस सुन्दर भाल वाली के (मन के अंदर रहनेवाले) विचार हमारे जानने में नहीं आते। पर वे सन्मार्गगामी नहीं लगते। इसका सत्य पीछे मालूम होगा। फिर उन्होंने उससे कहा— हे अंगदालंकृत कंधों वाली ! मेरे पास क्या उद्देश्य ले आयी हो ? बताओ। अगर वह उचित और कार्यसाध्य होगा, तो अवश्य करूँगा। २६३

तामुरु कामत् तन्मै ताङ्गळे युरैप्प दॅन्ब
दामॅन्न लाव दन्ऱा लरुङ्गुल महळिर्क् कम्मा
एमुरु मुयिर्क्कु नोवे नॅन्शॅय्हेन् यारु मिल्लेन्
कामनॅन् ड्रॊरुवन् शॅय्युम् वन्मैयैक् काल्ति यॅन्ऱाळ् 264

ताम् उरु–आप में उठी; काम तन्मै–कामेच्छा की स्थिति; ताङ्कळे उरैप्पतु ॲन्पतु–स्वयं कहना, यह; अरुम् कुल मकळिर्क्कु–उत्तम कुल की स्त्रियों के लिए; आम् ॲऩल्–हो सकेगा, ऐसा कहना; आवतु अन्ऱु–होनेवाला नहीं है; एम् उरुम्–मोहमग्न; उयिर्क्कु–अपना जीवन रखने के लिए; नोवेन्–तड़प रही हूँ; ॲन् चॅय्केन्–क्या कर सकूँगी; यारुम् इल्लेन्–(अपना) कोई नहीं रखती; कामन् ॲन्ऱु ऒरुवन्–मन्मथ नाम का कोई; चॅय्युम्–(जो) करता है; वन्मैयै–उस अत्याचार को; कात्ति–रोककर (मुझे) बचाओ; (अम्मा–री मैया); ॲन्ऱाळ्–कहा। २६४

उसके उत्तर में शूर्पणखा ने कहा कि कुलीन स्त्रियों के लिए अपने काम की चर्चा स्वयं करना साध्यकाम समझना ठीक नहीं है। री मैया ! वह कठिन है। मेरा प्राण अब मोहमग्न होकर क्षीण हो रहा है। उसे बचाने को तरस रही हूँ। क्या करूँ ? मेरे कोई सहायक भी नहीं हैं। अब काम नाम का वह मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है। उसकी क्रूरता को रोको और मेरी रक्षा करो। २६४

शेणुऱ नीण्डु मीण्डु शव्वरि शिदऱि वॅव्वे
ऱेणुऱ मिळिर्न्दु नाना विदम्बुरण् डिरुण्ड वाट्कण्
पूणियल् कॊङ्गै यन्ना ळम्मौळि पुहल लोडुम्
नाणिल ळैय नॊय्य णल्लळु मल्ल लॅन्ऱान् 265

चेण् उऱ नीण्टु–दूर तक जाकर; मीण्टु–(स्थानाभाव से) लौटकर; चॅम् अरि चितऱि–लाल डोरे (जिनमें) फैले रहे; वॅव्वेऱु एण् उऱ–विविध वैशिष्ट्यों से भरे; मिळिर्न्तु–चलित होकर; नाना वितम् पुरण्टु–नाना प्रकार से घूमकर; इरुण्ट–

अन्धकार के समान काले; वाळ् कण्—तलवार-सम नेत्रों वाली; पूण् इयल् कोङ्कै—आभरणभूषित स्तनों वाली; अन्नाळ्—उस (शूर्पणखा) के; अ मोऴि—वह वचन; पुकललोटुम्—कहने पर; नाण् इलळ्—निर्लज्ज है; ऐय नॉय्यळ्—बहुत ही नीच है; नल्लळुम् अल्लळ्—भली भी नहीं है; ॲन्ऱान्—(श्रीराम ने) समझा। २६५

यह कहते हुए उसने जो नखरे दिखाये, वे उसकी निर्लज्जता को साफ़ प्रकट करते थे। उसकी आँखें, लम्बी जाकर स्थानाभाव के कारण मुड़ी हों, इतनी लम्बी थीं और विचित्र अदाएँ दिखाती हुई विविध प्रकार से चलित होती थीं। वे अन्धकार के समान काली थीं और तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके स्तन आभरणों से शोभित थे। ऐसी उसने जब वह कथन किया तब, श्रीराम समझे कि यह अतीव निर्लज्ज है। यही नहीं, वह बड़ी ओछी भी है। भली स्त्री नहीं है। २६५

पेशल ऩिरुन्द वळ्ळ लुळ्ळत्तिऩ् पॅऱ्ऱि योराळ्
पूशलवण् डरऱ्ऱुङ् गून्दऱ् पॉय्म्महळ् पुहन्ऱ वॅन्गण्
आशैकण् डरुळिऱ् ऱुण्डो वन्ऱॅन लुण्डो वॅन्ऩुम्
ऊशलि नुलावु हिन्ऱाण् मीट्टुमो ऱुरैयैच् चॉन्नाळ् 266

पेचलन् इरुन्त वळ्ळल्—(विचारमग्न) बिना कुछ कहे जो रहे, उन उदार प्रभु के; उळ्ळत्तिन् पॅऱ्ऱि ओराळ्—मन की स्थिति समझ नहीं सकी; वण्टु पूचल् अरऱ्ऱुम्—भ्रमर नाद करते हैं (जिस पर बैठकर); कून्तल्—वैसा केश वाली; पॉय् मकळ्—मायाविनी; पुकन्ऱ—(इसके) कथित वचन; ॲन् कण्—मेरे प्रति; आचै कण्टु—प्रेम करके; अरुळिऱ्ऱु उण्टो—कृपा करने के फलस्वरूप हैं; अन्ऱु ॲनल् उण्टो—'न' ऐसा कहना है; ॲन्नुम्—ऐसे (दो); ऊचलिन्—विचारों के बीच में झूलने में जैसे; उलावुकिन्ऱाळ्—डोलायमान रहनेवाली; मीट्टुम् ओर् उरैयै चॉन्नाळ्—फिर एक बात कहने लगी। २६६

यह सोचते हुए वे मौन रह गये। मायाविनी शूर्पणखा, जिसके केश पर सज्जित पुष्पों पर अलिकुल गुंजार कर रहे थे, श्रीराम के मन के भाव को समझ नही सकी। 'इसने जो कहा क्या वह मेरे ऊपर प्रेम करने की कृपा के फलस्वरूप था ? या वह इन्कार करने के लिए था ?' इन दो विचारों के बीच उसका मन झूले के समान झूलने लगा। फिर उसने एक बात कही। २६६

ॲऴुदरु मेनि यायीण् डॅय्दिय दरिन्दि लादेन्
मुऴुदुणर् मुनिव रेवऱ् चॅय्दॊऴिन् मुऱैयिन् मुऱ्ऱिप्
पऴुदऱु पॅण्मै योडु मिळमैयुम् बयन्निन् ऱेहप्
पॉऴुदॊडु नाळुम् वाळा कऴिन्दन पोलु मॅन्ऱाळ् 267

ॲऴुतु अरु मेनियाय्—(जिसका) चित्र खींचना कठिन है, वैसे रूपधर; ईण्टु

अॅय्तियतु–तुम्हारा यहाँ आगमन; अऱिन्तिलातेऩ्–नहीं जानती मैं; मुऴुतु उणर्–सर्वज्ञ; मुनिवर् एवल्–महर्षियों की आज्ञा से; चॅय् तॊऴिल्–उनकी सेवा-टहल; मुऱैयिऩ् मुऱ्ऱि–यथाविधि पूरा करके; पऴुतु अऱु पॆण्मैयोटुम्–अकलंकित स्त्रीत्व के साथ; इळमैयुम्–यौवन को भी; पयऩ् इऩ्ऱि एक–व्यर्थ बीतने देते हुए; पॊऴुतॊटु नाळुम्–समयों के साथ दिन भी; वाळा कऴिऩ्तन–व्यर्थ बीत गये; अॅऩ्ऱाळ्–कहा। २६७

ऐसे सुन्दर रूप वाले, जिसका चित्त खींचना कठिन है! तुम इधर आये, यह मैं नहीं जानती थी। इसलिए सर्वज्ञ मुनियों की सेवा-टहल में श्रद्धा के साथ लगी रह गयी और मेरे अकलंक चरित्र के साथ मेरे यौवन को भी निरर्थक बनाते हुए अनेक काल यों ही व्यर्थ वीत गये। २६७

निन्दऩै यरक्कि नीदि निलैयिलाळ् विनैमऱ् ऱॆण्णि
वन्दऩ ळाहु मॆन्ऱे वळ्ळलु मऩत्तुट् कॊण्डाऩ्
सुन्दरि मणत्तिऱ् कॊत्त तॊऩ्मैयिन् ऱुणिविऱ् ऱन्ऱाल्
अन्दणर् पावै नीया ऩरशरिल् वन्दे नॆऩ्ऱाऩ् 268

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु ने भी; निन्तऩै अरक्कि–निन्द्य निशाचरी है; नीति निलै इलाळ्–नैतिक स्थिति वाली नहीं; मऱ्ऱु विनै ॲण्णि–कोई दूसरा (बुरा) कार्य सोचकर; वन्तऩळ् आकुम्–आयी हुई है, यही होना चाहिए; अॅऩ्ऱे–ऐसे ही; मऩत्तुळ् कॊण्टाऩ्–मन में धारणा कर ली; चुन्तरी–सुन्दरी; नी अन्तणर् पावै–तुम ब्राह्मण-कन्या हो; याऩ्–मैं; अरचरिल् वन्तेऩ्–राजाओं (के कुल) में पैदा हुआ (क्षत्रिय) हूँ; मणत्तिऱ्कु ऒत्त–विवाह-क्रम के योग्य; तॊऩ्मैयिऩ् तुणिपिऱ्ऱु अऩ्ऱु–प्राचीन प्रथा को पुष्ट करनेवाला नहीं; अॅऩ्ऱाऩ्–कहा। २६८

प्रभु को विश्वास हो गया कि यह निन्द्य निशाचरी है। न्याय-मार्ग पर जानेवाली नहीं है। कोई भयंकर उद्देश्य लेकर इधर आयी है। यह दृढ़ धारणा करके प्रभु ने समझाया कि सुन्दरी! तुम ब्राह्मण-कुल-कन्या हो। मैं तो क्षत्रिय राजकुल का हूँ। विवाह सम्बन्धी जो क्रम निर्धारित हुए हैं, उन प्राचीन क्रमों के अनुसार हमारा विवाह होने योग्य नहीं है। २६८

आरण मऱैयो ऩॆन्दै यरुन्ददिक् कऱ्पि नॆम्मोय्
तारणि पुरन्द शाल कडङ्गडर् मरबिऱ् ऱैयल्
पोरणि पॊलङ्गॊळ् वेलोय् पॊरुन्दलै यिहऴ्दऱ् कॊत्त
कारण मिदुवे याहि लॆन्नुयिर् काण्बे नॆऩ्ऱाळ् 269

पोर् अणि–युद्ध ही जिसका श्रृंगार हो, ऐसे; पॊलऩ् कॊळ् वेलोय्–सुन्दर शक्ति-धारी; ॲन्तै–मेरे पिता; आरण मऱैयोऩ्–वेदज्ञ विप्र हैं; अरुन्तति कऱ्पिऩ्–अरुन्धती-सम पतिव्रता; ॲम् ओय्–मेरी माँ; तारणि पुरन्त–धरणीपालक; चालकटङ्कटर्–सालकटंकट के; मरपिल् तैयल्–वंश की पुत्री है; पॊरुन्तलै–सम्मत

न होकर; इकळ्ळतर्कु औत्त–उपेक्षा करने के लिए युक्त; कारणम् इतुवे आकिल्–कारण यही है, तो; ॲन् उयिर् काण्पॅन्–अपनी जान को (बचा हुआ) पा जाऊँगी; ॲन्ड्राळ्–कहा। २६९

शूर्पणखा ने उत्तर में कहा कि युद्ध ही जिसका शृंगार है, ऐसे उज्ज्वल भाला के धारी ! तुम यह जान लो कि मेरे पिता वेदज्ञ ब्राह्मण थे, पर अरुन्धती ही सम पतिव्रता मेरी माता धरणी के पालक 'सालकटंकट' नाम के राजवंश की संतान थी। (अध्यात्म रामायण के अनुसार तृणविंदु राजा के सालकटंकटा नाम की लड़की थी। उसके पेट से विश्रवस के वर से शूर्पणखा पैदा हुई। दूसरा वृत्तान्त है कि राक्षस-कुल के हेति का पुत्र विद्युतकेश था। उसने सालकटंकटा से विवाह किया और उनके पुत्र माल्यवान, मालि और सुमालि थे। उनमें सुमाली की पुत्री कैकशी थी, जिसके रावण, शूर्पणखा आदि सन्तानें थीं।) अगर तुम्हारी अस्वीकृति का कारण इतना ही था तो मैं बच गयी। क्षत्रिय से विवाह करने का मेरा अधिकार स्वतः सिद्ध है। इसलिए तुमसे विवाह न होने की हालत में जीवन त्यागने का विचार जो मैंने किया था अब उस विचार को त्याग दूंगी और अपने को जीवित रखूँगी। २६९

अरुत्तिय ळन्न कूऱ वहत्तुऱु नहैयिन् वॅळ्ळैक्
कुरुत्तॅळ् ऴिन्ऱ नीलक् कॊण्डलुण् डाट्टङ् गॊण्डान्
वरुत्तनीङ् गरक्कर् तम्मिन् मानुडर् मणत्त नङ्गै
पॊरुत्तमन् ऱॆन्ऱु शालप् पुलैमैयोर् पुहल्व रॆन्ऱान् 270

अरुत्तियळ्–अर्थिनी के; अन्न कूऱ–ऐसा कहने पर; अकत्तु उऱु नकैयिन्–अन्दर उठे हास के; वॅळ्ळै कुरुत्तु–श्वेत अंकुर; ॲळुकिन्ऱ–फूट निकलते हों, ऐसे मन्दहास के साथ; नील कॊण्टल्–श्यामलमेघ-सम श्रीराम ने; उण्टाट्टम् कॊण्टान्–एक लीला रची; नङ्कै–वाले; वरुत्तम् नीङ्कु–जो दुख से दूर हैं, उन; अरक्कर् तम्मिन्–राक्षसो से; मानुटर् मणत्तत्–मानवों का विवाह करना; पॊरुत्तम् अन्ऱु–उचित नहीं; ॲन्ऱु–ऐसा; चाल पुलैमैयोर्–गम्भीर विद्वान; पुकल्वर्–कहेंगे; ॲन्ऱान्–कहा। २७०

अर्थिनी शूर्पणखा ने यह कहा तो श्रीराम को हँसी आ गयी। वह हँसी अन्दर गड़ी हास-बीज के श्वेत अंकुर के समान बाहर प्रकट हुई। मेघश्याम ने एक लीला रचने का विचार किया। उन्होंने कहा कि अंगने ! राक्षस दुख से अभिभूत न होनेवाले हैं। मनुष्य तो विविध संकटों से ग्रस्त रहनेवाले हैं। मनुष्य-राक्षस का विवाह उचित नहीं होता। यह गम्भीर विद्वानों का मत है। २७०

परावरुज् जिरत्तै यारम् पत्तियिन् पयत्तै योरा
दिरावणन् ऱङ्गै यॆन्ऱ दॆळ्ळैप् पाल दॆन्ना

अरावणै अमल नन्ना यरिवित्तेन् मुन्नन् देवर्प्
परावितै नीङ्गि तेनप् पळिपडु पिरवि यॅन्राळ् 271

अरावणै अमलन् अन्नाय्–शेषशायी निर्मल (विष्णु) देव के समान रहनेवाले; परावु अरुम्–जिसका विस्तार से कहना कठिन है; चिरत्तै आरम्–श्रद्धा से युक्त; पत्तियिन् पयत्ते–उस भक्ति के फल को (जो मुझे मिला है); ओरातु–नहीं सोचकर; इरावणन् तङ्कै–रावण-भगिनी; ॲन्रतु–कहना (और उपेक्षा करना); एळ्मै पालतु–अज्ञता से सम्बन्धित है; ॲन्ना–कहकर; तेवर् परावित्तेन्–देवों की स्तुति की (मैंने); अ पळि पडु पिरवि–उस निन्दा योग्य जन्म से; नीङ्कित्तेन्–अलग हो गई हूँ; मुन्नम् अरिवित्तेन्–पहले ही समझा दिया (मैंने); ॲन्राळ्–कहा। २७१

शूर्पणखा ने तर्क प्रस्तुत किया कि हे शेषशायी विमल विष्णु-सम राम ! तुम मुझे रावण की भगिनी के रूप में ही देखते हो। मैंने कितनी श्रद्धा के साथ कैसी भक्ति की है, इसका यथार्थ विस्तार ही कठिन है। उसको भूल जाते हो और रावण की बहिन कहकर उपेक्षा दिखाते हो। यह तुम्हारी अज्ञता है ! उसने आगे विश्वास दिलाया कि मैंने देवों की स्तुति-पूजा आदि करके वह जन्म-कलंक धुला दिया है ! यह पहले ही मैंने तुमको बताया था। २७१

ऑरुवन्नो वुलह मून्रिर्क् कोङ्गोरु तलैव नूङ्गिल्
ऑरुवन्नो कुबेर नित्ति नुडन्बिरन् दारह ळन्नार्
तरुवरेर् कोडु मन्रेर् रुमियवे रिडत्तुच् चारल्
वॅरुवुवॅ नङ्गै यॅन्रान् मीट्टव ळिनैय शॊन्नाळ् 272

नङ्कै–नारीरत्न; नित्तिन् उटन् पिरन्तार्कळ्–तुम्हारे सहोदरों में; ऑरुवन्नो–एक तो; उलकम् मून्रिर्कु–तीनों लोकों का; ओङ्कु ऑरु तलैवन्–उन्नत और अकेला अधिपति है; ऊङ्किल्–वैभव में; ऑरुवन्नो–और एक तो; कुपेरन्–धनद (कुबेर) है; अन्नार् तरुवरेल्–वे कन्यादान कर देंगे; कोटुम्–मैं ग्रहण कर सकूँगा; अन्रेल्–नहीं तो; तमियै–अकेली तुम; वेरु इटत्तु चारल्–दूसरे की हो जाओ; वॅरुवुवॅन्–उससे डरता हूँ; ॲन्रान्–कहा; अवळ्–वह; मीट्टु–फिर; इन्नैय चॊन्नाळ्–यों बोली। २७२

श्रीराम ने बहस की। हे नारी-रत्न ! तुम्हारे सहोदरों में एक तो तीनों लोकों का निर्द्वन्द्व अधिपति रावण है। दूसरा धन-देवता कुबेर है। वे तुमको मेरे पास कन्यादान में दे देंगे, तो मै तुमको ग्रहण कर सकूँगा। नहीं तो, तुम अपनी इच्छा से किसी परपुरुष को वरो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे डर पैदा होता है। तब शूर्पणखा ने यों उत्तर दिया। २७२

*** कान्दर्प्प मॅन्ब दुण्डार् कादलिर् कलन्द शिन्दै**
मान्दर्क्कु मडन्दै मार्क्कु मरैहळे वहुत्त कूट्टम्

एन्दऱ् पॊऱ् ऱोळि नायि:(ह) दियॆन्दपि ऩ्ऩैनक्कु मूत्त
वेन्दर्क्कुम् विरुप्पिऱ् ऱाहुम् वेऱुमो ऱुरैयुण् डॆऩ्ऱाळ् 273

एन्तल् पॊन् तोळिनाय्—पर्वत-सम सुन्दर कंधों वाले; कातलिल् कलन्त चिन्तै—प्रेम से परस्पर अनुरक्त मन वाले; मान्तर्क्कुम्—पुरुषों और; मटन्तै मार्क्कुम्—स्त्रियों के लिए; कान्तरप्पम् ऍन्पतु—गान्धर्व प्रकार का; मऱैकळे वकुत्त—वेदों से ही निर्दिष्ट; कूट्टम्—विवाह; उण्टु—है; इ:.तु इयैन्त पिन्—(ऐसा विवाह) यह (हममें) हो जाने के बाद; ऍन्नक्कु मूत्त वेन्तर्क्कुम्—मेरे बड़े भाइयों को भी; विरुप्पिऱ्ऱु आकुम्—पसन्द आयगा; अन्ऱियुम्—इसके अलावा; वेऱुन् ओर् उरै उण्टु—दूसरी एक बात भी है; ऍन्ऱाळ्—कहा। २७३

पर्वत-सम मनोरम कंधे वाले ! परस्पर प्रेम में संयुक्त मन वाले पुरुष और स्त्रियाँ गान्धर्व विवाह कर ले सकते हैं। यह वेदसम्मत विवाहरीति ही है। पहले हम विवाह कर ले तो देखोगे कि मेरे अग्रज इसे चाव के साथ स्वीकार कर लेगे। और भी एक लाभ है, इसमें। सुनो। २७३

ॐ मुनिवरो डुडैय मुन्ऩे मुदिर्पहै मुऱैमै नोक्कार्
तनियैनी याद लान्मऱ् ऱवरोडुन् दळ्वर् कौत्त
विनैयमी दल्ल दिल्लै विण्णुनिन् ऩाट्चि याक्कि
इऩियवर् महिळ्न्दु वन्दुन् ऩेवलि निऱ्प रॆन्ऱाळ् 274

अवर्—वे (मेरे अग्रज); मुन्ऩे—पहले; मुनिवरोटु उटैय—मुनियों के साथ जो रखते हैं; मुतिर् पकै मुऱैमै—वह वैर की रीति; नोक्कार्—नहीं रखेंगे; नी तनियै आतलाल्—तुम एकाकी हो, इसलिए; अवरोटुम्—उनके साथ; तळुवऱ्कु—मिलकर रहने के लिए; ऑत्त—अनुकूल; विनैयम्—उपाय; ईतु अल्लतु इल्लै—इसके सिवा कुछ नहीं है; इनि—आगे; विण्णुम् निन् आट्चि आक्कि—स्वर्ग को तुम्हारे शासन के अधीन बनाकर; अवर् मकिळ्न्तु वन्तु—वे आनन्द के साथ आकर; उन् एवलिन्—तुम्हारे आदेश की प्रतीक्षा में; निऱ्पर्—रहेंगे; ऍन्ऱाळ्—कहा। २७४

हमारा विवाह हो जायगा तो मेरे भाई रावण आदि मुनियों को वैर की दृष्टि से नही देखेंगे। तुम इस जंगल में एकाकी रहते हो और राक्षसों की मैत्री तुम्हारे कुशल के लिए आवश्यक है। उनसे मित्रता के साथ रहने का एक मात्र उपाय यही— हमारा विवाह ही —हो सकता है। कोई दूसरा मार्ग नही। अब वे स्वर्ग को भी तुम्हारे अधीन करके स्वयं तुम्हारे पास सहर्ष आयेंगे और अधीन किंकर रहेंगे। तुम्हारी आज्ञाएँ मन लगा कर मानेंगे। २७४

ॐ निरुदर्त मरुळुम् बॆऱ्ऱे निन्ऩलम् बॆऱ्ऱे निन्ऩो
डॊरुवरुन् जॆल्वत् तियाण्डु मुऱैयवुम् बॆऱ्ऱे ऩॊन्ऱो
तिरुनहर् तोऱ्ऩ्द पिन्नर्च् चॆय्दवम् बयन्द दॆऩ्ना
वरिशिलै वडित्त तोळान् वाळॆयि ऱिलङ्ग नक्कान् 275

वरिचिलै वटित्तु तोळान्–बन्धनयुक्त धनुष चलाने में अभ्यस्त भुजा वाले; निरुतर् तम् अरुळुम् पॆट्रेन्–राक्षसों का अनुग्रह पा गया; निन् नलम् पॆट्रेन्–तुम्हारी कृपा प्राप्त हो गई; याण्टुम्–कभी भी; ऒरुवु अरुम् चॆल्वत्तु–क्षय न होनेवाले धन-वैभव के साथ; निन्नोटम् उरैयवुम् पॆट्रेन्–तुम्हारे संग रहना भी प्राप्त हो गया; तिरुनकर् तीर्न्त पिन्नर्–सुन्दर अयोध्या नगर छोड़ आने के बाद; चॆय् तवम्–मेरे किये हुए तप ने; पयन्तत्तु ऒन्रो–क्या एक (पर अनेक) फल प्रदान कर दिया है; ऎन्ना–(व्यंग्य से) कहकर; वाळ् ऎयिरु–उज्ज्वल दाँत; इलङ्क–प्रकट करते हुए; नक्कान्–हँसे। २७५

बन्धनयुक्त कठोर धनुष के प्रयोग में अभ्यस्त श्रीराम ने व्यंग्य किया। हा! मेरा अहोभाग्य! राक्षसों का अनुग्रह मिल गया! तुम्हारी कृपा मिल गयी! अक्षय धन-दौलत के साथ तुम्हारी संगति का भी बड़ा भाग्य हाथ आ गया! श्रीनगर अयोध्या छोड़कर आने के बाद मैंने जो तपस्या की थी, उसका फल क्या एक है (अनेक हैं)! यह कहकर श्रीराम सुन्दर दाँतों को प्रकट करते हुए हँसे। २७५

❀ विण्णिडै यिम्बर् नाहर् विरिञ्जने मुदलोर्क् कॆल्लाम्
कण्णिडै यॊळियिन् पाङ्गर्क् कडिहमळ् शालै निन्रुम्
पॆण्णिडै यरशि तेवर् पॆट्रनल् वरत्ताट् पिन्नर्
मण्णिडै मणियिन् वन्द वञ्जियै पोलवाळ् वन्दाळ् **276**

विण् इटै–व्योम में; इम्पर्–भू पर; नाकर्–नागलोक में; विरिञ्चन्–विरंचि; मुतलोर्क्कु ऎल्लाम्–आदि सबके लिए; कण् इटै–नेत्रों की; ऒळियिन् पाङ्कर्–ज्योतिस्वरूप श्रीराम के पास; पॆण् इटै अरचि–स्त्रियों में रानी; तेवर् पॆट्र नल् वरत्ताल्–देवों के प्राप्त वर से; पिन्नर्–बाद; मण् इटै–पृथ्वी पर; मणियिन् वन्त वञ्चियै पोल्वाळ्–मणि से निकली लता के समान (अवतरित) सीतादेवी; कटि कमळ् चालै निन्रुम्–सुगन्धि बिखेरनेवाली पर्णशाखा से; वन्ताळ्–आने लगी। २७६

श्रीराम स्वर्ग, भूलोक और पाताल मे रहनेवाले ब्रह्मा से लेकर सभी जीवों के नेत्रों के ज्योति-स्वरूप थे। उनके पास आने के लिए सीताजी तभी पर्णशाला के बाहर निकली। वे स्त्रियों में रानी थीं। देवों के वर को पूरा करने के लिए भूमि पर अवतरित हुई थीं। वे रत्न-वल्ली के समान सुबास से पूरित पर्णशाला के बाहर प्रकट हुईं। २७६

❀ ऊन्शुड वुणङ्गु पेळ्वा युणर्विलि युरुवि नारुम्
वान्शुडर्च् चोदि वॆळ्ळम् वन्दिडै वयङ्ग नोक्कि
मीन्शुडर् विण्णु मण्णुम् विरिन्द पोररक्क रॆन्नुम्
कान्शुड मुळैत्त कट्पिन् कनलियैक् कण्णिर् कण्डाळ् **277**

ऊन्–शरीर को; चुट–काम ने तपाया, उससे; उणङ्कु–मुरझाये रहनेवाली; पेळ् वाय्–बड़ा मुख वाली; उणर्वु इलि–मतिहीन शूर्पणखा; उरुविन्–भगवती के

रूप में; नाऱुम्–प्रकट हुई; वान् चुटर्–बड़ी कान्तिमय; चोति वॆळ्ळम्–ज्योति-प्रवाह; वन्तु इटै वयङ्क–आकर उनके मध्य प्रकट हुआ तो; नोक्कि–उसको देखकर; मीन् चुटर् विण्णुम्–नक्षत्र-ज्योतित आकाश में; मण्णुम्–धरती में; विरिन्त–फैले हुए; पोर् अरक्कर् ऎन्नुम्–झगड़ालू राक्षस रूपी; कान् चुट–जंगल को जलाने; मुळैत्त–उद्भूत; कट्पिन् कनलियै–पातिव्रत्य रूपी अग्निशिखा को; कण्णिल् कण्टाळ्–अपनी आँखों से देखा (देखती ऐसा अनुभव किया)। २७७

शूर्पणखा ने, जिसका शरीर कामाग्नि से तप्त होकर मुरझा-सा गया था, जिसका मुख बहुत बड़े बिल के समान था और जो अपनी बुद्धि खो चुकी थी, सीताजी के रूप में उनके मध्य आनेवाली बड़ी कान्तिमय ज्योति के प्रवाह को देखा। वह ऐसी थीं, मानो वह पातिव्रत्य की अग्निशिखा हैं, जो नक्षत्रोज्वल आकाश में और भूमि में फैले रहे राक्षस-कानन को जलाने के लिए उद्भूत हैं। २७७

※ पण्बुऱ नॆडिदु नोक्किप् पडैक्कुनर् शिऱुमै यल्लाल्
ऎण्बिऱङ् गऴहुक् कॆल्लै यिल्लैया मॆन्ऱु निन्ऱाळ्
कण्बिऱ पॊरुळिऱ् चॆल्ला करुत्तॆनि नः(ह)दे कण्ड
पॆण्बिऱन् दॆनुक् कॆन्ऱा लॆन्नबडुम् पिऱरुक् कॆन्ऱाळ् 278

पण्पु उऱ–खूब आँख लगाकर; नॆटितु नोक्कि–दीर्घकाल तक देखकर; पटैक्कुनर् चिऱुमै अल्लाल्–सृष्टिकर्ता की गलती है, नहीं तो; ऎण् पिऱङ्कु–कल्पना में आनेवाली; अऴकुक्कु ऎल्लै इल्लै आम्–सुन्दरता की सीमा नहीं होता, इस बात को साबित करती हुई; निन्ऱाळ्–यह शोभायमान (खड़ी) रहती है; कण् पिऱ पॊरुळिल् चॆल्ला–दृष्टि दूसरे पदार्थ पर नहीं जाती; करुत्तु ऎनिन् अ.·.ते–मन भी वही है; कण्ट–इसे जो देखती; पॆण् पिऱन्तेनुक्कु–स्त्री पैदा हुई मेरी स्थिति यह है; ऎन्ऱाळ्–तो; पिऱर्क्कु ऎन् पटुम्–दूसरे (पुरुषों) की क्या होगी; ऎन्ऱाळ्–(आश्चर्य के साथ) कहा। २७८

उसने खूब आँखे फाड़कर बहुत देर तक देखा। उसे एक नया तथ्य सूझा। प्रपंचसृजक ब्रह्मा की ही असमर्थता है कि उसकी सृष्टि में सुन्दरता भी सीमित रहती है। नहीं तो सत्य यह है कि सुन्दरता की कोई सीमा नहीं! यह तथ्य साबित करती हुई सीताजी उनके सामने खड़ी थीं। शूर्पणखा ने विस्मय के साथ सोचा कि इस सुन्दरता के खजाने को जो देखता है वह उस पर से आँख नहीं हटा सकता। उसके मन की भी वही हालत होगी। मैं स्त्री हूँ। इसको देखकर मेरी भी यह हालत हो गयी तो अन्य (पुरुष) लोगों की क्या स्थिति होगी ? । २७८

※ पॊरुदिऱल् तानै नोक्किप् पूवैयै नोक्कि निन्ऱाळ्
करुदमर् ऱिनिवे ऱिल्लै कमलत्तुक् कडवु ळानुम्
ऒरुतिऱत् तुणर नोक्कि युरुविनुक् कुलह मून्ऱिल्
इरुतिऱत् तार्क्कुञ् जॆय्द वरम्बिव रिरुव रॆन्ऱाळ् 279

पॉरु तिऱत्तात्तै–युद्धदक्ष श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; पूवैयै नोक्कि–फिर देवी को देखती; निन्ऱाळ्–विस्मित खड़ी (जो) रही; कमलत्तु कटवुळ् तानुम्–कमलासन देवता (ब्रह्मा) भी; ऑरु तिऱत्तु–अपूर्व रीति से; उणर नोक्कि–विवेक से देखकर; उलकम् मून्ऱिन्–तीनों लोकों के; इरु तिऱत्तार्क्कुम्–पुरुष-स्त्री दोनों वर्गों के लिए; इवर् इरुवर्–ये दोनों; उरुविनुक्कु चॅय्त वरम्पु–रूपसौंदर्य की रची सीमाएँ हैं; मऱ्ऱु करुत–दूसरा सोचने के लिए; इन्ऱि वेऱु इल्लै–अब कुछ नहीं; ऍन्ऱाळ्–धारणा बना ली। २७९

शूर्पणखा ने युद्धसमर्थ श्रीराम को देखा। फिर एक बार सीताजी पर दृष्टि डाली। विस्मयविमूढ़ खड़ी रह गयी। उसने विचार किया कि ब्रह्मा ने खूब सोचकर अच्छी तैयारी के साथ इन दोनों को पुरुष और स्त्री के सौन्दर्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप मे सरजा है। तीनों लोकों में पुरुष के सौन्दर्य की सीमा श्रीराम हैं और स्त्री-सौन्दर्य की सीमा यह स्त्री है। उसने दृढ़ धारणा बना ली, इसके सिवा सोचने के लिए गुंजाइश नहीं है। २७९

मरुवॊन्ऱु कून्द लाळै वनत्तिवन् कॊण्डु वारान्
उरुविङ्गि तुडैय राह मऱ्ऱैयोर् यारु मिल्लै
अरविन्द मलरु णीङ्गि यडियिणै पडियिऱ् ऱोयत्
तिरुविङ्गु वरुव दॆन्नो वॆन्ऱहन् दिहैत्तु निन्ऱाळ् 280

मरु ऑन्ऱु–सुवास-लगे; कून्तलाळै–केश वाली (इस) को; इवन् वनत्तु कॊण्टु वारान्–यह वन में नहीं लायगा; इतु उरुवम् उटैयर् आक–ऐसी रूपवती; मऱ्ऱैयोर् यारुम्–दूसरी कोई; इङ्कु इल्लै–यहाँ नहीं है; तिरु–श्रीलक्ष्मीदेवी; अरविन्त मलर् उळ्–अरविन्द-मध्य वास; नीङ्कि–छोड़कर; अटि इणै–चरणद्वय; पटियिल् तोय–भूमि पर पड़ने देते हुए; इङ्कु वरुवतु–यहाँ आती; ऍन्नो–क्योंकर; ऍन्ऱु–यह सोचकर; अकम् तिकैत्तु–मन में चकित होकर; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। २८०

उसने तर्क किया कि सुवासित केश वाली इसको यह पुरुष वन में अपने साथ नहीं लाया होगा। इतनी रूपवती स्त्रियाँ कोई अन्य हैं भी नहीं। इसलिए यह श्रीदेवी ही होगी, जो अपना कमल पर वास छोड़कर अपने चरणद्वय को भूमि पर पड़ने देती हुई आयी है। पर उसका इधर आगमन किस हेतु हुआ है ? ऐसा विस्मय करती हुई चकितमन होकर शूर्पणखा खड़ी रही। २८०

* पॊन्नैप् पोलॊळिरु मेनि पूवैपोल् वण्णत् तानिम्
मिन्नैप्पो लिडैया ळोडु मेवुम् वेडत्त नल्लन्
तन्नैप्पोर् ऱहैयो रिल्लात् तळिरैप्पो लडियि नाळुम्
ऍन्नैप्पो लिडैये वन्दा ळिहळ्विप्पे त्तिवळै यॆन्ना 281

पूवै पोल् वण्णत्तान्–अतसी पुष्प का-सा वर्ण-वाला; पॊन्नै पोल् ऑळिरुम्

मेनि–स्वर्ण की-सी कान्ति का शरीर; मिऩ्ऩै पोल्–विजली-सम; इटैयाळॊटुम्–कमर वाली के साथ; मेवुम् वेटत्तऩ् अल्लऩ्–मिलकर रहे, ऐसे गृहस्थ धर्मोचित वेश का नहीं; तऩ्ऩै पोल् तकैयोर् इल्ला–जिसके समान श्रेष्ठ स्त्रियाँ नहीं होतीं (जो अप्रतिम है); तळिरै पोल् अटियिऩाळुम्–जिसके पल्लव के समान चरण हैं; इटैये–(यह) बीच में; ऎऩ्ऩै पोल् वन्ताळ्–मेरे समान आई हुई होनी चाहिए; इवळै–इसको; इकऴ्विप्पेऩ्–उपेक्षित करा दूँगी; ऎऩ्ऩा–ऐसा निश्चय करके। २८१

अतसी-पुष्प का-सा रंग वाला यह स्वर्ण की-सी चमक वाली और बिजली-सी कमर वाली इसके साथ गृहस्थी चलाता नहीं लगता। इसका वेश गृहस्थी योग्य नहीं है। तपस्वी का वेश है। यह अप्रमेय स्त्री, पल्लव-चरणा नारी मेरे समान बीच में आयी हुई है। हाँ, वही होना चाहिए। अब मैं उसको निन्दित कर उपेक्षित करवा दूँगी। —शूर्पणखा ने यह संकल्प किया। २८१

❀ वरुमिवळ् मायम् वल्लळ् वञ्जनै यरक्कि नॆञ्जम्
तॆरिविल तेरुन् दऩ्मै शीरियोय् शॆव्वि दऩ्ऱाल्
उरुविदु मॆय्य दऩ्ऱा लूऩुहर् वाऴ्क्कै याळै
वॆरुविनॆऩ् नॆय्दि डामल् विलक्कुदि वीर वॆऩ्ऱाळ् 282

चीरियोय्–हे अच्छे गुण वाले; वरुम् इवळ्–जो आ रही है, यह; मायम् वल्लळ्–माया में निपुण है; वञ्चनै अरक्कि–वंचक राक्षसी है; नॆञ्चम् तॆरिवु इल–इसका मन अगम्य है; तेरुम् तऩ्मै–इसको अच्छा मानना; चॆव्वितु अऩ्ऱु–ठीक नहीं; उरु इतु मॆय्यतु अऩ्ऱु–उसका यह रूप भी सच्चा नहीं; ऊऩ् नुकर् वाऴ्क्कैयाळै–मांसाहारी जीवन वाली इसे; वॆरुविनॆऩ्–(देखकर) डरती हूँ; ऎय्तिटामल्–पास न आने दो; वीर–हे वीर; विलक्कुति–हटाओ; ऎऩ्ऱाळ्–कहा। २८२

ऐसा संकल्प करके शूर्पणखा श्रीराम से बोली। हे अच्छे गुण वाले! यह जो आ रही है माया में निपुण है। वंचकी निशाचरी है। इसके मन के भाव गूढ़ हैं और हमारी समझ में नहीं आ सकेंगे। इसको अच्छा मानना भला नहीं होगा। इसका रूप भी सच्चा नहीं है। मांस खाकर जीवन चलानेवाली इसको देखकर मेरे मन में भय पैदा होता है। हे वीर! उसको पास आने मत दो। रोको और भगाओ। २८२

❀ ऒळ्ळिदुन् नुणर्वु मिऩ्ऩे युऩ्ऩैया रॊळिक्कु मीट्टार्
तॆळ्ळिय नलत्ति नालुऩ् शिन्दनै तॆरिन्द दम्मा
कळ्ळवल् लरक्कि पोला मिवळॆनी काण्डि यॆऩ्ऩा
वॆळ्ळिय मुरुवऩ् मुत्तम् वॆळिप्पड वीर नक्काऩ् 283

वीरऩ्–वीर राघव; मिऩ्ऩे–विद्युत (-सम स्त्री); उऩ् उणर्वु ऒळ्ळितु–तुम्हारी समझ बड़ी साफ़ है; उऩ्ऩै यार् ऒळिक्कुम् ईट्टार्–तुमसे छिपने की किसके पास शक्ति है; तॆळ्ळिय नलत्तिनाल्–सुलझी हुई शक्ति से; उऩ् चिन्तनै–तुम्हारी

बुद्धि ने; तॅरिन्ततु–यह बात जान ली; अम्मा–री माँ; इवळुम्–यह भी; कळ्ळ–चोर; वल् अरक्कि–भयंकर राक्षसी; पोल् आम्–होगी, अवश्य; नी काण्टि–तुम देख लो; ॲन्ऩा–कहकर; वॅळ्ळिय मुरुवल् मुत्तम्–श्वेत दन्तमुक्ता; वॅळिप्पट–प्रकट करके; नक्कान्–हँसे। २८३

श्रीवीरराघव ने इसके उत्तर में कहा कि विद्युत के समान लगनेवाली नारी ! तुम्हारी सूझ भी बड़ी साफ़ है ! कौन तुमसे छिपने-छिपाने की क्षमता रखता है ? तुम्हारी बूझ ने अपने सामर्थ्य से सच्चाई जान ली ! हा ! री मैया ! यह अवश्य चोरनी, भयंकर राक्षसी ही होगी शायद ! तुम भी देख लो। ऐसा कहकर मोती-समान मनोरम दाँतों को प्रकट करते हुए श्रीराम हँसे। २८३

❀ आयिडै यमुदिन् वन्द वरुन्ददिक् कऱ्पि नऩ्जोल्
वेयिडै तोळि नाळुम् वीरनैच् चेरुम् वेलै
नीयिडै वन्द दॅन्नै निरुदर्तम् बावै यॅन्ऩाक्
कायॅरि यनैय कळ्ळ वुळ्ळत्ताळ् कदित्त लोडुम् 284

अ इटै–उस समय; अमुतिन् वन्त–अमृत के समान आगत; अरुन्तति कऱ्पिन्–अरुन्धती के समान पातिव्रत्य; अम् चॉल्–मधुर बोली; वेय् इटै–बाँस को पीछे करनेवाले (बाँस से भी सुडौल); तोळिऩाळुम्–कन्धे, इनसे युक्त सीताजी भी; वीरऩै–श्रीवीरराघव के पास; चेरुम् वेलै–आईं तब; काय् ॲरि अनैय–जलती आग के समान; कळ्ळ उळ्ळत्ताळ्–कपट-भरे मन वाली के; निरुतर् तम् पावै–हे राक्षसी स्त्री; इटै नी वन्ततु–बीच में तुम्हारा आना; ॲन्ऩै–कैसा; ॲन्ऩा–कहकर; कतित्तलोटुम्–कोप के साथ बढ़ने पर। २८४

तब तक सुधा-सम वहाँ जो आयीं, वे अरुन्धती-सी पतिव्रता, मधुर-वाणी और बाँस के समान कंधों वाली सीताजी श्रीराम के पास आ गयीं। झट जलती आग के समान वंचना मन में रखनेवाली शूर्पणखा ने ताड़ना दी कि राक्षस-कुमारी ! तुम हमारे बीच में कैसी आयीं ? यह कहकर वह कोप के साथ श्रीसीता की तरफ़ बढने लगी। २८४

❀ अञ्जिनळ् वञ्जि यन्न मिन्निडै यलश वोडिप्
पञ्जिन्मॆल् लडिह णोवप् पदैत्तनळ् परुवक् काल
मञ्जिडै वयङ्गित् तोन्ऱुम् पवळत्तिन् वल्लि येपोऱ्
कुञ्जर मनैय वीरन् कुववुत्तो ळुविक् कॊण्डाळ् 285

अञ्चिनळ्–भयभीत (सीताजी); मिन् इटै–बिजली-सी कमर को; वञ्चि अन्न–लता के समान; अलच–बल खाने देती हुई; ओटि–दौड़कर; पञ्चिन् मॆल् अटिकळ्–रुई-समान चरणों को; नोव–कष्ट देते हुए; पतैत्तनळ्–सिहरकर; परुव काल मञ्चु इटै–वर्षाकालीन मेघ के बीच; वयङ्कि तोन्ऱुम्–साफ़ दिखनेवाली; पवळत्तिन् वल्लिये पोल्–प्रवाल-लता ही के समान; कुञ्चरम् अनैय वीरन्–कुंजर-

सम वीर श्रीराम के; कुववु तोळ्-पुष्ट और उन्नत कन्धों से; तऴुवि कौण्टाळ्-लिपट गईं। २८५

शूर्पणखा को अपने पास आते देखकर श्री सीताजी भयभीत हो गयीं। अपनी बिजली-सी कमर को लता के समान लचकाती हुई दौड़ीं। रुई-समान पैरों को दुख देती हुई हड़बड़ाहट के साथ वह दौड़ी और कुंजर-सम श्रीराम के सबल और पुष्ट कंधों से ऐसे लग गयीं जैसे वर्षाकालीन मेघ के मध्य प्रवाललता लग गयी हो। २८५

❀ वळैयॅयिऱ्	ऱवर्ह	ळोडु	वरुम्विळै	याट्टॅन्	ऱालुम्
विळैवन	तीमै	येया	मॅन्वदै	युणर्न्दु	वीरन्
उळैवन	वियऱ्ऱ	लॊल्लै	युन्निलै	युणरु	मायिन्
इळैयवन्	मुनियु	नङ्गै	येहुदि	विरैवि	नॅन्ऱान् 286

वळै ऍयिऱ्ऱु-वक्रदाँत वाले; अवर्कळोटुम्-उन (राक्षसों) के साथ; वरुम् विळैयाट्टु ऍन्ऱालुम्-होनेवाले खेल भी हों; विळैवन तीमैये आम्-फल बुरे ही होंगे; ऍन्पतै उणर्न्तु-यह महसूस कर; वीरन्-श्रीवीरराघव; नङ्कै-नारी; उळैवन इयऱ्ऱल्-मन को संकट देनेवाले काम न करो; इळैयवन्-मेरा अनुज; उन् निलै उणरुम् आयिन्-तुम्हारी बात जान लेगा तो; ऑल्लै मुनियुम्-तुरन्त तुमसे कुपित हो जायगा; विरैविन् एकुति-शीघ्र चली जाओ; ऍन्ऱान्-कहा। २८६

अब श्रीराम महसूस करने लग गये कि वक्रदन्त राक्षसों के साथ विनोद भी अनर्थकारी है। वीर श्रीराम ने शूर्पणखा से कहा कि नारी! तुम ऐसा काम मत करो, जिससे मन को क्लेश पहुँचे। मेरा छोटा भाई तुम्हारी स्थिति जानेगा तो तुरन्त कुपित हो जायगा। तुम शीघ्र यहाँ से चली जाओ। २८६

पॊऱ्पुडै	यरक्कि	पूविऱ्	पुनलिनिऱ्	पॊरुप्पिल्	वाऴुम्
अऱ्पुडै	युळ्ळत्	तारु	मनङ्गनु	ममरर्	मऱ्ऱुम्
ऍऱ्पॆऱत्	तवञ्जॅय्	हिन्ऱा	रॅन्नैनी	यिहऴ्व	दॆन्ने
नऱ्पॊऱै	नॆञ्जि	लिल्लाक्	कळ्वियै	नच्चि	यॆन्ऱाळ् 287

पॊऱ्पुटै अरक्कि-सुन्दर वेश में जो रही, उस राक्षसी ने; पूविल्-(कमल) पुष्प पर; पुनलिल्-(क्षीरसागर के) पथ पर; पॊरुप्पिल्-(कैलास) पर्वत पर; वाऴुम्-वास करनेवाले; अऱ्पु उटै उळ्ळत्तारुम्-प्रेम-मन के (तीनों देवता) और; अनङ्कनुम्-मन्मथ और; मऱ्ऱुम् अमरर्-अन्य देवता लोग; ऍन् पॆऱ-मुझे पाने के लिए; तवम् चॅय्किन्ऱार्-तपस्या करते हैं; नल् पॊऱै-श्रेष्ठ क्षमा नामक गुण; नॆञ्चिल् इल्ला-जिसके मन में नहीं है, उस; कळ्वियै-चोरनी को; नच्चि-चाहकर; ऍन्नै नी इकऴ्वतु-मेरी तुम्हारा उपेक्षा करना; ऍन्ने-क्यों; ऍन्ऱाळ्-पूछा। २८७

शूर्पणखा जानेवाली नहीं थी। मायारूपिणी उसने श्रीराम से

कहा— कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा, क्षीरसागरवासी विष्णु, कैलासपर्वत-पति शिव, अनंग और अन्य देवता लोग मुझ पर प्रेम रखते है और मुझे प्राप्त करने हेतु तपस्या कर रहे हैं, वात ऐसी है तब तुम असह्यशीला इस नारी को चाहकर मेरी उपेक्षा करते हो ! इसका कारण क्या है ? —शूर्पणखा ने पूछा । २८७

❀ तन्नॊडुन् दॊडर्वि लादे मॆन्नवुन् दविरा डानिक्
कन्नॆडु मनत्ति शॊल्लुङ् गळ्ळवा शहङ्ग ळॆन्ना
मिन्नॊडु तॊडर्न्दु शॆल्लु मेहम्बोल् मिदिलै वेन्दन्
पॊन्नॊडुम् बुनिदन् बोयप् पूम्बॊऴिऱ् चालै पुक्कान् 288

इ कल् नॆट्टुम् मनत्ति तन्नॊटु–इस पत्थर-सम मन वाली के साथ; तॊटर्वु इलातेम्–हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है; ऎन्नवुम्–कहने पर भी; तविराळ्–यहाँ से नहीं हटती; चॊल्लुम्–इसके वचन भी; कळ्ळ वाचकङ्कळ्—वंचना-भरे वचन हैं; ऎन्ना–यह सोचकर; पुनितन्–पवित्र श्रीराम; मिन् ओटुम्–बिजली के साथ; तॊटर्न्तु चॆल्लुम्–लगे जानेवाले; ऒरु मेकम् पोल–मेघ के समान; मितिलै वेन्तन् पॊन् ओटुम्–मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ; पोय्–वहाँ से जाकर; अ पूम् पॊऴिल्–उस उपवन में रहनेवाली; चालै–पर्णशाला में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। २८८

श्रीराम ने निश्चय कर लिया कि यह पत्थर-सम मन वाली है। इस कठोरमन स्त्री से हमने कह दिया कि हमारा-तुम्हारा रिश्ता कुछ नहीं हो सकता। तो भी वह हटती नहीं। इसके कथन भी कपट के वचन लगते हैं। यह सोचकर पवित्रचरित्र श्रीराम मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ जाकर उस उपवन में रही अपनी पर्णशाला में घुस गये। सीताजी जब उनके पीछे गयीं, तव ऐसा लगा कि मेघ के पीछे बिजली जा रही हो। २८८

❀ पुक्कपिन् बोन्न दॆन्नु मुणर्विनळ् पॊऱैयि नीङ्गि
उक्कदा मुयिर ळॊन्ऱु मुयिर्त्तिल ळॊडुङ्गि निन्ऱाळ्
तक्किलन् मनत्तुळ् यादुन् दळुविलन् शलमुङ् गॊण्डान्
मैक्करुङ् गुळलि नाण्माट् टन्बिनिल् वलिय नॆन्ऱाळ् 289

पुक्क पिन्–उनके पर्णशाला में प्रविष्ट होने के बाद; पोन्तु ऎन्नुम् उणर्विनळ्–वेसुध-सी; पॊऱैयिन् नीङ्कि–शरीर से छूटकर; उक्कतु आम् उयिरळ्–ध्वस्त हुए हों, ऐसे प्राणों वाली होकर; ऒन्ऱुम् उयिर्त्तलळ्–साँस ही नहीं छोड़ी; ऒटुङ्कि निन्ऱाळ्–सन्न खड़ी रही; तक्किलन्–मेरे योग्य नहीं; मनत्तुळ् यातुम् तळुविलन्–मन में कोई लगाव पैदा नहीं हुआ है; चलमुम् कॊण्टान्–कोप भी करता है; मै करुम् कुळलिनाळ् माट्टु—अंजन-सम काला केश वाली के साथ; अन्पिनिल् वलियन्–प्रेम में दृढ़ है; ऎन्ऱाळ्–अपने आप से कहा। २८९

उनके पर्णशाला में प्रवेश के बाद शूर्पणखा की दशा बहुत बिगड़

गयी। सुधि खोकर वह क्षीण-प्राणा-सी रह गयी। साँस भी नहीं छोड़ती थी। सन्न खड़ी रही। फिर उसने आप ही आप कहा कि यह मेरे योग्य नहीं लगता। अपने मन में किंचित भी स्नेह का भाव नहीं लाता। वही नहीं, मेरे प्रति कुपित भी है। उसका इस अंजन-सम काले केश वाली स्त्री पर प्रेम दृढ़ है। २८९

❀ निन्ऱिल ळवर्रैच् चेरु नॆऱियिनै निनैन्दु पोनाळ्
इन्ऱिव नाहम् बुल्ले नॆनिलुयि रिळप्पे नॆन्नाप्
पॊन्ऱिणि शारर् चीदप् पळिक्करैप् पॊदुम्बर्प् पुक्काळ्
शॆन्ऱदु परिदि मेल्पार् चॆक्कर्वन् दिरुत्त दन्ऱे 290

निन्ऱिलळ्–(शूर्पणखा) खड़ी नहीं रही; अवत्तै–उसको; चेरुम् नॆऱियिनै–प्राप्त करने का उपाय; निनैन्तु–सोचते हुए; पोनाळ्–गई; इन्ऱु–आज; इवन् आकम् पुल्लेन्–इसके वक्ष को आलिंगन नहीं करूँगी; ऍनिल्–तो; उयिर् इऴप्पॆन्–प्राण छोड़ दूँगी; ऍन्ना–ऐसा सोचकर; पॊन् तिणि–स्वर्णमिश्रित; चारल्–एक तराई में; चीत पळिक्कु अरै–शीतल स्फटिक-चट्टान सहित रहनेवाले; पॊतुम्पर्–उद्यान में; पुक्काळ्–घुसी; परिति मेल्पाल् चॆन्ऱतु–सूर्य पश्चिम दिशा में (अस्त हो) चला; चॆक्कर् वन्तु इरुत्ततु–लालिमा आ फैली। २९०

फिर वह वहाँ खड़ी नहीं रही। उसका मन श्रीराम को भूल नहीं सका। उनसे मिलने का उपाय सोचने लगी। 'अगर मैं इसके वक्ष का आलिंगन नहीं करूँगी तो मैं प्राण त्याग दूँगी।' —यह संकल्प करती हुई वह एक उपवन मे गयी, जो तराई में था, और जिसमें शीतल स्फटिक-चट्टान थी। तब तक सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया और गगन में लाली फैल गयी। २९०

❀ अऴिन्द शिन्दैय ळाययर् वाळ्वयिन्
मॊऴिन्द कामक् कडुङ्गनल् मूण्डदाल्
वऴिन्द नाहत्तिन् वन्ऱॊळै वाळॆयिऱ्
ऱिऴिन्द कार्विड मेऱिय दॆन्नवे 291

वऴिन्त–छलककर; नाकत्तिन्–सर्प के; वन्–दृढ़; तॊळै–रंध्रसहित; वाळ्–उज्ज्वल; ऍयिऱु–विषदाँत का; इऴिन्त कार् विटम्–बाहर आया विष; एऱियतु ऍन्न–सिर पर चढ़ गया, जैसे; अऴिन्त चिन्तैयळाय्–संज्ञाशून्य होकर; अयर्वाळ् वयित्–शिथिल रहनेवाली शूर्पणखा के अन्दर; मॊऴिन्त–पूर्वोक्त; काम कटुम् कनल्–काम की भयंकर अग्नि; मूण्टतु–उद्दीप्त हुई। २९१

शूर्पणखा की स्थिति बहुत बुरी हो गयी। किसी सर्प के रंध्रसहित दृढ़ दाँत द्वारा निकले विष का असर सिर पर चढ़ गया हो, ऐसा वह स्वस्थता खोकर श्रांत हो गयी। पूर्वोक्त काम का कठोर ज्वर उसके शरीर को ताप देने लगा। २९१

※ ताड हैक्कोंडि याडड मार्बिडै, आड वर्क्कर शन्नयि लम्बुपोल्
पाड वत्तोंळिन् मन्मदन् वाय्कणै, ओड वुट्कि युयिरुळैन् दाळरो 292

ताटकै कोंटियाळ्–ताड़का, क्रूरी; तट मार्पु इटै–के विशाल वक्ष के मध्य; आटवर्क्कु अरचन्–पुरुषों में राजा श्रीराम के; अयिल् अम्पु पोल्–तीक्ष्ण शर जैसे; पाटवम् तोंळिल् मन्मतन्–कार्य-पटु मन्मथ के; पाय् कणै–प्रेषित शर; ओट–निफर गए तो; उट्कि–सिहरकर; उयिर् उळैन्ताळ्–प्राणविह्वल हुई। २६२

मन्मथ कार्यपटु था। उसका प्रेषित शर इसकी छाती को ऐसा निफर गया, जैसे पुरुषोत्तम श्रीराम का तीक्ष्ण शर क्रूरी ताड़का के वक्ष को वेधकर चला गया था। शूर्पणखा सिहर उठी और वह मर्मान्तक पीड़ा का अनुभव करने लगी। २९२

※ कलैयु वामदि येकरि याहवन्, शिलैय मारनैत् तिन्नु निनैप्पिनाळ्
मलैय मारुद मानेंडुङ् गालवेल्, उलैय मार्बिडै यून्ड्रिड वोयुमाल् 293

कलै उवा मतियै–कलाओं से पूर्ण चन्द्र को ही; करि आक–व्यंजन बनाकर; वन् चिलैय मारनै–कठोर धनुर्धर मारदेव को; तिन्नुम् निनैप्पिनाळ्–खाने का विचार किया; मलय मारुतम् आम्–मलयमारुत रूपी; नेंटुम् काल वेल्–दीर्घ यम-शूल; उलैय्–सालते हुए; मार्पु इटै ऊन्ड्रिट–छाती पर घुसा तो; ओयुम्–श्रान्त खो गई। २६३

वह सोचती कि मैं पूर्णचन्द्र को व्यंजन बनाकर कठोर धनुर्धर कामदेव को ही भक्षण कर लूँ। पर मलयपवन रूपी सशक्त शक्ति के उसके वक्ष पर गड़ने से वह निर्बल रह जाती। २९३

※ अलैक्कु माळि यडङ्गिड वङ्गैयाल्
मलैक्कु लङ्गळिऱ् ऱूर्क्कु मनत्तिनाळ्
निलैक्कुम् वानि नॆंडुमदि नीणिला
वलैक्कु नीङ्गु मिडुक्किलण् मानुवाळ् 294

अलैक्कुम्–उसको सालनेवाले; आळि–समुद्र को; अटङ्किट–चुप कराने के लिए; अम् कैयाल्–अपनी हथेली से; मलै कुलङ्कळिन्–गिरियों की राशि उखाड़कर उनसे; तूर्क्कुम् मनत्तिनाळ्–पाटने का संकल्प किया; वानिल् निलैक्कुम् नॆंटु मति–आकाश में स्थिर रहे चन्द्र की; नीळ् निला वलैक्कु–विस्तृत चाँदनी के जाल से; नीङ्कुम्–बच जाने को; मिटुक्कु इलळ्–शक्ति नहीं रखती थी; मानुवाळ्–क्षोभ करती। २६४

समुद्र-गर्जन उसे सालने लगा। उसने सोचा कि अपने हाथों से गिरिराशियों को उखाड़कर समुद्र में डालूँ और उसे पाट दूँ। पर आकाश में निरन्तर (चलते) रहनेवाले चन्द्र की किरणों के जाल से बच निकलने की शक्ति उसमें नहीं थी। इसलिए विक्षुब्ध हो जाती। २९४

❀ पूवॅ लाम्वोंडि याहविप् पूमियिल्, कावॅ लामोंडिप् पेन्नॅक् कान्दुवाळ्
शेव लोडुउ॒रै शॅन्दलै यन्ऱिलिन्, नावि नाल्वलि यॅञ्ज नडुङ्गुवाळ् 295

पू ॲलाम् पॉटियाक–सारे पुष्पों को चूर्ण बनाते हुए; इ पूमियिल्–इस पृथ्वी पर रहनेवाले; का ॲलाम्–उद्यान सब; ओटिप्पेन् ॲन्न–तोड़-फोड़ दूँगी, ऐसा; कान्तुवाळ्–कोप करती; चेवलोटु उऱै–नर (क्रौंच) के साथ रहनेवाली; चॅम् तलै अन्ऱिलित्–लाल सिर की मादा क्रौंच पक्षी के; नाविन्नाल्–(मिलन-सुख-सूचक) बोली से; वलि ॲञ्च–अपनी शक्ति खोकर; नटुङ्कुवाळ्–काँप उठती। २९५

कभी वह सोचती कि सारे उद्यानों को तहस-नहस कर डालूँ ताकि सभी पुष्प चूर्ण-चूर्ण हो जायँ। पर अपने नर के साथ रहती हुई मादा क्रौंच अपने सुख-संभोग से उत्पन्न आनन्द का नाद करती तो उससे इसका बल छूट जाता और वह काँप उठती। २९५

अणॅवि ऱिङ्गळै नुङ्ग वराविनैक्, कॉणर्वॅ न्नोडि यॅन्तक्कॉदित् तुन्नुवाळ्
पणैयिन् मॅन्मुलै मेऱ्पनि मारुदम्, पुणर वारुयिर् वॅन्दु पुळ्ङ्गुमाल् 296

अणॅवु इल् तिङ्कळै–प्रतिकूल चाँद को; नुङ्क–निगलने के लिए; अराविनै–(राहु या केतु) सर्प को; ओटि कॉणर्वॅन्–दौड़ जाकर लाऊँगा; ॲन्न–ऐसा; कॉतित्तु–खौल उठती; उन्नुवाळ्–सोचती; पणैयिन् मॅन् मुलै मेल्–पीन और नरम स्तनों पर; पनि मारुतम् पुणर–शीतल पवन के लगने से; आरुयिर् वॅन्तु–मर्मतप्त होकर; पुळ्ङ्कुम्–ताप से पीड़ित होती। २९६

वह कभी संकल्प करती कि यह चन्द्र मेरे अनुकूल नहीं है। उसे (राहु या केतु) सर्प द्वारा निगलवा लूँगी। बड़े क्रोध के साथ उसको पकड़ लाने की बात सोचती। पर उसके पीन और कोमल स्तनों पर शीतल पवन आकर लगता और उत्तेजित कामवासना से तप्त होकर थक जाती। उसके प्राण जर्जर हो जाते और वह वेदना का अनुभव करती। २९६

❀ कैह ळाऱ्ऱन कदिरिळङ् गॉङ्गै मेल्, ऐय तण्वनि यळ्ळिन ळप्पिनाळ्
मॉय्हॉ डीयिडै वॅन्दु मुरुङ्गिय, वॅय्य पाऱैयिल् वॅण्णॅय् निहर्क्कुमाल् 297

तन कतिर् इळम् कॉङ्कै मेल्–अपने छटामय तरुण उरोजों पर; कैकळाल्–अपने हाथों से; ऐय तण् पनि–छोटे शीतल हिमखण्डों को; अळ्ळितळ् अप्पिनाळ्–उठाकर (शूर्पणखा ने) लगा लिया; ती इटै–अग्नि में; वॅन्तु मुरुङ्किय–तपकर गरम बनी; वॅय्य पाऱैयिल्–उष्ण चट्टान पर (रखे); वॅण्णॅय् निकर्क्कुम्–मक्खन के समान (वाष्प) बना। २९७

उसने अपना ज्वर शान्त करने की इच्छा से शीतल हिमकणों को लेकर अपने मनोरम तरुण स्तनों पर डाल लिया। पर वे इस तरह अदृश्य हो गये, जैसे आग से तप्त गरम चट्टान पर डाला गया मक्खन पिघलकर लुप्त हो जाता है। २९७

❀ अळिक्कु मॅय्युयिर् कान्दळ् लञ्जित्तळ्
कुळिक्कु नीरुङ् गॉदित्तॅळक् कूशुमाल्
विळिक्कुम् वेलैयै वॅङ्गण तङ्गनै
ऑळिक्क लामिड मामॅन वुन्नुमाल् 298

अळिक्कुम्–संरक्षणीय; मॅय्–शरीर को और; उयिर्–प्राणों को; कान्तु–जलानेवाली; अळल्–कामाग्नि से; अञ्चित्तळ्–डरकर; कुळिक्क–नहायी; नीरुम्–वह जल भी; कॉतित्तु ॲळ–खौल उठा; कूचुम्–नहाने से सकुचाती; विळिक्कुम् वेलैयै–निनादी समुद्र को; वॅम् कण् अनङ्कनै–भयंकर मन्मथ को; ऑळिक्कल् आम् इटम्–छिपाये रखनेवाला स्थान; आम् अन उन्नुवाळ्–होगा, ऐसा सोचती। २९८

वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाहती थी। पर उसकी कामेच्छा उनका शत्रु बनी थी। उस आग को शान्त करने की इच्छा से वह स्नान करने चली तो जल ही गरम हो गया। तो बेचारी नहाने से कतराती। वह गरजनेवाले सागर को कठोरमन मन्मथ का छिपकर रहने का स्थान मानती। २९८

❀ वन्दु कार्मळै तोन्ऱिनु मामणिक्, कन्दु काणिनुङ् गैत्तलङ् गूप्पुमाल्
इन्दु कान्दत्ति नीर नॅडुङ्गलुम्, वॅन्दु कान्द वेदुम्बुरु मेनियाळ् 299

इन्दु कान्तत्तिन्–चन्द्रकान्त के; ईर नॅटुम् कलुम्–शीतल और विशाल पत्थर को भी; वॅन्तु कान्त–जलाकर भस्म करे, ऐसे; वॅतुम्पु उरु मेनियाळ्–तापशील शरीर वाली; कार् मळै वन्तु तोन्ऱिनुम्–काला मेघ आकर दिखे तो भी; मा मणि कन्तु काणिनुम्–श्रेष्ठ रत्नस्तम्भ को देखे, तब भी; कै तलम् कूप्पुम्–करतल जोड़ती। २९९

उसका शरीर इतना जलता था कि चन्द्रकान्त का बड़ा पत्थर भी उससे लगे तो जलकर राख बन जाय! ऐसी कामाग्नि से दग्ध शरीर वाली वह काले मेघ को या रत्न-स्तम्भ को देखती तो हाथ जोड़कर नमस्कार करती (श्रीराम के रंग-साम्य के कारण)। २९९

वाम मामदि युम्बनि वाडैयुम्, काम नुन्दनैक् कण्डुण रावहै
नाम वाळॅयिऱ् ऱोर्हद नाहमाय्च्, चेम मालवरै यिन्मुळैच् चेरुमाल् 300

वाम मा मतियुम्–सुन्दर पूर्णचन्द्र और; पनि वाटैयुम्–शीतल पवन; कामनुम्–कामदेव; तनै कण्टु उणरा वकै–अपने को देख न पाये, इस तरह; नाम वाळ् ॲयिऱु ऑरु कत नाकम् आय्–भयंकर दाँत वाला कुपित सर्प बनकर; चेम माल् वरैयिन्–सुरक्षित एक बड़े पर्वत की; मुळै–गुफा में; चेरुम्–जा पहुँचती। ३००

वह सुन्दर पूर्ण-चन्द्र, शीतल (उदीची) हवा और कामदेव से डरती थी। वह चाहती थी कि वे उसे देख न" ले। इसलिए वह एक भयंकर तीक्ष्ण दाँतों का सर्प बनकर सुरक्षित एक पर्वत की गुफा में जाकर छिप

गयी। क्यों? नाग चन्द्र को ग्रसनेवाला है और हवा को खानेवाला। वह शिवजी का अलंकार था और मन्मथ शिवजी से डरता था। इसलिए शूर्पणखा सर्प बनकर छिप गयी। ३००

अन्न कालै यळुन्मिहुत् तेऱ्वुम्, मुन्न मेनिय ळाय्मुलै वॅन्दुह
इन्न वाशॅय्वॅ नॅन्ऱऱि यादिळम्, पॊन्निन् वार्दळि रिऱ्पुरण् डाळरो 301

अन्न कालै–तब; अळल् मिकुत्तु एऱ्वुम्–कामाग्नि चढ़ी; मुन्न मेनियळाय्–पहले का रूप लेकर; मुलै वॅन्तु उक–स्तनों से अंगारे निकालते हुए; इन्नवा चॆय्वॅन्–किस प्रकार क्या करूँ; ऍन्ऱु अऱियातु–यह न जानकर; पॊन्निन् वार् इळम् तळिरिल्–स्वर्ण के रंग वाले पल्लवों पर; पुरण्टाळ्–लेटकर लोटी। ३०१

पर वहाँ भी गरमी बढ़ी तो उसने अपना सर्प-रूप छोड़ दिया। अपना निजी रूप लिया। उसके स्तन इतने तपने लगे कि उनसे आग-सी निकली। क्या करे, कैसे करे? किंकर्तव्यमूढ़ होकर वह स्वर्णवर्ण पल्लवों पर गिरकर लोटने लगी। ३०१

※ वीरन् मेनि वॅळिप्पड वॅय्दवन्, कार्हॊण् मेनियैक् कण्डन ळामॅन्नच्
चोरुम् वॅळ्हुन् दुणुक्कॅनु मव्वुरुप्, पेरुङ् गालप् पिणियिऱै पेर्हलाळ् 302

वीरन् मेनि वॅळिप्पट–तब वीर श्रीराम का (भ्रान्ति का) रूप उसे दिखाई दिया; वॅय्तु–चाव के साथ; अवन् कार्कॊळ् मेनियै–उनके मेघ-सम शरीर को; कण्टनळ् आम् ऍन–सचमुच देख लिया हो जैसे; चोरुम्–शिथिल हो जाती; वॅळ्कुम्–लजाती; तुणक्कु ऍन्नुम्–दलक जाती; अ उरु–वह (कल्पित) रूप; पेरुम् काल्–जब अदृश्य हो जाता, तब; अ पिणि–उस काम-रोग से; इऱै पेर्कलाळ्–जरा भी छूट नहीं सकती थी। ३०२

तब उसे श्रीराम का भ्रान्ति का रूप शून्य में दिखाई दिया। उसके मन में प्रेम उमड़ आया। मेघश्याम को प्रत्यक्ष देखती हो, ऐसा भ्रम हो गया। वह शिथिल हुई, लाज से भरी; फिर सिहर उठी। वह रूप ओझल हो गया तो उसने अनुभव किया कि उसका रोग ज्यों का त्यों है और वह उससे थोड़ा भी छूट नहीं पायी है। ३०२

※ आहक् कॊङ्गैयि नैयनॅन् ऱञ्जन, मेहत् तैत्तळु वुम्मवै वॅन्दन
पोहक् कण्डु पुलम्बुमप् पुन्मैयाळ्, मोहत् तुक्कॊर् मुडिवुमुण् डाङ्गॊलो 303

अञ्चन मेकत्तै–कजरारे (काले) मेघ को; ऐयन् ऍन्ऱु–प्रभु श्रीराम समझकर; आक कॊङ्कैयिन्–वक्ष के स्तनों के साथ; तळुवुम्–लगा लेती; अवै वॅन्तन–वे जलकर; पोक–मिट जाते; कण्टु–देखकर; पुलम्पुम्–विलाप करती; अ पुन्मैयाळ् मोकत्तिऱ्कु–उस ओछी स्त्री के काम का; ओर् मुटिवु उण्टाम् कॊलो–अन्त भी है क्या। ३०३

वह काले मेघों को प्रभु, कान्त श्रीराम समझकर अपने वक्षस्थल से स्तनों पर लगाकर कसकर पकड़ती। पर काले मेघ गरमी के कारण

बाष्प बनकर मिट जाते। तब वह मुख खोलकर विलाप करती, नीच शूर्पणखा के मोह का कोई अन्त है ? । ३०३

❀ ऊऴि वॅङ्गन लुऱ्ऱन्न ळॊत्तुमव्, वेळै यावि यिऴन्दिलळ् शॅङ्गैयिन्
आऴि यानै यडैन्दवळ् पिन्नरुम्, वाऴला मॅन्नु माशै मरुन्दिन्ने 304

ऊऴि वॅम् कनल् उऱ्ऱनळ् ऒत्तुम्–युगान्त की अग्नि में पड़ गई हो ऐसा हो गई, तो भी; चॅम् कैयिन्–लाल (श्रेष्ठ) हाथों वाले; आऴियान् अटैन्तु–(आज्ञा) चक्रधारी श्रीराम को प्राप्त करके; अदळ्–वह; पिन्नरुम् वाऴलाम्–फिर भी जी सकेगी; ऍन्नुम् आचै मरुन्तिन्–ऐसी आशा रूपी दवा के कारण; एळै–उस अबोध ने; आवि इऴन्तिलळ्–प्राण नहीं त्यागे। ३०४

उस काममोह के कारण उसकी स्थिति युगान्त के अनल-प्रवाह में पड़ी हुई सी हो गयी। तो भी आशा बँधी थी कि लाल (मनोरम) हाथों वाले श्रीराम से मिलन होगा और वह मिलकर जिएगी। वही आशा दवा बनी और उसी से उसके प्राण बचे रहे। ३०४

वञ्ज नॅक्कॊडु मायै वळर्क्कुमॅन्, नॅञ्जु पुक्कॅन दावत्तै नीक्कॅन्नुम्
अञ्ज नक्किरि येयरु ळायॅन्नुम्, नञ्जु नक्किनर् पोल नडुङ्गुवाळ् 305

नञ्चु नक्किनर् पोल–जिसने विष चाट लिया हो, उसके समान; नटुङ्कुवाळ्–काँपती (हुई); अञ्चन किरिये–अंजनगिरि (-सम राम); अरुळाय् ऍन्नुम्–कृपा करो, कहती; वञ्चत्तै–वंचना और; कॊटु मायै वळर्क्कुम्–क्रूर माया को पालनेवाले; ऍन् नॅञ्चु पुक्कु–मेरे मन में प्रवेश करके; ऍन्तु आवत्तै नीक्कु–मेरी विपदा दूर करो; ऍन्नुम्–कहती। ३०५

विष को जो चाट चुका हो, उसके समान उसका शरीर काँपने लगा। वह मन में श्रीराम से प्रार्थना करने लगी कि हे अंजनपर्वत ! मुझ पर कृपा करो। वह यह भी कहती कि मेरा मन कपटी है और माया को पालने-वाला है। उसमें तुम घुस जाओ और मुझे आफ़त से बचाओ। ३०५

❀ कावि योहय लोवॅन्नुङ् गण्णिणैत्, तेवि योतिरु मङ्गैयिर् चॅव्वियाळ्
पावि येनैयुम् पार्क्कुङ्गॊ लोवॅन्नुम्, आवि योयिनु माशैयि नोय्विलाळ् 306

आवि ओयित्तुम्–प्राण छूट जायँ, तो भी; आचैयिन् ओय्वु इलाळ्–जिसका राग नहीं थमता, वह; कावियो–नीला पुष्प है; कयलो–या 'कयल' मछली है; ऍन्नुम्–ऐसा कहलानेवाली; कण् इणै–आँखों का जोड़ा; तेवियो–जिसका है वह (उसकी) देवी तो; तिरुमङ्कैयिल् चॅव्वियाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी से भी सुन्दर है; पावियेनैयुम्–मुझ पापिनी पर; पार्क्कुम् कॊलो–दृष्टि लगाएगा क्या; ऍन्नुम्–(यह नैराश्य वचन) कहती। ३०६

चाहे उसके प्राण ही क्यों न छोड़ जायँ, वह तो श्रीराम पर काम को छोड़नेवाली नहीं थी। उसे सीतादेवी का स्मरण आया। 'नीलोत्पल

है या कयल नाम की मछली ? ऐसा सन्देह उत्पन्न करनेवाली आँखों के जोड़े से युक्त उसकी पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवी से भी बढ़कर सुन्दरी है। वह क्या मेरी ओर आँख उठाकर भी देखेगा ?' ऐसा प्रश्न करके वह दुखी हुई। ३०६

❀ आऩ्ऱ काद लः(ह्)दुऱ वॆय्दुऴि, मूऩ्ऱु लोहमु मूडु मरक्कराम्
एऩ्ऱ कारिरु णीक्क विराहवऩ्, तोऩ्ऱि ऩाऩॆऩ वॆय्यवऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 307

आऩ्ऱ कातल् अ.'.तु–गहरे काम-रोग से; उऱ वॆय्तुऴि–खूब पीड़ित होकर जब रही; मूऩ्ऱु लोकमुम् मूटुम्–(स्वर्ग-मध्य-पाताल) तीनों लोकों को आच्छादित कर जो रहे; अरक्कर् आम्–उन राक्षस रूपी; एऩ्ऱ कार् इरुळ्–अन्धकार को, जो सामने आया था; नीक्क–दूर करने के लिए; इराकवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ् ऎऩ–श्रीराघव आये, ऐसा; वॆय्यवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–उष्णकिरण (सूर्य) उदित हुए। ३०७

रात भर वह इसी तरह काम के बढ़ने से उद्विग्न रही। तब सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए उदित हुए, जैसे श्रीराघव तीनों लोकों पर छाये रहे राक्षस रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए अवतार ले आये। ३०७

❀ विडियल् काण्डलु माण्डुत्तऩ् ऩुयिर्हण्ड वॆय्याळ्
पडियि लाण्मरुङ् गुळळॆऩ्ऩि लॆऩ्ऩैयवऩ् वाराऩ्
कडिदि नोडिऩ्ऩै ऩॆडुत्तोल्लैक् करन्दवळ् कादल्
वडिवि ऩाऩुडऩ् वाऴ्वदे मदियॆऩ मदिया 308

विटियल् काण्टलुम्–सवेरा होते ही; आण्टु तऩ् उयिर् कण्ट–तब अपनी प्राणता को प्राप्त कर; वॆय्याळ्–नृशंस निशाचरी; पटि इलाळ्–उपमा-हीन देवी; मरुङ्कु उळळ् ऎऩिल्–पास रही तो; अवऩ् ऎऩ्ऩै पाराऩ्–वह मेरी ओर ध्यान नहीं देगा; कटितिऩ् ओटिऩ्ऩै–सवेग दौड़कर; ऎटुत्तु–उसको उठाकर; ओल्लै करन्तु–जल्दी छिपाये रखकर; कातल् अवळ् वटिविल्–उसकी प्रिया के रूप में; नाऩ् उटऩ् वाऴ्वते–मेरा उसके साथ रहना ही; मति ऎऩ–बुद्धिमानी है, ऐसा; मतिया–निश्चय करके। ३०८

सवेरा हुआ और शूर्पणखा ने देखा कि उसके प्राण बचे है। उसने सोचा कि जब तक वह स्त्री, जो अनुपम सुन्दरी है, उसके साथ रहेगी तब तक वह मेरी ओर दृष्टि देगा ही नहीं। इसलिए शीघ्र भागकर जाऊँगी और उसे उठा ले जाकर कहीं छिपा दूँगी। फिर राम की प्रिया उसका रूप लेकर उसके साथ रहूँगी। ऐसा जीना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा संकल्प करके ; । ३०८

❀ वन्दु नोक्किऩळ् वळ्ळल्पो यॊरुमणित् तडत्तिल्
शन्दि नोक्किऩ ऩिरुन्ददु कण्डऩ डम्बि

इन्दु नोक्किय नुदलियैक् कात्तय लिरुण्ड
कन्द नोक्किय शोलैयि लिरुन्दडु काणाळ् 309

वन्तु नोक्किन्ळ्–आकर देखा; वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; पोय्–जाकर; ओरु मणि तट्टत्तिल्–एक सुन्दर घाट पर; चन्ति नोक्किनन्–संध्यावन्दन में लगे; इरुन्ततु–रहे; कण्टनळ्–देखा; तम्पि–कनिष्ठ (लक्ष्मण); इन्तु नोक्किय नुतलियै–चन्द्र-सम भाल वाली सीताजी का; कात्तु–रक्षण करते हुए; अयल्–पास; कन्तम् नोक्किय–सुवास निकालनेवाले; इरुण्ट चोलैयिल्–घने उपवन में; इरुन्ततु–रहे, वह; काणाळ्–नहीं देखा। ३०९

वह आयी। आश्रम के पास आकर उसने देखा कि प्रभु वहाँ से दूर मनोहर घाट पर संध्यावन्दन में दत्तचित्त है। उसका भाई इन्दु-सम ललाट वाली सीता के सरक्षण में ही पास में सुबास देनेवाले उस आश्रम के एक छाया के कारण अँधेरे स्थान में विराजे थे। पर शूर्पणखा ने लक्ष्मण को नहीं देखा। ३०९

❀ तनियि रुन्दनळ् शमैन्ददॆन् करुत्तॆनत् ताळ्वुऱ्
ऱिनियि रुन्दॆनक् कॆण्णुव दिल्लॆन वॆण्णात्
तुनियि रुन्दवन् मनत्तिन डोहैयैत् तॊडर्न्दाळ्
कनियि रुम्बॊळिल् कात्तय लिरुन्दवन् कण्डान् 310

तनि इरुन्तनळ्–एकाकिनी रहती है; ऍन् करुत्तु–मेरा विचार; चमैन्ततु–चरितार्थ हुआ; ऍन–ऐसा और; इनि ताळ्वु उऱ्ऱु इरुन्तु–अब विलम्ब करते रहने से; ऍनक्कु ऍण्णुवतु इल्–मुझे सोचने के लिए कुछ नहीं है; ऍन–ऐसा; ऍण्णा–निश्चय करके; तुनि इरुन्त–घृणा से भरे; वन् मनत्तिनळ्–कठोर मन वाली; तोकैयै तॊटर्न्ताळ्–मयूराभा सीताजी की ओर गई; कनि–फलों से युक्त; इरुम् पॊळिल् कात्तु–विशाल उपवन में पहरा जो देते; अयल् इरुन्तवन्–पास रहे लक्ष्मण ने; कण्टान्–देखा। ३१०

शूर्पणखा को आश्वासन हो गया। 'सीता अकेली है! मेरा संकल्प पूर्ण हो गया। अब विलम्ब करके सोचते रहने के लिए कुछ नही है।' ऐसा घृणा से भरे कठोर मन वाली ने निश्चय किया। वह मयूराभा सीता की तरफ़ सवेग जाने लगी। लक्ष्मण ने, जो उस फलदार तरुओं से भरे विशाल आश्रम में पहरा देते हुए वैठे रहे, उसको देख लिया। ३१०

❀ निल्ल डीयॆनक् कडुहिनन् पॆण्णॆन निनैन्दान्
विल्लॆ डादवळ् वीड्गॊरि यामॆन विरिन्द
शिल्ल लोदियैच् चिक्कुऱच् चॆड्गैयाऱ् पऱ्ऱि
ऒल्लै यीर्त्तुदैत् तॊळिहिळर् शुऱ्ऱुवा ळुरुवि 311

अटी निल् ऍन–री खड़ी रह कहकर; कटुकिनन्–तेज चाल आये; पॆण् ऍन्न निनैन्तान्–स्त्री है, समझे; विल् ऍटातु–धनुष न लेकर; अवळ्–उस (शूर्पणखा) के;

वीङ्कु ॲरि आम् ॲन्न–खूब अधिक जलती आग के समान; विरिन्न–विस्तृत रूप से सिर के चारों ओर बिखरे रहनेवाले; चिल्लल् ओतियै–कम लम्बे केश-जाल को; चॅङ्कैयाल्–लाल हाथ से; चिक्कु उऱ पऱ्ऱि–हाथ को लपेट ले, ऐसा पकड़कर; ऑल्लै–तेजी से; ईर्त्तु–खींचकर; उतैत्तु–उसके लात मारकर; ऑळि किळर्–कान्तिमय; चुरिकैवाळ् उरुवि–कटार निकालकर। ३११

लक्ष्मण तुरन्त, 'री खड़ी रह।' —डाँटते हुए उठ आये। वह स्त्री थी, इसलिए उसने धनुष नहीं लिया। उसने आकर जलती आग के समान उसके सिर पर बिखरे रहे केश को अपने हाथ से मरोड़कर पकड़ा, उसको झटका देकर खीचा और लात मारी। फिर उन्होंने अपनी उज्ज्वल कटार निकालकर; । ३११

❀ ऊक्कित् ताङ्गिविण् पडर्वॅन्न् ऱुरुत्तॅऴु वाळै
नूक्कि नॊय्दिनिल् वॅय्दिळै येलॅन्न नुवला
मूक्कुङ् गादुम्वॅम् मुरण्मुलैक् कण्गळु मुऱैयाल्
पोक्किप् पोक्किय शिनत्तॊडुम् बुरिहुऴल् विट्टान् 312

ऊक्कि–प्रयत्न करके; ताङ्कि–(इसको) उठाते हुए; विण् पटर्वॅन्–आकाश में उड़ जाऊँगी; ॲन्ऱु–ऐसा; उरुत्तु ॲऴुवाळै–कोप के साथ उछलनेवाली को; नॊय्तिनिल् नूक्कि–आसानी से नीचे पछाड़कर; वॅय्तु इऴैयेल् ॲन्न–ऐसा बुरा काम मत करो, यह; नुवला–कहकर; मूक्कुम् कातुम्–नाक और कानों को; वॅम् मुरण् मुलै–भयंकर कुरूपी स्तनों के; कण्कळुम्–चूचुकों को; मुऱैयाल् पोक्कि–एक के बाद एक क्रम से काटकर; पोक्किय चिनत्तॊटुम्–शान्त हुए कोप के साथ; पुरि कुऴल् विट्टान्–ऐंठा केश छोड़ दिया। ३१२

उस शूर्पणखा को, जो उन्हें भी सयत्न उठाते हुए आकाश में उड़ जाने का विचार कर रही थी, नीचे पटक दिया। फिर 'ऐसे बुरे कार्य मत करो' कहते हुए उन्होंने उसकी नाक, कान और विकृत और भयंकर स्तनों के चूचुकों को क्रम से काट दिया। (यह चूचुक काटने की बात 'भागवत' में ही आयी है।) तभी जाकर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने हाथ में ऐंठे रहे उसके केश को छोड़ा। ३१२

अक्क णत्तवळ् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिय वमलै
तिक्क नैत्तिनुञ् जॅन्ऱदु तेवर्तञ् जॅवियुम्
पुक्क दुऱ्ऱदु पुहल्वदॅन् मूक्कॅनुम् बुऴैयू
डुक्क शोरियि नीरमुऱ् ऱुरुहिय दुलहम् 313

अ कणत्तु–उस समय; अवळ्–शूर्पणखा ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिय–जो विलाप किया, वह; अमलै–शोर; तिक्कु अनैत्तिनुम् चॅन्ऱतु–सारी दिशाओं में गया; तेवर् तम् चॅवियुम्–देवों के कानों में भी; पुक्कतु–घुसा; उऱ्ऱतु पुकल्वतु ॲन्–वहाँ जो हुआ उसका क्या कहा जाय; मूक्कु ॲनुम्–नाक रूपी; पुऴै

ऊट्टु–विवरों द्वारा; उक्क–बहनेवाले; चोरियिऩ्–रक्त में; ईरम् उऱ्ऱु–भीगकर; उलकम् मुळुवतुम् उरुकियतु–सारा लोक गल गया। ३१३

तब शूर्पणखा अपना मुख खोलकर उच्च स्वर में रोने-चिल्लाने लगी। वह शोर सभी दिशाओं में व्यापा और देवों के कानों में भी जाकर भर गया। जो हुआ उसका क्या कहा जाय? नासिका-विवर से जो रक्त बहा, वह इतना अधिक था कि विशाल भूमि ही गल गयी। ३१३

कॊलैतु मित्तुयर् कॊडुङ्गदिर् वाळिऩ्ऩक् कॊडियाळ
मुलैतु मित्तुयर् मूक्किनै नोक्किय मुऱ्ऱैमै
मलैतु मित्तॆऩ्ऩ विरावणऩ् मणियुडै महुडत्
तलैतु मित्तऱ्कु नाट्कॊण्ड दॊत्तदोर् तऩ्ऩमै 314

कॊलै तुमित्तु–मारना रोककर; उयर् कतिर् कॊटुम् वाळिऩ्–अधिक चमकदार भयंकर कटार द्वारा; अ कॊटियाळ्–उस अत्याचारिणी का; मुलै तुमित्तु–स्तनों (के चूचुकों) को काटकर; उयर् मूक्किनै नोक्किय–उठी हुई नाक को काटने का; मुऱ्ऱैमै–कार्य; मलै तुमित्तु ऍऩ्ऩ–पर्वत को काटने के समान; इरावणऩ् मणि उटै मकुटम्–रावण के मणिमण्डित किरीटधारी; तलै तुमित्तऱ्कु–सिरों को काट लेने के लिए; नाळ् कॊण्टतोर् तऩ्मै–'मुहूर्त' (शुभारम्भ) करने के; ऒत्ततु–समान रहा। ३१४

लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नहीं मारा। पर उसके स्तनों के अग्रभाग और नाक के उठे हुए भाग को काट दिया। वह कार्य पीछे होनेवाले रावण-वध का शुभ आरम्भ-सा था। पर्वतशिखरों के समान रावण के मणिमय किरीटधारी सिर काटकर अलग किये जायँगे। उसका आरम्भ करने का मुहूर्त अब मनाया गया। ३१४

अदिर मानिलत् तडिपदैत् तरऱ्ऱिय वरक्कि
कदिर्हॊळ् कालवेऱ् करऩ्मुद निरुदर्वॆङ् गदप्पोर्
ऎदिरि लादव रिरुदियि निमित्तमा यॆळुन्दाण्
डुदिर मारिपॆय् कार्निऱ मेहमॊत् तुयर्न्दाळ् 315

अतिर–थर्राते हुए; मा निलत्तु–विशाल भूमि पर; अटि पतैत्तु–कोप और दुख के कारण पैर पटककर; अरऱ्ऱिय–जो दहाड़ मारकर रोने लगी, वह; अरक्कि–राक्षसी; काल–यम के समान; कतिर् कॊळ् वेल्–(और) चमकदार शक्ति-धारी; करऩ् मुतल्–खर आदि; वॆम् कत पोर्–भयंकर और घमासान युद्ध में; ऎतिर् इलातवर्–जो सानी नहीं रखते थे, उन; निरुतर्–राक्षसों के; इऱुतियिऩ् निमित्तमाय्–अन्त कराने के निमित्त; ऎळुन्तु–उठी और; आण्टु–वहाँ; उतिर मारि पॆय्–रक्तवर्षा करनेवाले; कार् निऱ मेकम् ऒत्तु–काले मेघ के समान; उयर्न्ताळ्–सिर ऊँचा कर खड़ी हुई। ३१५

शूर्पणखा वेदना से थर्रा उठी। भूमि पर पैर पटकने लगी। वह

दहाड़ मारकर रोयी। फिर वह सिर तानकर खड़ी हुई, तब वह रक्त बहानेवाले काले मेघ के समान लगी। कठोर युद्ध में निर्द्वन्द्व और यम के समान घातक और चमकदार भालों वाले खर आदि राक्षसों के नाश के लिए तत्पर हुई हो, ऐसा वह निशाचरी जोश के साथ उठी। ३१५

उयरुम् विण्णिडै मण्णिडै विऴुङ्गिडन् दुळैक्कुम्
अयरुङ् गैहुलैत् तलमरु मारुयिर् शोरुम्
पॅयरुम् पॅण्बिड़न् दियात्तबट्ट पऴियॅनप् पिदट्रुम्
तुयरु मज्जिमुन् ऱोंडर्न्दिलात् तॉल्हुडिप् पिड़न्दाळ् 316

तुयरुम्–दुख नामक कुछ; अञ्चि–डर से; मुन् तॉटर्न्तिला–जिसके पास पहले नहीं गया था; तॉल् कुटि पिऱन्ताळ्–उस प्राचीन (राक्षस-) कुल में जो पैदा हुई थी, वह; विण् इटै उयरुम्–आकाश में उठती; मण् इटै विऴुम्–भूमि पर गिरती; किटन्तु उळैक्कुम्–पड़ी चिल्लाती; अयरुम्–थकती; कै कुलैत्तु–हाथ मलकर; अलमरुम्–उद्विग्न होती; आर् उयिर् चोरुम्–क्षीणप्राण हो जाती; पॅयरुम्–सुध पाकर चलने लगती; पॅण् पिऱन्त–स्त्री पैदा होकर; यान्–मुझे; पट्ट पऴि–मिली निन्दा है; ऍन–ऐसा; पितट्रुम्–बकती। ३१६

वह शूर्पणखा उस राक्षसकुल की थी, जिसके पास दुख भी डर के कारण नहीं आया था। अब उसे अपार दुख मिल गया। अत्यधिक वेदना का अनुभव करने लगी। वह ऊपर उठती पर भूमि पर गिर जाती। भूमि पर पड़ी रहकर चिल्लाती। थक जाती। हाथ मलकर उद्विग्न होती। प्राण-हीन-सी मूर्च्छित हो जाती। कुछ देर बाद सुध पाती और विलापती कि स्त्री पैदा होकर कैसी निन्द्य स्थिति को प्राप्त हो गयी? । ३१६

*ऑट्रुम् मूक्किनै युलैयुरु तीयॅन वुयिर्क्कुम्
ऍट्रुङ् गैयिनै निलत्तिनि लिणैत्तडङ् गॉङ्गै
पट्रिप् पार्क्कुमॅय् वेर्क्कुन्दन् बरुवरन् मयक्काल्
शुट्रु मोडुम्बोय्च् चोरिनीर् शॉरिदरच् चोरुम् 317

मूक्कितै–नाक को; ऑट्रुम्–पोंछती; उलै उरु ती ऍन–भट्ठी की आग के समान; उयिर्क्कुम्–गरम साँस छोड़ती; कैयितै–हाथों को; निलत्तितिल्–भूमि पर; ऍट्रुम्–मारती; इणै तट कॉङ्कै–जोड़े के बड़े स्तनों को; पट्रि पार्क्कुम्–हाथो में ले देखती; मेय् वेर्क्कुम्—स्वेद-पूर्ण शरीर हो जाती; तन् परुवरल् मयक्काल्–अपने दुख से उत्पन्न भ्रम के कारण; चुट्रुम् ओटुम्–चारों ओर दौड़ती; पोय्–जाकर; चोरि नीर्–रक्त को; चॉरि तर–बहाती हुई; चोरुम्–शिथिल पड़ जाती। ३१७

वह अपना दामन लेकर नाक को पोंछती। ऐसा गरम निश्वास छोड़ती, मानो भट्ठी से आग की ज्वाला निकल रही हो। हाथों से भूमि पर मारती। अपने दोनों स्तनों को हाथ से पकड़कर उन पर दृष्टि

दौड़ाती। उसका शरीर पसीने से भर जाता। असह्य वेदना के कारण उसका चित्त भ्रमित हो जाता और वह इधर चारों ओर घूमती। पर रक्त वहाते हुए निर्बल हो गिर जाती। ३१७

❀ ऊऱ्ऱु मिक्कनी ररुवियि नॊॆळुहिय कुरुदिच्
चेऱ्ऱु वॆळ्ळत्तुट् टिरिबव डेवरु मिरियक्
कूऱ्ऱु मुट्कुन्दन् कुलत्तिनोर् पॆयरॆलाङ् गूऱि
आऱ्ऱु हिऱ्किलळ् पऱ्पल पन्निनिन् ऱळैत्ताळ् 318

ऊऱ्ऱ मिक्क–सोते से अधिक वहनेवाले; नीर् अरुवियिन्–जल की पर्वत-सरिता के समान; ऑॆळुकिय–वहनेवाले; कुरुति चेरु–रक्त के पंकिल; वॆळ्ळत्तु उळ्–प्रवाह के अन्दर; तिरिपवळ्–जो घूमती थी, वह; आऱ्ऱकिऱ्ऱिलळ्–सह नहीं सकी और; तेवरुम् इरिय–देव भाग जाएँ, ऐसा; कूऱ्ऱुम् उट्कुम्–यम को भी भयभीत करते हुए; तन् कुलत्तित्तोर् पॆयर् ऑॆलाम्–अपने कुल के सभी के नाम; कूऱि–लेते हुए; पल् पल–अनेक प्रलाप; पन्नि निन्ऱ–करते हुए खड़ी रहकर; अळैत्ताळ्–बुलाया (शूर्पणखा ने)। ३१८

सोते से बहनेवाले जल की पर्वतसरिता के समान उसके कटे अंगों से पंकिल रक्त वह रहा था। वह उसके साथ बेचैनी से संचार करती थी। दुख उसे असह्य था। तव वह अपने कुल के राक्षसों के नाम लेकर विलापती हुई पुकार मचाने लगी। उसे सुनकर देव भाग गये और यम भी भयभीत हो गया। ३१८

निलैयॆडुत्तु नॆडुनिलत्तु नीयिरुक्कत् तावदर्हळ्
शिलैयॆडुत्तुत् तिरियुमिदु शिऱिदन्ऱो देवरॆदिर्
तलैयॆडुत्तु विळियामै शमैप्पदे तळलॆडुत्तान्
मलैयॆडुत्त तनिमलैये यिवैहाण वारायो 319

तळल् ऑॆट्टुत्तान्–अग्निज्वाला को हाथ में रखनेवाले (शिवजी) के; मलै–कैलासपर्वत को; ऑॆट्टुत्त–जिसने उखाड़ लिया, वह; तत्ति मलैये–अनुपम पर्वत-सम (भाई रावण); नी–तुम; नॆट्ट निलत्तु–विशाल भूमि पर; निलै ऑॆट्टुत्तु इरुक्क–स्थायी यश के साथ रहते हो, तभी; तापतर्कळ्–तपस्वी; चिलै ऑॆट्टुत्तु तिरियुम् इतु–धनुष लेकर घूमते हैं, यह; चिऱितु अन्ऱो–तुम्हारे गौरव में कमी नहीं है क्या; तेवर् ऑॆतिर्–देवों के सामने; तलै ऑॆट्टुत्तु–सिर उठाकर; विळियामै–देख न सकना; चमैप्पते–साध्य हो जाय क्या; इवै काण वारायो–ये देखने न आओगे क्या। ३१९

अनलधर शिवजी के कैलासपर्वत को उखाड़नेवाले पर्वत-सम मेरे भाई रावण! तुम इस भूमि पर अभी स्थायी यश के साथ हो! तो भी तापस लोग धनु लेकर घूम रहे हैं! यह तुम्हारे यश को छोटा बनानेवाला नहीं है क्या? और अव हम देवों के सामने सिर उठा नहीं सकेंगे? उनकी दृष्टि से दृष्टि न मिला सकेंगे। ऐसी स्थिति भी आ जायगी

शायद ? इनको देखने नहीं आओगे क्या ? (दारुका वन के ऋषियों ने शिवजी पर अग्नि को भेजा था। उन्होंने उसे अपने हाथ में रख लिया। उसको 'मळु' कहते हैं। मळु का अर्थ परशु भी है। अतः मळु-धारी शब्द के दोनों अर्थ— परशुधर, अनलधर किये जाते हैं।)। ३१९

पुलिताने पुऱ्ऱ्ताहक् कुट्टिकोट् पडादॆन्ऩुम्
ऑलियाऴि युलहुरैक्कु मुरैपॊय्यो वूऴियिऩुम्
शलियाद मूवरुक्कुन् दानवर्क्कुम् वाऩवर्क्कुम्
वलियाऩे याऩ्पट्ट वलिहाण वारायो 320

ऊऴियिनुम् चलियात–कल्पान्त में भी अचल रहनेवाले; मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों से और; तानवर्क्कुम्–असुरों से; वानवर्क्कुम्–देवों से; वलियाऩे–बढ़कर बली; पुलि पुऱ्ऱ्तु आक–मादा व्याघ्र के पास रहते; कुट्टि–उसका शावक; कोळ् पटातु–किसी की पकड़ में नहीं आयगा; ऍन्ऩुम्–ऐसा; ऑलि आऴि उलकु–गर्जनशील सागर-वलयित भूतल (वासी); उरैक्कुम् उरै–जो कहता है, वह मसल; पॊय्यो–असत्य है क्या; याऩ् पट्ट–मुझ पर आया; वलि काण–संकट देखने के लिए; वारायो–नहीं आओगे क्या। ३२०

हे भाई! तुम कल्पान्त में भी अमिट रहनेवाले त्रिदेवों, दानवों और देवों से भी अधिक बली हो। तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्गति हो गयी। लोकोक्ति है कि मादा व्याघ्र के पास रहते व्याघ्रशावक को कोई ग्रस नहीं सकता। क्या वह कथन असत्य है ? मुझ पर जो बीता है, वह बड़ी विपदा देखो, आओ। नहीं आओगे ? । ३२०

आर्त्ताऩैक् करशुन्दि यमरर्कणत् तॊडुमडर्त्त
पोर्त्ताऩै यिन्दिरऩैप् पॊरुदवऩैप् पोर्तॊलैत्तु
वेर्त्ताऩै युयिर्हॊण्डु मीण्डाऩै वॆरिन्पण्डु
पार्त्ताऩे याऩ्पट्ट पऴिवन्दु पारायो 321

पण्टु–पहले; आर्त्तु–बड़े हुल्लड़ के साथ; आऩैक्कु अरचु उन्ति–गजराज ऐरावत को चलाते हुए; अमरर् कणत्तॊटुम्–देवगणों के साथ मिलकर; अटर्त्त–(तुमसे) जिसने लड़ाई की; पोर् ताऩै इन्तिरऩै–उस युद्धसन्नद्ध सेना के स्वामी इन्द्र से; पॊरुतु–लड़कर; अवऩै–उसको; पोर् तॊलैत्तु–युद्ध में हराकर; वेर्त्ताऩै–डर से स्वेदयुक्त होकर; उयिर् कॊण्टु मीण्टाऩै–जान लेकर भागनेवाले उसकी; पण्टु–पहले; वॆरिन् पार्त्ताऩे–पीठ को जिसने देखा, ऐसे रावण; याऩ् पट्ट पऴि–मुझे मिली दुर्गति को; वन्तु पारायो–तुम आकर नहीं देखोगे क्या। ३२१

पहले दिग्विजय के अवसर पर, हे रावण! गजराज ऐरावत को चलाते हुए इन्द्र अपने देवगणों को साथ लेकर तुमसे लड़ने आया। युद्धसन्नद्ध सेना उसके साथ आयी थी। तुमने उससे लड़ाई की और समरभूमि में उसको हराया। वह पसीना-पसीना होकर जान लेकर तुमको

अपनी पीठ दिखाते हुए भागा ! ऐसे रावण ! क्या तुम इधर आकर मेरी दुर्गति नहीं देखोगे ? । ३२१

कार्ट्रित्तैयुम् पुन्नलित्तैयुम् कन्नलित्तैयुङ् गडुङ्गालक्
कूर्ट्रित्तैयुम् विण्णियङ्गु कोळित्तैयुम् बणिहोडर्
कार्ट्रित्तैनी यीण्डिरुवर् मानिडवर्क् काट्ट्रादु
मार्ट्रित्तैयो वुन्वलत्तैच् चिवन्ऱडक्कै वाळ्हीण्डाय् 322

चिवन् तट कै वाळ्–शिवजी के दीर्घ हाथ से दी गई तलवार (चन्द्रहास); कोंण्टाय्–रखनेवाले; कार्ट्रित्तैयुम्–वायुदेव को; पुनलित्तैयुम्–और वरुण को; कनलित्तैयुम्–अग्निदेव को; कटुम् काल कूर्ट्रित्तैयुम्–कठोर काल के देव यम को; विण् इयङ्कु–आकाश में संचार करनेवाले; कोळित्तैयुम्–नवग्रहों को; पणि कोटर्कु–सेवा लेने के लिए; आट्रित्तै–नियत किया; नी–तुमने; ईण्टु इरुवर् मानिटवर्क्कु–यहाँ दो मनुष्यों के सामने; आट्रातु–अशक्त होकर; उन् वलत्तै मार्ट्रित्तैयो–अपना बल खो दिया है क्या । ३२२

शिवजी के हाथ से तुमको चन्द्रहास नाम की तलवार मिली । उस तलवार के धारक रावण ! तुमने वायुदेव, वरुण, अग्निदेव, कठोर कालदेव और आकाशचारी नवग्रह इन सबको अपने सेवक बना रखा है ! ऐसे बली अब इन दो मामूली मनुष्यों के सामने अशक्त होकर तुम अपना बल खो चुके क्या ? । ३२२

उरुप्पॉडिया मन्मदनै यॊत्तुळरे यानालुम्
शॆरुप्पडियिर् पॊडियॊव्वा मानिडरैच् चीरुदियो
नॆरुप्पॊडियप् पॊडिशिदर निरैमदत्त तिशैयानै
मरुप्पॊडियप् पॊरुप्पिडियत् तोळिमिर्त्त वलियोनै 323

निरै मतत्त–पूर्ण मद वाले; तिचैयानै–दिग्गजों के; मरुप्पु ऑटिय–दाँत तोड़ते हुए; पॊरुप्पु इटिय–कैलास को ढहते हुए; नॆरुप्पु ऑटिय–अग्निदेव को तोड़कर; पॊटि चितर–चूर-चर कर छितराते हुए; तोळ् निमिर्त्त–(दिग्विजय के अवसर पर) भुजाओं का बल दिखाकर जिसने लड़ाई की, ऐसे; वलियोनै–बलवान (रावण); उरु पॊटिया–शरीर जिसका नष्ट नहीं हुआ हो, ऐसे; मन्मतनै–मन्मथ के; ऑत्तु उळरे आनालुम्–समान हैं तो भी; चॆरु पटियिल्–युद्धभूमि में (या जूते के तल की); पॊटि ऑव्वा–धूलि-सम भी जो नहीं हैं; मानिटरै–उन मनुष्यों पर; चीऱुतियो–कोप करोगे क्या । ३२३

दिग्विजय के अवसर पर तुमने मदमत्त दिग्गजों के दाँतों को तोड़ा, कैलास को गिराया और अग्निदेव को चूर कर छितराया । ऐसे तुमने भुजाओं के बल का प्रदर्शन किया । ऐसे बली रावण ! ये दोनों सशरीर मन्मथ के समान हैं तो भी (चॆरु पटियिल =) युद्धभूमि में, या

(चॅरुप्पटियिल् =) जूते के तल की धूलि के समान भी नहीं होंगे। वे इतने दुर्बल हैं। उन पर कोपकर उनसे लड़ोगे भी ? । ३२३

तेनुडैय नऱुन्दॅरियऱ् ऱेवरैयुन् दॅरुमाऱ्ऱल्
तानुडैय विरावणऱ्कुन् दम्बियर्क्कुन् दविर्न्ददो
ऊनुडैय वुडम्बिनरा यॅङ्गुलत्तोर्क् कुणवाय
मानुडवर् मरुङ्गेपुक् कॊडुङ्गिनदो वलियम्मा 324

तेन् उटैय–शहद-भरे; नऱुम् तॅरियल्–मधुर सुगन्धयुक्त मालाधारी; तेवरैयुम्–देवों को भी; तॅरुम्–आक्रान्त करनेवाले; आऱ्ऱल् तान् उटैय–शक्तिसम्पन्न; इरावणऱ्कुम्–रावण का और; तम्पियर्क्कुम्–उसके छोटे भाइयों का; वलि–बल; तविर्न्ततो–छूट गया क्या; ऊन् उटैय उटम्पितर् आय्–मांसयुक्त शरीर के बनकर; ॲम् कुलत्तोर्क्कु–हमारे राक्षसकुल के लोगों का; उणवु आय–भोजन बननेवाले; मानुटवर् मरुङ्के पुक्कु–मनुष्यों के अन्दर घुसकर; ऑटुङ्कित्तो–समा गया क्या; अम्मा–आश्चर्य । ३२४

अब जो हुआ है, उसका अर्थ क्या समझा जाय ? यह समझा जाय कि मधुयुक्त सुवासित मालाधारी देवों को आक्रान्त करनेवाले रावण का और उसके भाइयों का बल क्षीण हो गया ? और वह बल हमारे कुल के लोगों का भोज्य मांसधारी मानवों के शरीर के अन्दर प्रवेश कर समा गया ? । ३२४

मरन्नेयु नॅडुङ्गानिऩ् मऱैन्दुऱैयुन् दापदर्हळ्
उरन्नेयो वडलरक्क रोय्वेयो वुऱ्ऱॅदिर्न्दार्
अरन्नेयो वरियेयो वयन्नेयो वॅन्नुमाऱ्ऱल्
करन्नेयो यान्पट्ट कैयऱवु काणायो 325

मरन् एयुम्–वृक्षाकीर्ण; नॅटुम् कानिल्–विस्तृत वन में; मऱैन्तु उऱैयुम्–छिपकर रहनेवाले; तापतर्कळ्–तपस्वी लोगों का; वलिये ओ–बल है यह; अटल् अरक्कर्–(या) बली राक्षसों की; ओय्वेयो–शक्तिहीनता है; उऱ्ऱु ॲतिर्न्तार्–लड़ने आये हुए (लोग); अरन् ओ–हर है क्या; अरिये ओ–हरि है क्या; अयन् ओ–अज है क्या; ॲनुम्–ऐसा माने उतना; आऱ्ऱल्–बली; करन् ओ–हे खर; यान् पट्ट–मैंने जो पाया है; कै अऱवु–वह संकट; काणाय् ओ–आकर देखोगे नहीं क्या । ३२५

यह घटना तरुसंकुल वन में छिपे रहनेवाले तपस्वियों के बल का द्योतक है ? या बली राक्षसों की शक्ति के क्षीण हो जाने का ? हे खर ! जिसको युद्ध में देखकर शत्रु यह सन्देह करते थे कि यह क्या हर ही है या हरि या अज ! ऐसी शक्ति वाले खर ! आकर मुझे क्या हो गया है —यह अनर्थ तुम नहीं देखोगे क्या ? । ३२५

इन्दिरनु मलरयनु मिमैयवरुम् बणिकेट्पच्
चुन्दरिपल् लाण्टिशैप्प वुलहेळुन् दॊळ्देत्तच्
चन्दिरन्पॊऩ् कुडैनिऴऱ्ऱ विशैन्दिरुन्द शवैनडुवे
वन्दडियेऩ् नाणादु मुहङ्गाट्ट वल्लेनो 326

इन्तिरऩुम्–देवेन्द्र और; मलर् अयऩुम्–सरोजासन ब्रह्मा; इमैयवरुम्–और अन्य देव; पणि केट्प–सेवाएँ करते हैं; चुन्तरि–सुन्दरी शची देवी; पल्लाण्टु इचैप्प–'जयजीव' गाती है, तब; उलकु एऴुम् तॊऴुतु एत्त–सातों लोक विनय करके स्तुति करते; चन्तिरऩ्–चन्द्र के; पॊऩ् कुटै–स्वर्णछत्र; निऴऱ्ऱ–ले छाया करते; इचैन्तु इरुन्त–तुम ऐसा जिस सभा में उल्लास के साथ रहते हो; चपै नटुवे–उस सभा के मध्य; अटियेऩ् वन्तु–दासी मैं आकर; नाणातु–बिना शरमाये; मुकम् काट्ट वल्लेऩो–मुख दिखा सकूँगी क्या। ३२६

हे रावण! तुम अपनी सभा में बड़े ठाट-बाट के साथ बैठते हो। तब इन्द्र, सरसिजासन ब्रह्मा और अन्य देव तुम्हारी आज्ञाएँ मानते हुए सेवक के रूप में रहते है। सुन्दरी शची जयजीव का गान गाती है। सातों लोक तुम्हारी संस्तुति करते हैं। चन्द्र तुम्हारा स्वर्णछत्र धारण कर छाया बनाता है। ऐसी सभा में अब आकर बेशरम की तरह अपना मुख दिखाने योग्य रहती हूँ क्या? । ३२६

❀ उरऩॆरिन्दु विऴवॆन्नै युदैत्तुरुट्टि मूक्करिन्द
नरऩिरुन्दु तोळ्पार्क्क नाऩिरुन्दु पुलम्बुवदो
करऩिरुन्द वनमन्ऱो विवैपडवुङ् गडवेनो
अरऩिरुन्द मलैयॆडुत्त वैयावो वैयावो 327

अरऩ् इरुन्त मलै ऎटुत्त–हर जिसमें रहे, उस गिरि को उखाड़नेवाले; ऐयाओ ऐयाओ–प्रभु, प्रभु; उरऩ् नॆरिन्तु विऴ–मेरी छाती विदीर्ण हुई और मैं नीचे गिर गई, ऐसा; ऎन्ऩै उतैत्तु उरुट्टि–मुझे लात मारकर, गिराकर और लुढ़काकर; मूक्कु अरिन्त–(जिसने) मेरी नाक काटी; नरऩ् इरुन्तु तोळ् पार्क्क–वह नर अभिमान के साथ अपने कंधों को देख रहा है, तब; नाऩ् इरुन्तु पुलम्पुवतो–मैं बैठी विलाप करूँ (क्या यह ठीक है); करऩ् इरुन्त वरम् अन्ऱो–खर के वास का वन है न; इवै पटवुम् कटवेनो–यह (अन्याय) सहने अर्ह हूँ क्या। ३२७

हे प्रभु! हे रावण! तुमने हरनिलय कैलास को उखाड़ लिया था! मुझे मेरी छाती विदीर्ण करते हुए नीचे गिरा दिया एक नर ने! उसने मेरी नाक काट दी और वह आत्माभिमान के साथ अपने कन्धों को देख रहा है, अपने बल पर इठला रहा है! और मैं असहाय की तरह विलाप कर रही हूँ। क्या यह ठीक लगता है? यह खर के शासनाधीन वन है। इधर मेरी ऐसी दुर्गति हो —मैं इसके अर्ह हूँ क्या? । ३२७

❀ नशैयाले मूक्किऴन्दु नाणमिला नान्वट्ट
वशैयाले निन्पुहऴु माशुण्ड दाहादो
दिशैयानै विशैहलङ्गच् चॅरुच्चॅय्दु मरुप्पॉशित्त
इशैयाले वॅऴुदुपॅय रिरावणवो यिरावणवो 328

तिचै यानै–दिग्गजों के; विचै कलङ्क–क्रोधोद्वेग को मिटाते हुए; चॅरु चॅय्तु–लड़कर; मरुप्पु ऑचित्त–उनके दाँतों को तोड़ा (जिसने); इचैयाले पॅयर् ऍऴुतु–यश से (जिसने) अपना नाम अंकित किया; इरावण ओ इरावण ओ–हे वह रावण, वह रावण; नचैयालै–इच्छा के कारण; मूक्किऴन्तु–नाक खोकर; नाणम् इला–लाज खोकर; नान् पट्ट वचैयाले–मुझे जो अपमान मिला, उससे; निन् पुकऴुम्–तुम्हारा यश भी; माचु उण्टतु आकातो–कलंकित नहीं होगा क्या। ३२८

हे रावण! तुमने दिग्गजों के क्रोध को मिटाकर उनसे लड़कर उनके दाँत तोड़ दिये और अपना नाम यश से अंकित किया है। ऐसे हे रावण! क्या प्रेम करना बुरा है? अपने प्रेम के कारण मैंने अपनी नाक खोयी, लाज खोयी और मैं अपमानित हो गयी हूँ। इस मेरी निन्द्य स्थिति से तुम्हारे यश में भी बट्टा नहीं लगेगा क्या?। ३२८

❀ कानदनि निडैयॉरुवर् कादॊडुमूक् कुडनरिय
मानमदाऱ् पाविये निवण्मडियक् कडवेनो
दानवरैक् करुवऱुत्तुप् पुरन्दरनैत् तळैयिट्टु
वानवरैप् पणिहॉण्ड मरुहावो मरुहावो 329

दानवरै करु अऱुत्तु–दानवों का मान नाश कर; पुरन्तरनै–पुरन्दर को; तळैयिट्टु–बेड़ी पहनाकर; वानवरै–देवों को; पणि कॉण्ट–नौकर (जिसने) बना लिया; मरुका ओ मरुका ओ–हे वह भतीजे, भतीजे; कान् अतनिन् इटै–जंगल में; ऑरुवर्–एक मानव ने; कातु ओटु मूक्कु उटन् अरिय–कान के साथ नाक एक साथ काट दिया, तब; पावियेन्–पापिनी मैं; मानम् अताल्–अपमान से; इवण् मटिय कटवेनो–इधर मर जाने अर्ह हो गई क्या। ३२९

(अब वह इन्द्रजित् को पुकार रही है।) हे मेरे भतीजे! भतीजे! तुमने दानवों का मान मिटाया, पुरन्दर को बेड़ियाँ पहनाकर कारागृह में रखा और देवों को नौकर बनाया और अपनी सेवा-टहल करायी। ऐसे भतीजे! जंगल में एक नर ने मेरे नाक और कान एक साथ काट दिये। पापिनी मैं अपमान से यहीं मर जाऊँ —इसी के योग्य हूँ क्या मैं?। ३२९

ऑरुहालत् तुलहेऴु मुरुत्तिरिय तनुवॉन्ऱाल्
तिरुहाद शिनन्दिरुहित् तिशैतिशैये शॅलनूऱि
इरुहालप् पुरन्दरनै यिरुञ्जिऱैयि लिट्टलैत्त
मरुहावो मानिडवर् वलिहाण वारायो 330

ऑरु कालत्तु–पहले (दिग्विजय के समय) कभी; तत्तु ऑन्ऱाल्–एक धनु द्वारा; तिरुकात चिन्नम् तिरुकि–अदम्य क्रोध वढ़कर; उलकु एळुम् उरुत्तु–सातों लोकों पर कोप प्रदर्शित करके; इरिय–उनको अस्तव्यस्त करते हुए; तिचै तिचैये चॅल–दिशा-दिशा में भगाते हुए; नूऱ्ऱि–उनको मारकर; अ पुरन्तरनै–उस पुरन्दर को; इरु काल्–दो बार; इरुम् चिऱै इट्टु–भयंकर कारा में डालकर; अलैत्त–(जिसने) सताया वह; मरुका ओ–भतीजे; मानिटवर्–इन मानवों का; वलि काण–बल देखने; वारायो–आओगे नहीं क्या। ३३०

हे भतीजे ! अपने पिता के दिग्विजय के समय में तुमने क्या-क्या साहस दिखाये। एक ही धनुष के सहारे तुमने वढ़ते क्रोध के साथ सातों लोकों पर कोप उतारकर उनके वासियों को भयभीत किया और वे भागने लगे। उनको तुमने मारा। फिर उस इन्द्र को दो वार कारागृह में डालकर दुख दिया। ऐसे तुम अब आकर दो अल्प नरों का बल देखो। देखने नहीं आओगे ? । ३३०

❀ कल्लीरुम् बडैत्तडक्कै यडऱ्करतू डणर्मुदला
अल्लीरुम् जुडर्मणिप्पू णरक्कर्कुलत् तवदरित्तीर्
कॉल्लीरुम् बडैक्कुम्ब करुणनैप्पोर् कॉडियीर्हाळ्
ॲल्लीरु मुऱङ्गुदिरो यानळैप्प केळीरो 331

कल् ईरुम्–पत्थर को भी वेधनेवाले; पटै तट कै–हथियारों को लिये हुए विशाल हाथों के; अटल्–बली; कर तूटणर् मुतला–खर, दूषण आदि; अल् ईरुम्–अन्धकार को भेदनेवाली; चुटर्मणि पूण्–कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित; अरक्कर् कुलत्तु अवतरित्तीर्–राक्षसकुल में जात (राक्षसो); कॉटियीर्काळ्–क्रूर; ॲल्लीरुम्–तुम लोग सब; कॉल् ईरुम् पटै–लुहार से रेतकर तेज किए हुए आयुधों के; कुम्पकरुणनै पोल्–कुम्भकर्ण की तरह; उऱङ्कुतिरो–सो रहे हो क्या; यान् अळैप्प–मैं पुकार रही हूँ; केळीरो–वह नहीं सुनते क्या। ३३१

(खर-दूषण आदि राक्षसों को पुकारती है।) कठोर पत्थर को भी वेधनेवाले हथियारधारी खर-दूषण आदि राक्षसो ! अन्धकार को भेदने वाली कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित राक्षसकुलोद्भूत निशाचरो ! तुम सव क्रूर राक्षस क्या उस कुम्भकर्ण के समान सो रहे हो, जिसके पास लुहार से रेती द्वारा तेज किए हुए हथियार (बेकार) पड़े हैं ! मैं बुला रही हूँ— तुम सुन नहीं रहे हो क्या ? । ३३१

ॲन्ऱिन्न पलपन्नि यिहलरक्कि यळैत्तिरङ्गि
पॉन्रुन्नुम् बडियहत्तुप् पुरळहिन्ऱ पॉळुदत्तु
नित्ऱन्द नदियहत्तु निऱैतवत्तिन् तुऱैमुडित्तु
वन्ऱिण्गैच् चिलैनॅडुन्दोण् मरहदत्तिन् मलैवन्दान् 332

ॲन्ऱु–ऐसा; इन्न पल–ऐसे विविध प्रलाप; पन्नि–कहते; इकल् अरक्कि–

वैर रखनेवाली राक्षसी के; अळुँत्तु इरङ्कि–पुकारते और रोते हुए; पौन् तुत्तुम्–बहुत मनोहर; पटि अकत्तु–भूमि पर; पुरळ्किन्र पौळुतत्तु–लोटते समय; वन् तिण् कै–बलिष्ठ और सारयुक्त हाथों; चिलै नॅटुम् तोळ्–धनु धारण करनेवाले उन्नत कंधों के; मरकतत्तिन् मलै–मरकत गिरि (-सम श्रीराम); अनृत नति अकत्तु–उस नदी के घाट पर; निरै तवत्तिन् कुरै मुटित्तु–यथावत कर्म अशेष पूरा करके; नित्रु–वहाँ से; वन्तान्–आश्रम की ओर पधारे। ३३२

वैर रखनेवाली शूर्पणखा ने इस तरह ऐसी विविध बातें कहती हुई अपने बन्धुओं को पुकार-पुकारकर विलाप किया। बिलापते हुए वह आश्रम की पवित्र भूमि पर गिरकर लोटी। तब श्रीराम, जिनके हाथ दीर्घ और बलवान थे और जिनके सवल कन्धे को धनु अलंकृत कर रहा था, नदी-घाट में सन्ध्या का नित्यकर्म यथावत अशेष रूप से सम्पन्न करके वहाँ से निकलकर इस स्थान पर आ गये। ३३२

वन्दानै मुहनोक्कि वयिट्रलैत्तु मळैक्कणणीर्
शॅन्दारैक् कुरुदियोडु शॅळुनिलत्तैच् चेट्राक्कि
अन्दोवुन् ट्रिरुमेनिक् कन्बिळैत्त वन्बिळैयाल्
ॲन्दायान् पट्टपडि यिदुहाणॅन् ट्रॅदिर्वीळ्न्दाळ् 333

वन्तानै–आये उनका; मुकस् नोक्कि–श्रीमुख देखकर; वयिरु अलैत्तु–पेट (छाती) पीटकर; मळै कण् नीर्–वर्षा के समान अश्रु; चॅम् तारै कुरुति ओटु–और धार रूप में बहनेवाले रक्त के साथ; चॅळु निलत्तै चेरु आक्कि–श्रेष्ठ भूमि को कीचड़ बनाते हुए; ॲन्ताय्–मेरे नाथ; अन्तो–हाय; उन् तिरुमेनिक्कु–तुम्हारे श्रीशरीर पर; अन्पु इळैत्त–आसक्ति रखने के; वन् पिळैयाल्–कठोर अपराध के कारण; इतु–यह; यान् पट्ट पटि इतु–मुझे मिला प्रकार (संकट) यह; काण् ॲन्रु–देखो, कहकर; ॲतिर् वीळ्न्ताळ्–उनके सामने गिरी। ३३३

शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा। उनके मुख के सामने अपना पेट (अपनी छाती को) पीटा। आँखों से अश्रुजल की धारा बहायी और शरीर से लाल रक्त की धारा। उनसे वहाँ की श्रेष्ठ भूमि पंकिल बन गयी। उसने श्रीराम से शिकायत की कि देखो! मेरे नाथ! हाय! तुम्हारे रूप पर मेरा जी ललचाया। इस घोर अपराध का फल मुझे भोगना पड़ा, वह यह देखो! यह कहते हुए वह श्रीराम के सामने भूमि पर गिर पड़ी। ३३३

विरिन्दाय कून्दलाळ् वॅय्यविनै यादानुम्
पुरिन्दाळॅन् बदुन्दनदु पौरुवरिय तिरुमनत्ताल्
तॅरिन्दानिन् ट्रिळैयोने यिवळॅनॅडुञ् जॅवियोडुमूक्
करिन्दानॅन् बदुमुणर्न्दा नवळैनी यारॅन्ट्रान् 334

विरिन्ताय कून्तलाळ्–बिखरे केश वाली ने; वॅय्य विनै–क्रूर काम; यातेनुम् पुरिन्ताळ्–कुछ किया है; ॲन्पतुम्–यह; तनतु–अपने; पौरुवु अरिय तिरुमनत्ताल्–

अनुपम श्रीमन में; तॅरिन्तान्–समझकर; इळैयोत्ते–छोटे भाई ने; इवळै–इसके; इन्नुरु–अभी; नॅट्टुम् चॅवि ओॅट्टु–बड़े कानों के साथ; मूक्कु–नाक को; अरिन्तान् ॲन्नुपतुम्–काट लिया है, यह भी; उणर्न्तान्–जानकर; अवळै–उससे; नी यार्–तुम कौन हो; ॲन्ड्रान्–पूछा। ३३४

श्रीराम ने अपने श्रीमन में सोचा कि बिखरे केश वाली इसने नृशंस कोई काम किया होगा और अनुज लक्ष्मण ने अभी-अभी इसकी नाक और इसके कान काटे हैं। उन्होंने उससे प्रश्न किया कि तुम कौन हो ? । ३३४

अव्वुरैकेट्टु टडलरक्कि यरियायो नीयॅन्नैत्
तॅव्वुरैयॅन् ड्रॅव्वुलहु मिल्लाद शीड्रत्तान्
वॅव्विलैवे लिरावणनाम् विण्णुलह मुदलाय
ॲव्वुलहु मुडैयानुक् कुडन्पिडन्देन् यानॅन्ड्राळ् 335

अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; अटल् अरक्कि–सशक्त राक्षसी ने; ॲन्नै नी अरियायो–मुझे नहीं पहचानते क्या; ॲ उलकुम्–सभी लोकों में; तॅव् उरै ॲन्नुरु इल्लात–जिसके शत्रु नहीं होते (सभी हराये गये हैं); चीड्रत्तान्–जो क्रोधी है; वॅम् इलै वेल्–भयंकर पत्राकार सिर वाला भालाधारी; इरावणन् आम्–रावण कहलानेवाले; विण् उलकम् मुतल् आय–स्वर्गलोक आदि; ॲ उलकुम् उटैयानुक्कु–सभी लोकों के स्वामी की; उटन् पिरन्तेन्–सहोदरा हूँ; यान्–मैं; ॲन्ड्राळ्–कहा। ३३५

वह प्रश्न सुनकर शूर्पणखा को आश्चर्य हो गया। उस क्रूर राक्षसी ने उत्तर में कहा कि क्या तुम मुझे नहीं जानते ? मैं उस रावण की बहिन हूँ, जिसका किसी भी लोक में कोई शत्रु नहीं है (क्योंकि उसने शत्रुओं को मिटा दिया है और कोई भी उससे वैर मोल लेने से डरते हैं), जो बड़ा क्रोधी है और जो पत्राकार सिर के भाले का धारी है और जो स्वर्गादि लोकों में हर किसी लोक का स्वामी है। मैं उसकी सहोदरा हूँ। ३३५

तामिरुन्द तहैयरक्कर् पुहलॉळियत् तवमियड्र
यामिरुन्द नॅडुञ्जूळड् कॅन्शेयवन् दायॅन्नलुम्
वेमिरुन्दै यॅन्नक्कनलु मॅरिहाम वॅम्बिणिक्कु
मामरुन्दे नॅरुनलिन्नुम् वन्दिलॅनो यानॅन्ड्राळ् 336

तकै अरक्कर्–निषिद्ध राक्षस; ताम् इरुन्त–जहाँ रहते हैं; पुकल् ऑळिय–उन स्थानों को छोड़कर; याम्–हम; तवम् इयड्र–तपस्या करते हुए; इरुन्त–जहाँ रहते हैं; नॅटुम् चूळल्–इस विशाल आश्रम में; ॲन् चॅय वन्ताय्–क्या करने आई; ॲन्नलुम्–पूछने पर; वेम् इरुन्तै ॲन–कोयले के समान; कनलुम्–जलनेवाले; ॲरि काम–तापक काम रूपी; वॅम् पिणिक्कु–तपानेवाले भयंकर रोग की; मा मरुन्ते–श्रेष्ठ औषध; नॅरुनलिन्नुम्–कल भी; यान् वन्तिलॅनो–मैं नहीं आई थी क्या; ॲन्ड्राळ्–पूछा। ३३६

तब श्रीराम ने पूछा कि निषिद्ध राक्षसों के वासस्थानों को छोड़कर इस श्रेष्ठ आश्रम में तुम क्यों आयी, जहाँ हम तपस्या कर रहे हैं ? उसके उत्तर में शूर्पणखा श्रीराम से बोली— अग्नि में जलते कोयले के समान तपानेवाले काम रूपी रोग की श्रेष्ठ औषध ! क्या तुम भूल गए कि मैं कल भी आयी थी। कल आयी थी न ? । ३३६

शॆङ्गयल्पोऱ् करुनॆडुङ्गट् टेमरुदा मरैयुऱैयुम्
नङ्गैयिव रॆन्नॆरुनल् नडन्दवरो नामॆन्नक्
कॊङ्गैहळुङ् गुळैहादुङ् कॊडिमूक्कुङ् गुरैत्तळित्ताल्
अङ्गणर शॆयॊरुवर्क् कळियादो वळहॆन्ऱाळ् 337

चॆम् कयल् पोल्–लाल 'कयल' मीनों के समान; करु नॆट्टुम् कण्–काली और आयत आँखों वाली; तेमरु तामरै–शहद से युक्त कमल पर; उऱैयुम्–रहनेवाली; नङ्कै अँत–श्रीलक्ष्मीदेवी के समान; नॆरुनल्–कल; नटन्तवरो–आई जो थी; नाम् ऎंन्न–वही हम है (तुम हो) क्या, यह पूछने पर; अरचे–राजा; कॊङ्कैकळुम्–स्तन और; कुळै कातुम्–लचकदार कान; कॊटि मूक्कुम्–और लता-समान नाक को; कुऱैत्तु अळित्ताल्–काटकर दूर करने से; अङ्कण्–तब; अळकु अळियातो–सौंदर्य मिट नहीं जायगा क्या; ऎन्ऱाळ्–पूछा। ३३७

श्रीराम ने कहा— ओफ़ ओह ! कल जो श्रीलक्ष्मी के समान लाल कयल-सी आँखों वाली कमलनिवासिनी है, इधर आयी, वह तुम्हीं हो क्या ? शूर्पणखा ने निष्ठुरता से कहा कि लटकनेवाले कानों को और लता-समान नाक को काट दिया गया तो क्या सौन्दर्य मिट नहीं जायगा ? (कल और आज के रूप में अन्तर क्या नहीं आ जायगा ?) । ३३७

मुरन्मूऱु वलत्तिळैय मॊय्म्बिनान् मुहनोक्कि
वीरवॆहुण् डनैयिवडन् विडुहादुङ् गॊडिमूक्कुम्
ईरनिनैन् दिवळिऴैत्त पिळैयॆन्नॆन् ऱिऱैविनवच्
चूरनॆडुन् दहैयवनै यडिवणङ्गिच् चॊल्लुवान् 338

इऱै–भगवान श्रीराम के; मूरल् मऱुवलन्–मन्दहास के साथ; इळैय मॊय्म्पितान्–पराक्रमी छोटे भाई के; मुकम् नोक्कि–मुख को देखकर; वीर–वीर; इवळ् तन्–इसके; विटु कातुम्–लटकनेवाले कानों और; कॊटि मूक्कुम्–लम्बी नाक को; वॆकुण्टनै–क्रोध करते हुए; ईर–काटने के लिए; इवळ् निनैन्तु इऴैत्त–इसने सोचकर जो किया; पिळै–वह अपराध; ऎन्–क्या; ऎन्ऱु विनव–यह पूछने पर; चूर नॆट्टुम् तकै–शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण; अवनै अटि वणङ्कि–उनको पैरों पर नमस्कार करके; चॊल्लुवान्–बोले। ३३८

प्रभु श्रीराम को हँसी आ गयी। मन्दहास के साथ उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वीर ! इसके लटकते कानों और दीर्घ नाक को गुस्से के साथ इस तरह काटो, ऐसा इसने जान-बूझकर क्या अपराध

किया ? शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण ने श्रीराम को नमस्कार करके यों उत्तर दिया। ३३८

तेट्टन्दान् वाळॅयिऱ्ऱिऱ् ऱिन्नवो तीविनैयोर्
कूट्टन्दान् पुऱत्तुळदो कुऱित्तपोरुळ् ळऱिन्दिलॅन्नाल्
नाट्टन्दा नॅरियुमिळ नल्लाण्मेऱ् पौल्लादाळ्
ओट्टन्दा ळरिदिन्निव ळुयिर्हवर्न्दा ळॅनवन्दाळ् 339

तेट्टम् तान्–इसका इधर खोजते हुए आना; वाळ् ॲयिऱ्ऱिल् तिन्नवो–(वक्र और) उज्ज्वल दाँतों से काटकर खाने के लिए था, या; ती विनैयोर्–नृशंसकारी; कूट्टम् तान्–राक्षसों का दल ही; पुऱत्तु उळतो–पास रहता है; कुऱित्त पौरुळ्–जो उद्देश्य ले आई थी, वह बात; अऱिन्तिलॅन्–मैंने नहीं जाना; नाट्टम् तान् ॲरि उमिळ–आँखों से अग्नि प्रकट करते हुए; पौल्लाताळ्–यह क्रूरी; नल्लाळ् मेल्–साध्वी (भाभी) पर; अरितिन्–अप्रत्याशित रीति से; इवळ् उयिर् कवर्न्ताळ् ॲन्न–इनका प्राण हर लिया हो, ऐसा; ओट्टन्ताळ्–भागती; वन्ताळ्–आई। ३३९

प्रभु ! इसका उद्देश्य क्या था ? भाभी की खोज में यह आयी— उनको अपने सफ़ेद दाँतों से चबाकर खाने के लिए ? या क्रूरकर्मा राक्षसों का दल पास में कहीं है ? यह क्या करने आयी —मैं जान नहीं पाया। पर यह बुरी स्त्री आँखों से अग्नि निकालती हुई साध्वी देवी पर ऐसी झपटी कि मानो उसने उनकी जान ही हर ली हो ! वह तीव्र गति से भागती आयी। ३३९

एऱ्ऱवळै वरिशिलैयो नियम्बामुन् निहलरक्कि
शेऱ्ऱवळै तन्कणव नरुहिरुप्पच् चिनन्दिरुहिच्
चूऱ्ऱवळै तुनियुळक्कुन् दुऱैहॅंळ्ळुनीर् वळनाड
माऱ्ऱवळैक् कण्डक्का लळ्ळादो मनमॅन्ऱाळ् 340

एऱ्ऱ–(हाथ में) धृत; वळै वरि चिलैयोन्–झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष वाले (लक्ष्मण) के; इयम्पा मुन्–कहने से पूर्व ही (कहते ही); इकल् अरक्कि–वैरमना राक्षसी; चूल् तवळै–गाभिन मेंढकी; तन् कणवन् अरुकु–अपने पति मेंढक के पास; चेऱ्ऱ वळै इरुप्प–कीचड़ में एक शंखकीट को रहते देख; चिनम् तिरुकि–कोप में बढ़कर; तुनि उळक्कुम्–बहुत रूठकर जहाँ दुखी होती है; तुऱै कॅळु–ऐसे घाटों से भरे; नीर् नाटा–जलाशय जिसमें रहते हैं, ऐसे देश के अधिपति; माऱ्ऱवळै कण्ट काल्–सौत को देखकर; मनम् अळ्ळातो–मन तप्त नहीं होगा क्या; ॲन्ऱाळ्–कहा। ३४०

झुके हुए और बन्धनयुक्त धनुष को हाथ में जो लिये रहे, उन लक्ष्मण के यह कह चुकने के पूर्व ही शूर्पणखा बोल उठी। हे अयोध्या देश के अधिपति, जहाँ ऐसे जलाशय बहुतायत से पाये जाते हैं, जिनमें गाभिन मेंढकियाँ कीच में अपने मेंढक के पास शंखकीट को देखकर मान करके बहुत दुखी हो रहती है ! सौत को देखने पर किसी का मन जल नहीं उठेगा

क्या ? (इस पद में सम्बोधन जो है, उसमें सौत के मनोभाव की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से हुई है। यह तमिळ काव्य की विशेषता है। शूर्पणखा अपने को मेंढकी और सीताजी को मादा शंखकीट मानती है। यानी अपने को पत्नी और सीता को सौत।)। ३४०

पेडिप्पोर् वल्लरक्कर् पॅरुङ्गुलत्तै यॊरुङ्गविप्पान्
तेडिप्पोन् दनमिन्ऱु तीमाऱ्ऱज् जिलविळम्बि
वीडिप्पो हादेयिव् वॅव्वनत्तै विट्टहल
ओडिप्पो वॅन्ऱुरैत्त वुरैहडन्दाऱ् कवळुरैप्पाळ् 341

पेटि पोर्–भयजनक युद्ध में; वल्–समर्थ; अरक्कर् पॅरुम् कुलत्तै–राक्षसों के बड़े कुल को; ऑरुङ्कु अविप्पान्–एक साथ मिटाने के लिए; तेटि पोन्तनम्–ढूँढ़ते हुए हम आये हैं; इन्ऱु–अब; ती माऱ्ऱम्–बुरी बातें; चिल विळम्पि–कुछ कहकर; वीटि पोकाते–मिटो मत; इ वॅव् वनत्तै विट्टु–इस प्यारे वन को छोड़कर; अकल–दूर; ओटि पो–भाग जाओ; ॲन्ऱु उरैत्त–यह जिन्होंने कहा; उरै कटन्ताऱ्क्कु–उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम से; अवळ् उरैप्पाळ्–वह बोली (उत्तर में)। ३४१

श्रीराम ने गम्भीरता से चेतावनी दी। हम इधर उन भयंकर युद्ध-समर्थ राक्षसों को एक साथ समूल नाश करने आये हैं। हम उन्हीं की खोज में इधर रहते हैं। अब तुम कुछ अंड-संड कहकर अपना अन्त मत करा लो। चलो इस प्यारे आश्रम को छोड़कर दूर भाग जाओ। उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम के ये वचन सुनकर शूर्पणखा उन्हीं को उपदेश देने लगी। ३४१

नरैतिरैयॊन्ऱिल्लाद नान्मुहत्ते मुदलमरर्
करैयिऱन्दो रिरावणऱ्कुक् करनिऱुक्कुङ् गुडियन्ऱो
विरैयुमदु नन्ऱन्ऱु वेऱाह यानुरैक्कुम्
उरैयुळदु नुमक्कुऱुदि युणरुदिरे लॅन्ऱुरैप्पाळ् 342

नरै तिरै–बाल का पकना और खाल का झुर्रियों सहित हो जाना; ऑन्ऱु इल्लात–कुछ जिनका नहीं है; नान्मुकत्ते मुतल्–वे चतुर्मुख आदि; अमरर्–देव; करै इऱन्तोर्–असीम लोग; इरावणऱ्कु–रावण को; करन् इऱुक्कुम्–कर देनेवाले; कुटि अन्ऱो–प्रजा है न; विरैयुम् अतु–तुम जिसके करने में त्वरा दिखाते हो वह; नन्ऱु अन्ऱु–अच्छा नहीं है; उऱुति उणरुतिरेल्–अपना हित चाहते हो तो; नुमक्कु–तुम लोगों को; वेऱु आक–अलग; यान् उरैक्कुम् उरै–मेरे समझाने की एक बात; उळतु–है; ॲन्ऱु–कहकर; उरैप्पाळ्–बताने लगी। ३४२

ब्रह्मा आदि देव सब, जो कभी बुढापे को प्राप्त नहीं होते, जब बाल पक जाते हैं और खाल पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रावण को कर देनेवाले प्रजाजन हैं। यह तुम नहीं जानते क्या ? तुम जो काम करने में तत्पर

रहते हो और जल्दी दिखाते हो, वह तुम्हारे हित में नहीं होगा। अगर तुम अपना भला सोचो तो मुझे तुमसे विशेष रूप से कहने की एक बात है। सुनो।' वह कहने लगी। ३४२

आक्करिय सूक्कुङ्गै यरियुण्डा ळॆन्ऱारै
नाक्करियुन् दयमुहनार् नाहरिह रल्लामै
मूक्करिन्दु नुङ्गुलत्तै मुदलरिन्दी रिन्ियुमक्कुप्
पोक्करिदिव् वऴहैयॆल्लाम् पुल्लिडैये युहुत्तीरे 343

उङ्कै–तुम्हारी छोटी वहिन; आक्कु अरिय–फिर से ठीक कराने के लिए कठिन रीति से; मूक्कु अरि उण्टाळ्–नाक की कटी हो गई; ॲन्ऱारै–यह समाचार कहनेवाले की; नाक्कु अरियुम्–नाक जो काट देंगे वे; तयमुकत्तार्–दशग्रीव; नाकरिकर् अल्लामै–दाक्षिण्य दिखानेवाले नही है, इसलिए; मूक्कु अरिन्तु–नाक काटकर; नुम् कुलत्तै–अपने कुल को; मुतल् अरिन्तीर्–जड़ से काट लिया (तुमने); इति–अव; उमक्कु पोक्कु अरितु–तुम्हारा कोई मार्ग नहीं है; इ अऴकु ॲल्लाम्–यह सब सौंदर्य; पुल् इटैये–घास के मध्य; उकुत्तीर्–गिरा दिया (तुमने)। ३४३

कोई जाकर दशमुख से कहे कि तुम्हारी वहिन की नाक एकदम कट गयी और उसका कोई इलाज नहीं हो सकता तो झट वे उस कहनेवाले की जीभ काट देंगे। ऐसे वे दशग्रीव दया-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं। तुमने मेरी नाक क्या कटवायी, अपने कुल को जड़ से काट दिया समझो! अव तुम्हारे बचाव का कोई मार्ग नहीं है। हन्त! अपना यह सारा सौन्दर्य तुमने धूल में मिला लिया! (घास में छितराना मुहावरा है।)। ३४३

वान्गाप्पोर् मण्गाप्पोर् मानाहर् वाऴुलहम्
तान्गाप्पो रिन्ित्तङ्ग डलैकात्तु निन्ऱुङ्गळ्
ऊन्गाक्क वुरियार्या रॆन्नैयुयिर् नीर्हाक्किन्
यान्गाप्पॆ नल्लालव् विरावणना रुळरॆन्ऱाल् 344

इरावणत्तार् उळर्–रावण है; ॲन्ऱाल्–इसलिए; नीर् ॲन्नै उयिर् काक्किन्–तुम मेरे प्राण बचाओगे तो; यान् काप्पॆन्–मैं तुमको (रावण से) बचा लूँगी; अल्लाल्–नहीं तो; वान् काप्पोर्–स्वर्गपालक; मण् काप्पोर्–भूपति; मा नाकर् वाऴ्–बड़े नाग जहाँ रहते हैं; उलकम् तान्–उस लोक के; काप्पोर्–राजा लोग; इति–अव; तङ्कळ् तलै कात्तु–अपने सिरों को बचा लेकर; उङ्कळ् ऊन् काक्क–तुम्हारा शरीर भी वचाने की; उरियर् यार्–क्षमता रखनेवाले कौन हैं। ३४४

रावण हैं, इसका अर्थ है कि तुम बच नहीं सकते। हाँ, तुम मेरी बात मानकर मेरे प्राण बचाओगे तो मैं तुम्हें बचा सकूँगी। नहीं तो स्वर्ग, भूमि या नागलोक के राजाओं में अपने सिरों को बचा लेकर तुम्हारा शरीर भी बचा ले, ऐसे शक्तिसम्पन्न कौन होते हैं? (कोई नहीं!)। ३४४

काव‍ऱ्ऱित् कऱ्पमैन्दार् तम्बॅरुमै ताङ्गळ्ऱार्
आवऱ्पे रऩ्बिना लऱैहिऩ्ऱे नामऩ्ऱो
देवर्क्कुम् वलियाऩ्ऱऩ् ड्रिरुत्तङ्गै याळिवळीण्
डेवर्क्कु वलियाळॅऩ् ड्रिळैयानुक् कियम्बीरो 345

तिण् कावल् कऱ्पु अमैन्तार्–अपने स्त्रीत्व का सबल रक्षक जो पातिव्रत्य है, उससे युक्त पतिव्रता स्त्रियाँ; तम् पॅरुमै–अपनी बड़ाई; ताम् कळ्ऱार्–खुद नहीं कहतीं; आवल् पेर् अऩ्पिताल्–इच्छा और गम्भीर प्रेम के कारण; अऱैकिऩ्ऱेऩ् आम् अऩ्ऱो–इन बातों को खोलकर कह रही हूँ न; इवळ्–यह; तेवर्क्कुम् वलियाऩ् तऩ्–देवों से भी अधिक शक्तिशाली की; तिरु तङ्कैयाळ्–प्यारी बहिन है; ईण्टु–इधर; एवर्क्कुम् वलियाळ्–किसी से भी अधिक बलशालिनी है; ॲऩ्ऱु–ऐसा; इळैयाऩुक्कु–अपने भाई को; इयम्पीरो–नहीं समझाओगे क्या। ३४५

यह मेरे लिए बहुत संकोच की बात है। अपने स्त्रीत्व की रक्षा में जो पातिव्रत्य में दृढ़ है, वे कुलीन स्त्रियाँ अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं कह सकतीं। पर मेरा तुम पर इच्छा और प्रेम अगाध है। इसलिए मैं साफ़-साफ़ ये बातें कह रही हूँ। तुम अपने भाई को समझाओ कि यह शूर्पणखा देवों से भी अधिक शक्तिशाली रावण की भगिनी है और वह स्वयं किसी से भी बढ़कर बलवान है। यह नहीं बताओगे क्या? । ३४५

माप्पोरिऱ् पुऱङ्गाप्पॅऩ् वाऩ्शुमन्दु शॅलवल्लेन्
तूप्पोलक् कऩिपलवुञ् जुवैयुडैय तरवल्लेऩ्
काप्पारैक् कॅत्तेनीर् करुदियदे तरुवेऩिप्
पूप्पोलु मॅय्यिवळाऱ् पॅारुळॅऩ्ऩे पुहल्वीराल् 346

मा पोरिल्–घोर युद्ध में; पुऱम् काप्पॅऩ्–पास रहकर रक्षा करूँगी; वाऩ्–आकाश में; चुमन्तु चॅल वल्लेऩ्–ढोते हुए ले जा सकूँगी; तू पोल–मांस के समान; चुवै उटैय–स्वादिष्ट; कऩि पलवुम्–फल अनेक; तर वल्लेऩ्–लाकर दे सकूँगी; काप्पोरै कॅत्तु–रक्षक को मिटाकर; ॲऩ् नीर् करुतियते–तुम जो चाहते हो, वह; तरुवेऩ्–लाकर दूँगी; इ पू पोलुम् मॅय्–इस सुमन सदृश शरीर वाली; इवळ् आल्–इस स्त्री से; पॅारुळ् ॲऩ्ऩे–लाभ क्या है; पुकल्वीर्–बताओ। ३४६

और भी सुनो। किसी से घोर युद्ध छिड़ा तो मैं तुम्हारे पास रहकर तुमको बचाऊँगी। तुमको उठाकर आकाश में संचार कर सकूँगी। श्रेष्ठ मांस के समान स्वादिष्ट फल संग्रह कर ला दूँगी। समझो कि तुम्हारा मन किसी वस्तु पर ललचाता है। उस वस्तु को, उसकी रक्षा करनेवाला कोई भी हो उसे मारकर, तुम्हारे लिए ला दूँगी। ऐसी शक्तिशालिनी मुझको छोड़कर तुम इस सुमन-समान कोमल शरीर वाली के पास क्यों रहो? इस अबला से तुम्हारा क्या मिलेगा? बताओ तो देखें। ३४६

कुलत्तालु नलत्तालुङ् गुरित्तनवे कौणर्दक्क
वलत्तालु मदियालुम् वडिवालु मडत्तालुम्
निलत्तारुम् विशुम्बारु नेरिळैया रॅन्नैप्पोल्
शौलत्तानिङ् गुरियारैच् चॊल्लीरो वल्लीरेल् 347

कुलत्तालुम्–जाति से; नलत्तालुम्–गुणों से; कुरित्तनवे–तुमसे निर्दिष्ट वस्तुएँ; कौणर् तक्क–लाने की; वलत्तालुम्–क्षमता में; मतियालुम्–बुद्धि में; वटिवालुम्—रूप-सौंदर्य में; मटत्तालुम्–सुकुमारता में; निलत्तारुम्–भूलोकवासी; विचुम्पारुम्–स्वर्गवासी; ऍन्नै पोल् नेरिळैयार्–मेरे समान कोई स्त्री; चॊल तान्–कहने के लिए; उरियारै–योग्य हो तो उसे; वल्लीरेल्–कह सकते हो तो; चॊल्लीर्–कहो। ३४७

जाति, श्रेष्ठ गुण, तुम्हारी इच्छित वस्तु ला देने की क्षमता, बुद्धि, रूप-सौन्दर्य और सुकुमारता में मेरे समान भूलोक, स्वर्ग और नागलोक के वासियों द्वारा मान्य योग्यता रखनेवाली कोई स्त्री हो और तुम उसे जानते हो तो वताओ तो सही ! । ३४७

पोक्किनी रॅन्नाशि पॊय्त्तॆन्नीर् पॊरुक्किलिरेल्
आक्कुवॆन्नोर् नॊडिवरैयि लळहमैवॆ नरुळहरुम्
पाक्कियमुण् डॆनिलदनाल् पॆण्मैक्कोर् पळुदुण्डो
मेक्कुयरु नॆडुमूक्कु मडन्दैयर्क्कु मिहैयन्ड्रो 348

ऍन् नाचि पोक्कित्तीर्–मेरी नाक कटा दी; पॊय्त्तु ऍन्–गया क्या; नीर् पॊरुक्किलिरेल्–तुम इसे सह नहीं सको तो; अरुळ् कूरुम् पाक्कियम् उण्टु–कृपा मिलने का भाग्य दिया; ऍनिल्–तो; ओर् नॊटि वरैयिल्–एक ही क्षण के अन्दर; आक्कुवॆन्–वना लूंगी; अळकु अमैवॆन्–सौंदर्यवती वन जाऊँगी; अतन्नाल्–बिना नाक की रह जाऊँ तो; पॆण्मैक्कु–स्त्रीत्व में; ओर पळिप्पु उण्टो–कमी होगी क्या; मेक्कु उयरुम्–उभरकर उगनेवाली; नॆटु मूक्कुम्–दीर्घ नाक भी; मटन्तैयर्क्कु–नारियों के लिए; मिकै अन्ड्रो–अनावश्यक नहीं है क्या। ३४८

तुमने मुझे नासिका से हीन कर दिया। छोड़ दो ! उससे क्या नष्ट हुआ ? तो भी अगर तुमको मेरा नासिका बिना रहना असह्य हो तो फिर से अपनी नाक पूर्ववत वना लूँगी इस शर्त पर कि तुम मुझ पर कृपा करो। वचन दो, देखो एक क्षण में ठीक हो जायगा। वही नहीं तुम जैसा रूप चाहो वैसा रूप ले लूँगी। नाक के न रहने से क्या स्त्रीत्व में कोई कमी होगी ? उभरकर उगी हुई लम्वी नाक आवश्यकता से अधिक नहीं है ? । ३४८

विण्डारे यल्लारो वेण्डादार् मनम्वेण्ड
उण्डाय कादलिलॆन् नुयिरॆन्व दुमदन्ड्रो

कण्डारे कादलिक्कुङ् गट्टऴहुम् विडमन्ऱो
कॉण्डारे कॉण्डाडु मुरुप्पॅऱ्ऱाऱ् कॉळ्ळीरो 349

वेण्टातार्–जिनको हम नहीं चाहते; विण्टारे अल्लारो–वे न हमारे शत्रु वन जाते है; मत्तम् वेण्ट–मन के लगने से; उण्टाय–जो उत्पन्न होता है; कातलिन्–उस प्रेम से; ऍन् उयिर्–मेरे प्राण; ऍन्पतु–जो है; उमतु अन्ऱो–वे तुम्हारे नहीं है क्या; कण्टारे कातलिक्कुम्–जो भी देखे वह प्रेम करे; कट्टऴकुम्–ऐसा रूप-सौंदर्य भी; विटम् अन्ऱो–विष नहीं होगा क्या; कॉण्टारे कॉण्टाटुम्–जिसने अपना बना लिया है, वही सराहे; उरु पॅऱ्ऱाल्–ऐसा रूप धरूँ तो; कॉळ्ळीरो–तुम नहीं अपनाओगे क्या। ३४९

लोग, जिनको हम पसन्द नहीं करते, हमारे शत्रु हो जाते हैं। पर मेरा मन तुम पर आसक्त है, इसलिए तुमसे मेरा गाढ़ा प्रेम हो गया है और इससे क्या मेरे प्राण भी अब तुम्हारे नहीं हुए? जो भी देखे, वही अनुरक्त हो जाय, ऐसा रूप-सौन्दर्य भी विष (के समान हानिकारक) नहीं है? जिसकी मैं हो गयी, उसको जो भावे वही रूप मैं लूँ तो क्या तुम मुझे नहीं अपनाओगे? । ३४९

शिवनुमलर्त् तिशैमुहनुन् दिरुमालुन् दॅरुकुलिशत्
तवनुमॅऴुन् दॊन्ऱाहि नित्ऱन्न वुरुवोने
पुवनमनैत् तैयुमॊरुवन् पूङ्गणैया लुयिर्वाङ्गुम्
अवनुमुनक् किळैयानो विवनेपो लरुळिलनाल् 350

चिवनुम्–शिवजी और; मलर् तिचै मुकनुम्–कमलासन चतुर्मुख; तिरुमालुम्–और श्रीविष्णु; तॅरु कुलिचत्तु अवनुम्–शत्रुसंहारक वज्र रखनेवाला वह (इन्द्र); ऍऴुन्तु–सब अपना-अपना अलग शरीर छोड़कर; ऒन्ऱु आकि–एकाकार बनकर; निन्ऱु अन्न–खड़े हो (मानो); उरुवोने–ऐसे दर्शन देनेवाले; पुवनम् अनैत्तैयुम्–सारे भुवनों को; ऒरु वन् पूम् कणैयाल्–एक असरदार पुष्पशायक से; उयिर् वाङ्कुम्–प्राण हरनेवाला; अवनुम्–वह (मनोज) भी; इवने पोल्–इस तुम्हारे भाई के समान; अरुळ् इलनाल्–दयाहीन लगता है, इसलिए; उनक्कु इळैयानो–(वह मन्मथ भी) तुम्हारा लघु-भ्राता है क्या। ३५०

हे राम! तुम ऐसे रूपवान हो मानो शिव, कमलासन, श्रीविष्णु और संहारक वज्रपाणी सबने अपना-अपना रूप त्यागकर एकाकार होकर तुम्हारा रूप लिया हो! सुन्दर राम! तुमसे एक बात पूछूँ? अपने एक अपार दुखदायी पुष्पास्त्र से सारे भुवनों के प्राण हरनेवाला (मर्मातक पीड़ा पहुँचानेवाला) मन्मथ भी तुम्हारे इस भाई के समान कृपालु नही रहता। तो क्या वह भी तुम्हारा ही छोटा भाई है? । ३५०

पॊन्नुरुवप् पॊरुहऴलीर् पिऴैकाणीर् मूक्करिवान्
ऍन्नुरुवैक् कैक्कॊण्डी रिरुन्दॊऴियु नम्मरुङ्गे येहाळप्पाल्

पिऴ्ऴिवळै ययलीरुवर् पारारा मॅनवरिन्दीर् पिऴैशॅय् दीरो
अऴ्ऴदनै यरिन्दन्ऱो वऴ्बिरट्टि कॊण्डदुना नऱिवि लेऴो 351

पॊऩ् उरुव–स्वर्ण की; पॊरु कऴलीर्–वीरपायलधारी; पिऴै काणीर्–तुम अपराध करनेवाले नहीं हो; ऍऩ् उरुवै–मेरे शरीर को; कै कॊण्टीर्–अपने अधीन कर लिया है; नम् मरुङ्के–हमारे ही पास; इरुन्तु ऒऴियुम्–ठहर जायगी; पिऩ्ऩै–फिर; अप्पाल् एकाळ्–कहीं नहीं जायगी; इवळै अयल् ऒरुवर् पारार् आम्–इस पर कोई अन्य दृष्टि नहीं डालेगा; ऍऩ्ऩ अरिन्तीर्–ऐसा सोचकर ही मेरी नाक काट ली है; मूक्कु अरिवाऩ् पॊरुळ्–(नहीं तो) नाक काटने का अर्थ; वेऱु उण्टो–दूसरा है क्या; पिऴै चॅय्तीरो–तुमने कोई गलती की है क्या (नहीं); अऩ्ऩ तऩै–उसको; अऱिन्तु अऩ्ऱो–जानकर ही तो; नाऩ् अऩ्पु इरट्टि कॊण्टतु–दुगुना प्रेम रखती; नाऩ् अऱिवु इलेऩो–क्या मै बुद्धिहीन हूँ। ३५१

स्वर्णनिर्मित वीर पायलधारी ! तुम लोग अपराध करनेवाले नहीं हो। तुमने मेरे शरीर और रूप को अपना बना लिया है ! 'यह हमारे पास रह जायगी। अब उसके पास कोई चारा नहीं है। यह विकृत रूप लेकर वह कहीं नहीं जा सकेगी। इसको कोई दूसरा नहीं देखेगा।' —यही सोचकर तुमने मेरी नाक काट दी है। नहीं तो मेरी नाक काट देने का कोई प्रयोजन है क्या ? तब क्या तुम अपराधी बन सकोगे ? नहीं। उस सच्चे अभिप्राय को मैं जान गयी। तभी तो मेरा तुम पर प्रेम दुगुना हो गया ! क्या मैं बुद्धिहीन हूँ ? । ३५१

वॅप्पऴिया नॅडुवॅहुऴि वेलरक्क रीदऱिन्दु वॅहुण्डु नोक्किऩ्
अप्पऴिया लुलहत्तैत्तु मुम्बॊरुट्टा लऴिन्दत्तवा मऱत्तै नोक्किऩ्
ऒप्पऴियच् चॅय्हिला रुयर्हुलत्तै तोऩ्ऱिऩा रुणर्न्दु नोक्किऩ्
इप्पऴियैत् तुडैत्तुदवि यिऩ्ऩिदिरुत्ति रॅऩ्ऩॊडुमॅऩ् ऱिरैञ्जि निन्ऱाळ् 352

वॅप्पु अऴिया–उग्रता से मिले; वॅकुऴि–क्रोधी; नॅटुवेल् अरक्कर्–लम्बे भालों के धारक राक्षस; ईतु अऱिन्तु–यह जानकर; वॅकुण्टु नोक्किऩ्–कोप करके देखें तो; अ पऴियाल्–उनके बदला लेने से; उलकु अत्तैत्तुम्–सारे लोक; उम् पॊरुट्टाल्–तुम्हारे कारण; अऴिन्तत्त आम्–मिट जाते होंगे; अऱत्तै नोक्किऩ्–धर्म देखा जाय तो; उयर् कुलत्तु तोऩ्ऱिऩीर्–उच्च कुल में जात तुम; ओप्पु अऴिय–लोक-असम्मत कार्य; चॅय्किलीर्–करोगे नहीं; उणर्न्तु नोक्कि–खूब सोचकर देखकर; इ पऴियै तुटैत्तु–इस अपमान को दूर करके; उतविट–सहायता करने के लिए; ऍऩ्ऩॊटुम् इनितु इरुत्तिर्–मेरे साथ सुख से रह जाओ; ऍऩ्ऱु इरैञ्चि निन्ऱाळ्–ऐसी विनय कर खड़ी रही। ३५२

राक्षस उग्र क्रोधी हैं। वे यह जानेंगे तो कुपित होंगे और बदला लेनें आयँगे। उनके बदला लेने के सिलसिले में सारे लोक मिट जायँगे और तुम ही उस नाश के निमित्त रह जाओगे। तुम लोग उच्चकुल-जात हो ! लोकों का असम्मत कार्य नहीं करोगे। धर्म की वात सोचो और खूब

विचार करो। मेरा अपमान दूर करके मेरी सहायता करने के लिए मेरे साथ सुखपूर्वक रह जाओ। —शूर्पणखा ने यह प्रार्थना की और खड़ी रही। ३५२

नाडयरत् तुयरिऴैत्त नवैयरक्कि निन्नन्नै तन्नै नलुहुम्
ताडहैये युयिर्हवर्न्द शरमिरुन्द दन्न्रियुनान् ऱवमेऱ् कॊण्ड्डु
तोडशैयत् तुरुमलर्त्ता रिहलरक्कर् कुलन्दॊलैप्पान् ऱोन्ऱि निन्ऱेन्
पाडहल पुल्लॊऴुक्किन् वल्लरक्कि यॆन्ऱिरैवन् पहरुम् बिन्नुम् 353

नाटु अयर–संसार को त्रस्त करते हुए; तुयर् इऴैत्त–अत्याचार जो करती रही; नवै अरक्कि–अपराधिनी राक्षसी; निन् अन्नै तन्नै नलुकुम्–तुम्हारी माता की जननी; ताटकैयै–ताड़का के; उयिर् कवर्न्त–प्राण हर चुका वह; चरम् इरुन्ततु–शर मेरे पास अब भी है; अन्ऱियुम्–अलावा; नान्–मैं; तवम् मेल् कॊण्टु–तपोव्रती बनकर; तोटु अचै–दल-सहित; अ मलर् तुऱ तार्–पुष्पों की बनी मालाधारी; इकल् अरक्कर्–शत्रु राक्षसों का; कुलम् तॊलैप्पान्–कुल का नाश करने के लिए; तोन्ऱि निन्ऱेन्–आया हूँ (इधर); पुल् ऑऴुक्किन्–नीच चरित्र की; वल् अरक्कि–बलवान राक्षसी; पाटु अकल–दूर चली जाओ; ऍन्ऱु–कहकर; इऱैवन्–प्रभु श्रीराम; पिन्नुम् पकरुम्–आगे बोले। ३५३

श्रीराम ने डाँट बतायी। री राक्षसी! लोकों को त्रस्त करते हुए ऊधम जो मचाती रही, उस तुम्हारी माता की माता ताड़का का वध मैंने ही किया था। जिस शर से उसको मैंने मारा वह शर अब भी मेरे पास सुरक्षित है। और भी ध्यान रखो। मैं तपोव्रती होकर इधर आया हूँ पुष्पमालाधारी उन वैरी राक्षसों के कुल को ही मिटाने हेतु! नीच चरित्र वाली क्रूर राक्षसी! दूर हट जाओ, भागो, भागो! फिर प्रभु और भी बोले। ३५३

तरैयळित्त तनिनेमित् तयरदन्ऱन् पुदल्वर्यान् तायशॊऱ् ऱाङ्गि
विरैयळित्त कान्बुहुन्देम् वेदियरु मादवरुम् वॆण्ड निन्ऱ
करैयळित्तऱ् करियपडैक् कडलरक्कर् कुलन्दॊलैत्तुक् कण्डाय् पण्डै
वरैयळित्त कुलमाड नहर्पुहुवे मिवैतॆरिय मनक्कॊ ळॆन्ऱान् 354

याम्–हम; तरै अळित्त–पृथ्वीपालक; तनि नेमि–एकचक्राधिपति; तयरतन् तन् पुतल्वर्–दशरथ के पुत्र हैं; ताय् चॊल् ताङ्कि–माता का वचन मानकर; विरै अळित्त–सुवास बरसानेवाले; कान् पुकुन्तेम्–जंगल में आये; वेतियरुम्–वेदज्ञ और; मा तवरुम्–महान तपस्वियों के; वेण्ट–प्रार्थना करने से; निन्ऱ–यहाँ स्थित; करै अळित्तऱ्कु अरिय–अपार; कटल् पटै अरक्कर्–समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों का; कुलम् तॊलैत्तु–दल मिटाकर; पण्टै–प्राचीन; वरै अळित्त–पर्वत-सम; कुल माट नकर्–अधिक संख्या में प्रासादों से पूर्ण (अयोध्या) नगर; पुकुवेम्–पहुँचेंगे; इवै–यह सब; तॆरिय मतम् कॊळ्–खूब जानकर मन में धरो; ऍन्ऱान्–श्रीराम ने समझाया। ३५४

हम उन दशरथ के पुत्र हैं, जो एकचक्राधिकार के साथ भूमि का पालन करते थे। अपनी (सौतेली) माता की आज्ञा सिर पर धारण करके हम सुबास से पूर्ण इस वन में आये। यहाँ के वेदवित ब्राह्मणों और महान तपस्वियों ने हमसे प्रार्थना की। उसको मानकर हमने यहाँ रहनेवाले असीम समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों के दल को मिटा चुककर अपने प्राचीन और पर्वत-सम ऊँचे सौधों से पूर्ण अयोध्या नगर लौट जाने का संकल्प किया है। ये बातें भी तुम ध्यान में रख लो। श्रीराम ने चेतावनी देते हुए यह कहा। ३५४

नॅऱित्तारै शॅल्लाद निरुदरॅदिर् निल्लाद नॅडिय तेवर्
मऱित्तारीण् डिरुवरिवर् मानिडव रॅन्नादु वल्लै याहिल्
वॅऱित्तारै वेलरक्कर् विऱलियक्कर् मुदलिनर्नी मिडलो रॅन्ऱु
कुऱित्तारै यावरैयुम् कॊणरुदियेल् नित्ननॅदिरे कोॖ मॅन्ऱान् 355

नॅऱि तारै चॅल्लात–धर्म-मार्ग पर न जानेवाले; निरुतर्–राक्षसों के; ॲतिर्–सामने; निल्लाते–न खड़े होकर; नॅटिय तेवर्–बड़े-बड़े देव भी; मऱित्तार्–मुड़कर भाग गये; ईण्टु इवर् इरुवर्–यहाँ ये दो; मात्तिटवर्–मनुष्य; ॲन्नातु–यह न सोचकर; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; वॅऱि तार्–सुबासपूर्ण मालाधारी; ऐ वेल् अरक्कर्–सुन्दर भालों वाले राक्षस; विऱल् इयक्कर्–पराक्रमी यक्ष; मुतलित्तर्–आदि में; नी मिटलोर् ॲन्ऱु कुऱित्तोरै–तुम जिनको शक्तिशाली मानती हो, उन; यावरैयुम्–सभी को; कॊणरुतियेल्–लाओगी, तो; नित्न् ॲतिरे–तुम्हारे सामने ही; कोऱुम्–मारूँगा; ॲन्ऱान्–श्रीराम ने कहा। ३५५

श्रीराम ने आगे अपनी बात पर उसका विश्वास पैदा करने के लिए कहा— 'धर्म-मार्ग पर न जानेवाले राक्षसों के सामने चिरप्रतिष्ठित देव टिक नहीं सके। लौटकर भाग गये। यहाँ ये दोनों अल्पशक्ति मनुष्य हैं।' तुम ऐसा सोचोगी। ऐसा मत सोचो। तुम्हारे पास सामर्थ्य हो तो जाओ, सुबासपूर्ण मालाधारी राक्षस, शक्तिशाली यक्ष आदि लोगों में जिनको तुम पराक्रमी मानती हो, उन सबों को बुला लाओ। देखो, मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही उनको मार दूँगा। ३५५

कॊल्लला मायङ्गळ् कुऱित्तनवे कॊळ्ळलाङ् गॊऱ्ऱ मुऱ्ऱ
वॆल्लला मवरियऱ्ऱुम् वित्तैयमॆल्लाङ् गडक्कला मेल्वाय् नीङ्गिप्
पल्लॆला मुऱत्तोन्ऱुम् बहुवाय ळॆन्नादु पाऱ्त्ति याहिल्
नॆल्लॆलाञ् जुरन्दुदवु नीर्नाड केळॆन्ऱु निरुदि कूऱुम् 356

नॆल् ॲलाम् चुरन्तु–धान आदि खाद्य पदार्थ सब पैदा करके; उतवुम्–देनेवाले; नीर् नाट—जल-समृद्ध कोसल देश के राजा; केळ्–सुनो; मेल् वाय् नीङ्कि–मुख (अधरों) को हटाकर; पल् ॲलाम्–सारे दाँतों को; उऱ तोन्ऱुम्–खूब प्रकट होने देनेवाले; पकुवायळ्–बड़ा मुख वाली; ॲन्नातु–ऐसा न सोचकर; पाऱ्त्ति आयिन्–

मुझ पर प्रेम की दृष्टि रखोगे तो; कॉल्लल् आम्–मारना हो सकता है; कुरितूलत्तवे मायङ्कळ्–वे जो भी माया सोचेंगे; कॉळ्ळल् आम्–उनको पहले ही समझना सम्भव होगा; कॉर्ऱम्–विजय; मुर्ऱ–पूरी हमारी हो ऐसा; वॅल्ललाम्–उनको हरा सकते है; अवर् इयर्ऱुम् वित्तैयम् ॲलाम्–वे जो भी षड्यन्त्र रचेंगे, उन सबको; कटक्कलाम्–मिटा सकेंगे; ॲन्ऱु–ऐसा; निरुति कूऱुम्–निशाचरी ने कहा। ३५६

शूर्पणखा हार मानने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। उसने बहस की। धान आदि खाद्य पदार्थ कसरत से पैदा करनेवाले, जलसमृद्ध कोसल देश के अधिपति ! सुनो ! तुम इस छोटी सी बात को भूल जाओ कि मेरे दाँत बाहर निकले हुए है और मेरा मुख-विवर अधिक बड़ा है। मुझ पर कृपा-दृष्टि रखो तो तुम जिनको मारना चाहते हो, उन राक्षसों को अवश्य मार सकोगे। हम उनके माया कार्यो का पूर्व-ज्ञान प्राप्त करके उन पर पूर्ण रूप से विजय पा सकेंगे। उनके सभी षड्यन्त्रों को असफल बना सकेंगे। ३५६

कामुबुऱऴ्न् दोळाळैक् कैविडी रॅन्ऩिनुम्यान् मिहैयो कळ्वर्
आम्बॉरियि लडलरक्क रवरोडे शॅरुच्चॅय्वा नमैन्दी राहिल्
ताम्बॉरियिर् पलमायन् दरुम्बॉरिह ळरिन्दवर्ऱैत् तडुप्पे नन्ऱे
पाम्बऱियुम् पाम्बिनगा लॅन्नमॉऴियुम् पऴमॉऴियुम् बार्क्कि लीरो 357

काम्पु उऱऴुम्–बाँस की समानता करनेवाले; तोळाळै–कंधे वाली को; कै विटीर् ॲन्ऩित्तुम्–नहीं छोड़ोगे तो भी; यान् मिकैयो–मैं अधिक हो जाऊँगी क्या; कळ्वर् आम्–चोर; पॉरि इल्–श्रीहीन; अटल् अरक्कर् आम्–पराक्रमी राक्षसों; अवरोटे–के साथ (विरुद्ध); वॅरु चॅय्वान्–लड़ने के लिए; अमैन्तीर् आकिल्–प्रस्तुत हुए तो; पॉरियिल्–इन्द्रियों के समान; पल मायम् तरुम्–विविध माया के कार्य करनेवाले; पॉरिकळ् अरिन्तु–उनके रहस्यों को पहले ही जानकर; अवर्ऱै तट्टुप्पेन् अन्ऱे–उनको रोक दूँगी न; पाम्पु–सर्प; पाम्पित्त काल्–सर्प का पैर; अरियुम्–जानता है; ॲन्न मॉऴियुम्–ऐसा कहनेवाली; पऴमॉऴियुन्–लोकोक्ति; पार्क्किलीरो–नहीं जानते क्या। ३५७

तुम बाँस की समानता करनेवाले कन्धों की इस स्त्री को छोड़ना नही चाहते तो भी मैं तुम्हारे लिए अधिक हो जाऊँगी या निरर्थक हो जाऊँगी ? नही। राक्षस बुरे है और पराक्रमी है। उनके विरुद्ध जब लड़ोगे, तब वे इन्द्रियों के समान अनेक अनर्थकारी मायाकार्य करेंगे। मैं उनका रहस्य जानकर उनको रोक लूँगी। क्या तुम यह लोकोक्ति नहीं जानते, जो यह बताती है कि सर्प, सर्प का पैर जानता है। राक्षसी हूँ, राक्षसों की चाल जानती हूँ। इस पर विचार नहीं करोगे। ३५७

उळङ्गोडर् कन्बिळ्ळैत्ता ळुण्डॉरुत्ति यॅनन्नुदिये निरुद रोडुङ्
कळङ्गोडर् करियशॅरुक् कण्णियक्का लॅरुमूवेङ गलन्द पोदु

कुळङ्गोड् मनुऱेयक् कॊडियविऱल् वीररतमैक् कॊन्ऱ पिन्नर्
इळङ्गोवो डॆनैयिरुत्ति यिरुकोळुञ् जिऱैवैत्तार् किळैया ळॆन्ऱे 358

उळम् कोटऱ्कु–मन में स्थान देने के लिए; अनुपु इळैत्ताळ् ऒरुत्ति–मुझसे प्रेम करनेवाली एक स्त्री; उण्टु–पहले से है; ऎन्तुतियेल्–कहोगे तो; निरुतरोटुम्–राक्षसों के साथ; कळम् कोटऱ्कु अरिय–समरांगण में जो दुस्तर करा देगा, ऐसा; चॆरु कण्णियक्काल्–युद्ध करना चाहोगे तो; ऒरु मूवेम् कलन्त पोतु–हम तीनों मिले रहें तो; कुळम् कोटुम् अन्ऱे–वह समरभूमि रक्त का तालाब बन जायगी न; अ कॊटिय–उन निर्मम; विऱल् वीरर् तमै–बली वीरों को; कॊन्ऱ पिन्तर्–मारने के बाद; इरु कोळुम् चिऱै वैत्तार्कु–दोनों ग्रहों (सूर्य और चन्द्र) को कारागृह में जिसने बन्द कर रखा था, उस रावण की; इळैयाळ् ऎन्ऱे–भगिनी के मान की रक्षा करते हुए; इळम् को ओटु–लघुराज लक्ष्मण के साथ; ऎनै इरुत्ति–मुझे बिठा दो, (उसकी पत्नी बना लो)। ३५८

तुम कह सकते हो कि मेरे मन में स्थान पाकर मेरे साथ प्रेम करने के लिए पहले ही एक स्त्री है। तब एक काम करें। राक्षसों के साथ हम तीनों मिलकर युद्ध करेंगे। तब साधारण रूप से समरांगण में जाना भी जिसमें कठिन होगा, उस भयंकर युद्ध में हम रणभूमि को ही रक्त का तालाब बना देंगे और विजयी बनेंगे। उन वीर राक्षसों को मारने के बाद मुझे इतना मान दो कि मैं सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहों को कारागृह में जिसने बन्द कर दिया, उस रावण की भगिनी हूँ और मुझे अपने लघुराज लक्ष्मण के घर में (उसकी स्त्री के रूप में) बिठा दो। ३५८

पॆरुङ्गुला वुरुनहर्क्के पॆयरुनाळ् वेण्डुमुरुप् पिडिप्पे नन्ऱेल्
अरुङ्गला मुऱ्ऱिरुन्दा नॆन्ऱालु मिळैयवन्ऱा नरिन्द नाशि
ऒरुङ्गिला विवळोडु मुऱैवदो वॆन्बाने लिऱैव वॊन्ऱु
मरुङ्गिला दवळोडु मन्ऱेयान् नॆडुङ्गालम् वाळ्न्दे नॆन्बाय् 359

इऱैव–सरदार; पॆरुम् कुला उरु–बड़े कोलाहलमय; नकर्क्के–नगर (अयोध्या) को; पॆयरु नाळ्–लौटते दिन; इळैयवन्–तुम्हारा छोटा भाई; अरुम् कलाम् उऱ्ऱु इरुन्तान्–गहरा कोप करता होता; ऎन्ऱालुम्–तो भी; तान् अरिन्त नाचि ऒरुङ्कु इला–खुद जो उसने काटी, उस नाक से हीन; इवळोटुम् उऱैवतो–इसके साथ रहूँगा क्या; ऎन्पातेल्–कहेगा तो; ऒन्ऱु मरुङ्कु इलातवळोटुम् अन्ऱे–युक्त कमर से हीन स्त्री के साथ तो; यान् नॆटुम् कालम् वाळ्न्तेन्–मैं बहुत काल से रहता हूँ; ऎन्पाय्–कहो; अन्ऱेल्–वह तब भी न माने तो; वेण्टुम् उरु पिटिप्पेन्–उसके पसन्द का रूप धारण कर लूँगी। ३५९

नाथ ! जब तुम लोग बड़े कोलाहलमय अयोध्या नगर को लौटोगे, तब लक्ष्मण क्रोध न छोड़कर यह कहे कि यह नासिका से हीन है, यद्यपि उसी ने मुझे नाक से हीन कर दिया था तो तुम उससे समाधान कहो कि क्या मैं कमर से हीन स्त्री के साथ बहुत दिन से नहीं रह रहा ? नहीं तो

मैं वह जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लूँगी; नही तो भी मैं उसका चाहा रूप धर लूँगी। ३५९

ऍन्ऱलुमे यिळैयवन्ऱा निलङ्गिलैवेल् कडैक्कणिया यिवळै योण्ड्ड
कॊन्ऱुहळै योमॆन्निऩ् नॆडिदलैक्कु मरुळऩ्गोल् कोवे यॆऩ्ऩ
नन्ऱुवे यामऩ्ऱो पोहाळे लाहवॆन नादऩ् कूऱ
ऒन्ऱुमिव ऱॆनक्किरङ्गा रुयिरिऴप्पॆ निऱ्किलॆन वरक्कि युन्ना 360

ऍन्ऱलुमे–उसके ऐसा कहते ही; इळैयवन्–कनिष्ठ ने; इलङ्कु इलै वेल्–दृश्यमान पत्राकार सिर वाले भाले को; कटैक्कणिया–आँख की कोर से दिखाकर; कोवे–स्वामी; इवळै कॊन्ऱु–इसको मारकर; कळैयोम् ऍन्ऩिल्–नहीं मिटायेंगे तो; नॆटितु अलैक्कुम्–वड़ा ऊधम मचायगी; अरुळ् ऍन् कोल्–कृपापूर्ण आज्ञा क्या है; ऍन्ऩ–यह पूछने पर; नातन्–नायक श्रीराम के; पोकाळेल्–नहीं जायगी तो; अतुवे–वही; नन्ऱु आम् अन्ऱो–भला होगा न; आक ऍन–वही हो, कहने पर; कूऱ–कहने पर; इवर् ऍनक्कु ऒन्ऱुम् इरङ्कार्–ये मेरी दया कुछ नहीं करेंगे; निऱ्किन्–खड़ी रहूँ तो; उयिर् इऴप्पॆन्–प्राण गँवा दूँगी; ऍन–ऐसा; अरक्कि उन्ना–राक्षसी सोचकर। ३६०

लक्ष्मण ने यह बात सुनी। उनकी सहनशीलता जाती रही। उन्होंने श्रीराम का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने दृश्यमान, पत्रसिर-भाले को अपनी आँखों की कोरों से देखा। फिर कहा— हे स्वामी! अगर हम इसे मारकर दूर नहीं करेंगे तो यह वड़ा अनर्थ करा देगी। आपकी आज्ञा क्या है? तव नायक श्रीराम ने मान लिया। कहा कि हाँ! अगर यह जानेवाली नहीं है तो क्या वैसा करना ही न भला होगा? वही हो! शूर्पणखा ने सुना तो वह समझ गयी कि ये हमारे ऊपर कृपा नहीं करेंगे। इधर ठहरूँगी तो प्राण से हाथ धोना पड़ जायगा। (यह सोचकर)। ३६०

एऱ्ऱनॆडुङ् गॊडिमूक्कु मिरुकादु मुलैयिरण्डु मिऴन्दु वाऴल्
आऱ्ऱुवनॆ वञ्जनैया लुमैयुळ्ळ परिशऱिवा नमैन्द दन्ऱो
काऱ्ऱिनिलुङ् कनलिनुङ् कडियानैक् कॊडियानैक् करनै युङ्गळ्
कूऱ्ऱुवनै यिप्पॊऴुदे कॊणर्हिन्ऱे नॆन्ऱुशलङ् गॊण्डु पोनाळ् 361

एऱ्ऱ–युक्त; नॆटुम् कॊटि मूक्कुम्–लम्बी, लता-सम नाक को; इरु कातुम्–दोनो कानों को; मुलै इरण्टुम्–दोनों स्तनों को; इऴन्तुम्–खोने के बाद भी; वाऴल् आऱ्ऱुवनॆ–जीना सह सकूँगी क्या; उमै उळ्ळ परिचु–तुम्हारे गूढ़ अभिप्राय; वञ्चनैयाल्–कपट से; अऱिवान्–जानने को; अमैन्ततु अन्ऱो–रचा गया (नाटक) न; काऱ्ऱिऩिलुम् कटियानै–वायु से अधिक तीव्र और वलवान; कनलिनुम् कॊटियानै–अग्नि से भी वढ़कर निर्मम; करनै–खर को; उङ्कळ् कूऱ्ऱुवनै–तुम्हारे यम को; इ पॊऴुते कॊणर्किन्ऱेन्–यहाँ अभी लाऊँगी; ऍन्ऱु–कहकर; चलम् कॊण्टु पोनाळ्–वैर लेकर चली। ३६१

जाते-जाते शूर्पणखा यह कह गयी कि मेरी लम्बी लता-सी नाक मेरे रूप के योग्य सुन्दर थी। उसको, दोनों कानों और स्तनों को खोने के बाद कोई अपने जीवन को सह सकेगा क्या ? मैं जीवित रहने की क्षमता रख सकूँगी क्या ? यह सब जो मैंने तुमसे कहा, वह तुम्हारे गूढ़ अभिप्रायों को जानने के लिए रचा गया कपट नाटक था। अब मैं जा रही हूँ और वायु से भी तीव्रगामी और बलवान, अग्नि से भी निर्मम खर को, जो तुम्हारा यम होगा, अभी ले आऊँगी। ३६१

6. करन् वदैप् पडलम् (खर-वध पटल)

❀ इरुन्द साक्करन् ऱाळिणै यिन्मिशैच्
चॊरिन्द शोरियळ् कून्दल डुम्बॆन्नत्
तॆरिन्द सूक्कित्तळ् वायित्तळ् शॆक्कर्मेल्
विरिन्द मेह मॆन्नविळुन् दाळरो 362

चॊरिन्त चोरियळ्–बहते हुए रक्त के साथ; कून्तलळ्–बिखरे केश वाली; तूमपु ॲत्त–मोरी की नली के द्वार के समान; तॆरिन्त सूक्कित्तळ्–दिखनेवाली नाक की; वायित्तळ्–(मोरी के द्वार के समान) बड़ा मुख वाली; चॆक्कर् मेल् विरिन्त–लाल गगन पर फैले; मेकम् ॲत्त–मेघ के समान; इरुन्त मा करन्–(जनस्थान में) रहनेवाले प्रख्यात खर के; ताळ् इणैयिन् मिचै–जोड़े के पैरों पर; विळुन्ताळ्–जा गिरी। ३६२

शूर्पणखा के शरीर के कटे अंगों से रक्त बह रहा था। उसका केश खुला और बिखरा हुआ था। उसकी नाक और मुख मोरी के द्वार के समान खुले थे। वह भागी और जनस्थान में रहे प्रख्यात खर के चरणों पर लाल गगन के ऊपर छाये हुए मेघ के समान गिरी। ३६२

❀ अळुङ्गु नाळिदॆन् ऱन्दह नाणैयाल्, तळङ्गु पेरि यॆन्नत्तनित् तेङ्गुवाळ्
मुळङ्गु मेह मिडित्तवॆन् दीयिनाल्, पुळुङ्गु नाह मॆन्नप्पुरण् डाळरो 363

अन्तकन् आणैयाल्–यम की आज्ञा से; अळुङ्कु नाळ् इतु–अन्त होने का काल यह है; ॲन्ऱु–ऐसा घोषित करते हुए; तळङ्कु पेरि ॲत्त–पिटनेवाली भेरी के समान; तत्तितु एङ्कुवाळ्–विचित्र रूप से रोने का स्वर करती हुई; मुळङ्कुम् मेकम्–गरजनेवाले मेघ से; इटित्त वॆम् तीयिनाल्–गिरी गाज की अग्नि से; पुळुङ्कुम् नाकम् ॲत्त–व्यग्र नाग के समान; पुरण्टाळ्–लोटने लगी। ३६३

उसका अनोखा रुदन का गम्भीर स्वर यम की आज्ञा के अनुसार राक्षसों के अन्त की घोषणा करनेवाली भेरी के नाद के समान था। वह उस सर्प के समान छटपटाकर लोटने लगी, जो गरजते मेघ से गिरी गाज की अग्नि से तप रहा हो। ३६३

❀ वाक्किऱ् कॊप्पप् पुहैमुनुदु वायिनाऩ्
नोक्किक् कूशलर् नुनुतैयित् तऩ्मैयै
आक्किप् पोनव रार्हॊलॆऩ् ऱानवळ्
मूक्किऩ् चोरि मुऴीइक्कॊण्ड कण्णिनाऩ् 364

अवळ् मूक्किल् चोरि–उसकी नाक से वहते हुए रक्त में; मुऴीइ कॊण्ट–मग्न रही; कण्णिनाऩ्–आँखों का; वाक्किऱ्कु ऑप्प–शब्द के अनुकल; पुकै मुनुतु–धुआँ निकालनेवाले; वायिनाऩ्–मुख का (खर); नोक्कि–देखकर; कूचलर्–निस्संकोच होकर; नुनुतै–तुम्हारी; इ तऩ्मै आक्कि–इस दुर्गति में पहुँचाकर; पोऩतवर्–जानेवाले; आर् कॊल्–कौन हैं तो; ऍऩ्ऱाऩ्–पूछा। ३६४

खर की दृष्टि शूर्पणखा की नाक से निकलनेवाले रक्त के प्रवाह में मानो डूब सी गयी। उसके मुख से ज्यों-ज्यों शब्द निकलते, त्यों-त्यों धुआँ भी निकलता। उतने क्रोध के साथ उसने शूर्पणखा से प्रश्न किया कि ऐसा निस्संकोच होकर तुम्हारी दुर्गति कर गये जो वे कौन है? । ३६४

❀ इरुवर् माऩिडर् तापद रेऩ्दिय, वरिविल् वाट्कैयर् मऩ्मदऩ् मेऩियर्
तरुम नीरर् तयरदऩ् कादलर्, शॆरुवि नेरु निरुदरैत् तेडुवार् 365

इरुवर् माऩिटर्–दो मानव; तापतर्–तपस्वी; एन्तिय–धृत; वरिविल्–बन्धनयुक्त धनु; वाळ्–तलवार के; कैयर्–हाथ वाले; मऩ्मतऩ् मेऩियर्–मन्मथ के समान रूप वाले; तरुम नीरर्–धर्मपथचारी; तयरतऩ् कातलर्–दशरथ के प्यारे पुत्र; चॆरुविल् नेरुम्–युद्ध में लड़नेवाले; निरुतरै–राक्षसों को; तेटुवार्–ढूँढ़नेवाले। ३६५

(शूर्पणखा का उत्तर भी देखिये!) वे दोनों मानव हैं तप में लीन! हाथ में धनुष और तलवार रखते हैं। उनका रूप मन्मथ का-सा है। धर्मपथचारी है। दशरथ के प्यारे पुत्र हैं और युद्ध में लड़नेवाले राक्षसों की खोज मे लगे रहनेवाले हैं। ३६५

❀ ऒऩ्ऱु नोक्कल रुऩ्वलि योङ्गऱम्, निऩ्ऱु नोक्कि निऱुत्तु निऩैप्पिऩर्
वॆऩ्ऱि वेऱ्कै निरुदरै वेरऱक्, कॊऩ्ऱु नोक्कुदु मॆऩ्ऱुणर् कॊळ्हैयार् 366

ओङ्कु अऱम् निऩ्ऱु–उत्कृष्ट धर्म खुद अवलम्बन कर; नोक्कि–उनकी गति शोधकर; निऱुत्तुम् निऩैप्पिऩर्–स्थापित करने का संकल्प करते हुए; उऩ् वलि ऒऩ्ऱुम् नोक्कलर्–तुम्हारे बल की परवाह नहीं करते; वॆऩ्ऱि वेल्–विजयशील भालेधारी; कै–हस्त वाले; निरुतरै–राक्षसों को; वेर् अऱ–निर्मूल करके; कॊऩ्ऱु नोक्कुतुम् ऍऩ्ऱु–मार मिटाएँगे, ऐसा; उणर्–निश्चय जिसमें हो; कॊळ्कैयार्–ऐसे संकल्प वाले। ३६६

वे उत्कृष्ट धर्म के मार्ग में खुद रहते हुए, धर्म की गति को शोधकर उसकी संस्थापना में दत्तचित्त रहनेवाले हैं। वे तुम्हारे बल का कोई महत्त्व न देते। यहो संकल्प रखनेवाले है कि हम विजयशील भालों के धारी राक्षसों का उन्मूलन करके मिटा देंगे। ३६६

❀ मण्णि नोक्करु वानिनिन् मट्रिनिल्
एण्णि नोक्कुट्रिल् यावरु नेर्हिलाप्
पॅण्णि नोक्कुडै याळोरु पेदैयॅन्
कण्णि नोक्कि युरैप्परुङ् गाट्चियाळ् 367

मण्णिल्–धरती पर; नोक्कु अरु—दर्शन-दुर्लभ; वानितिल्–आकाश में; मट्रितिल्–अन्य लोकों में; ऍण्णि–सोचकर; नोक्कुट्रिल्–देखने पर; यावरुम् नेर्किला–कोई उसकी समानता न कर सके, ऐसी; पॅण्णिन् नोक्कु उटैयाळ्—स्त्री-सौंदर्य वाली; ऍन् कण्णिन् नोक्कि–अपनी आँखों से देखकर; उरैप्पु अरुम्–अवर्णनीय; काट्चियाळ्—आकार-प्रकार वाली। ३६७

और भी, उनके साथ एक स्त्री है। स्वर्ग, भूलोक, पाताल आदि कहीं भी ढूँढ़ो, उसकी समानता करनेवाली कोई नहीं मिलेगी। बड़ी सुन्दरी स्त्री है। उसका आकर्षण इतना अधिक है कि मैं अपनी आँखों से देखा उसके मनोहारी रूप का वर्णन करूँ, इतनी क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है। ३६७

❀ कण्डु नोक्कुरुङ् गारिहै याडनैक्, कॉण्डु पोवॅ निलङ्गैयर् कोक्कॅना
विण्डु मेलॅळुन् देनै वॅहुण्डवर्, तुण्ड माक्कितर् मूक्कॅनच् चॉल्लिनाळ् 368

नोक्कु उरुम् कारिकैयाळ् तनै–सुन्दरी उस स्त्री को; कण्टु–देखकर; इलङ्कैयर् कोक्कु–लंकेश्वर के लिए; कॉण्टु पोवॅन् ऍना–ले जाऊँगी कहकर; विण्टु–शत्रुता दिखाकर; मेल् ऍळुन्तेनै–उस पर लपकनेवाली मुझे; अवर्–उन दोनों ने; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; मूक्कु तुण्टम् आक्कितर्–नाक के टुकड़े कर लिये; ऍन–ऐसा; चॉल्लिनाळ्–शूर्पणखा ने कहा। ३६८

मैंने उस अनुपम सुन्दरी को देखा तो सोचा कि उसको लंकेश के लिए ले जाऊँ। इसी विचार से मैं उसकी ओर लपकी। तब उन दोनों मनुष्यों ने मेरी नाक काट दी। —शूर्पणखा ने घटना का अपनी रीति से वर्णन किया। ३६८

❀ केट्ट ननुरै कण्डनन् कण्णिनाल्, तोट्ट नुङ्गिर् ट्रॉळैयुरु मूक्किनैक्
काट्टॅ नावॅळुन् दानॅदिर् कण्डनर्, नाट्टन् दीय वुलहै नडुक्कुवान् 369

ऍतिर् कण्टवर् नाट्टम्–सामने से देखनेवालों की दृष्टि को; तीय–जलाते हुए; उलकै नटुक्कुवान्–लोक को कम्पित करनेवाले खर ने; उरै केट्टनन्–शूर्पणखा का कथन सुना; तोट्ट नुङ्किल्–कोए निकालने के बाद ताल-फल जैसे हो जाता है, वैसे; तॉळै उरु—गड्ढों सहित; मूक्किनै–नाक को; कण्णिनाल्–अपनी आँखों से; कण्टनन्–देखा; काट्टु–उनको दिखाओ; ऍना–कहते हुए; ऍळुन्तान्–उठा। ३६९

खर ऐसा भयंकर और उग्र राक्षस था कि उसको सामने से देखनेवाले की आँखें जलकर भस्म हो जातीं और लोक काँप उठते। उसने शूर्पणखा के मुख को गौर से देखा, जो कोए से हीन ताल-फल के

समान लगता था। देखकर उसने तैश में आकर कहा कि दिखाओ उन्हें। यह कहते हुए वह उठा। ३६९

❀ ॲऴुन्दु निन्ऱुल हॅऴु मॅरिन्दुहप्, पॊऴिन्द्र कोवक् कनलितिऱ् पॊङ्गुवान्
कऴिन्दु पोयितर् मानिड रॅन्नुङ्गाल्, अऴिन्द दोविव् वरुम्बऴि ॲन्ऱुमाल् 370

ॲऴुन्तु निन्ऱु–उठकर खड़ा होकर; उलकु एऴुम् ॲरिन्तु उक–सातों लोकों को भस्म होकर चूने देते हुए; पॊऴिन्त–बढ़नेवाली; कोप कनलितिल्–कोपाग्नि में; पॊङ्कुवान्–जो भड़क उठा, उसने; मानिटर् कऴिन्तु पोयितर्–(ये) मनुष्य मिट चले; ॲन्ऱुम् काल्–ऐसी स्थिति में भी; इ अरुम् पऴि–यह कठोर अपयश; अऴिन्ततो–मिटेगा क्या; ॲन्ऱुम्–कहा। ३७०

उठकर खड़ा हुआ वह खर ऐसी कोपाग्नि के साथ भड़क उठा, जो सातों लोकों को जला दे और भस्म करके छितरा दे। उसे इतना क्षोभ हुआ कि उसके मुख से प्रश्न उठा। अगर मैं उन मानवों को मार भी दूं और वे मिट जायँ तो भी यह अपयश दूर हो सकेगा क्या ? । ३७०

❀ वरुह तेरॅन्नु मात्तिरै माडुळोर्, इरुहै माल्वरै येऴिन्नो डेळनार्
ऒरुहै यालुल हेन्दु मुरत्तिन्नार्, तरुह विप्पणि यॅम्वयिऱ् ड्रान्नॅन्ड्रार् 371

तेर् वरुक–रथ आ जायँ; ॲनुम् मात्तिरै–ऐसा (आज्ञा) सुनाते ही तत्क्षण; माट्टु उळोर्–पास रहनेवाले; इरु कै माल्वरै–दो-दो हाथों के साथ बड़े-बड़े पर्वत; एऴितोटु एऴु अनार्–सात और सात (चौदह) के समान जो थे; ऒरु कैयाल्–अपने एक हाथ से; उलकु एन्तुम्–भूलोक को उठाने की; उरत्तितार्–शक्ति रखनेवाले; इ पणि–यह काम; ॲम् वयिन् तान् तरुक–हमारे पास छोड़ दें; ॲन्ड्रार्–बोले। ३७१

फिर उसने आज्ञा दी कि रथ आ जाय। तब उसके पास चौदह सेनापति थे। वे ऐसे पर्वतों के समान थे जिनके दो-दो हाथ हों। वे अपने एक हाथ पर ही धरणी को उठा सकनेवाले थे। उन्होंने प्रार्थना की कि यह काम हमें सौंप दें। ३७१

❀ चूलम् वाण्मऴुत् तोमरञ् जक्करम्, काल पाशङ् गदैपॊरुङ् गैयिनार्
वेलै ञालम् वॅरुवुऱ मार्प्पिनार्, आल कालन् दिरण्डन्न वाक्कैयार् 372

चूलम् वाळ्–शूल और तलवार; मऴु तोमरम्–परशु और तोमर; चक्करम् कालपाचम्–चक्र, कालपाश; कतै–गदा; पॊरुम् कैयितार्–इनको लेकर लड़नेवाले हाथों के; वेलै ञालम्–समुद्रवलयित भूतल को; वॅरुवु उऱम् आर्प्पितार्–डराते हुए शोर मचानेवाले; आल कालम् तिरण्टु अन्न–हलाहल रूप ले आया हो ऐसा; आक्कैयार्–शरीर वाले। ३७२

(वाल्मीकी में इनके नाम दिये गये हैं।) वे शूल, तलवार, परशु, तोमर, कालपाश और गदा इनका उपयोग कर लड़ सकते थे। जब वे

उच्च स्वर उठाते तब समुद्र और उसके मध्य रहनेवाली भूमि थर्रा उठती थीं। उनके शरीर हलाहल के पिण्डों के समान थे। ३७२

ॐ वॅम्बु वेलैक् कनलन्न वॅम्मैयार्, नम्बि नम्मडि मैत्तौळि नन्ऱॅना
उम्बर् मेलु मुरुत्तनै पोदियो, इम्बर् मेलिनि यामुळॆ मॆॅन्ऱार् 373

वॅम्पु वेलै–गरम और समुद्र से निकली; कनल् अन्न–(वड़वा) आग के समान (वे); वॅम्मैयार्–क्रोधशील; नम्पि–नायक; नम् अटिमै तॊळिल्–हमारी सेवकाई भी; नन्ऱु ॲना–अच्छी रही, कहके; उम्पर् मेलुम्–देवों पर; उरुत्तनै–गुस्सा कर; पोतियो–जा रहे हो क्या; इम्पर् मेल्–इस लोकवासी पर (आक्रमण करने); इनि याम् उळमे–अब हम तो हैं; ॲन्ऱार्–बोले। ३७३

अत्यन्त गरम बड़वाग्नि के समान क्रोध से भरे उन्होंने खर को देखकर कहा कि नायक ! हमारी सेवकाई भी कितनी खूब है (कि हमारे रहते आप लड़ने चलें) ! और भी क्या वे देव हैं कि आप क्रोध के साथ लड़ने जायँ ? वे धरती के मानव हैं और हम इधर प्रस्तुत हैं। ३७३

ॐ नन्ऱु शॅल्लुदिर् नानिच् चिऱार्कण्मेल्
शॅन्ऱु पोर्शॅयिऩ् ऱेवर् शिरिप्पराल्
कॊन्ऱु शोरि कुडित्तवर् कॊळ्हैयै
वॅन्ऱु मीळुदिर् मॅल्लिय लोडॅन्ऱान् 374

नन्ऱु–ठीक है; चॅल्लुतिर्–चलो; नान्–मैं; इ चिऱार्कळ् मेल्–इन लड़कों पर; चॆन्ऱु पोर् चॆयिन्–जाकर युद्ध करूँ तो; तेवर् चिरिप्पर्–सुर लोग हँसेंगे; कॊन्ऱु–मारकर; चोरि कुटित्तु–रक्त पीकर; अवर् कॊळ्कैयै–उनका संकल्प; वॆन्ऱु–वथा करके (उन्हें जीतकर); मॆल्लियलोटु–कोमल नारी को साथ ले; मीळुतिर्–लौट आओ; ॲन्ऱान्–कहा। ३७४

खर ने भी उसे ठीक माना। उसने कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम ही जाओ। मैं इन मानव-बालकों के विरुद्ध लड़ने जाऊँ तो देव मेरी हँसी उड़ायेंगे। तुम जाओ उन्हें मारो, उनका खून पिओ और उनका संकल्प हरा दो। फिर उस कोमल नारी को साथ लेकर लौट आओ। ३७४

ॐ ॲन्न लोडुम् विरुम्बि यिऱैञ्जिनार्, शॊन्न नाणिलि यन्दहन् रूदॅन
अन्नळ् पिन्पडर् वारॅन वायिनार्, मन्नन् कादलर् वैहिड नण्णिनार् 375

ॲन्नलोटुम्–उसके यों कहते ही; विरुम्पि–खुश होकर; इऱैञ्चितार्–विनय करके; चॊन्न–जिसने उनके सम्बन्ध में कहा था, उस; नाण् इलि–निर्लज्ज (शूर्पणखा) को; अन्तकन् तूतु ॲन–यम का दूत मानकर; अन्नळ् पिन् पटर्वार् ॲन–उसके पीछे जानेवाले; आयितार्–वनकर वे; मन्नन् कातलर्–(दशरथ-) राज के पुत्र; वैकु इटम्–जहाँ रहे, वह स्थान; नण्णितार्–पहुँचे। ३७५

यह अनुमति पाकर वे हर्षित हुए। खर को नमस्कार करके

निकले। यम के भेजे दूत के समान वह निर्लज्ज शूर्पणखा आगे-आगे गयी और ये उसका अनुकरण करते गये। वे दाशरथि जहाँ रहे वहाँ आये। ३७५

❀ तुमिलप्	पोर्वल्	लरक्कर्क्कुच्	चुट्टिये
अमलत्	तॊल्पॆय	रायिरत्	ताळियान्
निमलप्	पाद	निनैवि	लिरुन्दवक्
कमलक्	कण्णनैक्	कैयिनिऱ्	काट्टिनाळ् 376

अमलम् तॊल्–निर्मल और प्राचीन; पॆयर् आयिरत्तु–सहस्रनाम-धारी; आळियान्–चक्रपाणी के; निमल पात निनैविल् इरुन्त–पवित्र चरण-स्मरण में रहे; अ कमल कण्णनै–उन कमलाक्ष को; तुमिलम् पोर् वल्–तुमुल युद्ध करने में समर्थ; अरक्कर्क्कु–राक्षसों को; कैयिनिल् चुट्टिये–हाथ के इशारे से; काट्टिनाळ्–दिखाया (शूर्पणखा ने)। ३७६

वे प्राचीन और सहस्र नामों से भूषित चक्रपाणी श्रीविष्णु के निर्मल पवित्र चरणों का स्मरण करके ध्यानमग्न थे। शूर्पणखा ने अपने हाथ से उन कमलाक्ष को उन तुमुल युद्ध-निपुण राक्षसों को दिखाया। ३७६

❀ ऍऱ्ऱु वाम्बिडित् तॆन्दुदु मॆन्नुगुनर्, पऱ्ऱु वानॆडुम् बाशत्ति नॆन्नुगुनर्
मुऱ्ऱु वामिऱै शॊन्मुऱै यालॆन्नाच्, चुऱ्ऱि नार्वरै शूळ्न्दन्न तोऱ्ऱत्तार् 377

ऍऱ्ऱुवाम्–उसको ढकेलकर उछालेंगे; पिटित्तु एन्तुतुम्–पकड़कर धारण करेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; नॆटुम् पाचत्तिन्–लम्बे पाश से; पऱ्ऱुवाम्–कस लेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; इऱै चॊल् मुऱैयाल्–हमारे राजा के कहे प्रकार; मुऱ्ऱुवाम्–कार्य पूरा करेंगे; ऍन्ना–कहते हुए; वरै चूळ्न्तन्न तोऱ्ऱत्तार्–पहाड़ घेर आये हों, ऐसे दृश्य वाले; चुऱ्ऱिनार्–घेर गये। ३७७

उनको देखते ही कुछ ने कहा कि हम उसे उछालेंगे और हाथों में पकड़ लेंगे। कुछ ने कहा कि लम्बे पाश से उसे बाँध देंगे। और कुछ ने कहा कि हम अपने राजा का आशय पूरा करेंगे। ऐसी-ऐसी बातें शोर के साथ कहते हुए पर्वतों के समान जो रहे वे उन्हें घेर गये। ३७७

❀ एत्तु वाय्मै यिराम निळवलैक्, कात्ति तैयलै यॆन्ऱुतन् कऱ्पहम्
पूत्त दन्न पॊरुवि ऱडक्कैयाल्, आत्त नाणि नरुवरै वाङ्गिनान् 378

एत्तु वाय्मै इरामन्–प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने; इळवलै–अपने अनुज से; तैयलै कात्ति–देवी की रक्षा करो; ऍन्ऱु–कहकर; कऱ्पकम् पूत्तत्तु अन्न–कल्पतरु पुष्पित हो, ऐसे; तन् पॊरुवु इल् तट कैयाल्–अपने उपमाहीन विशाल हाथ से; आत्त नाणिन्–चढ़ी हुई प्रत्यंचा के साथ; अरु वरै–श्रेष्ठ पर्वत-सम धनुष को; वाङ्कितान्–ले लिया। ३७८

(श्रीराम ने देखा।) प्रशंसित सत्यसंध श्रीराम ने अपने कनिष्ठ से

कहा कि लक्ष्मण ! तुम सीताजी की रक्षा करो। उन्होंने अपने पुष्पित कल्पतरु के समान विशाल हाथ में प्रत्यंचा-चढ़े और पर्वतसम धनुष को ले लिया। ३७८

❀ वाङ्गि वाळीडु वाळिपॅय् पुट्टिलुम्, ताङ्गित् तामरैक् कण्णनच् चालैयै
नीङ्गि यिव्वयि नेर्मि नडावॅन्ना, वीङ्गु तोळन् मलैदलै मेयिनान् 379

तामरै कण्णन्–कमलाक्ष; वाळ् ऑटु–तलवार के साथ; वाळि पॅय् पुट्टिलुम्–शरों के साथ तूणीर भी; वाङ्कि–लेकर; अ चालैयै नीङ्कि–उस पर्णशाला के बाहर आकर; इ वयिन् नेर्मिन् अटा–इस ओर आकर लड़ो रे; ॲन्ना–ललकारते हुए; वीङ्कु तोळन्–(युद्धोत्साह में) विवृद्ध कन्धों वाले (श्रीराम); मलैतलै मेयिनान्–युद्ध में प्रवृत्त हुए। ३७९

कमलाक्ष ने तलवार और शर-भरे तूणीर भी लिया। आश्रम से बाहर आये और उन्होंने ललकारा कि रे आओ इधर ! लड़ो। युद्धोत्साह के कारण उनके कंधे फूल उठे। वे युद्ध में प्रवृत्त हो गये। ३७९

मळुवुम् वाळुम् वयङ्गॅरि मुच्चिहैक्
कळुवुङ् गालवॅन् दीयन्न काट्चियार्
ॲळुवि नीडक् कैयॅळु नान्गैयुन्
दळुवुम् वाळिह ळाट्रलज् जारत्तिनान् 380

काल वॅम् ती अन्न–युगान्तकालीन भयंकर आग के समान; काट्चियार्–दृश्यमान; मळुवुम्–परशु; वाळुम्–और तलवारें; वयङ्कु ॲरि–जलती आग के समान; मु चिकै कळुवुम्–त्रि (सिर) शूल, इनके साथ; ॲळुविन् नीळ्–स्तम्भ-सम लम्बे; तट–और विशाल; कै ॲळु नान्कैयुम्–(सात के चार) अट्ठाईस हाथों को; तळुवुम् वाळिकळाल्–निशाने पर अचूक लगनेवाले शरों से; तलम् चार्त्तिनान्–काटकर भूमि पर गिराया। ३८०

श्रीराम ने उनके स्तम्भ-सम लम्बे और मोटे अट्ठाईस हाथों को अपने अचूक बाणों से विद्ध कर गिराया। युगान्तकालीन अग्नि के समान क्रोधी उन राक्षसों के हाथों में परशु, तलवारें, अग्नि के समान उज्ज्वल त्रिशूल आदि थे। उनके साथ वे हाथ कट कर गिर गये। ३८०

❀ मरङ्गळ् पोॅन्नॅडु वाळीडु तोळ्विळ, उरङ्ग ळालडर्त् तारुर वोन्विडुम्
शरङ्ग ळोडिन्न तैत्त वरक्करदम्, शिरङ्ग ळोडिन तीयव ळोडिन्नाळ् 381

नॅट्टु वाळोटु–लम्बी तलवारों के साथ; तोळ्–हाथ; मरङ्कळ् पोल्–पेड़ों के समान; विळ–गिरे, तब; उरङ्कळाल् अटर्त्तार्–छातियों से टकराये; उरवोन् विटुम् चरङ्कळ्–बलवान श्रीराम से प्रेषित शर; ओटिन् तैत्त–चलकर घुसे; अरक्कर् तम् चिरङ्कळ्–राक्षसों के सिर; ओटिन–कट कर दौड़े (दूर गये); तीयवळ् ओटिनाळ्–दुराचारिणी भागी। ३८१

लम्बी तलवारों (व अन्य हथियारों) के साथ हाथों के अलग हो पेड़ों के समान गिरने के बाद भी वे सेनानायक लड़ने लगे। अपनी छाती से उन्होंने प्रहार किया। तब प्रबल प्रतापी श्रीराम ने तेजी से शर प्रेषित किये, जिन्होंने जाकर उनके सिरों को धड़ों से अलग कर दिया। शूर्पणखा ने देखा और वह नृशंस राक्षसी वहाँ से भाग चली। ३८१

ॐ ऑळिरु वेऱ्करऱ् कुऱ्ऱ् ऱुणर्त्तिनाळ्, कुळिरु कोबवॅङ् गोळरि मावडक्
कळिरॅ लाम्बडक् कैदलै मेलुऱप्, पिळिऱि योडुम् बिडियनॅ पॅऱ्ऱियाळ् 382

कुळिरु–गरजनेवाले; कोप वॅम् कोळ् अरि मा–क्रोधी, भयंकर सिंह के; अट–प्रहार करने से; कळिरु ॲलाम् पट–सभी गज मर गये और; कै तलै मेल् उऱ–हाथ सिर पर रखते हुए; पिळिऱि ओटुम्–चिघाड़ती भागनेवाली; पिटि अन्न–हथिनी के समान; पॅऱ्ऱियाळ्–स्थिति वाली ने; ऑळिरु वेल्–चमकीले भाले के; करऱ्कु–खर को; उऱ्ऱतु उणर्त्तिनाळ्–जो हुआ वह सुनाया। ३८२

वह उस हथिनी के समान सिर पर हाथ रखे भागी, जो गरजनेवाले क्रोधी भयंकर सिंह के युद्ध में प्रहार से सभी गजों के मर जाने पर अपने सिर पर सूँड़ रखकर चिघाड़ती हुई भाग रही हो। जाज्वल्यमान भाला-धारी खर के पास जाकर उसने समाचार सुनाया। ३८२

ॐ अङ्ग रक्क रविनॅदॊळिन् दारॅनप्, पॊङ्ग रत्तम् विळिवळिप् पोनॅदुह
वॅङ्ग रप्पॅय रोनॅवॅहुण् डानॅविडैच्, चङ्ग रऱ्कुन् दडुप्परुन् दन्मैयान् 383

विटै चङ्करऱ्कुम्–ऋषभवाहन शंकर से भी; तटुप्पु अरुम् तन्मैयान्–जो रोका नहीं जा सकता, वैसा; वॅम् कर पॅयरोन्–क्रूर खर नाम का राक्षस; अङ्कु अरक्कर् अविन्तु ऑळिन्तार् ॲन–वहाँ राक्षस मर मिटे; ॲन–यह सुनकर; पॊङ्कु अरत्तम्–उफन उठनेवाला रक्त; विळि वळि–आँखों द्वारा; पोन्तु उक–निकलने देते हुए; वॅकुण्टान्–क्रुद्ध हुआ। ३८३

खर नामक वह राक्षस ऐसा दुर्द्धर्ष था कि ऋषभवाहन शंकर से भी हराया न जा सके। उसने जब सुना कि राक्षस वहाँ हत हो मिट गये, तो उसे बड़ा क्रोध हुआ। उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसकी आँखें ऐसी लगीं, मानो रक्त खौल उठा हो और वह आँखों से बाहर निकल रहा हो। ३८३

ॐ अळैयॅन् ऱेरॅनक् काक्कुहॅन् पोर्प्पडै, उळैय रोडि यॊरुनॊडि युम्बल्मेल्
मळैयित् मामुर शॅऱ्रुदिर् वल्लॅनॅ्ऱान्, मुळैयित् वाळरि यन्ज मुळङ्गुवान् 384

मुळैयिन् वाळ् अरि–गुफा में रहनेवाले सिंह को भी; अन्च मुळङ्कुवान्–भयभीत करते हुए दहाड़नेवाले खर ने; ॲन् तेर् अळै–मेरे रथ को बुलाओ; ॲन् पोर् पटै–मेरी युद्ध-सन्नद्ध सेना को; ॲनक्कु आक्कुक–मेरे साथ करो; वल्–सत्वर; उळैयर्–सेवक; ओटि–भाग जाकर; ऑरु कोटि उम्पल् मेल्–उत्तम पताका से अलंकृत गज

पर; मऴैयिऩ्–मेघ के समान; मा मुरचु–बड़ा ढोल; ऍऱ्ऱुतिर्–पिटवा दें; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ३८४

ख़र भीषण स्वर वाला था। उसका नाद सुनकर गुफा के अन्दर सुरक्षित रहनेवाले सिंह भी सिहर उठते थे। उसने आज्ञा निकाली कि मेरा रथ बुला लो। मेरी सेनाओं को मेरे साथ कर दो। जल्दी सेवक जायँ और ध्वजासहित गज पर ढोल रखकर यह मुनादी पिटवा दें। वह ठनक मेघ के गर्जन के समान उच्च हो। ३८४

❀ पेरि योशै पिऱत्तलुम् बॅट्पुरु, मारि मेहम् वरम्बिल वन्दॅन्ऩ
तेरिऩ् शेऩै तिरण्डदु तेवर्दम्, ऊरु नाह रुलहु मुलैयवे 385

पेरि ओचै पिऱत्तलुम्–भेरी-नाद के उठते ही; पॅट्पु उरु–विपुल; मारि मेकम्–वर्षाकालीन मेघ; वरम्पु इल–असीम; वन्त ऍऩ्ऩ–आये हों ऐसा; तेवर् तम् ऊरुम्–देवों का लोक; नाकर् उलकुम्–नागों का (पाताल) लोक; उलैय–अस्तव्यस्त करते हुए; तेरिऩ् चेऩै–रथों की सेना; तिरण्टतु–जुट आई। ३८५

भेरी का नाद हुआ कि गुरुत्वपूर्ण वर्षाकालीन मेघों के समान अगणित रथ आ गये। उनकी भीड़ और उनके शब्द के कारण आकाश और पाताल अस्तव्यस्त हो गये। ३८५

❀ पोर्प्पॅ रुम्बणै बॊम्मॆॅन् मुऴक्कमा
नीर्त्त रङ्ग नॅडुन्दडन् दोळ्हळा
आर्त्तॅ ऴुन्द दिरुदियि ऩार्हलिक्
कार्क्क रुङ्गडल् काल्हिळर्न् दॅऩ्ऩवे 386

इऱुतियिऩ्–कल्पान्त में; आर् कलि–सघोष; कार् करुम् कटल्–अति विशाल काला सागर; काल् किळर्न्तु ऍऩ्ऩ–पवनोद्वेलित हुआ हो, ऐसा; पोर् पॅरुम् पणै–युद्धसूचक बड़े ढोलों का नाद; पॊम् ऍऩ् मुऴक्कमा–'भों' का उच्च नाद हुआ; नॅटुम् तटम् तोळ्कळ्–दीर्घ और विशाल भुजाएँ; नीर् तरङ्कमा–जल-तरंगें हुईं; आर्त्तु ऍऴुन्ततु–(रथ-सेना) कोलाहल के साथ उठी। ३८६

वह सेना युगान्तकाल में पवनाद्वेलित हो उमड़नेवाले सघोष समुद्र के समान तुमुल नाद के साथ उठ आयी। युद्धसूचक ढोल ही उस समुद्र का गर्जन था। वीरों की सबल और लम्बी भुजाएँ उसकी तरंगें थीं। ३८६

❀ काडु तुऩ्ऱि विशुम्बु करन्दॅन्ऩ, नीडि यॅङ्गु निमिर्न्द नॅडुङ्गॊडि
ऒडु मॆॅङ्गळ् पशियॆन् ऱुवन्दॅऴुन्, दाडु हिऩ्ऱ वलहैयि ऩाडवे 387

काटु तुऩ्ऱि–सब वनों ने मिलकर; विचुम्पु–करन्तॅऩ्ऩ–आकाश को ढक दिया हो, ऐसा; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; नीटि–फैलकर; निमिर्न्त–ऊँची उठी; नॅटुम् कॊटि–लम्बी ध्वजाएँ; ऍङ्कळ् पचि ओटुम्–हमारी भूख मिट जायगी; ऍऩ्ऱु–मानकर; उवन्तु ऍऴुन्तु आटुकिऩ्ऱ–हर्ष के साथ उठकर नाचनेवाले; अलकैयिऩ्–प्रेतों के समान; आट–फहरती हैं, ऐसी स्थिति में। ३८७

रथ की ध्वजाएँ इतनी विपुल थीं कि वनों ने मिलकर आकाश को ढक दिया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित होता था। वे ध्वजाएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते हुए फहरीं कि 'हमारी भूख मिट गयी' —यह कहते हुए प्रेत नाच रहे हों। ३८७

❀ तऱियि नीङ्गिय ताऴ्दडक् कैत्तुणैक्
कुऱिहॊ ळामद वेऴक् कुऴुवनार्
शॆऱिविऩ् वाऴॊडु वाऴिडैत् तेय्न्दुहुम्
पॊरियिऱ् कार्तॆङ्गुम् वॆङ्गऩल् पॊङ्गवे 388

तऱियिऩ् नीङ्किय–खूँटों से अलग हुए; कुऱि कॊळा–किसी की परवाह न करनेवाले; ताऴ् तट कै तुणै–नीचे तक लटकनेवाली बड़ी दो सूँड़ों वाले; मत वेऴ कुऴु अऩार्–मत्तगजों के झुण्ड के समान राक्षसों की; चॆऱिविऩ्–भरी भीड़ से; इटै–बीच में; वाळॊटु वाळ् तेय्न्तु–तलवारों के टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; पॊऱियिल्–अग्निकणों से; काऩ् ऍङ्कुम्–वन में सर्वत्र; वॆम् कऩल् पॊङ्क–जलानेवाली आग के उमड़ते। ३८८

(सेनाओं का वर्णन जारी है।) खूँटों से अलग छूटे हुए और बेपरवाह और नीचे लटकनेवाली दो मोटी सूँड़ों के मत्त गजदल के समान राक्षसों की भीड़ में तलवारें परस्पर टकरायीं। तब अग्निकण नीचे गिरे। उनके कारण जंगल भर में गरम आग प्रज्वलित हुई। (ऐसी सेना)। ३८८

मुरुडि रण्डु मुऴङ्गु मुऴक्कॊलि, उरुडि रण्डॆऴुन् देरॊलि युट्पुह
अरुडि रण्ड वरुक्कऩ्ऱऩ् मेलऴऩ्, ऱिरुडि रण्डुवन् दीण्डिय वॆऩ्ऩवे 389

इरण्टु–दोनों बाजुओं में; मुरुटु मुऴक्कु–'मुरुडु' नामक ढोल की; मुऴक्कु ऒलि–ठनक का शब्द; उरुळ् तिरण्टु ऍऴुम्–चलनेवाले पहियों से उठनेवाले; तेर् ऒलियिऩुळ्–रथ के शब्दों से; पुक–मिल गया, इस प्रकार; अरुळ् तिरण्ट–घनीभूत कृपा के समान; अरुक्कऩ् तऩ् मेल्–सूर्य पर; अऴऩ्ऱु–कोप करके; इरुळ्–अन्धकार; तिरण्टु वन्तु–मिल आकर; ईण्टियतु ऍऩ्ऩ–धावा बोल रहा हो ऐसा। ३८९

दोनों बाजुओं में 'मुरुडु' नाम के ढोलों का नाद उठा और वह चलने वाले अनेक रथों के पहियों से उठे हुए नाद में समा गया। सभी जीवों पर होनेवाली दया घनीभूत हो उठी हो, ऐसा दिखनेवाले सूर्य पर सारे अन्धकार ने मानो दल बाँधकर आक्रमण किया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करती हुई (वह सेना आई)। ३८९

❀ तलैयिऩ् माशुणन् दाङ्गिय तारणि, निलैनि लादु मुदुहै नॆळिप्पुऱ
उलैवि लेऴुल हत्तिऩु मोङ्गिय, मलैयॆ लामॊरु माडुतॊक् कॆऩ्ऩवे 390

माचणम् तलैयिल् ताङ्किय–शेषनाग के सिर पर धृत; तारणि–धरणी के;

निलै निलातु–अस्थिर होकर; मुतुकै नॆळिप्पु उऱ–अपनी पीठ पर बल खाते; एऴ् उलकत्तिनुम्–सातों लोकों में; ओङ्किय मलै ऎलाम्–ऊँचे उगे पर्वत सभी; ऒरु माट्ु–एक ही स्थान पर; तॊक्कतु अन्न–एकत्रित हो आये हों, ऐसा। ३८०

आदिशेष के द्वारा उसके सिर पर धारण की हुई भूमि की पीठ पर बल पड़ गयी; ऐसा सातों लोकों के अति ऊँचे सभी पहाड़ एक स्थान पर जुट आये हों (ऐसा वह सेना आई)। ३९०

आळिहळ् पूण्डन्न वरिहळ् पूण्डन्न, मीळिहळ् पूण्डन वेङ्गै पूण्डन्न
ञाळिहळ् पूण्डन नरिहळ् पूण्डन, कूळिहळ् पूण्डन कुदिरै पूण्डन 391

आळिकळ् पूण्टन–'याळियों' (अप्राप्य भयंकर सिंहों) से युक्त; अरिकळ् पूण्टन–सिंहों के साथ जुते हुए; मीळिकळ् पूण्टन–प्रेतों से युक्त; वेङ्कै पूण्टन–बाघों से युक्त; ञाळिकळ् पूण्टन–कुत्तों से जुते हुए; नरिकळ् पूण्टन–सियारों से युक्त; कूळिकळ् पूण्टन–भूतों से युक्त; कुतिरै पूण्टन–घोड़ों से युक्त (रथ आये)। ३८१

रथों में शरभों ('याळि' नामक अब अप्राप्य केसरी जाति के भयंकर जानवरों) से युक्त, सिंहों से जुते हुए, प्रेतों, भूतों, व्याघ्रों, कुत्तों, सियारों और अश्वों से जुते हुए रथ थे। ३९१

वल्लियक् कुळाङ्गळो मळैयि नीट्टमो
ऑल्लिबत् तॊहुदियो वोङ्गु मोङ्गलो
अल्लमऱ् ऱरिहळि ननिह मोवॆन्नप्
पल्पदि नायिरम् पडैक्कै वीररे 392

वल्लिय कुळाङ्कळो–बाघों के दल या; मळैयिन् ईट्टमो–मेघ-समूह या; ऒल् इप तॊकुतियो–तेज चाल के गजों के झुण्ड या; ओङ्कुम् ओङ्कलो–ऊँचे पर्वत; अल्ल–जो नहीं थे; अरिकळिन् अनिकमो–सिंहों की सेना क्या; ऎन्न–ऐसे कहने योग्य; पल् पतिनायिरम्–अनेक दस सहस्र; पटै कै वीरर्–शस्त्रधारी वीर (आये)। ३८२

अनेक सहस्र वीर आये, जिनकी व्याघ्रों का समूह, मेघमण्डल, त्वरित-गति गज, ऊँचे पर्वत या सिंहों की सेनाओं से तुलना की जा सकती थी। वे हाथों में हथियार लिये आये। ३९२

एऱ्ऱिन मार्त्तन वेन्न मार्त्तन, काऱ्ऱिन मार्त्तन कळुदै यार्त्तन
तोऱ्ऱिन मात्तिरत् तुलहु शूळ्वरुम्, पाऱ्ऱिन मार्त्तन पणिल मार्त्तन 393

एऱ्ऱु इनम् आर्त्तन–सिंहों के 'लेंहड़े' (झुण्ड) गरजे; एनम् आर्त्तन–सुअर चिल्लाये; काऱ्ऱु इनम् आर्त्तन–प्रेतों के दलों ने शोर मचाया; कळुतै आर्त्तन–गधे रेंके; तोऱ्ऱिन मात्तिरत्तु–(भाव) उठते ही; उलकु चूळ् वरुम्–संसार भर में घूम आनेवाले; पाऱु इनम्–गीधों के समूह; आर्त्तन–बोले; पणिलम् आर्त्तन–शंख बजे। ३८३

उनमें सिंह गरजे, सुअर चीखे; प्रेत चिल्लाए और गधे रेंके। विचार

करते ही सारी दुनिया घूम आ सकनेवाले गीध जोर से बोले। शंख बजे। (आर्त्तन का अर्थ 'बँधे थे' भी है)। ३९३

तेरिऩ्ऩ् दुवन्ऱिऩ शिऱुहट् चॆम्मुहक्, कारिऩ नॆरुङ्गिऩ कालिऱ् काऱ्परित्
तारिनङ् गुळुविन दडैयिल् कूऱ्ऱॆनप्, पेरिऩङ् गडलॆनप् पॆयरुङ् गालैये 394

पेर् इऩम्–पदाति ने; तटैयिल् कूऱ्ऱु ॲेत–दुर्द्धर्ष यम के समान; कटल् ॲेत–समुद्र के समान; पॆयरुम् कालै–जब कूच किया; तेर् इऩम् तुवऩ्ऱिऩ–रथदल मिल आये; चिऱु कण्–छोटी आँखों और; चॆम् मुक–लाल मुख के; कार् इऩम्–गज-समूह; नॆरुङ्किऩ–आ जुटे; कालिल्–वायु के समान; काल् परि–पैर रखनेवाले (दौड़नेवाले) अश्वों की; तार् इऩम्–सेना के दल; कुळुविऩ–भीड़ लगाते आये। ३९४

पदाति वीर आये। वे अप्रतिहत यम के समान, सघोष समुद्र के समान कूच कर आये। तब उनके साथ रथों, छोटी आँखों के और लाल मुखों के गजों और वायुवेग से चलनेवाले अश्वों की सेनाएँ भी आ सम्मिलित हुई। ३९४

मऴुक्कळु मयिल्हळुम् वयिर वाट्कळुम्
ॲेऴुक्कळुन् दोमरत् तॊहैयु मीट्टियुम्
मुऴुक्कलु मुशुण्डियुन् दण्डु मत्तलैक्
कऴुक्कळु मुलक्कैयुङ् गाल पाशमुम् 395

मऴुक्कळुम्–परशु; अयिल्कळुम्–भाले; वयिर वाट्कळुम्–सुदृढ़ तलवारें; ॲेऴुक्कळुम्–लोहे के मूसल; तोमर तॊकैयुम्–तोमर-समूह; ईट्टियुम्–बर्छियाँ; मुऴुक्कलुम्–वर्तुल पत्थर; मुचुण्टियुम्–'भुशुंडी' नाम के हथियार; तण्टुम्–दण्ड; मु तलै ॲेऴुक्कळुम्–तीन सिर वाले शूल; उलक्कैयुम्–और मुद्गर; काल पाचमुम्–काल-पाश। ३९५

उनके पास निम्नलिखित हथियार थे। परशु, भाले, सुदृढ़ असियाँ, लोहे के मूसल, तोमर-समूह, वर्तुल पत्थर, भुशुण्डी नामक हथियार, दण्डायुध, त्रिशूल व काले पाश; । ३९५

कुन्दमुङ् गुलिशमुङ् कोलुम् पालमुम्
अन्दमिल् शाबमुम् शरमु माऴियुम्
वॆन्दॊऴिल् वलयमुम् विळङ्गुज् जङ्गमाम्
पन्दमुम् कप्पणप् पडैयुम् पल्लमुम् 396

कुन्तमुम्–साँग; कुलिचमुम्–कुलिश; कोलुम्–छड़ियाँ; पालमुम्–भिंडिपाल; अन्तम् इल् चापमुम्–बेशुमार चाप; चरमुम्–शर; आऴियुम्–चक्र; वॆम् तॊऴिल् वलयमुम्–भयंकर वलय; विळङ्कु चङ्कमाम्–श्वेत शंखों की; पन्तमुम्–राशियाँ; कप्पण पटैयुम्–'कप्पण' नामक हथियार; पल्लमुम्–बल्लम। ३९६

कुंत, कुलिश, छड़ियाँ, भिण्डिपाल, असंख्यक चाप, शर, चक्र, भयंकर वलय, श्वेत शंखबंद, कप्पण नामक हथियार और बल्लम। ३९६

आदियि लरुक्कनु मनलु मञ्जुरुम्, शोदिय शोरियुन् तूवुन् दुन्नित्त
एदिहण् मिडैन्दन विमैय वर्क्कॅलाम्, वेदनै कॉडुत्तन वाहै वेय्न्दन 397

एतिकळ्–हथियार; आति इल् अरुक्कनुम्–अनादि सूर्य; अनलुम्–अग्नि भी; अञ्चु उरुम्–(जिसको देख) भयभीत हो जायँ, ऐसी; चोतिय–ज्योति वाले; चोरियुम् तूवुम्–रक्त और मांस से; तुन्नित्त–लिप्त थे; इमैयवर्क्कु ॲलाम्–सभी देवों को; वेतनै कॉट्टुत्तन–जिन्होंने वेदना दी थी, ऐसे; वाकै वेय्न्तन–अनेक विजय पा चुके हैं, वे; मिटैन्तन–भरे रहे। ३९७

ये ऐसे हथियार थे, जिनकी ज्योति के सामने अनादि सूर्य और अनल भी डरते थे; जो मांस और रक्त से लिप्त थे; जिन्होंने देवों को त्रास दिया था और जो हर बार उन राक्षसों को विजय दिला चुके थे। ३९७

आयिर मायिरङ् गळिऱ्ऱि नाऱ्ऱलर्, मायिरु ञालत्तै विळुङ्गुम् वायिनर्
तीयॅरि विळियिनर् निरुदर् शेनैयिन्, नायहर् पदिन्मरो डडुत्त नाल्वरे 398

निरुतर् चेनैयिन् नायकर्–राक्षस-सेना के नायक; पतिन्मरोटु अटुत्त नाल्वर्–दस और चार चौदह; आयिरम् आयिरम् कळिऱ्ऱिन्–सहस्र (अनेक) सहस्र गजों के; आऱ्ऱलर्–बल वाले; मा इरु ञालत्तै–बहुत बड़े लोक को; विळुङ्कुम् वायिनर्–निगल सकनेवाले मुखों के; ती ॲरि विळियिनर्–आग उगलती दृष्टि वाले। ३९८

इन सेनाओं के चौदह सेनानायक थे। वे एक-एक सहस्र-सहस्र गजों का बल रखते थे। वे एक-एक सारी धरती को निगल सकें, ऐसा बड़ा मुख रखते थे। उनकी आँखें आग बरसाती थीं। ३९८

आऱ्ऱिनो डायिर ममैन्द वायिरम्, कूऱ्ऱिन दोरुपडै कुऱित्त वप्पडै
एऱ्ऱिन देळिन दिरट्टि यॅन्बराल्, ऊऱ्ऱिन शेनैयिन् ड्रॉहुदि युन्नुवार् 399

ऊऱ्ऱ चेनैयिन् तॉकुति–युद्ध-निपुण सेना की संख्या का; उन्नुवार्–हिसाब लगानेवालों का; कूऱ्ऱितु–कहना है; ऑरु पटै–एक पलटन; आऱ्ऱितोटु आयिरम् अमैन्त–छः हजार के; आयिरम्–हजार (छः लाख); कुऱित्त अ पटै–जिसकी गणना हुई, उस पूरी सेना की संख्या; एळितु इरट्टि–चौदह (पलटनों का कुल); ॲन्पर–कहते हैं। ३९९

उस सेना में चौदह सेनाएँ मिली थीं। किसी ने गिनकर बताया कि हर सेना में साठ लाख संख्या के वीर थे। ऐसी चौदह सेनाओं का मेल था वह बड़ी सेना। ३९९

उरत्तिन रुरुमॅन वुरऱ्रुम् वायिनर्
करत्तॅरि पडैयिनर् कमलत् तोन्ऱरुम्
वरत्तिनर् मलैयॅन मळैतु यिन्ऱॅळुम्
शिरत्तिनर् तरुक्किनर् शॅरुक्कुज् जिन्दैयार् 400

उरत्तिनर्–वीर्यवान; उरुम् ॲन उररुम् वायिनर्–वज्र के समान नाद करनेवाली

वोली के; करत्तु ॲरि पटैयित्तर्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियार-धारी; कमलत्तोन तरुम् वरत्तित्तर्–ब्रह्माजी से प्राप्त वर वाले; मलै ॲॅन–पर्वत समझकर; मऴै तुयिन्ऱु ॲॅऴुम्–मेघ जिन पर सोकर उठ जाते हैं, वैसे; चिरत्तित्तर्–सिर वाले; तरुक्किनर्–गर्वीले; चॅरुक्कुम् चिन्तैयार्–युद्धोत्साही मन वाले। ४००

उस सेना के वीर बड़े ही वली थे। वज्र के समान वोली वाले थे। हाथों से हथियार चलाकर लड़नेवाले थे। उन्हें ब्रह्माजी से वर मिले थे। उनके सिर ऐसे थे कि मेघ भी उन्हें पर्वत समझकर उन पर आकर ठहरते, सोते और उनसे उठकर चले जाते। बड़े गर्वीले थे और शत्रुओं को मिटाने का अभिमान व उत्साह रखते थे। ४००

विण्णळ विडनिमिर्न्‌ दुयर्न्‌द मेऩियर्
कण्णळ विडलरु मार्बर् कालिनाल्
मण्णळ विडुनॅडु वलत्तर् वाऩिडै
ॲॅण्णळ विडलरुञ् जॅरुवॅन्‌ ऱेऱिनार् 401

विण् अळवु इट–आकाश को नापने के लिए; निमिर्न्तु उयर्न्त–सीधे और ऊँचे हुए; मेऩियर्–शरीर वाले; कण् अळव इटल् अरुम्–दृष्टि से नापना कठिन; मार्पर–ऐसे छाती वाले; कालिऩाल्–पैरों से; मण् अळवु इट–पृथ्वी को नाप सकनेवाली; नॅॅटुवलत्तर्–अधिक शक्ति वाले; वाऩ् इटै–आकाश में; ॲॅण् अळवु इट अरुम्–गिनना कठिन; चॅरु वॅन्ऱु–उतने युद्ध में जीतकर; एऱिऩार्–बढ़े-चढ़े थे। ४०१

उनके शरीर इतने ऊँचे थे कि वे आकाश को नाप सकते थे। वे दृष्टि माप न सके ऐसे विशाल वक्ष वाले थे। उनके पैरों में इतना बल था कि भूमि को नाप सकते थे। गिनती असम्भव हो, उतनी लड़ाई में विजय पाकर वे बढ़े-चढ़े हो गये थे। ४०१

इन्दिरऩ् मुदलिऩो रॅऱिन्द माप्पडै, शिन्दिन तॅऱित्तुहच् चॅऱिन्द तोळिनार्
अन्दह ऩडितॊऴु दडङ्गु माणैयार्, वॅन्दिऱ लुरुवुहॊण् डऩैय मेऩियार् 402

इन्तिरऩ् मुतलिऩोर्–इन्द्रादि देव; ॲॅऱिन्त–जो फेंकते थे; मा पटै–उन श्रेष्ठ हथियारों को; तॅऱित्तु चिन्तिऩ उक–झेलकर तोड़कर छितरा दिया (जिन्होंने), ऐसे; चॅऱिन्त तोळिऩार्–कठोर कन्धों वाले; अन्तकऩ्–यम; अटितॊऴुतु अटङ्कुम्–चरण-वन्दना करके अधीन रहेगा; आणैयार्–ऐसे रोबीले; वॅम् तॊऴिल्–क्रूर काम ने ही; उरुवु कॊण्टऩैय–रूप धर लिया हो, ऐसे; मेऩियार्–शरीर वाले। ४०२

उनके सारयुक्त सबल कंधे ऐसे थे कि इन्द्रादि देवों द्वारा फेंके गये सशक्त हथियार उनसे लगकर टूट गये और बिखर गये। यम भी विनत होकर उनकी आज्ञा मानता था, ऐसे रोबीले थे। क्रूर कार्य ने ही एक रूप धर लिया हो, ऐसे रूप वाले थे। ४०२

चूलमुम्	पाशमुन्	दॊडर्न्द	शॆम्मयिर्च्
चालमुन्	दरुहणु	मॆयिरुन्	दाङ्गिनार्
आलमुम्	वॆळिदॆनु	निऱत्त	राऱ्ऱलाल्
कालनुङ्	गालनॆन्	ऱयिर्क्कुङ्	गाट्चियार् 403

चूलमुम् पाचमुम्–शूल और पाश; तॊटर्न्त–मिले रहे; चॆम् मयिर् चालमुम्–लाल बाल-जाल; तरुकणुम्–भयंकर आँखें; ऎयिऱुम्–और वक्र दाँत; ताङ्किनार्–धारण करनेवाले; आलमुम् वॆळितु ॲंतुम्–इसके सामने हलाहल श्वेत है, ऐसा; निऱत्तर्–रंग वाले; आऱ्ऱलाल्–शक्ति में; कालनुम्–यम भी; कालन् ऎन्ऱु–अपना काल समझे; अयिर्क्कुम् काट्चियार्–संशय और भय करेगा, ऐसे आकार वाले। ४०३

उनके पास शूल, पाश आदि हथियार थे। शरीर पर लाल बाल घने रूप से उगे थे। भयंकर आँखें थीं। उनका रंग इतना काला था कि हलाहल भी श्वेत लगता था। शक्ति में वे इतने बढ़े थे कि यम भी उन्हें अपने यम की शंका करता और भय मानता। ४०३

कऴलिनर् तारिनर् कवश मार्बिनर्, निऴलुरु पूणिनर् नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्
अऴलुरु कुञ्जिय रमरै वेट्टुवन्, दॆऴलुरु मनत्तिन रॊरुमै यॆय्दिनार् 404

कऴलिनर्–पायलधारी; तारिनर्–मालाधारी; कवच मार्पिनर्–कवचवक्ष; निऴल् उरु पूणिनर्–प्रभापूर्ण आभरणधारी; नॆरित्त नॆऱ्ऱियर्–कोप से कुंचित भाल वाले; अऴल् उरु कुञ्चियर्–अग्निशिखा के समान घने केश वाले; अमरै वेट्टु–युद्ध चाहकर; उवन्तु ऎऴल् उरु–चाव लिये उमँगनेवाले; मनत्तिनर्–मन के; ऒरुमै ऎय्तिनार्–आपस में मेल रखनेवाले। ४०४

उनके पैरों में वीर कंकण पड़े थे। छाती पर कवच थे। वे कान्तिपूर्ण आभरण पहने हुए थे। उनके भाल कोप-कुंचित थे। केश अग्निशिखा के समान लाल और डरावने थे। युद्ध करना चाहकर चाव के साथ उमंगित होनेवाले मन के वे परस्पर मेल रखते थे। ४०४

मरुप्पिऱा	मदक्कळिऱ्	ऱमरर्	मन्ननुम्
विरुप्पुऱा	मुहत्तॆदिर्	विऴिक्किन्	वॆन्निडुम्
उरुप्पॆऱा	दुलैवुरु	मुलह	मून्ऱिनुम्
शॆरुप्पॆऱात्	तिनवुरु	शिहरत्	तोळिनार् 405

इऱा मरुप्पु–अटूट (सबल) दाँतों के; मत कळिऱ्ऱु–मत्तगज (ऐरावत) पर सवार; अमरर् मन्ननुम्–देवेन्द्र भी; मुकत्तु ऎतिर्–इनके मुख के सामने; विऴिक्किन्–आँख खोल देखेगा तो; विरुप्पु उऱा–सामने रहना न चाहकर; वॆन् इटुम्–पीठ दिखाते हुए भाग जायगा; उरु पॆऱातु–अस्थिर और; उलैवुरुम्–चंचल; उलकम् मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; चॆरु पॆऱा–युद्ध प्राप्त न करके; तिनवु उरु–खुजली से भरे; चिकर तोळिनार्–पर्वतशिखर-सम कन्धों वाले। ४०५

वे राक्षस ऐसे (वीर) थे कि देवेन्द्र भी, जो अक्षुण्ण, सबल दाँतों वाले ऐरावत गज का स्वामी है, उनको सामने से देखे तो ठहरना न चाहकर पीठ दिखाते हुए भाग जाय ! नश्वर तीनों (स्वर्ग, मध्य और पाताल) लोकों में उन्हें युद्ध का अवसर नही मिला था अत: पर्वतशिखर-सम उनके कंधों में खुजली (युद्ध की प्यास) हो गयी थी। ४०५

कुञ्जरङ् गुदिरैपेय् कुरङ्गु कोळरि
वॅम्जिन्नक् करडिनाय् वेङ्गै याळियॅन्
ऱञ्जुऱक् कन्नलबुरै मुहत्त राऱ्हलि
नञ्जुदोक् कॅन्नप्पुरै नयनत् ताऱ्हळुम् 406

कुञ्चरम् कुतिरै–कुंजर, अश्व; पेय्–प्रेत; कुरङ्कु–वानर; कोळ् अरि–सबल सिंह; वॅम् चित्तम् करटि–भयंकर क्रुद्ध रीछ; नाय्–कुत्ता; वेङ्कै–व्याघ्र; याळि–'याळि' (शरभ) नामक जानवर; अॅन्नुरु–समझकर; अञ्चु उरु–भय खाए ऐसा; कन्नल् पुरै मुकत्तर्–अनल-सम मुख वाले; आर्कलि नञ्चु–सघोष सागर से (मंथन के समय) उत्पन्न विष; तोक्कॅन्न पुरै–घनीभूत हुआ हो ऐसे; नयनत्तार्कळुम्–नेत्र वाले थे। ४०६

किसी का मुख कुंजर के समान था, किसी का अश्व के समान। प्रेत, वानर, बली सिंह, भयंकर और क्रुद्ध रीछ, कुत्ता, व्याघ्र और शरभ के समान लगनेवाले उनके डरावने मुख अनल-सदृश थे। समुद्र से (क्षीरसागर-मन्थन के अवसर पर) उत्पन्न हलाहल के समान उनकी आँखें थीं। ४०६

ऍण्गैय रॅळुहैय रेळु मॅट्टुमायक्
कण्गनल् शॊरिदरु मुहत्तर् कालिनर्
वण्गैयिल् वळैत्तुयिर् वारि वायिलिट्
टुण्गैयि नुवहैय रुलप्पि लाऱ्हळुम् 407

ऍण् कैयर्–आठ हाथ वाले; ऍळु कैयर्–सात हाथ वाले; एळुम् ॲट्टुम् आय्–सात-सात और आठ-आठ; कण्–आँखें; कन्नल् चॊरि तरु–अंगार उगलती थीं (जिनमें); मुकत्तर्–ऐसे मुख वाले; कालितर–वैसे ही पैरों वाले; उयिर्–जीवों को; वण् कैयिल्–सबल हाथों से; वळैत्तु वारि–समेट लेकर; वायिल् इट्टु–मुख में डालकर; उण्कैयिल्–खाने में; उवकैयर्–आनन्द पानेवाले; उलप्पु इलार्कळुम्–असंख्यक लोग। ४०७

किसी के आठ हाथ थे, किसी के सात। वैसे ही सात-सात, आठ-आठ आँखों के द्वारा उनके मुख आग वरसा रहे थे। वैसे ही उनके पैर सात-सात या आठ-आठ थे। उनको जीवों को अपने सबल हाथों से समेट ले अपने मुख में डालकर खाने में बड़ा आनन्द आता था। वे अगणित थे। ४०७

इयक्करिऱ्	पऱित्तन	ववुण	रिट्टन
मयक्कुऱुत्	तमररै	वलियिऩ्	वाङ्गिन
तुयक्किल्हन्	दिरुवरैत्	तुरन्दु	वारिन
नयप्पुरु	शित्तरै	नलिन्दु	वव्वित्र 408

इयक्करिल् पऱित्तत्त–यक्षों से छीन लिये गये; अवुणर् इट्टन–दानवों से (भागते वक्त) नीचे डाले हुए; अमररै–सुरों को; मयक्कुऱुत्तु–माया से मोहित करके; वलियिन् वाङ्कित्त–अपने बल से लिये गये; तुयक्कु इल्–अथक; कन्तिरुवरै–गन्धर्वों को; तुरन्तु वारिन–(डरा-धमकाकर उनको) भगाकर उनसे लिये गये; नयप्पु उरु चित्तरै–सुलह करनेवाले सिद्धों से; नलिन्तु वव्वित्र–दुख देकर उगाह लिये गये (झण्डे आदि)। ४०८

उनके पास झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने यक्षों के पास से छीन लिया था; दानवों ने युद्धभूमि में छोड़ दिया था; देवों को भ्रमित करके ले लिया था; अथक गन्धर्वों को भगाकर उनसे ग्रस लिया था। वे भी झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने सन्धि करने को उत्सुक सिद्धों को सताकर छीन लिया था। ४०८

कॊडिदळै	कविहैवात्	ट्टोङ्गल्	कुञ्जरम्
पडियुरु	पदाहैमी	विदानम्	बन्मणि
इडैमिळिर्	शामरैक्	कुळाङ्गॊण्	डॆङ्गणुम्
मिडैदलि	नुलहॆलाम्	वॆयिलि	ळन्दवे 409

कॊटि—वस्त्र-झण्डे; तळै–मोरछल; कविकै–छत्र; वात् तोङ्कल्–बड़े हार; कुञ्चम् मेल् पटि उरु–झालरों से युक्त; पताकै–बड़ी पताकाएँ; मी वितानम्–उच्च वितान; पल् मणि इटै मिळिर्–अनेक रत्न बीच-बीच में चमकते हैं, ऐसे; चामरै कुळाम्–चँवर-समूह; कॊण्टु–इनको लेकर; ऎङ्कणुम् मिटैतलिल्–सब जगह भीड़ लगाते रहे, इसलिए; उलकु ऎलाम्–सारी धरती; वॆयिल् इऴन्त–धूप से वंचित हो गई। ४०९

उस विपुल सेना के पास झण्डे थे, मोरछल थे और छत्र थे। बड़े-बड़े हार, झालरों सहित बड़ी-बड़ी पताकाएँ, वितान और ऐसे चामरों की राशियाँ जो रत्नों से सजे थे। ये सब लिये हुए वह सेना भूमि पर सर्वत्र फैली रही। इसलिए भूतल धूप से वंचित रह गया। ४०९

ऎऴुवरो	डॆऴुवर्नी	ऴुलह	मेऴॊडेऴ्
तऴुविय	वॆन्ऱियर्	तलैवर्	तानैयर्
मऴुविनर्	वाळिनर्	वयङ्गु	शूलत्तार्
उऴुवैयो	डरियॆन	वुडऱ्ऱुऩ्	जीऱ्ऱत्तार् 410

तानैयिन् तलैवर्–सेनानायक; ऎऴुवरोटु ऎऴुवर्–सात और सात (चौदह); नीऴ् उलकम्–विस्तृत लोक; एऴॊटु एऴ्–सात और सात; तऴुविय–(इनमें) व्याप्त;

वॆन्ऱियर्–विजय के स्वामी; मऴुविऩर्–परशु; वाळित्तर्–तलवार; वयङ्कु चूलत्तर्–और उज्ज्वल शूलधारी; उऴुवैयॊटु अरि अॆऩ्ऩ–व्याघ्र और केसरी के समान; उटऱ्ऱुम्–दुखानेवाले; चीऱ्ऱत्तर्–क्रोधी। ४१०

सेनानायक चौदह थे। उनकी विजय चौदहों भुवनों पर व्याप्त थी। उनके पास परशु तलवारें और चमकदार शूल आदि हथियार थे। वे व्याघ्र और सिंहों के समान लोगो को अपार दुख देनेवाले क्रोधशील राक्षस थे। ४१०

विल्लिनर् वाळिऩ रिदऴै मेलिडुम्
पल्लिनर् मेरुवैप् पऱिक्कु माऱ्ऱलर्
पुल्लिऩर् तिशैदॊऱुम् पुरवित् तेरिनर्
शॊल्लिऩ मुडिक्कुऱुन् दुणिवि नॆञ्जिनार् 411

विल्लित्तर्–धनुर्धर; वाळिनर्–तलवारधारी; इतऴै मेलिटुम् पल्लिनर्–अधरों पर टिके दाँत वाले; मेरुवै पऱिक्कुम् आऱ्ऱलर्–मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले; पुरवि तेरित्तर्–अश्व-जुते रथ वाले; चॊल्लिऩ् मुटिक्कुऱुम्–कहे हुए कार्य को पूरा करने का; तुणिविऩ् नॆञ्चिऩार्–साहस रखनेवाले मन के; तिचै तॊऱुम्–सभी दिशाओं में; पुल्लित्तर्–आ जुटे। ४११

वे सेनानायक धनुष और तलवारों से लैस थे। उनके दाँत अधरों को काट रहे थे। मेरु को भी उखाड़ सकनेवाले वे अश्व-जुते रथों पर सवार थे। जो कहते वही कर दिखाने का साहस रखते थे। वे सभी दिशाओं में घेरकर खड़े रहे। ४११

तूडणन् ऱिरिशिरात् तोऩ्ऱ लादियर्
कोडणै मुरशिऩङ् गुळिऱुञ् जेनैयर्
आडव रुयिर्हव रलङ्गल् वेलिनार्
पाडव निलैयिऩर् पलरुञ् जुऱ्ऱिनार् 412

आटवर् उयिर् कवर्–(सामने लड़नेवाले) वीरों की जान हर लेनेवाली; अलङ्कल् वेलिनार्–माला से अलंकृत बर्छी वाले; पाटव निलैयित्तर्–पटु स्थिति में रहनेवाले; कोटणै मुरचु इऩम्–गम्भीर नादयुक्त ढोलों के समूह; कुळिऱुम्–जिसमें ठनक उठते थे, ऐसी; चेत्तैयर–सेना वाले; तूटणऩ् तिरिचिरा तोऩ्ऱल् आतियर्–दूषण, त्रिशिरा आदि नायकों को पुरस्सर करते हुए; पलरुम्–अनेक सेनानी; चुऱ्ऱित्तार्–आ जुटे। ४१२

उनके पास माला से अलंकृत भाले थे, जो सामने आये शत्रुओं के प्राण हर लेते थे। वे दक्षता में बढ़ी-चढ़ी स्थिति में थे। उनके पास बड़ी सेनाएँ थीं, जिनमे ढोलो की उच्च ठनक सुनाई देती थी। दूषण, त्रिशिरा आदि अधिपतियों को पुरस्सर करके वे आ एकत्र हुए। ४१२

आऩ्ऱमै यॅऱिपडै यळुवत् तारहलि, वाऩ्ऱोंडर् मेरुवै वळैत्त दामॅऩ
ऊऩ्ऱिन तेरिऩ ऩुयर्न्द तोळिनऩ्, तोऩ्ऱिऩऩ् करऩ्नमऩ् ऱुणुक्क मॅय्दवे 413

आऩ्ऱ अमै—खूब मिली रही; ॲऱि पटै—शत्रुघातक सेनाएँ रूपी; अळुवत्तु आर् कलि—गम्भीर सघोष सागर; वाऩ् तोंटर् मेरुवै—गगनस्पर्शी मेरु को घेर आया हो, ऐसा; ऊऩ्ऱिय तेरिऩऩ्—मध्य में स्थापित रथ वाला; उयर्न्त तोळिऩऩ्—उन्नत भुजाओं वाला; करऩ्—खर; नमऩ् तुणुक्कम् ॲय्त—यम को आतंकित करते हुए; तोऩ्ऱिऩऩ्—प्रकट हुआ (दिखाई दिया)। ४१३

वे सेनाएँ, जो बड़ी थीं और वीरों से भरी थी, गम्भीर समुद्रों के समान थीं। उनके मध्य खर का रथ स्थापित था। यह दृश्य ऐसा लगा, मानो समुद्र ने मेरु को घेर लिया हो! वह रथ आकाश तक ऊँचा था और मेरु के समान था। उसमें बैठे हुए उन्नत कंधों वाला खर, यम को भी भयभीत करते हुए दिखाई दिया। ४१३

अशुम्बुरु मदहरि पुरवि याडहत्, तशुम्बुरु शयन्दऩ मरक्कर् ताडर
विशुम्बुरु तूळियाल् वॅण्मै मेयिऩ, पशुम्बरि पहलवन् बॆम्बॊर् ऱेररो 414

अचुम्पु उऱु—मद बहानेवाले; मत करि—मत्तगज; पुरवि—अश्व; आटक तचुम्पु उऱु—स्वर्णकलशों वाले; चयन्तनम्—स्यंदन; अरक्कर् ताळ्—पदाति राक्षस वीरों के; ताळ्—अपने पैरों से; तर—उठनेवाली; विचुम्पु उऱु तूळियाल्—व आकाश पर जमी धूलि से; पकलवऩ्—दिनकर के; पचुम् करि—हरे घोड़े; पॆम् पॊऩ् तेर्—व चोखे स्वर्ण का रथ; वॆण्मै मेयिऩ—धवलता से ढक गये। ४१४

मद बहानेवाले मत्तगज, अश्व, स्वर्णकलशों वाले रथ, पदाति के राक्षस वीर —इन सबके पदाघात से धूलि जो उड़ी, उससे दिनकर के हरे घोड़ों और स्वर्णरथ पर भी धवलता छा गयी। यानी वे श्वेत दिखे। ४१४

वऩऩ्दुहळ् पट्टऩ मलैयिऩ् वाऩुयर्, कऩऩ्दुहळ् पट्टऩ कडल्ह ळूर्न्दऩ
इऩऩ्दोंहु तूळिया लिशैप्प दॆन्ऩिलिच्, चिऩन्दोंहु नॆडुङ्गडर् चेऩै शॆल्लवे 415

चिऩम् तॊकु—उमड़ते क्रोध की; नॆटुम् कटल् चेऩै—विशाल सागर-सी सेना; चॆल्ल—जब (जनस्थान से पंचवटी की ओर) चली तब; इऩम् तॊकु तूळियाल्—विपुल राशि में उठी धूलि से; वऩम्—वे वन; तुकळ् पट्टऩ—सर्वत्र धूलि से ढक गये; वाऩ् उयर्—आकाश में ऊँचे उठे; मलैयिऩ् कऩम्—पर्वतों पर के घन; तुकळ् पट्टऩ—धूलि से भर गये; कटल्कळ्—समुद्र; तूर्न्तऩ—भरकर धरती बन गये; इऩि ॲऩ्ऩ इचैप्पतु—आगे क्या कहा जाय। ४१५

जब क्रोधोन्मत्त, विशाल सागर-सम सेना जनस्थान से पंचवटी जाने लगी, तब धूलि की राशि इतनी उठी कि वन सब धूलिधूसरित हो गये। आकाशस्पर्शी पर्वतों पर के मेघ ढक गये। समुद्र भी पटकर धरती बन गये। इससे बढ़कर क्या कहा जाय? । ४१५

निलमिशै विशुम्बिडै नॆरुक्क लानॆंडु
मलैमिशै मलैयिनम् वरुव पोन्मलैत्
तलैमिशैत् तलैमिशैत् ताविच् चॆन्ऱनर्
कॊलैमिशै नञ्जॆनक् कॊदिक्कु नॆञ्जिनार् 416

कॊलै मिचै–मारने के उत्साह में; नञ्चु ॲन–विष के समान; कॊतिक्कुम् नॆञ्चिनार्–खौलते मन वाले; निलमिचै–भूमि पर; विचुम्पु इटै–आकाश पर; नॆरुक्कलाल्–स्थानाभाव हो जाने से; नॆंटु मलै मिचै–बड़े पर्वतों पर; मलै इतम् वरुव पोल्–पर्वत-समूह आ रहा हो, ऐसा; मलै तलै मिचै तलै मिचै–पर्वत-शिखर से शिखर पर; तावि चॆन्ऱनर्–लपकते चले। ४१६

युद्ध में शत्रुसंहार करने के उत्साह के साथ, खौलता विष-सम मन लेकर जो वीर जा रहे थे, उनको पर्वतों के शिखरों पर चलनेवाले अन्य पर्वतों के समान शिखर से शिखर उछलकर जाना पड़ता था; क्योंकि सारी भूमि वीरों से भर गयी थी। ४१६

❀ वन्ददु शेनै वॆळ्ळम् वळ्ळियोन् मरुङ्गिन् माया
बन्दमा विनैयम् माळप् पट्रऱु पॆट्रि योर्क्कुम्
उन्दरु निलैय दाहि युडनुडॆन् दुयिर्ह डम्मै
अन्दहर् कळिक्कु नोय्पो लरक्किमुन् नाह वम्मा 417

माया–अनंत; पन्त मा विनैयम्–बन्धन जो कर्म हैं, उनके; माळ–मिटने पर; पट्रु अऱु–राग-हीन; पॆट्रियोर्क्कुम्–श्रेष्ठ ज्ञानियों के लिए भी; उन्तु अरु निलैयतु आकि–अप्रतिहत बन; उटन् उडॆन्तु–शरीर के साथ रहकर; उयिर्कळ् तम्मै–जीवों को; अन्तकर्कु अळिक्कुम्–यम के हाथ सौंप देनेवाले; नोय् पोल्–रोग के समान; अरक्कि मुन्नाक–राक्षसी शूर्पणखा को आगे करके; वळ्ळियोन् मरुङ्किन्–उदार प्रभु के पास; चेनै वॆळ्ळम् वन्ततु–सेना-प्रवाह आया। ४१७

वह सेना-सागर प्रभु श्रीराम के सम्मुख आ गयी। उसको शूर्पणखा आगे रहकर ले आयी। वह उस रोग के समान थी, जो कर्मबन्धननाशक रागरहित ज्ञानियों के लिए भी अप्रतिहत बनकर शरीर के साथ रहता है और जीवों को यम के हाथ सौंप देता है। ४१७

तूरियक् कुरलिन् वानिन् मुहिट्कणन् दुणुक्कङ् गॊळ्ळ
वार्शिलै यॊलियि नञ्जि युरुमॊरु मरुक्कङ् गॊळ्ळ
आर्हलि तानु मुट्कि यशैवुर् वरक्कर् शेनै
पोरुवन् दिरुन्द वीर नुडॆविडम् बुक्क दन्ऱे 418

तूरिय कुरलिन्–बाजों के नाद से; वानिन् मुकिल् कणम्–आकाश के मेघ-समूहों को; तुणुक्कम् कॊळ्ळ–कँपाते हुए; वार् चिलै ऒलियिन्–लम्बे धनुष की टंकार की ध्वनियों से; अञ्चि–डरकर; उरुम्–वज्र भी; ऒरु मरुक्कम् कॊळ्ळ–व्यग्र हों,

ऐसा; आर् कलि तान्नुम्–गरजते सागर भी; उट्कि–भीतर से काँपकर; अचैवु उड़–उद्वेलित हों, ऐसे; अरक्कर् चेतै–राक्षस-सेना; पोर् उवन्तु इरुन्त–युद्ध की सानन्द प्रतीक्षा में जो रहे; वीरन्–श्रीरघुवीर के; उरैवु इटम्–रहने के स्थान को; पुक्कतु–जा पहुँचीं। ४१८

मारू वाजे बजे और आकाश के मेघसमूह वह सुनकर काँप उठे। दीर्घ धनुषों की टंकारें निकलीं तो वज्र भी उनसे डर गये और समुद्र भी भीतर से उद्वेलित होकर मथ गये। इस ठाट-वाट के साथ वे राक्षस-सेनाएँ उस पर्णशाला के पास आयीं, जिसमें रघुकुलवीर श्रीराम युद्ध की, आनन्द के साथ प्रतीक्षा करते हुए रह रहे थे। ४१८

वाय्वुलर्न् दळिन्द मॅय्यिन् वरुत्तत्त वळियिल् याण्डुम्
ऑय्विल निमिर्न्दु वीङ्गु मुयिर्प्पित्त वुलैन्द कण्ण
तीयवर् शेतै वन्दु शेर्न्दमै तॅरियच् चॅन्ड्रु
वेय्दॅरिन् दुरैप्प पोन्ड्र पुळ्ळॊडु विलङ्गु मम्मा 419

पुळ् ऑटु विलङ्कुम्–पक्षी और जानवर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखकर; अळिन्त–मिटे जो; मॅय्यिन् वरुत्तत्त–शरीर में रुग्ण हुए जो; वळियिल् याण्टुम् ओय्वु इल–मार्ग में कहीं विश्राम न लेकर; निमिर्न्तु वीङ्कुम् उयिर्प्पित्त–मुख ऊपर कर लम्बी साँसें छोड़नेवाले; उलैन्त कण्ण–प्रभाहीन आँख वाले; तीयवर् चेतै वन्तु चेर्न्तमै–खलों की सेना के आगमन का समाचार; तॅरिय चॅन्ड्र–पहले जानकर दौड़कर; वेय् तेरिन्तु उरैप्प पोन्ड्र–चर जाकर खबर देते हों जैसे (वने)। ४१९

इस विपुल सेना से आक्रांत होकर पक्षी और जानवर भागे। उनके मुख भय के मारे सूख गये। शरीर रुग्ण हो गये। बीच में वे कहीं विश्राम नहीं कर सके। मुख ऊपर उठाकर लम्बी साँसें छोड़ते हुए वे भागे और उनकी आँखें प्रभाहीन हो गयीं। वे चरों का काम करते हुए बुरे लोगों की सेना के आगमन की खबर सुनाने आये हों —ऐसे भागते आये। ४१९

तूळियिन् पडलै वन्दु तॊडर्वुड़ मरमुन् दूरुम्
ताळिडै यॊडियु मोशै शडशड वॊलिप्पक् कानत्
ताळियु मरियु मञ्जि यिरिदरु ममलै नोक्कि
मोळिमॊय्म् बित्तरुञ् जेतै मेल्वन्द डुळदॆन् रुन्ना 420

तूळियिन् पटलै–धूलि-पटल; वन्तु तॉटर्वु उड़–आकर जमे, इसलिए; मरमुम् तूरुम्–पेड़ और झाड़; ताळ् इटै–उनके पैरों के नीचे; ऑटियुम् ओचै–टूटते हैं, वह नाद; चटचट ऑलिप्प–तड़-तड़ शब्द उठाते हैं; कानत्तु–वन में; आळियुम् अरियुम्–शरभ और सिंह; अञ्चि–डरकर; इरि तरुम्–दूर भागते हैं; अमलै नोक्कि–वह शब्द सुनकर; मोळि मॉय्म्पित्तरुम्–सबल भुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण भी; चेतै मेल् वन्तु उळतु–सेना हम पर चढ़ आई है; ऍन्ड्र उन्ना–यह सोचकर। ४२०

धूलिपटल आकर तरुओं और झाड़ों पर जम गया। वे वीरों के पैरों के नीचे और मध्य पड़कर टूटे। उस तड़-तड़ शब्द से शरभ और सिह डरकर भागे। उनके हड़बड़ाकर भागने का शोर सुनकर सबल कंधे वाले वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) ने ताड़ लिया कि सेना हम पर चढ़ आयी है। (ऐसा सोचकर —)। ४२०

❀ मरम्बडर् कान मॅङ्गु मदर्वड वन्द शेनै
करन्वडै यॅन्ब दॅण्णिक् करुनिऱक् कमलक् कण्णन्
शरम्बडर् पुट्टिल् कट्टिच् चाबमुन् दरित्तान् ऱळ्ळा
उरम्बडर् तोळिन् मीळाक् कवशमिट् टुडैवा ळार्त्तान् 421

मरम् पटर् कानम् अॅङ्कुम्–तरुसंकुल वन में सर्वत्र; अतर् पट–मार्ग बनाते हुए; वन्त चेनै–जो सेना आई वह; करन् पटै अॅन्पतु–खर की सेना है, यह; करु निऱ–नीले वर्ण के; कमल कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम ने; अॅण्णि–निश्चय करके; चरम् पटर् पुट्टिल् कट्टि–शरबहुल तूणीर बाँधकर; चापमुम् तरित्तान्–धनुष भी उठा लिया; तळ्ळा उरम् पटर्–अटल वीरता से युक्त; तोळिन्–कन्धों पर; मीळा–अटूट; कवचम् इट्टु–कवच बाँधकर; उटैवाळ् आर्त्तान्–कटार बाँध ली। ४२१

कमलाक्ष और नीलवर्ण श्रीराम ने यह भी निश्चय कर लिया कि वन में सर्वत्र मार्ग बनाते हुए जो आयी है, वह विपुल सेना खर की है। उन्होंने युद्ध में जाने की तैयारी की। तूणीर, चाप, अक्षय सबल कंधों से कसा हुआ कवच और तलवार आदि को यथोचित रीति से यथास्थान धारण कर लिया। ४२१

मिन्निन्ऱ शिलैयन् वीरक् कवशत्तन् विशित्त वाळन्
पॉन्निन्ऱ वडिम्बिन् वाळिप् पुट्टिलन् पुहैयु नॅञ्जन्
इन्निन्ऱु काण्डि यान्शॅय् निलैयॅन्न विरुम्बि नेरा
मुन्निन्ऱ पिन्वन् दानै नोक्किनन् मॊळिय लुऱ्ऱान् 422

मिन् निन्ऱ चिलैयन्–बिजली ने धनु का रूप धर लिया हो, ऐसे धनुष के धारक; वीर कवचत्तन्–वीरोचित कवच से अलंकृत; विचित्त वाळन्–बँधी हुई तलवार वाले; पॊन् निन्ऱ वटिम्पिन्–स्वर्णमय कोरों के; वाळि पुट्टिलन्–तूणीर वाले; पुकैयुम् नॅञ्चन्–क्रोधाग्नि के धुएँ से भरा मन वाले (लक्ष्मण); विरुम्पि–(स्वयं जाना) चाहकर; यान् चॅय् निलै–मेरे (युद्ध) कार्य की स्थिति; इन् इन्ऱु काण्टि–आज अभी देखिए; अॅन्न–कहकर; मुन् नेरा निन्ऱ–जो अग्रस्थ हुए उन; पिन् वन्तानै–अनुज को; नोक्किनन्–देखकर; मॊळियल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४२२

तब लक्ष्मण उनके सामने आये। बिजली के अवतार-सा धनुष, वीरोचित (दृढ़) कवच, तलवार, स्वर्णमुख तूणीर आदि के साथ मन में धुआँ निकालनेवाली कोपाग्नि लेकर जो आये, उन्होंने श्रीराम से कहा कि आज मेरा युद्ध-सामर्थ्य देखिए। ऐसा कहते हुए अग्रस्थ अनुज से श्रीराम बोले। ४२२

कावादु नीयॉऴियिऱ् पऴिपॅरिदो वन्ऱेऱ्
करुङ्गडलिऱ् कण्वळर्न्दोय् कैम्माऱु मुण्डो 101

तेवा–देव; करुम् कटलिल्–(आपके रंग के कारण) काले (बने) या विशाल क्षीरसागर में; कण् वळर्न्तोय्–निद्रा करनेवाले; मेवातवर् इल्लै–आपके शत्रु नहीं है; मेवित्तरुम् इल्लै–मित्र भी नहीं हैं; वॅळियोटु इरुळ् इल्लै–प्रकाश के साथ अन्धकार भी नहीं है; मेल् कीऴुम् इल्लै–ऊपर, नीचे नहीं है; मूवामैयुम् इल्लै–उमर में कम होना भी नहीं; मूत्तमैयुम् इल्लै–बढ़ना भी नहीं; मुतल् इटै ओटु–आदि, मध्य के साथ; ईऱु इल्लै–अवसान भी नहीं; मुन् ऑटु पिन् इल्लै–पूर्व और पश्चात नहीं हैं; नित् तोन्ऱु निलै–आपके स्वरूप के लक्षण; इव्वो–ये हैं क्या; ऍन्ऱाल्–तो; नी चिलै एन्ति–आप धनुष लेकर; चेवटिकळ् नोव–लाल (मनोरम) पैरों को दुख देते हुए; वन्तु कावातु ऑऴियिल्–आकर रक्षा नहीं करेंगे तो; पऴि पॅरितो–बड़ा अपयश होगा क्या; अन्ऱेल्–या; कै माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार भी हो सकता है क्या। १०१

आप काल-देश-वस्तु-परिच्छेद रहित हैं। इसलिए आपके न शत्रु है, न मित्र है। देवाधिदेव! क्षीरसागरशायी! आपके लिए न प्रकाश है, न अँधेरा। ऊपर कुछ नहीं है, न आपके नीचे कुछ है (आप सर्वत्र व्याप्त हैं)। आपकी न जवानी होती है, न वार्द्धक्य होता है (आप कालातीत है)। आपका न आदि है, न मध्य, न अन्त। आपके पूर्व या बाद कुछ नहीं होता। आप सभी काल में वर्तमान है। आपके लक्षण ऐसे हैं न? फिर क्या आश्चर्य है कि आप धनुप लेकर अपने श्रीचरणों को दुखाते हुए हमारे रक्षणार्थ इधर आये हैं। ऐसा रक्षण नहीं करेंगे तो आपका अपयश हो जायगा क्या? या हम आपका कोई प्रत्युपकार करनेवाले हैं क्या? । १०१

नाऴि नवैती रुलहमॅला माह
नळित्तत्तु नीतन्द नान्मुहत्तार् तामे
ऊऴि पलपलवु नित्ऱळन्दा लॅन्ऱु
मुलवाप् पॅरुङ्गुणत्तॅ मुत्तमत्ते मेनाळ्
ताऴि तरैयाहत् तण्डयिर् नीराहत्
तडवरैये मत्ताहत् तामरैक्कै नोव
आऴि कडैन्दमुद मॅङ्गळुक्के यीन्दा
यवुणर्हडा मुत्तक्कडिमै यल्लामै युण्डो 102

नी–आपने; नळित्ततुतु तन्त–अपनी नाभी-कमल से जिनको सृष्ट किया; नान् मुकत्तार् तामे–वे चतुर्मुख; नवै तीर् उलकम् ऍलाम्–निर्दोष प्रपंच सब; नाऴि आक–माप बनाकर; ऊऴि पल पलवुम्–अनेक-अनेक युग; नित्ऱु अळन्ताल्–रहकर मापें तो भी; ऍन्ऱुम् उलवा पॅरुम् कुणत्तु–कभी पूरा न होनेवाले (अमाप) उत्तम गुणों के; ऍम् उत्तमत्ते–हमारे पुरुषश्रेष्ठ; मेल् नाळ्–प्राचीनकाल में; तरै ताऴि

आक–भूमि को मथनी (पात्र) बनाकर; नीर् तण् तयिर् आक–सागरजल को दही बनाकर; मतृतु तटवरैये आक–मथानी, बड़े मन्दरपर्वत को बनाकर; तामरै कै नोव–कमल-सम हाथों को दुखाते हुए; आळि कटैन्तु–समुद्र को मथकर; अमुतम्–अमृत को; ॲङ्कळुक्के ईन्ताय्–हमें ही दे दिया; अवुणर्कळ् ताम्–दानव तो; उन्नक्कु अटिमै अल्लामै उण्टो–आपके दास नहीं हैं, ऐसा क्या। १०२

आपके, अपनी नाभि से सृजित चतुर्मुख ब्रह्मा स्वयं, निर्दोष लोकों को माप बनाकर अनेक युगों तक आपके गुणों का माप लगाने लगें, तो भी आपके गुणों का माप नहीं मिल सकता। ऐसे अमाप कल्याण-गुणपूर्ण ! पुरुषोत्तम ! प्राचीन काल में सारी पृथ्वी को मथनी बनाकर क्षीरसागरपय को दही बनाकर और मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर अपने कमल-सम हाथों को दुखाते हुए मथन किया; पर सुधा निकला तो उसे हम देवों को दे दिया ! तब क्या दानव आपके दास नहीं हैं —यह बात है क्या ?। १०२

ऑन्ऱाहि मूलत् तुरुवम् बलवाहि
युणर्वा युयिराहिप् पिरिदाहि यूऴि
शॅन्ऱा शरुङ्गालैत् तन्निलैय दाहित्
तीर्न्दुलहन् दानाहिच् चॅव्वेता निन्ऱ
नन्ऱान ज्ञानत् तलिक्कॉऴुन्दे यॅङ्ग
णवैदीर्क्कु नायहन्ने नल्विन्नैये नोक्कि
निन्ऱारैक् कात्ति ययलारैक् काय्दि
निलैयिल्लात् तीविनैयु नीतन्द दन्ऱे 103

मूलत्तु ऑन्ऱु आकि–मूल में एक रहकर; उरुवम् पल आकि–अनेक रूप बनकर; उणर्वु आय्–ज्ञानगोचर बनकर; उयिर् आकि–प्राण बनकर; पिरितु आकि–इस तरह भिन्न-भिन्न होकर; ऊऴि चॅन्ऱु आचु उरुम् कालै–युगान्त में प्रपंच-नाश के समय; तन् निलैयतु आकि तीर्न्तु–अपनी पूर्व-स्थिति में आ (अपनी लीला) समाप्त करके; उलकम् तान् आकि–तब प्रपंच स्वयं आप होकर; चॅव्वे निन्ऱ–शोभित रहनेवाले; नन्ऱाय ज्ञान तनि कॉऴुन्ते–श्रेष्ठ ज्ञान के पल्लव (सार) समान; ॲङ्कळ् नवै तीर्क्कुम्–हमारे अपराधों को दूर करनेवाले; नायकन्ने–नाथ; नल् वित्तैये नोक्कि निन्ऱारै–अच्छे कर्म ही करते रहनेवाले साधुओं को; कात्ति–आप रक्षा करते हैं; अल्लारै–इतरों को; काय्ति–दण्ड देते हैं; निलै इल्ला तीवित्तैयुम्–अस्थायी बुरे कर्म भी; नी तन्तत्तु अन्ऱे–आपके ही बने हुए हैं न। १०३

मूल में एक रहकर फिर अनेक रूप में बदले। भिन्न-भिन्न सृष्टि में ज्ञान से अनुभव में आनेवाले तत्व रहे। उसके प्राण रहे। इस तरह अनेक जीवों में बँटे से रहने के बाद युगांत में फिर आपने उन सबको अपने में समेट लिया। तब प्रपंच सब आप ही हो गया। उस स्थिति में शोभायमान जो रहते है, वे ज्ञानसार ! हमारे अपराधों को मिटानेवाले नायक ! अच्छे कर्म करनेवाले साधुओं को रक्षित और इतरों को दण्डित

करनेवाले हैं आप। पर क्या अस्थायी पाप भी आपके ही कारण स्थिति नहीं पाते ? । १०३

वल्लै वरम्बिल्लाद मायविन्नै तन्नान्
मयङ्गिनर् हळोडे मदिमयङ्गि मेन्नाळ्
अल्लै यिइैयवन्नी यादियॅन्नप् पेदुऱ्
इलमरु वेमुन्नै यऱ्प्पयनुण् डाह
ॲल्लै वलयङ्गळ् नुम्मुळैयॅन् इन्ना
ळॆरियोतैत् तीण्डि यॅळुव रॆन्निन्ऱ
तॊल्लै मुदन्मुनिवर् शूळुऱ्ऱ पोदे
तॊहैनिन्ऱ वैयन् दुडैत्तिलैयो वॆन्दाय् 104

ॲन्ताय्–हमारे पिता; वल्लै–बलवती; वरम्पु इल्लात–असीम; माय विन्नै तन्ताल्–माया के कार्य से; मयङ्कितर्कळ् ओटु–भ्रमित रहे (देवों) के साथ; मति मयङ्कि–मोहमग्न होकर; मेल् नाळ्–प्राचीन समय में; इऱैवन् नी अल्लै–आप आदि भगवान नहीं हैं; आति ॲन्न–आदिदेव हैं, ऐसा; पेतुऱ्ऱु–संशय में पड़कर; अलमरुवेम्–संकट में रहे हमारे; मुन्तै अऱ पयन् उण्टाक–पूर्वकृत सुकर्म का फल सहायता करने आया; अन्नाळ्–उस दिन; ॲल्लै वलयङ्कळ्–सीमा पर स्थित सारे कुवलय; नुम् उळै ॲन्ऱु–आप ही पर स्थित हैं, ऐसा; ॲळुवर् ॲन निन्ऱ तॊल्लैमुतल् मुनिवर्–"सप्तक" के रूप में प्रख्यात सप्तर्षियों ने; ॲरियोतै तीण्टि–अग्नि को स्पर्श करके; चूळ् उऱ्ऱ पोते–शपथ कही; तॊकै निन्ऱ ऐयम्–तब घनीभूत रहा संशय; तुटैत्तिलैयो–आपने मिटाया नहीं क्या। १०४

धाता! पहले कुछ देवों ने बलवती और असीम माया के कार्य के वश में होकर आपके परत्व के सम्बन्ध में संशय किया। यह उनका भ्रम था। हम भी उनके साथ भ्रमित होकर आप परब्रह्म आदिदेव हैं, नहीं हैं, ऐसे संशय में पड़कर गड़बड़ा रहे थे। पर हमारा सुकृत था, जिसके फलस्वरूप (अत्रि, भृगु, कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, काश्यप, अंगीरस आदि) सप्तर्षियों ने अग्नि में हाथ रखकर शपथ खायी कि सारे कुवलय आपके ही शरीर पर धृत है। तब परब्रह्म कौन है, इस पर उठा घनीभूत सन्देह मिट गया। आप ही न ऐसी व्यवस्था करके हमारा सन्देह मिटाया! (वाल्मीकी में ये बातें पायी नही जातीं।) । १०४

इन्नन्न पलनिनैन् देत्तिन्न त्तियम्बात्
तुन्नुद लिडैयुळ दॆन्ननि तुणिवान्
तन्निहर् मुनिवन्नैत् तरविडै यॆन्नाप्
पॊन्नॊळिर् नॆडुमुडिप् पुरन्दरन् पोनान् 105

पॊन् ऒळिर् नॆटु मुटि पुरन्तरन्–स्वर्ण की चमकदार दीर्घकिरीटी पुरन्दर ने; इन्नन्न पल–ऐसी अनेक बातें; निनैन्तु–सोचकर; इयम्पा एत्तितन्–और कहकर

स्तुति की; इटै तुन्नुतल् उळतु–बीच में होनेवाली एक घटना है; ॲन–ऐसा; नत्ति तुणिवान्–खूब निश्चय करके; तन् निकर् मुनिवर्न–स्वोपम महर्षि को; विटै तर–बिदा दें; ॲन्ना–कहकर (ले); पोनान्–सिधारे। १०५

स्वर्ण के कारण जाज्वल्यमान दीर्घ किरीटधारी पुरन्दर ने ऐसी बहुत सी बातों का स्मरण करके उनकी स्तुति की। उन्होंने सोच लिया कि बीच में घटनेवाली एक विशेष घटना है। इसलिए उन्होंने शरभंग मुनि को, जो अपनी उपमा स्वयं आप ही थे, नमस्कार करके विदा ली और वे वहाँ से चले गये। १०५

पोनव नहनिलै पुलमयि नुणर्वान्, वानवर् तलैवनै वरवॅदिर् कॊण्डान्
आनव नडितॊळ वरुळ्वर मुनिवन्, तानुडै यिडवहै तळुविन नुळैवान् 106

पोनवन् अक निलै–वैसे निर्गत देवेन्द्र का मनोभाव; पुलमैयिन्–अपनी ज्ञान-दृष्टि से; उणर्वान्–समझकर ऋषि ने; वानवर् तलैवनै–देवदेव श्रीराम को; वरवु ॲतिर् कॊण्टान्–अपने सामने आते पाया; आनवन्–(आगत) श्रीराम ने; अटि तॊळ–नमस्कार किया; मुनिवन् अरुळ् वर–मुनि ने कृपापूर्ण होकर; तळुविनन्–आलिंगन कर लिया; तानुटै इट वकै–अपने वासस्थान (कुटीर) को; नुळैवान्–प्रवेश करके। १०६

महर्षि ने, वहाँ से जो गये, उन पुरन्दर का मनोभाव अपनी ज्ञानदृष्टि से जान लिया। तब देवाधिदेव श्रीराम उनके सामने पधारे। उन्होंने आकर महर्षि के चरणों में नमन किया। महर्षि उन्हें गले लगाकर अपने आश्रम में लिवा ले जाने लगे। १०६

एळैयु मिळवलुम् वरुहॆन विनिदा, वाळिय ववरॊडु वळ्ळलु महिळा
ऊळियिन् मुदन्मुनि युरैयुळै यणुह, आळियि लरितुयि लवनॆन महिळ्वान् 107

वळ्ळलुम्–श्रीराम ने; एळैयुम् इळवलुम् इनिता वरुक ॲन–देवी और छोटे भाई सुख से आवें, कहा, तब; अवरॊटु–उनके साथ; मकिळा–खुश होकर; ऊळियिन् मुतन् मुनि–युग के पूर्व से भी विद्यमान महर्षि के; उरैयुळै–कुटीर में; अणुक–श्रीराम आये तब; आळियिल् अरि तुयिल्–क्षीरसागर में योगनिद्रा में लीन रहनेवाले; अवन् ॲन–परब्रह्म, विष्णु भगवान है, समझकर; मकिळ्वान्–हर्षरत हुए। १०७

तब श्रीराम ने अपनी देवी सीताजी और छोटे भाई लक्ष्मण को अपने साथ आने की आज्ञा दी। युगारम्भ के पहले से ही रहनेवाले मुनिवर उन सबको लेकर अपने कुटीर में आये। वे श्रीराम को क्षीरसागरशायी विष्णु भगवान जानकर अत्यन्त हर्षित हुए। १०७

अव्वयि तळहनु वैहिन नरिजन्
शॅव्विय वरिवुरै शॅव्वियि नुहरा
नव्वियिन् विळियव ळॊडुननि यिरुळैक्
कव्विय निशियॊरु कडैयुरु मळविल् 108

अ वयिऩ्—उस आश्रम में; अऴकऩुम्—सुन्दरराज; नव्वियिऩ् विऴि अवळॊटु—मृगनयनी सीताजी के साथ; वैकिऩऩ्—ठहरे; अऱिञऩ्—ज्ञानी ऋषि के; चॆव्विय अऱिवु उरै—श्रेष्ठ उपदेशों को; चॆवि वयिऩ् नुकरा—कानों से सुनकर; इरुळै नऩि कव्विय—अन्धकार-ग्रस्त; निचि—निशा; ऒरु कटै उऱुम् अळविल्—अन्त होने को आई, तब । १०८

आश्रम में सुन्दरराज श्रीराम, मृगनयना सीतादेवी के साथ ठहरे। (लक्ष्मण शायद कुटीर के बाहर ही रह गये थे।) महान ज्ञानी शरभंग ने अनेक श्रेष्ठ उपदेश दिये। उपदेशों को ध्यान से श्रीराम ने सुना। यों रात बीती और अन्धकारग्रस्त रात एक तरह से अपने अन्तिम समय में आ गयी। तब— । १०८

विलहिडु	निळलिनऩ्	वॆयिल्विरि	यविल्वाळ्
इलहिडु	शुडरव	तिशैयन	तिशैदोय्
अलहिड	वरिदॆनु	मविरुहर	निरैयाल्
उलहिडु	निरैयिरु	ळुरैयिनै	युरिवाऩ् 109

विलकिट्टु निळलिनऩ्—फैलनेवाले प्रकाश के स्वामी; इलकिट्टु चुटरवऩ्—व्यक्त गर्मी वाले; इचै अऩ—अपनी कीर्ति के समान; तिचै तोय्—चारों दिशाओं में व्याप्त; अलकु इट अरितु ऎऩुम्—अगणित; वॆयिल् विरि—दीप्तियुत; अयिल् वाळ्—तीक्ष्ण तलवार-सम; अविर् कर निरैयाल्—शोभायमान किरण-हस्तों से; उलकु इटु—संसार पर आच्छादित; निरै इरुळ् उरैयिनै—घने अन्धकार रूपी चादर को; उरिवाऩ्—उधेड़ लेने लगे । १०९

व्यापनेवाले प्रकाश के और जाज्वल्यमान तेज के स्वामी सूर्य ने अपनी ही कीर्ति के समान चारों दिशाओं में व्याप्त तलवार-सम धूप की किरण-करों से भूमि पर आच्छादित अन्धकार रूपी चादर को उधेड़ दिया। (अन्धकार सूर्य-रश्मि के पड़ते ही हट गया।) । १०९

आयिडै यऱिञनु मवनॆदि रळुवत्, तीयिडै नुळैवदोर् तॆळिविनै युडैयाऩ्
नीविडै तरुहॆन निरुविन नॆऱियाल्, कायॆरि वरऩ्मुऱै कडिदिनि लिडुवान् 110

अ इटै—तब; अऱिञऩुम्—ज्ञानी; अवऩ् ऎतिर्—(श्रीराम) उनके सामने; अऴुवम् ती इटै—अधिक पुष्ट अग्नि में; नुळैवतु ओर् तॆळिविनै उटैयाऩ्—प्रवेश करने का एक शुद्ध संकल्प लेकर; काय् ऎरि—जलनेवाली अग्नि को; नॆऱियाल्—यथाक्रम; वरऩ्मुऱै—शास्त्रोक्त रीति से; कटितिऩिल् इटुवाऩ्—जल्दी प्रज्वलित करके; नी विटै तरुक ऎऩ—आप आज्ञा दें, यह; निरुवितऩ्—माँग लिया । ११०

तब महान ज्ञानी शरभंग मुनि ने श्रीराम के सामने अधिक परिमाण में अग्नि जलाकर उसमें प्रवेश करने का संकल्प लेकर, उचित क्रम से, शास्त्रोक्त प्रकार से सत्वर प्रज्वलित किया। फिर श्रीराम से विदा माँगी। ११०

वरिशिलै युळवनु मरैयुळ वत्तैनी, पुरितॉळि लॅन्नैयदु पुहलुदि यॅन्नलुम्
तिरुमह् डलैवशॅय् तिरुविन्नै युरयान्, ऎरिपुह निन्नैहुवॅ न्नरुळॅन्न विरैवन् 111

वरिचिलै उळवनुम्–वन्धनयुक्त धनुष चलाने में दक्ष श्रीराम के; मरै उळवत्तै–वेदकृषक को; नी पुरि तॉळिल् ऎन्नै–आप करते है, वह कार्य क्या है; अतु पुकलुति–वह बतलाइए; ऎन्नलुम्–पूछने पर; तिरुमकळ् तलैव–श्रीलक्ष्मीपति; चॅय् इरुविन्नै–मेरे कृत दोनों कर्म; अर–नष्ट हो जायँ, इसलिए; यान् ऎरि पुक निनैकुवॅन्–मैं अग्निप्रवेश करना चाहता हूँ; अरुळ् ऎन–आज्ञा देने की कृपा करें, प्रार्थना करने पर; इरैवन्–भगवान । १११

धनुर्विद्याविदग्ध श्रीराम ने वेदविद्याप्रवीण महर्षि से प्रश्न किया कि यह आप क्या करने जा रहे हैं ? कृपया बताइए तो। तब शरभंग ने कहा कि हे लक्ष्मीपति ! मैं अपने दोनों (पाप-पुण्य) कर्मो का नाश करने के लिए अग्नि में प्रवेश करना चाहता हूँ। आप कृपया अनुमति प्रदान करें। तब भगवान ने— । १११

यान्वरु ममैदियि लिदुशॅय लॅवन्नो, मान्वरु तनियुरि मार्बिनै यॅन्नलुम्
मीन्वरु कॉडियवन् विरलडु मरवोन्, ऊन्विडु मुवहैय नुरैनत्ति पहर्वान् 112

मान् वरु–मृग के; तत्ति उरि मार्पित्तै–श्रेष्ठ चर्म से आच्छादित वक्ष वाले; यान् वरुम् अमैतियित्–मेरे आगमन के इस समय में; इतु चॅयल् ऎवन्–यह करना क्यों; ऎन्नलुम्–(श्रीराम के) यह पूछने पर; मीन् वरु कॉटि अवन्–मकरध्वज (मन्मथ) का; विरल् अटु–प्रताप नष्ट करनेवाले; मरवोन्–महर्षि; ऊन् विटुम् उवकै यित्–शरीर-त्याग से उत्पन्न हर्ष के साथ; उरै–वचन; नत्ति पकर्वान्–खूब बोले । ११२

मृगचर्मालंकृत वक्ष वाले ! यह अग्निप्रवेश का कार्य आप अब करना चाहते हैं, जब मैं इधर आया हूँ ! यह क्यों ? —यह पूछा। तब मकरध्वज मन्मथ के प्रताप-नाशक महर्षि, जो इस उल्लास में थे कि शरीर छूटनेवाला है, बोले। ११२

आयिर युहमुळ तवमयर् हुवॅन्नुयान्, नीयिवण् वरुहुदि यॅनुन्निलै युडैयेन्
पोयिन्न दरुविनै पुहलुरु विदियान्, मेयिन्नै यिनियॉरु विन्नैयिलै विरलोय् 113

विरलोय्–विजयी वीर; यान्–मैं; आयिरम् उकम् उळ–सहस्र युगपर्यन्त; तवम् अयर्कुवॅन्–तपस्या करता रहा हूँ; नी इवण् वरुकुति–आप इधर पधारेंगे; ऎतुम् निलै उटैयेन्–इस स्थिरता पर रहा; पुकल् उरु वितियान्—शास्त्र-विधि के अनुसार; पोयित्तु अरु वित्तै–मिटे मेरे कठिन कर्म; मेयित्तै–आप भी पधारे; इत्ति ऑरु वित्तै इलै–अब कोई कर्म नहीं है । ११३

विजयी वीर ! सहस्र युग पर्यन्त मैंने तपस्या की साधना की है। आप इधर पधारेंगे, इस बात की दृढ़ प्रतीक्षा में रहा। शास्त्र-विधान के अनुसार मेरे दोनों कर्म कट गये। तभी तो आप पधारे हैं। आगे मेरा कर्तव्यकर्म कुछ नहीं है। ११३

इन्दिरन् नाळिन्न दिरुदिहळ् पहर, वन्दनन् मरुवुदि मलरय नुलहम्
तन्दन नॆन्नवदु शारलॆ नुरवोय्, अन्दमि लुयर्पद मडैदलै मुयल्वेन् 114

उरवोय्–बलवान; इन्तिरन्–देवेन्द्र के; नाळिन्नतु इऱुतिकळ् पकर–मेरे जीवन का अन्त कहने के लिए; वन्ततन्–आये; मलर् अयन् उलकम्–कमलासन ने अपने लोक का वास; तन्ततन्–दिया; मरुवुति–आ जायँ; ऍन–कहने पर; अतु चारलॆत–वह नहीं चाहते हुए; अन्तम् इल् उयर पतम् अटैतलै–अक्षय परम (मोक्ष) पद प्राप्त करना; मुयल्वेत–साधूँगा । ११४

शक्तिमन्त ! अभी देवेन्द्र आये थे और मेरी आयु का अन्त जताकर उन्होंने कहा कि कमलोद्भव ने आपको अपने लोक में आमन्त्रित किया है। पधारिए। पर मैं वह लोक नहीं चाहता। पर अक्षर परमपद (मुक्ति-लोक) पाने के प्रयास में ही मैं साधना करता रहा हूँ। ११४

आदलि नदुपॆऱ वरुळॆन वुरैयाक्, कादलि यवळॊडुङ् गदळॆरि मुळुहिप्
पोदलै मरुविन नॊरुनॆऱि पुहला, वेदमु मऱिवरु मिहुपॊरु ळुणर्वान् 115

ऑरु नॆऱि पुकला–(केवल) एक मार्ग प्रतिपादित न करनेवाले; वेतमुम्–वेदों के भी; अऱिवरु–अज्ञात; मिकु पॊरुळ् उणर्वोन्–अनेक विषय के ज्ञानी महर्षि; आतलिन्–इसलिए; अतु पॆऱल् अरुळ्–उसकी प्राप्ति का वर दीजिए; ऍन उरैया–यह प्रार्थना करके; कातलि अवळॊटुम्–प्रिया के साथ; कतळ् ऍरि मूळ्कि–जलनेवाली आग में प्रवेश करके; पोतलै मरुविनन्–परमपदगमन में प्रवृत्त हुए। ११५

वेद भी, जो निश्चित रूप से एक मार्ग या एक पद की व्याख्या नहीं करते हैं, पर अनेक मार्गों और अनेक पदों का प्रतिपादन करते हैं, परमपद का मार्ग नहीं बताते। लेकिन महर्षि शरभंग उस परमपद (मुक्तिलोक) का लक्षण खूब जानते थे। इसलिए उन्होंने उसी पद-प्राप्ति की श्रीराम से प्रार्थना की और वे अपनी प्रिया पत्नी के साथ ज्वलन्त अग्नि में प्रवेश करके मोक्षपद जाने को उद्यत रहे। ११५

तेवरु मुनिवरु मुऱुवतु तॆरिवोर्, मावरु नऱुविरै मलरयन् मुदलोर्
एवरु मुडिविनि लिरुविनै यॊरुविप्, पोवदु करुदुमव् वरु नॆऱिपुक्कान् 116

उऱुवतु तॆरिवोर्–भवितव्य समझनेवाले; मा वरु–गौरवपूर्ण; नऱु विरै–सुवासित; मलर् अयन् मुतलोर्–कमलभव अज आदि; तेवर्–देवता लोग; मुनिवरुम्–मुनिगण; एवरुम्–कोई भी; इरुविनै ऑरुवि–दोनों कर्मों का नाश करके; मुटिविनिल्–अन्त में; पोवतु करुतुम्–जाना (जहाँ) चाहेंगे; अ अरु नॆऱि–उस परमगति को; पुक्कान्–पहुँचे। ११६

भावी की बातें जाननेवाले मूल्यवान और सुवासित कमल पर आसीन अजादि देवता लोग और मुनिगण —कोई भी अपने पाप-पुण्य दोनों कर्मों के नाश पर अन्तिम गति के रूप में जहाँ जाना चाहते है, उसी गति को शरभंग प्राप्त हो गये। ११६

अण्डमु महिलमु मऱिवरु नॆंऱियाल्, उण्डव: नॊरुपॆय रुणर्हुन रुरुपे
ऱॆण्डव नॆंडिदुयि रिरुदियि लवनैक्, कण्डव रुरुपॊरुळ् करुदुव दॆळिदे 117

अण्टमुम्–सारे अण्ड; अकिलमुम्–और सारे लोक; अऱिवु अरु नॆंऱियाल्–अनजानी रीति से; उण्टवऩ्–जिन्होंने उदरस्थ कर लिया था, उन श्रीराम का; ऑरु पॆयर्–एक (परमपावन) नाम; उणर्कुनर्–ध्यान करनेवाले; उरु पेरु–जिसको प्राप्त करते है, वह भाग्य; ऎण् तव नॆंटितु–अपार और अत्यधिक है; नॆंटितु उयिर् इरुतियिल्–अपनी लम्बी आयु के अन्त में; अवनै कण्टवर्–जिन्होंने उनके दर्शन किये, वे; उरु पॊरुळ्–जो प्राप्त करेंगे, वह वस्तु; करुतुवतु ऎळिते–सोचना सुलभ है क्या। ११७

अखिल अण्डों और लोकों को अपने पेट में प्रलयकाल मे समा लेनेवाले विष्णु भगवान के सहस्र रूप हैं और सहस्र नाम है। उनमें एक परम पवित्र नाम है श्रीराम ! उसके स्मरण मात्र से लोग जो भाग्य प्राप्त करते हैं, वह कल्पना के भी बाहर है; बहुत श्रेष्ठ है। तो अपनी लम्बी आयु के अन्त में, मरणावसर पर उनके दर्शन करने का भाग्य जिनका हुआ है, वे जिस पद को प्राप्त होंगे उसका महत्त्व कल्पना करना भी आसान है क्या ? । ११७

3. अहत्तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)

अन्नैयव निरुदियि नमैवु नोक्कलिन्
इन्नियव रिन्नलि न्निरङ्गु नॆंञ्जिन्नर्
कुनिवरु तिण्शिलैक् कुमरर् कॊम्बॊडुम्
पुन्निदन्न दुरैयुणिन् ऱरिदिर् पोयिन्नार् 118

इनियवर्–सबके प्यारे (सबको सुख देनेवाले); कुनि वरु–नमनीय; तिण् चिलै–और सारयुक्त धनुष के; कुमरर्–(धारण करनेवाले) राजपुत्र; कॊम्पु ओटुम्–पुष्प-शाखा (सीतादेवी) के साथ; अन्नैयवऩ्–उन महर्षि के; इरुतियिऩ् अमैव–अन्त की व्यवस्था; नोक्कलिऩ्–प्रत्यक्ष देखने से; इऩ्ऩलिऩ्–परिताप से; इरङ्कु नॆञ्चिऩर्–खिन्नमन होकर; पुऩितनतु उऱैयुळ् निऩ्ऱु–पवित्रात्मा के आश्रम से; अरितिल् पोयिऩार्–निकलकर सायास चले। ११८

सर्वभूतरंजक प्यारे राजकुमार और नमनीय धनुष के धारक श्रीराम और लक्ष्मण, पुष्पलता-समाना श्रीसीतादेवी के साथ शरभंगदेह-वियोग देख रहे थे। उन्हें परिताप हुआ। बड़े खिन्नमन होकर वे उन पवित्र ऋषि के आश्रम से निकले और भारी मन के साथ सायास आगे जाने लगे। ११८

मलैहळु मरङ्गळु मणिक्कर् पारैयुम्
अलैपुन नदिहळु मरुविच् चारलुम्

इलैशॅरि पऴुवमु मिनिय शूऴलुम्
निलैमिहु तडङ्गऴु मिनिदु नीङ्गिनार् 119

मलैकऴुम्–पर्वत; मरङ्कऴुम्–और अनेक तरु; मणि कल् पारैयुम्–और सुन्दर अनेक चट्टानों को; अलै पुनल् नतिकऴुम्–तरंगसहित जल वाली नदियाँ; अरुवि चारलुम्–सरिताओ के साथ पर्वत-पाद-प्रदेश; इलै चॅरि पऴुवमुम्–पत्तों से पूर्ण वनप्रदेश; इनिय चूऴलुम्–और सुन्दर स्थान; इनितिन्–सुख से देखते हुए; नीङ्कितार्–पार करके गये। ११९

वे अनेक पर्वत, वृक्ष, सुन्दर चट्टानें, तरंगसहित जल से पूर्ण नदियाँ, सरिताओं के साथ पर्वतों के पादप्रदेश और अन्य अनेक मनोरम स्थल —इनको देखते हुए सुख से आगे बढ़ते चले। ११९

❀ पण्डैय वयन्दरुम् वाल किल्लरुम्
मुण्डरु मोनरु मुदलि नोर्हळत्
तण्डह वनत्तुउरै तवत्तु ळोरॅलाम्
कण्डन रिरामनैक् कळिक्कुञ् जिन्दैयार् 120

पण्टैय अयन् तरुम्–पुरातन ब्रह्माजी से सृष्ट; पालकिल्लरुम्–वालखिल्य; मुण्टरुम्–मुण्डी; मोनरुम्–मौनी; मुतलिनोर्कळ्–आदि; अ तण्टक वनत्तु उरै–जो उस दण्डक वन में रहते थे; तवत्तु उळ्ळोर्कळ् ॲल्लाम्–सब तपस्वी लोगों ने; इरामनै कण्टनर्–श्रीराम के दर्शन किये; कळिक्कुम् चिन्तैयर्–मुदितमन हुए। १२०

दण्डक वन में अनेक तरह के तपस्वी रहे। सृष्टि के आदिपुरुष ब्रह्माजी के (रोम से उत्पन्न) वालखिल्य (साठ हज़ार), मुण्डी, मौनी आदि तपस्वी थे। वे सब श्रीराम के दर्शन करके बहुत हर्षित हुए। १२०

❀ कनैवरु कडुञ्जिनत् तरक्कर् कायवोर्
विनैपिरि दिन्मैयिन् वॅदुम्बु हिन्ऱनर्
अनैवरु कानहत् तमुद ळाविय
पुनैवर वुयिर्वरु मुलवै पोल्हिन्ऱार् 121

कनै वरु–शीघ्र अभिभूत कर आनेवाले; कटुम् चिनत्तु–अत्यधिक क्रोध वाले; अरक्कर् काय–राक्षसों के सताने से; ओर् विनै पिरितु इन्मैयिन्–अपने पास कोई प्रतीकार-शक्ति न रहने के कारण; वॅतुम्पुकिन्ऱनर्–तप्त; अनै वरु कानकत्तु–अग्नि-लगे कानन में; अमुतु अळाविय–अमृत-मिश्रित; पुनैवर–जल के आने से; उयिर् वरुम्–प्राणवन्त होनेवाले; उलवै पोल्किन्ऱार्–ठूँठ के समान बने। १२१

श्रीरामचन्द्र प्रभु का आगमन उनके लिए अग्निदग्ध कानन मे सुधा-मिश्रित जलधारा के प्रवाह के समान रहा। वहाँ के प्राणवन्त बने ठूँठों के समान उन्मत्त क्रोधी राक्षसों से पीड़ित वे निस्सहाय मुनिगण हरे हो उठे। १२१

* आय्वरुम् पॅरुवलि यरक्कर् नाममे
वाय्वॅरीइ यलमरु मरुक्क नीङ्गिन्नार्
तीवरु वन्नत्तिडै विट्टुत् तीर्न्ददोर्
ताय्वर नोक्किय कन्ऱिन् ऱन्मैयार् 122

आय् वरुम्–उत्तरोत्तर बढ़नेवाले; पॅरुवलि अरक्कर्–बड़े बल वाले राक्षसों का; नाममे–नाम; वाय् वॅरीइ–कहने से भी डरकर; अलमरुम्–व्याकुल रहने की; मरुक्कम्–उद्विग्नता से; नीङ्किनार्–मुक्त होकर; ती वरु वनत्तु इटै–(वे) जलनेवाले जंगल-मध्य; विट्टु–छोड़कर; तीर्न्तनु–जो गई थी; ताय् वरल्–उस माता गाय का आना; नोक्किय–देखते रहे; कन्ऱिन् तन्मैयार्–बछड़े के समान स्थिति वाले हुए। १२२

वे वर्धनशील बल से युक्त राक्षसों का नाम लेने से भी डरते हुए अपार संकटग्रस्त होकर राक्षसों के त्रास के कारण बहुत व्याकुल व उद्विग्न रहते थे। तब श्रीराम पधारे तो उनकी स्थिति उस बछड़े की-सी उत्साहपूर्ण हो गयी, जिसके सामने उसकी माता गाय, जो उसको जलने वाले जंगल में अकेले छोड़कर चली गयी थी, आ गयी हो। १२२

करक्करुङ् गडुन्दॉऴि लरक्कर् काय्दलिल्
पॉरर्किड मिन्मैयिऩ् पुऴुङ्गिच् चोरुनर्
अरक्करॅन् गडलिडै याऴ्हिन् ऱारॊरु
मरक्कलम् पॅऱ्ऱॅन मरुक्क नोक्किनार् 123

करक्क अरुम्—लुक-छिपकर नहीं पर खुले रूप से; कटुम् तॊऴिल्–नृशंसकारी; अरक्कर्–राक्षस; काय्तलिल्–वैर करके सताते रहे, इसलिए; पॊरर्कु इटम् इन्मैयिन्–वार करने का मौका न रहने के कारण; पुऴुङ्कि चोरुनर्–तप्त होकर वेदना उठानेवाले; अरक्कर् ऍन् कटल् इटै–राक्षस रूपी सागर में; आऴ्किन्ऱार्–गिरकर डूबनेवाले; ऒरु मरक्कलम् पॅऱ्ऱॅन–एक नाव मिल गई हो, जैसे; मरुक्कम् नीङ्कितार्–संकट से मुक्त हुए। १२३

उनकी स्थिति सागर-मध्य डूबनेवाले को नाव मिल गयी हो, ऐसी भी हो गयी। दिन-दहाड़े वे राक्षस उनको दिक कर रहे थे। इनके पास प्रतीकार का या अपनी रक्षा का कोई साधन नहीं था। इसलिए वे बहुत क्लेशित होकर राक्षस रूपी सागर में डूबते रहे। अब उनको श्रीराम रूपी नौका मिल गयी। १२३

* तॅरिञ्जुऱ नोक्किनर् शॅय्द शॅय्दवम्, अरुञ्जिऱप् पुदवनल् लऱिवु कैदर
विरिञ्जुऱप् पऱ्ऱिय पिऱवि वॅन्दुयर्प्, पॅरुञ्जिऱै वीडुपॅऱ् ऱनैय पऱ्ऱियार् 124

चॅय्त चॅय् तवम्–तब तक किया हुआ श्रेष्ठ तप; अरुम् चिऱप्पु उतव–उत्तम फल देने लगा तो; नल् अऱिवु कै तर–परमज्ञान के फलस्वरूप; तॅरिञ्चु–श्रीराम का परत्व पहचानकर; उऱ नोक्कितर–खूब दर्शन करके; विरिञ्चु उऱ पऱ्ऱिय–

(जाल के समान) फैलकर उन्हें जो पकड़े रहा; वॅम् पिऱवि तुयर्–भयंकर भवसंकट रूपी; पॅरुम् चिऱै–बड़ी कारा से; वीटु पॅऱ्ऱतैय–मोक्ष पा गये हों, ऐसी; पॅऱ्ऱियार्–दशा वाले हो गये। १२४

उन ऋषियों ने बहुत तप किया था। उसका फल अब उनकी सहायता करने आया। उनका ज्ञान उनका सहायक हुआ। वे पहचान गये कि श्रीराम परब्रह्म ही है। उन्होंने श्रीरामभद्र के खूब दर्शन कर लिये। अब उन्हें यही विश्वास हो गया कि जाल के समान फैलकर जिस भयंकर भवसंकट ने उन्हें ग्रस लिया था, उस बड़ी कारा से उनको मुक्ति मिल गयी। १२४

वेण्डिन वेण्डिनर्क् कळिक्कु मॅय्त्तवम्
पूण्डुळ रायिनुम् पॉऱैयि ऩाऱ्ऱलाल्
मूण्डॅऴु वॅहुळियै मुदलि नीक्किनार्
आण्डुऱै यरक्करा ललैप्पुण् डाररो 125

वेण्टित्तवर्क्कु–प्रार्थियों को; वेण्टित्त अळिक्कुम्–प्रार्थित वस्तु दिलानेवाले; मॅय् तवम् पूण्टुळर्–यथार्थ तप के साधक थे; आयितुम्–तो भी; पॉऱैयिन् आऱ्ऱलाल्–क्षमा के बल से; मूण्टु ऍऴुम् वॅकुळियै–अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को; मुतलिन् नीक्कित्तार्–जड़ से जिन्होंने काट दिया था, वे; आण्टु उऱैन्तु–(वन में) वहाँ रहकर; अरक्करால्–राक्षसों द्वारा; अलैप्पु उण्टार्–कष्ट में पड़े रहे। १२५

उनकी तपस्या भी अमोघ थी। इच्छित वस्तु दिला सकनेवाली ही थी। तो भी क्षमा के बल से उन्होंने अभिभूत कर उठनेवाले क्रोध को जड़ से काटकर दूर कर दिया था। इसीलिए वे वहाँ, उस वन में रहकर राक्षसों के हाथ त्रास सहते रहे। १२५

❀ ऍऴुन्दन रॅय्दिन रिरुण्ड मेहत्तिन्
कॉऴुन्दॅन निन्ऱवक् कुरिशिल् वीरऩैप्
पॉऴिन्दॅऴु कादलिऱ् पॉरुन्दि ऩारवन्
तॉऴुन्दॉरुन् दॉऴुन्दॉरु माशि शॉल्लुवार् 126

ऍऴुन्तत्तर्–(वे) उठे और; ऍय्तित्तर्–श्रीराम के पास आये; इरुण्ट मेकत्तिन्–काले मेघ की; कॉऴुन्तु ऍन–कोंपल के समान; निन्ऱ–अपने सामने शोभायमान (खड़े) रहे; अ कुरिचिल् वीरऩै–उन वीर राजकुमार के; पॉऴिन्तु ऍऴु कातलिल्–आप्लावित कर उमड़नेवाले प्रेम के साथ; पॉरुन्तित्तार्–समीप आये; अवन् तॉऴुम् तॉरुम् तॉऴुम् तॊरुम्–ज्यों-ज्यों वे नमस्कार करते, त्यों-त्यों; आचि चॉल्लुवार्–(ऋषियों ने) आशीर्वचन कहे। १२६

वे उठे और श्रीराम के पास, जो काले मेघ की कोंपल के समान सुन्दर थे, आये। उनके मन में श्रीराम को आप्लावित करते हुए उमड़ने

वाला प्रेम उठा था। श्रीराम ने उनको अलग-अलग एक-एक करके नमस्कार किया। तो उन्होंने भी हर बार उनको आशीर्वाद किया। १२६

❀ इन्नियदोर् शालैकॊण् डेहि यिव्वयिन्
नन्नियुऱै यॆन्ऱवर् कमैय नल्हित्ताम्
तन्नियिडञ् जार्न्दन्नर् तङ्गि मऱ्ऱैनाळ्
अन्नैवरु मॆय्दिन्न रल्लल् शॊल्लुवान् 127

अन्नैवरुम्–सभी (ऋषि); इन्निय ओर् चालै कॊण्टु एकि–सुखद एक आश्रम में ले जाकर; इ वयिन्–यहाँ; नन्नि उऱै ॲन्ऱु–खूब विश्राम करें, ऐसा कहकर; अवर्कु अमैय नल्कि–उनको आवश्यक वस्तुएँ देकर; ताम् तन्नि इटम् चार्न्तन्नर्–स्वयं अलग-अलग स्थानों में जाकर; तङ्कि–ठहरे रहने के बाद; अल्लल् चॊल्लुवान्–अपना दुखड़ा कहने; ॲय्तिन्नर्–(श्रीराम के पास) आ पहुँचे। १२७

फिर वे श्रीराम आदि को एक सुखद पर्णशाला में ले गये। 'यहाँ ठहरकर विश्राम करें' —कहकर उन्होंने दिव्य अतिथियों को वहाँ ठहराया। फिर आवश्यक सामग्रियाँ देकर वे अपने-अपने अलग-अलग स्थानों में चले गये। रात विताकर वे सवेरे अपना दुखड़ा श्रीराम से बताने के लिए उनके पास पहुँचे। १२७

❀ ॲय्दिय मुन्निवरै यिऱैञ्जि येत्तुवन्, दैयनु मिरुन्दन्न नरुळॆन् नॆन्ऱलुम्
वैयहङ् गावलन् मैन्द वन्ददोर्, वॆय्यवॆङ् गॊडुन्दॊऴिल् विळैवु केळॆना 128

ऐयन्नुम्–प्रभु ने भी; ॲय्तिय मुन्निवरै–आगत मुनियों का; इऱैञ्चि–नमस्कार करके; एत्तु उवन्तु–उनकी स्तुति करते हुए मुदित हो; इरुन्तन्नन्–रहकर; अरुळ् ॲन्–कृपा की आज्ञा क्या है; ॲन्ऱलुम्–पूछने पर; वैयकम् कावलन् मैन्त–लोकपाल के पुत्र; वन्ततु–हम पर आये; ओर् वॆय्य वॆम् कॊटुम् तॊऴिल्–वहुत ही भयंकर नृशंसकार्य की; विळैवु–अधिकता; केळ्–सुनिए; ॲन्ना–कहकर। १२८

श्रीराम ने आगत मुनियों को नमस्कार किया; स्तुति की और मोद के साथ रहकर पूछा कि आप कौन सी ,आज्ञा सुनाने की कृपा करेंगे? ऋषियों ने उत्तर में कहा कि लोकपालक पुत्र! हमारे ऊपर जो बीत रहा है, उस भयंकर कष्ट की अधिकता सुनिए। १२८

❀ इरक्कमॆन् ऱॊरुपॊरु ळिलाद नॆञ्जिन्नर्
अरक्करॆन् ऱुळर्शिल रऱ्ऱन्नि नीङ्गिन्नार्
नॆरुक्कवुम् याम्बडर् नॆऱिय लान्नॆऱि
तुरक्कवु मरुन्दवत् तुऱैयुम् नीङ्गिन्नोम् 129

इरक्कम् ॲन्ऱु–करुणा नाम का; ओरु पॊरुळ्–सर्वश्रेष्ठ गुण; इलात–से हीन; नॆञ्चिन्नर्–मन वाले; अऱत्तिन् नीङ्किन्नार्–धर्म-मार्ग से दूर; अरक्कर्–राक्षस; ॲन्ऱु उळर् चिलर्–कहे जानेवाले हैं कुछ लोग; नॆरुक्कवुम्–(उनके) हमें सताने से;

याम्–हम; पटर् नॆंऱि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नॆंऱि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुऱैयुम् नीङ्कित्तोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे है। १२९

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वऩत्तु मातॆंन
ऍल्लियुम् बहलुनोंन् दिरङ्गि याऱ्ऱलॆंम्
शॊल्लिय वऱनॆंऱित् तुऱैयि नीङ्गिनॆम्
विल्लियऩ् मॊय्म्बिनाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॊय्म्पित्ताय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वऩत्तु–जहाँ घूमते रहते हैं, उस वन में; मान् ऍंत–मृगों के समान; ऍल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नोंन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॆंम्–अशक्त होकर; चॊल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॆंऱि–धर्म-मार्ग के; तुऱैयिऩ्–कर्मों से; नीङ्किनॆम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर! खूनी बाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये हैं। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे? । १३०

❀ मादवत् तॊऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॆं मोदुवार्क् कुदव लाऱ्ऱलॆंम्
मूदॆंरि वळर्क्कलॆं मुऱैयि नीङ्गिनॆम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलॆम् 131

मा तवत्तु ऒऴुकलॆंम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलॆंम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॆंम्–सहायता दे नहीं पाते; मूतु ऍरि वळर्क्किलॆंम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिऩ् नीङ्कित्तेम्–अपने कर्मों से हटे रहते हैं; आतलिऩ्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलॆम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये है। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर ऩॆंनिलव ऩरक्क रेविऩ
शिन्दैयिऱ् चॆंऩ्ऩियिऱ् कॊऴ्ऴुज् जॆंय्हैयाऩ्
ऍन्दैमऱ् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दऩै याञ्जॆंय्द तवत्तिऩ् माट्चियाल् 132

ऎन्तै–हमारे तात; इन्तिरन् ऎतिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॆन्तियिल्–सिर पर; कॊळ्ळुम् चॆय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले हैं; इटुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मऱ्ऱु यार् उळर्–और कौन हैं; याम् चॆय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्ततै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॊरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयस् यामॆन्ऱार् 133

उरुळ् उटै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॊरुळ् उटै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उटै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उटै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिनाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ऎन्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॆन् नम्बॊडुम् वीऴ्वराल्
तहवि ऱुन्बन् दविरुदिर् नीरॆनाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयँगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ऎन् अम्पॊटुम् वीऴ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ऎना–कहकर; पणिक्किन्ऱान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

याम्–हम; पटर् नॅऱि–अपने अपनाकर चलनेवाले मार्ग से; अला नॅऱि–विपरीत (बुरे) मार्ग में; तुरक्कवुम्–चलें, ऐसा लाचार करने से; अरुम् तव तुऱैयुम् नीङ्किऩोम्–उत्तम तपोमार्ग से हटते जा रहे हैं। १२६

निपट दयाशुष्कमन, धर्ममार्ग-वियुक्त राक्षस हमें त्रास देकर हमें योग्य मार्ग से हटाकर बुरे मार्ग पर चलने को लाचार करते हैं। इसलिए हम अपने श्रेष्ठ तपोमार्ग से छूट जाते हैं। १२९

वल्लियम् बलतिरि वऩत्तु मातॅऩ
ॲल्लियुम् बहलुनॉन् दिरङ्गि याऱ्ऱलॅम्
शॉल्लिय वऱनॅऱित् तुऱैयि नीङ्गिऩॆम्
विल्लियऩ् मॉय्म्बिनाय् वीडु काण्डुमो 130

विल् इयल् मॉय्म्पिऩाय्–धनुर्द्धर वीर; वल्लियम् पल–भयंकर अनेक बाघ; तिरि वऩत्तु–जहाँ घूमते रहते है, उस वन में; मान् ॲन–मृगों के समान; ॲल्लियुम् पकलुम्–रात और दिन; नॉन्तु–कृश होकर; इरङ्कि–दुखी होकर; आऱ्ऱलॅम्–अशक्त होकर; चॉल्लिय–शास्त्रोक्त; अऱ नॅऱि–धर्म-मार्ग के; तुऱैयिऩ्–कर्मो से; नीङ्किऩॆम्–हट गये; वीटु काण्टुमो–इससे विमोचन मिलेगा क्या। १३०

धनुर्द्धर वीर! खूनी वाघों के संचार के वन के मृगों की तरह दिन-रात हम राक्षसों के हाथों सताये जाते हैं। हमारा मन बलहीन और जर्जर हो गया है। कष्ट सह नहीं पाते। शास्त्रोक्त सन्मार्ग से दूर चले गये है। क्या इस स्थिति से हम छुटकारा देख सकेंगे ? । १३०

❀ मादवत् तॉऴुहले मऱैहळ् यावैयुम्, ओदलॅ मोदुवार्क् कुदव लाऱ्ऱलॅम्
मूदॅरि वळर्क्कलॅ मुऱैयि नीङ्गिनेम्, आदलि लन्दण रेयु माहिलेम् 131

मा तवत्तु ऑऴुकलॅम्–महत्वपूर्ण तपस्या में लीन नहीं रहते; मऱैकळ् यावैयुम् ओतलॅम्–सभी वेदों का पाठ नहीं करते; ओतुवार्क्कु–अध्ययन करनेवालों को; उतवल् आऱ्ऱलॅम्–सहायता दे नही पाते; मूतु ॲरि वळर्क्किलॅम्–सनातन अग्निसंधान (होमादि) नहीं करते; मुऱैयिऩ् नीङ्किऩॆम्–अपने कर्मो से हटे रहते हैं; आतलिऩ्–इसलिए; अन्तणर् एयुम्–ब्राह्मण ही; आकिलेम्–बने नहीं। १३१

हम महान तप-कर्म में प्रवृत्त नहीं हो पाते। वेदाध्ययन नहीं करते; न कराते। होमादि अग्निसंधान नहीं करते। इस तरह हम अपने योग्य कर्मों से हटे रह गये हैं। इसलिए हम ब्राह्मण ही नहीं रह गये। १३१

❀ इन्दिर ऩॆनिलव नरक्क रेविऩ
शिन्दैयिऱ् चॅऩ्ऩियिऱ् कॉळ्ळुञ् जॅय्हैयान्
ॲन्दैमऱ् ऱियारुळ रिडुक्क णीक्कुवार्
वन्दऩै याऴ्जॅय्द तवत्तिन् माट्चियाल् 132

ऎन्तै–हमारे तात; इन्तिरन् ऎतिल्–इन्द्र हैं तो; अवन्–वे; अरक्कर् एवित्त–राक्षसों की आज्ञाएँ; चिन्तैयिल्–मन में; चॆन्नियिल्–सिर पर; कॊळ्ळुम् चॆय्कैयान्–धारण करके बजा लानेवाले हैं; इडुक्कण् नीक्कुवार्–हमारा कष्ट दूर करनेवाले; मऱ्ऱु यार् उळर्–और कौन हैं; याम् चॆय्त तवत्तिन् माट्चियाल्–हमारे पूर्वकृत तप के प्रताप से; वन्तनै–आप पधारे। १३२

हमारे प्रभु ! इन्द्र के पास जाकर उनकी सहायता लेना चाहें तो भी वह वृथा है। क्योंकि वे खुद राक्षसों के आज्ञाकारी हो गये हैं। अब हमारा संकट दूर करनेवाले और कौन हैं ? हमारे सुकृत का प्रताप था कि आप पधारे। १३२

❀ उरुळुडै नेमिया लुलहै योम्बिय, पॊरुळुडै मन्नवन् पुदल्व पोक्किला
इरुळुडै वैहले मिरवि तोन्ऱिनाय्, अरुळुडै वीरनिन् नबयम् यामॆन्ऱार् 133

उरुळ् उडै नेमियाल्–सर्वत्र चलनेवाले (आज्ञा-) चक्र से; उलकै ओम्पिय–लोक-पालन जिन्होंने किया; पॊरुळ् उडै मन्नवन्–प्रभावपूर्ण उन चक्रवर्ती के; पुतल्व–पुत्र; अरुळ् उडै वीर–करुणापूर्ण श्रीरघुवीर; पोक्कु इला–अकाट्य; इरुळ् उडै–अन्धकार रूपी दुख से अभिभूत; वैकलेम्–जीवन वाले हैं हम; इरवि तोन्ऱिनाय्–आप सूर्य (-सम) प्रकट हुए; निन् अपयम् याम्–आपकी शरण हैं हम; ऎन्ऱार्–कहा (ऋषियों ने)। १३३

सर्वत्र चलनेवाले आज्ञाचक्र द्वारा लोकपालन-कर्ता दशरथ के पुत्र ! कृपालु श्रीरघुवीर ! हमारा जीवन अकाट्य दुखांधकार का है। आप सूर्यदेव के समान पधारे हैं। हम आपकी शरण हैं। —ऐसा दण्डकवन-वासी ऋषि बोले। १३३

❀ पुहल्पु हुन्दिलरेऱ् पुऱत्तण् डत्तिन्
अहल्व रेनुमॆन् नम्बॊडुम् वीळ्वराल्
तहवि ऱुन्बन् दविरुदिर् नीरॆनाप्
पहल वन्गुल मैन्दन् पणिक्किन्ऱान् 134

पकलवन् कुल मैन्तन्–दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम; पुकल् पुकुन्तिलरेल्–(वे राक्षस क्षमा माँगते हुए) मेरी शरण नहीं आयँगे तो; पुऱत्तु अण्टत्तु अकल्वरेनुम्–बाह्याण्ड में जाएँगे तो भी; ऎन् अम्पॊटुम् वीळ्वर् आल्–मेरे बाणों के साथ गिरेंगे; नीर्–आप लोग; तकवु इल् तुन्पम्–अनावश्यक दुख; तविरुतिर्–छोड़ दीजिए; ऎना–कहकर; पणिक्किन्ऱान्–विश्वास दिलाया। १३४

यह सुनकर दिनकरकुल-पुत्र श्रीराम ने कहा— "वे राक्षस क्षमा याचना करते हुए मेरी शरण में आएँ तो ठीक ! नहीं तो वे बाह्यांड में जाएँ तो भी नहीं छोड़ूँगा। मेरे शरों से आहत होकर वे उन शरों के ही साथ भूमि पर गिरकर मरेंगे। आप अनावश्यक दुख छोड़ दें।" ऐसा कहकर श्रीराम ने और भी आश्वासन के वचन कहे। १३४

❀ वेन्दन् वीयवुम् याय्तुयर् मेववुम्, एन्द लॅम्बि वरुन्दवु मॅन्नहर्
मान्दर् वन्रुयर् कूरवुम् यान्वनम्, पोन्द दॅन्नुडैप् पुण्णियत् तालॅन्ड्रान् 135

वेन्तन् वीयवुम्–चक्रवर्ती दिवंगत हुए; याय् तुयर् मेववुम्–और मेरी माता दुखग्रस्त हुईं; एन्तल् अॅम्पि–महिमायुक्त मेरे लघु भ्राता भरत; वरुन्तवुम्–संकटग्रस्त है; अॅन् नकर् मान्तर्–मेरे नगर के लोग; वन् तुयर् कूरवुम्–कठोर वेदना का अनुभव करते है; यान् वतम् पोन्ततु–(यह स्थिति पैदा करते हुए) मेरा वन में आगमन; अॅन्नुटै पुण्णियत्ताल्–मेरे सुकृत (पुण्य) से ही; अॅन्ड्रान्–कहा। १३५

मुझे वन में आना पड़ा जिसके कारण मेरे पिता चक्रवर्ती दिवंगत हो गये। मेरी माता कौसल्यादेवी दुखग्रस्त हो गयीं। महिमावान मेरा लघुभ्राता भरत शोकपीड़ित हो गया। मेरे नगर के वासी दुख में पड़ गये। तो भी मैं समझता हूँ कि मेरा वन में आगमन मेरे सुकृत का ही फल है। १३५

❀ अऱन्द वानॅरि यन्दणर् तन्मैयै, मऱन्द पुल्लर् वलितॅलै येनॅनिल्
इऱन्दु पोहिनु नन्ऱिदु वल्लदु, पिऱन्दि यान्बॅऱुम् वेऱॅन्वदि यावदो 136

अऱम् तवा नॅऱि–धर्म से न हटनेवाले आचरण में लीन; अन्तणर् तन्मैयै–ब्राह्मणों के महत्व को; मऱन्त–भूलकर (कष्ट देनेवाले); पुल्लर्–नीच राक्षसों का; वलि तॉलैयेन्–बल नहीं मिटाऊँगा; अॅनिल्–तो; इऱन्तु पोकितुम्–मर जाना भी; नन्ऱितु–अच्छा; अल्लतु–नहीं तो; पिऱन्तु यान् पॅऱुम् पेऱु–जन्म लेकर पाने का भाग्य; यावतो–और क्या होगा। १३६

वे नीच राक्षस आपकी महिमा और आपका स्वभाव नहीं जानते और आपको बहुत कष्ट दे रहे है। उनका बल न मिटाऊँ तो मर जाना भी भला है। नही तो मैंने जन्म लेकर क्या पाया ? और कौन सा लाभ है जो मैं पाऊँ ? । १३६

निवन्द वेदियर् नीयिरुन् दीयवर्, कवन्द बन्दक् कळिनडङ् गण्डिड
अमैन्द विल्लु मरुङ्गणैत् तूणियुम्, शुमन्द तोळुम् पॉऱैत्तुयर् तीरुमाल् 137

निवन्त–गुणोन्नत; वेतियर् नीयिरुम्–वेदज्ञ विप्र आप; तीयवर्–खलों के; कपन्त पन्तम्–कबन्ध-वृन्द का; कळि नटम् कण्टिट–मुदित नाच देखें तब; अमैन्त विल्लुम्–मेरे पास बेकार रहा धनु; अरुम् कणै तूणियुम्–अपूर्व शरों का तूणीर; चुमन्त–इनको ढोनेवाली; तोळुम्–मेरी भुजाएँ; पॉऱै तुयर् तीरुम्–भार उठाने का दुख दूर होगा। १३७

आप गुणोन्नत ब्राह्मण उन खलों के कबन्ध-वृन्दों का मुदित नाच देख कर आनन्द मनावे, तभी भारस्वरूप बेकार यह धनु और उत्तम शरों का तूणीर —इनका बोझ व्यर्थ जो ढोती रही उन भुजाओं के भारवहन का दुख दूर होगा। १३७

आवुक् कायित् मन्दणर्क् कायिनुम्, यावर्क् केनु मॅळियवर्क् कायिनुम्
शावप् पॅऱ्ऱव रेतहै वानुऱै, देवर्क् कुन्दॉळुन् देवर्ह ळाहुवार् 138

आवुक्कु आयित्तुम्–गायों के रक्षणार्थ हो; अन्तणर्क्कु आयित्तुम्–या ब्राह्मणों के लिए हो; मॅळियवर् यावर्क्केतुम् आयिनुम्–निर्बल किसी के लिए भी हो; चाव पॅऱ्ऱवरे–जिनको मरने का भाग्य होता है, वे ही; तकै वान् उऱै–महिमायुक्त स्वर्ग में वास करनेवाले; तेवर्क्कुम्–देवों के लिए भी; तॉळुम्–वन्द्य; तेवर्कळ् आकुवार्–देव बनेंगे। १३८

वे ही मनुष्य देववन्द्य देव बनते हैं, जो गाय, ब्राह्मण या किसी और निर्बल की रक्षा में अपने प्राण खोते है। १३८

शूर रुत्त वनुञ्जुडर् नेमियुम्, ऊर रुत्त वॉरुवनु मोम्बिनुम्
आर ऱत्तिनॊ डन्ऱिनिन् ऱारवर्, वेर रुप्पॅन् वॅरुवन्मि नीरॅन्ऱान् 139

चूर् अऱुत्तवऩुम्–शूरपद्म के संहारक (कार्तिकेय) और; चुटर् नेमियुम्–ज्वलन्त चक्रधारी (विष्णुदेव); ऊर् अऱुत्त ऑरुवनुम्–और त्रिपुरांतक (शिवजी); ओम्पित्तुम्–उनकी रक्षा करने आएँ (तो भी); आर्–जो; अऱत्तित्तोटु अन्ऱि–धर्म से अलग होकर; निन्ऱार्–(पाप-कर्म में प्रवृत्त) रहते है; अवर्–उनको; वेर् अऱुप्पॅन्–जड़ से काट (मिटा) दूँगा; नीर् वॅरुवन्मिन्–आप मत डरिए; ॲन्ऱान्–कहा। १३९

शूरपद्म के संहारक कार्तिकेय, दीप्तचक्रधारी विष्णु, त्रिपुरान्तक शिव —ये सब सहायतार्थ क्यों न आएँ तो भी अधर्मी लोगों को निर्मूल करके ही छोड़ूँगा। आप डरें नहीं। श्रीराम ने यह सुदृढ़ आश्वासन दिया। १३९

उरैत्त वाशहङ् गेट्टुवन् दोङ्गिड, इरैत्त कादल रेहिय विन्नलर्
तिरित्त कोलिनर् तेमऱै पाडिनर्, निरुत्त माडिनर् निन्ऱु विळम्बुवार् 140

उरैत्त वाचकम् केट्टु–श्रीराम का कहा हुआ कथन सुनकर; उवन्तु–सन्तुष्ट होकर; ओङ्किट इरैत्त कातलर्–उत्कृष्ट और मुखर प्रेम वाले होकर; एकिय इन्नलर्–मुक्तदुख हो; तिरित्त कोलिनर्–दण्ड को घुमाते हुए; ते मऱै पाटिनर्–दिव्य वेदगान किया; निरुत्तम् आटिनर्–नृत्य किया और; निन्ऱु विळम्पुवार्–फिर खड़े होकर (वे) बोले। १४०

ये आश्वासन के वचन सुनकर मुनिगण तृप्त हुए। उनका प्रेम उमड़ा और मुखर हुआ। चिन्ताविमुक्त होकर उन्होंने अपने दण्डों को घुमाया, वेदगान और नृत्य किया। बाद वे बोले। १४०

तोन्ऱ नीमुनि यिऱ्पुव नत्तॉहै, मून्ऱु पोल्वन मुप्पदु कोडिवन्
देन्ऱ पोदु मॅदिरल वॅन्ऱलिन्, शान्ऱु वेदम् तवप्पॅरु ञानमे 141

तोन्ऱल्–नायक; नी मुनियिल्–आप कुपित हों तो; मून्ऱु पुवन तॉकै पोल्वन–तीन लोकों के समूह के समान; मुप्पतु कोटि वन्तु एन्ऱ पोतुम्–तीस करोड़ आकर

लड़े तो भी; ऑतिर् इलै ऑन्ऱलिऩ्–सामना नहीं कर सकेंगे, इसके; चाऩ्ऱु–साक्षी; वेतम् तव पॅरु ञाऩमे–वेदों का ज्ञान और उससे प्राप्त ज्ञान ही हैं; अरो–ऐसा है न। १४१

प्रभु ! आप कुपित हो जायँ तो यह एक लोकत्रय क्या तीस करोड़ लोकत्रय भी आपका सामना नहीं कर सकते। इसके साक्षी वेद हैं और उनके ज्ञान से प्राप्त ज्ञान हैं। १४१

अऩ्ऩ दादलि नेयिन वाण्डॅलाम्, इन्ऩल् कात्तिङ् गिनिदुरै वायॅऩच्
चॉन्ऩ मादवर् पादन् दॉऴुदुयर्, मऩ्ऩर् मऩ्ऩवन् मैन्दनुम् वैहिऩाऩ् 142

अऩ्ऩतु आतलिऩ्–ऐसा है, इसलिए; एयिन आण्टु ऑलाम्–वनवास के लिए नियत सारे दिन; इऩ्ऩल् कात्तु–हमारी संकट से रक्षा करने; इङ्कु इऩितु उऱैवाय्–यहाँ सुख से रहें; ऑऩ–ऐसा; चॉऩ्ऩ–जिन्होंने कहा, उन; मातवर् पातम् तॊऴुतु–महान तपस्वियों के चरणों पर नमस्कार करके; उयर् मऩ्ऩर् मऩ्ऩऩ्–सर्वश्रेष्ठ राजाधिराज (चक्रवर्ती) के; मैन्तनुम्–पुत्र भी; वैकिऩाऩ्–वहाँ ठहरे। १४२

बात ऐसी है। अतः आप वनवास के लिए निर्धारित अवधि भर यहीं सुख से वास करें और हमारी संकट से रक्षा करें। ऋषियों की यह प्रार्थना सुनकर सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती दशरथ के पुत्र उनके चरणों पर विनत हुए और वहीं वास करने लगे। १४२

※ ऐन्दु मैन्दु ममैदियि ऩाण्डवण्, मैन्दर् तीदिलर् वैहिऩर् मादवर्
शिन्दै यॅण्णि यहत्तियर् चेर्हॅऩ, इन्दु नऩ्नुद ऱन्ऩॊडु मेहिऩार् 143

मैन्तर्–राजकुमार; अवण्–उस तपोवन में; ऐन्तुम् ऐन्तुम् आण्टु–पाँच और पाँच (दस) साल; तीतु इलर्–बिना किसी कठिनाई के; अमैतियिऩ्–शान्ति के साथ; वैकिऩर्–ठहरे; मातवर्–महान तपस्वियों के; चिन्तै ऑण्णि–मन में सोचकर; अकत्तियऩ् चेर्क–अगस्त्य से जा मिले; ऑऩ–कहने पर; इन्तु नल् नुतल् तऩ्ऩॊटुम्–इन्दु-सम भाल वाली सीताजी-सह; एकिऩार्–चले। १४३

वे राजकुमार पाँच और पाँच (दस) साल वहीं ठहरे। कोई असुविधा या कष्ट नहीं था। वे शान्ति के साथ वहाँ रहे। पश्चात उन ऋषियों ने मन में सोचकर श्रीराम को सुझाया कि आप अगस्त्यजी से जाकर मिलें। तब श्रीराम और लक्ष्मण इन्दुसम सुन्दर भाल वाली सीताजी के साथ चले। १४३

विडर हङ्गळुम् वेय्शॅऱि कानमुम्, पडरुञ् जिऩ्ऩॅऱि पयप्पय नीङ्गिऩार्
शुडरु मेनिच् चुदीक्कण ऩॅऩ्नुमव्, इडरि लानुऱै शोलैशॅऩ् ऱॅय्दिनार् 144

विटर् अकङ्कळुम्–पर्वत-घाटियाँ; वॅय् चॅऱि काऩमुम्–बाँसतरु-संकुल वन; पटरुम्–इनमें जानेवाले; चिल् नॅऱि–सँकरे मार्ग; पय पय नीङ्किऩार्–(तीनों ने)

धीरे-धीरे तय किये; चुटरुम् मेति–तेजोमय शरीर वाले; चुतीक्कणऩ् ॲऩुम्–सुतीक्ष्ण नाम के; अ इटर् इलाऩ् उऱै–उत्तम दुख-निर्लिप्त ऋषि के वास के; चोलै चॅऩ्ऱु–आश्रम जाकर; ॲय्तिऩार्–पहुँचे। १४४

पर्वत प्रदेशों, बाँस के वनों आदि से होकर जानेवाले सँकरे मार्ग धीरे-धीरे तय करके वे तेजोमय शरीरी सुतीक्ष्ण नाम के ऋषि के आश्रम में पधारे। १४४

अरुक्क ऩऩ्ऩ मुनिवऩ् यव्वऴि, शॅरुक्किल् शिन्दैयर् शेवडि ताऴ्दलुम्
इरुक्क वीण्डॅऩ् ऱिनियऩ कूऱिऩाऩ्, मरुक्कॊऴ् शोलैयिऩ् मैन्दरुम् वैहिऩार् 145

चॅरुक्कु इल् चिन्तैयर्–घमण्डरहित मन वालों (श्रीराम और लक्ष्मण) के; अ वऴि–वहाँ; अरुक्कऩ् अऩ्ऩ मुऩिवऩ्–सूर्योपम मुनि के; चे अटि–मनोहर चरणों पर; ताऴ्तलुम्–नमन करने पर; ईण्टु इरुक्क ॲऩ्ऱु–यहाँ रहें, ऐसा; इऩियऩ कूऱिऩाऩ्–मधुर वचन कहे; मैन्तरुम्–राजकुमार भी; मरु कॊऴ् चोलैयिल्–सुबासपूर्ण तपोवन में; वैकिऩार्–ठहरे। १४५

अहंकारशून्य श्रीराम और लक्ष्मण सूर्य-सम तेजोवान उन ऋषि के उत्तम चरणों पर विनत हुए। तब ऋषि ने उन्हें आसन देकर विराजमान कराया। मधुर स्वागत-वचन कहे। सत्कारप्राप्त श्रीराम और लक्ष्मण भी अच्छे बास से युक्त उस आश्रम में ठहरे। १४५

वैहुम् वैहलिऩ् मादवन् मैन्दर्बाल्, शॅय्है यावैयुम् जॅय्दिवण् शॅल्वनी
ॲय्द याऩ्शॅय्द दॅत्तव मॅऩ्ऱऩऩ्, ऐय नुम्मवर् कऩ्बऩ कूऱिऩाऩ् 146

मातवऩ्–महान तपस्वी (सुतीक्ष्ण) के; वैकुम् वैकलिऩ्–वास के आश्रम में; मैन्तर् पाल्–राजकुमारों को; चॅय्कै यावैयुम् चॅय्तु–सत्कार सब करके; चॅल्व–धनवन्त; नी इवण् ॲय्त–आप इधर पधारे, इसके लिए; याऩ् चॅय्ततु ॲ तवम्–मेरा किया कौन सा तप था; ॲऩ्ऱऩऩ्–बोले; ऐयऩुम्–प्रभु ने भी; अवऱ्कु–उनसे; अऩ्पऩ–स्नेहपूर्ण; कूऱिऩाऩ्–बातें कहीं। १४६

ऋषि ने अपने आश्रम में आगत दिव्य अतिथियों का खूब सत्कार किया। फिर कहा कि धनवन्त ! आप इधर पधारे हैं, तो मैंने कितनी विशिष्ट तपस्या की होगी और मेरी तपस्या का कितना ही शुभ फल मिला है ! श्रीराम इसके उत्तर में मधुर वचन बोले। १४६

शॊऩ्ऩ नाऩ्मुहऩ् ऱऩ्वऴिऩ् तोऩ्ऱिऩर्, मुऩ्ऩै योरुण् मुयऱव मुऱ्ऱिऩार्
उऩ्निल् यारुळ रुऩ्ऩरु ळॅय्दिय, ॲऩ्निऩ् यारुळ रिऱ्पिऱन् दारॅऩ्ऱाऩ् 147

चॊऩ्ऩ–प्रकीर्तित; नाऩ्मुकऩ् तऩ् वऴि तोऩ्ऱिऩर्–चतुर्मुख के वंश में उत्पन्न; मुऩ्ऩैयोरुळ्–प्राचीन मुनियों में; मुयल् तवम् मुऱ्ऱिऩार्–कठिन तपस्या करके सुसम्पन्न करनेवाले; उऩ्ऩिऩ् यार् उळर्–आपके समान कौन है; उऩ् अरुळ् ॲय्तिय–आपकी कृपा के पात्र; इल् पिऱन्तार्–गृहस्थों में; ॲऩ्ऩिल् यार् उळर्–मेरे समान कौन हैं; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा। १४७

प्रकीर्तित ब्रह्मा के वंश में उदित अग्रगण्य महर्षियों में कौन हैं, जिन्होने आपके समान तप सम्पन्न किया है ? वैसे ही गृहस्थों में कौन ऐसा है, जिसे आपकी कृपा मिली है, जैसे मुझे ? । १४७

उवमै नीङ्गिय तोऩ्ऱ लुरैक्कॅदिर्, नवमै तोऩ्ऱिय नऱ्ऱवन् शॊल्लुवाऩ्
अवमि लाविरुन् दाहियॅऩ् ऩालमै, तवमॅ लाङ्गॊळत् तक्कनै यालॅऩ्ऱाऩ् 148

उवमै नीङ्किय–अनुपमेय; तोऩ्ऱल् उरैक्कु–प्रभु के कथन के; ॲतिर्–उत्तर में; नवमै तोऩ्ऱिय नल् तवऩ्–नये प्रकार की तपस्या के श्रेष्ठ तपस्वी; चॊल्लुवाऩ्–बोले; अवम् इला विरुन्तु आकि–अमोघ अतिथि बने आप; ॲऩ्ऩाल् अमै–मेरे अब तक सुसम्पन्न; तवम् ॲलाम्–तप सब; कॊळ तक्कनै–ग्रहण करने अर्ह हैं आप; ॲऩ्ऱाऩ्–कहा । १४८

श्रीराम थे उपमाहीन । ऋषि थे अपूर्व और नयी तपस्या के कर्ता । ऋषि ने श्रीराम से कहा कि आप अमोघ अतिथि हैं । आप मेरी की हुई तपस्या का सारा फल ग्रहण कर लीजिए । आप इसके अर्ह हैं । १४८

मऱैव लाऩॆदिर् वळ्ळलुङ् गूऱुवाऩ्, इऱैव निऩ्ऩरु ळॆत्तवत् तिऱ्कॊळि
तऱैव दीण्डुण् डहत्तियर् काण्बदोर्, कुऱैहि डन्द दिनियॅनक् कूऱिऩाऩ् 149

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु; मऱैवलाऩ् ॲतिर्–वेदज्ञ उनके सामने; कूऱुवाऩ्–बोले; इऱैव–स्वामी; निऩ् अरुळ्–आपका अनुग्रह; ॲ तवत्तिऱ्कु ॲळितु–किस तप के लिए सुलभ (प्राप्य) है; ईण्टु–अब; अऱैवतु उण्टु–कथनीय एक विषय है; इति–अब; अकत्तियर् काण्पतु–अगस्त्य के दर्शन का; ओर् कुऱै किटन्ततु–एक इच्छा अपूर्ण रहती है; ॲऩ कूऱिऩाऩ्–ऐसा कहा । १४९

वेदव्युत्पन्न मुनिवर से प्रभु ने कहा कि स्वामी ! आपकी कृपा मुझ पर हुई —वह क्या कम है ? कितनी ही बड़ी तपस्या का फल है वह उपलब्धि ! अब आपसे एक निवेदन करना है । अगस्त्यजी के दर्शन की इच्छा अभी पूर्ण नहीं हुई । १४९

नल्ल देनिऩैन् दायदु नाऩुमुन्, शॊल्लु वाऩ्ऱुणि हिन्ऱदु तोऩ्ऱनी
शॆल्दि याण्डवर् चेरुदि शेर्न्दपिऩ्, इल्लै निऩ्वयि नॅय्दहि लादवे 150

तोऩ्ऱल्–प्रभु; नी नल्लते निऩैन्ताय्–आपने अच्छा ही सोचा है; अतु–वही; नाऩुम्–मेरे द्वारा भी; मुऩ् चॊल्लुवाऩ्–पहले कहने का; तुणिकिऩ्ऱतु–निश्चय किया हुआ था; आण्टु चॆल्ति–वहाँ पधारें; अवऩ् चेरुति–उनसे मिलें; चेर्न्तपिऩ्–उनसे मिलने के बाद; निऩ् वयिऩ्–आपके; ॲय्त किल्लातवे–अप्राप्य कोई हित; इल्लै–नहीं ही होंगे । १५०

मुनि ने उत्तर में कहा कि राजकुमार ! आपने ठीक ही सोचा है । मेरा भी वह अभिप्राय था । उधर पधारिए, उनसे मिलिए । उसके बाद आपको प्राप्त न हों, ऐसे कोई मंगल रहेंगे ही नहीं ! । १५०

अऩ्ऱि युऩ्निऩ् वरविऩै यादरित्, तिऩ्ऱु हाऱुनिऩ् ऱेमुऱु मालवर्
चॅऩ्ऱु शेरुदि शेरुदल् शॅव्वियोय्, नऩ्ऱु देवर्क्कुम् यावर्क्कु नऩ्ऱॆना 151

अऩ्ऱियुम्–इसके अलावा; चॅव्वियोय्–पुरुषश्रेष्ठ; निऩ् वरविनै–आपके आगमन की; आतरित्तु–प्रतीक्षा करके; इऩ्ऱु काऱुम्–आज तक; निऩ्ऱु–रहकर; एम् उरुमाल्–तरसते होंगे; चॅऩ्ऱु–जाकर; अवर् चेरुति–उनसे मिलिए; चेर्न्त पिऩ्–मिलने के पश्चात; तेवर्क्कुम् नऩ्ऱु–देवों के लिए भी मंगल है; यावर्क्कुम् नऩ्ऱु–सबके लिए लाभकर है; ॲंता–कहकर। १५१

और भी आपके आगमन की प्रतीक्षा में वे उतावले हो रहे होंगे। इसलिए आप उनसे जाकर मिलिए। उनसे आपका मिलन देवों के लिए भी भला करनेवाला है और अन्य सभी के लिए भी। १५१

❀ वऴियुङ् गूऱि वरम्बिल वाशिहऴ्
मॊऴियु मादवऩ् मॊय्मलर्त् ताडॊऴाप्
पिऴियुन् देऩिऱ् पिऱङ्गरु वित्तिरऴ्
पॊऴियुञ् जोलै विरैविऩिऱ् पोयिऩार् 152

वऴियुम् कूऱि–मार्ग बताकर; वरम्पु इल–निस्सीम; आचिकऴ् मॊऴियुम्–आशीर्वाद देनेवाले; मातवऩ्–महान तपस्वी के; मॊय् मलर् ताऴ् तॊऴा–घना-कमल-सम चरणों की पूजा करके; पिऴियुम् तेऩिल्–छत से निचोड़े जानेवाले शहद की धारा के समान; पिऱङ्कु–वहाँ रहनेवाली; अरुवि तिरऴ्–सरिताओं की राशि; पॊऴियुम्–जहाँ जल बहाती थी, उस; चोलै–आश्रम को छोड़कर; विरैविऩिल्–वेग के साथ; पोयिऩार्–आगे चले। १५२

ऐसा कहकर उन्होंने श्रीराम को अगस्त्याश्रम जाने का मार्ग भी बताया। उन्हें पुष्कल आशीर्वाद भी किया। श्रीराम, उनके घने कमल-समान चरणों की वन्दना करके वहाँ से चल पड़े। उस आश्रम में शहद की धारा के समान स्वच्छ सरिताओं की राशि जल बहा रही थी। श्रीराम उस आश्रम से निकलकर वेग के साथ चलने लगे। १५२

❀ आण्डहैय रव्वयि ऩडैन्दमै यऱिन्दाऩ्
ईण्डुवहै वेलैतुणै येऴुलह मॆय्द
माण्डवर दऩ्शरण् वणङ्गवॆदिर् वन्दाऩ्
नीण्डतमि ऴालुहै नेमियि ऩऴन्दाऩ् 153

नेमियिऩ्–चक्रधारी के त्रिविक्रम अवतार के समान; उलकै–(ज्ञान) लोक को; नीण्ट तमिऴाल्–बहुत प्राचीन तमिऴ भाषा से; अळन्ताऩ्–नापनेवाले (अगस्त्य); आण् तकै–पुरुषश्रेष्ठ श्रीराम का; अ वयिऩ् अटैन्तमै–वहाँ आगमन; अऱिन्ताऩ्–जानकर; तुणै एऴु उलकम्–चौदहों भुवनों को; ईण्टु उवकै वेलै ऍय्त–इधर सुखसमुद्र में मग्न करते हुए; माण्ट वरतऩ्–महिमावान वरद श्रीराम; चरण् वणङ्क–अपने चरण में वन्दना करें, यह सुविधा करते हुए; ऍतिर् वन्ताऩ्–श्रीराम के सामने (अपने कुटीर से निकलकर) आये। १५३

(वाल्मीकी में श्रीराम का पहले अगस्त्य के भाई सुदर्शन के आश्रम में जाने की चर्चा है। अगस्त्याश्रम जाने से पहले सीताजी ने श्रीराम को बताया कि अकारण राक्षसों को मारना पाप है —यह भी वृत्तान्त है।) अब वे अगस्त्याश्रम आ गये। अगस्त्य जिन्होंने, जैसे त्रिविक्रम ने तीनों लोकों को नापा था, तमिऴ् भाषा द्वारा ज्ञानलोक को मापा था यानी तमिऴ् में ज्ञान को समाहित किया था, जान गये कि श्रीराम अपने आश्रम में पधारे हैं। वे स्वयं उनके सामने आ गये ताकि महिमावान वरद श्रीराम चौदहों भुवनों को सन्तोष-सागर में मग्न करते हुए उनके चरणों पर विनत हों। १५३

❀ पण्डवुणर् मूऴ्हिन्नर् पडार्हळॆन्न वान्नोर्
ऍण्डव वॆमक्करुळ् हॆन्नक्कुऱै यिरप्पक्
कण्डोरुहै वारितन्मु हन्दुकड लॆल्लाम्
उण्डवर्हळ् पिन्नुमिऴ्ह वॆन्ऱलु मुमिऴ्न्दान् 154

वान्नोर्—देव; पण्टु—पहले; अवुणर्—असुर लोग; मूऴ्कित्तर्—समुद्र में डूबे; पटार्कळ्—नहीं मरेंगे; ऍन्न—सोचकर; ऍण् तव—सम्मान्य तपोधन; ऍमक्कु अरुळ्क—हम पर कृपा करें; ऍन कुऱै इरप्प—ऐसा कष्ट निवेदन करने पर; कण्टु—विषय समझकर; कटल् ऍल्लाम्—सातों समुद्रों को; ऒरु कै वारितन्नु मुकन्तु—एक हाथ में उठा लेकर; उण्टु—घूँट लेकर; पिन्नु अवर्कळ् उमिऴ्क ऍन्ऱलुम्—फिर उनके 'बाहर उगल दीजिए' कहने पर; उमिऴ्न्तान्—बाहर थूक दिया। १५४

पहले कभी, वृत्रासुर आदि समुद्र में जाकर छिप गये। देवेन्द्र और अन्य देव समझ गए कि ये समुद्र में छिपे हैं। उनको मारना असम्भव है। इसलिए वे अगस्त्य के पास आये और प्रार्थना की कि सम्मान्य तपोधन! हम पर कृपा कीजिए। अगस्त्य ने बात समझ ली। उन्होंने सातों समुद्रों का जल अपने चुल्लू में भरकर घूँट लिया। फिर देवों के प्रार्थना करने पर ही उसे थूका और समुद्रों को जल-भरा बनाया। ऐसे महिमावान थे वे। १५४

तूयकड नीरैमुऴु दुण्डवै तुरन्दान्
आयववु नालमरु मॆय्युडैय नन्नान्
मायविन्नै वाळवुणन् वादवितन् वन्मैक्
कायमिन्नि दुण्डुलहि नारिडर् कळैन्दान् 155

तूय कटल् नीरै—पवित्र सागर-जल को; मुऴुतु उण्टु—पूरा घूँटकर; अवै तुरन्तान्—उसे थूकनेवाले; आयवनुम्—वे ऋषि भी; आल् अमरुम् मॆय् उटैयन्—वट-बीज-सम छोटी आकृति वाले हैं; अन्नान्—उन्होंने; माय विन्नै—मायावी कार्य करनेवाले; वाळ् अवुणन्—तलवारधारी असुर; वातवि—वातापि नाम के; वन्मै—शक्तियुक्त; कायम् इनितु उण्टु—शरीर को सुखपूर्वक खाकर; उलकिन् आर् इटर्—संसार का घोर संकट; कळैन्तान्—दूर किया था। १५५

सागरजल सारा एक घूंट में पीनेवाले वे आकृति में बहुत छोटे थे और जैसे वट-बीज में उतना बड़ा वटवृक्ष अव्यक्त रहता है, उसी तरह उस आकृति के अन्दर बड़ी महिमा छिपी थी। उन्होंने मायावी, कपटकर्मा वातापि का शरीर भक्षण करके उसकी मृत्यु द्वारा लोकहित किया था। कथा इस प्रकार है— इल्वल और वातापि दो दानव भाई थे। इल्वल वातापि को मेष बनाकर मारता और उसे पका देता। वह ब्राह्मणों को श्राद्ध कहकर निमन्त्रण देता और खिलाने के बाद वातापि को बुलाता। वातापि ब्राह्मण का पेट चीरकर बाहर आ जाता। दोनों मृतक ब्राह्मण को खा जाते। यही चाल उन्होंने अगस्त्य से भी चली। पर अगस्त्य वातापि को जीर्ण कर गये। संसार की आफ़त मिटी। १५५

❀ योहमुरु पेरुयिर्ह डामुलैवु ऱ्रामल्, एहुनॅरि यार्दॅन्न मिदित्तडियि ऩॆरि
मेहऩॅडु मालैतवळ् विन्दमॅनुम् विण्डोय्, नाहमदु नाहमुऱ नाहमॅन्न नित्ऱान् 156

योकम् उरु पेर् उयिर्कळ् ताम्—उद्योगशील बड़ी संख्या के जीव; उलैवु उऱ्रामल्—बिना हानि के; एकुम् नॅऱि यातु—जायँ, ऐसा मार्ग क्या है; ॲन्न—(देवों के) पूछने पर; अटियिन् मितित्तु एऱि—अपने चरणों को रखते हुए उसके ऊपर चढ़कर; मेकम् नॅट्टु मालै तवळ्—मेघ-मालाएँ जिस पर रेंगती थीं, उस; विन्तम् ॲन्नुम्—विन्ध्य नाम के; विण् तोय्—गगनस्पर्शी; नाकम् अतु—पर्वत को; नाकम् उऱ—नागलोक (पाताल) तक धँसाते हुए; नाकमॅन्न—एक गज के समान; नित्ऱान्—खड़े रहे। १५६

(विन्ध्य पर्वत सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों से वैर करके ऊँचा बढ़ा और ग्रहों की गति रुक गयी और जीवों का उद्यम भी बेकार होने लगा।) देवों ने अगस्त्य से प्रार्थना की कि इन उद्यमी जीवों का आना-जाना कैसे हो? तब अगस्त्य उस पर पग धरकर चढ़े और गज के समान उसके ऊपर खड़े हो गये। तब वह पर्वत धँसकर नागलोक पहुँच गया। (नाकम् के तीन अर्थ हैं— पर्वत, पाताललोक और गज।)। १५६

❀ मूशरवु शूडुमुद लोनुरैयिन् मूवा, माशिऱव वेहॅन वडादुदिशै मेन्नाळ्
नीशमुऱ वान्निॅडु मामलय नेरा, ईशनिह रायुलहु शीर्पॅऱ विरुन्दान् 157

मेल् नाळ्—पहले किसी दिन; वटातु तिचै—उत्तर दिशा; नीचम् उऱ—नीचे चली गई, तब; मूचु अरवु चटु मुतलोन—घने नागाभरण देव (शिवजी) ने; मूवा—वार्द्धक्य से अप्रभावित; माचु इल् तव—और अकलंक तपस्वी; एकु ॲन्न—तुम (दक्षिण) जाओ, कहा, तब; वात्तिन् नॅटु मा मलयम्—आकाश तक ऊँचे बढ़े मलयपर्वत; नेरा—पहुँचकर; ईचन् निकराय्—शिवजी की समान स्थिति में; उलकु चीर् पॅऱ—भूमि को सम बनाते हुए; इरुन्तान्—बस गये। १५७

(एक बार परमेश्वर के विवाह के अवसर पर सभी जीवराशियाँ उत्तर में आ गयीं और भूमि का उत्तरी भाग नीचा हो गया। भूमि का सन्तुलन बिगड़ गया। तब) अनेक सर्पों को आभरण के रूप में धारण

करनेवाले शिवजी ने अगस्त्यजी से कहा कि हे वार्द्धक्य से अप्रभावित तेज वाले ! अकलंक तपस्वी ! आप दक्षिण में चले जाइए। अगस्त्य दक्षिण गए और गगन तक उन्नत मलय पर्वत में रह गये। भूमि समतल हो गयी और अगस्त्य शिवजी की समानता की स्थिति में मान्य हो गये। १५७

उऴक्कुमऱै	नालिनु	मुयर्न्दुलह	मोदुम्
वऴक्किनु	मदिक्कवैयि	नुम्मरवि	ऩाडि
निऴर्पॊऴि	कणिच्चिमणि	नॆऱ्ऱियुमिऴ्	चॆङ्गण्
तऴऱ्पुरै	शुडर्क्कडवु	ळन्दतमिऴ्	तन्दान् 158

निऴल् पॊऴि–प्रकाश बरसानेवाला; कणिच्चि–परशु (तप्त-आयस ?); मणि नॆऱ्ऱि–सुन्दर भाल पर; उमिऴ् चॆम् कण्–लाली फैलानेवाली आँख; तऴल् पुरै चुटर्–अग्नि-सम तेज; कटवुळ्–इनसे युक्त ईश्वर ने; तन्त–जो दिया (सिखाया) था; तमिऴ्–उस तमिऴ को; उऴक्कु मऱै नालिनुम्–परिश्रम के साथ अध्येय चारों वेदों; उलकम् उयर्न्तु ओतुम् वऴक्किनुम्–संसार के श्रेष्ठ ज्ञानियों के प्रयोग-प्रणालियों; मति कवैयिनुम्–और अपनी बुद्धि से किये हुए अन्वेषण के आधार पर; मरपिन्–उचित परिपाटी के अनुसार; नाटि–खूब खोजकर; तन्तान्–व्याकरण शुद्ध बनाकर दिया था। १५८

जाज्वल्यमान परशु, सुन्दर भाल का लाल नेत्र और अग्निसम तेजोमय रूप —इनसे युक्त शिवजी ने अगस्त्यजी को तमिऴ सिखायी। (पाणिनी को संस्कृत —ऐसा पुराण कहता है।) तब अगस्त्य ने बहुत परिश्रम से अध्येय वेद, लोकरूढ़ी और अपनी मेधा-शक्ति का प्रयोग कर उचित रीति से अन्वेषण किया और तमिऴ को व्याकरण-बद्ध श्रेष्ठ भाषा बना दिया। १५८

※ विण्णिनि	ऩिलत्तिनिल्	विहर्पवुल	हिऱ्पेर्
ऍण्णिनि	लिरुक्किनि	लिरुक्कुमॆन	यारुम्
उण्णिनै	करुत्तिनै	युऱप्पॆऱुवॆ	नालॆन्
कण्णिनि	लॆनक्कॊडु	कळिप्पुरु	मनत्तान् 159

विण्णिनिल्–देवलोक में; निलत्तिनिल्–भूलोक में; विकर्प उलकिल्–इनसे जुदा अन्य लोकों में; पेर् ऍण्णिनिल्–बड़े गणित-शास्त्रों में; इरुक्किनिल्–वेदों के ऋचाओं में; इरुक्कुम् ऍन–विद्यमान हैं, ऐसा; यारुम् उळ् निनै करुत्तिनै–सभी जिसका मन में ध्यान करते हैं, उस परमतत्व को; ऍन् कण्णिनिल्–अपनी आँखों के; उऱ पॆऱुवॆन्–गोचर बनते देखूँगा; ऍन कॊटु–यह विचारकर; कळिप्पु उरु मनत्तान्–हर्षितमन हुए। १५९

ऐसे अगस्त्य अब अपार हर्ष से भर गये। क्या आज मुझे ऐसा भाग्य मिल रहा है जिससे वह तत्व, जिसको देवलोक, भूलोक और इनसे अलग अन्य लोकों के लोग वेदों और श्रेष्ठ गणित (तर्क) शास्त्रों में ढूँढ़ते

हैं और सदा-सर्वदा स्मरण करते हैं, आज दृष्टिगोचर होगा ? इस कल्पना से ही उनके मन में आनन्द उमड़ आया । १५९

❀ इरैत्तमऱै नालिनोॆ डियैन्ददपिऱ यावुम्
निरैत्तनॆऱि ञाननिमिर् कल्लिनॆडु नाळिट्
टुरैत्तुमय नारुमरि यादपॊरु ळोविन्
ऱुरैत्तदुवु मालॆनु मुणर्च्चियि नुवप्पान् 160

इरैत्त मऱै–उद्गीत वेद; नालिन् ओटु–चारों के साथ; इयैन्त पिऱ यावुम्–लगे रहनेवाले अन्य सभी शास्त्र, पुराण आदि में; निरैत्त–अभ्यस्त; नॆऱि ञानम्–सन्मार्ग से प्राप्त ज्ञान की; निमिर् कल्लिल्–उत्कृष्ट कसौटी में; नॆटु नाळ् इट्टु उरैत्तुम्–अनेक दिन कसकर देखने पर भी; अयनारुम् अरियात–ब्रह्मदेव को भी अज्ञात; पॊरुळो–वह परवस्तु क्या; इन्ऱु–आज; उरैत्तु–मेरे साथ सम्भाषण करके; उतवुम् आल्–कृपा करेगी; ऎनुम्–इस; उणर्च्चियिन्–भावोद्वेग में; उवप्पान–बहुत आनन्दमग्न हुए । १६०

उद्गीत चारों वेद और अन्य शास्त्र, पुराण आदि का खूब अध्ययन, अन्वेषण करके उससे प्राप्त ज्ञान की कसौटी पर बहुत दिन कसकर देखने पर भी ब्रह्मादि देवों से भी जिस परतत्व को वस्तुतः समझना कठिन है, क्या वह परब्रह्म आज मेरे साथ वार्तालाप करेगा और मुझ पर कृपा करेगा ! हा ! कितना भाग्यवान हूँ ! इस भावोद्वेग में वे हर्षविह्वल हो गये । १६०

❀ उय्न्दन रिमैप्पिल रुयिर्त्तनर् तवत्तोर्
अन्दण रऱत्तिनॆऱि निन्ऱनर्ह ळानार्
वॆन्दिऱ लरक्कर्विड वेर्मुद लऱुप्पान्
वन्दनन् मरुत्तुव नॆनत्तनि वलिप्पान् 161

वॆम् तिऱल् अरक्कर्–भयंकर और शक्तिमन्त राक्षस रूपी; विट वेर् मुतल् अऱुप्पान्–विषैली जड़ को जो निर्मूल करेंगे; मरुत्तुवन्–वे वैद्य; वन्त नन्–आये; इमैप्पु इलर्–निर्निमेष (सुर); उय्न्तनर्–तर गये; तवत्तोर् उयिर्त्तनर्–तपस्वी लोग प्राण-रक्षित हो गये; अन्तणर् अऱत्तिन् नॆऱि–ब्राह्मण धर्म-मार्ग में; निन्ऱनर्कळ् आनार्–चलनेवाले हो गये; ऎन–ऐसा सोचकर; तनि वलिप्पान्–विशेष साहसपूर्ण हो गये । १६१

भयंकर और बलवान राक्षस रूपी विष की जड़ को ही उखाड़ने के लिए वैद्य के समान श्रीराम आ गये । अब निर्निमेष आँखों वाले देवों का संकट मिट गया और वे दुखनिवृत्त हो गए । तपस्वीजन जीवन्त हो गए । ब्राह्मण लोग धर्ममार्गगामी बने । ऐसी धारणा करके वे उत्साही और साहसी बने । १६१

एनैयुयि रामुलवै यावुमिडै वेवित्, तूनुह ररक्करुरु मिऱ्चुडु शिनत्तिन्
आनव तलैक्कडि दवित्तुल हळिप्पान्, वान्मळै वन्ददॆन मैन्दुरु मनत्तान् 162

एऩै उयिराम्–अन्य जीव; उलवै यावुम्–सभी मुरझाए (भयातुर) लोगों को; वेवित्तु–उबालकर; ऊऩ् नुकर्–उनका मांस खानेवाले; अरक्कर्–राक्षस रूपी; उरुमिल् चुट्टु चिऩत्तिऩ्–वज्र के समान जलानेवाले क्रोध की; काऩ अऴलै–दावाग्नि को; कट्टितु अवित्तु–सत्वर बुझाकर; उलकु अळिप्पाऩ्–लोकों की रक्षा करने के लिए; वाऩ मऴै वन्ततु–मेघों से वारिश आई; ऎऩ्ऩ–ऐसा; मैन्तु उऱु मऩत्ताऩ्–उत्साह-भरे मन वाले। १६२

राक्षस लोग, पहले ही उनसे डरकर मुरझाते रहे जीवों को पकड़कर उन्हे उबालकर खा लेते थे। वे गाज के समान जलानेवाली दावाग्नि थे। उस दावाग्नि को बुझाने के लिए आकाश के मेघों से गिरनेवाले जल के समान श्रीराम लोकरक्षणार्थ आ गए। यह सोचकर अगस्त्य उत्फुल्लमन हो गए। १६२

❀ कण्डन ऩिरामऩै वरक्करुणै कूरप्
पुण्डरिह वाणयन नीरपॊऴिय निऩ्ऱान्
ऎण्डिशैयु मेऴुलहु मॆव्वुयिरु मुय्यक्
कुण्डिहैयि ऩिऱ्पॊरुविल् काविरि कॊणर्न्दान् 163

ऎण् तिचैयुम्–आठों दिशाएँ; एऴ् उलकुम्–सातों लोक; ऎ उयिरुम्–कोई भी जीव; उय्य–तरें, इसके लिए; कुण्टिकैयिऩिल्–अपने मण्डलु में; पॊरुवु इल्–उपमा-रहित; काविरि कॊणर्न्ताऩ्–कावेरी नदी को (ब्रह्मलोक से) जो लाये, वे अगस्त्य; इरामऩै वर कण्टऩऩ्–श्रीराम को आते हुए देखकर; करुणै कूर–कृपा के उमगते; पुण्टरिक–कमलपुष्प के समान; वाळ्–प्रकाशमान; नयऩम्–आँखों से; नीर् पॊऴिय–आँसू बरसाते हुए; निऩ्ऱाऩ्–खड़े रहे। १६३

अगस्त्य आठों दिशाओं और सातों लोकों में रहनेवाले जीवों के उद्धार के लिए ब्रह्मलोक से अपने कमण्डलु में कावेरी नदी को लाये थे। ये श्रीराम को आते देखकर आनन्दबाष्पाकुल कमलनेत्रों के साथ श्रीराम के सामने खड़े रहे। १६३

❀ निऩ्ऱवनै वन्दनॆडि योऩडि पणिन्दान्
अऩ्ऱवनु मन्वीडु तळीइयळुद कण्णान्
नऩ्ऱुवर वॆन्ऱुपल नल्लुरै पहर्न्दान्
ऎन्ऱुमुळ दॆन्ऱमि ऴियम्बियिशै कॊण्डान् 164

निऩ्ऱवऩै–वैसे स्थित उनके; वन्त नॆटियोऩ्–उधर जो पधारे, वे विष्णु श्रीराम; अटि पणिन्ताऩ्–चरणों पर नतमस्तक हुए; अऩ्ऱु–तव; ऎऩ्ऱुम् उळ–सदा से रहनेवाली; तॆऩ् तमिऴ्–(दक्षिणी या) मधुसम तमिऴ; इयम्पि–रचकर; इचै

कॊण्टान्–कीर्ति जो पा चुके; अवऩुम्–उन्होंने; अऩ्पॊटु तऴीइ–प्रेम के साथ गले लगाकर; अऴुत कण्णान्–बाष्पपूरित आँखों वाले बनकर; नऩ्ऱु वरवु–शुभ हो आपका आगमन; ऎऩ्ऱु–कहकर; पल नल् उरै–अनेक शिष्टाचार-वचन; पकर्न्तान्–कहे। १६४

आत्मविभोर होकर जो खड़े रहे उनके चरणों को, श्रीराम ने, जो वहाँ पधारे और जो त्रिविक्रम देवता ही थे, नमस्कार किया। तब नित्य रहनेवाली मधुर तमिऴ देकर जो कीर्तिमान बने, उन अगस्त्य ने उन्हें स्नेह के साथ गले लगाकर नेत्रों से आनन्द का बाष्प बहाते हुए कहा कि आपका आगमन शुभ हो। १६४

*** वेदियर्हळ् वेदमॊऴि वेरुपल कूऱ्क्**
कादन्मिह निऩ्ऱॊऴिर् कमण्डलुवि नऩ्नीर्
मादवर्हळ् वीशिनॆडु मामलर्ह डूवप्
पोदुमण नाऱुकुऴिर् शॊलैहॊडु पुक्कान् 165

वेतियर्कळ्–वेदज्ञ ब्राह्मण लोगों ने; वेऱु पल–विभिन्न अनेक; वेत मॊऴि कूऱ–वेद (के) मंगलाशासन किया; मातवर्कळ्–महान तपस्वियों ने; कातल् मिक–प्रेम के बढ़ते; निऩ्ऱु–सामने खड़े होकर; ऒऴिर् कमण्टलुविऩ्–शुभकारी कमण्डलु के; नल् नीर् वीचि–पवित्र जल को (मन्त्रोच्चारण के साथ) छिड़काकर; नॆटु मा मलर्कळ् तूव–सुन्दर फूलों को देर तक बरसाया; पोतु कणम् नाऱुम्–(तब अगस्त्य) तभी खुले हुए पुष्पों की गन्ध से पूर्ण; कुऴिर् चोलै कॊटु–शीतल आश्रम में ले जाकर; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १६५

वेदज्ञ ब्राह्मणों ने विविध वेदों के मन्त्र उच्चारण करते हुए मंगलाशासन किया। महान तपस्वियों ने बढ़ते प्रेम के साथ अपने कमण्डलुओं से पवित्र जल लेकर मंगलदायी मंत्रों को कहते हुए श्रीराम पर छिड़का। तब अगस्त्य श्रीराम (आदि) को लेते हुए नवीन, विकसित पुष्पों की सुगन्ध से पूर्ण अपने तपोवन में ले गये। १६५

*** पॊरुन्दवम लऩ्बॊऴि लहत्तिनिदु पुक्कान्**
विरुन्दव णमैत्तपिऩ् विरुम्बिनऩ् विरुम्बि
इरुन्दव मिऴैत्तवॆन् दिल्लिडैयिल् वन्दॆन्
अरुन्दव मुडित्तनै यरुट्करश वॆन्ऱान् 166

अमलऩ्–निर्मल श्रीराम; पॊऴिल् अकत्तु–तपोवन में; पॊरुन्त–चाव के साथ ठहरने; इनितु पुक्कान्–आनन्द के साथ पहुँचे; अवऩ्–वे महर्षि; विरुम्पित्तऩ्–प्यार के साथ; विरुन्तु अमैत्त पिऩ्–भोजन कराने के बाद; अरुट्कु अरच–कृपालु प्रभु; इरुम् तवम् इऴैत्त–बड़ी तपस्या जहाँ करता रहा; ऎऩतु इल् इटैयिल्–मेरे इस कुटीर में; विरुम्पि वन्तु–आप ही चाहकर आये; ऎऩ् अरुम् तवम् मुटित्तनै–और मेरी तपस्या को सम्पन्न बना दिया; ऎऩ्ऱान्–बोले। १६६

पवित्र पुरुष श्रीराम भी उधर सुख से रहने का विचार करके आनन्द के साथ गये। महर्षि ने उनको भोजनादि सत्कार करने के बाद उनसे कहा कि कृपालु प्रभु ! मेरे इस तपोवन में, जहाँ मैं लम्बे अरसे से तपस्या कर रहा हूँ, आप पधारे और मेरे कुटीर को अपनी इच्छा से पवित्र किया है। आपने ऐसा करके मेरे तप को सुसंपन्न कराया है! मेरी तपस्या सफलीभूत हुई। १६६

❀ ऍऩ्ऱमुऩि यैत्तॊऴु दिराम ऩिमैयोरुम्
निऩ्ऱतव मुऱ्ऱुनॆंडि योरिऩ्नॆंडि योरुम्
उऩ्ऱऩरुळ् पॆऱ्ऱिलरह ळुऩ्ऩरुळ् शुमन्देऩ्
वॆऩ्ऱऩ ऩऩैत्तुलहु मेलिऩियॆ ऩॆऩ्ऱाऩ् 167

ऍऩ्ऱ मुऩियै—ऐसा जिन्होंने कहा उन मुनि को; इरामऩ्—श्रीराम; तॊऴुतु—नमस्कार करके; इमैयोरुम्—देवता लोग; निऩ्ऱ तवम् मुऱ्ऱु—क्रियमाण तपस्या को जो पूरा कर चुके; नॆंटियोरिऩ् नॆंटियोरुम्—श्रेष्ठों से भी श्रेष्ठ वे तपस्वी भी; उऩ्ऱऩ् अरुळ् पॆऱ्ऱिलर्कळ्—आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके; उऩ् अरुळ् चुमन्तेऩ्—मैं आपकी कृपा का पात्र बना हूँ; अऩैत्तुलकुम्—सारे लोकों को; वॆऩ्ऱऩऩ्—जीतनेवाला बन गया; मेल्—इससे श्रेष्ठ; इऩि ऍऩ्—अब क्या चाहिए; ऍऩ्ऱाऩ्—कहा। १६७

ऐसा शिष्टाचारवचन कहनेवाले अगस्त्यजी को नमस्कार करके श्रीराम ने कथन किया कि हे महर्षि ! देव क्या, अपनी तपस्या को सुसंपन्न कर चुके महान से महान तपस्वी क्या —वे भी आपकी कृपा के पात्र नहीं बन सके हैं। लेकिन मैं आपकी कृपा का पात्र बन गया। इसलिए सर्वलोक-जयी हो गया। इससे बढ़कर कौन सा भाग्य है, जो मैं पाना चाहूँ ? । १६७

❀ तण्डह वऩत्तुऱैदि यॆऩ्ऩुरै तरक्कॊण्
डुण्डुवर वित्तिशै यॆऩप्पॆरि दुवन्देन्
अॆण्डहु गुणत्तिऩै यॆऩक्कॊडुयर् शॆऩ्ऩित्
तुण्डमदि वैत्तवऩै यॊत्तमुनि शॊल्लुम् 168

उयर् चॆऩ्ऩि—अपने श्रेष्ठ सिर पर; तुण्ट मति—कलाचन्द्र को; कॊंटु—लेकर; वैत्तवऩ्—धरनेवाले; ऑत्त—(शिवजी से) तुल्य; मुऩि—महर्षि; अॆण् तकु कुणत्तिऩै—प्रशंसनीय गुण वाले; तण्टक वऩत्तु उऱैति—दण्डकवन में रहते हैं; ऍऩ्ऱु—ऐसा; उरै तर कॊण्टु—वचन के कहे जाते सुनकर; उण्टु वरवु इ तिचै—आना होगा आपको इस दिशा में; ऍऩ—यह निश्चय करके; पॆरितु उवन्तेऩ्—बहुत आनन्दित हुआ; ऍऩ—कहा और; चॊल्लुम्—और आगे कहा। १६८

अपने सिर पर कलाचन्द्र धारण करनेवाले शिवजी-सदृश अगस्त्य ने कहा कि सबसे प्रशंसनीय गुण वाले श्रीराम ! यहाँ आगत मुनियों से यह समाचार मिला था कि आप दण्डक वन में वास कर रहे हैं। तब

सोचा कि इसी ओर आपका आगमन संभाव्य है। इस विचार से मैं बहुत आनन्दित हुआ। वे आगे बोले। १६८

❀ ईण्डुरैदि यैयविऩि यिव्वयि ऩिरुन्दाल्
वेण्डियऩ्ऩ मादवम् विरुम्बिनै मुडिप्पाय्
तूण्डुशिऩ्ऩ वाणिरुदर् तोऩ्ऱियुळ रॆऩ्ऱाल्
माण्डुह मलैन्दॆमर् मऩ्ऩत्तुयर् तुडैप्पाय् 169

ऐय–प्रभु; ईण्टु उऱैति–यहाँ ठहरिए; इ वयिऩ् इरुन्ताल्–इधर रहेंगे तो; इऩि–आगे; वेण्टियऩ्ऩ मातवम्–जो चाहेंगे वे महान तप; मुटिप्पाय्–सम्पन्न कर सकोगे; तूण्टु चिऩ–उकसाए हुए क्रोध के साथ; वाळ् निरुतर्–तलवारधारी राक्षस; तोऩ्ऱि उळर् ऍऩ्ऱाल्–प्रकट हो आयँगे तो; माण्टु उक–उनको मारकर गिराते हुए; मलैन्तु–उनसे लड़कर; ऍमर्–हम जैसों का; मऩ्ऩ तुयर्–मन के क्लेश को; तुटैप्पाय्–दूर कर सकोगे। १६९

प्रभु ! यहीं ठहरिए। इधर रहने से आपको सुविधा होगी। आप अपने इच्छित तप, व्रत आदि का पालन कर सकेंगे। और भी उकसाये क्रोध वाले तलवारधारी राक्षस इधर प्रकट होंगे तो आप उन्हें मार मिटाकर हमारी रक्षा कर सकेंगे और हम जैसे मुनियों का क्लेश दूर कर सकेंगे। १६९

❀ वाळ्मऱै वाळ्मऩु नीदियऱम् वाळम्
ताळ्मिमै योरुयर्वर् ताऩवर्ह डाळ्वार्
आळियुळ वऩ्बुदल्व वैयमिलै मॆय्ये
एळुलहम् वाळ्मिऩि यिङ्गुऱैदि यॆऩ्ऱाऩ् 170

आळि उळवऩ् पुतल्व–आज्ञाचक्र-कृषक चक्रवर्ती के पुत्र; इऩि मऱै वाळ्म्–अब वेद जी गए; मऩु नीति वाळ्म्–मनुनीति स्थिर हो गई; अऱम् वाळ्म्–(बत्तीस) धर्म जी जायँगे; एळ् उलकम् वाळ्म्–सातों लोक जी जाएँगे; ताळ्म् इमैयोर्–अवनत देवता लोग; उयर्वर्–उन्नत हो जायँगे; ताऩवर्कळ् ताळ्वार्–दानव अवनत हो जायँगे; ऐयम् इलै–सन्देह नहीं; मॆय्ये–यह सत्य है; इङ्कु उऱैति–यहाँ वास कीजिए; ऍऩ्ऱाऩ्–(अगस्त्य) ऐसा बोले। १७०

आज्ञाचक्र चलानेवाले चक्रवर्ती के पुत्र ! आगे वेद जी जायँगे। मनुनीति सुस्थापित हो जायगी। (बत्तीस ?) धर्म टिक जायँगे। सातों लोक पनपेंगे। अवनत देवता लोग उन्नत हो जायेंगे और राक्षस गिर जायँगे। हाँ, शक नहीं। यह ध्रुवसत्य है। इसलिए आप यहीं वास कीजिए। १७०

❀ शॆरुक्कुडै यरक्कर्पुरि तीमैशिदै वॆय्दत्
तरुक्कुळि दरक्कडिदु कोल्वदु शमैन्दॆऩ्

वरुक्कमऱ्ऱै योयवर् वरुन्दिशैयिन् मुन्दुऱ्
ऱिरुक्कैनल ऍऱ्करुळ्ह वॆन्ऱन निरामन् 171

इरामन्–श्रीराम ने; वरुक्क मऱ्ऱैयोय्–अंग-उपांगों के साथ वेदों के ज्ञाता; चॆरुक्कु उट्ट अरक्कर्–घमण्डी राक्षस; पुरि–जो करते हैं; तीमै–अत्याचार; चितैवु ऍय्त–उनको मिटाते हुए; तरुक्कु अऴि तर–गर्व चूर करते हुए; कट्टितु कॊल्वतु चमैन्तेन्–शीघ्र उनको मारने का संकल्प कर लिया है; अवर् वरुम् तिचैयिल्–उनके आने की दिशा में; मुन्तु उऱ्ऱु–पहले जाकर; इरुक्कै–प्रतीक्षा में रहना; नलन्–अच्छा होगा; ऍऱ्कु अरुळ्क–हमें आज्ञा देने की कृपा करें; ऍन्ऱनन्–यह इच्छा सुनाई। १७१

श्रीराम ने अगस्त्य से कहा कि हे श्रेणीबद्ध वेदों के ज्ञाता ! मैंने इन गर्वीले राक्षसों के अत्याचारों का अन्त करने के लिए उनके घमण्ड को चूर करते हुए उन्हें मिटाने का संकल्प किया है। इसलिए उनके आने के मार्ग में सामने जाकर प्रतीक्षा में रहना सुविधाजनक होगा —ऐसा समझता हूँ। आप मुझे आशीर्वाद के साथ आज्ञा दें। १७१

❀ विऴुमियदु शॊऱ्ऱनैयिव् विल्लिदिवण् मेन्नाळ्
मुळ्मुदल्वन् वैत्तुळदु मूवुलहुम् यानुम्
वऴिपड विरुप्पदिदु तन्नॊवडि वाळिक्
कुऴुवळ्विल् पुट्टिलॊडु कोडियॆन नल्हि 172

विऴुमियतु चॊऱ्ऱै–श्रेष्ठ बात कही; इवण्–यहाँ; इ विल् इतु–यह धनु; मेल् नाळ्–पहले किसी दिन; मुळु मुतल्वन् वैत्तु उळतु–परात्पर ब्रह्म ने रखा था; मू उलकुम्–त्रिभुवन; यानुम्–और मैं; वऴि पट इरुप्पतु–इसकी पूजा करते हैं, ऐसा; इतु तन्नै–इसको; वटि वाळि कुऴु–तीक्ष्ण शर-राशि; वऴुवु इल्–अक्षय; पुट्टिल् ऒटु–तूणीर के साथ; कोटि–ग्रहण कर लें; ऍन–कहकर; नल्कि–उन्हें प्रदान करके। १७२

अगस्त्यजी ने उत्तर में कहा कि हे श्रीराम ! आपने अच्छा सोचा है ! यहाँ यह जो धनुष है, यह परात्पर विष्णुदेव के पास रहा था। यह मेरे और त्रिभुवन द्वारा पूजित है। इसको और तीक्ष्ण अनेक शरों को अक्षय तूणीरों के साथ आप ग्रहण कर लीजिए। यह कहकर उन्होंने उनको श्रीराम के पास समर्पित किया। १७२

❀ इप्पुवन मुऱ्ऱुमॊरु तट्टिनिडै यिट्टाल्
ऒप्पुर विऱ्ऱॆन वुरैप्परिय वाळुम्
वॆप्पुरुवु पॆऱ्ऱवरन् मेरुवरै विल्ला
मुप्पुर मेरित्तदनि मॊय्हणैयु नल्हा 173

इ पुवनम् मुऱ्ऱुम्–इस भुवन भर को; ऒरु तट्टिन् इटै–एक (तराजू के) पलड़े में रखकर; इट्टाल–(इसको दूसरे पलड़े में) रखें तो; ऒप्पु वरविऱ्ऱु ऍन–समान

होंगे; उरैप्पु अरिय–ऐसा कहने न योग्य; वाळम्–एक तलवार को; वॅप्पु उरुवु पॅर्र्–अग्नि रूप के; अरन्–हरदेव ने; मेरु वरै विल्ला–मेरुपर्वत को धनुष बनाकर; मुप्पुरम् ऍरित्त–त्रिपुर को जिससे जलाया; तत्ति मॉय् कणैयुम्–उस अनुपम सारयुक्त शर को भी; नल्का–देकर। १७३

और भी एक तलवार है। उसे तराजू के एक पलड़े में और तीनों लोकों को एक पलड़े में रखेंगे तो दोनों समान होंगे —ऐसा कहना सही नहीं होगा क्योंकि तलवार तीनों लोकों की विजय करने की शक्ति रखती है और महिमामय है। उन्होंने वह तलवार श्रीराम के पास दी। और अग्निमूर्ति शिवजी ने महामेरु को धनुष बनाकर जिस अप्रतिम शर से त्रिपुरदाह कराया था, उस बाण को भी उनके पास दिया। १७३

❀ ओङ्गुमर नोङ्गिमलै योङ्गिमण लोङ्गिप्
पूङ्गुलै कुलावुहुळिर् शोलैपुडै विम्मित्
तूङ्गुदिरै याऱुतवळ् शूळ्लदोर् कुन्ऱिन्
पाङ्गरुळ दालुरैयुळ् पञ्जवडि मञ्ज 174

मञ्च–राजकुमार; ओङ्कु मरन् ओङ्कि–ऊँचे पेड़ जहाँ ऊँचे उगे हैं; मलै ओङ्कि–उन्नत पर्वत हैं; मणल् ओङ्कि–बालू के ऊँचे टीले पाये जाते हैं; पूम् कुलै कुलावु–पुष्पों के गुच्छे मिलते है; कुळिर् चोलै–शीतल उपवन; पुटै विम्मि–पार्श्वों में उगे रहते हैं; तूङ्कु तिरै आऱु–हिलनेवाली लहरों से युक्त नदियाँ; तवळ्–बहती है; चूळ्लतु–ऐसे पार्श्वस्थलों के; ओर् कुन्ऱिन् पाङ्कर्–एक पर्वत के पास; पञ्चवटि–पंचवटी नाम का; उऱै उळ्–एक वासयोग्य स्थान; उळतु–है। १७४

यह सब देने के बाद अगस्त्य ने सुझाया कि श्रीराम ! पंचवटी नाम का एक स्थान है। वहाँ ऊँचे तरु हैं, उन्नत पर्वत है, उच्च सिक्ता-टीले हैं। वह ऐसे पर्वत पर है, जिसके पार्श्वों में पुष्प-भरे उपवन हैं और झलमलाती लहरों वाली नदियाँ बहती हैं। वह पंचवटी वासयोग्य स्थान है। १७४

कन्ऩियिळ वाळैकनि यीवकदिर् वालिन्, शॅन्नॅलुळ तेतॉळ्हु पोदुमुळ दॅय्वप्
पॉन्ऩियॅन लायपुन लाऱुमुळ पोदा, अन्ऩमुळ पॉन्ऩिवळॉ डन्बिन्विळै याड 175

कन्ति इळ वाळै–बाल-कदलियाँ; कनि ईव–फल देनेवाली हैं; कतिर् वालिन्–प्रकाशमय पूँछ जैसे छोटे भाग के साथ; चॅन्नॅल् उळ–शालि के धान मिलेंगे; तेन् ऑळुकु पोतुम् उळ–मधु बरसानेवाले पुष्प है; तॅय्व पॉन्ऩि ऍन्ऩल् आय–दिव्य कावेरी नदी के ही समान रहनेवाली; पुऩल् आऱुम् उळ–अच्छे जल की नदियाँ भी हैं; पॉन् इवळॉटु–श्रीलक्ष्मी इनके साथ; अन्पिन् विळैयाट–प्रेम के साथ मनोरंजन करने के लिए; पोता–सारस; अन्ऩम्–और हंस पक्षी; उळ–है। १७५

और भी वहाँ आपको कदली के बालवृक्ष मिलेंगे, जो मधुर फल दिलाएँगे। दुम के समान पतले अंग के साथ रहनेवाले लाल रंग के शालि के धान वहाँ पाये जाते हैं। मधु बरसानेवाले नवीन पुष्प हैं। दैवी

कावेरी नदी के समान पवित्र और मनोरम जल वाली नदियाँ हैं। इन श्रीलक्ष्मीदेवी (सीताजी) के साथ प्रेमसहित खेलने के लिए सारस और हंस पक्षी रहते हैं। १७५

❀ ऐहियिनि यव्वयि निरुन्दुरैमि नॆन्ऱान्
मेहनिऱ वण्णनुम् वणङ्गिविडै कॊण्डान्
पाहनैय शॊल्लियॊडु तम्बिपरि विऩ्पिन्
पोहमुनि शिन्दैतॊड रक्कडिदु पोनान् 176

इनि–आगे; अ वयिन् एकि–उधर जाकर; इरुन्तु उऱैमिन्–रहकर वास कीजिए; ऍन्ऱान्–(अगस्त्य ने) कहा; मेक निऱ वण्णनुम्–मेघवर्ण श्रीराम ने भी; वणङ्कि–नमन करके; विटै कॊण्टान्–विदा ली; पाकु अनैय चॊल्लि ऒटु–चासनी-सम बोली वाली श्री सीताजी के साथ; तम्पि–अनुज लक्ष्मण भी; परिविन्–श्रद्धा के साथ; पिन् पोक–उनका पीछा करते गये; मुनि चिन्तै तॊटर–(अगस्त्य) मुनि का मन भी पीछा करता चला; कटितु पोनान्–वे शीघ्र वहाँ से गये। १७६

आप आगे वहीं जाकर वास करें। —अगस्त्य ने कहा। मेघवर्ण श्रीराम ने भी उनको नमस्कार करके उनसे विदा ली। जब वे जाने लगे, तो चासनी-सम बोली वाली देवी सीताजी और कनिष्ठ भ्राता लक्ष्मण उनके पीछे गये। अगस्त्य का मन भी उनका पीछा करता गया। श्रीराम शीघ्र चले। १७६

4. शडायु काण् पडलम् (जटायु-दर्शन पटल)

❀ नडन्दनर् कावदम् बलवु नन्नदि
किडन्दन निन्ऱन गिरिहळ् केण्मैयिल्
तॊडर्न्दन तुवन्ऱिन शूळल् यावैयुम्
कडन्दनर् कण्डनर् कळुहिन् वेन्दैये 177

कावतम् पलवुम्–अनेक 'काद' (कोस) दूर; नटन्तनर्–पैदल चलकर; किटन्तन नल् नति–मार्ग में पड़ी रही अनेक श्रेष्ठ नदियाँ; निन्ऱन–(अकेले) स्थित; केण्मैयिन् तॊटर्न्तन–मित्रों के समान परस्पर मिले रहे; किरिकळ्–अनेक पर्वत; तुवन्ऱिन चूळल् यावैयुम्–(बीच-बीच में) घने उपवन; कटन्तनर्–पार करके; कळुकिन् वेन्तै–गृध्रराज को; कण्टनर्–(उन्होंने) देखा। १७७

श्रीराम आदि तीनों अनेक कोस दूर गये। रास्ते में अनेक नदियाँ पड़ी थी। पर्वत और पर्वतश्रेणियाँ पाई गयी। अनेक उपवन मिले। उन सबको पार करके उन्होंने जटायु के दर्शन किये। १७७

❀ मुन्दॊरु करुमलै मुहट्टु मुन्ऱिलिल्
शन्दिर नॊळियॊडु तळवच् चात्तिय

अन्दमिल् कलैहड लमरर् नाट्टिय
मन्दर गिरियॆन वयङ्गु वान्ऱनै 178

मुन्तु–पहले; अमरर्–सुर; अन्तम् इल्–अपार; कलै कटल्–गर्जनशील सागर में; चन्तिरन् ऒळि ऒटु तळुव–चन्द्र-किरण के साथ मिलाकर; चात्तिय नाट्टिय–आधार-स्तम्भ के रूप में स्थापित; मन्तर किरि ऎन–मन्दरपर्वत के समान; ऒरु करु मलै मुकट्टु मुन्ऱिलिल्–एक काली गिरि की चोटी पर खुले थल में; वयङ्कुवान् तनै–शोभायमान उनको। १७८

वे (जटायु) उस मन्दरपर्वत के समान शोभित थे, जिसको अमृतमंथन के उस समय गर्जनशील सागर-मध्य चन्द्र की किरणों से लगाते हुए आधार-स्तम्भ के रूप में गाड़ दिया गया था। वे एक काले (या बड़े) पर्वत की चोटी पर आँगन-सम खुले थल में शान के साथ विराजमान थे। १७८

उरुक्किय शुवणमॊत् तुदयत् तुच्चिशेर्
अरुक्कनि निळल्पडैत् तलङ्गु तिक्कॆलाम्
तॆरिप्पुरु शॆऱिशुडर्च् चिऱैयि नाऱ्ऱिशै
विरित्तिरुन् दनॆन विळङ्गु वान्ऱनै 179

उरुक्किय चुवणम् ऒत्तु–पिघले हुए सोने के समान; उतयत्तु उच्चि चेर्–उदयगिरि के शृंग पर पहुँचे हुए; अरुक्कनिल्–सूर्य के समान; निळल् पटैत्तु–कान्ति से युक्त होकर; अलङ्कु तिक्कु ऎलाम्–अन्धकार के कारण व्यथित रहनेवाली सभी दिशाओं को; तॆरिप्पु उरु–प्रकाश दिलानेवाले; चॆऱि चुटर् चिऱैयिनाल्–घनी दीप्ति वाले पक्षों को; तिचै विरित्तु इरुन्तनन्–सभी दिशाओं में फैलाये रहे; ऎन–ऐसा कहने योग्य रीति से; विळङ्कुवान् तनै–दृश्यमान उनको। १७९

वे पिघला-स्वर्ण-सम थे। उदयगिरि पर आये सूर्य के समान कान्ति-युक्त थे। अन्धकार से आक्रान्त दिशाओं में प्रकाश करते हुए मानो वे अपने पक्ष फैलाए हुए थे, ऐसे दृश्यमान उनको श्रीराम आदि ने देखा। १७९

वानिऱ विशुम्बॊळिन् मऱैयत् तन्मणिक्
कानिऱच् चेयॊळि कतुवक् कण्णहल्
नीनिऱ वरैयिनिऱ् पवळ नीळ्कॊडि
पोनिऱम् बॊलिन्दिडप् पॊलिहिन् ऱान्ऱनै 180

वाल् निऱ विचुम्पु–विशाल और प्रभावान आकाश की; ऒळिल् मऱैय–छटा को छिपाते हुए; कण् अकल्–विस्तृत; नील् निऱ वरैयिनिल्–नीलवर्ण पर्वत पर; तन् काल् निऱ–अपने पैरों का रंग; मणि चॆय् ऒळि–लाल सुन्दर आभा; कतुव–फैलाते हुए; पवळ नीळ कॊटि पोल्–प्रवाल की लम्बी लताओं के समान; निऱम् पॊलिन्तिट–वहाँ शोभायमान करते हुए; पॊलिकिन्ऱान् तनै–तेज के साथ रहनेवाले उनको। १८०

उनके तेज के सामने विशाल और आभायुक्त आकाश की शोभा छिप

गयी थी। नीले पर्वत पर उनके लाल पैर माणिक की-सी प्रभा कर रहे थे। वे प्रवाललता-समान शोभ रहे थे। ऐसे विराजमान उनको; । १८०

❀ तूय्मैय निरुङ्गलै तुणिनद केळ्वियन्
वाय्मैयन् मरुविलन् मदियिन् कूर्मैयन्
आय्मैयिन् मन्दिरत् तऱ्ऱिऩ तामॆन्ऩच्
चेय्मैयि ऩोक्कुरु शिऱुह णाऩ्ऱऩै 181

तूय्मैयन्–शुचिकर्मा; इरुम् कलै तुणिन्त केळ्वियन्–गम्भीर अध्ययन-ज्ञान के साथ श्रवण-ज्ञान से युक्त; वाय्मैयन्–सत्यसंध; मरु इलन्–निर्दोष; मतियिन् कूर्मैयन्–सूक्ष्ममति; आय्मैयिन्–दीर्घदर्शी; मन्तिरत्तु अऱिञन् आम् ॲऩ–मंत्रणा में कुशल मन्त्री के समान; चेय्मैयिन् नोक्कु उरुम्–दूर तक देख सकनेवाले; चिरु कण्णान् तऩै–छोटे नेत्रों वाले उनको। १८१

वे शुचिपूर्ण थे। अध्ययन और श्रवण से प्राप्त गम्भीर ज्ञान से युक्त थे। सत्यसंध थे और निर्दोष थे। सूक्ष्मबुद्धि थे। दीर्घदर्शिता रखनेवाले मंत्रणा में निपुण मन्त्री के समान उनके बहुत दूर तक देख सकनेवाली छोटी आँखें थीं। १८१

❀ वीट्टिवा ळवुणरै विरुन्दु कूऱ्ऱिऩै
ऊट्टिवीऴ् मिच्चिऩा नुण्डु नाडॊऱुम्
तीट्टिमे विन्दिरन् शिरुहण् यानैयिन्
तोट्टिपोऱ् ऱेय्न्दॊळिर् तुण्डत् ताऩ्ऱऩै 182

वाळ् अवुणरै–तलवारधारी दानवों को; वीट्टि–मारकर; कूऱ्ऱिऩै विरुन्तु ऊट्टि–यम को दावत में खिलाकर; वीऴ्–बचकर गिरनेवाले; मिच्चिल्–जूठन को; नाळ् तॊऱुम् उण्टु–प्रतिदिन खाकर; चिरु कण् यानैयिन् मेवु इन्तिरन्–छोटी आँखों वाले (ऐरावत-संज्ञित) गज पर आसीन इन्द्र के; तोट्टि पोल्–अंकुश के समान; तीट्टि–पैनायी जाकर; तेय्न्तु ऑळिर्–उस कारण से घिसकर उज्ज्वल दिखनेवाली; तुण्टत्तान् तऩै–चोंच के उनको। १८२

रोज वे तलवारधारी राक्षसों को युद्ध में मारकर यम को खिलाते थे और बचेखुचे जूठन को खाते थे। उनकी चोंचे छोटी-छोटी आँखों वाले ऐरावत गज पर सवार इन्द्र के अंकुश के समान पैनाई गयी और घिसी हुई थी और उससे चमकदार लगती थीं। १८२

❀ कोळिरु नालिनो डॊऩ्ऱु कूडिय, आळुरु तिहिरिबो लारत् ताऩ्ऱऩै
नीळुयर् मेनियि ऩॆऱ्ऱि मुऱ्ऱिय, वाळिर वियिऱ्पॊलि मवुलि याऩ्ऱऩै 183

इरु नालिन् ओटु–दो के चार के साथ; ऑन्ऱु कूटिय–एक मिलाकर (नौ) रहे; कोळ्–ग्रहों को; आळ् उरु तिकिरि पोल्–चालित करनेवाले (शिशुमार नामक या

विष्णु के) चक्र के समान शोभायमान; आरत्तान् तन्नै–हार से अलंकृत उनको; नीळ् उयर् मेत्तियिन्–विशाल और दीर्घ शरीर के; नॅंड्रि–शिखर पर; मुड्रिय–रखे गये; वाळ् इरवियिन्–उज्ज्वल सूर्य के समान; पॊलि–शोभनेवाला; मवुलियान् तन्नै–किरीटधारी को। १८३

उनके वक्ष पर एक हार था। वह शिंशुमार या विष्णु के चक्र और उसके अधीन घूमनेवाले नवग्रहों के समान शोभायमान था। उनके सिर पर उज्ज्वल सूर्य के समान किरीट सजा हुआ था। ऐसे हार और किरीटधारी को (श्रीराम ने देखा)। १८३

❀ शॊऱ्पङ्ग मुऱनिमि रिशैयिन् शुम्मैयै, अऱ्पङ्ग मुऱवरु मरुणन् शॅम्मलैच्
चिऱ्पङ्गॊळ् पहलॆन्नक् कडिदु शॆन्ऱुतीर्, कऱ्पङ्ग ळॆन्नैप्पल कण्डु ळान्ऱन्नै 184

चॊल् पङ्कम् उऱ–शब्द (भाषा) को भग्न (पंगु) करते हुए; निमिर् इचैयिन् चुम्मैयै–उठे हुए यश की राशि के समान; अल् पङ्कम् उऱ–अन्धकार को मिटाते हुए; वरुम्–आनेवाले; अरुणन् चॅम्मलै–अरुण के पुत्र (जटायु) को; कटितु चॆन्ऱु तीर्–शीघ्र व्यतीत होनेवाले; चिऱ्पम् कॊळ् पकल् ऎन्न–अल्प दिन के समान; कऱ्पङ्कळ् ऎन्नै–कल्प कहलानेवाले काल; पल–अनेक; कण्टु उळान् तन्नै–जो देख चुके, उनको। १८४

उनका यश इतना बड़ा था कि शब्द में उसको समझाने की शक्ति नहीं थी; शब्द भग्न हो जाते थे। वे अन्धकार को मिटाते हुए आनेवाले (सूर्य-सारथी) अरुण के पुत्र थे। उन्होंने कई कल्प देखे थे, जो छोटे-छोटे दिनों के समान व्यतीत हो चुके थे। ऐसे उनको; । १८४

❀ ओङ्गुयर् नॅडुवरै यॊन्ऱि निन्ऱदु, ताङ्गल दिरुनिलन् दाळ्न्दु ताळ्वुऱ
वीङ्गिय वलियिन निरुन्द वीरनै, आङ्गव रणुहिन रयिर्क्कुञ् जिन्दैयार् 185

ओङ्कु उयर्–ऊँचे बढ़े हुए; नॅंटु वरै ऒन्ऱित्–बड़े पर्वत पर; निन्ऱु–रहकर; अतु ताङ्कलतु–वह बोझ उठा न सककर; इरु निलम् ताळ्न्तु–विशाल भूमि में धँसकर; ताळ्वु उऱ–अन्दर चला गया, ऐसा; वीङ्किय वलियिन्निन् इरुन्त–बढ़े हुए बल के साथ रहे; वीरनै–वीर जटायु को; आङ्कु–वहाँ; अवर्–वे तीनों; अयिर्क्कुम् चिन्तैयर्–शंकितमन होकर; अणुकिनर्–उनके समीप गए। १८५

वे एक उन्नत पर्वत पर विराजमान थे। वह पर्वत उनके बोझ से भूमि के अन्दर धँस गया था। उतने वलवान उन वीर पर श्रीराम आदि ने शंकित मन से दृष्टिपात किया। १८५

❀ इरुदियॆन् तन्वयि नियऱ्ऱ वॆय्दिनान्
अऱिविलि यरक्कना मल्ल ना मॆनिल्
ऎरुळ्वलिक् कलुळनै यॆन्न वुन्नियच्
चॆऱिहळल् वीररुञ् जॆयिर्त्तु नोक्किनार् 186

चॅरिकऴल् वीररुम्–ठोस पायलधारी वीर; तन् वयिन्–अपना; इऱुतियै–अन्त; इयऱ्ऱ–कराने के लिए; ॲय्तिन्ऩात्–जो आया; अऱिवु इलि अरक्कन् आम्–यह बुद्धिहीन राक्षस है; अल्लन् आम्–नहीं; ॲतिल–तो; ॲऱुऴ् वलि–अत्यधिक बलशाली; कलुऴन् आम्–गरुड़ होगा; ॲन्ऩ उन्ऩि–ऐसा सोचकर; चॅयिर्त्तु–कोप करके; नोक्कितार्–उनको देखा। १८६

भारी चरणवलय-धारी वीरों ने अनुमान लगाया— "यह अपना अन्त कराने के लिए आया हुआ एक राक्षस ही होगा! नही तो वह बलवान गरुड़ हो!" उन्होंने जटायु को खूब देखा। १८६

ॐ वनैहऴल्	वरिशिलै	मदुहै	मैन्दरै
अन्नैयवन्	ऱानुङ्गण्	डयिर्त्तु	नोक्किन्ऩान्
विन्नैयऱु	नोऱ्बिन	रल्लर्	विल्लिनर्
पुन्नैशडै	मुडियिनर्	पुलव	रोवॅन्ऩा 187

अन्नैयवन् तानुम्–जटायु भी; वन्नै कऴल् वरि चिलै–पहनी हुई पायल और बन्धनयुक्त धनु के धारक; मतुकै मैन्तरै–बलवान राजकुमारों को; कण्टु–देखकर; विन्नै अऱु नोऱ्पित्तर् अल्लर्–कर्म काटने के व्रती (तपस्वी) नहीं हैं; विल्लित्तर्–धनुर्धर हैं; पुन्नै चटै मुटियित्तर्–निर्मित जटाधारी हैं; पुलवरो–देव हैं क्या; ॲन्ऩ–ऐसा अयिर्त्तु–सन्देह करके; नोक्किन्ऩान्–देखा। १८७

जटायु ने भी पायलधारी धनुर्द्धर वीरों को देखा। प्रतापी उनको देखकर जटायु के मन में प्रश्न उठा कि ये कौन है? 'ये कर्मनाशार्थ तप करनेवाले तपोव्रती नहीं है!- उनके हाथों में चाप है और सिरों पर जटा है। क्या ये देवता है?' सन्देह के साथ उन्होंने उन पर दृष्टि दौड़ाई। १८७

ॐ पुरन्दरन् मुदलिय पुलवर् यारैयुम्, निरन्दर नोक्कुवॅ न्नेमि यानुमव्
वरन्दरु मिऱैवनु मऴुव लाळनुम्, करन्दिल रॅन्नैया नॅन्ऱुङ् गाण्बॅनाल् 188

पुरन्तरन् मुतलिय पुलवर् यारैयुम्–पुरन्दर आदि सभी देवों को; निरन्तरम् नोक्कुवेन्–प्रतिदिन देख रहा हूँ; नेमियानुम्–चक्रधारी विष्णु और; अ वरम् तरु इऱैवनुम्–वे वरदायी भगवान ब्रह्मा और; मऴुवलाळनुम्–'मऴु' नामक (परशु ?) हथियारधारी (शिवजी) के भी; यान् ॲन्ऱुम् काण्पॅन् आल्–मै रोज दर्शन करता हूँ, इसलिए; ॲन्नै करन्तिलर्–मुझसे अपना रूप नहीं छिपाएँगे। १८८

जटायु आगे भी सोचने लगे। पुरन्दर आदि देवों को तो मैं रोज देख रहा हूँ। चक्रधारी विष्णु, भक्तों को इच्छित वर देनेवाले ब्रह्मा, मऴु (परशु या तप्तलौह) आयुधधारी शिव —इनके तो प्रतिदिन दर्शन कर रहा हूँ। वे हमसे अपना यथार्थ रूप नही छिपा सकते। १८८

ॐ कामन्नॅन्	बवन्नैयुङ्	गण्णि	नोक्किन्ऩेन्
तामरैच्	चॅङ्गणित्	तडक्कै	वीरर्हळ्

पूमरु पौलङ्गळऱ् पौडियि ऩ्ऩोडुमॊप्
पामलऩ् वरुवव राऱ्हॊ लामिवर् 189

कामऩ् ॲऩ्ऩपवत्तैयुम्–मन्मथ को भी; कण्णिऩ् नोक्किनेऩ्–आँखों से देखा है; तामरै चॅम् कण्–कमलदल-सम लाल आँखें; तट कै–दीर्घ भुजाएँ; इ वीरर्कळ्–(इनसे युक्त) इन वीरों के; पू मरु पॊलऩ् कळ्ल्–कमलगन्ध-युक्त उज्ज्वल चरणों की; पॊटियित्तोटुम्–धूलि के साथ भी; ऑप्पु आम् अलऩ्–तुल्य नहीं हो सकता; वरुपवर् इवर्–आनेवाले ये; आर् कॊल्–कौन हैं। १८९

मैंने कामदेव को भी अपनी आँखों से देखा है। वह मन्मथ कमलदल के समान अरुण आँखें और दीर्घ विशाल हाथों के साथ मनोरम आभायुक्त इनके पास पायलधारी चरण पर लगी धूलि से भी तुल्य नहीं हो सकता। फिर ये कौन हैं, जो इस तरफ़ आ रहे हैं? । १८९

❀ उलहॊरु मूऩ्ऱुन्दम् मुडैमै याक्कुरुम्
अलहरु मिलक्कण ममैन्द मॅय्यिऩर्
मलर्महट् कुवमैया ळोडुम् वन्दविच्
चिलैवलि वीररैत् तॅरिहि लेऩ्ऩा 190

उलकु ऑरु मूऩ्ऱुम्–स्वर्ग, भूतल और पाताल के तीनों लोकों को; तम् उटैमै आक्कुरुम्–अपने अधीन बना सकनेवाला; अलकु अरुम्–अमाप; इलक्कणम् अमैन्त–सामुद्रिका लक्षणों से युक्त; मॅय्यिनर्–दिव्य रूप वाले हैं; मलर् मकट्कु उवमैयाळोटुम्–कमलजा से तुल्य देवी के साथ; वन्त–जो इधर आये हैं; इ चिलै वलि वीररै–इन धनुर्धर बलवान वीरों को; तॅरिकिलेऩ्–जान नहीं पाता; ॲऩ्ऩा–कहकर। १९०

इनके दिव्यशरीर अपार लावण्यमयी हैं। सभी सामुद्रिका लक्षणों के अनुसार सुघड़ बने हैं। उनकी सुन्दरता तीनों लोकों को अपने अधीन करनेवाली है। इनके साथ जो देवी आती हैं, वह कमलजा लक्ष्मीदेवी के समान हैं। ये वीर धनुर्धर कौन हैं? मैं समझ नहीं पाता। १९०

❀ करुमलै शॅम्मलै यऩैय काट्चियर्
तिरुमहिळ् मार्बिऩर् शॅङ्गण् वीरर्दाम्
अरुमैशॅय् गुणत्तिऩॅऩ् ऱुणैव नाळियाऩ्
ऑरुवऩै यिरुवरु मॊत्तु ळाररो 191

करुमलै चॅम्मलै अऩैय–काली गिरि और लाल गिरि के समान; काट्चियर्–दर्शन देनेवाले; तिरु मकिळ् मार्पिनर्–वीरश्री जिन पर मोद के साथ वास करती थी, वैसे वक्ष वाले; चॅङ्कण् वीरर्–अरुणाक्ष बली; अरुमै चॅय्–अभूतपूर्व रूप से प्राप्त; कुणत्तिऩ्–श्रेष्ठ गुणों के; ॲऩ् तुणैवऩ्–मेरे मित्र; आळियाऩ्–चक्रवर्ती; ऑरुवनै–उन अद्वितीय (दशरथ) के ही; इरुवरुम्–ये दोनों; ऑत्तुळार्–सदृश दिखाई देते है। १९१

ये काले पर्वत और लाल स्वर्ण-पर्वत के समान दर्शन देते हैं। इनके

वक्षस्थल वीरश्री का वासस्थान-सा लगते हैं। अरुणाक्ष ये दोनों अच्छे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण मेरे अत्यन्त मित्र चक्रवर्ती दशरथ के ही सदृश लगते हैं। १९१

❀ ऍन्ऱप्पल	निनैप्पिनन्	मनत्तु	ळॅण्णुवान्
शिन्ऱप्पडै	वीरर्मेर्	चॅल्लु	मन्बिनान्
कनप्पडै	वरिशिलैक्	काळै	यीर्हळ्यार्
मनप्पड	वॅन्ऱक्कुरै	वळङ्गु	वीरॅन्ऱान् 192

ऍन्ऱ—ऐसे-ऐसे; मनत्तुळ् ऍण्णुवान्—मन में सोचते हुए; पल निनैप्पिनन्—विविध अनुमान करनेवाले; चिनम् पटै वीरर् मेल्—क्रोधशील हथियारधारी उन वीरों पर; चॅल्लुम् अन्पिनान्—सहज उठते हुए प्रेम के साथ; कन पटै—भारी हथियार; वरि चिलै—और वन्धनसहित धनु के साथ रहनेवाले; काळै यीर्कळ्—ऋषभ-सम तरुण वीर; यार्—कौन हो; मनम् पट—मेरे मन को समझाते हुए; ऍन्तक्कु उरै वळङ्कुवीर्—मुझे उत्तर दो; ऍन्ऱान्—(जटायु ने) कहा। १९२

इस तरह जटायु उधेड़बुन में लगे हुए अनेक विचार करते रहे। उन्होंने अनुभव किया, सहज ही उन भयंकर क्रोधशील हथियारधारी वीरों पर प्रेम पैदा हो रहा है। उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण से पूछ ही लिया कि भारी हथियार और वन्धनयुक्त शरासन रखनेवाले वीर! ऋषभ-सम तरुण तुम लोग कौन हो? मेरे मन में साफ़ ज्ञान हो, ऐसा मुझे प्रत्युत्तर दो। १९२

❀ विन्ऱविय कालैयिन् मॅय्म्मै यल्लदु, पुत्तैमलर्त् तारवर् पुहल्हि लामैयाल्
कन्तैहडल् नॆडुनिलङ् गाव लाळियान्, वन्तैहळर् ऱयरदन् मैन्दर् यामॆन्ऱार् 193

विनविय कालैयिन्—जब जटायु ने पूछा, तब; पुत्तै मलर् तार् अवर्—सुन्दर पुष्पमाला से अलंकृत उन्होंने; मॅय्म्मै अल्लतु—सत्य के सिवा; पुकल्किलामैयाल्—नहीं बोल सकते, इसलिए; याम्—हम; कत्तै कटल् नॆटु निलम्—गर्जनशील समुद्र से वलयित इस विशाल भूमि के; कावल्—रक्षक; आळियान्—चक्रवर्ती; वत्तै कळल् तयरतन्—वीर-चरण-कंकणधारी दशरथ के; मैन्तर्—पुत्र है; ऍन्ऱार्—कहा। १९३

जब जटायु ने यह प्रश्न किया, तब उन्होंने सच्ची बात कह दी। वे सत्य के सिवा असत्य बोलनेवाले नहीं थे। इसलिए उन्होंने बताया कि गरजते सागर से वलयित भूलोक के भर्त्ता चक्रवर्ती, वीरचरणकंकण-धारी दशरथ के पुत्र है। १९३

❀ उरैत्तलुम्	पॊङ्गिय	वुवहै	वेलैयन्
तरैत्तलै	यिऴिन्दवर्त्	तऴुवु	कादलन्
विरैत्तडन्	दारिनान्	वेन्दर्	वेन्दन्ऱन्
विरैत्तडन्	दोळिणै	वलिय	वोवॆन्ऱान् 194

उरैत्तलुम्–कहते ही; पोङ्किय उवकै वेलैयन्–उमड़नेवाले मोद-सागर के समान जटायु; तर् तलै इऴिन्तु–भूमि पर उतर आकर; अवर् तऴुवुन् कातलन्–उनको आलिंगन करके प्रेमातुर होकर; विरै तटम् तारिनान्–सुवासित और बड़ी माला से अलंकृत; वेन्तर् वेन्तन् तन्–राजाधिराज के; वरै तटम् तोळ् इणै–पर्वत-सम बड़े कंधे दोनों; वलियवो–वल से पूर्ण हैं क्या; अन्नान्–(जटायु ने) पूछा। १९४

ज्योंही राजकुमारों ने यह उत्तर दिया, त्योंही जटायु के मन में आनन्द उठा और सागर-सा वढ़ गया। वे नीचे भूमि पर उतर आये। उनको गले से लगाकर प्रेम के साथ जटायु ने प्रश्न किया कि सुवासित और बड़ी माला से शोभित राजाधिराज दशरथ की पर्वत-सम विशाल भुजाओं का जोड़ा वल संयुक्त है ? । १९४

❀ मऱक्कमुऱ् ऱाददन् वाय्मै कात्तवन्
तुऱक्कमुऱ् ऱानॆन विरामन् चॊल्ललुम्
इऱक्कमुऱ् ऱानॆन वेक्क मॆय्दिनान्
उऱक्कमुऱ् ऱानॆन वुणर्वु नीङ्गिनान् 195

अवन्–वे; मऱक्क मुऱ्ऱात–अविस्मरणीय; तन् वाय्मै कात्तु–अपनी वचनसत्यता का; कात्तु–पालन करके; तुऱक्कम् उऱ्ऱान्–स्वर्गवासी हो गये; ॲॆन–ऐसा; इरामन् चॊल्ललुम्–श्रीराम के कहते ही; इऱक्कम् उऱ्ऱान् ॲॆन–(दशरथ) मर गये, कहकर; एक्कम् ॲॆय्तिनान्–तरस खाकर; उऱक्कम् उऱ्ऱान् ॲॆन–निद्रामग्न हुए जैसे; उणर्वु नीङ्कितान्–अचेत हुए। १९५

चक्रवर्तीतनय श्रीराम ने उत्तर दिया कि चक्रवर्ती अविस्मरणीय अपनी सत्यवादिता के संरक्षण में स्वर्गवासी हो गये। ज्योंही श्रीराम ने यह कहा, त्योंही जटायु तरस खाकर निद्रामग्न हुए-से अचेत हो गये। १९५

❀तऴुविन रॆडुत्तनर् तडक्कै यान्मुहम्, कऴुविन रिरुवरुङ् गण्णि नीरिनाल्
वऴुविय तन्नुयिर् वन्द मन्ननुम्, अऴिवुऱ नॆञ्जिन ऱरऱ्ऱि नानरो 196

इरुवरुम्–दोनों ने; तटम् कैयाल्–विशाल हाथों से; तऴुविनर्–लपेटकर; ॲॆटुत्तनर्–उठाया; कण्णिन् नीरिनाल्–आँखों के जल से; कऴुविनार्–(जटायु के मुख को) धोया; वऴुविय–खोई हुई; तन् उयिर्–अपनी जान को; वन्त मन्ननुम्–फिर से प्राप्त करके गृध्रराज भी; अऴिवु उऱ नॆञ्चिनन्–विगलित मन के होकर; अरऱ्ऱिनान्–विलाप करने लगे। १९६

श्रीराम और लक्ष्मण ने गिरे हुए उनको अपने हाथों से लपेटकर उठाया। उनकी आँखों से अश्रुजल उनके मुख को धुलाते हुए वहा। तव जटायु की खोयी हुई प्राणता फिर आयी। गृध्रराज विकलमन होकर विलापने लगे। १९६

❀ परवलरुङ् गॊडैक्कुनिन्ऱन् ऱनिक्कुडैक्कुम् बॊरैक्कुनॆन्डुम् वण्बु तोऱ्ऱक्
करवलरुङ् गऱ्पहमु मुडुपतियुङ् गडलिडमुङ् गळित्तु वाऴप्

पुरवलर्दम् पुरवलने पॊय्प्पहैये मॆय्क्कणियॆ पुहऴिन् वाऴ्वे
इरवलरु नल्लऱमुम् यानुमिनि यॆन्नबडनीत् तेहि नाये 197

पुरवलर् तम् पुरवलने–पालकों के पालक; पॊय् पकैये–असत्य के शत्रु; मॆय्क्कु अणिये–सत्य के भूषण; पुकऴिन् वाऴ्वे–यश के वासस्थान; निन् तन्–आपकी; परवल् अरु–अप्रशंसनीय; कॊटैक्कुम्–दानशीलता और; तनि कुटैक्कुम्–अद्वितीय छत्र; पॊऱैक्कुम्–और क्षमाशीलता, इनके सामने; नॆटुम् पण्पु तोट्ऱ–अपने उच्च गुणों में जो हार गये, वे; करवल् अरु कऱ्पकमुम्–अवंचक कल्पवृक्ष; उटुपतियुम्–चन्द्र; कटल् इटमुम्–समुद्र की घिरी यह भूमि; कळित्तु वाऴ–(अपने प्रतिद्वन्द्वी के अभाव में) गर्व-मोद के साथ रहें, ऐसा; इरवलरुम्–याचक लोग; नल् अऱमुम्–श्रेष्ठ धर्म को; यानुम्–और मुझे; इनि ॲन् पट–अब कौन सा दुख भोगने देकर; नीत्तु–हमें छोड़कर; एकिनाय्–चले गये। १९७

हे राजाधिराज! असत्य के शत्रु! सत्य के भूपण! कीर्ति के वासस्थान! आपकी अवर्णनीय दानशीलता, शीतल श्वेतछत्र और क्षमाशीलता के सामने क्रमशः अवंचक कल्पतरु, उडुपति और समुद्र की घिरी भूमि जो हार गयी थी, अब प्रतिद्वन्द्वी से रहित होकर उत्साह के साथ रह रही है। और याचक, श्रेष्ठ धर्म और मैं —तीनों को कौन सा दुख भोगने के लिए छोड़कर आप स्वर्गवासी हुए है ?। १९७

अलङ्गार मॆनवुलहुक् कमुदळिक्कुन् दनिक्कुडैया याऴि शूऴ्न्द
निलङ्गाव लदुकिडक्क निलैयाद निलैयुडैये नेय नॆञ्जिन्
नलङ्गाण नडन्दनैयो नायहने तीविनैये नण्बि निन्ऱुम्
विलङ्गाने नादलिनाल् विलङ्गिने निन्नुमुयिर् विट्टि लेनाल् 198

नायकने–नायक; अलङ्कारम् ॲन–साज-शृंगार है ऐसा; उलकुक्कु अमुतु अळिक्कुम्–(माने जाते हुए, पर असल में) लोकवासियों को कृपासुधा दिलानेवाला; तनि कुटैयाय्–अप्रतिम छत्रधारी; आऴि चूऴ्न्त निलम् कावल्–समुद्रवलयित पृथ्वी का शासन; अतु किटक्क–वह एक ओर रहे; निलैयात निलैयुटैयेन्–चंचल स्थिति वाले मेरे; नेय नॆञ्चिन् नलम्–प्रेमपूर्ण मन की (सच्चाई) स्थिति; काण ओ–परखने के लिए क्या; नटन्तनै–आप चल बसे; तीविनैयेन्–पापी मैं; विलङ्कु आनेन्–जानवर रह गया; आतलिनाल्–इसलिए; नण्पिन् निन्ऱुम्–उत्तम मित्रता से; विलङ्किनेन्–अलग रह गया; उयिर् विट्टिलेन्–और प्राण नहीं त्यागे। १९८

नायक! आपका श्वेतछत्र केवल अलंकार की वस्तु नहीं था। सुधासम कृपा बरसानेवाले शासन का प्रतीक था। ऐसे छत्रधारी! अब समुद्रमेखला भूमि अनाथ हो गयी; वह एक ओर रहे! क्या आप मेरे मन के प्रेम की स्थिरता की परीक्षा करने के हेतु चले गये क्योंकि मैं चंचलमन हूँ! मै पापी हूँ! जानवर पैदा हुआ हूँ। तभी तो उत्तम मित्रता के अनुरूप उचित व्यवहार से डिगकर अब भी प्राण त्याग किये बिना जीवित रहता हूँ!। १९८

❀ तयिरुडैक्कु मत्तॆंनूऩ वुलहैनलि शम्बरनैत् तडिन्द वन्नाळ्
अयिर्हिडक्कुङ् गडल्वलयत् तवरऱिय नीयुडल् यानावि यॆन्ऱच्
चॆयिर्हिडत्तल् शॆय्याद तिरुमनत्ताय् शॆप्पिनाय् तिऱम्बाय् निन्शॊल्
उयिरहिडक्क वुडलैविशुम् बेऱ्ऱिना रुणर्विरन्द कूऱ्ऱि नारे 199

चॆयिर् किटत्तल् चॆय्यात–दोष को स्थान न देनेवाले; तिरु मनत्ताय्–पवित्र मन के स्वामी; तयिर् उटैक्कुम् मत्तु ॲन्ऩ–दही मथनेवाली मथानी के समान; उलकै नलि–लोकत्रासक; चम्परनै–शंबरासुर को; तटिन्त अ नाळ्–जिस दिन काट गिराया, उस दिन; अयिर् किटक्कुम्–काले बालू से युक्त; कटल् वलयत्तवर्–समुद्रवलयित भूतलवासियों को; अऱिय–जताते हुए; नी उटल् यान् आवि–तुम (दशरथ) शरीर, मैं प्राण; ॲन्ऱ–ऐसा; चॆप्पिनाय्–कहा; निन् चॊल् तिऱम्पाय्–आप अपना वचन भंग करनेवाले नहीं है; उणर्वु इऱन्त–भावना न समझ सकनेवाले; कूऱ्ऱितार्–यमदेव भी; उयिर् किटक्क विट्टु–प्राणों को इधर रहने देकर; उटलै–शरीर, आपको; विचुम्पु एऱ्ऱितारे–स्वर्ग पर चढ़ा ले गये। १९९

अकलंक पवित्र मन वाले ! दही को विलोडित करनेवाली मथानी के समान शंबरासुर लोगों को त्रास दे रहा था। जब आपने उनको मारा, उस दिन आपने सूक्ष्म काले बालुओं से युक्त समुद्र से वलयित भूमि के सारे लोगों के सामने उनके जाने, यह कहा कि जटायु तुम प्राण हो, मैं तुम्हारा शरीर हूँ। आप वचन भंग करनेवाले नहीं हैं। उस भावना की पवित्रता जड़मति यमदेव नहीं समझ सके। इसलिए प्राण— मुझे छोड़कर, शरीर— आपको उठा ले गये हैं। १९९

❀ ॲळुवदो रिशैपॆरुह विप्पॊळुदे यॊप्परिय वॆरियुन् दीयिल्
विळुवदे निऱ्कमड मॆल्लियलार् तम्मैप्पो निलत्तिन् मेल्वीळ्न्
दळुवदो यानॆन्ना वऱिवुऱ्ऱा ऩॆऩ्ऩॆळुन् दवरै नोक्कि
मुळुवदे ळुलहुडैयान् मैन्दन्मीर् केण्मिनॆंन मुऱैयिर् चॊन्नान् 200

ॲळुवतु ओर् इचै पॆरुक–उन्नत यश के बढ़ते; इप्पॊळुते–अभी; ऑप्पु अरिय–उपमाहीन; ॲरियुम् तीयिल्–जलनेवाली आग में; विळुवते निऱ्क–गिरना छोड़कर; मट मॆल्लियलार् तम्मै पोल्–अबोध सुकुमारी नारियों के समान; निलत्तिन् मेल् विळुन्तु–धरती पर गिरकर; यान् अळुवतो–मैं रोता रहूँ; ॲन्ऩा–कहकर; अऱिवु उऱ्ऱान् ॲन–सूझ पा गये हों, ऐसा; ॲळुन्तु–उठकर; अवरै नोक्कि–उनको देखकर; एळ् उलकु मुळुवतु उटैयान्–सातों लोकों के अकेले स्वामी; मैन्ततमीर्–(दशरथ के) पुत्र; केण्मिन्–सुनिए; ॲन–ऐसा; मुऱैयिल्–(निम्नोक्त) प्रकार से; चॊन्नान्–बोले। २००

मुझे अभी खूब जलती आग में प्रवेश करके मरना चाहिए, उससे यश मिलेगा और मैं यशस्वी हो जाऊँगा। वह काम छोड़कर मैं अब अबोध सुकुमारी नारियों के समान भूमि पर गिरकर रोता-कलपता रहता हूँ।

क्या यह मुझे सोहता है ? फिर वे सहसा कोई बात सूझ गई हो ऐसे उठे। राजकुमारों को सम्बोधित किया— सातों लोकों के शासक दशरथ के तनयो ! सुनो मेरी बात ! फिर वे निम्नप्रकार से बोले। २००

❀ अरुणऩ्ऱऩ् बुदल्वऩ्या ऩवऩ्पडरु मुलहॅलाम् पडर्वॅ ऩाऴि
इरुण्मॉय्म्बु कॅडत्तुरन्द तयरदऱ्किऩ् नुयिर्त्तुणैव ऩिमैयो रोडुम्
वरुणङ्गळ् विरिहिऩ्ऱ कालत्ते वऩ्दुदित्तेऩ् कऴुहिऩ् वेन्दऩ्
तरुणङ्गॉळ् पेरॉळियोर् शम्बादि पिऩ्पिऱन्द जडायु वॅऩ्ऱाऩ् 201

तरुणम् कॉळ् पेर् ऑळियोर्—तरुणाई से युक्त बड़े तेजोमय; याऩ्—मैं; अरुणऩ् तऩ् पुतल्वऩ्—अरुण का पुत्र हूँ; अवऩ् पटरुम्—वे जहाँ जाते हैं; उलकु ॲल्लाम्—उन सभी लोकों में; पटर्वेऩ्—जाने की शक्ति रखता हूँ; इमैयोर् ओटुम्—देवों के साथ; वरुणङ्कळ्—अनेक वर्ण-भेद; विरिकिऩ्ऱ कालत्ते—जब बँटे उसी (आदि) काल में; वन्तु उतित्तेऩ्—जनमा, वह मै; कऴुकिऩ् वेन्तऩ्—गृध्रराज; चम्पाति—सम्पाति; पिऩ् पिऱन्त—का अनुज; चटायु—जटायु हूँ; इरुळ् मॉय्म्पु—(शत्रु रूपी) अन्धकार का बल; कॅट—नाश करते हुए; आऴि तुरन्त—आज्ञाचक्र-चालक; तयरतऱ्कु—दशरथ का; इऩ् उयिर् तुणैवऩ्—प्राण-प्यारा मित्र हूँ; ॲऩ्ऱाऩ्—कहा। २०१

तरुण तेजोमय वीर ! मैं अरुण का पुत्र हूँ। अरुण जहाँ चलते है, उन सभी स्थानों में जाने की मेरी शक्ति है। देवों के साथ जिस दिन सभी विविध जातियों के जीवों का प्रादुर्भाव हुआ, उसी प्राचीनकाल में मेरा जन्म हो गया। गीधों के राजा सम्पाति का अनुज हूँ मैं। शत्रु रूपी अन्धकार को नाश करते हुए जिन्होंने आज्ञाचक्र चलाया, उन दशरथ का प्राण-प्यारा मित्र हूँ। २०१

[इसके बाद पाँच पद्य पाये जाते है, जो क्षेपक माने जाते है। उनमें जटायु की वंशावली का विवरण पाया जाता है। जानकारी हेतु उनका सार यहाँ दिया जाता है— दक्ष प्रजापति की पचास उभरे उरोजों वाली सुताओं में तेरह पुत्रियों से काश्यप का विवाह हुआ। उनमें अदिति ने तैंतीस करोड़ देवों को जन्म दिया। कजरारी आँखों वाली दिति ने दुगुने दैत्यों को जनाया।

दनु ने दानवों को, मति ने अपने अवयवों से मनुष्य की जातियों को और सुरभी ने धेनु, अश्व और अन्य जानवरों को पैदा किया। क्रोधवशा ने गर्दभ, मृग, उष्ट्र आदि को पैदा किया।

अभ्रकुंतला विनता से वज्र, अरुण, वैनतेय (गरुड़), उल्लू-गीध आदि बड़े-बड़े पक्षी जनमे। ताम्रा ने गौरैये, तीतर, बटेर आदि पक्षियों को जन्म दिया। कळा नाम की कोमलांगी ने तरु, लता आदि को जन्म दिया।

कद्रू ने फनियों और व्यालों को जन्म दिया। सुधा से भुजंग उत्पन्न

हुए। अरिष्ठा द्वारा गिरगिट, घोरपड़ आदि आये। इला ने जलचरों को जन्म दिया।

अदिति, दिति, दनु, अरिष्ठा, सुधा, कळा, सुरभी, विनता, मति, इला, कद्रू, क्रोधवशा और ताम्रा —इन स्त्रियों ने ये सब जीव-जन्तु पैदा किये। विनता-सुत अरुण ने रम्भा से विवाह किया और हम भूमि पर पैदा हुए।]

❀ आण्डवन्नी दुरैशेय्य वञ्जलित्त मलर्क्कैया रन्बि नोडुम्
मूण्डपॅंडरुन् दुन्बत्तान् मुरैमुरैयि निरैमलर्क्कण् मोय्त्त नीरार्
पूण्डपॅरुम् बुहळ्निरुवित् तम्बोरुट्टाङ् पोन्नुलहम् पुक्क तादै
मीण्डनन्वन् दानवनैक् कण्डनरे योत्तनरव् विलङ्गङ् ङोळार् 202

आण्टु—वहाँ; अवन्—उनके; ईतु उरै चॅय्य—यह कहते ही; विलङ्कल् तोळार्—पर्वत-सम कंधों वाले; अञ्चलित्त मलर् कैयार्—अञ्जलिबद्ध कमल-हस्त (वाले); अन्पिन् ओटुम्—प्रेम के साथ; मूण्ट—बढ़नेवाले; पॅरुम् तुन्पत्ताल्—बड़े दुख से; मुरै मुरैयिन्—उत्तरोत्तर; मलर् कण् निरै—कमल-सम आँखों में भर आनेवाले; मोय्त्त नीरार्—अधिक अश्रुजल के साथ; पूण्ट पॅरुम् पुकळ् निरुवि—अपना धृत बड़ा यश इधर स्थापित करके; तम् पॉरुट्टाल्—अपने कारण; पोन् उलकम् पुक्क—स्वर्ण (स्वर्ग) लोक जो गये, उन; तातै—अपने पिता ही; मीण्टनन् वन्तान् अवनै—लौट आये जो, उनको; कण्टनरे ओत्तनर्—देख लिया हो, ऐसा हुए। २०२

जब जटायु ने यह वृत्तान्त कहा, तब पर्वत-सम कन्धों वाले श्रीराम और लक्ष्मण ने अपने कमल-हाथ जोड़ लिये। स्नेह-विह्वल उनकी आँखों से अश्रुकण बारी-बारी से भर आये। उनकी स्थिति ऐसी हो रही, मानो वे दशरथ से ही प्रत्यक्ष मिल रहे हों, जो अब स्वर्ग से अपने उन पुत्रों को देखने के लिए लौट आये हों जिनके (वियोग के ही) कारण वे इस संसार में बड़ा यश स्थापित करके स्वर्गवासी हो गये थे। २०२

❀ मरुविनिय कुणत्तवरै यिरुशिरहा लुरत्तळुवि मक्का णीरे
उरियकडन् विनैयेऱ्कु मुदवुवी रुडलिरण्डुक् कुयिरोन् ङानान्
पिरियवुन्दान् पिरियादे यिनिदिरुक्कु मुडऱ्पोऱैयाम् बीळै पारा
तॅरियदनि लिन्ऱेपुक् किऱवेने लित्तुयर मऱवे नॅन्ऱान् 203

मरुवु इतिय—अपनाने-योग्य मधुर; कुणत्तु अवरै—स्वभाव वाले उनको (श्रीराम आदि को); इरु चिरकाल्—अपने दोनों पक्षों से; उऱ तळुवि—आलिंगन करते हुए; मक्काळ्—पुत्रो; नीरे—तुम ही; विनैयेऱ्कुम्—पापी मेरा भी; उरिय कटन्—आवश्यक शवकर्म; उतवुवीर्—करा दो; उटल् इरण्टुक्कु—दो शरीर का; उयिर् ओन्ऱु आनान्—जो प्राण एक रहे; पिरियवुम्—उनके मरने पर; तान् पिरियाते—खुद मरे बगैर; इनितु इरुक्कुम्—सुख से जीता रहने का; उटल् पोऱै आम्—शरीर-वहन का; पीळै पारातु—दुख देखते हुए; ॲरि अतनिल्—आग में; इन्ऱे—अभी; पुक्कु—प्रवेश कर; इऱवेन् एल्—न मरूँगा तो; इ तुयरम् मऱवेन्—यह दुख भूल नहीं पाऊँगा। २०३

पश्चात जटायु ने अपनाने योग्य अच्छे गुणों वाले उन कुँअरों को अपने विशाल पक्षों के अन्दर लेते हुए आलिंगन किया और कहा कि पुत्रो ! मैं बड़ा पापी हूँ। मेरा भी शव-संस्कार कर दो। यह मेरे प्रति उपकार होगा। दशरथ मेरे और उनके दोनों शरीरों का एकप्राण-सम रहे। उनकी मृत्यु होने के बाद मैं बिना मरे यह शरीर ढोता रहूँ, यह मेरे लिए असह्य है ! यह शरीरभार-वहन-दुख दूर करने के लिए आग में प्रवेश करके अभी मर जाऊँगा। नहीं तो यह वेदना भूल नहीं सकूँगा। २०३

❀ ऍऩ्ऱु रैत्त वॆरुवै यरशऩैत्, तुऩ्ऱु तारवर् नोक्कित् तॊऴुदुहण्
ऒऩ्ऱु मुत्त मुऱैमुऱै यायुह, निऩ्ऱु मऱ्ऱिऩ्ऩ नीर्मै निहऴ्त्तिऩार् 204

ऍऩ्ऱु उरैत्त–ऐसा कहनेवाले; ऍरुवै अरचनै–गृध्रराज को; तुऩ्ऱु तार् अवर्–घनी माला से अलंकृत श्रीराम और लक्ष्मण; तॊऴुतु–विनय करके; कण् ऒऩ्ऱुम्–आँखों में लगी; मुत्तम्–मुक्तापंक्ति-सम अश्रुकण; मुऱै मुऱैयाय्–क्रम से; उक–टपके, ऐसा; निऩ्ऱु–जटायु के सामने स्थित होकर; इऩ्ऩ नीर्मै–इस प्रकार से; निकऴ्त्तिऩार्–वहस की। २०४

जब गृध्रराज जटायु ने अपना यह संकल्प सुनाया, तब मनोरम माला-धारी श्रीराम और लक्ष्मण शोकाकुल हुए। आँखों से मोतियों के समान अश्रुकण बहाते हुए उन्होंने जटायु के सामने खड़े होकर यों कहा। २०४

❀ उय्विडत् तुदवर् कुरिया नुन्दन्, मॆय्वि डक्करु दादुविण् णॆऱिऩाऩ्
इव्वि डत्तिनि ऍम्बॆरु माऩॆमैक्, कैवि डिऱ्पिऩ् यार्कऴै कण्णुळार् 205

उय्वु इटत्तु–रक्षा के अवसर पर; उतवर्कु उरियातुम्–रक्षा करनेवाले चक्रवर्ती भी; तऩ् मॆय् विट करुतातु–अपना वचन-परिपालन छोड़ना न चाहकर; विण् एऱिऩाऩ्–स्वर्गवासी हुए; इ इटत्तिऩिल्–इस स्थान (जंगल) में; ऍम् पॆरुमा अऩ्–हमारे नाथ; ऍमै कै विटिल्–हमको असहाय छोड़ जाएँगे तो; पिऩ्–फिर; कऴै कण् उळार्–हमारे अवलम्ब (सहायक) रहनेवाले; यार्–कौन है। २०५

तात ! हमारी सहायता और रक्षण करने का भार जिन पर स्वयमेव था, वे हमारे सहायक और नाथ अपने वचन को छोड़ना न चाहकर स्वर्ग-वासी हो गए। हे हमारे नाथ ! यहाँ इस जंगल में आप भी हमें निस्सहाय करके छोड़ेंगे तो हमारे आधार कौन है ? । २०५

❀ तायि ऩीङ्गरुन् दन्दैयिऱ् ऱण्णहर्, वायि नीङ्गि वनम् बुहुन् दॆय्दिय
नोयु नीङ्गिनै नुन्निऩैत् ऩॆङ्गळै, नीयु नीङ्गुदि योनॆऱि नीङ्गलाय् 206

नॆऱि नीङ्कलाय्–धर्म-मार्ग से न हटनेवाले; नीङ्कु अरु–जिनसे अलग होना कठिन है, उन; तायिऩ–माता से; तन्तैयिल्–पिता से; तऩ् नकर् वायिऩ्–अपने नगर के द्वार से; नीङ्कि–अलग होकर; वऩम् पुकुन्तु–जंगल में प्रवेश करके; ऍय्तिय–अब तक जो हमने भुगता है; नोयिऩ्–उस दुख से; नुऩ्ऩिऩ्–आपके मिलने

के कारण; नीङ्कित्तम्–विमुक्त हुए; अँङ्कळै–ऐसे हमको; नीयुम्–आप भी; अँन् नीङ्कुतियो–क्यों छोड़ जाएँगे । २०६

हे धर्म से कभी न हटनेवाले ! जिनसे अलग होना कठिन है उन माता से, पिता से और अपने नगर के द्वार से अलग होकर हम इधर आए। उससे हमारे मन में जो व्यथा हुई उससे, आपको देखने के बाद हम मुक्त हो पाये । इस स्थिति में आप हमें क्यों छोड़कर जायँगे ? । २०६

❀ अँन्रु शॊल्ल विरुन्दळि नॆञ्जितन्, निन्र वीररै नोक्कि निनैन्दवन्
अन्र दॆन्नि लयोत्तियि लैयनीर्, शॆन्र पिन्नवर् चेर्हुवॆन् यानॆन्रान् 207

अँन्रु चॊल्ल–ऐसा (श्रीराम और लक्ष्मण के) कहने पर; इरुन्तु अळि नॆञ्चित्तन्–जो दुख से विगलित मन वाले रहे, उन जटायु ने; निन्र वीररै–सामने खड़े रहे वीरों को; नोक्कि–देखकर; नित्तॆन्तवन्–विचार करते हुए; अतु अन्रु अँतिन्–वह तुमको (पसन्द) नहीं तो; ऐय नीर्–प्यारो; नीविर्–तुम लोगों के; अयोत्तियिल् चॆन्रपिन्–अयोध्या में लौट जाने के बाद; यान् अवन् चेर्कुवॆन्–मै उनके पास जाऊँगा; अँन्रान्–कहा । २०७

जब श्रीराम और लक्ष्मण ने दुख के साथ अपनी यह बात कही, तब व्याकुलता से निर्बल हुए मन के जटायु ने उनको देखा और कुछ सोचा । फिर मन बदलकर उन्होंने कहा कि पुत्रो ! अगर मेरा मरना आपको ठीक नहीं लगता तो लो मेरे प्यारो ! तुम्हारे अयोध्या लौट जाने के बाद मैं अपने मित्र के पास जाऊँगा । २०७

❀ वेन्दन् विण्णडैन् दानॆनिल् वीरर्नीर्, एन्दु ञाल मिनिदळि यादिवण्
पोन्द दॆन्नै पुहुन्दवॆन् बुन्दिपोय्क्, कान्दु हिन्रदु कट्टुरै यीरॆन्रान् 208

वेन्तन्–चक्रवर्ती; विण् अटैन्तान् अँतिल्–स्वर्ग सिधार गये तो; वीरर् नीर्–वीर तुम; एन्तु ञालम्–भरणयोग्य राज्य को; इनितु अळियातु–सुख से पालन किये बिना; इवण्–यहाँ; पोन्ततु अँन्नै–आये क्यों; अँन् पुन्ति–मेरा मन; पोय्–अस्थिर होकर; कान्तुकिन्रतु–दुखतप्त होता है; पुकुन्त अँन्–बीच में हुए कौन से; कट्टुरैयीर्–समझाकर कहो; अँन्रान्–पूछा । २०८

फिर जटायु को विचार आया कि ये जंगल क्यों आये हैं ? उन्होंने पूछा कि चक्रवर्ती स्वर्गवासी हुए तो वीर तुम्हारा कर्तव्य था कि भरण योग्य राज्य का पालन करो । पर सन्तोष के साथ राज्य-पालन करना छोड़कर यहाँ क्यों आये हो ? मेरा मन इधर-उधर भटककर दुखतप्त है ! क्या अनर्थ बीच में आये ? खूब खोलकर कहो । २०८

❀ तेवर् तानवर् तिण्डिर् नाहर्वे, रेव राह विडरिळैत् तारॆनिल्
पूव रावु पॊलङ्गदिर् वेलिनीर्, शाव राक्कित् तरुवॆ नरशॆन्रान् 209

पू अरावु–रेतकर तेज किए हुए; पॊलन् कतिर् वेलितीर्–स्वर्ण-सम कान्ति

छिटकानेवाले भालों का धारण करनेवाले; तिण् तिऱल्–कठोर शक्तिमन्त; तेवर्–देव हों चाहे; तानवर्–दानव; नाकर्–नागलोक-वासी; वेऱु एवर् आक–अन्य कोई भी हों; इटर् इऴैत्तार् ॲंतिल्–दुख दिया हो तो; चावर् आक्कि–उनको मृतक बनाकर; अरचु तरुवॅन्–राज्य दिला दूंगा; ॲन्ऱान्–कहा। २०६

खूब रेतकर तीक्ष्ण और स्वर्ण-सम कान्ति देनेवाले भाले के धारक कुँअर ! आपको देवों ने कष्ट दिया हो, चाहे दानव; नागलोकवासी हों या और कोई —कहो कि अमुकों ने कष्ट दिया तो उनको मृतक बनाकर आपको राज्य दिला दूंगा। २०९

❀ तादै कूऱलुन् दम्बियै नोक्किनान्, शीदै केळ्व नवनुन्दन् शिऱ्ऱवै
माद राल्वन्द शॅय्है वरम्बिला, ओद वेलै यॊऴिवित्ऱुणर्त्तिनान् 210

तातै कूऱलुम्–पिता के कहने पर; चीतै केळ्वनुम्–सीतापति ने भी; तम्पियै नोक्किनान्–अनुज को देखा; अवनुम्–उन्होंने भी; तन् चिऱ्ऱवै मातराल्–अपनी छोटी माता देवी कैकेयी द्वारा; वन्त चॅय्कै–किया हुआ कार्य; वरम्पु इला ओत–जो निस्सीम घोषयुक्त; वेलै–दुख-सागर था वह; ऒऴिवु इन्ऱु–बिना अन्तर के; उणर्त्तिनान्–बताया। २१०

जब पिता-सम जटायु ने यह वचन कहा तब सीतापति ने अपने अनुज के प्रति अर्थभरी दृष्टि फेरी। लक्ष्मण ने भी अपनी सौतेली माता देवी कैकेयी के कृत्य का घोषपूर्ण समुद्र-सा दुखवृत्तान्त पूर्ण रूप से, बिना कुछ छोड़े-छुड़ाये, कह सुनाया। २१०

❀ उन्दै युण्मैय नाक्कियुन् शिऱ्ऱवै, तन्द शॊल्लैत् तलैक्कॊण्डु तारणि
वन्द तम्बिक् कुदविय वळ्ळले, ॲन्दै वल्ल दियावर्वल् लारॅन्ना 211

उन्तै उण्मैयन् आक्कि–अपने पिता को सत्यनिष्ठ बनाकर; उन् चिऱ्ऱवै तन्त चॊल्लै–अपनी सौतेली माता की आज्ञा; तलै कॊण्टु–सिर पर धारण करके; तारणि–(अपने स्वत्व के) राज्य को; वन्त तम्पिक्कु–अपने अनुज भरत को देकर; उतविय–उपकार करनेवाले; वळ्ळले–दानी प्रभु; ॲन्तै वल्लतु–मेरे तात (तुम) जो कर सके; यावर् वल्लार्–ऐसा कौन कर सकता है; ॲन्ना–कहकर। २११

यह सुनकर जटायु ने साधुवाद दिया ! हे राम ! तुमने अपने पिता को सत्यसंध बनाया और अपनी सौतेली माता की आज्ञा शिरोधार्य करके धरणी को अपने कनिष्ठ भ्राता के पास सौंप दिया ! तुम दानियों में श्रेष्ठ दानी हो ! हे मेरे तात ! हा ! मेरा पुत्र जो कर चुका वह कौन कर सकता है ? । २११

❀ अल्लित् तामरैक् कण्णनै यन्बुऱप्
पुल्लि मोन्द पॊऴिन्दकण् णीरिनन्

वल्लै मैन्दवम् मन्नैयु मॆन्नैयुम्
ऍल्लै यिल्पुह ऴॆय्दुवित् तायॆन्ऱान् 212

अल्लि तामरै कण्णनै–पंखुड़ियों सहित कमल-सम आँखों वाले श्रीराम को; अन्पु उऱ पुल्लि–प्रेम के साथ आलिंगित करके; मोन्तु–माथे पर चूमकर; पॊऴिन्त कण् नीरित्तन्–अश्रु बहानेवाले नेत्रों के साथ; मैन्त–पुत्र; अ मन्नैयुम्–उन चक्रवर्ती को; ऍन्नैयुम्–और मुझे भी; ऍल्लै इल् पुकऴ्–असीम यश; ऍय्तुवित्ताय्–दिला दिया; वल्लै–तुम समर्थ हो; ऍन्ऱान्–कहा (जटायु ने)। २१२

जटायु ने हर्षातिरेक से पद्मदलाक्ष श्रीराम को गले लगाया और सिर सूँघा (माथा चूमा)। आँखों से आनन्दबाष्प बहाते हुए जटायु ने कहा— पुत्र! तुमने चक्रवर्ती को और मुझे, दोनों को अपार यश दिला दिया! तुम बड़े समर्थ हो! । २१२

❀ पिन्न रुम्मप् पॆरियवन् पॆय्वळै, अन्न मन्न वणङ्गिनै नोक्किनान्
मन्नर् मन्नवन् मैन्दविव् वाणुदल्, इन्न ळॆन्न वियम्बुदि यालॆन्ऱान् 213

पिन्नरुम्–फिर भी; अ पॆरियवन्–उन बड़े ने; पॆय्वळै–कंकणधारिणी; अन्नम् अन्न–हंसिनी-सदृश; अणङ्कितै–देवी सीता को; नोक्कित्तान्–देखकर; मन्नर् मन्नवन् मैन्त–राजाधिराज के पुत्र; इ वाळ् नुतल्–यह उज्ज्वल ललाट वाली; इन्नळ–अमुक (कौन) है ऐसा; इयम्पुति–बतलाओ; ऍन्ऱान्–कहा। २१३

फिर भी उन वृद्ध जटायु ने कंकणधारिणी मरालीतुल्य देवी सीता को देखा और श्रीराम से कहा कि राजाधिराज के पुत्र! यह उज्ज्वल ललाट वाली कौन है? यह बताओ। २१३

अल्लि रुत्तन ताडहै यादिया
विल्लि रुत्तङ् गरिवैयै मेलैनाळ्
पुल्लु रुत्तदि यावुम् बुहन्ऱुतन्
शॊल्लि रुत्तनन् ऱोन्ऱल्पिन् ऱोन्ऱितान् 214

तोन्ऱल् पिन् तोन्ऱितान्–श्रीराम के अनुज (लक्ष्मण) ने; मेलै नाळ्–पहले, आरम्भ में; अल् इरुत्तु अन–अन्धकारालय-सी; ताटकै आतिया–ताड़का (वृत्तान्त) आदि; विल् इऱुत्तु–धनुर्भंग करके; अङ्कु–उधर; अरिवैयै–सीतादेवी से; पुल् उऱुत्ततु–विवाह करना; यावुम् पुकन्ऱु–सभी सुनाकर: तन् चॊल् इरुत्तनन्–अपना कथन पूरा किया। २१४

तब श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने सारा श्रीराम-चरित सुनाया। अन्धकार के आगार-सी ताड़का का वध, मिथिला में शिव-धनुष तोड़ना, सीताजी का विवाह आदि सभी घटनाएँ वर्णन करके श्रीलक्ष्मण ने अपना कथन समाप्त किया। २१४

केट्टु वन्द किळरॉळि मोलियान्, तोट्ट लङ्गलि नीर्तुऱन् दीर्वळम्
नाट्टु नीरिनि नण्णुदल् काऱुमिक्, काट्टिल् वैहुदिर् काक्कुवॆन् यानॆन्ऱान् 215

केट्टु उवन्त–सुनकर आनन्दित हुए; किळर् ऑळि मोलियान्–वर्धनशील प्रभा के किरीट के धारी; तोटु अलङ्कलित्तीर्–पुष्पमाला वाले; वळम् तुऱन्तीर्–धन-समृद्धि छोड़ आये हो; नाटु–अपने राज्य में; नीर् इनि नण्णुतल् काऱुम्–तुम लोगों के आगे पहुँचते तक; इ काट्टिल् वैकुतिर्–इस जंगल में रहो; यान् काक्कुवॆन्–मैं रक्षा करूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। २१५

जाज्वल्यमान किरीट से शोभायमान जटायु ने तुष्ट होकर वादा किया कि हे पुष्पदलमाला-धारी वीरो ! तुम लोग धन आदि वैभव त्यागकर आये हो ! जब तक तुम अयोध्या लौट नहीं जाओगे, तब तक इसी वन में वास करो। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। २१५

इऱैव वॆण्णि यहत्तिय नीन्दुळ, तऱैयु नन्मणि याऱ्ऱि नहन्ऱगरैत्
तुऱैयि नुण्डोरु शूऴलच् शूऴल्पुक्, कुऱैदु मॆन्ऱनन् नुळ्ळत् तुऱैहुवान् 216

उळ्ळत्तु उऱैकुवान्–अन्तर्यामी भगवान श्रीराम; इऱैव–नाथ; अकत्तियन्–अगस्त्य का; ॲण्णि–विचारकर; ईन्तु उळतु–बतलाया हुआ स्थान; अऱैयुम् नल् मणि–कलरवयुक्त सुन्दर; आऱ्ऱिन् अकन् करै–गोदावरी नदी के विशाल तट पर; ओरु चूऴल् उण्टु–एक स्थान है; अ चूऴल् पुक्कु–उस स्थान में जाकर; उऱैतुम्–रहेंगे; ॲन्ऱनन्–कहा। २१६

सर्वान्तर्यामी भगवान श्रीराम ने उत्तर में कहा कि हे नाथ ! अगस्त्य ने वासयोग्य कोई स्थान बताया है। वह कलरव सहित बहनेवाली श्रेष्ठ गोदावरी नदी के विशाल तट पर स्थित एक स्थान है। वहीं जाकर हम वास करेंगे। २१६

❀ पॆरिदु नन्ऱप् पॆरुन्दुऱै वैहिनीर्, पुरिदिर् मादवम् बोदुमिन् यानदु
तॆरिवु ऱुत्तुवॆ नॆन्ऱवर् तिण्शिऱै, विरियु नीऴलिन् मेवविण् शॆन्ऱनन् 217

पॆरितुम् नन्ऱु–बड़ा अच्छा है; नीर् अ पॆरुन् तुऱै वैकि–तुम उस नदी के श्रेष्ठ घाट पर रहकर; मा तवम् पुरितिर्–महान तप करो; पोतुमिन्–चलो; यान् अतु तॆरिवुऱुत्तुवॆन्–मै वह स्थान दिखाऊँगा; ॲन्ऱु–कहकर; तिण् चिऱै निऴलिल्–बलवान अपने पक्षों की छाया में; अवर् मेव–उनको आने देते हुए; विण् चॆन्ऱनन्–आकाश में उड़ता चला। २१७

जटायु ने उसे उचित समझा। कहा कि वह स्थान अवश्य बड़ा अच्छा है। तुम उसी घाट पर जाकर रहो और बड़ी तपस्या करो। चलो, मै भी तुम्हारे साथ चलूँगा और वह स्थान दिखा आऊँगा। वे आकाश पर उड़ते चले और उनके बलवान और विशाल पक्षों की छाया के नीचे श्रीराम आदि सुख से गये २१७

❀ आय शूऴ लऱिय वुणर्त्तिय, तूय शिन्दैयत् तोमिल् गुणत्तवन्
पोय पिन्नैप् पॉरुशिलै वीररुम्, एय शोलै यिनिदुशॅन् ऱॆय्दिनार् 218

आय चूऴल्–उस (पंचवटी के) स्थान को; अऱिय उणर्त्तिय–समझा-बुझाकर; अ तूय चिन्तै–वे पवित्रमन; तोम् इल् कुणत्तु–निर्मल गुणों वाले; अवन्–वे जटायु; पोय पिन्नै–चले गये, उसके बाद; पॉरु विलै वीररुम्–युद्धोपयोगी धनुओं के स्वामी श्रीराम आदि; एय चोलै–वहाँ रहनेवाले एक उपवन में; इनितु चॅन्ऱु ऎय्तिनार्–सुख से जाकर रहे। २१८

उस स्थान, पंचवटी को दिखाकर और उसके सम्बन्ध में समझाकर पवित्रमन और उत्तम, निर्मल गुणों वाले जटायु चले गये। उसके बाद युद्धोपयोगी धनुष के रखनेवाले दोनों वीर देवी सीता के साथ वहाँ स्थित एक उपवन में गये। २१८

❀ वार्प्पॉर् कॉङ्गै मरुहियै मक्कळै
एर्प्पच् चिन्दनै यिट्टव् वरक्कर्दम्
शीर्प्पैच् चिक्कऱत् तेऱिनन् शेक्कैयिल्
पार्प्पैप् पार्क्कुम् बऱवैयिऱ् पार्क्किन्ऱान् 219

अ अरक्कर् तम् चीर्प्पै–वहाँ के राक्षसों की बलविशिष्टता को; चिक्कु अऱ–संशय के बिना; एऱ्प–खूब; चिन्तनै इट्टु–सोचकर; तेऱिनन्–जो निश्चित रूप से जानते थे, वे जटायु; वार् पॉन् कॉङ्कै–अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली; मरुकियै–पुत्रवधू सीताजी को; मक्कळै–और अपने पुत्रों को; चेक्कैयिल् पार्प्पै पार्क्कुम्–घोंसलों में पोटों की देखरेख करनेवाली; पऱवैयिल्–मादा पक्षी के समान; पार्क्किन्ऱान्–देखते रहे। २१९

जटायु राक्षसों के बल का पूरा ज्ञान रखते थे। उन्होंने खूब सोचा और मन में धारणा बना ली (कि इनकी रक्षा का खूब ध्यान रखना आवश्यक है)। अतः वे अँगियाबद्ध स्वर्णवर्ण स्तनों वाली पुत्रवधू सीताजी और दोनों कुमारों पर, सावधानी से अपने बच्चों की देखरेख करनेवाली मादा पक्षी के समान उन पर निगरानी रखते थे। २१९

5. शूर्प्पणहैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)

पुवियिनुक् कणिया यान्ऱ पॉरुडन्दु पुलत्तिऱ् ऱाहि
आवियहत् तुऱैह डाङ्गि यैन्दिणै नॆऱियळाविच्
चवियुऱत् तॆळिन्दु तण्णॅन् ऱॊळुक्कमुन् दळुविच् चान्ऱोर्
कवियॆनक् किडन्द कोदा वरियिनै वीरर् कण्डार् 220

पुवियिनुक्कु अणियाय्–भूलोक का श्रृंगार (भूषण) बनकर; आन्ऱ पॉरुळ् तन्तु–श्रेष्ठ वस्तुएँ (पुरुषार्थ) प्रदान करते हुए; पुलत्तिऱ्ऱु आकि–खेतों (बुद्धि) का

पोषक रहकर; अवि अक तुरैकळ् ताङ्कि–अपने में बने हुए अनेकों घाटों के साथ (प्रसादगुणपूर्ण अनेक कथाप्रसंगों के साथ); ऐ तिणै नॆऱि अळावि–पाँचों भूभागों पर से बहती हुई (पाँचों अंगों का वर्णन करती हुई); चवि उऱ तॆळिन्तु–छविमान रूप से साफ़ रहते हुए (जल्दी समझ में आकर ज्ञान दिलानेवाले रूप से साफ़ रहते हुए); तण् अॆन्ऱ ऒऴुक्कमुम् तऴुवि–शीतल धारा-प्रवाह के साथ (रम्य शैली के साथ); चान्ऱोर् कवि अॆन–उत्तम कवियों के काव्य के समान; किटन्त–दृश्यमान; कोतावरियिनै–गोदावरी नदी को; वीरर् कण्टार्–वीरों ने देखा। २२०

(इस पद में गोदावरी नदी और उत्तम कवि के रचे काव्य का श्लिष्ट वर्णन है।) वीरों (सीताजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण) ने उस गोदावरी को देखा, जो उत्तम कवि के रचे काव्य के समान पड़ी (वहती) थी।

[भुवि का शृंगार, चारों पुरुषार्थों का दायक, बुद्धि का पोषक, शृंगार रस के सुन्दर उपांगों के प्रसंगों का वर्णनकारी, (शृंगार) रस भरे काव्य के प्रधान अंगों का (तिणै) चित्रण करनेवाला, मनोहारी छटा के साथ स्वच्छ और शीतल प्रवाहमयी शैली के साथ रहनेवाले उत्तम कवि के काव्य के समान भुवि का शृंगार वनकर अनेक पदार्थों को देती हुई या पैदा करने में सहायता देती हुई, खेतों की पोषक, ताप शान्त करनेवाले अनेक घाटों से युक्त, पाँचों (पर्वत, वन, नदी की कछार, समुद्र तट और मरु के) प्रदेशों से होकर सुन्दर रूप से स्वच्छ और शीतल सुखावह प्रवाह के साथ वहनेवाली गोदावरी नदी को वीरों ने देखा।]

[पॊरुळ्–पुरुषार्थ या पदार्थ; पुलम्–बुद्धि (ज्ञान) या खेत; तुऱैहळ–शृंगार-रस-कथा के उपांगों का वर्णन या घाट; तिणै–प्रधान भाग, प्रधान भूभाग]। २२०

वण्डुऱै कमलच् चव्वि वाण्मुहम् पॊलिय वाशम्
उण्डुऱै कुवळै यॊण्ग णॊरुङ्गुऱ नोक्कि यूऴिन्
तॆण्डिरैक् करत्तिन् वारित् तिरुमलर् तूविच् चॆल्वर्क्
कण्डडि पणिव दॆन्नप् पोलिन्ददक् कडवुळ् याऱु 221

अ कटवुळ् याऱु–वह दिव्य नदी; चॆल्वर् कण्टु–उन श्रीमानों को देखकर; वण्टु उऱै कमलम्–अलिकुलावृत कमल रूपी; चॆव्वि वाळ् मुकम्–सुन्दर उज्ज्वल मुख; पॊलिय–आनन्द से शोभित करके; वाचम् उण्टु–सुगन्धियुक्त; उऱै–वहाँ रहनेवाले; कुवळै ऒण् कण्–कुवलय रूपी प्रभापूर्ण आँखों से; ऒरुङ्कु उऱ नोक्कि–एकाग्रता से खूब देखकर; ऊऴिन् तॆळ् तिरै करत्तिन्–क्रम से उठनेवाली तरंग रूपी हाथों से; तिरु मलर् वारि–सुन्दर पुष्पों को लेकर; तूवि–बरसाकर; अटि पणिवतु अॆन्न–चरणो पर विनत हो रही हो, ऐसा; पॊलिन्ततु–दर्शनीय रही। २२१

उस दिव्य नदी ने उन श्रीमंत कुमारों को देखा तो उसका अलिकुल-कलित कमल रूपी मुख विकसित हुआ। वह सुवासित वनप्राय कुवलय रूपी

आँखों द्वारा देखते हुए क्रमानुक्रम में उठनेवाली स्वच्छ तरंगों रूपी हाथों से पुष्पों को लेकर उनके चरणों पर डालते हुए प्रणमन कर रही हो —ऐसा लगा। २२१

अॅळ्वुरु कादलारि निरैत्तिरैत् तेङ्गि येङ्गिप्
पळ्वनाट् कुवळैच् चॅव्विक् कण्बनि परन्दु शोर
वळ्विला वाय्मै मैन्दर् वनत्तुऱै वरुत्त नोक्कि
अळ्वतु मॊत्त दालव् वलङ्गु नीराऱु मन्नो 222

अलङ्कु नीर्–हिलती बहनेवाली जलधारा की; अ आरु–वह नदी; वळ्ु इला वाय्मै मैन्तर्–अचल सत्यसंध उन कुमारों का; वततुतु उऱै वरुत्तम् नोक्कि–वनवास का दुख देखकर; अॅळ् उरु काततलाल्–उठे हुए प्रेम के साथ; इरैत्तु इरैत्तु–लम्बी साँस लेते-लेते; एङ्कि एङ्कि–तरस खाते-खाते; पळ्व—वन-सम घने; नाळ् कुवळै–उसी दिन विकसित कुवलय रूपी; चॅव्वि कण्–आकर्षक आँखों से; पनि–जलकण; परन्तु चोर–बरसाकर बहाते हुए; अळ्वतु ऒत्तततु–रोती हो, ऐसा लगी। २२२

वह हिलती हुई बहनेवाली नदी सत्यनिष्ठ उन वीरों के वनवास-जनित दुख को देखकर लम्बी आहें भरते हुए तरस के साथ रो रही हो, ऐसा भी लगा। उनके वनप्राय कुवलय रूपी नेत्रों में हिमकण दिखाई दिये। २२२

नाळङ्गॊ णळित्तप् पळ्ळि नयनङ्ग ळमैय नेमि
वाळङ्ग ळुऱैव कण्डु मङ्गैतन् कॊङ्गै नोक्क
नीळङ्गॊळ् शिलैयोन् मऱ्ऱन् नेरिळै नॅडिय नम्बि
तोळित्तग णयनम् वैत्ताळ् शुडर्मणित् तडङ्गळ् कण्डाळ् 223

नीळम् कॊळ् चिलैयोन्–दीर्घ धनु के धारक श्रीराम ने; नाळम् कॊळ्–नाल सहित; नळिन पळ्ळि–कमल रूपी शय्या पर; नयनङ्कळ् अमैय–आँखें उन्मीलित करके; नेमि वाळङ्कळ्–चक्रवाक पक्षियों को; उऱैव कण्टु–रहते देखकर; मङ्कै तन् कॊङ्कै नोक्क–देवी के स्तनों पर दृष्टि लगाई, तब; अ नेरिळै–उन आभरणभूषिता देवी ने; चुटर् मणि–कान्तियुक्त नीले रत्नों से भरे; तटङ्कळ् कण्टाळ्–टीलों को देखकर; नॅटिय नम्पि–उन्नत नायक श्रीराम के; तोळिन् कण्–कन्धों पर; नयनम् वैत्ताळ्–आँखें डालीं। २२३

(पति-पत्नी दोनों विविध दृश्य देखते हैं और परस्पर अर्थभरी निगाहें डालकर रसानुभव प्राप्त करते हैं।) दीर्घ-धनुर्धर श्रीराम ने कमलों पर आँखें उन्मीलित करते हुए चक्रवाक पक्षियों के जोड़े को देखा और अपनी अर्द्धांगिनी के उरोजों पर दृष्टि चलायी। तो श्रेष्ठ आभरणालंकृता सीताजी ने उज्ज्वल नीले रत्नों से युक्त बालू के टीलों को देखा और सहज रूप से अपनी दृष्टि श्रीराम के सुडौल दीर्घ कंधों पर डाली। २२३

❀ ओदिम मॊदुङ्गक् कण्ड वुत्तम नुळैय ळाहुम्
शीदैतन् नडैयै नोक्किच् चिऱियदोर् मुऱुवल् शॆय्दान्
मादव डानु माण्ड्ड वन्दुनी रुण्डु मीळुम्
पोदह नडप्प नोक्किप् पुदियदोर् मुऱुवल् पूत्ताळ् 224

ओतिमम्–हंस को; ऒतुङ्क कण्ट–किनारा खींचते देखकर; उत्तमन्–पुरुषोत्तम श्रीराम; उळैयळ् आकुम्–पास आनेवाली; चीतै तन् नटैयै नोक्कि–सीताजी की चाल देखते हुए; चिऱियतु ओर् मुऱुवल्–एक मन्दहास; चॆय्तान्–किया; मातु अवळ् तातुम्–देवी, उन्होंने भी; आण्टु–(उस नदी पर) वहाँ; वन्तु नीर् उण्टु मीळुम्–आकर जल पीकर लौटनेवाले; पोतकम् नटप्प नोक्कि–गज को डग भरते देखकर; पुतियतु ओर् मुऱुवल्–नया (विचित्र) एक हास; पूत्ताळ्–विकसित किया। २२४

वहाँ एक हंस (सीताजी की चाल देखकर) हटकर जाने लगा। श्रीराम ने वह देखा और पास आनेवाली सीताजी की चाल देखकर मन्दहास किया। देवी ने एक गज को देखा जो नदी पर आकर पानी पीने के बाद लौट जा रहा था और अनोखा अर्थ-भरा हास हँसीं। २२४

❀ विल्लियऱ् ऱडक्कै वीरन् वीङ्गु नीराऱ्ऱिन् पाङ्गर्
वल्लिह णुडङ्गक् कण्डान् मङ्गैदन् मरुङ्गु नोक्क
ऎल्लियङ् गुवळैक् कानत् तिडैयिडै मलर्न्दु निन्ऱ
अल्लियङ् गमलङ् गण्डा ळण्णरन् वडिवङ् गण्डाळ् 225

विल् इयल्–धनुर्विद्या में अभ्यस्त; तट कै वीरन्–विशालहस्त वीर; वीङ्कु नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–समृद्ध-जल नदी के पास; वल्लिकळ्–लताओं को; नुटङ्क कण्टान्–लचकते देखा; मङ्कैल् तन्–देवी की; मरुङ्कुल् नोक्क–कमर पर दृष्टि डाली तो; ऎल्लि अम् कुवळै कानत्तु–अन्धकार के समान फैले पड़े कुवलय वन के; इटै इटै–बीच-बीच में; मलर्न्तु निन्ऱ–विकसित रहे; अल्लि अम् कमलम्–पंखुड़ियों से भरे कमलों को; कण्टाळ्–देखनेवाली (देवी) ने; अण्णल् तन् वटिवु कण्टाळ्–महिमावान नायक के शरीर पर दृष्टि दौड़ाई। २२५

धनुर्धर श्रीराम ने समृद्धजल वाली नदी के पास लताओं को देखा और उसी स्मृति में सुमध्यमा की कमर निहारी ! तब देवी ने अंधकार-सम रंग वाले कुवलय-वन को बीच-बीच में कमलों के साथ देखा और लगे हाथ महिमावान प्रभु के शरीर पर उनकी दृष्टि जा जमी। २२५

अतैयदोर् तन्मै यान वरुविनी राऱ्ऱिन् पाङ्गर्प्
पनिदरु दॆय्वप् पञ्ज वडियॆन्नुम् वरुवच् चोलैत्
तनियिड मदनै नण्णित् तम्बियाऱ् चमैक्कप् पट्ट
इनियपूञ् जाल यॆय्दि यिरुन्दन निराम निप्पाल् 226

इरामन्–श्रीराम; अनैयतु ओर् तन्मैयान्–वैसी एक स्थिति की; अरुवि नीर् आऱ्ऱिन् पाङ्कर्–सरिताओं की मिलकर बनी गोदावरी नदी के पास; पनि तरु तॅय्व–शीतल और दिव्य; पञ्चवटि ऍन्नुम्–पंचवटी नाम के; परुव चोलै–सभी ऋतुओं में मनोरम रहनेवाले उपवन में; तनि इटम् अतनै–एकान्त स्थान को; नण्णि–जाकर; तम्पियाल् चमैक्क पट्ट–छोटे भाई द्वारा निर्मित; इनिय पूम् चालै ऍय्ति–प्यारी मनोरम, पर्णशाला में पहुँचकर; इरुन्ततन्–रहे; इप्पाल्–इसके बाद। २२६

ऐसी गोदावरी नदी के किनारे पंचवटी नाम के स्थान में एक उपवन में, जो सभी ऋतुओं में मनोरम और सुखद रहता था, श्रीराम आदि गये। वहाँ छोटे भाई लक्ष्मण ने एक सुन्दर पर्णशाला निर्मित की। श्रीराम उसमें (अपनी प्रिया के साथ) रहने लगे। तब शूर्पणखा वहाँ आयी। २२६

नीलमा मणिनिऱ निरुदर् वेन्दनै
मूलना शम्बॅऱ मुडिक्कु मुन्बिनाल्
मेलैना ळुयिरॊडुम् पिऱन्दु तान्विळै
कालमोर्न् दुडनुऱै कडिय नोयनाळ् 227

मा नील मणि निऱ निरुतर् वेन्तनै–बड़े नीले रत्न के समान रंग वाले राक्षस-राजा (रावण) को; मूल नाचम् पॅऱ–समूल नाश करने के लिए; मुटिक्कुम्–उपाय कर चुकने की; मुन्पिनाल्–प्रेरणा से; मेलै नाळ्–आरम्भ के दिन में ही; उयिरॊटुम् पिऱन्तु–जन्म के साथ पैदा होकर; तान् विळै कालम् ओर्न्तु–फलदान का समय देखकर; उटन् उऱै–(जीव के) साथ रहनेवाली; कटिय नोय् अनाळ्–कठोर व्याधि के समान जो रही, ऐसी। २२७

शालीन नीले रत्न के समान काले रंग के राक्षस रावण का समूल नाश करने का उपाय करनेवाली विधि की प्रेरणा से शूर्पणखा वहाँ आयी। वह ऐसे रोग के समान थी, जो शरीर के साथ-साथ जन्म के अवसर पर पैदा हो जाता है और ऐन समय की प्रतीक्षा में उसके साथ लगा रहता है। २२७

शॅम्बरा हम्बडच् चॅऱिन्द कून्दलाळ्
वॅम्बरा हन्दनि विळैन्द मॅय्यिनाळ्
उम्बरा नवर्क्कुमॊण् डवर्क्कु मोदनीर्
इम्बरा नवर्क्कुमो रुऱुदि यीट्टुवाळ् 228

चॅम्पु अराकम् पट–ताम्र का रंग बिछुड़ जाय, ऐसे लाल; चॅऱिन्त–और घने; कून्तलाळ्–केश वाली; वॅम्पु–उष्णतप्त; अराकम् तनि विळैन्त–कामराग-विवर्धित; मॅय्यिनाळ्–शरीर वाली; उम्पर् आनवर्क्कुम्–देवों का; ऒण् तवर्क्कुम्–और श्लाघ्य तपस्वियों का; ओतम् नीर्–समुद्रजल से; इम्पर् आनवर्क्कुम्–(वलयित) इस लोक के वासियों का; ओर् उऱुति ईट्टुवाळ्–एक अपूर्व हित साधन करनेवाली। २२८

उसके केश ताँबे के रंग को मात देनेवाले अरुण वर्ण के थे। उसका

शरीर कामेच्छा के उष्ण से तप्त था। वह अनजान में ही देवों, श्रेष्ठ तपस्वी लोगों और इस समुद्र-मेखला पृथ्वी के वासियों का हित करनेवाली बनी आयी। २२८

❀ वॆय्यदोर् कारण मुण्मै मेविऩाळ्
वॆहलुन् दमियळव् वऩत्तु वॆहुवाळ्
नॊय्दिऩिव् वुलहॆला नुऴैयु नोन्मैयाळ्
ऎय्दिन ळिराहव ऩिरुन्द शूऴल्वाय् 229

वॆय्यतु ओर् कारणम्–अनर्थकारी एक कारण (कामवासना) के; उण्मै मेविऩाळ्–अस्तित्व को अपनानेवाली; तमियळ्–अकेली; अ वऩत्तिल्–उस वन में; वॆकुवाळ्–वास करनेवाली; नॊय्तिऩ्–अनायास; इ–इस; उलकु ऎलाम् नुऴैयुम्–लोक में सर्वत्र पहुँचने का; नोन्मैयाळ्–सामर्थ्य वाली; इराकवऩ् इरुन्त चूऴल् वाय्–(जहाँ) श्रीराघव रहे, उस स्थान में; ऎय्तिऩळ्–आई। २२९

भयंकर एक कारण था, जिसके संपादनार्थ वह वन में अकेली रहती थी। (वह कारण उसकी कामलिप्सा हो सकता है या अपने पति को मारनेवाले अपने भाई रावण के प्रति उसका क्रोध भी हो सकता है।) वह सारे लोक में घुसकर चलने की शक्ति और साहस रखती थी। वह अकस्मात उस स्थान पर आयी, जहाँ श्रीराम रहते थे। २२९

❀ ऎण्डरु मिमैयव ररक्क रॆङ्गण्मेल्
विण्डनर् विलक्कुदि यॆऩ्ऩ मेलऩाळ्
अण्डशत् तरुन्दुयि ऱुऱन्द वैयऩैक्
कण्डऩ ळॆऩ्ऩिळैक् किऱुदि काट्टुवाळ् 230

तऩ् किळैक्कु–अपने परिवारों को; इऱुति काट्टुवाळ्–अन्त दिखाने (दिलाने) वाली ने; मेलै नाळ्–पहले कभी; ऎण् तरुम् इमैयवर्–सबसे प्रशंसित सुर लोगों के; अरक्कर् ऎङ्कळ् मेल् विण्टऩर्–राक्षसों ने हमसे वैर किया है; विलक्कुति ऎऩ्ऩ–मिटाइए यह प्रार्थना करने पर; अण्टचत्तु–अण्डज नाग पर; अरुन्तुयिल् तुऱन्त–अपूर्व योगनिद्रा-त्यागी (अवतरित हुए); ऐयऩै–महाप्रभु को; कण्टऩळ्–देखा। २३०

अपने बन्धु-बान्धवों को अंत दरसानेवाली उसने श्रीराम पर दृष्टि लगायी। किस श्रीराम पर? एक समय पूजनीय देवों ने विष्णु भगवान से प्रार्थना की कि राक्षस हमसे वैर करते हैं; हमें बचा लीजिए। तब परमात्मा ने अण्डज नाग पर अपना शयन और योगनिद्रा त्यागकर इस संसार पर श्रीराम का अवतार लिया था। ऐसे श्रीराम को उसने देखा। २३०

❀ शिन्दैयि लुऱैबवर् कुरुवन् दीय्न्ददाल्
इन्दिरङ् कायिर नयऩ मीशऱ्कु

मुन्दिय मलर्क्कणोर् मून्ऱु नान्गुतोळ्
उन्दियि लुलहळित् तार्कॆन् ऱुन्नुवाळ् 231

चिन्तैयिल् उऱैपवर्कु–मन में वास करनेवाले (मन्मथ) का; उरुवम् तीय्न्ततु–शरीर जल गया; इन्तिरर्कु–देवेन्द्र के तो; आयिरम् नयनम्–सहस्र आँखें हैं; इचर्कु–ईश्वर शिव के; मुन्तिय–अपूर्व; मलर् कण्–कमल-सम नेत्र; ओर् मून्ऱु–तीन हैं; उन्तियिन्–नाभी से; उलकु अळित्तार्क्कु–लोकों को दिलानेवाले (विष्णुदेव) के; नान्कु तोळ्–चार हाथ हैं; ऎन्ऱु–ऐसा; उन्नुवाळ्–सोचती। २३१

वह विचार करने लगी कि ये कौन हैं ? मनोवासी मन्मथ है क्या ? पर उसका शरीर तो जल गया और वह अशरीरी है ! देवेन्द्र ? उसके तो सहस्र नेत्र हैं। शिवजी हैं क्या ? उनके तो तीन आँखें हैं। विष्णु भी नहीं हो सकते, जिन्होंने अपनी नाभि से लोकों की सृष्टि की क्योंकि उनके चार हाथ होते हैं और इसके तो दो ही है। २३१

※ कऱ्ऱैयन् जडैयवन् कण्णिऱ् काय्दलाल्
इऱ्ऱव नन्ऱुतॊट् टिन्ऱु काऱुन्दान्
नऱ्ऱव मियऱ्ऱियव् वनङ्ग नल्लुरुप्
पॆऱ्ऱन नामॆनप् पॆयर्त्तु मॆण्णुवाळ् 232

कऱ्ऱै अम् चटैयवन्–जूट बनी सुन्दर जटा वाले की; कण्णिल्–(भाल की) आँख (की अग्नि) से; काय्तलाल्–जला देने से; इऱ्ऱवन्–अरूप बना; अ अनङ्कन् तान्–वह अनंग ही; अन्ऱु तॊट्टु इन्ऱु काऱुम्–उस दिन से आज तक; नल् तवम् इयऱ्ऱि–अच्छा तप करके; नल् उरु पॆऱ्ऱनन् आम्–यह सुन्दर रूप पा गया हो; ऎन–ऐसा; पॆयर्त्तुम्–फिर भी; ऎण्णुवाळ्–सोचती। २३२

वह आगे सोचती— जटाधारी शिवजी के भाल के नेत्र से निकली आग से जलकर जो अरूप बन गया था, वह अनंग उस दिन से आज तक तपस्या करके यह सुन्दर रूप पा गया क्या ? । २३२

※ तरङ्गळि नमैन्दुताळ्न् दुयर्न्द तालमा
मरङ्गळु निहर्क्किल मलैयुम् बुल्लिय
उरङ्गळि नुयर्दिशै योम्बु मानैयिन्
करङ्गळे यिवन्मणिक् करमॆन् ऱुन्नुवाळ् 233

इवन् मणि करम्–इसके सुन्दर हाथ; तरङ्कळिन् अमैन्तु–सम और श्रेष्ठ बनकर; ताळ्न्तु–दीर्घ रहते हैं; उयर्न्त ताल मा मरङ्कळुम्–ऊँचे तालवृक्ष भी; निकर्क्किल–तुलना नहीं कर सकते; मलैयुम् पुल्लिय–पर्वत भी अल्प है; उरन्कळिल् उयर्–बल में बढ़े-चढ़े; तिचै ओम्पु–दिशाओं में रहकर पालन करनेवाले; यानैयिन्–गजों के; करङ्कळे–कर ही हैं; ऎन्ऱु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३३

इसके सुन्दर हाथ परस्पर सम, बडे ही सुन्दर और आजानु लम्बे हैं।

इनकी उपमा बड़े तालवृक्ष नहीं कर सकते; पर्वत भी अलग रह जायेंगे। इसलिए वल में बढ़े हुए दिग्गजों के कर ही हैं इनके हाथ! । २३३

विल्मलै वल्लवन् वीरत् तोळोंट्टुम्
कल्मलै निहर्क्किल कनिनृद नीलत्तिन्
नल्मलै यल्लदु नाम मेरवुम्
पोन्मलै यादलाऱ् पोरुवि लाऍन्बाळ् 234

विल् मलै वल्लवन्–धनुर्युद्धसमर्थ इसके; वीर तोळ् ओट्टुम्–वीरता-भरे कन्धों से; कल मलै निकर्क्किल–मामूली पत्थर के पर्वत तुल नहीं सकते; कनिनृत नीलत्तिन्–पपके नीले रत्नों के; नल् मलै अल्लवु–सुन्दर पर्वत के सिवा; नाम मेरुवुम्–नामी मेरु पर्वत भी; पोन मलै आतलाल्–स्वर्ण-पर्वत होने के कारण; पोरुवलातु–समान नहीं बन सकता; ऍन्पाळ्–कहती । २३४

धनुर्युद्ध में समर्थ इसके वीरतापूर्ण सबल कंधों की समता साधारण पत्थर का पर्वत नहीं कर सकता। पूच प्रवृद्ध नीली मणि का श्रेष्ठ पर्वत कर सकता है। उसके सिवा नामी मेरु पर्वत भी नहीं कर सकता क्योंकि वह स्वर्णमय है। —ऐसी राय कहती वह शूर्पणखा । २३४

ताळुयर् तामरैत् तळङ्ग ळम्मोट्टुम्
केळुयर् नाट्टत्तन् गिरियिन् ऱोऱ्ऱत्तान्
तोळोडु तोळिनैत् तोडर्नदु नोक्कुरिन्
नीळिय वल्लकण् णॅडिदु मार्वॅन्बाळ् 235

ताळ् उयर्–नाल के कारण ऊँचे रहनेवाले; तामरै तळङ्कळ् तम् ओट्टुम्–कमल की पंखुड़ियों सहित; केळ् उयर्–उज्ज्वलता में बढ़ी; नाट्टत्तन्–आँखों वाला है; किरियिन् तोऱ्ऱत्तान्–गिरि-सम आकार का है; तोळ् ओटु तोळिनै–एक कन्धे के साथ दूसरे कन्धे को; तोटर्नृतु नोक्कुरिन्–बराबर एक ही दृष्टि में देखना चाहूँ तो; कण् नीळिय अलल–मेरी आँखें लम्बी नहीं हैं (दृष्टि में सामर्थ्य नहीं है); नॅटितु मार्पु ऍन्पाळ्–विशाल वक्ष वाला है, कहती । २३५

वह उनके रूप को अंग-अंग देखती और सराहती। इनकी आँखें कमलदल की शोभा लिये बहुत मनोरम हैं। पर्वत-समान आकार के इसके दोनों कंधों को एक साथ, एक दृष्टि में देखना कठिन है क्योंकि मेरी आँखें उतनी लम्बी नहीं रहती। इसका वक्ष बहुत विशाल है। २३५

अदिहनिन् ऱॊळिरमिव् वळहन् वाण्मुहम्
वॊदियविळ् तामरैप् पूवै यॊप्पदो
कदिर्मदि यामॆतिऱ् कलैह डेयुमम्
मदियॆंनिन् मदिक्कुमोर् मरुवण् डॆन्नमाल् 236

निन्रु अतिकम् ऑळिरुम्–स्थिर रूप से अधिक दीप्तिमान; इ अळकन् वाळ् मुकम्–इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल मुख; पोंति अविळ् तामरै पूवै ऑप्पतो–पंखुड़ियाँ जिसकी विकसित हो रही हैं, उस कमल की उपमा वन सकता है; कतिर् मति आम्–(शीतल-) किरण (पूर्ण) चन्द्र है (कहूँ); ऍन्निल्–तो; कलैकळ् तेयुम्–कलाएँ लुप्त होती जाती हैं; अ मति ऍन्निल्–वह चन्द्र (सम) है, कहा भी जाय तो; मतिक्कुम्–पूर्ण चन्द्र में भी; ओर् मरु उण्टु–एक कलंक है; ऍन्नुम्–ऐसा कहती। २३६

स्थिर रूप से अत्यधिक शोभायमान रहनेवाले इस सुन्दर पुरुष का उज्ज्वल आनन विकासशील कमल से उपमित हो सकता है क्या ? नहीं। उज्ज्वल किरणों वाला पूर्ण-चन्द्र उपमान वन सकता है क्या? नहीं। क्योंकि दूसरे दिन से वह क्षीण होने लग जाता है। पूर्णता स्थायी न होने पर भी राका-चन्द्र की उपमा मान जायँ तो भी उसमें कलंक है। अतः राका-चन्द्र भी इसकी उपमा नहीं वन सकता। २३६

❀ ऍवन्शॅय	विन्नियविव्	वळहै	यॅय्दिन्नान्
अवञ्जॅय्दु	तिरुवुडम्	बलश	नोऱ्किन्ऱान्
नवञ्जॅय्त्	तहैयविन्	नळिन्न	नाट्टत्तान्
तवञ्जॅयत्	तवञ्जॅय्द	तवमॅ	ऍन्नुगिऱाळ् 237

इत्तिय इ अळकै–मधुर इस सुन्दरता को; ऍय्तित्तान्–जो प्राप्त है, यह; अवम् चॅय–अपना रूप विगाड़ने के लिए; तिरु उटम्पु–श्रीशरीर; अलच–कष्ट उठाए, ऐसा; ऍवन् चॅय–क्या साधने के लिए; नोऱ्किन्ऱान्–तप करता है; नवम् चॅयत्तकैय–नित-नवीन; इ नळित्त नाट्टत्तान्–यह कमल-सम आँखों वाला; तवम् चॅय–तपस्या करे, इसके लिए; तवम् चॅय्त तवम् ऍन्–तप ने किया कैसा तप है; ऍन्किन्ऱाळ्–कहती। २३७

इतनी सुन्दरता पाने का भाग्यशाली यह अपने लावण्य को नष्ट करते हुए और श्री शरीर को दुख देते हुए कौन सा कार्य साधने के लिए तपस्या करता है ? हा ! नितनवीन कमलसम आँखों वाला यह तप करे, इसके लिए तप ने क्या ही तप किया है ? —यह आश्चर्य करती ! । २३७

उडुत्तनी	राडैय	ळुरुवच्	चॅव्वियळ्
पिडित्तरु	नडैयिन्नळ्	पॅण्मै	नन्ऱिवन्
अडित्तलन्	दीण्डलि	नवनिक्	कम्मयिर्
पॉडित्तन	पोलुमिप्	पुल्लॅन्	ऱुन्नुवाळ् 238

उटुत्त नीर् आटैयळ्–समुद्रवसना; उरुव चॅव्वियळ्–रूपसौदर्यवती; पिटि तरु नटैयित्तळ्–हथिनी-सम चाल वाली (भूदेवी का); पॅण्मै नन्ऱु–स्त्रीत्व श्लाघनीय है; इ पुल्–ये घासें; इवन् अटित्तलम् तीण्टलिन्–इसके चरणों के स्पर्श से; अ मयिर्–उसके रोंगटे; पॉटित्तन पोलुम्–खड़े हुए हों, ऐसी लगती है; ऍन्ऱु उन्नुवाळ्–ऐसा सोचती। २३८

समुद्रवसना, सौन्दर्यवती और हथिनी-सी चाल वाली भूमिदेवी का स्त्रीत्व भाग्यवान हो गया। इन घासों को देखो। भूमि के रोम के समान हैं जो इसके चरण-स्पर्श से पुलकित हो खड़े रहते हैं —यह कवित्वपूर्ण विचार करती। २३८

वाणिला	मुरुवलान्	वयङ्गु	शोदियै॑क्
काणल	नेकॊलाङ्	कदिरि	त्रायहन्
शेणॆलाम्	बुल्लॊळि	शॆलुत्तिच्	चिन्दैयिल्
नाणिलन्	मीमिशै	नडक्कु	मॆन्गिन्राळ् 239

वाळ् निला मुरुवलान्–उज्ज्वल चाँदनी-सम दाँतों वाले इसकी; **वयङ्कु चोतियै**–शोभायमान प्रभा को; **कतिरिन् नायकन्**–किरणनायक सूर्य ने; **काणलन्ते कॊलाम्**–देखा नहीं है शायद; **चेण् ऍलाम् पुल् ऒळि चॆलुत्ति**–(तभी तो) दूर-दूर तक अपनी मन्द प्रभा फैलाते हुए; **चिन्तैयिल्**–मन में; **नाण् इलन्**–लाज-रहित; **मी मिचै**–आकाश में; **नटक्कुम्**–संचार करता है; **ऍन्किन्राळ्**–यह निदा करती। २३९

उज्ज्वल चाँदनी के समान दाँत वाले इसके शरीर की ज्योति को रश्मिपति सूर्य ने देखा नहीं है शायद क्या? तभी तो वह दूर-दूर तक अपना मंद प्रकाश फैलाते हुए, निर्लज्ज होकर, आकाश में संचार करता है! —ऐसा कहती। २३९

कुप्पुरर् करियमाक् कुन्रै वॆन्रुयर्, इप्पॆरुन् दोळव निदळ्क् केट्पदोर्
ऒप्पॆन वुलहमे युरैक्कि नॊण्णुमो, तुप्पिनिर् रुप्पुडै यादैच् चॊल्लुहेन् 240

कुप्पुररकु अरिय–जिसको लाँघना मुश्किल है, उस; **मा कुन्रै वॆन्रु**–बड़े पर्वत को हराकर; **उयर्**–उन्नत हुए; **इ पॆरुम् तोळवन्**–बड़े कन्धों वाले इसके; **इतळ्क्कु**–अधरों की; **ओप्पु ऍन**–समता करनेवाला ऐसा; **उलकमे उरैक्किन्**–सारी दुनिया कहे तो भी; **ऒण्णुमे**–वह समान हो सकता है क्या; **तुप्पितिल्**–प्रवाल से बढ़कर; **तुप्पु उटै**–(उपमा होने का) सामर्थ्य रखनेवाला; **यातै चॊल्लुकेन्**–किसको कह सकूँगी। २४०

अलंघ्य पर्वत को भी नीचा दिखानेवाले कन्धों से शोभायमान इसके अधरों की तुलना प्रवाल से लोक करते हैं। तो क्या प्रवाल में वह सामर्थ्य है? लेकिन प्रवाल से बढ़कर समर्थ उपमा कहाँ खोजूँ? (तुप्पु—प्रवाल; सामर्थ्य)। २४०

नर्कलै मदियुर वयङ्गु नम्बितन्, ऍर्कलै तिरुवरै यॆय्दि येमुर
वर्कलै नोर्रन माशि लामणिप्, पॊर्कलै नोर्रिल पोलु मालॆन्राळ् 241

नल् कलै मति–पूर्ण-(कला)-चन्द्र की; **उर**–तुलना करते हुए; **वयङ्कुम्**–शोभायमान; **नम्पि तन्**–इस पुरुष-नायक की; **ऍल् कलै**–सूर्य (प्रभा-) हारी; **तिरु अरै**–श्रीयुक्त कमर को; **अय्ति**–प्राप्त करके; **एम् उर**–आनन्द भोगने के लिए;

वऱ्कलै नोऱ्ऱत–वल्कल ने तप किया था; माचु इला मणि–निर्दोष और श्रेष्ठ; पॊऩ् कलै–स्वर्ण-वस्त्र ने; नोऱ्ऱिल पोलुम्–तप नहीं किया शायद; ॲन्ऱाळ्–कहती। २४१

वह वल्कल का भाग्य सराहती। कहती— सारी कलाओं से पूर्ण चन्द्र के समान शोभायमान 'इस पुरुषनायक की सूर्यप्रभाहारी श्रीकमर को लपेटकर सुखभोग करने का भाग वल्कल ने ही अपने तप द्वारा प्राप्त किया है। क्या स्वर्ण-वस्त्र ने तपस्या नहीं की है शायद ? । २४१

तॊडैयमै नॆडुमळैत् तॊड्ग लामॆन्नक्
कडैहुळऩ्ऱ् ऱिडैनॆऱि करिय कुऴ्जियैच्
चडैयॆऩ्ऱप् पुऩैन्दिल नॆन्ऩिऱ् ऱैयलार्
उडैयुयिर् यावैयु मुडैयु मालॆन्ऱाळ् 242

तॊटै अमै–बराबर और; नॆटु मऴै तॊड्कल् आम् ॲन्ऩ–लम्बी बारिश की धार के समान; कटै कुळन्ऱु–छोर कुंचित होकर; इटै नॆऱि–बीच में खूब घने; करिय कुऴ्चियै–काले केश को; चटै ॲन्ऩ पुऩैन्तिलन् ॲन्ऩिल्–जटा बनाकर नहीं रखता तो; तैयलार् उटै–स्त्रियों के; उयिर् यावैयुम्–सारे प्राण; उटैयुमाल्–मिट जाते; ॲन्ऱाळ्–कहती। २४२

वह स्त्रियों पर तरस खाती, कहती। इनके काले केश मेघ से बराबर गिरनेवाली धार के समान लम्बे और छोर में कुंचित हैं। वे घने हैं। अगर यह उनको जटा के रूप में नहीं बाँधता तो स्त्रियों के प्राण मिट जाते (स्त्रियों के मन टूट जाते)। २४२

नाऱिय नहैयणि नल्ल पुल्लिऩाल्
एऱिय शॆव्वियै यियऱ्ऱु मोवॆना
माऱहन् मुऴुमणिक् करशिन् माट्चिदान्
वेऱोरु मणियिनाल् विळड्गु मोवॆन्ऱाळ् 243

नाऱिय–शोभायमान; अणि नकै–सुन्दर आभरणों में; नल्ल–श्रेष्ठ; पुल्लिऩाल्–इसके शरीर का आलिंगन करें; एऱिय चॆव्वियै–(तो वे) और अधिक सुन्दरता को; इयऱ्ऱुमो–प्रदान कर सकेंगे क्या; ॲन्ऩा–सोचकर; माऱु अकल्–लाजवाब; मुऴु मणिक्कु अरचिन्–सारे रत्नों के राजा श्रीकौस्तुभ का; माट्चि–शान; वेऱु ओरु मणियिऩाल्–दूसरी एक मणि से; विळड्कुमो–प्रकाशित हो सकता है क्या; ॲन्ऱाळ्–कहती। २४३

वह उनको आभरणभूषित के रूप में कल्पना करती है और पूछती है कि क्या अति सुन्दर आभरणों में अति श्रेष्ठ आभरणों को चुनकर इसको पहनाएँ तो वे आभरण इसकी दर्शनीयता को बढ़ा सकेंगे ? वह निश्चय करती कि मणियों में श्रेष्ठ श्रीकौस्तुभमणि का शान और रूप-गौरव अन्य रत्नों द्वारा बढ़ाया जा नहीं सकता। २४३

करन्दिल ऱिलक्कण मॅडुत्तुक् काट्टिय
परन्दरु नान्मुहऩ् पऴिप्पुड़् ऱालरो
इरन्दिव निणैयडिप् पॉडियु मेड़्किलाप्
पुरन्दर नुलहॅलाम् पुरक्किऩ्ऱाऩ्ऱाळ् 244

इवन् इणै अटि–इसके चरणद्वय की; पॉटियुम्–धूलि की महिमा; इरन्तुम् एड़्किला–याचना करने पर भी जो प्राप्त न कर सकेगा; पुरन्तरऩ्–वह पुरन्दर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों का; पुरक्किऩ्ऱाऩ्–पालन करता है; करन्तिलऩ्–बिना छिपाये; इलक्कणम् ॲटुत्तु काट्टिय–(सामुद्रिका-) लक्षणों के साथ इनकी रचना करनेवाले; परम् तरु नाऩ्मुकऩ्–महिमायुक्त ब्रह्मा; पऴिप्पु उड़्ऱाऩ् अरो–अपराधी हो गया न; ॲऩ्ऱाळ्–कहती। २४४

इसके चरणद्वय की धूलि के समान भी पुरन्दर नहीं बन सकता। वह याचना कर पा लेने का प्रयास करे तो भी उसे इसकी-सी महिमा नहीं हो सकती। तो भी वह तीनों लोकों का पालन करता है! ब्रह्मा ने बिना किसी दुराव के सारे लक्षणों से युक्त कराके इसको रचा है तो क्या लाभ है? इसको तपस्वी बनाने से ब्रह्मा को अपयश मिल गया है। २४४

नीत्तमुम् वाऩमुङ् गुरुह नॅञ्जिडैक्
कोत्तवऩ् बुणर्विडैक् कुऴित्तु मीक्कॊळ
एत्तवुम् बरिविऩ्ऱीन् ऱीह लाऩ्बॊरुळ्
कात्तवऩ् बुहऴॅनत् तेयुङ् गड़्पिऩाळ् 245

नीत्तमुम्–समुद्रजल; वाऩमुम्–और आकाश को; कुऱुक–छोटा दिखने देते हुए; नॅञ्चु इटै कोत्त–अपने मन में अंकित; अऩ्पु उणर्वु इटै–कामेच्छा में; कुऴित्तु–मग्न होकर; मी कॊळ–उस राग के बढ़ने से; एत्तवुम्–याचकों की प्रार्थना सुनकर भी; परिविऩ्–अनुताप करके; ऑऩ्ऱु ईकलाऩ्–कुछ न देनेवाले; पॊरुळ् कात्तवऩ् पुकऴ् ॲऩ–धन के परिग्रही (रक्षक) के यश के समान; तेयुम् कड़्पिऩाळ्–क्षीणप्राय स्त्रीत्व (शील-संयम) वाली। २४५

शूर्पणखा के मन में कामसागर इतना भर आया कि उसके विस्तार के सामने समुद्र का जल और आकाश का फैलाव छोटे दिखे। उसमें मग्न उसके मन में ज्यों-ज्यों कामेच्छा बढ़ती गयी, त्यों-त्यों उसका स्त्रीसहज शील और संयम उस लोभी धनवान के यश के समान छीजने लगे, जो प्रार्थना करनेवाले याचक से सहानुभूति नहीं करता और न ही कुछ देता और धन की रक्षा करता है। २४५

✻ वाऩ्ड़निल् वरैन्ददोर् माद रोवियम्
पोऩ्ड़ऩ णिऩ्ड़ऩळ् पुळङ्गु नॅञ्जिऩाळ्
तोऩ्ड़ड़ऩ् शुडर्मणित् तोळि ऩाट्टङ्गळ्
ऊऩ्ड़िऩ पड़िक्कवो रूड़्ड़म् बॅड़्ड़िलाळ् 246

पुळुङ्कुम् नॅञ्चित्ताळ्–(काम-) तप्तमना; तोन्ऱल् तन्–चक्रवर्ती-तनय के; ट्टर् मणि तोळिन्–दीप्त-मणि-सम भुजाओं में; ऊन्ऱित्त नाट्टङ्कळ्–गड़ी आँखों को; ऱिक्क–निकालने की; ओर् ऊऱ्ऱम् पॅऱ्ऱिलाळ्–आवश्यक शक्ति नहीं रखती थी; वान् तन्निल् वरैन्त–आकाश में खींचे हुए; ओर् मातर् ओवियम् पोन्ऱनळ्–एक स्त्री (प्रेम की स्त्री) के चित्र के समान लगी; निन्ऱनळ्–खड़ी रही। २४६

उसका मन कामतप्त हो गया। उसमें अपनी दृष्टि को, जो श्रीराम के कांतिमय कंधों पर गड़ गयी थी, उखाड़ लेने की क्षमता नहीं रह गयी थी। इसलिए वह बीच आकाश में ही निस्पंद-सी खड़ी रह गयी। तब वह आकाश में खींचे गये स्त्रीचित्र (या प्रेमचित्र) के समान दिखी। २४६

❀ निन्ऱन	ळिरुन्दव	नडिय	मार्बहम्
ऑन्ऱुवें	नन्ऱॅनि	लमुद	मुण्णिनुम्
पॉन्ऱुवॅन्	पोक्किनि	यरिदु	पोलॅनाच्
चॅन्ऱॅदिर्	निऱ्पदोर	शॅय्है	तेडुवाळ् 247

निन्ऱनळ्–स्तब्ध खड़ी रही; इरुन्तवन्–वहाँ स्थित उसका; नॅटिय मार्पु अकम्–विशाल वक्षस्थल पर; ऑन्ऱुवॅन्–लग जाऊँगी; अन्ऱु ॲतिल्–(वह) नहीं (हो सका) तो; अमुतम् उण्णितुम्–अमृत खाऊँगी तो भी; पॉन्ऱुवॅन्–(इस काम-वेदना के कारण) मर जाऊँगी; पोक्कु इन्नि अरितु पोल् ॲना–कोई गति दूसरी नहीं शायद, यह सोचकर; ॲतिर् चॅन्ऱु निऱ्पतु–सामने जाकर स्थित होने का; ओर् चॅय्कै तेटुवाळ्–एक बहाना ढूँढ़ती। २४७

चित्र के समान स्थिर जो खड़ी रही, उस शूर्पणखा के मन में यह संकल्प उठा। वहाँ रहनेवाले उस पुरुष के विशाल वक्षस्थल में लिपट जाऊँगी। अगर वह नहीं हो सकता तो अमृत भी मुझे जीवित नहीं रख सकता— मैं मर जाऊँगी। कोई दूसरा चारा नहीं दीखता। अब श्रीराम के सामने आकर खड़ी होने के लिए मन में एक योग्य बहाना ढूँढ़ने लगी। २४७

❀ ॲयिरुडै	यरक्कियॅव्	वुयिरु	मीट्टदोर्
वयिरुडै	याळॅन	मरुक्कु	मादलाल्
कुयिऱॉडर्	कुदलैयोर्	कॉव्वै	वायिळ
मयिऱॉड	रियलॅळिल्	मरुव	नन्ऱॅना 248

ॲयिऱु उटै अरक्कि–वक्रदाँत वाली राक्षसी; ॲ उयिरुम् इट्टतु–सभी जीवों को जिसमें दफ़ना लिया है, उस; ओर् वयिऱु उटैयाळ्–उदर वाली है यह; ॲन–समझकर; मरुक्कुम् आतलाल्–इनकार कर देगा, इसलिए; कुयिल् तॉटर्–कोयल-सम; कुतलै–मधुर वाणी; ओर् कॉव्वै वाय्–बिम्बाधर; इळमयिल् तॉटर्–(इनके साथ) बालमयूर की-सी छटा वाली; इयल् ॲळिल्–स्वाभाविक शोभा को; मरुवल्–अपनाना; नन्ऱु ॲना–अच्छा, समझकर। २४८

उसे संशय था कि श्रीराम से इस रूप में मिलूँ तो वे अस्वीकार कर देंगे। वे यह सोचेंगे कि इस राक्षसी का पेट सभी जीवों को जीवित ही गाड़ देने का गड्ढा है। इसलिए उसने विचार किया कि मैं एक सुन्दरी का रूप धारण करूँगी। उसकी वाणी कोकिल की-सी होगी। उसके अधर बिंबफल के समान लाल होंगे। उसकी चमक-दमक बाल-मयूर की-सी होगी। और समूची सुन्दरता स्वाभाविक होगी। हाँ वही अच्छा कार्य होगा। २४८

❀ पङ्गयच् चॆल्वियै मऩत्तुप् पाविया
अङ्गैयि ऩायमन् दिरत्तै यायऩ्दऩळ्
तिङ्गळिऩ् चिऱन्दॊळिर् मुहत्तळ् चॆव्वियळ्
पॊङ्गॊळि विशुम्बिऩिऱ् पॊलियत् तोऩ्ऱिऩाळ् 249

पङ्कय चॆल्वियै–पंकज की स्वामिनी श्रीलक्ष्मी को; मऩत्तु पाविया–मन में ध्यान करके; अम् कैयिऩ् आय–खूब वश में रहे; मन्तिरत्तै–श्रीलक्ष्मी-मन्त्र को; आय्न्तऩळ्–जपा; तिङ्कळिल् चिऱन्तु–चन्द्र से बढ़कर; ऒळिर् मुकत्तळ्–शोभायमान मुख वाली; चॆव्वियळ्–और तरुण सुन्दरी बनी; पॊङ्कु ऒळि–अपनी छिटकती छटा को; विचुम्पिऩिल् पॊलिय–आकाश में फैलने देते हुए; तोऩ्ऱिऩाळ्–प्रकट हुई। २४६

उसने पंकजा श्रीलक्ष्मीदेवी का ध्यान किया। उसने लक्ष्मीदेवी का मंत्र वश कर रखा था। उसने वह मंत्र जपा। तब वह पूर्ण-चन्द्र से भी बढ़कर प्रभा छिटकानेवाला मुख, तरुण सौन्दर्य —इनसे युक्त होकर आकाश में अपना रूप-लावण्य-प्रकाश फैलाती हुई प्रकट हो गयी। २४९

पञ्जियॊळि विञ्जुकुळिर् पल्लव मनुङ्गच्
चॆञ्जॆविय कञ्जनिहर् शीऱडि पॆयर्प्पाळ्
अञ्जॊलिळ मञ्जैयॆऩ वऩ्ऩमॆऩ मिऩ्ऩुम्
वञ्जियॆऩ नञ्जमॆऩ वञ्जमहळ् वन्दाळ् 250

ऒळि विञ्चु–आभा में बढ़कर; पञ्चि–लाल रुई व; कुळिर् पल्लवम्–शीतल पल्लव को; अनुङ्क–(परास्तना का) दुख देते हुए; चॆम् चॆविय–लाल और सुन्दर; कञ्चम् निकर्—कंज-सम; चीऱटि–अपने छोटे पैरों को; पॆयर्प्पाळ्–रखती हुई; अम् चॊल् इळ मञ्ञै ऎऩ–सुन्दर बोली वाले बालमयूर के समान (छटा वाली); अऩ्ऩम् ऎऩ–हंस के समान (चाल वाली); मिऩ्ऩुम् वञ्चि ऎऩ–चमकती बिजली के समान; नञ्चम् ऎऩ–और विष के समान; वञ्च मकळ्–वंचकी नारी; वन्ताळ्–आई। २५०

फिर वह वंचकी निशाचरी श्रीराम के सामने आयी। कैसे? उसके लाल, कंजतुल्य छोटे पैर लाल रुई और शीतल पल्लवों को मात दे रहे थे। वह कोकिल के समान मधुर-मधुर बोलनेवाले बालमयूर के

मान आभा वाली थी। वह बिजली की लता के समान और विषतुल्य था। ऐसी वह मनोरम रूप से पग धरती हुई आयी। २५०

पॊन्नॊळ्हु पूवित्तॊडु पूविलुऱै पूवै
पिन्नॆॕळिल्हॊळ् वाळिणै पिऱळ्न्दॊळिर् मुहत्ताळ्
कन्नियॆॕळिल् कॊण्डदु कलैत्तड मणित्तेर्
मिन्निळिव तन्मैयदु विण्णिळिव दॆन्न 251

पॊन् ऑळ्कु—स्वर्ण-वर्ण के साथ; पूविन् ऑट्टु—और कान्ति के साथ; पूविल् उऱै—कमल के फूल पर रहनेवाली; पूवै—देवी, श्रीलक्ष्मी को; पिन् ऍळिल् कॊळ्—सौंदर्य में पीछे ढकेलनेवाली सुन्दरता लेकर; वाळ् इणै—तलवार (-सम आँखों) के जोड़े; पिऱळ्न्तु ऑळिर्—जिसमें चलित होकर छवि दे रहे थे, वह; मुकत्ताळ्—मुख वाली; कन्नि ऍळिल् कॊण्टतु—एक अनोखी सुन्दरता लिये; कलै तट मणि तेर्—चित्रमयी विशाल सुन्दर रथ; मिन् इळिव तन्मैयतु—बिजली गिरती-सी; विण् इळिवतु ऍन्न—आकाश से उतरता हो, ऐसा। २५१

शूर्पणखा स्वर्णवर्ण, कमलजा से भी बढ़कर सुन्दरी बन गयी। उसका मुख दो चंचल और तलवार-सम आँखों के साथ बहुत ही छविमान दिखा। वह आकाश से नीचे जब उतरती आयी तब वह एक अनोखे, चित्र-प्रतिमाओं से अलंकृत विशाल और सुन्दर रथ के समान लगी, जो बिजली उतरती हो ऐसा आकर्षण लेकर आकाश से उतर रहा था। २५१

❀ कात्तिलुयर् कऱ्पह मुयिर्त्त कदिर्वल्लि
मेन्निनत्ति पॆऱ्ऱुविळै कामनॆऱि वाशत्
तेनिन्मॊळि युऱ्ऱिनिय शॆव्विनत्ति कॊण्डोर्
मानिन्विळि पॆऱ्ऱुमयिल् वन्ददॆन्न वन्दाळ् 252

ओर् मयिल्—एक मोर; कात्तिल् उयर्—सुगन्धि में बढ़े हुए; कऱ्पकम् उयिर्त्त—कल्पकतरु-सृष्ट; कतिर् वल्लि—उज्ज्वल कामलता का; मेनि नति पॆऱ्ऱु—रूप-सौंदर्य पाकर; काम नॆऱि—काम-मार्ग में; वाच तेनिन् मॊळि उऱ्ऱु—सुवासपूर्ण शहद की-सी बोली के साथ; इनिय चॆव्वि नत्ति कॊण्टु—मनोरम छटा से खूब पूर्ण होकर; मान् विळि पॆऱ्ऱु—मृग के-से नयन ले; वन्ततु ऍन्न—आया हो, ऐसा; वन्ताळ्—आई। २५२

फिर वह भूमि पर एक विचित्र मयूर के समान चलती आयी। कैसा मयूर? समझिए कि एक मयूर को सुवासित कल्पतरु द्वारा सृजित आभा-युक्त कल्पवल्ली का रूप मिल गया। सुवासपूर्ण शहद-सी मधुर बोली, बड़ी ही आकर्षक सुन्दरता और हरिण की-सी आँखें प्राप्त हो गयीं। ऐसा एक मयूर पैदल आता हो ऐसे आकर्षण के साथ वह आयी। २५२

❀ नूबुरमु मेहलैयु नूलुमऱ लोदिप्
पूमुरलुम् वण्डमिवै पूशलिड मोदै

तामुरैशॅय् हिन्ऱदॊरु तैयल्वरु मत्ताक्
कोमहनु मत्तिशै कुऱित्तनन् विऴित्तान् 253

नूपुरमुम्–नूपुर और; मेकलैयुम्–और मेखला; नूलुम्–हार; अऱल् ओति–काले वालू के समान केश के; पू मुरलुम्–पुष्पों पर गुंजार करनेवाले; वण्टुम्–भ्रमर; इवै–इनके; पूचल् इटुम् ओतै–जो मचाते थे, वह शब्द; और तैयल् वरुम् ॲन्ऩा–एक स्त्री आ रही है, ऐसा; उरै चॅय्किन्ऱतु–घोषणा कर रहा है; कोमकनुम्–चक्रवर्ती-सुत ने भी; अ तिचै–उस दिशा; कुरितूतनन्–को लक्ष्य करके; विऴित्तान्–देखा। २५३

उसके नूपुर, मेखला, हार, केशालंकार के पुष्प पर गुंजार करनेवाले अलिकुल सब हर्षरव कर रहे थे। वह शब्द यह घोषणा कर रहा था कि कोई स्त्री आ रही है। चक्रवर्तीसुत दाशरथी ने यह जाना और उस दिशा में दृष्टि दौड़ाई, जहाँ से यह ध्वनि आ रही थी। (तुलसीदासजी ने इस ध्वनि को मदनदुंदुभी कहा है, पर वह सीताजी के मिलन के मंगलमयी पवित्र प्रसंग में।)। २५३

❀ विण्णरुळ वन्ददॊरु मॅल्लमुद मॅन्न
वण्णमुलै कॊण्डिडै वणङ्गवरु पोऴ्दत्
तॅण्णरुळि येऴमै तुडैत्तॅऴुमॅय्ज् ञानक्
कण्णरुळ्शॅय् कण्णनिरु कण्णिनॆदिर् कण्डान् 254

विण्–आकाश (स्वर्ग); और मॅल् अमुतम्–अनुपम और नरम सुधा; अरुळ वन्ततु ॲन्न–देने की कृपा करने आया जैसे; वण्ण मुलै कॊण्टु–आकर्षक उरोजों के साथ; इटै वणङ्क–कमर लचकाते हुए; वरु पोऴ्ततु–जब वह आई तब; ऍण् अरुळि–बुद्धिशक्ति प्रदान कर; एऴैमै तुटैत्तु–अज्ञान दूर करके; ऍऴुम्–ऊपर उगने-वाली; मॅय् ञान कण् अरुळुम्–सच्ची ज्ञान-दृष्टि दिलाने की कृपा करनेवाले; कण्णन्–सर्वनेत्र श्रीराम ने; इरु कण्णिन् ऍतिर् कण्टान्–अपनी दोनों आँखों से (उसको) देखा। २५४

स्वर्ग अमृत दिलाने लाया हो, ऐसे स्तनों वाली और लचकती कमर वाली, शूर्पणखा जब आ रही थी तब श्रीराम ने, जो जीवों को विवेक देकर, तद्द्वारा अज्ञान मिटाकर, फलस्वरूप ज्ञानदृष्टि दिलानेवाले, सब नेत्रों के नेत्र, परब्रह्म हैं, अपनी दोनों आँखों से उसको देखा। २५४

❀ पेरुळैय नाहरुल हिऱ्पिऱिदु वाऩिल्
पारुळैयि निल्लदॊरु मॅल्लुरुवु पारा
आरुळैय डङ्गुमळ हिऱ्कवदि युण्डो
नेरिळैयर् यावरिव णॆरॆन्न निनैन्दान् 255

पेर् उळैय–बहुत विशाल थल वाला; नाकर् उलकिल्–नागलोक में; पिऱितु वाऩिल्–उससे भिन्न स्वर्गलोक में; पार् उळैयिल्–भूतल में; इल्लतु–अप्राप्य; ऒरु–

अनुपम एक; मॆल् उरुवु पारा–कोमल रूप को देखकर; आर्–कौन; उळै अटङ्कुम् अळकिर्कु–इसमें समाविष्ट सुन्दरता का; अवति उण्टो–ठिकाना है क्या; नेरिळैयर्–आभरणधारिणी नारियाँ; यार् इवळ् नेर्–कौन इसके समान हैं; ॲन्त नितैन्तान्–ऐसा सोचा (श्रीराम ने)। २५५

विस्तृत नागलोक में, उससे भिन्न स्वर्ग में, या भूलोक में कहीं भी अप्राप्य था एक ऐसा कोमल रूप। श्रीराम सोचने लगे कि यह कौन है? इसमें समाविष्ट सुन्दरता का ठिकाना भी है? कौन आभरणभूषिता नारियाँ हैं जो इसकी समानता कर सकती हैं? । २५५

❀ अव्वयिऩव् वाशैतन हत्तुडैय वन्ऩाळ्
शॆव्विमुह मुत्तियडि शॆङ्गैयि ऩिइैञ्जा
वॆव्विय नॆडुङ्गणयिल् वीशिययल् पारा
नव्वियि नॊदुङ्गियिइै नाणियय निऩ्ऱाळ् 256

अ वयित्–उस समय; अ आचै–वह राग; तन्तु अकत्तु उटैय–अपने मन में रखनेवाली; अन्ताळ्–वह (शूर्पणखा); चॆव्वि मुकम् मुन्ति–श्रीराम के मनोहर मुख को देख; अटि–उनके श्रीचरणों को; चॆम् कैयिन् इरैञ्चा–लाल हाथ जोड़कर नमस्कार करके; वॆव्विय–सालनेवाला; नॆटुम् कण्–दीर्घ आँखों का; अयिल्–(दृष्टि रूपी) भाला; वीचि–फेंककर; अयल् पारा–आँख चुराकर दूसरी ओर देखती हुई; नव्वियिन् ऑतुङ्कि–हरिण के समान एक ओर हटकर; इरै नाणि–थोड़ा लजाती हुई; अयल् निन्ऱाळ्–(श्रीराम के) पास खड़ी रही। २५६

तब तक शूर्पणखा श्रीराम के मुख के सामने आ गयी। उसने अपने मनोरम हाथ जोड़कर श्रीराम के चरणों को नमस्कार किया। अपने लाल डोरों सहित नेत्रों की भाला-सम दृष्टि श्रीराम पर फेंकी। झट आँख चुराकर दूसरी ओर देखने लगी। भीरु मृगी के समान थोड़ा हटी। लाज का किंचित प्रदर्शन किया। इन सब नखरों के साथ वह उनके पास खड़ी रही। २५६

❀ तीदिल्वर वाहतिरु निन्वरवु शेयोय्
पोदवुळ दॆम्मुळैयोर् पुण्णियम दन्ऱो
एदुपदि येदुपॆयर् यावरुर वॆन्ऱान्
वेदमुदल् पेदैयव ळन्निलै विरिप्पाळ् 257

चेयोय्–अपरिचित (या श्रीलक्ष्मी-सम) स्त्री; निन् तिरु वरवु–तुम्हारा श्रेष्ठ आगमन; तीतु इल्–अमंगलहीन (शुभ); वरवु आक–आगमन हो; पोत–तुम आओ इसका; ॲम् उळै–हमारे पास; ओर् पुण्णियम् अतु अन्ऱो–एक सुकृत रहा है न; एतु पति–कौन सा स्थान; एतु पॆयर्–कौन सा नाम; यावर् उऱवु–रिश्तेदार कौन हैं; वेत मुतल्–वेदमूल ने; ॲन्ऱान्–पूछा; पेतै अवळ्–अबोध ने; तन् निलै–अपना वृत्तान्त; विरिप्पाळ्–विस्तार से कहा। २५७

श्रीराम ने सम्भाषण आरम्भ किया। आगन्तुक अजनवी ! (चेयोय् का अर्थ लक्ष्मी भी हो सकता है।) तुम्हारा वर आगमन अमंगलरहित शुभ आगमन हो ! हमने पुण्य किया है, यह सच है तभी तो तुम आयी हो ! तुम्हारा वासस्थान कौन सा ? नाम क्या ? तुम्हारे रिश्तेदार कौन हैं ? —वेदमूल (बोध का आधार) श्रीराम ने प्रश्न किया। अबोध (बोध-हीन) शूर्पणखा अपना वृत्तान्त विस्तार से सुनाने लगी। २५७

❀ पूविलोऩ् पुदल्वन् मैन्दऩ् पुदल्विमुप् पुरङ्गळ् शॅऱ्ऱ
शेवलोऩ् तुणैव ऩाऩ शॅङ्गैयोन् ऱङ्गै तिक्किन्
मावॅलान् दीलैत्तु वॅळ्ळि मलैयॅडुत् तुलह मूऩ्ऱुम्
कावलोऩ् पिऩ्नै काम वल्लियाङ् गऩ्ऩि यॅन्ऱाळ् 258

पूविलोऩ्–कमलासन के; पुतल्वन् मैन्तऩ्–पुत्र के पुत्र की; पुतल्वि–दुहिता हूँ; मु पुरङ्कळ् चॅऱ्ऱ–त्रिपुरदाहक; चे वलोऩ्–ऋषभवाहन के; तुणैवऩ् आत–मित्र; चॅम् कैयोन्–लाल (दान देते-देते लाल बने) हाथ वाले कुबेर की; तङ्कै–छोटी बहिन; तिक्किन् मा–दिग्गज; ॲलाम् तॊलैत्तु–सारे भगाकर; वॅळ्ळि मलै ॲॅडुत्तु–चाँदी के पर्वत (कैलास) को उठाया (जिसने); उलकम् मूऩ्ऱुम् कावलोऩ्–लोकत्रयी का पालक; पिऩ्नै–उस रावण की अनुजा; काम वल्लि–कामवल्ली; आम्–नाम की; कऩ्ऩि–कन्या; ॲन्ऱाळ्–(अपना परिचय) कहा। २५८

कमलासन ब्रह्मा के पुत्र (पुलस्त्य) के पुत्र (विश्रवा) की पुत्री हूँ। त्रिपुर जलानेवाले ऋषभवाहन शिवजी के मित्र दान देते-देते लाल बने हाथ वाले कुबेर की बहिन हूँ। दिग्गजों को भगानेवाले, चाँदी के पर्वत (कैलास) को उखाड़नेवाले त्रिलोकाधिपति रावण की अनुजा हूँ। मेरा नाम कामवल्ली है। (बार-बार शिवजी की चर्चा त्रिपुरांतक, त्रिपुरदाहक आदि के साथ आयी है। उसका संक्षिप्त विवरण यों है— तारकासुर के पुत्र विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष थे। इन्होंने कठोर तपस्या की और अपार बल-वैभव पा लिया। मय ने इनके लिए स्वर्ण, चाँदी और लोहों के प्राचीरों से युक्त तीन नगर निर्मित किये। ये नगर जहाँ चाहे उड़ जा सकते थे। वे तीनों असुर इनका उपयोग कर सर्वत्र जाते और सितम ढाते। देवों और मुनियों ने मिलकर शिवजी से प्रार्थना की। शिवजी ने भूमि को रथ, वेदों को चार अश्व, ब्रह्मा को सारथी, मेरु को धनुष, आदिशेषनाग को प्रत्यंचा, विष्णु रूपी पंखों से युक्त अग्नि को अस्त्र और अन्य देवों को अन्य अस्त्र-शस्त्र बना लिया। फिर युद्धसन्नद्ध हो चले। उन्होंने एक विचित्र हास के साथ उन असुरों को मय उनके नगरों के जला डाला। शूर्पणखा ने अपनी वंशावली की तीन पीढ़ियों की चर्चा की। क्योंकि उसका उद्देश्य 'विवाह' था।)। २५८

अव्वुरै केट्ट वीर नैयुरु मनत्तान् शॅय्है
शॅव्विदन् ररियलाहुम् जिरिदि नॅन्रु णराच् चॅङ्गण्
वॅव्वुरु वमैन्दोन् रङ्गै यॅन्ररदु मॅय्म्मै याहिल्
इव्वुरु वमैन्द तन्मै यियम्बुदि विरैवि नॅन्रान् 259

अ उरै केट्ट–वह कथन सुनकर; ऐ उरु मनत्तान्–शंकितमन होकर; चॅयकै चॅव्वितु अन्रु–इसके (हाव-भाव और) कार्य अच्छे नहीं; चिरिदितिन् अरितल् आकुम्–थोड़ा समझना आवश्यक है; ऍन्रु उणरा–ऐसा महसूस करके; चॅम् कण्–रक्तिम आँखों और; वॅम् उरु अमैन्तोन्–भयंकर रूप वाले (रावण) की; तङ्कै ऍन्ररतु–बहिन कहा जो, सो; मॅय्मै आकिल्–सच है तो; इ उरु अमैन्त तन्मै–यह रूप (कैसे) मिला, वह प्रकार; विरैविन् इयम्पुति–शीघ्र बताओ; ऍन्रान्–पूछा। २५९

शूर्पणखा का यह कथन सुनकर (उसकी अदाओं से) श्रीराम के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ। श्रीवीरराघव ने सोचा कि इसका कार्य भला नहीं लगता। थोड़ा जाँचकर समझा जा सकता है। यह सोचकर उन्होंने शूर्पणखा से पूछा कि लाल आँखों वाले और भयंकर रूप वाले रावण की बहिन होने की बात सत्य है, तो तुम्हें यह रूप कैसे मिला ? शीघ्र बताओ। २५९

तूयवन् पणिया मुन्नम् जॉल्लुवाळ् शोर्वि लाळम्
मायवल् लरक्क रोडुम् वाळ्विनै मदिक्कि लादे
आय्वुरु मनत्ते नाहि यरनुदलै निरपदानेन्
तीविनै तीय नोररुत् तेवरिर् पॅर्र दॅन्राळ् 260

तूयवन् पणिया मुन्नम्–पवित्र पुरुष श्रीराम के पूछने पर; चोर्वु इलाळ्–उत्सुक उसने; अ माय वल् अरक्करोटुम्–उन माया में समर्थ राक्षसों के साथ; वाळ्विनै–जीवन को; मतिक्किलाते–उचित न मानकर; आय्वु उरु मनत्तेन् आकि–विवेक से भरे मन वाली होकर; अरम् तलै निर्पतु आनेन्–धर्मावलम्बी बनी; तीविनै तीय–पाप जलाने (मिटाने) के लिए; नोररु–तपस्या करके; तेवरिल्–देवों की कृपा से; पॅर्रतु–(जो) पाया (वह) यह है; ऍन्राळ्–उत्तर दिया। २६०

पवित्र मन वाले श्रीराम ने जब ऐसा प्रश्न किया, तो शूर्पणखा समझ सकती थी कि श्रीराम इसके मन की बात माननेवाले अपवित्र-चरित्र नहीं है। तो भी वह हतोत्साह होनेवाली नहीं थी। उसने उत्तर दिया कि मैं उन मायाकार्य में प्रवृत्त और चतुर राक्षसों के साथ रहना उचित नहीं समझकर विवेकशीला बन गयी हूँ। धर्ममार्गावलम्बी हो गयी। अपने सभी पापों को, तपस्या करके जला दिया। देवों की कृपा से प्राप्त यह रूप है। २६०

इमैयवर् तलैव नेयु मॅळिमैयि नेवल् शॅययुम्
अमैदियि नुलह मून्रु माळ्बवन् रङ्गै याहिल्

शुमैयुरु शॆल्वत् तोडुन् दोन्ऱलै तुणैयु मिन्ऱित्
तमियणी वरुदऱ् कॊत्त तन्मैयॆन् ऱॆय लॆन्ऱान् 261

तैयल्–नारी; इमैयवर् तलैवन् ए उम्–देवेन्द्र भी; ऑऴिमैयिन्–दीन बनकर; एवल् चॆय्युम्–जिसकी सेवा करता है; अमैतियिन्–उस स्थिति में; उलकम् मून्ऱुम् आळ्पवन्–जो त्रिलोकाधिपत्य करता है, उस रावण की; तङ्कै आकिल्–वहिन हो तो; चुमै उरु–गुरु; चॆल्वत्तोटुम्–धन-वैभव के साथ; तोन्ऱलै–नहीं दिखाई देतीं; तुणैयुम् इन्ऱि–सहायक से रहित; तमियळ्–अकेली; वरुतऱ्कु–आओ, इसका; ऑत्त तन्मै–योग्य कारण; ऎन्–कौन सा है; ऎन्ऱान्–पूछा। २६१

श्रीराम ने आगे पूछा— हे नारी ! तुम कहती हो कि रावण की भगिनी हूँ। रावण त्रिलोकाधिपति है। देवों के राजा देवेन्द्र भी उसका किंकर होकर उसकी सेवा-टहल करता है। वह बड़ा ही श्रीमंत है। उसके भारी धन-वैभव के योग्य रूप में तुम नहीं दिखाई देतीं। और भी तुम अकेली और कोई साथी-संगी के विना आयी हो। ऐसा दीन-हीन और असहाय आना क्योंकर हुआ ? कारण क्या है ? । २६१

वीरनः(ह्) दुरैत्त लोडु मॆय्यिलाळ् विमल यानच्
चीरिय रल्लार् माट्टुच् चॆर्हिलॆन् ऱेवर् पालुम्
आरिय मुनिवर् पालु मडैन्दनॆ निरैव वीण्डोर्
कारिय मुण्मै निन्नैक् काणिय वन्दे नॆन्ऱाळ् 262

वीरन्–वीर के; अ:तु–वह; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मॆय् इलाळ–असत्यवादी ने; विमल–निर्मल; यान्–मै; अ चीरियर् अल्लार् माट्टु–उन श्रेष्ठताहीन (नीच) लोगों से; चेर्किलॆन्–नहीं मिल सकती; तेवर् पालुम्–देवों के पास और; आरिय मुनिवर् पालुम्–सुशील मुनियों के पास; अटैन्ततॆन्–आकर रहती हूँ; इरैव–नाथ; ईण्टु ओर् कारियम् उण्मै–इधर मेरा एक कार्य है, इसलिए; निन्नै काणिय वन्तेन्–तुमको देखने आई; ऎन्ऱाळ्–कहा। २६२

श्रीवीरराघव के इस प्रश्न के उत्तर में उस मिथ्याभाषिणी ने कहा कि विमल वीर ! मैं उन नीच लोगों से नहीं मिलती। देवों और मुनियों से ही सम्पर्क रखती हूँ। प्रभु ! मेरा एक कार्य है। उसी के सिलसिले में मैं तुमसे भेंट करने आयी हूँ। २६२

अन्नव ळुरैत्त लोडु मैयनु मरिदऱ् कॊव्वा
नन्नुदन् महळिर् शिन्दै नन्नॆरिप् पाल वल्ल
पिन्निदु तॆरियु मॆन्नाप् पॆय्वळैत् तोळि यॆन्बाल्
ऎन्नका रियत्तै शॊल्लः(ह्) दियैयुमे लिळैप्प लॆन्ऱान् 263

अन्नवळ्–उसके; उरैत्तलोटुम्–कह चुकते ही; ऐयतुम्–प्रभु ने भी; नल् नुतल् मकळिर् चिन्तै–सुन्दर भाल वाली इस स्त्री का अभिप्राय; अरितऱ्कु ऑव्वा–

जानने में आनेवाला नहीं होता; नल् नॅरि पाल अल्ल–अच्छे पथ पर जानेवाला नहीं लगता; इतु–यह (इसका सत्य); पिन् तॅरियुम्–पीछे मालूम होगा; ऍन्ना–विचार करके; पॅय् वळै तोळि–भुजवलय-भूषित कंधों वाली; ऍन् पाल्–मेरे पास; ऍन्न कारियत्तै–कौन से कार्य की अपेक्षा करती हो; चॊल्–कहो; अ.·.तु इयैयुमेल्–वह युक्त हो तो; इळैप्पल्–करूँगा; ऍन्ड्रान्–कहा। २६३

उसका वह उत्तर सुनकर श्रीराम ने सोचा कि इस सुन्दर भाल वाली के (मन के अंदर रहनेवाले) विचार हमारे जानने में नहीं आते। पर वे सन्मार्गगामी नहीं लगते। इसका सत्य पीछे मालूम होगा। फिर उन्होंने उससे कहा— हे अंगदालंकृत कंधों वाली ! मेरे पास क्या उद्देश्य ले आयी हो ? बताओ। अगर वह उचित और कार्यसाध्य होगा, तो अवश्य करूँगा। २६३

तामुरु कामत् तन्मै ताङ्गळे युरैप्प दॅन्ब
दामॅन्न लाव दन्ड्रा लरुङ्गुल महळिर्क् कम्मा
एमुरु मुयिर्क्कु नोवे नॅन्शॅय्हेन् यारु मिल्लेन्
कामनॅन् ड्रॊरुवन् शॅय्युम् वन्मैयैक् कात्ति यॅन्ड्राळ् 264

ताम् उरु–आप में उठी; काम तन्मै–कामेच्छा की स्थिति; ताङ्कळे उरैप्पतु ऍन्पतु–स्वयं कहना, यह; अरुम् कुल मकळिर्क्कु–उत्तम कुल की स्त्रियों के लिए; आम् ऍनल्–हो सकेगा, ऐसा कहना; आवतु अन्ड्रु–होनेवाला नहीं है; एम् उरुम्–मोहमग्न; उयिर्क्कु–अपना जीवन रखने के लिए; नोवेन्–तड़प रही हूँ; ऍन् चॆय्केन्–क्या कर सकूँगी; यारुम् इल्लेन्–(अपना) कोई नहीं रखती; कामन् ऍन्ड्रु ऒरुवन्–मन्मथ नाम का कोई; चॆय्युम्–(जो) करता है; वन्मैयै–उस अत्याचार को; कात्ति–रोककर (मुझे) बचाओ; (अम्मा–री मैया); ऍन्ड्राळ्–कहा। २६४

उसके उत्तर में शूर्पणखा ने कहा कि कुलीन स्त्रियों के लिए अपने काम की चर्चा स्वयं करना साध्यकाम समझना ठीक नहीं है। री मैया ! वह कठिन है। मेरा प्राण अब मोहमग्न होकर क्षीण हो रहा है। उसे बचाने को तरस रही हूँ। क्या करूँ ? मेरे कोई सहायक भी नहीं हैं। अब काम नाम का वह मेरे ऊपर अत्याचार कर रहा है। उसकी क्रूरता को रोको और मेरी रक्षा करो। २६४

शेणुड़ नीण्ड़ु मीण्डु शव्वरि शिदरि वॆव्वे
ड़ेणुड़ मिळिर्न्दु नाना विदम्बुरण् डिरुण्ड वाट्कण्
पूणियल् कॊङ्गै यन्ना ळम्मॊळि पुहल लोडुम्
नाणिल ळैय णॊय्य णल्लळु मल्ल ळॅन्ड्रान् 265

चेण् उड़ नीण्टु–दूर तक जाकर; मीण्टु–(स्थानाभाव से) लौटकर; चॆम् अरि चितरि–लाल डोरे (जिनमें) फैले रहे; वॆव्वेरु एण् उड़–विविध वैशिष्ट्यों से भरे; मिळिर्न्तु–चलित होकर; नाना वितम् पुरण्टु–नाना प्रकार से घूमकर; इरुण्ट–

अन्धकार के समान काले; वाळ् कण्—तलवार-सम नेत्रों वाली; पूण् इयल् कोङ्कै—आभरणभूषित स्तनों वाली; अन्नताळ्—उस (शूर्पणखा) के; अ मोऴि—वह वचन; पुकललोट्टुम्—कहने पर; नाण् इलळ्—निर्लज्ज है; ऐय नोय्यळ्—बहुत ही नीच है; नल्लळुम् अल्लळ्—भली भी नहीं है; ऍन्ऱान्—(श्रीराम ने) समझा। २६५

यह कहते हुए उसने जो नखरे दिखाये, वे उसकी निर्लज्जता को साफ़ प्रकट करते थे। उसकी आँखें, लम्बी जाकर स्थानाभाव के कारण मुड़ी हों, इतनी लम्बी थीं और विचित्र अदाएँ दिखाती हुई विविध प्रकार से चलित होती थीं। वे अन्धकार के समान काली थीं और तलवार के समान तीक्ष्ण थीं। उसके स्तन आभरणों से शोभित थे। ऐसी उसने जब वह कथन किया तब, श्रीराम समझे कि यह अतीव निर्लज्ज है। यही नहीं, वह बड़ी ओछी भी है। भली स्त्री नहीं है। २६५

पेशल तिरुन्द वळ्ळ लुळ्ळत्तिन् पॅऱ्ऱि योराळ्
पूशलवण् डरऱ्ऱुङ् गून्दऱ् पॉय्म्महळ् पुहन्ऱ वॅन्गण्
आशैकण् डरुळिऱ् ऱुण्डो वन्ऱॅन्न लुण्डो वॅन्नुम्
ऊशलि नुलावु हिन्ऱाण् मीट्टुमो ररैयैच् चॉन्नाळ् 266

पेचलन् इरुन्त वळ्ळल्—(विचारमग्न) बिना कुछ कहे जो रहे, उन उदार प्रभु के; उळ्ळत्तिन् पॅऱ्ऱि ओराळ्—मन की स्थिति समझ नहीं सकी; वण्टु पूचल् अरऱ्ऱुम्—भ्रमर नाद करते है (जिस पर बैठकर); कून्तल्—वैसा केश वाली; पॉय् मकळ्—मायाविनी; पुकन्ऱ—(इसके) कथित वचन; ऍन् कण्—मेरे प्रति; आचै कण्टु—प्रेम करके; अरुळिऱ्ऱ उण्टो—कृपा करने के फलस्वरूप हैं; अन्ऱु ऍन्तल् उण्टो—'न' ऐसा कहना है; ऍन्नुम्—ऐसे (दो); ऊचलिन्—विचारों के बीच में झूलने में जैसे; उलावुकिन्ऱाळ्—डोलायमान रहनेवाली; मीट्टुम् ओर् उरैयै चॉन्नाळ्—फिर एक बात कहने लगी। २६६

यह सोचते हुए वे मौन रह गये। मायाविनी शूर्पणखा, जिसके केश पर सज्जित पुष्पों पर अलिकुल गुंजार कर रहे थे, श्रीराम के मन के भाव को समझ नहीं सकी। 'इसने जो कहा क्या वह मेरे ऊपर प्रेम करने की कृपा के फलस्वरूप था? या वह इन्कार करने के लिए था?' इन दो विचारों के बीच उसका मन झूले के समान झूलने लगा। फिर उसने एक बात कही। २६६

ऍऴुदरु मेनि यायीण् डॅय्दिय दऱिन्दि लादेन्
मुळुदुणर् मुनिव रेवऱ् चॅय्दॉऴिन् मुऱैयिन् मुऱ्ऱिप्
पऴुदरु पॅण्मै योडु मिळमैयुम् बयन्निन् ऱेहप्
पॉऴुदॉडु नाळुम् वाळा कऴिन्दन पोलु मॅन्ऱाळ् 267

ऍऴुतु अरु मेनियाय्—(जिसका) चित्र खींचना कठिन है, वैसे रूपधर; ईण्टु

ऍय्तियतु–तुम्हारा यहाँ आगमन; अऱिन्तिलातेऩ्–नहीं जानती मैं; मुळुतु उणर्–सर्वज्ञ; मुत्तिवर् एवल्–महर्षियों की आज्ञा से; चॅय् तॊऴिल्–उनकी सेवा-टहल; मुऱैयिऩ् मुऱ्ऱि–यथाविधि पूरा करके; पळुतु अऱु पॅण्मैयोटुम्–अकलंकित स्त्रीत्व के साथ; इळमैयुम्–यौवन को भी; पयऩ् इऩ्ऱि एक–व्यर्थ बीतने देते हुए; पॊऴुतॊटु नाळुम्–समयों के साथ दिन भी; वाळा कऴिन्तन–व्यर्थ बीत गये; ऍऩ्ऱाळ्–कहा। २६७

ऐसे सुन्दर रूप वाले, जिसका चित्र खींचना कठिन है ! तुम इधर आये, यह मैं नहीं जानती थी। इसलिए सर्वज्ञ मुनियों की सेवा-टहल में श्रद्धा के साथ लगी रह गयी और मेरे अकलंक चरित्र के साथ मेरे यौवन को भी निरर्थक बनाते हुए अनेक काल यों ही व्यर्थ वीत गये। २६७

निन्दऩै यरक्कि नीदि निलैयिलाळ् विनैमऱ् ऱॆण्णि
वन्दऩ ळाहु मॅन्ऱे वळ्ळलु मऩत्तुट् कॊण्डाऩ्
सुन्दरि मणत्तिऱ् कॊत्त तॊऩ्मैयिन् ऱुणिविऱ् ऱन्ऱाल्
अन्दणर् पावै नीया ऩरशरिल् वन्दे नॆऩ्ऱाऩ् 268

वळ्ळलुम्–उदार प्रभु ने भी; निन्तऩै अरक्कि–निन्द्य निशाचरी है; नीति निलै इलाळ्–नैतिक स्थिति वाली नहीं; मऱ्ऱु विऩै ऍण्णि–कोई दूसरा (बुरा) कार्य सोचकर; वन्तऩळ् आकुम्–आयी हुई है, यही होना चाहिए; ऍऩ्ऱे–ऐसे ही; मऩत्तुळ् कॊण्टाऩ्–मन में धारणा कर ली; चुन्तरी–सुन्दरी; नी अन्तणर् पावै–तुम ब्राह्मण-कन्या हो; याऩ्–मैं; अरचरिल् वन्तेऩ्–राजाओं (के कुल) में पैदा हुआ (क्षत्रिय) हूँ; मणत्तिऱ्कु ऒत्त–विवाह-क्रम के योग्य; तॊऩ्मैयिऩ् तुणिपिऱ्कु अऩ्ऱु–प्राचीन प्रथा को पुष्ट करनेवाला नहीं; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। २६८

प्रभु को विश्वास हो गया कि यह निन्द्य निशाचरी है। न्याय-मार्ग पर जानेवाली नहीं है। कोई भयंकर उद्देश्य लेकर इधर आयी है। यह दृढ़ धारणा करके प्रभु ने समझाया कि सुन्दरी ! तुम ब्राह्मण-कुल-कन्या हो। मैं तो क्षत्रिय राजकुल का हूँ। विवाह सम्बन्धी जो क्रम निर्धारित हुए हैं, उन प्राचीन क्रमों के अनुसार हमारा विवाह होने योग्य नहीं है। २६८

आरण मऱैयो ऩॆन्दै यरुन्ददिक् कऱ्पि ऩॆम्मोय्
तारणि पुरन्द शाल कडङ्गडर् मरबिऱ् ऱैयल्
पोरणि पॊलङ्गॊळ् वेलोय् पॊरुन्दलै यिहळ्दऱ् कॊत्त
कारण मिदुवे याहि लॆन्तुयिर् काणबॆ ऩॆऩ्ऱाळ् 269

पोर् अणि–युद्ध ही जिसका भृंगार हो, ऐसे; पॊलन् कॊळ् वेलोय्–सुन्दर शक्ति-धारी; ऍन्तै–मेरे पिता; आरण मऱैयोऩ्–वेदज्ञ विप्र हैं; अरुन्तति कऱ्पिऩ्–अरुन्धती-सम पतिव्रता; ऍम् ओय्–मेरी माँ; तारणि पुरन्त–धरणीपालक; चालकटङ्कटर्–सालकटंकट के; मरपिल् तैयल्–वंश की पुत्री है; पॊरुन्तलै–सम्मत

न होकर; इकऴ्तऱ्कु ऒत्त–उपेक्षा करने के लिए युक्त; कारणम् इतुवे आकिल्–कारण यही है, तो; ऎन् उयिर् काण्पॆन्–अपनी जान को (बचा हुआ) पा जाऊँगी; ऎन्ऱाळ्–कहा। २६९

शूर्पणखा ने उत्तर में कहा कि युद्ध ही जिसका शृंगार है, ऐसे उज्ज्वल भाला के धारी ! तुम यह जान लो कि मेरे पिता वेदज्ञ ब्राह्मण थे, पर अरुन्धती ही सम पतिव्रता मेरी माता धरणी के पालक 'सालकटंकट' नाम के राजवंश की संतान थी। (अध्यात्म रामायण के अनुसार तृणविंदु राजा के सालकटंकटा नाम की लड़की थी। उसके पेट से विश्रवस के वर से शूर्पणखा पैदा हुई। दूसरा वृत्तान्त है कि राक्षस-कुल के हेति का पुत्र विद्युतकेश था। उसने सालकटंकटा से विवाह किया और उनके पुत्र माल्यवान, मालि और सुमालि थे। उनमें सुमाली की पुत्री कैकशी थी, जिसके रावण, शूर्पणखा आदि सन्तानें थीं।) अगर तुम्हारी अस्वीकृति का कारण इतना ही था तो मैं बच गयी। क्षत्रिय से विवाह करने का मेरा अधिकार स्वतः सिद्ध है। इसलिए तुमसे विवाह न होने की हालत में जीवन त्यागने का विचार जो मैंने किया था अब उस विचार को त्याग दूँगी और अपने को जीवित रखूँगी। २६९

अरुत्तिय ळऩ्ऩ कूऱ वहत्तुऱु नहैयिऩ् वॆळ्ळैक्
कुरुत्तॆऴु हिऩ्ऱ नीलक् कॊण्डलुण् डाट्टङ् गॊण्डाऩ्
वरुत्तनीङ् गरक्कर् तम्मिऩ् मानुडर् मणत्त नङ्गै
पॊरुत्तमऩ् ऱॆऩ्ऱु शालप् पुलैमैयोर् पुहल्व रॆऩ्ऱाऩ् 270

अरुत्तियळ्–अर्थिनी के; अऩ्ऩ कूऱ–ऐसा कहने पर; अकत्तु उऱु नकैयिऩ्–अन्दर उठे हास के; वॆळ्ळै कुरुत्तु–श्वेत अंकुर; ऎऴुकिऩ्ऱ–फूट निकलते हों, ऐसे मन्दहास के साथ; नील कॊण्टल्–श्यामलमेघ-सम श्रीराम ने; उण्टाट्टम् कॊण्टाऩ्–एक लीला रची; नङ्कै–वाले; वरुत्तम् नीङ्कु–जो दुख से दूर है, उन; अरक्कर् तम्मिऩ्–राक्षसों से; मानुटर् मणत्तल्–मानवों का विवाह करना; पॊरुत्तम् अऩ्ऱु–उचित नहीं; ऎऩ्ऱु–ऐसा; चाल पुलैमैयोर्–गम्भीर विद्वान; पुकल्वर्–कहेंगे; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। २७०

अर्थिनी शूर्पणखा ने यह कहा तो श्रीराम को हँसी आ गयी। वह हँसी अन्दर गड़ी हास-बीज के श्वेत अंकुर के समान बाहर प्रकट हुई। मेघश्याम ने एक लीला रचने का विचार किया। उन्होंने कहा कि अंगने ! राक्षस दुख से अभिभूत न होनेवाले हैं। मनुष्य तो विविध संकटों से ग्रस्त रहनेवाले हैं। मनुष्य-राक्षस का विवाह उचित नहीं होता। यह गम्भीर विद्वानों का मत है। २७०

परावरुम् जिरत्तै यारुम् पत्तियिऩ् पयत्तै योरा
दिरावणऩ् ऱङ्गै यॆऩ्ऱु देळैमैप् पाल दॆऩ्ऩा

अरावणै यमल नन्ना यड़िवित्तेन् मुन्नन् देवरप्
परावितें नीङ्गि नेनप् पळिपडु पिड़वि येन्ड़ाळ् 271

अरावणै अमलन् अन्नाय्–शेषशायी निर्मल (विष्णु) देव के समान रहनेवाले; परावु अरुम्–जिसका विस्तार से कहना कठिन है; चिरत्तै आरुम्–श्रद्धा से युक्त; पत्तियिन् पयत्ते–उस भक्ति के फल को (जो मुझे मिला है); ओरातु–नहीं सोचकर; इरावणन् तङ्कै–रावण-भगिनी; ऎन्ड्रतु–कहना (और उपेक्षा करना); एळैमै पालतु–अज्ञता से सम्बन्धित है; ऎन्ना–कहकर; तेवर् परावितॆन्–देवों की स्तुति की (मैंने); अ पळि पटु पिड़वि–उस निन्दा योग्य जन्म से; नीङ्कितेन्–अलग हो गई हूँ; मुन्नम् अड़िवित्तेन्–पहले ही समझा दिया (मैंने); ऎन्ड़ाळ्–कहा। २७१

शूर्पणखा ने तर्क प्रस्तुत किया कि हे शेषशायी विमल विष्णु-सम राम ! तुम मुझे रावण की भगिनी के रूप में ही देखते हो। मैंने कितनी श्रद्धा के साथ कैसी भक्ति की है, इसका यथार्थ विस्तार ही कठिन है। उसको भूल जाते हो और रावण की वहिन कहकर उपेक्षा दिखाते हो। यह तुम्हारी अज्ञता है ! उसने आगे विश्वास दिलाया कि मैंने देवों की स्तुति-पूजा आदि करके वह जन्म-कलंक धुला दिया है ! यह पहले ही मैंने तुमको बताया था। २७१

ऒरुवनो वुलह मून्ड़िड़् कोङ्गोरु तलैव नूङ्गिल्
ऒरुवनो कुबेर नित्नि नुडन्पिड़न् दारह ळन्नार्
तरुवरेड़् कोडु मन्ड़ेड़् ड़मियवे ड़िडत्तुच् चारल्
वॆरुवुवॆ नङ्गै यॆन्ड़ान् मीट्टव ळिनैय शॊन्नाळ् 272

नङ्कै–नारीरत्न; नित्निन् उटन् पिड़न्तार्कळ्–तुम्हारे सहोदरों में; ऒरुवत्तो–एक तो; उलकम् मून्ड़िड़्कु–तीनों लोकों का; ओङ्कु ऒरु तलैवन्–उन्नत और अकेला अधिपति है; ऊङ्किल्–वैभव में; ऒरुवत्तो–और एक तो; कुपेरन्–धनद (कुवेर) है; अन्नार् तरुवरेल्–वे कन्यादान कर देंगे; कोटुम्–मैं ग्रहण कर सकूँगा; अन्ड़ेल्–नहीं तो; तमियै–अकेली तुम; वेड़ु इटत्तु चारल्–दूसरे की हो जाओ; वॆरुवुवॆन्–उससे डरता हूँ; ऎन्ड़ान्–कहा; अवळ्–वह; मीट्टु–फिर; इन्नैय चॊन्नाळ्–यों बोली। २७२

श्रीराम ने बहस की। हे नारी-रत्न ! तुम्हारे सहोदरों में एक तो तीनों लोकों का निर्द्वन्द्व अधिपति रावण है। दूसरा धन-देवता कुवेर है। वे तुमको मेरे पास कन्यादान में दे देंगे, तो मै तुमको ग्रहण कर सकूँगा। नहीं तो, तुम अपनी इच्छा से किसी परपुरुष को वरो, यह मुझे अच्छा नहीं लगता और मुझे डर पैदा होता है। तव शूर्पणखा ने यों उत्तर दिया। २७२

❀ कान्दरुप्प मॆन्ब दुण्डाड़् कादलिड़् कलन्द शिन्दै
मान्दर्क्कु मडन्दै मार्क्कु मड़ैहळे वहुत्त कूट्टम्

एन्दर् पोर् ड्रोळि नायि:(ह) दियैन्दपि न्नैनक्कु मूत्त
वेन्दर्क्कुम् विरुप्पिर् ड्राहुम् वेरुमो ररैयुण् डॆन्ड्राळ् 273

एन्तल् पोन् तोळिनाय्—पर्वत-सम सुन्दर कंधों वाले; कातलिल् कलन्त चिन्तै—प्रेम से परस्पर अनुरक्त मन वाले; मान्तर्क्कुम्—पुरुषों और; मटन्तै मार्क्कुम्—स्त्रियों के लिए; कान्तर्प्पम् ॲन्पतु—गान्धर्व प्रकार का; मरैकळे वकुत्त—वेदों से ही निर्दिष्ट; कूट्टम्—विवाह; उण्टु—है; इ∴तु इयैन्त पिन्—(ऐसा विवाह) यह (हममें) हो जाने के बाद; ॲन्क्कु मूत्त वेन्तर्क्कुम्—मेरे बड़े भाइयों को भी; विरुप्पिर्रु आकुम्—पसन्द आयगा; अन्रियुम्—इसके अलावा; वेरुन् ओर् उरै उण्टु—दूसरी एक बात भी है; ॲन्राळ्—कहा। २७३

पर्वत-सम मनोरम कंधे वाले ! परस्पर प्रेम में संयुक्त मन वाले पुरुष और स्त्रियाँ गान्धर्व विवाह कर ले सकते हैं। यह वेदसम्मत विवाहरीति ही है। पहले हम विवाह कर ले तो देखोगे कि मेरे अग्रज इसे चाव के साथ स्वीकार कर लेंगे। और भी एक लाभ है, इसमें। सुनो। २७३

❀ मुनिवरो डुडैय मुन्ने मुदिर्पहै मुरैमै नोक्कार्
तनियैनी याद लान्मर् र्‌रवरोडुन् दळ्वर् कौत्त
विन्नैयमी दल्ल दिल्लै विण्णुनिन् नाट्चि याक्कि
इन्नियवर् महिळ्न्दु वन्दुन् नेवलि निर्प रॆन्ड्राळ् 274

अवर्—वे (मेरे अग्रज); मुन्ने—पहले; मुनिवरोटु उटैय—मुनियों के साथ जो रखते हैं; मुतिर् पकै मुरैमै—वह वैर की रीति; नोक्कार्—नहीं रखेंगे; नी तनियै आतलाल्—तुम एकाकी हो, इसलिए; अवरोटुम्—उनके साथ; तळुवर्कु—मिलकर रहने के लिए; ऑत्त—अनुकूल; विनैयम्—उपाय; ईतु अल्लतु इल्लै—इसके सिवा कुछ नहीं है; इनि—आगे; विण्णुम् निन् आट्चि आक्कि—स्वर्ग को तुम्हारे शासन के अधीन बनाकर; अवर् मकिळ्न्तु वन्तु—वे आनन्द के साथ आकर; उन् एवलिन्—तुम्हारे आदेश की प्रतीक्षा में; निर्पर्—रहेंगे; ॲन्राळ्—कहा। २७४

हमारा विवाह हो जायगा तो मेरे भाई रावण आदि मुनियों को वैर की दृष्टि से नही देखेंगे। तुम इस जंगल में एकाकी रहते हो और राक्षसों की मैत्री तुम्हारे कुशल के लिए आवश्यक है। उनसे मित्रता के साथ रहने का एक मात्र उपाय यही— हमारा विवाह ही —हो सकता है। कोई दूसरा मार्ग नही। अब वे स्वर्ग को भी तुम्हारे अधीन करके स्वयं तुम्हारे पास सहर्ष आयेंगे और अधीन किंकर रहेंगे। तुम्हारी आज्ञाएँ मन लगा कर मानेंगे। २७४

❀ निरुदर्त मरुळुम् बॆंर्‌रे नित्तलम् बॆंर्‌रे न्निन्नो
डीरुवरुञ् जॆल्वत् तियाण्डु मुरैयवुम् बॆंर्‌रे न्नोन्ड्रो
तिरुनहर् तोर्न्द पिन्नर्च् चॆय्दवम् बयन्द दॆन्ना
वरिशिलै वडित्त तोळान् वाळॆयि ड्रिलङ्ग नक्कान् 275

वरिचिलै वटित्तुत तोळान्–बन्धनयुक्त धनुष चलाने में अभ्यस्त भुजा वाले; निरुतर् तम् अरुळुम् पॅट्रेन्–राक्षसों का अनुग्रह पा गया; निन् नलम् पॅट्रेन्–तुम्हारी कृपा प्राप्त हो गई; याण्टुम्–कभी भी; ऑरुवु अरुम् चॅल्वत्तु–क्षय न होनेवाले धन-वैभव के साथ; निन्नॊटुम् उऱैयवुम् पॅट्रेन्–तुम्हारे संग रहना भी प्राप्त हो गया; तिरुनकर् तीर्न्त पिन्नर्–सुन्दर अयोध्या नगर छोड़ आने के बाद; चॅय् तवम्–मेरे किये हुए तप ने; पयन्ततु ऑन्ड्रो–क्या एक (पर अनेक) फल प्रदान कर दिया है; ॲन्ना–(व्यंग्य से) कहकर; वाळ् ऍयिरु–उज्ज्वल दाँत; इलङ्क–प्रकट करते हुए; नक्कान्–हँसे। २७५

बन्धनयुक्त कठोर धनुष के प्रयोग में अभ्यस्त श्रीराम ने व्यंग्य किया। हा! मेरा अहोभाग्य! राक्षसों का अनुग्रह मिल गया! तुम्हारी कृपा मिल गयी! अक्षय धन-दौलत के साथ तुम्हारी संगति का भी बड़ा भाग्य हाथ आ गया! श्रीनगर अयोध्या छोड़कर आने के बाद मैंने जो तपस्या की थी, उसका फल क्या एक है (अनेक हैं)! यह कहकर श्रीराम सुन्दर दाँतों को प्रकट करते हुए हँसे। २७५

❀ विण्णिडै यिम्बर् नाहर् विरिञ्जने मुदलोर्क् कॅल्लाम्
कण्णिडै यॊळियिन् पाङ्गर्क् कडिहमळ् शालै निन्ऱुम्
पॅण्णिडै यरशि तेवर् पॅट्रनल् वरत्ताऱ् पिन्नर्
मण्णिडै मणियिन् वन्द वञ्जियै पोलवाळ् वन्दाळ् 276

विण् इटै–व्योम में; इम्पर्–भू पर; नाकर्–नागलोक में; विरिञ्चने–विरंचि; मुतलोर्क्कु ॲल्लाम्–आदि सबके लिए; कण् इटै–नेत्रों की; ऑळियिन् पाङ्कर्–ज्योतिस्वरूप श्रीराम के पास; पॅण् इटै अरचि–स्त्रियों में रानी; तेवर् पॅट्र नल् वरत्ताल्–देवों के प्राप्त वर से; पिन्नर्–बाद; मण् इटै–पृथ्वी पर; मणियिन् वन्त वञ्चियै पोल्वाळ्–मणि से निकली लता के समान (अवतरित) सीतादेवी; कटि कमऴ् चालै निन्ऱुम्–सुगन्धि बिखेरनेवाली पर्णशाखा से; वन्ताळ्–आने लगी। २७६

श्रीराम स्वर्ग, भूलोक और पाताल मे रहनेवाले ब्रह्मा से लेकर सभी जीवों के नेत्रों के ज्योति-स्वरूप थे। उनके पास आने के लिए सीताजी तभी पर्णशाला के बाहर निकली। वे स्त्रियों में रानी थीं। देवों के वर को पूरा करने के लिए भूमि पर अवतरित हुई थीं। वे रत्न-वल्ली के समान सुबास से पूरित पर्णशाला के बाहर प्रकट हुईं। २७६

❀ ऊन्शुड वुणङ्गु पेळ्वा युणर्विलि युरुवि नारुम्
वान्शुडर्च् चोदि वॅळ्ळम् वन्दिडै वयङ्ग नोक्कि
मीन्शुडर् विण्णु मण्णुम् विरिन्द पोररक्क रॅन्नुम्
कान्शुड मुळैत्त कर्पिन् कनलियैक् कण्णिऱ् कण्डाळ् 277

ऊन्–शरीर को; चुट–काम ने तपाया, उससे; उणङ्कु–मुरझाये रहनेवाली; पेळ् वाय्–बड़ा मुख वाली; उणर्वु इलि–मतिहीन शूर्पणखा; उरुविन्–भगवती के

रूप में; नाऱ्न्–प्रकट हुई; वाऩ् चुटर्–बड़ी कान्तिमय; चोति वॆळ्ळम्–ज्योति-प्रवाह; वन्तु इटै वयङ्क–आकर उनके मध्य प्रकट हुआ तो; नोक्कि–उसको देखकर; मीऩ् चुटर् विण्णुम्–नक्षत्र-ज्योतित आकाश में; मण्णुम्–धरती में; विरिन्त–फैले हुए; पोर् अरक्कर् ऎऩ्ऩुम्–झगड़ालू राक्षस रूपी; काऩ् चुट–जंगल को जलाने; मुळैत्त–उद्भूत; कऱ्पिऩ् कऩलियै–पातिव्रत्य रूपी अग्निशिखा को; कण्णिल् कण्टाळ्–अपनी आँखों से देखा (देखती ऐसा अनुभव किया)। २७७

शूर्पणखा ने, जिसका शरीर कामाग्नि से तप्त होकर मुरझा-सा गया था, जिसका मुख बहुत बड़े बिल के समान था और जो अपनी बुद्धि खो चुकी थी, सीताजी के रूप में उनके मध्य आनेवाली बड़ी कान्तिमय ज्योति के प्रवाह को देखा। वह ऐसी थीं, मानो वह पातिव्रत्य की अग्निशिखा हैं, जो नक्षत्रोज्वल आकाश में और भूमि में फैले रहे राक्षस-कानन को जलाने के लिए उद्भूत हैं। २७७

❀ पण्बुऱ नॆडिदु नोक्किप् पडैक्कुनर् शिऱुमै यल्लाल्
ऎण्बिऱङ् गळहुक् कॆल्लै यिल्लैया मॆऩ्ऱु निऩ्ऱाळ्
कण्बिऱ पॊरुळिऱ् चॆल्ला करुत्तॆनि नः(ह)दे कण्ड
पॆण्बिऱन् दॆनुक् कॆऩ्ऱा लॆऩ्बडुम् पिऱरुक् कॆऩ्ऱाळ् 278

पण्पु उऱ–खूब आँख लगाकर; नॆटितु नोक्कि–दीर्घकाल तक देखकर; पटैक्कुनर् चिऱुमै अल्लाल्–सृष्टिकर्ता की गलती है, नहीं तो; ऎण् पिऱङ्कु–कल्पना में आनेवाली; अऴकुक्कु ऎल्लै इल्लै आम्–सुन्दरता की सीमा नहीं होता, इस बात को साबित करती हुई; निऩ्ऱाळ्–यह शोभायमान (खड़ी) रहती है; कण् पिऱ पॊरुळिल् चॆल्ला–दृष्टि दूसरे पदार्थ पर नहीं जाती; करुत्तु ऎनिऩ् अः.ते–मन भी वही है; कण्ट–इसे जो देखती; पॆण् पिऱन्तेनुक्कु–स्त्री पैदा हुई मेरी स्थिति यह है; ऎऩ्ऱाळ्–तो; पिऱर्क्कु ऎऩ् पटुम्–दूसरे (पुरुषों) की क्या होगी; ऎऩ्ऱाळ्–(आश्चर्य के साथ) कहा। २७८

उसने खूब आँखे फाड़कर बहुत देर तक देखा। उसे एक नया तथ्य सूझा। प्रपंचसृजक ब्रह्मा की ही असमर्थता है कि उसकी सृष्टि में सुन्दरता भी सीमित रहती है। नहीं तो सत्य यह है कि सुन्दरता की कोई सीमा नहीं! यह तथ्य साबित करती हुई सीताजी उनके सामने खड़ी थी। शूर्पणखा ने विस्मय के साथ सोचा कि इस सुन्दरता के खजाने को जो देखता है वह उस पर से आँख नहीं हटा सकता। उसके मन की भी वही हालत होगी। मैं स्त्री हूँ। इसको देखकर मेरी भी यह हालत हो गयी तो अन्य (पुरुष) लोगों की क्या स्थिति होगी ?। २७८

❀ पॊरुदिऱत् तानै नोक्किप् पूवैयै नोक्कि निऩ्ऱाळ्
करुदमऱ् ऱिनिवे ऱिल्लै कमलत्तुक् कडवु ळाऩुम्
ऒरुतिऱत् तुणर नोक्कि युरुविनुक् कुलह मूऩ्ऱिल्
इरुतिऱत् तार्क्कुम ऎय्द वरम्बिव रिरुव रॆऩ्ऱाळ् 279

पौरु तिऱ्‌त्तात्तै–युद्धदक्ष श्रीराम को; नोक्कि–देखकर; पूवैयै नोक्कि–फिर देवी को देखती; निन्ऱाळ्–विस्मित खड़ी (जो) रही; कमलत्तु कटवुळ् तानुम्–कमलासन देवता (ब्रह्मा) भी; ओरु तिऱ्‌त्तु–अपूर्व रीति से; उणर नोक्कि–विवेक से देखकर; उलकम् मून्ऱिन्–तीनों लोकों के; इरु तिऱ्‌त्तार्क्कुम्–पुरुष-स्त्री दोनों वर्गों के लिए; इवर् इरुवर्–ये दोनों; उरुविऩुक्कु चॆय्त वरम्पु–रूपसौंदर्य की रची सीमाएँ है; मऱ्ऱु करुत–दूसरा सोचने के लिए; इनि वेऱु इल्लै–अब कुछ नहीं; ॲन्ऱाळ्–धारणा बना ली। २७९

शूर्पणखा ने युद्धसमर्थ श्रीराम को देखा। फिर एक बार सीताजी पर दृष्टि डाली। विस्मयविमूढ़ खड़ी रह गयी। उसने विचार किया कि ब्रह्मा ने खूब सोचकर अच्छी तैयारी के साथ इन दोनों को पुरुष और स्त्री के सौन्दर्य के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण के रूप मे सरजा है। तीनों लोकों में पुरुष के सौन्दर्य की सीमा श्रीराम हैं और स्त्री-सौन्दर्य की सीमा यह स्त्री है। उसने दृढ़ धारणा बना ली, इसके सिवा सोचने के लिए गुंजाइश नहीं है। २७९

मरुवोन्ऱु कून्द लाळै वनत्तिवन् कॊण्डु वारान्
उरुविङ्गि दुडैय राह मऱ्ऱैयोर् यारु मिल्लै
अरविन्द मलरु णीङ्गि यडियिणै पडियिर् ऱोयत्
तिरुविङ्गु वरुव दॆन्नो वॆन्ऱहन् दिहैत्तु निन्ऱाळ् 280

मरु ऒन्ऱु–सुवास-लगे; कून्तलाळै–केश वाली (इस) को; इवन् वनत्तु कॊण्टु वारान्–यह वन में नहीं लायगा; इतु उरुवम् उटैयर् आक–ऐसी रूपवती; मऱ्ऱैयोर् यारुम्–दूसरी कोई; इङ्कु इल्लै–यहाँ नहीं है; तिरु–श्रीलक्ष्मीदेवी; अरविन्त मलर् उळ्–अरविन्द-मध्य वास; नीङ्कि–छोड़कर; अटि इणै–चरणद्वय; पटियिल् तोय–भूमि पर पड़ने देते हुए; इङ्कु वरुवतु–यहाँ आती; ॲन्नो–क्योंकर; ॲन्ऱु–यह सोचकर; अकम् तिकैत्तु–मन में चकित होकर; निन्ऱाळ्–खड़ी रही। २८०

उसने तर्क किया कि सुवासित केश वाली इसको यह पुरुष वन में अपने साथ नहीं लाया होगा। इतनी रूपवती स्त्रियाँ कोई अन्य हैं भी नहीं। इसलिए यह श्रीदेवी ही होगी, जो अपना कमल पर वास छोड़कर अपने चरणद्वय को भूमि पर पड़ने देती हुई आयी है। पर उसका इधर आगमन किस हेतु हुआ है? ऐसा विस्मय करती हुई चकितमन होकर शूर्पणखा खड़ी रही। २८०

❀ पॊन्नैप् पोलॊळिरु मेनि पूवैपोल् वण्णत् तानिम्
मिन्नैप्पो लिडैया ळोडु मेवुम् वेडत्त नल्लन्
तन्नैप्पोऱ् ऱहैयो रिल्लात् तळिरैप्पो लडियि नाळुम्
ॲन्नैप्पो लिडैये वन्दा ळिहळ्विप्पे निवळै यॆन्ना 281

पूवै पोल् वण्णत्तान्–अतसी पुष्प का-सा वर्ण-वाला; पॊन्नै पोल् ऒळिरुम्

मेनि—स्वर्ण की-सी कान्ति का शरीर; मिऩ्ऩै पोल्—बिजली-सम; इटैयाळॊटुम्—कमर वाली के साथ; मेवुम् वेटत्तऩ् अल्लऩ्—मिलकर रहे, ऐसे गृहस्थ धर्मोचित वेश का नहीं; तऩ्ऩै पोल् तक्कैयोर् इल्ला—जिसके समान श्रेष्ठ स्त्रियाँ नहीं होतीं (जो अप्रतिम है); तळिरै पोल् अटियिऩाळुम्—जिसके पल्लव के समान चरण हैं; इटैये—(यह) बीच में; ऍऩ्ऩै पोल् वन्ताळ्—मेरे समान आई हुई होनी चाहिए; इवळै—इसको; इकळ्विप्पेऩ्—उपेक्षित करा दूँगी; ऍऩ्ऩा—ऐसा निश्चय करके। २८१

अतसी-पुष्प का-सा रंग वाला यह स्वर्ण की-सी चमक वाली और बिजली-सी कमर वाली इसके साथ गृहस्थी चलाता नहीं लगता। इसका वेश गृहस्थी योग्य नहीं है। तपस्वी का वेश है। यह अप्रमेय स्त्री, पल्लव-चरणा नारी मेरे समान बीच में आयी हुई है। हाँ, वही होना चाहिए। अब मैं उसको निन्दित कर उपेक्षित करवा दूँगी। —शूर्पणखा ने यह संकल्प किया। २८१

❀ वरुमिवळ् मायम् वल्लळ् वञ्जऩै यरक्कि नॆञ्जम्
तॆरिविल तेरुन् दऩ्मै शीरियोय् शॆव्वि दऩ्ऱाल्
उरुविदु मॆय्य दन्ऱा लूऩुहर् वाऴ्क्कै याळै
वॆरुविनॆऩ् नॆय्दि डामल् विलक्कुदि वीर वॆऩ्ऱाळ् 282

चीरियोय्—हे अच्छे गुण वाले; वरुम् इवळ्—जो आ रही है, यह; मायम् वल्लळ्—माया में निपुण है; वञ्चऩै अरक्कि—वंचक राक्षसी है; नॆञ्चम् तॆरिवु इल—इसका मन अगम्य है; तेरुम् तऩ्मै—इसको अच्छा मानना; चॆव्वितु अऩ्ऱु—ठीक नहीं; उरु इतु मॆय्यतु अऩ्ऱु—उसका यह रूप भी सच्चा नहीं; ऊऩ् नुकर् वाऴ्क्कैयाळै—मांसाहारी जीवन वाली इसे; वॆरुविनॆऩ्—(देखकर) डरती हूँ; ऍय्तिटामल्—पास न आने दो; वीर—हे वीर; विलक्कुति—हटाओ; ऍऩ्ऱाळ्—कहा। २८२

ऐसा संकल्प करके शूर्पणखा श्रीराम से बोली। हे अच्छे गुण वाले! यह जो आ रही है माया में निपुण है। वंचकी निशाचरी है। इसके मन के भाव गूढ़ हैं और हमारी समझ में नहीं आ सकेंगे। इसको अच्छा मानना भला नहीं होगा। इसका रूप भी सच्चा नहीं है। मांस खाकर जीवन चलानेवाली इसको देखकर मेरे मन में भय पैदा होता है। हे वीर! उसको पास आने मत दो। रोको और भगाओ। २८२

❀ ऑळ्ळिदुन् नुणर्वु मिऩ्ऩे युऩ्ऩैया रॊळिक्कु मीट्टार्
तॆळ्ळिय नलत्ति नालुऩ् शिन्दनै तॆरिन्द दम्मा
कळ्ळवल् लरक्कि पोला मिवळुनी काण्डि यॆऩ्ऩा
वॆळ्ळिय मुरुवऩ् मुत्तम् वॆळिप्पड वीर ऩक्काऩ् 283

वीरऩ्—वीर राघव; मिऩ्ऩे—विद्युत (-सम स्त्री); उऩ् उणर्वु ऑळ्ळितु—तुम्हारी समझ बड़ी साफ़ है; उऩ्ऩै यार् ऑळिक्कुम् ईट्टार्—तुमसे छिपने की किसके पास शक्ति है; तॆळ्ळिय नलत्तिनाल्—सुलझी हुई शक्ति से; उऩ् चिन्तऩै—तुम्हारी

बुद्धि ने; तेरिन्ततु—यह बात जान ली; अम्मा—री माँ; इवळुम्—यह भी; कळ्ळ—चोर; वल् अरक्कि—भयंकर राक्षसी; पोल् आम्—होगी, अवश्य; नी काण्टि—तुम देख लो; ऍन्ऩा—कहकर; वॆळ्ळिय मुऱुवल् मुत्तम्—श्वेत दन्तमुक्ता; वॆळिप्पट—प्रकट करके; नक्काऩ्—हँसे। २८३

श्रीवीरराघव ने इसके उत्तर में कहा कि विद्युत के समान लगनेवाली नारी! तुम्हारी सूझ भी बड़ी साफ़ है! कौन तुमसे छिपने-छिपाने की क्षमता रखता है? तुम्हारी बूझ ने अपने सामर्थ्य से सच्चाई जान ली! हा! री मैया! यह अवश्य चोरनी, भयंकर राक्षसी ही होगी शायद! तुम भी देख लो। ऐसा कहकर मोती-समान मनोरम दाँतों को प्रकट करते हुए श्रीराम हँसे। २८३

❀ आयिडै यमुदिन् वन्द वरुन्ददिक् कऱ्पि नञ्जॊल्
वेयिडै तोळि नाळुम् वीरनैच् चेरुम् वेलै
नीयिडै वन्द दॆन्नै निरुदर्तम् बावै यॆन्ऩाक्
कायॆरि यनैय कळ्ळ वुळ्ळत्ताळ् कदित्त लोडुम् 284

अ इटै—उस समय; अमुतिऩ् वन्त—अमृत के समान आगत; अरुन्तति कऱ्पिऩ्—अरुन्धती के समान पातिव्रत्य; अम् चॊल्—मधुर बोली; वेय् इटै—बाँस को पीछे करनेवाले (बाँस से भी सुडौल); तोळिऩाळुम्—कन्धे, इनसे युक्त सीताजी भी; वीरऩै—श्रीवीरराघव के पास; चेरुम् वेलै—आई तब; काय् ऍरि अऩैय—जलती आग के समान; कळ्ळ उळ्ळत्ताळ्—कपट-भरे मन वाली के; निरुतर् तम् पावै—हे राक्षसी स्त्री; इटै नी वन्ततु—बीच में तुम्हारा आना; ऍन्ऩै—कैसा; ऍन्ऩा—कहकर; कतित्तलोटुम्—कोप के साथ बढ़ने पर। २८४

तब तक सुधा-सम वहाँ जो आयीं, वे अरुन्धती-सी पतिव्रता, मधुर-वाणी और बाँस के समान कंधों वाली सीताजी श्रीराम के पास आ गयीं। झट जलती आग के समान वंचना मन में रखनेवाली शूर्पणखा ने ताड़ना दी कि राक्षस-कुमारी! तुम हमारे बीच में कैसी आयीं? यह कहकर वह कोप के साथ श्रीसीता की तरफ़ बढने लगी। २८४

❀ अञ्जिनळ् वञ्जि यन्न मिन्निडै यलश वोडिप्
पञ्जिन्मॆल् लडिह णोवप् पदैत्तनळ् परुवक् काल
मञ्जिडै वयङ्गित् तोन्ऱुम् पवळत्तिन् वल्लि येपोऱ्
कुञ्जर मनैय वीरन् कुववुत्तो ळुविक् कॊण्डाळ् 285

अञ्चिऩळ्—भयभीत (सीताजी); मिन् इटै—बिजली-सी कमर को; वञ्चि अन्न—लता के समान; अलच—बल खाने देती हुई; ओटि—दौड़कर; पञ्चिऩ् मॆल् अटिकळ्—रुई-समान चरणों को; नोव—कष्ट देते हुए; पतैत्तऩळ्—सिहरकर; परुव काल मञ्चु इटै—वर्षाकालीन मेघ के बीच; वयङ्कि तोऩ्ऱुम्—साफ़ दिखनेवाली; पवळत्तिऩ् वल्लिये पोऱ्—प्रवाल-लता ही के समान; कुञ्चरम् अऩैय वीरऩ्—कुंजर-

सम वीर श्रीराम के; कुववु तोळ्-पुष्ट और उन्नत कन्धों से; तऴुवि कॉण्टाळ्-लिपट गईं। २८५

शूर्पणखा को अपने पास आते देखकर श्री सीताजी भयभीत हो गयीं। अपनी बिजली-सी कमर को लता के समान लचकाती हुई दौड़ीं। रुई-समान पैरों को दुख देती हुई हड़बड़ाहट के साथ वह दौड़ी और कुंजर-सम श्रीराम के सबल और पुष्ट कंधों से ऐसे लग गयीं जैसे वर्षाकालीन मेघ के मध्य प्रवाललता लग गयी हो। २८५

❀ वळैयॅयिऱ् ऱवर्ह ळोडु वरुम्विळै याट्टॅन् ऱालुम्
विळैवन तीमै येया मॅन्वदै युणर्न्दु वीरन्
उळैवन वियऱ्ऱ लॉल्लै युन्निलै युणरु मायिन्
इळैयवन् मुनियु नङ्गै येहुदि विरैवि नॅन्ऱान् 286

वळै ॲयिऱ्ऱु-वक्रदाँत वाले; अवर्कळोटुम्-उन (राक्षसों) के साथ; वरुम् विळैयाट्टु ॲन्ऱालुम्-होनेवाले खेल भी हों; विळैवन तीमैये आम्-फल बुरे ही होंगे; ॲन्पतै उणर्न्तु-यह महसूस कर; वीरन्-श्रीवीरराघव; नङ्कै-नारी; उळैवन इयऱ्ऱल्-मन को संकट देनेवाले काम न करो; इळैयवन्-मेरा अनुज; उन् निलै उणरुम् आयिन्-तुम्हारी बात जान लेगा तो; ऑल्लै मुनियुम्-तुरन्त तुमसे कुपित हो जायगा; विरैविन् एकुति-शीघ्र चली जाओ; ॲन्ऱान्-कहा। २८६

अब श्रीराम महसूस करने लग गये कि वक्रदन्त राक्षसों के साथ विनोद भी अनर्थकारी है। वीर श्रीराम ने शूर्पणखा से कहा कि नारी! तुम ऐसा काम मत करो, जिससे मन को क्लेश पहुँचे। मेरा छोटा भाई तुम्हारी स्थिति जानेगा तो तुरन्त कुपित हो जायगा। तुम शीघ्र यहाँ से चली जाओ। २८६

पॉऱ्पुडै यरक्कि पूविऱ् पुनलिनिऱ् पॉरुप्पिल् वाऴुम्
अऱ्पुडै युळ्ळत् तारु मनङ्गनु ममरर् मऱ्ऱुम्
ॲऱ्पॅऱत् तवज्जॅय् हिन्ऱा रॅन्नैनी यिहऴ्व दॅन्ने
नऱ्पॉऱै नॅञ्जि लिल्लाक् कळ्वियै नच्चि यॅन्ऱाळ् 287

पॉऱ्पुटै अरक्कि-सुन्दर वेश में जो रही, उस राक्षसी ने; पूविल्-(कमल) पुष्प पर; पुनलिल्-(क्षीरसागर के) पथ पर; पॉरुप्पिल्-(कैलास) पर्वत पर; वाऴुम्-वास करनेवाले; अऱ्पु उटै उळ्ळत्तारुम्-प्रेम-मन के (तीनों देवता) और; अनङ्कनुम्-मन्मथ और; मऱ्ऱुम् अमरर्-अन्य देवता लोग; ॲन् पॅऱ-मुझे पाने के लिए; तवम् चॅय्किन्ऱार्-तपस्या करते हैं; नल् पॉऱै-श्रेष्ठ क्षमा नामक गुण; नॅञ्चिल् इल्ला-जिसके मन में नहीं है, उस; कळ्वियै-चोरनी को; नच्चि-चाहकर; ॲन्नै नी इकऴ्वतु-मेरी तुम्हारा उपेक्षा करना; ॲन्नै-क्यों; ॲन्ऱाळ्-पूछा। २८७

शूर्पणखा जानेवाली नहीं थी। मायारूपिणी उसने श्रीराम से

कहा— कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा, क्षीरसागरवासी विष्णु, कैलासपर्वत-पति शिव, अनंग और अन्य देवता लोग मुझ पर प्रेम रखते है और मुझे प्राप्त करने हेतु तपस्या कर रहे हैं, बात ऐसी है तब तुम असह्यशीला इस नारी को चाहकर मेरी उपेक्षा करते हो ! इसका कारण क्या है ? —शूर्पणखा ने पूछा । २८७

❀ तन्न̱ॊडुन्̱ दॊडर्̱वि लादे मॆन्̱नवुन्̱ दविरा डाऩिक्
कन्न̱ॆडु मनत्̱ति शॊल्लुङ् गळ्ळवा शहङ्ग ळॆन्̱ना
मिन्न̱ॊडु तॊडर्̱न्दु शॆल्लु मेहम्बोल् मिदिलै वेन्̱दन्̱
पॊन्न̱ॊडुम् बुन̱िदन्̱ बोयप् पूम्बॊऴिऱ् चालै पुक्कान्̱ 288

इ कल् नॆट्टुम् मनत्̱ति तन्न̱ॊट्टु—इस पत्थर-सम मन वाली के साथ; तॊटर्̱वु इलातेम्—हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है; ऍन्̱न̱वुम्—कहने पर भी; तविराळ्—यहाँ से नहीं हटती; चॊल्लुम्—इसके वचन भी; कळ्ळ वाचकङ्कळ्—वंचना-भरे वचन हैं; ऍन्̱ऩा—यह सोचकर; पुनितन्̱—पवित्र श्रीराम; मिन्̱ ओट्टुम्—बिजली के साथ; तॊटर्̱न्तु चॆल्लुम्—लगे जानेवाले; ओरु मेकम् पोल—मेघ के समान; मितिलै वेन्̱तन्̱ पॊन्̱ ऑट्टुम्—मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ; पोय्—वहाँ से जाकर; अ पूम् पॊऴिल्—उस उपवन में रहनेवाली; चालै—पर्णशाला में; पुक्कान्̱—प्रविष्ट हुए। २८८

श्रीराम ने निश्चय कर लिया कि यह पत्थर-सम मन वाली है। इस कठोरमन स्त्री से हमने कह दिया कि हमारा-तुम्हारा रिश्ता कुछ नहीं हो सकता। तो भी वह हटती नहीं। इसके कथन भी कपट के वचन लगते हैं। यह सोचकर पवित्रचरित्र श्रीराम मिथिलेशनन्दिनी सुन्दरी सीताजी के साथ जाकर उस उपवन में रही अपनी पर्णशाला में घुस गये। सीताजी जब उनके पीछे गयीं, तब ऐसा लगा कि मेघ के पीछे बिजली जा रही हो। २८८

❀ पुक्कपिन्̱ बोन̱ दॆन्̱नु मुणर्̱विनळ् पॊऱै̱यि नीङ्गि
उक्कदा मुयिर ळॊत्̱ऱु̱ मुयिर्̱त्तिल ळॊडुङ्गि निन्̱ऱा̱ळ्
तक्किलन्̱ मनत्तुळ् यादुन्̱ दळुविलन्̱ शलमुङ् गॊण्डान्̱
मैक्करुङ् गुळलि न̱ाण्माट् टन्̱बिनिल् वलिय नॆन्̱ऱा̱ळ् 289

पुक्क पिन्̱—उनके पर्णशाला में प्रविष्ट होने के बाद; पोनतु ऍन्̱नुम् उणर्̱विन̱ळ्—बेसुध-सी; पॊऱै̱यिन्̱ नीङ्कि—शरीर से छूटकर; उक्कतु आम् उयिरळ्—ध्वस्त हुए हों, ऐसे प्राणों वाली होकर; ऑत्̱ऱु̱म् उयिर्̱त्तलळ्—साँस ही नहीं छोड़ी; ऑटुङ्कि निन्̱ऱा̱ळ्—सन्न खड़ी रही; तक्किलन्̱—मेरे योग्य नहीं; मनत्तुळ् यातुम् तळुविलन्̱—मन में कोई लगाव पैदा नहीं हुआ है; चलमुम् कॊण्टान्̱—कोप भी करता है; मै करुम् कुळलिनाळ् माट्टु—अंजन-सम काला केश वाली के साथ; अन्̱पिनिल् वलियन्̱—प्रेम में दृढ़ है; ऍन्̱ऱा̱ळ्—अपने आप से कहा। २८९

उनके पर्णशाला में प्रवेश के बाद शूर्पणखा की दशा बहुत बिगड़

गयी। सुधि खोकर वह क्षीण-प्राणा-सी रह गयी। साँस भी नहीं छोड़ती थी। सन्न खड़ी रही। फिर उसने आप ही आप कहा कि यह मेरे योग्य नहीं लगता। अपने मन में किंचित भी स्नेह का भाव नहीं लाता। वही नहीं, मेरे प्रति क्रुपित भी है। उसका इस अंजन-सम काले केश वाली स्त्री पर प्रेम दृढ़ है। २८९

❀ निन्ऱिल ळवत्तैच् चेरु नॅऱियिनै निनैन्दु पोनाळ्
इन्ऱिव नाहम् बुल्ले नॅनिलुयि रिळ्प्पे नॅन्नाप्
पॊन्ऱिणि शारऱ् चीदप् पळिक्करैप् पॊदुम्बरप् पुक्काळ्
शॆन्ऱ्वु परिदि मेल्पाऱ् चॆक्करवन् दिऱुत्त दन्ऱे 290

निन्ऱिलळ्–(शूर्पणखा) खड़ी नहीं रही; अवत्तै–उसको; चेरुम् नॅऱियिनै–प्राप्त करने का उपाय; निनैन्तु–सोचते हुए; पोनाळ्–गई; इन्ऱु–आज; इवन् आकम् पुल्लेन्–इसके वक्ष को आलिगन नहीं करूँगी; ॲनिल्–तो; उयिर् इळप्पॆन्–प्राण छोड़ दूँगी; ॲन्ऩा–ऐसा सोचकर; पॊन् तिणि–स्वर्णमिश्रित; चारल्–एक तराई में; चीत पळिक्कु अरै–शीतल स्फटिक-चट्टान सहित रहनेवाले; पॊतुम्पर्–उद्यान में; पुक्काळ्–घुसी; परिति मेल्पाल् चॆन्ऱ्रतु–सूर्य पश्चिम दिशा में (अस्त हो) चला; चॆक्कर् वन्तु इऱुत्ततु–लालिमा आ फैली। २९०

फिर वह वहाँ खड़ी नहीं रही। उसका मन श्रीराम को भूल नहीं सका। उनसे मिलने का उपाय सोचने लगी। 'अगर मैं इसके वक्ष का आलिगन नहीं करूँगी तो मैं प्राण त्याग दूँगी।' —यह संकल्प करती हुई वह एक उपवन मे गयी, जो तराई में था, और जिसमें शीतल स्फटिक-चट्टान थी। तब तक सूर्य पश्चिम में अस्त हो गया और गगन में लाली फैल गयी। २९०

❀ अळिन्द शिन्दैय ळाययर् वाळ्वयिन्
मॊळिन्द कामक् कडुङ्गनन् मूण्डदाल्
वळिन्द नाहत्तिन् वन्ऱॊळै वाळॆयिऱ्
ऱिळिन्द कार्विड मेऱिय दॆन्नवे 291

वळिन्त–छलककर; नाकत्तिन्–सर्प के; वन्–दृढ़; तॊळै–रंध्रसहित; वाळ्–उज्ज्वल; ऍयिऱु–विषदाँत का; इळिन्त कार् विटम्–बाहर आया विष; एऱियतु ॲन्न–सिर पर चढ़ गया, जैसे; अळिन्त चिन्तैयळाय्–संज्ञाशून्य होकर; अयर्वाळ् वयित्–शिथिल रहनेवाली शूर्पणखा के अन्दर; मॊळिन्त–पूर्वोक्त; काम कटुम् कनल्–काम की भयंकर अग्नि; मूण्टतु–उद्दीप्त हुई। २९१

शूर्पणखा की स्थिति बहुत बुरी हो गयी। किसी सर्प के रंध्रसहित दृढ़ दाँत द्वारा निकले विष का असर सिर पर चढ़ गया हो, ऐसा वह स्वस्थता खोकर श्रांत हो गयी। पूर्वोक्त काम का कठोर ज्वर उसके शरीर को ताप देने लगा। २९१

❀ ताड हैक्कोडि याडड मार्बिडै, आड वर्क्कर शन्नयि लम्बुपोल्
पाड वत्तॊळिल् मन्मदन् वाय्कणै, ओड वुट्कि युयिरुळैन् दाळरो 292

तादकै कॊटियाळ्–ताड़का, क्रूरी; तट मार्पु इटै–के विशाल वक्ष के मध्य; आटवर्क्कु अरचन्–पुरुषों में राजा श्रीराम के; अयिल् अम्पु पोल्–तीक्ष्ण शर जैसे; पाटवम् तॊळिल् मन्मतन्–कार्य-पटु मन्मथ के; पाय् कणै–प्रेषित शर; ओट–निफर गए तो; उट्कि–सिहरकर; उयिर् उळैन्ताळ्–प्राणविह्वल हुई। २९२

मन्मथ कार्यपटु था। उसका प्रेषित शर इसकी छाती को ऐसा निफर गया, जैसे पुरुषोत्तम श्रीराम का तीक्ष्ण शर क्रूरी ताड़का के वक्ष को वेधकर चला गया था। शूर्पणखा सिहर उठी और वह मर्मान्तिक पीड़ा का अनुभव करने लगी। २९२

❀ कलैयु वामदि येकरि याहवन्, शिलैय मारनैत् तिन्नु निनैप्पिनाळ्
मलैय मारुद मानॆंडुङ् गालवेल्, उलैय मार्बिडै यून्ऱिड वोयुमाल् 293

कलै उवा मतियै–कलाओं से पूर्ण चन्द्र को ही; कऱि आक–व्यंजन बनाकर; वन् चिलैय मारनै–कठोर धनुर्धर मारदेव को; तिन्नुम् निनैप्पिनाळ्–खाने का विचार किया; मलय मारुतम् आम्–मलयमारुत रूपी; नॆटुम् काल वेल्–दीर्घ यम-शूल; उलैय्–सालते हुए; मार्पु इटै ऊन्ऱिट–छाती पर घुसा तो; ओयुम्–श्रान्त खो गई। २९३

वह सोचती कि मैं पूर्णचन्द्र को व्यंजन बनाकर कठोर धनुर्धर कामदेव को ही भक्षण कर लूँ। पर मलयपवन रूपी सशक्त शक्ति के उसके वक्ष पर गड़ने से वह निर्बल रह जाती। २९३

❀ अलैक्कु माऴि यडङ्गिड वङ्गैयाल्
मलैक्कु लङ्गळिऱ् ऱूर्क्कु मनत्तिनाळ्
निलैक्कुम् वाऩि नॆंडुमदि नीणिला
वलैक्कु नीङ्गु मिडुक्किलण् मानुवाळ् 294

अलैक्कुम्–उसको सालनेवाले; आऴि–समुद्र को; अटङ्किट–चुप कराने के लिए; अम् कैयाल्–अपनी हथेली से; मलै कुलङ्कळिन्–गिरियों की राशि उखाड़कर उनसे; तूर्क्कुम् मनत्तिनाळ्–पाटने का संकल्प किया; वानिल् निलैक्कुम् नॆटु मति–आकाश मे स्थिर रहे चन्द्र की; नीळ् निला वलैक्कु–विस्तृत चाँदनी के जाल से; नीङ्कुम्–बच जाने को; मिटुक्कु इलळ्–शक्ति नहीं रखती थी; मानुवाळ्–क्षोभ करती। २९४

समुद्र-गर्जन उसे सालने लगा। उसने सोचा कि अपने हाथों से गिरिराशियों को उखाड़कर समुद्र में डालूँ और उसे पाट दूँ। पर आकाश में निरन्तर (चलते) रहनेवाले चन्द्र की किरणों के जाल से बच निकलने की शक्ति उसमें नहीं थी। इसलिए विक्षुब्ध हो जाती। २९४

❀ पूवॅ लाम्बॉडि याहविप् पूमियिल्, कावॅ लाम्ॉडिप् पेॅन्नॅक् कान्दुवाऴ्
शेव लोडुरै शॅन्दलै यन्ऱिलिन्, नावि नाल्वलि यॅञ्ज नडुङ्गुवाऴ् 295

पू ॲलाम् पॉटियाक–सारे पुष्पों को चूर्ण बनाते हुए; इ पूमियिल्–इस पृथ्वी पर रहनेवाले; का ॲलाम्–उद्यान सब; ऑटिप्पेन् ॲन्न–तोड़-फोड़ दूँगी, ऐसा; कान्तुवाऴ्–कोप करती; चेवलोटु उऱै–नर (क्रौंच) के साथ रहनेवाली; चॅम् तलै अन्ऱिलिन्–लाल सिर की मादा क्रौंच पक्षी के; नावित्ताल्–(मिलन-सुख-सूचक) बोली से; वलि ॲञ्च–अपनी शक्ति खोकर; नटुङ्कुवाऴ्–काँप उठती। २६५

कभी वह सोचती कि सारे उद्यानों को तहस-नहस कर डालूँ ताकि सभी पुष्प चूर्ण-चूर्ण हो जायँ। पर अपने नर के साथ रहती हुई मादा क्रौंच अपने सुख-संभोग से उत्पन्न आनन्द का नाद करती तो उससे इसका बल छूट जाता और वह काँप उठती। २९५

अणैवि ऱिङ्गळै नुङ्ग वराविन्नैक्, कॉणर्वॅ न्नोडि यॅन्नक्कॉदित् तुन्नुवाऴ्
पणैयिन् मॅन्मुलै मेऱ्पत्ति मारुदम्, पुणर वारुयिर् वॅन्दु पुऴुङ्गुमाल् 296

अणैवु इल् तिङ्कळै–प्रतिकूल चाँद को; नुङ्क–निगलने के लिए; अरावित्तै–(राहु या केतु) सर्प को; ओटि कॉणर्वॅन्–दौड़ जाकर लाऊँगा; ॲन्न–ऐसा; कॉतितु–खौल उठती; उन्नुवाऴ्–सोचती; पणैयिन् मॅन् मुलै मेल्–पीन और नरम स्तनों पर; पनि मारुतम् पुणर–शीतल पवन के लगने से; आरुयिर् वॅन्तु–मर्मतप्त होकर; पुऴुङ्कुम्–ताप से पीड़ित होती। २६६

वह कभी संकल्प करती कि यह चन्द्र मेरे अनुकूल नहीं है। उसे (राहु या केतु) सर्प द्वारा निगलवा लूँगी। बड़े क्रोध के साथ उसको पकड़ लाने की बात सोचती। पर उसके पीन और कोमल स्तनों पर शीतल पवन आकर लगता और उत्तेजित कामवासना से तप्त होकर थक जाती। उसके प्राण जर्जर हो जाते और वह वेदना का अनुभव करती। २९६

❀ कैह ळाऱ्ऱन्न कदिरिळङ् गॉङ्गै मेल्, ऐय तण्वनि यळ्ळिन ळप्पिन्नाऴ्
मॉय्हॉ डोयिडै वॅन्दु मुरुङ्गिय, वॅय्य पाऱैयिल् वॅण्णॅय् निहर्क्कुमाल् 297

तन्न कतिर् इळम् कॉङ्कै मेल्–अपने छटामय तरुण उरोजों पर; कैकळाल्–अपने हाथों से; ऐय तण् पनि–छोटे शीतल हिमखण्डों को; अळ्ळित्तळ् अप्पिनाऴ्–उठाकर (शूर्पणखा ने) लगा लिया; ती इटै–अग्नि में; वॅन्तु मुरुङ्किय–तपकर गरम बनी; वॅय्य पाऱैयिल्–उष्ण चट्टान पर (रखे); वॅण्णॅय् निकर्क्कुम्–मक्खन के समान (वाष्प) बना। २६७

उसने अपना ज्वर शान्त करने की इच्छा से शीतल हिमकणों को लेकर अपने मनोरम तरुण स्तनों पर डाल लिया। पर वे इस तरह अदृश्य हो गये, जैसे आग से तप्त गरम चट्टान पर डाला गया मक्खन पिघलकर लुप्त हो जाता है। २९७

❀ अळिक्कु मॆय्युयिर् कानुदळ् लञ्जिनळ्
कुळिक्कु नीरुङ् गॊदित्तॆळ् कूशुमाल्
विळिक्कुम् वेलैये वॆङ्गण नङ्गनै
ऑळिक्क लामिड मामॆन वुन्नुमाल् 298

अळिक्कुम्–संरक्षणीय; मॆय्–शरीर को और; उयिर्–प्राणों को; कानुदु–जलानेवाली; अळल्–कामाग्नि से; अञ्चिनळ्–डरकर; कुळिक्क–नहायी; नीरुम्–वह जल भी; कॊतित्तु ऍळ–खौल उठा; कूचुम्–नहाने से सकुचाती; विळिक्कुम् वेलैयै–निनादी समुद्र को; वॆम् कण् अनङ्कनै–भयंकर मन्मथ को; ऑळिक्कल् आम् इटम्–छिपाये रखनेवाला स्थान; आम् अन उन्नुवाळ्–होगा, ऐसा सोचती। २९८

वह अपने शरीर और प्राणों की रक्षा करना चाहती थी। पर उसकी कामेच्छा उनका शत्रु बनी थी। उस आग को शान्त करने की इच्छा से वह स्नान करने चली तो जल ही गरम हो गया। तो बेचारी नहाने से कतराती। वह गरजनेवाले सागर को कठोरमन मन्मथ का छिपकर रहने का स्थान मानती। २९८

❀ वन्दु कार्मळै तोन्ड्रिनु मामणिक्, कन्दु काणिनुङ् गैत्तलङ् गूप्पुमाल्
इन्दु कान्दत्ति नीर नॆडुङ्गलुम्, वॆन्दु कान्द वेदुम्बुरु मेनियाळ् 299

इन्तु कान्तत्तिन्–चन्द्रकान्त के; ईर नॆटुम् कलुम्–शीतल और विशाल पत्थर को भी; वॆन्तु कान्त–जलाकर भस्म करे, ऐसे; वॆतुम्पु उरु मेनियाळ्–तापशील शरीर वाली; कार् मळै वन्तु तोन्ड्रिनुम्–काला मेघ आकर दिखे तो भी; मा मणि कन्तु काणिनुम्–श्रेष्ठ रत्नस्तम्भ को देखे, तब भी; कै तलम् कूप्पुम्–करतल जोड़ती। २९९

उसका शरीर इतना जलता था कि चन्द्रकान्त का बड़ा पत्थर भी उससे लगे तो जलकर राख बन जाय! ऐसी कामाग्नि से दग्ध शरीर वाली वह काले मेघ को या रत्न-स्तम्भ को देखती तो हाथ जोड़कर नमस्कार करती (श्रीराम के रंग-साम्य के कारण)। २९९

वाम मामदि युम्बनि वाडैयुम्, काम नुन्दनैक् कण्डुण रावहै
नाम वाळॆयिड्रोरुहद नाहमाय्च्, चेम मालवरै यिन्मुळैच् चेरुमाल् 300

वाम मा मतियुम्–सुन्दर पूर्णचन्द्र और; पनि वाटैयुम्–शीतल पवन; कामनुम्–कामदेव; तनै कण्टु उणरा वकै–अपने को देख न पायें, इस तरह; नाम वाळ् ऍयिरुरु ऑरु कत नाकम् आय्–भयंकर दाँत वाला कुपित सर्प बनकर; चेम माल् वरैयिन्–सुरक्षित एक बड़े पर्वत की; मुळै–गुफा में; चेरुम्–जा पहुँचती। ३००

वह सुन्दर पूर्ण-चन्द्र, शीतल (उदीची) हवा और कामदेव से डरती थी। वह चाहती थी कि वे उसे देख न ले। इसलिए वह एक भयंकर तीक्ष्ण दाँतों का सर्प बनकर सुरक्षित एक पर्वत की गुफा में जाकर छिप

गयी। क्यों ? नाग चन्द्र को ग्रसनेवाला है और हवा को खानेवाला। वह शिवजी का अलंकार था और मन्मथ शिवजी से डरता था। इसलिए शूर्पणखा सर्प बनकर छिप गयी। ३००

अन्न कालै यऴन्मिहुत् तेऱवुम्, मुन्न मेनिय ळायमुलै वॆन्दुह
इन्न वाशॆय्वॆ नॆन्ऱऱि यादिळम्, पॊन्निन् वार्दळि रिऱ्पुरण् डाळरो 301

अन्न कालै–तव; अळल् मिकुत्तु एऱवुम्–कामाग्नि चढ़ी; मुन्न मेनियळाय्–पहले का रूप लेकर; मुलै वॆन्तु उक–स्तनों से अंगारे निकालते हुए; इन्नवा चॆय्वॆन्–किस प्रकार क्या करूँ; ऎन्ऱु अऱियातु–यह न जानकर; पॊन्निन् वार् इळम् तळिरिल्–स्वर्ण के रंग वाले पल्लवों पर; पुरण्टाळ्–लेटकर लोटी। ३०१

पर वहाँ भी गरमी बढ़ी तो उसने अपना सर्प-रूप छोड़ दिया। अपना निजी रूप लिया। उसके स्तन इतने तपने लगे कि उनसे आग-सी निकली। क्या करें, कैसे करे ? किंकर्तव्यमूढ़ होकर वह स्वर्णवर्ण पल्लवों पर गिरकर लोटने लगी। ३०१

❀ वीरन् मेनि वॆळिप्पड वॆय्दवन्, कार्हॊण् मेनियैक् कण्डन्न ळामॆनच्
चोरुम् वॆळ्हुन् दुणुक्कॆनु मव्वुरुप्, पेरुङ् गालप् पिणियिऱै पेर्हलाळ् 302

वीरन् मेनि वॆळिप्पट–तव वीर श्रीराम का (भ्रान्ति का) रूप उसे दिखाई दिया; वॆय्तु–चाव के साथ; अवन् कार्कॊळ् मेनियै–उनके मेघ-सम शरीर को; कण्टनळ् आम् ऎन–सचमुच देख लिया हो जैसे; चोरुम्–शिथिल हो जाती; वॆळ्कुम्–लजाती; तुणक्कु ऎनुम्–दलक जाती; अ उरु–वह (कल्पित) रूप; पेरुम् काल्–जब अदृश्य हो जाता, तब; अ पिणि–उस काम-रोग से; इऱै पेर्कलाळ्–जरा भी छूट नहीं ... थी। ३०२

तब उसे श्रीराम का भ्रान्ति का रूप शून्य में दिखाई दिया। उस मन में प्रेम उमड़ आया। मेघश्याम को प्रत्यक्ष देखती हो, ऐसा भ्रम गया। वह शिथिल हुई, लाज से भरी; फिर सिहर उठी। वह ओझल हो गया तो उसने अनुभव किया कि उसका रोग ज्यों का त्यों और वह उससे थोड़ा भी छूट नहीं पायी है। ३०२

❀ आहक् कॊङ्गैयि नैयनॆन् ऱञ्जन्न, मेहत् तैत्तळु वुम्मवै वॆन्दन्न
पोहक् कण्डु पुलम्बुमप् पुन्मैयाळ्, मोहत् तुक्कॊर् मुडिवुमुण् डाङ्गॊलो

अञ्चन्न मेकत्तै–कजरारे (काले) मेघ को; ऐयन् ऎन्ऱु–प्रभु श्रीराम .. आक कॊङ्कैयिन्–वक्ष के स्तनों के साथ; तळुवुम्–लगा लेती; अवै वॆन्तन–वे पोक–मिट जाते; कण्टु–देखकर; पुलम्पुम्–विलाप करती; अ पुन्मैयाळ् मे ... उस ओछी स्त्री के काम का; ओर् मुटिवु उण्टाम् कॊलो–अन्त भी है क्या। ३

वह काले मेघों को प्रभु, कान्त श्रीराम समझकर अपने स्तनों पर लगाकर कसकर पकड़ती। पर काले मेघ गरमी के

बाष्प बनकर मिट जाते। तब वह मुख खोलकर विलाप करती, नीच शूर्पणखा के मोह का कोई अन्त है ? । ३०३

※ ऊऴि वॆङ्गऩ लुड़्ड़ऩ ळॊत्तुमव्, वेऴै यावि यिऴन्दिलळ् शॆङ्गैयिन्
आऴि यानै यडैन्दवळ् पिऩ्ऩरुम्, वाऴला मॆन्नु माशै मरुन्दिऩ् 304

ऊऴि वॆम् कऩल् उड़्ड़ऩळ् ऒत्तुम्–युगान्त की अग्नि में पड़ गई हो ऐसा हो गई, तो भी; चॆम् कैयिन्–लाल (श्रेष्ठ) हाथों वाले; आऴियान् अटैन्तु–(आज्ञा) चक्रधारी श्रीराम को प्राप्त करके; अवळ्–वह; पिऩ्ऩरुम् वाऴलाम्–फिर भी जी सकेगी; ऎन्नुम् आचै मरुन्तिऩ्–ऐसी आशा रूपी दवा के कारण; एऴै–उस अबोध ने; आवि इऴन्तिलळ्–प्राण नहीं त्यागे । ३०४

उस काममोह के कारण उसकी स्थिति युगान्त के अनल-प्रवाह में पड़ी हुई सी हो गयी। तो भी आशा बँधी थी कि लाल (मनोरम) हाथों वाले श्रीराम से मिलन होगा और वह मिलकर जिएगी। वही आशा दवा बनी और उसी से उसके प्राण बचे रहे। ३०४

वञ्ज नॆक्कॊडु मायै वळर्क्कुमॆन्, नॆञ्जु पुक्कॆऩ दावत्तै नीक्कॆन्नुम्
अञ्ज नक्किरि येयरु ळायॆन्नुम्, नञ्जु नक्किऩर् पोल नडुङ्गुवाळ् 305

नञ्चु नक्किऩर् पोल–जिसने विष चाट लिया हो, उसके समान; नडुङ्कुवाळ्–काँपती (हुई); अञ्चऩ किरिये–अंजनगिरि (-सम राम); अरुळाय् ऎन्नुम्–कृपा करो, कहती; वञ्चऩै–वंचना और; कॊटु मायै वळर्क्कुम्–क्रूर माया को पालनेवाले; ऎन् नॆञ्चु पुक्कु–मेरे मन में प्रवेश करके; ऎन्नु आवत्तै नीक्कु–मेरी विपदा दूर करो; ऎन्नुम्–कहती । ३०५

विष को जो चाट चुका हो, उसके समान उसका शरीर काँपने लगा। वह मन में श्रीराम से प्रार्थना करने लगी कि हे अंजनपर्वत ! मुझ पर कृपा करो। वह यह भी कहती कि मेरा मन कपटी है और माया को पालने-वाला है। उसमें तुम घुस जाओ और मुझे आफ़त से बचाओ। ३०५

※ कावि योहय लोवॆन्नुङ् गण्णिणैत्, तेवि योतिरु मङ्गैयिर् चॆव्वियाळ्
पावि येऩ्नैयुम् पार्क्कुङ्गॊ लोवॆनुम्, आवि योयिनु माशैयि ऩोय्विलाळ् 306

आवि ओयिनुम्–प्राण छूट जायँ, तो भी; आचैयिन् ओय्वु इलाळ्–जिसका राग नहीं थमता, वह; काविओ–नीला पुष्प है; कयलो–या 'कयल' मछली है; ऎन्नुम्–ऐसा कहलानेवाली; कण् इणै–आँखों का जोड़ा; तेवियो–जिसका है वह (उसकी) देवी तो; तिरुमङ्कैयिल् चॆव्वियाळ्–श्रीलक्ष्मीदेवी से भी सुन्दर है; पावियेऩैयुम्–मुझ पापिनी पर; पार्क्कुम् कॊलो–दृष्टि लगाएगा क्या; ऎन्नुम्–(यह नैराश्य वचन) कहती । ३०६

चाहे उसके प्राण ही क्यों न छोड़ जायँ, वह तो श्रीराम पर काम को छोड़नेवाली नहीं थी। उसे सीतादेवी का स्मरण आया। 'नीलोत्पल

है या कयल नाम की मछली ? ऐसा सन्देह उत्पन्न करनेवाली आँखों के जोड़े से युक्त उसकी पत्नी श्रीलक्ष्मीदेवी से भी वढ़कर सुन्दरी है। वह क्या मेरी ओर आँख उठाकर भी देखेगा ?' ऐसा प्रश्न करके वह दुखी हुई। ३०६

❀ आऩ्ऱ काद लः(ह्)दुऱ वॆय्दुळि, मूऩ्ऱु लोहमु मूडु मरक्कराम्
एऩ्ऱ कारिरु णीक्क विराहवऩ्, तोऩ्ऱि नाऩॆऩ वॆय्यवऩ् ऱोऩ्ऱिनाऩ् 307

आऩ्ऱ कातल् अ.'.तु–गहरे काम-रोग से; उऱ ऐय्तुळि–खूब पीड़ित होकर जब रही; मूऩ्ऱु लोकमुम् मूटुम्–(स्वर्ग-मध्य-पाताल) तीनों लोकों को आच्छादित कर जो रहे; अरक्कर् आम्–उन राक्षस रूपी; एऩ्ऱ कार् इरुळ्–अन्धकार को, जो सामने आया था; नीक्क–दूर करने के लिए; इराकवऩ् तोऩ्ऱिताऩ् ऐऩ–श्रीराघव आये, ऐसा; वॆय्यवऩ् तोऩ्ऱिऩाऩ्–उष्णकिरण (सूर्य) उदित हुए। ३०७

रात भर वह इसी तरह काम के वढ़ने से उद्विग्न रही। तब सूर्य अन्धकार को दूर करते हुए उदित हुए, जैसे श्रीराघव तीनों लोकों पर छाये रहे राक्षस रूपी अन्धकार को मिटाने के लिए अवतार ले आये। ३०७

❀ विडियल् काण्डलु माण्डुलुतऩ् नुयिर्हण्ड वॆय्याळ्
पडियि लाण्मरुङ् गुळळॆऩि लॆऩैयवन् बाराऩ्
कडिदि नोडिऩॆ ऩॆडुत्तॊल्लॆक् करन्दवळ् कादल्
वडिवि ऩानुडन् वाळ्वदे मदियॆऩ मदिया 308

विटियल् काण्टलुम्–सवेरा होते ही; आण्टु तऩ् उयिर् कण्ट–तब अपनी प्राणता को प्राप्त कर; वॆय्याळ्–नृशंस निशाचरी; पटि इलाळ्–उपमा-हीन देवी; मरुङ्कु उळळ् ऐतिल्–पास रही तो; अवऩ् ऐऩै पाराऩ्–वह मेरी ओर ध्यान नहीं देगा; कटितिऩ् ओटिऩॆऩ्–सवेग दौड़कर; ऐटुत्तु–उसको उठाकर; ऒल्लै करन्तु–जल्दी छिपाये रखकर; कातल् अवळ् वटिविल्–उसकी प्रिया के रूप में; नाऩ् उटऩ् वाळ्वते–मेरा उसके साथ रहना ही; मति ऐऩ–बुद्धिमानी है, ऐसा; मतिया–निश्चय करके। ३०८

सवेरा हुआ और शूर्पणखा ने देखा कि उसके प्राण बचे है। उसने सोचा कि जब तक वह स्त्री, जो अनुपम सुन्दरी है, उसके साथ रहेगी तब तक वह मेरी ओर दृष्टि देगा ही नहीं। इसलिए शीघ्र भागकर जाऊँगी और उसे उठा ले जाकर कहीं छिपा दूँगी। फिर राम की प्रिया उसका रूप लेकर उसके साथ रहूँगी। ऐसा जीना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा संकल्प करके ; । ३०८

❀ वन्दु नोक्किनळ् वळ्ळल्पो यॊरुमणित् तडत्तिल्
शन्दि नोक्किन ऩिरुन्ददु कण्डऩ डम्बि

इन्दु नोक्किय नुदलियैक् कात्तय लिरुण्ड
कन्द नोक्किय शोलैयि लिरुन्दद्दु काणाळ् 309

वन्तु नोक्किऩ़ळ्–आकर देखा; वळ्ळल्–प्रभु श्रीराम; पोय्–जाकर; ओरु मणि तट्टत्तिल्–एक सुन्दर घाट पर; चन्ति नोक्किनऩ्–संध्यावन्दन में लगे; इरुन्ततु–रहे; कण्टनळ्–देखा; तम्पि–कनिष्ठ (लक्ष्मण); इन्तु नोक्किय नुतलियै–चन्द्र-सम भाल वाली सीताजी का; कात्तु–रक्षण करते हुए; अयल्–पास; कन्तम् नोक्किय–सुवास निकालनेवाले; इरुण्ट चोलैयिल्–घने उपवन में; इरुन्ततु–रहे, वह; काणाळ्–नहीं देखा। ३०९

वह आयी। आश्रम के पास आकर उसने देखा कि प्रभु वहाँ से दूर मनोहर घाट पर संध्यावन्दन में दत्तचित्त है। उसका भाई इन्दु-सम ललाट वाली सीता के सरक्षण में ही पास में सुबास देनेवाले उस आश्रम के एक छाया के कारण अँधेरे स्थान में विराजे थे। पर शूर्पणखा ने लक्ष्मण को नहीं देखा। ३०९

❀ तन्नियि रुन्दनळ् शमैन्ददॆन् करुत्तॆनत् ताळ्वुड्
ड्रिन्नियि रुन्दॆन्क् कॆण्णुव दिल्लॆन वॆण्णात्
तुन्नियि रुन्दवन् मनत्तिन डोहैयैत् तॊडर्न्दाळ्
कन्नियि रुम्बॊळिल् कात्तय लिरुन्दवन् कण्डान् 310

तन्नि इरुन्तनळ्–एकाकिनी रहती है; ऎन् करुत्तु–मेरा विचार; चमैन्ततु–चरितार्थ हुआ; ऎन–ऐसा और; इन्नि ताळ्वु उऱ्ऱु इरुन्तु–अब विलम्ब करते रहने से; ऎनक्कु ऎण्णुवतु इल्–मुझे सोचने के लिए कुछ नहीं है; ऎन–ऐसा; ऎण्णा–निश्चय करके; तुन्नि इरुन्त–घृणा से भरे; वन् मनत्तिनळ्–कठोर मन वाली; तोकैयै तॊटर्न्ताळ्–मयूराभा सीताजी की ओर गई; कन्नि–फलों से युक्त; इरुम् पॊळिल् कात्तु–विशाल उपवन में पहरा जो देते; अयल् इरुन्तवन्–पास रहे लक्ष्मण ने; कण्टान्–देखा। ३१०

शूर्पणखा को आश्वासन हो गया। 'सीता अकेली है! मेरा संकल्प पूर्ण हो गया। अब विलम्ब करके सोचते रहने के लिए कुछ नही है।' ऐसा घृणा से भरे कठोर मन वाली ने निश्चय किया। वह मयूराभा सीता की तरफ़ सवेग जाने लगी। लक्ष्मण ने, जो उस फलदार तरुओं से भरे विशाल आश्रम में पहरा देते हुए बैठे रहे, उसको देख लिया। ३१०

❀ निल्ल डीयॆनक् कडुहिनन् पॆण्णॆन निनैन्दान्
विल्लॆ डादवळ् वीङ्गॊरि यामॆन विरिन्द
शिल्ल लोदियैच् चिक्कुऱच् चॆङ्गैयाऱ् पऱ्ऱि
ऒल्लै यीर्त्तुदैत् तॊळिहिळर् शुऱ्ऱुवा ळुरुवि 311

अटी निल् ऎन–री खड़ी रह कहकर; कटुकिनऩ्–तेज चाल आये; पॆण् ऎन्ऩ निनैन्तान्–स्त्री है, समझे; विल् ऎटातु–धनुष न लेकर; अवळ्–उस (शूर्पणखा) के;

वीङ्कु ऍरि आम् ऍन्न–खूब अधिक जलती आग के समान; विरिनृत–विस्तृत रूप से सिर के चारों ओर बिखरे रहनेवाले; चिल्लल् ओतियै–कम लम्बे केश-जाल को; चॅङ्कैयाल्–लाल हाथ से; चिक्कु उऱ पऱ्ऱि–हाथ को लपेट ले, ऐसा पकड़कर; ऒल्लै–तेजी से; ईर्त्तु–खींचकर; उतैत्तु–उसके लात मारकर; ऒळि किळर्–कान्तिमय; चुऱ्ऱुवाळ् उरुवि–कटार निकालकर। ३११

लक्ष्मण तुरन्त, 'री खड़ी रह।' —डाँटते हुए उठ आये। वह स्त्री थी, इसलिए उसने धनुष नहीं लिया। उसने आकर जलती आग के समान उसके सिर पर बिखरे रहे केश को अपने हाथ से मरोड़कर पकड़ा, उसको झटका देकर खींचा और लात मारी। फिर उन्होंने अपनी उज्ज्वल कटार निकालकर; । ३११

❀ ऊक्कित् ताङ्गिविण् पडर्वॅन्नन् रुरुत्तॅळु वाळै
नूक्कि नॊय्दिनिल् वॅय्दिळै येलॅन्न नुवला
मूक्कुङ् गादुम्वॅम् मुरण्मुलैक् कण्गळु मुऱैयाल्
पोक्किप् पोक्किय शिनत्तॊडुम् बुरिहुळल् विट्टान् 312

ऊक्कि–प्रयत्न करके; ताङ्कि–(इसको) उठाते हुए; विण् पटर्वॅन्–आकाश में उड़ जाऊँगी; ऍन्ऱु–ऐसा; उरुत्तु ऍळुवाळै–कोप के साथ उछलनेवाली को; नॊय्तिनिल् नूक्कि–आसानी से नीचे पछाड़कर; वॅय्तु इळैयेल् ऍन्न–ऐसा बुरा काम मत करो, यह; नुवला–कहकर; मूक्कुम् कातुम्–नाक और कानों को; वॅम् मुरण् मुलै–भयंकर कुरूपी स्तनों के; कण्कळुम्–चूचुकों को; मुऱैयाल् पोक्कि–एक के बाद एक क्रम से काटकर; पोक्किय चिनत्तॊटुम्–शान्त हुए कोप के साथ; पुरि कुळल् विट्टान्–ऐंठा केश छोड़ दिया। २१२

उस शूर्पणखा को, जो उन्हें भी सयत्न उठाते हुए आकाश में उड़ जाने का विचार कर रही थी, नीचे पटक दिया। फिर 'ऐसे बुरे कार्य मत करो' कहते हुए उन्होंने उसकी नाक, कान और विकृत और भयंकर स्तनों के चूचुकों को क्रम से काट दिया। (यह चूचुक काटने की बात 'भागवत' में ही आयी है।) तभी जाकर उनका क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने अपने हाथ में ऐंठे रहे उसके केश को छोड़ा। ३१२

अक्क णत्तवळ् वाय्तिऱन् दरऱ्ऱिय वमलै
तिक्क नैत्तिनुज् जॅन्ऱदु तेवर्तञ् जॅवियुम्
पुक्क दुऱ्ऱदु पुहल्वदॅन् मूक्कॅनुम् बुळैयू
डुक्क शोरियि नीरमुऱ् ऱुरुहिय दुलहम् 313

अ कणत्तु–उस समय; अवळ्–शूर्पणखा ने; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; अरऱ्ऱिय–जो विलाप किया, वह; अमलै–शोर; तिक्कु अनैत्तिनुम् चॅन्ऱतु–सारी दिशाओं में गया; तेवर् तम् चॅवियुम्–देवों के कानों में भी; पुक्कतु–घुसा; उऱ्ऱतु पुकल्वतु ऍन्–वहाँ जो हुआ उसका क्या कहा जाय; मूक्कु ऍनुम्–नाक रूपी; पुळै

ऊट्टु—विवरों द्वारा; उक्क—बहनेवाले; चोरियिन्—रक्त में; ईरम् उऱ्ऱु—भीगकर; उलकम् मुळुवतुम् उरुकियतु—सारा लोक गल गया। ३१३

तव शूर्पणखा अपना मुख खोलकर उच्च स्वर में रोने-चिल्लाने लगी। वह शोर सभी दिशाओं में व्यापा और देवों के कानों में भी जाकर भर गया। जो हुआ उसका क्या कहा जाय? नासिका-विवर से जो रक्त बहा, वह इतना अधिक था कि विशाल भूमि ही गल गयी। ३१३

कॊलैतु मित्तुयर् कॊडुङ्गदिर् वाळिनक् कॊडियाळ
मुलैतु मित्तुयर् मूक्किनै नीक्किय मुर्रमै
मलैतु मित्तॆन्न विरावणन् मणियुडै महुडत्
तलैतु मित्तऱ्कु नाट्कॊण्ड दॊत्तदोर् तन्मै 314

कॊलै तुमित्तु—मारना रोककर; उयर् कतिर् कॊटुम् वाळिन्—अधिक चमकदार भयंकर कटार द्वारा; अ कॊटियाळ्—उस अत्याचारिणी का; मुलै तुमित्तु—स्तनों (के चूचुकों) को काटकर; उयर् मूक्किनै नीक्किय—उठी हुई नाक को काटने का; मुर्रमै—कार्य; मलै तुमित्तु अॆन्न—पर्वत को काटने के समान; इरावणन् मणि उटै मकुटम्—रावण के मणिमण्डित किरीटधारी; तलै तुमित्तऱ्कु—सिरों को काट लेने के लिए; नाळ् कॊण्टतोर् तन्मै—'मुहूर्त' (शुभारम्भ) करने के; ऑत्ततु—समान रहा। ३१४

लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नहीं मारा। पर उसके स्तनों के अग्रभाग और नाक के उठे हुए भाग को काट दिया। वह कार्य पीछे होनेवाले रावण-वध का शुभ आरम्भ-सा था। पर्वतशिखरों के समान रावण के मणिमय किरीटधारी सिर काटकर अलग किये जायँगे। उसका आरम्भ करने का मुहूर्त अब मनाया गया। ३१४

अदिर मानिलत् तडिपदैत् तरऱ्ऱिय वरक्कि
कदिर्होळ् कालवेऱ् करन्मुद निरुदर्वॆंङ् गदप्पोर्
ऍदिरि लादव रिरुदियि निमित्तमा यॆळुन्दाण्
डुदिर मारिपॆय् कार्निऱ मेहमॊत् तुयर्न्दाळ् 315

अतिर—थर्राते हुए; मा निलत्तु—विशाल भूमि पर; अटि पतैत्तु—कोप और दुख के कारण पैर पटककर; अरऱ्ऱिय—जो दहाड़ मारकर रोने लगी, वह; अरक्कि—राक्षसी; काल—यम के समान; कतिर् कॊळ् वेल्—(और) चमकदार शक्ति-धारी; करन् मुतल्—खर आदि; वॆम् कत पोर्—भयंकर और घमासान युद्ध में; ऍतिर् इलातवर्—जो सानी नहीं रखते थे, उन; निरुतर्—राक्षसों के; इऱुतियिन् निमित्तमाय्—अन्त कराने के निमित्त; ऍळुन्तु—उठी और; आण्टु—वहाँ; उतिर मारि पॆय्—रक्तवर्षा करनेवाले; कार् निऱ मेकम् ऑत्तु—काले मेघ के समान; उयर्न्ताळ्—सिर ऊँचा कर खड़ी हुई। ३१५

शूर्पणखा वेदना से थर्रा उठी। भूमि पर पैर पटकने लगी। वह

दहाड़ मारकर रोयी। फिर वह सिर तानकर खड़ी हुई, तब वह रक्त बहानेवाले काले मेघ के समान लगी। कठोर युद्ध में निर्द्वन्द्व और यम के समान घातक और चमकदार भालों वाले खर आदि राक्षसों के नाश के लिए तत्पर हुई हो, ऐसा वह निशाचरी जोश के साथ उठी। ३१५

उयरुम् विण्णिडै मण्णिडै विळुङ्गिडम् दुळैक्कुम्
अयरुङ् गैहुलैत् तलमरु मारुयिर् शोरुम्
पॅयरुम् पॅण्बिऱन् दियान्बट्ट पळियॅनप् पिदऱ्ऱुम्
तुयरु मञ्जिमुन् ऱीडऱ्न्दिलात् तॉल्हुडिप् पिऱन्दाळ् 316

तुयरुम्–दुख नामक कुछ; अञ्चि–डर से; मुन् तॉटर्न्तिला–जिसके पास पहले नहीं गया था; तॉल् कुटि पिऱन्ताळ्–उस प्राचीन (राक्षस-) कुल में जो पैदा हुई थी, वह; विण् इटै उयरुम्–आकाश में उठती; मण् इटै विळुम्–भूमि पर गिरती; किटन्तु उळैक्कुम्–पड़ी चिल्लाती; अयरुम्–थकती; कै कुलैत्तु–हाथ मलकर; अलमरुम्–उद्विग्न होती; आर् उयिर् चोरुम्–क्षीणप्राण हो जाती; पॅयरुम्–सुध पाकर चलने लगती; पॅण् पिऱन्त–स्त्री पैदा होकर; यान्–मुझे; पट्ट पळि–मिली निन्दा है; ऍन–ऐसा; पितऱ्ऱुम्–बकती। ३१६

वह शूर्पणखा उस राक्षसकुल की थी, जिसके पास दुख भी डर के कारण नही आया था। अब उसे अपार दुख मिल गया। अत्यधिक वेदना का अनुभव करने लगी। वह ऊपर उठती पर भूमि पर गिर जाती। भूमि पर पड़ी रहकर चिल्लाती। थक जाती। हाथ मलकर उद्विग्न होती। प्राण-हीन-सी मूर्च्छित हो जाती। कुछ देर बाद सुध पाती और विलापती कि स्त्री पैदा होकर कैसी निन्द्य स्थिति को प्राप्त हो गयी? । ३१६

* ऑऱ्ऱुम् मूक्किनै युलैयुरु तीयॅन्न वुयिर्क्कुम्
ऍऱ्ऱुङ् गैयिनै निलत्तिनि लिणैत्तडङ् गॉङ्गै
पऱ्ऱिप् पार्क्कुमॅय् वेर्क्कुन्दन् बरुवरन् मयक्काल्
शुऱ्ऱु मोडुम्बोय्च् चोरिनीर् शॉरिदरच् चोरुम् 317

मूक्किनै–नाक को; ऑऱ्ऱुम्–पोंछती; उलै उऱु ती ऍन्न–भट्ठी की आग के समान; उयिर्क्कुम्–गरम साँस छोड़ती; कैयिनै–हाथों को; निलत्तितिल्–भूमि पर; ऍऱ्ऱुम्–मारती; इणै तट कॉङ्कै–जोड़े के बड़े स्तनों को; पऱ्ऱि पार्क्कुम्–हाथो में ले देखती; मेय् वेर्क्कुम्–स्वेद-पूर्ण शरीर हो जाती; तन् परुवरल् मयक्काल्–अपने दुख से उत्पन्न भ्रम के कारण; चुऱ्ऱुम् ओटुम्–चारों ओर दौड़ती; पोय्–जाकर; चोरि नीर्–रक्त को; चॉरि तर–बहाती हुई; चोरुम्–शिथिल पड़ जाती। ३१७

वह अपना दामन लेकर नाक को पोंछती। ऐसा गरम निश्वास छोड़ती, मानो भट्ठी से आग की ज्वाला निकल रही हो। हाथों से भूमि पर मारती। अपने दोनों स्तनों को हाथ से पकड़कर उन पर दृष्टि

दौड़ाती। उसका शरीर पसीने से भर जाता। असह्य वेदना के कारण उसका चित्त भ्रमित हो जाता और वह इधर चारों ओर घूमती। पर रक्त वहाते हुए निर्बल हो गिर जाती। ३१७

❀ ऊऱ्ऱु मिक्कनी रऱुवियि नॊऴुहिय कुरुदिच्
चेऱ्ऱु वॆळ्ळत्तुट् टिरिबव डेवरु मिरियक्
कूऱ्ऱु मुट्कुन्दत् कुलत्तिनोर् पॆयरॆलाङ् गूऱि
आऱ्ऱु हिऱ्किलळ् पऱ्पल पन्निनिन्ऱ् ऱऴैत्ताळ् 318

ऊऱ्ऱु मिक्क–सोते से अधिक वहनेवाले; नीर् अरुवियिन्–जल की पर्वत-सरिता के समान; ऒऴुकिय–वहनेवाले; कुरुति चेऱु–रक्त के पंकिल; वॆळ्ळत्तु उळ्–प्रवाह के अन्दर; तिरिपवळ्–जो घूमती थी, वह; आऱ्ऱुकिऱ्ऱिलळ्–सह नहीं सकी और; तेवरुम् इरिय–देव भाग जाएँ, ऐसा; कूऱ्ऱुम् उट्कुम्–यम को भी भयभीत करते हुए; तन् कुलत्तिनोर् पॆयर् ऎलाम्–अपने कुल के सभी के नाम; कूऱि–लेते हुए; पल् पल–अनेक प्रलाप; पन्नि निन्ऱु–करते हुए खड़ी रहकर; अऴैत्ताळ्–बुलाया (शूर्पणखा ने)। ३१८

सोते से वहनेवाले जल की पर्वतसरिता के समान उसके कटे अंगों से पंकिल रक्त वह रहा था। वह उसके साथ वेचैनी से संचार करती थी। दुख उसे असह्य था। तव वह अपने कुल के राक्षसों के नाम लेकर विलापती हुई पुकार मचाने लगी। उसे सुनकर देव भाग गये और यम भी भयभीत हो गया। ३१८

निलैयॆडुत्तु नॆडुनिलत्तु नीयिरुक्कत् तावदर्हळ्
शिलैयॆडुत्तुत् तिरियुमिदु शिऱ्ऱिदन्ऱो दॆवरॆदिर्
तलैयॆडुत्तु विऴियामै शमैप्पदे तऴलॆडुत्तान्
मलैयॆडुत्त तनिमलैये यिवैहाण वारायो 319

तऴल् ऍट्टुत्तान्–अग्निज्वाला को हाथ में रखनेवाले (शिवजी) के; मलै–कैलासपर्वत को; ऍट्टुत्त–जिसने उखाड़ लिया, वह; तनि मलैये–अनुपम पर्वत-सम (भाई रावण); नी–तुम; नॆट्टु निलत्तु–विशाल भूमि पर; निलै ऍट्टुत्तु इरुक्क–स्थायी यश के साथ रहते हो, तभी; तापतर्कळ्–तपस्वी; चिलै ऍट्टुत्तु तिरियुम् इतु–धनुष लेकर घूमते हैं, यह; चिऱ्ऱितु अन्ऱो–तुम्हारे गौरव में कमी नहीं है क्या; तेवर् ऍतिर्–देवों के सामने; तलै ऍट्टुत्तु–सिर उठाकर; विऴियामै–देख न सकना; चमैप्पते–साध्य हो जाय क्या; इवै काण वारायो–ये देखने न आओगे क्या। ३१६

अनलधर शिवजी के कैलासपर्वत को उखाड़नेवाले पर्वत-सम मेरे भाई रावण! तुम इस भूमि पर अभी स्थायी यश के साथ हो! तो भी तापस लोग धनु लेकर घूम रहे हैं! यह तुम्हारे यश को छोटा वनानेवाला नहीं है क्या? और अव हम देवों के सामने सिर उठा नहीं सकेंगे? उनकी दृष्टि से दृष्टि न मिला सकेंगे। ऐसी स्थिति भी आ जायगी

शायद ? इनको देखने नहीं आओगे क्या ? (दारुका वन के ऋषियों ने शिवजी पर अग्नि को भेजा था। उन्होंने उसे अपने हाथ में रख लिया। उसको 'मऴु' कहते हैं। मऴु का अर्थ परशु भी है। अतः मऴु-धारी शब्द के दोनों अर्थ— परशुधर, अनलधर किये जाते हैं।)। ३१९

पुलितान्ने पुऱ्ऱ्ताहक् कुट्टिकोट् पडादॆन्ऩुम्
ऑलियाऴि युलहुरैक्कु मुरैपॊय्यो वूऴियित्तुम्
शलियाद मूवरुक्कुन् दानवर्क्कुम् वानवर्क्कुम्
वलियान्ने यान्पट्ट वलिहाण वारायो 320

ऊऴियित्तुम् चलियात–कल्पान्त में भी अचल रहनेवाले; मूवर्क्कुम्–त्रिदेवों से और; तानवर्क्कुम्–असुरों से; वानवर्क्कुम्–देवों से; वलियान्ने–बढ़कर बली; पुलि पुऱ्ऱ्तु आक–मादा व्याघ्र के पास रहते; कुट्टि–उसका शावक; कोळ् पटातु–किसी की पकड़ में नहीं आयगा; ऍन्ऩुम्–ऐसा; ऑलि आऴि उलकु–गर्जनशील सागर-वलयित भूतल (वासी); उरैक्कुम् उरै–जो कहता है, वह मसल; पॊय्यो–असत्य है क्या; यान् पट्ट–मुझ पर आया; वलि काण–संकट देखने के लिए; वारायो–नहीं आओगे क्या। ३२०

हे भाई ! तुम कल्पान्त में भी अमिट रहनेवाले त्रिदेवों, दानवों और देवों से भी अधिक बली हो। तुम्हारे रहते मेरी यह दुर्गति हो गयी। लोकोक्ति है कि मादा व्याघ्र के पास रहते व्याघ्रशावक को कोई ग्रस नहीं सकता। क्या वह कथन असत्य है ? मुझ पर जो बीता है, वह बड़ी विपदा देखो, आओ। नहीं आओगे ? । ३२०

आर्त्तान्नैक् करशुन्दि यमरर्कणत् तॉडुमडर्त्त
पोर्त्तान्ने यिन्दिरन्नैप् पॊरुदवन्नैप् पोर्तॊलैत्तु
वेर्त्तान्ने युयिर्हॊण्डु मीण्डान्ने वॆरिन्पण्डु
पार्त्तान्ने यान्पट्ट पऴिवन्दु पारायो 321

पण्टु–पहले; आर्त्तु–बड़े हुल्लड़ के साथ; आनैक्कु अरचु उन्ति–गजराज ऐरावत को चलाते हुए; अमरर् कणत्तोटुम्–देवगणों के साथ मिलकर; अटर्त्त–(तुमसे) जिसने लड़ाई की; पोर् तानै इन्तिरनै–उस युद्धसन्नद्ध सेना के स्वामी इन्द्र से; पॊरुतु–लड़कर; अवनै–उसको; पोर् तॊलैत्तु–युद्ध में हराकर; वेर्त्तानै–डर से स्वेदयुक्त होकर; उयिर् कॊण्टु मीण्टानै–जान लेकर भागनेवाले उसकी; पण्टु–पहले; वॆरिन् पारत्तान्ने–पीठ को जिसने देखा, ऐसे रावण; यान् पट्ट पऴि–मुझे मिली दुर्गति को; वन्तु पारायो–तुम आकर नहीं देखोगे क्या। ३२१

पहले दिग्विजय के अवसर पर, हे रावण ! गजराज ऐरावत को चलाते हुए इन्द्र अपने देवगणों को साथ लेकर तुमसे लड़ने आया। युद्धसन्नद्ध सेना उसके साथ आयी थी। तुमने उससे लड़ाई की और समरभूमि में उसको हराया। वह पसीना-पसीना होकर जान लेकर तुमको

अपनी पीठ दिखाते हुए भागा ! ऐसे रावण ! क्या तुम इधर आकर मेरी दुर्गति नहीं देखोगे ? । ३२१

कार्ऱिनैयुम् पुऩलिनैयुम् कऩलिनैयुङ् गडुङ्गालक्
कूर्ऱिनैयुम् विण्णियङ्गु कोळिनैयुम् बणिहोडर्
कार्ऱिनैनी यीण्डिरुवर् मानिडवर्क् कार्ऱादु
मार्ऱिनैयो वुऩ्वलत्तैच् चिवऩ्ऱडक्कै वाळ्हॊण्डाय् 322

चिवऩ् तट कै वाळ्–शिवजी के दीर्घ हाथ से दी गई तलवार (चन्द्रहास); कॊण्टाय्–रखनेवाले; कार्ऱित्तैयुम्–वायुदेव को; पुतलित्तैयुम्–और वरुण को; कतलित्तैयुम्–अग्निदेव को; कटुम् काल कूर्ऱित्तैयुम्–कठोर काल के देव यम को; विण् इयङ्कु–आकाश में संचार करनेवाले; कोळित्तैयुम्–नवग्रहों को; पणि कोटर्कु–सेवा लेने के लिए; आर्ऱित्तै–नियत किया; नी–तुमने; ईण्टु इरुवर् मात्तिटवर्क्कु–यहाँ दो मनुष्यों के सामने; आर्ऱातु–अशक्त होकर; उऩ् वलत्तै मार्ऱित्तैयो–अपना बल खो दिया है क्या। ३२२

शिवजी के हाथ से तुमको चन्द्रहास नाम की तलवार मिली। उस तलवार के धारक रावण ! तुमने वायुदेव, वरुण, अग्निदेव, कठोर कालदेव और आकाशचारी नवग्रह इन सबको अपने सेवक बना रखा है ! ऐसे बली अब इन दो मामूली मनुष्यों के सामने अशक्त होकर तुम अपना बल खो चुके क्या ? । ३२२

उरुप्पॉडिया मऩ्मदऩै यॊत्तुळरे याऩालुम्
शॆरुप्पडियिऱ् पॊडियॊव्वा मानिडरैच् चीऱुदियो
नॆरुप्पॊडियप् पॊडिशिदऱ निऱैमदत्त तिशैयाऩै
मरुप्पॊडियप् पॊरुप्पिडियत् तोळिमिर्त्त वलियोऩे 323

निऱै मतत्त–पूर्ण मद वाले; तिचैयात्तै–दिग्गजों के; मरुप्पु ऑटिय–दाँत तोड़ते हुए; पॊरुप्पु इटिय–कैलास को ढहते हुए; नॆरुप्पु ऑटिय–अग्निदेव को तोड़कर; पॊटि चितऱ–चूर-चर कर छितराते हुए; तोळ् निमिर्त्त–(दिग्विजय के अवसर पर) भुजाओं का वल दिखाकर जिसने लड़ाई की, ऐसे; वलियोऩे–वलवान (रावण); उरु पॊटिया–शरीर जिसका नष्ट नहीं हुआ हो, ऐसे; मऩ्मतऩै–मन्मथ के; ऑत्तु उळरे आऩालुम्–समान हैं तो भी; चॆरु पटियिल्–युद्धभूमि में (या जूते के तल की); पॊटि ऑव्वा–धूलि-सम भी जो नहीं हैं; मात्तिटरै–उन मनुष्यों पर; चीऱुतियो–कोप करोगे क्या। ३२३

दिग्विजय के अवसर पर तुमने मदमत्त दिग्गजों के दाँतों को तोड़ा, कैलास को गिराया और अग्निदेव को चूर कर छितराया। ऐसे तुमने भुजाओं के बल का प्रदर्शन किया। ऐसे बली रावण ! ये दोनों सशरीर मन्मथ के समान हैं तो भी (चॆरु पटियिल =) युद्धभूमि में, या

(चॅरुप्पटियिल् =) जूते के तल की धूलि के समान भी नहीं होंगे। वे इतने दुर्बल हैं। उन पर कोपकर उनसे लड़ोगे भी ? । ३२३

तेनुडैय नरुन्दॅरियऱ् ऱेवरैयुन् दॅरुमाऱ्ऱल्
तानुडैय विरावणऱ्कुन् दम्बियर्क्कुन् दविर्न्ददो
ऊनुडैय वुडम्बिनरा यॅङ्गुलत्तोर्क् कुणवाय
मानुडवर् मरुङ्गेपुक् कॉडुङ्गिनदो वलियम्मा 324

तेन् उटैय–शहद-भरे; नऱुम् तॅरियल्–मधुर सुगन्धयुक्त मालाधारी; तेवरैयुम्–देवों को भी; तॅऱुम्–आक्रान्त करनेवाले; आऱ्ऱल् तान् उटैय–शक्तिसम्पन्न; इरावणऱ्कुम्–रावण का और; तम्पियर्क्कुम्–उसके छोटे भाइयों का; वलि–बल; तविर्न्ततो–छूट गया क्या; ऊन् उटैय उटम्पितर् आय्–मांसयुक्त शरीर के बनकर; ऍम् कुलत्तोर्क्कु–हमारे राक्षसकुल के लोगों का; उणवु आय–भोजन बननेवाले; मानुटवर् मरुङ्के पुक्कु–मनुष्यों के अन्दर घुसकर; ऑटुङ्किततो–समा गया क्या; अम्मा–आश्चर्य। ३२४

अब जो हुआ है, उसका अर्थ क्या समझा जाय ? यह समझा जाय कि मधुयुक्त सुवासित मालाधारी देवो को आक्रान्त करनेवाले रावण का और उसके भाइयों का बल क्षीण हो गया ? और वह बल हमारे कुल के लोगों का भोज्य मांसधारी मानवों के शरीर के अन्दर प्रवेश कर समा गया ? । ३२४

मरन्नेयु नॅडुङ्गाऩिऩ् मऱैन्दुऱैयुन् दापदर्हळ्
उरन्नेयो वडलरक्क रोय्वेयो वुऱ्ऱॅदिर्न्दार्
अरन्नेयो वरियेयो वयन्नेयो वॅन्नुमाऱ्ऱल्
करन्नेयो यान्पट्ट कैयऱवु काणायो 325

मरन् एयुम्–वृक्षाकीर्ण; नॅटुम् काऩिल्–विस्तृत वन में; मऱैन्तु उऱैयुम्–छिपकर रहनेवाले; तापतर्कळ्–तपस्वी लोगों का; वलिये ओ–बल है यह; अटल् अरक्कर्–(या) बली राक्षसों की; ओय्वेयो–शक्तिहीनता है; उऱ्ऱु ऍतिर्न्तार्–लड़ने आये हुए (लोग); अरन्ने ओ–हर है क्या; अरिये ओ–हरि है क्या; अयन्ने ओ–अज है क्या; ऍनुम्–ऐसा माने उतना; आऱ्ऱल्–बली; करन्ने ओ–हे खर; यान् पट्ट–मैंने जो पाया है; कै अऱवु–वह संकट; काणाय् ओ–आकर देखोगे नहीं क्या। ३२५

यह घटना तरुसंकुल वन में छिपे रहनेवाले तपस्वियों के बल का द्योतक है ? या बली राक्षसों की शक्ति के क्षीण हो जाने का ? हे खर ! जिसको युद्ध में देखकर शत्रु यह सन्देह करते थे कि यह क्या हर ही है या हरि या अज ! ऐसी शक्ति वाले खर ! आकर मुझे क्या हो गया है —यह अनर्थ तुम नहीं देखोगे क्या ? । ३२५

इन्दिरनु मलरयनु मिमैयवरुम् बणिकेट्पच्
चुन्दरिपल् लाण्टिशैप्प वुलहेळुन् दॊळुदेत्तच्
चन्दिरन्पॊऱ् कुडैनिऴऱ्ऱ विशैन्दिरुन्द शवैनडुवे
वन्दडियेऩ् नाणादु मुहङ्गाट्ट वल्लेऩो 326

इन्तिरनुम्–देवेन्द्र और; मलर् अयनुम्–सरोजासन ब्रह्मा; इमैयवरुम्–और अन्य देव; पणि केट्प–सेवाएँ करते हैं; चुन्तरि–सुन्दरी शची देवी; पल्लाण्टु इचैप्प–'जयजीव' गाती है, तब; उलकु एऴुम् तॊऴुतु एत्त–सातों लोक विनय करके स्तुति करते; चन्तिरन्–चन्द्र के; पॊन् कुटै–स्वर्णछत्र; निऴऱ्ऱ–ले छाया करते; इचैन्तु इरुन्त–तुम ऐसा जिस सभा में उल्लास के साथ रहते हो; चपै नटुवे–उस सभा के मध्य; अटियेन् वन्तु–दासी मैं आकर; नाणातु–बिना शरमाये; मुकम् काट्ट वल्लेनो–मुख दिखा सकूँगी क्या। ३२६

हे रावण ! तुम अपनी सभा में बड़े ठाट-बाट के साथ बैठते हो। तब इन्द्र, सरसिजासन ब्रह्मा और अन्य देव तुम्हारी आज्ञाएँ मानते हुए सेवक के रूप में रहते है। सुन्दरी शची जयजीव का गान गाती है। सातों लोक तुम्हारी संस्तुति करते हैं। चन्द्र तुम्हारा स्वर्णछत्र धारण कर छाया बनाता है। ऐसी सभा में अब आकर बेशरम की तरह अपना मुख दिखाने योग्य रहती हूँ क्या ? । ३२६

❀ उरनॆरिन्दु विऴवॆन्नै युदैत्तुरुट्टि मूक्करिन्द
नरनिरुन्दु तोळ्पार्क्क नानिरुन्दु पुलम्बुवदो
करनिरुन्द वनमन्ऱो विदैपडवुङ् गडवेनो
अरनिरुन्द मलैयॆडुत्त वैयावो वैयावो 327

अरन् इरुन्त मलै ऍटुत्त–हर जिसमें रहे, उस गिरि को उखाड़नेवाले; ऐयाओ ऐयाओ–प्रभु, प्रभु; उरन् नॆरिन्तु विऴ–मेरी छाती विदीर्ण हुई और मैं नीचे गिर गई, ऐसा; ऍन्नै उतैत्तु उरुट्टि–मुझे लात मारकर, गिराकर और लुढ़काकर; मूक्कु अरिन्त–(जिसने) मेरी नाक काटी; नरन् इरुन्तु तोळ् पार्क्क–वह नर अभिमान के साथ अपने कंधों को देख रहा है, तब; नान् इरुन्तु पुलम्पुवतो–मैं बैठी विलाप करूँ (क्या यह ठीक है); करन् इरुन्त वनम् अन्ऱो–खर के वास का वन है न; इवै पटवुम् कटवेनो–यह (अन्याय) सहने अर्ह हूँ क्या। ३२७

हे प्रभु ! हे रावण ! तुमने हरनिलय कैलास को उखाड़ लिया था ! मुझे मेरी छाती विदीर्ण करते हुए नीचे गिरा दिया एक नर ने ! उसने मेरी नाक काट दी और वह आत्माभिमान के साथ अपने कन्धों को देख रहा है, अपने बल पर इठला रहा है ! और मैं असहाय की तरह विलाप कर रही हूँ। क्या यह ठीक लगता है ? यह खर के शासनाधीन वन है। इधर मेरी ऐसी दुर्गति हो —मैं इसके अर्ह हूँ क्या ? । ३२७

❀ नशैयाले मूक्किळन्दु नाणमिला
वशैयाले निन्पुहळु माशुण्ड
दिशैयालै विशैहलड्गच् चॅरुच्चॅय्दु
इशैयाले वॅळ्दुपॅय रिरावणवो

तिचै यालै–दिग्गजों के; विचै कलङ्क–क्रोधोद्वेग को मिटाते हुए; चॅरु लड़कर; मरुप्पु ओचित्त–उनके दाँतों को तोड़ा (जिसने); इचैयाले पॅयर् यश से (जिसने) अपना नाम अंकित किया; इरावण ओ इरावण ओ–हे वह वह रावण; नचैयालै–इच्छा के कारण; मूक्किळन्तु–नाक खोकर; नाणम् लाज खोकर; नान् पट्ट वचैयाले–मुझे जो अपमान मिला, उससे; निन् तुम्हारा यश भी; माचु उण्टतु आकातो–कलंकित नहीं होगा क्या। ३२८

हे रावण ! तुमने दिग्गजों के क्रोध को मिटाकर उनसे लड़कर उन दाँत तोड़ दिये और अपना नाम यश से अंकित किया है। ऐसे हे रावण ! क्या प्रेम करना बुरा है ? अपने प्रेम के कारण मैंने अपनी नाक खोयी, लाज खोयी और मैं अपमानित हो गयी हूँ। इस मेरी निन्द्य स्थिति से तुम्हारे यश में भी बट्टा नहीं लगेगा क्या ? । ३२८

❀ कानदनि निडैयॊरुवर् कादॊडुमूक् कुडनरिय
मानमदाऱ् पाविये निवण्मडियक् कडवेनो
तानवरैक् करुवरुत्तुप् पुरन्दरनैत् तळैयिट्टु
वानवरैप् पणिहॊण्ड मरुहावो मरुहावो 329

तानवरै करु अरुत्तु–दानवों का मान नाश कर; पुरन्तरनै–पुरन्दर को; तळैयिट्टु–बेड़ी पहनाकर; वानवरै–देवों को; पणि कॊण्ट–नौकर (जिसने) बना लिया; मरुका ओ मरुका ओ–हे वह भतीजे, भतीजे; कान् अतनिन् इटै–जंगल में; ऒरुवर्–एक मानव ने; कातु ओटु मूक्कु उटन् अरिय–कान के साथ नाक एक साथ काट दिया, तब; पावियेन्–पापिनी मैं; मानम् अताल्–अपमान से; इवण् मटिय कटवेनो–इधर मर जाने अर्ह हो गई क्या। ३२९

(अब वह इन्द्रजित् को पुकार रही है।) हे मेरे भतीजे ! भतीजे ! तुमने दानवों का मान मिटाया, पुरन्दर को बेड़ियाँ पहनाकर कारागृह में रखा और देवों को नौकर बनाया और अपनी सेवा-टहल करायी। ऐसे भतीजे ! जंगल में एक नर ने मेरे नाक और कान एक साथ काट दिये। पापिनी मैं अपमान से यहीं मर जाऊँ —इसी के योग्य हूँ क्या मैं ? । ३२९

ऒरुहालत् तुलहेऴु मुरुत्तिरिय तनुवॊन्ऱाल्
तिरुहाद शिनन्दिरुहित् तिशैतिशैये शॆलनूरि
इरुहालप् पुरन्दरनै यिरुञ्जिरैयि लिट्टलैत्त
मरुहावो मानिडवर् वलिहाण वारायो 330

ऒरु कालत्तु–पहले (दिग्विजय के समय) कभी; तनु ऒन्ऱाल्–एक धनु द्वारा; तिरुकात चिऩम् तिरुकि–अदम्य क्रोध बढ़कर; उलकु एऴुम् उरुत्तु–सातों लोकों पर कोप प्रदर्शित करके; इरिय–उनको अस्तव्यस्त करते हुए; तिचै तिचैये चॆल–दिशा-दिशा में भगाते हुए; नूऱि–उनको मारकर; अ पुरन्तरऩै–उस पुरन्दर को; इरु काल्–दो वार; इरुम् चिऱै इट्टु–भयंकर कारा में डालकर; अलैत्त–(जिसने) सताया वह; मरुका ओ–भतीजे; माऩिटवर्–इन मानवों का; वलि काण–बल देखने; वारायो–आओगे नहीं क्या। ३३०

हे भतीजे ! अपने पिता के दिग्विजय के समय में तुमने क्या-क्या साहस दिखाये। एक ही धनुष के सहारे तुमने बढ़ते क्रोध के साथ सातों लोकों पर कोप उतारकर उनके वासियों को भयभीत किया और वे भागने लगे। उनको तुमने मारा। फिर उस इन्द्र को दो वार कारागृह में डालकर दुख दिया। ऐसे तुम अब आकर दो अल्प नरों का बल देखो। देखने नहीं आओगे ? । ३३०

❀ कल्लीरुम् बडैत्तडक्कै यडऱ्करतू डणर्मुदला
अल्लीरुम् जुडर्मणिप्पू णरक्कर्कुलत् तवदरित्तीर्
कॊल्लीरुम् बडैक्कुम्ब करुणऩैप्पोर् कॊडियीर्हाळ्
ऎल्लीरु मुऱङ्गुदिरो याऩ्ऴैप्प केळीरो 331

कल् ईरुम्–पत्थर को भी बेधनेवाले; पटै तट कै–हथियारों को लिये हुए विशाल हाथों के; अटल्–बली; कर तूटणर् मुतला–खर, दूषण आदि; अल् ईरुम्–अन्धकार को भेदनेवाली; चुटर्मणि पूण्–कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित; अरक्कर् कुलत्तु अवतरित्तीर्–राक्षसकुल में जात (राक्षसो); कॊटियीर्काळ्–क्रूर; ऎल्लीरुम्–तुम लोग सब; कॊल् ईरुम् पटै–लुहार से रेतकर तेज किए हुए आयुधों के; कुम्पकरुणऩै पोल्–कुम्भकर्ण की तरह; उऱङ्कुतिरो–सो रहे हो क्या; याऩ् अऴैप्प–मैं पुकार रही हूँ; केळीरो–वह नहीं सुनते क्या। ३३१

(खर-दूषण आदि राक्षसों को पुकारती है।) कठोर पत्थर को भी बेधनेवाले हथियारधारी खर-दूषण आदि राक्षसो ! अन्धकार को भेदने वाली कान्ति से संयुक्त आभरणों से भूषित राक्षसकुलोद्भूत निशाचरो ! तुम सव क्रूर राक्षस क्या उस कुम्भकर्ण के समान सो रहे हो, जिसके पास लुहार से रेती द्वारा तेज किए हुए हथियार (बेकार) पड़े हैं ! मैं बुला रही हूँ— तुम सुन नहीं रहे हो क्या ? । ३३१

ऎऩ्ऱिऩ्ऩ पलपऩ्ऩि यिहलरक्कि यऴैत्तिरङ्गि
पॊऩ्ऱुऩ्ऩुम् बडियहत्तुप् पुरळ्हिऩ्ऱ पॊऴुदत्तु
निऩ्ऱऩ्द नदियहत्तु निऱैतवत्तिन् तुऱैमुडित्तु
वऩ्ऱिणगैच् चिलैनॆडुन्दोण् मरहदत्तिन् मलैवन्दाऩ् 332

ऎऩ्ऱु–ऐसा; इऩ्ऩ पल–ऐसे विविध प्रलाप; पऩ्ऩि–कहते; इकल् अरक्कि–

वैर रखनेवाली राक्षसी के; अऴैत्तु इरङ्कि–पुकारते और रोते हुए; पॊन् तुन्नुम्–बहुत मनोहर; पटि अकत्तु–भूमि पर; पुरळकिन्ऱ पॊऴुतत्तु–लोटते समय; वन् तिण् कै–वलिष्ठ और सारयुक्त हाथों; चिलै नॆट्टुम् तोळ्–धनु धारण करनेवाले उन्नत कंधों के; मरकतत्तिन् मलै–मरकत गिरि (-सम श्रीराम); अन्त नति अकत्तु–उस नदी के घाट पर; निऱै तवत्तिन् कुऱै मुटित्तु–यथावत कर्म अशेष पूरा करके; निन्ऱु–वहाँ से; वन्तान्–आश्रम की ओर पधारे। ३३२

वैर रखनेवाली शूर्पणखा ने इस तरह ऐसी विविध बातें कहती हुई अपने बन्धुओं को पुकार-पुकारकर विलाप किया। बिलापते हुए वह आश्रम की पवित्र भूमि पर गिरकर लोटी। तब श्रीराम, जिनके हाथ दीर्घ और बलवान थे और जिनके सबल कन्धे को धनु अलंकृत कर रहा था, नदी-घाट में सन्ध्या का नित्यकर्म यथावत अशेष रूप से सम्पन्न करके वहाँ से निकलकर इस स्थान पर आ गये। ३३२

वन्दानै मुहनोक्कि वयिऱलैत्तु मऴैक्कण्णीर्
शॆन्दारैक् कुरुदियॊडु शॆऴुनिलत्तैच् चेऱाक्कि
अन्दोवुन् ऱिरुमेनिक् कन्बिऴैत्त वन्बिऴैयाल्
ऎन्दायाल् पट्टपडि यिदुहाणॆन् ऱॆदिर्वीऴ्न्दाळ् 333

वन्तानै–आये उनका; मुकम् नोक्कि–श्रीमुख देखकर; वयिऱु अलैत्तु–पेट (छाती) पीटकर; मऴै कण् नीर्–वर्षा के समान अश्रु; चॆम् तारै कुरुति ऒटु–और धार रूप में बहनेवाले रक्त के साथ; चॆऴु निलत्तै चेऱु आक्कि–श्रेष्ठ भूमि को कीचड़ बनाते हुए; ऎन्ताय्–मेरे नाथ; अन्तो–हाय; उन् तिरुमेनिक्कु–तुम्हारे श्रीशरीर पर; अन्पु इऴैत्त–आसक्ति रखने के; वन् पिऴैयाल्–कठोर अपराध के कारण; इतु–यह; यान् पट्ट पटि इतु–मुझे मिला प्रकार (संकट) यह; काण् ऎन्ऱु–देखो, कहकर; ऎतिर् वीऴ्न्ताळ्–उनके सामने गिरी। ३३३

शूर्पणखा ने श्रीराम को देखा। उनके मुख के सामने अपना पेट (अपनी छाती को) पीटा। आँखों से अश्रुजल की धारा बहायी और शरीर से लाल रक्त की धारा। उनसे वहाँ की श्रेष्ठ भूमि पंकिल बन गयी। उसने श्रीराम से शिकायत की कि देखो! मेरे नाथ! हाय! तुम्हारे रूप पर मेरा जी ललचाया। इस घोर अपराध का फल मुझे भोगना पड़ा, वह यह देखो! यह कहते हुए वह श्रीराम के सामने भूमि पर गिर पड़ी। ३३३

विरिन्दाय कून्दलाळ् वॆय्यविनै यादॆनुम्
पुरिन्दाळॆन् बदुन्दनदु पॊरुवरिय तिरुमनत्ताल्
तॆरिन्दानिन् ऱिळैयोने यिवळ्ळैनॆडुम् जॆवियॊडुमूक्
करिन्दानॆन् बदुमुणर्न्दा नवळैनी यारॆन्ऱान् 334

विरिन्ताय कून्तलाळ्–बिखरे केश वाली ने; वॆय्य विनै–क्रूर काम; यातॆनुम् पुरिन्ताळ्–कुछ किया है; ऎन्पतुम्–यह; तनतु–अपने; पॊरुवु अरिय तिरुमनत्ताल्–

अनुपम श्रीमन में; तेरिन्तान्–समझकर; इळैयोत्ते–छोटे भाई ने; इवळै–इसके; इन्रु–अभी; नेट्टुम् चॅवि ओट्टु–बड़े कानों के साथ; मूक्कु–नाक को; अरिन्तान् ॲन्पतुम्–काट लिया है, यह भी; उणर्न्तान्–जानकर; अवळै–उससे; नी यार्–तुम कौन हो; ॲन्रान्–पूछा। ३३४

श्रीराम ने अपने श्रीमन में सोचा कि बिखरे केश वाली इसने नृशंस कोई काम किया होगा और अनुज लक्ष्मण ने अभी-अभी इसकी नाक और इसके कान काटे हैं। उन्होंने उससे प्रश्न किया कि तुम कौन हो ? । ३३४

अव्वुरैकेट् टडलरक्कि यरियायो नीयॅन्नैत्
तॅव्वुरैयॅन् रॅव्वुलहु मिल्लाद शीऱ्ऱत्तान्
वॅव्विलैवे लिरावणताम् विण्णुलह मुदलाय
ॲव्वुलहु मुडैयानुक् कुडन्बिऱन्देन् यानॅन्ऱाळ् 335

अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; अटल् अरक्कि–सशक्त राक्षसी ने; ॲन्नै नी अरियायो–मुझे नहीं पहचानते क्या; ॲ उलकुम्–सभी लोकों में; तॅव् उरै ॲन्रु इल्लात–जिसके शत्रु नहीं होते (सभी हराये गये हैं); चीऱ्ऱत्तान्–जो क्रोधी है; वॅम् इलै वेल्–भयंकर पत्राकार सिर वाला भालाधारी; इरावणन् आम्–रावण कहलानेवाले; विण् उलकम् मुतल् आय–स्वर्गलोक आदि; ॲ उलकुम् उटैयानुक्कु–सभी लोकों के स्वामी की; उटन् पिऱन्तेन्–सहोदरा हूँ; यान्–मैं; ॲन्ऱाळ्–कहा। ३३५

वह प्रश्न सुनकर शूर्पणखा को आश्चर्य हो गया। उस क्रूर राक्षसी ने उत्तर में कहा कि क्या तुम मुझे नहीं जानते ? मैं उस रावण की बहिन हूँ, जिसका किसी भी लोक में कोई शत्रु नहीं है (क्योंकि उसने शत्रुओं को मिटा दिया है और कोई भी उससे वैर मोल लेने से डरते हैं), जो बड़ा क्रोधी है और जो पत्राकार सिर के भाले का धारी है और जो स्वर्गादि लोकों में हर किसी लोक का स्वामी है। मैं उसकी सहोदरा हूँ। ३३५

तामिरुन्द तहैयरक्कर् पुहलॉळियत् तवमियऱ्ऱ
यामिरुन्द नॅडुञ्जूळल् कॅन्शेयवन् दायॅन्तलुम्
वेमिरुन्दै यॅन्क्कनलु मॅरिहाम वॅम्बिणिक्कु
मामरुन्दे नॅरुनलितुम् वन्दिलॅनो यानॅन्ऱाळ् 336

तकै अरक्कर्–निषिद्ध राक्षस; ताम् इरुन्त–जहाँ रहते हैं; पुकल् ऑळिय–उन स्थानों को छोड़कर; याम्–हम; तवम् इयऱ्ऱ–तपस्या करते हुए; इरुन्त–जहाँ रहते हैं; नॅटुम् चूळल्–इस विशाल आश्रम में; ॲन् चॅय वन्ताय्–क्या करने आई; ॲन्तलुम्–पूछने पर; वेम् इरुन्तै ॲन–कोयले के समान; कनलुम्–जलनेवाले; ॲरि काम–तापक काम रूपी; वॅम् पिणिक्कु–तपानेवाले भयंकर रोग की; मा मरुन्ते–श्रेष्ठ औषध; नॅरुनलितुम्–कल भी; यान् वन्तिलॅनो–मैं नहीं आई थी क्या; ॲन्ऱाळ्–पूछा। ३३६

तब श्रीराम ने पूछा कि निषिद्ध राक्षसों के वासस्थानों को छोड़कर इस श्रेष्ठ आश्रम में तुम क्यों आयी, जहाँ हम तपस्या कर रहे हैं ? उसके उत्तर में शूर्पणखा श्रीराम से बोली— अग्नि में जलते कोयले के समान तपानेवाले काम रूपी रोग की श्रेष्ठ औषध ! क्या तुम भूल गए कि मैं कल भी आयी थी। कल आयी थी न ? । ३३६

शॅङ्गयल्पोड़्	करुनॅडुङ्गट्	टेमरुदा	मरैयुरैयुम्
नङ्गैयिव	रॅन्नॅरुनल्	नडन्दवरो	नामॅन्नक्
कॊङ्गैहळुङ्	- गुळैहाडुङ्	कॊडिमूक्कुङ्	गुरैत्तळित्ताल्
अङ्गणर	शेर्योरुवरक्	कळियादो	वळहॅन्ड्राळ् 337

चॅम् कयल् पोल्–लाल 'कयल' मीनों के समान; करु नॅटुम् कण्–काली और आयत आँखों वाली; तेमरु तामरै–शहद से युक्त कमल पर; उरैयुम्–रहनेवाली; नङ्कै अॅन्न–श्रीलक्ष्मीदेवी के समान; नॅरुनल्–कल; नटन्तवरो–आई जो थी; नाम् अॅन्न–वही हम है (तुम हो) क्या, यह पूछने पर; अरचे–राजा; कॊङ्कैकळुम्–स्तन और; कुळै कातुम्–लचकदार कान; कॊटि मूक्कुम्–और लता-समान नाक को; कुरैत्तु अळित्ताल्–काटकर दूर करने से; अङ्कण्–तब; अळकु अळियातो–सौंदर्य मिट नहीं जायगा क्या; अॅन्ड्राळ्–पूछा । ३३७

श्रीराम ने कहा— ओफ़ ओह ! कल जो श्रीलक्ष्मी के समान लाल कयल-सी आँखों वाली कमलनिवासिनी है, इधर आयी, वह तुम्हीं हो क्या ? शूर्पणखा ने निष्ठुरता से कहा कि लटकनेवाले कानों को और लता-समान नाक को काट दिया गया तो क्या सौन्दर्य मिट नहीं जायगा ? (कल और आज के रूप में अन्तर क्या नहीं आ जायगा ?) । ३३७

मुरन्मूरु	वलनिळैय	मॉय्म्बिनान्	मुहनोक्कि
वीरवॅहुण्	डनैयिवडन्	विडुहाडुङ्	गॉडिमूक्कुम्
ईरनिनैन्	दिवळिळैत्त	पिळैयॅन्नॅन्	ड्रिरैवित्तवच्
चूरनॅडुन्	दहैयवत्तै	यडिवणङ्गिच्	चॉल्लुवान् 338

इरै–भगवान श्रीराम के; मूरल् मऴवलन्–मन्दहास के साथ; इळैय मॉय्म्पिनान्–पराक्रमी छोटे भाई के; मुकम् नोक्कि–मुख को देखकर; वीर–वीर; इवळ् तन्–इसके; विटु कातुम्–लटकनेवाले कानों और; कॊटि मूक्कुम्–लम्बी नाक को; वॅकुण्टत्तै–क्रोध करते हुए; ईर–काटने के लिए; इवळ् नितैन्तु इळैत्त–इसने सोचकर जो किया; पिळै–वह अपराध; अॅन्–क्या; अॅन्ड्रु वित्तव–यह पूछने पर; चूर नॅटुम् तकै–शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण; अवनै अटि वणङ्कि–उनको पैरों पर नमस्कार करके; चॉल्लुवान्–बोले । ३३८

प्रभु श्रीराम को हँसी आ गयी । मन्दहास के साथ उन्होंने अपने भाई लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वीर ! इसके लटकते कानों और दीर्घ नाक को गुस्से के साथ इस तरह काटो, ऐसा इसने जान-बूझकर क्या अपराध

किया ? शूर और श्रेष्ठ गुण वाले लक्ष्मण ने श्रीराम को नमस्कार करके यों उत्तर दिया। ३३८

तेट्टन्दान् वाळॅयिऱ्ऱिऱ् ऱिन्नवो तीविनैयोर्
कूट्टन्दान् पुऱत्तुळदो कुऱित्तपॊरु ळऱिन्दिलॆंनाल्
नाट्टन्दा नॆरियुमिळ नल्लाणमेऱ् पॊल्लादाळ्
ओट्टन्दा ळरिदिनिव ळुयिर्हवर्न्दा ळॆंनवन्दाळ् 339

तेट्टम् तान्—इसका इधर खोजते हुए आना; वाळ् ऍयिऱ्ऱिल् तिन्नवो—(वक्र और) उज्ज्वल दाँतों से काटकर खाने के लिए था, या; ती वित्तैयोर्—नृशंसकारी; कूट्टम् तान्—राक्षसों का दल ही; पुऱत्तु उळतो—पास रहता है; कुऱित्त पॊरुळ्—जो उद्देश्य ले आई थी, वह बात; अऱिन्तिलॅन्—मैंने नहीं जाना; नाट्टम् तान् ऍरि उमिळ—आँखों से अग्नि प्रकट करते हुए; पॊल्लाताळ्—यह क्रूरी; नल्लाळ् मेल्—साध्वी (भाभी) पर; अरितिन्—अप्रत्याशित रीति से; इवळ् उयिर् कवर्न्ताळ् ऍन्न—इनका प्राण हर लिया हो, ऐसा; ओट्टन्ताळ्—भागती; वन्ताळ्—आई। ३३९

प्रभु ! इसका उद्देश्य क्या था ? भाभी की खोज में यह आयी—उनको अपने सफ़ेद दाँतों से चबाकर खाने के लिए ? या क्रूरकर्मा राक्षसों का दल पास में कहीं है ? यह क्या करने आयी —मैं जान नहीं पाया। पर यह बुरी स्त्री आँखों से अग्नि निकालती हुई साध्वी देवी पर ऐसी झपटी कि मानो उसने उनकी जान ही हर ली हो ! वह तीव्र गति से भागती आयी। ३३९

एऱ्ऱवळै वरिशिलैयो नियम्बामुन् निहलरक्कि
शेऱ्ऱवळै तन्कणव नरुहिरुप्पच् चिनन्दिरुहिच्
चूऱ्ऱवळै तुनियुळक्कुन् दुऱैहॆंळुनीर् वळनाड
माऱ्ऱवळैक् कण्डक्का लळलादो मनमॆंन्ऱाळ् 340

एऱ्ऱ—(हाथ में) धृत; वळै वरि चिलैयोन्—झुके हुए और वन्धनयुक्त धनुष वाले (लक्ष्मण) के; इयन्पा मुन्—कहने से पूर्व ही (कहते ही); इकल् अरक्कि—वैरमना राक्षसी; चूल् तवळै—गाभिन मेंढकी; तन् कणवन् अरुकु—अपने पति मेंढक के पास; चेऱ्ऱ वळै इरुप्प—कीचड़ में एक शंखकीट को रहते देख; चिनम् तिरुकि—कोप में वढ़कर; तुत्ति उळक्कुम्—वहुत रूठकर जहाँ दुखी होती है; तुऱै कॆंळु—ऐसे घाटों से भरे; नीर् नाटा—जलाशय जिसमें रहते हैं, ऐसे देश के अधिपति; माऱ्ऱवळै कण्ट काल्—सौत को देखकर; मनम् अळलातो—मन तप्त नहीं होगा क्या; ऍन्ऱाळ्—कहा। ३४०

झुके हुए और वन्धनयुक्त धनुष को हाथ में जो लिये रहे, उन लक्ष्मण के यह कह चुकने के पूर्व ही शूर्पणखा बोल उठी। हे अयोध्या देश के अधिपति, जहाँ ऐसे जलाशय वहुतायत से पाये जाते है, जिनमें गाभिन मेंढकियाँ कीच में अपने मेंढक के पास शंखकीट को देखकर मान करके वहुत दुखी हो रहती है ! सौत को देखने पर किसी का मन जल नहीं उठेगा

क्या ? (इस पद में सम्बोधन जो है, उसमें सौत के मनोभाव की चर्चा अप्रत्यक्ष रूप से हुई है। यह तमिऴ काव्य की विशेषता है। शूर्पणखा अपने को मेंढकी और सीताजी को मादा शंखकीट मानती है। यानी अपने को पत्नी और सीता को सौत।)। ३४०

पेडिप्पोर् वल्लरक्कर् पॅरुङ्गुलत्तै यॉरुङ्गविप्पान्
तेडिप्पोन् दननिन्ऱु तीमाऱ्ऱज् जिलविळम्बि
वीडिप्पो हादेयिव् वॅव्वनत्तै विट्टहल
ओडिप्पो वॅन्ऱुरैत्त वुरैहडन्दाऱ् कवळुरैप्पाळ् 341

पेटि पोर्–भयजनक युद्ध में; वल्–समर्थ; अरक्कर् पॅरुम् कुलत्तै–राक्षसों के वडे कुल को; ऑरुङ्कु अविप्पान्–एक साथ मिटाने के लिए; तेटि पोन्तनम्–ढूँढ़ते हुए हम आये हैं; इन्ऱु–अब; ती माऱ्ऱम्–बुरी बातें; चिल विळम्पि–कुछ कहकर; वीटि पोकाते–मिटो मत; इ वॅव् वनत्तै विट्टु–इस प्यारे वन को छोड़कर; अकल–दूर; ओटि पो–भाग जाओ; ॲन्ऱु उरैत्त–यह जिन्होंने कहा; उरै कटन्तार्क्कु–उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम से; अवळ् उरैप्पाळ्–वह बोली (उत्तर में)। ३४१

श्रीराम ने गम्भीरता से चेतावनी दी। हम इधर उन भयंकर युद्ध-समर्थ राक्षसों को एक साथ समूल नाश करने आये हैं। हम उन्हीं की खोज में इधर रहते हैं। अब तुम कुछ अंड-संड कहकर अपना अन्त मत करा लो। चलो इस प्यारे आश्रम को छोड़कर दूर भाग जाओ। उन शब्दातीत यशस्वी श्रीराम के ये वचन सुनकर शूर्पणखा उन्हीं को उपदेश देने लगी। ३४१

नरैतिरैयॉन् ड्रिल्लाद नान्मुहत्ते मुदलमरर्
करैयिड्रन्दो रिरावणड्कुक् करनिरुक्कुङ् गुडियन्ड्रो
विरैयुमदु नन्ड्रन्ऱु वेऱाह यानुरैक्कुम्
उरैयुळदु नुमक्कुरुदि युणरुदिरे लॅन्ऱुरैप्पाळ् 342

नरै तिरै–बाल का पकना और खाल का झुर्रियों सहित हो जाना; ऑन्ऱु इल्लात–कुछ जिनका नहीं है; नान्मुकत्ते मुतल्–वे चतुर्मुख आदि; अमरर्–देव; करै इऱन्तोर्–असीम लोग; इरावणऱ्कु–रावण को; करन् इरुक्कुम्–कर देनेवाले; कुटि अन्ऱो–प्रजा है न; विरैयुम् अतु–तुम जिसके करने में त्वरा दिखाते हो वह; नन्ऱु अन्ऱु–अच्छा नहीं है; उरुति उणरुतिरेल्–अपना हित चाहते हो तो; नुमक्कु–तुम लोगों को; वेऱु आक–अलग; यान् उरैक्कुम् उरै–मेरे समझाने की एक बात; उळतु–है; ॲन्ऱु–कहकर; उरैप्पाळ्–बताने लगी। ३४२

ब्रह्मा आदि देव सब, जो कभी बुढापे को प्राप्त नहीं होते, जब बाल पक जाते हैं और खाल पर झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, रावण को कर देनेवाले प्रजाजन हैं। यह तुम नहीं जानते क्या ? तुम जो काम करने में तत्पर

रहते हो और जल्दी दिखाते हो, वह तुम्हारे हित में नहीं होगा। अगर तुम अपना भला सोचो तो मुझे तुमसे विशेष रूप से कहने की एक बात है। सुनो। वह कहने लगी। ३४२

आक्करिय सूक्कुङ्गै यरियुण्डा ळॆऩ्ऱारै
नाक्करियुन् दयमुहनार् नाहरिह रल्लामै
मूक्करिन्दु नुङ्गुलत्तै मुदलरिन्दी रित्तियुमक्कुप्
पोक्करिदिव् वळहैयॆल्लाम् पुल्लिडैये युहुत्तीरे 343

उङ्कै–तुम्हारी छोटी बहिन; आक्कु अरिय–फिर से ठीक कराने के लिए कठिन रीति से; मूक्कु अरि उण्टाळ्–नाक की कटी हो गई; ऍऩ्ऱारै–यह समाचार कहनेवाले की; नाक्कु अरियुम्–नाक जो काट देंगे वे; तयमुकऩार्–दशग्रीव; नाकरिकर् अल्लामै–दाक्षिण्य दिखानेवाले नही है, इसलिए; मूक्कु अरिन्तु–नाक काटकर; नुम् कुलत्तै–अपने कुल को; मुतल् अरिन्तीर्–जड़ से काट लिया (तुमने); इत्ति–अव; उमक्कु पोक्कु अरितु–तुम्हारा कोई मार्ग नहीं है; इ अळकु ऍल्लाम्–यह सब सौंदर्य; पुल् इटैये–घास के मध्य; उकुत्तीर्–गिरा दिया (तुमने)। ३४३

कोई जाकर दशमुख से कहे कि तुम्हारी बहिन की नाक एकदम कट गयी और उसका कोई इलाज नहीं हो सकता तो झट वे उस कहनेवाले की जीभ काट देंगे। ऐसे वे दशग्रीव दया-दाक्षिण्य दिखानेवाले नहीं हैं। तुमने मेरी नाक क्या कटवायी, अपने कुल को जड़ से काट दिया समझो! अब तुम्हारे बचाव का कोई मार्ग नहीं है। हन्त! अपना यह सारा सौन्दर्य तुमने धूल में मिला लिया! (घास में छितराना मुहावरा है।)। ३४३

वान्गाप्पोर् मण्गाप्पोर् मानाहर् वाळुलहम्
तान्गाप्पो रित्तित्तङ्ग डलैकात्तु नित्ऱुङ्गळ्
ऊन्गाक्क वुरियार्या रॆन्नैयुयिर् नीर्हाक्किन्
यान्गाप्पॆ नल्लालव् विरावणना रुळरॆऩ्ऱाल् 344

इरावणतार् उळर्–रावण है; ऍऩ्ऱाल्–इसलिए; नीर् ऍऩ्ऩै उयिर् काक्किन्–तुम मेरे प्राण बचाओगे तो; यान् काप्पॆन्–मै तुमको (रावण से) बचा लूँगी; अल्लाल्–नहीं तो; वान् काप्पोर्–स्वर्गपालक; मण् काप्पोर्–भूपति; मा नाकर् वाळ्–बड़े नाग जहाँ रहते हैं; उलकम् तान्–उस लोक के; काप्पोर्–राजा लोग; इत्ति–अब; तङ्कळ् तलै कात्तु–अपने सिरों को बचा लेकर; उङ्कळ् ऊन् काक्क–तुम्हारा शरीर भी बचाने की; उरियर् यार्–क्षमता रखनेवाले कौन हैं। ३४४

रावण हैं, इसका अर्थ है कि तुम बच नहीं सकते। हाँ, तुम मेरी बात मानकर मेरे प्राण बचाओगे तो मैं तुम्हें बचा सकूँगी। नहीं तो स्वर्ग, भूमि या नागलोक के राजाओं में अपने सिरों को बचा लेकर तुम्हारा शरीर भी बचा ले, ऐसे शक्तिसम्पन्न कौन होते हैं? (कोई नहीं!)। ३४४

कावऱ्ऱिन् कऱ्पमैन्दार् तम्पॆरुमै ताङ्गळ्ऱार्
आवऱ्पे रन्बिना लऱ्हिन्ऱे नामन्ऱो
देवर्क्कुम् वलियान्ऱन् ऱिरुत्तङ्गै याळिवळीण्
डेवर्क्कु वलियाळॆन् ऱिळैयानुक् कियम्बीरो 345

तिण् कावल् कऱ्पु अमैन्तार्–अपने स्त्रीत्व का सबल रक्षक जो पातिव्रत्य है, उससे युक्त पतिव्रता स्त्रियाँ; तम् पॆरुमै–अपनी बड़ाई; ताम् कळ्ऱार्–खुद नहीं कहतीं; आवल् पेर् अन्पिनाल्–इच्छा और गम्भीर प्रेम के कारण; अऱैकिन्ऱेन् आम् अन्ऱो–इन बातों को खोलकर कह रही हूँ न; इवळ्–यह; तेवर्क्कुम् वलियान् तन्–देवों से भी अधिक शक्तिशाली की; तिरु तङ्कैयाळ्–प्यारी बहिन है; ईण्डु–इधर; एवर्क्कुम् वलियाळ्–किसी से भी अधिक बलशालिनी है; ऍन्ऱु–ऐसा; इळैयानुक्कु–अपने भाई को; इयम्पीरो–नहीं समझाओगे क्या। ३४५

यह मेरे लिए बहुत संकोच की बात है। अपने स्त्रीत्व की रक्षा में जो पातिव्रत्य में दृढ़ है, वे कुलीन स्त्रियाँ अपनी बड़ाई अपने मुख से नहीं कह सकतीं। पर मेरा तुम पर इच्छा और प्रेम अगाध है। इसलिए मैं साफ़-साफ़ ये बातें कह रही हूँ। तुम अपने भाई को समझाओ कि यह शूर्पणखा देवों से भी अधिक शक्तिशाली रावण की भगिनी है और वह स्वयं किसी से भी बढ़कर बलवान है। यह नहीं बताओगे क्या? । ३४५

माप्पोरिऱ् पुऱङ्गाप्पॆन् वान्शुमन्दु शॆलवल्लेन्
तूप्पोलक् कनिपलवुञ् जुवैयुडैय तरवल्लेन्
काप्पारैक् कॆत्तेनीर् करुदियदे तरुवेनिप्
पूप्पोलु मॆय्यिवळाऱ् पॊरुळॆन्ने पुहल्वीराल् 346

मा पोरिल्–घोर युद्ध में; पुऱम् काप्पॆन्–पास रहकर रक्षा करूँगी; वान्–आकाश में; चुमन्तु चॆल वल्लेन्–ढोते हुए ले जा सकूँगी; तू पोल–मांस के समान; चुवै उटैय–स्वादिष्ट; कनि पलवुम्–फल अनेक; तर वल्लेन्–लाकर दे सकूँगी; काप्पोरै कॆत्तु–रक्षक को मिटाकर; ऍन् नीर् करुतियते–तुम जो चाहते हो, वह; तरुवेन्–लाकर दूँगी; इ पू पोलुम् मॆय्–इस सुमन सदृश शरीर वाली; इवळ् आल्–इस स्त्री से; पॊरुळ् ऍन्ने–लाभ क्या है; पुकल्वीर्–बताओ। ३४६

और भी सुनो। किसी से घोर युद्ध छिड़ा तो मैं तुम्हारे पास रहकर तुमको बचाऊँगी। तुमको उठाकर आकाश में संचार कर सकूँगी। श्रेष्ठ मांस के समान स्वादिष्ट फल संग्रह कर ला दूँगी। समझो कि तुम्हारा मन किसी वस्तु पर ललचाता है। उस वस्तु को, उसकी रक्षा करनेवाला कोई भी हो उसे मारकर, तुम्हारे लिए ला दूँगी। ऐसी शक्ति-शालिनी मुझको छोड़कर तुम इस सुमन-समान कोमल शरीर वाली के पास क्यों रहो? इस अबला से तुम्हारा क्या मिलेगा? बताओ तो देखें। ३४६

कुलत्तालु नलत्तालुङ् गुरित्तनवे कोणर्दक्क
वलत्तालु मदियालुम् वडिवालु मडत्तालुम्
निलत्तारुम् विशुम्बारु नेरिळैया रॅन्नैप्पोल्
शॊलत्तानिङ् गुरियारैच् चॊल्लीरो वल्लीरेल् 347

कुलत्तालुम्–जाति से; नलत्तालुम्–गुणों से; कुरित्तनवे–तुमसे निर्दिष्ट वस्तुएँ; कोणर् तक्क–लाने की; वलत्तालुम्–क्षमता में; मतियालुम्–बुद्धि में; वटिवालुम्–रूप-सौंदर्य में; मटत्तालुम्–सुकुमारता में; निलत्तारुम्–भूलोकवासी; विचुम्पारुम्–स्वर्गवासी; ॲन्नै पोल् नेरिळैयार्–मेरे समान कोई स्त्री; चॊल तान्–कहने के लिए; उरियारै–योग्य हो तो उसे; वल्लीरेल्–कह सकते हो तो; चॊल्लीर्–कहो। ३४७

जाति, श्रेष्ठ गुण, तुम्हारी इच्छित वस्तु ला देने की क्षमता, बुद्धि, रूप-सौन्दर्य और सुकुमारता में मेरे समान भूलोक, स्वर्ग और नागलोक के वासियों द्वारा मान्य योग्यता रखनेवाली कोई स्त्री हो और तुम उसे जानते हो तो वताओ तो सही ! । ३४७

पोक्किनी रॅन्नाशि पोयुत्तॆन्नीर् पॊरुक्किलिरेल्
आक्कुवॆन्नोर् नॊडिवरैयि लळहमैवॆ नरुळहरुम्
पाक्कियमुण् डॆनिलदनाल् पॆण्मैक्कोर् पळुदुण्डो
मेक्कुयरु नॆडुमूक्कु मडन्दैयर्क्कु मिहैयन्रो 348

ॲन्नु नाचि पोक्किन्नीर्–मेरी नाक कटा दी; पोयुत्तु ॲन्–गया क्या; नीर् पॊरुक्किलिरेल्–तुम इसे सह नहीं सको तो; अरुळ् कूरुम् पाक्कियम् उण्टु–कृपा मिलने का भाग्य दिया; ॲन्निल्–तो; ओर् नॊटि वरैयिल्–एक ही क्षण के अन्दर; आक्कुवॆन्–वना लूंगी; अळकु अमैवॆन्–सौंदर्यवती वन जाऊँगी; अतनाल्–बिना नाक की रह जाऊँ तो; पॆण्मैक्कु–स्त्रीत्व में; ओर पळिप्पु उण्टो–कमी होगी क्या; मेक्कु उयरुम्–उभरकर उगनेवाली; नॆटु मूक्कुम्–दीर्घ नाक भी; मटन्तैयर्क्कु–नारियों के लिए; मिकै अन्रो–अनावश्यक नहीं है क्या। ३४८

तुमने मुझे नासिका से हीन कर दिया। छोड़ दो ! उससे क्या नष्ट हुआ ? तो भी अगर तुमको मेरा नासिका बिना रहना असह्य हो तो फिर से अपनी नाक पूर्ववत वना लूंगी इस शर्त पर कि तुम मुझ पर कृपा करो। वचन दो, देखो एक क्षण में ठीक हो जायगा। वही नहीं तुम जैसा रूप चाहो वैसा रूप ले लूंगी। नाक के न रहने से क्या स्त्रीत्व में कोई कमी होगी ? उभरकर उगी हुई लम्बी नाक आवश्यकता से अधिक नहीं है ? । ३४८

विण्डारे यल्लारो वेण्डादार् मनम्वेण्ड
उण्डाय कादलिलॆन् नुयिरॆन्ब दुमदन्रो

कण्डारे कादलिक्कुङ् गट्टऴहुम् विडमन्ऱो
कॉण्डारे कॉण्डाडु मुरुप्पॅऱ्ऱाऱ् कॉळ्ळीरो 349

वेण्टातार्–जिनको हम नहीं चाहते; विण्टारे अल्लारो–वे न हमारे शत्रु बन जाते है; मत्तम् वेण्ट–मन के लगने से; उण्टाय–जो उत्पन्न होता है; कातलिन्–उस प्रेम से; ऍन् उयिर्–मेरे प्राण; ऍऩ्पतु–जो है; उमतु अन्ऱो–वे तुम्हारे नहीं है क्या; कण्टारे कातलिक्कुम्–जो भी देखे वह प्रेम करे; कट्टऴकुम्–ऐसा रूप-सौंदर्य भी; विटम् अन्ऱो–विष नहीं होगा क्या; कॉण्टारे कॉण्टाटुम्–जिसने अपना बना लिया है, वही सराहे; उरु पॅऱ्ऱाल्–ऐसा रूप धरूँ तो; कॉळ्ळीरो–तुम नहीं अपनाओगे क्या। ३४६

लोग, जिनको हम पसन्द नहीं करते, हमारे शत्रु हो जाते हैं। पर मेरा मन तुम पर आसक्त है, इसलिए तुमसे मेरा गाढ़ा प्रेम हो गया है और इससे क्या मेरे प्राण भी अब तुम्हारे नहीं हुए ? जो भी देखे, वही अनुरक्त हो जाय, ऐसा रूप-सौन्दर्य भी विष (के समान हानिकारक) नहीं है ? जिसकी मैं हो गयी, उसको जो भावे वही रूप मैं लूँ तो क्या तुम मुझे नहीं अपनाओगे ? । ३४९

शिवनुमलर्त् तिशैमुहनुन् दिरुमालुन् दॅऱुकुलिशत्
तवनुमॅळ्ळुन् दॊन्ऱाहि निन्ऱन्न वुरुवोने
पुवनमनैत् तैयुमॊरुवत् पूङ्गणैया लुयिर्वाङ्गुम्
अवनुमुनक् किळैयानो विवनेपो लरुळिलनाल् 350

चिवनुम्–शिवजी और; मलर् तिचै मुकनुम्–कमलासन चतुर्मुख; तिरुमालुम्–और श्रीविष्णु; तॅऱु कुलिचत्तु अवनुम्–शत्रुसंहारक वज्र रखनेवाला वह (इन्द्र); ऍल्लुनु–सब अपना-अपना अलग शरीर छोड़कर; ऑन्ऱु आकि–एकाकार बनकर; निन्ऱु अन्न–खड़े हो (मानो); उरुवोने–ऐसे दर्शन देनेवाले; पुवनम् अनैत्तैयुम्–सारे भुवनों को; ऑरु वन् पूम् कणैयाल्–एक असरदार पुष्पशायक से; उयिर् वाङ्कुम्–प्राण हरनेवाला; अवनुम्–वह (मनोज) भी; इवने पोल्–इस तुम्हारे भाई के समान; अरुळ् इलनाल्–दयाहीन लगता है, इसलिए; उनक्कु इळैयानो–(वह मन्मथ भी) तुम्हारा लघु-भ्राता है क्या। ३५०

हे राम ! तुम ऐसे रूपवान हो मानो शिव, कमलासन, श्रीविष्णु और संहारक वज्रपाणी सबने अपना-अपना रूप त्यागकर एकाकार होकर तुम्हारा रूप लिया हो ! सुन्दर राम ! तुमसे एक बात पूछूँ ? अपने एक अपार दुखदायी पुष्पास्त्र से सारे भुवनों के प्राण हरनेवाला (मर्मांतक पीड़ा पहुँचानेवाला) मन्मथ भी तुम्हारे इस भाई के समान कृपालु नही रहता। तो क्या वह भी तुम्हारा ही छोटा भाई है ? । ३५०

पॊन्नुरुवप् पॊरुहळ्ळीर् पिळैकाणीर् मूक्करिवान् पॊरुळ्वेरुण्डो
ऍन्नुरुवैक् कैक्कॊण्डी रिरुन्दॊऴियु नम्मरुङ्गे येहाळप्पाल्

पिऴ्ऴैयवर्गळ् ययलीरुवर् पारारा मॅनवरिन्दीर् पिऴैशॅय्दीरो
अन्नदनै यरिन्दन्ऱो वन्बिरट्टि कॉण्डदुना नऱिवि लेन्नो 351

पॉन् उरुव–स्वर्ण की; पॉरु कळलीर्–वीरपायलधारी; पिऴै काणीर्–तुम अपराध करनेवाले नहीं हो; ऍन् उरुवै–मेरे शरीर को; कै कॉण्टीर्–अपने अधीन कर लिया है; नम् मरुङ्के–हमारे ही पास; इरुन्तु ऑऴियुम्–ठहर जायगी; पिन्नै–फिर; अप्पाल् एकाळ्–कहीं नहीं जायगी; इवळै अयल् ऑरुवर् पारार् आम्–इस पर कोई अन्य दृष्टि नहीं डालेगा; ऍन्न अरिन्तीर्–ऐसा सोचकर ही मेरी नाक काट ली है; मूक्कु अरिवान् पॉरुळ्–(नहीं तो) नाक काटने का अर्थ; वेऱु उण्टो–दूसरा है क्या; पिऴै चॅय्तीरो–तुमने कोई गलती की है क्या (नहीं); अन्न तत्तै–उसको; अऱिन्तु अन्ऱो–जानकर ही तो; नान् अन्पु इरट्टि कॉण्टतु–दुगुना प्रेम रखती; नान् अऱिवु इलेन्नो–क्या मै बुद्धिहीन हूँ। ३५१

स्वर्णनिर्मित वीर पायलधारी ! तुम लोग अपराध करनेवाले नहीं हो। तुमने मेरे शरीर और रूप को अपना बना लिया है ! 'यह हमारे पास रह जायगी। अब उसके पास कोई चारा नहीं है। यह विकृत रूप लेकर वह कहीं नहीं जा सकेगी। इसको कोई दूसरा नहीं देखेगा।' —यही सोचकर तुमने मेरी नाक काट दी है। नहीं तो मेरी नाक काट देने का कोई प्रयोजन है क्या ? तब क्या तुम अपराधी बन सकोगे ? नहीं। उस सच्चे अभिप्राय को मैं जान गयी। तभी तो मेरा तुम पर प्रेम दुगुना हो गया ! क्या मैं बुद्धिहीन हूँ ? । ३५१

वॅप्पळिया नॅडुवॅहुळि वेलरक्क रीदऱिन्दु वॅहुण्डु नोक्किन्
अप्पळिया लुलहनैत्तु मुम्बॉरुट्टा लऴिन्दनवा मऱत्तै नोक्किन्
ऑप्पळियच् चॅय्हिला रुयर्हुलत्तै तोन्ऱिना रुणर्न्दु नोक्किन्
इप्पळियैत् तुडैत्तुदवि यिन्निदिरुत्ति रॅन्नॉडुमॅन् ऱिरैञ्जि निन्ऱाळ् 352

वॅप्पु अळिया–उग्रता से मिले; वॅकुळि–क्रोधी; नॅटुवेल् अरक्कर्–लम्बे भालों के धारक राक्षस; ईतु अरिन्तु–यह जानकर; वॅकुण्टु नोक्किन्–कोप करके देखें तो; अ पळियाल्–उनके बदला लेने से; उलकु अत्तैत्तुम्–सारे लोक; उम् पॉरुट्टाल्–तुम्हारे कारण; अऴिन्तन आम्–मिट जाते होंगे; अऱत्तै नोक्किन्–धर्म देखा जाय तो; उयर् कुलत्तु तोन्ऱितीर्–उच्च कुल में जात तुम; ओप्पु अळिय–लोक-असम्मत कार्य; चॅय्किलीर्–करोगे नही; उणर्न्तु नोक्कि–खूब सोचकर देखकर; इ पळियै तुटैत्तु–इस अपमान को दूर करके; उतविट–सहायता करने के लिए; ऍन्नॉटुम् इनितु इरुत्तिर्–मेरे साथ सुख से रह जाओ; ऍन्ऱु इरैञ्चि निन्ऱाळ्–ऐसी विनय कर खड़ी रही। ३५२

राक्षस उग्र क्रोधी हैं। वे यह जानेंगे तो कुपित होंगे और बदला लेने आयँगे। उनके बदला लेने के सिलसिले में सारे लोक मिट जायँगे और तुम ही उस नाश के निमित्त रह जाओगे। तुम लोग उच्चकुल-जात हो ! लोकों का असम्मत कार्य नहीं करोगे। धर्म की बात सोचो और खूब

विचार करो। मेरा अपमान दूर करके मेरी सहायता करने के लिए मेरे साथ सुखपूर्वक रह जाओ। —शूर्पणखा ने यह प्रार्थना की और खड़ी रही। ३५२

नाडयरत् तुयरिऴैत्त नवैयरक्कि निन्नन्नै तन्नै नलहुम्
ताडहैये युयिर्हवर्न्द शरमिरुन्द दन्ऱियुनान् ऱवमेर् कॉण्डु
तोडशैयत् तुरुमलर्त्ता रिहलरक्कर् कुलन्दॉलैप्पान् ऱोन्ऱि निन्ऱेन्
पाडहल पुल्लॉऴुक्किन् वल्लरक्कि यॅन्ऱिरैवन् पहरुम् बिन्नुम् 353

नाट्टु अयर–संसार को त्रस्त करते हुए; तुयर् इऴैत्त–अत्याचार जो करती रही; नवै अरक्कि–अपराधिनी राक्षसी; निन् अन्नै तन्नै नलकुम्–तुम्हारी माता की जननी; ताटकैयै–ताड़का के; उयिर् कवर्न्त–प्राण हर चुका वह; चरम् इरुन्ततु–शर मेरे पास अब भी है; अन्ऱियुम्–अलावा; नान्–मैं; तवम् मेल् कॉण्टु–तपोव्रती बनकर; तोट्टु अचै–दल-सहित; अ मलर् तुरु तार्–पुष्पों की बनी मालाधारी; इकल् अरक्कर्–शत्रु राक्षसों का; कुलम् तॉलैप्पान्–कुल का नाश करने के लिए; तोन्ऱि निन्ऱेन्–आया हूँ (इधर); पुल् ऑऴुक्किन्–नीच चरित्र की; वल् अरक्कि–बलवान राक्षसी; पाट्टु अकल–दूर चली जाओ; ॲन्ऱु–कहकर; इऱैवन्–प्रभु श्रीराम; पिन्नुम् पकरुम्–आगे बोले। ३५३

श्रीराम ने डाँट बतायी। री राक्षसी ! लोकों को त्रस्त करते हुए ऊधम जो मचाती रही, उस तुम्हारी माता की माता ताड़का का वध मैंने ही किया था। जिस शर से उसको मैंने मारा वह शर अब भी मेरे पास सुरक्षित है। और भी ध्यान रखो। मैं तपोव्रती होकर इधर आया हूँ पुष्पमालाधारी उन वैरी राक्षसों के कुल को ही मिटाने हेतु ! नीच चरित्र वाली क्रूर राक्षसी ! दूर हट जाओ, भागो, भागो ! फिर प्रभु और भी बोले। ३५३

तरैयळित्त तनिनेमित् तयरदन्ऱन् पुदल्वर्यान् ताय्शॉर् ऱाङ्गि
विरैयळित्त कान्बुहुन्देम् वेदियरु मादवरुम् वॅण्ड निन्ऱ
करैयळित्तऱ् करियपडैक् कडलरक्कर् कुलन्दॉलैत्तुक् कण्डाय् पण्डै
वरैयळित्त कुलमाड नहर्पुहुवे मिवैतॅरिय मनक्कॉ ळॅन्ऱान् 354

याम्–हम; तरै अळित्त–पृथ्वीपालक; तनि नेमि–एकचक्राधिपति; तयरतन् तन् पुतल्वर्–दशरथ के पुत्र हैं; ताय् चॊल् ताङ्कि–माता का वचन मानकर; विरै अळित्त–सुवास बरसानेवाले; कान् पुकुन्तेम्–जंगल में आये; वेतियरुम्–वेदज्ञ और; मा तवरुम्–महान तपस्वियों के; वेण्ट–प्रार्थना करने से; निन्ऱ–यहाँ स्थित; करै अळित्तऱ्कु अरिय–अपार; कटल् पटै अरक्कर्–समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों का; कुलम् तॊलैत्तु–दल मिटाकर; पण्टै–प्राचीन; वरै अळित्त–पर्वत-सम; कुल माट नकर्–अधिक संख्या में प्रासादों से पूर्ण (अयोध्या) नगर; पुकुवेम्–पहुँचेंगे; इवै–यह सब; तॆरिय मनम् कॊळ्–खूब जानकर मन में धरो; ॲन्ऱान्–श्रीराम ने समझाया। ३५४

हम उन दशरथ के पुत्र हैं, जो एकचक्राधिकार के साथ भूमि का पालन करते थे। अपनी (सौतेली) माता की आज्ञा सिर पर धारण करके हम सुबास से पूर्ण इस वन में आये। यहाँ के वेदवित ब्राह्मणों और महान तपस्वियों ने हमसे प्रार्थना की। उसको मानकर हमने यहाँ रहनेवाले असीम समुद्र-सम सेना वाले राक्षसों के दल को मिटा चुककर अपने प्राचीन और पर्वत-सम ऊँचे सौधों से पूर्ण अयोध्या नगर लौट जाने का संकल्प किया है। ये बातें भी तुम ध्यान में रख लो। श्रीराम ने चेतावनी देते हुए यह कहा। ३५४

नॆऱित्तारै शॆल्लाद निरुदरॆदिर् निल्लाद नॆडिय तेवर्
मऱित्तारीण् डिरुवरिवर् मानिडव रॆन्नादु वल्लै याहिल्
वॆऱित्तारै वेलरक्कर् विऱलियक्कर् मुदलिनर्नी मिडलो रॆन्ऱु
कुऱित्तारै यावरैयुम् कॊणरुदियेल् निन्नॆदिरे कोऱ्‌ मॆन्ऱान् 355

नॆऱि तारै चॆल्लात–धर्म-मार्ग पर न जानेवाले; निरुतर्–राक्षसों के; ॲतिर्–सामने; निल्लाते–न खड़े होकर; नॆटिय तेवर्–बड़े-बड़े देव भी; मऱित्तार्–मुड़कर भाग गये; ईण्टु इवर् इरुवर्–यहाँ ये दो; मानिटवर्–मनुष्य; ॲन्नातु–यह न सोचकर; वल्लै आकिल्–समर्थ हो तो; वॆऱि तार्–सुबासपूर्ण मालाधारी; ऐ वेल् अरक्कर्–सुन्दर भालों वाले राक्षस; विऱल् इयक्कर्–पराक्रमी यक्ष; मुतलिनर्–आदि में; नी मिटलोर् ॲन्ऱु कुऱित्तोरै–तुम जिनको शक्तिशाली मानती हो, उन; यावरैयुम्–सभी को; कॊणरुतियेल्–लाओगी, तो; निन् ॲतिरे–तुम्हारे सामने ही; कोऱुम्–मारूँगा; ॲन्ऱान्–श्रीराम ने कहा। ३५५

श्रीराम ने आगे अपनी बात पर उसका विश्वास पैदा करने के लिए कहा— 'धर्म-मार्ग पर न जानेवाले राक्षसों के सामने चिरप्रतिष्ठित देव टिक नहीं सके। लौटकर भाग गये। यहाँ ये दोनों अल्पशक्ति मनुष्य हैं।' तुम ऐसा सोचोगी। ऐसा मत सोचो। तुम्हारे पास सामर्थ्य हो तो जाओ, सुबासपूर्ण मालाधारी राक्षस, शक्तिशाली यक्ष आदि लोगों में जिनको तुम पराक्रमी मानती हो, उन सबों को बुला लाओ। देखो, मैं तुम्हारी आँखों के सामने ही उनको मार दूँगा। ३५५

कॊल्लला मायङ्गळ् कुऱित्तनवे कॊळ्ळलाङ् गॊऱ्‌ऱ मुऱ्‌ऱ
वॆल्लला मवरियऱ्‌ऱुम् विनैयमॆल्लाङ् गडक्कला मेल्वाय् नीङ्गिप्
पल्लॆला मुऱत्तोन्ऱुम् बहुवाय ळॆन्नादु पार्त्ति याहिल्
नॆल्लॆलाज् जुरन्दुदवु नीर्नाड केळॆन्ऱु निरुदि कूऱुम् 356

नॆल् ॲलाम् चुरन्तु–धान आदि खाद्य पदार्थ सब पैदा करके; उतवुम्–देनेवाले; नीर् नाट–जल-समृद्ध कोसल देश के राजा; केळ्–सुनो; मेल् वाय् नीङ्कि–मुख (अधरों) को हटाकर; पल् ॲलाम्–सारे दाँतों को; उऱ तोन्ऱुम्–खूब प्रकट होने देनेवाले; पकुवायळ्–बड़ा मुख वाली; ॲन्नातु–ऐसा न सोचकर; पार्त्ति आयिन्–

मुझ पर प्रेम की दृष्टि रखोगे तो; कॉल्लल् आम्–मारना हो सकता है; कुरित्तवे मायङ्कळ्–वे जो भी माया सोचेंगे; कॉळ्ळल् आम्–उनको पहले ही समझना सम्भव होगा; कॉऱ्ऱम्–विजय; मुऱ्ऱ–पूरी हमारी हो ऐसा; वॅल्ललाम्–उनको हरा सकते है; अवर् इयऱ्ऱुम् विनैयस् ॲलाम्–वे जो भी षड्यन्त्र रचेंगे, उन सबको; कटक्कलाम्–मिटा सकेंगे; ऍन्ऱु–ऐसा; निरुति कूऱम्–निशाचरी ने कहा। ३५६

शूर्पणखा हार मानने के लिए प्रस्तुत नहीं थी। उसने बहस की। धान आदि खाद्य पदार्थ कसरत से पैदा करनेवाले, जलसमृद्ध कोसल देश के अधिपति ! सुनो ! तुम इस छोटी सी बात को भूल जाओ कि मेरे दाँत वाहर निकले हुए है और मेरा मुख-विवर अधिक वड़ा है। मुझ पर कृपा-दृष्टि रखो तो तुम जिनको मारना चाहते हो, उन राक्षसों को अवश्य मार सकोगे। हम उनके माया कार्यो का पूर्व-ज्ञान प्राप्त करके उन पर पूर्ण रूप से विजय पा सकेंगे। उनके सभी षड्यन्त्रों को असफल वना सकेंगे। ३५६

कामुबुऱऴुन् दोळाळैक् कैविडी रॅन्ऩिनुम्यान् मिहैयो कळ्वर्
आम्बॊरियि लडलरक्क रवरोडे शॅरुच्चॅय्वा ऩमैन्दी राहिल्
ताम्बॊरियिर् पलमायन् दरुम्बॊरिह ळरिन्दवरऱ्ऱैत् तडुप्पे नऩ्ऱे
पाम्बऱियुम् पाम्बिनगा लॅन्ऩमॊऴियुम् पऴमॊऴियुम् बार्क्कि लीरो 357

काम्पु उऱऴुम्–वाँस की समानता करनेवाले; तोळाळै–कंधे वाली को; कै विटीर् ऍन्ऩितुम्–नहीं छोड़ोगे तो भी; यान् मिकैयो–मैं अधिक हो जाऊँगी क्या; कळ्वर् आम्–चोर; पॊरि इल्–श्रीहीन; अटल् अरक्कर् आम्–पराक्रमी राक्षसों; अवरोटे–के साथ (विरुद्ध); वॅरु चॅय्वान्–लड़ने के लिए; अमैन्तीर् आकिल्–प्रस्तुत हुए तो; पॊरियिल्–इन्द्रियों के समान; पल मायम् तरुम्–विविध माया के कार्य करनेवाले; पॊरिकळ् अरिन्तु–उनके रहस्यों को पहले ही जानकर; अवऱ्ऱै तटुप्पेन् अन्ऱे–उनको रोक दूँगी न; पाम्पु–सर्प; पाम्पित काल्–सर्प का पैर; अऱियुम्–जानता है; ऍन्ऩ मॊऴियुम्–ऐसा कहनेवाली; पऴमॊऴियुम्–लोकोक्ति; पार्क्किलीरो–नहीं जानते क्या। ३५७

तुम वाँस की समानता करनेवाले कन्धों की इस स्त्री को छोड़ना नही चाहते तो भी मैं तुम्हारे लिए अधिक हो जाऊँगी या निरर्थक हो जाऊँगी ? नही। राक्षस वुरे है और पराक्रमी है। उनके विरुद्ध जव लड़ोगे, तव वे इन्द्रियों के समान अनेक अनर्थकारी मायाकार्य करेंगे। मैं उनका रहस्य जानकर उनको रोक लूँगी। क्या तुम यह लोकोक्ति नहीं जानते, जो यह वताती है कि सर्प, सर्प का पैर जानता है। राक्षसी हूँ, राक्षसों की चाल जानती हूँ। इस पर विचार नहीं करोगे। ३५७

उळङ्गोडर् कन्बिळैत्ता ळुण्डॊरुत्ति यॅन्नुदिये निरुद रोडुङ्
कळङ्गोडर् करियशॅरुक् कण्णियक्का लॊरुमूवेङ गलन्द पोदु

कुळङ्गोडु मन्ऱेयक् कॊडियविरल् वीरर्तमैक् कॊन्ऱ पिन्नर्
इळङ्गोवो डॆन्नैयिरुत्ति यिरुकोळुज् जिऱैवैत्तार् किळैया ळॆन्ऱे 358

उळम् कोटऱ्कु–मन में स्थान देने के लिए; अन्पु इळैत्ताळ् ऒरुत्ति–मुझसे प्रेम करनेवाली एक स्त्री; उण्टु–पहले से है; ऎन्नुतियेल्–कहोगे तो; निरुतरोटुम्–राक्षसों के साथ; कळम् कोटऱ्कु अरिय–समरांगण में जो दुस्तर करा देगा, ऐसा; चॆरु कण्णियक्काल्–युद्ध करना चाहोगे तो; ऒरु मूवेम् कलन्त पोतु–हम तीनों मिले रहें तो; कुळम् कोटुम् अन्ऱे–वह समरभूमि रक्त का तालाब बन जायगी न; अ कॊटिय–उन निर्मम; विऱल् वीरर् तम्मै–बली वीरों को; कॊन्ऱ पिन्नर्–मारने के बाद; इरु कोळुम् चिऱै वैत्तार्कु–दोनों ग्रहों (सूर्य और चन्द्र) को कारागृह में जिसने बन्द कर रखा था, उस रावण की; इळैयाळ् ऎन्ऱे–भगिनी के मान की रक्षा करते हुए; इळम् को ओटु–लघुराज लक्ष्मण के साथ; ऎन्नै इरुत्ति–मुझे बिठा दो, (उसकी पत्नी बना लो)। ३५८

तुम कह सकते हो कि मेरे मन में स्थान पाकर मेरे साथ प्रेम करने के लिए पहले ही एक स्त्री है। तब एक काम करें। राक्षसों के साथ हम तीनों मिलकर युद्ध करेंगे। तब साधारण रूप से समरांगण में जाना भी जिसमें कठिन होगा, उस भयंकर युद्ध में हम रणभूमि को ही रक्त का तालाब बना देंगे और विजयी बनेंगे। उन वीर राक्षसों को मारने के बाद मुझे इतना मान दो कि मैं सूर्य-चन्द्र दोनों ग्रहों को कारागृह में जिसने बन्द कर दिया, उस रावण की भगिनी हूँ और मुझे अपने लघुराज लक्ष्मण के घर में (उसकी स्त्री के रूप में) बिठा दो। ३५८

पॆरुङ्गुला वुरुनहर्क्के पॆयरुनाळ् वेण्डुमुरुप् पिडिप्पे नन्ऱेल्
अरुङ्गला मुऱ्ऱिरुन्दा नॆन्ऱालु मिळैयवन्ऱा नरिन्द नाशि
ऒरुङ्गिला विवळोडु मुऱैवदो वॆन्बाने लिऱैव वॊन्ऱु
मरुङ्गिला दवळोडु मन्ऱेयाल् नॆडुङ्गालम् वाऴ्न्दे नॆन्बाय् 359

इऱैव–सरदार; पॆरुम् कुला उरु–बड़े कोलाहलमय; नकर्क्के–नगर (अयोध्या) को; पॆयरु नाळ्–लौटते दिन; इळैयवन्–तुम्हारा छोटा भाई; अरुम् कलाम् उऱ्ऱु इरुन्तान्–गहरा कोप करता होता; ऎन्ऱालुम्–तो भी; तान् अरिन्त नाचि ऒरुङ्कु इला–खुद जो उसने काटी, उस नाक से हीन; इवळोटुम् उऱैवतो–इसके साथ रहूँगा क्या; ऎन्पातेल्–कहेगा तो; ऒन्ऱु मरुङ्कु इलातवळोटुम् अन्ऱे–युक्त कमर से हीन स्त्री के साथ तो; यान् नॆटुम् कालम् वाऴ्न्तेन्–मैं बहुत काल से रहता हूँ; ऎन्पाय्–कहो; अन्ऱेल्–वह तब भी न माने तो; वेण्टुम् उरु पिटिप्पेन्–उसके पसन्द का रूप धारण कर लूँगी। ३५९

नाथ! जब तुम लोग बड़े कोलाहलमय अयोध्या नगर को लौटोगे, तब लक्ष्मण क्रोध न छोड़कर यह कहे कि यह नासिका से हीन है, यद्यपि उसी ने मुझे नाक से हीन कर दिया था तो तुम उससे समाधान कहो कि क्या मैं कमर से हीन स्त्री के साथ बहुत दिन से नहीं रह रहा ? नहीं तो

मैं वह जैसा चाहे वैसा रूप धारण कर लूँगी; नही तो भी मैं उसका चाहा रूप धर लूँगी । ३५९

ऍऩ्ऱलुमे यिळैयवऩ्ऱा निलङ्गिलैवेल् कडैक्कणिया यिवळै यीण्डु
कॊऩ्ऱुहळै योमॆऩ्ऩि नॆडिदलैक्कु मरुळऩ्गोल् कोवे यॆऩ्ऩ
नऩ्ऱदुवे यामऩ्ऱो पोहाळे लाहवॆऩ नादऩ् कूऱ
ऒऩ्ऱुमिव रॆऩ्क्किरङ्गा रुयिरिऴप्पॆ ऩिऱ्किलॆऩ वरक्कि युऩ्ऩा 360

ऍऩ्ऱलुमे–उसके ऐसा कहते ही; इळैयवऩ्–कनिष्ठ ने; इलङ्कु इलै वेल्–दृश्यमान पत्राकार सिर वाले भाले को; कटैक्कणिया–आँख की कोर से दिखाकर; कोवे–स्वामी; इवळै कॊऩ्ऱु–इसको मारकर; कळैयोम् ऍऩ्ऩिल्–नहीं मिटायेंगे तो; नॆटितु अलैक्कुम्–बड़ा ऊधम मचायगी; अरुळ् ऍऩ् कोल्–कृपापूर्ण आज्ञा क्या है; ऍऩ्ऩ–यह पूछने पर; नातऩ्–नायक श्रीराम के; पोकाळेल्–नहीं जायगी तो; अतुवे–वही; नऩ्ऱु आम् अऩ्ऱो–भला होगा न; आक ऍऩ–वही हो, कहने पर; कूऱ–कहने पर; इवर् ऍऩक्कु ऒऩ्ऱुम् इरङ्कार्–ये मेरी दया कुछ नहीं करेंगे; निऱ्किऩ्–खड़ी रहूँ तो; उयिर् इऴप्पॆऩ्–प्राण गँवा दूंगी; ऍऩ–ऐसा; अरक्कि उऩ्ऩा–राक्षसी सोचकर । ३६०

लक्ष्मण ने यह बात सुनी । उनकी सहनशीलता जाती रही । उन्होंने श्रीराम का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने दृश्यमान, पत्रसिर-भाले को अपनी आँखों की कोरों से देखा । फिर कहा— हे स्वामी ! अगर हम इसे मारकर दूर नहीं करेंगे तो यह बड़ा अनर्थ करा देगी । आपकी आज्ञा क्या है ? तब नायक श्रीराम ने मान लिया । कहा कि हाँ ! अगर यह जानेवाली नही है तो क्या वैसा करना ही न भला होगा ? वही हो ! शूर्पणखा ने सुना तो वह समझ गयी कि ये हमारे ऊपर कृपा नहीं करेंगे । इधर ठहरूँगी तो प्राण से हाथ धोना पड़ जायगा । (यह सोचकर) । ३६०

एऱ्ऱनॆडुङ् गॊडिमूक्कु मिरुकादु मुलैयिरण्डु मिऴन्दु वाऴल्
आऱ्ऱुवऩे वञ्जत्तैया लुमैयुळ्ळ परिशऱिवा नमैन्द दऩ्ऱो
काऱ्ऱिऩिलुङ् कनलिनुङ् कडियानैक् कॊडियानैक् करऩै युङ्गळ्
कूऱ्ऱुवऩै यिप्पॊऴुदे कॊणर्हिऩ्ऱे ऩॆऩ्ऱुशलङ् गॊण्डु पोनाळ् 361

एऱ्ऱ–युक्त; नॆट्टुम् कॊटि मूक्कुम्–लम्बी, लता-सम नाक को; इरु कातुम्–दोनों कानों को; मुलै इरण्टुम्–दोनों स्तनों को; इऴन्तुम्–खोने के बाद भी; वाऴल् आऱ्ऱुवऩे–जीना सह सकूँगी क्या; उमै उळ्ळ परिचु–तुम्हारे गूढ़ अभिप्राय; वञ्चत्तैयाल्–कपट से; अऱिवाऩ्–जानने को; अमैन्ततु अऩ्ऱो–रचा गया (नाटक) न; काऱ्ऱिऩिलुम् कटियाऩै–वायु से अधिक तीव्र और बलवान; कनलिनुम् कॊटियाऩै–अग्नि से भी बढ़कर निर्मम; करऩै–खर को; उङ्कळ् कूऱ्ऱुवऩै–तुम्हारे यम को; इ पॊऴुते कॊणर्किऩ्ऱेऩ्–यहाँ अभी लाऊँगी; ऍऩ्ऱु–कहकर; चलम् कॊण्टु पोताळ्–वैर लेकर चली । ३६१

जाते-जाते शूर्पणखा यह कह गयी कि मेरी लम्बी लता-सी नाक मेरे रूप के योग्य सुन्दर थी। उसको, दोनों कानों और स्तनों को खोने के बाद कोई अपने जीवन को सह सकेगा क्या ? मैं जीवित रहने की क्षमता रख सकूँगी क्या ? यह सब जो मैंने तुमसे कहा, वह तुम्हारे गूढ़ अभिप्रायों को जानने के लिए रचा गया कपट नाटक था। अब मैं जा रही हूँ और वायु से भी तीव्रगामी और बलवान, अग्नि से भी निर्मम खर को, जो तुम्हारा यम होगा, अभी ले आऊँगी। ३६१

6. करन् वदैप् पडलम् (खर-वध पटल)

❀ इरुन्द माक्करन् ड्राळिणै यिन्मिशैच्
चॊरिन्द शोरियळ् कून्दल डुम्बॆंनत्
तॆरिन्द सूक्कितळ् वायितळ् शॆक्कर्मेल्
विरिन्द मेह मॆंत्तविळुन् दाळरो 362

चॊरिन्त चोरियळ्–बहते हुए रक्त के साथ; कून्तलळ्–बिखरे केश वाली; तूम्पु ऎंत्त–मोरी की नली के द्वार के समान; तॆरिन्त मूक्कितळ्–दिखनेवाली नाक की; वायितळ्–(मोरी के द्वार के समान) बड़ा मुख वाली; चॆक्कर् मेल् विरिन्त–लाल गगन पर फैले; मेकम् ऎंत–मेघ के समान; इरुन्त मा करन्–(जनस्थान में) रहनेवाले प्रख्यात खर के; ताळ् इणैयिन् मिचै–जोड़े के पैरों पर; विळुन्ताळ्–जा गिरी। ३६२

शूर्पणखा के शरीर के कटे अंगों से रक्त वह रहा था। उसका केश खुला और बिखरा हुआ था। उसकी नाक और मुख मोरी के द्वार के समान खुले थे। वह भागी और जनस्थान में रहे प्रख्यात खर के चरणों पर लाल गगन के ऊपर छाये हुए मेघ के समान गिरी। ३६२

❀ अळुङ्गु नाळिदॆंन् ड्रन्दह नाणैयाल्, तळुङ्गु पेरि यॆंन्नत्तनित् तेङ्गुवाळ्
मुळुङ्गु मेह मिडित्तवॆंन् दीयिनाल्, पुळुङ्गु नाह मॆंन्नप्पुरण् डाळरो 363

अन्तकन् आणैयाल्–यम की आज्ञा से; अळुङ्कु नाळ् इतु–अन्त होने का काल यह है; ऎंन्रु–ऐसा घोषित करते हुए; तळुङ्कु पेरि ऎंत्ति–पिटनेवाली भेरी के समान; तनित्तु एङ्कुवाळ्–विचित्र रूप से रोने का स्वर करती हुई; मुळङ्कुम् मेकम्–गरजनेवाले मेघ से; इटित्त वॆम् तीयिनाल्–गिरी गाज की अग्नि से; पुळुङ्कुम् नाकम् ऎंत–व्यग्र नाग के समान; पुरण्टाळ्–लोटने लगी। ३६३

उसका अनोखा रुदन का गम्भीर स्वर यम की आज्ञा के अनुसार राक्षसों के अन्त की घोषणा करनेवाली भेरी के नाद के समान था। वह उस सर्प के समान छटपटाकर लोटने लगी, जो गरजते मेघ से गिरी गाज की अग्नि से तप रहा हो। ३६३

❀ वाक्किऱ् कॊप्पप् पुहैमुनुदु वायिनान्
नोक्किक् कूशलर् नुन्नैयित् तन्मैयै
आक्किप् पोनव रार्हॊलॆन् ऱानवळ्
मूक्किऱ् चोरि मुऴ्हिक्कॊण्ड कण्णिनान् 364

अवळ् मूक्किल् चोरि–उसकी नाक से बहते हुए रक्त में; मुऴ्हि कॊण्ट–मग्न रही; कण्णिनान्–आँखों का; वाक्किऱ्कु ऑप्प–शब्द के अनुकूल; पुकै मुनुतु–धुआँ निकालनेवाले; वायिनान्–मुख का (खर); नोक्कि–देखकर; कूचलर्–निस्संकोच होकर; नुन्नै–तुम्हारी; इ तन्मै आक्कि–इस दुर्गति में पहुँचाकर; पोन्तवर्–जानेवाले; आर् कॊल्–कौन हैं तो; ऎन्ऱान्–पूछा। ३६४

खर की दृष्टि शूर्पणखा की नाक से निकलनेवाले रक्त के प्रवाह में मानो डूब सी गयी। उसके मुख से ज्यों-ज्यों शब्द निकलते, त्यों-त्यों धुआँ भी निकलता। उतने क्रोध के साथ उसने शूर्पणखा से प्रश्न किया कि ऐसा निस्संकोच होकर तुम्हारी दुर्गति कर गये जो वे कौन है?। ३६४

❀ इरुवर् माऩिडर् तापद रेन्दिय, वरिविल् वाट्कैयर् मन्मदन् मेऩियर्
तरुम नीरर् तयरदन् कादलर्, शॆरुदि नेरु निरुदरैत् तेडुवार् 365

इरुवर् माऩिटर्–दो मानव; तापतर्–तपस्वी; एन्तिय–धृत; वरिविल्–बन्धनयुक्त धनु; वाळ्–तलवार के; कैयर्–हाथ वाले; मन्मतन् मेऩियर्–मन्मथ के समान रूप वाले; तरुम नीरर्–धर्मपथचारी; तयरतन् कातलर्–दशरथ के प्यारे पुत्र; चॆरुविल् नेरुम्–युद्ध में लड़नेवाले; निरुतरै–राक्षसों को; तेटुवार्–ढूँढ़नेवाले। ३६५

(शूर्पणखा का उत्तर भी देखिये!) वे दोनों मानव हैं तप में लीन! हाथ में धनुष और तलवार रखते हैं। उनका रूप मन्मथ का-सा है। धर्मपथचारी है। दशरथ के प्यारे पुत्र हैं और युद्ध में लड़नेवाले राक्षसों की खोज मे लगे रहनेवाले हैं। ३६५

❀ ऒन्ऱु नोक्कल रुन्वलि योङ्गऱम्, निन्ऱु नोक्कि निऱुत्तु निनैप्पिनर्
वॆन्ऱि वेऱ्कै निरुदरै वेरऱक्, कॊन्ऱु नीक्कुदु मॆन्ऱुणर् कॊळ्हैयार् 366

ओङ्कु अऱम् निन्ऱु–उत्कृष्ट धर्म खुद अवलम्बन कर; नोक्कि–उनकी गति शोधकर; निऱुत्तुम् निनैप्पिऩर्–स्थापित करने का संकल्प करते हुए; उन् वलि ऒन्ऱुम् नोक्कलर्–तुम्हारे बल की परवाह नहीं करते; वॆन्ऱि वेल्–विजयशील भालेधारी; कै–हस्त वाले; निरुतरै–राक्षसों को; वेर् अऱ–निर्मूल करके; कॊन्ऱु नीक्कुतुम् ऎन्ऱु–मार मिटाएँगे, ऐसा; उणर्–निश्चय जिसमें हो; कॊळ्कैयार्–ऐसे संकल्प वाले। ३६६

वे उत्कृष्ट धर्म के मार्ग में खुद रहते हुए, धर्म की गति को शोधकर उसकी संस्थापना में दत्तचित्त रहनेवाले है। वे तुम्हारे बल का कोई महत्त्व न देते। यही संकल्प रखनेवाले हैं कि हम विजयशील भालों के धारी राक्षसों का उन्मूलन करके मिटा देंगे। ३६६

❀ मण्णि नोक्करु वानिनिन् मऱ्ऱिनिल्
एण्णि नोक्कुऱिल् यावरु नेर्हिलाप्
पॅण्णि नोक्कुडै याळॊरु पेदैयॅन्
कण्णि नोक्कि युरैप्परुङ् गाट्चियाळ् 367

मण्णिल्–धरती पर; नोक्कु अरु–दर्शन-दुर्लभ; वानिनिल्–आकाश में; मऱ्ऱिनिल्–अन्य लोकों में; ऍण्णि–सोचकर; नोक्कुऱिल्–देखने पर; यावरुम् नेर्किला–कोई उसकी समानता न कर सके, ऐसी; पॅण्णिन् नोक्कु उडैयाळ्–स्त्री-सौंदर्य वाली; ऍन् कण्णिन् नोक्कि–अपनी आँखों से देखकर; उरैप्पु अरुम्–अवर्णनीय; काट्चियाळ्–आकार-प्रकार वाली। ३६७

और भी, उनके साथ एक स्त्री है। स्वर्ग, भूलोक, पाताल आदि कहीं भी ढूँढ़ो, उसकी समानता करनेवाली कोई नहीं मिलेगी। बड़ी सुन्दरी स्त्री है। उसका आकर्षण इतना अधिक है कि मैं अपनी आँखों से देखा उसके मनोहारी रूप का वर्णन करूँ, इतनी क्षमता मेरे शब्दों में नहीं है। ३६७

❀ कण्डु नोक्कुरुङ् गारिहै याडनैक्, कॊण्डु पोवॅ निलङ्गैयर् कोक्कॅना
विण्डु मेलॅळुन् देनै वॅहुण्डवर्, तुण्ड माक्किनर् मूक्कॅनच् चॊल्लिनाळ् 368

नोक्कु उरुम् कारिकैयाळ् तनै–सुन्दरी उस स्त्री को; कण्टु–देखकर; इलङ्कैयर् कोक्कु–लंकेश्वर के लिए; कॊण्टु पोवॆन् ऍना–ले जाऊँगी कहकर; विण्टु–शत्रुता दिखाकर; मेल् ऍळुन्तेनै–उस पर लपकनेवाली मुझे; अवर्–उन दोनों ने; वॅकुण्टु–गुस्सा करके; मूक्कु तुण्टम् आक्किनर्–नाक के टुकड़े कर लिये; ऍन–ऐसा; चॊल्लिनाळ्–शूर्पणखा ने कहा। ३६८

मैंने उस अनुपम सुन्दरी को देखा तो सोचा कि उसको लंकेश के लिए ले जाऊँ। इसी विचार से मैं उसकी ओर लपकी। तब उन दोनों मनुष्यों ने मेरी नाक काट दी। —शूर्पणखा ने घटना का अपनी रीति से वर्णन किया। ३६८

❀ केट्ट ननुरै कण्डनन् कण्णिनाल्, तोट्ट नुङ्गिऱ् ऱॊळैयुरु मूक्किनैक्
काट्टॅ नावॅळुन् दानॅदिर् कण्डनर्, नाट्टन् दीय वुलहै नडुक्कुवान् 369

ऍतिर् कण्टवर् नाट्टम्–सामने से देखनेवालों की दृष्टि को; तीय–जलाते हुए; उलकै नटुक्कुवान्–लोक को कम्पित करनेवाले खर ने; उरै केट्टनन्–शूर्पणखा का कथन सुना; तोट्ट नुङ्किल्–कोए निकालने के बाद ताल-फल जैसे हो जाता है, वैसे; तॊळै उरु–गड्ढों सहित; मूक्किनै–नाक को; कण्णिनाल्–अपनी आँखों से; कण्टनन्–देखा; काट्टु–उनको दिखाओ; ऍना–कहते हुए; ऍळुन्तान्–उठा। ३६९

खर ऐसा भयंकर और उग्र राक्षस था कि उसको सामने से देखनेवाले की आँखें जलकर भस्म हो जातीं और लोक काँप उठते। उसने शूर्पणखा के मुख को गौर से देखा, जो कोए से हीन ताल-फल के

समान लगता था। देखकर उसने तैश में आकर कहा कि दिखाओ उन्हें। यह कहते हुए वह उठा। ३६९

❀ ऍऴुन्दु निन्ऱुल हॅऴु मॅरिन्दुहप्, पॊऴिन्द कोवक् कनलिनिऱ् पॊङ्गुवान्
कऴिन्दु पोयिनर् मानिड रॅन्नुङ्गाल्, अऴिन्द दोविव् वरुम्बऴि ऍन्ननुमाल् 370

ऍऴुन्तु निन्ऱु–उठकर खड़ा होकर; उलकु एऴुम् ऍरिन्तु उक–सातों लोकों को भस्म होकर चूने देते हुए; पॊऴिन्त–बढ़नेवाली; कोप कनलितिल्–कोपाग्नि में; पॊङ्कुवान्–जो भड़क उठा, उसने; मानिटर् कऴिन्तु पोयिनर्–(ये) मनुष्य मिट चले; ऍन्नुम् काल्–ऐसी स्थिति में भी; इ अरुम् पऴि–यह कठोर अपयश; अऴिन्ततो–मिटेगा क्या; ऍन्नुम्–कहा। ३७०

उठकर खड़ा हुआ वह खर ऐसी कोपाग्नि के साथ भड़क उठा, जो सातों लोकों को जला दे और भस्म करके छितरा दे। उसे इतना क्षोभ हुआ कि उसके मुख से प्रश्न उठा। अगर मैं उन मानवों को मार भी दूं और वे मिट जायँ तो भी यह अपयश दूर हो सकेगा क्या ? । ३७०

❀ वरुह तेरॅनु मात्तिरै माडुळोर्, इरुहै माल्वरै येऴिनो डेळनार्
ऑरुहै यालुल हेन्दु मुरत्तिनार्, तरुह विप्पणि यॅम्वयिऱ् ऱानॅन्ऱार् 371

तेर् वरुक–रथ आ जायँ; ऍन्नुम् मात्तिरै–ऐसा (आज्ञा) सुनाते ही तत्क्षण; माट्टु उळोर्–पास रहनेवाले; इरु कै माल्वरै–दो-दो हाथों के साथ बड़े-बड़े पर्वत; एऴितोटु एऴु अनार्–सात और सात (चौदह) के समान जो थे; ऑरु कैयाल्–अपने एक हाथ से; उलकु एन्तुम्–भूलोक को उठाने की; उरत्तिनार्–शक्ति रखनेवाले; इ पणि–यह काम; ऍम् वयिन् तान् तरुक–हमारे पास छोड़ दें; ऍन्ऱार्–बोले। ३७१

फिर उसने आज्ञा दी कि रथ आ जाय। तब उसके पास चौदह सेनापति थे। वे ऐसे पर्वतों के समान थे जिनके दो-दो हाथ हों। वे अपने एक हाथ पर ही धरणी को उठा सकनेवाले थे। उन्होंने प्रार्थना की कि यह काम हमें सौंप दें। ३७१

❀ चूलम् वाण्मऴुत् तोमरञ् जक्करम्, काल पाशङ् गदैपॊरुङ् गैयिनार्
वेलै ञालम् वॅरुवुरु मार्प्पिनार्, आल कालन् दिरण्डनन वाक्कैयार् 372

चूलम् वाळ्–शूल और तलवार; मऴु तोमरम्–परशु और तोमर; चक्करम् कालपाचम्–चक्र, कालपाश; कतै–गदा; पॊरुम् कैयिनार्–इनको लेकर लड़नेवाले हाथों के; वेलै ञालम्–समुद्रवलयित भूतल को; वॅरुवु उरुम् आर्प्पिनार्–डराते हुए शोर मचानेवाले; आल कालम् तिरण्टु अनन–हलाहल रूप ले आया हो ऐसा; आक्कैयार्–शरीर वाले। ३७२

(वाल्मीकी में इनके नाम दिये गये हैं।) वे शूल, तलवार, परशु, तोमर, कालपाश और गदा इनका उपयोग कर लड़ सकते थे। जब वे

उच्च स्वर उठाते तब समुद्र और उसके मध्य रहनेवाली भूमि थर्रा उठती थीं। उनके शरीर हलाहल के पिण्डों के समान थे। ३७२

❀ वॆम्बु वेलैक् कऩलऩ्ऩ वॆम्मैयार्, नम्बि नम्मडि मैत्तॊऴि ऩऩ्ऱॆना
उम्बर् मेलु मुरुत्तऩै पोदियो, इम्बर् मेलिति यामुळॆ मॆय्ऩ्ऱार् 373

वॆम्पु वेलै–गरम और समुद्र से निकली; कऩल् अऩ्ऩ–(बड़वा) आग के समान (वे); वॆम्मैयार्–क्रोधशील; नम्पि–नायक; नम् अटिमै तॊऴिल्–हमारी सेवकाई भी; नऩ्ऱु ऎऩा–अच्छी रही, कहके; उम्पर् मेलुम्–देवों पर; उरुत्तऩै–गुस्सा कर; पोतियो–जा रहे हो क्या; इम्पर् मेल्–इस लोकवासी पर (आक्रमण करने); इति याम् उळमे–अब हम तो है; ऎऩ्ऱार्–बोले। ३७३

अत्यन्त गरम बड़वाग्नि के समान क्रोध से भरे उन्होंने खर को देखकर कहा कि नायक ! हमारी सेवकाई भी कितनी खूब है (कि हमारे रहते आप लड़ने चलें) ! और भी क्या वे देव हैं कि आप क्रोध के साथ लड़ने जायँ ? वे धरती के मानव हैं और हम इधर प्रस्तुत हैं। ३७३

❀ नऩ्ऱु शॆल्लुदिर् नाऩिच् चिऱार्कण्मेल्
शॆऩ्ऱु पोर्शॆयिऩ् ऱेवर् शिरिप्पराल्
कॊऩ्ऱु शोरि कुडित्तवर् कॊळ्हैयै
वॆऩ्ऱु मीळुदिर् मॆल्लिय लोडॆऩ्ऱाऩ् 374

नऩ्ऱु–ठीक है; चॆल्लुतिर्–चलो; नाऩ्–मैं; इ चिऱार्कळ् मेल्–इन लड़कों पर; चॆऩ्ऱु पोर् चॆयिऩ्–जाकर युद्ध करूँ तो; तेवर् चिरिप्पर्–सुर लोग हँसेंगे; कॊऩ्ऱु–मारकर; चोरि कुटित्तु–रक्त पीकर; अवर् कॊळ्कैयै–उनका संकल्प; वॆऩ्ऱु–वृथा करके (उन्हें जीतकर); मॆल्लियलोटु–कोमल नारी को साथ ले; मीळुतिर्–लौट आओ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ३७४

खर ने भी उसे ठीक माना। उसने कहा कि तुम ठीक कहते हो। तुम ही जाओ। मैं इन मानव-बालकों के विरुद्ध लड़ने जाऊँ तो देव मेरी हँसी उड़ायेंगे। तुम जाओ उन्हें मारो, उनका खून पिओ और उनका संकल्प हरा दो। फिर उस कोमल नारी को साथ लेकर लौट आओ। ३७४

❀ ऎऩ्ऩ लोडुम् विरुम्बि यिऱैञ्जिऩार्, शॊऩ्ऩ नाणिलि यऩ्दहऩ् ऱूदॆऩ
अऩ्ऩवळ् पिऩ्पडर् वारॆऩ वायिऩार्, मऩ्ऩऩ् कादलर् वैहिड नण्णिऩार् 375

ऎऩ्ऩलोटुम्–उसके यों कहते ही; विरुम्पि–खुश होकर; इऱैञ्चिऩार्–विनय करके; चॊऩ्ऩ–जिसने उनके सम्बन्ध में कहा था, उस; नाण् इलि–निर्लज्ज (शूर्पणखा) को; अऩ्तकऩ् तूतु ऎऩ–यम का दूत मानकर; अऩ्ऩवळ् पिऩ् पटर्वार् ऎऩ–उसके पीछे जानेवाले; आयिऩार्–बनकर वे; मऩ्ऩऩ् कातलर्–(दशरथ-) राज के पुत्र; वैकु इटम्–जहाँ रहे, वह स्थान; नण्णिऩार्–पहुँचे। ३७५

यह अनुमति पाकर वे हर्षित हुए। खर को नमस्कार करके

निकले। यम के भेजे दूत के समान वह निर्लज्ज शूर्पणखा आगे-आगे गयी और ये उसका अनुकरण करते गये। वे दाशरथि जहाँ रहे वहाँ आये। ३७५

❀ तुमिलप् पोर्वल् लरक्कर्क्कुच् चुट्टिये
अमलत् तॉल्पॅय रायिरत् ताऴियान्
निमलप् पाद निनैवि लिरुन्दवक्
कमलक् कण्णनैक् कैयिनिऱ् काट्टिनाऴ् 376

अमलम् तॉल्–निर्मल और प्राचीन; पॅयर् आयिरत्तु–सहस्रनाम-धारी; आऴियान्–चक्रपाणी के; निमल पात निनैविल् इरुन्त–पवित्र चरण-स्मरण में रहे; अ कमल कण्णनै–उन कमलाक्ष को; तुमिलम् पोर् वल्–तुमुल युद्ध करने में समर्थ; अरक्कर्क्कु–राक्षसों को; कैयिनिल् चुट्टिये–हाथ के इशारे से; काट्टिनाळ्–दिखाया (शूर्पणखा ने)। ३७६

वे प्राचीन और सहस्र नामों से भूषित चक्रपाणी श्रीविष्णु के निर्मल पवित्र चरणों का स्मरण करके ध्यानमग्न थे। शूर्पणखा ने अपने हाथ से उन कमलाक्ष को उन तुमुल युद्ध-निपुण राक्षसों को दिखाया। ३७६

❀ ऍऱ्ऱु वाम्बिडित् तेनुदु मॅन्गुनर्, पऱ्ऱु वानॅडुम् बाशत्ति नॅन्गुनर्
मुऱ्ऱु वामिऱै शॊन्मुऱै यालॅन्नाच्, चुऱ्ऱि नार्वरै शूऴ्न्दन्न तोऱ्ऱत्तार् 377

ऍऱ्ऱुवाम्–उसको ढकेलकर उछालेंगे; पिटित्तु एन्तुतुम्–पकड़कर धारण करेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; नॅटुम् पाचत्तिन्–लम्बे पाश से; पऱ्ऱुवाम्–कस लेंगे; ऍन्कुनर्–कहनेवाले; इऱै चॊल् मुऱैयाल्–हमारे राजा के कहे प्रकार; मुऱ्ऱुवाम्–कार्य पूरा करेंगे; ऍन्ना–कहते हुए; वरै चूऴ्न्तन्न तोऱ्ऱत्तार्–पहाड़ घेर आये हों, ऐसे दृश्य वाले; चुऱ्ऱिनार्–घेर गये। ३७७

उनको देखते ही कुछ ने कहा कि हम उसे उछालेंगे और हाथों में पकड़ लेंगे। कुछ ने कहा कि लम्बे पाश से उसे बाँध देंगे। और कुछ ने कहा कि हम अपने राजा का आशय पूरा करेंगे। ऐसी-ऐसी बातें शोर के साथ कहते हुए पर्वतों के समान जो रहे वे उन्हें घेर गये। ३७७

❀ एत्तु वाय्मै यिराम निळवलैक्, कात्ति तैयलै यॅन्ऱुतन् कऱ्पहम्
पूत्त दन्न पॊरुवि ऱडक्कैयाल्, आत्त नाणि नरुवरै वाङ्गिनान् 378

एत्तु वाय्मै इरामन्–प्रशंसित सत्यसन्ध श्रीराम ने; इळवलै–अपने अनुज से; तैयलै कात्ति–देवी की रक्षा करो; ऍन्ऱु–कहकर; कऱ्पकम् पूत्तत्तु अन्न–कल्पतरु पुष्पित हो, ऐसे; तन् पॊरुवु इल् तट कैयाल्–अपने उपमाहीन विशाल हाथ से; आत्त नाणिन्–चढ़ी हुई प्रत्यंचा के साथ; अरु वरै–श्रेष्ठ पर्वत-सम धनुष को; वाङ्कितान्–ले लिया। ३७८

(श्रीराम ने देखा।) प्रशंसित सत्यसंध श्रीराम ने अपने कनिष्ठ से

कहा कि लक्ष्मण ! तुम सीताजी की रक्षा करो। उन्होंने अपने पुष्पित कल्पतरु के समान विशाल हाथ में प्रत्यंचा-चढ़े और पर्वतसम धनुष को ले लिया। ३७८

❁ वाङ्गि वाळॊडु वाळिपॆय् पुट्टिलुम्, ताङ्गित् तामरैक् कण्णनच् चालैयै
नीङ्गि यिव्वयि नेर्मि नडावॆन्ना, वीङ्गु तोळन् मलैदलै मेयिनान् 379

तामरै कण्णन्–कमलाक्ष; वाळ् ऒडु–तलवार के साथ; वाळि पॆय् पुट्टिलुम्–शरों के साथ तूणीर भी; वाङ्कि–लेकर; अ चालैयै नीङ्कि–उस पर्णशाला के बाहर आकर; इ वयिन् नेर्मिन् अटा–इस ओर आकर लड़ो रे; ऎन्ना–ललकारते हुए; वीङ्कु तोळन्–(युद्धोत्साह में) विवृद्ध कन्धों वाले (श्रीराम); मलैतलै मेयिनान्–युद्ध में प्रवृत्त हुए। ३७९

कमलाक्ष ने तलवार और शर-भरे तूणीर भी लिया। आश्रम से बाहर आये और उन्होंने ललकारा कि रे आओ इधर ! लड़ो। युद्धोत्साह के कारण उनके कंधे फूल उठे। वे युद्ध में प्रवृत्त हो गये। ३७९

मळुवुम् वाळुम् वयङ्गॆरि मुच्चिहैक्
कळुवुङ् गालवॆन् दीयन्न काट्चियार्
ऎॆळुवि नीडक् कैयॆळु नान्गैयुन्
दळुवुम् वाळिह ळाड्रलज् जार्त्तिनान् 380

काल वॆम् ती अन्न–युगान्तकालीन भयंकर आग के समान; काट्चियार्–दृश्यमान; मळुवुम्–परशु; वाळुम्–और तलवारें; वयङ्कु ऎरि–जलती आग के समान; मु चिकै कळुवुम्–त्रि(सिर) शूल, इनके साथ; ऎॆळुविन् नीळ्–स्तम्भ-सम लम्बे; तट–और विशाल; कै ऎॆळु नान्कैयुम्–(सात के चार) अट्ठाईस हाथों को; तळुवुम् वाळिकळाल्–निशाने पर अचूक लगनेवाले शरों से; तलम् चार्त्तिनान्–काटकर भूमि पर गिराया। ३८०

श्रीराम ने उनके स्तम्भ-सम लम्बे और मोटे अट्ठाईस हाथों को अपने अचूक बाणों से विद्ध कर गिराया। युगान्तकालीन अग्नि के समान क्रोधी उन राक्षसों के हाथों में परशु, तलवारें, अग्नि के समान उज्ज्वल त्रिशूल आदि थे। उनके साथ वे हाथ कट कर गिर गये। ३८०

❁ मरङ्गळ् पोन्नॆडु वाळॊडु तोळ्विळ, उरङ्ग ळालडर्त् तारुर वोन्विडुम्
शरङ्ग ळोडिन तैत्त वरक्करदम्, शिरङ्ग ळोडिन तीयव ळोडिनाळ् 381

नॆटु वाळॊटु–लम्बी तलवारों के साथ; तोळ्–हाथ; मरङ्कळ् पोल्–पेड़ों के समान; विळ–गिरे, तब; उरङ्कळाल् अटर्त्तार्–छातियों से टकराये; उरवोन् विटुम् चरङ्कळ्–बलवान श्रीराम से प्रेषित शर; ओटिन तैत्त–चलकर घुसे; अरक्कर् तम् चिरङ्कळ्–राक्षसों के सिर; ओटिन–कट कर दौड़े (दूर गये); तीयवळ् ओटिनाळ्–दुराचारिणी भागी। ३८१

लम्बी तलवारों (व अन्य हथियारों) के साथ हाथों के अलग हो पेड़ों के समान गिरने के बाद भी वे सेनानायक लड़ने लगे। अपनी छाती से उन्होंने प्रहार किया। तब प्रबल प्रतापी श्रीराम ने तेजी से शर प्रेषित किये, जिन्होंने जाकर उनके सिरों को धड़ों से अलग कर दिया। शूर्पणखा ने देखा और वह नृशंस राक्षसी वहाँ से भाग चली। ३८१

❀ ऑळिरु वेड्करड् कुड्ड् दुणर्त्तिनाळ्, कुळिऱु कोबवॆङ् गॊळरि मावडक्
कळिरॆ लाम्बडक् कैदलै मेलुरप्, पिळिऱि योडुम् बिडियनन्न पॆड्ऱियाळ् 382

कुळिऱु–गरजनेवाले; कोप वॆम् कोळ् अरि मा–क्रोधी, भयंकर सिंह के; अट–प्रहार करने से; कळिऱु ऎलाम् पट–सभी गज मर गये और; कै तलै मेल् उऱ–हाथ सिर पर रखते हुए; पिळिऱि ओटुम्–चिंघाड़ती भागनेवाली; पिटि अन्नत–हथिनी के समान; पॆड्ऱियाळ्–स्थिति वाली ने; ऒळिरु वेल्–चमकीले भाले के; करड्कु–खर को; उड्ऱतु उणर्त्तिनाळ्–जो हुआ वह सुनाया। ३८२

वह उस हथिनी के समान सिर पर हाथ रखे भागी, जो गरजनेवाले क्रोधी भयंकर सिंह के युद्ध में प्रहार से सभी गजों के मर जाने पर अपने सिर पर सूँड़ रखकर चिंघाड़ती हुई भाग रही हो। जाज्वल्यमान भाला-धारी खर के पास जाकर उसने समाचार सुनाया। ३८२

❀ अङ्ग रक्क रविनुदॊळिन् दारॆनप्, पॊङ्ग रत्तम् विळिवळिप् पोनुदुह
वॆङ्ग रप्पॆय रोनॆवुहुण् डान्विडैच्, चङ्ग रड्कुन् दडुप्परुन् दन्मैयान् 383

विटै चङ्करड्कुम्–ऋषभवाहन शंकर से भी; तटुप्पु अरुम् तन्मैयान्–जो रोका नहीं जा सकता, वैसा; वॆम् कर पॆयरोन्–क्रूर खर नाम का राक्षस; अङ्कु अरक्कर् अविन्तु ऒळिन्तार् ऎन–वहाँ राक्षस मर मिटे; ऎन–यह सुनकर; पॊङ्कु अरत्तम्–उफन उठनेवाला रक्त; विळि वळि–आँखों द्वारा; पोन्तु उक–निकलने देते हुए; वॆकुण्टान्–क्रुद्ध हुआ। ३८३

खर नामक वह राक्षस ऐसा दुर्द्धर्ष था कि ऋषभवाहन शंकर से भी हराया न जा सके। उसने जब सुना कि राक्षस वहाँ हत हो मिट गये, तो उसे बड़ा क्रोध हुआ। उसकी आँखें लाल हो गयीं। उसकी आँखें ऐसी लगीं, मानो रक्त खौल उठा हो और वह आँखों से बाहर निकल रहा हो। ३८३

❀ अळैयॆन् ड्रेरॆनक् काक्कुहॆन् पोर्प्पडै, उळैय रोडि यॊरुनॊडि युम्बल्मेल्
मळैयित् मामुर शॆड्रुदिर् वल्लॆन्ड्रान्, मुळैयित् वाळरि यञ्ज मुळङ्गुवान् 384

मुळैयिन् वाळ् अरि–गुफा में रहनेवाले सिंह को भी; अञ्च मुळङ्कुवान्–भयभीत करते हुए दहाड़नेवाले खर ने; ऎन् तेर् अळै–मेरे रथ को बुलाओ; ऎन् पोर् पटै–मेरी युद्ध-सन्नद्ध सेना को; ऎन्तक्कु आक्कुक–मेरे साथ करो; वल्–सत्वर; उळैयर्–सेवक; ओटि–भाग जाकर; ऒरु कोटि उम्पल् मेल्–उत्तम पताका से अलंकृत गज

पर; मळैयिन्–मेघ के समान; मा मुरचु–बड़ा ढोल; ऍऱ्ऱुतिर्–पिटवा दें; ऍन्ऱान्–कहा। ३८४

खर भीषण स्वर वाला था। उसका नाद सुनकर गुफा के अन्दर सुरक्षित रहनेवाले सिंह भी सिहर उठते थे। उसने आज्ञा निकाली कि मेरा रथ बुला लो। मेरी सेनाओं को मेरे साथ कर दो। जल्दी सेवक जायँ और ध्वजासहित गज पर ढोल रखकर यह मुनादी पिटवा दें। वह ठनक मेघ के गर्जन के समान उच्च हो। ३८४

❀ पेरि योशै पिऱत्तलुम् बॅट्पुरु, मारि मेहम् वरम्बिल वन्दॅन्नत्
तेरिन् शेनै तिरण्डदु तेवर्दम्, ऊरु नाह रुलहु मुलैयवे 385

पेरि ओचै पिऱत्तलुम्—भेरी-नाद के उठते ही; पॅट्पु उरु–विपुल; मारि मेकम्–वर्षाकालीन मेघ; वरम्पु इल–असीम; वन्त ऍन्न–आये हों ऐसा; तेवर् तम् ऊरुम्–देवों का लोक; नाकर् उलकुम्–नागों का (पाताल) लोक; उलैय–अस्तव्यस्त करते हुए; तेरिन् चेनै–रथों की सेना; तिरण्टतु–जुट आई। ३८५

भेरी का नाद हुआ कि गुरुत्वपूर्ण वर्षाकालीन मेघों के समान अगणित रथ आ गये। उनकी भीड़ और उनके शब्द के कारण आकाश और पाताल अस्तव्यस्त हो गये। ३८५

❀ पोर्प्पॅ रुम्बणै बॉम्मॅन् मुळक्कमा
नीर्त्त रङ्ग नॅडुन्दडन् दोळ्हळा
आर्त्तॅ ळुन्द दिऱुदियि नार्हलिक्
कार्क्क रुङ्गडल् काल्हिळर्न् दॅन्नवे 386

इऱुतियिन्–कल्पान्त में; आर् कलि–सघोष; कार् करुम् कटल्–अति विशाल काला सागर; काल् किळर्न्तु ऍन्न–पवनोद्वेलित हुआ हो, ऐसा; पोर् पॅरुम् पणै–युद्धसूचक बड़े ढोलों का नाद; पॉम् ऍन् मुळक्कमा–'भों' का उच्च नाद हुआ; नॅटुम् तटम् तोळ्कळ्–दीर्घ और विशाल भुजाएँ; नीर् तरङ्कमा–जल-तरंगें हुईं; आर्त्तु ऍळुन्ततु–(रथ-सेना) कोलाहल के साथ उठी। ३८६

वह सेना युगान्तकाल में पवनाद्वेलित हो उमड़नेवाले सघोष समुद्र के समान तुमुल नाद के साथ उठ आयी। युद्धसूचक ढोल ही उस समुद्र का गर्जन था। वीरों की सबल और लम्बी भुजाएँ उसकी तरंगें थीं। ३८६

❀ काडु तुन्ऱि विशुम्बु करन्दॅन्न, नीडि यॅङ्गु निमिर्न्द नॅडुङ्गॉडि
ऑडु मॅङ्गळ् पशियॅन् ऱुवन्दॅळुन्, दाडु हिन्ऱ वलहैयि नाडवे 387

काटु तुन्ऱि–सब वनों ने मिलकर; विचुम्पु–करन्तॅन्न–आकाश को ढक दिया हो, ऐसा; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; नीटि–फैलकर; निमिर्न्त–ऊँची उठी; नॅटुम् कॉटि–लम्बी ध्वजाएँ; ऍङ्कळ् पचि ओटुम्–हमारी भूख मिट जायगी; ऍन्ऱु–मानकर; उवन्तु ऍळुन्तु आटुकिन्ऱ–हर्ष के साथ उठकर नाचनेवाले; अलकैयिन्–प्रेतों के समान; आट–फहरती हैं, ऐसी स्थिति में। ३८७

रथ की ध्वजाएँ इतनी विपुल थीं कि वनों ने मिलकर आकाश को ढक दिया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित होता था। वे ध्वजाएँ ऐसा दृश्य प्रस्तुत करते हुए फहरीं कि 'हमारी भूख मिट गयी' —यह कहते हुए प्रेत नाच रहे हों। ३८७

❀ तरियि नीङ्गिय ताळदडक् कैत्तुणैक्
कुरिहीं ळामद वेळक् कुळुवनार्
शॅरिविन् वाळीडु वाळिडैत् तेयन्दुहुम्
पॉरियिड् कानॅङ्गुम् वॅङ्गनल् पॉङ्गवे 388

तरियिन् नीङ्किय–खूँटों से अलग हुए; कुरि कॉळा–किसी की परवाह न करनेवाले; ताळ् तट कै तुणै–नीचे तक लटकनेवाली बड़ी दो सूँड़ों वाले; मत वेळ कुळु अतार्–मत्तगजों के झुण्ड के समान राक्षसों की; चॅरिविन्–भरी भीड़ से; इटै–बीच में; वाळोटु वाळ् तेय्न्तु–तलवारों के टकराने से; उकुम्–गिरनेवाले; पॉरियिल्–अग्निकणों से; कान् ॲङ्कुम्–वन में सर्वत्र; वॅम् कतल् पॉङ्क–जलानेवाली आग के उमड़ते। ३८८

(सेनाओं का वर्णन जारी है।) खूँटों से अलग छूटे हुए और बेपरवाह और नीचे लटकनेवाली दो मोटी सूँड़ों के मत्त गजदल के समान राक्षसों की भीड़ में तलवारें परस्पर टकरायीं। तब अग्निकण नीचे गिरे। उनके कारण जंगल भर में गरम आग प्रज्वलित हुई। (ऐसी सेना)। ३८८

मुरुडि रण्डु मुळङ्गु मुळक्कॉलि, उरुडि रण्डॅळुन् देरॊलि युट्पुह
अरुडि रण्ड वरुक्कन्रन् मेलळन्, दिरुडि रण्डुवन् दीण्डिय वॅन्नवे 389

इरण्टु–दोनों बाजुओं में; मुरुटु मुळक्कु–'मुरुडु' नामक ढोल की; मुळक्कु ऑलि–ठनक का शब्द; उरुळ् तिरण्टु ॲळुम्–चलनेवाले पहियों से उठनेवाले; तेर् ऑलियितुळ्–रथ के शब्दों से; पुक–मिल गया, इस प्रकार; अरुळ् तिरण्ट–घनीभूत कृपा के समान; अरुक्कन् तन् मेल्–सूर्य पर; अळन्रु–कोप करके; इरुळ्–अन्धकार; तिरण्टु वन्तु–मिल आकर; ईण्टियतु ॲन्न–धावा बोल रहा हो ऐसा। ३८९

दोनों बाजुओं में 'मुरुडु' नाम के ढोलों का नाद उठा और वह चलनेवाले अनेक रथों के पहियों से उठे हुए नाद में समा गया। सभी जीवों पर होनेवाली दया घनीभूत हो उठी हो, ऐसा दिखनेवाले सूर्य पर सारे अन्धकार ने मानो दल बाँधकर आक्रमण किया हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करती हुई (वह सेना आई)। ३८९

❀ तलैयिन् माशुणन् दाङ्गिय तारणि, निलैनि लादु मुदुहै नॅळिप्पुऱ
उलैवि लेळुल हत्तिनु मोङ्गिय, मलैयॅ लामॊरु माडुतॊक् कॅन्नवे 390

माचणम् तलैयिल् ताङ्किय–शेषनाग के सिर पर धृत; तारणि–धरणी के;

निलै निलातु–अस्थिर होकर; मुतुकै नॆळिप्पु उऱ–अपनी पीठ पर बल खाते; एळ् उलकत्तितुम्–सातों लोकों में; ओङ्किय मलै ऍलाम्–ऊँचे उगे पर्वत सभी; ऑरु माट्टु–एक ही स्थान पर; तॊक्कतु अन्न–एकत्रित हो आये हों, ऐसा। ३९०

आदिशेष के द्वारा उसके सिर पर धारण की हुई भूमि की पीठ पर बल पड़ गयी; ऐसा सातों लोकों के अति ऊँचे सभी पहाड़ एक स्थान पर जुट आये हों (ऐसा वह सेना आई)। ३९०

आळिहळ् पूण्डन वरिहळ् पूण्डन, मीळिहळ् पूण्डन वेङ्गै पूण्डन
ञाळिहळ् पूण्डन नरिहळ् पूण्डन, कूळिहळ् पूण्डन कुदिरै पूण्डन 391

आळिकळ् पूण्टन–'याळियों' (अप्राप्य भयंकर सिंहों) से युक्त; अरिकळ् पूण्टन–सिंहों के साथ जुते हुए; मीळिकळ् पूण्टन–प्रेतों से युक्त; वेङ्कै पूण्टन–बाघों से युक्त; ञाळिकळ् पूण्टन–कुत्तों से जुते हुए; नरिकळ् पूण्टन–सियारों से युक्त; कूळिकळ् पूण्टन–भूतों से युक्त; कुतिरै पूण्टन–घोड़ों से युक्त (रथ आये)। ३९१

रथों में शरभों ('याळि' नामक अब अप्राप्य केसरी जाति के भयंकर जानवरों) से युक्त, सिंहों से जुते हुए, प्रेतों, भूतों, व्याघ्रों, कुत्तों, सियारों और अश्वों से जुते हुए रथ थे। ३९१

वल्लियक् कुळाङ्गळो सळैयि नीट्टमो
ऑल्लिबत् तॊहुदियो वोङ्गु मोङ्गलो
अल्लमर् इरिहळि नन्निह मोवॆन्नप्
पल्पदि नायिरम् पडैक्कै वीररे 392

वल्लिय कुळाङ्कळो–बाघों के दल या; मळैयिन् ईट्टमो–मेघ-समूह या; ऑल् इय तॊकुतियो–तेज चाल के गजों के झुण्ड या; ओङ्कुम् ओङ्कलो–ऊँचे पर्वत; अल्ल–जो नहीं थे; अरिकळिन् अनिकमो–सिंहों की सेना क्या; ऍन्न–ऐसे कहने योग्य; पल् पतिन्नायिरम्–अनेक दस सहस्र; पटै कै वीरर्–शस्त्रधारी वीर (आये)। ३९२

अनेक सहस्र वीर आये, जिनकी व्याघ्रों का समूह, मेघमण्डल, त्वरित-गति गज, ऊँचे पर्वत या सिंहों की सेनाओं से तुलना की जा सकती थी। वे हाथों में हथियार लिये आये। ३९२

एऱ्ऱिन मार्त्तन वेन्न मार्त्तन, काऱ्ऱिन मार्त्तन कळुदै यार्त्तन
तोऱ्ऱिन्न मात्तिरत् तुलहु शूळ्वरुम्, पाऱ्ऱिन मार्त्तन पणिल मार्त्तन 393

एऱ्ऱु इनम् आर्त्तन–सिंहों के 'लेंहड़े' (झुण्ड) गरजे; एनम् आर्त्तन–सुअर चिल्लाये; काऱ्ऱु इनम् आर्त्तन–प्रेतों के दलों ने शोर मचाया; कळुतै आर्त्तन–गधे रेंके; तोऱ्ऱिन्न मात्तिरत्तु–(भाव) उठते ही; उलकु चूळ् वरुम्–संसार भर में घूम आनेवाले; पाऱु इनम्–गीधों के समूह; आर्त्तन–बोले; पणिलम् आर्त्तन–शंख बजे। ३९३

उनमें सिंह गरजे, सुअर चीखे; प्रेत चिल्लाए और गधे रेंके। विचार

करते ही सारी दुनिया घूम आ सकनेवाले गीध जोर से बोले। शंख बजे। (आर्त्तत्त का अर्थ 'बँधे थे' भी है)। ३९३

तेरिऩ्ऩ् दुवऩ्ऱिऩ शिऱुहट् चॅम्मुहक्, कारिऩ् नॅरुङ्गिऩ कालिऱ् काऱ्परित्
तारिनङ् गुऴुविन दडैयिल् कूऱ्ऱॅनप्, पेरिनङ् गडलॅनप् पॅयरुङ् गालैये 394

पेर् इऩम्–पदाति ने; तटैयिल् कूऱ्ऱु अॅऩ–दुद्धर्ष यम के समान; कटल् अॅऩ–समुद्र के समान; पॅयरुम् काल–जब कूच किया; तेर् इऩम् तुवऩ्ऱिऩ–रथदल मिल आये; चिऱु कण्–छोटी आँखों और; चॅम् मुक–लाल मुख के; कार् इऩम्–गज-समूह; नॅरुङ्किऩ–आ जुटे; कालिल्–वायु के समान; काल् परि–पैर रखनेवाले (दौड़नेवाले) अश्वों की; तार् इऩम्–सेना के दल; कुऴुविऩ–भीड़ लगाते आये। ३९४

पदाति वीर आये। वे अप्रतिहत यम के समान, सघोष समुद्र के समान कूच कर आये। तब उनके साथ रथों, छोटी आँखों के और लाल मुखों के गजों और वायुवेग से चलनेवाले अश्वों की सेनाएँ भी आ सम्मिलित हुईं। ३९४

मऴुक्कऴु मयिल्हऴुम् वयिर वाट्कऴुम्
अॅऴुक्कऴुन् दोमरत् तॉहैयु मीट्टियुम्
मुऴुक्कलु मुशुण्डियुन् दण्डु मत्तलॅक्
कऴुक्कऴु मुलक्कॅयुङ् गाल पाशमुम् 395

मऴुक्कऴुम्–परशु; अयिल्कऴुम्–भाले; वयिर वाट्कऴुम्–सुदृढ़ तलवारें; अॅऴुक्कऴुम्–लोहे के मूसल; तोमर तॉकैयुम्–तोमर-समूह; ईट्टियुम्–वर्छियाँ; मुऴुक्कलुम्–वर्तुल पत्थर; मुचुण्टियुम्–'भुशुंडी' नाम के हथियार; तण्टुम्–दण्ड; मु तलै अॅऴुक्कऴुम्–तीन सिर वाले शूल; उलक्कैयुम्–और मुद्गर; काल पाचमुम्–काल-पाश। ३९५

उनके पास निम्नलिखित हथियार थे। परशु, भाले, सुदृढ़ असियाँ, लोहे के मूसल, तोमर-समूह, वर्तुल पत्थर, भुशुण्डी नामक हथियार, दण्डायुध, त्रिशूल व काले पाश;। ३९५

कुन्दमुङ् गुलिशमुङ् कोलुम् पालमुम्
अन्दमिल् शावमुम् शरमु माऴियुम्
वॅन्दॉऴिल् वलयमुम् विळङ्गुज् जङ्गमाम्
पन्दमुम् कप्पणप् पडैयुम् पल्लमुम् 396

कुन्तमुम्–साँग; कुलिचमुम्–कुलिश; कोलुम्–छड़ियाँ; पालमुम्–भिंडिपाल; अन्तम् इल् चापमुम्–बेशुमार चाप; चरमुम्–शर; आऴियुम्–चक्र; वॅम् तॉऴिल् वलयमुम्–भयंकर वलय; विळङ्कु चङ्कमाम्–श्वेत शंखों की; पन्तमुम्–राशियाँ; कप्पण पटैयुम्–'कप्पण' नामक हथियार; पल्लमुम्–बल्लम। ३९६

कुंत, कुलिश, छड़ियाँ, भिण्डिपाल, असंख्यक चाप, शर, चक्र, भयंकर वलय, श्वेत शंखबंद, कप्पण नामक हथियार और बल्लम। ३९६

आदियि लरुक्कत्तु मन्नलु मञ्जुरुम्, शोदिय शोरियुन् तूवुन् दुत्रिन्न
एदिहण् मिडैन्दन्न विमैय वर्क्कॅलाम्, वेदनै कॉडुत्तन्न वाहै वेयुन्दन्न 397

एतिकळ्–हथियार; आति इल् अरुक्कतुम्–अनादि सूर्य; अन्नलुम्–अग्नि भी; अञ्चु उरुम्–(जिसको देख) भयभीत हो जायँ, ऐसी; चोतिय–ज्योति वाले; चोरियुम् तूवुम्–रक्त और मांस से; तुन्तिन्न–लिप्त थे; इमैयवर्क्कु ॲलाम्–सभी देवों को; वेतनै कॉटुत्तन्न–जिन्होंने वेदना दी थी, ऐसे; वाकै वेय्न्तन्न–अनेक विजय पा चुके हैं, वे; मिटैन्तन्न–भरे रहे। ३९७

ये ऐसे हथियार थे, जिनकी ज्योति के सामने अनादि सूर्य और अनल भी डरते थे; जो मांस और रक्त से लिप्त थे; जिन्होंने देवों को त्रास दिया था और जो हर बार उन राक्षसों को विजय दिला चुके थे। ३९७

आयिर मायिरङ् गळिड्रि नाड्रलर्, मायिरु ञालत्तै विळुङ्गुम् वायिनर्
तीयॅरि विळियिनर् निरुदर् शेन्नैयिन्, नायहर् पदिन्मरो डडुत्त नाल्वरे 398

निरुतर् चेन्नैयिन् नायकर्–राक्षस-सेना के नायक; पतिन्मरोटु अटुत्त नाल्वर्–दस और चार चौदह; आयिरम् आयिरम् कळिड्रिन्–सहस्र (अनेक) सहस्र गजों के; आड्रलर्–बल वाले; मा इरु ञालत्तै–बहुत बड़े लोक को; विळुङ्कुम् वायिनर्–निगल सकनेवाले मुखों के; ती ॲरि विळियिनर्–आग उगलती दृष्टि वाले। ३९८

इन सेनाओं के चौदह सेनानायक थे। वे एक-एक सहस्र-सहस्र गजों का बल रखते थे। वे एक-एक सारी धरती को निगल सकें, ऐसा बड़ा मुख रखते थे। उनकी आँखें आग बरसाती थीं। ३९८

आड्रिनो डायिर ममैन्द वायिरम्, कूड्रिन दॉरुपडै कुड्रित्त वप्पडै
एड्रिन दॆळिन्न दिरट्टि यॅन्बराल्, ऊड्रिन शेनैयिन् डॉहुदि युन्नुवार् 399

ऊड्रिन चेन्नैयिन् तॉकुति–युद्ध-निपुण सेना की संख्या का; उन्नुवार्–हिसाब लगानेवालों का; कूड्रितु–कहना है; ऑरु पटै–एक पलटन; आड्रिनोटु आयिरम् अमैन्त–छः हज़ार के; आयिरम्–हज़ार (छः लाख); कुड्रित्त अ पटै–जिसकी गणना हुई, उस पूरी सेना की संख्या; एळिन्नतु इरट्टि–चौदह (पलटनों का कुल); ॲन्पर–कहते हैं। ३९९

उस सेना में चौदह सेनाएँ मिली थीं। किसी ने गिनकर बताया कि हर सेना में साठ लाख संख्या के वीर थे। ऐसी चौदह सेनाओं का मेल था वह बड़ी सेना। ३९९

उरत्तिन्न रुरुमॅन्न वुरड्रुम् वायिन्नर्
करत्तॅड्रि पडैयिन्नर् कमलत् तोन्ड्ररुम्
वरत्तिनर् मलैयॅन्न मळैतु यिन्ड्रॅळुम्
शिरत्तिनर् तरुक्किनर् शॅरुक्कुञ् जिन्दैयार् 400

उरत्तिन्नर्–वीर्यवान; उरुम् ॲन्न उरड्रुम् वायिन्नर्–वज्र के समान नाद करनेवाली

वोली के; करत्तु ऍऱि पटैयित्तर्–हाथ से फेंके जानेवाले हथियार-धारी; कमलत्तोन तरुम् वरत्तित्तर्–ब्रह्माजी से प्राप्त वर वाले; मलै ऍन–पर्वत समझकर; मऴै तुयिन्ऱु ऍऴुम्–मेघ जिन पर सोकर उठ जाते हैं, वैसे; चिरत्तित्तर्–सिर वाले; तरुक्किनर्–गर्वीले; चॅरुक्कुम् चिन्तैयार्–युद्धोत्साही मन वाले। ४००

उस सेना के वीर वड़े ही वली थे। वज्र के समान वोली वाले थे। हाथों से हथियार चलाकर लड़नेवाले थे। उन्हें ब्रह्माजी से वर मिले थे। उनके सिर ऐसे थे कि मेघ भी उन्हें पर्वत समझकर उन पर आकर ठहरते, सोते और उनसे उठकर चले जाते। वड़े गर्वीले थे और शत्रुओं को मिटाने का अभिमान व उत्साह रखते थे। ४००

विण्णळ विडनिमिर्न्दु उयर्न्द मेनियर्
कण्णळ विडलरु मार्बर् कालिनाल्
मण्णळ विडुनॅडु वलत्तर् वानिडै
ऍण्णळ विडलरुञ् जॅरुवॅन् ऱेऱिनार् 401

विण् अळवु इट–आकाश को नापने के लिए; निमिर्न्दु उयर्न्त–सीधे और ऊँचे हुए; मेनियर्–शरीर वाले; कण् अळव इटल् अरुम्–दृष्टि से नापना कठिन; मार्पर–ऐसे छाती वाले; कालिनाल्–पैरों से; मण् अळवु इट–पृथ्वी को नाप सकनेवाली; नॅटुवलत्तर्–अधिक शक्ति वाले; वान् इटै–आकाश में; ऍण् अळवु इट अरुम्–गिनना कठिन; चॅरु वॅन्ऱु–उतने युद्ध में जीतकर; एऱिनार्–बढ़े-चढ़े थे। ४०१

उनके शरीर इतने ऊँचे थे कि वे आकाश को नाप सकते थे। वे दृष्टि माप न सके ऐसे विशाल वक्ष वाले थे। उनके पैरों में इतना बल था कि भूमि को नाप सकते थे। गिनती असम्भव हो, उतनी लड़ाई में विजय पाकर वे बढ़े-चढ़े हो गये थे। ४०१

इन्दिरन् मुदलिनो रॅऱिन्द माप्पडै, शिन्दिन तॅऱित्तुहच् चॅऱिन्द तोळिनार्
अन्दह नडितॊऴु दडङ्गु माणैयार्, वॅन्दिऱ लुरुवुहॊण् डनैय मेनियार् 402

इन्तिरन् मुतलिनोर्–इन्द्रादि देव; ऍऱिन्त–जो फेंकते थे; मा पटै–उन श्रेष्ठ हथियारों को; तॅऱित्तु चिन्तिन उक–झेलकर तोड़कर छितरा दिया (जिन्होंने), ऐसे; चॅऱिन्त तोळिनार्–कठोर कन्धों वाले; अन्तकन्–यम; अटितॊऴुतु अटङ्कुम्–चरण-वन्दना करके अधीन रहेगा; आणैयार्–ऐसे रोवीले; वॅम् तॊऴिल्–क्रूर काम ने ही; उरुवु कॊण्टनैय–रूप धर लिया हो, ऐसे; मेनियार्–शरीर वाले। ४०२

उनके सारयुक्त सबल कंधे ऐसे थे कि इन्द्रादि देवों द्वारा फेंके गये सशक्त हथियार उनसे लगकर टूट गये और विखर गये। यम भी विनत होकर उनकी आज्ञा मानता था, ऐसे रोवीले थे। क्रूर कार्य ने ही एक रूप धर लिया हो, ऐसे रूप वाले थे। ४०२

चूलमुम् पाशमुन् दॉडर्न्द शॅम्मयिर्च्
चालमुन् दरुहणु ऍयिरुन् दाङ्गिनार्
आलमुम् वॅळिदॅनु निऱत्तर् राऱ्ऱलाल्
कालनुङ् गालनॅन् ऱयिर्क्कुङ् गाट्चियार् 403

चूलमुम् पाचमुम्–शूल और पाश; तॉटर्न्त–मिले रहे; चॅम् मयिर् चालमुम्–लाल बाल-जाल; तरुकणुम्–भयंकर आँखें; ऍयिरुम्–और वक्र दाँत; ताङ्किनार्–धारण करनेवाले; आलमुम् वॅळितु ॲनुम्–इसके सामने हलाहल श्वेत है, ऐसा; निऱत्तर्–रंग वाले; आऱ्ऱलाल्–शक्ति में; कालनुम्–यम भी; कालन् ॲन्ऱु–अपना काल समझे; अयिर्क्कुम् काट्चियार्–संशय और भय करेगा, ऐसे आकार वाले। ४०३

उनके पास शूल, पाश आदि हथियार थे। शरीर पर लाल बाल घने रूप से उगे थे। भयंकर आँखें थीं। उनका रंग इतना काला था कि हलाहल भी श्वेत लगता था। शक्ति में वे इतने बढ़े थे कि यम भी उन्हें अपने यम की शंका करता और भय मानता। ४०३

कऴलिनर् तारिनर् कवश मार्बिनर्, निऴलुरु पूणिनर् नॅरित्त नॅऱ्ऱियर्
अऴलुरु कुञ्जिय रमरै वेट्टुवन्, दॅऴलुरु मनत्तिन रॊरुमै यॅय्दिनार् 404

कऴलिनर्–पायलधारी; तारिनर्–मालाधारी; कवच मार्पिनर्–कवचवक्ष; निऴल् उरु पूणिनर्–प्रभापूर्ण आभरणधारी; नॅऱित्त नॅऱ्ऱियर्–कोप से कुंचित भाल वाले; अऴल् उरु कुञ्चियर्–अग्निशिखा के समान घने केश वाले; अमरै वेट्टु–युद्ध चाहकर; उवन्तु ॲऴल् उरु–चाव लिये उमँगनेवाले; मनत्तिनर्–मन के; ऒरुमै ऍय्तिनार्–आपस में मेल रखनेवाले। ४०४

उनके पैरों में वीर कंकण पड़े थे। छाती पर कवच थे। वे कान्तिपूर्ण आभरण पहने हुए थे। उनके भाल कोप-कुंचित थे। केश अग्निशिखा के समान लाल और डरावने थे। युद्ध करना चाहकर चाव के साथ उमंगित होनेवाले मन के वे परस्पर मेल रखते थे। ४०४

मरुप्पिऱा मदक्कळिऱ् ऱमरर् मन्ननुम्
विरुप्पुऱा मुहत्तॅदिर् विऴिक्किन् वॅन्निडुम्
उरुप्पॅऱा दुलैवुऱ सुलह मून्ऱिनुम्
शॅरुप्पॅऱात् तिनवुऱ शिहरत् तोळिनार् 405

इऱा मरुप्पु–अटूट (सबल) दाँतों के; मत कळिऱ्ऱु–मत्तगज (ऐरावत) पर सवार; अमरर् मन्ननुम्–देवेन्द्र भी; मुकत्तु ॲतिर्–इनके मुख के सामने; विऴिक्किन्–आँख खोल देखेगा तो; विरुप्पु उऱा–सामने रहना न चाहकर; वॅन् इटुम्–पीठ दिखाते हुए भाग जायगा; उरु पॅऱातु–अस्थिर और; उलैवुऱुम्–चंचल; उलकम् मून्ऱिनुम्–तीनों लोकों में; चॅरु पॅऱा–युद्ध प्राप्त न करके; तिनवु उऱ–खुजली से भरे; चिकर तोळिनार्–पर्वतशिखर-सम कन्धों वाले। ४०५

वे राक्षस ऐसे (वीर) थे कि देवेन्द्र भी, जो अक्षुण्ण, सबल दाँतों वाले ऐरावत गज का स्वामी है, उनको सामने से देखे तो ठहरना न चाहकर पीठ दिखाते हुए भाग जाय ! नश्वर तीनों (स्वर्ग, मध्य और पाताल) लोकों में उन्हें युद्ध का अवसर नहीं मिला था अतः पर्वतशिखर-सम उनके कंधों में खुजली (युद्ध की प्यास) हो गयी थी । ४०५

कुञ्जरङ् गुदिरैपेय् कुरङ्गु कोळरि
वॆम्जिन्क् करडिनाय् वेङ्गै याळियॆन्
रञ्जुरक् कन्लवुरै मुहत्त रार्हलि
नञ्जुदॊक् कॊन्पपुरै नयनत् तार्हळुम् 406

कुञ्चरम् कुतिरै–कुंजर, अश्व; पेय्–प्रेत; कुरङ्कु–वानर; कोळ् अरि–सबल सिंह; वॆम् चित्तम् करटि–भयंकर क्रुद्ध रीछ; नाय्–कुत्ता; वेङ्कै–व्याघ्र; याळि–'याळि' (शरभ) नामक जानवर; ऍन्रु–समझकर; अञ्चु उरु–भय खाए ऐसा; कनल् पुरै मुकत्तर्–अनल-सम मुख वाले; आर्कलि नञ्चु–सघोष सागर से (मंथन के समय) उत्पन्न विष; तॊक्कॆन पुरै–घनीभूत हुआ हो ऐसे; नयनत्तार्कळुम्–नेत्र वाले थे । ४०६

किसी का मुख कुंजर के समान था, किसी का अश्व के समान । प्रेत, वानर, बली सिंह, भयंकर और क्रुद्ध रीछ, कुत्ता, व्याघ्र और शरभ के समान लगनेवाले उनके डरावने मुख अनल-सदृश थे । समुद्र से (क्षीरसागर-मन्थन के अवसर पर) उत्पन्न हलाहल के समान उनकी आँखें थीं । ४०६

ऍण्गैय रॆळुहैय रेळु मॆट्टुमाय्क्
कण्गनल् शॊरिदरु मुहत्तर् कालिनर्
वण्गैयिल् वळैत्तुयिर् वारि वायिलिट्
टुण्गैयि नुवहैय रुलप्पि लार्हळुम् 407

ऍण् कैयर्–आठ हाथ वाले; ऍळु कैयर्–सात हाथ वाले; एळुम् ऍट्टुम् आय्–सात-सात और आठ-आठ; कण्–आँखें; कनल् चॊरि तरु–अंगार उगलती थीं (जिनमें); मुकत्तर्–ऐसे मुख वाले; कालिनर–वैसे ही पैरों वाले; उयिर्–जीवों को; वण् कैयिल्–सबल हाथों से; वळैत्तु वारि–समेट लेकर; वायिल् इट्टु–मुख में डालकर; उण्कैयिल्–खाने में; उवकैयर्–आनन्द पानेवाले; उलप्पु इलार्कळुम्–असंख्यक लोग । ४०७

किसी के आठ हाथ थे, किसी के सात । वैसे ही सात-सात, आठ-आठ आँखों के द्वारा उनके मुख आग बरसा रहे थे । वैसे ही उनके पैर सात-सात या आठ-आठ थे । उनको जीवों को अपने सबल हाथों से समेट ले अपने मुख में डालकर खाने में बड़ा आनन्द आता था । वे अगणित थे । ४०७

इयक्करिर् परित्ततन्न अवुण रिट्टन्न
मयक्कुरुत् तमररै वलियिन् वाङ्गिन्न
तुयक्किल्हन् दिरुवरैत् तुरन्दु वारिन्न
नयप्पुरु शित्तरै नलिन्दु वव्विन्न 408

इयक्करिल् परित्ततन्न–यक्षों से छीन लिये गये; अवुणर् इट्टन्न–दानवों से (भागते वक्त) नीचे डाले हुए; अमररै–सुरों को; मयक्कुरुत्तु–माया से मोहित करके; वलियिन् वाङ्कित्त–अपने बल से लिये गये; तुयक्कु इल्–अथक; कन्तिरुवरै–गन्धर्वों को; तुरन्तु वारिन–(डरा-धमकाकर उनको) भगाकर उनसे लिये गये; नयप्पु उरु चित्तरै–सुलह करनेवाले सिद्धों से; नलिन्तु वव्विन्न–दुख देकर उगाह लिये गये (झण्डे आदि)। ४०८

उनके पास झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने यक्षों के पास से छीन लिया था; दानवों ने युद्धभूमि में छोड़ दिया था; देवों को भ्रमित करके ले लिया था; अथक गन्धर्वों को भगाकर उनसे ग्रस लिया था। वे भी झण्डे आदि थे, जिनको उन्होंने सन्धि करने को उत्सुक सिद्धों को सताकर छीन लिया था। ४०८

कॉडिदळै कविहैवान् दॉड्गल् कुञ्जरम्
पडियुरु पदाहैमी विदानम् बन्मणि
इडैमिळिर् शामरैक् कुळाङ्गॉण् डॅङ्गणुम्
मिडैदलि नुलहॅलाम् वॅयिलि ळन्दवे 409

कॉटि–वस्त्र-झण्डे; तळै–मोरछल; कविकै–छत्र; वान् तॉङ्कल्–बड़े हार; कुञ्चम् मेल् पटि उरु–झालरों से युक्त; पताकै–बड़ी पताकाएँ; मी वितानम्–उच्च वितान; पल् मणि इटै मिळिर्–अनेक रत्न बीच-बीच में चमकते हैं, ऐसे; चामरै कुळाम्–चँवर-समूह; कॉण्टु–इनको लेकर; ॲङ्कणुम् मिटैतलिल्–सब जगह भीड़ लगाते रहे, इसलिए; उलकु ॲलाम्–सारी धरती; वॅयिल् इळन्त–धूप से वंचित हो गई। ४०९

उस विपुल सेना के पास झण्डे थे, मोरछल थे और छत्र थे। बड़े-बड़े हार, झालरों सहित बड़ी-बड़ी पताकाएँ, वितान और ऐसे चामरों की राशियाँ जो रत्नों से सजे थे। ये सब लिये हुए वह सेना भूमि पर सर्वत्र फैली रही। इसलिए भूतल धूप से वंचित रह गया। ४०९

ॲळुवरो डॅळुवर्नी ळुलह मेळॊडेळ्
तळुविय वॅन्ऱियर् तलैवर् तानैयर्
मळुवितर् वाळिनर् वयङ्गु शूलत्तार्
उळुवैयॊ डरियॅन वुडरुज् जीर्ऱत्तार् 410

तानैयिन् तलैवर्–सेनानायक; ॲळुवरोटु ॲळुवर्–सात और सात (चौदह); नीळ् उलकम्–विस्तृत लोक; एळॊटु एळ्–सात और सात; तळुविय–(इनमें) व्याप्त;

वॆन्ऱियर्–विजय के स्वामी; मऴुविन्नर्–परशु; वाळितर्–तलवार; वयङ्कु चूलत्तर्–और उज्ज्वल शूलधारी; उऴुवैयॊटु अरि अॆन्न–व्याघ्र और केसरी के समान; उटऱ्ऱुम्–दुखानेवाले; चीऱ्ऱत्तर्–क्रोधी। ४१०

सेनानायक चौदह थे। उनकी विजय चौदहों भुवनों पर व्याप्त थी। उनके पास परशु तलवारें और चमकदार शूल आदि हथियार थे। वे व्याघ्र और सिंहों के समान लोगो को अपार दुख देनेवाले क्रोधशील राक्षस थे। ४१०

विल्लिनर् वाळिन्न रिदळै मेलिडुम्
पल्लिनर् मेरुवैप् पऱिक्कु माऱ्ऱलर्
पुल्लिन्नर् तिशैदॊरुम् पुरवित् तेरिनर्
शॊल्लिन्न मुडिक्कुरुन् दुणिवि नॆञ्जिनार् 411

विल्लिन्नर्–धनुर्धर; वाळिनर्–तलवारधारी; इतळै मेलिटुम् पल्लिनर्–अधरों पर टिके दाँत वाले; मेरुवै पऱिक्कुम् आऱ्ऱलर्–मेरु को उखाड़ लेने की शक्ति रखनेवाले; पुरवि तेरित्तर्–अश्व-जुते रथ वाले; चॊल्लिन् मुटिक्कुरुम्–कहे हुए कार्य को पूरा करने का; तुणिविन् नॆञ्चिन्नार्–साहस रखनेवाले मन के; तिचै तॊरुम्–सभी दिशाओं में; पुल्लित्तर्–आ जुटे। ४११

वे सेनानायक धनुष और तलवारों से लैस थे। उनके दाँत अधरों को काट रहे थे। मेरु को भी उखाड़ सकनेवाले वे अश्व-जुते रथों पर सवार थे। जो कहते वही कर दिखाने का साहस रखते थे। वे सभी दिशाओं में घेरकर खड़े रहे। ४११

तूडणन् ऱिरिशिरात् तोऩ्ऱ लादियर्
कोडणै मुरशिन्नङ् गुळिरुञ जेनैयर्
आडव रुयिर्हव रलङ्गल् वेलिनार्
पाडव निलैयिन्नर् पलरुञ् जुऱ्ऱिनार् 412

आटवर् उयिर् कवर्–(सामने लड़नेवाले) वीरों की जान हर लेनेवाली; अलङ्कल् वेलिनार्–माला से अलंकृत बर्छी वाले; पाटव निलैयित्तर्–पटु स्थिति में रहनेवाले; कोटणै मुरचु इन्नम्–गम्भीर नादयुक्त ढोलों के समूह; कुळिरुम्–जिसमें ठनक उठते थे, ऐसी; चेनैयर–सेना वाले; तूटणन् तिरिचिरा तोऩ्ऱल् आतियर्–दूषण, त्रिशिरा आदि नायकों को पुरस्सर करते हुए; पलरुम्–अनेक सेनानी; चुऱ्ऱित्तार्–आ जुटे। ४१२

उनके पास माला से अलंकृत भाले थे, जो सामने आये शत्रुओं के प्राण हर लेते थे। वे दक्षता में वढ़ी-चढ़ी स्थिति में थे। उनके पास बड़ी सेनाएँ थीं, जिनमे ढोलो की उच्च ठनक सुनाई देती थी। दूषण, त्रिशिरा आदि अधिपतियों को पुरस्सर करके वे आ एकत्र हुए। ४१२

आत्तृमै यॅरिपडै यळुवत् तार्हलि, वान्ऱॊडर् मेरुवै बळैत्त दामॅत्त
ऊन्रिन तेरित्त नुयर्न्द तोळिनत्, तोन्ड्रिन्न् करन्नमन् ऱुणुक्क मॅय्दवे 413

आत्तुरु अमै–खूब मिली रही; ऍरि पटै–शत्रुघातक सेनाएँ रूपी; अळुवत्तु आर् कलि–गम्भीर सघोष सागर; वान् तॊटर् मेरुवै–गगनस्पर्शी मेरु को घेर आया हो, ऐसा; ऊन्रिय तेरित्तन्–मध्य में स्थापित रथ वाला; उयर्न्त तोळित्तन्–उन्नत भुजाओं वाला; करन्–खर; नमन् तुणुक्कम् ऍय्त–यम को आतंकित करते हुए; तोन्रित्तन्–प्रकट हुआ (दिखाई दिया)। ४१३

वे सेनाएँ, जो बड़ी थीं और वीरों से भरी थी, गम्भीर समुद्रों के समान थीं। उनके मध्य खर का रथ स्थापित था। यह दृश्य ऐसा लगा, मानो समुद्र ने मेरु को घेर लिया हो! वह रथ आकाश तक ऊँचा था और मेरु के समान था। उसमें बैठे हुए उन्नत कंधों वाला खर, यम को भी भयभीत करते हुए दिखाई दिया। ४१३

अशुम्बुरु मदहरि पुरवि याडहत्, तशुम्बुरु शयन्दत्त मरक्कर् ताडर
विशुम्बुरु तूळियाल् वॅण्मै मेयित्त, पशुम्बरि पहलवन् बॅम्बॉर् ट्रेररो 414

अचुम्पु उरु–मद बहानेवाले; मत करि–मत्तगज; पुरवि–अश्व; आटक तचुम्पु उरु–स्वर्णकलशों वाले; चयन्तनम्–स्यंदन; अरक्कर् ताळ्–पदाति राक्षस वीरों के; ताळ्–अपने पैरों से; तर–उठनेवाली; विचुम्पु उरु तूळियाल्–व आकाश पर जमी धूलि से; पकलवन्–दिनकर के; पचुम् करि–हरे घोड़े; पॆम् पॊन् तेर्–व चोखे स्वर्ण का रथ; वॆण्मै मेयित्त–धवलता से ढक गये। ४१४

मद बहानेवाले मत्तगज, अश्व, स्वर्णकलशों वाले रथ, पदाति के राक्षस वीर—इन सबके पदाघात से धूलि जो उड़ी, उससे दिनकर के हरे घोड़ों और स्वर्णरथ पर भी धवलता छा गयी। यानी वे श्वेत दिखे। ४१४

वत्तन्दुहळ् पट्टत्त मलैयित् वानुयर्, कत्तन्दुहळ् पट्टत्त कडलृह डूर्न्दत्त
इत्तन्दोंहु तूळिया लिशॅप्प दॅन्तिन्रिच्, चित्तन्दोंहु नॅडुङ्गडर् चेत्तै शॅल्लवे 415

चित्तम् तॊकु–उमड़ते क्रोध की; नॆटुम् कटल् चेत्तै–विशाल सागर-सी सेना; चॆल्ल–जब (जनस्थान से पंचवटी की ओर) चली तब; इनम् तॊकु तूळियाल्–विपुल राशि में उठी धूलि से; वत्तम्–वे वन; तुकळ् पट्टत्त–सर्वत्र धूलि से ढक गये; वान् उयर्–आकाश में ऊँचे उठे; मलैयित् कत्तम्–पर्वतों पर के घन; तुकळ् पट्टत्त–धूलि से भर गये; कटल्कळ्–समुद्र; तूर्न्तत्त–भरकर धरती बन गये; इति ॲन् इचैप्पतु–आगे क्या कहा जाय। ४१५

जब क्रोधोन्मत्त, विशाल सागर-सम सेना जनस्थान से पंचवटी जाने लगी, तब धूलि की राशि इतनी उठी कि वन सब धूलिधूसरित हो गये। आकाशस्पर्शी पर्वतों पर के मेघ ढक गये। समुद्र भी पटकर धरती बन गये। इससे बढ़कर क्या कहा जाय? । ४१५

निलमिशै विशुम्बिडै नॆरुक्क लानॆट्टु
मलैमिशै मलैयिनम् वरुव पोन्मलैत्
तलैमिशैत् तलैमिशैत् ताविच् चॆन्ऱनर्
कॊलैमिशै नञ्जॆनक् कॊदिक्कु नॆञ्जिनार् 416

कॊलै मिचै–मारने के उत्साह में; नञ्चु अॆन–विष के समान; कॊतिक्कुम् नॆञ्चिऩार्–खौलते मन वाले; निलमिचै–भूमि पर; विचुम्पु इटै–आकाश पर; नॆरुक्कलाल्–स्थानाभाव हो जाने से; नॆट्टु मलै मिचै–बड़े पर्वतों पर; मलै इऩम् वरुव पोल्–पर्वत-समूह आ रहा हो, ऐसा; मलै तलै मिचै तलै मिचै–पर्वत-शिखर से शिखर पर; तावि चॆऩ्ऱऩर्–लपकते चले। ४१६

युद्ध में शत्रुसंहार करने के उत्साह के साथ, खौलता विष-सम मन लेकर जो वीर जा रहे थे, उनको पर्वतों के शिखरों पर चलनेवाले अन्य पर्वतों के समान शिखर से शिखर उछलकर जाना पड़ता था; क्योंकि सारी भूमि वीरों से भर गयी थी। ४१६

❀ वन्दडु शेनै वॆळ्ळम् वळ्ळियोन् मरुङ्गिन् माया
वन्दमा विनैयम् माळप् पट्रऱ पॆट्रि योर्क्कुम्
उन्दरु निलैय दाहि युडनुऱैन् दुयिर्हळ् डम्मै
अन्दहर् कळिक्कु नोय्पो लरक्किमुन् नाह वम्मा 417

माया–अनंत; पन्त मा विनैयम्–बन्धन जो कर्म हैं, उनके; माळ–मिटने पर; पट्रु अऱ–राग-हीन; पॆट्रियोर्क्कुम्–श्रेष्ठ ज्ञानियों के लिए भी; उन्तु अऱ निलैयतु आकि–अप्रतिहत बन; उटऩ् उऱैन्तु–शरीर के साथ रहकर; उयिर्कळ् तम्मै–जीवों को; अन्तकऱ्कु अळिक्कुम्–यम के हाथ सौंप देनेवाले; नोय् पोल्–रोग के समान; अरक्कि मुऩ्ऩाक–राक्षसी शूर्पणखा को आगे करके; वळ्ळियोऩ् मरुङ्किऩ्–उदार प्रभु के पास; चेऩै वॆळ्ळम् वन्ततु–सेना-प्रवाह आया। ४१७

वह सेना-सागर प्रभु श्रीराम के सम्मुख आ गयी। उसको शूर्पणखा आगे रहकर ले आयी। वह उस रोग के समान थी, जो कर्मवन्धननाशक रागरहित ज्ञानियों के लिए भी अप्रतिहत बनकर शरीर के साथ रहता है और जीवों को यम के हाथ सौंप देता है। ४१७

तूरियक् कुरलिन् वानिन् मुहिर्कणन् दुणुक्कङ् गॊळ्ळ
वार्शिलै यॊलियि नञ्जि युरुमॊरु मरुक्कङ् गॊळ्ळ
आर्हलि तानु मुट्कि यशैवुऱ वरक्कर् शेनै
पोरुवन् दिरुन्द वीर नुऱैविडम् बुक्क दन्ऱे 418

तूरिय कुरलिऩ्–बाजों के नाद से; वाऩिऩ् मुकिल् कणम्–आकाश के मेघ-समूहों को; तुणुक्कम् कॊळ्ळ–कँपाते हुए; वार् चिलै ऒलियिऩ्–लम्बे धनुष की टंकार की ध्वनियों से; अञ्चि–डरकर; उरुम्–वज्र भी; ऒरु मरुक्कम् कॊळ्ळ–व्यग्र हों,

ऐसा; आर् कलि तानुम्–गरजते सागर भी; उट्कि–भीतर से काँपकर; अचैवु उङ्–उद्वेलित हों, ऐसे; अरक्कर् चेत्तै–राक्षस-सेना; पोर् उवन्नु इरुन्त–युद्ध की सानन्द प्रतीक्षा में जो रहे; वीरन्–श्रीरघुवीर के; उर्रैवु इटम्–रहने के स्थान को; पुक्कतु–जा पहुँचीं। ४१८

मारू बाजे बजे और आकाश के मेघसमूह वह सुनकर काँप उठे। दीर्घ धनुषों की टंकारें निकलीं तो वज्र भी उनसे डर गये और समुद्र भी भीतर से उद्वेलित होकर मथ गये। इस ठाट-बाट के साथ वे राक्षस-सेनाएँ उस पर्णशाला के पास आयीं, जिसमें रघुकुलवीर श्रीराम युद्ध की, आनन्द के साथ प्रतीक्षा करते हुए रह रहे थे। ४१८

वायुवुलर्न् दळिन्द मॅय्यिन् वरुत्तत्त वळियिल् याण्डुम्
ऑय्विल निमिर्न्दु वीङ्गु मुयिर्प्पित्त वूलैन्द कण्ण
तीयवर् शेत्तै वन्दु शेर्न्दमै तॅरियच् चॅन्रु
वेय्दॅरिन् दुरैप्प पोन्र पुळ्ळोडु विलङ्गु मम्मा 419

पुळ् ओटु विलङ्कुम्–पक्षी और जानवर; वाय् पुलर्न्तु–मुख सूखकर; अळिन्त–मिटे जो; मॅय्यिन् वरुत्तत्त–शरीर में रुग्ण हुए जो; वळियिल् याण्टुम् ओय्वु इल–मार्ग में कहीं विश्राम न लेकर; निमिर्न्तु वीङ्कुम् उयिर्प्पित्त–मुख ऊपर कर लम्बी साँसें छोड़नेवाले; उलैन्त कण्ण–प्रभाहीन आँख वाले; तीयवर् चेत्तै वन्तु चेर्न्तमै–खलों की सेना के आगमन का समाचार; तॅरिय चॅन्रु–पहले जानकर दौड़कर; वेय् तेरिन्तु उरैप्प पोन्र–चर जाकर खबर देते हों जैसे (बने)। ४१९

इस विपुल सेना से आक्रांत होकर पक्षी और जानवर भागे। उनके मुख भय के मारे सूख गये। शरीर रुग्ण हो गये। बीच में वे कहीं विश्राम नहीं कर सके। मुख ऊपर उठाकर लम्बी साँसें छोड़ते हुए वे भागे और उनकी आँखें प्रभाहीन हो गयीं। वे चरों का काम करते हुए बुरे लोगों की सेना के आगमन की खबर सुनाने आये हों —ऐसे भागते आये। ४१९

तूळियिन् पडलै वन्दु तॉडर्वुर मरमुन् दूरुम्
ताळिडै यॉडियु मोशै शडशड वॉलिप्पक् कानत्
ताळियु मरियु मञ्जि यिरिदरु ममलै नोक्कि
मोळिमॉय्म् बित्तरुञ् जेत्तै मेल्वन्द दुळदॅन् रुन्ना 420

तूळियिन् पटलै–धूलि-पटल; वन्तु तॉटर्वु उर–आकर जमे, इसलिए; मरमुम् तूरुम्–पेड़ और झाड़; ताळ् इटै–उनके पैरों के नीचे; ऑटियुम् ओचै–टूटते हैं, वह नाद; चटचट ऑलिप्प–तड़-तड़ शब्द उठाते हैं; कानत्तुतु–वन में; आळियुम् अरियुम्–शरभ और सिंह; अञ्चि–डरकर; इरि तरुम्–दूर भागते हैं; अमलै नोक्कि–वह शब्द सुनकर; मोळि मॉय्म्पित्तरुम्–सबल भुजा वाले श्रीराम और लक्ष्मण भी; चेत्तै मेल् वन्तु उळतु–सेना हम पर चढ़ आई है; ऍन्रु उन्ना–यह सोचकर। ४२०

धूलिपटल आकर तरुओं और झाड़ों पर जम गया। वे वीरों के पैरों के नीचे और मध्य पड़कर टूटे। उस तड़-तड़ शब्द से शरभ और सिंह डरकर भागे। उनके हड़बड़ाकर भागने का शोर सुनकर सबल कंधे वाले वीरों (श्रीराम और लक्ष्मण) ने ताड़ लिया कि सेना हम पर चढ़ आयी है। (ऐसा सोचकर —)। ४२०

❀ मरम्बडर् कान्न नॅङ्गु मदर्बड वन्द शेनै
करन्बडै यॅन्ब दॅण्णिक् करुनिऱक् कमलक् कण्णन्
शरम्बडर् पुट्टिल् कट्टिच् चावमुन् दरित्तान् ऱळ्ळा
उरम्बडर् तोळिन् मीळाक् कवशमिट् टुडैवा ळार्त्तान् 421

मरम् पटर् कान्नम् अॅङ्कुम्–तरुसंकुल वन में सर्वत्र; अतर् पट–मार्ग बनाते हुए; वन्त चेनै–जो सेना आई वह; करन् पटै अॅन्पतु–खर की सेना है, यह; करु निऱ–नीले वर्ण के; कमल कण्णन्–कमलाक्ष श्रीराम ने; अॅण्णि–निश्चय करके; चरम् पटर् पुट्टिल् कट्टि–शरबहुल तूणीर बाँधकर; चापमुम् तरित्तान्–धनुष भी उठा लिया; तळ्ळा उरम् पटर्–अटल वीरता से युक्त; तोळिन्–कन्धों पर; मीळा–अटूट; कवचम् इट्टु–कवच बाँधकर; उटैवाळ् आर्त्तान्–कटार बाँध ली। ४२१

कमलाक्ष और नीलवर्ण श्रीराम ने यह भी निश्चय कर लिया कि वन में सर्वत्र मार्ग बनाते हुए जो आयी है, वह विपुल सेना खर की है। उन्होंने युद्ध में जाने की तैयारी की। तूणीर, चाप, अक्षय सबल कंधों से कसा हुआ कवच और तलवार आदि को यथोचित रीति से यथास्थान धारण कर लिया। ४२१

मिन्निन्ऱ शिलैयन् वीरक् कवशत्तन् विशित्त वाळन्
पॊन्निन्ऱ वडिम्बिन् वाळिप् पुट्टिलन् पुहैयु नॅञ्जन्
इन्निन्ऱु काण्डि यान्शॅय् निलैयॅन्न विरुम्बि नेरा
मुन्निन्ऱ पिन्वन् दानै नोक्किनन् मॊळिय लुऱ्ऱान् 422

मिन् निन्ऱ चिलैयन्–बिजली ने धनु का रूप धर लिया हो, ऐसे धनुष के धारक; वीर कवचत्तन्–वीरोचित कवच से अलंकृत; विचित्त वाळन्–बँधी हुई तलवार वाले; पॊन् निन्ऱ वटिम्पिन्–स्वर्णमय कोरों के; वाळि पुट्टिलन्–तूणीर वाले; पुकैयुम् नॅञ्चन्–क्रोधाग्नि के धुएँ से भरा मन वाले (लक्ष्मण); विरुम्पि–(स्वयं जाना) चाहकर; यान् चॅय् निलै–मेरे (युद्ध) कार्य की स्थिति; इन् इन्ऱु काण्टि–आज अभी देखिए; अॅन–कहकर; मुन् नेरा निन्ऱ–जो अग्रस्थ हुए उन; पिन् वन्तानै–अनुज को; नोक्किनन्–देखकर; मॊळियल् उऱ्ऱान्–कहने लगे। ४२२

तब लक्ष्मण उनके सामने आये। बिजली के अवतार-सा धनुष, वीरोचित (दृढ़) कवच, तलवार, स्वर्णमुख तूणीर आदि के साथ मन में धुआँ निकालनेवाली कोपाग्नि लेकर जो आये, उन्होंने श्रीराम से कहा कि आज मेरा युद्ध-सामर्थ्य देखिए। ऐसा कहते हुए अग्रस्थ अनुज से श्रीराम बोले। ४२२

नॆऱिक्कॊण्मा दवर्क्कु मुऩ्ऩे नेर्न्दऩॆ निरुद रावि
पऱिक्कुवॆऩ् याऩे यॆऩ्ऩु मम्मॊऴि पऴुदु ऱामे
वॆऱिक्कॊऴ्बूङ् गुऴलि ऩाळै वीरऩे वेण्डि नेऩ्याऩ्
कुऱिक्कॊण्डु कात्ति यिऩ्ऩे कॊल्वॆऩिक् कुऴुवै यॆऩ्ऱाऩ् 423

नॆऱि कॊळ् मातवर्क्कु–तपोमार्गरत महान तपस्वियों को; मुऩ्ऩे नेर्न्तऩॆऩ्–पहले ही (मैंने) वचन दिया है; याऩे निरुतर् आवि–मैं ही राक्षसों की जान; पऱिक्कुवॆऩ्–हरूँगा; ऎऩ्ऩुम् अ मॊऴि–ऐसा वह वचन; पऴुतु उऱामे–व्यर्थ न जाए; यान् वेण्टिऩेऩ्–मैं याचना करता हूँ; वीरऩे–हे वीर; वॆऱि कॊळ्–सुगन्ध-युक्त; पू कुऴलिऩाळै–पुष्पालंकृत केश वाली (सीताजी) की; कुऱि कॊण्टु कात्ति–सावधानी से रक्षा करो; इ कुऴुवै ऎल्लाम्–इन सेनादलों को; इऩ्ऩे कॊल्वेऩ्–अभी मार देता हूँ; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा (श्रीराम ने)। ४२३

लक्ष्मण ! मैंने तपोरत महात्मा मुनिवरों को वचन दिया है कि मैं उन राक्षसों के प्राण हरूँगा। वह वचन वृथा न हो यही मैं तुमसे याचना करता हूँ। वीर लक्ष्मण ! तुम सुबासित केश वाली सीता की सावधानी से रक्षा करते रहो। मैं अभी इन दलों का नाश किये देता हूँ। ४२३

❀ मीळरुञ् जॆरुविल् विण्णु मण्णुमॆऩ् मेल्वन् दालुम्
नाळुलन् दऴियु मऩ्ऱे नाऩुनक् कुरैप्प दॆऩ्ऩे
आळियिऩ् मॊय्म्बि ऩायिव् वमरॆऩक् करुळि यिऩ्ऱॆऩ्
तोळिऩैत् तिऩ्ऩुहिऩ्ऱ शोम्बिनैत् तुडैत्ति यॆऩ्ऱाऩ् 424

आळियिऩ् मॊय्म्पिऩाय्–शरभ-समान बली; विण्णुम् मण्णुम्–आकाशलोकवासी और पृथ्वीवासी; मेल् वन्तालुम्–मुझ पर चढ़ आएँ तो भी; मीळ् अरुम् चॆरुविल्–जिससे लौट जाना मुश्किल है, उस युद्ध में; नाळ् उलन्तु–(आयु के) दिन खोकर; अऴियुम् अऩ्ऱे–मर जायँगे न; नाऩ् उऩक्कु उरैप्पतु ऎऩ्ऩे–मैं तुमको कहूँ क्या; इ अमर् ऎऩक्कु अरुळि–यह युद्ध मुझे दे दो; ऎऩ् तोळिऩै तिऩ्ऩुकिऩ्ऱ–मेरे कन्धों को खानेवाले; चोम्पिऩै–आलस्य को; तुटैत्ति ऎऩ्ऱाऩ्–मिटाओ, कहा। ४२४

श्रीराम ने आगे कहा। शरभ-सम बली भाई ! क्यों डरते हो ? आकाश और भूलोकवासी सभी चढ़ आवें तो भी उनकी आयु शेष नहीं रहेगी और वे समाप्त हो जायँगे। तुमसे अधिक क्या कहूँ ? यह युद्ध मुझे प्रदान करने की कृपा करो। मेरे कंधों को आलस्य से (युद्धाभाव पर) उत्पन्न क्लेश खा रहा है। उसको मिटा दो। [इसको लक्ष्मण का कहा माननेवाले भी हैं। उनको 'प्रदान करने की कृपा करो' की प्रार्थना श्रीराम के मुख से निकली मानना असह्य है। विवाद में हम नहीं पड़ेंगे। वही अर्थ लिया गया तो आगे के ४२५वें पद्य में 'ऎऩ्ऱलुम्' जो है, जिसका अर्थ 'कहने पर' है। उसका पाठान्तर ऎऩ्ऱऩऩ् (कहा) होगा]। ४२४

❀ अँन्ड्रलु मिळैय वीर निशैन्दन निराम नॅन्दु
कुन्ड्रन्न तोळि नाट्ड्र लुळ्ळत्ति नुणरक् कॉण्डान्
अन्ड्रियु मण्ण लाणै मरुक्किल नङ्गै कूप्पि
निन्ड्रन्न निरुन्दु कण्णीर् निलम्बुहप् पुलर्हिन् ड्राळ्बाल् 425

अँन्ड्रलुम्–यह कहने पर; इळैय वीरन्–वीर अनुज ने; इचैन्ततन्–मान लिया; इरामन् एन्नुम् कुन्ड्र अन्न–श्रीराम के पर्वत के समान; तोळिन् आट्ड्रल्–कन्धों का बल; उळ्ळत्तिन् उणर कॉण्टान्–मन में समझ लिया; अन्ड्रियुम्–और भी; अण्णल् आणै मरुक्किलन्–प्रभु की आज्ञा अस्वीकार नहीं की; इरुन्तु–(पर्णशाला में) रहकर; कण् नीर्–अश्रुजल; निलम् पुक–भूमि को पहुँचाते हुए; पुलर्किन्ड्राळ् पाल्–दुखनेवाली देवी के पास; अम् कै कूप्पि–सुन्दर हाथ जोड़े; निन्ड्रतन्–खड़े रहे। ४२५

श्रीराम के यह कहने पर लघुभ्राता सहमत हो गये। उन्होंने श्रीराम के पर्वत से उन्नत स्कन्धों की शक्ति का भी स्मरण कर लिया। और भी ज्येष्ट भ्राता है, उनकी बात अस्वीकार करना नहीं चाहा। इसलिए वे पर्णशाला में अंजलिबद्ध हो आँखों से आँसू बहाती हुई रहने वाली सीता की रक्षा में खड़े रहे। ४२५

❀ कुळैयुरु मदियम् बूत्त कॉम्बन्नाळ् कुळैन्दु शोरत्
तळैयुरु शालै निन्ड्रुम् तनिच्चिलै तरित्त मेरु
मळैयॅन्न मुळङ्गु हिन्ड्र वाळॅयिड् ड्ररक्कर् काण
मुळैयिनिन् ड्रॅळुन्दु शॅल्लु मडङ्गलिन् मुनिन्दु शॅन्ड्रान् 426

कुळै उरु–कुण्डलधारिणी; मतियम् पूत्त–चन्द्र जैसा वदन जिस लता का खिला फूल हो, ऐसी; कॉम्पु अन्नाळ्–लता-सदृश सीताजी; कुळैन्तु चोर–मुरझाकर शिथिल हुईं; तळै उरु चालै निन्ड्रुम्–पर्णशाला से; तनि चिलै तरित्त–अनुपम धनु लिये हुए; मेरु–मेरुपर्वत (श्रीराम); मळै अॅन्न मुळङ्कुकिन्ड्र–मेघ के समान शोर मचानेवाले; वाळ् अॅयिड्रु–खड्ग-समान दाँत वाले; अरक्कर् काण–राक्षसों को देखने देते हुए; मुळैयिन् नितुरु–गुफा से; अॅळुन्तु चॅल्लुम्–निकल आनेवाले; मटङ्कलित्–सिंह के समान; मुनिन्तु चॅन्ड्रान्–क्रोध के साथ गये। ४२६

सीताजी कुण्डल-पत्र और चन्द्रवदनमुख-सुमन के साथ लता के समान रहीं। वह लता अब मुरझायी। उनको उसी दशा में छोड़कर श्रीराम पर्णशाला से बाहर आये। उनके हाथ में अनुपम कोदण्ड था। वे मेरु-सम लगे। उनको मेघों के समान शोर मचानेवाले खड्गवक्रदन्त राक्षसों ने देखा। श्रीराम गुफा से निकलकर आनेवाले सिंह के समान कोप के साथ उनके सामने गये। ४२६

तोन्ड्रिय तोन्ड्र रन्नॅच् चुट्टिनळ् काट्टिच् चॉन्नाळ्
वान्ड्रोडर् मूङ्गि ड्रन्द वयङ्गुवॅन् दीयदॅन्नत्

तान्ऱ्ोंडर् कुलत्तै यॅल्लान् दॉलैक्कुमा शमैन्दु निन्ऱाळ्
ॲन्ऱुवन् दॅदिर्न्द वीर निवनिह लिराम नॅन्ऱे 427

तोन्ऱिय–ऐसे प्रकट हुए; तोन्ऱल् तन्नै–प्रभु श्रीराम को; वान् तॊटर् मूङ्किल् तन्त–आकाश तक उन्नत बाँसों (के रगड़ने) से उत्पन्न; वयङ्कु वॅम् ती अतु ॲन्नत–जलनेवाली भयंकर आग ही सम; तान् तॊटर् कुलत्तै ॲल्लाम्–अपने रिश्ते के सारे कुल को; तॊलैक्कुम् आ चमैन्तु निन्ऱाळ्–मिटाने के काम में जो प्रवृत्त रही; चुट्टितळ् काट्टि–संकेत करके; एन्ऱु वन्तु–युद्धसन्नद्ध हो जो आया है; ॲतिर्न्त वीरन्–और सामने प्रकट हुआ है वीर; इवन्–यह; इकल् इरामन्–शत्रु राम है; ॲन्ऱु चॊन्नाळ्–ऐसा कहा। ४२७

आकाश तक उन्नत बाँसों का नाश वही अग्नि कर देती है जो उन्हीं से (उनके आपस में हवा के कारण टकराने से) उत्पन्न होती है, वैसे ही यह शूर्पणखा भी अपने कुल की नाशक शक्ति निकली। वह मानो उस कार्य में दत्तचित्त और तत्पर रही। ऐसी उसने उनके सामने प्रकट हुए श्रीराम को अपने हाथ के इशारे से दिखाया और कहा कि देखो ! जो युद्धसन्नद्ध होकर सामने आ रहा है वही वीर राम है, जिसने हमारे साथ वैर ठाना है ! । ४२७

कण्डनन् कनहत् तेर्मेऱ् कदिरवन् कलङ्गि नीङ्ग
विण्डन निन्ऱ वॅन्ऱिक् करत्तॆनुम् विलङ्गऱ् ऱोळान्
मण्डमर् यानॆ शॅय्दिम् मानिडन् वलियै नीक्किक्
कॊण्डनॆन् वाहै यॅन्ऱु पडैञरैक् कुऱित्तुच् चॊन्नान् 428

कनक तेर् मेल्–स्वर्ण-रथ पर; कतिरवन्–सूर्य; कलङ्कि–व्यग्र होकर; नीङ्क–हटे; विण्टतन् निन्ऱ–वैर के साथ स्थित; वॆन्ऱि–विजयशील; करन् ॲन्नुम्–खर नाम के; विलङ्कल् तोळान्–पर्वत-सम कन्धों वाले ने; कण्टनन्–श्रीराम को देखा (देखकर); पटैञरै कुऱित्तु–सेनावीरों को उद्दिश्य करके; यानॆ–मैं स्वयं; मण्टु अमर् चॆय्तु–यह बड़ा युद्ध करके; इ मानिटन् वलियै नीक्कि–इस मनुष्य का बल मिटाकर; वाकै कॊण्टनॆन्–विजय पा लूंगा; ॲन्ऱु–ऐसा; चॊन्नान्–कहा। ४२८

खर भी कम वैर नहीं रखता था। उसके वैर के सामने कनकरथ सूर्य भी डरकर हट गया। पर्वत-सम कन्धे वाले विजयशील खर ने श्रीराम को देखकर अपनी सेना के वीरो से कहा कि मैं ही बड़ा युद्ध करके इस मनुजपुत्र का बल मिटा दूंगा और विजय पाऊँगा। ४२८

मानिड नॊरुवन् वन्द वलिहॆंळु शेनैक् कम्मा
कानिड मिल्लै यॅन्नुङ् गट्टुरै कलन्द कालै
यानुडै वॆन्ऱि यॆन्नाम् यावरुङ् गण्डु निऱ्‌ऱिर्
ऊनुडै यिवनै यानॆ युणगुर्व नुयिरै यॅन्ऱान् 429

मात्तिटन् ऑरुवन्–एक मनुज; वन्त–(उससे लड़ने) आई; वलि कॅळु चेतैक्कु–सशक्त सेना के लिए; कान् इटम् इल्लै–जंगल में स्थान नहीं है; ॲन्नुम्–ऐसी; कट्टुरै–वात; कलन्त कालै–जव फैल जायगी; यान् उटै वॅन्ऱि–मेरी विजय का (महत्त्व); ॲन्नाम्–क्या होगा; यावरुम् कण्टु निऱ्ऱिर्–सव देखते रहो; यान्ते–मै अकेला ही; ऊन् उटै इवनै–(हमारे खाने योग्य) मांसधारी इसको; उयिरै उण्कुवॅन्–प्राण अशन कर लूँगा; ॲन्ऱान्–कहा। ४२९

लोग यह जानने लगें और यह वात फैल जाय कि एक अकेला मनुष्य आया था और उसके विरुद्ध इतनी बड़ी सेना ने युद्ध किया जिसके लिए वन में खड़े होने को भी स्थान नही मिला, तो मेरी जीत का क्या महत्त्व होगा ? इसलिए सव चुप देखते खड़े रहो। अकेला मैं ही इस मांसपिंड का प्राण पी लूँगा। खर ने ऐसा कहा। ४२९

अव्वुरै केट्टु वन्दा नहम्बनॅन् ऱमैन्द कल्विच्
चॅव्विया नॉरुव नैय शॅप्पुवॅन् शॅरुविऱ् चाल
वॅव्विय राद नन्ऱे वीररि लाण्मै वीर
इव्वयि नुळदान् दीय निमित्तमॅन् ऱियम्ब लुऱ्ऱान् 430

अकम्पन् ॲन्ऱु–अकम्पन नाम के; अमैन्त कल्वि चॅव्वियान्–युक्त विद्या-विदग्ध; ऑरुवन्–एक राक्षस ने; अ उरै केट्टु–वह वचन सुनकर; वन्तान्–पास आकर; ऐय–प्रभु; वीररुळ् आण्मै वीर–वीरों में सर्वश्रेष्ठ वीर; चॅप्पुवॅन्–विनय करता हूँ; चॅरुविल् चाल वॅव्वियर् आतल्–युद्ध में वड़ा उत्साही रहना; नन्ऱे–अच्छा ही है; इ वयिन्–इस संदर्भ में; तीय निमित्तम् उळ आम्–वुरे शकुन होते हैं; ॲन्ऱु–कहकर; इयम्पल् उऱ्ऱान्–विस्तार किया। ४३०

यह खर का वचन सुनकर अकंपन नाम का राक्षस सामने आया। वह विद्वान था। उसने कहा—स्वामी ! एक विनयवचन है—सुनाऊँगा। युद्ध में उत्साह दिखाना अच्छा ही है। पर शकुन बुरे दिखते हैं। उसने आगे उस वात का विस्तार किया। ४३०

कुरुदि मामळै शॉरिन्दन मेहङ्गळ् कुमुऱिप्
परुदि वानव नूर्वळैप् पुण्डदु पाराय्
करुदु वीरनिन् गॉडिमिशैक् काक्कैयिन् कणङ्गळ्
पॉरुदु वीऴ्वन पुलम्बुव निलम्बडप् पुरळ्व 431

करुतु वीर–प्रतिष्ठित वीर; मेकङ्कळ् कुमुऱि–मेघ गर्जन करते हुए; कुरुति मा मळै चॉरिन्तन–वड़ी रक्त-वर्षा वरसायी; परिति वानवन्–सूर्यदेव; ऊर् वळैप्पुण्टतु–परिवेश से घिरे हुए हो गये; काक्कैयिन् कणङ्कळ्–कौओं के समूह; निन् कॉटि मिचै–तुम्हारी ध्वजा पर; पॉरुतु वीऴ्वन–आपस में लड़ते हुए गिरते और; पुलम्पुव—चीखते-चिल्लाते हैं; निलम्पट पुरळ्व–भूमि पर गिरकर लोटते हैं; पाराय्–तुम देखो। ४३१

प्रतिष्ठित वीर ! मेघ गरजते हुए रक्तवर्षा कर रहे हैं। सूर्य के परिवेश बना है। काकवृन्द आपस में लड़ते हुए ध्वजा पर गिरते हैं, फिर चिल्लाते हुए नीचे गिरते हैं और भूमि पर गिरकर लोटते हैं। देखो। ४३१

वाळि वायुहळै यीवळैक् किन्ऱन वयवर्
तोळु नाट्टमु मिडनुदुडिक् किन्ऱन तूङ्गि
मीळि मॊयम्बुडै यिवुळिहळ् विळुवन विऱलोय्
जाळि योडुनिन् ऱुळैप्पन नरिक्कुलम् बलवाल् 432

विऱलोय्–विजयी वीर; वाळि वाय्कळै–वाणों के मुखों पर; ई वळैक्किन्ऱन–मक्खियाँ मँड़राती हैं; वयवर्–वीरों की; तोळुम् नाट्टमुम्–भुजाएँ और आँखें; इटम् तुटिक्किन्ऱन–बाईं ओर (की) फड़कती हैं; मीळि मॊय्म्पु उटै–अपार शक्ति वाले; इवुळिकळ्–अश्व; तूङ्कि विळुवन–सोते हुए गिरते हैं; नरि कुलम्–सियारों के झुण्ड; पल–अनेक; ञाळियोटु निन्ऱु–कुत्तों के साथ खड़े होकर; उळैप्पन–रुदन-स्वर में भूंकते हैं; पाराय्–देखो। ४३२

वीर ! वाणों के फलों पर मक्खियाँ मँड़रा रही हैं। वीरों के वाम नेत्र और हाथ फड़क रहे हैं। ताकतवर अश्व सोते और गिर पड़ते हैं। सियारों के झुण्ड आकर कुत्तों से मिल गये हैं और दोनों रुदन कर रहे हैं। तुम देखो। ४३२

पिडियॆ लामदम् बॆय्दिडप् पॆरुङ्गवुळ् वेळम्
ऒडियुम् मान्मरुप् पुलहमुङ् गम्बिक्कु मुयर्वाळ्
इडियुम् वीळ्न्दिडु मॆरिन्दिडुम् बॆरुन्दिशै यॆवर्क्कुम्
मुडियिन् मालैहळ् पुलालॊडु मुळुमुडै नाऱुम् 433

पिटि ऎलाम्–हथिनियाँ, सभी; मतम् पॆय्तिट–मद बहाते हुए; पॆरुम् कवुळ् वेळम्–बड़े-बड़े गण्डस्थल वाले गजों के; माल् मरुप्पु ऒटियुम्–बड़े दाँत टूट जाते हैं; उलकमुम् कम्पिक्कुम्–पृथ्वी में कम्पन होता है; उयर् वान् इटियुम्–ऊँचे आकाश से गाज; वीळ्न्तिटुम्–गिरती है; पॆरुम् तिचै–लम्बी दिशाएँ; ऎरिन्तिटुम्–जलती हैं; ऎवर्क्कुम्–सभी की; मुटियिन् मालैकळ्–सिर की मालाएँ; पुलाल् ऒटु–मांसगन्ध के साथ; मुटै नाऱुम्–दुर्गन्ध निःसृत करती हैं। ४३३

हथिनियाँ मद बहा रही हैं और बड़े गाल वाले हाथियों के दाँत टूट जाते हैं। भूकम्प होता है। आकाश से गाज गिरती है। दिशाएँ जलती हैं। सबके सिर की मालाओं से सड़े मांस की-सी गन्ध और दुर्गन्ध निकलती है। ४३३

इन्नैय वाहलिन् मातिड नीरुवर्नॆत् ऱिवन्नै
निन्नैय लावदिङ् गेळैमै नीयमर्क् कियन्ऱ

विन्नैयॅ लाऱ्ऱॅयदु वॅल्ललान् दन्मैय नल्लन्
पुन्नैयुम् वाहैयाय् पॉरुत्तियॅन् ऩुरॅयॅनप् पुहन्ऱान् 434

पुन्नैयुम् वाकैयाय्–'वाहै' (विजय-सूचक) मालाधारी; इत्तैय आकलिन्–ऐसे हैं (शकुन) इसलिए; इवन्नै–इसको; मानिटन् ऑरुवन्–केवल एक मनुष्य है; अॅन्ऱ–ऐसा; इङ्कु नितैयल् आवतु–यहाँ सोचना; एऴ्मै–अज्ञता होगा; नी अमर्क्कु इयन्ऱ–तुम युद्ध-योग्य; विन्नै अॅलाम् चॅय्तु–सभी कार्य करके; वॅल्लल् आम्–उस पर विजय पाओ; तन्मैयन् अल्लन्–ऐसा मनुष्य नहीं; अॅन् उरै पॉरुत्ति–मेरी बात के लिए क्षमा करो; अॅन पुकन्ऱान्–ऐसा कहा (अकम्पन ने)। ४३४

ये सब बुरे शकुन हैं। ये हो रहे हैं। इसलिए इसको मामूली अल्प मानव समझना अज्ञता होगा। तुम्हारे युद्ध-तन्त्र और सामर्थ्य द्वारा वह जीता जानेवाला नहीं लगता। मैं यह कह रहा हूँ, उसके लिए क्षमा कर दो। अकंपन ने विनय के साथ यों बताया। ४३४

उरैत्त वाशहङ् गेट्टलु मुलहॅला मुलैयच्
चिरित्तु नन्ऱिदॅन् शेवहन् देवरैत् तेय
अरैत्त वम्मिया मलङ्गॅळिऱ् ऱोळमर् वॅण्डि
इरैत्तु वीङ्गुव मानिडर्क् कॅळियवो वॅन्ऱान् 435

उरैत्त वाचकम् केट्टलुम्–(उसका) कहा वचन सुनकर; उलकु अॅलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; चिरित्तु–ठठाकर (हँसकर; तेवरै तेय अरैत्त–देवों को पिचकाते हुए पीसनेवाले; अम्मि आम्–सिल है, ऐसा; अलङ्कु अॅळिल् तोळ्–हिलनेवाले सुन्दर मेरे ये कन्धे; अमर् वेण्टि–युद्ध माँगते हुए; इरैत्तु वीङ्कुव–फूले और उभरे हैं; मानिटर्क्कु अॅळियवो–मनुष्य के लिए अल्प (जेय) हो गये क्या; नम् चेवकम् नन्ऱितु–हमारी वीरता भी बड़ी भली; अॅन्ऱान्–कहा। ४३५

यह सुनते ही खर ऐसा ठठाया कि सारे लोक काँप गये। उसने कहा— अकंपन! इन मेरे अनुपम कन्धों को देखो जो मेरे हँसते समय हिलते हैं। और सिल के समान इनसे देव पिसे और पिचक गये थे। ये फूले हुए पुष्ट कन्धे उस अल्प मानव के लिए क्षुद्र हो गये क्या? हमारी वीरता भी भली रही!। ४३५

अॅन्ननु मात्तिरत् तॅऱिपडै पिडियॅन्न विडिया
मन्नर् मन्नवत् मदलैयै वळैन्दन वळैन्दु
मिन्नुम् वालुळै मडङ्गलै मुनिन्दन वेळम्
तुन्नि नालॅन्नच् चुडुशिनत् तरक्कर्दन् दॉहुदि 436

अॅन्नुम् मात्तिरत्तु–(खर के) यह कहते ही; मिन्नुम् वाल् उळै मटङ्कलै–प्रकाशमय लम्बे अयाल वाले सिंह को; मुनिन्तन–वैर करके; वेळम् वळैन्तु तुन्निनाल् अॅन्न–गजों ने घेर लिया हो, ऐसा; चुटु चिनत्तु–तापक क्रोधशील; अरक्कर् तम् तॉकुति–राक्षसों के दल; अॅऱि पटै–आपस में टकरानेवाले हथियारों के; इटि अॅन्न इटिया–

वज्र के समान नाद करते; मन्नर् मन्नवन् मतलैयै–राजाधिराज के पुत्र श्रीराम को; वळैन्तत–घेर गये। ४३६

खर के यह कहते ही अग्नि के समान क्रोधी राक्षसों की सेना ने आकर चक्रवर्तीसुत श्रीराम को घेर लिया, मानो उज्ज्वल अयाल वाले सिंह से वैर करके गजों ने आकर घेर लिया हो। तब उनके हथियार आपस में टकराये और वज्र के समान नाद पैदा हुआ। ४३६

वळैन्द कालैयिल् वळैन्ददव् विरामन्नगै वरिविल्
विळैन्द पोरैयु मावदुम् विळम्बुदुम् विशैयाल्
पुळैन्द पाय्बरि पुरण्डन्न पुहर्मुहप् पूट्कै
उळैन्द माल्वरै युरुमिडि पडवोंडिन् दॅन्न 437

वळैन्त कालैयिल्–जब घिर गये तब; इरामन् कै वरि विल्–श्रीराम के हाथ का बन्धनयुक्त धनुष भी; वळैन्ततु–झुका; विळैन्त पोरैयुम्–तब जो युद्ध हुआ, उसको; आवतुम्–उसके फल को; विळम्पुतुम्–कहेंगे; विचैयाल् पुळैन्त–अपनी तीव्र गति से जो विद्ध हुए वे; पाय् परि–तीव्रगामी अश्व; पुरण्टन–नीचे गिरकर लोटे; माल् वरै–बड़े-बड़े पर्वत; उरुम् इटि पट–घोर वज्र के गिरने से; ओटिन्तेन्न–टूट जाते हों जैसे; पुकर् मुक पूट्कै–बिन्दियों सहित मुख वाले गज; उळैन्त–दुखी हो गिरे। ४३७

जब वे घेर आये तब श्रीराम ने अपने प्रतापी चाप को झुकाया और युद्ध छिड़ गया। उसके फलस्वरूप क्या-क्या आश्चर्य हुए? हम उनका वर्णन करेंगे। एक दम विद्ध होकर दुलकी चलनेवाले अश्व गिरे और भूमि पर लोटे। गज, जिनके माथाओं पर बिन्दियाँ थीं, ऐसे पर्वतों के समान टूटकर गिरे जिन पर वज्र-पात हुआ हो। ४३७

शूल मर्ऱन वर्ऱन शुडर्मळुत् तोंहैवाळ्
मूल मर्ऱन वर्ऱन मुरट्टण्डु पिण्डि
पाल मर्ऱन वर्ऱन पहळ्विॅम् बहुवाय्
वेलु मर्ऱन वर्ऱन विल्लोडु पल्लम् 438

चूलम् अर्ऱन–शूल कटे; चुटर् मळु तॉकै–उज्ज्वल परशु-वृन्द; अर्ऱन–बेकार हुए; वाळ् मूलम्–तलवारों के मूल; अर्ऱन–छिन्न हुए; मुरण् तण्टु अर्ऱन–सुदृढ़ दण्डायुध नष्ट हुए; पिण्टिपालम् अर्ऱन–भिंडिपाल मिटे; वॅम् पकुवाय्–चीरकर जानेवाले फल के; वेलुम्–भाले भी; अर्ऱन–नष्ट हुए; विल् ओटु पल्लम्–धनुष के साथ बल्लम व्यर्थ हुए। ४३८

और भी राक्षसों के शूल और कान्तियुक्त परशुसमूह नष्ट हुआ। तलवारों के मूल (या रूप) छिन्न हुए। सुदृढ़ दण्डायुध टूटे। भिण्डिपाल, भेदनेवाले शूल, चाप और बल्लम सभी तहस-नहस हुए। ४३८

तॉडितु णिन्दन तोळॊडुन् दोमरन् दुणिन्द
अडितु णिन्दन कडहळि इच्चॊड् नॆडुन्देर्क्
कॉडितु णिन्दन कुरहदन् दुणिन्दन कुलमा
मुडितु णिन्दन तुणिन्दन मुळैयॊडु मुशलम् 439

तॊटि तुणिन्तत–वीरकंकण टूटे; तोळॊटु तोमरम् तुणिन्तत–कन्धों के साथ तोमर खण्ड-खण्ड हुए; कट कळिऱ्ऱु अटि–मत्तगजों के पैर; तुणिन्तत–कटे; नॆटुम् तेर्–बड़े रथ; अच्चॊटु कॊटि–धुरों के साथ ध्वजाएँ; तुणिन्तत–कटीं; कुरकतम् तुणिन्तत–घोड़े कटे; कुल मा मुटि–बड़ी संख्या में एक साथ बड़े किरीट; तुणिन्तत–खण्डित हुए; मुळैयॊटु–मुद्गरों के साथ; मुचलम् तुणिन्तत–मूसल टूटे। ४३९

और भी अंगवलय आदि वलय कटकर गिरे और भुजाओं के साथ तोमर आदि कटे। मत्तगजों के पैर, ऊँचे रथों की धुरियाँ और ध्वजाएँ आदि छिन्न हो गयीं। घोड़े टुकड़े-टुकड़े हुए। दण्ड और मुद्गर छिन्न-भिन्न हुए। ४३९

करुवि मावॊडु कार्मदक् कैम्मलैक् कणत्तो
डुरुवि मादिरत् तोडिन शुडुशर मुदिरम्
अरुवि मालैयिऱ् पिऱङ्गिय दवत्तियि लरक्कर्
तिरुविन् मार्वहन् दिऱन्दन तुऱन्दन शिरङ्गळ् 440

चुटु चरम्–श्रीराम के भयंकर शर; करुवि मा ऒटु–जीन वाले घोड़ों के साथ; कार्–काले; मत कै मलै–मत्तगजों के; कणत्तॊटु–दलों को; उरुवि–आर-पार होकर; मातिरत्तु ओटिऩ–(बाहर निकल) दिशाओं में चले; उतिरम् अरुवि–रक्त नदियों; मालैयिल् पिऱङ्कित–के रूप में बहा; अवत्तियिल्–भूमि में; अरक्कर्–राक्षसों के; तिरु इल् मार्पु अकम्–श्रीहीन वक्षस्थलों को; तिऱन्तत–खोलकर (रक्त) बाहर आया; चिरङ्कळ् तुऱन्तत–सिर (धड़ों से) अलग हुए। ४४०

श्रीराम के सन्तापी शर जीन वाले अश्वों और काले रंग के मत्तगजों को निफरकर आगे सभी दिशाओं मे गए। रक्त की सरिताएँ वह चलीं। शरों ने राक्षसों के श्रीहीन वक्षों को विदीर्ण कर दिया और उनके सिरों को काटकर धड़ों से अलग कर दिया। ४४०

ऑन्ऱु पत्तुनू ऱायिरङ् गोडियॆन् ऱुणरात्
तुन्ऱु पत्तिय विराहवन् शुडशरन् दुरक्कच्
चॆन्ऱु पत्तिरत् तलैयिन मलैदिरण् डॆन्नक्
कॊन्ऱु पत्तियिऱ् कुविन्दन पिणप्पॆरुङ् गुन्ऱम् 441

ऒन्ऱु पत्तु नूऱु–एक, दस, सौ; आयिरम् कोटि–सहस्र, करोड़; ऎन्ऱु उणरा–ऐसा अगण्य; तुन्ऱु पत्तिय–बहुत मिली हुई पंक्तियों में; चुटु चरम्–जला डालनेवाले शरों को; इराकवन् तुरक्क–श्रीराघव ने चलाया तब; चॆन्ऱु–जाकर; कॊन्ऱु–मारकर; पत्तिर तलैयिन्–शरसहित सिरों को; मलै तिरण्ट ऎन्न–पर्वत

एकत्र हुए हों, जैसे; पिण पॅरुम् -कुन्ऱम्–लाशों के बड़े पर्वतों को; पत्तियिल् कुवित्तन–श्रेणियों में लगा दिया (शरों ने)। ४४१

श्रीराघव ने कितने शर लगातार छोड़े ? एक, दस, सौ, हज़ार, करोड़...? कोई गणना नहीं थी ! उनके भयंकर अस्त्र धनुष से छूटे और गये। राक्षस मरे और उनके सिरों पर वे अस्त्र गड़े रहे। उन अस्त्रों के साथ उन राक्षसों की लाशों के ढेर के ढेर पंक्तियों में बन गये। ४४१

काडु कॊण्डहा रुलवैहळ् कायॆरि कदुवच्
चूडु कॊण्डत्त वॆनत्तॊडर् कुरुदिमीत् तोन्ऱ
आडु हिन्ऱन वऱुहुरै ययिलम्बु विण्मेल्
ऒडु हिन्ऱन वुयिरैयुन् दॊडर्वन वॊत्त 442

काट्टु कॊण्ट–वन में भरे; कार् उलवैकळ्–काले ठूँठ; काय् ऍरि कतुव–जलती आग के लगने से; चूट्टु कॊण्टत्त ऍन–गरम हो गए जैसे; अऱु कुऱै–सिर-कटे राक्षसों के कबन्ध; तॊटर् कुरुति मी तोन्ऱ–रक्त की धार के ऊपर उछलते रहने से; आट्टुकिन्ऱत–और नाचते हैं, तब; अयिल् अम्पु–श्रीराम के तीक्ष्ण शर; विण् मेल् ओट्टुकिन्ऱत उयिरैयुम्–आकाश में जानेवाले उनके प्राणों को भी; तॊटर्वत्त ऒत्त–(पकड़ने के लिए) पीछे जाते थे, ऐसे लगा। ४४२

राक्षसों के सिर-रहित कबन्ध नाचे। उनके शरीरों पर से लाल रक्त उछल रहा था। उनको देखकर ऐसा लगता था, मानो वन के ठूँठ आग से जल रहे हों। उछलते रक्त के फौवारे श्रीराम के बाणों के समान दिखे, जो स्वर्गगामी राक्षसों के प्राणों का पीछा कर रहे हों। ४४२

कैहळ् वाळॊडु कळप्पड कळुत्तऱुक् कवश
मॆय्हळ् पोळ्वडत् ताळ्विळ मिहनॆडु निरुदर्
शॆय्य मात्तलै शिन्दिडत् तिशैयुऱच् चॆन्ऱ
तैय लार्नॆडु विळियॆनक् कॊडियन शरङ्गळ् 443

तैयलार् नॆट्टु विळि ऍन–दयिताओं के आयत नेत्रों के समान; कॊटियन–घातक; चरङ्कळ्–श्रीराम के शर; मिक नॆट्टु निरुतर्–बहुत ऊँचे कद के राक्षसों के; कैकळ् वाळॊट्टु कळम् पट–हाथों को तलवारों के साथ युद्धभूमि पर गिराते हुए; कळुत्तु अऱ–गलाओं को काटते हुए; कवच मॆय्कळ्–कवचसहित शरीरों को; पोळ् पट–चीरते हुए; ताळ् विळ–पैरों को काटते; चॆय्य मा तलै चिन्तिट–लाल सिरों को छितराते हुए; तिचै उऱ चॆन्ऱ–दिशाओं में लगे हुए उड़ चले। ४४३

श्रीराम के बाण दयिताओं के आयत नेत्रों के समान थे। वे अत्यन्त भयंकर थे। वे चारों दिशाओं में बड़ा उत्पात मचाते हुए उड़े। ऊँचे कद के राक्षसों के हाथ तलवारों के साथ कटकर गिरे। उन शरों से गर्दनें कटीं। कवच विदीर्ण हुए। बड़े और लाल सिर अलग हुए। ४४३

मारि याक्किय वडिक्कणै वरैपुरै निरुदर्
पेरि याक्कैयिन् पॅरुङ्गरै वयिन्ड्रॊरुम् विड्रङ्ग
एरि याक्किन्न वाड़ह ळाक्किन्न विरैक्कुम्
शोरि याक्किन्न पोक्किन्न वन्नमॅनुन् दॊन्मै 444

मारि आक्किय–वर्षा हो रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करनेवाले; वटि कणै–(श्रीराम के) तीक्ष्ण बाणों ने; वरै पुरै निरुतर्–पर्वत-सम राक्षसों के; पेर् याक्कैयिन्–बड़े शरीरों के (रूपी); पॅरुम् करै–बड़े तटों के; वयिन् तॊरुम् पिड्रङ्क–स्थान-स्थान पर दृश्यमान होते; एरि आक्किन्न–झीलें बनाईं; आड़कळ् आक्किन्न–नदियों की सृष्टि की; इरैक्कुम् चोरि आक्किन्न–उनको खून से भरा बना दिया; वनम् अॅनुम् तॊन्मै पोक्किन्न–वन का प्राचीन प्रकार मिटा दिया। ४४४

श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों की वर्षा ने बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें बनायीं, जिनके तट पर्वत-सम राक्षसों के बड़े शरीरों के बनाये और उनमें रक्त भर दिया। अब वन का प्राचीन रूप बदल गया। ४४४

अलैमि दन्दन्न कुरुदियिन् बॅरुङ्गड लरक्कर्
तलैमि दन्दन्न नॅडुन्दडि मिदन्दन तडक्कै
मलैमि दन्दन्न वाम्बरि मिदन्दन्न वयप्पोर्च्
चिलैमि दन्दन्न मिदन्दन कॊडियॊडु तेर्हळ् 445

अलै मितन्तन्न–लहरें जिसमें उठती थी, उस; कुरुतियिन् पॅरुम् कटल्–रक्त के बड़े सागर पर; अरक्कर् तलै मितन्तन्न–राक्षसों के सिर तैरे; नॅटुम् तटि मितन्तन–लम्बे मांसखण्ड तैरे; तट कै मलै–विशाल हाथों (सूँड़ों) के गज बहे; वाम् परि मितन्तन्न–फाँदकर चलनेवाले अश्व बहे; वय पोर् चिलै मितन्तन्न–सारयुक्त युद्ध-धनु बहे; कॊटि ऒटु तेर्कळ् मितन्तन–ध्वजाओं-सहित रथ बहे। ४४५

रक्त का सागर-सा बन गया और उस पर तरंगें भी उठीं। उस रक्त पर राक्षसों के सिर, उनके बड़े-बड़े मांसखण्ड, अनेक करी, अश्व, बलवान चाप और ध्वजाओं के साथ रथ उतराये। ४४५

आय कालैयि लन्नल्विळित् तार्त्तिरैत् तरक्कर्
तीय वार्हणै मुदलिय तॅरुशिनप् पडैहळ्
मेय माल्वरै यॊन्ड्रिनै वळैत्तिन मेहम्
तूय तारैहळ् शॊरिवन वामॅन्नच् चॊरिन्दार् 446

आय कालैयिल्–तब; अरक्कर्–राक्षसों ने (जो बचे रहे); मेय माल् वरै–स्थायी, बड़े एक पर्वत; ऒन्ड्रिनै–एक को; इन्न मेकम् वळैत्तु–श्रेणीबद्ध मेघ घेरकर; तूय तारैकळ् चॊरिवन्न आम्–शुद्ध धारें गिरा रहे हों; अॅन्न–ऐसा; तीय वार् कणै–भयंकर लम्बे अस्त्र; मुतलिय–आदि; चिन्न तॅरु पटैकळ्–क्रोध के साथ फेंके, घातक हथियार; चॊरिन्दार्–बरसाये। ४४६

तब राक्षसों ने श्रीराम को घेर लिया और भयंकर अस्त्र आदि

चलाये। वह दृश्य ऐसा था, मानो मेघों के समूहों ने एक पर्वत को घेर लिया हो और वे उस पर शुद्ध जलधारें बरसा रहे हों। राक्षसों ने क्रोध के साथ अस्त्र चलाये और वे अस्त्र भयंकर और घातक थे। ४४६

शॊरिन्द पल्पडै तुणिबडत् तुणिबडच् चरत्ताल्
अरिन्दु वॆन्दन्न शिन्दिडत् तिशैतिशै यहट्ट्रि
नॆरिन्दु पार्मह णॊळिवुट्र वन्मुट्रु निट्रैय
विरिन्द शॆम्मयिर्क् करुन्दलै मलैयॆन्न वीळ्त्तान् 447

चरत्ताल्–शरों द्वारा (श्रीराम ने); चॊरिन्त पल् पटै–(राक्षसों के) बरसाये अनेक हथियारों को; तुणि पट तुणि पट—आते-आते खण्डित करके; अरिन्तु–काटकर; वॆन्तत्त चिन्तिट–जलाकर छितराया; तिचै तिचै अकट्ट्रि—दिशा-दिशा में फिकवा दिया; पार् मकळ्–भूदेवी को; नॆरिन्तु नॆळिवु उट्र–कुचलकर झुकने देते हुए; वतम् मुट्रुम् निट्रैय–सारे वन को भरते हुए; विरिन्त चॆम्मयिर्–बिखरे लाल केशों के; करुम् तलै–काले सिरों को; वीळ्त्तान्–गिराया। ४४७

श्रीराम ने अपने शरों से उन हथियारों को, जो राक्षसों द्वारा अत्यधिक परिमाण में उन पर चलाये गये, आते-आते काट दिया। उनको जलाकर छितराया। उनको सभी दिशाओं में दूर-दूर तक फेंक दिया। उन्होंने राक्षसों के लाल बालों से भरे काले सिरों को काट गिराया। उन सिरों की इतनी भारी संख्या थी कि उनके भार से भूदेवी कुचल गयीं और वह लचक गयीं। वन में सर्वत्र सिर ही सिर दिखाई दिये। ४४७

कवन्द पन्दङ्गळ् कळित्तन्न कुळित्तकैम् मलैहळ्
शिवन्दु पायन्दवॆङ् गुरुदियिऱ् ट्रिरुहिन्न शिन्नत्ताल्
निवन्द वॆन्दॊळि निरुदर्दम् नॆंडुनिणन् दॆविट्टि
उवन्द वन्गळु दुयिर्शुमन् दुळुक्किय दुम्बर् 448

कवन्त पन्तङ्कळ्–कवन्धराशियाँ; कळित्तन्न–मुदित हुए; कै मलैकळ्–'सूँड़ वाले पर्वत' (करी); चिवन्तु पायन्त वॆम् कुरुतियिल्–लाल और बहते रक्त-प्रवाह में; कुळित्त–नहाये; तिरुकित्त चितत्ताल्–भयंकर क्रोध के कारण; निवन्त–उभरे; वॆम् तॊळिल्–भयंकर काम करनेवाले; निरुतर् तम्–राक्षसों के; नॆंटु निणम्–अधिक मांसों को खाकर; तिवट्टि–अघाकर; वन् कळुतु–बलवान प्रेत; उवन्त–हर्षित हुए; उम्पर–देवलोक; उयिर् चुमन्तु–(राक्षसों के) प्राणों को ढोते हुए; उळुक्कियतु–लचक उठा। ४४८

भयंकर युद्ध में कबन्धराशियाँ मुदित हुईं। करी रक्त-प्रवाह में नहाये। बलवान प्रेतों ने क्रुद्ध राक्षसों के मांस खाकर अघाकर आनन्द मनाया। देवलोक में इतने राक्षसों के प्राण आ भर गये कि लोक ही झुक गया। ४४८

मरुड रुङ्गळि वञ्जनै वळैयॅयिऱ् ऱरक्कर्
गरुड नञ्जुरु कण्मणि काहमुङ् गवर्न्द
इरुड रुम्बुऱत् तिळ्ळैयर् पळ्ळुदुऱऱ् कॅळिदे
अरुड रुन्दिऱत् तऱनन्ऱि वलियदुण् डामो 449

मरुळ् तरुम्–मोह में डालनेवाले (मायावी); कळि–मत्त; वञ्चनै–कपटी; वळै ऍयिऱु–वक्रदांत वाले; अरक्कर्–राक्षसों की; करुटन् अञ्चुरु–गरुड़ को भी भयभीत करनेवाली; कण्मणि–आँखों की पुतलियों को; काकमुम् कवर्न्त–कौओं ने छीन लिया; इरुळ् तरुम् पुऱत्तु–अन्धकार-सम काले शरीरों के; इळ्ळैयर्–नीच लोग; पळ्ळुतु उऱऱ्कु ऍळिते–नष्ट होंगे, यह सुलभ ही है; अरुळ् तरुम् तिऱत्तु–कृपा देनेवाले; अऱन् अन्ऱि–धर्म के सिवा; वलियतु–वलवान; उण्टामो–कोई दूसरा होगा क्या। ४४६

उन मायावी, मत्त, कपटी और वक्रदाँत वाले राक्षसों की आँखों की पुतलियों को अब कौए नोचकर खाने लगे। पहले उन आँखों को देखकर स्वयं गरुड़ भी डरता था। अब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी! क्यों? उन नीचों की अवनति सुगमता से हो जाती है, जो अन्धकार के समान काले होते है! धर्म कृपा का जनक है। उससे वढ़कर वलवान और क्या है? । ४४९

पल्लायिर मिरुळ् कीऱिय पहलोन्ऩ ऒळिरुम्
विल्लाळनै मुऩियावॆयि लयिलामॅन्न विळियाक्
कल्लार्मळै कणमामुहिल् कडैनाळ्विळ् वन्नवोल्
ॲल्लामॊरु तॊडैयावुड नॅय्दार्विनै शॅय्दार् 450

पल् आयिरम् इरुळ्–अनेक सहस्र अन्धकार पुंजों को; कीऱिय–चीरनेवाले; पकलोन् ॲन्न ऒळिरुम्–सूर्य के समान प्रभावान; विल्लाळनै–कोदण्डपाणी श्रीराम को; ॲल्लारुम् ऒरु तॊटैया–सभी (वचे हुए) राक्षसो ने एक साथ मिलकर; मुऩिया–कोप करके; वॆयिल् अयिल् आम् ॲन्न–चमकदार भाले के समान; विळिया–तरेरकर; कण मा मुकिल्–समूहो में मिले वड़े-वड़े मेघ; कटै नाळ्–युगान्त में; कल् आर् मळै–पत्थर की वर्षा; विट्टवन्न पोल्–गिराते हों, जैसे; ॲल्लाम् उटऩ् ॲय्तार्–सभी अस्त्र एक साथ चलाते हुए; विनै चॆय्तार्–(युद्ध-) कार्य किया। ४५०

श्रीराम अन्धकार के समूहों को चीरकर हटानेवाले सूर्य के समान प्रभावान थे। उन कोदण्डपाणी पर सभी (वचे हुए) राक्षसों ने एक साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। उनकी तरेरती आँखों ने भयंकर भालों के समान दृष्टि चलायी। युगान्त में पत्थर वरसानेवाले मेघों के समान वे सभी अस्त्रों को एक साथ चलाने लगे। ४५०

ऍऱिन्दारॆन्न वॆय्दारॆन्न वऱियानिनैन् दन्नवुम्
अऱिन्दारॆन्न वऱियावहै ययिल्वाळियि नऱुत्तान्

शॅरिन्दारैयुम् पिरिन्दारैयुज् जॅरुत्तारैयुन् दिरुत्ताल्
मरिन्दारैयुम् वलित्तारैयु मडित्तान्शिलै पिडित्तान् 451

चिलै पिटित्तान्–कोदण्डपाणी श्रीराम ने; चॅरिन्तारैयुम्–दलों में आनेवालों को; पिरिन्तारैयुम्–अलग-अलग आनेवालों को; चॅरुत्तारैयुम्–द्वेष करके आनेवालों को; चित्तत्ताल् मरिन्तारैयुम्–(जो भागे थे पर) क्रोध के कारण मुड़ आये उनको; वलित्तारैयुम्–अन्याय करनेवालों को; मटित्तान्–मिटाया; ऍरिन्तार् ॲत–ये शस्त्र फॅकनेवाले; ऍय्तार् ॲत–ये अस्त्र चलानेवाले; अरिया निनैन्ततवुम्–चलाने योग्य हथियारों को; अरिन्तार् ॲत्त–परखकर लेनेवाले थे; अरिया वकै–ऐसा पहचाना न जा सके, ऐसा; अयिल् वाळियिन् अरुत्तान्–तीक्ष्ण अपने शरों से छिन्न-भिन्न कर दिया। ४५१

कोदण्डपाणी श्रीराम ने सब राक्षसों को मार दिया। उनमें दल बाँधकर आनेवाले, पृथक-पृथक आनेवाले, क्रुद्ध राक्षस, भाग जाकर वैर-प्रेषित हो लौट आनेवाले और अन्यायी सभी थे। इस तेजी से वे हत हुए कि यह जानना भी कठिन हो गया कि कौन क्या कर रहा था। अस्त्र चलानेवाले, शस्त्र चलानेवाले, चलाने के लिए चुनाव में लगे रहनेवाले सभी थे। वे भी कुछ करने से पहले ही हत हो गये। ४५१

वानत्तन कडलिन्बुरु वलयत्तन मदिशूळ्
मीनत्तन मिळिर्हॉण्डलिन् मिशैयत्तन मिडल्वॅम्
काननत्तन मलैयत्तन तिशैमुरिय करियिन्
तानत्तन काहुत्तन शरमुन्दिय शिरमे 452

काकुत्तन–काकुत्स्थ के; चरम् उन्तिय–शरों द्वारा उकसाये गये; चिरमे–राक्षसों के सिर; वानत्तन–आकाश में गये; कटलिन् पुरु वलयत्तन–समुद्र के पार के चक्रवाल में गये; मति चूळ्–चन्द्रवलयित; मीनत्तन–नक्षत्र-मण्डल में गये; मिळिर् कॉण्टलिन्–दृश्यमान मेघमण्डलों के; मिचैयत्तन–ऊपर वाले हो गये; मिटल् वॅम् काननत्तन–घने भयंकर वनों में गये रहे; मलैयत्तन–पर्वतों पर के हुए; तिचै मुरिय–दिशाओं के छोर में रहनेवाले; करियिन्–करियों के; तानत्तन–स्थानों पर गये। ४५२

काकुत्स्थ के शरों से कटे हुए राक्षसों के सिर कहाँ-कहाँ दिखे! आकाश, समुद्र पार चक्रवाल पर्वत, चन्द्र को मध्य में लिये रहे मीनमण्डल, सुदृश्य मेघमण्डल, घने भयंकर वन, पर्वत, दिशाओं के अन्त में रहनेवाले दिग्गजों के स्थान —सभी स्थानों पर गये रहे। ४५२

मण्मेलन मलैमेलन मळैमेलन मदितोय्
विण्मेलन नॅडुवेलैयि निडमेलन मिडलोर्
पुण्मेलन कुरुदिप्पॊरु तिरैयारुहळ् पॊङ्गत्
तिण्मेरुवै नहुमार्बिनै युरुवुन्दॅरि शरमे 453

तिण् मेरुवै नकु-सुदृढ़ मेरु का परिहास करनेवाली; मार्पिऩ्-(राक्षसों की) छातियों को; उरुवुम् तॆरि चरम्-वेध जानेवाले (श्रीराम के) चुने हुए शर; पॊरु तिरै कुरुति आऱुकळ्-आपस में टकरानेवाली तरंगों से युक्त रक्त-नदियाँ; पॊङ्क-उमँगकर बढ़ें, ऐसा; मण् मेलत-पृथ्वी में गये; मलै मेलत-पर्वतों पर गये; मऴै मेलत-मेघों पर गये; मति तोय् विण् मेलत-चन्द्राश्रयी आकाश पर के हो रहे; नॆडु वेलैयिऩ् इटम् मेलत-विस्तृत समुद्रतलों के हो रहे; मिटलोर् पुण् मेलत-बली (राक्षसों) के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

जो मेरु-समान कठिन छाती वाले राक्षसों को भेद चले, वे श्रीराम के चुने हुए शर कहाँ-कहाँ पाये गये! राक्षसों के रक्त की नदियों को उमँगकर बहने देते हुए वे शर पृथ्वी पर, पर्वतों पर, मेघमण्डल पर, चन्द्राश्रयी आकाश पर, समुद्र पर और बली राक्षसों के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

पॊलन्दारिन रऩलिऩ्शिहै पॊऴिहण्णिऩ रॆवरुम्
वलन्दाङ्गिय वडिवॆम्बडै विडुवार्शर मऴैयाल्
उलन्दारुडल् कडलोडुऱ वुलवारुड लुऱ्ऱार्
अलन्दार्निशि शररामॆऩ विमैयोरॊडु मार्त्तार् 454

पॊलम् तारिऩर्-मनोरम मालाधारी; अऩलिऩ् चिकै पॊऴि कण्णिऩर्-अग्नि की ज्वालाएँ-सी निकालनेवाली आँखों के; वटि वॆम् पटै विटुवार्-तीक्ष्ण भयंकर हथियार चलानेवाले; ऎवरुम्-सभी राक्षस; चर मऴैयाल्-शर-वर्षा से; उटल् कटल् ओटु उऱ-शरीर जाकर समुद्र में मिल गये, इस रीति से; उलन्तार्-मरे; उलवा उटल् उऱ्ऱार्-अमर शरीर पाकर; इमैयोर् ओटुम्-देवों के साथ मिलकर; निचिचरर् अलन्तार् आम् ऎऩ-निशिचर मरे, यह कहकर; आर्त्तार्-सन्तोषरव उत्पन्न किया। ४५४

मनोरम मालाधारी सभी राक्षस, जिनकी आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलती थीं और जो भयंकर तीक्ष्ण हथियार चलाते थे, श्रीराम की शरवर्षा के सामने मर गये। उनकी लाशें समुद्र में जाकर मिल गयीं। अब उन्हें अमर शरीर मिल गया। वे देवों मे मिल गये। अब वे नीचे देखते हैं और मरते हुए राक्षसों को देखकर हर्षरव निकालते हैं कि वाह! राक्षस मर गये। ४५४

ईरऱ्चॆऱि कमलत्तऩ विरदक्कुऱै पुळिऩम्
वीरक्करि मुदलैक्कुल विडुपाय्परि कुरम्बाप्
पारक्कुडर् मिडैपाशडै पडर्हिऩ्ऱऩ पलवा
मूरित्तिरै युदिरक्कुळ मुळ्हिक्कळ् दॊळुमे 455

ईरल्-यकृत् (रूपी); चॆऱि कमलत्तत-दलसंकुल कमल वाले; इरत कुऱै-टूटे रथ; पुळिऩम्-पुलिन; वीर करि-साहसी गज; मुतलै कुलम्-नक्रसमूह; ऱ् परि-अश्व; विटु-बँधे; कुरम्पा-बाँध; पार कुटर्-भारी आँतें; मिटै-लसे

रहनेवाले; पल् पाचटै आ—अनेक ताजे पत्ते, इनसे युक्त; सूरि तिरै—बड़ी-बड़ी तरंगों वाले; उतिर कुळम्—रक्त के तालावों में; कळुतु—भूत; मुळ्कि ॲळुव—नहा उठते हैं। ४५५

युद्धभूमि में एक अनोखा तालाब बन गया। उसमें रक्त भरा था। यकृत् कमल बने, टूटे रथ पुलिन। साहस के साथ मरे गज नक्र बने और अश्व की लाशें बाँध बनीं। भारी आँतों ने विविध पत्तों का स्थान लिया! ऐसे तालाब में, जिसमें बड़ी-बड़ी तरंगें उठ रही थीं, प्रेत नहा उठते थे। ४५५

अळैत्तार्शिल रार्त्तार्शिल रळिन्दार्शिलर् कळिन्दार्
उळैत्तार्शिल रुयिर्त्तार्शिल रुरुण्डार्शिलर् पुरण्डार्
कुळैत्ताळ्दिरैक् कुरुदिक्कडर् कुळित्तार्शिलर् कॉलैवाय्
मळैत्तारैहळ् पडप्पारिडै मडिन्दार्शिल रुडैन्दार् 456

कॉलै वाय्—मारक; मळै तारैकळ् पट—शरवर्षा के लगने से; चिलर्—कुछ राक्षसों ने; अळैत्तार्—पुकार मचायी; चिलर् आर्त्तार्—कुछ ने (भीषण) गर्जन किया; चिलर् अळिन्तार्—कुछ मिटे; चिलर् कळिन्तार्—कुछ भागे; चिलर् उळैत्तार्—कुछ तड़पे; चिलर् उयिर्त्तार्—कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी; चिलर् उरुण्टार्—कुछ लोटे; चिलर् पुरण्टार्—कुछ लुढ़के; कुळै ताळ्—गहरे पंक के साथ; तिरै कुरुति कटल्—लहरों से युक्त रक्त-सागर में; चिलर् कुळित्तार्—कुछ डूबे; चिलर् पार् इटै मटिन्तार्—कुछ भूमि पर गिरकर मरे; उटैन्तार्—हारे। ४५६

श्रीराम के संहारक वर्षा-धारों के समान शरों के आकर लगने से कुछ राक्षस त्राहि! त्राहि! पुकारने लगे। कुछ राक्षसों ने घोर शब्द किया। कुछ राक्षस वहीं ढेर हो गये। कुछ जान लेकर भागे। कुछ तड़पकर रह गये। कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी। कुछ लुढ़कते हुए गये। कुछ करवट बदलते बेचैन रहे। कुछ लोग कीच से भरे रक्त-सागर में डूबकर संकटग्रस्त हो रहे। कुछ लोग भूमि पर ही गिरकर मरे। कुछ लोग हारकर हटे। ४५६

उडैत्तार्हळै नहैशॅय्दन रुडॅरिन्न रुडनाय्
अडैन्दार्पडैत् तलैवीरर्हळ् पदिनाल्वरु मयिल्वाळ्
मिडैन्दार्नॅडुङ् गडऱ्ऱानैयर् मिडल्विल्लिनर् विरिनीर्
कडैन्दार्वॅरु वुऱ्मीदॅळु कडुवामॅनक् कॉडियार् 457

विरि नीर्—विस्तृत (क्षीर-) सागर को; कटैन्तार्—जिन्होंने मथा उन (देवों और असुरों) को; वॅरुवु उऱ—भयभीत करते हुए; मीतु ॲळु—ऊपर उठ आये; कटु आम् ॲन—विष के समान; कॉटियार्—निर्मम; पटै तलै वीरर्कळ् पतिनाल्वरुम्—सेनापति चौदहों ने; उटनाय्—एक साथ; उटैन्तार्कळै—हारकर भागनेवालों की; नकै चॅय्तनर्—हँसी उड़ाई; उरुळ् तेरितर्—पहियों वाले रथ पर सवार हो; अयिल् वाळ् मिटैन्तु आर्—भालों और तलवारों को लिये हुए मिल आनेवाली; नॅटुम् कटल्

तातैयार्–विशाल समुद्र-सम सेना के साथ; मिटल् विल्लित्तर्–सबल धनु वाले हो; उटताय्–एक साथ; अटैन्तार्–(वे) आये। ४५७

चौदहों सेनापतियों ने यह देखा तो उनका परिहास किया। देवों और असुरों को भयभीत करते हुए जो विष क्षीरसागर से उठ आया था, उस विष के समान बड़े ही भयंकर और खूनी वे सेनापति एक साथ निकलकर रथों पर युद्धभूमि में आये। उनके साथ बड़ी सेना आयी, जिसके वीर भालों और तलवारों से युक्त थे। सेना विपुल सागर के समान थी और वीरों से खूब भरी थी। ४५७

नाहत्तऩि यॊरुविल्लियै नळिमुप्पुर मुऩ्ऩाळ्
माहत्तिडै वळैयुऱ्ऱऩ वॆऩ्ऩवळ्ळलै मदियार्
आहत्तॆऴ़ु कनल्हण्वऴ़ि युहवॆऱ्ऱॆदि रळऩ्ऱार्
मेहत्तनि नॆडुविल्लियै वळैत्तार्शॆरु विळैत्तार् 458

मुऩ्ऩाळ्–प्राचीनकाल में; नाकम् तऩि ऑरु विल्लियै–(मेरु) पर्वत को श्रेष्ठ धनु बनाकर जिन्होंने लिया था, उन (मेरुधन्वा) को; नळि मुप्पुरम्–बड़े त्रिपुरों ने; माकत्तु इटै–आकाश में; वळैवुऱ्ऱऩ ऎऩ–घेर लिया हो ऐसा; मेक तऩि नॆटु विल्लियै–मेघश्याम, उत्तम दीर्घ धनु के स्वामी कोदण्डपाणी; वळ्ळलै–प्रभु श्रीराम को; मतियार्–कुछ न माननेवाले; आकत्तु ऎऴ़ु कऩल्–शरीर के अन्दर उठनेवाली आग को; कण् वऴ़ि उक उऱ्ऱु–आँखों द्वारा निकलने देते हुए; ऎतिर् अळऩ्ऱार्–सामने द्वेष करते हुए; वळैत्तार्–घेरकर; चॆरु विळैत्तार्–युद्ध किया। ४५८

वे श्रीराम का महत्त्व जान नहीं पाये। उनके मन में उनके प्रति आदर ही नहीं था। मेघसम दीर्घ धनु के साथ दृश्यमान उन उदार प्रभु श्रीराम को उन्होंने आकर ऐसा घेरा, जैसा मेरुधन्वा शिवजी को त्रिपुरों ने आकाश में घेर लिया था। उनकी आँखों से मानो उनके अन्दर की कोपाग्नि निकल रही थी। बड़े वैर के साथ वे घेर गये। ४५८

ऎय्दार्पल रॆऱिन्दार्पल रॆऴ़ुवोच्चित्तर् मऴ़ुवाल्
पॊय्दार्पलर् पडैत्तार्पलर् किडैत्तार्पलर् पॊरुप्पाल्
पॆय्दार्मऴ़ै पिदिर्त्तारॆरि पिऱैवाळॆयिऱ् ऱरक्कर्
वैदार्पलर् तॆऴ़ित्तार्पलर् मलैयामॆऩ वळैत्तार् 459

पिऱै वाळ् ऎयिऱ्ऱु–अपूर्ण चन्द्र-सम वक्रदांत वाले; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेकों ने; ऎय्तार्–शर चलाये; पलर्–अनेकों ने; ऎऴ़ु–दण्ड; ओच्चित्तर्–फेंके; पलर् मऴ़ुवाल् पॊय्तार्–अनेकों ने परशुओं से वार किया; पलर् पुटैत्तार्–अनेकों ने मारा; पलर् किटैत्तार्–अनेक पास आये; पलर् पॊरुप्पाल् मऴ़ै पॆय्तार्–अनेकों ने पर्वतों को वर्षा के समान लगातार फेंके; ऎरि पितिर्त्तार्–(अनेकों ने) आग बरसायी; पलर् वैतार्–अनेकों ने गाली दी; पलर् तॆऴ़ित्तार्–अनेक डाँटे; मलै आम् ऎऩ वळैत्तार्–पर्वत के समान घेर लिया। ४५९

उनके साथ कितने ही राक्षस-वीर आये थे। चन्द्रकला के समान श्वेत और वक्रदाँत वाले उनमें अनेकों ने श्रीराम पर बाण चलाये। कितनों ने दण्ड फेंके। परशु और अन्य हथियार चलानेवाले भी अनेक, अनेक थे। अनेक उन पर झपटने आये। अनेक राक्षसों ने पर्वतों को उठाकर वर्षा के समान निरन्तर फेंका। अनेकों ने आग बरसायी। अनेकों ने गालियाँ दीं और अनेक डाँटे। अनेक पर्वतों के समान श्रीराम के चारों ओर आकर उनको घेर गये। ४५९

तेर्पूण्डन्न विलङ्गियावैयुम् जिलैपूण्डॅळु कणैयाल्
पार्पूण्डन्न मदमाकरि पलिपूण्डन परिमात्
तार्पूण्डन्न वुडल्पूण्डिल तलैवॆङ्गदिर् तळिवन्
दूर्पूण्डन परिन्दालॆन्न विरिन्दारुयि रुलन्दार् 460

चिलै पूण्टु ॲॕळु-(श्रीराम के) कार्मुक से छूटे हुए; कणैयाल्-शरों से; तेर् पूण्टन्न-रथों में जुते हुए; विलङ्कु यावैयुम्-जानवर सब; पार् पूण्टन्न-भूमि पर गिरकर मरे; मत मा करि-मत्त, बड़े-बड़े गज; पलि पूण्टन्न-बलि चढ़े; तार् पूण्टन्न परि मा-हारों से युक्त अश्व; उटल् तलै पूण्टिल-शरीरों से सिर-जुड़े नहीं रहे; चॆरु विळॆत्तार्-युद्ध करने जो आये थे, वे; वॆम् कतिर् तळि वन्तु-गरम सूर्य को घेर जो आया; ऊर् पूण्टन्न-उस परिवेश के; पिरिन्ताल् ॲॕन्न-हटने के समान; उयिर् उलन्तार्-प्राण खोकर; विरिन्तार्-सब जगह अलग-अलग पड़े रहे। ४६०

श्रीराम ने तब शर चलाये। उनके कोदण्ड से निकले बाणों के लगने से राक्षसों के रथों में जुते हुए जानवर भूमि पर गिरकर मर गये। मत्तगज बलि चढ़े। हारों से भूषित अश्व सिर से विहीन हो गये। उनको घेर आये हुए राक्षस सूर्य के परिवेश के समान, जो जल्दी दूर हो जाता है, मर गये। उनकी लाशें सर्वत्र फैली पड़ी रहीं। ४६०

माल्पोत्तिय मऱ्ऱवोरुडन् मलैयोत्तुड नळिशॆम्
पाल्पोत्तिन्न नदियिऱ्किळर् पडियोत्तदु पनिवान्
मेल्पोत्तिय कुळुविण्णवर् विळिपोत्तिनर् विरैवॆम्
काल्पोत्तिनर् नमन्तूदुवर् कडिदुऱ्ऱुयिर् कवर्वार् 461

माल् पोत्तिय-मूर्च्छा में पड़े रहे; मऱ्ऱवोर् उटल्-वीरों के शरीर; मलै ऑत्तु-पर्वतों से तुले; उटल् अळि-उन शरीरों से निकलनेवाले; चॆम् पाल् पोत्तित्त-रक्त से भरी; नतियिल्-नदियों के कारण; किळर् पटि ऑत्ततु-दृश्यमान भूमि के समान लगे; पनि वान् मेल्-शीतल आकाश पर; पोत्तिय कुळु विण्णवर्-एकत्रित हुए देवों ने; विळि पोत्तितर्-अपनी आँखें मूँद ली; नमन् तूतुवर्-यमदूतों ने; कटितु उऱ्ऱु-जल्दी आकर; उयिर् कवर्वार्-(राक्षसों के) प्राण हरकर; मिटल् वॆम्-सशक्त और भयंकर; काल् पोत्तितर्-अपने पैरों से (युद्धभूमि को) आच्छादित कर दिया। ४६१

मूर्च्छित वीरों के शरीर पर्वतों के समान लगे। उनके शरीरों से निकलनेवाले रक्त की भरी नदियों के कारण भूमि शोभित लगी। आकाश में देवों ने भीड़ लगायी थी। उन्होंने यह दृश्य देखकर अपनी आँखें मूंद लीं। उस युद्धभूमि को यम के दूतों के पैरों ने ढँक दिया। वे जल्दी-जल्दी राक्षसों के प्राण लेने आ-जा रहे थे। ४६१

पेयेऱिनर्	शॆरुवेट्टॆऴु	पित्तेऱिन्नर्	पिलवाय्त्
तीयेऱिह	लरियेऱिन्नर्	करियेऱिन्नर्	शॆऱिवाय्
नायेऱिन्न	तलैमेनॆड्डु	नरियेऱिन्न	ऎरिहाल्
वायेऱिय	वडिवाळियिन्	वानेऱिन्नर्	वन्दार् 462

पिल वाय्–बिल के समान मुख वाले; ती एऱु इकल्–बड़ी आग के समान लड़नेवाले; अरि एऱिन्नर्–सिंहों पर सवार; करि एऱिन्नर्–गजों पर सवार; चॆरु वेट्टु ऍऴु–युद्ध चाहते हुए आये; पेय् एऱिनर्–भूतग्रस्त; पित्तु एऱिन्नर्–उन्मत्त (राक्षसों के); तलै मेल्–सिरों पर; चॆऱिवाय्–भीड़ लगाकर; नाय् एऱिन्न–कुत्ते चढ़े; नॆट्टु नरि एऱिन्न–लम्बी कतार में सियार चढ़े; ऍरि काल्–आग उगलनेवाले; वाय् एऱिय–मुखों से युक्त; वटि वाळिन्–तीक्ष्ण वाणों से; वान् एऱिन्नर्–(हत होकर) आकाश में चढ़े; वन्तार्–आये। ४६२

राक्षस, जिनके मुख बिल के समान थे, भयंकर सिंहों पर और गजों पर सवार होकर चाव के साथ भूतग्रस्त या उन्मत्त के समान युद्ध करने आये थे। पर वे मर गये। उनकी लाशों पर अब कुत्ते, सियार आदि चढ़ रहे थे। वे राक्षस श्रीराम के अग्निमुख और तीक्ष्ण वाणों से हत हुए थे। इसलिए उनकी आत्माएँ स्वर्ग पहुँच गयीं। ४६२

तलैशिन्दिन्न	विऴिशिन्दिन	तऴल्शिन्दिन	तरैमेल्
मलैशिन्दिन	पडिशिन्दिन	वरुशिन्दुर	मऴैबोल्
शिलैशिन्दिन्न	कणैशिन्दिन्न	तेर्शिन्दिन्न	तिशैयू
ऊलैशिन्दिन्न	पॊऱिशिन्दिन्न	वुयिर्शिन्दिन्न	वुडलम् 463

मऴै पोल्–मेघ (वर्षा) के समान; चिलै चिन्तित्त–धनु से निकले; कणै चिन्तित्त–शर फैले; तलै चिन्तिन–सिर गिरे; विऴि चिन्तित्त–आँखें बिखरीं; तऴल् चिन्तित्त–आग फैली; वरु चिन्तुरम्–आगत गज; तरै मेल्–भूमि पर; मलै चिन्तित्त पटि पोल्–पर्वत बिखरे पड़े हों, इस प्रकार; चिन्तित्त–बिखरे पड़े थे; तेर् चिन्तित्त–रथ टूटकर छितराये; तिचै ऊटु–दिशाओं में सर्वत्र; उलै चिन्तित्त–भट्ठी से निकली; पॊऱि चिन्तित्त–आग के कणों के समान अंगार बिखरे; उटलम्–शरीरों ने; उयिर् चिन्तित्त–प्राण छोड़ दिये। ४६३

श्रीराम के कोदण्ड ने वर्षा की धारों के समान शर बरसाये। इसलिए राक्षसों के सिर छितरे; आँखें बिखरीं और उन आँखों से अंगार छितरे। उन शरों से आहत होकर गज पर्वत के समान यत्र-तत्र पड़े रहे और रथ

टूटकर गिरे। दिशाओं में अंगारे उड़े और राक्षसों के शरीरों ने प्राण त्याग दिये। ४६३

पडैत्तलै वरुमवर् पडैत्त तेर्हळुम्
उडैत्तडम् बडैहळु मौळिय वुड्रॅदिर्
विडैत्तडर्न् दॅदिर्न्दवर् वीरन् वाळियाल्
मुडैत्तवॅङ् गुरुदियिन् कडलिन् मूळ्हिनार् 464

पटै तलैवरुम्–सेनापति; अवर् पटैत्त तेर्कळुम्–उनके अपने रथ; उटै तटम् पटैकळुम्–उनके अपने बड़े-बड़े युद्ध-हथियार; ऑळिय–इनको छोड़कर; उड्रु–(युद्धभूमि में) आकर; ॲतिर्–(श्रीराम के) सम्मुख; विटैत्तु–तनकर; अटर्त्तु–युद्ध करके; ॲतिर्न्तवर्–सामना जिन्होंने किया, वे सब; वीरन् वाळियाल्–वीर (श्रीराम) के शरों द्वारा; मुटैत्त–दुर्गन्धपूर्ण; कुरुतियिन्–रक्त के; कटलिन्–समुद्र में; मूळ्कितार्–डब (मिट) गये। ४६४

सब मर-मिट गये। केवल वे चौदह सेनापति, उनके रथ और उनके पास रहे हथियार —ये ही बचे। अन्य सभी, जो दम्भ के साथ श्रीराम के सामने लड़ने आये थे, श्रीराम के बाणों से आहत हुए और दुर्गन्धपूर्ण रक्त-सागर में डूबकर मर गये। ४६४

शुड्रुर नोक्कितर् तॉडर्न्द शेतैयिल्, अड्रिल तलैयॅनु माक्कै कण्डिलर्
तॅड्रित रॅयिरुह डिरुहि तार्शित, मुड्रित रिरामत्तै मुड्डु तेरितार् 465

चुड्रु उर नोक्कितर्–सिर घुमाकर देखा; तॉटर्न्त चेतैयिल्–अनुगामिनी सेना में; तलै अड्रिल ॲतुम्–सिर न कटे ऐसा कहने योग्य; आक्कै कण्टिलर्–शरीर नहीं देखे; चितम् तिरुकितार्–क्रोध से ऐंठे; ॲयिरुकळ् तॅड्रितर्–दाँत चबाये; मुट्कु तेरितार्–तेजी से चलाये जानेवाले रथों के होकर; इरामत्तै मुड्रितर्–श्रीराम को घेर लिया (चौदहों सेनापतियों ने)। ४६५

सेनापतियों ने सिर घुमाकर चारों ओर देखा। अपनी सेना के किसी वीर को नहीं देख सके, जिसके शरीर का सिर कटा नहीं हो! उनके कोप का पारा चढ़ गया। दाँत पीसे। और रथ को सवेग चलाते हुए उन्होंने श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया। ४६५

एळिरु तेरुम्वन् दिमैप्पिन् मुन्बिडैच्, चूळ्वत कणैहळिन् ऱुणिय नूरितान्
आळियु माणियुम् माळु मड्रवै, ऊळिवॅङ् गालॅरि योङ्ग लॊत्तवे 466

वन्तु इटै चूळ्वत–पास आकर घेरनेवाले; एळु इरु तेरुम्–(सात के दो) चौदहों रथों को; इमैप्पिन् मुन्–पलक मारने के अन्दर; कणैकळिल्–अपने बाणों से; तुणिय नूरितात्–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न क दिया; आळियुम् आणियुम् आळुम्–चक्रों, धुर और सारथी से; अड्रु–हीन होकर; अवै–वे; ऊळि वॅम् काल् ॲरि–भयंकर युगान्तकालीन झंझा द्वारा प्रताड़ित; ओङ्कल् ऑत्त–पर्वत-समान नष्ट हुए। ४६६

पल भर में श्रीराम ने उनके चौदहों रथों को अपने बाणों से तोड़कर चूर-चूर कर दिया। पहिये और धुर ही नहीं, सारथी भी नहीं बचे। युगान्त के झंझे से जर्जर हुए पर्वतों के समान वे रथ (नष्ट) हो गये। ४६६

अऴिन्दन तेरव रवनि कीण्डुह
इऴिन्दनर् वरिशिलै यॆडुत्त कैयिनर्
ऒऴिन्दिलर् शरङ्गळै युरुमि नॆरुनप्
पॊऴिन्दनर् पॊऴिहनल् पॊङ्गिक्कुट्‌ गण्णिनार् 467

तेर् अऴिन्तत अवर्–रथ-नष्ट हुए वे; अवनि कीण्डु उक–भूमि में दरार बनाते हुए (उतनी उग्रता से); इऴिन्ततर्–उतरे; वरि चिलै ॲटुत्त कैयिनर्–बन्धनयुक्त धनु हाथ में लेकर; मिकु कतल् पॊऴिकुम् कण्णितार्–अधिक अंगार निकालनेवाली आँखों के साथ; चरङ्कळै–शरों को; ऒऴिन्तिलर् पॊऴिन्ततर्–निरन्तर चलाये। ४६७

रथों को नष्ट-भ्रष्ट पाकर वे सेनापति जल्दी-जल्दी रथों पर से ऐसे कूदे कि भूमि पर दरार पड़ गयी! धनुर्धर उन्होंने आँखों से अंगार उगलते हुए श्रीराम पर निरन्तर बाणवर्षा की। ४६७

नूरिय शरमॆला नुरुङ्ग वाळियाल्
ईरुशॆय् दवर्शिलै येळी रेऴुयुम्
आरिनॊ डारुमो रिरण्डु मम्बिनाल्
कूरुशॆय् दमरत्तॊऴिल् कॊदिप्पै नीक्किनान् 468

चरम् ॲलाम्–सभी बाण; नूरिय नुरुङ्क–मिटकर चूर हुए; वाळियाल् ईरु चॆय्तु–ऐसा अपने बाणों द्वारा मिटाकर; अवर् चिलै एऴॊटु एऴुयुम्–उनके चौदहों चापों को; आरिन् ओटु आरुम् ओर् इरण्टुम्–छः छः और दो (= चौदह); अम्पिताल्–बाणों से; कूरु चॆय्तु–खण्ड-खण्ड करके; अमर् तॊऴिल् कॊतिप्पै–उनके युद्ध-कर्म की भयंकरता को; नीक्कितान्–दूर किया (श्रीराम ने)। ४६८

श्रीराम ने न केवल उन बाणों को नहीं मिटाया बल्कि उनके चौदहों चापों के भी चौदह बाण चलाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन वीरों के युद्धोत्साह को और युद्ध की भयंकरता को दूर कर दिया। ४६८

विल्लिऴन् दनैवरुम् वॆहुळि मीक्कॊळक्
कल्लुयर् नॆडुवरै कडिदि नॆन्दिनार्
ऒल्लैयि नुरुत्तुयर् विशुम्बि नोङ्गिनिन्
रॆल्लैयिल् पॊरियुह वॆरिदन् मेयिनार् 469

अनैवरुम्–वे सब; विल् इऴन्तु–चाप खोकर; वॆकुळि मी कॊळ–क्रोध के उमड़ने से; कल् उयर् नॆटु वरै–पत्थर के बड़े पर्वतों को; कटितिन् एन्तितार्–वेग के साथ उठाकर; ऒल्लैयिन्–जल्दी; उरुत्तु–कोप करके; उयर् विचुम्पिन् ओङ्कि निन्रु–आकाश में ऊपर स्थित होकर; ॲल्लैयिल् पॊरि उक–अगणित अंगार छितराते हुए; ॲरितल् मेयितार्–फेंकने लगे। ४६९

उन सेनापतियों को धनुष-विहीन होने से अपार क्रोध हुआ। वे पत्थर के बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर ऊपर आकाश में खड़े होकर श्रीराम पर फेंकने लगे। उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनसे अंगार निकले और फैले। ४६९

कलैहळिन् परुङ्गडल् कडन्द विल्लित्तान्
इलैहॊळ्वॆम् बहऴिये ऴिरण्डु वाङ्गित्तान्
कॊलैहॊळ्वॆञ् जिलैयॊडु पुरुवङ् गोट्टित्तान्
मलैहळुन् दलैहळुम् विऴुन्द मण्णिले 470

कलैकळिन् पॆरुम् कटल्–(६४) कलाओं के बड़े सागरों को; कटन्त–जिन्होंने पार किया था (निपुण); विल्लितान्–उन कोदण्डपाणी ने; इलै कॊळ्–पत्र-सम फल वाले; वॆम् पकऴि–भयंकर अस्त्र; एऴ् इरण्टु–सात के दो; वाङ्कितान्–लेकर; कॊलै कॊळ् वॆम् चिलै ओटु–मारक धनुष और; पुरुवम्–भौंहों को; कोट्टितान्–झुकाया (कुंचित किया); मलैकळुम् तलैकळुम्–पर्वत और सिर; मण्णिले विऴुन्त–भूमि पर गिर गये। ४७०

श्रीराम चौंसठ कलाओं के पारंगत धनुर्धर थे। उन्होंने चौदह पत्राकार सिर वाले बाण लिये। उन भयंकर बाणों को मारक धनु पर रखा। धनु को झुकाया जब उनकी भौहें भी झुकीं! उसके फलस्वरूप पर्वत और सेनापतियों के सिर एक साथ भूमि पर गिर गये। ४७०

पडैत्तलै वीरर्हळ् पडलुम् बल्पडै
पुडैत्तडर्त् तार्त्तॆरि पुहैयुङ् गण्णितार्
किडैत्तन ररक्कर्हळ् कीऴु मेलुमॊय्त्
तडैत्तनर् तिशैहळै यमर रञ्जितार् 471

पटै तलै वीरर्कळ्–सेनापति वीरों के; पटलुम्–हत हो जाने पर; अरक्कर्कळ्–(बचे रहे) राक्षस; पल् पटै पुटैत्तु–अनेक हथियारों से प्रहार करके; आर्त्तु–नारे लगाकर; ऎरि पुकैयुम् कण्णितार्–आग और धुएँ सहित आँखों के साथ; किटैत्तनर्–(श्रीराम के) समीप आकर; तिचैकळै–चारों दिशाओं में; कीऴुम् मेलुम् मॊय्त्तु–नीचे और ऊपर भीड़ लगाकर; अटैत्तनर्–भर गए; अमरर् अञ्चितार्–देव डरे। ४७१

सेनापति वीर हत हो गये तो अन्य बचे हुए राक्षस क्रोध करके श्रीराम के समीप पिल पड़े और सभी दिशाओं में सर्वत्र भर गये। उनकी आँखों से आग और धुआँ-सा निकल रहा था। वे विविध प्रकार के अनेक हथियार चलाने लगे। उनकी संख्या, उनका क्रोध और युद्ध देखकर देव भी डर गये। ४७१

मुऴङ्गिन पॆरुम्वणै मूरि माल्हरि
मुऴङ्गिन वरिशिलै मुड्हु नाणॊलि

मुऴङ्गिऩ शङ्गॊलि पुरवि मॊय्त्तुउऱ्
मुऴङ्गिन वरक्कर्दम् मुहिलि ऩाऱ्प्परो 472

पॆरुम् पणै—बड़े-बड़े मारू ढोल; मूरि माल् करि—बड़े और बलवान करी; मुऴङ्कित्त—नाद कर उठे; वरि चिलै—बन्धनयुक्त धनुओं की; मुट्कु नाण् ऒलि—कठोर प्रत्यंचा की टंकार; मुऴङ्कित्त—उठी; चङ्कु ऒलि—शंखनाद मुऴङ्कित्त—हुए; पुरवि मॊय्त्तु उऱ—अश्व ठस मिलकर आये; अरक्कर् तम् मुकिलिऩ् आर्प्पु—राक्षसों का मेघगर्जन; मुऴङ्कित्त—उच्च स्वर में उठा। ४७२

बड़े ढोलों का नाद, गजों की चिंघाड़, भयंकर बलवान चापों की टंकार, शंखध्वनि आदि तुमुल नाद उठा। अश्व ठस जुट आये और राक्षसों का मेघ-सा गर्जन उच्च रहा। ४७२

वॆम्बडै निरुदर् वीश विण्णिडै मिडैन्द वीरऩ्
अम्बिडै यरुक्कच् चिन्दि यऱ्ऱ विऴुमॆऩ् ऱञ्जि
उम्बरु मिरियल् पोऩा रुलहॆला मुलैन्दु शायन्द
कम्बमि ऱिशैयि निऩ्ऱ कळिऱुकण् णिमैत्त वऩ्ऱे 473

निरुतर्—राक्षसों के; वीच—फेंकने से; वॆम् पटै—(वे) भयंकर हथियार; विण् इटै मिटैन्त—जो आकाश में घने रूप से भरे; वीरऩ्—वीर श्रीराम के; अम्पु इटै अरुक्क—शरों के मध्य घुसकर काटने से; चिन्ति अऱ्ऱ—छितरकर बेकार हुए; विऴुम्—वे गिरेंगे; ऎऩ्ऱु अञ्चि—ऐसा डरकर; उम्परुम्—देव; इरियल्—अलग; पोऩार्—हट गये; उलकु ऎलाम्—सारे लोक; उलैन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; चायन्त—अस्थिर हुए; कम्पम् इल्—अचल; तिचैयिल् निऩ्ऱ—दिशाओं में खड़े रहे; कळिऱुम्—गजों ने भी; कण् इमैत्त—आँखें मूँद लीं। ४७३

राक्षसों ने जो भयंकर हथियार फेंके, वे आकाश में घने रूप से भरे आये। पर वीर श्रीराम ने उनको बीच में ही खण्डित कर बेकार करा दिया। 'वे बेकार खण्ड हम पर गिरेंगे' —इस डर से देव भी हटकर भाग गये। सारे लोकों के वासी भी अस्तव्यस्त होकर शिथिल पड़ गये। अचल रहनेवाले दिग्गजों ने भी डर से अपनी आँखें मूँद लीं। ४७३

❀ अत्तलैत् तानैयऩ् नळवि लाऱ्ऱलऩ्
मुत्तलैक् कुरिशिल्बॊन् मुडियन् मुक्कणाऩ्
कैत्तलैच् चूलमे यऩैय काट्चियान्
वैत्तलैप् पहळियान् मळैशॆय् विल्लिऩान् 474

अ तलै—तब; अळविल् तानैयऩ्—अपार सेना वाले; आऱ्ऱलऩ्—शक्तिमान; पॊऩ् मुटियऩ्—स्वर्णकिरीटधारी; मुत्तलै कुरिचिल्—तीन सिरों का राजा त्रिशिरा; मुक्कणाऩ्—त्रिनेत्र (शिवजी) के; कै तलै—हाथ में रहनेवाले; चूलमे अऩैय—त्रिशूल की ही तरह; काट्चियाऩ्—दृश्यमान; वै तलै पकऴियाऩ्—तीक्ष्ण सिर (फल) वाले बाणों का रखनेवाला; मऴै चॆय्—(शर-) वर्षक; विल्लिऩाऩ्—धनुर्धर। ४७४

तब त्रिशिरा अपनी सेना के साथ बढ़ आया। कैसा था वह ? अपार सेना का स्वामी, अगाध शक्ति का नाथ; स्वर्णकिरीट-धारी और तीन सिरों वाला था वह। वह त्रिनेत्र शिवजी के हाथ के त्रिशूल के समान दृश्यमान था। उसके पास तीक्ष्णमुखी भयंकर शर थे। उसका शरासन भयंकर रूप से शरवर्षक था। ४७४

अऩ्ऩव नडुवुऱ वूऴि याऴियी
दॅऩ्ऩवन् दॅङ्गणु मिरैत्त शेऩैयुळ्
तऩ्ऩिहर् वीरऩुन् दमियन् विल्लिऩऩ्
तुऩ्ऩिरु ळिडैयदोर् विळक्किऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 475

अऩ्ऩवऩ्–वह; नट्टु उऱ–मध्य में रहा; ऊऴि आऴि–युगान्त समुद्र; ईतु अॅऩ्ऩ–यह है, ऐसा; वन्तु–आकर; अॅङ्कणुम् इरैत्तु–सब जगह शोर के साथ आ गई; चेऩै उळ्–उस सेना के अन्दर; तऩ् निकर् वीरऩुम्–स्वोपम वीर भी; तमियऩ् विल्लिऩऩ्–अकेले, धनु के साथ; तुऩ् इरुळ् इटै–घने अन्धकार के मध्य; ओर् विळक्किल्–एक दीप के समान; तोऩ्ऱिऩाऩ्–शोभित रहे। ४७५

उसको मध्य में रखते हुए उसकी अपार सेना युगान्तकालीन समुद्र के समान उमड़ी आयी। सब स्थानों पर उसका विस्तार था। उस सेना के मध्य श्रीराम, जिनकी तुलना का वीर और कोई नहीं था, हाथ में धनुष लिये अकेले स्थित थे। वे घने अंधकार के मध्य रहनेवाले दीप के समान शोभे। ४७५

ऑङ्गिय वाळिऩ नुरुमि नार्प्पिऩऩ्
वीङ्गिय वेहत्तऩ् वॅय्य कण्णिऩऩ्
आङ्गव नणिक्कॅदि रणिह ळाहनेर्
ताङ्गिन ऩिरामऩुञ् जरत्तिन् ऱाऩैयाल् 476

ओङ्किय वाळिऩऩ्–उठाई हुई तलवार वाले; उरुमिऩ् आर्प्पिऩऩ्–वज्रनिनादी; वीङ्किय वेकत्तऩ्–बहुत वेगवान; वॅय्य कण्णिऩऩ्–भयंकर आँखों वाला; आङ्कु अवऩ्–वहाँ (जो आया) उस (त्रिशिरा) को; अणिक्कु–सेना भागों के; नेर्–सामने; अणिकळ् आक–सेनाओं के रूप में; चरत्तिऩ् ताऩैयाल्–शरों की सेनाओं (पंक्तियों) से; नेर् ताङ्किऩऩ्–श्रीराम ने सामना किया। ४७६

त्रिशिरा तलवार उठाये हुए तुमुल नाद के साथ नारे लगाते हुए आया। वह बड़ा वेगवान था। उसकी आँखें क्रूर और भयंकर थी। उसकी सेना के सामने श्रीराम खड़े रहे। श्रीराम ने उसकी सेना के भागों के सामने अपने शरों की पंक्तियों को ही पलटनों के रूप में स्थापित किया और युद्ध किया। ४७६

ताळिडै यऱ्ऱन तलैयु मऱ्ऱन, तोळिडै यऱ्ऱन तोडैह ळऱ्ऱन
वाळिडै यऱ्ऱन मऴुवु मऱ्ऱन, कोळिडै यऱ्ऱन कुडैह ळऱ्ऱन 477

ताळ् इटै अऱ्ऱन–(राक्षसों के) पैर बीच से कटे; तलैयुम् अऱ्ऱन–सिर अलग हुए; तोळ् इटै अऱ्ऱन–भुजाएँ बीच से कटीं; तोटैकळ् अऱ्ऱन–ऊरु कटे; वाळ् इटै अऱ्ऱन–तलवारें नष्ट हुईं; मऴुवुम् अऱ्ऱन–परशु भी मिटे; कोळ् इटै अऱ्ऱन–उनका बल भी मध्य में बेकार हुआ; कुटैयुम् अऱ्ऱन–छत्र भी छिन्न हुए। ४७७

राक्षसों का क्या हाल हुआ ? पैर कटे, सिर लुढ़के, हाथ कटे और ऊरु खण्डित हुए। तलवारें कटीं, परशु मिटे और छत्र नष्ट हुए। राक्षसों का बल भी बेकार हुआ। ४७७

कॉडियॉडु कॉडिञ्जिऱ्प् पुरविक् कूट्टऱ्प्
पडियॉडु पडिन्दन परुदित् तेर्प्पणै
नॅडियवॅङ् गडहरि पुरण्ड नॅऱ्ऱिवीऴ्
इडियॉडु मिडिन्दुवीऴ् शिहर मॅन्नवे 478

परुति तेर् पणै–चक्रव्यूह में रहे रथों के समूह; कोटि ओटु–ध्वजाओं के साथ; कोटिञ्च–'कॉडिञ्जु' (रथी के स्थान के सामने रहनेवाला कमल के आकार का वह अवलम्ब, जिस पर हाथ रखकर आराम लिया जाता है); इऱ–टूटे, इसलिए; पुरवि कूट्टु अऱ–अश्व अलग हुए और मिटे, इसलिए; पटि ओटु पटिन्तन–भूमि पर गिरकर नष्ट हुए; नॅऱ्ऱि वीऴ्–अपने ऊपर गिरे; इटि ओटु–वज्र के साथ; इटिन्तु वीऴ्–टूटकर गिरनेवाले; चिकरम् अॅन्नवे–पर्वतशिखरों के समान; नॅटिय वॅम् कट करि–बड़े, भयंकर और मत्त गज; पुरण्ट–लोट गये। ४७८

चक्रव्यूह में रथ थे। उनकी ध्वजाएँ कटीं। उनके अन्दर रहने वाले कमलाकार अवलम्ब (जिनका रथी अपनी थकन मिटाने के लिए सहारा लिया करते है) खण्ड हुए। अश्व भी मरकर अलग हो गये। फलस्वरूप रथ ही भूमि पर सिर के बल गिरे और टूट गये। बड़े-बड़े भयंकर मत्तगज भी वज्राहत पर्वत-शिखरों के समान, जो वज्र के साथ ही नीचे गिरते हैं, नीचे गिरकर लुढ़क गये। ४७८

अऱ्ऱन शिरमॅन वऱिद ऱॅऱ्ऱलर्
कॉऱ्ऱवॅञ् जिलैच्चरङ् गोत्तु वाङ्गुवार्
इऱ्ऱिल ताळॅन वॅऴुन्दु विण्णित्तैप्
पऱ्ऱिनर् मऴैयॅनप् पडैव ऴङ्गुवार् 479

चिरम् अऱ्ऱन अॅन–सिर कट गये, यह बात; अऱितल् तेऱ्ऱलर्–(जो) समझ न सके, वे; कॉऱ्ऱ वॅम् चिलै–बलवान भयंकर धनुषों में; चरम् कोत्तु वाङ्कुवार्–शर-संधान करते थे; ताळ् इऱ्ऱिल–पैरों को न कटा; अॅन–समझकर; अॅऴुन्तु विण्णित्तै पऱ्ऱिनर्–उठकर आकाश में खड़े होकर; मऴै अॅन–वर्षा के समान; पटै वऴङ्कुवार्–हथियार फेंके (कुछ राक्षसों ने)। ४७९

राक्षसों की विचित्र शक्ति और श्रीराम के शरों की तीव्रगति की विशेषता देखिए। सिर कटकर गिर गये तो भी राक्षस धनुष पर शर-संधान कर रहे हैं, मानो उनको विदित ही नहीं हुआ हो कि उनके सिर कट गये। कुछ राक्षसों के पैर कट गए; पर वे बिना उसकी सुध लिये ही आकाश में उछल उठे और वहाँ से वर्षा के समान हथियार बरसा रहे हैं! । ४७९

केडहत् तडक्कैय किरियिन् ऱोऱ्ऱत्त, आडहक् कवशत्त कवन्द माडुव
पाडहत् तरम्बैयर् मरुळप् पल्विद, नाडहत् तॊऴिलन नान्द हत्तन 480

कवन्तम् आट्टुव–कबन्ध (सिर कटे रुण्ड) जो नाच रहे थे; केटक तट कैय–ढाल सहित विशाल हाथों वाले थे; किरियिन् तोऱ्ऱत्त–पर्वत-सम आकार के थे; आटक कवचत्त–हाटक-कवच वाले थे; नान्तकत्तन–तलवारधारी थे; पाटकत्तु अरम्पैयर्–पाटक (पैंजनी ?) पहनी हुई अप्सराओं को; मरुळ–विस्मित करते हुए; पल् वित–विविध अनेक; नाटक तॊऴिलत–नृत्य-कर्म में लीन थे। ४८०

युद्धभूमि में कबन्ध ऐसे नाच रहे हैं कि पैंजनीविभूषित अप्सराएँ भी उनके विविध नाच देखकर विस्मय से हार मान लेती हैं! गिरि के समान उन कबन्धों के एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में तलवार है। वे हाटक-कवच-धारी हैं। ४८०

कवरिवॆण् कुडैयॆनु नुरैय कैम्मलैच्, चुवरिन कवन्दमाऴ् शुऴिय तण्डुऱैप्
पवरिऩप् पडुमणि कुविक्कुम् बण्णैय, उवरियैप् पुदुक्किन वुदिर वाऱरो 481

उतिर आऱु–रक्त-नदियाँ; कवरि वॆण् कुटै ऎंतुम्–चँवर और छत्र रूपी; नुरैय–झागों वाली थीं; कैम् मलै चुवरित–गज रूपी तटों की; कवन्तम् आऴ् चुऴिय–कबन्ध जिनमें डूब जायँ, ऐसे आवर्त वाली; तण् तुऱै–शीतल घाटों की; पवर् इत–विविध प्रकार के समूहों के; पटु मणि–दिखनेवाले रत्न; कुविक्कुम्–जिनमें आकर ढेरों में पाये जाते हैं, उन; पण्णैय–समीपवर्ती खेतों वाली; उवरियै पुतुक्कित–समुद्र को नया रंग-रूप देनेवाली हैं। ४८१

राक्षसों के मृत-शरीरों से जो रक्त बहा, वह नदियाँ बन गया। उन नदियों में चामर और श्वेत छत्र झाग के स्थान में थे। गज तट बने। आवर्त ऐसे थे जिनमें कबन्ध डूब जाते थे। शीतल घाट थे। उस नदी द्वारा अनेक रत्न बहते आये, जो पास के खेतों में जा पड़े रहे। उन नदियों ने समुद्र को नया रंग-रूप दिला दिया। ४८१

चण्डवॆङ् गडुङ्गणै तडियत् ताऴ्जिल
तिण्डिऱल् वळैयॆयिर् ऱरक्कर् तेवराय्
वण्डुऴल् पुरिहुऴल् मडन्दै मारॊडुम्
कण्डतर् तम्मुडैक् कवन्द नाडहम् 482

चण्ट वॅम् कटुम् कणै–प्रचण्ड और अति कठोर (श्रीराम के) बाणों ने; ताम् तटिय–प्रहार कर हत किया, इसलिए; चिल–कुछ; तिण् तिऱल्–अति बली; वळै ऍयिऱ्ऱु अरक्कर–वक्रदाँत वाले राक्षस; तेवराय्–देव बनकर; वण्टु उऴल्–भ्रमरावृत; पुरि कुऴल्–वेणी वाले केशों की; मटन्तैमार् ओटुम्–(देव-) स्त्रियों के साथ; तम् उटै कवन्त–अपने ही कवन्धों के; नाटकम्–नृत्य; कण्टत्तर्–देखकर आनन्दित हो रहे थे। ४८२

श्रीराम के शरों का यह गुण था कि उनसे आहत शत्रु वीर-स्वर्ग पहुँच जाया करते थे। यहाँ भी उनके प्रचण्ड बाणों से आहत वक्रदाँतों वाले राक्षस स्वर्ग के देव बन गये। वे वहाँ उन अप्सराओं के साथ, जिनकी वेणी वाले केश पर भ्रमर मँड़रा रहे थे, युद्धभूमि देखने लगे। अपने ही कवन्धों को नाचते देखकर उन्हें मजा आया। ४८२

आय्वळै मह्ळिरो डमर रीट्टत्तर्, तूयवॅङ् गडुङ्गणै तुणित्त तङ्गडोळ्
पेयॊरु तलैहॊळप् पिणङ्गि वाय्विडा, नायॊरु तलैहॊळ नहैयुऱ् ऱार्शिलर् 483

आय् वळै मकळिरोटु–चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराओं के साथ; अमरर् ईट्टत्तार्–देवगण बने (जो थे, वे) राक्षस; तूय वॅम् कटुम् कणै–पवित्र और भयंकर (श्रीराम के) अस्त्रों से; तुणित्त–कटे; तङ्कळ् तोळ्–अपने कन्धों को; ऒरु तलै पेय् कॊळ–एक ओर प्रेत के खींचते; पिणङ्कि–उससे झगड़कर; वाय् विटा–अपने मुख से न जाने देते हुए; नाय्–कुत्ते को; ऒरु तलै कॊळ–दूसरी ओर छीनते; नकैयुऱ्ऱार्–देखकर हँस रहे थे। ४८३

चुने हुए कंकण-धारिणी अप्सराओं के साथ वे यह भी देख रहे थे कि श्रीराम के पवित्र और प्रचण्ड बाणों से कटे उनके हाथों को कुत्तों ने अपने मुख में ग्रस लिया है; और एक ओर प्रेत उनको छीनने का प्रयास करते हैं और उस ओर कुत्ते अपने मुख से छीनने न देते हुए खींच लेने के प्रयास में लगे हैं। यह देखकर उन्हें मनोरंजन हुआ। ४८३

तॆरिहणै मूऴ्हलिऱ् ऱिरन्द मार्बिनर्
इरुविनै कडन्दुपो युमर् रॆय्दिनार्
निरुदर्दम् बॆरुम्बडै नॆडिदु निऩ्ऱवऩ्
ऒरुवनॆन् ऱुळ्ळत्ति नुलैवुऱ् ऱार्शिलर् 484

तॆरि कणै–चुने हुए (श्रेष्ठ) शरों के; मूऴ्कलिल्–घुस जाने से; तिऱन्त मार्पिनर् चिलर्–विदीर्ण छाती वाले कुछ राक्षस; इरु विनै कटन्तु–दोनों कर्मों का निराकरण करके; पोय् उम्पर् ऍय्तित्तार्–स्वर्ग जो जा पहुँचे थे; निरुतर् तम् पॆरुम् पटै–राक्षसों की सेना; नॆटितु–अतिविशाल है; निऩ्ऱवऩ्–(सामना करके) स्थित रहनेवाले; ऒरुवऩ्–एकाकी है; ऍऩ्ऱु–सोचकर; उळ्ळत्तिऩ् उलैवु उऱ्ऱार्–मन में चिंतित हुए। ४८४

श्रीराम के उत्तम बाणों के राक्षसों के शरीर के आर-पार होने से उनकी छातियाँ विदीर्ण हो गयीं। वे पाप-पुण्य दोनों कर्मों का निराकरण हो जाने से स्वर्ग पहुँच गये। वहीं से वे देखते हैं कि युद्धभूमि की स्थिति बड़ी विषम है। राक्षसों की सेना अत्यधिक विशाल है और उनके सम्मुख श्रीराम अकेले खड़े हैं। वे श्रीराम से सहानुभूति करके दुखी हुए। ४८४

कैक्कळि	ऱ्ऱैयवऩ्	पहऴि	कण्डहर्
मॅय्क्कुलम्	वेरॉडुम्	दुडैत्तु	वीऴ्त्तिऩ
मैक्करु	मनत्तॊरु	वञ्जन्	माण्बिलऩ्
पॊय्क्करि	कूऱिय	कॊडुञ्जॊऱ्	पोलवे 485

मै करु मत्तत्तु—अंजन-सम काले मन के; ऑरु वञ्चऩ्—एक वंचक; माण्पु इलऩ्—गुण-हीन मनुष्य को; पॊय् करि—झूठी गवाही (देते हुए); कूऱिय कॊटुम् चॊल्—जो कहा, उस घातक वचन; पोलवे—के समान; कै कळिऱु अत्तैयवऩ्—सूँड़ वाला जानवर (गज) सम श्रीराम के; पकऴि—शरों ने; कण्टकर्—लोककंटक; मॅय्कुलम्—राक्षसों के शरीरों की राशि को; वेर् ऑटुम्—समूल; तुटैत्तु वीऴ्त्तिऩ—मार-मिटाया। ४८५

सूँड़ वाले जानवर करी के समान दर्शनीय श्रीराम के बाणों ने लोक-कंटक राक्षसों के शरीरों को समूल मिटा दिया। उनका क्षय होना ऐसा था जैसे अंजन के समान काले मन वाले, कपटी और नीच प्रकृति के आदमी के झूठी गवाही के वचन कहने पर उसका नाश हो जाता है। ४८५

अञ्जुदऱ्	कुरुपहै	यरुत्त	नीदियर्
तञ्जॅन्नत्	तऩ्मय	माक्कुन्	दऩ्मैपोल्
वञ्जहत्	तरक्करै	वळैत्तु	वळ्ळऴाऩ्
शॅञ्जरत्	तूय्मैयाऱ्	ऱेव	राक्किऩाऩ् 486

वळ्ळल्—उदार प्रभु श्रीराम ने; अञ्चुतऱ्कु उरु—भयावह; पकै अऱुत्त—अंतश्शत्रु के नाशक; नीतियर्—नीतिमान ज्ञानियों से; तञ्चु ॲत—शरण कहने पर; तऩ् मयम् आक्कुम् तऩ्मै पोल्—(ज्ञानी) अपने ही समान (शरणागतों को) बना लेते हैं, उसी प्रकार; वञ्चकत्तु अरक्करै—कपटी राक्षसों को; वळैत्तु—लपेट में लेकर; चॅम् चर तूय्मैयाल्—श्रेष्ठ शरों की पवित्रता द्वारा; तेवर् आक्किताऩ्—देव बना दिया। ४८६

सबको भयातुर करनेवाले कामादि दुर्गुण रूपी शत्रुओं को मिटाकर रहनेवाले ज्ञानियो के पास कोई जाकर यह कहे कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, तो वे उसे अपने समान बना लेते हैं। वैसे ही श्रीराम ने उन कपटी राक्षसों को अपने शरों के दायरे के अन्दर बलात लाकर उन्हें मारा और उन्हें देव बना दिया। ४८६

वलङ्गॊळ्पोर् मानिडन् वलिन्दु कॊन्ऱमै
अलङ्गल्वे लिरावणऱ् कऱिविप् पामॆन्च्
चलङ्गॊळ्पो ररक्करुद मुरुक्क डाङ्गिन
इलङ्गैयि लुय्त्तदक् कुरुदि याऱरो 487

वलम् कॊळ्–वलशाली; पोर् मानिटन्–योद्धा, एक मनुष्य का; वलिन्तु कॊन्ऱमै–(अनेक राक्षसों को) बलात मारना; अलङ्कल्–मालाधारी; वेल्–भाला वाले; इरावणऱ्कु–रावण को; अऱिविप्पाम् ऎन–जाकर सुनायेंगे, सोचकर; कुरुति आऱु–रक्तनदी ने; चलम् कॊळ्–आवेग के साथ; पोर्–लड़नेवाले; अरक्कर् तम् उरुक्कळ्–राक्षसों के शरीरों को; ताङ्कित–वहा ले जाकर; इलङ्कैयिन्–लंका में; उय्त्ततु–पहुँचाया। ४८७

प्राण या जीव देव बन गये। पर राक्षसों के मृत शरीरों का क्या हुआ? रक्त की नदी उन्हें वहा ले गयी और वे लाशें लंका पहुँच गयीं। वे, मानो माला से भूषित और भालाधारी रावण को यह सन्देशा देने चलीं कि एक बलवान मनुष्य ने ही इन राक्षसों को बलात मारा था! । ४८७

शूऴ्न्दुयर् नॆंडुम्बडै पहऴि शुऱ्ऱुऱप्
पोऴ्न्दुयिर् कुडित्तलिऱ् पुरळप् पॊंङ्गिनान्
ताऴ्न्दिलन् मुत्तलैत् तलैवन् शोरियिन्
आऴ्न्ददे रम्बरत् तोट्टि यार्क्किन्ऱान् 488

चूऴ्न्तु उयर्–अपने को घेरकर बढ़ी; नॆंटुम् पटै–विशाल सेना (के वीरों) के; पकऴि–श्रीराम के बाणों ने; चुऱ्ऱु उऱ–चारों ओर से; पोऴ्न्तु–चीरकर; उयिर् कुटित्तलिल्–प्राण हर लिये; पुरळ–वे लोट गये, इसलिए; मुत्तलै तलैवन्–त्रिशिरा नामक सेनापति; पॊंङ्कितान्–उबल पड़ा; ताऴ्न्तिलन्–विलम्ब नहीं किया; चोरियिन् आऴ्न्त तेर्–रक्त में मग्न अपने रथ को; अम्परत्तु ओट्टि–अन्तरिक्ष में चलाते हुए; आर्क्किन्ऱान्–गरज उठा। ४८८

श्रीराम के बाणों ने उनको घेरे आये सभी राक्षसों को लपेटकर उनको मार दिया। वे सब लोट गये। त्रिशिरा नामक तीन सिर वाले राक्षस ने यह देखा और वह बौखला गया। बिना विलम्ब के उसने रक्त में मग्न रहे अपने रथ को ऊपर आकाश में चलाया। उसने भीषण गर्जन किया। ४८८

ऊन्ऱिय तेरिन नुरुमिन् वॆंङ्गणै
वान्ऱॊडर् मऴैयॆन वाय्मै यावर्क्कुम्
शान्ऱन निन्ऱवत् तरुम मन्नवन्
तोन्ऱऱन् ऱिरुवुरु मऱैयत् तूवितान् 489

ऊन्ऱिय तेरितन्–सुस्थापित रथ वाले ने; उरुमिन्–वज्र के समान; वॆम् कणै–भयंकर अस्त्र; वान् तॊटर् मऴै ऎन–मेघ-वर्षित निरन्तर धारों के समान; वाय्मै

यावर्क्कुम्–सभी सत्यप्रिय लोगों के लिए; चान्ऱु अँन निन्ऱ–दृष्टान्त के समान विद्यमान; तरुमम् अन्नवन्–धर्म-मूर्ति; तोन्ऱल् तन्–(दशरथ के) पुत्र श्रीराम के; तिरु उरु–श्रीशरीर को; मऱैय–आवृत करते हुए; तूविनान्–बरसाये। ४८८

अपने रथ को अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से खड़ा करके उसने वज्र के समान शरों को मेघ-वर्षा की धारों के समान निरन्तर चलाया। उन शरों में सत्यवादियों के दृष्टान्तस्वरूप और धर्मावतार दशरथ के पुत्र श्रीराम का दिव्य शरीर छिप गया। ४८९

❀ तूविय शरमॅलान् दुणिय वङ्गणै
एविन निरामनु मेवि येऴिरु
पूवियल् वाळियाऱ् पॉलङ्गॉ डेरऴित्
ताविवॅम् बाहनै यऴित्तु माऱ्ऱिनान् 490

तूविय चरम् अँलाम्–वर्षित सभी अस्त्र; तुणिय–खण्डित करते हुए; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; वॅम् कणै एविनन्–भयंकर शर चलाये; एवि–चलाकर; एऴ् इरु–(और) चौदह; पू इयल् वाळियाल्–तीक्ष्ण शरों से; पॉलन् कॉळ् तेर्–स्वर्ण-निर्मित रथ को; अऴित्तु–नष्ट करके; वॅम् पाकनै–पराक्रमी सारथी को; आवि अऴित्तु–जान से मारकर; माऱ्ऱिनान्–युद्ध की स्थिति में परिवर्तन पैदा कर लिया। ४९०

तब श्रीराम ने बाण चलाकर उन सभी तीरों को काट दिया। फिर उन्होंने चौदह अतितीक्ष्ण तीर चलाये और उसके रथ को ध्वस्त कर दिया और सारथी को भी मार दिया। तब युद्ध का रवैया ही बदल गया। ४९०

❀ अन्ऱियु मक्कणत् तमर रार्त्तॅळप्
पॉन्ऱॅरि वडिम्बुडैप् पॉरुविल् वाळियाल्
वन्ऱॉऴिऱ् ऱीयवन् महुड मात्तलै
ऑन्ऱॉऴित् तिरण्डैयु मुरुट्टि नानरो 491

अन्ऱियुम्–उसके अलावा; अ क्कणत्तु–उसी क्षण में; अमरर् आर्त्तु अँळ–देवों को हर्षरव करने देते हुए; पॉन् तॅरि–सुनहले; वटिम्पु उटै–किनारों वाले; पॉरुवु इल् वाळियाल्–अनुपम अस्त्रों से; वन् तॉऴिल् तीयवन्–नृशंसकारी क्रूर के; मकुटम् मा तलै–किरीटधारी (तीन) बड़े सिरों में; ऑन्ऱु ऑऴित्तु–एक को छोड़कर; इरण्टैयुम्–अन्य दोनों को; उरुट्टिनान्–लुढ़काया। ४९१

श्रीराम वहीं तक नहीं रुके। उसी क्षण उन्होंने अपने रुक्मपंख अस्त्र चलाकर उस नृशंस पापी के किरीटधारी बड़े सिरों में एक को छोड़कर बाकी दोनों को काट दिया। वे सिर भूमि पर गिरकर लोटने लगे। इसको देखकर देवगण सन्तोष का नाद कर उठे। ४९१

❀ तेरऴिन् दव्वऴित् तिरिशि रावॆन्नुम्
पेरऴिन् दॆन्ननिनु मऱमुवि ऴैत्तिलन्
नारिऴिन् दुमिऴ्शिलै वान नाट्टुऴिक्
कारिऴिन् दालॆनक् कणैहळ् शिन्दिनान् 492

अ वऴि–उस स्थान में; तेर् अऴिन्दु–रथ खो गया; तिरिचिरा–त्रिशिरा; ऎन्नुम् पेर्–का नाम; अऴिन्दॆन्निनुम्–मिट (निरर्थक हो) गया तो भी; मऱम् पिऴैत्तिलन्–वीरता से वंचित न होकर; चिलै–धनु से; नार् इऴिन्दु उमिऴ्–प्रत्यंचा द्वारा प्रेषित; कणैकळ्–शरों को; वान नाट्टु उऴि–आकाशलोक से; कार् इऴिन्दाल् ऎन–मेघ (पानी) गिरता हो जैसे; चिन्दिनान्–चलाया। ४९२

अब त्रिशिरा त्रिशिरा नहीं रहा। दो सिर खोकर उसने अपना नाम ही खो दिया। उसका रथ भी बेकार हो गया। तो भी उसने अपनी वीरता और साहस नहीं छोड़ा, पर अपने धनुष के डोरे खींचकर, व्योमनगर से मेघ-वर्षा गिरती हो, ऐसा अस्त्र निरन्तर छोड़े। ४९२

❀ एऱ्ऱिय नुदलिन निरुण्ड कार्मऴै
तोऱ्ऱिय विल्लॊडुन् दॊडर मीमिशैक्
काऱ्ऱिडै यऴित्तॆनक् कार्मु हत्तैयुम्
माऱ्ऱरुम् बहऴिया लऱुत्तु माऱ्ऱिनान् 493

एऱ्ऱिय नुतलिनन्–चढ़ी हुई भौंहों के भाल वाले (श्रीराम) ने; इरुण्ट कार्–काले मेघ ने; मऴै तोऱ्ऱिय–वर्षा कराई जैसे; विल् ओटुम्–अपने धनु से; तॊटर–शर चलाकर युद्ध किया; मी मिचै–आकाश में; काऱ्ऱु इटै अऴित्तु ऎन–वायु ने प्रवेश कर मिटा दिया जैसे; कार्मुकत्तैयुम्–त्रिशिरा के धनु को भी; माऱ्ऱु अरुम् पकऴियाल्–अलंघ्य वाणों से; अऱुत्तु माऱ्ऱिनान्–काटकर ध्वस्त कर दिया। ४९३

श्रीराम की भी त्योरियाँ चढ़ीं। उन्होंने भी काले मेघ के समान जो वर्षा कराता है, अपने धनुष के साथ युद्ध किया और अपने अमोघ और अवार्य अस्त्रों से त्रिशिरा के धनुष को काट दिया। धनु बिलकुल नष्ट हो गया। ४९३

❀ विल्लि ऴन्दन नॆन्निनुम् विळङ्गुवाण् मुहत्तिन्
ऎल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् वॆङ्गद मिडिक्कुम्
शॊल्लि ऴन्दिलन् ऱोळ्वलि यिऴन्दिलन् शॊरियुम्
कल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् कऱङ्गॊनन् तिरिदल् 494

विल् इऴन्तनन् ऎन्निनुम्–धनु गँवा दिया तो भी; विळङ्कु वाळ् मुकत्तिन्–शोभनेवाले उज्ज्वल चेहरे का; ऎल् इऴन्तिलन्–प्राकृतिक सौंदर्य न खोया; वॆम् कतम् इऴन्तिलन्–भयंकर क्रोध भी न गँवाया; इटिक्कुम् चॊल्–वज्र-सम बोली; इऴन्तिलन्–न गँवायी; तोळ् वलि–भुजबल; इऴन्तिलन्–न खोया; चॊरियुम्

कल्–पत्थर बरसाना; इळन्तिलन्–न छोड़ा; करङ्कु अॅन–वातचक्र के समान; तिरितल्–घूमना; इळन्तिलन्–न छोड़ा। ४९४

त्रिशिरा ने अब धनुष भी गँवा दिया। तो भी उसके उज्ज्वल मुख की प्रभा नहीं गयी। उसका क्रोध दूर नहीं हुआ और उसके वचन की वज्र की-सी कड़क और उग्रता भी नहीं गयी। उसका भुजबल भी नहीं गया और उसने पत्थर बरसाना नहीं छोड़ा। (पतंग या) वातचक्र के समान वह घूमता हुआ लड़ा। ४९४

* आलि रण्डुनू रुळवॅन्न वन्दरत् तॉरुवन्
मूळि रुम्बॅरु मायैयिन् शॅरुमुयल् वान्नैत्
ताळि रण्डैयु मिरण्डुवॅङ् गणैहळाड् ड़डिन्दु
तोळि रण्डैयु मिरण्डुवॅञ् जरङ्गळाड् ड़ुणिल्तान् 495

अन्तरत्तु–अन्तरिक्ष में; ऑरुवन्–एकाकी; मूळ् इरुम्–छानेवाली बड़ी; पॅरु मायैयिन्–विस्तृत माया से; आळ् इरण्टु नूरु उळ–योद्धा दो सौ हैं; अॅन–ऐसा; चॅरु मुयल्वानै–युद्ध करनेवाले उसके; ताळ् इरण्टैयुम्–दोनों पैरों को; इरण्टु वॅम् कणैकळाल् तटिन्तु–दो घातक बाणों से काटकर; तोळ् इरण्टैयुम्–दोनों भुजाओं को; इरण्टु वॅम् चरङ्कळाल् दो भयंकर बाणों द्वारा; तुणित्तान्–काट लिया। ४९५

अन्तरिक्ष में एकाकी रहकर त्रिशिरा ऐसी माया के साथ लड़ा कि यह भ्रम हो जाता था कि दो सौ राक्षस एक साथ युद्ध कर रहे थे। अदम्य उत्साह के साथ वह युद्ध कर रहा था। श्रीराम ने दो-दो अस्त्र चलाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों को काटकर अलग कर दिया। ४९५

* अऱ्ऱ ताळॊडु तोळिन्न नयिलॅयि ऱिलङ्गप्
पॊऱ्ऱै मामुळैप् पुलालुडै वायितिऱ् पुहुन्दु
पऱ्ऱ वादरिप् पान्ऱनै नोक्कित्तन् परियान्
कॊऱ्ऱ वार्शरत् तॊळिन्ददोर् शिरत्तैयुङ् गुऱैत्तान् 496

अऱ्ऱ ताळ् ऑटु तोळितन्–पैरों और हाथों से हीन; अयिल् अॅयिऱु इलङ्क–तेज दाँतों को प्रकट करते हुए; पॊऱ्ऱै मा मुळै–पर्वत की बड़ी कन्दरा के समान; पुलाल् उटै वायितिल्–मांस की गन्ध निकालनेवाले मुख में; पुकुन्तु पऱ्ऱल्–जाकर ग्रसने का; आतरिप्पात्त तत्तै–प्रयत्न करनेवाले उसको; नोक्कित्तन्–(श्रीराम ने) देखकर; परियान्–कृपा न करके; कॊऱ्ऱ वार् चरत्तु–दृढ़ एक लम्बे बाण से; ऑळिन्तत्तु ओर् चिरत्तैयुम्–बचे रहे एक सिर को भी; कुऱैत्तान्–काटकर अलग किया। ४९६

हाथ और पैर खोकर राक्षस ने अपने तीक्ष्ण दाँतों को निकालते हुए श्रीराम को अपने मांस-गन्ध-पूर्ण, बिलसदृश मुख से ग्रसने का उपक्रम किया। श्रीराम ने उसको देखा, दया नहीं की और एक लम्बा और बलवान अस्त्र चलाकर उसका बचा हुआ सिर भी धड़ से अलग कर दिया। ४९६

❀ तिरिशि रावॆनुम् जिहरमण् चेर्दलुम् जिदऱि
निरुद रोडिनर् तूडणन् विलक्क्कवु निल्लार्
परुदि वाळिनर् कॆडहत् तडक्कैयर् परन्द
कुरुदि नीरिडै वार्हुऴल् कॊऴुङ्गुडर् तॊडक्क 497

तिरिचिरा ॲनम् चिकरम्–त्रिशिरा रूपी शिखर; मण् चेर्तलुम्–धराशायी हुआ तो; परुति वाळितर्–सूर्यप्रभ तलवारधारी; केटक तट कैयर्–ढाल लिये बड़े हाथ वाले; निन्ऱ निरुतर्–विद्यमान राक्षस; चितऱि–अस्तव्यस्त होकर; तूटणन् विलक्क्कवुम्–दूषण के रोकने पर भी; निल्लार्–न रुके; परन्त–फैले रहे; कुरुति नीर् इटै–रक्त-प्रवाह के मध्य; कॊऴुम् कुटर्–मोटी आँतों के; वार् कऴल्–लम्बे पैरों से; तॊटक्क–उलझकर रोकते; ओटिनर्–(उनको भी खींचते हुए) भागे। ४६७

त्रिशिरा रूपी शिखर (शिखर-सम नेता) मरकर भूमि पर गिर गया, तो अर्क-सम प्रकाशमान तलवारें और ढाल रखनेवाले विशाल हाथों के राक्षस भय से अस्तव्यस्त होकर भागे। दूषण ने रोकना चाहा तो भी वे नहीं रुके। सारी युद्धभूमि रक्त और कीच से भरी थी। वे उसी में घुसकर भागे। आँतों ने उनके पैरों से उलझकर बाधा डाली। तो भी लस्टम-पस्टम वे भागे ही। ४९७

कणत्तिन् मेनिन्ऱ वानवर् कैवुडैत् तार्प्पप्
पणत्तिन् मेनिलङ् गुलैवुऱक् काल्हॊडु पऱप्पार्
निणत्तिन् मेल्विऴुन् दऴुन्दिनर् शिलर्शिलर् निवन्द
पिणत्तिन् मेल्विऴुन् दुरुण्डन रुयिर्हॊडु पिऴैप्पार् 498

मेल्–अन्तरिक्ष में; कणत्तिन् निन्ऱ–दलबद्ध स्थित; वानवर्–देवों ने; कै पुटैत्तु आर्प्प–तालियाँ पीटकर आनन्दरव किया; पणत्तिन मेल् निलम्–शेषनाग पर भूमि; कुलैवु उऱ–थर्रा उठी, तब; काल् कॊटु पऱप्पार्–पैरों के सहारे उड़नेवाले; चिलर्–(राक्षसों में) कुछ; निणत्तिन् मेल् विऴुन्तु–मांस-पंक में गिरकर; अऴुन्तिनर्–मग्न हुए; चिलर्–कुछ; निवन्त पिणत्तिन् मेल् विऴुन्तु–ढेर बनी रही लाशों पर गिरकर; उरुण्टनर्–लुढ़के; उयिर् कॊटु पिऴैप्पार्–किसी विध जान से बचे। ४६८

वे राक्षस ऐसे दौड़े, मानो उनके पैर ही पंख हों। उनको देखकर आकाश में देवगण तालियाँ पीटकर हँसे। शेषनाग पर धृत यह भूमि राक्षसों के पदाघातों से डोल उठी। उनमें कुछ रक्त-कीच में मग्न होकर डूब गये। कुछ ढेर बनी पड़ी रही लाशों पर टकराकर गिरे और किसी तरह बचकर भागे। ४९८

वेय्न्द वाळॊडु वेलिडै शिडैन्दन वॆट्ट
ओय्न्दु ळार्शिल रुलन्दन रुदिरनीर् याऴ्ऱिल्
पाय्न्दु कालपदिन् दऴुन्दिनर् शिलर्शिलर् पयत्ताल्
नीर्न्दि ञार्नॆडुङ् गुरुदियङ् गडल्पुक्कु निलैयार् 499

चिलर्—कुछ; इटै—बीच में; वेय्न्त—पड़ी रही; वाळ् ऑट्ु वेल्—तलवारों और भालों के; मिटैन्तन—जो सटे हुए थे; वॅट्ट—काटने से; ओय्न्तुळार्—(दौड़ नहीं सके) शिथिल हुए; उलन्ततर्—मरे; चिलर्—और कुछ; उतिर नीर् आऱ्ऱिल् पाय्न्तु—रक्त-नदी में गिरकर; काल् पतिन्तु—पैरों के गड़ जाने से; अळुन्तिनर्—डूब मरे; चिलर् पयत्ताल्—कुछ, डरते हुए; नीन्तिनार्—तैरे; कुरुति अम् कटल् पुक्कु—रक्त-सागर में पहुँचकर; निलैयार्—चंचल रहे। ४९९

राक्षसों के मार्ग में तलवारें, भाले आदि कसरत से पड़े थे। कुछ राक्षसों के पैर उनसे कट गये और वे राक्षस निर्बल होकर गिरे और मरे। कुछ रक्त-प्रवाह में घुसे और कीच मे पैरों के गड़ जाने से मरे। कुछ भयातुर होकर उस रक्त-नदी में उतरे और वहते जाकर रक्त-सागर में पहुँचे। वहाँ वे डूब-उतराये। ४९९

※ मण्डि योडिनर् शिलर्नॅडुङ् गडहरि वयिऱ्ऱिल्
पुण्डि ऱन्दमा मुळैयिडै वाळोडुम् बुहुवार्
तॉण्डै नीङ्गिय कवन्दत्तैत् तुणैवनी यॅम्मैक्
कण्डि लेन्नॅप् पुहलॅन्क् कैदलैक् कॊळ्वार् 500

मण्टि ओटित्तर् चिलर्—तेज जो भागे, वे कुछ; नॅटुम् कट करि वयिऱ्ऱिल्—मत्तगजों के पेट में; पुण् तिऱन्त—व्रण जो खुले थे; मा मुळै इटै—उन बिलों में; वाळ् ऑट्ुम् पुकुवार्—तलवारों के साथ घुसे; तॉण्टै नीङ्किय—गले से (कटकर) हीन; कवन्तत्तै—कबन्ध को; तुणैव—मित्र; नी ऍम्मै कण्टिलेन्—तुम 'मुझे नहीं देखा'; ऍन्—यह; पुकल् ऍन—(श्रीराम के बाणों से) कहो, ऐसा; कै तलै कॊळ्वार्—सिर पर हाथ (जोड़कर) रख लेते। ५००

कुछ राक्षस दौड़े। बचने का कोई स्थान नहीं मिला। वहाँ हाथी मरे पड़े थे, जिनके पेट विलों के समान खुले थे। राक्षस अपनी तलवारों के साथ उन्हीं में घुस गये। कुछ राक्षस भागते जा रहे थे। उनको डर था कि श्रीराम के शर पीछा करके आ रहे हैं। उन्होंने कवन्धों को देखा और अंजलिबद्ध हाथ अपने सिरों पर रखते हुए उनसे प्रार्थना की कि तुम श्रीराम के बाणों से मत कहो कि तुमने हमें देखा था। ५००

※ कच्चुम् वाळुन्दङ् गाऱीडऱन् दोर्प्पत्त काणार्
अच्च मॅन्बदोन् ऱुरुवुहॉण् डालॅन्न वळिवार्
उच्च वीरन्गैच् चुडुशर निरुदर्नॅञ् जुरुवित्
तच्चु निन्ऱन कण्डन्न रव्वळित् तविर्न्दार् 501

उच्च वीरन्—सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के; कै—हाथ के; चुटु चरम्—मारक बाण; निरुतर् नॅञ्चु उरुवि—राक्षसों की छाती में घुसकर; तच्चु निन्ऱन—गड़े रहे; कण्टनर्—उनको देखकर; अ वळि तविर्न्तार्—उस मार्ग को बचाकर; कच्चुम् वाळुम्—कमरबन्द और तलवार; तम् काल् तॉटर्न्तु ईर्प्पत्त—उनके पैरों को काटती

रहती है; काणार्–उसकी भी सुध न लेते हुए; अच्चम् ॲऩ्पतु ओर् उरुवु कॊण्टाल् ॲऩ–मानो भय नामक वस्तु ने रूप लिया हो, ऐसा; अऴिवार्–वहीं रहकर मरते। ५०१

कुछ वीरों ने देखा कि मार्ग में सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के हाथ के प्रेरित भयानक शर राक्षसों के वक्षों में घुसकर वहीं गड़े रहे। वे उस मार्ग से नहीं गये। वे इतने भयभीत हो गये कि उनके कमरबन्द और उनकी तलवारें उन्हें निरन्तर काट रही थीं—इसकी भी उन्होंने सुध नहीं ली। वे बिल्कुल भय के मूर्त आकार थे। वे जहाँ-तहाँ रहकर मरने लगे। ५०१

❀ अनैय राहिय वरक्करै याण्डॊऴिड्. कमैन्द
विनैय नीङ्गिय मनित्तरै वॆरुवन्मि नॆन्ऩा
निनैयु यानॊऩ्ऱु निरप्पुव दुण्डॆन निन्ऱान्
तुनैयुम् वाम्बरित् तेरिनन् ऱूडणन् शॊन्नान् 502

तूटणऩ्–दूषण; तुनैयुम्–तीव्रगामी; वाम् परि—अश्व-जुते; तेरिनऩ्–रथ पर सवार; अनैयर् आकिय अरक्करै–वैसे भागते हुए राक्षसों को; आण् तॊऴिड्कु अमैन्त–पुरुष के कार्य योग्य; विनैयम् नीङ्किय–काम जिनके पास नहीं, उन; मनित्तरै–मानवों से; वॆरुवल्मिऩ्–मत डरो; ॲऩ्ऩा–कहकर; यान् निनैयुम् ऑऩ्ऱु–मैं सोचता हूँ एक बात; निरप्पुवतु उण्टु–जो कहती है; ॲन–ऐसा; निन्ऱान्–खड़ा होकर; चॊऩ्ऩान्–बोला। ५०२

तब दूषण नामक सेनापति ने, जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार था, भागनेवाले राक्षसों को रोकते हुए कहा कि हे वीरो! मत डरो, मत भागो। आखिर तुम्हारा शत्रु मनुष्य है। वह साहसपूर्ण वीरता युक्त (राक्षस) पुरुष का काम करने की शक्ति नहीं रखता। उससे मत डरो। फिर उसने वहीं खड़ा रहकर कहा कि मुझे तुमसे एक बात कहनी है। सुनो। ५०२

❀ वच्चै यामॆनुम् वयमनत् तुण्डॆन वाऴुम्
कॊच्चै मान्दरैक् कोल्वळै मह्ळिरुङ् गूशार्
निच्च यमॆनुङ् गवशत्ता ऩिलैनिऱ्कु मन्ऱेल्
अच्च मॆऩ्ऩुमी दारुयिर्क् करुन्दुणै यामो 503

वच्चै आम् ॲनुम् पयम्–अपमान योग्य यह भय; मनत्तु उण्टु ॲन वाऴुम्–मन में रखते हुए जो जीते हैं; कॊच्चै मान्तरै–उन क्षुद्र मनुष्यों से; कोल् वळै मकळिरुम्–सुन्दर चूड़ियाँ जो पहनती है, वे स्त्रियाँ भी; कूचार्–नहीं शरमाती हैं (आदर नहीं करतीं); निच्चयम् ॲनुम्–धैर्य रूपी; कवचत्ताल्–कवच धारण करने से ही; निलै निऱ्कुम्–प्राण स्थायी रहेगा; अन्ऱेल्–नहीं तो; अच्चम् ॲऩ्ऩुम् अतु–भय का यह गुण; आर् उयिरुक्कु–प्यारे प्राणों के लिए; अरुम् तुणै आमो–श्रेष्ठ सहायक होगा क्या। ५०३

भय अपयश है। उसके साथ रहनेवाले हैं मानव लोग। उनको

देखकर सुन्दर कंकणधारिणी स्त्रियाँ भी नहीं डरतीं, उनसे नहीं शरमातीं। और भी एक बात है। वीरता के कवच के अन्दर ही प्राण सुरक्षित रह सकते हैं। अब जो भीरुता तुम दिखा रहे हो, क्या वह तुम्हारे प्राणों का रक्षण कर सकेगी ? । ५०३

❀ पूव रावुवेऱ् पुरन्दरन् इन्नॊडु पॊन्ऱा
मूव रोडुदान् मुन्निन्ऱु मुट्टिय मुनैयिल्
एव रोडिना रिराक्कदर् नुमक्किडैन् दोडुम्
देव रोडुहऱ् इऱ्‌इन्दुळि रोमनन् दिहैत्तीर् 504

पू अराव् वेल्–तीक्ष्ण किये हुए भाले वाले; पुरन्तरन् तन्नॊटु–पुरन्दर के साथ और; पॊन्ऱा–अमर; मूवरोटु–त्रिदेवों के साथ; मुन् निन्ऱु मुट्टिय–सामने स्थित जो की; मुनैयिल्–उस युद्धभूमि में; इराक्कतर् एवर् ओटिनार्–राक्षस कौन भागे; मनम् तिकैत्तीर्–यहाँ चित्त-भ्रमित हुए; नुमक्कु इटैन्तु–तुमसे (हारकर) त्रस्त होकर; ओटुम्–जो भागते हैं; तेवरोटु–उन देवों से; कऱ्ऱु अऱिन्तु उळिर् ओ–सीख ले गये हो क्या। ५०४

तीक्ष्ण भालाधारी पुरन्दर से और अमर रहनेवाले त्रिदेव से भी युद्ध हुआ था न ? उनके सामने डटकर जिन राक्षसों ने युद्ध किया, उनमे कौन थे जो मैदान छोड़कर भागे ? कोई नहीं ! अब क्यो विकलमन हुए हो ? क्या यह गुण तुमने उन देवों से सीख लिया है जो तुमको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं ? । ५०४

इङ्गॊर् मानिडऱ् कित्तनै वीरर्ह ळिडैन्दीर्
उङ्गै वाळॊडु पुहऴ्विऴ वूर्पुह वुवन्दीर्
कॊङ्गै मार्बिडैक् कुऴिप्पुऱक् कळिप्पुऱु कॊऴुङ्गण्
नङ्गै मार्हळैप् पुल्लुदि रोनल नुहर्वीर् 505

इङ्कु ओर् मानिटर्कु–यहाँ एक मनुज के सामने; इत्तनै वीरर्कळ्–इतने वीर; इटैन्तीर्–हार मान गये; उम् कै वाळ् ऒटु–अपने हाथ की तलवार के साथ; पुकऴ् विऴ–यश को नीचे डालते हुए; ऊर् पुक उवन्तीर्–गाँव जाना पसन्द किया; नलम् नुकर्वीर्—सुख-भोग चाहते हो; कळिप्पु उऱु–मदमत्त; कॊऴुम् कण्–बड़ी आँखों की; नङ्कैमार्कळै–अपनी स्त्रियों को; कॊङ्कै–उनके स्तन; मार्पु इटै कुऴिप्पु उऱ–तुम्हारे वक्षों में दबें, ऐसा; पुल्लुतिरो–गले से लगाओगे क्या। ५०५

अकेले एक मनुज के सामने इतने राक्षस हार मानकर भागते हो ! युद्धस्थल में तलवारों के साथ अपने यश को गिराकर अपने स्थान में जा प्रविष्ट होना चाहते हो ! क्या सुख-भोग की इच्छा हो गयी और तुम जाकर उन मत्त और विशाल आँखों की अपनी स्त्रियों को इतना कसकर गले लगाना चाहते हो कि उनके पुष्ट स्तन तुम्हारे वक्षों में दब जायँ ? । ५०५

६: शॆय्बु कादॆट्टिय कण्णिणै पालॆन्नन् तैळ्ळिनवोर्
वॆय्बु कादट्टिडै नुळ्ळैनिनप् वॆरिनुडप् पायुन्द
कॊय्बु कादट्टुदि गोनद मार्विळॆयॆ कुळिन्त
अम्बु कादट्टुदि रोहुन मन्नॊगरफ़ कनुमा 506

घॆय्बु कादट्टिय–ताम्र (क्रोध से लाल) बनी; कण् इणै–आँखों के जोड़े; पाल् अॆन–दूध के समान; तॆळिन्दीर्–स्वच्छ हो गये, ऐसी आँखों के हो गये; कुल मट्कैयर्क्कु–तुम्हारे कुल की स्त्रियों को; ऑय्बु कादट्टु इडै–विकट संग्राम में; नुळै तोडम्–घुसकर दौड़ते समय; वॆरिन्–पीठ में; उर पाय्न्दन–घुसी रहीं; कॊय्बु कादट्टुतिरो–दांतियाँ दिखाओगे; नद मार्बु इडै कुळिन्दन–(या) विशाल वक्ष में घुसे; अम्बु कादट्टुतिरो–बाणों को दिखाओगे। ५०६

तुम्हारी आँखों को लाल होना चाहिए! पर अब वे श्वेत दिखती हैं—डर से, क्रोध छोड़ देने से! जब तुम अपने-अपने आवास पर जाओगे तो अपनी पत्नियों को क्या दिखाओगे अपनी वीरता के चिह्नों के रूप में? उन टहनियों और शाखाओं को दिखाओगे जो घने वन में भय से भागते समय तुम्हारी पीठ में चुभ जायेंगे? या अपने वक्षस्थल पर लगे घावों को? । ५०६

एफ़्फ़ मिर्टिगवत्तु मॆन्नुपुण् डोविहन् मनिदर्
काफ़्कुन् वॆज्जमत्तु नाण्रियन् यमरर्क्कुकु मरिदान्
ताफ़्क रनवुयन् तुरुगुनत्तु तलॆमहन् उडुनौ
मूफ़्कौ उन्ड्रिनुन् मुदुक्कोडम् वॊम्बक्रि मुयन्ड्रोर् 507

इफल् मनिदर्कु आक्कुम्–शत्रु-मनुष्य से जो किया जाता है; वॆम् नमतुनु–उस भीषण युद्ध में; नाण्मै–(तुम्हारा) पौरुष; अ अमररक्कुम्–उन अमरों के लिए भी; अरितु–दुर्लभ है; इदक्कु एफ्फम् इलन् मेल् उण्डो–यहाँ हमारा सन्ताप इससे बढ़कर हो सकता है क्या; ताफ्कु अरम्–जिन पर प्रहार करना कठिन है, ऐसी; पुयत्तु–भुजाओं के स्वामी; उन् कुल तलैमकन्–तुम्हारे कुल के श्रेष्ठ नायक; तङ्कै–(रावण की) छोटी बहिन की; मूक्कु ओडु अन्रि–नाक के साथ ही नहीं बल्कि; नुम् मुदुकु ओडुम्–तुम्हारी पीठ के साथ भी; वॊम् पळि–लगनेवाला अपयश; मुयन्ड्रीर्–हो, इसका उपक्रम किया है तुमने। ५०७

आखिर शत्रु मनुज के साथ जो हो रहा, उस युद्ध में तुम ऐसा पौरुष (पौरुष-हीनता) दिखा रहे हो! यह देवों के लिए भी दुर्लभ है। हन्त! इससे अधिक दुखदायिनी बात क्या होगी? तुम कैसा कार्य कर रहे हो, उसका अर्थ क्या होगा? —मालूम है? तुम्हारे कुलनायक, जो अलंघ्य भुजाबल रखते हैं, उन रावण की बहिन की नाक ही नहीं कटी, बल्कि तुम्हारी पीठ पर अपयश लगेगा! यही प्रयत्न तुम कर रहे हो। ५०७

६ आर वाळ्क्कॆयित् त्तणिहरा यमैदिरो पयिल्वॆल्
वीर वाट्कोळ्ळु वॆत्तमडुत् तुळ्ळदिरो वॆड्डिप्पोर्त्

तीर वाळ्क्कैयिर् ऱेवरैच् चॅरुविडैप् परित्त
वीर वाट्कैयी रॅङ्ङनम् वाळ्दिरो विळम्बीर् 508

वॆरि पोर्—उन्मत्तकारी युद्ध में; तीर वाळ्क्कैयिल्—साहसपूर्ण जीवन के कारण; तेवरै चॅरु इटै परित्त—देवों से युद्ध में छीनी हुई; वीर वाळ्—वीरता की तलवारें; कैयीर्—जिनमें हैं, ऐसे हाथों के राक्षसो; वाळ्क्कैयित् वणिकराय्—जीवन में व्यापारी; आर—वनकर; अमैतिरो—रहोगे क्या; अयिल् वेल्—तीक्ष्ण भाले; वीर वाळ्—वीरता की सहायक तलवारें; कॊळ्ळ् अँत मट्टुत्तु—हल की फाल बनाकर भूमि में खोदकर; उळुतिरो—जोतनेवाले हो; ऍङ्ङ्नम् वाळ्तिरो—कैसे जीवन बिताओगे; विळम्पीर्—कहो। ५०८

उन्मत्तकारी युद्ध में अपूर्व धैर्य दिखाते हुए तुमने देवों के हाथों से उनकी तलवारें छीन ली थीं। ऐसी तलवारों के धारक ! अब जीवन वणिकों का बिताने का विचार किया है ? या तीक्ष्ण भालों और प्रतापी तलवारों को हल का फाल बनाकर भूमि की खेती करोगे और कृषक बनोगे ? बताओ तो सही। ५०८

❀ ऍन्ऱु तानुन्द नॅऱ्िहडऱ् चेनैयु मिऱैनीर्
निन्ऱु काण्डिरॅन् नॆडुञ्जिलै वलियॅन नेराच्
चॅन्ऱु ताक्किनन् ऱेवरु मरुळ्हॊण्डु तिहैत्तार्
नन्ऱु कात्तियॅन् ऱिरामनु मॅदिर् शॅल नडन्दान् 509

ऍन्ऱु—ऐसा कहकर; नीर्—तुम लोग; इऱै—कुछ देर; निन्ऱु—खड़े होकर; ऍन् नॆट्टुम् चिलै—मेरे लम्बे धनुष का; वलि—पराक्रम; काण्टिर्—देखो; ऍन—समझाकर; तानुम्—स्वयं और; तन् ऍऱि कटल् चेनैयुम्—उसकी तरंगाकुल समुद्र-सम सेना ने; नेरा चॅन्ऱु ताक्किनन्—श्रीराम के सामने जाकर उन पर आक्रमण किया; तेवरुम् मरुळ् कॊण्टु—देव भी चकराकर; तिकैत्तार्—भ्रमित हुए; इरामनुम्—श्रीराम ने भी; नन्ऱु कात्ति ऍन्ऱु—अच्छा सावधान, बचा लो कहकर; ऍतिर् चॆल—उसके सामने; नटन्तान्—चलते आये। ५०९

दूषण ने यह वचन कहा। आगे यह बोला कि तुम मत भागो। जरा देर खड़े रहो और मेरे धनुष का अतुल प्रताप देखो। फिर वह आगे गया और उसकी सेना भी साथ गयी। उन्होंने जाकर श्रीराम पर आक्रमण किया। देवों को भी भय हो गया कि यह राक्षस वीर अनर्थ कर देगा। तब श्रीराम भी यह कहते हुए सामने आये कि ठहरो, अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाओ। सावधानी से अपनी रक्षा कर लो। ५०९

ऊड रुप्पुण्ड मॊय्बडैक् कैयॊडु मुयर्न्द
कोड रुप्पुण्ड कुञ्जरङ् गॊडिञ्जॊडु कॊडियित्
काड रुप्पुण्ड कालिय ऱेर्हदिर्च् चालि
शूड रुप्पुण्ड वॆन्क्कळुत् तरुप्पुण्ड तुरहम् 510

मोय् पटै–सबल हथियार; ऊटु अऱ्प्पुण्ट–बीच में कटे; कुञ्चरम्–हाथी; कै ओट्टुम्–सूँड़ों सहित; उयर्न्त–उभर आये; कोटु–दाँतों के; अऱ्प्पुण्ट–कटे हो गये; काल् इयल् तेर्–हवा के समान चलनेवाले रथ; कोटिञ्चु ओट्टु–पीठ के सामने के 'कोंडिञ्जु' नाम के हस्तावलम्ब के साथ; कोटियिन् काटु–ध्वजाओं के वन के साथ; अऱ्प्पुण्ट–कटे हो गये; तुरकम्–अश्व; कतिर् चालि चूटु–शालि-पौधों की बालें; अऱ्प्पुण्ट ॲन्न–कट गई हों, ऐसे; कळुत्तु अऱ्प्पुण्ट–गर्दन-कटे हो गये। ५१०

उस युद्ध में बलवान हथियार कटे। हाथी की सूँड़ें और दाँत कटे और वे गिर गये। रथ ध्वस्त हुए। ध्वजाएँ और पीठ के सामने के भाग आदि कटे। अश्वों के सिर धान की बालियों के समान गले से काट दिये गये। ५१०

तुरुवि	योडिन	वुयिर्निलै	शुडुशरन्	दुरन्द
करुवि	योडुवन्	कच्चैयुङ्	गवशमुङ्	गळल
अरुवि	योडिन्न	वॅन्नविळि	कुरुदिया	ऱलैप्प
उरुवि	योडिन्न	केडहत्	तट्टोडु	मुडलम् 511

चुटु चरम् तुरन्त–तापक शर (जो श्रीराम ने) छोड़े; उयिर् निलै–राक्षसों का मर्म स्थान; तुरुवि–ढूँढ़ते हुए; ओटिन–चले; करुवि ओटु–हथियारों के साथ; वन् कच्चैयुम्–दृढ़ बन्दो और; कवचमुम् कळल–कवचों को उतारते हुए; अरुवि ओटिन्न ॲन्न–नदियाँ बहती हों जैसे; इळि कुरुति आऱु–(राक्षसों के शरीरों से) निकलनेवाले रक्त की नदियाँ; अलैप्प–उनको इधर-उधर हिलातीं ऐसा; केटक तट्टु ओटुम्–ढालों के थालों के साथ; उटलम्–शरीरों को भी; उरुवि ओटिन–निकरकर चले। ५११

श्रीराम से प्रेरित सन्तापक बाण राक्षसों के मर्मस्थल की खोज में चले। उनके लगते ही राक्षसों के हथियार कमरबन्द और कवच आदि कटकर गिर गये। वे अस्त्र ढालों को भेदकर और राक्षसों के शरीरों के आर-पार हो गये। उनके शरीर से निकलकर रक्त बहा और उसकी नदियाँ बहीं। उन नदियों में कवच, कमरबन्द आदि उतराये और इधर-उधर चालित हुए। ५११

आयन्द	कङ्गपत्	तिरङ्गळ्पुक्	करक्कर्दम्	मावि
तोयन्द	तोय्विल	पिऱैमुहच्	चरञ्जिरन्	दुमित्त
कायन्द	वॅञ्जरम्	निरुदर्तङ्	गवशमार्	बुरुवप्
पायन्द	वञ्जह	रिदयङ्गळ्	पिळन्दन	पल्लम् 512

आयन्त–चुनकर प्रेरित; कङ्क पत्तिरङ्कळ्–कंक-पत्र (चील के पंख से युक्त शर) बाण; पुक्कु–(राक्षसो के शरीरों के अन्दर) प्रविष्ट होकर; अरक्कर् तम् आवि तोयन्त–राक्षसों के प्राणों में लगे; तोयवु इल–ऐसा जो प्रविष्ट नहीं हुए वे; पिऱै मुक चरम्–अर्द्धचन्द्र बाणों ने; चिरम् तुमित्त–सिर खण्डित कर दिये; कायन्त

वॅम् चरम्—उग्र और प्रचण्ड शर; निरुतर् तम्—राक्षसों के; कवच मार्पु—कवच-सज्जित वक्षों के; उरुव पाय्न्‌ल—आर-पार गये; पल्लम्—अन्य शरों ने; वन्‌चकर्—वंचकों के; इतयङ्कळ् पिळन्‌तत्त—हृदय को फोड़ दिया। ५१२

श्रीराम के कंकपत्र नाम के चील के पंख से युक्त तीक्ष्ण शर राक्षसों के मर्म पर जा लगे। ऐसे जो जाकर नहीं लगे, उन अर्द्धचन्द्र बाणों ने राक्षसों के सिरों को काट दिया। कुछ उग्र वाण जो तेजी से गये कवच सहित शरीरों को निफरकर वाहर आ गये। अन्य अस्त्रों ने उनके हृदय (वक्षस्थल) को विदीर्ण कर दिया। ५१२

तूड गन्‌विडु शरमवै यावैयुन् दुणिया
माडु निन्‌ड्रवर् वळङ्गिय पडैहळु माड्रा
आडल् कॉण्डन्न नळप्परुम् बॅरुवलि यरक्कर्
कूडि निन्‌ड्रवक् कुरैहडल् वड्रळवडक् कुड्रैत्तान् 513

तूटणन्—दूषण ने; विट्टु—जो चलाया; चरम् अवै यावैयुम्—उन सभी बाणों को; तुणिया—(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न करके; माटु निन्‌ड्रवर्—पास जो खड़े रहे; वळङ्किय पटैकळुम्—उनके चलाये हुए शरों को भी; माड्रा—लौटवा देकर; अळप्पु अरुम्—अगणित; पॅरु वलि अरक्कर्—बड़े बलवान राक्षस; कूटि निन्‌ड्र—जिसमें मिले रहे; कुरै कटल्—उस गर्जनशील सागर-सम सेना को; वड्रळ् पट—सुखाते हुए; कुड्रैत्तान्—मिटाकर; आटल्—विजय; कॉण्टतन्—प्राप्त की। ५१३

श्रीराम ने दूषण-प्रेरित सभी शरों के खण्ड-खण्ड कर दिये। पास जो रहे, उन राक्षसों के प्रेरित शरों को बेकार करके फिरा दिया। इस तरह गर्जनशील सागर के समान जो सेना राक्षसों से भरी थी उसको श्रीराम ने सुखा दिया। वे विजयी हो गये। ५१३

आर्त्तॅ ळुन्दनर् वानव रुवरै मरत्तो
डीर्त्तॅ ळुन्दन कुरुदियिन् पॅरुनदि यिरामन्
तूर्त्त शॅञ्जरन् दिशैतॊरुन् दिशैतॊरुन् दॊडर्न्दु
पोर्त्त वॅञ्जिनत् तरक्करैप् पुरट्टिन पुवियिल् 514

वानवर्—देव; आर्त्तु ॲळुन्तनर्—हल्ला मचा उठे; कुरुतियिन् पॅरु नति—रक्त की वड़ी नदियाँ; अरु वरै—बड़े पर्वतों को; मरत्तॊटु—पेड़ों के साथ; ईर्त्तु ॲळुन्तत्त—बहाते हुए वहीं; इरामन्—प्रभु श्रीराम ने; तूर्त्त—जो ठूँसे; चॅम् चरम्—उन उत्तम बाणों ने; तिचै तॊरुम् तिचै तॊरुम्—दिशा-दिशा में सर्वत्र; तॊटर्न्तु—(राक्षसों का) पीछा करके जाकर; पोर्त्त—उन दिशाओं को आच्छादित करते हुए जो रहे, उन; वॅम् चितत्तु अरक्करै—भयंकर, क्रुद्ध राक्षसों को; पुवियिल्—भूमि पर; पुरट्टित्त—लुढ़का दिया। ५१४

देवगण इससे हर्षित हो गये और उन्होंने हल्ला मचाया। रक्त की वड़ी-बड़ी नदियाँ वड़े-वड़े पर्वतों को तरुओं सहित बहाते हुए वहीं।

श्रीराम लगातार शर चला रहे थे। वे हर दिशा में राक्षसों का पीछा करते गये और वहाँ भरे रहे क्रुद्ध राक्षसों के सिर कटकर भूमि पर लुढ़क गये। ५१४

तोऩ्ऱु	माल्वरैत्	तॊहैयॆऩत्	तुवन्ऱिय	निणच्चे
ऱाऩ्ऱ	पाळ्वयिऱ्	ऱलहैयैप्	पुहऴ्वदॆ	नमर्वेट्
टूऩ्ऱि	ऩारॆला	मुलन्दन	रॊल्लैयिऩ्	मडिन्दार्
काऩ्ऱ	वव्वुयिरक्	कालनुम्	वलित्तुमॆय्	कवऩ्ऱाऩ् 515

तोऩ्ऱु माल् वरै–दृश्यमान बड़े पर्वतों के; तॊकै ऎंत–समूहों के समान; तुवऩ्ऱिय–घने रूप से रहे; निण चेऱु–मांस-पंक; आऩ्ऱ–खूब खाकर जो रहे; पाळ् वयिऱु अलकैयै–उन रिक्त-पेट वाले प्रेतों को; पुकऴ्वतु ऎंत्–प्रशंसा क्या हो; अमर् वेट्टु–युद्ध चाहकर; ऊऩ्ऱिऩार् ऎलाम्–जो रहे वे सभी (राक्षस); ऑल्लैयिऩ्–जल्दी; उलन्ततर्–मरे; काऩ्ऱ–(प्रेतों से पेट भर जाने के कारण जो) थूके गये; अ उयिर्–उन प्राणों को; कालनुम्–यम भी; वलित्तु–छीन ले जाते-जाते; मॆय् कवऩ्ऱाऩ्–श्रान्त-शरीर हो गया। ५१५

चर्बी के पर्वतों के समान ढेर बने रहे। उसको खाकर प्रेत बड़े ही मजे में रहे। अब तक रिक्तपेट रहे उनको मनमाने ढंग से खाने को मिल गया। उनकी प्रशंसा क्या की जाय? उससे बढ़कर यम की स्थिति कहना अधिक युक्त होगा, क्योंकि उसी से युद्धभूमि की स्थिति का सच्चा रूप मिलेगा। युद्ध में मन लगाकर जो राक्षस आये वे सब मरे। उनको प्रेतों ने खाया और जो पेट के भर जाने से उनके द्वारा त्यक्त थे, उन जीवों को उठाते-उठाते यम का शरीर थक गया। ५१५

कळिऱु	तेर्परि	कडुत्तवर्	मुडित्तलै	कवन्दम्
ऑळिऱु	पल्पडैत्	तेङ्गुलत्	तरक्कर्द	मुडलम्
वळिऱु	शेर्निणम्	पिऱङ्गिय	वडुक्कलिऩ्	मीदिल्
कुळिऱु	तेर्हडि	दोट्टिनऩ्	ऱूडणऩ्	कोदित्ताऩ् 516

तूटणऩ्–दूषण; कळिऱु–हाथी; तेर्–रथ; परि–अश्व; कटुत्तवर्–(साथ लेकर) क्रोध के साथ जो लड़े; तऩ् कुलत्तु अरक्कर् तम्–अपने कुल के राक्षसों के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों; कवन्तम्–कबन्धों; ऑळिऱु पल् पटै–शोभायमान अनेक हथियारों; वॆळिऱु चेर् निणम्–श्वेत चर्बी; पिऱङ्किय–के बने; अटुक्कलिऩ् मीते–पर्वतों पर ही; कुळिऱु तेर्–शब्दायमान रथ को; कटितु ओट्टिऩऩ्–सवेग चलाता गया; कॊतित्ताऩ्–क्रुद्ध रहा। ५१६

दूषण ने अब अपने रथ को आगे बढ़ाया। सामने हाथी, अश्व, राक्षसों के किरीटधारी सिर, उनके कबन्ध, अनेक उज्ज्वल हथियार श्वेत चर्बी आदि के पर्वतों के समान ढेर बने पड़े थे। क्रोध से उन्मत्त दूषण का रथ इन्हीं के ऊपर से चला और गरगराहट करता गया। ५१६

अऱङ्गॊळ् ळादव राक्कैह् ळडुक्किय वडुक्कल्
पिऱङ्ग नीण्डऩ कणिप्पिल पॆरुङ्गडु विशैयाल्
कऱङ्गु पोऩ्ऱुळ दायिऩुम् बिणप्पॆरुङ् गडत्तिल्
इऱङ्गु मेऱुमत् तेर्पट्ट दियादॆऩ विशैप्पाम् 517

अऱम् कॊळ्ळातवर्–अधर्मी (राक्षसों) के; आक्कैकळ्–शरीर; अट्टुक्किय अट्टुक्कल्–जिनमें परतों के रूप में चुने गये थे, वे पर्वत; पिऱङ्क नीण्टऩ–सब जगह दिखाई देते हुए विस्तृत रूप से पड़े रहे; कणप्पिल–हिसाब में नहीं आये (अगणित रहे); पिणम् पॆरुम् कटत्तिल्–लाशों के उस बड़े वन में; पॆरुम् कटुम् विचैयाल्–अधिक वेग के साथ; कऱङ्कु पोऩ्ऱु–लट्टू के समान; उळतु आयिऩुम्–घूमता रहा तो भी; इऱङ्कुम् एऱुम्–उतरता-चढ़ता गया; अ तेर् पट्टतु–उस रथ का हाल; यातु ऎऩ–क्या (था यह); इचैप्पाम्–कहें। ५१७

अधर्मी राक्षसों की असंख्य लाशें परतों में पहाड़ों के समान पड़ी रहीं। दूषण का रथ जब उन लाशों के वन-समान युद्धभूमि में लट्टू के समान वेग से घूमता हुआ चला तो भी चढ़ावों और उतारों के कारण उसे बहुत संकट उठाना पड़ा। उसकी क्या गति हुई, उसका क्या कहा जाय ? । ५१७

अरिदि ऩॆय्दिऩ ऩैयैन्दु कॊय्युळैप् परियाल्
उरुळु माळिय दॊरुदनित् तेरिनऩ् मेहत्
तिरुळि नीङ्गिय विन्दुविऩ् पॊलिहिऩ्ऱ विरामऩ्
ऱॆरुळुम् वार्हणैक् कूऱ्ऱॆवि राविशॆऩ् ऱॆऩ्ऩ 518

ऐ ऐन्तु–(पाँच के पाँच =) पचीस; कॊय् उळै परियाल्–सुन्दर रूप से कटे अयालों से भूषित अश्वों द्वारा; उरुळुम्–(खींचकर चलने से) चलनेवाले; आळियतु ऒरु तऩि तेरिऩऩ्–चक्रों के अनुपम रथ पर आरूढ़ दूषण; मेकत्तु इरुळिऩ् नीङ्किय–मेघों के कारण बने अन्धकार से छूटकर जो आया है; इन्तुविऩ्–उस इन्दु के समान; पॊलिकिऩ्ऱ–शोभायमान; इरामऩ्–श्रीराम के; तॆरुळुम्–साफ़; वार्–दीर्घ; कणै कूऱ्ऱु ऎतिर्–बाण रूपी यम के सामने; आवि चॆऩ्ऱु ऎऩ्ऩ–जीव पहुँचा हो, ऐसा; अरितिऩ् ऎय्तिऩऩ्–सायास पहुँचा। ५१८

उसके रथ में पचीस सुन्दर रूप से कटे (सजे) अयालों से भूषित अश्व जुते थे। उस पर आरूढ़ दूषण सायास श्रीराम के सामने, यम के सामने जानेवाले जीव के समान (अपने प्राण सौंपने के लिए) जा पहुँचा। श्रीराम मेघान्धकारनिवृत्त इन्दु के समान शोभायमान थे। ५१८

❀ शॆऩ्ऱ तेरैयुज् जिलैयुडै मलैयॆनत् तेर्मेल्
निऩ्ऱ तुडणऩ् ऱऩ्ऩैयु नेडियव नोक्कि
नऩ्ऱु नऩ्ऱॆनित् ऩिलैयॆऩ वरुळुरै नयन्दाऩ्
ऒऩ्ऱ कालत्तव् वॆय्यवऩ् पहळिमूऩ् ऱॆय्दाऩ् 519

नॆंडियवऩ्–विक्रमी श्रीराम ने; चॆऩ्ऱ तेरैयुम्–आगत रथ को; चिलै उटै मलै अॆऩ्ऩ–धनुर्धर पर्वत के समान; तेर् मेल् निऩ्ऱ–रथ पर स्थित; तूटणऩ् तऩ्ऩैयुम्–दूषण को; नोक्कि–देखकर; निऩ् निलै नऩ्ऱु नऩ्ऱु–तुम्हारा धैर्य अच्छा है, अच्छा है; अॆऩ्ऩ–ऐसा; अरुळ् उरै नयऩ्ताऩ्–कृपा-वचन कहे; अॆऩ्ऱ कालत्तु–जब उन्होंने यह कहा, तब; अ वॆय्यवऩ्–उस दुराचारी ने; पकऴि मूऩ्ऱु–शर तीन; अॆय्ताऩ्–चलाये। ५१९

विक्रमी श्रीराम ने सामने आये रथ को और उस पर आरूढ़, धनुर्धर भूधर के समान दूषण को भी देखा। उन्होंने वाहवाही की— "तुम्हारा धैर्य धन्य है, धन्य है।" जब वे कृपा के साथ यह वचन कह रहे थे, तभी उस दुराचारी दूषण ने तीन भयंकर शर लेकर उन पर चला दिये। ५१९

तूर वट्टवॆण् डिशैहळैत् तनित्तनि शुमक्कुम्
पार वॆट्टिऩो डिरण्डिनि लॊऩ्ऱुपार् पुरक्कल्
पेर विट्टवन् करिनुद लोडैयिऱ् पिऱङ्गुम्
वीर पट्टत्तिऱ् पट्टन विण्णवर् वॆरुव 520

तूर वट्ट–दूर, मण्डलाकार; अॆण् तिचैकळै–आठों दिशाओं को; तऩि तऩि चुमक्कुम्–अलग-अलग धारण करनेवाले; पार अॆट्टिऩ् ओटु–वली अष्ट (दिग्गजों) के साथ; इरण्टिऩिल् ऒऩ्ऱु–और (शेष व कूर्म में) एक (शेष) अपनी पादुकाओं को; पार् पुरक्क–लोकभरणार्थ; पेर विट्टवऩ्–जिन्होंने अलग भेजा था, उन (श्रीराम) के; करि नुतल् ओटैयिल्–गज के भाल पर शोभनेवाले पट्ट के समान; पिऱङ्कुम्–मनोरम रूप से विद्यमान; वीर पट्टत्तिल्–वीरोचित पट्टो पर; विण्णवर् वॆरुव–देवों को सिहरने देते हुए; पट्टऩ–(वे तीनों शर) लगे। ५२०

वे जाकर श्रीराम के भाल की वीरपट्टी पर लगे, जिसे देखकर देवगण सहम उठे। वह पट्टी गज के भाल पर सज्जित मुखपट्ट के समान शोभायमान थी। श्रीराम कौन थे ? वे स्वयं विष्णु भगवान थे, जिन्होंने अष्टदिग्गजो के भूभार-वहन के कार्य में सहायता देने के लिए अपनी पादुकाओं को अपने से अलग करके भेजा था। वे पादुकाएँ शेषनाग के अवतार थी, जो भूमि के भारवाही दो (शेष और कूर्म) में एक (माना जाता) है। ५२०

❀ अॆय्द कालमुम् वलियुनऩ् ऱॆऩ्ऩनिनैन् दिरामऩ्
शॆय्द शेयॊळि मुऱुवलऩ् कडुङ्गणै तॆरिन्दान्
नॊय्दि नङ्गव नॊऱ्ऱिल्परित् तेर्बड नूऱिक्
कैयिल् वॆञ्जिलै यऱुत्तॊळिर् कवशमुङ् गडिन्दान् 521

इरामऩ्–श्रीराम ने; अॆय्त कालमुम्–(दूषण के) शर चलाने का काल; वलियुम्–और उसका बल; नऩ्ऱु अॆऩ्ऩ–श्लाघ्य, यह; निऩैन्तु–समझकर; चॆय्त चेय् ऒळि–लाल (सुन्दर) उज्ज्वल; मुऱुवलऩ्–हँसी के साथ; कटुम् कणै तॆरिन्ताऩ्–कठोर एक अस्त्र चुनकर चलाया; नॊय्तिऩ्–सुगम रीति से (या जल्दी); अङ्कु–वहाँ; अवऩ्–उसके; नॊऱ्ऱिल् परि–तीव्रगति अश्व के; तेर्–रथ को; पट नूऱि–तहस-नहस

करके; कैयिन् वेंम् चिलै अरुत्तु–(उसके) हाथ में रहे धनुष को भी काटकर; **ऑळिर् कवचमुम्**–चमकदार कवच को भी; **कटिन्तान्**–तोड़ दिया। ५२१

तीनों शर श्रीराम के सिर की पट्टी पर लगे। श्रीराम मुस्कराये। उन्होंने मन में सोचा कि वाह ! उसका शरप्रेषणकाल यानी उसके बाण की गति और उसका बल प्रशंसनीय है ! फिर श्रीराम ने एक भयावह बाण चुन लिया और उससे उसके रथ को और उसमें जुते तीव्रगामी अश्वों को ध्वस्त किया; उसके हाथ में रहे भयंकर धनु को तोड़ा और उसके कवच को भी नष्ट कर दिया। ५२१

❀ तेव रार्त्तॅळ मुनिवर्ह डिशैतॉरुम् जिलम्बुम्
ओविल् वाळ्त्तॉलि कार्क्कडन् मुळक्कॅन्न वोङ्गक्
काव डाविदु वल्लैये तीयॅन्क् कणैयॉन्
ऱेवि नानव नॅयिरुडै नॅडुन्दलै यिळन्दान् 522

तेवर् आर्त्तु ॲळ–देवों ने उठकर कोलाहल मचाया; **मुनिवर्कळ्**–मुनियों का; **तिचै तॉरुम्**–दिशा-दिशा में; **चिलम्पुम्**–कहा हुआ; **ओवु इल्**–निरन्तर; **वाळ्त्तु ऑलि**–आशीर्वाद का स्वर; **कार् कटल् मुळक्कु ॲन**–काले समुद्र के गर्जन के समान; **ओङ्क**–भर उठा; **वल्लैयेल्**–समर्थ हो तो; **इतु का अटा नी**–इसको बचा रे तू; **ॲन**–कहकर; **कणै ऑन्ऱु**–एक बाण; **एविनान्**–चलाया; **अवन्**–उसने भी; **ॲयिऱुटै नॅटुम् तलै**–(भयंकर वक्र) दाँतों से युक्त अपना बड़ा सिर; **इळन्तान्**–गँवाया। ५२२

श्रीराम ने फिर एक अस्त्र छोड़ा। छोड़ते-छोड़ते उन्होंने ललकारा कि रे दुष्ट ! हो सके तो तू बचा ले इसे। दूषण बेचारा क्या करता ? उसने अपना सिर गँवाया। तब देव हर्षरव मचा उठे। चारों ओर ऋषियों ने साधुवाद और आशीर्वाद किया, जिसका स्वर काले समुद्र के गर्जन के समान सब ओर भर उठा। ५२२

❀ तम्बितलै यऱ्ऱपडि युन्दय रदन्शेय्
अम्बुपडै यैत्तुणि पडुत्तडु मऱिन्दान्
वॅम्बुपडै विऱ्कैविश यक्करन् वॅहुण्डान्
कॉम्बुतलै कट्टिय कॉलैक्करि कडुप्पान् 523

कॉम्पु तलै कट्टिय–जिसके दाँत, सिर जितना ऊँचा उगे हुए थे; **कॉलै करि**–उस भयंकर गज की; **कटुप्पान्**–समता करनेवाला; **वॅम्पु पटै**–भयंकर हथियार; **विल्**–धनुष को; **कै**–रखनेवाले हाथ का; **विचय करन्**–विजयी खर; **तम्पि तलै अऱ्ऱ पटियुम्**–भाई (दूषण) के सिर के कटने का प्रकार; **तयरतन् चेय्**–दशरथ के पुत्र के; **अम्पु**–बाणों का; **पटैयै तुणि पटुत्ततुम्**–उसकी सेना का नाश करना; **अऱिन्तान्**–जानकर; **वॅकुण्टान्**–नाराज हुआ। ५२३

विजयी खर को यह समाचार मिला। खर ऐसे खूनी गज के समान

भयंकर आकार का था, जिसके दाँतों के छोर सिर तक ऊँचे उगे थे। वह अपने हाथों में बड़े ही घातक हथियार और धनुष रखता था। उसके भाई दूषण का सिर कैसे कटा ? दशरथसुत, दाशरथी श्रीराम के बाणों ने राक्षस-सेना को कैसे हत कर मिटाया ? —यह उसने सुना। उसे अपार क्रोध हुआ। ५२३

❀ अन्दहनु	मुट्किट	वरक्करहड	लोडुम्
शिन्दुरम्	वयप्पुरवि	तेर्दिशै	परप्पि
इन्दुवै	वळैक्कुमॅळि	लिक्कुल	मॅनत्तान्
वन्दुवरि	विऱ्कैमद	यानैयै	वळैत्तान् 524

अन्तकनुम् उट्किट—यम को भी भयभीत करते हुए; अरक्कर् कटल् ओटुम्—राक्षसों की सेना के सागर के साथ; चिन्तुरम्—गजों; वय पुरवि—बलवान अश्वों; तेर्—रथों को; तिचै परप्पि—चारों दिशाओं में वितरित करके; इन्तुवै वळैक्कुम्—इन्दु को घेरनेवाले; ॲळिलि कुलम् ॲन—मेघ-समूह के समान; वरि विल्कै—बन्धन-युक्त धनुर्धर-हस्त; मत यानैयै—मत्तगज-सम (श्रीराम) को; तान् वन्तु—स्वयं आकर; वळैत्तान्—घेर लिया (खर ने)। ५२४

वह तुरन्त उठकर अपनी सेना के साथ श्रीराम के पास आया और उसने अपनी सेना के साथ उन्हें घेर लिया। उस सेना में पदाति वीरों का दल सागर के समान था। उसमें गज, बलवान अश्व, रथ आदि की सेनाएँ भी थीं। वह सेना चन्द्र को घेर आनेवाले मेघमण्डलों के समान चारों ओर फैली रही। खर ने अपने दल-बल सहित धनुर्धर, मत्तगज-सम श्रीराम को घेरा। ५२४

❀ अडङ्गलिल्	कॉडुन्दॉळि	लरक्करव्	वनन्दन्
पडङ्गिळि	वुऱ्प्पडि	पडप्पल	विदप्पोर्
कडङ्गलुळ्	तडङ्गळिऱ्	तेर्परि	कडावित्
तॉडङ्गिनर्	नॅडुन्दहैयुम्	वॅङ्गणै	तुरन्दान् 525

अटङ्कल् इल्—अदम्य; कॉटुम् तॉळिल्—दुराचारी; अरक्कर्—राक्षसों ने; अ अनन्तन्—उस अनन्तनाग के; पटम् किळिवु उऱ्—फनों को फाड़ते हुए; पटि पट—भूमि को मेटते हुए; पल वित—विविध; कटम् कलुळ्—मद बहानेवाले; तटम् कळिऱ्—बड़े हाथियों; तेर्—रथों और; परि—अश्वों को; कटावि—चलाते हुए; पोर् तॉटङ्कितर्—युद्ध आरम्भ किया; नॅटुम् तकैयुम्—विक्रमी प्रभु ने भी; वॅम् कणै—भयंकर अस्त्र; तुरन्तान्—चलाये। ५२५

वे अदम्य दुराचारी राक्षस घोर युद्ध करने लगे। भूमि का धारण करनेवाले आदिशेषनाग का फन ही फट गया; भूमि भी ध्वस्त हो गयी ! वे राक्षस विविध बड़े-बड़े गज हाँकते आये। वे गज अपने गालों पर

मदनीर वहा रहे थे। वीर अश्वों के साथ रथ चलाते आये। विक्रमी श्रीराम ने वलवान अस्त्र छोड़े। ५२५

तुडित्तन कडक्करि तुडित्तन परित्तेर्
तुडित्तन मुडित्तलै तुडित्तन तॊडित्तोळ्
तुडित्तन मणिक्कुडर् तुडित्तन तशैत्तोल्
तुडित्तन कळ्रुणै तुडित्तन विडत्तोळ् 526

कटम् करि तुटित्तन–(उनके लगने से) मत्तगज तड़पे; परि तेर्–अश्व-जुते रथ; तुटित्तन–उछले; मुटि तलै–किरीटधारी सिर; तुटित्तन–छटपटाये; तॊटि तोळ्–वलयभूषित कन्धे; तुटित्तन–कटकर छटपटाये; मणि कुटर्–उनकी छोटी आँतें; तुटित्तन–फड़कीं; तचै तोल् तुटित्तन–मांससहित खालें फड़कीं; कळल् तुणै–पैरों के जोड़े; तुटित्तन–फड़के; इटम् तोळ्–वायें हाथ। ५२६

मत्तगज तड़पकर गिरे। रथ उछलकर गिरे और टूटे। अश्व छटपटाते हुए गिरे। किरीटधारी राक्षसों के सिर तड़पे। वलयधारी कन्धे लुढ़के। राक्षसों की छोटी आँतें फड़कीं। दोनों पैर फड़फड़ाये। वायें हाथ फड़के। (तुडित्तन = शरीर के अंग जव शरीर से कटकर अलग होते हैं, तव कुछ देर तक उछलते-गिरते, तड़पते हैं और छटपटाते हैं। या जीवित शरीर के अंगों का फड़कना भी कहते हैं।)। ५२६

❀ वाळिन्वनम् वेलिन्वनम् वार्शिलै वनन्दिण्
तोळिन्वन मॅन्ऱिवै तुवन्ऱुनिरु दप्पेर्
आळिन्वन निन्ऱदनै यम्बिन्वन मॅन्नुम्
कोळिन् मळैवन्गुळ् विनिऱ्कुरै पडुत्तान् 527

वाळिन् वनम्–तलवारों का कानन (समूह); वेलिन् वनम्–बर्छियों का जंगल; वार् चिलै वनम्–दीर्घ धनुषों का वन; तिण् तोळिन् वनम्–सुदृढ़ कन्धों का समूह; अन्नवै तुवन्ऱु–वे सव खूब मिले रहे (जिसमें), उस; निरुत पेर् आळिन् वनम्–राक्षसों के वीरों का जंगल (अनीक); निन्ऱतनै–जो सामने खड़ा था, उसे; अम्पिन् वनम् अॅन्नुम्–शरों का वन रूपी; कोळिन्–बलवान; मळैयिन्–वर्षा द्वारा; कुळुवितिल् कुरैपट्टुत्तान्–दल के दल श्रीराम ने काट गिराये। ५२७

युद्ध के मैदान में तलवारों की बहुलता थी। भालों का जंगल था। लम्बे धनुषों की भरमार थी। सबल कन्धों की विपुल भीड़ थी। इनसे भरी राक्षसों के पैदल वीरों की विशाल सेना थी। उसको श्रीराम ने शरों की वर्षा से ध्वस्त कर दिया। (तमिळ् में वनम् = वन, कानन या जंगल किसी चीज़ की भीड़ या बड़े वृंद को द्योतित करता है।)। ५२७

तानुरुवु कॊण्डदरु मन्दॆरि शरन्दान्, मीनुरुवु मेरुवै विरैन्दुरुवु मेलाम्
वानुरुवु मण्णुरुवुम् वाळुरुवि वन्दार्, ऊनुरुवु मॅन्नुमि डुणर्त्तवु मुरित्तो 528

तान् उरुवु कॉण्ट तरुमम्–धर्मरूप श्रीराम के; तॅरि चरम् तान्–चुने हुए शर; मीन् उरुवुम्–नक्षत्रमण्डल को भेदकर जायँगे; मेरुवै विरैन्तु उरुवुम्–मेरु को तुरन्त भेद जायँगे; मेल् आम् वान् उरुवुम्–ऊपर के आकाश के आर-पार जायँगे; मण् उरुवुम्–भूमि को भी विद्ध कर जायँगे; वाळ् उरुवि वन्तार्–तलवार लेकर आनेवाले; ऊन् उरुवुम्–राक्षसों के शरीरों को निफर जायँगे; ॲन्नुम् इतु–यह बात; उणर्त्तवुम् उरित्तो–कहने अर्ह है क्या। ५२८

धर्मावतार श्रीराम के चुनकर प्रेषित शर तारामण्डलों को, मेरु को, आकाश को और भूमि को भी अनायास भेद चल सकते हैं। फिर तलवार-धारी राक्षसों के शरीरों को निफर सकते हैं —यह कहना क्या उनकी प्रशंसा करना होगा क्या ? । ५२८

अन्ऱिडर् विळैत्तवर् कुलङ्गळॊ डडङ्गच्
चॅन्ऱुलै वुऱम्बडि तॅरिन्दुहणै शिन्दा
मन्ऱिडै नलिन्दुवलि योर्हळॊळि योरैक्
कॊन्ऱनर् कवर्न्दपॊरु ळिऱ्कडिदु कॊन्ऱान् 529

अन्ऱु–तब; इटर् विळैत्तवर्–कष्ट देनेवाले राक्षसों को; कुलङ्कळ् ओटु अटङ्क–कुल के साथ एक दम; चॅन्ऱु उलैवु उऱुम्पटि–जाकर मिटाते हुए; तॅरिन्तु कणै चिन्ता–श्रीराम ने चुनकर अस्त्र छोड़े तो; मन्ऱु इटै–न्यायालय में; वलियोर्–शक्तिमन्त; ऍळियोरै–दीनों को; नलिन्तु–त्रास देकर; कॊन्ऱवर्–मारकर; कवर्न्त पॊरुळिल्–जो धन ग्रस लेते है, उसकी (मिटने की) से भी; कटितु–अधिक तीव्र गति से; कॊन्ऱान्–मारा। ५२६

श्रीराम ने अस्त्र चुनकर उन राक्षसों पर चलाया जो इनको कष्ट देने आये थे और इस संकल्प के साथ चलाया कि राक्षसों का उनके कुलों के साथ नाश हो। समझिए कि कोई सबल आदमी गरीब आदमी को सताता है। न्यायालय में भी उसके विरुद्ध झूठा मामला चलाता है। अन्त में उसको मारकर उससे धन ग्रस लेता है। तो वह धन नहीं टिकता। वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है। उससे भी अधिक तेजी से राक्षसों की सेना को श्रीराम के बाणों ने मिटा दिया। ५२९

❀ कडुङ्गर नॅऩप्पॅयर् पडैत्त कऴल्वीरन्
अडङ्गलु मरक्करऴि वुऱ्ऱिड वऴन्ऱान्
ऑडुङ्गलि तिणक्कुरुदि योदमदि नुळ्ळान्
नॆडुङ्गडलिन् मन्दर मॆनत्तमिय निन्ऱान् 530

ऑटुङ्कल् इल्–अक्षय; निण कुरुति ओतम् अतिल्–मांस और रक्त के सागर में; उळ्ळान्–जो रहा; नॅटुम् कटलिन्–बड़े (क्षीर-) सागर में; मन्तरम्–मन्दरपर्वत; ॲन–के समान; तमियन् निन्ऱान्–एकाकी जो खड़ा रहा; कटुम् करन् ॲन पॅयर् पटैत्त–प्रखर खर नामक विख्यात; कऴल् वीरन्–पायलधारी वीर; अरक्कर्

अटङ्कलुम्—सारे राक्षसों के; अऴिवु उड्रिट—मर-मिटने पर; अऴ्ऴुराऩ्—क्रुद्ध हुआ। ५३०

सेना-विहीन खर अक्षय मांस और रक्त के सागर के बीच में क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरु के समान खड़ा रहा। प्रखर और खर के नाम से विख्यात उस पायलधारी वीर ने देखा कि सारी सेना मिट गयी है। उसे अपार क्रोध हुआ। ५३०

❀ शॅङ्गणॆरि	शिऩ्दवरि	विऱ्पहऴि	शिऩ्दप्
पॊङ्गुहुरु	दिप्पुणरि	युट्पहैयु	नॅञ्जन्
कङ्गमॊडु	काहमिडै	पक्कडलि	लोडुम्
वङ्गमॆऩ	लायदॊरु	तेरिऩ्मिशै	वन्दाऩ् 531

चॅम् कण्—लाल आँखों से; ऎरि चिन्ऩ—अंगारे से उगलते हुए; विल् पकऴि चिन्त—धनुष से बाण छोड़ते हुए; पॊङ्कु कुरुति पुणरि—उमड़नेवाले रक्त का सागर और; उळ् पुकैयुम् नॅञ्चन्—धुआँ जिसमें था, ऐसे मन के साथ; कङ्कम् ओटु काकम् मिटैय—कंक के साथ कौए भी मिल आये; कटलिऩ् ओटुम् वङ्कम् ऎन्ऩल् आयतु—समुद्र में चलनेवाले पोतोपम; ऒरु तेरिऩ् मिचै—एक रथ पर; वन्ताऩ्—आया। ५३१

उसकी लाल-लाल आँखों से अंगारे छूटे। धनुष ने शर छोड़े। रक्त सागर-सा उसके मन में उमग रहा था। उसके मध्य धुआँ उठ रहा था। खर समुद्र में चलनेवाले पोत के समान एक वड़े रथ पर सवार हो आया। उसके रथ के साथ कंक और काग उड़ते आ रहे थे। ५३१

❀ शॅरुत्तिऱुदि	यिऱ्पुवऩि	तीयवॆऴु	तीयिऩ्
मऱत्तिऩ्वयि	रत्तॊरुवन्	वन्दणुहु	मुन्दैक्
कऱुत्तमणि	कण्डर्हड	वुट्चिलै	करत्ताल्
इऱुत्तवनुम्	वॆङ्गणै	तॆरिन्दत	नॆदिर्न्दाऩ् 532

इऱुतियिल्—युगान्त में; पुवऩि तीय—भुवनों को जलाते हुए; चॅऱुत्तु ऎऴु—प्रचण्डता के साथ उठनेवाली; तीयिऩ्—आग के समान; मऱत्तिऩ् वयिरत्तु ऒरुवऩ्—वीरता और शत्रुता में अद्वितीय (खर); वन्तु अणुकुम् मुन्ऩै—आकर नियराये, इसके पहले ही; कऱुत्त मणि कण्टर्—नीलकण्ठ श्रीशिवजी के; कटवुळ् चिलै—दिव्य (त्र्यंबक नामक) धनु के; इऱुत्तवऩुम्—भंजक ने भी; वॆम् कणै तॆरिन्तऩऩ्—तापक अस्त्र लेकर; ऎतिर्न्ताऩ्—सामना किया। ५३२

खर भुवनों का अन्त करनेवाली युगान्त अग्नि के समान क्रूरता और वैर में अद्वितीय था। उसके अपने पास पहुँचने के पूर्व ही नीलकण्ठ शिवजी के धनु के भंजक श्रीराम ने बाण चुन लिये। फिर वे युद्धसन्नद्ध हो उसके सामने आये। ५३२

तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन्न वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यरक्करपदि यॅय्दान्
तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यिरामन्नु मऱुत्तान् 533

ती उरुव–अग्नि के आकार के; काल विचैय–वायु की-सी गति के; चॅव्वि अन्न–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–भयंकर रूप से तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण शर; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; ॲय्तान्–चलाये; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; ती उरुव–अग्नि रूपी; काल् विचैय–पवनगति; चॅव्वियत्त–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण बाण; अऱुत्तान्–चलाकर उनको काट दिया। ५३३

खर ने एक सहस्र शर चलाये। वे शर ज्वलन्त अग्नि के आकार के थे। पवनसम तेज चलनेवाले और तीक्ष्णमुखी थे। श्रीराम ने वैसे ही अग्नि रूपी, पवनगति, श्रेष्ठ और तीक्ष्णमुखी, एक सहस्र शर छोड़े और खर के अस्त्रों को काटकर मिटा दिया। ५३३

❀ ऊऴियॅरि यिऱ्कॊडिय पाय्पहऴि यॊन्बान्
एऴुलहि नुक्कुमॊरु नायहन्नु मॅय्दान्
शूऴ्शुडर् वडिक्कणै यवऱ्ऱॅदिर् तॊडुत्ते
आऴिवरि विऱ्करनु मन्नवै यऱुत्तान् 534

ऊऴि ॲरियिल् कॊटिय–युगान्त की अग्नि से भी अधिक क्रूर; पाय् पकऴि ऑन्पान्–तेज चलनेवाले नौ अस्त्र; एऴ् उलकिनुक्कुम् ऑरु नायकनुम्–सातों लोकों के श्रेष्ठ नायक श्रीराम ने; ॲय्तान्–खर पर चलाये; आऴि–मण्डलाकार; वरि विल्–बन्धनयुक्त धनु के; करनुम्–खर ने भी; अवऱ्ऱु ॲतिर्–उनके आगे; चुटर् चऴ्–ज्वलन्त; वटि कणै–तीक्ष्ण बाण; तॊट्टुत्ते–चलाकर; अन्नवै–उनको; अऱुत्तान्–काट दिया। ५३४

फिर सर्वलोकनायक श्रीराम ने प्रलयकालीन अग्नि के समान तापक और तेज चलनेवाले सात बाण खर पर चलाये। खूब मण्डलाकार झुके धनुष के धारक खर ने भी उनके विरुद्ध ज्वलन्त और तीक्ष्ण अस्त्र भेजकर उन्हें काट दिया। ५३४

❀ कळ्ळविनै मायमवर् कल्वियिन् विळैत्तान्
वळ्ळलुरु वैप्पहऴि मारियिन् मऱैत्तान्
उळ्ळमुलै वुऱ्ऱमर रोडिन्न रॊऴित्तार्
वॆळ्ळॅयि ऱ्रिदऴ्प्पिऱऴ वीरनुम् वॆहुण्डान् 535

कल्वियिन्–अपनी विद्या में; कळ्ळविनै–वंचनापूर्ण; माय अमर्–मायायुद्ध; विळैत्तान्–करके; वळ्ळल् उरुवै–उदार प्रभु श्रीराम के शरीर को; पकऴि मारियिन्–शर-वर्षा से; मऱैत्तान्–छिपा दिया (खर ने); अमरर्–देव; उळ्ळम् उळैवु उऱ्ऱु–

मन में व्याकुल होकर; ओटित्तर्–भागे और; ऑळित्तार्–छिप गये; वीरतुम्–वीर श्रीराम ने; वॅळ् ऍयिरु–श्वेत दाँतों से; इतळ् पिऱ्ळ–अधर को दबाते हुए; वॅकुण्टान्–कोप किया। ५३५

खर माया-विद्या में निपुण था। उसने कपटपूर्ण मायायुद्ध करके श्रीराम के श्रीशरीर को शर-वर्षा से छिपा दिया। देव इसको देखकर व्याकुल हुए और दूर भागकर छिप गये। वीर श्रीराम ने भी दाँत पीसते हुए क्रोध का अवलम्बन किया। ५३५

❀ मुडिप्पॅन् इन्ऱॅरु मॉय्हणै यालॅनत्, तॉडुत्तु निन्ऱुयर् तोळुऱ वाङ्गिनान्
पिडित्त तिण्शिलै पेरहल् वानिडै, इडिप्पि नोसै पडक्कडि दिऱ्ऱदे 536

इन्ऱु–अभी; ओरु मॉय् कणैयाल्–एक सारयुक्त बाण से; मुटिप्पॅन् ॲन–समाप्त कर दूँगा, यह कहते हुए; तॉटुत्तु निन्ऱु–संधान करके; उयर् तोळ् उऱ–उन्नत कन्धे तक; वाङ्किनान्–डोर खींचा; पिटित्त तिण् चिलै–उनसे ग्रस्त बलवान धनुष; पेर् अकल् वान् इटै–अति विस्तृत आकाश में; इटिप्पिन् ओचै–वज्र का-सा नाद; पट–उठाते हुए; कटितु इऱ्ऱतु–शीघ्र टूट गया। ५३६

श्रीराम ने कहा कि अब एक ही सारयुक्त बाण चलाकर खर का काम तमाम कर दूँगा। उन्होंने शर संधान कर डोर को ऐसा खींचा कि धनुष का छोर उनके कन्धे को स्पर्श करे। बस, वह बलवान धनुष आकाश के वज्र के समान उच्च स्वर निकालते हुए उसी दम भग्न हो गया। ५३६

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर् वीरन्विल्, इऱ्ऱ पोदु तुणुक्कमुऱ् ऱॆङ्गिनार्
मऱ्ऱु वॅञ्जिलै यिन्मै मनक्कॉळा, अऱ्ऱ दालॅम् वलियॆन वञ्जिनार् 537

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर्–(श्रीराम की) विजय के प्रशंसक देव; वीरन् विल् इऱ्ऱ पोतु–वीर श्रीराम के धनुष के टूटने पर; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–डरकर; एङ्किनार्–दुखी हुए; मऱ्ऱुम् वॅम् चिलै इन्मै–अन्य किसी धनुष का अभाव; मनम् कॉळा–मन में सोचकर; ऍम् वलि अऱ्ऱतु–हमारा बल मिटा; ऍन–ऐसा; अञ्चिनार्–भयभीत हुए। ५३७

देव श्रीराम की विजय की प्रशंसा करते रहे। अब उन्होंने देखा कि श्रीवीरराघव का धनुष टूट गया है। कोई दूसरा धनुष नहीं है। वे निस्सहाय खड़े हैं। उन्हें संशय और डर हो गया कि अब हमारा बल गया! । ५३७

❀ ॲन्नु मात्तिरत् तेन्दिय कार्मुहम्, चिन्न मॅन्ऱुन् दनिमैयुञ् जिन्दियान्
मन्नर् मन्नवन् शॆम्मल् सरविनाल्, पिन्नु ऱत्तन् पॅरुङ्गर नीट्टिनान् 538

ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–उनके ऐसा कहते समय; मन्नर् मन्नवन्–राजाधिराज के; चॆम्मल्–पुत्र श्रीराम ने; एन्तिय कार्मुकम्–अपना गृहीत कार्मुक; चिन्नम् ॲन्ऱुम्–टूट गया, इसकी ओर; तनिमैयुम्–अपनी (एकाकी) निस्सहाय स्थिति को;

चिन्तियान्–चिन्ता न करके; मरपिनाल्–पूर्व संकेत के अनुसार; तन् पॅरम् करम्–अपना बड़ा हाथ; पिन् उड़–पीछे की तरफ़; नीट्टिनान्–बढ़ाया। ५३८

देव इस प्रकार कह ही रहे थे कि उधर श्रीराम ने एक अद्भुत कार्य किया। दाशरथी ने किंचित भी चिन्ता नहीं की कि मेरा कोदण्ड टूट गया है और मैं विना हथियार के एकाकी खड़ा हूँ। उन्होंने अपना दीर्घ हाथ पीछे की ओर बढ़ाया। उसका पूर्वसंकेत का कोई अर्थ था। ५३८

❀ कण्डु निन्ऱु करुत्तुणर्न्दानॅन, अण्डर् नादन् इडक्कैयि नत्तुणै
पण्डु पोर्मऴु वाळियैप् पण्विनाल्, कॊण्ड विल्लै वरुणन् कॊडुत्तनन् 539

कण्टु निन्ऱु–उस स्थिति को देखते हुए खड़ा; करुत्तु उणर्न्तान् ॲॅन–उनका अभिप्राय समझ गया हो ऐसा; पण्टु–पहले; पोर् मऴु आळियै–युद्ध में परशु का प्रयोग करनेवाले परशुराम से; पण्पिनाल्–अपने सामर्थ्य से; कॊण्ट–गृहीत; विल्लै–धनु को; अत्तुणै–तब; वरुणन् तटक्कैयिल् कॊटुत्तनन्–वरुण ने श्रीराम के विशाल हाथ में दिया। ५३९

वरुण यह सब देखते हुए पीछे खड़े थे। पहले जब श्रीराम ने युद्धोपयोगी परशु के धारक परशुराम को हराया था और अपने सामर्थ्य से उनका धनुष ले लिया था, तब उन्होंने वह कार्मुक वरुण के पास दे रखा था। वरुण ने श्रीराम का मन जान लिया और वह धनु श्रीराम के हाथ में धर दिया। ५३९

❀ कॊडुत्त विल्लैयक् कॊण्ड निऱत्तिनान्
ॲॅडुत्तु वाङ्गि वलङ्गॊण् डिडक्कैयिऱ्
पिडित्त पोदु नॅऱिपिऴैत् तार्क्कॆलाम्
तुडित्त वालिडक् कण्णोडुन् दोळ्हळे 540

कॊट्टुत्त विल्लै–वरुण-दत्त धनु को; अ कॊण्टल् निऱत्तिनान्–उन मेघश्याम ने; ॲॅटुत्तु–लेकर; वलम् कॊण्टु वाङ्कि–जोर से झुकाकर; इट कैयिल् पिटित्त पोतु–जब अपने बायें हाथ में धरा, तब; नॅऱि पिऴैत्तार्क्कु ॲॅल्लाम्–दुराचारी सभी राक्षसों के; इटम् कण् ओटु तोळ्कळ्–बाईं आँखें और उनके साथ बाईं भुजाएँ; तुटित्त–फड़क उठीं। ५४०

मेघवर्ण श्रीराम ने वरुण-दत्त धनु को हाथ में लिया। उसको झुकाकर अपने बायें हाथ मे धरा तो दुराचारी सभी राक्षसों की बायीं आँखें बायीं भुजाओं के साथ फड़क उठीं। ५४०

❀ एऱ्ऱि नाणिसै यामुन् नॅडुत्तदु, कूऱ्ऱि नारुङ् गुनिक्कक् कुनित्तॆदिर्
आऱ्ऱ लानव नाळियन् देर्शरम्, नूऱ्ऱि नानुण् पॊडिपड नूऱिनान् 541

अतु ॲॅट्टुत्तु–उस चाप को लेकर; इमैया मुन्–पलक मारती देर से पहले; नाण् एऱ्ऱि–प्रत्यंचा चढ़ाकर; कूऱ्ऱिनारुम् कुनिक्क–यमदेव को भी नाचने देते हुए;

कुनित्तु—उसको झुकाकर; ऎतिर् आऱ्ऱिऩाऩ् अवऩ्—सामने लड़ने आगत उस (खर) के; आऴि अम् तेर्—चक्रसहित सुन्दर रथ को; चरम् नूऱ्ऱिऩाल्—सौ शरों से; नुण् पॊटि पट—बारीक चूर्ण करते हुए; नूऱिऩाऩ्—मिटा दिया। ५४१

श्रीराम ने पलक मारने के समय के अन्दर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी। शर संधान करके धनु को झुकाया। यम को आनन्द-नृत्य-मग्न करते हुए सौ अस्त्र चलाये। उनके सामने आये खर का सुन्दर पहियेदार रथ चूर-चूर हो गया। रथ ध्वस्त हो गया। ५४१

❀ ऎऩ्दि रत्तडन् देरिऴन् दानिऴिन्, दन्द रत्तिडै यार्त्तॆऴुन् दम्बॆल्लाम्
सुन्द रत्तनि विल्लिदन् ऱोळॆनुम्, मन्द रत्तिन् मऴैयिन् वऴङ्गिनान् 542

ऎन्तिर तटम् तेर्—यन्त्रचालित विशाल रथ; इऴन्तान्—खोकर; इऴिन्तु—(खर) उतरकर; आर्त्तु—नारे लगाते हुए; अन्तरत्तु इटै—अन्तरिक्ष में; ऎऴुन्तु—उठ जाकर; अम्पु ऎलाम्—अपने सारे बाण; चुन्तर् तनि विल्लि तन्—सुन्दर कोदण्डपाणी के; तोळ् ऎनुम्—भुजाओं रूपी; मन्तरत्तिल्—मन्दरपर्वत पर; मऴैयिन्—वर्षा के समान; वऴङ्किनान्—बरसाया। ५४२

खर का रथ यन्त्र-चालित था। वह नष्ट हो गया। खर उतरा और अन्तरिक्ष में खड़ा हो गया। भयंकर गर्जन करते हुए उसने अपने पास रहे सभी अस्त्रों को अद्वितीय सुन्दर कोदण्डपाणी पर वर्षा के समान बरसा दिया। ५४२

❀ ताङ्गि निन्ऱ तयरद रामनुम्, तूङ्गु तूणि यिडैच्चुडु शॆञ्जरम्
वाङ्गु हिन्ऱ वलक्कैयै वाळियाल्, वोङ्गु तोळॊडुम् पारिडै वीऴ्त्तिनान् 543

ताङ्कि निन्ऱ—उन अस्त्रों का सामना करते हुए जो खड़े रहे, उन; तयरतरामनुम्—दशरथ के पुत्र, श्रीराम ने भी; तूङ्कु तूणियिटै—लटकनेवाले तूणीर में से; चुटु चॆम् चरम्—तापक और श्रेष्ठ बाण; वाङ्कुकिन्ऱ—लेनेवाले; वल कैयै—दक्षिण हस्त को; तोळ् ओटु—कन्धे के साथ; पार् इटै—भूमि पर; वीऴ्त्तिनान्—काटकर गिरा दिया। ५४३

श्रीराम ने उनको धैर्य के साथ धारण किया। फिर उन्होंने खर के उस हाथ को भुजमूल से काटकर गिराया जो पीठ पर बँधे तूणीर से अस्त्र ले रहा था। ५४३

❀ वलक्कै वीऴ्दलु मऱ्ऱैक्कै यालॆऱ्ऱि
उलक्कै वाऩत् तुरुमॆऩ वोच्चिनान्
इलक्कु वऱ्कुमुन् वन्द विरामनुम्
विलक्कि नाऩॊरु वॆङ्गदिर् वाळियाल् 544

वलम् कै—दक्षिण हस्त के; वीऴ्तलुम्—अलग हो गिरने पर; मऱ्ऱै कैयाल्—दूसरे हाथ से; ऎऱ्ऱि उलक्कै—विजयदायक मूसल को; वाऩत्तु उरुम् ऎऩ—आकाश

में वज्र के समान; ओच्चिनाऩ्–(खर ने श्रीराम पर) फेंका; इलक्कुवऱ्कु मुऩ्ऩवऩ्त इरामऩुम्–लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने भी; ओरु वॆम् कतिर् वाळियाल्–एक भयंकर ज्वलन्त बाण से; विलक्किऩाऩ्–उसको रोका। ५४४

खर का दक्षिण हस्त कटकर गिर गया। तो उसने बायें हाथ से एक विजयदायक मूसल उठाकर आकाश के वज्र के समान श्रीराम पर फेंका। लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने जाज्वल्यमान और संतापक एक अस्त्र से उसको बीच में रोक दिया। ५४४

❀ विराव रुङ्गडु वॆळ्ळॆयि ऱिऱ्ऱपिऩ्, अराव ळऩ्ऩ तऩैयव ऩाऱ्ऱलाऩ्
मराम रङ्गैयिऩ् वाङ्गि वन्दॆय्दिनाऩ्, इराम नङ्गोर् तनिक्कणै येविनाऩ् 545

अरा–एक सर्प; कटु विरा वरु–विष से पूरित रहनेवाले; वॆळ् ऎयिऱु–श्वेत दाँतों के; इऱ्ऱ पिऩ्–नष्ट हो जाने के बाद; अळऩ्ऱतु अऩैयवऩ्–जैसे क्रुद्ध होता है, वैसा क्रुद्ध; आऱ्ऱलाऩ्–शक्तिशाली (खर); मरामरम्–सालवृक्ष; कैयिल् वाङ्कि वन्तु–अपने हाथ में ले आकर; ऎय्तिऩाऩ्–पहुँचा; इरामऩ्–श्रीराम ने; अङ्कु–वहाँ; ओर् तऩि–एक अद्वितीय; कणै–बाण; एविनाऩ्–चलाया। ५४५

खर उस सर्प के समान विफर उठा, जिसका विषैला श्वेत दाँत उखाड़ लिया गया हो। उस पराक्रमी खर ने एक सालवृक्ष ले लिया। उसके साथ जब वह लड़ने आया तो श्रीराम ने अप्रमेय एक शर छोड़ा। ५४५

❀ वरम रक्कऩ् पटैत्तलिन् मायैयिऩ्, उरमुडैत् तऩ्मै यालुल हेळ्ळैयुम्
परमु ऱुत्तिय पावत्ति ऩाल्वलक्, करमॆ ऩक्करन् कण्डमुऱ् ऱानरो 546

अरक्कऩ्–(रावण) राक्षस की; वरम् पटैत्तलिऩ्—वर-प्राप्ति से; मायैयिऩ्–वंचना से; उरम् उटै तऩ्मैयाल्–बलवान होने से; उलकु एळैयुम्–सातों लोकों को; परम् उऱुत्तिय–बहुत त्रस्त करनेवाले; पावत्तिऩाल्—पापकृत्यों से; वलम् करम् ऎऩ–दाहिने हाथ के समान; करऩ्–खर; कण्टम् उऱ्ऱाऩ्–खण्डित हुआ। ५४६

खर रावण का दाहिना हाथ था। अब वह मर गया। यह उसी रावण के किए पाप का फल था। रावण को वर प्राप्त थे और वह मायावी राक्षस था। वर के बल पर उसने अपने कपटी स्वभाव के कारण सातों लोकों पर सितम ढाया। उसका ही फल खर की मौत था। ५४६

❀ आर्त्तॆ ळुन्दन राडिऩर् पाडिनर्, तूर्त्त मैन्दनर् वाऩवर् तूय्मलर्
तीर्त्त ऩुम्बॊलिन् दाऩ्गदि रोन्ऱिशै, पोर्त्त मॆंऩ्बनि पोक्किय पोलवे 547

वाऩवर्–सुरलोग; आर्त्तु ऎळुन्तऩर्–हर्षरव कर उठे; आटिऩर् पाटिऩर्–नाचे-गाये; तूय् मलर्–पवित्र फूल; तूर्त्तु अमैन्तनर्–बरसाये और विश्रब्ध खड़े रहे; तीर्त्तऩुम्–तीर्थ श्रीराम भी; कतिरोऩ्–सूर्य; तिचै पोर्त्त–दिशाओं को ढँके रहे; मॆऩ् पनि पोक्कियतु–नरम कुहरे को दूर कर शोभित रहे; ऎऩ्ऩ–जैसे; पॊलिन्ताऩ्–प्रभावान बने रहे। ५४७

खर की मृत्यु पर देव आनन्द का कोलाहल कर उठे। वे नाचे और गाये। पवित्र कल्पसुमन बरसाकर वे प्रसन्नचित्त खड़े रहे। तीर्थ श्रीराम भी दिशाओं में भरे कुहरे को दूर कर शोभनेवाले सूर्यदेव के समान प्रभावान दिखे रहे। ५४७

❀ मुनिवर् वन्दु मुऱैमुऱै मॊय्प्पुऱ, इन्निय शिन्दै यिरामनु मेहिनान्
अन्निह वॆन्जमत् तारुयिर् पोहत्तान्, तन्नियि रुन्द वुडलन्न तैयल्बाल् 548

मुन्निवर् मुऱै मुऱै वन्तु—मुनिगण बारी-बारी से आये और; मॊय्प्पु उऱ—घेरे खड़े रहे; इन्निय चिन्तै—प्रसन्नचित्त; इरामनुम्—श्रीराम भी; अन्निक वॆम् चमत्तु—राक्षस-सेना के साथ कठोर युद्ध में; तन् आर् उयिर् पोक—अपने प्यारे प्राणों को भेजकर; तनि इरुन्त—अलग रहे; उटल् तान् अन्न—शरीर ही के समान जो रहीं; तैयल् पाल्—उन देवी सीताजी के पास; एकिनान्—पधारे। ५४८

ऋषियों ने दलों में आकर श्रीराम को घेर लिया। तब श्रीराम वहाँ से चले और देवी सीता के पास पधारे। देवी सीता निष्प्राण शरीर के समान थीं, क्योंकि उनके प्यारे प्राण राक्षसों के साथ कठोर युद्ध में चले गये थे। ५४८

❀ विण्णि नीङ्गिय वॆय्यवर् मेन्नियिल्, पुण्णि नीरुम् पॊडिहळुम् बोयुह
अण्णल् वीरनैत् तम्बियु मन्नमुम्, कण्णि नीरिनिर् पादङ् गळुविनार् 549

विण्णिन् नीङ्किय—(वीरों के प्राप्य) स्वर्ग में जो गये; वॆय्यवर्—उन आततायी राक्षसों के; मेन्नियिल्—शरीर पर; पुण्णिन् नीरुम्—व्रणों से निकला रक्त-जल और; पॊटिकळुम्—धूलि; पोय् उक—पोंछते हुए; अण्णल् वीरनै—महिमावान वीर श्रीराम को; तम्पियुम् अन्नमुम्—उनके लघु भाई लक्ष्मण ने और हंसिनी (-सी सीताजी) ने; कण्णिन् नीरिनाल्—आँखों के जल से; पातम् कळुविनार—पाद-प्रक्षालन कराया। ५४९

राक्षस वीर मरकर स्वर्ग चले गये। उनके शरीरों पर लगे व्रणों से जो रक्त-जल बहा उससे श्रीराम का शरीर लिप्त हो गया। उनके शरीर पर धूलि भी जमी हुई थी। उनके लघु भ्राता ने और उनकी देवी हंसिनी-सी सीता ने श्रीराम को देखकर भावातिरेक से अश्रुजल बहाया, जिससे श्रीराम के श्रीचरण धुल गये। ५४९

❀ मूत्त मॊन्ऱिन् मुडिन्दवर् मॊय्पुणीर्, नीत्त मोडि नॆडुन्दिशै नेरुऱक्
कोत्त वेलैक् कुरलॆन्न वान्नवर्, एत्त वीर निन्निदिरुन् दान्नरो 550

मूत्तम् ऒन्ऱिन्—एक मुहूर्त में; मुटिन्तवर्—जो मरे; मॊय्—(उनका) एकत्रित; पुण्णीर् नीत्तम्—व्रण-जल रक्त का प्रवाह; कोत्त वेलै—मिश्रित समुद्रों के; कुरल् अन—घोष के समान; ओटि—बहकर; नॆटुम् तिचै—लम्बी दिशाओं के अन्तों से; नेर् उऱ—टकराकर मुड़ आया; वान्नवर् एत्त—देवों ने स्तुति की, इस प्रकार; वीरन्—रघुवीर श्रीराम; इन्नितु इरुन्तान्—ससन्तोष रहे। ५५०

एक ही मुहूर्त में सारे राक्षस मर गये थे। उनके शरीरों से इतना रक्त बहा कि सागर-सा बन गया और उससे सम्मिलित सागरों के गर्जन के समान गर्जन निकला। उसका प्रवाह सभी दिगन्त तक गया और टकराकर मुड़ आया। श्रीराम की विजय पर देव इठलाये। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। श्रीराम विश्रब्धमन और सुख के साथ रहे। ५५०

❀ इङ्ङु निऩ्ऱ दुरैत्तु मिरावणऩ्, तङ्गै तऩ्गै वयिऱु तहर्त्तऩळ्
कङ्गु लऩ्ऩ करऩ्ैत्त ळ्ीइनॅडुम्, पॉङ्गु वॆङ्गुरु दिप्पुरण् डाळरो 551

इङ्कु निऩ्ऱतु–यहाँ जो स्थिति है; उरैत्तुम्–कहें; इरावणऩ् तङ्कै–रावण की बहिन ने; तऩ् कै–अपने हाथों से; वयिऱ् तकर्त्तऩळ्–अपना पेट पीट लिया; कङ्कुल अऩ्ऩ–रात के समान काले; करऩै–खर को; तऴीइ–आलिंगन करके; पॉङ्कु नॅटुम्–उमड़नेवाले अधिक; वॆम् कुरुति–गरम रक्त में; पुरण्टाळ्–लोटी। ५५१

अब हम (कवि) यहाँ जो हुआ वह कहें। रावण की बहिन ने अपने हाथों से अपना पेट पीट लिया। रात के समान काले खर का आलिंगन किया। उसके शरीर पर, वह निकलनेवाले अधिक रक्त के प्रवाह में लोटी। ५५१

❀ आक्कि नेऩ्मनत् ताशैयिव् वाशैयॆऩ्, मूक्कि नोडु मुडिय मुडिन्दिलेऩ्
वाक्कि नालुङ्गळ् वाऴ्वैयु नाळैयुम्, पोक्कि नेन्कॊडि येनॆन्ऱु पोयिनाळ् 552

मतत्तु–अपने मन में; आचै आक्किऩेऩ्–(श्रीराम के प्रति) प्रेम किया; अ आचै–वह इच्छा; ऎऩ् मूक्किनोटु–मेरी नाक के साथ; मुटिय–चली जाय; मुटिन्तु इलेऩ्–ऐसा मरी नहीं; वाक्किऩाल्–अपने वचनों से; उङ्कळ् वाऴ्वैयुम्–तुम लोगों का जीवन और; नाळैयुम्–आयु को; पोक्किऩेऩ्–समाप्त कर दिया; कॊटियेऩ्–निर्मम हूँ; ऎऩ्ऱु–कहती हुई; पोयिऩाळ्–वहाँ से चली। ५५२

वह उठी। अपने को धिक्कारने लगी। मैंने श्रीराम से प्रेम किया। वह इच्छा मेरी नाक के साथ चली जाती तो कोई बात नहीं। वहीं तक बात समाप्त करते हुए मैं मरी नहीं। अपने वचनों से मैंने तुम्हें युद्ध में प्रेरित किया और तुम्हारा जीवन और आयु खतम हो गयी। बड़ी निर्मम निकली मैं। ऐसा विलाप करती हुई वह वहाँ से चली गयी। ५५२

❀ अलङ्गल् वेऱ्कै यरक्करै याशऱक्
कुलङ्गळ् वेररुप् पाऩ्गुऱित् ताऴ्हडल्
कलङ्गु ऱैत्तॆऴु कालॆऩक् कालिऩाल्
इलङ्गै मानहर् नॊय्दिऱ्चॆऩ् ऱॆय्दिनाळ् 553

अलङ्कल् वेल् कै अरक्करै–माला से अलंकृत भाले हाथ में लिये रहनेवाले राक्षसों को; आचु अऱ–निर्मूल करते हुए; कुलङ्कळ् वेर् अऱुप्पाऩ्–राक्षसकुलों की जड़ काटने का; कुऱित्तु–संकल्प लेकर; आऴ् कटल् कलम्–गहरे सागर में पोत को;

कुरैत्तु अॅळु—अस्त-व्यस्त कर उठनेवाले; **काल् अॅन्न**—झंझे के समान; **कालिताल्**—पैदल चलकर; **नॉयुतिन्**—आयास के साथ; **इलङ्कै मा नकर् चॅन्ऱु**—लंकानगर जा; **अॅयुतिन्ऱाळ्**—पहुँची। ५५३

वहाँ कहाँ रुकी ? उसका आशय माला से अलंकृत भाले लिये रहनेवाले राक्षसों को निर्मूल करने का, उनके कुलों की जड़ ही खोद लेने का था ! इसलिए वह आयास के साथ पैदल चली और लंका जा पहुँची। वह इस कार्य में गहरे समुद्र में फँसे पोत को हिला देनेवाली आँधी के समान लगी। ५५३

7. शूर्प्पणहै शूळ्च्चिप् पडलम् (शूर्पणखा-योजना पटल)

इरैत्तॅन्ऍडुम् बडैयरक्क रिऱन्ददनै मऱन्दनळ्बो रिरामन् ऱुङ्ग
वरैप्पुयत्ति नि़डैक्किडन्द पेराशै मनङ्गवऱ्ऱ वाऱ्ऱा ळाहित्
तिरैप्परवैप् पेरहळित् तिरुनहरिऱ् कडिदोडिच् चीदै तन्मै
उरैप्पॅन्नच् चूर्प्पणहै वरविरुन्दा नि़रुन्दपरि शुरैत्तु मन्ऩो 554

इरैत्तु ऍऴुम् पटै—शोर मचाते हुए जो चली उस सेना के; **अरक्कर्**—(खर मिलाकर) सभी वीर; **इऱन्ततनै**—मरे, वह बात; **मऱन्तनळ्**—भूल गई; **पोर् इरामन्**—युद्ध-चतुर श्रीराम के; **तुङ्क**—उन्नत; **वरै पुयत्तिन् इटै**—पर्वत-सम कन्धों में; **किटन्त**—बँधे रहे; **पेर् आचै**—गम्भीर प्रेम के; **मनम् कवऱ्ऱ**—मन को व्यथित करने से; **आऱ्ऱाळ् आकि**—असहनशील बनकर; **तिरै परवै**—तरंग-भरा समुद्र; **पेर् अकऴि**—बड़ी खाई के रूप में जिसे प्राप्त था; **तिरु नकरिल् कटितु ओटि**—उस श्रीनगर में सवेग दौड़कर; **चीतै तन्मै उरैप्पॅन्**—सीता का लक्षण बताऊँगी; **अॅन्न**—सोचकर; **चूर्प्पणकै वर**—शूर्पणखा के आते समय; **इरुन्तान्**—वहाँ विद्यमान; **इरुन्त परिचु**—श्रीरावण के रहने का प्रकार; **उरैत्तुम्**—कहेंगे। ५५४

शूर्पणखा अब यह बात भूल गयी कि खर और बड़ी धूम मचानेवाली उसकी सेना विनष्ट हो गयी। उसका मन युद्ध-कला-प्रवीण श्रीराम के उन्नत, पर्वतसम मनोरम कन्धों से आकृष्ट हो गया। श्रीराम पर उसका प्रेम उसे व्यग्र करने लगा। वह संयम नहीं रख सकी, काम-ताप सह नहीं सकी। उसने यह सोचा कि मैं लंका में, जिसके चारों ओर तरंगाकुल समुद्र ही खाई के रूप में पड़ा है और जो श्रीसमृद्ध है, शीघ्र जाऊँगी और रावण के पास सीता की स्थिति, उसके लक्षण आदि कहूँगी। जब वह उधर आयी तब लंकेश रावण किस ठाट के साथ शोभायमान था, उसका वर्णन करेंगे। ५५४

निलैयिला वुलहिनि़डै निन्ऱनवुन् दिरिन्दनवु नॅऱियि नीन्द
मलरिन्मे नान्मुहऱ्कुम् वहुप्परिय नुनिप्पदोरु वरम्बि लाद
उलैविला वहैयिळैत्त दरुमर्मन् निनैन्दवेला मुदवुन् दच्चन्
पुलनॅलान् दॅरिप्पदोरु पुनैमणिमण् डबमदनिऱ् पॉलिय मन्ऩो 555

उलकिऩ् इटै–इस भूमि में; निलै इला–नश्वर; निऩ्ऱऩवुम्–स्थावर; तिरिन्तनवुम्–और जंगम; नेरियिऩ् ईन्त–यथाक्रम सृष्ट करनेवाले; मलरिऩ् मेल्–कमल पर आसीन; नात् मुकऩ्कुम्–चतुर्मुख को; वकुप्परिय–जिसकी सृष्टि नहीं हो सकती; नुनिप्पतु ओरु वरम्पु इलात–सूक्ष्म रूप से जिसकी सीमा माप करना कठिन है; तरुमम् अऩ्ऩ–उस धर्म के समान; निऩैन्त ॲलाम् उतवुम्–इच्छित सभी पदार्थ देनेवाले; तच्चऩ्–देवशिल्पी विश्वकर्मा के; पुलऩ् ॲलाम् तॆरिप्पतु–सारे सामर्थ्य का प्रदर्शक; पुऩै–सुन्दर; उलैवु इला वकै–अमिट रूप से; इऴैत्त–रचित; ओरु मणि मण्टपम् अतऩिल्–एक मणिमण्डप में; पॊलिय–शोभायमान रहते (रावण के)। ५५५

रावण एक मणिमण्डप में विराजमान था। वह मणिमण्डप देवशिल्पी विश्वकर्मा से बनाया गया था। वह विश्वकर्मा की सारी शक्ति का, शिल्पशास्त्र के गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान का पूर्ण परिचायक था। नश्वर विश्व और उसमें रहनेवाले स्थावर और जंगम —सभी जीवों के सृष्टिकर्ता, कमलवासी ब्रह्मा के लिए भी वह मण्डप अभाव्य था। वह धर्म के समान सभी मनोरथ पूरा करने की शक्ति रखता था। वह बड़ा ही सुन्दर था और अक्षय रूप से शोभायमान रहनेवाला था। ५५५

पुलियिनद ळुडैयाऩुम् पॊऩ्ऩाडै पुऩैन्दाऩुम् पूवि ऩाऩुम्
नलियुमऩ्ऩ् तारल्लर् देवरिलिङ् गियावरिऩि नाट्ट वल्लार्
मॆलियुमिडै तडिक्कुमुलै वेयिळन्दोट् चेयरिक्कण् वॆऩ्ऱि मादर्
वलियनॆडुम् बुलवियिनुम् वणङ्गाद महुडनिरै वयङ्ग मन्नो 556

पुलियिऩ् अतळ् उटैयाऩुम्–बाघम्बरधारी; पॊऩ् आटै पुऩैन्ताऩुम्–पीताम्बरधारी; पूविऩाऩुम्–और कमलवासी; नलियुम् मऩ्ऩ्तार्–(रावण के पराक्रम, वैभव आदि देख) आतंकित थे; अल्लर् तेवरिल्–वे ही नहीं तो अन्य देव; इङ्कु–यहाँ; यावर्–कौन; इऩि नाट्टवल्लार्–अब इसकी समता कर सकते है; मॆलियुम् इटै—क्षीण-कटि; तटित्त मुलै–पीन स्तन; वेय् इळम् तोळ्–बाँस के समान और बाल कन्धे; चेय् अरि कण्–लाल डोरों से युक्त आँखें, इनसे शोभित; वॆऩ्ऱि मातर्–मनोहारिणी स्त्रियों के; वलिय नॆटुम् पुलवियिनुम्–शान्त करने में कठिन और लम्बी रूठन के अवसर में भी; वणङ्कात–जो नहीं झुकती; मकुटम् निरै–मुकुटपंक्ति; वयङ्क–(के) शोभते। ५५६

(५५५वें पद से ५७६वें पद तक रावण की सभा में स्थिति का वर्णन है। पूर्णक्रिया पद आखिरी पद में आता है।) स्वयं बाघम्बर शिव, पीताम्बर विष्णु और कमलवासी ब्रह्मा उसके ठाट-बाट से उद्विग्न थे, यानी उनका स्थान भी इसके सामने घटा हुआ लगता था। फिर कौन देव हैं जो इसकी समानता कर सकें? वह बड़ा अभिमानी था। क्षीण-कटि, पीन-स्तना, छोटे बाँस-सी भुजाओं और लाल डोरों के साथ मनोरम आँखों से भूषित और विजयशीला स्त्रियो की लम्बी और दुर्वह रूठन के अवसर पर भी उसके किरीट (सिर) नहीं झुकते थे। ऐसे (सिरों के) किरीटों की पंक्ति दृश्यमान करते हुए रावण विराजमान था। ५५६

वण्डलङ्गु तुदङ्ङिशैय वयक्कळिङ्ङिन् मरुप्पॊडिय वडर्त्त पॊङ्ङोळ्
विण्डलङ्ग ळुङ्वीङ्गि योङ्गुदय माल्वरैयिन् विळङ्ग मीदिल्
कुण्डलङ्गळ् कुलवरैयै वलम्वरुवा निरविहॊळुङ् गदिर्शूळ् कङ्ङै
मण्डलङ्गळ् पन्निरण्डु नालैन्दाय्प् पॊलिन्ददॆत्त वयङ्ग मन्नो 557

वण्टु अलङ्कु तुतल्–भ्रमरावृत भालों के; तिचैय–दिशाओं में स्थित; वय–विजयशील; कळिङ्ङिन्–हाथियों के; मरुप्पु ऑटिय–दाँतों को तोड़ते हुए; अटर्त्त–(उन गजों से) जिन्होंने टकराया; पॊन् तोळ्–वे मनोरम कन्धे; विण् तलङ्कळ् उङ–आकाश के लोकों में जा लगें, ऐसा; वीङ्कि–फूलकर, बढ़कर; ओङ्कु–उन्नत; उतय माल् वरैयिन्–उदयगिरि के समान; विळङ्क–दृश्यमान रहे और; मीतिल्–उन पर; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डल; कुल वरैयै–मेरुपर्वत की; वलम् वरुवान्–परिक्रमा करनेवाले; इरवि–सूर्य के; कॊळुम्–पुष्कल; कतिर् चूळ्–किरणसंकुल; कङ्ङै–पुंज; मण्टलङ्कळ्–मण्डल; पन्तिरण्टुम्–बारह; नालु ऐन्ताय्–(चार के पाँच) बीस बनकर; पॊलिन्ततु अॅत्त–प्रकाशमय विद्यमान रहते हों जैसे; वयङ्क–दृश्यमान रहे। ५५७

उसके कन्धों ने दिग्गजों के साथ युद्ध करते हुए उनके दाँतों को तोड़ा था। दिग्गज इतने मदमत्त थे कि हमेशा भ्रमर उनके भालों पर मँड़राते थे। ऐसे बलवान कन्धे बहुत ही दर्शनीय और फूलकर उन्नत उदयगिरि के समान शोभ रहे थे। कानों के कुण्डल, जो उनके कन्धों को स्पर्श करते हुए हिल रहे थे, किरण-पुंज बारह आदित्यों के समान प्रकाशमान थे जो बीस बन गये हों। ५५७

वाळुला मुळ्मणियिन् वयङ्गॊळियिन् ङोहैवळङ्ग वयिरक् कुन्ङत्
तोळॆलाम् बडिशुमन्द विडवरविन् बडनिरैयिर् ङोन्ङ वान्ङ
नाळॆलाम् पडैदयङ्ग नामनी रिलङ्गैयिङ्ङा नलङ्ग विट्ट
कोळॆलाङ् गिडन्दनॆडुञ् जिरैयनन्न निरैयारङ् गुलव मन्नो 558

वाळ् उलाम्–उज्ज्वल; मुळ् मणियिन्–बड़े-बड़े रत्नों की; वयङ्कु ऑळियिन्–छिटकनेवाली कान्ति की; तोकै–राशि; वळङ्क–दृश्यमान रही; वयिर कुन्ङ तोळ् अॅलाम्–वज्र गिरि-सम सब कन्धे; पटि चुमन्त–भू-भार-वाही; विट अरविन्–विषैले नाग के; पट निरैयिन्–फनों की पंक्ति के समान; तोन्ङ–दिखाई दिये; नाम नीर् इलङ्कैयिल्–भयोत्पादक समुद्रजल सहित लंका में; तान् नलङ्क विट्ट–उससे आक्रान्त; कोळ् अॅलाम्–सब (नव) ग्रह; आन्ङ–श्रेष्ठ; नाळ् अॅलाम्–सभी नक्षत्र; पुटै तयङ्क–पास-पास रहें, ऐसा; किटन्त–(बद्ध) पड़े रहे; नॆटुम् चिरै अन्न–बड़ी कारा के समान; निरै आरम्–रत्नमय हार; कुलव–शोभ रहा था। ५५८

रावण अनेक आभरण पहने हुए था। उनमें जड़ित रत्न बड़े-बड़े थे और बड़े ही जाज्वल्यमान थे। उनकी ज्योतियों की राशि शोभित थी। उसके वज्रगिरिसम कन्धे भूभारवाही शेषनाग के फनों के समान दर्शनीय थे (वे रत्न उन फनों के ऊपर रहनेवाली मणियों के समान थे।)

उसने एक रत्नहार पहन रखा था, जो उस कारा के समान था जिसमें उसने ग्रहों और नक्षत्रों को हराकर डाल रखा था। यानी वह हार श्रेष्ठ और ज्वलन्त रत्नों का बना था। ५५८

❀ आय्वरुम् बॆरुवलि यरक्क रादियोर्
नायहर् नळिमणि महुड नण्णलाल्
तेय्वुड़त् तेय्वुड़प् पॆयर्न्दु शॆम्जुडर्
आय्मणिप् पॊलन्गळ लडिनिन् ड़ार्प्पवे 559

आय्वु अरु–अकूत; पॆरु वलि–बहुत बल से युक्त; अरक्कर् आतियोर्–राक्षस आदि राजा लोगों के; नळि मणि मकुटम्–बहुमूल्य रत्न-जड़ित किरीट; नण्णलाल्–मिले आते हैं, इसलिए; तेय्वु उड़ तेय्वु उड़—घिसते-घिसते; पॆयर्न्तु–फिर से; चॆम् चुटर्–लाल प्रकाश की; मणि पॊलन् कऴल्–मणिमण्डित पायल; अटि निन्ऱु आर्प्प–उसके पैरों में रहकर क्वणित हो रही थी। ५५६

राक्षस वीर आकर उसके पैरों पर सिर झुकाते थे। उन राक्षसों के बल का अनुमान भी नहीं हो सकता था। उनके मुकुटों के लगने से उसकी पायल घिसी हुई थी और उस पर जड़ित रत्न अधिक निखरे हुए हो गये थे। वह पायल उसके पैरों में क्वणित हो रही थी। ५५९

❀ मूवहै युलहिनु मुदल्वर् मुन्दैयोर्, ओविल रुदविय परिशि नोङ्गल्बोल्
तेवरु मवुणरु मुदलि नोर्दिशै, तूविय नरुमलर्क् कुप्पै तुन्नवे 560

मूवकै उलकिनुम्–तीन प्रकार (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों के; मुतल्वर्–नायकों ने; मुन्तैयोर्–मैं पहले, मैं पहले करते हुए; ओविलर्–निरन्तर; उतविय–लाकर जो दिये; परिचिन्–उन उपहारों के; ओङ्कल् पोल्–पर्वत के समान; तेवरुम् अवुणरुम् मुतलिनोर्–देव, असुर और अन्यों के; तिचै–चारों दिशाओं से; तूविय–बरसाये; नऱुमलर्–सुगन्धित फूलों की; कुप्पै–राशियाँ; तुन्न–ठस भरकर पड़ी रहीं। ५६०

तीनों लोकों के नायक लोग पहले आने की स्पर्द्धा करते हुए आकर निरन्तर उपहार देते रहे। उन उपहारों के पर्वत-से ढेर हो गये थे। देवों और राक्षसों द्वारा चारों ओर से बरसाये सुवासित फूलों के ढेर सर्वत्र पाये जाते थे। ५६०

❀ इन्नवो दिव्वऴि नोक्कु मॆन्बदै, उन्नलर् करदलञ् जुमन्द वुच्चियर्
मिन्नविर् मणिमुडि विञ्जै वेन्दर्हळ्, तुन्निनर् मुऱैमुऱै तुऱैयिर् चुऱ्ऱवे 561

मिन् अविर्–बिजली के समान चमकनेवाले; मणि मुटि—रत्नकिरीट-धारी; विञ्चै वेन्तर्कळ्–विद्याधर राजा लोग; इन्न पोतु–कब; इ वऴि नोक्कुम् ऎन्पतै–इस तरफ़ देखेगा, यह; उन्नलर्–नहीं जानते; कर तलम् चुमन्त उच्चियर्–हाथ सिर पर रखे; तुन्नितर्–समीपस्थ होकर; मुऱै मुऱै–यथाक्रम; तुऱैयिल्—अपनी-अपनी निर्दिष्ट सेवा में लगे; चुऱ्ऱ–घेरे रहे, ऐसा। ५६१

विद्याधर राजा लोग थे। उनके रत्नकिरीट बिजली के समान चमकते थे। वे अपने हाथों को जोड़े अपने सिरों पर रखे हुए थे। वे हमेशा सतर्क रहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम नहीं हो सका कि रावण किस समय किस ओर दृष्टि फेंकेगा। वे अपने-अपने स्थान पर निर्दिष्ट सेवा में लगे हुए, रावण की दृष्टि की भी प्रतीक्षा करते हुए चारों ओर पाये गये। ५६१

⁂ मङ्गैयर् तिऱत्तॊरु माऱ्ऱङ् गूऱिनुम्, तङ्गळै यामॆन्न ताळुञ् जॆन्निियर्
अङ्गैयु मुळ्ळमुङ् गुविन्द वाक्कैयर्, शिङ्गवे ऱॆनत्तिऱङ् चित्तर् शेरवे 562

चिङ्क एऱु ॲन्न–पुरुषकेसरी के समान बलिष्ठ; चित्तर्–सिद्ध लोग; मङ्कैयर् तिऱत्तु–अपनी दासियों के प्रति; ऒरु माऱ्ऱम् कूऱिनुम्–(रावण) एक बात कहता तो भी; तङ्कळै आम् ॲन्न–अपने से कहता है, समझ; ताळुम् चॆन्नियर्–सिर झुकाते हैं (झुके सिर वाले होकर); अम् कैयुम्–हथेलियों; उळ्ळमुम्–और मन को जोड़कर; कुविन्त आक्कैयर्–शरीर झुकाकर (विनय की मुद्रा में); चेरवे–(रावण के चारों ओर) समीप खड़े रहे, ऐसा। ५६२

कभी सिंहसदृश रावण अपने पास स्थित किसी स्त्री से कोई बात कहता तो वहाँ रहे सिद्ध जाती के लोग सोचते कि वह हमारे प्रति ही कुछ कह रहा है! वे हाथ जोड़े। मन को एकाग्र किये और सिर झुकाये बहुत ही विनय के साथ स्थित रहे। 'सिंह-सदृश' सिद्धों पर भी लग सकता है। ५६२

अन्नव नमैच्चरै नोक्कि याण्डॊरु
नन्मॊऴि पहरिनु नडुङ्गुञ् जिन्दैयर्
ऎन्नैहॊल् पणियॆन विऱैञ्जु हिन्ऱनर्
किन्नरर् पॆरुम्बयङ् गिडन्द नॆञ्जिनार् 563

किन्नरर्–किन्नर जाति के लोग; अन्नवन्–वह (रावण); अमैच्चरै नोक्कि–मन्त्रियों को देखकर; आण्टु ऒरु नल् मॊऴि–वह एक शिष्ट-वचन; पकरिनुम्–कहता तो भी; नटुङ्कुम् चिन्तैयर्–कम्पित-मन होकर; पॆरुम्पयम् किटन्त–बहुत भयाक्रान्त; नॆञ्चिनार्–मन के साथ; ऎन्नै कॊल् पणि–क्या सेवा है; ऎन्न–ऐसा; इऱैञ्चुकिन्ऱनर्–विनय करते। ५६३

किन्नर लोग पाये गये। अगर रावण अपने अमात्यों से कोई मधुर वचन भी कहता तो वे समझ लेते कि वह हमसे कुछ कह रहा है। बस, सिहर उठते। पास आकर पूछते कि कौन सी सेवा है जो बजा लानी है? यह अत्यन्त विनय के साथ पूछते। ५६३

पिरहर नॆडुन्दिशैप् पॆरुन्दण् डेन्दिय
करदलत् तणुणलैक् कण्णि नोक्किय

नरहिन रामॅन नडुङ्गु नाविनर्
उरहरुन् दम्मन मुलैन्दु शूऴ्वे 564

उरकरुम्–नागलोकवासी; पिरकर नॅट्टम् तिचै–(जीवों को) दण्ड जहाँ दिया जाता है, उस (दक्षिणी) दिशा के देव; पॅरुम् तण्ट्ट एन्तिय–बड़ा कालदण्ड-धारी; करतलत्तु–हाथ के; अण्णलै–राजा (धर्मदेवता) को; कण्णिन् नोक्किय–अपनी आँखों के सामने जिन्होंने देखा हो, ऐसे; नरकर् आम् अॅन–नरकवास योग्य पापियों के समान; नटुङ्कुम् नावित्तर्–स्खलित-वचन (लड़खड़ाती-वाणी वाले) होकर; तम् मतम् उळैन्तु–मन में व्यथित होकर; चूऴ–घेरे खड़े रहे। ५६४

नागलोकवासी रावण के सामने इतना डरे हुए खड़े रहे जितना कि नरक-योग्य जीव उस यमलोक के देव दण्डधर यम को देखकर डरते है, जहाँ जीवों को दण्ड का विधान हो, दण्ड दिया जाता है। उनकी जिह्वाएँ लड़खड़ातीं; मन व्यग्र रहता। वे भी रावण को घेरे खड़े रहे। ५६४

❀ तिशैयुरु करिहळैच् चॅऱ्ऱुत् तेवनुम्
वशैयुरक् कयिलैयै मऱित्तु वानॅलाम्
अशैयुरप् पुरन्दरऱ् कडन्द तोळ्हळिन्
इशैयिनैत् तुम्बुरु विशैयि नेत्तवे 565

तिचै उऱु करिकळै–दिग्गजों को; चॅऱ्ऱु–हराकर; तेवनुम् वचै उऱ–परमेश्वर को भी अपयश दिलाते हुए; कयिलैयै मऱित्तु–कैलास को उखाड़कर; वान् ॲलाम् अचैवु उऱ–सारा आकाश कँपाते हुए; पुरन्तरन् कटन्त–पुरन्दर को जिन्होंने प्रताड़ित किया; तोळ्कळिन् इचैयिनै–उन कन्धों की प्रशंसा; तुम्पुरु–तुम्बुरु; इचैयिन् एत्त–गीत गाते (रहे, ऐसा रावण सभा में विराजमान था)। ५६५

रावण ने दिग्गजों का बल दमन किया था। कैलास पर्वत को उखाड़कर परमेश्वर शिव को भी अपयश दिलाया था। पुरन्दर को हराकर आकाश भर को उद्विग्न कराया था। ऐसे रावण के पराक्रम की प्रशंसा तुम्बुरु गा रहे थे। ५६५

❀ शेणुयर् नॅऱिमुऱै तिऱम्ब लिन्ऱियॆ
पाणिहळ् पणिशॅयप् पऴुदिल् पण्णिऱै
वीणैयि नरम्बिडै विळैन्द तेमऱै
वाणियि नारदन् शॅवियिन् वाक्कवे 566

चेण् उयर्–अत्युन्नत; नॅऱि मुऱै तिऱम्पल् इन्ऱिये–गति-विधि का उल्लंघन किये विना; पाणिकळ् पणि चॅय–ताल काल-निर्णय का काम करते है, ऐसा; पऴुतु इल्–त्रुटिहीन; पण् निऱै–राग-युक्त; वीणैयिन् नरम्पु इटै–वीणा की तन्त्रियों से; विळैन्त–उत्पन्न; ते मऱै–मधुर वेद-रूप संगीत; वाणियिन्–मुख-स्वर के साथ; नारतन्–नारद ऋषि; चॅवियिन् वाक्क–उसके बीसों कानों में भर रहे थे। ५६६

नारद अपनी वीणा से संगीतमय स्वर निकालते हुए ताल-मेल के साथ श्रुति-शुद्ध, लय-शुद्ध रीति से वेदसमान गन्धर्वगान कर रहे थे। रावण के वीसों कान उसे श्रवण कर रहे थे। ५६६

मेहमॅन् ऱुरुत्ति वीक्कि विण्णवर् तरुवुम् विञ्जै
नाहमुञ् जुरन्द तीन्दे नऱुपुन लोड ळावित्
तोहैयर् तुहिलिड् ऱोय्क्कु मॅन्बदोर् तुणुक्कत् तोडुञ्
जीहर महर वेलैक् कावलन् शिन्द मन्नो 567

मकर वेलै कावलन्–मकरालय के देवता वरुण; विण्णवर् तरुवुम्–देवों का कल्पतरु; विञ्चै नाकमुम्–विद्याधर लोक का सुरपुन्नाग; चुरन्त–(अपने फूलों से जो) ढलकते थे; तीम् तेन्–वह मधुर शहद; नऱु पुनलोटु–सुवासित जल के साथ; अळावि–मिश्रित करके; मॅकम् ॲन् तुरुत्ति वीक्कि–मेघ की मशक में भरकर; तोकैयर् तुकिलिल्–(रावण के पास रहनेवाली) स्त्रियों के वस्त्र; तोय्क्कुम्–गीला हो जायगा; ॲन्पतोर् तुणुक्कत्तोटुम्–इस डर से (अत्यन्त सावधानी के साथ); चीकरम्–जल-सीकर; चिन्त–छिड़का रहे थे। ५६७

मकरालय के अधिदेवता वरुण मण्डप में जल छिड़कने का कार्य कर रहे थे। कैसा जल था? उत्तम जल में आकाश के कल्पतरु से झरनेवाला शहद और नागलोक के सुरपुन्नाग तरुओं से मिलनेवाला शहद मिला हुआ था। मेघ की मशक में उसे भरकर सीकरो में छिड़कता था। यह भय लगा हुआ था कि कहीं रावण की नारियों के वस्त्र पर पड़ जायगा तो रावण का कोप अनर्थ कर देगा। इसलिए बहुत सावधानी से वे जल की बौछार कर रहे थे। ५६७

नरैमलर्त् तादुन् देनु नळिनॅंडु महुड कोडि
मुरैमुरै यरैयच् चिन्दि मुरिन्दुहु मणियु मुत्तुम्
तरैयिडै युहाद मुन्नन् दाङ्गिनन् ऱळुवि वाङ्गित्
तुरैदोरुन् दॉडर्न्दु निन्ऱु समीरणन् ऱुडैप्प मन्नो 568

चमीरणन्–वायुदेव; नऱै मलर् तातुम्–सुगन्धपूर्ण पुष्पों का पराग; तेनुम्–और शहद; नळि–वड़े; नॅटु–लम्बे; मकुट कोटि–किरीट-कोटि के; मुऱै मुऱै अऱैय–बार-बार टकराने से; चिन्ति मुरिन्तु उकु–टूटकर जो गिरे, वे; मणियुम् मुत्तुम्–रत्न और मोती; तरैयिटै–भूमि पर; उकात मुन्नम्–गिरे, इसके पहले ही; ताङ्किनन्–पकड़कर; तळुवि वाङ्कि–समेट लेकर; तुऱै तोरुम् तॉटर्न्तु निन्ऱु–हर स्थान में निरन्तर खड़े होकर; तुटैप्प–झाड़कर शुद्ध कर रहे थे। ५६८

वायुदेव का क्या काम था? सुवासित पुष्पों से मकरन्द चूते थे। उनसे शहद भी गिरता था। रावण से भेंट करने जो आये उनके किरीटों के आपस में टकराने से रत्न और मोती अलग होकर गिरते थे। समीरण

का काम था कि उनको भूमि पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर ले। वे सर्वत्र रहकर बुहारने का काम करते रहे। ५६८

मिऩ्ऩुडै वेत्तिरक् कैयर् मॅय्बुहत्, तुऩ्ऩिडु कञ्जुहत् तुहिलर् शोर्विलाप्
पॊऩ्ऩॊडु वॆळ्ळियप् पुरन्द रादियर्क्, किऩ्ऩियऩ् मुऱैमुऱै यिरुक्कै यीयवे 569

पॊऩ् ऒंडु–बृहस्पति के साथ; वॆळ्ळि–असुर-गुरु शुक्र; मिऩ् उटै–चमकीले; वेत्तिर कैयर्–वेत्रपाणी होकर; मॅय् पुक–शरीर जिसमें प्रविष्ट हो, ऐसा; तुऩ्ऩिट्–लिये हुए; कञ्चुक तुकिलर्–कंचुक की पोशाक से अलंकृत; चोर्वु इलर्–बिना आलस्य के; पुरन्तरातियर्क्कु–पुरन्दरादि देवता लोगों को; इऩ् इयल्–मधुर व्यवहार के साथ; मुऱै मुऱै–उचित प्रकार से; इरुक्कै ईय–आसन की व्यवस्था कर रहे थे, ऐसा। ५६९

स्वर्णदेव बृहस्पति, शुक्लदेव शुक्राचार्य दोनों कंचुकी पहने हुए वेत्र हाथ मे लेकर आलस्य त्यागकर पुरन्दर आदि को उनका योग्य स्थान दिखा रहे थे। आगतों का स्वागत करना और उनके आसन की व्यवस्था करना उनका काम था। ५६९

शूलमे मुदलिय तुऱन्दु शुऱ्ऱिय, शेलैयाऱ् चॅय्यवाय् पुदैत्त शेङ्गैयऩ्
तोलुडै नॆंडुम्बणै तुवैक्कुन् दोऱॆलाम्, कालऩिऩ् ऱिशैक्कुनाट् कडिहै कूऱवे 570

कालन्–कालदेव (यम); चूलमे मुतलिय तुऱन्तु–शूल आदि त्यागकर; चुऱ्ऱिय चेलैयाल्–अपने शरीर पर लपेटे वस्त्र के छोर से; चॅय्य वाय्–लाल मुख को; पुतैत्त–जो ढक रहे थे; चॅम् कैयऩ्–उन अरुण हाथों के साथ; तोल् उटै नॆंटुम् पणै–चमड़ा-मढ़े बड़े ढोलो के; तुवैक्कुम् तोऱु ऎलाम्–पिटते हर समय; इचैक्कुम् नाळ् कटिकै–निर्दिष्ट दिन की घड़ी; वन्तु कूऱ–सभा में आकर बता रहे थे। ५७०

यम का क्या हाल था? ढोल बजाकर घड़ी बतायी जाती। यम का काम था कि वे अन्दर आते और अपने वस्त्र से मुख ढाँपे विनय के साथ घड़ी बतावे। समय-सूचक का काम उनका था। वे अपना शूल आदि त्याग चुके थे। ५७०

नयङ्गिळर् नऱुविरै नाऩ नॆय्यळाय्
वियऩ्गरुप् पूरमॆऩ् पञ्जिऩ् मीक्कॊळीइ
कयङ्गळिऩ् मरैमलर्क् काडु पूत्तॆऩ
वयङ्गॊरिक् कडवुळुम् विळक्क माट्टवे 571

वयङ्कु–प्रकाशमान; ऎरि कटवुळुम्–अग्निदेव ने भी; नयम् किळर्–श्रेष्ठतायुक्त; नऱु विरै–सुवासपूर्ण; नात्तम्–कस्तूरी को; नॆय् अळाय्–घृत से मिलाकर; वियन् करुप्पूरम्–उत्तम कर्पूर को; मॆन् पञ्चिल् मी–नरम रुई पर रख के; कॊळीई–(उस बाती को) जलाकर; कयङ्कळिल्–तालाबों में; मरै मलर् काटु–कमलपुष्प-कानन; पूत्तत–फूले, जैसे; विळक्कम् माट्ट–दिये जलाये। ५७१

प्रकाशमान अग्निदेव पर दीया जलाने का जिम्मा था। उन्होंने अनेक दीये जलाये, जिनका तेल श्रेष्ठ और सुगन्धित कस्तूरी और उत्तम घृत का मिश्रण था और कर्पूर को रुई में रखकर उसकी बातियाँ जलायी गयीं। उन्होंने उन्हें जलाशयों पर विकसित कमलों के समान सजाए। ५७१

अदिशय मळिप्पदऱ्कु अरुळ ऱिन्दुनल्, पुदिदलर् कऱ्पहत् तरुवुम् वॉय्यिलाक्
कदिर्नॅडु मणिहळुङ् गऱवै यान्गळुम्, निदिहळु मुऱैमुऱै निन्ऱु नीट्टवे 572

नल् पुतितु अलर्–अच्छे और ताजा फूले हुए; **कऱ्पक तरुवुम्**–कल्पतरु और; **पॉय् इला**–अभंग; **नॅटु कतिर्**–लम्बी ज्योति से युक्त; **मणिकळुम्**–(चिंतामणि आदि) रत्न; **कऱवै आन्कळुम्**–दुधारू गायें (कामधेनु); **नितिकळुम्**–(शंख आदि नव-) निधियाँ; **अतिचयम् अळिप्पतऱ्कु**–रावण को विस्मयगर्भित मनोरंजन करने के लिए; **अरुळ् अऱिन्तु**–उसकी कृपा की ताक में रहकर; **मुऱै मुऱै**–अपने-अपने क्रम से; **निन्ऱु**–खड़ा होकर; **नीट्ट**–अपना उपहार बढ़ातीं, ऐसे संभ्रम के साथ। ५७२

नवविकसित फूलों के साथ कल्प, संतान, मन्दार, पारिजात, हरिचन्दन के तरु, अमन्द और लम्बी ज्योतियुक्त चिन्तामणि, दुधारू कामधेनु आदि गायें, शंख, (पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, हीरे आदि) निधियाँ—ये सब रावण को प्रसन्न करने के लिए बारी-बारी से अपना-अपना उपहार बढ़ा रही थीं। तब। ५७२

कुण्डल मुदलिय कुलङ्गॊळ् पेरणि, मण्डिय पेरॊळि वयङ्गि वीशलाल्
उण्डुहॊ लिरविनि युलह मेऴिनुम्, ऍण्डिशै मरुङ्गिनु मिरुळिन् ऱॆन्नवे 573

कुण्टलम् मुतलिय–कुण्डल आदि; **कुलम् कॊळ् पेर् अणि**–उत्तम और बहुमूल्य आभरणों की; **मण्टिय**–परिपूर्ण; **पेर् ऑळि**–बड़ी कान्ति; **वयङ्कि वीचलाल्**–भरपूर फैलती है, इसलिए; **उलकम् एऴिनुम्**–सातों लोकों में; **इनि**–अब; **इरवु उण्टु कॊल्**–रात भी है क्या; **ऍण् तिचै मरुङ्किनुम्**–आठों दिशाओं में सर्वत्र; **इरुळ् इन्ऱु**–अन्धकार नहीं है; **ऍन्न**–कहा जाय, ऐसा। ५७३

रावण के कर्ण-कुण्डल और अन्य श्रेष्ठ आभरण घनी कान्ति बिखेर रहे थे। वह प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ था। इस वजह से ऊपर के और नीचे के सातों लोकों में क्या कभी रात हो सकेगी? आठों दिशाओं में कहीं अन्धकार का नाम तक नहीं था। ५७३

कङ्गैये मुदलिय कडवुट् कन्नियर्, कॊङ्गैहळ् शुमन्दिडै कॊडियि नॊल्हिडच्
चॅङ्गैयि नरिशियुम् मलरुञ् जिन्दिनर्, मङ्गल मुऱैमॊऴि कूऱि वाऴ्त्तवे 574

कङ्कैये मुतलिय–गंगाजी आदि; **कटवुळ् कन्नियर्**–(नदी की) देव-कन्याएँ; **कॊङ्कैकळ् चुमन्तु**–स्तनों को ढोने से; **इटै**–कमर को; **कॊटियिन् ऑल्किट**–लता के समान झुकने देते हुए; **चॅम् कैयिन्**–लाल (नरम और सुन्दर) हाथों से; **अरिचियुम् मलरुम्**–अक्षत और फूल; **चिन्तिनर्**–(रावण पर) चढ़ाकर; **मङ्कल मुऱै मॊऴि कूऱि**–मंगलाशासन के वाक्य कहकर; **वाऴ्त्त**–'जय जीव' कहतीं, ऐसा। ५७४

गंगाजी आदि दिव्य जल-कन्याएँ, जिनकी कमरें भारी स्तनों के बोझ के कारण लचक-लचक जाती थीं, अपने लाल (मनोरम और कोमल) हाथों से चावल और फूल रावण पर चढ़ाकर मंगलाशासन करके स्तुति के गीत गा रही थीं। ५७४

ऊरुविऱ् ऱोऩ्ऱिय वुरुप्प शिप्पॅयर्क्, कारिहै यार्मुदऱ् कलाप मञ्ञैबोल्
वार्विशिक् करुवियोर् वहुत्त पाणियिऩ्, नारिय ररुनड नडिप्प नोक्किये 575

ऊरुविल् तोऩ्ऱिय–श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न; उरुप्पचि पॅयर्–उर्वशी नाम की; कारिकैयार् मुतल्–सुरबाला आदि; नारियर्–नारियाँ; कलाप मञ्ञै पोल्–कलापी मोरों के समान; वार् विचि–फीते से कसे; करुवियोर्–मृदंग आदि के वादकों के; वकुत्त पाणियिऩ्–वादन से निर्दिष्ट ताल-लय में; अरु नटम् नटिप्प–श्रेष्ठ नाच नाचतीं, तब। ५७५

वहाँ मृदंग आदि बाजे बज रहे थे। उन्हीं के ताल-मेल में श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न उर्वशी आदि अप्सराएँ नाच रही थीं। उसका रसास्वादन करते हुए— (नर और नारायण बदरिकाश्रम में तपस्या कर रहे थे। देवेन्द्र ने उनके तप को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा। श्रीमन्नारायण ने अपने ऊरु से उर्वशी को पैदा किया। उसका सौन्दर्य देखकर अप्सराएँ लज्जित होकर चली गयीं।)। ५७५

इरुन्दन तुलहङ्ग ळिरण्डु मोऩ्ऱुन्दन्
अरुन्दव मुडैमैयि नळवि लाऱ्ऱलिल्
पॊरुन्दिय विरावणऩ् पुरुवक् कार्मुहक्
करुन्दडङ् गण्णियर् कण्णिऩ् वॆळ्ळत्ते 576

उलकङ्कळ् इरण्टुम् ऒऩ्ऱुम्–दो और एक (तीनों) लोकों में; तऩ् अरुम् तवम् उटैमैयिऩ्–अपने अपूर्व तपस्या के होने से; अळवु इल् आऱ्ऱल्–(प्राप्त) अपार पराक्रम का स्वामी; इरावणऩ्–रावण; पुरुव कार्मुक–भौंहें रूपी धनुओं के साथ; करुम् तटम् कण्णितर्–काली और विशाल आँखों की; कण्णिऩ् वॆळ्ळत्ते–दृष्टि रूपी प्रवाह में; इरुन्ततऩ्–तैरता रहा। ५७६

रावण सभा मे विराजमान था। उसने ऐसा कठोर तप किया था, जैसा तीनों लोकों का और कोई नहीं कर सकता था। अतः उसे अपार बल प्राप्त था। उस पर नारियाँ बड़े प्रेम के साथ दृष्टि दिये रहती थीं। कवि कहते है कि रावण उनकी काली और दीर्घ आँखों की दृष्टि के प्रवाह में तैरता रहा। ५७६

*** तङ्गैयु मव्वळि तलैयिऱ् ऱाङ्गिय**
शॆङ्गैयळ् शोरियिऩ् ऱारै शेर्न्दिळि

कॊङ्गैयळ् मूक्किलळ् कुळैयिन् कादिलळ्
मङ्गुलि नॊलिपडत् तिऱन्द वायिन्ाळ् 577

अ वळि–तव; तङ्कैयुम्–(रावण की) बहिन; तलैयिल् ताङ्किय–सिर पर रखे; चॆम् कैयळ्–हाथों के साथ; चोरियिन् तारै–रक्त की धारा; चेर्न्तु इळि–जिन पर बहती रही; कॊङ्कैयळ्–उन स्तनों के साथ; कुळैयिन् कातु इलळ्–कुण्डल सहित कानों से रहित; मङ्कुलिन् ऑलि पट–मेघ-गर्जन करते हुए; तिऱन्त वायिन्ाळ्–खुले मुख के साथ। ५७७

जब रावण इस ठाट-बाट के साथ राजदरबार में विराजमान रहा, तब (उसकी बहिन शूर्पणखा) हाथ सिर पर रखते हुए, स्तनों पर रक्त को बहने देते हुए नासिकाहीन मुख खोलकर मेघगर्जन-से उच्च स्वर में— । ५७७

❀ मुडैमिडै वायितिन् मुऱैयिट् टार्हलि
कडैयुहत् तॆळुमॊलि काट्टक् कान्दुवाळ्
कुडदिशैच् चॆक्करिऱ् चेन्द कून्दलाळ्
वडदिशै वायिलिन् वन्दु तोऩ्ऱिनाळ् 578

मुटै मिटै–मांस-गन्ध-युक्त; वायितिन्–मुख से; मुऱैयिट्टु–शिकायत करते हुए; आर् कलि–सघोष समुद्र से; कटै युकत्तु–युगान्त में; ऍळुम् ऑलि–जो उठती है, उस ध्वनि को; काट्ट–प्रकट करते हुए; कान्तुवाळ्–जो मुरझायी रही; कुट तिचै चॆक्करिल्–पश्चिमी दिशा के गगन की लालिमा से; चेन्त कून्तलाळ्–अधिक लाल केश वाली; वट तिचै वायिलिन्–उत्तर के द्वार पर; वन्तु तोऩ्ऱिनाळ्–आकर प्रकट हुई (शूर्पणखा)। ५७८

मांसगन्धयुक्त अपने मुख से प्रलाप करती हुई उत्तरी द्वार पर आ प्रकट हुई। उसने जो शोर मचाया वह युगान्त के नाद के समान भयंकर था। अग्नितप्त-सी, लाल सन्ध्या-राग से भी अधिक लाल केश के साथ वह आयी। ५७८

तोऩ्ऱलुन् दॊन्नह ररक्कर् तोहैयर्
एन्ऱॆदिर् वयिऱलैत् तिरङ्गि येङ्गिनार्
मून्ऱुल हुडैयवन् ऱङ्गै मूक्किलळ्
तान्ऱऩि यवळ्वरत् तरिक्क वल्लरो 579

तोऩ्ऱलुम्–प्रकट होते ही; तॊल् नकर्–प्राचीन नगर की; अरक्कर् तोकैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; ऍतिर् एन्ऱु–सामने स्थित हो; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटते हुए; इरङ्कि एङ्कित्तार्–अनुताप करके रोईं; मून्ऱु उलकु उटैयवन्–तीनों लोकों के पति की; तङ्कै–बहिन; मूक्कु इलळ्–नासिका से हीन; तनि अवळ् तान् वर–अकेली स्वयं आए; तरिक्क वल्लरो–सह सकेंगी क्या। ५७९

उसके उस रूप में प्रकट होने पर उस प्राचीन नगर की राक्षस-नारियाँ सामने आकर (अपनी छाती) अपना पेट पीटते हुए अनुताप के साथ रोयीं।

तीनों लोकों के स्वामी की सगी बहिन थी वह। उसकी यह स्थिति! उसकी नाक कटी हुई है! अकेली आ रही है। यह देखकर कोई सब्र कर सकता है क्या ? । ५७९

❀ पॉरुक्कॅन्न नोक्किनर् पुहल्व दोर्हिलर्
अरक्करु मिरॅत्तन रशनि येर्ॅन्नक्
करत्तॉडु करङ्गळैप् पुडैत्तुक् कण्गळिन्
नॅरुप्पॅळ विऴित्तुवाय् मडित्तु निऱ्किन्ऱार् 580

अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; पॉरुक्कु ॲन्न नोक्किनर्–सहमकर देखा; पुकल्वतु ओर्किलर्–क्या कहना, नहीं जानते; अचनि एऱु ॲन्न–अशनिराज के समान; करत्तु ओटु करङ्कळै–हाथों से हाथों को पीटकर; कण्कळिन् नॅरुप्पु ॲऴ–आँखों से अंगार निकालते हुए; विऴित्तु–आँख फाड़े देखकर; वाय् मटित्तु–दाँत पीसकर; निऱ्किन्ऱार्–खड़े रहे। ५८०

राक्षसों ने भी सहमकर देखा। क्या कहना —यह भी न सूझा। अशनि का-सा नाद पैदा करते हुए हाथों से हाथ मारे। उनकी आँखों से आग उगलने लगी। दाँत पीसते हुए आँखें फाड़े देखते हुए खड़े के खड़े रह गये। ५८०

❀ इन्दिरन् पालदो वुलह मीन्ऱपेर्, अन्दणन् पालदो वाऴि यानदो
शन्दिर मवुलिपाऱ् ऱङ्गु मेहॉलो, अन्दर मिदुवॅन्न वऴल्हिन् ऱार्शिलर् 581

चिलर्–(उनमें) कुछ; इन्तिरन् पालतु ओ–क्या इन्द्र की तरफ़ से हुआ है; उलकम् ईन्ऱ–लोकों के सर्जक; पेर् अन्तणन् पालतो–वड़े ब्राह्मण (ब्रह्मवित) ब्रह्मा की तरफ़ से क्या; आऴियान् अतो–चक्रधारी (क्षीर-) सागर-निवासी का है; चन्तिर मवुलि पाल्–चन्द्रमौलि पर; तङ्कुमे कॉलो–इसका जिम्मा रहता है; अन्तरम् इतु–सितम है यह; ॲन्न अऴल्किन्ऱार्–समझकर कोप से तपते हैं। ५८१

उनमें कुछ राक्षसों ने बड़े क्रोध के साथ प्रश्न किया कि क्या यह घोर अपराध इन्द्र की तरफ़ से हुआ है ? या विश्व के सृष्टि-कर्ता ब्राह्मण (ब्रह्मवित) द्वारा हो गया ? या क्षीरसागरशायी, चक्रधर श्रीविष्णु के हाथों हो गया है ? (आऴि का अर्थ चक्र भी है, सागर भी।) या चन्द्र-मौलीश्वर पर ही यह लगेगा ? जो हो यह बड़ी आफ़त है ! वे क्रोध से उबले। ५८१

पोरिलान् पुरन्दर नेवल् पूण्डनन्, आरुला नेमिया नाऱ्ऱ ऱोऱ्ऱुप्पोय्
नीरिना नॅरुप्पनान् पॉरुप्पि नानिनि, यार्हॉलो मीदॅन्न वऱ्हिन् ऱार्शिलर् 582

चिलर्–(और) कुछ; पुरन्तरन्–पुरन्दर; पोर् इलान्–युद्ध छोड़कर; एवल् पूण्टनन्–सेवक वन गया; आर् उलाम् नेमियान्–तीक्ष्ण चक्रधारी; आऱ्ऱल् तोऱ्ऱु पोय्–बल मे हारकर; नीरिनान्–(क्षीरसागर का) जलवासी हो गया है; नॅरुप्पु

अत्तान्—अग्नि-समान शिव; पौरुप्पित्तान्—पर्वतवासी हो गया; इति—अब; यार् कोल् आम् ईतु—यह कौन हो सकता है; अँत्त—ऐसा; अऱैकिन्ऱार्—पूछते । ५८२

और कुछ राक्षसों ने यों कहा— पुरन्दर तो युद्ध से एक दम विरत होकर रावण का नौकर बन गया है। तीक्ष्ण चक्र के रखनेवाले विष्णु भी रावण से हारकर (क्षीर-सागर-) जलवासी हो गये। अग्नि-सम शिवजी (डर से) पर्वत पर चढ़ बैठे हैं। फिर किसने यह काम किया होगा ? । ५८२

❀ शॅप्पुदऱ्‌ कुरियवर् तॅव्व रारुळर्
मुप्पुऱत् तुलहमु मडङ्ग मूडिय
इप्पुऱत् तण्डत्तोर्क् कियैव दन्ऱिदु
अप्पुऱत् तण्डत्ता रारॅन् ऱार्शिलर् 583

चिलर्—(और) कुछ; तॅव्वर्—शत्रु; चॅप्पुतऱ्‌कु उरियवर्—कहाने योग्य; यार् उळर्—कौन हैं; मु पुऱत्तु उलकमुम्—तीनों लोकों को; अटङ्क मूटिय—पूर्ण रूप से जिसने अपने में समा लिया है; इ पुऱत्तु अण्टत्तोर्क्कु—इस तरफ़ के अण्ड के वासियों का; इतु इयैवतु अन्ऱु—यह हो सकने का काम नहीं; अ पुऱत्तु—उस तरफ़ के; अण्टत्तोर् आम्—अण्ड के वासियों का ही हो सकता है; आर्—कौन हैं (वे); अँन्ऱार्—पूछते । ५८३

और कुछ राक्षसों ने तर्क किया। हमारे रावण का शत्रु कहाने योग्य है कौन ? आकाश, पाताल और भूलोक को अन्तर्निहित रखनेवाले इस अण्डगोल का कोई भी यह नहीं कर सकता ? अपराण्ड (बहिरण्ड) में भी कौन है ? । ५८३

ॲन्नैये यिरावणन् ऱङ्गै यॅन्ऱऱिपिन्, अन्नैये यॅन्ऱडि वणङ्ग लन्ऱिये
उन्नवे यॊण्णुमो वॊरुव रालिवळ्, तन्नैये यरिन्दन ळॅन्ऱ ऱार्शिलर् 584

चिलर्—कुछ; ॲन्नैये—यह क्या (आश्चर्य); इरावणन् तङ्कै—रावण की बहिन; ॲन्ऱु अऱिपिन्—यह जानने के बाद भी; अन्नैये ॲन्ऱु—माताजी कहकर; अटि वणङ्कल् इन्ऱि—चरण में विनत हुए बिना; ऒरुवराल्—किसी से; उन्नवे ऒण्णुमे—(ऐसी बात) सोची भी जा सकेगी क्या; इवळ्—इसने; तन्नैये तान् अरिन्तनळ्—खुद अपने अंगों को काट लिया है; ॲन्ऱनर्—बोले । ५८४

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान लगाया। यह क्या आश्चर्य हो गया ! रावण की छोटी बहिन जानने पर कोई भी 'माताजी' कहकर उसके पैरों पर झुक जायगा। इसको छोड़कर वह ऐसा काम मन में भी नहीं ला सकेगा। इसलिए अवश्य इसने स्वयं अपने अंग काट लिये हैं। ५८४

शॊऱ्पिऱन् दार्क्किदु तुणिय वॊण्णुमो
इऱ्पिऱन् दार्तमक् कियैव शॅय्दिलळ्

कऱ्पिऱन् दाळॅनक् करन्गॉ लामिवळ्
पॉऱ्पऱै याक्किनन् पोलॅन् ऱाऱ्शिलर् 585

चिलर्–कुछ; चॉल् पिऱन्तार्क्कु–कीर्तिमानों को; इतु तुणिय ऑण्णुमो–(स्त्री के अंग काटने का) यह काम करने योग्य है क्या; इल् पिऱन्तार्क्कु इयॅव–कुलीन स्त्री के लिए उचित काम; चॅय्तिलळ्–इसने नहीं किया; कऱ्पु इऱन्ताळ्–शील को मारा है; ऍन्न–(कुछ ऐसा) देखकर; इवळ् पॉऱ्पु–इसके रूप को; अऱै आक्कितन्–विकृत कर दिया; करन् कॉल् आम्–खर ने ही शायद; ऍन्ऱार्–बोले। ५८५

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान किया— गौरवपूर्ण कुल में उत्पन्न किसी के लिए भी ऐसा करना सूझ सकता है क्या? (इसलिए मेरा मत है—) इसने कुलीन स्त्रियों के लिए उचित कार्य नहीं किया होगा। अपना शील त्याग दिया होगा। इसलिए खर ने ही इसका अंग-भंग करके रूप को विकृत करा दिया है। ५८५

तत्तुरु शिन्दैयर् तळरुन् देवरिप्
पित्तुऱ वल्लरे पिऴैप्पिल् शूऴ्च्चियार्
मुत्तिऱत् तुलहैयु मुडिक्क वॅण्णुवार्
इत्तिऱम् बुणर्त्तन रॅन्गिन् ऱार्शिलर् 586

तत्तु उरु चिन्तैयार्–मन डगमगाकर; तळरुम्–निर्बल रहनेवाले; तेवर्–देव; इ पित्तु उऱ वल्लरे–यह पागलपन कर सकनेवाले हैं क्या; पिऴैप्पु इल् चूऴ्च्चियार्–अचूक तन्त्रशाली; मु तिऱत्तु उलकैयुम्–तीनों तरह (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों को; मुटिक्क ऍण्णुवार्–मिटाना चाहनेवाले कोई; इ तिऱम् पुणर्त्तनर्–यह काम कर चुके होंगे; ऍन्ऱार्–कहा; चिलर्–कुछ ने। ५८६

देव यह पागलपन नहीं कर सकते, क्योंकि उनका मन रावण के डर से हड़बड़ाता रहता है। वे निर्बल बने हुए हैं। अचूक तन्त्रशाली, तीनों लोकों के नाश को चाहनेवाले किसी ने यह काम किया है। —ऐसा कुछ राक्षसों ने कहा। ५८६

इन्यॉरु कऱ्पमुण् डॅन्ऩि नन्ऱियॆ
वनैहऴल् वयङ्गुवाळ् वीरर् वल्लरो
पनिवरु कानिडैप् पऴिप्पि नोन्बुडै
मुनिवरर् वॅहुळियिन् मुडिवॅन् ऱार्शिलर् 587

चिलर्–(और) कुछ (राक्षसों) ने; इति ऑरु कऱ्पम् उण्टु–अब किसी दूसरे कल्प में होगा; ऍन्ऩिल् अन्ऱियॆ–यह बात छोड़कर; वनै कऴल्–पायल पहने हुए; वयङ्कु वाळ्–प्रकाशमान तलवार धारण किये रहनेवाले; वीरर्–(इस कल्प के) वीर; वल्लरो–समर्थ हैं क्या; पनि वरु कान् इटै–शीतल कानन में; पऴिप्पु इल् नोन्पु उटै–अनिन्द्य व्रतधारी; मुनिवरर्–मुनिवरों के; वॅकुळियिन् मुटिव–कोप का फल है; ऍन्ऱार्–कहा। ५८७

ऐसा काम किसी दूसरे कल्प में हो सकता है तो हो सकता है। इस कल्प का कौन पायलधारी असिहस्त होगा जो यह कर सकेगा? इसलिए यह अवश्य उन मुनिवरों के कोप का फल है, जो ठण्डे जंगल में अनिन्द्य तपोव्रत में लगे हैं। ५८७

❀ करैयरु तिरुनहर्क् करुङ्ग णङ्गैमार्
निरैवळैत् तळिर्क्कर नॅरित्तु नोक्किनर्
पिरैयुरु पालॅन्न निलैयिऱ् पिऩ्ऱिय
उरैयिऩ रौरुवर्मु ऩ्ऩॊरुवर् मुन्दिऩार् 588

करै अरु तिरुनकर्–असीम सम्पत्तिशाली इस श्रीनगर लंका की; करुम् कण् नङ्कैमार्–नीलाक्षी स्त्रियों ने; निरै वळै–पंक्तिबद्ध कंकणों से भूषित; तळिर् करम्–पल्लव-सम हाथों को; नॅरित्तु–मलते हुए; नोक्कितर्–देखा; पिरै उरु पाल् ॲत–जामन-लगे दूध की तरह; निलैयिल् पिऩ्ऱिय–स्खलित (अव्यवस्थित); उरैयितर्–बोली बोलते हुए; ऑरुवर् मुऩ् ऑरुवर्–एक के आगे एक; मुऩ्तितार्–पहले आई। ५८८

राक्षस पुरुषों की यह बात थी। स्त्रियों ने क्या किया? इसका वर्णन आगे मिलता है। असीम सम्पत्तिशाली उस नगर की वासिनी, काली आँखों की सुन्दर राक्षसियों ने पंक्ति में कंकणों से भूषित अपने हाथ मलते हुए देखा। जामन-लगे दूध के समान उनकी बोली अव्यवस्थित रही। वे एक के पहले एक दौड़ती आयीं। ५८८

❀ मुऴवितिल् वीणैयित् मुरनल् याऴिनिल्
तऴ्विय कुऴलिनिऱ् चङ्गिऱ् ऱारैयिल्
ॲऴुहुर लऩ्ऱिये यॆऩ्ऱु मिल्लदोर्
अऴुहुरल् पिऱन्ददव् विलङ्गैक् कन्ऱ्रो 589

मुऴवितिल्–'मत्तळम्' (मृदंग-सम बाजे) से; वीणैयिल्–वीणा से; मुरल् नल् याऴिऩिल्–सुरीले श्रेष्ठ 'याऴ' नामक वाद्य से; तऴुविय कुऴलितिल्–संगीतमय बाँसुरी से; चङ्किल्–शंख वाद्य से; तारैयिल्–लगातार; ॲऴु कुरल्–उठनेवाला नाद; अऩ्ऱियॆ–नहीं आया पर; अऩ्ऱु–उस दिन; अ इलङ्कैक्कु–उस लंका के लिए; ऑऩ्ऱुम् इल्लतु ओर्–अभूतपूर्व एक; अऴुकुरल् पिऱन्ततु–रुदन-स्वर उठा। ५८९

साधारण रूप से लंका में 'मद्दल' (मृदंग-सा बाजा) सुरीला याऴ, संगीतमयी बाँसुरी, शंख —इन वाद्यों का निरन्तर गान सुनाई देता था। पर आज इसके विपरीत, अभूतपूर्व रीति से रुदन का स्वर उठा। ५८९

❀ कऴ्ळुडै चऴ्ळमुड् गळित्तु वॆम्बिय
उऴ्ळमु मॊरुवऴिक् किडक्क वोडिनार्
वॆऴ्ळमु नाणुऱ विरिन्द कण्णिनर्
तऴ्ळुरु मरुङ्गिऩर् तऴीइक्कॊण् डेहिऩार् 590

वॆळ्ळमुम् नाण् उऱ–बाढ़ को भी शरमानेवाले; विरिन्त कण्णितर्–अश्रुप्रवाह से भरी आँखों से युक्त स्त्रियाँ; फळ् उट वळ्ळमुम्–सुरा-भरे प्यालों और; कळितुवॆम्पिय उळ्ळमुम्–सुरापान से गरम हुए मनों को; ओरु वऴि किटक्क–एक ओर रहने देकर; ओटित्तार्–दौड़ीं; तळ्ळुऱ–बल खानेवाली; मरुङ्कित्तर्–कमरों के साथ; तऴीइ कॊण्टु–आपस में पकड़ लेते हुए; एकित्तार्–शूर्पणखा के पास गई। ५६०

स्त्रियाँ सुरापान में लगी रहीं। उन्होंने सुरा का प्याला और पीने से उत्तप्त मन दोनों को एक ओर रख दिया। उनकी आँखें बाढ़ को भी शरमाती हुई अश्रुजल से भर गयीं। वे दौड़ीं। उनकी कमरें लचकीं। एक दूसरे को पकड़ती हुई, सहारा लेती हुई शूर्पणखा के पास गयीं। ५९०

❀ नान्दह वुळ्वर्मे नाडुन् दण्डत्तार्
कान्दिन मनत्तिनर् पुलवि कॆम्मिहच्
चेन्दह णदिहमुम् जिवन्दु नीरुह
वेन्दनुक् किळैयव ळाळिन् वीऴ्न्दनर् 591

नान्तक उळ्वर् मेल्–तलवार-कृषक (अपने पतियों) को; नाटुम् तण्टत्तार्–दण्ड देने को आतुर स्त्रियाँ; कान्तिन मनत्तिनर्–कोपसंतप्त मन के साथ; पुलवि कॆ मिक–मान के बढ़ने से; चेन्त कण् अतिकमुम् चिवन्तु–लाल आँखों को और अधिक लाल करते हुए; नीर् उक–आँसू निकालकर; वेन्तऩुक्कु इळैयवळ्–(राक्षस-) राजा की छोटी बहिन के; ताळिल् वीऴ्न्तनर्–पैरों पर गिरीं। ५६१

कुछ स्त्रियाँ अपने तलवार के धनी पतियों से खीझ गयी थीं। वे उनको दण्ड देने की खोज में थीं। उनका मन गरम था और आँखें लाल थीं। अब डर के कारण उनकी आँखें अधिक तीव्र लाल हो गयीं। वे आकर अपने राजा की बहिन शूर्पणखा के पैरों पर गिरीं। ५९१

पॊऱ्ऱलै मरहदप् पूह नोवुऱच्, चुऱ्ऱिय मणिवडन् दूङ्गु मूशलित्
मुऱ्ऱिय पाडलै मुनिवुऱ् ऱेङ्गिनार्, शिऱ्ऱिडै यलमरत् तॆरुवु शेर्हिन्ऱार् 592

पॊन् तलै–सिरों पर स्वर्ण-सदृश फलों से भरे; मरकत पूकम्–मरकतवर्ण पूगतरुओं को; नोवु उऱ–कष्ट देते हुए; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बँधे हुए; मणि वटम् तूङ्कुम्–मणिमय जंजीरों से लटकनेवाले; ऊचलिन्–झूलों में रहकर; मुऱ्ऱिय आटलै–उच्चतम वेग से झूलना; मुनिवु उऱ्ऱु–कोप से छोड़कर; एङ्कित्तार्–दुखित जो हुई, वे; चिऱु इटै अलमर–पतली कमरों को दुखने देते हुए; तॆरुवु चेर्किन्ऱार्–वीथी में आ गई। ५६२

कुछ स्त्रियाँ पूगतरुओं से बँधे झूलों में बैठकर झूल रही थीं। वे पूगतरु मरकततरु के समान हरे और मनोहारी थे और उनके सिरों पर स्वर्ण-सम फल लगे थे। उन तरुओं को संकट देते हुए स्त्रियों का झूलना उच्चतम दशा पर था। जब उन्होंने शूर्पणखा को देखा तो उन्होंने गुस्से के

साथ झूलना छोड़ा। पतली कमर को कष्ट देती हुई वे वीथी में आ गयीं। ५९२

※ ऍळुवॆन्न मलैयॆन्न वॆळुन्द तोळ्हळैत्
तळुविय वळैत्तळिर् नॆहिळत् तामरै
मुळुमुहत् तिरुहयत् मुत्ति नालिहळ्
पॊळिदरच् चिलरुळम् पॊरुमि विम्मुवार् 593

चिलर्–(और) कुछ (राक्षसी स्त्रियाँ); ऍळु ऍन्न–स्तम्भ-सम; मलै ऍन्न–पर्वत-से; ऍळुन्त–उन्नत; तोळ्कळै–(अपने पतियों के) कन्धों से; तळुविय–लिपटे रहे; वळै तळिर्–वलय-भूषित पल्लवों (हस्तों) को; नॆक्कि–अलग करके; तामरै मुळु मुकत्तु–वदन रूपी पुष्ट कमल पर की; इरु कयल्–दो कयलों (आँखों) में; मुत्तिन् आलिकळ्–मोती-से अश्रुकण; पॊळि तर–भरते हुए; उळम् पॊरुमि–मन को दुख से भरकर; विम्मुवार्–सिसकीं। ५९३

अन्य कुछ राक्षस-नारियाँ अपने पतियों के स्तम्भ और पर्वत-सम कन्धों से लिपटी रहीं। जब उन्हें समाचार मिला तो उनके वलय-भूषित पल्लव-सम हाथ ढीले पड़ गए। पुष्ट कमल-सम मुखों में रही कयल मछली-सी आँखों में मोतियों के समान अश्रुकण ढलक आये। उनका मन दुखी हुआ और वे सिसकियाँ भरने लगीं। ५९३

नॆय्न्निलैय वेलरश नेरुनरै यिल्लान्
इन्निलैयु णर्न्दबोळु दॆन्निलैय नॆन्ना
मैन्निलैनॆ डुङ्गण्मळै वानिलैय वाहप्
पॊय्न्निलैम रुङ्गिनर् पुलम्बिनर् पुरण्डार् 594

नेरुनरै इल्लान्–टक्कर लेनेवाला जिसकी कोई नहीं रहा; नॆय् निलैय–घृत-लगे; वेल् अरचन्–भाले का धारण करनेवाला राजा (रावण); इ निलै उणर्न्त पॊळुतु–(शूर्पणखा की) यह स्थिति जब जानेगा; ऍ निलैयन् ऍन्ना–किस स्थिति का होगा, यह सोचकर; मै निलै–अंजनयुक्त; नॆटुम् कण्–आयत आँखों के; मळै वान् निलैयतु आक–जल-वर्षक मेघ की-सी स्थिति में आते; पॊय् निलै मरुङ्किनर्–मिथ्या-कटि स्त्रियाँ; पुरण्टार् पुलम्पिनर्–लोटीं और विलपीं। ५९४

कुछ स्त्रियों के मन में यह प्रश्न उठा कि अजातशत्रु धृतरंजित भाले के स्वामी, रावण को जब शूर्पणखा की स्थिति मालूम होगी तो उसकी स्थिति क्या होगी? तो उनकी काजल-लगी दीर्घ आँखें जलवर्षक मेघों के समान हो गयीं। नाम-मात्र की कटि से युक्त वे भूमि पर लोटती हुई विलाप करने लगीं। ५९४

मनन्दलै वरुङ्गतलि निन्शुवै मरन्दार्
कनन्दलै वरुङ्गुळल् शरिन्दुहलै शोर

नननॅदलैय कॊङ्गैह डदुम्बिड नडन्दार्
अननॅदलिळ मङ्गैय रळुङ्गिययर् हिऩ्ऱार् 595

अऩन्तल् इळ मङ्कैयर्–सोती रहीं (जो) वे कुछ तरुणी रमणियाँ; मतम् तलै–मन में इच्छा करने से; वरु–होनेवाले; कतवु इऩ् चुवै–सपनों का मधुर रस; मऱन्तार्–भूलकर; कतम् तलै वरुम्–घन-सदृश विशिष्ट; कुळल् चरिन्तु–केश को खुलकर बिखरने देते हुए; कलै चोर–वस्त्र को खिसकने देते हुए; नतम् तलैय–पृथुल; कॊङ्कैकळ्–स्तनों को; ततुम्पिट–उछलने देते हुए; नटन्तार्–पैदल आईं; अळुङ्कि–दुखी होकर; अयर्किऩ्ऱार्–श्रांत हुईं। ५९५

कुछ स्त्रियाँ निद्रा कर रही थीं। उनका मन आनन्द के साथ स्वप्न देखने लगा था। जब उन्हें यह समाचार मिला तो स्वप्न का रस भूलकर उठीं। मेघ-सम केश खुलकर बिखर गये। वस्त्र भी ढीले हो खिसकने लग गये। जब वे पैदल चलने लगीं तो उनके बड़े-बड़े स्तन उछलने लगे। वे बहुत दुखी हुईं। ५९५

अङ्गैयि नरन्गयिलै कॊण्डदिऱ लैयन्
तङ्गैनिलै चिङ्गिदुहॊ ऎन्ऱुतळर् हिऩ्ऱार्
कॊङ्गैयिणै शॆङ्गैयिन् मलैन्दुकुलै कोदै
मङ्गैयर्ह णङ्गैयडि वन्दुविऴु हिऩ्ऱार् 596

कुलै कोतै मङ्कैयर्कळ्–स्त्रियाँ, जिनके केश छूटे और बिखरे थे; अम् कैयिल्–अपनी हथेलियों में; अरऩ् कयिलै कॊण्ट–हर के कैलास को जिसने उखाड़ा था, उस; तिऱल् ऐयऩ्–पराक्रमी राजा की; तङ्कै निलै–बहिन की दशा; इङ्कु इतु कॊल्–यहाँ यह हुई तो; ऎऩ्ऱु तळर्किऩ्ऱार्–यह सोचकर क्लान्त हुईं; कॊङ्कै इणै–स्तन-द्वय पर; चॆम् कैयिल् मलैन्तु–अपने लाल हाथों से पीटती हुईं; नङ्कै अटि वन्तु–उस नायिका के चरणों पर आकर; विऴुकिऩ्ऱार्–गिरती है। ५९६

कुछ स्त्रियाँ, जिनके केश खुले हुए बिखरे थे, अपनी छाती पीटते हुए रोने लगीं। उन्हें दुख इस बात का था कि अपनी हथेली में जिसने हर के कैलास पर्वत को उठाया था, उस पराक्रमी स्वामी की बहिन की भी यह हालत हो गयी। रोती हुई आकर वे नायिका के पैरों पर गिरीं। ५९६

इलङ्गैयिल् विलङ्गुमिवै यॆय्दलिल वॆऩ्ऱुम्
वलङ्गैयि लिलङ्गुमयिन् मन्नवुळ ऩॆऩ्ऩा
नलङ्गैयि लहन्ऱदुहॊ नम्मिऩॆऩ नैन्दार्
कलङ्गलिल् करुङ्गणिणै वारिहलुळ् हिऩ्ऱार् 597

वलम् कैयिल् इलङ्कुम् अयिल्–दाहिने हाथ में प्रकाशमान भाला रखनेवाला; मऩ्ऩऩ् उळऩ्–राजा है; ऎऩ्ऩा–यह सोचकर (डर से); ऎऩ्ऱुम्–सदा; इलङ्कैयिल्–लंका के; विलङ्कुम्–जानवर भी; इवै ऎय्तल् इल–ऐसी आफ़त के भागी नहीं होते थे; नम्मिऩ्–हमसे; नलम् कैयिल् अकऩ्ऱतु कॊल्–भलाई छोड़कर अलग हो गई

शायद; ऍन्–यह सोचकर; नैन्तार्–दुख से क्षीण होती हुई; कलङ्कलिल्–व्यथा के कारण; करुम् कण् इणै–काली दोनों आँखों से; वारि–जल को; कलुळ्कित्ड्रार्–गिराती हैं। ५९७

अपने दाहिने हाथ में भाला लिये हुए राजा रावण विद्यमान था। उसके कारण लंका में किसी जानवर पर भी ऐसा संकट नहीं आया था। 'अब क्या हमारी सुरक्षितता चली गयी ?' यह सोचकर वे व्यथित हुईं। व्याकुलता के कारण उनकी काली आँखों के जोड़ों में अश्रु भर आया। ५९७

❀ ऍन्ऱितैय वन्तुय रिलङ्गैनह रॅय्द
निन्ऱव रिरुन्दवरॊ डोडुनॆऱि तेडक्
कुन्ऱिन्तडि वन्दुपडि कॊण्डलॆन मन्नन्
पॊन्ऱिणि पॊलन्गळल् विळुन्दनळ् पुरण्डाळ् 598

ऍन्ऱु इतैय–ऐसा, ऐसा; इलङ्कै नकर्–लंका नगर; वन् तुयर् ऍय्त–कठोर दुख को प्राप्त हुआ, तब; निन्ऱवर् इरुन्तवर् ओटु–सभा में जो खड़े रहे वे, जो बैठे रहे उनके साथ; ओटु नॆऱि तेट–भागने का मार्ग देखने लगे; कुन्ऱिन् अटि वन्तु पटि–पर्वत के तल में आकर जमनेवाले; कॊण्टल् ऍन–घन के समान; मन्नन्–(राक्षस) राजा रावण के; पॊन् तिणि–स्वर्णमय; पॊलन् कळल्–सुन्दर पायल से अलंकृत पैरों पर; विळुन्तनळ्–गिरी; पुरण्टाळ्–लोटी (शूर्पणखा)। ५९८

इस तरह लंका का नगर ही व्याकुलता से भर गया। तब रावण की सभा में शूर्पणखा आयी और रावण के स्वर्णमय पायलधारी चरणों पर गिरी। जब वह वहाँ आयी तो सभा में जो खड़े रहे और जो बैठे रहे, सभी भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। जब वह रावण के पैरों पर गिरी, तब पर्वत के तल में मेघ आकर पड़ा हो, ऐसा लगा। वह गिरकर लोटने लगी। ५९८

मूडिय तिरुट्पडल मूवुलहु मुऱ्ऱुच्
चेडनुम् वॆरुक्कॊडु शिरत्तॊहै नॆळित्तान्
आडिन कुलक्किरि यरक्कनु मयिर्त्तान्
ओडिन तिशैक्करिह ळुम्बरु मॊळित्तार् 599

मू उलकुम् मुऱ्ऱु–तीनों लोकों में सर्वत्र; इरुळ् पटलम् मूटियतु–अँधेरा-पटल ढँक गया; चेटनुम्–शेषनाग ने भी; वॆरु कॊटु–डरकर; चिरम् तॊकै–सिरों की राशि को; नॆळित्तान्–लचकाया; कुल किरि आटिन–कुलपर्वत हिल उठे; अरुक्कनुम् अयिर्त्तान्–सूर्यदेव भी ठिठके; तिचै करिकळ्–दिग्गज; ओटिन–भागे; उम्परुम्–देव भी; ऒळित्तार्–छिप गये। ५९९

तब तीनों लोकों को अन्धकार ढाँप गया। शेषनाग ने डरकर अपने सिरों के समूह को लचका दिया। (कैलास, हिमालय, मन्दर, विन्ध्य,

निपद; हेमकूट, नील, गन्धमादन नाम की) सातों कुलगिरियाँ हिल गयीं। सूर्य भी भयभीत और संशयसहित हो गया। दिग्गज भाग गये और देव भी छिप गये। ५९९

विरिन्दवल यङ्गण्मिडै तोळ्पडर मोदिट्
टॅरिन्दनय नङ्गळॅयिऱ् ऱिन्बुऱ मिमैप्प
नॅरिन्दपुरु वङ्गणॅडु नॅऱ्ऱियिनॅ मुऱ्ऱत्
तिरिन्दपुव नङ्गळ्विनै तेवरु मयिर्त्तार् 600

विरिन्त वलयङ्कळ् मिटै–विशाल वलयों से लसे; तोळ् पटर–कन्धे फूल उठे, तव; मोतु इट्टु–ऊपर उठती; ऍरिन्त नयनङ्कळ्–ज्वाला के साथ जलनेवाली लाल आँखें; ऍयिऱ्ऱिऩ् पुऱम्–वक्रदाँतों के बाजू में; इमैप्प–प्रकाश फैलातीं तो; नॅरिन्त पुरुवङ्कळ्–टेढ़ी हुई भौंहें; नॅट्टु नॅऱ्ऱियिनॅ–लम्बे भालों को; मुऱ्ऱ–ढँक गईं, तो; पुवनङ्कळ्–सारे भुवन; तिरिन्त–गति बदलकर घूम उठे; विनॅ–विपरीत कार्य देख; तेवरुम् अयिर्त्तार्–देवता लोग भी भय करने लगे। ६००

रावण के कन्धे, जिन पर वलय लगे थे, फूल उठे। उसकी आँखों से जो ज्वाला-सी उठी उसका प्रकाश वक्रदन्तों के बाजुओं में फैला। घनी भौंहें तनीं और भाल पर फैल गयीं। सारे भुवन डगमगा गये। यह विपरीत स्थिति देखकर देव सिहर उठे। ६००

तॅन्ऱिशै नमनॊडुम् तेवर्कुल मॅल्लाम्
इन्ऱिरुदि वन्ददु नमक्कॅन विरुन्द
निन्ऱुयिर् नडुङ्गवुडल् विम्मनिलै यिल्ला
दॊन्ऱुमुरै याडलिल रुम्बरिवॅ डिम्बर् 601

तॅन् तिचै नमन् तऩ् ऒटु–दक्षिणी दिशा के (अधिदेवता) यम के साथ; तेवर् कुलम् ऍल्लाम्–देवों के कुल सब; नमक्कु–हमारा; इन्ऱु–आज; इऱुति वन्ततु–अन्त आ गया; ऍन–सोचकर; इरुन्त–रहे; उम्पर् ऒटु–देवों के साथ; इम्पर्–इस लोक के वासी भी; उयिर् नटुङ्क–काँपते प्राणों के साथ; निन्ऱु–खड़े होकर; उटल् विम्म–शरीर-स्पन्दन के साथ; निलै निल्लातु–कहीं स्थिर न रह सके; ऒन्ऱुम् उरै आटल् इलर्–एक शब्द भी नहीं बोल सके। ६०१

दक्षिण दिशा के यम से लेकर सारे देवता भयभीत हो गये कि आज हमारा अन्त आ गया। वे खड़े रह गये। आकाशवासी के साथ इहलोक-वासी भी काँपने लगे। उनके प्राण सूख गये, शरीर काँपने लगे और वे अस्थिर और मौन हो रहे। ६०१

* मडित्तपिल वाय्हडॊरुम् वन्दुबुहै मुन्दत्
तुडित्ततॊडर् मीशॆहळ् शुरुक्कॊळ वुयिर्प्पक्
कडित्तहदिर् वाळॆयिरु मित्कअल मेहत्
तिडित्तवुरु मॊत्तुरऱि यावर्शॆय लॆन्ऱान् 602

मटित्त पिल वाय्कळ् तोरुम्–(कोप से रावण ने जिनके) अधरों को मोड़कर दाँतों से दबा रखा था, उन मुखों में; पुकै वन्तु मुन्त–धुआँ निकल रहा था; तुटित्त–फड़कती; तोटर् मीचैकळ्–मूँछों की शृंखला को; चुरुक्कोळ–झुलसाते (काला बनाते) हुए; उयिर्प्प–साँसें छोड़ रहा था; कटित्त–जिनको पीसता था; कतिर् वाळ् अयिरु–प्रकाशमय तलवार-सम वक्र (या खड्ग) दाँतों के; मिन् कन्नल–विद्युत-से चमकते; मेकत्तु इटित्त उरुम् ओत्तु–मेघ में उठनेवाले वज्र-नाद के समान; उररि–स्वर में बोलते हुए; यावर् चेयल्–किसका काम है; अन्ऱान्–पूछा। ६०२

रावण ओंठ चबा रहा था। उन बिल-समान मुखों से धुआँ उठ रहा था। उसकी मूँछें पंक्ति में हिल रही थीं। और उनको झुलसाते हुए वह गरम साँसें छोड़ रहा था। उसके वक्र दाँत, जो ओंठों को दबा रहे थे, बिजली के समान चमक रहे थे। मेघ में उठनेवाले वज्र के से स्वर में उसने शूर्पणखा से पूछा कि यह किसका काम है ? । ६०२

❀ कानिडै यडैन्दुबुवि कावल्बुरि हिन्ऱार्
मीनुडै नॅडुङ्गॉडियि नोननैयर् मेल्हीऴ्
ऊनुडै युडम्बुडैमै योरुवमै यिल्ला
मानिडर् तडिन्दनर्हळ् वाळुरुवि यॅन्ऱाळ् 603

पुवि कावल् पुरिकिन्ऱार्–भूपालक; मीन् उटै नॅटुम् कॉटियितोन्–मकरांकित लम्बी ध्वजा वाले के; अन्नैयर्–समान रूप रखनेवाले; मेल् कीऴ्–ऊपर और नीचे के लोकों में; ऊन् उटै–मांस सहित; उटम्पु उटैमैयोर्–शरीरधारी; ओर् उवमै इल्ला–अनुपम; मानिटर्–मनुष्य; कान् इटै अटैन्तु–कानन में आकर; वाळ् उरुवि–तलवार खींचकर; तटिन्तनर्कळ्–काट लिया; अन्ऱाळ्–कहा। ६०३

शूर्पणखा ने उत्तर दिया कि वे भूमि के पालक राजकुमार हैं। मकरकेतु के समान रूपवान हैं। ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों लोकों में वे मांसधारी मनुष्य अनुपम हैं। वे वन में आये हैं और उन्होंने कटार निकालकर मेरा अंग-भंग कर दिया। ६०३

❀ शॅय्दनर्हण् मानिड रॅनत्तिशै यनैत्तुम्
अॅय्दनहै वन्ददॅरि शिन्दिनह णॅल्लाम्
नोय्दवर् वलित्तॊऴि नुवन्ऱमॊऴि यॊन्ऱा
पॊय्तविर् पयत्तैयॊऴि पुक्कपह लॅन्ऱान् 604

मानिटर् चॅय्ततर्कळ् अॅन–मानवों ने किया, यह कहने पर; तिचै अनैत्तुम् अॅय्त–दिशाओं भर में गूँजे, ऐसा; नकै–हास; वन्तत्तु–आया; कण् अॅल्लाम्–सभी आँखों ने; अॅरि–आग; चिन्तिन–बरसायी; नॊय्तवर्–अल्प (मानव); वलि तॊऴिल्–बलवान का कार्य; नुवन्ऱ मॊऴि–तुम्हारा कहा वचन; ऑन्ऱा–मेल नहीं खाता; पॊय् तविर्–झूठ छोड़ो; पयत्तै ऑऴि–भय त्यागो; पुक्क–जो हुआ; पुकल्–बताओ (सच); अॅन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ६०४

मनुष्यों ने यह काम किया —यह सुनकर रावण को हँसी आ गयी। उसकी गूँज आठों दिशाओं में भर उठी। आँखों ने आग उगली। उसने शूर्पणखा को डाँटा कि क्या बकती हो ? वे दुर्बल मानव हैं और यह काम बड़े वीरों का काम है। दोनों में मेल नहीं है। असत्य कहना छोड़ो। भय के कारण ऐसा कहती हो तो भय त्याग दो। जो हुआ वह सच-सच बताओ। ६०४

मऩ्मदत्तै	यॊप्पर्मणि	मेऩिवड	मेरुत्
तऩ्मद	नऴिप्पर्दिर	डोळिऩ्वलि	तऩ्ऩाल्
ऎऩ्ऩदनै	यिप्पॊऴु	दिशैप्पदुल	हॆऴिऩ्
नऩ्मदम	ऴिप्परोरि	मैप्पिऩ्ऩि	विल्लाल् 605

मणि मेऩि–सुन्दर रूप में; मऩ्मतत्तै ऒप्पर्–मन्मथ की समानता करते हैं; तिरळ् तोळिऩ् वलि तऩ्ऩाल्–पुष्ट भुज-बल के पराक्रम में; वट मेरु तऩ्–उत्तर के मेरु का; मतत् अऴिप्पर्–घमण्ड चूर कर देंगे; विऩ्लाल्–धनुर्युद्ध में; ओर् इमैप्पिल्–एक पल में; उलकु एऴिऩ्–सातों लोकों का; नल् मतऩ्–बड़ा बल; नति ऒऴिप्पर्–खूब नष्ट कर सकेंगे; अतनै–उसको; इप्पॊऴुतु–अब; इचैप्पतु ऎऩ्–कहना कैसा। ६०५

शूर्पणखा फिर उनके सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। वे रूप में मन्मथ हैं। पुष्ट कन्धों के बल में मेरु का गर्व चूर करनेवाले हैं। एक ही धनु के बल से एक ही पल में वे सातों लोकों का बल मिटा सकनेवाले हैं। हा ! हा ! उसका अब कैसा वर्णन किया जायगा ? । ६०५

वऩ्दनैमु	ऩित्तलैवर्	पालुडैयर्	वाऩत्
तिऩ्दुविऩ्मु	हत्तरॆऱि	नीरिलॆऴु	नाळक्
कऩ्दमल	रैप्पॊरुवु	कण्णर्हऴल्	कैयर्
अऩ्दमिऱ	वत्तॊऴिल	रारवरै	यॊप्पार् 606

मुऩि तलैवर् पाल्–मुनिवरों के प्रति; वऩ्तऩै उटैयर्–पूजा का भाव जो रखते हैं; वाऩत्तु इऩ्तुविऩ् मुकत्तर्–आकाश के चन्द्र के समान मुख वाले; ऎऱि–तरंगाकुल; नीरिल्–जलाशय में; ऎऴु–उत्पन्न; नाळ–नालसहित; कऩ्त मलरै–सुवासपूर्ण (कमल-) पुष्प को; पॊरुवु–समानता करनेवाली; कण्णर्–आँखों वाले; कऴल्–चरण वाले; कैयर्–हाथों वाले; अऩ्तम् इल्–असीम; तव तॊऴिलर्–तपस्या-कार्य में लीन; आर् अवरै ऒप्पार्–कौन उनकी समानता करेगा। ६०६

शूर्पणखा ने आगे कहा कि वे मुनिवरों के प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाले हैं। आकाश के चन्द्र के समान उनके मुख प्रकाशमान और मनोरम हैं। उनकी आँखें तरंग-भरे जलाशयों में विकसित नालयुक्त सुगंधित कमल के समान हैं। हा ! हा ! वे कमल-हस्त हैं और कमल-चरण हैं। अपार

तप के कर्म में लगे हुए हैं। उनकी उपमा कहाँ ढूँढ़ी जाय ? कौन उनकी तुलना कर सकेंगे ? । ६०६

वऱ्कलैयर् वार्हळ्ळर् मार्बिलणि नूलर्
विऱ्कलैयर् वेदमुऱ् नावर्तनि मॆय्यर्
उऱ्कलैय रुन्नैयोर्दु हट्टुणैयु मुन्नार्
शौऱ्कलैयॆ नत्तॊलैवि रूणिहळ् शुमन्दार् 607

वऱ्कलैयर्—वल्कल-वसन; वार्कळ्ळर्—लम्बी पायलधारी; मार्पिल् अणि—वक्ष में धृत; नूलर्—यज्ञोपवीत वाले; विल् कलैयर्—धनुर्विद्या-विशारद; वेतम् उऱ् नावर्—वेदाश्रय-जिह्वा; तत्ति मॆय्यर्—अनुपम सत्यसंध; उत् कलैयर्—कला-श्रेष्ठ; चौल् कलै अॆन्न—शब्द-विद्या के समान; तॊलैवु इल्—अक्षय; तूणिकळ् चुमन्तार्—तूणीर रखनेवाले; उन्नै ओर् तुकळ् तुणैयुम्—तुमको एक धूलि के समान भी; उन्नार्—नहीं समझते। ६०७

वे वल्कलवसन हैं। पायलधारी हैं। उनके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। युद्धविद्याविशारद हैं। उनकी जीभ वेदों का आश्रय हैं। अनुपम सत्यसंध हैं। कलाओं में उत्कृष्ट निपुण हैं। शब्द-शास्त्र के समान उनके तूणीर अक्षय हैं। वे तुमको धूलि के समान भी नहीं मानेंगे। ६०७

❀ माररुळ रेयिरुव रोरुयिरिन् वाळ्वार्
वीररुळ रेयवरिन् विल्लिन्वलि वल्लार्
आरॊरुव रन्नवरै यॊप्पवर्ह ळैया
ऒरॊरुव रेमुदल्वर् मूवरैयु मॊप्पार् 608

ऐया—महिमावान; इरुवर् मारर् उळरे—दो मार देव हैं क्या; ओर् उयिरिन् वाळ्वार्—एकप्राण हो रहते है; विल् अमरिल्—धनुर्विद्या में; वल्लार्—कुशल; अवरिन् वीरर्—उनसे बढ़कर वीर; उळरे—हैं क्या; अन्नवरै ऒप्पवर्कळ्—उनकी समानता करनेवाले; ऒरुवर् आर्—कोई एक कौन हैं; ओर् ऒरुवरे—उनमें एक-एक; मुतल्वर् मूवरैयुम्—प्रधान त्रिदेवों की; ऒप्पार्—समानता करेंगे। ६०८

हे मेरे तात, प्रभु ! कहीं मन्मथ दो है क्या ? वे एक प्राण हो रहते हैं। धनुर्विद्या में वे बड़े ही समर्थ है। उनसे बढ़कर कोई वीर भी है क्या ? उनकी तुलना करनेवाले कोई कहाँ हैं ? उनमें एक-एक त्रिदेवों की समानता कर सकेंगे। ६०८

❀ आऱुमन्न मञ्जिन मरक्करै यॆनच्चॆन्
ऱेऱुनॆऱि यन्दण रियम्बवुल हॆल्लाम्
वेऱुमॆनु नुङ्गळ्हुलम् वेरॊडु मडङ्गक्
कोऱुमॆन मुन्दैयॊरु शूळुरवु कॊण्डार् 609

एऱ् नॆऱि अन्तणर्–उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते जानेवाले ब्राह्मणों (ऋषियों) ने; चॆन्ऱु–उनके पास जाकर; अरक्करै–राक्षसों को; आऱुम् मतम्–शान्तमन वाले हम; अञ्चित्तम्–डरते हैं; ऎन्न इयम्प–यह कहा, तो; उलकु ऎलाम्–सारे लोक; वॆरुम् ऎन्तुम्–हराकर मिटा देंगे, कहनेवाले; उङ्कळ् कुलम्–तुम्हारे कुल का; अटक्क–सारा; वेर् ऒट्टुम् कोरुम् ऎन्न–समूल नाश करेंगे, ऐसा; मुन्नै–पहले; ऒरु चूळ्–एक शपथ; उऱवु कॊण्टार्–कर ली है। ६०९

उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते चलनेवाले मुनिवरों ने उन मानवों के पास जाकर बताया कि हम शान्त-प्रकृति हैं और हमें इन राक्षसों से भय है। तब उन्होंने शपथ खायी कि 'संसार का नाश कर देंगे' —यह कहनेवाले राक्षसों के कुल को ही हम समूल नाश कर देंगे। पहले की हुई उस शपथ से वे बद्ध हैं। ६०९

❀ तरावलय नेमियुऴ वन्ऱयर दप्पेर्प्
परावरु नलत्तोरुवन् मैन्दर्पऴि यिल्लार्
विरावरुम् वनत्तवन् विळम्बवुऱै हिन्ऱार्
इरामनु मिलक्कुवनु मॆन्बर्पॆय रॆन्ऱाळ् 610

तरा वलयम्–भूमण्डल का; नेमि उळवन्–चक्रवर्ती राजा; तयरत पेर्–दशरथ नाम का; परावरु नलत्तु ऒरुवन्–प्रशंसनीय गुण वाला एक; मैन्तर्–उसके पुत्र; पऴि इल्लार्–अनिन्द्य; अवन् विळम्प–उसके कहने पर; विराव् अरु वनत्तु–वास के लिए अयोग्य कानन में; उऱैकिन्ऱार्–रहते हैं; पॆयर्–नाम; इरामनुम् इलक्कुवनुम्–श्रीराम और लक्ष्मण; ऎन्पर्–कहते हैं; ऎन्ऱाळ्–कहा (शूर्पणखा ने)। ६१०

इस भूमण्डल का राजा, चक्रवर्ती दशरथ नाम का प्रशंसनीय गुणी था। ये उस श्रेष्ठ राजा के पुत्र हैं। ये अनिन्द्य हैं। दशरथ की आज्ञा से वे इस वन में आकर ठहरते है, जहाँ स्वच्छन्द होकर वास करना कठिन है। उनके नाम राम और लक्ष्मण हैं। —शूर्पणखा ने अपनी बात समाप्त की। ६१०

मरुन्दनैय तङ्गैमणि नाशिवडि वाळाल्
अरिन्दवरु मानिड रऱिन्दुमुयिर् वाऴ्वार्
विरुन्दनैय वाळोडुम् विऴित्तिऱैयुम् वॆळ्हा
दिरुन्दन निरावणनु मिन्नुयिरॊ डिन्नुम् 611

मरुन्तु अनैय तङ्कै–अमृत-सम छोटी बहिन की; मणि नाचि–सुन्दर नासिका को; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; अरिन्तवरुम् मानिटर्–काटनेवाले भी मानव हैं; अऱिन्तुम्–यह विदित होने पर भी; उयिर् वाऴ्वार्–जीवित हैं; इरावणनुम्–रावण भी; विरुन्तु अनैय वाळ् ऒटुम्–नई तलवार के साथ; विऴित्तु–ताकते हुए; इऱैयुम् वॆळ्कातु–किंचित भी लाज का अनुभव किये विना; इन् उयिर् ऒटु–अपने प्यारे प्राणो के साथ; इरुन्तनन्–चुप रह गया। ६११

रावण को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा। वह कहने लगा— मेरी अमृत-सी प्यारी बहिन की सुन्दर नासिका को तीक्ष्ण असि से काटनेवाले हैं मनुष्य ! यह विदित होने पर भी वे जीवित है ! क्या अपमान है ! रावण भी अपनी नवीन तलवार के साथ, बीसों आँखों से देखता हुआ, विना शरम खाये प्यारे प्राण लेकर रहता है ! । ६११

❀ कॉड्ड्रमदु मुड्ड्रिवलि यालरशु कॉण्डेन्
उड्ड्रपयन् मड्ड्रिदुहीं लामुरै यिड्रन्देन्
मुड्ड्रवुल हत्तुमुदल् वीरर् मुडियॅल्लाम्
अड्ड्रपॊळु दिड्ड्रिदुपॊ रुन्दुमॅन्न लामो 612

कॉड्ड्रम् अतु मुड्ड्रि—विजय का पक्का बनाकर; वलियाल्—अपनी शक्ति से; अरचु कॉण्टेन्—त्रिलोकाधिपत्य अपनाया (मैंने); उड्ड्र पयन्—उसका प्राप्त फल; इतु कॊल् आम्—यही है क्या; उरै इड्रन्तेन्—(गौरव-) गाथा खोई; मुड्ड्र उलकत्तु—सारे विश्व में; मुतल् वीरर्—पहले सिरे के वीरों के; मुटि ॲल्लाम्—सिरों को; अड्ड्रपॊऴुतु—जब काटा गया तब; इड्ड्र इतु—जो गया यह यश; पॊरुन्तुम् ॲन्नल् आमो—फिर मिलेगा, यह माना जा सकेगा। ६१२

मैंने अपनी विजय-यात्रा पूरी करके अपने पराक्रम के वल पर तीनों लोकों का राज पाया ! उसका यही फल रहा क्या ? हाय ! यश मेरा नष्ट हो गया ! सभी लोकों के सारे प्रथम श्रेणी के वीरों के सिर काट भी लूं तो यह नष्ट हुआ यश फिर मिल सकेगा क्या ? । ६१२

❀ मूळमुळ दायपऴि यॅन्वयित् मुडित्तोर्
आळुमुळ वामवर्द मारुयिरु मुण्डाम्
वाळुमुळ दोदविड मुण्डवन् वऴङ्गु
नाळुमुळ तोळुमुळ नानुमुळॅ नन्ड्रो 613

ॲन् वयित्—मेरे प्रति; उळतु आय—स्थायी; मूळुम् पऴि—और व्यापी अपयश का काम; मुटित्तोर्—करनेवाले; आळुम् उळ—मनुष्य अब भी है; अवर् तम् आर् उयिरुम् उण्टाम्—उनके प्यारे प्राण अब भी है; वाळुम् उळतु—(चन्द्रहास-) तलवार भी है; ओतम् विटम् उण्टवन्—समुद्र का विष के भोक्ता शिव के द्वारा; वऴङ्कु—दत्त; नाळुम् उळ—आयु के दिन भी हैं; तोळुम् उळ—भुजाएँ हैं; नानुम् उळॅन् अन्ड्रो—मैं भी रहता हूँ। ६१३

वे मनुष्य भी हैं जो मेरे प्रति इतना बड़ा अपराध, मेरे इतने बड़े अपयश का काम कर चुके। और उनके प्राण अब भी बचे हैं ! मेरे हाथ मे चन्द्रहास भी है। समुद्र से निकला विष जिन्होंने खाया, उन शिवजी से वर के रूप में दत्त आयु भी है। मेरे कन्धे भी हैं। मैं भी जीवित हूँ न ! । ६१३

❀ पॉत्तुउ़ वुडऱ्पऴि पुहुन्ददॆन्ऩ नाणित्
तत्तुऱुव दॆन्ऩैमन नॆतळर लम्मा
ऍत्तुय रुऩक्कुळ दिनिप्पऴि शुमक्कप्
पत्तुळ तलॆप्पहुदि तोळ्हळ् पलवऩ्ऱो 614

मतते–रे मन; उटल् पोत्तु उऱ–मेरे शरीर को विद्ध करते हुए; पऴि पुकुन्ततु–अपयश लग गया; ऍन्ऩ–यह सोचकर; नाणि–शरमाकर; तत्तुऱुवतु–हड़बड़ाने से; ऍन्ऩै–क्यों; इति तळरल्–अब मत मुरझा; ऍ तुयर्–कौन सा दुःख; उऩक्कु उळतु–तुम्हें है; इऩि–आगे; पऴि चुमक्क–कलंक ढोने के लिए; तलॆ पकुति–मेरे सिर के अंश; पत्तु उळतु–दस हैं; तोळ्कळ् पल अऩ्ऱो–कन्धे भी अनेक (बीस) हैं न। ६१४

रे मन ! यह अपयश ऐसा आकर लगा है कि मेरा शरीर ही विद्ध हो गया। यह सोचकर तुम क्यों शरमाकर हड़बड़ाते हो ? तुम दुख से निर्बल मत हो जाओ। तुम्हारा क्या दुख है ? अपयश ढोने के लिए मेरे दस सिर हैं। कन्धे तो अनेक है न ! । ६१४

❀ ऍन्ऱुरै शॆयानहै शॆयावॆरि विऴिप्पान्
वऩ्ऱुणॆयि लाविरुवर् मानिडरै वाळाल्
कॊन्ऱिलर्ह ळानॆडिय कुऩ्ऱुडैय कानिल्
निऩ्ऱकर ऩेमुदलि नोर्निरुद रॆन्ऱान् 615

ऍऩ्ऱु उरै चॆया–यह (स्वनिंदा में) कहकर; नकै चॆया–हँसकर; ऍरि विऴिप्पाऩ्–आग के समान दृष्टि चलाते हुए; नॆटिय कुऩ्ऱु–उच्च पर्वत; उटैय कातिल्–जहाँ रहते हैं, उस वन में; निऩ्ऱ–रहनेवाले; करऩ् मुतलिऩोर् निरुतर्–खर आदि राक्षसों ने; वऩ् तुणै इला–कठोर बल से रहित; इरुवर् माऩिटरै–दो मनुष्यों को; वाळाल्–अपनी तलवार से; कॊन्ऱिलर्कळा–नहीं मारा था क्या; ऍन्ऱाऩ्–यह पूछा। ६१५

इस तरह (अपनी निन्दा का वचन) कहता हुआ रावण हँस उठा। आग-सी दृष्टि करते हुए रावण ने शूर्पणखा से पूछा कि उस कानन में, जिसमें उन्नत पर्वत हैं, खर आदि राक्षस थे न ? क्या उन्होंने इन निर्बल और असहाय मानवों का अपनी तलवार से वध नहीं किया ? । ६१५

अऱ्ऱव नुरैत्त लोडु मऴुदिऴि यरुविक् कण्णाळ्
ऍऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ् पारि ऩिडॆविऴुन् दॆङ्गु हिऩ्ऱाळ्
शुऱ्ऱमुन् दॊलॆन्द वॆय नॊय्दॆनच् चुमन्द कैयाळ्
उऱ्ऱदु तॊरियुम् वण्ण मॊरुवहै युरैक्क लुऱ्ऱाळ् 616

अऱ्ऱु अवऩ् उरैत्तलोटुम्–वैसा उसके कहने पर; अऴुतु इऴि–रोने से बहनेवाले; अरुवि कण्णाळ्–सरिता-सम अश्रु-भरी आँखों के साथ; ऍऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ्–पेट पीटती (हुई); पारिऩ् इटै–भूमि पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; एङ्कुकिऩ्ऱाळ्–रोती

(हुई शूर्पणखा); ऐय-प्रभु; चुऱ्ऱमुम्-हमारे बन्धु-बान्धव सभी; नॉय्तु तॉलैन्ततु-अनायास मिट गये; ॲन्-कहकर; चुमन्त कैयाळ्-सिर पर हाथ धरकर; उऱ्ऱतु तॅरियुम् वण्णम्-वृत्तान्त समझाते हुए; ऑरु वकै-एक प्रकार से; उरैक्कल् उऱ्ऱाळ्-बताने लगी। ६१६

जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब शूर्पणखा ने आँखों से सरिता के समान अश्रु की धार बहायी। पेट को पीटते हुए भूमि पर गिरी। खूब रोती हुई उसने कहा कि सारा परिवार ही अनायास मिट गया। यह कहकर उसने अपने हाथ सिर पर रख लिये। सारा वृत्तान्त समझाते हुए वह एक प्रकार से कहने लगी। ६१६

शॊल्लॆन्ऱन् वायिऱ् केट्टार् तॊडर्न्दॆळ् शेनै योडुम्
कल्लॆन्ऱ वॊलियिऱ् चॆन्ऱ करन्मुदऱ् काळै वीरर्
ॲल्लॊन्ऱु कमलच् चॆङ्ग णिरामनॆन् ड्रियैन्द वेन्दल्
विल्लॊन्ड्रिऱ् कडिहै मून्ड्रि लेऱ्ऱिनन् विण्णि लॆन्ड्राळ् 617

चॊल्-बात; ॲन् तन् वायिल् केट्टार्-मेरे मुख से सुनकर; तॊटर्न्तु ॲळु-साथ उठी; चेनै ओटुम्-सेना के साथ; कल् ॲन्ऱ ऑलियिल्-'घल्' शब्द के साथ; चॆन्ऱ-जो गये; करन् मुतल् काळै वीरर्-खर आदि ऋषभ-सम वीर; ॲल् ऑन्ऱु-किरणस्पृष्ट; कमलम्-कमल-सम; चॆम् कण्-लाल आँखों के; इरामन् ॲन्ऱु इयैन्त-श्रीराम के नाम से युक्त; एन्तल्-महिमावान ने; विल् ऑन्ऱिल्-एक धनु से; कटिकै मून्ऱिल्-तीन घड़ियों में; विण्णिल्-स्वर्ग पर; एऱ्ऱिनन्-चढ़ा दिया; ॲन्ऱाळ्-शूर्पणखा ने कहा। ६१७

भाई ! मैंने उनसे यह अपना हाल कहा तो वे अपनी सेना के साथ शोर करते हुए राम से लड़ने गये। किरण-प्रफुल्लित कमल-सम आँखों के राम नाम के वीर के धनु द्वारा तीन ही घड़ियों में स्वर्ग चढ़ गये। —शूर्पणखा ने कहा। ६१७

तारुडैत् तानैयोडुन् दम्बियर् तमियन् शॆय्द
पोरिडै मडिन्दा रॆन्ऱ वुरैशॆवि पुहाद मुन्नम्
कारिडै युरुमिन् मारि कनलॊडु पिऱक्कु माबोल्
नीरॊडु नॆरुप्पुक् कान्ऱ निरैनॆडुङ् गण्ग ळॆल्लाम् 618

तमियन् चॆय्त पोर् इटै-एकाकी श्रीराम ने जो किया, उस युद्ध में; तम्पियर्-छोटे भाई; तार् उटै तानै ओटुम्-हारयुक्त वीरों की सेना के साथ; मटिन्तार्-मरे; ॲन्ऱ उरै-यह कथन; चॆवि पुकात मुन्नम्-कान में घुसा इसके पूर्व ही; कार् इटै उरुमिन्-मेघमध्य वज्र के; कनल् ऑटु-अनल के साथ; मारि-वर्षा; पिऱक्कुमा पोल्-होती हो जैसे; निरै नॆटुम् कण्कळ् ॲल्लाम्-पंक्ति में रही सभी आँखों ने; नीरॊटु नॆरुप्पु-जल के साथ अग्नि को; कान्ऱ-उगला। ६१८

एकाकी राम से लड़कर मेरे छोटे भाई, हारों से भूषित वीरों की

बड़ी सेना के साथ मर गये —यह बात ज्योंही रावण के कानों में पड़ी, त्योंही उसकी पंक्ति की आँखों में मेघमध्य वज्र के साथ अनल और जल जैसे भर जाता है वैसे आग और जल भर गया। ६१८

आयिडै येंळुन्द शीऱ्ऱत् तळ्न्दिय तुन्ब माऱ्ऱित्
तीयिडै युहुत्त नॅय्यिऱ् चीऱ्ऱत्तिऱ् कूऱ्ऱम् जॅय्य
नीयिडै यिळैत्त कुऱ्ऱ मॅन्नवर् नित्तै यिन्ने
वायिडै यिदळ् मूक्कुम् वलिन्दत्तर् कॉय्य वॅन्ऱान् 619

अ इटै–तव; ऍळुन्त–उभरे; चीऱ्ऱत्तु–कोप में; अळ्न्तिय–मग्न; तुन्पम् माऱ्ऱि–दुःख बदलकर; ती इटै–अग्नि में; उकुत्त नॅय्यिल्–छोड़े गये घी के समान; चीऱ्ऱत्तुक्कु–कोप को; ऊऱ्ऱम् चॅय्य–बल दिलाने पर; अवर्–उन्होंने; नित्तै–तुम्हारे; इन्ने–इस प्रकार; वाय् इटै इतळुम्–मुख पर के अधरों को; मूक्कुम्–और नाक को; वलिन्तत्तर् कॉय्य–बलात् काटा, इसके निमित्त-रूप में; नी–तुमने; इटै इळैत्त कुऱ्ऱम्–उनके प्रति किया (जो) अपराध; यातु–वह कौनसा; ऍन्ऱान्–पूछा। ६१९

रावण को एक साथ क्रोध आया और दुख भी। उसने कुछ देर बाद दुख छोड़ा। आग में घी छोड़ने पर भड़क उठनेवाली आग के समान क्रोध उभर आया। उसने पूछा कि इस तरह वे तुम्हारे अधर और नाक को बलात् काट दें, इसके लिए तुमने उनके प्रति क्या अपराध किया ? । ६१९

❀ ॲन्वयि नुऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावर्क्कु मॅळुद वॊण्णात्
तन्मैय निराम नोडुन् दामरै तविरप् पोन्दाळ्
मिन्वयित् मरुङ्गुल् कॊण्डाळ् वेय्वयित् मॅन्ऱोळ् कॊण्डाळ्
पॊन्वयित् मेनि कॊण्डाळ् पॊरुट्टिनाऱ् पुहुन्द वॅन्ऱाळ् 620

ऍन् वयिन् उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्–मुझसे हुआ अपराध; यावरुक्कुम् ऍळुत ऒण्णात–किसी से भी चित्र बनाना (जिसका) असम्भव है; तन्मैयन्–ऐसे रूप वाले; इरामनोटुम्–राम के साथ; तामरै तविर–(अपना वासस्थान) कमल छोड़कर; पोन्ताळ्–जो आयी है; मिन् वयिन् मरुङ्कुल् कॊण्टाळ्–बिजली से अपनी कमर पानेवाली; वेय् वयिन् मॅन्त तोळ् कॊण्टाळ्–बाँस से जिसने अपने कन्धे पाये हैं; पॊन् वयिन् मेनि कॊण्टाळ्–स्वर्ण से जिसने अपनी शोभा पाई है; पॊरुट्टिनाल्–ऐसी एक स्त्री के कारण; पुकुन्ततु–हो गया; ऍन्ऱाळ्–कहा। ६२०

शूर्पणखा ने उत्तर दिया— इस अपराध के हो जाने का एक निमित्त भी है। जिसका चित्र खींचना असम्भव है, उस रूप से युक्त राम के साथ एक स्त्री आयी है ! वह ऐसी लगती है कि मानो कमल पर अपना वास छोड़कर इधर आयी है। उसने बिजली से कमर पायी है, बाँस से कन्धे, और स्वर्ण से रूप-रंग। उसी स्त्री के कारण यह हुआ। ६२०

आरव ळॅन्ऱ लोडु मरक्कियु मैय वाळि
तेरव ळल्हुल् कौङ्गै शॅम्बॊन्जॅय् कुलिहच् चॅप्पु
पारवळ् पादन् दीण्डप् पाक्कियम् बडैत्त दम्मा
पेरवळ् शीद यॅन्ऱु वडिवॅलाम् बेशलुऱ्ऱाळ् 621

अवळ् आर्–वह कौन; ॲन्ऱतल् ओट्टुम्–पूछने पर; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; ऐया–महिमावान; वाळि–जिओ; अवळ् अल्कुल् तेर्–उसका कटि-प्रदेश रथ ही है; कौङ्कै–स्तन; चॅम् पौन् चॅय्–लाल स्वर्ण की बनी; कुलिक चॅप्पु–इंगुरौटियाँ हैं; पार्–भूमि ने; अवळ् पातम् तीण्ट–उसके चरण-स्पर्श का; पाक्कियम् पटैत्ततु–बड़ा भाग्य पाया है; अम्मा–मैया; अवळ् पेर् चीतै–उसका नाम सीता है; ॲन्ऱु–कहकर; वटिवु ॲलाम्–सारा रूप; पेचल् उऱ्ऱाळ्–वर्णन करने लगी। ६२१

रावण ने पूछा कि वह कौन स्त्री है? तुरन्त शूर्पणखा ने कहा। महिमावान! जिओ! क्या कहूँ? उसका कटिप्रदेश रथ है! स्तन स्वर्ण-निर्मित इंगुरौटियाँ हैं। भूमि ने बड़ा पुण्य किया है, तभी वह उसके चरणों को स्पर्श कर सकी है। मैया! उसका नाम सीता है। वह उत्साह के साथ उनके रूप का वर्णन करने लगी। ६२१

कामरम् बळुत्त पाडऱ् कळ्ळॅनक् कनिन्द शॅञ्जॊऱ्
तेमलर् शॅऱिन्द कून्दऱ् ऱेवर्क्कु मणङ्गा मॅन्नत्
तामरै यिरुन्द नङ्गै शेडियान् दरमु मल्लळ्
यामुरै वळङ्ग लॅन्ब देळैमैप् पाल दन्ऱे 622

पळुत्त कामरम् पाटल्–पूर्णसिद्ध 'कामर' राग के; कळ् ॲन्न कनिन्त–मधु के समान मधुर; चॅम् चौल्–सुन्दर बोली वाली; ते मलर्–शहद-भरे पुष्पों से; चॅऱिन्त कून्तल्–घने केश-भूषित; तेवर्क्कु अणङ्काम्–देवबाला-सी उसकी; तामरै इरुन्त नङ्कै–कमलनिवासिनी लक्ष्मी; चेटि आम् तरमुम् अल्लळ्–चेरी भी बनने योग्य नहीं; याम् उरै वळङ्कल्–हम (प्रशंसा का) वचन कहें; ॲन्पतु–यह; एळैमै पालतु–अज्ञता होगा। ६२२

(कामर एक राग है।) पूर्ण-सिद्ध कामर राग के समान मधुरबयनी है वह। केश पर शहदसहित फूल शोभित हैं। देवांगना-सी उस (सुन्दरी) की, कमला श्रीदेवी दासी बनने भी योग्य नही है। उसका वर्णन करने का प्रयास करना बुद्धिहीनता ही होगा। ६२२

मञ्जॊक्कु मळह वोदि मळैयॊक्कुम् वडिन्द कून्दल्
पञ्जॊक्कु मडिहळ् शॅय्य पवळत्तिन् विरल्ह ळैय
अञ्जॊऱ्क ळमुदि नळ्ळिक् कौण्डवळ् वदन मैदीर्
कञ्जत्तिऱ् कौण्ड देनुङ् गडलिनुम् बॅरिय कण्गळ् 623

ऐय–महिमायुक्त; अम् चौऱ्कळ्–सुन्दर बोली को; अमुतिल् अळ्ळि कौण्टवळ्–अमृत से उठा ली है, उसका; अळक ओति–भाल पर का छल्लेदार केश; मञ्चु

ऑक्कुम्–मेघ की समानता करता है; वटिन्त कून्तल्–लटकता केश; मऴै ऑक्कुम्–जल-भरे घन की तुलना करता है; अटिकळ्–उसके चरण; पञ्चु ऑक्कुम्–रुई की भाँति हैं; विरल्कळ् चॅय्य पवळ्त्तिन्–लाल प्रवाल की (-सी) हैं; वतनम्–आनन; मै तीर्–निष्कलंक; कञ्चत्तिल् कॉण्टतेनुम्–कमल से प्राप्त है तो भी; कण्कळ्–उसकी आँखें; कटलितुम् पॅरिय–समुद्र से भी विशाल हैं। ६२३

महिमायुक्त भाई! उसने अपनी बोली अमृत से उठा ली है। सामने का केश मेघ-सा और लटकनेवाली वेणी वर्षक घन-सी है। उसके चरण रुई के समान (कोमल) है। पैर की उँगलियाँ लाल प्रवाल की बनी-सी हैं। आनन रूपी निष्कलंक कमल पर जो आँखें हैं, वे कमल से ली गयी हैं; तो भी समुद्र से भी बड़ी हैं। ६२३

ईशनार् कण्णित् वॅन्दा नॅन्नुमि दिऴ्दॅच् चॉल्लिव्
वाशना ड्रोदि याळैक् कण्डनन् वव्व लाड्रान्
पेशलान् दहैमैत् तल्लाप् पॅरुम्बिणि पिणिप्प नीण्ड
आशैया लऴिन्दु वॅन्दा ननङ्गनव् वुरुव मम्मा 624

अनङ्कन्–अनंग; ईचतार् कण्णित् वॅन्तान्–ईश्वर (शिव) की (भाल की) आँख से जला; अॅन्नुम् इतु–कही जानेवाली यह बात; इऴ्तं चॉल्–अल्पज्ञ कथन है; इ वाचम् नाऱ ओतियाळै–इस सुवासित केश वाली को; कण्टतन्–देखकर; वव्वल् आऱ्ऱान्–ग्रसने की शक्ति से हीन होने के कारण; पेचल् आम् तकैत्तु अल्ला–अवर्ण्य; पॅरुम् पिणि पिणिप्प–बड़े (काम-) रोग से पीड़ित होकर; नीण्ट आचैयाल्–लम्बी बढ़ी उस इच्छा से; अ उरुवम्–वह रूप; अऴिन्तु–गला; तेय्न्तान्–वह मिटा; अम्मा–मैया री। ६२४

मन्मथ परमेश्वर से भाल-नेत्र की आग से जल गया —यह कथन असत्य है। असल में हुआ दूसरा है। उसने इस सुवासित केशिनी को देखा। उसके मन में अपार राग पैदा हुआ। वह उसे ले जा नहीं सका। अकथ्य काम-रोग ने उसे सताया। धीरे-धीरे छीजकर उसका रूप मिट गया। माँ, उतनी सुन्दर है वह!। ६२४

तॅव्वुल हत्तुङ् गाण्डि शिरत्तिनिऱ् पणत्ति नोऱ्हळ्
अव्वुल हत्तुङ् गाण्डि यलैहड लुलहिऱ् काण्डि
वॅव्वुलै युड्र वेलै वाळिनै वॅन्ऱ कण्णाळ्
ॲव्वुल हत्ता ळङ्गम् यावर्क्कु मॅळ्दी णादाळ् 625

वॅम् उलै उड्र–गरम भट्ठी में ताप कर बनाये गये; वेलै वाळितै–भाले और असि को; वॅन्ऱ–जो जीत चुकी है; कण्णाळ्–ऐसी आँखों से शोभित है; तॅव् उलकत्तुम्–देवों के लोकों में भी; काण्टि–खोजो; चिरत्तितिल् पणत्तितोर्कळ्–सिर पर (जिनके) फन हैं, उन; अ उलकत्तुम्–(नागों के) उस (नाग-)लोक में भी; काण्टि–खोजो; अलै कटल् उलकिल् काण्टि–तरंग-भरे समुद्र से वलयित भूतल में

ओजो; अङ्कम् यावर्क्कुम् ॲळ्ुत ऑणाताळ्‌–ऐसे अंगों से युक्त है, जिनका कोई चित्रण नहीं कर सकता; ॲव्वुलकत्ताळ्‌–किस लोक की है। ६२५

उसकी आँखों ने उस भाले और असि को अपनी कान्ति और तीक्ष्णता में हराया है, जो भट्ठी की आग में तपाकर बनाया गया था। तुम चाहे सुरलोक में ढूँढ़ो; चाहे फणी नागों के लोक में। तरंगायमान समुद्र से वलयित भूलोक में ही क्यों न ढूँढ़ो। उसके समान स्त्री नहीं मिलेगी। उसके अंगों का चित्रण ही किसी के लिए असम्भव है! फिर वह किस लोक की होगी? नहीं जानते। ६२५

※ तोळॆये शॊल्लु हेन्तो शुडर्मुहत् तुलवु हिन्ऱ
वाळॆये शॊल्लु हेन्तो वल्लवै वळुत्तु हेन्तो
मीळवुन् दिहैप्प दल्लाऱ् ऱनित्तनि विळम्ब लाऱ्ऱेन्
नाळॆये काण्डि यन्ऱे नानुन्क् कुरैप्प दॆन्तो 626

तोळॆये चॊल्लुकेत्तो–भुजाएँ ही कहूँ; चुटर् मुकत्तु–प्रकाशमय मुख में; उलवुकिन्ऱ–चलित रहनेवाली; वाळॆये चॊल्लुकेत्तो–तलवारें (आँखें) ही बखानूँ; वल् अवै–गोटियाँ (स्तन) उनको; वळुत्तुकेत्तो–बताऊँ; मीळवुम् तिकैप्पतु अल्लाल्–फिर-फिर चक्कर खाने के सिवाय; तनि तनि–अलग-अलग; विळम्पल् आऱ्ऱेन्–कह नहीं सकूँगी; नाळॆये काण्टि अन्ऱे–कल तुम ही देख लो न; नान् उनक्कु उरैप्पतु ॲन्तो–मैं तुमको बताऊँ क्या। ६२६

हा! क्या मैं उसकी भुजाओं को कहूँ? या उज्ज्वल मुख में जो चंचल आँखें हैं, उन तलवारों का वर्णन करूँ? गोटी के समान उन स्तनों को कहूँ? (वल्+अवै का यह अर्थ होगा; अल+अवै शब्द लिये जायँ तो 'अन्य अंगों को कहूँ?' होगा।) किस अंग का वर्णन कर सकूँगी। कोई भी अंग लूँ तो फिर-फिर चक्रित होकर रुक जाना पड़ेगा। अलग-अलग किसी का उचित वर्णन नहीं कर पाऊँगी। तुम तो कल ही उसे देख लोगे न? फिर मैं क्या कहूँ तुमसे?। ६२६

※ विल्लॊक्कु नुदलॆन् ऱालुम् वेलॊक्कुम् विळियॆन् ऱालुम्
पल्लॊक्कु मुत्तॆन् ऱालुम् बवळत्तै यिदळॆन् ऱालुम्
शॊल्लॊक्कुम् बॊरुळॊव् वादाऱ् चॊल्लला मुवमै युण्डो
नॆल्लॊक्कुम् बुल्लॆन् ऱालुम् नेरुरैत् ताह वऱ्ऱो 627

नुतल् विल् ऑक्कुम्–उसका भाल धनु की समता करेगा; ॲन्ऱालुम्–कहें तो भी; विळि–आँखें; वेल् ऑक्कुम्–भाले की समता करेंगी; ॲन्ऱालुम्–कहें तो भी; पल् मुत्तु ऑक्कुम् ॲन्ऱालुम्–दाँत मोती के समान हैं, कहने पर भी; पवळत्तै इतळ् ॲन्ऱालुम्–प्रवाल को अधर कहें तो भी; चॊल् ऑक्कुम्–कहने भर के लिए ही समानता होगी; पॊरुळ् ऑव्वातु आल्–पदार्थ देखने पर समानता नहीं पाई जायगी; आल्–इसलिए; चॊल्लल् आम् उवमै उण्टो–कहने के लिए कोई उपमा है क्या;

नॅल् ऑक्कुम् पुल्–धान घास-सा है; ऍन्ड्रालुम्–कहें तो भी; नेर् उरॅत्तु आक वऱ्ऱो–सही बात कही गई क्या। ६२७

भाल धनु के समान है; आँखें भालों के समान, मोती दाँत के समान। ऐसा कहा जा सकता है। प्रवाल को उसका अधर कह सकते हैं। तो भी वह क्या सही रूप में उपमा कहना बन सकेगा? केवल शाब्दिक उपमा होगी। तत्त्वतः उपमा ठीक नहीं उतरेगी। उसके अंगों से उपमेय वस्तुएँ हैं कहाँ? कहने को तो कह सकते हैं कि धान घास है! पर क्या वह सही अर्थ में सार्थक हो सकता है?। ६२७

इन्दिरन् शशियॆप् पॆऱ्ऱा निरुमूऩ्ऱु वदऩत् तोन्ऱन्
तन्दैयु मुमैयॆप् पॆऱ्ऱान् ऱामरैच् चॆङ्गण् मालुम्
शॆन्दिरु महळॆप् पॆऱ्ऱान् शीदैयॆ नीयुम् पॆऱ्ऱाय्
अन्दरम् वार्क्कि नन्मै यवर्क्किल्लै युन्क्के यॆया 628

ऐया–महिमावान; इन्तिरन् चचियै पॆऱ्ऱान्–इन्द्र ने शची को पाया; इरु मून्ऱु वतनत्तोन् तन्–(दो के तीन = छः) षण्मुख के; तन्तॆयुम्–पिता (शिवजी) को; उमैयॆ पॆऱ्ऱान्–उमादेवी प्राप्त हुई; तामरै चॆम् कणात्तुम्–कमलाक्ष ने भी; चॆम् तिरु मकळॆ–गोरी श्रीदेवी को; पॆऱ्ऱान्–प्राप्त किया; नीयुम्–तुमने भी; चीतॆयॆ पॆऱ्ऱाय्–सीता को प्राप्त किया; अन्तरम् पार्क्किन्–अन्तर देखा जाय तो; अवर्क्कु नन्मै इल्लै–सौभाग्य उनका नहीं है; उनक्के–तुम्हारा ही। ६२८

(शूर्पणखा रावण के मन में सीता-प्रेम जाग्रत् करती है।) इन्द्र को शचीदेवी प्राप्त हुई। षण्मुख के पिता ने उमा को प्राप्त किया। कमलाक्ष विष्णु को कमला मिली। तुम्हें सीता मिल गयी। पर अन्तर देखने पर उन सबका भाग्य उतना खरा नहीं। तुम्हारा ही सर्वश्रेष्ठ होगा। तुम्हारा भाग्य ही श्लाघनीय है। ६२८

❀ पाहत्ति लॊरुवन् वैत्तान् पङ्गयत् तिरुन्द पॊन्नै
आहत्ति लॊरुवन् वैत्ता नन्दण नाविन् वैत्तान्
मेहत्तिन् मिन्नै मुन्ने वॆन्ऱनुण् णिडैयि नाळै
माहत्तोळ् वीर पॆऱ्ऱा लॆङ्ङनम् वैत्तु वाळ्दि 629

पाकत्तिल् ऑरुवन् वैत्तान्–एक ने अपने बायें भाग में रख लिया (शिव की पार्वती अर्धांगिनी बनी); पङ्कयत्तु इरुन्त पॊन्नै–कमला श्री को; ऑरुवन्–(त्रिदेवों में) एक (विष्णु) ने; आकत्तिल् वैत्तान्–वक्ष में रख लिया; अन्तणन्–ब्राह्मण (ब्रह्मा) ने; नाविल् वैत्तान्–जीभ में रख लिया; माक तोळ् वीर–आकाश तक उन्नत कन्धे वाले वीर; मेकत्तिन् मिन्नै–मेघ की बिजली को; मुन्ने वॆन्ऱ–जिसने पहले ही हरा दिया; नुण् इटैयिनाळै–उस क्षीण कटि-भूषित सीता को; पॆऱ्ऱाल्–पाओगे तो; ऍङ्ङनम्–कहाँ; वैत्तु वाळति–रखकर जीवन चलाओगे। ६२९

हाँ! आकाश तक उन्नत कन्धों वाले वीर भाई! त्रिदेवों में एक, शिव

ने उमा को अपने शरीर के वाम भाग में स्थान दिया। दूसरे (विष्णु) ने कमला श्रीदेवी को अपने वक्ष में रख लिया। तीसरे, ब्राह्मणोत्तम (ब्रह्मा) ने सरस्वती को अपनी जीभ में स्थान दे दिया। सीता बड़ी सुन्दरी है। उसकी कमर ने मेघ की बिजली को हरा दिया है। उस सीता को प्राप्त करके तुम कहाँ स्थान देकर उसके साथ जीवन बिताओगे ? । ६२९

❀ पिळ्ळैपोऱ् पेशुवाळैप् पॆऱ्ऱपिन् पिळैक्क लाऱ्ऱाय्
कॊळ्ळैमा निदियमॆल्ला मवळुक्के कॊडुत्ति यैय
वळ्ळले युनक्कु नल्लेन् मऱ्ऱुनिन् मनैयिन् वाळुम्
किळ्ळैबोन् मॊऴियाऱ्क् केल्लाङ् गेडुशूऴ् हिन्ऱे नन्ऱे 630

ऐया–महिमावान; वळ्ळले–दानी; पिळैक्कल् आऱ्ऱाय्–अचूक परिश्रमी; पिळ्ळै पोल् पेच्चिताळै–सारिका की-सी बोली वाली को; पॆऱ्ऱपिन्–पाने के बाद; कॊळ्ळै पोकिन्ऱ चॆल्वम्–लूटी जानेवाली अपनी सम्पत्ति को; अवळुक्के कॊटुत्ति–उसी को दे दो; उनक्कु नल्लेन्–तुम्हारी हित् हूँ; उन् मनैयिल् वाळुम्–तुम्हारे महल में रहनेवाली; किळ्ळै पोल्–शुक-सम; मॊऴियाऱ्क्कु ऍल्लाम्–बोलनेवाली सभी (स्त्रियों) को; केटु चूऴ्किन्ऱेन् अन्ऱे–अहित करती हूँ न। ६३०

महिमावान ! यह सर्वविदित है कि तुम्हारे प्रयत्न कभी असफल नहीं होते। सीता तुम्हारी हो जायगी। सारिका-वाणी को लाने के बाद तुम अपनी सारी सौभाग्यश्री को, जिसे अब तुम्हारी अन्य प्रियाएँ लूट रही हैं, उसे दे दो। देखो मैं तुम्हारा हित कर रही हूँ। पर तुम्हारे महल में तुम्हारी कृपा का पात्र बनी जो स्त्रियाँ रहती है, उनको कष्ट दिला रही हूँ न ? । ६३०

❀ तेर्तनद वल्हुर् चीदै तेवरद मुलहि लिम्बर्
वार्तनद मुलैयि नार्दम् वयिऱ्ऱन् दाळु मल्लळ्
तार्तनद कमलत् ताळैत् तरुक्किनर् कडैयच् चङ्ग
नीर्तनद ददनै वॆल्वा निलन्दनदु निमिर्नद दन्ऱे 431

तेर् तन्त अल्कुल्–रथ-समान जघन वाली; चीतै–सीता; तेवर् तम् उलकिल्–देवों के लोक में; इम्पर्–इहलोक में; वार् तन्त कॊङ्कैयार् तम्–अँगिया-बद्ध उरोजो से शोभित स्त्रियों की; वयिऱु तन्ताळुम् अल्लळ्–कोख से आई हुई नहीं है; चङ्क नीर्–शंखकीटों से युक्त क्षीरसागर को; तरुक्किनर् कटैय–गर्वीले (देवासुरों) के मथने पर; तार् तन्त कमलत्ताळै–कमलपुष्पमाला-धारिणी को; तन्ततु–(उसने) पैदा किया; अतनै वॆल्वान्–उसको हराने के लिए; निलम् तन्तु–भूमि इसे पैदा करके; निमिर्न्ततु–उत्कृष्ट हुई। ६३१

रथ के समान नितम्बयुक्त सीता स्वर्ग या भूलोक की किसी अँगिया-बद्ध उरोजों के साथ शोभनेवाली स्त्री के पेट से पैदा हुई नहीं है। शंखों से भरे क्षीरसागर ने, बलवान देवासुरों से मथने पर कमलमालाधारिणी

श्रीलक्ष्मीदेवी को उत्पन्न किया। उस क्षीरसागर को नीचा दिखाने के लिए भूमि इसको उत्पन्न करके तर्जीह (श्रेष्ठता) पा गयी। ६३१

❀ मीऩ्गॊण्ड कॊडि यिऩाऱ्कु विऴावयर्न् दुलहॆ मेत्तत्
तेऩ्गॊण्ड नॆऱिमॆन् कूऩ्दऱ् चिऱ्ऱिडैच् चीदैयॆऩ्ऩुम्
माऩ्गॊण्डुण् डाडु नीयुन् वाळ्वलि युलहङ् गाण
याऩ्गॊण्डू डाडुम् वण्ण मिरामऩैत् तरुदि यॆऩ्बाल् 632

मीन् कॊण्ट कॊटियितार्क्कु–मत्स्य की ध्वजा वाले (मन्मथ) का; उलकम् विऴा अयर्न्तु एत्त–लोक उत्सव मनाकर उसकी स्तुति करे; उन् वाळ् वलि उलकम् काण–तुम्हारी तलवार की शक्ति भुवन देखे; तेन् कॊण्ट–मधु-भरा; नॆऱि–घुंघराला; मॆन् कून्तल्–कोमल केश; चिऱ् इटै–पतली कमर; चीतै ऎन्नुम्–(इनसे युक्त) सीता नाम की; मान्–हरिणी (-सी सीता) को; नी कॊण्टु–तुम लाकर; उण्टाटु–उसके साथ केलि करो; यान् कॊण्टु ऊटाटुम् वण्णम्–मैं लेकर खेलूं; ऎन्पाल् इरामनै तरुति–मेरे पास राम को दिला दो। ६३२

तुम मकरकेतन का उत्सव और स्तुति लोक द्वारा कराते हुए और अपनी असि का पराक्रम दिखाते हुए उस सीता को हर ले आओ। उसका केश मधुमिश्रित घुंघुराला और कोमल है। कमर पतली है और वह हरिणी-सी है। उसको लाकर तुम उसके साथ केलि करो और मुझे लेकर खेलने के लिए उस राम को मुझे दिला दो। ६३२

❀ तरुवदु विदियेयॆऩ्ऱाऱ् ऱवम्बॆरि दुडैय रेऩुम्
वरुवदु वरुना ळऩ्ऱि वऩ्दुकै कूड वऱ्ऱो
ऒरुबदु मुहमु माऱ्बु मुरुवमुङ् गण्णुन् दोळ्हळ्
इरुबदुम् बडैत्त शॆल्व मॆय्दुव दिनिन्नी यॆऩ्ऱाळ् 633

तरुवतु वितियॆ–(भलाई) देनेवाली विधि ही है; ऎन्ऱाल्–कहा जाय तो; तवम् पॆरितु उटैयरेनुम्–बड़ा तपस्वी हो तो भी; वरुवतु–होनी; वरुम् नाळ् अन्ऱि–होने का काल छोड़कर; वन्तु कै कूट वऱ्ऱो–आ मिल सकनेवाली है क्या; ऒरु पतु मुकमुम्–दस मुख; मार्पुम्–वक्ष; कण्णुम् तोळ्कळ् इरुपतुम्–और बीस-बीस आँखें और कन्धे; उरुवमुम्–इनसे युक्त शरीर; पटैत्त चॆल्वम्–(और तुम्हारा) प्राप्त धन; नी ऎय्वतु–तुम सच्चे अर्थ में पाओगे (उसका भोग करोगे); इनि–(सीता-प्राप्ति पर) आगे ही; ऎन्ऱाळ्–कहा। ६३३

विधि ही भला देनेवाली है। तो भी बड़े तपस्वी को भी तभी कुछ प्राप्त होता है, जब उचित काल आकर मिलता है। तुम्हारे दस सिर हैं, दस वक्ष और वीस नेत्र और कन्धे। तुम्हारे पास असीम सम्पत्ति है। तो भी उनके भोग का अब तक समय नहीं आया है। सीता की प्राप्ति के बाद ही वह काल आयगा। — यह सब कहकर शूर्पणखा ने रावण के मन में सीता के प्रति काम को पैदा करके उभारा। ६३३

❀ अन्नव डन्नै युन्बा लुयप्पदन् ऱणुह लुऱ्ऱ
ॲन्नैयव् विरामन् ऱम्बि यिडैबुहुन् दिलङ्गु वाळाल्
मुन्नैमूक् करिन्दु विट्टान् मुडिन्ददॅन् वाळ्वु मुन्निन्
शॊन्नपि न्नुयिरै नीप्पान् ऱुणिन्दनॅ नॅन्नच् चॊन्नाळ् 634

अन्नवळ् तन्नै–ऐसी सीता को; उन् पाल् उय्प्पतु ॲन्नुऱ–तुम्हारे पास पहुँचाने का विचार करके; अणुकल् उऱ्ऱ–समीप (जो) गई; ॲन्नै–मुझे; अ इरामन् तम्पि–उस राम के छोटे भाई ने; इटै पुकुन्तु–बीच में घुसकर; इलङ्कु वाळाल्–(अपने पास रहे) कटार से; मुन्नै–(सीता को पकड़ने से) पहले ही; मूक्कु अरिन्तु विट्टान्–मेरी नाक काट दी; ॲन् वाळ्वुम् मुटिन्ततु–मेरा जीवन भी (व्यर्थ) गया; उन्निल् चॊन्न पिन्–तुमसे कहने के बाद; उयिरै नीप्पान्–प्राण छोड़ने का; तुणिन्तनॅन्–निश्चय किया; ॲन्न चॊन्नाळ्–ऐसा कहा। ६३४

आगे कहा कि भाई ! ऐसी सीता को तुम्हारे पास ले आने का निश्चय करके मैं उसके समीप जाने लगी। तभी उस राम के छोटे भाई ने बीच में घुसकर अपने पास रहे खड्ग से मेरी नासिका काट दी। मेरा जीवन उसके साथ गया, समझ लिया। पर तुम्हारे पास आकर यह कहने के बाद प्राण त्याग दूँगी —यही विचार ले इधर आयी हूँ। ६३४

कोबमु मऱनु मानक् कॊदिप्पुमॅन् ऱिनैय वॅल्लाम्
पाबनिन् ऱिडत्ति निल्लाप् पॅऱ्ऱिबोऱ् पऱ्ऱ विट्ट
तीबमॊन् ऱॊन्ऱै युऱ्ऱा लॅन्नलाम् जॅयलिऱ् पुक्क
ताबमु नाणु मॊन्ऱा युयिरॊडुन् दळीइय वन्ऱे 635

कोपमुम्–क्रोध; मऱमुम्–और वीरता; मान कॊतिप्पुम्–अपमानजनित ताप; ॲन्ऱ–आदि; इनैय ॲल्लाम्–ऐसे सभी भाव; पापम् निन्ऱिटत्तु–पाप के स्थान पर; निल्ला पॅऱ्ऱि पोल्–जो रह नहीं सकता, उस पुण्य-भाग के समान; पऱ्ऱ विट्ट–रावण का साथ छोड़ गये; तीपम् ऒन्ऱु ऒन्ऱै उऱ्ऱाल्–एक दीये से दूसरा दिया लगा तो; ॲन्नतल् आम् चॅयलिल्–जो होगा ऐसी रीति से; तापमुम्–ताप; काम नोयुम्–और कामरोग; उयिरॊटु तळीय–रावण के प्राणों से मिले और बढ़े। ६३५

यह सुनने पर रावण की विचित्र दशा हो गयी। पुरुषोचित क्रोध, वीरोचित साहस, अपमानजनित सन्ताप —सभी भाव ऐसे भाग गये जैसे पाप जहाँ है वहाँ से पुण्य का सुखसौभाग्य भाग जाता है। एक से एक दीप मिल जाने पर जैसा फल होगा, उसके समान उसके प्राणों में राग का ज्वर और कामरोग मिल गये। ६३५

❀ करनैयु मऱन्दान् ऱङ्गै मूक्किनैक् कडिन्दु निन्ऱार्
उरनैयु मऱन्दा नुऱ्ऱ पळियैयु मऱन्दान् वॅऱ्ऱि
अरनैयुङ् गॊण्ड काम नम्बिनान् मुन्नबु पॆऱ्ऱ
वरनैयु मऱन्दान् केट्ट मङ्गैयै मऱन्दि लादान् 636

अरत्तैयुम् वॅऱ्ऱि कॉण्ट—हर को हरानेवाले; कामन् अम्पिताल्—काम-बाण से; केट्ट मङ्कैयै—सुनी हुई (सीता) देवी को; मऱन्तिलातान्—जो नहीं भूला; करनैयुम् मऱन्तान्—(वह) खर को भूला; तङ्कै—अनुजा की; मूक्किनै—नाक को; कटिन्तु—काटकर; निन्ऱार्—जो बचे रहते है, उनका; उरत्तैयुम् मऱन्तान्—बल भूला; उऱ्ऱ पऴियैयुम्—प्राप्त अपयश; मऱन्तान्—भूला; मुन्नै पॅऱ्ऱ—पहले (ब्रह्मा, शिव आदि से) प्राप्त; वरत्तैयुम् मऱन्तान्—वरों को भूल गया। ६३६

रावण हरविजयी था। पर काम का बाण बली था। उससे आहत वह देवी सीता को, जिसके सम्बन्ध में शूर्पणखा से सुना भर था, भूल नहीं सका। पर खर मरा —यह भूल गया; छोटी बहिन की नाक कटी है —यह भी भूल गया। राम का बल भी स्मरण नहीं रहा। अपने पर लगा अपयश, ब्रह्मा, शिव आदि द्वारा दत्त वर —सभी भूल गया, रावण। ६३६

शिऱ्ऱिडैच् चीदै यॅन्नु नाममुम् जिन्दै तानुम्
उऱ्ऱिरण् डॊन्ऱाय् निन्ऱा लॊन्ऱॊऴित् तॊन्ऱै युन्न
मऱ्ऱॊरु मनमु मुण्डो मरक्कलाम् वऴिमऱ् ऱियादो
कऱ्ऱऱि ञान मिन्ऱेऱ् कामत्तैक् कडक्क लामो 637

चिऱु इटै चीतै—क्षीण-कटि सीता; ॲन्नुम् नाममुम्—का नाम और; चिन्तै तानुम्—उसका मन; इरण्टुम्—दोनों; ऑन्ऱाय् उऱ्ऱु निन्ऱाल्—एक साथ मिले रहे तो; ऑन्ऱु ऑऴिन्तु—एक को छोड़कर; ऑन्ऱै उन्न—(दूसरे) एक को सोचने के लिए; मऱ्ऱु ऑरु मनमुम् उण्टो—(दूसरा) एक मन है क्या; मऱक्कल् आम् वऴि—भूलने का मार्ग; मऱ्ऱुम्—और कोई; यातो—कौन सा है; कऱ्ऱु अऱि ञानम् इन्ऱेल्—सीखकर प्राप्त ज्ञान नहीं हो तो; कामत्तै कटक्कल् आमो—काम को जीतना हो सकता है क्या। ६३७

रावण का मन और पतली कमर की सीता का नाम दोनों बहुत ही प्रबल रूप से जुड़ गये। फिर एक से रहित दूसरे का अस्तित्व असम्भव हो गया। फिर दूसरा अलग एक मन भी नहीं था, जो उनमें एक को छोड़ दूसरा स्मरण करे। भूलने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं रहा। शास्त्र पढ़कर उसके उपदेशों के कार्यान्वित अभ्यास द्वारा प्राप्त (अमली) ज्ञान जिसमें नहीं है, वह काम पर विजय पा कैसे सकेगा ? । ६३७

मयिलुडैच् चाय लाळै वञ्जिया मुन्न नीण्ड
ऍयिलुडै यिलङ्गै वेन्द निदयमाञ् जिऱैयि लिट्टान्
आयिलुडै यरक्क नुळ्ळ मव्वऴि मॅल्ल मॅल्ल
वॆयिलुडै नाळि लुऱ्ऱ वॆण्णॆय्पोल् वॆदुम्बिऱ् ऱन्ऱे 638

नीण्ट ऍयिल् उटै—लम्बे प्राचीरों से आवृत; इलङ्कै वेन्तन्—लंका के राजा ने; मयिल् उटै चायलाळै—मयूरनिभ सीता को; वञ्चिया मुन्नम्—प्रवंचना से लाने से पहले

ही; इतयम् आम् चिरैयिल्–हृदय रूपी कारा में; इट्टान्–बन्द कर दिया; अयिल् उटै–भालाधारी; अरक्कन् उळ्ळम्–राक्षस का मन; अ वळि–तब; वॅयिल् उटै नाळिल्–धूप-तप्त दिन में; उट्ट–धूप में रखे; वॅण्णॅय् पोल्–मक्खन के समान; मॅल्ल मॅल्ल–धीरे-धीरे; वॅतुम्पिट्रु–गरम होकर पिघला। ६३८

प्राचीरों से आवृत लंका के राजा रावण ने मयूराभा सीताजी को वंचना द्वारा हर लाने के पूर्व ही अपने हृदय की कारा में कैद कर रख लिया ! भालाधारी राक्षस का हृदय तब गरम दिन में आतपदग्ध मक्खन के समान धीरे-धीरे पसीजने लगा । ६३८

विदियदु वलियि नालु मेलुळ विळैवि नालुम्
पदियुरु केडु वन्दु कुरुहिय बयत्ति नालुम्
कदियुरु पीरियिन् वॅय्य कामनोय् कल्वि नोक्का
मदियिलि मरैयच् चॅय्द तीमैबोल् वळर्न्द दन्रे 639

वितियतु वलियित्तालुम्–विधि के बल से और; मेल् उळ–आगे की; विळैवित्तालुम्–होनी के निमित्त; पति उरु केटु–और लंका नगर पर जो आना था, वह कष्ट; कुरुकिय पयत्तित्तालुम्–निकट आ गया, उस भावी के फल के कारण; कति उरु पोरियिल्–गतियुक्त यन्त्र के समान; वॅय्य काम नोय्–पीड़क कामरोग; कल्वि नोक्का–विद्याविहीन; मति इलि–बुद्धि-रहित किसी का; मरैय चॅय्त–छिपाकर किया; तीमै पोल्–बुरा काम-सा; वळर्न्ततु–बढ़ा; (अन्रु–ए) । ६३९

विधि प्रबल थी । होनी होनेवाली थी । लंका पर विनाश लाने का समय निकट आ गया था । इसलिए गतियुक्त यन्त्र के समान भयंकर कामरोग राक्षस के शरीर भर मे, विद्यावंचित बुद्धिहीन आदमी से किये गये अनर्थ के समान, व्याप्त हो गया । ६३९

पॊन्मय मान नङ्गै मनम्बुहप् पुन्मै पूण्ड
तन्मैयो वरक्कन् रन्नै ययर्त्तदोर् तहैमै यालो
मन्मदन् वाळि तूवि नलिवदोर् वलत्त नानान्
वन्मैयै मारुरु मारुरल् कामत्ते वदिन्द दन्रे 640

पॊन् मयम् आन–स्वर्णमय (आभा से) शोभायमान; नङ्कै–नायिका के; मनम् पुक–मन में प्रवेश के कारण; पुन्मै पूण्ट तन्मैयो–(रावण) वलहीनता पा गया था, या; तन्नै अयर्त्ततु ओर्–अपने को भूले रहने की; तकैमैयालो–एक स्थिति रही, इस वजह से; अरक्कन् तन्नै–राक्षस को; मन्मतन्–मनोज; वाळि तूवि–पुष्प-शर वरसाकर; नलिवतु–त्रस्त कर देनेवाला; ओर वलत्तन् आनान्–एक बली बन गया; वन्मैयै मारुरुम् आट्रल्–बल को वृथा करने की शक्ति; कामत्ते–काम में; वतिन्ततु अन्रे–रही न । ६४०

स्वर्णमय देवी के रावण के मन में प्रविष्ट होने से रावण दुर्बल हो

गया ? या वह अपने को भूले रहा ? अब राक्षस को मन्मथ अपने पुष्प-शरों से आहत करने में समर्थ हो गया ! हाँ ! बल को बेकार करने की शक्ति कामेच्छा में निहित रहती है न ? । ६४०

इऴिन्दन त्तिरुक्कै निन्ऱाण् डेऴुल हत्तु ळोरुम्
मॊऴिन्दन राशि योशै मुऴङ्गिन शङ्ग मॆङ्गुम्
पॊऴिन्दनर् पूविन् मारि पोयिनर् पुऱत्तो रॆल्लाम्
अऴिन्दयर् शिन्दै योडु माडहक् कोयिल् पुक्कान् **641**

इरुक्कै निन्ऱु–आसन से; इऴिन्दनन्–उतरा; आण्डु–तब वहाँ; एऴ् उलकत्तोरुम्–सातों लोकवासी; आचि मॊऴिन्दनर्–आशीर्वचन बोले; चङ्कम् ऍङ्कुम्–शंख सर्वत्र; ओचै मुऴङ्कित–नाद कर उठे; पुऱत्तोर् ऍल्लाम्–पास रहे सभी; पूविन् मारि–पुष्पवर्षा; पॊऴिन्दनर्–करके; पोयिनर्–हटे; अऴिन्दु अयर्–शिथिल होकर मुरझानेवाले; चिन्तैयोटुम्–मन के साथ; आटक कोयिल्–स्वर्णमय भवन में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ । ६४१

रावण आसन से उतरा । तब जो सातों लोकों के लोग वहाँ थे, उन्होंने आशीर्वचन कहे । सब स्थानों पर शंख बज उठे । पास जो रहे उन्होंने पुष्पवर्षा की । वे हट गये । रावण खिन्न और श्रांतमन होकर स्वर्णनिर्मित अपने महल में प्रविष्ट हुआ । ६४१

पूविनाल् वेय्न्दु शॆय्द पॊङ्गुपे रमळिप् पॊऱ्पिन्
देविमार् वॆळ्ळ नीङ्गिच् चेर्न्दनन् शेर्द लोडुम्
नाविना ऱोदि नव्वि नयनमुन् नलनु नण्णिप्
पावियाक् कॊडुत्त वॆम्मै पयप्पयप् परन्द दन्ऱे **642**

तेविमार् वॆळ्ळम् नीक्कि–स्त्रियों की भीड़ त्यागकर; पूविनाल् वेय्न्तु चॆय्त–पुष्प छाकर निर्मित; पॊऱ्पिन्–सुन्दरता में; पॊङ्कु पेर् अमळि–अधिक उत्कृष्ट शय्या में; चेर्न्तनन्–गया; चेर्तलोटुम्–उसमें जाते ही; नावि नाऱु ओति–कस्तूरी की गन्ध से युक्त केशिनी की; नव्वि नयनमुम्–मृग की-सी आँखों; नलनुम्–और अन्य अंग-सौष्ठव ने; नण्णि–आकर; पाविया–भावना करने से; कॊटुत्त–जो दिया; वॆम्मै–वह ताप; पय पय–धीरे-धीरे; परन्ततु–(उसके शरीर भर में) व्याप्त हो गया । ६४२

पत्नियों की भीड़ का निवारण करके वह एक पुष्पशय्या पर लेटा । उस सुन्दर शय्या के ऊपर का वितान भी फूलों से सज्जित था । उस पर लेटते ही उसके मन ने कस्तूरी की सुगन्ध से भरे केश से युक्त सीतादेवी के मृग के-से नयन और अन्य अंगसौष्ठव की भावना की । उस भावना के कारण बड़ा ताप पैदा हुआ और वह धीरे-धीरे शरीर में व्यापकर पीड़ा देने लगा । ६४२

नूक्क लाह् लाद काद नूरु नूरु कोडियाय्प्
पूक्क वाश वाडै वीशु शीद नीर्बॊ दिन्दमॆन्
शेक्कै वीक रिन्दु तिक्क यङ्ग ळॆट्टुम् वॆन्ऱतोळ्
आक्कै तीय वुळ्ळ नैय वावि वेव दायिऩ्ऩान् 643

नूक्कल् आकलात–अनिवार्य; कातल्–कामेच्छा; नूरु नूरु कोटियाय्–शत-शत करोड़ गुना; पूक्क–विकसित हुई; वाटै वीचु–उदीची से आनेवाली; चीत नीर्–शीत जल से; पॊतिन्त–भरी; मॆन्न् चेक्कै–कोमल शय्या के; वाच वी–सुगन्धयुक्त पुष्प; करिन्तु–झुलस गये और; तिक्कु कयङ्कळ् ऍट्टुम्–आठों दिग्गजों को; वॆन्ऱ–जिन्होंने हराया था, वे; तोळ् आक्कै–कन्धे और शरीर; तीय–जल उठे; आवि वेवतु–प्राण मुरझाये; आयिऩ्ऩान्–ऐसी स्थिति का हो गया। ६४३

सीता पर उसकी कामेच्छा निवार्य नहीं लगी। वह शत-शत कोटि-कोटि गुना विकसित हुई। तब उसकी शय्या के सुबासित फूल सूखने लग गये, यद्यपि उसमें उदीची हवा द्वारा लायी गयी शीतल सीकरें खूब भरी थीं। और भी उसका शरीर और उसके कंधे भी, जिन्होंने आठों दिग्गजों को हराया था, जलने लगे। प्राण भी जलते-से लगे। ऐसी विकट स्थिति में पड़ गया रावण। ६४३

तादु कॊण्डु शीद मुञ्जु मन्दु तण्णॆ न्नदमॆन्
पोदु कॊण्ड डुत्त पोदु पॊङ्गु तीम रुन्दिऩ्ऩाल्
वेदु कॊण्ड दॆन्न मेऩि वॆन्दु शिन्द विम्मुदी
ऊदु वन्ऱु रुत्ति पोलु यिर्त्तु यिर्त्तु यङ्गिऩ्ऩान् 644

तातु कॊण्टु–मकरन्द लेकर; चीतमुम् चुमन्तु–शीतलता ढोते हुए; तण् ऍन्–शीतल; अन्त–उन; पोतु कॊण्टु–पुष्प लेकर; अटुत्त पोतु–(जब वह उदीची हवा) आई तब; पॊङ्कु ती मरुन्तिऩ्ऩाल्–भभकती आग रूपी दवा से; वेतु कॊण्टतु ऍन्न–सेंका गया, ऐसा; मेऩि वॆन्तु–शरीर गरम होकर; चिन्त–छितर जाय, ऐसा; विम्मु ती–बढ़नेवाली आग को; ऊतु–फूंकनेवाली; वन् तुरुत्ति पोल्–बलवान भाथी के समान; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–लम्बी साँसें छोड़ते-छोड़ते; उयङ्किऩ्ऩान्–श्लथ हुआ। ६४४

उदीची हवा मकरन्द, शीतल जल और कुसुमों को लेकर, स्वयं ठण्डी रहकर आयी। पर उससे भभकनेवाली ज्वाला से सेंका गया हो, ऐसा वह गरम साँसें छोड़ने लगा। वे साँसें धौंकनी की हवा के समान उसके शरीर को अंगारे छितरानेवाली आग के समान पीड़ा देने लगीं और वह छटपटाने लगा। ६४४

तावि यादु तीयॆ नादु तैयलाळै मॆय्युरप्
पावि याद पोदि लाद पावि माळै पाऩल्वेल्
कावि यात कण्णि मेऩि काण मूळु माशैयाल्
आवि शाल नॊन्दु नॊन्द ळङ्गु वानु सायिऩ्ऩान् 645

तावियातु–स्थिर न करके; ती अँतातु–(परदारा-प्रेम) अग्नि है, यह न सोचकर; तैयलाळै–देवी को; मॅय् उऱ–सचमुच; पावियात–नहीं स्मरण किया हो, ऐसा; पोतु इलात–जिसका समय नहीं रहा; पावि–वह पापी (रावण); माळै–आम; पातल्–कुवलय; वेल्–भाला; कावि–नीलोत्पल; आऩ–ऐसे; कण्णि–नेत्रों की; मेत्ति काण–(देवी का) रूप देखने के लिए; मूळुम्–बढ़नेवाली; आचैयाल्–लालसा से; आवि चाल नॊन्तु नॊन्तु–प्राणों के खूब पीड़ित होते-होते; अऴुङ्कुवातुम् आयिऩाऩ्–बहुत कष्ट उठाता रहा। ६४५

वह अपने मन को वश में न रख सका; न सीता को आग समझकर उनकी इच्छा करने से विरत हो सका। उस पापी के पास समय ही नहीं रहा, जब उसने सीताजी की भावना नहीं की! उसके मन में आम की फाँकें, कुवलय, भाला और नीलोत्पल —इनके समान जिनके नेत्र थे, उनका पूरा रूप देखने की दुर्दम लालसा उठी। वह बढ़ने लगी। उस कारण उसके प्राण बहुत कष्ट उठाने लगे। वह भी बहुत कष्ट में पड़ा। ६४५

परङ्गि डन्द मादि रञ्जु मन्द पाळि यात्तैयिन्
करङ्गि डन्द कॊम्बॊ डिन्द डङ्ग वॆन्ऱ कावलान्
मरङ्गु हैन्द तुम्बि पोल ऩङ्ग वाणम् वन्दुवन्
दुरङ्गु डैन्दु नॊन्दु नॊन्दु ळैन्दु ळैन्दॊ डुङ्गिनान् 646

परम् किटन्त मातिरम्–भारयुक्त दिशाओं के; चुमन्त–वाहक; पाळि यात्तैयिन्–मोटे (दिग्-) गजों की; करम् किटन्त–सूँड़ों के बाजू में रहे; कॊम्पु ऒटिन्तु–दाँत टूटकर; अटङ्क–(उसके) वक्ष में समा गये; वॆन्ऱ कावलान्–ऐसा विजयी राजा; अनङ्कपाणम्–अनंग-बाणों के; वन्तु वन्तु–आ-आकर; मरम् कुटैन्त–काठ को छेदनेवाले; तुम्पि पोल्–कीड़े (भ्रमर ?) के समान; उरम् कुटैन्तु–वक्ष को छेदने से; नॊन्तु नॊन्तु–वेदना सहते-सहते; उळैन्तु उळैन्तु–बहुत दर्द पाते-पाते; ऒटुङ्किऩाऩ्–शिथिल हो गया। ६४६

रावण बली वीर था। बोझीली दिशाओं के वाही दिग्गजों से जब उसने युद्ध किया था, तब उनके दाँत उसके कठोर वक्ष से टकराकर टूट गये और उसके वक्ष में ही रह गये। ऐसे राजा के वक्ष में अब मन्मथ के पुष्पशर घुसकर छेद बनाने लगे। काठ में जैसे कीड़ा छेद बना देता है, वैसा उन शरों ने उसके वक्ष को भेद डाला। रावण वेदना के मारे थक गया। ६४६

कॊन्ऱै तुऩ्ऱु कोदै योडॊर् कॊम्बु वन्दॆ तॆन्ऱिडै
निन्ऱ दुण्डु कण्ड वॆन्ऱु ळन्द ळुङ्गु नीर्मैयान्
मन्ऱ ऱङ्ग लङ्गल् मारन् वाळि पोल मल्लिहैत्
तॆन्ऱल् वन्दॆ दिर्न्द पोदु शीऱु वानु मायिनान् 647

कॊन्ऱै तुऩ्ऱु–अमलतास के फलों के समान; कोतै ऒटु–केश के साथ; ओर्

कोम्पु वन्तु–एक पुष्पशाखा आकर; **ॲन् नॆञ्चु इटै**–मेरे मन में; **निन्ऱतु**–रह गई; **कण्टतु उण्टु**–मैंने देखा; **ॲन्ऱु**–यह कहते हुए; **उळन्तु अळुङ्कु नीर्मैयान्**–दुखी होकर संकट उठानेवाला; **मन्ऱल् तङ्कु**–सुवास-निलय; **अलङ्कल् मारन्**–मालाधारी मन्मथ के; **वाळि पोल**–(पुष्प-) शरों के समान; **मल्लिकै तॆन्ऱल् वन्तु**–मल्लिका के बास के साथ मलयपवन आकर; **ॲतिर्न्त पोतु**–जब उस पर लगा, तब; **चीऱ्ऱवातुम् आयितान्**–कोप करनेवाला भी बना। ६४७

उसे ऐसा भान रहा कि अमलतास के फलों के समान काले केश के साथ एक पुष्पलता के समान सुन्दरी उसके दिल में आकर ठहर गयी। तब वह दुखी होकर क्लान्त रहा। पर जब मलयपवन मल्लिका के फूलों का बास ढोता हुआ मन्मथ के शरों के समान उस पर लगा तो उसने कोप दिखाया। ६४७

अन्न कालै यङ्गु निन्ऱॆ ळुन्द ळुङ्गु शिन्दैयान्
इन्न वाऱु शॅय्वॆ नॆन्ऱॊ रॆण्णि लानि रङ्गुवान्
पन्नु कोडि दीब मालै पालै याळ्प्प ळित्तशॊर्
पॊन्न नार्रॆ डुक्क वङ्गॊर् शोलै यूडु पोयिनान् 648

अन्न कालै–तब; **अळुङ्कु चिन्तैयान्**–क्लान्तमन; **अङ्कु निन्ऱु**–(रावण) वहाँ से; **ॲळुन्तु**–उठकर; **इन्न आऱु चॆय्वॆन्**–ऐसा करूँ; **ॲन्ऱु**–यह; **ओर् ॲण्**–किसी एक विचार; **इलान्**–के बिना; **इरङ्कुवान्**–दुखी रहा; **पालै याळ्**–'पालै' नाम की 'याळ्' (वीणा) के स्वर को; **पळित्त चॊल्**–परिहसित करनेवाली बोली वाली; **पॊन् अनार्**–स्वर्ण-सम सुन्दरियों के; **पन्नु**–प्रशंसित; **कोटि तीप मालै ॲटुक्क**–बहुसंख्यक दीप-माला लेते आते; **अङ्कु**–वहाँ; **ओर् चोलै ऊटु**–एक उद्यान में; **पोयिनान्**–गया। ६४८

तब रावण वहाँ से उठा। उसका मन बड़ा क्लेशपूर्ण था। उसे नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाय। उससे वह और भी उद्विग्न हुआ। तब वह पास के एक उद्यान में चला। उसके साथ 'पालै याळ्' नाम की वीणा के स्वर से भी मधुर बोली वाली सुन्दरियाँ बहुत बड़ी संख्या में दीप की मालाएँ लेते हुए चलीं। ६४८

माणिक्कम् पनशम् वाळै मरहदम् वयिरन् दॆमा
आणिप्पॊन् वेङ्गै कोङ्ग मरविन्द रागम् बूगम्
शेणुऱ्ऱ नीलम् जालङ् गुरुविन्दन् दॆङ्गु वॆळ्ळि
पाणित्तॆण् पळिङ्गु नाहम् पाटलम् पवळ मन्तो 649

पनचम्–पनस (कटहल); **माणिक्कम्**–माणिक्यमय हैं; **वाळै**–कदली; **मरकतम्**–मरकतमय; **तेमा वयिरम्**–मधुर आम हीरे से; **वेङ्कै**–'वेंगै' वृक्ष; **आणिप् पॊन्**–चोखे स्वर्णमय; **कोङ्कु**–'कोंगु' तरु; **अरविन्त राकम्**–पद्मराग; **चेण् उऱ्ऱ पूकम्**–गगनस्पर्शी पूगतरु; **नीलम्**–इन्द्रनील; **चालम्**–सालवृक्ष; **कुरुविन्तम्**–रत्नमय;

तॆङ्कु वॆळ्ळि—नारियल चाँदी के; नाकम्—सुरपुन्नाग; पाणि तॆळ् पळिङ्कु—जल स्वच्छ स्फटिक; पाटलम्—पाटल; पवळम्—प्रवाल। ६४८

उस उद्यान के पेड़ विचित्र थे। पनस माणिक्यमय थे। मरकत के, आम के पेड़ हीरे के, 'वेंगै' तरु चोखे स्वर्ण के, 'कोंगु' पद्मराग गगनस्पर्शी पूगतरु इन्द्रनीलमय, सालवृक्ष एक तरह के रत्न के, ... के पेड़ चाँदी के और सुरपुन्नाग जल-स्वच्छ स्फटिक के थे। पाटल के प्रवालमय थे। ६४९

वानुऱ निवन्द शॆङ्गेऴ मणिमरन् दुवन्ऱि
मीन्तॊडु मलर्ह डम्मिल् वेऱ्ऱुमै तॆरिद
तेनुहु शोलै नाप्पण् शॆम्बॊन्मण् डबत्तु
पानिऱ वमळि शेर्न्दान् पैयुळ्ऱ ऱुयङ्गि ... व

पैयुळ् उऱ्ऱु—पीड़ित होकर; उयङ्कि नैवान्—दुःख-मग्न हो विगलित वान् उऱ निवन्त—गगन को स्पर्श करते हुए उन्नत; चॆम् केऴ्—उत्तम रंग वाले मरम् तुवन्ऱि—रत्नमय तरुओं से भरे रहकर; मलर्कळ्—उनके फूल; वान आकाश के नक्षत्रों के साथ; तम्मिल्—उनसे; वेऱ्ऱुमै तॆरितल् तेऱ्ऱा— कठिन हो ऐसा, रहकर; तेन् उकु—जहाँ शहद चूते थे; चोलै नाप्पण् मध्य; चॆम् पॊन् मण्टपत्तुळ्—लाल स्वर्ण-मण्डप में; आण्टु—वहाँ; क्षीरवर्ण; ओर् अमळि—एक शय्या में; चेर्न्तान्—गया। ६५०

कामवेदना से व्यग्र रावण उस उद्यान के बीच में रहे स्व... अन्दर दुग्ध-सम श्वेत एक शय्या पर गया। उस उद्यान में ... हुए बढ़े और रत्नमय तरु खूब भरे थे। उनके फूलों और नक्षत्रों में भेद जानना कठिन था। वे फूल शहद चू रहे थे। ६

कनिहळिन् मलरिन् वन्द कळ्ळुण्ड कळिह
वनिदैयर् मऴलै यिन्शॊऱ् किळ्ळैयुङ् कुयिलुम्
इनियन मिऴऱ्ऱु हिन्ऱ यावैयु मिलङ्गै
मुनियुमॆन् ऱविन्द वाय मूङ्गैयर् पोन्ऱ

कनिकळिन्—फलों से और; मलरिन्—फूलों से; वन्त—निकला मधु पीकर; कळिकळ् अन्न—पियक्कड़ों के समान; वनितैयर् ... इन् चॊल्—तुतलाते मधुर वचन बोलनेवाले; किळ्ळैयुम्—शुक; वण्टुम्—भ्रमर; इनियन मिऴऱ्ऱुकिन्ऱ यावैयुम्—मधुर बोलनेवाले वेन्तन्—लंकाधिपति; मुनियुम् ऎन्ऱु—कोप करेगा, यह सोचकर; मुख बन्द कर; मूङ्कैयर् पोन्ऱ—गूँगे के समान हो रहे। ६५१

उस उद्यान में शुक, पिक, भ्रमर आदि थे। वे उस के फलों और फूलों से निकलनेवाले मधु और रस ...क समान मत्त हो स्त्रियों की-सी तुतलाती मधुर बोली में

अब वे, इस डर से कि लंकेश रावण गुस्सा करेगा, मुख बन्द करके गूँगे के समान हो रहे। ६५१

परुवत्ताल् वाडै तन्द पशुम्बनि यनङ्ग बाणम्
उरुविप्पुक् कौळित्त पुण्णिर् कुळित्तलु मुळैन्दु विम्मि
इरुदुत्तान् याद डावॆन् ऱियम्बिना तियम्ब लोडुम्
वॆरुविप्पोय्च् चिशर नीङ्गि वेनिल्वन् दिरुत्त दन्ऱे 652

परुवत्ताल्–ऋतु के धर्म के अनुसार; वाटै तन्त–उदीची हवा द्वारा लाई गई; पचुम् पति–शीतल हिम; अनङ्कपाणम् उरुवि–अनंग-बाण छेदकर; पुक्कु ऒळित्त–प्रवेश कर (छिपे) जहाँ रहे; पुण्णिल्–उन व्रणों में; कुळित्तलुम्–जब पैठे तभी; उळैन्तु विम्मि–पीड़ा से व्यग्र होकर; इरुतु तान् यातटा–ऋतु कौन है, रे; ऎन्ऱु–ऐसा; इयम्पितान्–रावण ने प्रश्न किया; इयम्पलोटुम्–कहते ही; चिचिरम्–शिशिर; वॆरुवि पोय् नीङ्कि–डरकर चला, हटा और; वेतिल् वन्तु इरुत्ततु–वसन्त आ गया। ६५२

ऋतु शिशिर की थी। इसलिए उदीची हवा द्वारा शीतल हिम आकर लग रहा था। वह काम-शर-विद्ध रावण के शरीर के व्रणों में जब पैठा, तब वह छटपटाने लगा। वेदना से हड़बड़ाकर उसने डाँटा कि क्या ऋतु है यह? यह पूछना था कि शिशिरऋतु डरकर भाग गयी। उसके स्थान पर वसन्तऋतु आ रही। ६५२

वन्बणै मरमुन् दीयुम् मलैहळुङ् गुळिर वाळुम्
मॆन्बनि यॆरिन्द दॆन्ऱाल् वेनिलै विळम्ब लामो
अन्बॆनुम् विडमुण् डारै याऱ्ऱला मरुन्दु मुण्डो
इन्बमुन् दुन्बमुन् दानु मुळ्ळत्तो डियैन्द वन्ऱे 653

वन् पणै मरमुम्–कठोर बड़े तरु भी; तीयुम्–अग्नि; मलैकळुम्–पहाड़; कुळिर–शीतल बने; वाळुम्–प्राणपूर्ण; मॆल् पनि–कोमल हिम ने; ऎरिन्ततु–जलाया; ऎन्ऱाल्–तो; वेतिलै विळम्पलामो–धूप का कहना क्या; अन्पु ऎनुम् विटम् उण्टारै–काम नाम का विष जिसने खाया है, उसका; आऱ्ऱल् आम् मरुन्तुम्–शमन करनेवाली दवा भी; उण्टो–है क्या; इन्पमुम् तुन्पम् तानुम्–सुख और दुःख; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; इयैन्त अन्ऱे–लगे हुए (अनुभव) हैं न। ६५३

वसन्त के कारण बड़े-बड़े कठोर पेड़ भी मनोरम हो गये। पर्वत भी आँखों को ठण्डक (आराम) पहुँचानेवाले हो गये। पर धूप तो थी। जिसको हिम भी ताप दे रहा था उसको धूप क्या देगी, यह कहने की आवश्यकता है क्या? काम का विष जिसने पिया है, उसके ताप को शान्त करनेवाली दवा इस लोक में कहाँ प्राप्य है? सुख व दुःख अपने-अपने मन की अनुभूत दशाएँ हैं न? फिर बाहर का उपचार क्या कर सकता है?। ६५३

मादिरत् तिरुदि काऱुन् दऩ्मनत् तॅऴुन्द मैयल्
वेदत्तै वॅप्पञ् जॆय्य वेनिलुम् वॅंदुप्पुङ् गालै
यादिदिङ् गिदऩिन् मुऩ्ऩैच् चिशिरतऩ् ऱिदत्तै नीक्किक्
कूदिराम् बरुवन् दऩ्ऩैक् कॊणरुदिर् विरैवि नॆऩ्ऱाऩ् 654

तऩ् मनत्तु ऍऴुन्त–अपने मन में उठी; मैयल् वेतत्तै–प्रेम की वेदना ने; मातिरत्तु इरुति काऱुम्–दिगन्त तक; वॅप्पम् चॅय्य–गरमी दिला दी, तब; वेनिलुम् वॅतुप्पुम् कालै–धूप ने भी ताप दिया, तो; यातु इङ्कु–कौन (सी ऋतु) यहाँ; मुऩ्ऩै चिचिरम् इतऩिन् नऩ्ऱु–पहले का शिशिर इससे बेहतर रहा; इतत्तै नीक्कि–इसको दूर करके; कूतिर् आम् परुवम् तऩ्ऩै–शरद ऋतु को; विरैविल् कॊणरुतिर्–तुरन्त लाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ६५४

रावण के मन का ताप दिगन्त तक फैलकर तपाने लगा। उस पर वसन्त की धूप भी मिल गयी। वह और भी गरम हो गया। पूछा कि अब कौन सी ऋतु आयी है यह? पहले जो शिशिरकाल था वह इससे बेहतर था, ऐसा लगता है। उसने आज्ञा दी— हटाओ इसे। शरदऋतु को लाओ शीघ्र। ६५४

कूदिर्वन् दडैन्द कालै कॊदित्तऩ कुववुत् तिण्डोळ्
शीदमुञ् जुडुमो मुऩ्ऩैच् चिशिरमे काणि दॆऩ्ऱाऩ्
आदिया यञ्जु मऩ्ऱे यरुळल दियऱ्ऱ लॆऩ्ऩ
यादुमिङ् गिरुदु माहा यावैयु महऱ्ऱु मॆऩ्ऱाऩ् 655

कूतिर् वन्तु अटैन्त कालै–शरद जब आया; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सुदृढ़ कन्धे; कॊतित्तऩ–गरम हो गये; चीतमुम् चुटुमो–शीत भी जलायगा क्या; मुऩ्ऩै चिचिरमे इतु–पहले का शिशिर ही यह; काण्–देखो; ऍऩ्ऱाऩ्–बोला; आतियाय्–नाथ; अरुळ् अलतु–आज्ञा के सिवाय; इयऱ्ऱल्–करना; अञ्चुम्–डरते हैं; ऍऩ्ऩ–कहा, तो; इङ्कु–यहाँ; इरुतु यातुम्–कोई भी ऋतु; आकातु–(भली) नहीं हो सकती; यावैयुम् अकऱ्ऱुम्–सबको हटाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; (अऩ्ऱु–ए)। ६५५

शरद आया। (पर क्या फल होता?) उसके पुष्ट और सबल कंधे जल उठे। "ऐ! शीत भी जला सकेगा क्या? वही शिशिर यह है! देखो!" जब रावण ने यह कहा तब उसके दासों ने विनय की कि महाराज! हम आपकी आज्ञा के सिवा कुछ अन्य करने से डरेंगे। (आप विश्वास मानें कि यह शरद है।) तब रावण ने आज्ञा दी कि सो बात है तो कोई भी ऋतु कुछ नहीं करेगी। यहाँ कोई ऋतु न हो। हटाओ सबको। ६५५

ऍऩ्ऩलु मिरुदु वॅल्ला मेहलुम् यावुन् दऩ्दम्
पऩ्ऩरुम् बरुवञ् जॆय्या योहिपोल् पऱ्ऱु नीत्त
पिऩ्ऩरु मुलह मॆल्लाम् पिणिमुदऱ् पाशम् वीशित्
तुऩ्ऩरुन् दवत्तो रॆय्दुन् दुऱक्कम्बोर् ऱोऩ्ऱिऱ् ऱऩ्ऱे 656

ॲन्ऩलुम्–कहते ही; इरुतु ॲल्लाम्–सभी ऋतुएँ; एकलुम्–चली गईं, तब; पावुम्–सभी (पदार्थ); पन्‌ अरुम्–अवर्ण्य; परुवम् चॅय्‌या–मौसम के अनुसार व्यापार छोड़कर; योकि पोल्–यतियों की तरह; पऱ्ऱु नीत्त–निर्लिप्त रह गये; पित्तरुम्–और फिर; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोक; पिणि मुतल् पाचम् वीचि–रोग आदि कर्म-पाश हटाकर; तवत्तोर् ॲय्‌तुम्–तपस्वी द्वारा प्राप्य; तुन्‌ अरुम् तुऱक्कम् पोल्–दुर्गम स्वर्ग के समान; तोन्‌ऱिऱ्ऱु–दिखाई दिया। ६५६

उसके ऐसा कहने पर सारी ऋतुएँ चली गयीं। उनके साथ कालोचित व्यापार भी रुक गये। इसलिए उस उद्यान में रहे चल और अचल सभी पदार्थ और जीव योगी के समान अचल और निर्लिप्त रह गये। वे ही क्या सारे लोकों के सारे जीव रोग आदि कर्मबन्धन काटकर स्थिर रहे। इसलिए लोक तपस्वी द्वारा प्राप्य और साधारण रीति से दुर्गम स्वर्ग के समान दिखे। ६५६

कूलत्ता रुलह मॅल्लाङ् गॉदिप्पॉडु कुळिर्प्पु नीङ्ग
नीलत्ता ररक्कन्‌ मेनि नॅय्‌यिन्‌ऱि यॅरिन्द दन्‌ऱे
कालत्ताल् वरुव दॉन्‌ऱो कामत्ताऱ् कनलुम् वॅन्दीच्
चीलत्ता लविप्प दन्‌ऱिच् चॅय्‌यत्ता नाव दुण्डो 657

कूलत्तु आर्—सीमा-बद्ध; उलकम् ॲल्लाम्–सारे लोक; कॉतिप्पु ऑरु कुळिर्प्पु नीङ्क–गरमी व ठण्डी से रहित हुए, तब; नीलत्तु आर् अरक्कन्‌ मेनि–नीलवर्ण राक्षस का शरीर; नॅय् इन्‌ऱि–घी के विना ही; ॲरिन्ततु–जला; कालत्ताल् वरुवतु ऑन्‌ऱो–ऋतु के कारण आया वह क्या; कामत्ताल्–काम के कारण; कनलुम् वॅम् ती–जलनेवाली गरम आग को; चीलत्ताल्–शीलगुण द्वारा; अविप्पतु अन्‌ऱि–बुझाना छोड़कर; चॅय्‌य तान्‌ आवतु उण्टो–करने के लिए कोई दूसरा है क्या। ६५७

संसार सीमाबद्ध है। उसकी गति-विधि आदि के नियम हैं। अब वे नियम नहीं रहे। अतः न शीत था, न ताप। तब भी नीलवर्ण रावण का शरीर ताप का अनुभव करने लगा। वह विना घी के ही जलने लगा! उसका ताप काल के व्यापार के फलस्वरूप आनेवाला नहीं था! पर उसके मन की काम रूपी जलती आग से होनेवाला ताप था। उसकी शान्ति शीलगुण से ही हो सकती थी। दूसरा कोई परिहार क्या होगा?। ६५७

नारमुण् डॅळुन्द मेहन् दामरै वळैय नानच्
चारमुण् डिरुन्द शीदच् चन्दनन् दळिर्मॅन् ऱादो
डारमुण् डॅरिन्दु शिन्दै ययर्‌हिन्‌ऱा नयत्तिन् ऱारै
ईरमुण् डॅऩ्ब रोडि यिन्दुवैक् कॉणरु मॅन्‌ऱान्‌ 658

नारम् उण्टु ॲळुन्त–जल पीकर जो उठे; मेकम्–वे मेघ; तामरै वळैयम्–कमलनालों के वलय; नाऩ चारम् उण्टु इरुन्त–कस्तूरी और गन्ध-द्रव्य-मिला; चीत चन्तनम्–शीतल चन्दन; तळिर्–पल्लव; मॅल तातॊटु–कोमल पराग के साथ;

आरम्–मोती; उण्टु–उसके शरीर पर रखे गये; ऍरिन्तु–(पर) जलन से; चिन्तै अयर्कित्ऱान्–मन में तप्त हो थकता है; अयल् निन्ऱारै–पार्श्व में स्थित लोगों को; ईरम् उण्टु ऍन्पर्–शीतलता है, कहते; ओटि–भागो; इन्तुवै–इन्दु को; कोणर्म् ऍन्ऱान्–लाओ, कहा। ६५८

रावण के शरीर पर शीत देनेवाले पदार्थ रखे गये। जल-भरे मेघ; कमलनालों के बने वलय; कस्तूरी-मिला शीतल चन्दन; पल्लव; कोमल मकरन्द; मोती आदि उसका ताप हर नहीं रहे थे बल्कि ताप को बढ़ाने लगे। तब उसने अपने पार्श्वस्थों से कहा कि लोग कहते हैं कि चन्द्र में शीत (देने की शक्ति) है। जाकर इन्दु को पकड़ लाओ। ६५८

वॆञ्जिनत् तरक्क नाण्ड वियनहर् मीदु मेव
नॆञ्जयिर्त् तॊडुङ्गु हिन्ऱ निऱैमदि योनै नेडि
अञ्जलै वरुदि निन्नै यऴैत्तन तरश नॆन्नच्
चञ्जलन् दुऱन्दु तानच् चन्दिर नुदिक्क लुऱ्ऱान् 659

वॆम् चित्तत्तु–भयंकर क्रोधी; अरक्कन् आण्ट–राक्षस से पालित; वियन् नकर् मीतु–बड़े उस नगर के ऊपर; मेव–जाने से; नॆञ्चु अयिर्त्तु–मन में डरकर; ऒतुङ्कुकित्ऱ–परे चलता जो रहा, उस; निऱै मतियोनै–पूर्णचन्द्र को; नेटि–ढूँढ़कर; अञ्चलै–मत डरो; निन्नै–तुमको; अरचन्–राजा ने; अऴैत्तनन्–बुलाया है; ऍन्न–कहने पर; अ चन्तिरन्–वह चन्द्र भी; चञ्चलम् तुऱन्तु–घबड़ाहट छोड़कर; उतिक्कल् उऱ्ऱान्–उदित हुआ। ६५९

चन्द्र तो भयंकर क्रोधी राक्षसराज से पालित बड़े नगर— लंका —के ऊपर जाने से बिल्कुल डरता था। इसलिए वह उसे बचाकर कहीं घूमता रहा। राक्षसों ने उसे ढूँढ़कर पकड़ा। उससे कहा— मत डरो। राजा ने तुम्हें बुलाया है। वह चन्द्र भी कुछ अधैर्य छोड़कर धीरता का अवलंबन करके उदित हुआ। ६५९

अयिरुऱक् कलन्द तीम्बा लाऴिनिन् ऱाऴि यिन्दु
शॆयिरुऱड् करश नाण्डोर् तेय्वुवत् दुऱ्ऱ पोऴ्दिन्
वयिरमुऱ् ऱुडैन्द माऱ्ऱान् वलियऱच् चॆन्ऱ वन्ऱन्
उयिर्तॆऱ वुवन्दु वन्दा नॊत्तन नुदयञ् जॆय्दान् 660

चॆयिर् उऱ्ऱकु अरचन्–अपने शत्रु राजा के; ओर् तेय्वु उऱ्ऱ पोऴ्तिल्–निर्बल रहते समय; आण्टु–तब; वयिरम् उऱ्ऱु–वैर साधकर; उटैन्त माऱ्ऱान्–बलहीन शत्रु के; वलि अऱ–बल को ध्वस्त करने; चॆन्ऱु–चढ़ जाकर; अवन् तन् उयिर् तॆऱ–उसके प्राणों का अन्त करने की; उवन्तु वन्तान्–चाह लेकर आया हो; ऒत्तनन्–उसकी तरह; अयिर् उऱ कलन्त–शर्करा (या सूक्ष्म सिकता) से युक्त; तीम् पाल् आऴि निन्ऱु–मधुर क्षीरसागर से; आऴि इन्तु–गोल चाँद; उतयम् चॆय्तान्–उदित हुआ। ६६०

कोई राजा है। उसका शत्रु निर्बल हो गया है। उस समय यह राजा अपना वैर साधने के इरादे से विकट स्थिति में रहनेवाले उस शत्रु पर आक्रमण करके उसके प्राण हरने के लिए आता हो ऐसा, शर्करा-भरे क्षीर-सागर-मध्य से गोल पूर्णचन्द्र उगकर आया। ६६०

परावरुङ् गदिर्ह ळॅङ्गुम् परप्पिमीप् पडर्न्दु वानिल्
तरादलत् तॅवरुम् बेणत् तण्मदि युदित्त तोऱ्ऱम्
अरावणेत् तुयिलु मण्णल् कालमोर्न् दऱ्ऱ नोक्कि
इरावण नुयिर्मे लुय्त्त तिहिरियु मॅन्न लान 661

परावु अरुम्–जिसकी पूरी प्रशंसा करना कठिन है; **तण् मति**–वह शीतल चन्द्र; **कतिर्कळ् ॲङ्कुम् परप्पि**–सर्वत्र किरणें फैलाते हुए; **वानिल् मी पटर्न्तु**–ऊपर आकाश में चलकर; **तरातलत्तु ॲवरुम् पेण**–धरातल के सबका स्वागत पाकर; **उतित्त तोऱ्ऱम्**–उदित जो हुआ वह दृश्य; **अरा अणै तुयिलुम् अण्णल्**–शेष-शय्या पर निद्रा करनेवाले प्रभु द्वारा; **कालम् ओर्न्तु**–समय विचारकर; **अऱ्ऱम् नोक्कि**–सन्दर्भ निश्चित कर; **इरावणन्**–रावण के; **उयिर्मेल् उय्त्त**–प्राणों पर चलाया गया; **तिकिरियुम् ॲन्नल्**–(सुदर्शन) चक्र-सम; **आन**–हुआ। ६६१

अवर्णनीय यशस्वी शीतल चन्द्र आकाश में ऊपर उदित हुआ। तब उसकी किरणें सब जगह फैलीं। भूमि के सभी लोग उसका चाव के साथ स्वागत करने लगे। तब वह दृश्य शेषशायी श्रीमन्नारायण के चक्र के समान था, जिसे उन्होंने उचित समय विचारकर और ठीक सन्दर्भ देखकर रावण पर चलाया हो। ६६१

अरुहुऱ पालिन् वेलै यमुदॅला मळैन्दु वारिप्
परुहिन परन्दु पाय्न्द निलाच्चुडर् पनिमॅन् कऱ्ऱै
नॅरिवुऱ पुरुवच् चॅङ्ग णरक्कर्कु नॅरुप्पि नाप्पण्
उरुहिय वॅळ्ळि यळ्ळि वीशिना लॊत्त दन्ऱे 662

अरुकु उऱ–पास रहे; **पालिन् वेलै**–क्षीरसागर के; **अमुतु ॲलाम्**–सारे अमृत को; **अळैन्तु वारि परुकिन**–(चन्द्र ने) टटोल, उठाकर खा लिया; **परन्तु पाय्न्त**–(वही अमृत) सर्वत्र फैलकर व्यापा; **निला चुटर्**–(उस अमृत की) चाँदनी की किरणों की; **पनि मॅल् कऱ्ऱै**–शीतल कोमल राशि; **नॅरिवु उऱ पुरुव**–तनी हुई भौंहों के; **चॅम् कण् अरक्कर्कु**–अरुणाक्ष राक्षस रावण के लिए; **नॅरुप्पिन् नाप्पण्**–अग्नि-मध्य; **उरुकिय**–पिघली हुई; **वॅळ्ळि**–चाँदी; **अळ्ळि वीचिनाल्**–उठाकर जो फेंकी गई; **ऑत्ततु**–उसके समान रही। ६६२

चन्द्र की चाँदनी की शीतल किरणों की राशि क्या थी! उसने अपने पास के क्षीरसागर से टटोल लेकर जो अमृत खाया था, वह मानो सब जगह फैल रहा था। लेकिन वह तनी हुई भौंहों और लाल आँखों के साथ जो रहा, उस रावण के लिए अग्निमध्य चाँदी को पिघलाकर प्राप्त द्रव के समान था जिसे उस पर उड़ेल दिया हो। ६६२

मिऩ्ऩलऩ् दिहऴुम् जोदि विऴुनिला मिदिलै शूऴ्न्द
शॆन्नॆलङ् गऴनि नाडऩ् ड्रिरुमहळ् शॆव्वि केळा
नन्ऩलऩ् दॊलैन्दु शोरु मरक्कऩै नाळुम् दोलात्
तुऩ्नल नॊरुवऩ् बॆऱ्ऱ पुहऴॆनच् चुट्ट दऩ्ऱे 663

मिऩ् नलम् तिकऴुम् चोति–विद्युत के गुण के साथ विद्यमान ज्योति को; विऴु निला–श्रेष्ठ चाँदनी ने; चूऴ्न्त–चारों ओर घेरे रहनेवाले; चॆम् नॆल्–लाल धान के; अम् कऴत्ति–मनोहर खेतों से युक्त; मितिलै नाटऩ्–मिथिलेश की; तिरुमकळ् चॆव्वि–दिव्य सुता सीता का रूपसौंदर्य; केळा–श्रवण कर; नल् नलम् तॊलैन्तु चोरम्–(उसके फलस्वरूप) अपना बल सब खोकर लटनेवाले; अरक्कऩै–राक्षस, रावण को; नाळुम् तोला–कभी न हारनेवाले; तुऩ्ऩलऩ् ऒरुवऩ् पॆऱ्ऱ पुकऴ् ऎऩ–शत्रु से प्राप्त यश के समान; चुट्टतु–तपाया। ६६३

उस चाँदनी में विद्युत की-सी ज्योति भरी थी। रावण उस विदेह देश के राजा की सुपुत्री जानकीदेवी का रूपसौंदर्य सुनकर अपने सभी तरह के बल को क्षीण होने देते हुए छटपटा रहा था; जिस देश के चारों ओर लाल धान के पौधों से भरे खेत पाये जाते थे। वह चाँदनी उस रावण को इस तरह तपाने लगी, जिस तरह अजेय शत्रु का यश किसी वीर को तपाता है। ६६३

करुङ्गऴऱ् काल तञ्जुङ् गावलऩ् करुत्तु नोक्कित्
तरुङ्गदिर्च् चीद याक्कैच् चन्दिरऱ् ऱरुदि यॆऩ्ऩ
मुरुङ्गिय कऩलिऩ् मूरि विडत्तिऩै यॊऴुक्कुञ् जोऱ्ऱत्
तरुङ्गदि ररुक्कऩ् ऱऩ्ऩै यारऴैत् तीर्ह ळॆऩ्ऱाऩ् 664

करुम् कऴल् कालऩ्–बड़ी पायलों से भूषित यम भी; अञ्चुम्–जिससे डरता है; कावलऩ्–राक्षसराज; करुत्तु नोक्कि–(भृत्यों को) गुस्से के साथ देखकर; चीतम् तरुम् कतिर् याक्कै–शीत देनेवाली किरणों के शरीर के; चन्तिरऩ् तरुतिर् ऎऩ्ऩ–चन्द्र को लाओ, कहा; मुरुङ्किय कऩलिऩ्–खूब जलती हुई आग के साथ; मूरि विटत्तिऩै–भयंकर विष को; ऒऴुक्कुम्–बरसानेवाले; चोऱ्ऱत्तु–क्रुद्ध; अरुम् कतिर् अरुक्कऩ् तऩ्ऩै–संतापी किरणमाली सूर्य को; यार् अऴैत्तीर्कळ्–तुम लोगों में किसने बुलाया; ऎऩ्ऱाऩ्–पूछा। ६६४

बड़ी पायलधारी यम के भी भयदायी रावण ने अपने भृत्यों को देखकर पूछा कि शीतल-किरण-शरीरी चन्द्र को लाओ—यही मैंने कहा था। लेकिन यह सर्वदाहक अग्नि के साथ भयंकर विष को बरसानेवाले और विवृद्ध कठोर किरणमाली को लाया गया है। तुम लोगों में किसने उसको बुलाया? । ६६४

अव्वऴिच् चिलद रञ्जि यादिया यरुळिल् लारै
इव्वऴित् तरुदु मॆऩ्ब दियम्बला मियल्बिऱ् ऱऩ्ऱाल्

शॆव्वळिक् कदिरो नॆन्ऱुन् देरिनुमे लन्ऱि वारान्
ऎव्वळित् तॆनितुन् दिङ्गळ् विमानत्तिन् मेल दॆन्ऱार् 665

अ वळि–तब; चिलतर्–भृत्यों ने; अञ्चि–डरकर; आतियाय्–नायक; अरुळ् इल्लार–आपने जिसको लाने की आज्ञा देने की कृपा नहीं की; इ वळि–(उसको) इधर; तरुतुम् ऎन्पतु–लायेंगे, ऐसा करना; इयम्पल् आम् इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱु–कहने योग्य बात नहीं है; चॆम् वळि कतिरोन्–अपने मार्ग पर सीधे चलनेवाला सूर्य; ऎन्ऱुम्–सदा; तेर् मेल् अन्ऱि–रथ पर आना छोड़कर; वारान्–नहीं आयगा; तिङ्कळ्–चन्द्र; ऎ वळित्तु ऎनितुम्–किसी भी मार्ग पर क्यों न हो; विमानत्तिन् मेलतु–यान पर ही चलेगा; ऎन्ऱार्–(उत्तर में) कहा। ६६५

तब भृत्यों ने भयभीत होकर विनय की। हे नाथ ! आपने जिसको लाने की आज्ञा कृपापूर्वक नहीं की, उसको हम लायेंगे, यह बात कथनीय नहीं है। सीधे मार्ग पर जानेवाला सूर्य कभी भी रथ पर आना छोड़कर किसी दूसरी तरह से नहीं आयगा। और चन्द्र, जहाँ भी जाये, यान पर ही जायगा। ६६५

पणन्दा ळलहुङ् पनिमॊळियार्क् कन्बु पट्टार् पडुङ्गामक्
कुणन्दान् मुन्न मऱियादान् कॊदिया निन्ऱान् मदियाले
तणन्दा मरैयिन् ऱनिप्पहैञ नॆन्नुन् दन्मै यॊरुदाने
उणर्न्दा नुणर्वुऱ् ऱवन्मेलिट् टुय्त्त तुन्बम् मुरैशॆय्वान् 666

पणम् ताळ् अलकुल्–सर्पफन को उपमा में नीचे दिखानेवाला वरांग; पनि मॊळियार्क्कु–शीतल बोली, इनसे युक्त स्त्रियों के प्रति; अन्पु पट्टार्–काम के वश में जो हुए; पटुम्–उसको सतानेवाला; काम कुणन्तान्–कामरोग की स्थिति को; मुन्नम् अऱियातान्–जो पहले नहीं जानता था, वह रावण; मतियाल्–उस चन्द्र से; कॊतिया निन्ऱान्–तप्त रहा; तण् अम् तामरैयिन्–शीतल सुन्दर कमल का; तनि पकैञन्–विशेष शत्रु वह; ऎन्नुम् तन्मै–यह रीति; ऒरु ताने उणर्न्तान्–एक तरह से स्वयं जानकर; उणर्वु उऱ्ऱु–होश में आकर; उयिर् तन्तु उय्क्क–प्राण (स्वस्थता) पाकर बचने के लिए; अवन् मेलिट्टु–उस चन्द्र के प्रति; उरै चॆय्वान्–बोलने लगा। ६६६

रावण को कभी सर्प-फन के समान वरांग और शीतल, मधुर वाणी की स्त्रियों के प्रेम में फँसे हुए लोगों के काम-ताप की वेदना का प्रकार नहीं मालूम था। अब वह इस चन्द्र के कारण वेदना से तड़पने लगा। तब उसे स्मरण आया कि यह शीतल, सुन्दर कमल का अनोखा शत्रु है। तब उसे सुध आयी कि मैं इससे प्राण पाकर बचने के लिए कुछ कहूँ —यह सोचकर वह चन्द्र के प्रति कहने लगा। ६६६

तेया निन्ऱाय् मॆय्वॆळुत्ता युळ्ळङ् गऱुत्ताय् निलै तिरिन्दु
काया निन्ऱा यॊरुनोयुङ् कण्डार् शॊल्लक् केट्टायो

पाया निऩ्ऱ मलर्वाळि पऱिया निऩ्ऱा रिल्लैयाल्
ओया निऩ्ऱे ऩुयिर्हात्तऱ् कुरिया रारे युडुवदिये 667

उट्पतिये–उडुपति; तेया निऩ्ऱाय्–क्षीण होता जाता है; मेय् वॆळुत्ताय्–शरीर पाण्डुर है; उळ्ळम् करुत्ताय्–दिल काला है; निलै तिरिन्तु काया निऩ्ऱाय्–गुण बदलकर सूख गया; ऒरु नीयुम्–अनोखी स्थिति में रहनेवाला तू भी; कण्टार् चॊल्ल–किसी के एक स्त्री को देखकर तेरे पास बताने से; केट्टायो–तूने सुन (कर प्रेम करने लग) गया क्या; पाया निऩ्ऱ–सवेग आनेवाले; मलर् वाळि–सुमन-शर; पऱिया निऩ्ऱार्–निकालनेवाले; इल्लैयाल्–नहीं है, इसलिए; ओया निऩ्ऱेऩ्–थका हूँ; उयिर् कात्तऱ्कु–मेरे प्राण बचाने का; उरियार् यारे–जिम्मा लेनेवाले कौन है। ६६७

रावण ने कहा— उडुपति ! तू दिन व दिन क्षीण होता जाता है। तेरा शरीर पाण्डुर है। दिल काला है। तेरी स्थिति वदल गयी है और तू झुलस गया है। इस विचित्र दशा में रहनेवाले तूने भी क्या किसी के द्वारा उसकी देखी हुई स्त्री के सम्बन्ध में सुनकर प्रेम किया है ? वेग से आकर मेरे ऊपर लगकर जो मन्मथ-शर मुझे सता रहे हैं उनको निकालकर मुझे बचानेवाला कोई नहीं रहा। इसलिए मैं निर्वल होकर थका हुआ हूँ। मेरी जान बचानेवाले कौन हैं ? । ६६७

आऱ्ऱा राहिऱ् ऱम्मैक्कॊण् डडङ्गा रॊवॆऩ् ऩारुयिर्क्कुक्
कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ कुलच्चनहि कुवळै मलर्न्द तामरैक्कुत्
तोऱ्ऱा यदऩा लहङ्गरिन्दाय् मॆलिन्दाय् वॆदुम्बत् तॊडङ्गिऩाय्
माऱ्ऱार् शॆल्वङ् गण्डळिन्दाल् वॆऱ्ऱि याह वऱ्ऱामो 668

ॲऩ् आर् उयिर्क्कु–मेरे प्रिय प्राणों का; कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ–यम जो बनी खड़ी है; कुल चऩकि–उच्चकुल-जात जानकी के; कुवळै मलर्न्त–विकसित नीलोत्पलों (आँखों) सहित; तामरैक्कु–कमल (मुख) के सामने; तोऱ्ऱाय्–तू हार गया; अतऩाल्–उस कारण; अकम् करित्ताय्–दिल का (क्रोध से) काला हो गया; मॆलिन्ताय्–पतला हो गया; वॆतुम्प तॊटङ्कित्ताय्–झुलसने लगा; माऱ्ऱार् चॆल्वम् कण्टु अळिन्ताल्–अन्य मनुष्य का धन देखकर जलेगा तो; वॆऱ्ऱि आक–विजयी बनने का; वऱ्ऱु आमो–वल मिलेगा क्या। ६६८

हे चाँद ! तू उस कुलीन जानकी के कमल-सम मुख के सामने हार गया, जो मेरे प्यारे प्राणों का यम बनी है। उस जानकी के कमल-सम मुख में दो नीलोत्पल-सम आँखें हैं। हार जाने की वजह से तेरा दिल झुलस गया है। तू क्षीण होकर जल रहा है। प्रतिद्वन्द्वी का धन देखकर ईर्ष्या के कारण छीजने से विजय पाने की शक्ति मिल जायगी क्या ? । ६६८

ॲऩ्ऩप् पऩ्ऩि यिडरुळ्वा विरवो डिवऩ्ऩैक् कॊण्डहऱ्ऱि
मुऩ्ऩैप् पहलुम् पहलोऩुम् वरुह वॆऩ्ऱाऩ् मौळियामुऩ्

उन्नऱ्करिय वुडुबदियु मिरबु मौळित्त वौरुनोडियिल्
पन्नऱ् करिय पहलवनुम् पहलुम् वन्दु परन्दवाल् 669

ॲन्न पन्नि–ऐसा विलाप करके; इटर् उळवा–दुःख से पीड़ित होकर; इरवोटु इवनै–रात के साथ इसको; कॉण्टु अकऱ्ऱि–पकड़कर दूर करो; मुन्नै पकलुम्–पहले रहा दिन और; पकलोनुम्–दिनकर को; वरुक–आने दो; ॲन्ऱान्–कहा; मौळियामुन्–उसके कहने के पूर्व ही; उन्नऱ्कु अरिय–अचिन्त्य यशस्वी; उडुपतियुम्–उडुपति और; इरवुम्–रात्रि; ओरु नोटियिल्–एक चुटकी भर में; ऑळित्त–छिप गये; पन्नऱ्कु अरिय–अवर्ण्य यशस्वी; पकलवनुम्–दिनकर और; पकलुम्–दिन; वन्तु परन्त–आकर व्याप गया। ६६९

इस तरह विविध प्रकार से रावण विलापते हुए दुखता रहा। फिर उसने कहा— रात के साथ चाँद को भी हटा देकर पहले की तरह दिन और दिनकर को आने दो। उसके कहते ही अचिन्त्य यशस्वी उडुपति रात के साथ चुटकियों में छिप गया। अवर्णनीय यशस्वी दिन और दिनकर आ गये। ६६९

इरुक्किन् मौळिया लॅरिमुहत्ति नीन्द नॅय्यि नॅरिशॅम्बौन्
उरुक्कि यनैय कदिर्बाय वनल्बोल् विरिन्द वुयर्हमलम्
अरुक्क नॅय्द वमैन्दडङ्गि वाळा दडाद पौरुळॅय्दिच्
चॅरुक्कि यिडैये तिरुविळन्द शिऱ्ऱियोर् पोन्ऱ चेदाम्बल् 670

अरुक्कन्–सूर्य; ॲरि मुरवत्तिन्–अग्नि में; इरुक्किन् मौळियाल्–वेदमन्त्रों के साथ; ईन्त–डाले गये; नॅय्यिन्–घी के समान; ॲय्त–आ गया तब; कतिर्–उसकी किरणें; ॲरि–भट्ठी में; चॅम्पोन् उरुक्कि अनैय–लाल स्वर्ण के गले हुए द्रव के समान; पाय–भूमि पर आ फैलीं; उयर् कमलम्–उत्कृष्ट कमल; अनल् पोल् विरिन्त–अग्निज्वालाओं के समान खिले; चेताम्पल्–लाल कुमुद; चिऱ्ऱियोर्–नीच लोग; अटात पौरुळ् ॲय्ति–अनुचित रीति से धन प्राप्त करके; अमैन्तु अटक्कि वाळातु–शम-दम के साथ जीवन न बिताकर; चॅरुक्कि–गर्व करते हुए (जब रहते हैं) तब; इटैये–बीच में ही; इळन्त–खो गये हों, ऐसा; तिरु–विकास; इळन्त–खो गये (बन्द हो गये)। ६७०

सूर्य क्या आया? होमाग्नि में वेदमन्त्र के साथ पड़नेवाले घी के समान रहा वह। उसकी किरणें भट्ठी में पिघलाये हुए चोखे स्वर्ण के द्रव के समान भूमि पर फैलीं। तब श्रेष्ठ कमल अग्निज्वाला के समान विकसित हुए। लाल कुमुद उन छुद्र मनुष्यों के समान श्रीहीन हुए, जो अधार्मिक रास्तों से धन प्राप्त कर शम और दम के साथ नहीं रहते, पर गर्वीले रहते हैं और जिनकी सम्पत्ति बीच में ही लुप्त हो जाती है। ६७०

नाणि निन्ऱ वौळिमळुङ्गि नडुङ्गा निन्ऱ वुडम्बिनताय्च्
चेणि निन्ऱुम् बुऱञ्जायन्दु कङ्गुऱ् ऱारम् बिन्शॅल्लप्

पूणित् वॆय्यो नॊरुदिशैये पुहुदप् पोवान् पुहऴ्वेन्दर्
आणै शॆल्ल निलैयिऴन्द वरशन् बोन्ऱा नल्लाण्डान् 671

पूणित् वॆय्योन्–संसार का आभरण-स्वरूप सूर्य; ऒरु तिचैये पुकुत–उत्तम एक (पूर्व) दिशा में उदय हुआ; अल् आण्टान्–रात का नायक; नाणि–लजाकर; नित्र ऒळि–अपने पास रही ज्योति के; मऴुङ्कि–मन्द पड़ते; नटुङ्का निन्ऱ उटम्पितन् आय्–काँपते शरीर का बनकर; चेणित् नित्ऱु–आकाशमध्य से; पुऱम् चाय्न्तु–एक ओर उतरकर; कङ्कुल् तारम् पिन् चॆल्ल–रात रूपी पत्नी के पीछा करते; पोवान्–जो गया वह; पुकऴ् वेन्तर्–विख्यात राजा के; आणै चॆल्ल–शासन में; निलै इऴन्त–अपनी स्थिति से च्युत; अरचन् पोन्ऱान्–छोटे राजा के समान लगा। ६७१

संसार का आभरणरूप सूर्य उत्तम पूर्व दिशा में उदय हुआ तो रात का शासक चाँद उसको देखकर शरमाया, मन्दप्रभ हुआ और आकाश-मध्य से काँपते हुए उतरकर हट गया। उसके पीछे रात रूपी उसकी पत्नी भी चली। बड़े राजा के शासन में छोटे राजा की स्थिति जैसे बिगड़ जाती है, वैसे चन्द्र का शासन भी बिगड़ गया। ६७१

मणन्दपे रन्बरै मलरिन् शेक्कैयुळ्
पुणर्न्दिल रिडैयॊरु वॆहुळि पॊङ्गलाल्
कणङ्गुऴै महळिर्हळ् कङ्गुल् वीय्न्ददॆन्
रुणर्न्दिलर् कनविनु मूड ऱीर्न्दिलार् 672

कनम् कुऴै मकळिर्कळ्–भारी कुण्डलधारिणी स्त्रियों ने; मलरिन् चेक्कै उळ्–पुष्पशय्या पर; मणन्त पेर् अन्पर्–मिले रहे पतियों के साथ; इटै ऒरु वॆकुळि पॊङ्कल् आल्–बीच में रोष के होने से; पुणर्न्तिलर्–सम्भोग नहीं किया था; कङ्कुल् वीय्न्ततु–रात चली गई; ऎन्ऱु उणर्न्तिलर्–यह नहीं समझीं; कनविलुम्–तब के स्वप्न में भी; ऊटल् तीर्न्तिलार्–रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

(अकाल में अकस्मात अर्क के आगमन से क्या-क्या हुआ, उसका रसीला वर्णन है।) कुछ राक्षस-स्त्रियाँ, जिनके कर्णों को भारी कुण्डल अलंकृत कर रहे थे, अपने पतियों के साथ पुष्पशय्या पर लेटी हुई थीं। अकस्मात उनके मन में रूठन हो गयी और रोष उभर आया था। अतः क्रीड़ा रुक गयी थी। अब उन्हें ज्ञात नहीं था कि सवेरा हो आया है। इसलिए वे स्वप्न में भी मान कर रही थीं। रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

अणैमलर्च् चेक्कैयु ळाड ऱीर्न्दनर्
पणैहळैत् तळुविय पवळ वल्लिबोल्
इणैमलर्क् कैहळि निऱुह वित्नुयिर्त्
तुणैवरैत् तऴुविनर् तुयिल्हित् ऱार्शिलर् 673

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; अणै मलर् चेक्कै उळ्–गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में;

आटल् तीर्न्ततर्–रतिक्रीड़ा समाप्त करके; **पणैकळै तळुविय**–मोटी डालों से लिपटी; **पवळ वल्लि पोल्**–प्रवालवल्लरी के समान; **इणै मलर् कैकळिन्**–जोड़े के सुमन-हस्तों से; **इन् उयिर् तुणैवरै**–प्राणप्यारे पतियों का; **तळुवित्तर्**–आलिंगन करती हुई; **तुयिल्किन्रार्**–सोती हैं। ६७३

और कुछ राक्षस-स्त्रियों ने रतिक्रीड़ाएँ पूरा कर ली थीं। गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में वे अपने प्यारे पति का आलिंगन करती हुई, स्थूल वृक्ष से लिपटी प्रवालवल्लरी के समान सो रही थीं। ६७३

तळ्ळुरु मुयिरिनर् तलैवर् नीङ्गलाल्
नळ्ळिर विडैयुरु नडुक्क नीङ्गलर्
कॊळ्ळैयि नलर्दरुङ् गुवळै नाण्मलर्क्
कळ्ळुहु वन्नॆन्नक् कलुळुङ् गण्णिनार् 674

तलैवर् नीङ्कलाल्–पतियों के चले जाने से; **तळ् उरुम् उयिरित्तर्**—चलित-प्राण होकर; **नळ् इरवु इटै**–अर्धरात्रि के समय; **उरु**–जो हुआ; **नटुक्कम् नीङ्कलर्**–उस भय के कम्पन से मुक्त न होकर; **अलर् तरु**–विकसित; **कुवळै नाण् मलर्**–कुवलय के नवीन पुष्पों से; **कळ् कॊळ्ळैयिन् उकुवन**–मधु अधिक परिमाण में ढलकता है; **ॲन्न**–जैसे; **कलुळुम् कण्णित्तार्**–जल बहानेवाली आँखों की बनीं। ६७४

कुछ स्त्रियों के प्रेमी पति उनको छोड़कर गये हुए थे। रात आधी बीत गयी। उनके प्राण डगमगाये। (उनका मन डोलायमान था।) उनके शरीर काँप रहे थे। उनकी आँखों से, नवीन कुवलयफूलों से शहद झरता हो, ऐसा अश्रु बहने लगे। ६७४

अळियिनन् दडन्दॊरु मार्प्प वाय्हदिर्
ऒळिबड वुणर्हिल वुरङ्गु हिन्रन
तॆळिविल वित्तुयिल् विळैक्कुञ् जेक्कैयुळ्
कळिहळै निहर्त्तन कळिहॊळ् ळन्नमे 675

आय् कतिर् ऒळि पट–श्रेष्ठ सूर्यकिरण के लगते ही; **अळि इनम्**–भ्रमरकुल; **तटम् तॊरुम् आर्प्प**–सब स्थानों में गुंजारने लगे; **कळि कॊळ् अन्नम्**–मुदित हंस; **कळिकळै निकर्त्तत**–पियक्कड़ों के समान; **इन् तुयिल् विळैक्कुम्**–मधुर निद्रादायक; **चेक्कै उळ्**–(कमल की) शय्या में; **तॆळिवु इल उणर्किल**–विना सुध-बुध के; **उरङ्कुकिन्रन**–सोते हैं। ६७५

रावण की आज्ञा से अप्रत्याशित रीति से सूर्य का उदय हो गया। अलिकुल यत्र-तत्र गुंजार कर रहे थे। मुदित हंसवृन्द पियक्कडों के समान मधुर निद्रादायी कमल-शय्याओं पर सुध-बुध के विना सो रहे थे। ६७५

विरिन्दुरै तुरैतॊरुम् विळक्कम् यावैयुम्
ॲरिन्दिळु दः(ह्)कल वॊळियि ळन्दवाल्

अरुन्दुर्रै निरम्बिय वुयिरि नन्नबरैप्
पिरिन्दुर्रै तरुङ्गुलप् पेदै मारित्ते 676

अरुम् तुर्रै निरम्पिय–मनोरम श्रृंगार-प्रकार जाननेवाले; उयिरिन् अन्पर्रै–प्राण-प्यारे पतियों से; पिरिन्तु उर्रैतरुम्–अलग होकर रहनेवाली; कुल पेतै मारित्ते–कुलीन स्त्रियों की तरह: विरिन्तु उर्रै–विशाल नगर के; तुर्रै तोरुम्–प्रासादों में; विळक्कम् यावैयुम्–सभी दीपक; इळुतु ऍरिन्तु–घी जलकर; अ.'.(ह्)कल–कम नहीं हुआ तो भी; ऑळि इळन्त–मन्दप्रभ हुए। ६७६

कुछ स्त्रियों के रतिकलाविदग्ध प्रेमी पति उनको छोड़कर दूर चले गये थे और ये वियोगिनी नायिकाएँ घर पर रहीं। उन्हीं के समान बड़े-बड़े सौधों में रहे दीप भी मन्दप्रभ हो गये, यद्यपि उनमें घी अभी बाकी था (जलकर समाप्त न हुआ था)। ६७६

पुत्तॆन्दिद ळुरिञ्जुरुम् वॉळुदु पुल्लियुम्
वनैन्दिल वैहर्रै मलरु मामलर्
नतन्दलै यमळियिर् रुयिलु नङ्गैमार्
अनन्दलि नॆडुङ्गणो डॉत्त वामरो 677

इतळ् पुतैन्तु उरिञ्चुरुम्–दलों को सुन्दर रीति से विकसित करनेवाला; पॉळुतु पुल्लियुम्–समय (सूर्योदय का) आया, तो भी (अप्रत्याशित रीति से हो जाने के कारण); वैकर्रै मलरुम् मा मलर्–सवेरे फूलनेवाले उत्तम फूल; वनैन्तिल–मनोरम (विकसित) नहीं हुए; नतम् तलै–विशाल; अमळियिल् तुयिलुम्–शय्या पर सोनेवाली; नङ्कैमार्–स्त्रियों की; अनन्तलिन्–निद्रा में रहनेवाली; नॆटुम् कणोटु ऑत्त आम्–दीर्घ आँखों के समान (मुकुलित रहे)। ६७७

दलों का स्पर्श कर उन्हें विकसित करनेवाली उदय-वेला आ गयी। तो भी सवेरे जिन श्रेष्ठ फूलों को विकसना था, वे मनोरम प्रकार से नहीं विकसे। विशाल शय्या में सोनेवाली स्त्रियों की निद्रामग्न आँखों के समान बन्द ही रहे। ६७७

इच्चैयिर् रुयिल्बवर् यावर् कण्गळुम्
निच्चयम् पहलुन्द मिमैह णीङ्गिल
पिच्चैयु मिडुदुमॆन् रुणर्दल् पेणला
वच्चैयर् नॆडुमनै वायिन् मानवे 678

पिच्चैयुम् इट्टुतुम् ऍन्रु–भिक्षा देंगे, यह; उणर्तल् पेणला–भाव न रखनेवाले; वच्चैयर्–कृपणों के; नॆटु मनै वायिल् मान–बड़े घर के द्वार के समान; इच्चैयिल्–अपनी इच्छा भर; तुयिल्पवर् यावर् कण्कळुम्–सोनेवाले सभी की आँखें; पकलुम्–दिन होने पर भी; तम् इमैकळ्–अपनी पलकें; निच्चयम् नीङ्किला–निश्चय खोलकर नहीं जागीं। ६७८

सुप्त लोगों की आँखें नहीं खुलीं। उदय होने के बाद भी निश्चित

रूप से नहीं खुलीं। उनकी पलकें उन लोभी कृपण लोगों के घरों के द्वारों के समान बन्द रहे, जो कभी याचकों को कुछ नहीं देते। ६७८

नञ्जुरु पिरिवित्त नळ्ळि ऩीळमोर्न्
दञ्जुर नडुवणो रयर्वु ताङ्गिय
वॆञ्जिऱै नीङ्गिय वित्तैयि ऩोरॆन
नॆञ्जुरुक् कळित्तत्त नेमिप् पुळ्ळॆलाम् 679

नेमि पुळ् ऍलाम्–चक्रवाक पक्षी सब; नळ्ळित्–रात में; नञ्चु उरु पिरिवित्त–विष-सम वियोग में रहे; नीळम् ओर्न्तु–रात की लम्बाई का विचार करके; अञ्चुर–भय के साथ; ओर् अयर्वु ताङ्किय–क्लेशयुक्त रहे; नडुवण्–उस दुःख के समय के बीच; वॆम् चिऱै नीङ्किय–कठोर कारा से विमुक्त; वित्तैयितोर् ऍन–सुकृतों के समान; नॆञ्चु उरु कळित्तत्त–मन से मुदित हुए। ६७९

चक्रवाक पक्षियों को जब मालूम हुआ कि उदय-समय आ गया, तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे रात की लम्बाई का विचार करके भय के साथ निद्रा में लगी थीं। अब उसके बीच में ही उदय हो गया। कारामुक्त सुकृत्य वाले लोगों के समान वे बहुत आनन्दित हुए। ६७९

नाण्मदिक् कल्लदु नडुव णॆय्दिय
आणैयिऱ् ड़िरुक्कला वलरिऱ् पाय्वन
माण्वित्तैप् पयनरु वच्चै वायिल्शेर्
पाणरिऱ् ड़ळर्न्दत्त पाडऱ् ऱुम्बिये 680

पाटल् तुम्पि–सुरीले गानेवाले भ्रमर; नाळ् मतिक्कु अल्लतु–नवोदित चन्द्र के सिवा; आणैयिल्–रावण की आज्ञा से; नटुवण् ऍय्तिय–(अकाल में) बीच में आये दिन में; तिरुक्कला अलरिल्–जो नहीं विकसते, उन (कुवलय आदि) पुष्पों में; पाय्वत–सवेग आते हैं; माण् वित्तै पयन् अरु–महान सुकृत्यों से वंचित; वच्चै–कृपणों के; वायिल् चेर्–द्वार पर आये; पाणरिल्–याचकों के समान; तळर्न्तत्त–हतोत्साह हुए। ६८०

सुरीला गान गानेवाले भ्रमर बहुत शीघ्र उड़ते हुए कुवलय आदि पुष्पों के पास आये। वे तो नवोदित चन्द्र के सामने ही खिलने के आदी थे। अब तो रावणाज्ञा से सूर्य आ गया है। इसलिए वे बन्द रहे। भ्रमरों की स्थिति उन गवैये याचकों के समान हो गयी, जो कृपणों के द्वार पर जाते हैं और उसको बन्द पाते हैं। ६८०

अरुमणिच् चाळर मदत्ति ऩूडुबुक्
कॊरिहदि रित्तुयि लॆळुप्प वॆय्दवुम्
मरुळीडु तॆरुळुरु निलैयर् मङ्गैयर्
तॆरुळुर मॆय्प्पॊरु ळॆरिन्दि लारित्ते 681

अरु मणि चाळरम् अतनिऩ् ऊटु–श्रेष्ठ रत्नमय गवाक्षों द्वारा; पुक्कु–प्रवेश करके; अँरि कतिर्–सूर्य की किरणें; इऩ् तुयिल् अँऴुप्प–मधुर नींद से जगाने के लिए; अँय्तवुम्–आ गईं, आने पर; मङ्कैयर्—राक्षस-स्त्रियाँ; तॆरुळ् उऱ मॆय् पॊरुळ् तॆळिन्तिलारिऩ्–पूर्णरूप से साफ़ ज्ञान न रखनेवाले के समान; मरुळ् ओटु तॆरुळ् उऱु–भ्रम और बोध (तन्द्रा और जागरण) की मिश्रित; निलैयर्–दशा में रहीं। ६८१

सूर्य की किरणें उत्तम और बहुमूल्य रत्नजड़ित गवाक्षों द्वारा अन्दर घुसकर स्त्रियों को मधुर निद्रा से जगाने लगीं। तब वे न तो पूर्णरूपेण जाग पायीं, न निद्रा में ही रहीं। उनकी निद्रा-स्थिति उन लोगों के ज्ञान की स्थिति के समान थी, जो अपूर्ण रूप से विवृद्ध है। यानी संदिग्ध अवस्था में रही। ६८१

एवलिऩ्	वऩ्मैयै	यॆण्ण	ट्रेऱ्ऱलर्
नावलर्	नविऱ्ऱिय	नाळि	नामनूल्
कावलि	नुऩित्तुणर्	कणिद	माक्कळुम्
कूवुरु	कोऴियुन्	दुयिल्वु	कॊण्डवे 682

एवलिऩ् वऩ्मैयै–आज्ञा के प्रताप को (रात में दिन होने की स्थिति को); अँण्णल् तेऱ्ऱलर्–जान नहीं सके; नावलर् नविऱ्ऱिय–विद्वानों के रचित; नाळि नाम नूल्–समय के श्रेष्ठ शास्त्र के अनुसार; कावलिऩ् नुऩित्तु उणर्–रात में सचेत रहकर काल की गणना करनेवाले; कणित माक्कळुम्–ज्योतिषी लोग और; कूवु उरु कोऴियुम्–बाँग देनेवाले मुर्गे; तुयिल्वु कॊण्ट–निद्रामग्न हो रहे। ६८२

विद्वान ज्योतिषियों से रचे शास्त्र के निष्णात काल-गणितज्ञ, जो रात के काल की गणना करते रहे, सो गये। पहरों को बताने के लिए टेर लगानेवाले मुर्गे भी सोये रहे, क्योंकि उन्हें रावण की आज्ञा और उसके प्रताप से हुआ नतीजा मालूम नहीं था। यानी सूर्योदय हो गया सो बात उन्हें विदित नहीं थी। ६८२

इऩ्नैयन	वुलहिनि	ऩिहळ्ऴ्	मॆल्वैयिल्
कऩ्नैहळ्	लरक्कऩुङ्	गण्णि	ऩोक्किऩाऩ्
निऩ्नैवुरु	मऩत्तैयु	नॆरुप्पिऱ्	ऱीय्क्कुमाल्
अऩ्नैयवत्	तिङ्गळे	याहुमा	लॆऩ्ऱाऩ् 683

इत्तैयत–ऐसी बातें; उलकिऩ् निकऴुम् अँल्वैयिऩ्–जब संसार में हो रही थीं, तब; कऩै कऴल् अरक्कऩुम्–क्वणनशील पायलधारी राक्षस (रावण) ने भी; कण्णिऩ् नोक्किऩाऩ्–आँखों से (सूर्य को) देखकर; निऩैवु उरु मऩत्तैयुम्–स्मरणशील मन को भी; नॆरुप्पिल् तीय्क्कुम् आल्–आग से जला देगा; (आतलिऩ्–इसलिए;) अऩ्नैय अ तिङ्कळे आकुम्–वही चन्द्र यह है; अँऩ्ऱाऩ्–(अपनी धारणा) कही। ६८३

जब ये बातें हो रही थी, तो क्वणनशील पायल-चरण रावण ने सूर्य

को अपनी आँखों से देखा। कहा कि इसके बारे में सोचनेवाले मन को भी यह जला डालेगा। इसलिए यह वही चन्द्र है (जिसको हटाने की आज्ञा मैंने दी थी)। ६८३

तिङ्गळो वन्ऱिदु शॅल्वच् चॅङ्गदिर्
पॊङ्गुळैप् पच्चैमाप् पुरवित् तेरदाल्
वॅङ्गदिर् शुडुवदे यन्ऱि मॅय्युऱत्
तङ्गुदण् कदिर्शुडत् तहादॆन्ऱार्शिलर् 684

चिलर्—कुछ (भृत्यों) ने; इतु तिङ्कळो अन्ऱु—यह चन्द्र ही नहीं है; चॅल्व चॅम् कतिर्—श्रेष्ठ लाल किरणमाली; पॊङ्कु उळै—उभरे, बड़े अयाल वाले; पच्चै मा पुरवि—हरे बड़े अश्वों का; तेरतु आल्—रथ का है, इसलिए; वॅम् कतिर्—तापक किरणों का; मॅय्—शरीरी; उऱ चुट्टुवते अन्ऱि—खूब जलायगा, उसके सिवा; तण् तङ्कु कतिर्—शीत-भरी किरणों का चन्द्र; चुट तकातु—जला नहीं सकेगा; ऍन्ऱार्—कहा। ६८४

वहाँ जो रहे, उन किंकरों ने उत्तर में निवेदन किया कि नहीं! यह चन्द्र ही नहीं है। विश्वास मानिए। यह उत्तम और लाल किरणमाली है। उसके रथ में बड़े और हरे अश्व जुते हैं। इसी की किरणें गरम होती हैं और वे ही ताप देती हैं। चन्द्र शीतल-किरण है और वह नहीं जलाता। ६८४

नीलच् चिहरक् किरियन्नव निन्ऱ वॅय्योन्
आलत् तिनुम्वॅय्य नहऱ्ऱि यरऱ्ऱु हिन्ऱ
वेलैक् कुरलैत् तविर्हॆन्ऱु विलक्कि मेलै
मालैप् पिऱैप्पिळ्ळैयैक् कूवुदिर् वल्लै यॆन्ऱान् 685

चिकर नील किरि अन्नवन्—शिखरों-सहित नीले पर्वत के समान रावण; निन्ऱ वॅय्योन्—सामने स्थित यह सूर्य; आलत्तिनुम् वॅय्यन्—हलाहल से भी तापक है; अकऱ्ऱि—इसे दूर करके; अरऱ्ऱुकिन्ऱ—रोनेवाले; वेलै कुरलै—समुद्र के गले को; तविर्क ऍन्ऱु—चुप रहो, कहकर; विलक्कि—रोककर; मेलै—पश्चिम दिशा में उदित; मालै पिऱै पिळ्ळैयै—शाम के बालचन्द्र को; वल्लै—शीघ्र; कूवुतिर्—पुकारो; ऍन्ऱान्—आज्ञा दिलाई। ६८५

तब शिखरों सहित पर्वत-सम रावण ने आज्ञा सुनायी कि सामने जो है, वह सूर्य हलाहल से भी संतापी लगता है। उसको हटाओ। साथ-साथ उस समुद्र को भी चुप कराओ जो विलाप रहा है! फिर पश्चिम दिशा में जो उदित होता है, उस बाल-कला-चन्द्र को पुकारो। ६८५

शॊन्ना निरुदर्क्किरै यम्मॊऴि शॊल्ल लोडुम्
अन्नाळि निरम्बिय वम्मदि याण्डोर् वेलै

मुन्नाळि निळम्बिऱै याहि मुळैत्त वॆन्ऱाल्
ॲन्नाळ् मरुन्दव मन्ऱि यियट्ऱ लामो 686

निरुतरक्कु इऱै–राक्षसों के राजा ने; चॊन्ततान्–वैसा कहा; अ मॊऴि चॊल्लल् ओटुम्–वह वचन कहते ही; अ नाळिल् निरम्पिय–वह (पन्द्रह) दिनों का; अ मति–पूर्णचन्द्र; आण्टु–तब; ओर् वेलै–उसी समय; मु नाळ् इळम् पिऱै आकि–तीन दिनों का कलाचन्द्र बनकर; मुळैत्ततु–उदय हुआ; ऍन्ऱाल्–तो; अरुम् तवम् अन्ऱि–बिना कठिन तपस्या के; ॲ नाळुम्–किसी भी दिन; इयट्ऱल् आमो–ऐसा किया जा सकता है क्या। ६८६

राक्षसाधिपति ने यह आज्ञा सुनायी। सुनाते ही वह पूर्णचन्द्र तिरोहित हो गया। वहाँ तीन दिन का बालचन्द्र उदित हुआ। तो (कवि तपस्या की शक्ति की महिमा में कहते हैं कि) तपस्या की महिमा कितनी बड़ी है? उसके सिवा कौन सी चीज़ है जो ऐसा कर सकती है? (यह अर्थ भी लग सकता है कि तपस्या को छोड़ कौन कार्य है जो करने योग्य है?)। ६८६

कुडपालिन् मुळैत्तदु कण्ड कुणङ्ग डीयोन्
वडवावन् लन्ऱॆन्निन् मण्विडर् वैत्त पाम्बिन्
विडवा ळॆयिऱन्ऱॆन्नि लॆन्नै वॆहुण्ड माले
अडवा ळुरुविक्कॊडु तोन्ऱिय दाहु मन्ऱे 687

कुटपालिन्–पश्चिमी दिशा में; मुळैत्ततु–उदय हुआ; कण्ट–देख; कुणक्कळ् तीयोन्–दुर्गुणी; वटवा अनल्–वड़वाग्नि है; अन्ऱु ऍन्तिल्–नहीं तो; मण् पिटर् वैत्त–भूमि को गले पर ढोनेवाले; पाम्पिन्–शेषनाग का; विट वाळ् ऍयिऱु–विषैला प्रकाशमय दाँत है; अन्ऱु ऍन्तिल्–वह भी नहीं तो; ऍन्नै वॆकुण्टु–मेरे विरुद्ध गुस्सा करके; माले–संध्याकाल में; अट–मारने के लिए; वाळ् उरुवि कॊटु–तलवार खींच लेकर; तोन्ऱियतु आकुम्–प्रकट हुआ होगा। ६८७

दुर्गुणी रावण ने पश्चिमी दिशा में उदित कला-चन्द्र को देखा। उसने कहा कि रे, यह तो वड़वाग्नि है! अगर नहीं तो भूभारवाही शेषनाग का उज्ज्वल विषैला दाँत होगा! वह भी नहीं है तो संध्याकाल मुझसे वैर करके मुझे मारने के लिए तलवार लिये हुए प्रकट हो आया होगा! । ६८७

तादुण् शडिलत्तलै वैत्तदु तण्ड रङ्गम्
मोदुङ् गडलिऱ् किडैमुन्दु पिऱन्द पोदे
ओदुङ् गडुवैत्तन् मिडऱ्ऱि लॊळित्त तक्कोन्
ईदुङ् गडुवामॆन वॆण्णिय वॆण्ण मन्ऱो 688

ओतुम्–सबसे चर्चित; कटुवै–विष को; तन् मिटऱ्ऱिल् ऒळित्त–कण्ठ में जिन्होंने दबा रखा है; तक्कोन्–श्रेष्ठ शिवजी ने; तण् तरङ्कम् मोतुम्–शीतल तरंग-ताड़ित; कटलिऱ्कु इटै–(क्षीर-) सागर से; मुन्तु पिऱन्त पोते–पहले जब प्रकट

हुआ तभी; तातु उण्—मकरन्द-भरी; चटिल तलै—जटा से अलंकृत सिर पर; वैतुततु—रख लिया तो; ईतुम्—यह (चाँद) भी; कटु आम्—विष है; ऐंत ऍण्णिय—ऐसा सोचा हुआ; ऍण्णम् अन्ऱो—विचार था न। ६८८

हाँ! यह भयंकर विष ही होगा। क्योंकि विषकंठ शिवजी ने शीतल तरंगाकुल क्षीरसागर पर उस विष के पहले इस चाँद को लेकर अपनी परागयुक्त जटा से अलंकृत सिर पर धारण क्यों किया? यही समझकर न कि यह भयंकर विष है? । ६८८

उरुमीत्त वलत्तुयिर् नुङ्गिय तिङ्ग ळोडित्
तिरुमिच् चिरुमॅन् पिऱैदीमै कुऱैन्द दिल्लै
करुमैक् कऱैयॅन्ऱलि नञ्जु कलन्द पाम्बिन्
पॅरुमै शिऱुमैक्कोरु पॅऱ्ऱि कुऱैन्द दुण्डो 689

ऍञ्चल् इल् नञ्चु—अक्षय विष; कलन्त पाम्पिन्—(से) युक्त सर्पों में; पॅरुमै चिऱुमैक्कु—बड़ा क्या, छोटा क्या; ओरु पॅऱ्ऱि—(विष के) रखने में; कुऱैन्ततु उण्टो—कमी है क्या; उरुम् ओत्त वलतु—वज्र-सम बल के साथ; उयिर् नुङ्किय—प्राण खानेवाला; तिङ्कळ्—पूर्णचन्द्र; ओटि—भागकर; तिरुमि—बदलकर; इ चिऱु मॅल् पिऱै—यह छोटा कोमल बालचन्द्र (जो आया); तीमै कुऱैन्ततु इल्लै—बुराई में कम नहीं है। ६८९

अक्षय विष-भरे साँपों में छोटा क्या बड़ा क्या? विष के सम्बन्ध को लेकर सोचा जाय तो कोई किसी से कम नहीं! वज्र-सम बल के साथ मेरी जान का ग्राहक जो रहा वह पूर्णचन्द्र चला, फिर इस कोमल बालचन्द्र के रूप में आया। यह उससे कम दुखदायी नहीं लगता। ६८९

कन्ऱक् कऩियुमिरु ळत्तैयुङ् गाण्डु मन्ऱे
मुन्ऩैक् कदिर्नन्ऱि दहऱ्ऱुदिर् मॊय्म्बु शान्ऱ
ऍन्ऩैच् चुडुमेलिऩि येळुल हत्तिल् वाळ्वोर्
पिन्ऩैच् चिलरुय्वरॆन् ऱङ्गोरु पेच्चु मुण्डो 690

मुन्नै कतिर् नन्ऱु—पहले आया सूर्य ही अच्छा; कन्ऱ कऩियुम्—पूर्णरूप से घना; इरुळ् तन्नैयुम्—अन्धकार भी; काण्टुम्—देख लूँगा; इतु अकऱ्ऱुतिर्—इसको हटा दो; मॊय्म्पु चान्ऱ—बलवान; ऍन्नै चुटुमेल्—मुझे जलायगा (यह चाँद) तो; इऩि—आगे; एऴ् उलकत्तिल् वाळ्वोर्—सातों लोकों में रहनेवाले; पिन्नै चिलर्—फिर कुछ लोग; उय्वर् ऍन्ऱु—इससे बच पायेंगे, ऐसा; अङ्कु ओरु पेच्चुम् उण्टो—वहाँ वचन होगा क्या। ६९०

पहले जो सूर्य रहा वही अच्छा लगता है! पूर्णरूप से घना बना अन्धकार कैसा होगा? —यह भी देख लूँ। हटाओ इसको। बलशाली मुझे भी यह इस प्रकार जला सकता है, तो सातों लोकों के वासियों में किसी के जान से बचने की बात ही उठेगी! । ६९०

आण्डप् पिऱैनीङ्गलु मॅय्दिय वन्द कारम्
तीण्डऱ् करिदाय्प्पल तेय्प्पिनुन् दॆय्क्क लाहा
वेण्डिऱ् करवत्तिरप् पत्तियि नीर्न्दु वीऴ्त्तुक्
काण्डऱ् करिदाय्प्पल कन्दु तिरट्ट लाहुम् 691

आण्टु–तब; अ पिऱै नीङ्कलुम्–वह बालचन्द्र हटा तो; ॲय्तिय अन्तकारम्–आया अन्धकार; तीण्टऱ्कु अरिताय्–अस्पृश्य; पल तेय्प्पित्तुम्–खूब बार-बार रगड़ने पर भी; तेय्क्कल् आका–रगड़कर मिटाना कठिन था; वेण्टिल्–चाहने पर; करपत्तिर पत्तियिल्–आरे से; ईर्न्तु–काटकर; वीऴ्त्तु–गिराकर; काण्टऱ्कु अरिताय्–अदर्शनीय; पल कन्तु–अनेक खम्भों के रूप में; तिरट्टल् आकुम्–सँवारा जा सकता है। ६९१

तब बालचन्द्र हट गया। अन्धकार आ गया। वह ऐसा था कि कोई उसे स्पर्श नहीं कर सकता, न उसे रगड़कर उसका अभाव किया जा सकता था। चाहने पर शायद उसे आरे से काटकर उसके अनेक गोल खम्भे बनाये जा सकते थे। ६९१

मुरुडीर्न् दुरुट्टऱ् कॅळिदॅन्बदॅन् मुऱ्ऱ मुऱ्ऱिप्
पॉरुडीर्न्द ञानच् चुडर्वुक्कु वळङ्ग लिन्ऱिक्
कुरुडीङ्गि दॅन्नक् कुऱिक्कॊण्डहण् णोट्टङ् गुन्ऱि
अरुडीर्न्द नॅञ्जिऱ् करिदॆन्बदव् वन्द कारम् 692

मुरुट्टु ईर्न्तु–गाँठें आदि काट फेंककर; उरुट्टऱ्कु–गोल (खम्भों के रूप में) बनाना; ॲळितु ॲन्पतु ॲन्–आसान है, यह कहना क्या (विशेषता रखता) है; मुऱ्ऱ मुऱ्ऱि–सम्पूर्ण रूप से पक्व; पॊरुळ् तीर्न्त–असंदिग्ध तत्त्वज्ञ; ञानम् चुटर् पुक्कु–ज्ञान की ज्योति प्रवेश करके; वळङ्कल् इन्ऱि–प्रकाशमान नहीं है (जिसमें); ईङ्कु इतु कुरुटु–यहाँ यह अन्धा है; ॲन्न कुऱि कॊण्ट–ऐसा कहा जानेवाला; कण्णोट्टम् कुन्ऱि–दाक्षिण्य से हीन; अरुळ् तीर्न्त–दया से रहित; नॅञ्चित्–(जो है उस) मन के समान; अ अन्तकारम्–वह अन्धकार; करितु ॲन्पतु–काला कहा जा सकता था। ६९२

हाँ— गाँठें आदि हटाकर उसके खम्भे बनाये जा सकते है—यह कहना कौन सी विशेषता रखता है? वह अन्धकार उस अज्ञ-जन के मन से बढ़कर काला था, जिसमें तत्त्वदर्शी पक्व ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाया था, जो 'यह अन्धा है', इस कथन का पात्र हो गया था और जिसमें न दाक्षिण्यभाव था, न दयाभाव। ६९२

विळ्ळादु शॅऱिन्दिडै मेलुऱ वीङ्गि यॅङ्गुम्
नळ्ळा विरुळ्वन्दहन् ञालम् विळुङ्ग लोडुम्
ॲळ्ळा वुलहियावैयुम् यावरुम् वीव दॅन्ब
दुळ्ळा दुमिळ्न्दान् विडमुण्ड वीरुत्त नॅन्ऱान् 693

विळ्ळातु–अखण्डित; इटै चॅरिन्तु–ठस; मेल् उर वीङ्कि–ऊपर बढ़कर; ऍङ्कुम् नळ्ळा–कहीं भी न लगनेवाला; इरुळ् वन्तु–अन्धकार आया; अकल् आलम् विळुङ्कल् ओटुम्–और उसके विशाल संसार को निगलते ही; विटम् उण्ट ऒरुत्तन्–विषखादक शिव ने; ऍळ्ळा उलकु यावैयुम्–अनिंद्य सभी लोक; यावरुम्–और उनके वासी; वीयुम् ऍन्नपतु उळ्ळातु–मिट जायँगे, यह नहीं सोचकर; उमिळ्न्तान्–उगल लिया है; ऍन्ऱान्–कहा। ६६३

अविच्छिन्न, घना और सर्वत्र व्याप्त विपुल अन्धकार, जो कहीं चिपका नहीं रहता, आकर विशाल विश्व को निगल गया। रावण ने टीका की कि शिवजी ने जो पहले विष को निगल लिया था अब उसे उगल दिया है, विना यह सोचे-विचारे कि इसके फैलने से सारे लोक और उन लोकों के वासी मिट जायँगे। ६९३

वेलैत् तलैवन् दॊरुवन्वलि याल्वि ळुङ्गुम्
आलत्ति नडङ्गुव दन्ऱि दऱिन्दु णर्न्देन्
ञालत्तॊडु विण्मुदल् यावैयु नावि नक्कुम्
कालक् कनल्हार् विडमुण्डु करुत्त दन्ऱे 694

ऒरुवन्–अद्वितीय शिव ने; वेलै तलै वन्तु–समुद्र पर आकर; वलियाल्–अपने बल से; विळुङ्कुम्–(जिसको) निगला; आलत्तिन्–उस हलाहल में; इतु अटङ्कुवतु अन्ऱु–यह समाविष्ट होनेवाला नहीं; अऱिन्तु उणर्न्तेन्–जान-समझ लिया है; ञालत्तु ऒटु–भू के साथ; विण् मुतल् यावैयुम्–आकाश आदि सभी (भूतों) को; नाविन् नक्कुम्–अपनी जीभ से चाट लेनेवाला; काल कनल्–युगान्तकाल की आग; कार् विटम् उण्टु–काला विष खाकर; करुत्ततु–जो काली बनी, वह। ६६४

(फिर उसे लगा कि) यह विष उस हलाहल के समान खाया नहीं जा सकता, जिसको अद्वितीय परमेश्वर ने क्षीरसागर-तट पर आकर उस दिन ले निगल लिया। मैंने जान-बूझ लिया है। यह युगांत अग्नि है, जो भूलोकों के साथ आकाशलोकों को भी चाट ले सकती है और जो विष खाकर काली बन आयी है। ६९४

अम्बु मनलु नुळैयाक्कन वन्द कारत्
तुम्बु मळैहॊण्डय लॊप्परि दाय तुप्पिन्
कॊम्बर् कुरुम्बैक् कुलङ्गॊण्डदु तिङ्ग डाङ्गि
वॅम्बुन् दमियेन्मुन् विळक्कॊनत् तोन्ऱु मन्ऱे 695

अयल् ऒप्पु–कोई दूसरी उपमा; अरितु आय–जिसके लिए कहना कठिन है; तुप्पित् कॊम्पर् अतु–एक प्रवालवल्लरी; अम्पुम् अनलुम् नुळैया–बाण या अनल प्रविष्ट न हो सके; कन–उतना घना; अन्तकार तुम्पु मळै कॊण्टु–अन्धकारमय मेघ ढोकर; कुरुम्पै कुलम् कॊण्टतु–दो नारियल के कच्चे फलों से युक्त; तिङ्कळ् ताङ्कि–

चन्द्र को धरकर; वॆम्पुम् तमियेन् मुन्–तप्त मेरे सामने; विळक्कु ऍन–दीप के समान; तोन्ऱुम्–दिखाई देता है; (अन्ऱु–ए)। ६६५

(रावण के सामने देवी का मिथ्या रूप प्रकट होता है।) यह क्या? एक अनुपम प्रवाललता दिखाई देती है! उसके सिर पर बाणों और अग्नि से भी अभेद्य और घना मेघ है और उसकी देह पर दो नारियल के कच्चे फल हैं। इनके साथ वह चन्द्र को भी धारण किये हुए अकेले दुःख-पीड़ित मेरे सामने दीप के समान प्रकट हुई है। ६९५

मरुळूडु वन्द मयक्कोमदि मट्रॊ मुण्डो
तॆरुळेमि दॆन्नो दिणिमैयिळैत् तालु मॊव्वा
इरुळूडिरु कुण्डलङ् गॊण्डु मिरुण्ड नीलच्
चुरुळोडुम् वन्दोर् शुडर्मामदि तोन्ऱु मन्ऱे 696

मरुळ् ऊटु वन्त मयक्को–चित्त-भ्रम से आया मोह; मति मट्ऱुम् उण्टो–दूसरा (अनोखा) चन्द्र भी है क्या; इतु ऍन्नतो–यह क्या ही है; तॆरुळेम्–मेरी समझ में नहीं आता; तिणि मै इळैत्तालुम्–अंजन को ठस भरने पर भी; ऒव्वा–वह इसकी तुलना नहीं कर सकता, ऐसा; इरुळ् ऊटु–अन्धकार-मध्य; इरु कुण्टलम् कॊण्टु–दो (कर्ण-) कुण्डलों से भूषित होकर; इरुण्ट नील चुरुळ् ओटुम्–अन्धकार-सम काले घुंघराले केश के साथ और; चुटर् मा मति तोन्ऱुम्–उज्ज्वल श्रेष्ठ चन्द्र दिखाई देता है। ६९६

क्या यह मेरा भ्रमजन्य मोह है? या सचमुच ऐसा अनोखा चाँद भी तत्त्वतः है? मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता। अंजन को ठस भरकर ऐसा बनाने की कोशिश करे तो भी नहीं बन सके, ऐसे अन्धकार के मध्य वह दिखाई देता है। उसके दो कर्णकुण्डल हैं और अन्धकार-सम काला घुँघराला केश है। इस सजधज के साथ एक पूर्णचन्द्र आकर दिखाई देता है। ६९६

पुडैहॊण्डॆळ्ळु कॊङ्गैयु मल्हुलुम् बुल्हि निऱ्कुम्
इडैहण्डिल मल्लदॆल् लावुरु वुन्दॆ रिन्दाम्
विडनुङ्गिय कण्णुडै यारिवर् मॆल्ल मॆल्ल
मडमङ्गैय रायॆन् मनत्तव रायि नारे 697

पुटै कॊण्टु ऍऴु–वक्ष के दोनों पार्श्वों में उठे हुए; कॊङ्कैयुम्–स्तनों और; अल्कुलुम्–कटिप्रदेश से; पुल्लि निऱ्कुम्–लगी रहनेवाली; इटै कण्टिलम्–कमर नहीं देखी; अल्लतु–उसके विना; ऍल्ला उरुवुम्–सारा रूप; तॆरिन्ताम्–(मैंने) देख लिया; विटम् नुङ्किय–विषभक्षक; कण् उटैयार्–आँखों की स्वामिनी; इवर्–यह; मॆल्ल मॆल्ल–धीरे-धीरे; मट मङ्कैयर् आय्–बाला स्त्री बनकर; ऍन् मनत्तवर् आयिनार्–मेरे मन की (वासिनी) हो गई। ६९७

छाती के दोनों पार्श्वों में उठे रहनेवाले उरोजों को देखता हूँ। नीचे

नितंब देखता हूँ। पर इन दोनों के बीच दोनों से लगी रहनेवाली कमर नहीं देख पाता। धीरे-धीरे उस कटिहीना सुन्दरी का सारा रूप प्रकट हो गया है। विषभक्षक आँखों से भूषित यह वाला स्त्री हैं! वह मेरे मन में आकर बस गयी हैं। ६९७

पण्डे युलहेऴिनु मुळ्ळ पडैक्क णारैक्
कण्डे निदुबोलीरु पॅण्णुरुक् कण्डि लेन्नाल्
उण्डे यॅतिल्वेऱिति यॅङ्गै युणरत्तित निन्ऱ
वण्डेरु कोदै मडवारिव राहु मन्ऱे 698

पण्टु ए–पहले ही; उलकु एऴितुम् उळ्ळ–सातों लोकों को; पटै कण्णारै–(भाला, तलवार आदि) हथियार-सी आँखों वालियों को; कण्टेन्–देखा है; इवर् पोल्वतु–इनके समान; ओर् पॅण् उरु–एक स्त्रीरूप; कण्टिलेन्–नहीं देखा है; वेऱु इति उण्टे ऍतिल्–दूसरी अब एक (देखी जाती) है तो; ऍङ्कै उणरत्तित निन्ऱ–मेरी छोटी बहिन ने जिसका वर्णन किया; वण्टु एऱु कोतै मटवार्–वह भ्रमरवाही केश वाली स्त्री; इवर् आकुम्–यही होगी। ६९८

पहले ही मैंने सातों लोकों की वासिनी, भाला, तलवार आदि हथियारों से तुल्य आँखों से शोभित स्त्रियों को देखा है। पर इनकी-सी सुन्दरता को प्राप्त स्त्री को नहीं देखा है। अब जो ऐसी एक दिखाई देती हैं, तो यह अवश्य वही स्त्री होगी जिस भ्रमरवाही केश से भूषित सुन्दरी का वर्णन मेरी छोटी बहिन शूर्पणखा ने किया था। ६९८

पूण्डिप् पिणिया नुऱुहिन्ऱदु तान्बौ ऱादाळ्
तेण्डिक् कॉडुवन्दन्ळ् शॅय्वदोर् माऱु मुण्डो
काण्डऱ् किनियाळुरुक् कण्डवर् केट्कु माऱ्ऱाल्
ईण्डिप् पॊऴुदेविरैन् दॅङ्गैयैक् कूवु हॅन्ऱान् 699

इ पिणि पूण्टु–यह रोग पाकर; यान् उऱुकिन्ऱतु–जो कष्ट उठा रहा हूँ, उसे; तान् पॊऱाताळ्–खुद न सह सककर; तेण्टि कॊटु वन्ततळ्–ढूँढ़ लाई है; चॅय्वतु ओर् माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार क्या होगा; काण्टऱ्कु इतियाळ्–देखने में मधुर; उरु–इनका रूप; अवळ् कण्टु–वह (शूर्पणखा) देखे; केट्कुम् आऱु आल्–मैं भी पूछकर जान लूं (कि क्या यह वही है); ईण्टु–यहीं; इ पॊऴुते–अभी; विरैन्तु–शीघ्र जाकर; ऍङ्कैयै–मेरी अनुजा को; कूवुक–बुलाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ६९९

(मेरी बहिन भी कितनी अच्छी है!) मेरी बहिन ने मेरी व्यथा देखी और वह सह नहीं सकी। इसलिए वह उसे ढूँढ़ लायी है। उसका क्या प्रत्युपकार करूँ? जो सामने है, इस सुन्दर रूपवती को वह भी देखे और मैं प्रश्न कर ठीक-ठीक जान लूँ। उसने आज्ञा दी कि अभी यहीं मेरी बहिन को शीघ्र बुलाओ। ६९९

ॲन्ऱा तॅनलुङ् गडिदेहित्तर् कूवु मॅल्लै
वन्ऱा णिरुदक्कुलम् वेरऱ मायत्तल् शॅय्वाळ्
ऑन्ऱाद कामक् कनलुट्टॅऱ लोडु नाशि
पॊन्ऱाळ्हुळै कॊङ्गैहळ् पोक्किनळ् पोय्प्पु हुन्दाळ् 700

ॲन्ऱान्–(रावण ने) कहा; ॲनलुम्–कहते ही; कटितु एकितर्–शीघ्र गये; कूवुम् ॲल्लै–पुकारने पर; वन् ताळ्–वली, उद्यमी; निरुत कुलम्–राक्षसकुल को; वेर् अऱ–जड़ से काटकर; मायत्तल् चॅय्वाळ्–मिटाने में तत्पर; ऑन्ऱात–अनुचित; काम कनल्–कामाग्नि के; उळ् तॅरल् ओटुम्–अन्दर दाहने से; नाचि–नासिका; पॊन् ताळ् कुळै–स्वर्णकुण्डल-धारी कानों और; कॊङ्ककळ्–स्तनों को; पोक्किनळ्–(जिसने) गँवाया; पोय् पुकुन्ताळ्–(वह शूर्पणखा) जा पहुँची। ७००

रावण का यह कहना था कि किंकरों ने जाकर शूर्पणखा को बुलाया। वह तो पराक्रमी और उद्यमी राक्षसकुल को ही जड़ से काटकर मिटाने के कार्य में तत्पर रही ! उसने अपने लिए बिल्कुल अनुचित प्रेम किया और उस कामाग्नि के अन्दर जलाते उसने जाकर अपनी नाक को, स्वर्णकुण्डलभूषित कानों को और स्तनों को कटवा लिया था। ऐसी शूर्पणखा रावण के पास जा पहुँची। ७००

पॊय्न्निन्ऱ नॅञ्जिऱ्कॊडि याळ्बुहुन् दाळै नोक्कि
नॅय्न्निन्ऱ कूर्वाळव नेरुऱ नोक्कि नङ्गै
मैन्निन्ऱ वाट्कण् मयिलिन्ऱॅन वन्दॆन् मुन्नर्
इन्निन्ऱवळा मिङ्गॊ लियम्बिय शीदै यॆन्ऱान् 701

नॅय् निन्ऱ कूर् वाळ्–घृत-लगी तीक्ष्ण तलवार-धारी; अवन्–उस (रावण) ने; पॊय् निन्ऱ नॅञ्चिल्–असत्य जिसमें स्थायी रहा, उस मन की; कॊटियाळ्–क्रूरी; पुकुन्ताळै–जो पहुँची, उसको; नेर् उऱ नोक्कि–सामने आया देख; नङ्कै–बाले; इयम्पिय–तुमने (जिसके बारे में) कहा; चीतै–वह सीता; मै निन्ऱ वाळ् कण्–अंजनयुक्त तलवार-सी आँखों की हो; मयिल् निन्ऱतु ॲन–मोर आकर खड़ा हो, ऐसा; ॲन् मुन्नर् वन्तु–मेरे सामने आकर; इ निन्ऱवळ् आम् कॊल्–जो यह खड़ी है, यही है क्या; ॲन्ऱान्–पूछा। ७०१

घी-लगी तलवारधारी रावण ने कपटनिलय मन वाली शूर्पणखा को वहाँ आया देखकर पूछा कि बाले ! तुमने किसी सीता के बारे में कहा न ? इधर मेरे सामने अंजनभूषित तलवार-सम आँखें लिये, मोर-सी एक स्त्री खड़ी है। देखो और कहो कि क्या यही वह सीता है ? । ७०१

शॅन्दामरैक् कण्णॊडुञ् जॅङ्गनि वायि नोडुम्
शन्दार्दडन् दोळॊडुन् दाळ्दडक् कैह ळोडुम्
अन्दारह लत्तॊडु मञ्जनक् कुन्ऱमॆन्न
वन्दानिव नाहुमव् वल्वि लिराम नॆन्ऱाळ् 702

चॅम् तामरै कण् ओंटुम्–लाल कमल-सम आँखों के साथ; चॅम् कनि वायिऩ् ओटुम्–लाल (बिंब-) फल-सम अधरों के साथ; चऩ्ऩु आर्–सुन्दरता-भरे; तटम् तोळ् ओंटुम्–विशाल कन्धों के साथ और; ताळ् तट कॅकळ् ओटुम्–दीर्घ और विशाल हाथों के साथ; अम् तार् अकलत्तु ओटुम्–सुन्दर हार-शोभित वक्ष के साथ; अञ्चऩ कुऩ्ऱम् अऩ्ऩ–अंजन-पर्वत के समान; वऩ्ताऩ् इवऩ्–जो यह आया है; अ वल् विल्–वह कठोर धनुर्धर; इरामऩ् आकुम्–राम ही है; ऍऩ्ऱाळ्–बोली। ७०२

(शूर्पणखा तो हमेशा श्रीराम के ध्यान में रहती रही। उसे श्रीराम का रूप ही दिखाई दिया।) उसने कहा कि जो रूप यह दिखाई दे रहा है, वह अंजनगिरि के समान धनु हाथ में लिये आया हुआ राम है। उसके लाल कमल के समान आँखें हैं, लाल बिम्बफल के समान अधर हैं। मनोरम विशाल कंधों और दीर्घ विशाल हस्तों के साथ वह दिखता है, देखो। ७०२

पॅण्बालुरु नाऩिदु कण्डदु पेदै नीयीण्
डॅण्बालु मिलाददो राणुरु वॅऩ्ऱ दॅऩ्ऩे
कण्बालुरु मायै कवऱ्ऱुदल् कऱ्ऱ नम्मै
मण्बालव रेहोल् विळैप्पवर् मायै यॅऩ्ऱाऩ् 703

पेतै–मूढ़ स्त्री; नाऩ् कण्टतु इतु–जो मैं देख रहा हूँ, यह; पॅण् पाल् उरु–स्त्री जाती का रूप है; नी–तुम; ईण्टु–यहाँ; ऍण् पालुम् इलाततु–कहीं भी असम्भाव्य; ओर् आण् उरु–एक पुरुष का रूप; ऍऩ्ऱतु–कहती हो, सो; ऍऩ्ऩे–क्या है; कण् पाल्–आँखों के सामने ही; उरु मायै–बड़ी माया द्वारा; कवऱ्ऱुतल् कऱ्ऱ–(दूसरों को) धोखा देना जो जानते हैं; नम्मै–उन हमको; मण्पालवरे–मर्त्य-मानव; मायै विळैप्पवर् कोल्–वंचित करनेवाले हैं क्या; ऍऩ्ऱाऩ्–(आश्चर्य से) पूछा। ७०३

रावण को अचम्भा हुआ। उसने कहा कि हे अबोध नारी! मेरे सामने जो दिखता है, वह तो स्त्री का रूप है। तुम तो असंभाव्य किसी पुरुष की बात कह रही हो! यह क्या बात है? हम मायाकार्य में प्रवीण हैं। हमें भी धोखा दे रहे हैं क्या ये मर्त्यलोक के मानव?। ७०३

ऊऩ्ऱुमुणर् वप्पुऱ मॊऩ्ऱिऩु मोड लिऩ्ऱि
आऩ्ऱुमुळ दायॅंडि दाशै कऩऱ्ऱ निऩ्ऱायक्
केऩ्ऱुऩ्ऱॅदि रेविळि नोक्कु मिडङ्ग डोऱुम्
तोऩ्ऱुमऩै याळिदु तॊऩ्ऩॅऱि याहु मॅऩ्ऱाळ् 704

ऊऩ्ऱुम् उणर्वु–सुस्थिर भावना; अ पुऱम् ऒऩ्ऱिऩुम्–दूसरी तरफ़ कहीं; ओटल् इऩ्ऱि–नहीं जाती; आऩ्ऱुम्–बहुत; उळतु आम्–बनी है; नॅटितु आचै कऩऱ्ऱ–गम्भीर काम-राग जलता है, उस स्थिति में; निऩ्ऱायक्कु–जो स्थित हो उस तुम्हें; उऩ् ऍतिरे–तुम्हारे सामने; एऩ्ऱ विळि नोक्कुम्–तुम्हारी दृष्टि जहाँ गौर करती हैं, वहाँ; इटङ्कळ् तोऱुम्–उन सभी स्थानों में; अऩैयाळ् तोऩ्ऱुम्–वही दिखाई देगी; इतु–यह; तॊल् नॅऱितु आकुम्–प्राचीन (मनो-) धर्म ही है; ऍऩ्ऱाळ्–(शूर्पणखा ने) कहा। ७०४

शूर्पणखा ने समझाया कि भाई तुम्हारी सीता की भावना स्थिर और दृढ़ है। इसलिए तुम्हारी कल्पना दूसरी ओर नहीं जाती। तुम्हारा सीता के प्रति राग तुम्हें जला रहा है और तुम तप्त स्थिति में हो। इस स्थिति में तुम सर्वत्र सीता को ही देखो —यह कोई नई या विचित्र बात नहीं। यह तो प्राचीन और परिचित मनोधर्म ही है। ७०४

अऩ्ऩाळदु कूऱ वरक्कऩ् मऩ्ऩ दाह
निऩ्ऩालव् विरामऩैक् काणुरु नीरॆ नॆऩ्ड्राऩ्
ॲऩ्ऩाळव नॆऩ्ऩैयित् तीर्वरु मिऩ्ऩल् शॆय्दाऩ्
अऩ्ऩाणमुदल् यानु मयर्त्तिल नाहु मॆऩ्ड्राळ् 705

अऩ्ऩाळ्–उसके; अतु कूऱ–ऐसा कहने पर; अरक्कऩुम्–राक्षस रावण ने; अऩ्ऩतु आक–वही हो; निऩ्ऩाल्–तुमसे; अ इरामऩै काणुकुऱुम्–उस राम को देखे जाने का; नीर्–गुण; ॲऩ् ॲऩ्ड्राऩ्–कैसा, पूछा; ॲ नाळ–जिस दिन; ॲऩ्ऩै–मुझे; इ तीर्वु अऱु–यह प्रत्यवायहीन; इऩ्ऩल् चॆय्ताऩ्–कष्ट दिया; अ नाळ् मुतल्–उस दिन से; यातुम्–मै भी; अयर्त्तिलऩ् आकुम्–भूली नहीं हूँ; ॲऩ्ड्राळ्–कहा। ७०५

यह सफ़ाई सुनकर रावण ने सकारा कि हाँ! वही ठीक हो सकता है। फिर पूछा कि तुम राम को ही देख रही हो, इसका रहस्य क्या है? शूर्पणखा ने यह सुनकर चातुर्य से उत्तर दिया। भाई यह क्या पूछते हो? जिस दिन राम ने यह प्रत्यवायहीन कष्ट दिया उस दिन से मै उसे कहाँ भूल सकी हूँ? नहीं भूल पायी हूँ। ७०५

आमाम दडुक्कुमॆ ऩाक्कैयो डावि नैय
वेमाल्वितै येऱ्किऩि यॆऩ्विडि वाहु मॆऩ्ऩक्
कोमाऩुल हुक्कॊरु नीकुऱै हिऩ्ड्र दॆऩ्ऩे
पूमाणुगुळ लाडनै वव्वुदि पोदि यॆऩ्ड्राळ् 706

आम् आम्–हाँ, हाँ; अतु अटुक्कुम्–वह सम्भव ही है; ॲऩ् आक्कै ओटु–मेरे शरीर के साथ; आवि नैय–प्राण छीजते है; वेम् आल्–जलते हैं; आल्–इसलिए; वितैयेऱ्कु–कामकार्य-तप्त मुझे; इऩि विटिवु ॲऩ्ऩ आकुम्–अब निस्सरण क्या है; ॲऩ्ऩ–पूछने पर; नी उलकुक्कु ऒरु कोमाऩ्–तुम भुवनपति हो; कुऱैकिऩ्ऱतु ॲऩ्ऩे–अपने को हीन क्यों मानते हो; पू माण् कुळलाळै–पुष्पालंकृत सुकेशिनी को; वव्वुति–हर लाओ; पोति–जाओ; ॲऩ्ड्राळ्–कहा। ७०६

रावण ने उत्तर में कहा कि ओफ़ ओह! हाँ, हाँ वह सम्भव बात ही है। पर देखो। मेरा शरीर दुर्बल हो रहा है; मेरे प्राण विगलित हो रहे हैं। शरीर और प्राण जल रहे हैं। कामेच्छा अपना निर्मम कार्य कर रही है। उसके वश होकर मैं बहुत कष्ट उठा रहा हूँ! अब उससे छूटना कैसे हो? शूर्पणखा ने उसे धीरज दिया। भाई! तुम भुवनपति हो।

फिर क्यों ऐसी हीनता का अनुभव करते हो ! जाकर पुष्पालंकृत सुकेशिनी सीता को हर लाओ। अभी जाओ ! उसने भाई को उकसाया। ७०६

ऍन्ऱा ळहत्ऱाळ वरक्कनु मीड ऴिन्दान्
ऑन्ऱानु मुणर्न्दिल नावि युलैन्दु शोर्न्दान्
निन्ऱारु नडुङ्गितर् निन्ऱुळ नाळि नाले
पोन्ऱादुळ नायिन नत्तनै पोलु मन्ऱे 707

ऍन्ऱाळ्–कहकर; अकन्ऱाळ्–शूर्पणखा चली; अ अरक्कनुम्–वह राक्षस भी; ईटु अऴिन्तान्–अधीर हुआ; ऑन्ऱानुम् उणर्न्तिलन्–कोई सुध नहीं रही; आवि उलैन्तु–प्राणविह्वल होकर; चोर्न्तान्–थक गया; निन्ऱारुम् नटुङ्कितर्–(वहाँ जो) खड़े (थे) वे भी (भय से) काँपे; निन्ऱु उळ नाळित्ताल् ए–आयु शेष रही इसलिए; पोन्ऱातु–विना मरे; उळन् आयितन्–जीवंत रहा; अ तुणै पोलुम्–वही कारण था; (अन्ऱु–ए)। ७०७

यह कहकर शूर्पणखा चली गयी। राक्षस संकट सह नहीं सका। अधीर हो गया। सुध-बुध खोयी और उसके प्राण सूखने लगे। पास जो थे वे भी उसकी स्थिति देखकर डर गये। रावण की आयु शेष थी। इसलिए वह मरा नहीं; जीवित रहा। वही कारण था ! नहीं तो आसार आशादायी नहीं लगते थे। ७०७

इऱन्दार् पिऱन्दारॅन विन्नुयिर् पॅऱ्ऱ मन्नन्
मऱन्दा नुणर्न्दानवण् माडुनिन् ऱारै नोक्किक्
कऱन्दा लॅननीर्दरु शन्दिर कान्तत् तालोर्
शिऱन्दार् मणिमण्डबम् जॅयहॅन्च् चॅप्पु हॅन्ऱान् 708

इऱन्तार् पिऱन्तार् ॲन–मृतक फिर जीवित हो आया जैसे; इन् उयिर् पॅऱ्ऱ मन्नन्–प्यारे प्राणों को फिर से पाकर राक्षसराज; मऱन्तान् उणर्न्तान्–सुध-बुध जो खोई थी, उसे फिर पाकर; अवण् माटु निन्ऱारै नोक्कि–वहाँ पास जो खड़े रहे उनको देखकर; कऱन्ताल् ऍन्–दुहने पर जैसे; नीर् तरु–जल वहानेवाला; चन्तिर कान्तत्ताल्–चन्द्रकान्त मणि से; ओर्–एक; चिऱन्तु आर्–श्रेष्ठ बने; मणि मणटपम्–सुन्दर मण्डप को; चॅय्क ऍन–निर्मित करो, ऐसी; चॅप्पुक अन्ऱान्–(आज्ञा) सुनाओ, कहा। ७०८

कुछ देर के बाद रावण होश में आया। तब यही लगा कि मृतक ही जी उठा हो। राक्षसराज अब तक भूला-सा रहा। फिर से स्मरण आ गया। उसने अपने पास जो रहे उनसे कहा कि चन्द्रकान्त-शिलाओं का एक रत्नमण्डप बना लेने को कहो। उन शिलाओं से ऐसा शीतल जल निकलता रहे— मानो कोई उन्हें दुह रहा हो। ७०८

वन्दा नॅडुवानुऱै तच्चन् मनत्तु णर्न्दान्
शिन्दा विनैयत्तॊऴियुङ् गैविन्नै यालुञ् जॅय्दान्

अन्दाम नॆडुन्दर्रि यायिरत् ताल मैन्द
शन्दार् मणिमण्डवन् दामरै योनु नाण 709

नॆट्टु वान् उरै—विस्तृत आकाशलोक का वासी; तच्चन—(विश्वकर्मा नाम का) शिल्पी; वन्तान्—वहाँ आया; मत्ततु उणर्न्तान्—मन में समझा; अम् तामम्—सुन्दर और; नॆट्टुम् तर्रि आयिरत्ताल्—ऊँचे हज़ार खम्भों के साथ; अमैन्त—निर्मित; चन्तु आर् मणि मण्टपम्—सौन्दर्य-भरा रत्नमय मण्डप; तामरैयोनुम् नाण—कमलासन को भी शरम से भरते हुए; चिन्ता वित्ते अन्रियुम्—परिकल्पना के साथ; कै वित्तैयालुम्—हस्त-कौशल द्वारा भी; चॆय्तान्—रचा। ७०९

विस्तृत आकाशलोक का शिल्पी विश्वकर्मा आया। उसने रावण की इच्छा ध्यान से जान ली। एक सहस्र खम्भों के साथ उसने एक बड़ा मनोरम मण्डप निर्मित किया। ऐसा मण्डप बनाया कि सृष्टि-कर्म में अद्वितीय ब्रह्मा भी देखकर अपनी हीनता पर शरम खाये! उसमें उसकी भावना, कल्पना आदि का भी विशेष सामर्थ्य प्रकट होता था, बल्कि उसके हस्तकौशल की भी झाँकी मिलती थी। ७०९

कान्दम् ममुदिन्रुळि काल्वन काल मीनिन्
वेन्दन् नॊळियन्रियु मेलॊडु कीळ्वि रित्तान्
पून्दॆन्रल् पुहुन्दुरै शाळर मुम्बु तॆन्दान्
एन्दुम् मणिक्कर्पहच् चीदळक् कावि ळैत्तान् 710

काल मीनिन् वेन्तन्—कालदर्शी नक्षत्रों के राजा; ऑळि अन्रियुम्—(चन्द्र की) ज्योति के विना भी; अमुतिन् तुळि काल्वन—अमृत की बूँदें निकालनेवाले; कान्तम्—चन्द्रकान्त पत्थरों को; मेल् ओट्टु कीळ् विरित्तान्—ऊपर-नीचे सर्वत्र बिछाया; पूम् तॆन्रल्—मधुर (पुष्पगन्ध-युक्त) मलयपवन; पुकुन्तु उरै—प्रवेश कर रहे, इस निमित्त; चाळरमुम् पुतैन्तान्—गवाक्ष भी बनाये; मणि एन्तुम्—(फूल-फलों के रूप में) रत्नधारी; कर्पक चीतळ का—कल्पक तरुओं का शीतल उद्यान; अमैत्तान्—निर्मित किया। ७१०

उसने उस मण्डप में ऊपर और नीचे सर्वत्र ऐसे चन्द्रकान्त के पत्थर जड़े जिनसे कालदर्शी, नक्षत्रों के राजा चन्द्र के स्पर्श के विना भी जल स्रव सकता था। फिर मण्डप में गवाक्ष निर्मित किये, जिनसे मधुर पुष्पगन्धवाही मलयपवन अन्दर आकर ठहर सके। फिर उसके चारों ओर एक कल्पतरुओं का शीतल उद्यान बनाया जिनके फल, फूल आदि रत्नमय थे। ७१०

आणिक्कमै पॊर्रट्टिन् मणिच्चुड रार्वि ळक्कम्
शेणुर् रिरुळ्शीप्पन दॆय्व मडन्दै मार्हळ्
पूणिर् पॊलिवार्बुडै येन्दिडैप् पॊङ्गु तोळान्
माणिक्क मानत्तिडै मण्डबङ् गाण वन्दान् 711

आणिक्कु अमै—प्रामाणिक सोने (की कील) से समता रखनेवाले; पॊन् तट्टिन्—

स्वर्ण की बनी थालियों में; मणि चुटर् आर् विळक्कम्–सुन्दर रत्नप्रकाशमय दीप; चेण् उऱ्ऱु इरुळ् चीप्पत्त–जो दूर तक जाकर अन्धकार मिटानेवाले थे; पूणिल् पॊलिवार्–आभरणों से शोभित; तॅय्व मटन्नै मार्कळ्–सुरस्त्रियाँ; पुटै एन्तिट–पार्श्व में ले आयीं; पॊङ्कु तोळान्–उन्नत भुजा वाला; माणिक्क विमानत्तु इटै–माणिक्य-वाहन पर; मण्टपम् काण वन्तान्–मण्डप देखने आया। ७११

रावण उस मण्डप को देखने आया। वह माणिक्यजड़ित एक यान पर आया। पुष्ट और उन्नत कन्धों से युक्त उसके साथ अनेक सहस्र कोटि देवांगनाएँ हाथ में स्वर्णथालियों में दीप लिये आयीं। थालियों का स्वर्ण बहुत ही उच्च कोटि का था। उसका खरापन उसके लिए नियत प्रामाणिक सोने की कील से परखा जाता तो शुद्ध निकलता। दीपों की ज़्वालाएँ रत्न ही थीं। उनमें से जो प्रकाश निकलता था वह दूर-दूर तक ज़ाकर अन्धकार को मिटाता था। वे देवांगनाएँ बहुत मनोरम भूषणों से भूषित थीं। ७११

अल्लायिर कोडि यडुक्किय दॊत्त दॆन्नुम्
नल्लार् मुहमाम् नळिर्वानिल विन्ऱि नामप्
पल्लायिर कोडि पनिच्चुड रीन्ऱ तिङ्गळ्
ऎल्ला मुडना विरुळोडि यिरिन्द दन्ऱे 712

नळिर् वान् निलवु इन्ऱि–शीतल आकाश में चाँद नहीं रहा, तो भी; अल् आयिर कोटि–रातें हज़ारों की संख्या में; अटुक्कियतु ऒत्ततेनुम्–एक के ऊपर एक रखी गयी हों, जैसे रहने पर भी; नल्लार् मुकम् आम्–उन सुन्दरियों के मुख रूपी; नाम–श्लाघनीय; पल् आयिर कोटि–अनेक सहस्र कोटि; पनि चुटर् ईन्ऱ–शीतल प्रकाशमय; तिङ्कळ् ऎल्लाम्–चन्द्र सभी; उटना–साथ आने से; इरुळ्–अन्धकार; ओटि–भागकर; इरिन्ततु–हट गया। ७१२

उनके मुख चन्द्र-सम उज्ज्वल थे। अनेक रातों का सम्मिलित अन्धकार हो तो भी बहुत मानार्ह अनेक सहस्र शीतल प्रकाशदायी मुख रूपी चन्द्र साथ आये, इसलिए चाँद के विना भी वह अन्धकार दूर हो गया था। ७१२

पॊऱ्पुऱ्ऱन मामणि यॊन्बदुम् बूवि निन्ऱ
कऱ्पत्तरु विन्नगदिर् नाणिळर् कऱ्ऱै नाऱ
अऱ्पऱ्ऱऴि यप्पह लाक्किय दाल रुक्कन्
निऱ्पत्तॊरिक् किन्ऱतु नीळ्शुडर् नीर्मै यन्ऱो 713

पॊऱ्पु उऱ्ऱत–मनोहारिता से युक्त; मा मणि ऒन्पतुम्–श्रेष्ठ नवरत्न; पूविन्–फूल बने; निन्ऱ–ऐसे स्थित; कऱ्प तरुविन्–कल्पतरुओं की; कतिर्–कान्ति-किरणें; नाळ् निळल् कऱ्ऱै–दिन के-से प्रकाश की रेखाओं के समान; नाऱ–निकल

रही थीं; अल् पऱ्ऱु अऴिय–रात का सम्बन्ध मिट गया; पकल् आक्कियताल्–दिन-सा वनाने से; अरुक्कन् निऱ्प–सूर्य के (दूर) रहने पर भी; नीळ् चुटर् तॆरिक्किन्ऱतु–लम्बी प्रकाश-रेखाएँ निकालना; नीर्मै अन्ऱो–(कल्पतरुओं का) गुण है न। ७१३

उस उद्यान के कल्पतरु भी आसाधारण थे। उनके फल वहुत ही छटापूर्ण नवरत्न थे। उनसे जो प्रकाश छूटता था उससे दिन-सा प्रकाश होता था। विना सूर्य के ही उजाला देना कल्पतरु का गुण था न ? । ७१३

ऊऱोशै मुदऱ्पॊऱि यावैयु मॊन्ऱि नॊन्ऱ
तेऱानिलै युऱ्ऱदोर् शिन्दैयन् शॆय्है योरान्
वेऱाय पिऱप्पिडै वेट्कै विशित्त दीर्प्प
माऱोरुडल् पुक्कॆन मण्डवम् वन्दु पुक्कान् 714

ऊऱु–स्पर्शेन्द्रिय; ओचै–श्रवणेन्द्रिय; मुतला–आदि; पॊऱि यावैयुम्–इन्द्रिय सव; ऒन्ऱित् ऒन्ऱु–एक सा एक; तेऱा–सतर्क नहीं रही; निलै–ऐसी स्थिति में; उऱ्ऱतु–पड़ा; ओर् चिन्तैयन्–मन वाला; चॆय्कै ओरान्–क्या करना, यह न जानकर; वेट्कै विचित्तु–राग ने उसको वाँधकर; अतुईर्प्प–खींचा; माऱु ओर् उटल् पुक्कतु ऎन्न–दूसरे एक शरीर में प्रविष्ट हुआ हो ऐसा; मण्टपम् वन्तु पुक्कान्–मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

रावण की दशा दयनीय थी। उसकी स्पर्श, शब्द आदि परखनेवाली कोई भी इन्द्रिय सतर्क नहीं थी। एक से एक वढ़कर सव इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। मन भी जड़वत हो गया। क्या करना है, यह भी निश्चय कर नहीं पाया। उधर सीता के प्रति राग उसे वलात् खींच रहा था। उससे वह मानो दूसरे शरीर में प्रवेश कर रहा हो, इस विचित्र भावना के साथ मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

तण्डलिल् तवञ्जॆय् वोर्हळ् वेण्डिन दायिन् नल्हुम्
मण्डल महर वेलै यमुदोडुम् वन्द वॆन्नप्
पण्डरुञ् जुरुम्बु शेरुम् पशुमर मुयिर्त्त पैम्पॊन्
तण्डळिर् मलरिऱ् चॆय्द शीदळच् चेक्कै शार्न्दान् 715

तण्टल् इल्–निर्वाध रूप से; तवम् चॆय्वोर्कळ्–तपस्या करते रहनेवाले; वेण्टिन–जो माँगते है उन्हें; तायिन् नल्कुम्–माता के समान देगा; मकर मण्टल वेलै–मण्डलाकार मकरालय (क्षीरसागर); अमुतु ओटुम्–अमृत के साथ; वन्तु ऎन्न–आया हो जैसे; पण् तरु–संगीत-सम गुंजारशील; चरुम्पु चेरुम्–भ्रमरों से आवृत; पचु मरम्–हरे पेड़ों से; उयिर्त्त–निकले; पैम् पॊन् तण् तळिर्–ताजे स्वर्णवर्ण शीतल पल्लव; मलरिल्–और फूलों से; चॆय्त–वनी; चीतळ चेक्कै–शीतल शय्या पर; चार्न्तान्–पहुँचा। ७१५

उसमें एक पुष्पशय्या थी जो क्षीरसागर अमृत के साथ आया हो ऐसा लगती थी। क्षीरसागर तपस्वियों को उनकी याचित वस्तुओं को माता के

समान दे सकता था। यह शय्या भी वैसी थी क्योंकि कल्पतरु के ताजे स्वर्णवर्ण पल्लव और मनोरम फूल उस पर बिछे हुए थे। उस पर सुरम्य संगीत-सा गुंजार करते हुए भ्रमर मँड़रा रहे थे। रावण उस शीतल शय्या पर आया। ७१५

नेरिळै महळिर् कून्द निऱैनऱै वाश नीन्दि
वेरियज् जरळच् चोलै वेनिलान् विरुन्दु शॅय्य
आऱ्हलि यळ्वन् दन्द वमिळ्दॅन वॉरुव रावि
तीरिनु मुदवऱ् कॊत्त तॅन्ऱल्वन् दिऱुत्त दन्ऱे 716

ऑरुवर् आवि तीरित्तुम्–एक के प्राणों के जाने की स्थिति में रहे, तो भी; उतवऱ्कु ऑत्त–प्राण रोकने में सहायता जो दे सकता था उस; आर्कलि अळ्वम् तन्त–(क्षीर-) सागर की गहराई से प्राप्त; अमिळ्तु अॅन–अमृत के समान; तॅन्ऱल्–दक्षिणी (मलय-) पवन; इऴै मकळिर् कून्तल्–आभरणालंकृता स्त्रियों के केश पर की; निऱै नऱै वाचम्–भरी शहद-युक्त सुगन्ध; नीन्ति–तैरकर; वेरि अम् चरळम् चोलै–शहदयुक्त, सुन्दर देवदार तरुओं के उपवन में; वेनिलान्–वसन्तकाल का राजा, मन्मथ के; विरुन्तु चॅय्य–स्वागत करते; वन्तु इऱुत्ततु–आ पहुँचा। ७१६

क्षीरसागर की गहराई से प्राप्त अमृत मरणोन्मुख मनुष्य को जिला कर उसकी सहायता कर सकता है। मलयपवन उसी अमृत के समान वहाँ संचार कर रहा था। वह आभूषणभूषिता सुन्दरियों के केशों के शहद-भरे फूलों की सुगन्धि में घुसकर बाहर आया हुआ था। शीतल देवदार तरुओं से भरे उस उद्यान में वसन्त का राजा मन्मथ उसका स्वागत कर रहा था। इस रीति से वह मलयपवन वहाँ आया। ७१६

शाळरत् तूडु वन्दु तवळ्दलुन् दरित्त ऱेऱ्ऱान्
नीळरत् तङ्गळ् शिन्द नॅरुप्पुह नोक्कु नीरान्
वाळ्मनॅप् पुहुन्द दाण्डोर् माशुणम् वरक्कण् डन्न
कोळुऱक् कॊदित्तु विम्मि युळैयरॅक् कूविच् चॊन्नान् 717

चाळरत्तु ऊटु वन्तु–खिड़कियों से होकर आया; तवळ्तलुम्–और मन्द-मन्द बहा; तरित्तल् तेऱ्ऱान्–तब असहनीय वेदना के साथ; नीळ् अरत्तङ्कळ् चिन्त–लम्बी रक्त-धाराएँ बहाते हुए; नॅरुप्पु उक नोक्कुम्–आग निकालते हुए देखने का; नीरान्–स्वभाव वाला; वाळ् मनॅ पुकुन्ततु–वास के घर में घुसा; ओर् माचुणम्–एक सर्प; आण्टु वर–वहाँ आया; कण्टु अन्न–देखा-सा; कोळ् उऱ कॊतित्तु–संकट पाकर उबला; विम्मि–सिसकते हुए; उळैयरॅ–समीपस्थ लोगों को; कूवि–पुकार कर; चॊन्नान्–बोला। ७१७

वह मलयपवन खिड़कियों के रास्ते से अन्दर आया। पर रावण उसे सह नहीं सका। उसकी आँखों से रक्त की बूँदें ढलक आयीं। अंगार भी प्रकट हुए। वह कोप, दुःख दोनों से प्रभावित था। उसने उस मलयपवन

को वासस्थान के घर में घुस आये सर्प के रूप में देखा। उससे कष्ट हुआ और उस पर गुस्सा भी। वह उबल पड़ा। सिसकने भी लगा। समीपस्थ भृत्यों को पास बुलाकर उसने (निम्न बातें) कहीं। ७१७

कूवलि नुयिर्त्तत शिन्नी रुलहिनैक् कुप्पुर् ऍन्नत्
तेवरि नॊरुव नॆन्नै यिन्नलुञ् जॆयत्तक् कान्नो
एवलि नन्ऱि वन्दिङ् गिव्वळ लॆय्दिऱ् ऱॆन्नाक्
कावलि नुळैयर् तम्मैक् , कॊणरुदिर् कडिदि नॆन्ऱान् 718

कूवलिन् उयिर्त्तत–(छोटे से) कुएँ मे से छनकर निकला; चिल् नीर्–थोड़ा जल; उलकिनै–संसार भर को; कुप्पुऱ्ऱु ऍन्न–डुबो रहा हो जैसा; तेवरिन् ऒरुवन्–देवों में एक; ऍन्नै–मुझे; इन्नलुम् चॆय तक्कान्नो–संकट दे सका क्या; इ अळल्–यह आग; एवल् इन्ऱि–विना अनुमति के; इङ्कु वन्तु ऍय्तिऱ्ऱु–यहाँ आ पहुँची है; ऍन्ऱु–कहकर; कावलिन् उळैयर् तम्मै–पहरेदारों को; कटितिन् कॊणरुतिर्–जल्दी लाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ७१८

कूप का रिसता जल क्या संसार भर को डुबो सकेगा? वैसा देवों में एक यह मुझे इतना कष्ट दे सकता है क्या? यह अग्निदेव मेरी आज्ञा के विना आया कैसे? बुलाओ पहरेदारों को। ७१८

अव्वळि युळैय रोडि याण्डवर्क् कॊणर्द लोडुम्
वॆव्वळि यमैन्द शॆङ्गण् वॆरुवुऱ नोक्कि वॆय्योन्
शॆव्वळि दॆन्ऱ लाऱ्कुत् तिरुत्तिनीर् नीर्हॊ लॆन्न
इव्वळि यिरुन्द वालैत् तडैयवर् किल्लै यॆन्ऱार् 719

अ वळि–तब; उळैयर्–पास जो रहे, वे; ओटि–दौड़े; आण्टु–वहीं; अवर् कॊणर्तल् ओटुम्–उनको (बुला) लाये, तब; वॆय्योन्–आततायी राक्षस ने; वॆम् वळि अमैन्त–क्रूर बनी; चॆम् कण्–लाल आँखों से; वॆरुवु उऱ–भयभीत करते हुए; नोक्कि–देखकर; नीर् कॊल्–तुम्हीं ने तो; तॆन्ऱलाऱ्कु–मलयपवन को; चॆल् वळि तिरुत्तिनीर्–जाने का मार्ग दिखाया; ऍन्न–पूछा, तो; इ वळि इरुन्त कालै–यह (खिड़कियों का) मार्ग जब रहता तब; अवर्कु तटै इल्लै–उनको रोक नही; ऍन्ऱार्–कहा। ७१९

समीप जो रहे वे भृत्य दौड़े। उन्होंने पहरेदारों को बुलाया और वे आये। निर्मम रावण क्रूर आँखों से उनको भयभीत करते हुए तरेरा और पूछा कि मलयपवन को अन्दर आने का सीधा मार्ग तुम्ही ने बना दिया न? तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब खिड़कियाँ है, तब उसको आने से कौन रोक सकता है? कोई बाधा नहीं होगी। ७१९

वेण्डिय दुणर्न्दु शॆय्वान् विण्णवर् वरुव रॆन्ऱाल्
माण्डदु पोलुङ् गॊळ्है यान्ऱुडै वन्मै वल्लै

तेण्डिनीर् तिशैह डोरुम् जेणुड़ विशैयिर् चॅल्हुड़्
ड़ीण्डिवन् ड़न्नैप् पड़्ड़ि यिरुम्जिड़ै यिडुदि यॅन्ड़ान् 720

देण्टियतु उणर्न्तु चॅय्वान्–मैं जो चाहूँ वही करने के लिए; विण्णवर् वरुवर् ऍन्ड़ाल्–सुरलोकवासी आते हैं, तो; यान्टै कॉळ्कै वन्मै–मेरे (शासन-) सिद्धान्त का वल; माण्टतु पोलुम्–मिट गया शायद; वल्लै–शीघ्र; नीर् तिचैकळ् तोरुम्–तुम दिशा-दिशा में; तेण्टि–खोजकर; चेण् उड़–बहुत दूर; विचैयिल् चॅल्कुड़ु–तेज जाकर; इवन् तन्नै–इसको; पड़्ड़ि–पकड़कर; ईण्टु–यहाँ; इरुम् चिड़ै–बड़े कारागृह में; इट्टुतिर्–डाल दो; ऍन्ड़ान्–यह हुक्म दिया। ७२०

रावण को आश्चर्य हुआ। देवता हैं तो मेरी इच्छा के अनुसार सेवा करने के लिए। आज बात विपरीत चली है। क्या मेरा शासन अपना अधिकार-बल खो गया है ? दौड़ो। दिशा-दिशा में भागो और इस पवनदेव को पकड़ो और भयंकर कारागृह में डाल दो। ७२०

काड़्ड़िनोन् ड़न्नै वाळा मुनिदलिड् कण्ड दिल्लै
कूड़्ड़ुम्वन् दॅन्नै यिन्ने कुरुहुमाड् कुड़ित्त वाड़्ड़ाल्
वेड़्ड़रुङ् गरुङ्गट् चीदै सॅय्यरुळ् पुनैये नॅन्ड़ाल्
आड़्ड़ला लडुत्त दॅण्णु ममैच्चरैक् कॉणर्दि यॅन्ड़ान् 721

काड़्ड़िनोन् तन्नै–पवन पर; वाळा मुनितलिल्–अकारण कोप करने से; कण्टतु इल्लै–कोई लाभ नहीं देखते; कुड़ित्त आड़्ड़ाल्–अपनी इच्छा के अनुसार; वेल् तरुम्–भाला-तुल्य; करुम् कण्–असितेक्षणा; चीतै–सीता की; मॅय् अरुळ्–सच्ची कृपा का; पुनैयेन ऍन्ड़ाल्–धारक नहीं बनूँ तो; कूड़्ड़ुम् वन्तु–यम भी आकर; ऍन्नै–मुझे; इन्ने कुड़ुकुम्–अभी पा लेगा; आल्–इसलिए; अटुत्ततु–आगे जो करना है; आड़्ड़लाल् ऍण्णुम्–बुद्धि-बल से सोचनेवाले; अमैच्चरै–मन्त्रियों को; कॉणर्तिर्–लाओ; ऍन्ड़ान्–कहा। ७२१

रावण ने फिर भी सोचा कि वायुदेव पर बेकार क्रोध दिखाने से क्या लाभ ? कुछ नहीं देखता। अगर अपनी इच्छा के अनुसार सीताजी की कृपा पा नहीं सकूँगा तो यम भी मुझे मारने के लिए आ पहुँचेगा। इसलिए जो आगे की करनी के बारे में, अपनी बुद्धि के वल पर सोचकर मार्ग वता सकते हैं वे हमारे मन्त्री ही हैं। इसलिए चलकर उनको बुला लाओ। उसने भृत्यों को आज्ञा दी। ७२१

एविन्न शिलत रोडि येयॅनु मळवि लॅङ्गुम्
कूविनर् कूव लोडुङ् गुरुहिन्नर् कॉडित्तिण् डेर्मेल्
माविनिर् चिविहै तम्मेन् मळैमदक् कळिड़्ड़िन् मीदिल्
तेवरुम् वानन् दन्निड़् ड़िशैदॉरुम् जिन्दै शिन्द 722

एवित्त चिलतर् ओटि–आज्ञापित भृत्य दौड़े और; एय् ऍन्नुम् अळविल्–'रे' कहने

के समय के अन्दर; ऍङ्कुम् कूवित्तर्–सर्वत्र पुकारा; कूवलोटुम्–पुकारने पर; तेवरुम्–देव भी; वानम् तन्निल्–आकाश में; तिचै तोऱुम्–दिशा-दिशा में; चिन्तै चिन्त–चिन्ताग्रस्त हो रहे और; कॊटि तिण् तेर् मेल्–ध्वजासहित सुदृढ़ रथों पर; मावितिल्–अश्वों पर; चिविकै तम्मेल्–शिविकाओं पर; मऴै मत कळिऱ्ऱिन् मीतिल्–मेघवर्ण मत्तगजों पर; कुऴकित्तर्–(वे मन्त्री) रावण के पास आये। ७२२

तुरन्त कुछ भृत्य दौड़े। 'रे' कहने की जितनी देर में सब जगह दौड़कर उन्होंने टेर लगायी। तो मन्त्री लोग आये। कुछ एक मन्त्री ध्वजामण्डित रथों पर आये। कुछ घोड़ों पर और कुछ पालकियों में आये। कुछ मेघसदृश मत्तगजों पर सवार हो आये। तब देव सब आकाश मे एकत्र हो गये और वे बहुत ही चिंतित दिखाई दिये। ७२२

वन्दमन् दिरिह ळॊडु माशऱ मनत्ति नॆण्णिच्
शिन्दैयि निन्नैन्द शॆय्युञ् जॆय्हैयन् ऱॆळिवि नॆञ्जन्
अन्दरज् जॆल्व दाण्डोर् विमानत्ति नारु मिन्ऱि
इन्दिय मडक्कि निन्ऱ मारीश निरुक्कै शेर्न्दान् 723

वन्त मन्तिरिकळोटु–आगत मन्त्रियों-सह; माचु अऱ मनत्तिन् ऍण्णि–दोष-रहित रीति से मन में सोचकर; चिन्तैयिल् नितैन्त–चित्त में सोचा हुआ; चॆय्युम् चॆय्कैयन्–करने में समर्थ; तॆळिविन् नॆञ्चन्–सुलझा हुआ विचारक; आण्टु–तब; अन्तरम् चॆल्वतु–आकाशचारी; ओर् विमानत्तिन्–एक (पुष्पक-) यान पर; आरुम् इन्ऱि–बिना किसी को साथ लिये (अकेले); इन्तियम् अटक्कि निन्ऱ–इन्द्रिय-दमन जो किये रहा; मारीचन् इरुक्कै चेर्न्तान्–मारीच के यहाँ जा पहुँचा। ७२३

मन्त्री आये। मंत्रणा हुई। कोई त्रुटि न रहे, ऐसा उपाय सोचा गया। रावण दृढ़संकल्प था, कार्यचतुर था। वह आकाशचारी एक यान पर चढ़ा और मारीच के पास आया, जो इन्द्रियों का दमन करके तपस्या करता था। ७२३

8. मारीशन् वदैप् पडलम् (मारीच-वध पटल)

इरुन्दमा रीश नन्द विरावण नॆय्द लोडुम्
पॊरुन्दिय पयत्तिन् शिन्दै पॊरुमुऱ्ऱु वॆरुवु हिन्ऱान्
करुन्दड मलैयनानै यॆदिर्हॊण्डु कडन्गळ् यावुम्
तिरुन्दिय शॆय्दु शॆव्वित् तिरुमुहम् नोक्किच् चॆप्पुम् 724

इरुन्त मारीचन्–(तपोरत जो) रहा, वह मारीच; अन्त इरावणन् ऍय्तल् ओटुम्–उस रावण के आते ही; पॊरुन्तिय–उत्पन्न; पयत्तिन्–भय के कारण; चिन्तै पॊरुमुऱ्ऱु–व्यग्र-मन होकर; वॆरुवुकिन्ऱान्–डरते-डरते; करुम् तटम् मलै अन्नानै–काले बड़े पर्वत के समान उसको; ऍतिर् कॊण्टु–स्वागत करके; कटन्कळ् यावुम्–कर्तव्य सब; तिरुन्तिय चॆय्तु–उचित रूप से करके; चॆव्वि तिरुमुकम् नोक्कि–दर्शनीय उसका मुख देखकर; चॆप्पुम्–(यों) बोला। ७२४

तपोरत मारीच ने रावण को देखा। जब रावण आया तो उसे बड़ा भय हो गया। भय के कारण चित्त व्याकुल हो गया। उसने बड़े काले पर्वत-सम रावण की अगवानी की। फिर अतिथि-सत्कार उचित रीति से किये। बाद उसके दर्शनीय मुख को देखकर वह बोला। ७२४

शन्द मलर्त्तण् कड्पह नीळऱ् ड़लैवर्क्कुम्
अन्दह नुक्कु मञ्ज वडुक्कु मरशाळ्वाय्
इन्द वनत्तॅन् निऩ्न लिरुक्कै यॅळियोरिऩ्
वन्द करुत्तॅन् शॉल्लुदि यॅन्ड्रान् मरुळ्हिऩ्ड्रान् 725

मरुळ्किऩ्ड्रान्–भ्रमित; चन्तम् मलर्–सुन्दर फूलदार; तण् कड्पक नीळल्–शीतल कल्पतरु की छाया में रहकर शासन करनेवाले; तलैवर्कुम्–देवेन्द्र को; अन्तकनुक्कुम्–यम को भी; अञ्च अटुक्कुम्–भयभीत होने देते हुए शासन करते हुए; अरचु आळ्वाय्–राज्यपालन करनेवाले; इन्त–इस; वनत्तु–वन में; ॲन् इन्तल् इरुक्कै–मेरे संकट-दायक वासस्थान में; ॲळियारिन्–दीन के समान; वन्त करुत्तु–आने का अर्थ; ॲन्–क्या है; चॊल्लुति–कहो; ॲन्ड्रान्–कहा। ७२५

मारीच के मन में संशयजनित भ्रम था। देवेन्द्र मनोरम शीतल कल्पतरु की छाया में सुख से रहकर आकाशलोक का शासन करता है। यम है। उनको भी भयभीत करते हुए शासन करनेवाले राजा! तुम इस वन में मेरे तुच्छ और कष्टदायी वासस्थान मे दीन मनुष्य के समान आये हो! इसका क्या अर्थ है ? बताओ। —मारीच ने जानना चाहा। ७२५

आन दनैत्तु मावि तरित्ते नयर्हिऩ्ड्रेन्
पोनदु पॉऱ्पु मेन्मैयु मड्ड्रॅन् पुहळ्ओडुम्
यान दुनक्किन् ऱॅङ्ङ नुरैक्के निऩियॅन्ना
वान वरुक्कु नाण वडुक्कुम् वशैमन्नो 726

आनतु अनैत्तुम्–आने के (सभी) कष्ट आ गये; आवि तरित्तेन्–(किसी तरह) प्राण धारण कर रहा हूँ; अयर्किन्ड्रेन्–थक गया हूँ; ॲन् पॉऱ्पुम् मेन्मैयुम्–मेरा महत्त्व और गौरव; पुकळ् ओटुम् पोनतु–कीर्ति के साथ चले गये; इनि–अब; यान्–मैं; उनक्कु–तुम्हें; इन्ऱु ॲङ्ङन् उरैक्केन्–आज की स्थिति कैसे कहूँ; ॲन्ना–कहकर; वानवरुक्कुम्–देवों से भी; नाण–शरमाएँ; अटुक्कुम् वचै–ऐसा (जो) अपयश आया है; (मन्–ओ)। ७२६

रावण ने कहा कि मुझ पर सभी तरह के संकट आ चुके हैं। प्राण तो नहीं गये पर अत्यन्त शिथिल हूँ। मेरी महिमा, गौरव और कीर्ति सब चले गये। तुमसे मैं क्या कहूँ ? देवों से भी हम शर्मायें, ऐसी निन्दा आ लगी है। ७२६

वऩ्मै तरित्तोर् माऩिडर् मऱ्ऱङ् गवर्वाळाल्
निऩ्मरु हिक्कु नाशि यिळ्क्कु निलैनेर्न्दाल्
ॲऩ्मर बुक्कु निऩ्मर बुक्कु मिदऩ्मेलोर्
पुऩ्मै तॆरिप्पिऩ् वेऱिनि युण्डो पुहऴ्वेलोय् 727

पुकऴ् वेलोय्–सर्वप्रशंसित भालाधारी; मानुटर्–मानव; वऩ्मै तरित्तोर्–बलशाली हो गये हैं; मऱ्ऱु–और; अङ्कु–वहाँ (दण्डक वन में); अवर्–उन मानवों के द्वारा; वाळाल्–कटार से; निऩ् मरुकिक्कु–तुम्हारी भांजी की; नाचि इऴक्कुम्–नासिका खोने की; निलै नेर्न्ताल्–दशा हुई तो; ॲऩ् मरपुक्कुम्–मेरे कुल का; निऩ् मरपुक्कुम्–और तुम्हारे कुल का; इतऩ् मेल् ओर् पुऩ्मै तॆरिप्पिऩ्–इससे वढ़कर हेयता की बात; इऩि वेऱु उण्टो–दूसरी है क्या। ७२७

शंसित भालाधारी मारीच ! अल्प मनुष्य आज बलशाली हो गये हैं। और स्थिति ऐसी हो गयी कि दण्डकवन में एक मनुष्य ने तुम्हारी भांजी शूर्पणखा की नाक काट ली। फिर तुम्हारे और मेरे कुल का क्या मान रहा ? इससे वढ़कर हेयता हो सकती है क्या ? । ७२७

तिरुहु शिऩत्ताऩ् मुदिर मलैन्दोर् शिऱियोर्नाळ्
परुहिऩ ऩॆन्ऱाल् वॆऩ्ऱि नलत्तिऱ् पऴियऩ्ऱो
इरुहै श्रुमन्दा यिनिदि ऩिरुन्दा यिहल्वेलुऩ्
मरुह रुलन्दा रोरुवऩ् मलैन्दाऩ् वरिविल्लाल् 728

तिरुकु चिऩत्ताल्–ऐंठे कोप के साथ; मुतिर मलैन्तोर्–प्रचण्ड रूप से जिन्होने युद्ध किया; चिऱियोर् नाळ् परुकिऩऩ्–उन मेरे छोटों के प्राण पी लिये; ॲऩ्ऱाल्–तो; वॆऱ्ऱि नलत्तिऩ्–विजय के गौरव पर; पऴि अऩ्ऱो–बट्टा नहीं है क्या; इकल् वेल् उऩ् मरुकर्–युद्धोपयोगी भालाधारी तुम्हारे भांजे; उलन्तार्–मरे; ओरुवऩ्–अकेले एक मनुष्य ने; वरि विल्लाल्–बन्धनयुक्त धनुष ले; मलैन्ताऩ्–युद्ध करके मिटा दिया; इरु कै चुमन्ताय्–तुम (हाथ जोड़े) दोनो हाथों को सिर पर धारण किए हो; इऩितु इरुन्ताय्–सुखपूर्वक रहते हो। ७२८

ऐंठे (अपार) क्रोध के साथ मेरे छोटे भाइयों ने प्रचण्डता के साथ उससे युद्ध किया पर उसने उनके प्राण पी (हर) लिये। तो हमारी विजयशीलता पर बट्टा नहीं लगा क्या ? युद्धोपयोगी भाले रखनेवाले तुम्हारे भांजे मरे; एक मनुष्य ने अपने धनुष के बल से उनसे युद्ध करके उनको मिटा दिया; और तुम इधर सिर पर जुड़े हाथ रखकर तपस्या कर रहे हो सुखपूर्वक ! । ७२८

वॆप्पऴि यादॆऩ् ऩॆञ्जु मुलन्देऩ् विऴिहिऩ्ऱेऩ्
ऑप्पिल रॆऩ्ऱे पोर्शॆय वॊल्ले नुडऩ्वाऴ्प्
तुप्पऴि शॆव्वाय् वञ्जियै वव्वत् तुणैहॊण्डिट्
टिप्पऴि निऩ्ऩिऱ् ऱीरिय वन्दे निवणॆऩ्ऱाऩ् 729

वॆप्पु अऴियातु–मन का ताप नहीं मिटता; नॆञ्चम् उलन्तेऩ्–मन व्यग्र है; विळिकिऩ्ऱेऩ्–मर रहा हूँ; ऒप्पु इलर्–समान नहीं; अऩ्ऱे–इसीलिए; पोर् चॆय ऒल्लेऩ्–लड़ने में सहमत नहीं हूँ; उटऩ् वाऴुम्–उनके साथ रहनेवाली; तुप्पु अऴि–प्रवाल को हरानेवाले; चॆम् वाय्–अरुणाधरा; वञ्चियै–लता (-समाना स्त्री) को; वव्व–हर लाने के लिए; तुणै कॊण्टु इट्टु–तुम्हें अपना सहायक बनाकर; इ पऴि–यह अपमान; निऩ्ऩिल् तीरिय–तुम्हारे द्वारा दूर करने के लिए; इवण्–यहाँ; वन्तेऩ्–आया; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ७२९

इससे मेरा मन जलता है। जलन नहीं मिटती। मैं मन मारे मरणोन्मुख दशा में हूँ। वे मेरे समान नहीं हैं; इसलिए उनके साथ लड़ने को मेरा मन नहीं मानता। पर बदला तो लेना ही है। उनके साथ एक स्त्री है। उसके अधर प्रवाल को भी सुन्दरता में मात देनेवाले हैं। वह लता के समान है। उसको तुम्हारी सहायता से हर लाना चाहता हूँ, ताकि मेरा यह अपयश छूटे! इसीलिए इधर आया हूँ। —रावण ने अपना अभिप्राय कहा। ७२९

इच्चॊ लऩैत्तुञ् जॊल्लि यरक्क ऩॆरिहिऩ्ऱ
किच्चि ऩुरुक्किट् टुय्त्तऩ ऩॆऩ्ऩक् किळर्वाऩ्मुऩ्
शिच्चि यॆऩत्तऩ् मॆय्च्चॆवि पॊत्तित् तॆरुमन्दाऩ्
अच्च महऱ्ऱिच् चॆऱ्ऱ मऩत्तॊ डऱैहिऩ्ऱाऩ् 730

अरक्कऩ्–रावण ने; ऎरिकिऩ्ऱ किच्चिऩ्–जलती आग में; उरुक्कु इट्टु–इस्पात गलाकर; उय्त्तऩऩ् ऎऩ्ऩ–गरम द्रव को कानों में डाला हो, ऐसा; इ चॊल् अऩैत्तुम्–यह सारा वचन; चॊल्लि–कहकर; किळर्वाऩ् मुऩ्–उकसानेवाले के सामने; ची ची ऎऩ–छिः छिः कहकर; तऩ् मॆय् चॆवि पॊत्ति–अपने कानों पर हाथ रखकर; तॆरुमन्ताऩ्–गड़बड़ाकर; अच्चम् अकऱ्ऱि–फिर भय त्यागा; चॆऱ्ऱ मऩत्तॊटु–क्रुद्ध मन के साथ; अऱैकिऩ्ऱाऩ्–बोला। ७३०

ये शब्द मारीच के कानों में पिघलते इस्पात के समान पड़े। रावण ने ये वचन कहकर उसको उकसाया। तब मारीच ने अपने दोनों हाथ दोनों कानों में धर लिये। कहा— छिः छिः! वह पहले गड़बड़ाया। फिर भय त्यागकर कोप के साथ वह यों बोला। ७३०

मऩ्ऩा नीयुऩ् वाऴ्वै मुडित्ताय् मदियऱ्ऱाय्
उऩ्ऩा लऩ्ऱी दूऴ्विऩै यॆऩ्ऱे युणर्हिऩ्ऱेऩ्
इऩ्ऩा वॆऩुम् यादिदु रॆप्पॆ ऩिदमॆऩ्ऩाच्
चॊऩ्ऩा ऩऩ्ऱे यऩ्ऩव ऩुक्कुत् तुणिवॆल्लाम् 731

मऩ्ऩा–राजा; नी उऩ् वाऴ्वै मुटित्ताय्–तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली; मति अऱ्ऱाय्–बुद्धि-हीन हो गये; ईतु उऩ्ऩाल् अऩ्ऱु–यह तुम्हारा कृत्य नहीं; ऊऴ् विऩै ऎऩ्ऱे–प्रारब्ध ही; उणर्किऩ्ऱेऩ्–समझता हूँ; इऩ्ऩा एऩुम्–बुरा लगे तो भी;

यान्-में; इतम् इतु-हित यह; उरैप्पॆन्-बताऊँगा; ऎन्ऩा-कहकर; अन्ऩवऩुक्कु-उसे; तुणिवु ऎल्लाम्-सारा हितकर उपदेश के वचन; चॊन्ऩान्-कहे; (अन्ऩ्-ए) । ७३१

हे राजा ! बस ! तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली । बुद्धि खो चुके । मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारा काम नहीं; वरन् प्रारब्ध का तकाज़ा है । मेरा कहना तुमको बुरा लगेगा; तो भी तुमको हित की बात कहूँगा । —ऐसा कहकर मारीच ने रावण को अच्छी बातों का सब उपदेश किया । ७३१

अऱ्ऱ करत्तो डुत्तलै नीये यऩऩ्मुत्तिल्
पऱ्ऱिनै युय्त्ताय् पऱ्पल कालम् पशिहूर
उऱ्ऱुयि रुळ्ळे तेय वुलन्दाय् पिनैयन्ऱो
पॆऱ्ऱनै शॆल्वम् पिन्नि दिळन्दार् पॆऱलामो 732

अऱ्ऱ-खण्डित; करत्तोटु उत् तलै-अपने हाथ के साथ सिर को; अतल् मुत्तिल्—(होम की) अग्नि में; नीये पऱ्ऱितै उयत्ताय-स्वयं पकड़कर तुमने होम किये; पल् पल कालम्-बहुत समय तक; पचि कूर उऱ्ऱु-बहुत भूख से पीड़ित रहकर; उळ्ळै उयिर् तेय-अन्दर प्राणों के क्षीण होते; उलन्ताय्-कष्ट उठाया (तप किया); पिनै अन्ऱो-बाद तो; चॆल्वम् पॆऱ्ऱनै-(त्रिलोकाधिपत्य की) सम्पत्ति पायी; इऴन्ताल्-खो जाओ तो; पिन् इतु पॆऱल् आमो-फिर पाना हो सकता है क्या । ७३२

तुमने अपने ही खण्डित हाथ और सिरों को अपने ही हाथ से होमाग्नि में होम किया । कितने ही लम्बे काल तक भूखा-प्यासा रहकर, प्राणों को क्षीण होने देते हुए कठोर कष्ट सहे । तभी जाकर यह सारी विभवश्री तुम्हारी हुई ! (त्रिलोकाधिपत्य भी मिला ।) तुम अब इसको खो जाओ तो पुनः प्राप्त हो सकता है क्या ? । ७३२

तिऱत्तिऱ नाले शॆय्दव मुऱ्ऱित् तिरुवुऱ्ऱाय्
मऱत्तिऱ नाले शॊल्लुदि शॊल्लाय् मऱैवल्लोय्
अऱत्तिऱ नाले यॆय्दिनै यन्ऱो वदुनीयुम्
पुऱत्तिऱ नाले पिन्नु मिऴक्कप् पुहुवायो 733

चॊल् आय् मऱै-निरुक्तांगी वेद में; वल्लोय-निपुण; तिऱम् तिऱन् आले-समर्थ सामर्थ्य से; चॆय् तवम् मुऱ्ऱि-करणीय सभी तप पूरा करके; तिरु उऱ्ऱाय्-यह सारा वैभव पाया; मऱ तिऱत् आले-धर्म-विरुद्ध बल से; चॊल्लुति-यह बात कहते हो; अऱ तिऱताले-धर्म-सम्मत बल से; ऎय्तितै अन्ऱो-(यह विभुता) पायी न; अतु-वह; पुऱ तिऱत्ताले-धर्म-विरुद्ध बल से; पिन्नुम् इऴक्क-उसको फिर से खोने के लिए; पुकुवायो-इस काम में प्रविष्ट होओगे क्या । ७३३

निरुक्त-सहित वेद के विशारद ! समर्थ सामर्थ्य के साथ, करणीय तप आदि करके तुमने यह सम्पत्ति पायी है । अब अधार्मिक बल हो गया है, उससे तुम यह बात कह रहे हो । यह सारा वैभव तुमने धर्म-मार्ग

पर चलकर ही प्राप्त किया था। अब इसे अधार्मिक कार्य करके खोना चाहोगे क्या ? । ७३३

नारङ् गॉण्डार् नाडु कवर्न्दार् नडैयिल्ला
वारङ् गॉण्डार् मर्ऱॊरु वर्काय् मनैवाळ्म्
तारङ् गॉण्डा रॅन्ऱिवर् तम्मैत् तरुमन्दान्
ईरुङ् गण्डाय् कण्डह रुय्न्दा रॅवरैया 734

ऐया–प्रभु; नारम् कौण्टार्–जल हरनेवाले; नाटु कवर्न्तार्–राज्य छीननेवाले; नटै इल्ला–प्रथा के विरुद्ध; वारम् कौण्टार्–प्रजा से कर लेनेवाले; मऱ्ऱु ऑरुवर्कु आय्–दूसरे की गृहिणी बनकर; मनै वाळुम्–उसके घर में रहनेवाली; तारम् कौण्टार्–उसकी पत्नी को हर लानेवाले; ऍन्ऱु इवर् तम्मै–ऐसे इन लोगों को; तरुमम् तान्–धर्मदेवता स्वयं; ईरुम्–काट कर मार देता है; कण्टकर् उय्न्तार्–पापी बचे; ऍवर्–कौन; कण्टाय्–देखा। ७३४

प्रभु ! तुम सोचो। पराया जल हरनेवाला, राज्य छीननेवाला, अक्रम कर उगाहनेवाला, परदारा ग्रसनेवाला —इनको धर्मदेवता स्वयं आकर मिटा देगा। पापी कौन नाश से बचा है अब तक, सोचो। ७३४

अन्दर मुऱ्ऱा नहलिहै पोऱ्पा लळिवुऱ्ऱान्
इन्दिर नोप्पा रॅत्तनै योर्दा मियलऱ्ऱार्
शॅन्दिरु वोप्पा रॅत्तनै योर्निन् ऱिरुवुण्बार्
मन्दिर मऱ्ऱा रुऱ्ऱु दुरैत्ताय् मदियऱ्ऱाय् 735

अन्तरम् उऱ्ऱान्–सुरलोकाधिपति; अकलिकै पोऱ्पाल्–अहल्या के सौंदर्य से; अळिवु उऱ्ऱान्–बिगड़ा; इन्तिरन् ऑप्पार्–इन्द्र-सम; ऍत्तनैयोर् ताम्–कितनों ही ने; इयल् अऱ्ऱार्–गौरव खोया; चॅम् तिरु ऑप्पार्–सुन्दर लक्ष्मी-सम स्त्रियाँ; ऍत्तनैयोर्–कितनी ही; निन् तिरु उण्पार्–तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं; मन्तिरम् अऱ्ऱार्–विचार-शक्ति से हीन लोगों की; उऱ्ऱतु–(सी) बात; उरैत्ताय्–कहते हो; मति अऱ्ऱाय्–बुद्धिहीन हो। ७३५

सुरलोकाधिपति इन्द्र अहल्या के सौन्दर्य से (आकृष्ट होकर) संकट में पड़ा। इन्द्र के समान कितने ही लोग अपना गौरव खो चुके हैं ! (तुम्हारे पास स्त्रियों की कमी है क्या ?) लक्ष्मी-सम कितनी ही सुन्दरियाँ तुम्हारे पास रहकर तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं ! फिर विवेक-हीन मनुष्य की अच्छी मन्त्रणा जिसे मिली नहीं हो उसकी बात कहते हो ! साफ़ है कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है। ७३५

शॅय्दा येनुन् दीविनै योडुम् वळियल्ला
दॅय्दा दॅय्दा दॅय्दि निराम तुलहीन्ऱान्

वैदा लऩ्ऩ वाळिहळ् कॊण्डुऩ् वळियोडुम्
कॊय्दा ऩ्ऩ्ऱे कॊऱ्ऱ मुडित्तुऩ् कुळुवॆल्लाम् 736

चॆय्ताय् एऩुम्–यह करोगे तो भी; तीविऩै ओटुम्–पाप के साथ; पऴि अल्लातु–अपयश से हीन; ऎय्तातु–जो है, वह मिले बिना; ऎय्तातु–नहीं रहेगा; ऎय्तिऩ्–(तुम्हारा संकल्प) पूरा होगा तो भी; उलकु ईऩ्ऱाऩ् इरामऩ्–लोक-जनक श्रीराम ने; वैताल् अऩ्ऩ–(मुनि-) शापों के समान; वाळिकळ् कॊण्टु–शरों से; उऩ् वऴि ओटुम्–तुम्हारी संतति के साथ; कॊऱ्ऱम् मुटित्तु–शक्ति मिटाकर; उऩ् कुळु ऎल्लाम्–तुम्हारा दल और बल; कॊय्ताऩ् अऩ्ऱे–मिटा दिया न, समझो। ७३६

अगर तुम यह काम करोगे तो यह निश्चित है कि पाप और अपयश के सिवा कुछ नहीं मिलेगा; नहीं ही मिलेगा। तुम्हारा मनोरथ पूरा हो गया तो भी यह निश्चय समझ लो कि लोकपिता श्रीराम ने अपने मुनि-शाप-सम अमोघ बाणों से तुम्हारी संतति के साथ तुम्हारा सारा दल-बल मिटा दिया! । ७३६

ऎऩ्ऱा नॆऩ्ऩे यॆण्णलै योनी करऩॆऩ्बाऩ्
निऩ्ऱा ऩैक्कु मेलुळ ऩॆऩ्ऩु निलैयम्मा
तऩ्ऱा ऩैत्तऩ् ऱेरॊडु माळत् तऩुवॊऩ्ऱाल्
कॊऩ्ऱाऩ् मुऱ्ऱुङ् गॊल्ल मऩत्तिङ् कुऱिहॊण्डाऩ् 737

करऩ् ऎऩ्पाऩ्–खर जो था; निऩ् ताऩैक्कुम् मेल्–तुम्हारी सेना का नायक; ऎऩ्ऩुम् निलै उळऩ्–उस पद में रहा न; तऩ् ताऩै–अपनी सेना; तऩ् तेर् ऒटुम्–अपने रथ के साथ; माळ–मर मिटे, ऐसा; तऩु ऒऩ्ऱाल्–एक ही धनु से; कॊऩ्ऱाऩ्–श्रीराम ने मारा; मुऱ्ऱुम्–सारा वंश; कॊल्ल–मिटाने का; मऩत्तिल् कुऱि कॊण्टाऩ्–मन में संकल्प रखता है; ऎऩ्ऩे–क्या ही आश्चर्य है; ऎऩ् ताऩ् नी ऎण्णलैयो–क्यों ही तुमने यह बात नहीं सोची; अम्मा–री माँ। ७३७

खर क्या मामूली राक्षस था? वह तुम्हारी सेना में नायक का पद वहन करता था। श्रीराम ने एक ही धनु की सहायता से उसका उसकी सेना और रथ सहित काम तमाम किया। और उसका यही संकल्प है कि राक्षसकुल को ही मिटा दूँ। यह क्या आश्चर्य है! तुमने यह सब क्यों नहीं सोचा? माँ! कैसी बुद्धिहीनता है! । ७३७

वॆय्योर् यारे वीर विरादऩ् ऱुणैवॆय्योर्
ऐयो पोना ऩम्बॊडु मुम्बरुक् कवऩॆऩ्ऱाल्
उय्वार् यारे नम्मि लॆऩक्कॊण् डुणर्दोरुम्
नैया निऩ्ऱे नीयि दुरैत्तु नलिवायो 738

वॆय्योर्–कठोर वीरों में; वीर विरातऩ् तुणै–वीर विराध जितना; वॆय्योर् यारे–भयंकर कौन है; अवऩ्–वह भी; ऐयो–हाय; अम्पॊटुम्–राम के बाण के साथ; उम्परुक्कु पोऩाऩ्–आकाश को चला गया; ऎऩ्ऱाल्–तो; नम्मिल् उय्वार्

यारे–हममें बचेगा कौन; अँत्त कोण्टु–यह सोचकर; उणर् तोरुम्–ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ, त्यों-त्यों; नैया निन्ऱेन्–विगलित होता हूँ; नी इतु उरैत्तु–तुम यह कहके; नलिवायो–और भी सताते हो क्या। ७३८

वड़े भयंकर और क्रूर वीरों में वीर विराध के समान अति वलिष्ठ वीर कौन होगा ? हाय ! वह विराध भी श्रीराम के एक ही शर से, उस शर के साथ ही स्वर्ग पहुँच गया न ! तो हममें कौन ठहर सकता है ? यही सोच-सोचकर मैं व्यग्र हो रहा हूँ। शिथिल हो रहा हूँ। तुम यह वात कहकर और भी निर्बल कर रहे हो मुझे। ७३८

माण्डार् माण्डार् नीयिन्ि माळ्वार् तॊऴिल्शॆय्य
वेण्डा वेण्डा शॆय्दिडि नुय्वान् विदियुण्डो
आण्डा राण्डा रॆत्तनै यॆन्गे नऱ्ऱाळार्
ईण्डा रीण्डार् निन्ऱव रॆल्ला मिलरन्ऱो 739

माण्टार् माण्टार्–जो मरे, वे मर गये; नी इन्ि–तुम अव भी; माळ्वार् तॊऴिल्–मरणासक्त का काम; चॆय्य वेण्टा वेण्टा–मत करो, मत करो; चॆय्तिटिन्–करोगे तो; उय्वान् विति–बचने का रास्ता; उण्टो–है क्या; आण्टार् आण्टार्–शासक (के बाद) शासक; ऍत्तनै–कितने (मरे); ऍन्केन्–कहूँ; अऱन् आळार्–धर्म का जिन्होंने पालन नहीं किया; ईण्टार् ईण्टार्–चिरकाल नहीं रहेंगे, नहीं रहेंगे; निन्ऱवर् ऍल्लाम्–जो रहे वे भी; इलर् अन्ऱो–अव नहीं रहे न। ७३९

जो चल वसे वे तो चले गये। तुम यह काम करके मरण का वरण मत करो। करोगे तो जीवित बचने का कोई मार्ग नहीं होगा। राजा के वाद राजा, कितने ही राजा मरे हैं, उनकी संख्या क्या कहूँ ? जो धर्म का पालन नहीं करते वे बहुत काल नहीं जीते, नहीं जीते। जो रहे वे सारे यम के मेहमान हो गये। अव नहीं रहे न ? । ७३९

ऍम्बिक् कुम्मॆ न्नन्नै तनक्कु मिऱुतिक्कोर्
अम्बुय्क् कुम्बोर् विल्लि तनक्कु मयनिऱ्कुम्
तम्बिक् कुम्मॆन् नाण्मै तविर्न्दे तळर्वुऱ्ऱेन्
कम्बिक् कुम्मॆन् नॆञ्जव नॆन्ऱे कवल्हिन्ऱेन् 740

ऍम्पिक्कुम्–मेरे कनिष्ठ को; ऍन् अन्नै तनक्कुम्–मेरी माता को; इऱुतिक्कु–अन्त करने के लिए; ओर् अम्पु उय्क्कुम्–जिसने एक वाण चलाया; पोर् विल्लि तनक्कुम्–उस युद्धकुशल धनुर्धर श्रीराम; अयल् निऱ्कुम्–और उसका पार्षद; तम्पिक्कुम्–कनिष्ठ भ्राता के सामने; ऍन् आण्मै तविर्न्ते–अपना पौरुष हारकर; तळर्वु उऱ्ऱेन्–शिथिल हो गया; ऍन् नॆञ्चु–मेरा मन; कम्पिक्कुम्–काँपता है; अवन् ऍन्ऱे–वही राम (तुम्हारा शत्रु हो गया, यह समझकर); कवल्किन्ऱेन्–व्याकुल हूँ। ७४०

श्रीराम वड़ा ही युद्धनिपुण धनुर्धर है। उसने मेरे छोटे भाई और

माता (ताड़का) को मौत के घाट उतारने के लिए एक-एक ही वाण चलाया था। ऐसे उसके और उसके पार्षद लक्ष्मण के सामने अपना वल हारकर मैं निर्बल हुआ। अव भी उनकी वात सोचता हूँ तो मेरा मन कम्पित हो जाता है। अव मेरी चिन्ता यही है कि वही तुम्हारा शत्रु वन गया है! । ७४०

निऩ्ऱुम् जॆऩ्ऱुम् वाऴ्वन यावु निलैयावाल्
पोऩ्ऱु मॆऩ्नु मॆय्म्मै युणर्न्दोय् पुलैयाडऱ्
कोऩ्ऱु मुऩ्ऩा यॆऩ्ऩुरै कोऴ्ळा युयर्शॆल्वत्
तॆऩ्ऱु मॆऩ्ऱु वेहुदि यैया विऩ्ऱियॆऩ्ऱाऩ् 741

ऐया—तात; निऩ्ऱुम् चॆऩ्ऱुम्–अचल और चल; वाऴ्वत यावुम्—जीव सभी; निलैया–मर्त्य हैं; पोऩ्ऱुम्–मर जायेंगे; ऍऩ्ऩुम् मॆय्म्मै–यह सत्य; उणर्न्तोय्–जानते हो; पुलै आटऱ्कु–यह नीच काम करना; ऒऩ्ऱुम् उऩ्ऩाय्—कुछ मत सोचो; ऍऩ् उरै कोऴ्ळाय्–मेरा वचन मानो; इति–आगे भी; उयर् चॆल्वत्तु–ऊँचे वैभव के साथ; ऍऩ्ऱुम् वेकुति–सदा रहो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा (मारीच ने)। ७४१

हे तात! इस संसार में चल या अचल कोई भी जीव या जन्तु स्थायी रूप से रहनेवाला नही है। यह तथ्य तुम जानते ही हो। ऐसे तुम यह पाप का खेल क्यो करना चाहते हो? किञ्चित भी यह वात मत सोचो। मेरी बात मान लो। अपार वैभवयुक्त पद में हो आगे भी सदा उसी में रहो। मारीच ने ये सारी वातें कही। ७४१

कङ्गैशडै वैत्तव नोंडुङ्गयिलै वॆऱ्पोर्
अङ्गैयि नॆडुत्तवॆन दार्वॆऴिन् मणित्तोळ्
इङ्गोर्मनि दऱ्कॆळिय वॆन्ऱतै यॆन्नत्तन्
वॆङ्गणॆरि यप्पुरुव मीदुऱ विडैत्ताऩ् 742

कङ्कै चटै वैत्तवन् ओटुम्—जटा में गंगाधारक के साथ; कयिलै वॆऱ्पु–उनके कैलासपर्वत को; ओर् अम् कैयिल्–एक हथेली पर; ऍटुत्त–जिन्होंने उठाया; ऍनतु–मेरे; आटु–युद्धोत्साही; ऍऴिल् मणि तोळ्–सुन्दर श्रेष्ठ भुजाएँ; इङ्कु ओर् मतितऩुक्कु–यहाँ एक मनुष्य के लिए; ऍळिय ऍऩ्ऱतै–सुगम है, कहा; ऍऩ्–कहकर; वॆम् कण् ऍरिय–भयंकर आँखों से आग निकालते हुए; पुरुवम् मीतु उऱ–भौंहों को ऊपर उठाते हुए; विटैत्ताऩ्–डाँट बतायी। ७४२

रावण को ये वातें कैसे पसन्द आती? उसने डाँट बतायी। अपनी जटा में गंगाधारक शिवजी के कैलास को उनके साथ मैंने अपनी हथेली में उठाया था। तुम कहते हो ऐसी मेरी प्रबल, सुन्दर और युद्धोत्साही भुजाएँ इस अल्प मनुष्य के सामने तुच्छ हैं! यह कहते वक्त उसकी आँखों से अंगार छूटे और भौंहें तनकर भाल पर चढ़ गयीं। ७४२

निहळ्न्ददै निनैक्किलैयॆन् नॆञ्जिनिलै यञ्जा
दिहळ्न्दनै यॆनक्किळैय नङ्गैमुह मॆङ्गुम्
अहळ्न्दवरै यॊप्पुऱ वमैत्तवरै यैया
पुहळ्न्दनै तनिप्पिळै पॊऱुत्तनॆनॆ दॆन्ऱान् 743

ऐया–प्रभु; निकळ्न्ततै–जो घटा; नितैक्किलै–वह नहीं सोचते; अञ्चातु–विना डर के; ऍन् नॆञ्चिन् निलै–मेरे हृदय की स्थिति की; इकळ्न्ततै–निन्दा की; ऍतक्कु इळैय नङ्कै–मेरी छोटी बहिन के; मुकम् ऍङ्कुम्–मुख-भर में; अकळ्न्त वरै–खुदे हुए पर्वत के; ऑप्पु उऱ–समान हो, ऐसा; अमैत्तवरै–जिन्होंने बनाया, उनको; पुकळ्न्ततै–प्रशंसा की; इतु तनि पिळै–यह बहुत बड़ा अपराध है; पॊऱुत्तनॆन्–क्षमा की मैंने; ऍन्ऱान्–कहा। ७४३

हे तात ! तुमने जो हुआ उसका विचार नहीं किया। विना भय के मेरी चित्त-स्थिति को हेय बताया। मेरी छोटी बहिन का चेहरा खुदे हुए गढ़े-सहित पर्वत के समान हो गया। वैसा जिसने बनाया उस मनुष्य की मुझसे प्रशंसा करते हो। यह बड़ा भारी अतुलनीय अपराध है। तो भी तुम्हें क्षमा करता हूँ। ७४३

तन्नैमुनि वुऱ्ऱदऱु कट्टहवि लोनैप्
पिन्नैमुनि वुऱ्ऱिडुमॆ नत्तविर्दल् पेणान्
उन्नैमुनि वुऱ्ऱुलुगु लत्तैमुनि वुऱ्ऱाय्
ऍन्नैमुनि वुऱ्ऱिलैयि दॆन्नॆन विशैत्तान् 744

तन्तै मुनिवु उऱ्ऱ–अपने पर कोप करनेवाले; तऱुकण्–निडर; तकवु इलोतै–अयोग्य को; पिन्तै मुनिवु उऱ्ऱिटुम्–फिर भी कोप करेगा; ऍन्त–यह सोचकर; तविर्तल् पेणान्–छोड़ना न चाहते हुए; ऍन्तै मुनिवु उऱ्ऱिलै–मुझ पर गुस्सा नहीं किया पर; उन्तै मुनिवु उऱ्ऱु–अपने से ही आक्रोश करते; उन् कुलत्तै मुनिवुऱ्ऱाय्–अपने वंश पर क्रोध करते हो; इतु ऍन् ऍन–यह क्या है; इचैत्तान्–कहा। ७४४

मारीच ने सोचा। रावण मुझ पर क्रोध करता है। वह निडर अयोग्य राक्षस और भी गुस्सा करेगा। तो भी भय के कारण उसने उपदेश देने से विरत होना नहीं चाहा। उसने कहा कि रावण ! अब तुम मुझ पर क्रोध जो करते हो उसका अर्थ है तुम अपने पर गुस्सा करते हो और अपने कुल पर गुस्सा करते हो ! यह कार्य तुम क्यों करते हो भाई ! । ७४४

ऍडुत्तमलै येनिनैयि नीशनिहल् विल्ला
वडित्तमलै नोयिदुव लित्तियॆन वारिप्
पिडित्तमलै नाणिडैप् पिणित्तॊरुवन् मेनाळ्
ऑडित्तमलै यण्डमुह डुऱ्ऱमलै यन्ऱो 745

ॲट्टुत्त मलैये–तुमने पर्वत उठाया, उसी पर्वत को; नित्तैयिऩ्–याद करते रहो तो; इतु ईचऩ् इकल् विल्लाय्–यह ईश्वर के युद्ध के लिए धनु; वटित्तुत मलै–बनाया गया पर्वत है; नी इतु वलित्ति–तुम इसे झुकाओ; ॲत–कहने पर; मेल् नाळ्–पहले; ऑरुवऩ्–एक मानव से; वारि–उठाकर; पिटित्तत मलै–हाथ में जो पकड़ा गया वह पर्वत; नाण् इटै पिणित्तुतु–प्रत्यंचा से बद्ध खींचने के मध्य; ऑटित्तत मलै–तोड़ा गया पर्वत; अण्टम् मुकट्टु उऱ्ऱ–आकाश की चोटी तक गया; मलै अऩ्ऱो–मेरुपर्वत नहीं है क्या। ७४५

तुमने जो उठाया उसी कैलासपर्वत की याद में भूले हुए हो। ईश्वर शिव ने मेरुपर्वत का ही धनु बनाया था। उसको झुकाने की आज्ञा दी विश्वामित्र ने। तो राम ने उस पर्वत को प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाते वक्त तोड़ दिया था। वह पर्वत कौन सा था। जानते हो! (तुमने तो हिमालय के एक छोटे से शिखर को उठाया था!) राम ने जो उठाकर तोड़ा वह आकाश-स्पर्शी और श्रेष्ठ पर्वत था! । ७४५

यादुमऱि यायुरैहॊ ळायिहलि रामऩ्, कॊदैबुत्ते यामुनुयिर् कॊळ्ळैवडु मऩ्ऱे
पेदैमदि यालिदुवोर् पॆण्णुरुव मॆऩ्ऱाय्, शोदैयुरु वोनिरुदर् तीविनैय दऩ्ऱो 746

यातुम् अऱियाय्–कुछ नहीं जानते; उरै कॊळाय्–उपदेश ग्रहण न करोगे; इकल् इरामऩ्–युद्धसमर्थ श्रीराम; कोतै पुतैयामुऩ्–युद्ध के लिए हाथ में दस्ताना पहनने के पूर्व ही; उयिर् कॊळ्ळै पटुम् अऩ्ऱे–हमारे प्राण छूट जायेंगे न; पेतै मतियाल्–जड़ मति के कारण; इतु ऑरु पॆण् उरुवम् ॲऩ्ऱाय्–यह स्त्री-रूप है, कहा; अतु चीतै उरुवो–वह सीता का रूप है क्या; निरुतर् ती विऩैयतु–राक्षसों के पाप का रूप है; अऩ्ऱो–न। ७४६

तुम न खुद कुछ जानते हो, न मेरा उपदेश मानते हो! यह जान लो कि श्रीराम के, जो युद्ध-प्रवीण है, हस्तत्राण (या माला) पहनने के पूर्व ही हमारे प्राण हर लिये जायँगे। तुम अपनी मन्दमति के कारण उसको स्त्री का रूप मानते हो! वह क्या सीता का रूप है? नहीं हमारे पापों का मूर्त-रूप है। ७४६

उऩ्ऱुबिळै यायुऱवि नोडुमॆऩ वुऩ्ऩा, नॆञ्जुबऱै पोदुमदु नीनिनैय हिल्लाय्
अञ्जुमॆऩ दारुयि रऱिन्दरुहु निऩ्ऱार्, नञ्जुनुहर् वारैयिदु नऩ्ऱॆऩ्ऩलु नऩ्ऱे 747

उऱविऩोटम् उऩ्चु–परिवारों, बन्धु-बान्धवों के साथ बचकर; पिऴैयाय्–जीवित नहीं रहोगे; ॲऩ–यह; उऩ्ऩा–सोचकर; नॆञ्चु पऱै पोतुम्–मेरा मन ढोल की खाल के समान थर्राता है; नी अतु नित्तैय किल्लाय्–तुम वह सोच नहीं पाते; ॲऩतु आर् उयिर्–मेरे बहुमूल्य प्राण; अञ्चुम्–डरते हैं; नञ्चु नुकर्वारै–विष-खादक को; अऱिन्तु–(विष खाता) जानकर; अरुकु निऩ्ऱार्–पार्श्व में स्थित लोगों का; इतु नऩ्ऱु–यह (तुम्हारा विष खाना) अच्छा है; ॲऩ्ऩलुम्–कहना भी; नऩ्ऱे–अधिक अच्छा होगा। ७४७

जब मैं विचार करता हूँ कि तुम अपने परिवारों और बन्धुजनों के

साथ नष्ट हो जाओगे और नहीं बचोगे तो मेरा चित्त थर-थर काँपता है; जैसे पिटा ढोल। तुम वह सोचने में असमर्थ हो। मेरे प्यारे प्राण भी काँपते हैं। तुमको प्रोत्साहन दूँ तो उस काम से विषखादक को पास रहने वालों के, 'यह बड़ा अच्छा है' कहकर प्रोत्साहित करना भी अधिक भला होगा। ७४७

ईशन्मुद	लाहविऱ्‌ै	योरुलहु	मऱ्‌ऱैत्
तेशमुदन्	मुऱ्‌ऱुमो	रिमैप्पिनुयिर्	तिन्नक्
कोशिह	न्ळित्तहड	वुट्पडै	कौदिप्पो
डाशिल	कणिप्पिल	विरामन्नरु	णिऱ्‌प 748

ईचन् मुतलाक–ईशानदेव आदि; इऱ्‌ैयोर् उलकुम्–देवों के लोकों को; मऱ्‌ऱै–और अन्य; तेचम् मुतल्–देश आदि; मुऱ्‌ऱुम्–सारा; ओर् इमैप्पिल्–एक बार पलक मारती देर में; उयिर् तिन्नत–प्राण खाने (मिटाने) के लिए; कोचिकन् अळित्त कटवुळ् पटै–कौशिक से दत्त दिव्य अस्त्र; आचु इल–त्रुटिहीन; कणिप्पु इल–गणनाहीन; कौतिप्पोटु–उग्रता के साथ; इरामन् अरुळ्–श्रीराम की सेवा में; निऱ्‌प–खड़े हैं। ७४८

श्रीराम के पास कौशिक-दत्त अमोघ, त्रुटिहीन और अगणित अस्त्र हैं, जो ईशान के लोक से लेकर सारे देवताओं के लोक और अन्य लोकों को पल भर में समाप्त कर दे सकते हैं। वे श्रीराम की सेवा में उसकी आज्ञा के मुहताज खड़े है। ७४८

आयिरम	डऱ्‌कैयुडै	यानैमळु	वाळाल्
एयॅनुमु	रैक्कुळुयिर्	शॅऱ्‌ऱवॅंदि	रिल्लोन्
मेयतिऱन्	मुऱ्‌ऱुम्वरि	वॅञ्जिलैयि	नोडुम्
तायवन्व	लित्तहैमै	यामुरुत	हैत्तो 749

आयिरम्–सहस्र; अटल् कै–बलिष्ठ हाथों से; उटैयानै–युक्त कार्तवीर्य को; मळु वाळाल्–परशु के अस्त्र से; एय् ऍनुम् उरैक्कुळ्–'रे' के उच्चारण करते समय के अन्दर; उयिर् चॅऱ्‌ऱ–जिसने प्राणहीन कर दिया; ऍतिर् इल्लोन्–उस अप्रतिद्वन्द्वी परशुराम का; मेय–प्राप्त; तिऱल् मुऱ्‌ऱुम्–सारा बल; वरि वॅम् चिलैयिन् ओटुम्–बन्धनयुक्त धनुष के साथ; तायवन्–परास्त जो किया उसका; वलि तकैमै–बल-पराक्रम; याम् उरु तकैत्तु ओ–हमारे कहने योग्य होगा क्या। ७४९

राम ने परशुराम के सारे बल को, उसके धनुष के साथ परास्त किया था। वह परशुराम क्या मामूली मनुष्य थे। सहस्र महाबली हस्तों से युक्त कार्तवीर्य को परशुराम ने 'रे' शब्द के उच्चारण समय के अन्दर अपने परशु के प्रहार से समाप्त किया था। ऐसे श्रीराम के बल का अनुमान या कथन हम करने योग्य हैं क्या? । ७४९

वेदनैशॅय् कामविड मेविडमॅ लिन्दाय्
तीदुरैशॅय् दायिनैय शॅय्हैशिदै वन्ऱो
मातुलनु माय्मरबिन् मुन्दैयुड़ वन्दैन्
ईदुरैशॅय् देनिदनै यॅन्दैतविर् हॅन्ऱान् 750

वेतनैं चॅय्–पीड़क; काम विटन् मेविट–काम रूपी विष चढ़ा और; मॅलिन्ताय्–क्षीण हो गये हो; तीतु उरै चॅय्ताय्–अनर्थ की बात करते हो; इन्नैय चॅय्कै–तुम्हारा यह काम; चितैवु अन्ऱो–नाश का है न; मातुलनुम् आय्–मामा बना हूँ और; उड़ मुन्नै वन्तेन्–बहुत पूर्व ही पैदा हुआ हूँ; ईतु उरै चॅय्तेन्–यह हितोपदेश किया; ॲन्नै–मेरे तात; इतनै–(सीतापहरण का) यह (विचार); तविर्क–छोड़ दो; ॲन्ऱान्–कहा। ७५०

वेदनादायी काम-विष तुम पर चढ़ा है। इसलिए तुम तन से और (बुद्धि में भी) क्षीण हो गये हो। इसलिए अनुचित बातें कह रहे हो। सीतापहरण का काम हमारे नाश का काम नहीं हो जायगा? मैं तुम्हारा मातुल हूँ; बहुत पहले पैदा हुआ, अतः तुमसे बड़ा हूँ। यह जो कहा, वह तुम्हारे हित का ही वचन है। मेरे तात! इस बुरे विचार को त्याग दो। मारीच ने उसे समझाया। ७५०

ॲन्नवुरै यित्तनैयु मॅत्तनैयु मॅण्णिच्
चॊन्नवनै येशिन नरक्कर्पदि चॊन्नान्
अन्नैयुयिर् शॅड़ड़वनै यञ्जियुड़ै हिन्ड़ाय्
उन्नैयॊरु वड़्कॊरुव नॅन्ड़ुणर्है नन्ड़ो 751

ॲन्न–(मारीच के ऐसा) कहने पर; उरै इत्तनैयुम्–सभी उपदेशों पर; ॲत्तनैयुम् ॲण्णि–सभी तरह से विचार करके; चॊन्नवनै–वक्ता की; एचिनन्–निन्दा की; अन्नै उयिर् चॅड़्ड़वनै–माता के प्राणघातक से; अञ्चि उड़ैकिन्ड़ाय्–डरकर (छिपे) रहते हो; उन्नै–तुमको; ऑरुवड़्कु ऑरुवन् ॲन्ड़ु–वीर के मुकाबले में वीर; उणर्कै–समझना; नन्ड़ो–ठीक होगा क्या; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; चॊन्नान्–कहा। ७५१

मारीच ने जो बातें कहीं, उन पर रावण ने खूब और सब तरह से विचार किया। पर उसे उनमें कोई सार नहीं लगा और क्रोध ही आया। राक्षसपति ने उपदेशक की निन्दा की। कहा— तुम डरपोक हो! माता के मारक से डरकर तपस्या का बहाना करते हुए यहाँ छिपे रहते हो! तुम्हें वीर के समान वीर कहना मान्य कैसे हो सकता है? । ७५१

तिक्कय मॊळिप्पनिलै तेवर्हॅड वानम्
पुक्कव रिरुक्कैबुहै वित्तुलहम् यावुम्
शक्कर नडत्तुमॅनै योतयर दन्ड़न्
मक्कणलि हिड़्परिदु नन्ड़ुमदि यन्ड़ो 752

तिक्कयम् ऑळिप्प–दिग्गजों को छिपने को विवश करते हुए; तेवर् निलै कॅट–देवों को अस्त-व्यस्त करते हुए; वानम् पुक्कु–देवलोक में जाकर; अवर् इरुक्कै पुकैवित्तु–उनके स्थान को जलाकर धुएँ से भरकर; उलकम् यावुम्–सारे लोकों पर; चक्करम् नटत्तुम्–आज्ञाचक्र चलानेवाले; ॲनैयो–मुझे क्या; तयरतन् तन् मक्कळ्–दशरथ के छोटे; नलिकिऱ्पर्–कष्ट देंगे; इतु नन्ऱु मति अन्ऱो–यह वड़ी अच्छी समझ है न। ७५२

मुझे दशरथ के छोटे कष्ट देंगे ? मुझे, जिसने दिग्गजों को भयभीत करके छिपने को विवश किया; जिसने स्वर्गलोक में घुसकर देवों को अस्त-व्यस्त कर उनके लोक में आग और धुआँ फैला दिया और जो सारे लोकों पर आज्ञाचक्र चला रहा हूँ, ऐसे मुझे वे त्रास देंगे ? यह तुम्हारी सूझ भी वड़ी भली रही न ! । ७५२

सूवुलहि तुक्कुमोरु नायह मुडित्तेन्
मेवलर् किडैक्किन्निदन् मेलिन्निय दुण्डो
एवल्शॅय हिऱ्ऱियॅन्न दाणैवळि यॅण्णिक्
कावल्शॅ यमैच्चर्कड नीकडव दन्ऱे 753

मू उलकित्तुक्कुम्–तीनों लोकों का; ओरु नायकम् मुटित्तेन्–निर्द्वन्द्व नायकत्व अपनाया; मेवलर् किटैक्किन्–ऐसे शत्रु मिलेंगे तो; इतन् मेल् इनियतु–इससे वढ़कर सुखद; उण्टो–कोई दूसरा है क्या; कावल् चॅय्–राज्यरक्षणकारी; अमैच्चर् कटन्–अमात्यों का कर्तव्य; नी कटवतु अन्ऱे–तुम उल्लंघन नहीं कर सकते; ॲन्तु आणै वळि–मेरी आज्ञा के अनुसार; ॲण्णि–सोचकर; एवल् चॅय्किऱ्ऱि–सेवा करो। ७५३

मैंने तीन लोकों का निर्द्वन्द्व आधिपत्य कर लिया। ऐसे मेरे शत्रु हो जायँ तो उससे बढ़कर सुखदायी वात क्या हो सकती है ? राज्यरक्षणरत अमात्यों का कर्तव्य राजा का अभिप्राय जानकर तदनुकूल कार्य करना है। तुम्हारा काम उसका अतिक्रमण करना नहीं है। मेरी आज्ञा सुनो, उसी के अनुकूल सोचकर सेवा करो। ७५३

मरुत्तनै यॅन्पप्पॅरिनु निन्नैवडि वाळाल्
ऑरुत्तुमत मुर्ऱुडु मुडिप्पॅन्नॊळि हिल्लेन्
वॅरुत्तन किळत्तलुरु मित्तॊळिलै विट्टॅन्
कुऱिप्पिन्वळि निऱ्ऱियुयिर् कॊण्डुळलि यॅन्ऱान् 754

मरुत्तनै ॲन्त पॅरितुम्–इनकार भी करोगे तो; नितनै–तुम्हें; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; ओरुत्तु–मारकर; मतम् उऱ्ऱु–अपना मनमाना; मुटिप्पॅन्–कर लूँगा; ऑळिकिल्लेन्–त्यागूँगा नहीं; उयिर् कॊण्टु उळलिन्–प्राणसहित रहना चाहो तो; वॅरुत्तन–मेरी खीझ के; किळत्तल् उरुम्–वचन कहने का; इ तॊळिलै विट्टु–यह काम छोड़ो; ॲन् कुऱिप्पिन् वळि निऱ्ऱि–मेरी राय का मार्ग चलो; ॲन्ऱान्–कहा। ७५४

तुम इनकार भी करोगे तो क्या होगा ? मैं अपनी तीक्ष्ण तलवार से तुम्हारा काम तमाम कर दूँगा और अपना मनमाना कर लूँगा। यह कार्य विना किये नहीं छोड़ूँगा। इसलिए तुम जीवित फिरना चाहो तो मुझे खिझानेवाले उपदेश देना छोड़ो और मेरी इच्छा के अनुकूल सेवा करो। रावण ने निश्चित रूप से कह दिया। ७५४

अरक्कन्:(ह्) दुरैत्तलोड् मट्रिन्दन नडङ्गु नॅञ्जन्
तरुक्किनर् कॅडुव रॅन्ऱ्ट्र इत्तुव निलैयिड्ट्र इन्ट्रो
शॅरुक्किनिड्ट्र टीरु मॅन्बार् तम्मिलार् शॅरुक्क रॅन्ना
उरुक्किय शॅम्बॉ नुट्र्ट्र नीर्मैया नुरैक्क लुट्र्ट्रान् 755

अरक्कन्–राक्षस के; अ.'.तु उरैत्तल् ओटुम्–वह वात कहने पर; अट्रिन्ततन्–(रावण का मन) जाना; अटङ्कु नॅञ्चन्–संयत-मन होकर; तरुक्किन्नर् कॅटुवर्–घमण्डी नष्ट होंगे; ऍन्ट्रल्–यह कथन; तत्तुव निलैयिड्ट्रु अन्ट्रो–सत्य बनता है न; चॅरुक्कित्तिल्–गर्व से; तीरुम् ऍन्पार् तम्मित्–नाश को प्राप्त होंगे, ऐसा जिन्होंने निश्चय किया है उनसे बढ़कर; चॅरुक्कर्–गर्वीले शत्रु; आर्–कौन है, ऍन्ना–सोचकर; उरुक्किय चॅम्पॉन्–पिघले हुए स्वर्ण; उट्र्ट्र नीर्मैयान्–की स्थिति में जो रहा, वह; उरैक्कल् उट्र्ट्रान्–कहने लगा। ७५५

जब राक्षसराज रावण ने यह कहा तो मारीच ने रावण का स्वभाव सोचा और उसका निश्चय जान लिया। इसलिए उसने अपने मन को संयत कर लिया। सोचा— अभिमानी लोग अवश्य नष्ट होंगे। यह कथन सत्य बन गया है ! जो गर्व के कारण अपने को नष्ट कर लेने में तुले है, उनका उनसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं होता। वह स्वयं अपना नाश कर लेगा। मारीच अब पिघला-स्वर्ण-समान स्वच्छमन हो गया था। वह यों बोला। ७५५

उन्वयि नुरुदि नोक्कि युणर्मैयि नुणर्त्ति तॅन्मट्र्
ऍन्वयि निरुदि नोक्कि यच्चत्ता लिशैत्ते नल्लेन्
नन्मैयुन् दीमै यन्ट्रे नाशम्वन् दुट्र्ट्र नाळिल्
पुन्मैयि निन्ट्र नीराय् शॅय्वदु पुहट्रि यॅन्ट्रान् 756

उन् वयिन् उरुति नोक्कि–तुम्हारा हित सोचकर; उणर्मैयिन् उणर्त्तितेन्–सच्चे दिल से समझाया; मट्र्ट्रु–अलावा; ऍन् वयिन् इरुति–मेरा अन्त; नोक्कि–समझकर; अच्चत्ताल्–डर से; इचैत्तेन् अल्लेन्–कहा नहीं; नाचम् वन्तु उट्र्ट्र नाळिल्–जब नाश आता है; नन्मैयुम् तीमै अन्ट्रे–भला भी बुरा हो जाता है न; पुन्मैयिन् निन्ट्र नीराय्–नीचकर्मतत्पर रावण; चॅय्वतु पुकल्ति–मेरा कार्य कहो; ऍन्ट्रान्–पूछा। ७५६

रावण ! मैंने तुमसे जो कहा वह तुम्हारे भले के लिए ही साफ़ मन के साथ कहा था। अपनी मृत्यु के डर से नहीं कहा था। जब नाश का

दिन आता है तब भला भी बुरा लगता है। हे नीचकार्यतत्पर रावण ! तुम कहो— मैं क्या करूँ ? । ७५६

ऍऩ्ऱलु मॆळ्ळुनट्टु पुल्लि येऱिय वॅहुळि नीङ्गिक्
कुऩ्ऱॆनक् कुविन्द तोळाय् मारवेळ् कॊदिक्कु मम्बाल्
पॊऩ्ऱलि लिराम नम्बाऱ् पॊऩ्ऱले पुहऴुण् डऩ्ऱो
तॆऩ्ऱलैप् पहैयाच् चॆय्द शीदैयैत् तरुदि यॆऩ्ऱाऩ् 757

ऍऩ्ऱलुम्–कहते ही; एऱिय वॅकुळि नीङ्कि–उठे क्रोध को दूर करके; ऍळुन्तु पुल्लि–उठकर आलिंगन करके; कुऩ्ऱु ऍऩ कुविन्त तोळाय्–पर्वतोन्नत कन्धों वाले; मार वेळ्–मारदेव के; कॊतिक्कुम् अम्पाल्–सन्तापक अस्त्रों से; पॊऩ्ऱलिन्–मरने से; इरामऩ् अम्पाल्–राम-शर से; पॊऩ्ऱले–मरना; पुकऴ् उण्टु अऩ्ऱो–प्रशंसा-योग्य है न; तॆऩ्ऱलै पकैयाय् चॆय्त–मलयपवन को जिसने मेरा शत्रु बना दिया; चीतैयै–उस सीता को; तरुति–लाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७५७

मारीच के ऐसा कहते ही रावण का उमँगा हुआ क्रोध थम गया। उसने उठकर मारीच का आलिंगन करके कहा— हे पर्वतोन्नत भुजाओं के मारीच ! मैं सोचता हूँ कि कामदेव के संतापक शरों से मरने से राम-शर से मरना अधिक कीर्तिदायक होगा। इसलिए उस सीता को हर लाओ, जिसने मलयपवन को मेरा शत्रु वना दिया है, और उसे मेरे पास दे दो। ७५७

आण्डव ऩत्तैय कूऱ वरक्करो रिरुव रोडुम्
पूण्डॆऩ् माऩम् दीरत् तण्डहम् पुक्क कालैत्
तूण्डिय शरङ्गळ् पायत् तुणैवर्पट् टुरुळ वञ्जि
मीण्डयाऩ् शॆऩ्ऱु शॆय्युम् विऩैयॆऩ्गॊल् विळम्बु हॆऩ्ऱाऩ् 758

आण्टु–तब; अवऩ् अत्तैय कूऱ--उसके वह कहने पर; पूण्ट ऍऩ् माऩम् तीर–(पहले) प्राप्त अपना अपमान पोंछने के लिए; अरक्कर् ओर् इरुवर् ओटुम्–दो राक्षसों के साथ; तण्टकम् पुकुन्त कालै–जब दण्डक पहुँचा, तब; तूण्टिय चरङ्कळ् पाय–उससे प्रेरित बाणों के लगने पर; तुणैवर् पट्टु उरुळ–मेरे साथी आहत हो लोटे और; अञ्चि मीण्ट–डरकर लौट आया; याऩ्–मैं; चॆऩ्ऱु चॆय्युम्–जाकर करूँ ऐसा; विऩै ऍऩ् कॊल्–कार्य क्या (रखा) है; विळम्पुक–कहो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७५८

यह सुनकर मारीच ने कहा कि पहले मैं राम से अपमानित हुआ। उस अपमान को पोंछने के हेतु मैं दो-एक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ गया था। राम के शर के लगने से वे दोनों लुढ़क गये। भय से मैं लौट गया। ऐसे मेरे लिए अव करने को क्या काम रहेगा ? यह तो वताओ। ७५८

आयव ननैय कूऱ् वरक्करहो नैय नॊय्दुऩ्
तायैया रुयिरुण् डानैक् कॊल्लयाऩ् शमैनु्दु निऩ्ऱेऩ्
पोयैया पुणर्प्प दॆऩ्नै यॆऩ्बदु पॊरुन्दिऱ् ऱोऩ्ऱो
मायैयाल् वञ्जित् तन्ऱो वव्वुद लवळै यॆऩ्ऱान् 759

आयवन् अनैय कूऱ्–उसके ऐसा कहने पर; अरक्कर् कोन्–राक्षसराज; ऐय–श्रेष्ठ पुरुष; नॊय्तु–हेय रीति से; उन् तायै–तुम्हारी माता के; आर् उयिर् उण्टानै–प्यारे प्राणों के घातक को; कॊल्ल–मारने के लिए; यान् चमैन्तु निन्ऱेन्–मैं कृत-संकल्प हूँ; पोय् ऐया पुणर्प्पतु ऎन्नै–जाकर तात क्या करूँ; ऎन्पतु–कहना; पॊरुन्तिऱ्ऱु ऒन्ऱो–उचित है क्या; अवळै–उसको; मायैयाल् वञ्चित्तु–वंचना से धोखा देकर; वव्वुतल् अन्ऱो–हर लाना ही है न; ऎन्ऱान्–कहा। ७५९

मारीच के ऐसा कहने पर राक्षसपति रावण ने कहा कि मामा ! मैंने दृढ़ संकल्प कर रखा है कि मैं तुम्हारी माता के, हेयरीति से घातक राम को मार दूँ। तब वहाँ जाकर क्या करूँ —यह पूछना तुम्हारे लिए उचित नहीं लगता। उस सीता को वंचना से हर लाओ —यही करना उचित है न ? ७५९

पुऱत्तिनि युरैप्प दॆन्ने पुरवलन् ऱेवि तन्नैत्
तिऱत्तुळि यन्ऱि वञ्जित् तॆय्दुदल् शिऱुमैत् तामाल्
अऱत्तुळ दॊक्कु मन्ऱे यमर्त्तलै वॆन्ऱु कॊण्डुन्
मऱत्तुऱै वळर्त्ति मन्न वॆन्नमा रीशन् शॊन्नान् 760

मन्न–राजा; इनि पुऱत्तु उरैप्पतु ऎन्ने–अब और कहना क्या है; पुरवलन् तेवि तन्नै–(लोक-) रक्षक राम की देवी को; तिऱत्तु उळि अन्ऱि–अपने बल से नहीं; वञ्चित्तु ऎय्तल्–कपट से प्राप्त करना; चिऱुमैत्तु आम् आल्–नीचता का होगा, इसलिए; अऱत्तुळतु ऒक्कुम् अन्ऱे–धर्म-सम्मत नहीं होगा न; अमर् तलै वॆन्ऱु कॊण्टु–युद्ध में (राम को) जीतकर (सीता को) लेकर; उन् मऱ तुऱै–अपनी वीरता का गौरव; वळर्त्ति–वढ़ा लो; ऎन्न–ऐसा; मारीचन् चॊन्नान्–मारीच ने कहा। ७६०

मारीच को यह हेय लगा। उसने नीति वतायी। राजा ! ऐसा कहोगे तो फिर क्या कहा जाय ? राजाराम की देवी सीता को अपनी वीरता से उठा लाना छोड़कर वंचना से हर लाना चाहते हो ! यह तुम्हारे गौरव को हल्का कर देगा। इसलिए वह धर्मसम्मत नही होगा। युद्ध करो, राम को हराओ, सीता को लाओ। अपनी वीरता को वढ़ाओ। ७६०

आनव नुरैक्क नक्क वरक्करहो नवरै वॆल्लत्
तानैदान् वेण्डु मोवॆन् ऱडक्कवा डक्क दन्ऱो
एनैय रिऱक्किऱ् ऱानुन् दमियळा यिऱक्कु मन्ऱे
मानव ळाद लाले मायैयिन् वलित्तु मॆन्ऱान् 761

आतवन्-ऐसे उसके; उरैक्क-कहने पर; नक्क-हँसते हुए; अरक्कर् कोन्-राक्षसाधिपति; अवरै वॅल्ल-उसको हराने के लिए; तानै तान् वेण्टुमो-सेना भी चाहिए क्या; ॲन् तट कै वाळ्-मेरे विशाल हाथ का (चन्द्रहास) खड्ग; तक्कतु अन्रो-योग्य नहीं है क्या; मानवळ्-वह मनुष्य स्त्री; एतैयर् इरक्किन्-(उन दोनों) दूसरों के मरने पर; तानुम् तमियळाय्-स्वयं अकेली बनकर; इरक्कुम् अन्रे-प्राण त्याग देगी न; आतलाले-उसी कारण; मायैयिन् वलित्तुम् ॲन्रान्-माया से ले आयेंगे; ॲन्रान्-कहा। ७६१

अपने रास्ते पर आये मारीच का कथन सुनकर राक्षसपति रावण उसकी नासमझी पर हँसते हुए बोला। राम और लक्ष्मण को हराने के लिए सेना की भी आवश्यकता पड़ेगी क्या? मेरे विशाल हाथ में जो चन्द्रहास, तलवार है वह पर्याप्त नहीं होगी क्या? पर तुमने यह नहीं सोचा। वे दोनों मर जायँगे तो वह मानवी स्त्री अपने को अकेला समझ कर प्राण त्याग देगी न? इसी हेतु कहता हूँ कि उसे माया से हर लायँगे। ७६१

तेवियैत् तीण्डा मुन्न मिवन्रलै शरत्तिर् चिन्दिप्
पोवहै पुणर्प्प नॅन्रु पुन्दियार् पुहल्हिन् ड्रेड्कुम्
आवहै यायिड् ड्रिल्लै यार्विदि विळैवै योर्वार्
एविय शॅय्द लल्ला लिल्लैवे ड्रॉन्ड्रॅन् ड्रॅण्णा 762

तेविपै तीण्टा मुन्नम्-देवी को स्पर्श करने से पहले ही; इवन् तलै-इसके सिर; चरत्तिल् चिन्ति पो वकै-शर से गिराने का उपाय; पुणर्प्पन्-राम कर लेगा; ॲन्रु-ऐसा; पुन्तियाल् पुकल्किन्रेड्कुम्-बुद्धि से जानकर कहता हूँ, ऐसा मेरा भी; आ वकै-भला होने का उपाय; आयिरु इल्लै-होता नहीं है; विति विळैवै-विधि का फल; आर् ओर्वार्-कौन जान सकता; एविय चॅय्तल् अल्लाल्-आज्ञा मानने के सिवाय; वेरु ऑन्रु इल्लै-कोई दूसरा रास्ता नहीं; ॲन्रु ॲण्णा-ऐसा सोचकर। ७६२

मारीच बहुत दुःखी हुआ। यह मूर्ख नहीं जानता कि देवी सीता का स्पर्श करने के पूर्व ही श्रीराम ऐसा कार्य साध लेंगे कि इसके सिर उनके शरो से कटकर गिर जायँगे। यह मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार पर कहता हूँ। तो भी मेरा भी भला अब नहीं होता दिखता। विधि का विधान कौन जाने? अब मेरे सामने रावण के आज्ञा में कहे अनुसार करने के सिवा कोई मार्ग नहीं है। ऐसा सोचकर—। ७६२

ॲन्नमा मायम् यानिङ् गियट्रुव दियम्बु हॅन्ड्रान्
पॊन्निन्मा नाहिप् पुक्कप् पॊन्नैमाल् पुणर्त्तु हॅन्न
अन्नदु शॅय्वॅ नॅन्ना मारीश नमैन्दु पोन्रान्
मिन्नुवे लरक्कर् कोनुम् वेड्रोरु नॅड्रियिर् पोनान् 763

इङ्कु यान् ॲन्न मा मायम् इयऱ्ऱुवतु—यहाँ मैं क्या बड़ी माया करूँ; इयम्पुक—कहो; ॲन्ऱान्—कहा; पॊन्निन् मान् आकि पुक्कु—स्वर्ण-हिरण बनकर वहाँ पहुँचकर; अ पॊन्नै—उस स्वर्ण-सुन्दरी को; माल् पुणर्त्तुक—मोहित कर दो; ॲन्न—कहा, तब; अन्नतु चॆय्वॆन् ॲन्ना—वह करूँगा, कहकर; मारीचन् अमैन्तु पोनान्—मारीच सम्मत होकर गया; मिन्नुम् वेल्—चमकदार भाला के; अरक्कर् कोनुम्—राक्षसराज भी; वेऱु ऒरु नॆऱियिल् पोनान्—दूसरे मार्ग से गया। ७६३

मारीच ने रावण से पूछा कि अब मैं क्या बड़ा माया-कार्य करूँ ? तुम्हीं बताओ। तो रावण ने कहा— तुम स्वर्णमृग बनकर वहाँ जाओ। और उस स्वर्णसुन्दरी सीता को मोह में डाल दो। मारीच ने सम्मत होकर कहा कि हाँ ! वैसा ही करूँगा। चमकदार भालाधारी रावण भी दूसरे मार्ग से निकल गया। ७६३

❀ मेनाळवर् विल्वलि कण्डमैयाल्, तानाह निनैन्दु शमैन्दिलनाल्
मानाहुदि यॆन्ऱवन् वाळ्वलियाल्, पोनान्मन मुज्जॆय लुम्बुहल्वाम् 764

मेल् नाळ्—पहले; अवर् विल् वलि—उनके धनु की शक्ति; कण्टमै याल्—देखी थी, इसलिए; तान् आक—स्वयं; निनैन्तु चमैन्तिलन्—यह उपाय सोचकर तैयार नहीं हुआ; मान् आकुति—मृग बनो; ॲन्ऱवन्—यह जिसने कहा, उस रावण की; वाळ् वलियाल्—तलवार की शक्ति से (डरकर); पोनान् जो गया उसका; मनमुम्—मन और; चॆयलुम्—कार्य; पुकल्वाम्—बखानेंगे। ७६४

अब मारीच को राम-धनुष का बल खूब स्मरण रहा। उसने पहले उसका अनुभव किया था। इसलिए वह कदापि स्वयं मृग का रूप लेकर वहाँ जाने को सम्मत नहीं होता। पर रावण की तलवार का वार पड़ने का डर था। उसने कहा कि मृग बनो। इसीलिए वह सहमत हुआ। ऐसे उसका मन कैसा व्याकुल था और कार्य कैसे थे —उसका हम अब वर्णन करेंगे। ७६४

❀ वॆञ्जुऱ्ऱ निनैत्तुहुम् वीररैवे, ऱञ्जुऱ्ऱु मऱुक्कुऱु माळ्हुळिनीर्
नञ्जुऱ्ऱुळि मीनिनडुक् कुऱुवान्, नॆञ्जुऱ्ऱदोर् पॆऱ्ऱि निनैप्परिदाल् 765

वॆम् चुऱ्ऱम् निनैत्तु—प्यारे बन्धु-बान्धवों की हालत सोचकर; उकुम्—विगलित हुआ; वेऱु—और भी; वीररै अञ्चु उऱ्ऱु—वीर (श्रीराम और लक्ष्मण से) डरकर; मऱुक्कु उऱुम्—घबड़ा जाता; आळ् कुळि—गहरे गढ़े का; नीर् नञ्चु उऱ्ऱुळि—जल जब विषाक्त हो जाता है; मीनिन्—तब उसमें रही मछली-जैसा; नटुक्कु उऱुवान्—छटपटाया; नॆञ्चु उऱ्ऱतु ओर् पॆऱ्ऱि—उसके मन का जो हुआ; निनैप्पु अरितु—वह सोचना भी कठिन है। ७६५

उसका मन अपने भाई-बन्धुओं का भावी नाश सोचकर बहुत व्यग्र हुआ। और भी उन वीरों की वीरता का विचार कर गिड़गिड़ाया। उसकी स्थिति उन मछलियों की-सी थी जो गहरे गढ़े मे है और उस गढ़े

का जल विषाक्त हो गया है। वह थर-थर काँपा। उसके मन की व्याकुलता की स्थिति का ज्ञान हमारी मनोशक्ति के अन्दर आनेवाला नहीं है ! । ७६५

अक्कालमुम् वेळ्वियिऱ्ऱन् ऱुत्तोडऱ्न्, देंक्कालु नलिन्दुमों रीरुबॅऱान्
मुक्कालिन् मुडिन्दिडु वान्मुयल्वान्, पुक्कान विराहवन् वैहुपुनम् 766

अवत्तोटु–उन श्रीराम के साथ; अ वेळ्वियिल् कालम्–उस भाग के समय के; अन्ऱु तॉटर्न्तु–उस दिन से लेकर; ॲ कालुम् नलिन्तुम्–किसी भी तरह के क्लेश से; ओर् ईऱु पॅऱान्–जो मरकर अन्त नहीं पा सका; मु कालिन्–(वह मारीच) तीसरी बार; मुटिन्तिटुवान् मुयल्वान्–मरने को उद्यत होकर; अ इराकवन्–वे राघव; वैकु पुनम्–जहाँ रहते थे, उस वन में; पुक्कान्––आ पहुँचा। ७६६

(श्रीराम के साथ इसके पहले दो बार सामना हो गया था। एक बार विश्वामित्र के यज्ञ के अवसर पर हुआ। दूसरी बार वह दो मित्रों के साथ मृग का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्र के सामने गया था। श्रीराम के शरों ने उसके दोनों मित्रों का नाश किया। मारीच बचके आ गया। उसका संकेत पद्य-संख्या ७५८ में है; फिर ७६४ में भी है, फिर इस पद्य में भी आता है। आगे ७९३वें पद में भी पाया जायगा।) जिस दिन पहले पहल उसे श्रीराम के साथ संपर्क हुआ था, उस दिन से लेकर वह बहुत क्लेश उठा रहा है। तो भी वह मरा नहीं था। अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं तीसरी बार जाऊँगा और मर जाऊँगा। मरने की तैयारी के साथ वह, श्रीराम जहाँ रहे उस वन में आ पहुँचा। ७६६

❀ तन्मानमि लाद तयङ्गॊळिशाल्, मिन्मानमु मण्णुम् विळङ्गुवदोर्
पॊन्मानुरु वङ्गॊडु पोयिनन्नाल्, नन्मानै यडनै नाडुरुवान् 767

नल् मान् अत्तैयाळ् तत्तै–उत्तम मृगनिभ उस (देवी) को; नाटु उरुवान्–खोजते हुए; तन् मानम् इलात–अनुपम; तयङ्कु ऑळि चाल्–चमकदार कान्ति के साथ; मिन् मानमुम्—विद्युतसहित आकाश में; मण्णुम्–भू पर; विळङ्कुवतु ओर्–द्युतिमान एक; पॊन् मान् उरुवम् कॊंटु–स्वर्ण-मृग का रूप लेकर; पोयिनन्–वहाँ गया। ७६७

उत्तम हरिणी-तुल्य सीतादेवी को ढूँढ़ते हुए मारीच एक स्वर्णमृग का रूप धरकर आया। वह अनुपम मृग था। विद्युत सहित आकाश में या भू पर उससे तुल्य कोई मृग नहीं था। ७६७

कलैमान्मुद लायिन कण्डवॅलाम्, अलैमानुरु माशैयिल् वन्दनवाल्
निलैयामन वञ्जनै नेयमिला, विलैमादर्हण् यारुम् विळुन्दॅनवे 768

निलैया मनम्–चंचल-मना; वञ्चनै–वंचक; नेयम् इला–स्नेहहीन; विलै मातर् कण्–वेश्या पर; यारुम्–सभी कामुक; विळुन्तनु ॲत्तवे–मोह में गिर (पड़) जाते हैं जैसे; कण्ट–उसको जिन्होंने देखा, वे; कलै मान् मुतल् आयिन–बारहसींगा,

हरिण, मृग आदि; अलै मान् उरुम् आचैयिन्–तरंगों के समान उठनेवाली इच्छा के साथ; वन्तन–उसकी ओर आये । ७६८

उसको देखकर उस वन में रहे सभी बारहसींगे, हरिण, मृग आदि उसकी ओर ऐसे आकृष्ट होकर भागे, जैसे चंचलमना, कपटी और स्नेह-हीन वेश्या के मोह में पड़कर कामुक सभी दौड़ पड़ते हैं । ७६८

❀ पॉय्यामॅन वोटु पुरञ्जॉलिनाल्, नैयाविडै नोव नडन्दनळाल्
वैदेविदन् वाल्वळै मॅन्गैयॅनुम्, कॉय्यामल रान्मलर् कॉय्हुरुवान् 769

वैतेवि–वैदेही; तन्–अपने; वाल् वळै–उज्ज्वल कंकणधारी; मॅल् कै ॲनुम्–कोमल हाथ रूपी; कॉय्या मलराल्–जिनको तोड़ा नहीं गया, उन कमलसुमन द्वारा; मलर् कॉय्कुरुवान्–पुष्प-चयन करने हेतु; पुरम्–अन्य दर्शक; पॉय् आम् ॲन्र ओतुम्–जिसका अभाव कहते हैं; चॉलिनाल्–उस कथन के अनुसार; नैया इटै–दुःखी कमर के; नोव–संकट उठाते; नटन्तनळ्–चलकर गयी । ७६९

तब वैदेही पुष्प-चयन के लिए निकल आयीं । उसके हाथ उज्ज्वल वलय-भूषित और उन कमल-सम सुन्दर थे जो तोड़े नहीं गये थे । उसकी कमर के सम्बन्ध में दूसरे सन्देह करते थे और कहते थे कि इसके कमर नहीं है । वह ऐसी क्षीण कमर को दुःख देती हुई वैसे सुन्दर हाथों से पुष्प-चयन करने के लिए निकल पड़ी । ७६९

उण्डाहिय केट्टै यार्तुयिल्वाय्, ॲण्डानु मियैन्दियै यावुरुवम्
कण्डारॅन लाम्वहै कण्डनळाल्, पण्डारु मुराविडर्प् पाडुरुवाळ् 770

पण्टु आरुम् उरा–इसके पूर्व किसी से अननुभूत; इटर्प्पाटु–संकट; उरुवाळ्–जिन पर आने को था, उन देवी ने; उण्टाकिय केटु उटैयार्–संकटग्रस्त लोगों ने; तुयिल्वाय्–निद्रा में; ॲण् तातुम् इयैन्तु इयैया–असंभाव्य; उरुवम् कण्टार्–रूप देख लिया हो; ॲतल् आम् वकै–ऐसा; कण्टनळ्–(मायामृग को) देखा । ७७०

सीताजी पर संकट आनेवाला था । वह भी ऐसा जैसा किसी पर पहले कभी नहीं आया था । उनकी दृष्टि में वह स्वर्णमृग पड़ा । उन्होंने उसे ऐसे संकटग्रस्त स्वप्नद्रष्टा के समान देखा, जिसे निद्रा में बिल्कुल असंभाव्य कोई अनोखा रूप दिखाई दिया हो । ७७०

काणाविदु कैतव मॅन्रुणराळ्, पेणाद नलङ्गॉडु पेणिनळाल्
वाणाळै यिरावणन् माळुदलाल्, वीणाळि लरम्बुवि मेवुदलाल् 771

अ इरावणन्–उस रावण की; वाळ् नाळ्–आयु के दिन; माळुतल् आल्–समाप्त होने को थे; वीळ् नाळ् इल्–जिसका मरण-दिन नहीं होता; अरम्–उस धर्म का; पुवि मेवुतलाल्–भूमि पर उत्थान होने को था, इसलिए; काणा–(देवी ने उसको) देखकर; इतु कैतवम्–यह कैतव है; ॲन्रु उणराळ्–यह न जानकर; पेणात नलम् कॉटु–अभूतपूर्व आनन्द मानकर; पेणिनळ्–उसको चाहा । ७७१

रावण की आयु को खतम होनी थी। अनश्वर धर्म के भू पर उत्थान का काल आ गया था। इसलिए देवी सीता ने उसको देख लिया। पर उन्हें मालूम नहीं था कि यह कैतव है। अब तक ऐसा आनन्द प्राप्त नहीं था। यह समझकर उन्होंने उसकी चाह की। ७७१

※ नॆऱ्ऱिप्पिऱै याण्मुन निऩ्ऱिडलुम्, मुऱ्ऱिप्पॊळि कादलिऩ् मुन्दुरुवाळ्
पऱ्ऱित्तरु हॆन्बॆं ऩॆऩप्पदैया, वॆऱ्ऱिच्चिलै वीरऩै मेविऩळाल् 772

नॆऱ्ऱि पिऱैयाळ् मुतम्–(चन्द्र-) कला-सम भाल से भूषित देवी के सामने; निऩ्ऱिटलुम्–हिरण खड़ा हुआ तो; मुऱ्ऱि पॊळि–भरकर बढ़नेवाले; कातलिऩ् मुन्तुरुवाळ्–इच्छा से जाती हुई वह; पऱ्ऱि तरुक–पकड़कर दीजिए; ऍऩ्पॆऩ्–कहूँगी; ऍऩ–सोचकर; पतैया–उतावली से; वॆऱ्ऱि चिलै वीरऩै–विजय कोदण्डपाणी वीर; मेविऩाळ्–के पास पहुँची। ७७२

वह हरिण चन्द्रललाट सीता के सामने जाकर खड़ा हुआ। तब उनके मन में उसके प्रति अपार राग उत्पन्न हुआ और उमड़ आया। 'मैं जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि इसे पकड़कर दीजिए' —ऐसा सोचते हुए वह सवेग विजय-कोदण्ड-पाणी श्रीराम के पास जा पहुँचीं। ७७२

आणिप्पॊऩ्ऩि ऩाहिय दायहदिराल्, शेणिऱ्चुडर् हिऩ्ऱदु तिण्शॆविकाल्
माणिक्क मयत्तॊरु मातुळदाल्, काणत्तहु मॆऩ्ऱऩळ् कैतॊळुवाळ् 773

कै तॊळुवाळ्–हाथ जोड़े नमस्कार करती हुई; आणि पॊऩ्ऩिल् आकियतु–उत्तम स्वर्ण-निर्मित; आय् कतिराल्–शरीर की श्रेष्ठ कान्ति के कारण; चेणिल् चुटर्किऩ्ऱतु–बहुत दूर तक ज्योतिर्मय दिखनेवाला; तिण् चॆवि काल्–बलवान कान और पैर; माणिक्क मयत्तु–माणिक्यमय; ऒरु माऩ् उळतु–एक हिरण आया है; आल्–जो; काणत्तकुम्–वह देखने योग्य है; ऍऩ्ऱऩळ्–कहा (सीताजी ने)। ७७३

जाकर उन्होंने श्रीराम से हाथ जोड़कर विनय की। खरे स्वर्ण का बना, अपनी देह की कान्ति के कारण बहुत दूर तक द्युतिमान दिखता हुआ, माणिक्य के पैरों और कानों के साथ एक हिरन आया हुआ है। वह आपसे देखने योग्य है। ७७३

इम्माऩि निलत्तिऩि लिल्लैयॆऩा, ऍम्माऩि दॆऩच्चिऱि दॆण्णल्शॆयाऩ्
शॆम्मानवळ् शॊऱ्कॊडु तेमलरोऩ्, अम्मानु मरुत्तिय ऩायिऩऩाल् 774

इ माऩ्–यह मृग; इ निलत्तिल् इल्लै–इस भूमि पर (प्राप्य) नहीं; ऍऩा–यह बात; ऍ माऩ् इतु–यह कैसा हरिण; ऍऩ–यह बात; चिऱितु ऍण्णल् चॆयाऩ्–कुछ भी नहीं सोचकर; ते मलरोऩ्–शहद-भरे कमल पर आसीन; अम्माऩुम्–(ब्रह्मा के) पिता (के अवतार) श्रीराम भी; चॆम् मानवळ्–सुन्दर (लाल) रंग की सीताजी का; चॊल् कॊटु–वचन मानकर; अरुत्तियऩ् आयिऩऩ्–इच्छुक हुए। ७७४

श्रीराम ने यह सुना। (आश्चर्य है कि) उन्हें यह नहीं सूझा कि

ऐसा मृग अनहोनी वात है। यह भी विचार नहीं आया कि यह कैसा मृग है ? विना किसी सोच-विचार के श्रीराम, जो शहदयुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा के भी विधाता विष्णु के अवतार थे, देवी की वात पर विश्वास करके उसको पकड़ने को इच्छुक हो गये। ७७४

आण्डङ्गिळै योनुरै याडिनन्ताल्, वेण्डुम्मॅन्त लाम्विळै वन्ऱिदॅनाप्
पूण्डुञ्जुपॉ लङ्गॉडि पोयदुनाम्, काण्डुम्मॅनुम् वळ्ळल् करुत्तुणर्वान् 775

पूण् तुञ्चु–आभरण-युक्त; पॉलन् कॉटि–स्वर्ण-लता (सी देवी); पोय् अतु नाम् काण्टुम्–जाकर हम उसे देखें; ॲनुम्–कहनेवाले का; वळ्ळल् करुत्तु–उदार प्रभु का मन; उणर्वान्–भाँपकर; इळैयोन्–लघुराज; आण्टु–तव; वेण्टुम् ॲन्तल् आम्–चाहनीय; विळैवु अन्ऱु इतु–चाह के योग्य नहीं है यह; ॲना–ऐसा सोचकर; अङ्कु–वहाँ; उरै आटितन्–वचन कहने लगे। ७७५

'हे आभरणालंकृता देवी ! हम जाकर देखेंगे' यह प्रभु ने कहा। पास जो रहे उन लघु भ्राता लक्ष्मण ने श्रीराम का विचार ताड़ लिया। तब उन्होंने सोचा कि यह चाहनीय इच्छा का विषय नही। इसलिए वह श्रीराम से निवेदन करने लगे। ७७५

कायङ्गन हम्मणि काल्शॅविवाल्, पायुम्मुरु वोडिदु पण्वलवाल्
मायम्मॅन्त लन्ऱि मन्नक्कॉळवे, एयुम्मिऱै येयुऱ वॅन्ऱननाल् 776

कायम् कतकम्–शरीर स्वर्णमय; काल् चॅवि वाल्–पैर, कान और दुम; मणि–माणिक्यमय; पायुम् उरुवोटु इतु–चौकड़ी भरनेवाला यह; पण्पु अल आल्–स्वाभाविक नहीं है, इसलिए; मायम् ॲन्तल्–माया कहना चाहिए; अन्ऱि–दूसरा; इऱै–प्रभु; मन्नम् कॉळवे–मानना; ऐयुऱवु एयुम्–संशययुक्त होगा; ॲन्ऱनन्–कहा। ७७६

प्रभु ! सोचिए। शरीर स्वर्ण का, पैर, कान और दुम माणिक्य के; ऐसा मृग चौकड़ी भरता है ! यह विल्कुल अप्राकृतिक है ! इसलिए कोई माया ही माननी है ! उसके विपरीत इसको सच्चा मानना संशय-युक्त है। ७७६

निल्लावुल हिन्निलै नेर्मैयिनाल्, वल्लारु मुणर्न्दिलर् मन्नुयिर्दाम्
पल्लायिर कोडि परन्दुळवाल्, इल्लादन विल्लै यिळङ्गुमरा 777

इळम् कुमरा–वाल कुमार; नेर्मैयिनाल् वल्लारुम्–सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी; निल्ला उलकिन् निलै–इस नश्वर जगत का स्वभाव; उणर्न्तिलर्–पूर्ण रूप से नही जानते; मन् उयिर् ताम्–अक्षय जीव-जन्तु; पल् आयिरम् कोटि–अनेक सहस्र कोटि; परन्तु उळ आल्–रूप में विस्तृत हैं; इल्लातन इल्लै–असम्भव कुछ नहीं है। ७७७

तब श्रीराम ने गम्भीर विचार व्यक्त किये। बालकुमार ! सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी इस चलनशील ससार का सारा रहस्य नहीं जान पाते।

अक्षय जीव अनेक सहस्र कोटि रूपों में विपुल रीति से पाये जाते हैं। इसलिए असंभाव्य कुछ नहीं है। ७७७

ऍन्ऱॆन्ऱु निनैन्द दिळैत्तुळदाम्, कन्नङ्गळिल् वेऱुळ काणुदुमाल्
पॊन्निन्कुळिर् मेन्ति पॊरुन्दिनवेळ्, अन्नङ्गळ् पिऱन्द दऱिन्दिलैयो 778

ऍन् ऍन्ऱु निनैन्तु–क्या समझकर; अतु इळैत्तु उळतु आम्–तुमने ऐसी बात कही थी; कन्नङ्कळिन्–अपने कानों से; वेऱु उळ काणुतुम–कितने ही अपरिचित अन्य पदार्थ देखते हैं (सुनकर जान लेते है); पॊन्निन्–स्वर्णमय; कुळिर् मेत्ति पॊरुन्तित–मनोरम रूपधर; एळ् अन्नङ्कळ् पिऱन्ततु–सात हंस पहले जनित थे; अऱिन्तिलैयो–नहीं जानते क्या। ७७८

पर पता नहीं कि तुम क्या सोचकर किसके आधार पर यह कह रहे हो। कितने ही पदार्थ हैं, जिनके बारे में हम सुनते हैं और ज्ञान प्राप्त करते है। (भरद्वाज मुनि के) सात स्वर्णशरीरी हंस (पुत्रों के रूप में) पैदा हुए थे —क्या तुम यह वृत्तान्त नहीं जानते ? । ७७८

मुऱैयुमुडि वुम्मिलै मॊय्युयिरॆन्, ऱिऱैवतिळै योनॊडि यम्बिननाल्
पऱैयुन्दुणै यन्नदु पन्नॆरिपोय्, मऱैयुम्मेन वेळै वरुन्दिनळाल् 779

इऱैवन्–(श्रीराम) प्रभु के; मॊय् उयिर्–(इस संसार को) भरनेवाले जीवों की; मुऱैयुम् मुटिवुम् इलै–उत्पत्ति का प्रकार और नाश, हम नहीं जानते; ऍन्ऱु–ऐसा; इळैयातॊटु–भाई से; इयम्पिनन्–कहा; एळै–अबला ने; पऱैयुम् तुणै–वार्तालाप के अन्दर; अन्नतु–वह; पल् नॆऱि पोय्–बहुत दूर जाकर; मऱैयुम्–छिप जायगा; ऍन–ऐसा; वरुन्तिनाळ्–दुःख के साथ बोली। ७७९

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता को समझाया कि यह संसार अक्षय जीव-जन्तुओं से भरे है। उन सभी के जन्म-मरण के प्रकार हम नहीं जान सकते। तब देवी ने चिन्ता व्यक्त की कि आप जब तक वार्तालाप में लगे रहेंगे तब तक यह हरिण बहुत दूर चला जायगा और आँखों से ओझल हो जायगा। ७७९

अन्नैयवळ् करुत्तै युन्ना वञ्जनक् कुन्ऱ मन्नान्
पुनैयिळै काट्ट दॆन्ऱु पोयिनान् पॊऱाद शिन्दैक्
कन्नैहळ्र् ऱम्बि पिन्बु शॆन्ऱनन् कडक्क वॊण्णा
विनैयॆन वन्दु निन्ऱ मानॆदिर् विळित्त दन्ऱे 780

अन्नैयवळ् करुत्तै–उनका विचार; उन्ना–सोचकर; अञ्चन कुन्ऱम् अन्नान्–अंजन-गिरि-तुल्य श्रीराम; पुनै इळै–आभरणभूषिता; अतु काट्टु–उसे दिखाओ; ऍन्ऱु–कहकर; पोयिनान्–(देखने) गये; पॊऱात चिन्तै–अधीर-मन; कन्नै कळल् तम्पि–मुखरित पायलधारी भ्राता लक्ष्मण; पिन् चॆन्ऱनन्–उनके पीछे गया; कटक्क ऒण्णा–अलंघ्य; विनै ऍन–प्रारब्ध के समान; वन्तु निन्ऱ–जो आकर खड़ा रहा; मान्–उस हरिण ने; ऍतिर् विळित्ततु–सामने आकर उन्हें देखा। ७८०

श्रीराम ने देवी का दुःख पहचाना। अंजनगिरि-तुल्य प्रभु श्रीराम ने उनको आभरणभूषित प्यारी देवी, सम्बोधित कर कहा कि दिखाओ। सीता चलीं और श्रीराम भी चले। इसको देखकर मुखरित पायलधारी लक्ष्मण चुप नहीं रह सके। अधीरमन हो वह भी उनके पीछे-पीछे गये। अलंघ्य प्रारब्ध के समान उस मायामृग ने उनके सामने आकर उनको ताका। ७८०

नोक्किय मानै नोक्कि नुदियिळै मदियि नौन्ऱुम्
तूक्किल नन्ऱि दॅन्ऱा नदन्पॊरुळ् शॊल्ल लाहुम्
शेक्कैयि नरवि नीङ्गिप् पिऱन्ददु तेवर् शॆय्द
पाक्किय मुडैमै यन्ऱो वन्नदु पळुदु पोमो 781

नोक्किय मानै—जो ताक रहा था, उस हरिण को; नोक्कि—देखकर; नुति इळै मतियिन्—अपनी सूक्ष्म बुद्धि से; ऑन्ऱुम् तूक्किलन्—श्रीराम ने कुछ तर्क नहीं किया; इतु नन्ऱु—यह बड़ा अच्छा है; ऍन्ऱान्—कहा; अतन् पॊरुळ् चॊल्लल् आकुम्—उसका (गूढ़) अर्थ हम कहेंगे; अरवु चेक्कैयिन्—शेष-शय्या से; नीङ्कि—अलग आकर; पिऱन्ततु—भू पर अवतार लेना; तेवर् चॆय्त—देवों के कृत; पाक्कियम् उटैमै अन्ऱो—पुण्य से प्राप्त फल है न; अन्ततु—वह; पळुतु पोमो—व्यर्थ जायगा क्या। ७८१

श्रीराम ने उस हरिण को देखा जो उनको ताक रहा था। उन्होंने कोई तर्क-वितर्क नही किया। कहा कि शाबाश! यह बहुत अच्छा है! इसका गूढ़ अर्थ क्या है? —हम कहें? वे शेषशय्या त्यागकर भूमि पर अवतरित हुए —यह देवों के पुण्य का फल था। वह वृथा जायगा क्या? 'अच्छा' का संकेत उनके पुण्य की ओर है। ७८१

ऍन्नॊक्कु मॆन्न लाहु मिळैयव विदनै नोक्काय्
तन्नॊक्कु मॆन्ब दल्लाऱ् ऱनैयॊक्कु मुवमै युण्डो
पन्नक्क तरळ मॊक्कुम् पशुम्बुन्मेऱ् पडरु मॆन्ना
मिन्नॊक्कुञ् जॆम्बॊन् मेनि वॆळ्ळियिन् विळङ्गुम् बुळ्ळि 782

इळैयव—अनुज भैया; इततै नोक्काय्—इस पर दृष्टि डालो; ऍन् ऑक्कुम्—किसके समान है; ऍन्तल् आकुम्—कहा जा सकता है; तन् ऑक्कुम्—स्वोपम है; ऍन्पतु अल्लाल्—इसके सिवा; ततै ऑक्कुम्—उससे तुल्य; उवमै उण्टो—उपमा होगी क्या; पल्—दाँत; नक्क तरळम् ऑक्कुम्—उज्ज्वल मोती के समान हैं; पचुम् पुल् मेल् पटरुम्—(जो) हरी घास पर लगती है, वह; मॆल् ना—मृदु जीभ; मिन् ऑक्कुम्—विद्युत के समान है; मेनि चॆम् पॊन्—शरीर लाल (खरा) सोना है; पुळ्ळि—बिंदियाँ; वॆळ्ळियिन् विळङ्कुम्—चाँदी के समान प्रकाशमान हैं। ७८२

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा। अनुज! इसको खूब देखो। इसकी तुलना में क्या कहा जा सकता है? यह स्वोपम है। यही कहना पड़ेगा।

तान्ट्रोंडर् कुलत्तै यॆल्लान् दॊलैक्कुमा शमैन्दु निन्ट्राळ्
ऎन्रुवन् दॆदिर्न्द वीर निवनिह लिराम नॆन्ट्रे 427

तोन्ट्रिय–ऐसे प्रकट हुए; तोन्ट्रल् तन्तै–प्रभु श्रीराम को; वान् तॊटर् मूङ्किल् तन्त–आकाश तक उन्नत बाँसों (के रगड़ने) से उत्पन्न; वयङ्कु वॆम् ती अतु ॲन्न–जलनेवाली भयंकर आग ही सम; तान् तॊटर् कुलत्तै ॲल्लाम्–अपने रिश्ते के सारे कुल को; तॊलैक्कुम् आ चमैन्तु निन्ट्राळ्–मिटाने के काम में जो प्रवृत्त रही; चुट्टितल् काट्टि–संकेत करके; एन्ट्रु वन्तु–युद्धसन्नद्ध हो जो आया है; ॲतिर्न्त वीरन्–और सामने प्रकट हुआ है वीर; इवन्–यह; इकल् इरामन्–शत्रु राम है; ॲन्ट्रु चॊन्ताळ्–ऐसा कहा। ४२७

आकाश तक उन्नत बाँसों का नाश वही अग्नि कर देती है जो उन्हीं से (उनके आपस में हवा के कारण टकराने से) उत्पन्न होती है, वैसे ही यह शूर्पणखा भी अपने कुल की नाशक शक्ति निकली। वह मानो उस कार्य में दत्तचित्त और तत्पर रही। ऐसी उसने उनके सामने प्रकट हुए श्रीराम को अपने हाथ के इशारे से दिखाया और कहा कि देखो! जो युद्धसन्नद्ध होकर सामने आ रहा है वही वीर राम है, जिसने हमारे साथ वैर ठाना है! । ४२७

कण्डतन् कनहत् तेर्मेल् कदिरवन् कलङ्गि नीङ्ग
विण्डन निन्ट्र वॆन्ट्रिक् करन्तॆनुम् विलङ्गर् ट्रोळान्
मण्डमर् यान्ने शॆय्दिम् मानिडन् वलियै नीक्किक्
कॊण्डनॆन् वाहै यॆन्रु पडैञरैक् कुरित्तुच् चॊन्तान् 428

कतक तेर् मेल्—स्वर्ण-रथ पर; कतिरवन्–सूर्य; कलङ्कि–व्यग्र होकर; नीङ्क–हटे; विण्टतन् निन्ट्र–वैर के साथ स्थित; वॆन्ट्रि–विजयशील; करन् ॲन्तुम्–खर नाम के; विलङ्कल् तोळान्—पर्वत-सम कन्धों वाले ने; कण्टतन्–श्रीराम को देखा (देखकर); पटैञरै कुरित्तु–सेनावीरों को उद्दिश्य करके; यान्ने–मैं स्वयं; मण्टु अमर् चॆय्तु–यह बड़ा युद्ध करके; इ मानिटन् वलियै नीक्कि–इस मनुष्य का बल मिटाकर; वाकै कॊण्टॆन्–विजय पा लूँगा; ॲन्ट्रु–ऐसा; चॊन्तान्–कहा। ४२८

खर भी कम वैर नहीं रखता था। उसके वैर के सामने कनकरथ सूर्य भी डरकर हट गया। पर्वत-सम कन्धे वाले विजयशील खर ने श्रीराम को देखकर अपनी सेना के वीरो से कहा कि मैं ही बड़ा युद्ध करके इस मनुजपुत्र का बल मिटा दूँगा और विजय पाऊँगा। ४२८

मानिड नीरुवन् वन्द वलिहॆळ्ळु शेन्नैक् कम्मा
कानिड मिलल्लै यॆन्नुङ् गट्टुरै कलन्द कालै
यानुडॆ वॆन्ट्रि यॆन्नाम् यावरुङ् गण्डु निन्ट्रिर्
ऊनुडै यिवन्नै यान्ने युणगुवॆ नुयिरै यॆन्रान् 429

मात्तिटत्र् ऑरुवन्-एक मनुज; वन्त-(उससे लड़ने) आई; वलि कॅळु चेत्तैक्कु-सशक्त सेना के लिए; कान् इटम् इल्लै-जंगल में स्थान नहीं है; ॲन्नुम्-ऐसी; कट्टुरै-बात; कलन्त काले-जब फैल जायगी; यान् उटै वॅन्ऱि-मेरी विजय का (महत्त्व); ॲन्नाम्-क्या होगा; यावरुम् कण्टु निऱ्ऱिर्-सब देखते रहो; यान्-मैं अकेला ही; ऊन् उटै इवत्तै-(हमारे खाने योग्य) मांसधारी इसको; उयिरै उणकुवॅन्-प्राण अशन कर लूँगा; ॲन्ऱान्-कहा। ४२८

लोग यह जानने लगें और यह बात फैल जाय कि एक अकेला मनुष्य आया था और उसके विरुद्ध इतनी बड़ी सेना ने युद्ध किया जिसके लिए वन में खड़े होने को भी स्थान नहीं मिला, तो मेरी जीत का क्या महत्त्व होगा ? इसलिए सब चुप देखते खड़े रहो। अकेला मैं ही इस मांसपिंड का प्राण पी लूँगा। खर ने ऐसा कहा। ४२९

अव्वुरै केट्टु वन्दा नहम्बनॅन् ऱमैन्द कल्विच्
चॅव्विया नॊरुव नैय शॅप्पुवॅन् शॅरुविऱ् चाल
वॅव्विय राद नन्ऱे वीररि लाण्मै वीर
इव्वयि नुळदान् दीय निमित्तमॅन् ऱियम्ब लुऱ्ऱान् 430

अकम्पन् ॲन्ऱु-अकम्पन नाम के; अमैन्त कल्वि चॅव्वियान्-युक्त विद्या-विदग्ध; ऑरुवन्-एक राक्षस ने; अ उरै केट्टु-वह वचन सुनकर; वन्तान्-पास आकर; ऐय-प्रभु; वीररुळ् आण्मै वीर-वीरों में सर्वश्रेष्ठ वीर; चॅप्पुवॅन्-विनय करता हूँ; चॅरुविल् चाल वॅव्वियर् आतल्-युद्ध में बड़ा उत्साही रहना; नन्ऱे-अच्छा ही है; इ वयिन्-इस संदर्भ में; तीय निमित्तम् उळ आम्-बुरे शकुन होते हैं; ॲन्ऱु-कहकर; इयम्पल् उऱ्ऱान्-विस्तार किया। ४३०

यह खर का वचन सुनकर अकंपन नाम का राक्षस सामने आया। वह विद्वान था। उसने कहा— स्वामी ! एक विनयवचन है— सुनाऊँगा। युद्ध में उत्साह दिखाना अच्छा ही है। पर शकुन बुरे दिखते हैं। उसने आगे उस बात का विस्तार किया। ४३०

कुरुदि मामळै शॊरिन्दन मेहङ्गळ् कुमुऱिप्
परुदि वानव नूर्वळैप् पुण्डदु पाराय्
करुदु वीरनिन् गॊडिमिशैक् काक्कैयिन् कणङ्गळ्
पॊरुदु वीळ्वन पुलम्बुव निलम्बडप् पुरळ्व 431

करुतु वीर-प्रतिष्ठित वीर; मेकङ्कळ् कुमुऱि-मेघ गर्जन करते हुए; कुरुति मा मळै चॊरिन्तत-बड़ी रक्त-वर्षा बरसायी; परिति वानवन्-सूर्यदेव; ऊर् वळैप्पुण्टतु-परिवेश से घिरे हुए हो गये; काक्कैयिन् कणङ्कळ्-कौओं के समूह; निन् कॊटि मिचै-तुम्हारी ध्वजा पर; पॊरुतु वीळ्वन-आपस में लड़ते हुए गिरते और; पुलम्पुव—चीखते-चिल्लाते हैं; निलम्पट पुरळ्व-भूमि पर गिरकर लोटते हैं; पाराय्-तुम देखो। ४३१

प्रतिष्ठित वीर ! मेघ गरजते हुए रक्तवर्षा कर रहे हैं। सूर्य के परिवेश बना है। काकवृन्द आपस में लड़ते हुए ध्वजा पर गिरते हैं, फिर चिल्लाते हुए नीचे गिरते हैं और भूमि पर गिरकर लोटते हैं। देखो। ४३१

वाळि वाय्हळै यीवळैक् किन्ऱ्रत्त वयवर्
तोळु नाट्टमु मिडन्दुडिक् किन्ऱ्रत्त तूङ्गि
मीळि मॉय्म्बुडै यिवुळिहळ् विळुवत्त विऱलोय्
ज्ञाळि योडुनिन् ऱुळैप्पत्त नरिक्कुलम् बलवाल् 432

विऱलोय्–विजयी वीर; वाळि वाय्कळै–वाणों के मुखों पर; ई वळैक्किन्ऱ्रत्त–मक्खियाँ मँड़राती हैं; वयवर्–वीरों की; तोळुम् नाट्टमुम्–भुजाएँ और आँखें; इटम् तुटिक्किन्ऱ्रत्त–वाईं ओर (की) फड़कती हैं; मीळि मॉय्म्पु उटै–अपार शक्ति वाले; इवुळिकळ्–अश्व; तूङ्कि विळुवत्त–सोते हुए गिरते हैं; नरि कुलम्–सियारों के झुण्ड; पल–अनेक; ज्ञाळियोटु निन्ऱु–कुत्तों के साथ खड़े होकर; उळैप्पत्त–रुदन-स्वर में भूँकते हैं; पाराय्–देखो। ४३२

वीर ! वाणों के फलों पर मक्खियाँ मँड़रा रही हैं। वीरों के वाम नेत्र और हाथ फड़क रहे हैं। ताकतवर अश्व सोते और गिर पड़ते हैं। सियारों के झुण्ड आकर कुत्तों से मिल गये हैं और दोनों रुदन कर रहे हैं। तुम देखो। ४३२

पिडियॆं लामदम् बॆय्दिडप् पॆरुङ्गवुळ् वेळ्म्
ऑडियुम् मान्मरुप् पुलहमुङ् गम्बिक्कु मुयर्वाळ्
इडियुम् वीळ्न्दिडु मॆरिन्दिडुम् बॆरुन्दिशै यॆवर्क्कुम्
मुडियिन् मालैहळ् पुलालॊडु मुळ्मुडै नाऱुम् 433

पिटि ऎलाम्–हथिनियाँ, सभी; मतम् पॆय्तिट–मद वहाते हुए; पॆरुम् कवुळ् वेळ्म्–वड़े-वड़े गण्डस्थल वाले गजों के; माल् मरुप्पु ऑटियुम्–वड़े दाँत टूट जाते हैं; उलकमुम् कम्पिक्कुम्–पृथ्वी में कम्पन होता है; उयर् वान् इटियुम्–ऊँचे आकाश से गाज; वीळ्न्तिटुम्–गिरती है; पॆरुम् तिचै–लम्वी दिशाएँ; ऎरिन्तिटुम्–जलती हैं; ऎवर्क्कुम्–सभी की; मुटियिन् मालैकळ्–सिर की मालाएँ; पुलाल् ऒटु–मांसगन्ध के साथ; मुटै नाऱुम्–दुर्गन्ध निःसृत करती हैं। ४३३

हथिनियाँ मद वहा रही है और वड़े गाल वाले हाथियों के दाँत टूट जाते हैं। भूकम्प होता है। आकाश से गाज गिरती है। दिशाएँ जलती हैं। सवके सिर की मालाओं से सड़े मांस की-सी गन्ध और दुर्गन्ध निकलती है। ४३३

इन्नैय वाहलिन् मान्ऱिड नीरुवनॆन्त् ऱिवन्नै
निन्नैय लावदिङ् गेळैमै नीयमर्क् कियन्ऱ

विनैयॅ लाऱ्ऱॅय्दु वॅल्ललान् दन्मैय नल्लन्
पुनैयुम् वाहैयाय् पॉरुत्तियॅन् नुरैयॅनप् पुहन्ऱान् 434

पुनैयुम् वाकैयाय्–'वाहै' (विजय-सूचक) मालाधारी; इत्तैय आकलिन्–ऐसे हैं (शकुन) इसलिए; इवनै–इसको; मानिटन् ऑरुवन्–केवल एक मनुष्य है; ॲन्ऱु–ऐसा; इङ्कु निनैयल् आवतु–यहाँ सोचना; एऴैमै–अज्ञता होगा; नी अमर्क्कु इयन्ऱ–तुम युद्ध-योग्य; विनै ॲलाम् चॅय्तु–सभी कार्य करके; वॅल्लल् आम्–उस पर विजय पाओ; तन्मैयन् अल्लन्–ऐसा मनुष्य नहीं; ॲन् उरै पॉरुत्ति–मेरी बात के लिए क्षमा करो; ॲन पुकन्ऱान्–ऐसा कहा (अकम्पन ने)। ४३४

ये सब बुरे शकुन हैं। ये हो रहे हैं। इसलिए इसको मामूली अल्प मानव समझना अज्ञता होगा। तुम्हारे युद्ध-तन्त्र और सामर्थ्य द्वारा वह जीता जानेवाला नहीं लगता। मैं यह कह रहा हूँ, उसके लिए क्षमा कर दो। अकंपन ने विनय के साथ यों बताया। ४३४

उरैत्त वाशहङ् गेट्टलु मुलहॅला मुलैयच्
चिरित्तु नन्ऱिदॅन् शेवहन् देवरैत् तेय
अरैत्त वम्मिया मलङ्गॅऴिर् ऱोळमर् वॅण्डि
इरैत्तु वीङ्गुव मानिडर् कॅळियवो वॅन्ऱान् 435

उरैत्त वाचकम् केट्टलुम्–(उसका) कहा वचन सुनकर; उलकु ॲलाम्–सारे लोकों को; उलैय–कँपाते हुए; चिरित्तु–ठठाकर (हँसकर; तेवरै तेय अरैत्त–देवों को पिचकाते हुए पीसनेवाले; अम्मि आम्–सिल है, ऐसा; अलङ्कु ॲऴिल् तोळ्–हिलनेवाले सुन्दर मेरे ये कन्धे; अमर् वेण्टि–युद्ध माँगते हुए; इरैत्तु वीङ्कुव–फूले और उभरे हैं; मानिटर्क्कु ॲळियवो–मनुष्य के लिए अल्प (जेय) हो गये क्या; नम् चेवकम् नन्ऱितु–हमारी वीरता भी बड़ी भली; ॲन्ऱान्–कहा। ४३५

यह सुनते ही खर ऐसा ठठाया कि सारे लोक काँप गये। उसने कहा— अकंपन ! इन मेरे अनुपम कन्धों को देखो जो मेरे हँसते समय हिलते हैं। और सिल के समान इनसे देव पिसे और पिचक गये थे। ये फूले हुए पुष्ट कन्धे उस अल्प मानव के लिए क्षुद्र हो गये क्या ? हमारी वीरता भी भली रही ! । ४३५

ॲन्नु मात्तिरत् तॅऱिपडै पिडियॅन विडिया
मन्नर् मन्नवन् मदलैयै वळैन्दन वळैन्दु
मिन्नुम् वालुळै मडङ्गलै मुनिन्दन वेळम्
तुन्नि नालॅनच् चुडुशिनत् तरक्करदन् दॉहुदि 436

ॲन्नुम् मात्तिरत्तु–(खर के) यह कहते ही; मिन्नुम् वाल् उळै मटङ्कलै–प्रकाशमय लम्बे अयाल वाले सिंह को; मुनिन्तन–वैर करके; वेळम् वळैन्तु तुन्निनाल् ॲन–गजों ने घेर लिया हो, ऐसा; चुटु चिनत्तु–तापक क्रोधशील; अरक्कर् तम् तॉकुति–राक्षसों के दल; ॲऱि पटै–आपस में टकरानेवाले हथियारों के; इटि ॲन इटिया–

वज्र के समान नाद करते; मत्तर् मन्तवन् मतलैयै—राजाधिराज के पुत्र श्रीराम को; वळैन्तत—घेर गये । ४३६

खर के यह कहते ही अग्नि के समान क्रोधी राक्षसों की सेना ने आकर चक्रवर्तीसुत श्रीराम को घेर लिया, मानो उज्ज्वल अयाल वाले सिंह से वैर करके गजों ने आकर घेर लिया हो । तब उनके हथियार आपस में टकराये और वज्र के समान नाद पैदा हुआ । ४३६

वळैन्द कालैयिल् वळैन्ददव् विरामन्गै वरिविल्
विळैन्द पोरैयु मावदुम् विळम्बुदुम् विशैयाल्
पुळैन्द पाय्बरि पुरण्डन्न पुहर्मुहप् पूट्कै
उळैन्द माल्वरै युरुमिडि पडवॊडिन् दॆन्न 437

वळैन्त कालैयिल्—जब घिर गये तब; इरामन् कै वरि विल्—श्रीराम के हाथ का बन्धनयुक्त धनुष भी; वळैन्ततु—झुका; विळैन्त पोरैयुम्—तब जो युद्ध हुआ, उसको; आवतुम्—उसके फल को; विळम्पुतुम्—कहेंगे; विचैयाल् पुळैन्त—अपनी तीव्र गति से जो विद्ध हुए वे; पाय् परि—तीव्रगामी अश्व; पुरण्टन—नीचे गिरकर लोटे; माल् वरै—बड़े-बड़े पर्वत; उरुम् इटि पट—घोर वज्र के गिरने से; ऒटिन्तॆन्न—टूट जाते हों जैसे; पुकर् मुक पूट्कै—बिन्दियों सहित मुख वाले गज; उळैन्त—दुखी हो गिरे । ४३७

जब वे घेर आये तब श्रीराम ने अपने प्रतापी चाप को झुकाया और युद्ध छिड़ गया । उसके फलस्वरूप क्या-क्या आश्चर्य हुए ? हम उनका वर्णन करेंगे । एक दम विद्ध होकर दुलकी चलनेवाले अश्व गिरे और भूमि पर लोटे । गज, जिनके माथाओं पर बिन्दियाँ थीं, ऐसे पर्वतों के समान टूटकर गिरे जिन पर वज्र-पात हुआ हो । ४३७

शूल मऱ्ऱन वऱ्ऱन शुडर्मळुत् तॊहैवाळ्
मूल मऱ्ऱन वऱ्ऱल मुरट्टण्डु पिण्डि
पाल मऱ्ऱन वऱ्ऱन पहळिवॆम् बहुवाय्
वेलु मऱ्ऱन वऱ्ऱन विल्लॊडु पल्लम् 438

चूलम् अऱ्ऱन—शूल कटे; चुटर् मळु तॊकै—उज्ज्वल परशु-वृन्द; अऱ्ऱन—बेकार हुए; वाळ् मूलम्—तलवारों के मूल; अऱ्ऱन—छिन्न हुए; मुरण् तण्टु अऱ्ऱन—सुदृढ़ दण्डायुध नष्ट हुए; पिण्टिपालम् अऱ्ऱन—भिंडिपाल मिटे; वॆम् पकुवाय्—चीरकर जानेवाले फल के; वेलुम्—भाले भी; अऱ्ऱन—नष्ट हुए; विल् ऒटु पल्लम्—धनुष के साथ बल्लम व्यर्थ हुए । ४३८

और भी राक्षसों के शूल और कान्तियुक्त परशुसमूह नष्ट हुआ । तलवारों के मूल (या रूप) छिन्न हुए । सुदृढ़ दण्डायुध टूटे । भिण्डिपाल, भेदनेवाले शूल, चाप और बल्लम सभी तहस-नहस हुए । ४३८

तॊडितु णिन्दन तोळॊडुन् दोमरन् दुणिन्द
अडितु णिन्दन कडहळि उच्चॊडु नॆडुन्देरॆक्
कॊडितु णिन्दन कुरहदन् दुणिन्दन कुलमा
मुडितु णिन्दन तुणिन्दन मुळैयॊडु मुशलम् 439

तॊटि तुणिन्तत–वीरकंकण टूटे; तोळॊटु तोमरम् तुणिन्तत–कन्धों के साथ तोमर खण्ड-खण्ड हुए; कट कळिरु अटि–मत्तगजों के पैर; तुणिन्तत–कटे; नॆटुम् तेर्–बड़े रथ; अच्चॊटु कॊटि–धुरों के साथ ध्वजाएँ; तुणिन्तत–कटीं; कुरकतम् तुणिन्तत–घोड़े कटे; कुल मा मुटि–बड़ी संख्या में एक साथ बड़े किरीट; तुणिन्तत–खण्डित हुए; मुळैयॊटु–मुद्गरों के साथ; मुचलम् तुणिन्तत–मूसल टूटे। ४३९

और भी अंगवलय आदि वलय कटकर गिरे और भुजाओं के साथ तोमर आदि कटे। मत्तगजों के पैर, ऊँचे रथों की धुरियाँ और ध्वजाएँ आदि छिन्न हो गयीं। घोड़े टुकड़े-टुकड़े हुए। दण्ड और मुद्गर छिन्न-भिन्न हुए। ४३९

करुवि मावॊडु कार्मदक् कैम्मलैक् कणत्तो
डुरुवि मादिरत् तोडिन शुडुशर मुदिरम्
अरुवि मालैयिऱ् पिऱङ्गिय दवनियि लरक्कर्
तिरुवित् मार्बहन् दिऱन्दन तुऱन्दन शिरङ्गळ् 440

चुटु चरम्–श्रीराम के भयंकर शर; करुवि मा ऒटु–जीन वाले घोड़ों के साथ; कार्–काले; मत कै मलै–मत्तगजों के; कणत्तॊटु–दलों को; उरुवि–आर-पार होकर; मातिरत्तु ओटिन–(बाहर निकल) दिशाओं में चले; उतिरम् अरुवि–रक्त नदियों; मालैयिल् पिऱङ्कित–के रूप में बहा; अवनियिल्–भूमि में; अरक्कर्–राक्षसों के; तिरु इल् मार्पु अकम्–श्रीहीन वक्षस्थलों को; तिऱन्तत–खोलकर (रक्त) बाहर आया; चिरङ्कळ् तुऱन्तत–सिर (धड़ों से) अलग हुए। ४४०

श्रीराम के सन्तापी शर जीन वाले अश्वों और काले रंग के मत्तगजों को निफरकर आगे सभी दिशाओं मे गए। रक्त की सरिताएँ बह चलीं। शरों ने राक्षसों के श्रीहीन वक्षों को विदीर्ण कर दिया और उनके सिरों को काटकर धड़ों से अलग कर दिया। ४४०

ऒन्ऱु पत्तुनू ऱायिरङ् गोडियॆन् ऱुणरात्
तुन्ऱु पत्तिय विराहवन् शुडशरन् दुरक्कच्
चॆन्ऱु पत्तिरत् तलैयिन मलैदिरण् डॆन्नक्
कॊन्ऱु पत्तियिऱ् कुविन्दन पिणप्पॆरुङ् गुन्ऱम् 441

ऒन्ऱु पत्तु नूऱु–एक, दस, सौ; आयिरम् कोटि–सहस्र, करोड़; ऎन्ऱु उणरा–ऐसा अगण्य; तुन्ऱु पत्तिय–बहुत मिली हुई पंक्तियों में; चुटु चरम्–जला डालनेवाले शरों को; इराकवन् तुरक्क–श्रीराघव ने चलाया तब; चॆन्ऱु–जाकर; कॊन्ऱु–मारकर; पत्तिर तलैयिन–शरसहित सिरों की; मलै तिरण्ट ऎन्न–पर्वत

एकत्र हुए हों, जैसे; पिण पॆरुम् -कुऩ्ऱम्–लाशों के बड़े पर्वतों को; पत्तियिल् कुवित्तत–श्रेणियों में लगा दिया (शरों ने)। ४४१

श्रीराघव ने कितने शर लगातार छोड़े ? एक, दस, सौ, हज़ार, करोड़…? कोई गणना नहीं थी ! उनके भयंकर अस्त्र धनुष से छूटे और गये। राक्षस मरे और उनके सिरों पर वे अस्त्र गड़े रहे। उन अस्त्रों के साथ उन राक्षसों की लाशों के ढेर के ढेर पंक्तियों में बन गये। ४४१

काडु	कॊण्डहा	रुलवैहळ्	कायॆरि	कदुवच्
चूडु	कॊण्डत्त	वॆनत्तॊडर्	कुरुदिमीत्	तोऩ्ऱ
आडु	हिऩ्ऱत्त	वरुहुरै	यियिलम्बु	विण्मेल्
ऒडु	हिऩ्ऱत्त	वुयिरैयुन्	दॊडर्वन	वॊत्त 442

काट्टु कॊण्ट–वन में भरे; कार् उलवैकळ्–काले ठूँठ; काय् ऍरि कतुव–जलती आग के लगने से; चूट्टु कॊण्टत्त ऍन्न–गरम हो गए जैसे; अऱ्ऱ कुऱै–सिर-कटे राक्षसों के कबन्ध; तॊटर् कुरुति मी तोऩ्ऱ–रक्त की धार के ऊपर उछलते रहने से; आटुकिऩ्ऱत्त–और नाचते हैं, तब; अयिल् अम्पु–श्रीराम के तीक्ष्ण शर; विण् मेल् ओटुकिऩ्ऱत्त उयिरैयुम्–आकाश में जानेवाले उनके प्राणों को भी; तॊटर्वत्त ऒत्त–(पकड़ने के लिए) पीछे जाते थे, ऐसे लगा। ४४२

राक्षसों के सिर-रहित कबन्ध नाचे। उनके शरीरों पर से लाल रक्त उछल रहा था। उनको देखकर ऐसा लगता था, मानो वन के ठूँठ आग से जल रहे हों। उछलते रक्त के फौवारे श्रीराम के बाणों के समान दिखे, जो स्वर्गगामी राक्षसों के प्राणों का पीछा कर रहे हों। ४४२

कैहळ्	वाळॊडु	कळप्पड	कळुत्तऱक्	कवश
मॆय्हळ्	पोळ्बडत्	ताळ्विळ	मिहनॆडु	निरुदर्
शॆय्य	मात्तलै	शिन्दिडत्	तिशैयुऱच्	चॆन्ऱ
तैय	लार्नॆडु	विळियॆन्नक्	कॊडियन	शरङ्गळ् 443

तैयलार् नॆटु विळि ऍन्न–दयिताओं के आयत नेत्रों के समान; कॊटियन–घातक; चरङ्कळ्–श्रीराम के शर; मिक नॆटु निरुतर्–बहुत ऊँचे कद के राक्षसों के; कैकळ् वाळॊटु कळम् पट–हाथों को तलवारों के साथ युद्धभूमि पर गिराते हुए; कळुत्तु अऱ–गलाओं को काटते हुए; कवच मॆय्कळ्–कवचसहित शरीरों को; पोळ् पट–चीरते हुए; ताळ् विळ–पैरों को काटते; चॆय्य मा तलै चिन्तिट–लाल सिरों को छितराते हुए; तिचै उऱ चॆन्ऱ–दिशाओं में लगे हुए उड़ चले। ४४३

श्रीराम के बाण दयिताओं के आयत नेत्रों के समान थे। वे अत्यन्त भयंकर थे। वे चारों दिशाओं में बड़ा उत्पात मचाते हुए उड़े। ऊँचे कद के राक्षसों के हाथ तलवारों के साथ कटकर गिरे। उन शरों से गर्दनें कटीं। कवच विदीर्ण हुए। बड़े और लाल सिर अलग हुए। ४४३

मारि याक्किय वडिक्कणै वरैपुरै निरुदर्
पेरि याक्कैयित्त् पॅरुङ्गरै वयित्तॅाॅरुम् बिड़ङ्ग
एरि याक्कित्त वारुह ळाक्कित्त विरैक्कुम्
शोरि याक्कित्त पोक्कित्त वन्नमॅनुन् दॅात्तमै 444

मारि आक्किय–वर्षा हो रही हो, ऐसा दृश्य उपस्थित करनेवाले; वटि कणै–(श्रीराम के) तीक्ष्ण बाणों ने; वरै पुरै निरुतर्—पर्वत-सम राक्षसों के; पेर् याक्कैयित्–बड़े शरीरों के (रूपी); पॅरुम् करै–बड़े तटों के; वयित् तॉरुम् पिड़ङ्क—स्थान-स्थान पर दृश्यमान होते; एरि आक्कित–झीलें बनाईं; आरुकळ् आक्कित–नदियों की सृष्टि की; इरैक्कुम् चोरि आक्कित–उनको खून से भरा बना दिया; वतम् अॅतुम् तॉन्मै पोक्कित–वन का प्राचीन प्रकार मिटा दिया। ४४४

श्रीराम के तीक्ष्ण बाणों की वर्षा ने बड़ी-बड़ी नदियाँ और झीलें बनायीं, जिनके तट पर्वत-सम राक्षसों के बड़े शरीरों के बनाये और उनमें रक्त भर दिया। अब वन का प्राचीन रूप बदल गया। ४४४

अलैमि दन्दत्त कुरुदियित्त् बॅरुङ्गड लरक्कर्
तलैमि दन्दन नॅडुन्दडि मिदन्दन तडक्कै
मलैमि दन्दत्त वाम्बरि मिदन्दत्त वयप्पोर्च्
चिलैमि दन्दत्त मिदन्दन कॉडियॉडु तेर्हळ् 445

अलै मितन्तत–लहरें जिसमें उठती थीं, उस; कुरुतियित् पॅरुम् कटल्–रक्त के बड़े सागर पर; अरक्कर् तलै मितन्तत–राक्षसों के सिर तैरे; नॅटुम् तटि मितन्तत–लम्बे मांसखण्ड तैरे; तट कै मलै–विशाल हाथों (सूँड़ों) के गज बहे; वाम् परि मितन्तत–फाँदकर चलनेवाले अश्व बहे; वय पोर् चिलै मितन्तत–सारयुक्त युद्ध-धनु बहे; कॉटि ऑटु तेर्कळ् मितन्तत–ध्वजाओं-सहित रथ बहे। ४४५

रक्त का सागर-सा बन गया और उस पर तरंगें भी उठीं। उस रक्त पर राक्षसों के सिर, उनके बड़े-बड़े मांसखण्ड, अनेक करी, अश्व, बलवान चाप और ध्वजाओं के साथ रथ उतराये। ४४५

आय कालैयि लन्नल्विळित् तार्त्तिरैत् तरक्कर्
तीय वार्हणै मुदलिय तॅरुशिनप् पडैहळ्
मेय माल्वरै यॉन्ऱिनै वळैत्तित्त मेहम्
तूय तारैहळ् शॉरिवन वामॅन्नच् चॉरिन्दार् 446

आय कालैयिल्–तब; अरक्कर्–राक्षसों ने (जो बचे रहे); मेय माल् वरै–स्थायी, बड़े एक पर्वत; ऑन्ऱिनै–एक को; इत मेकम् वळैत्तु–श्रेणीबद्ध मेघ घेरकर; तूय तारैकळ् चॉरिवत आम्–शुद्ध धारें गिरा रहे हों; अॅन्न–ऐसा; तीय वार् कणै–भयंकर लम्बे अस्त्र; मुतलिय–आदि; चित तॅरु पटैकळ्–क्रोध के साथ फेंके, घातक हथियार; चॉरिन्तार्–बरसाये। ४४६

तब राक्षसों ने श्रीराम को घेर लिया और भयंकर अस्त्र आदि

चलाये। वह दृश्य ऐसा था, मानो मेघों के समूहों ने एक पर्वत को घेर लिया हो और वे उस पर शुद्ध जलधारें बरसा रहे हों। राक्षसों ने क्रोध के साथ अस्त्र चलाये और वे अस्त्र भयंकर और घातक थे। ४४६

शॊरिन्द पल्पडै तुणिबडत् तुणिबडच् चरत्ताल्
अरिन्दु वॆन्दत्त शिन्दिडत् तिशैतिशै यहऱ्ऱि
नॆरिन्दु पार्मह ळॊळिवुऱ वत्तमुऱ्ऱु निऱैय
विरिन्द शॆम्मयिर्क् करुन्दलै मलैयॆन्न वीऴ्त्तान् 447

चरत्ताल्—शरों द्वारा (श्रीराम ने); चॊरिन्त पल् पटै—(राक्षसों के) बरसाये अनेक हथियारों को; तुणि पट तुणि पट—आते-आते खण्डित करके; अरिन्तु—काटकर; वॆन्तत्त चिन्तिट—जलाकर छितराया; तिचै तिचै अकऱ्ऱि—दिशा-दिशा में फिकवा दिया; पार् मकळ्—भूदेवी को; नॆरिन्तु नॆळिवु उऱ—कुचलकर झुकने देते हुए; वत्तम् मुऱ्ऱुम् निऱैय—सारे वन को भरते हुए; विरिन्त चॆम्मयिर्—बिखरे लाल केशों के; करुम् तलै—काले सिरों को; वीऴ्त्तान्—गिराया। ४४७

श्रीराम ने अपने शरों से उन हथियारों को, जो राक्षसों द्वारा अत्यधिक परिमाण में उन पर चलाये गये, आते-आते काट दिया। उनको जलाकर छितराया। उनको सभी दिशाओं में दूर-दूर तक फेंक दिया। उन्होंने राक्षसों के लाल बालों से भरे काले सिरों को काट गिराया। उन सिरों की इतनी भारी संख्या थी कि उनके भार से भूदेवी कुचल गयीं और वह लचक गयीं। वन में सर्वत्र सिर ही सिर दिखाई दिये। ४४७

कवन्द पन्दङ्गळ् कळित्तन कुळित्तकैम् मलैहळ्
शिवन्दु पायन्दवॆङ् गुरुदियिऱ् ऱिरुहिन शिनत्ताल्
निवन्द वॆन्दॊऴि निरुदर्दम् नॆडुनिणन् दॆविट्टि
उवन्द वन्गळु दुयिर्शुमन् दुळुक्किय दुम्बर् 448

कवन्त पन्तङ्कळ्—कवन्धराशियाँ; कळित्तन—मुदित हुए; कै मलैकळ्—'सूँड़ वाले पर्वत' (करी); चिवन्तु पायन्त वॆम् कुरुतियिल्—लाल और बहते रक्त-प्रवाह में; कुळित्त—नहाये; तिरुकित्त चिनत्ताल्—भयंकर क्रोध के कारण; निवन्त—उभरे; वॆम् तॊऴिल्—भयंकर काम करनेवाले; निरुतर् तम्—राक्षसों के; नॆटु निणम्—अधिक मांसों को खाकर; तिवट्टि—अघाकर; वन् कळुतु—बलवान प्रेत; उवन्त—हर्षित हुए; उम्पर—देवलोक; उयिर् चुमन्तु—(राक्षसों के) प्राणों को ढोते हुए; उळुक्कियतु—लचक उठा। ४४८

भयंकर युद्ध में कवन्धराशियाँ मुदित हुईं। करी रक्त-प्रवाह में नहाये। बलवान प्रेतों ने क्रुद्ध राक्षसों के मांस खाकर अघाकर आनन्द मनाया। देवलोक में इतने राक्षसों के प्राण आ भर गये कि लोक ही झुक गया। ४४८

मरुड रुङ्गळि वञ्जन्नै वळैयॅयिऱ् ऱरक्कर्
गरुड नञ्जुरु कण्मणि काहमुङ् गवर्न्द
इरुड रुम्बुऱत् तिळुवैयर् पळुदुऱऱ् कॅळिदे
अरुड रुन्दिऱत् तऱनन्ऱि वलियवुण् डामो 449

मरुळ् तरुम्–मोह में डालनेवाले (मायावी); कळि–मत्त; वञ्चत्तै–कपटी; वळै ॲयिऱ्ऱु–वक्रदाँत वाले; अरक्कर्–राक्षसों की; करुटन् अञ्चुरु–गरुड़ को भी भयभीत करनेवाली; कण्मणि–आँखों की पुतलियों को; काकमुम् कवर्न्त–कौओं ने छीन लिया; इरुळ् तरुम् पुऱत्तु–अन्धकार-सम काले शरीरों के; इऴुतैयर्–नीच लोग; पऴुतु उऱऱ्कु ॲळिते–नष्ट होंगे, यह सुलभ ही है; अरुळ् तरुम् तिऱत्तु–कृपा देनेवाले; अऱन् अन्ऱि–धर्म के सिवा; वलियतु–बलवान; उण्टामो–कोई दूसरा होगा क्या। ४४९

उन मायावी, मत्त, कपटी और वक्रदाँत वाले राक्षसों की आँखों की पुतलियों को अब कौए नोचकर खाने लगे। पहले उन आँखों को देखकर स्वयं गरुड़ भी डरता था। अब उनकी स्थिति ऐसी हो गयी! क्यों? उन नीचों की अवनति सुगमता से हो जाती है, जो अन्धकार के समान काले होते है! धर्म कृपा का जनक है। उससे बढ़कर बलवान और क्या है?। ४४९

पल्लायिर मिरुळ् कीऱ्रिय पहलोन्नॅन वॉळिरुम्
विल्लाळनै मुनियावॅयि लयिलामॅन्न विऴियाक्
कल्लार्मऴै कणमामुहिल् कडैनाळ्विऴ वन्नबोल्
ॲल्लामॊरु तॊडैयावुड नॆय्दार्विन्नै शॆय्दार् 450

पल् आयिरम् इरुळ्–अनेक सहस्र अन्धकार पुंजों को; कीऱ्रिय–चीरनेवाले; पकलोन् ॲन्न ऑळिरुम्–सूर्य के समान प्रभावान; विल्लाळन्नै–कोदण्डपाणी श्रीराम को; ॲल्लारुम् ऑरु तॊटैया–सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ मिलकर; मुनिया–कोप करके; वॅयिल् अयिल् आम् ॲन्न–चमकदार भाले के समान; विऴिया–तरेरकर; कण मा मुकिल्–समूहों में मिले बड़े-बड़े मेघ; कटै नाळ्–युगान्त में; कल् आर् मऴै–पत्थर की वर्षा; विटुवन्न पोल्–गिराते हों, जैसे; ॲल्लाम् उटन् ॲय्तार्–सभी अस्त्र एक साथ चलाते हुए; विन्नै चॆय्तार्–(युद्ध-) कार्य किया। ४५०

श्रीराम अन्धकार के समूहों को चीरकर हटानेवाले सूर्य के समान प्रभावान थे। उन कोदण्डपाणी पर सभी (बचे हुए) राक्षसों ने एक साथ युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। उनकी तरेरती आँखों ने भयंकर भालों के समान दृष्टि चलायी। युगान्त में पत्थर बरसानेवाले मेघों के समान वे सभी अस्त्रों को एक साथ चलाने लगे। ४५०

ऍऱिन्दारॅन्न वॅय्दारॅन्न वऱियानिन्नैन् दन्नवुम्
अऱिन्दारॅन्न वऱियावहै ययिल्वाळियि नऱुत्तान्

शॅऱिन्दारैयुम् बिऱिन्दारैयुञ् जॅरुत्तारैयुन् दिरत्ताल्
मऱिन्दारैयुम् वलित्तारैयु मडित्तान्शिलै पिडित्तान् 451

चिलै पिटित्तान्–कोदण्डपाणी श्रीराम ने; चॅऱिन्तारैयुम्–दलों में आनेवालों को; पिऱिन्तारैयुम्–अलग-अलग आनेवालों को; चॅरुत्तारैयुम्–द्वेष करके आनेवालों को; चित्तत्ताल् मऱिन्तारैयुम्–(जो भागे थे पर) क्रोध के कारण मुड़ आये उनको; वलित्तारैयुम्–अन्याय करनेवालों को; मटित्तात्–मिटाया; ॲऱिन्तार् ॲत–ये शस्त्र फेंकनेवाले; ॲय्तार् ॲत–ये अस्त्र चलानेवाले; अऱिया निनैन्ततवुम्–चलाने योग्य हथियारों को; अऱिन्तार् ॲत–परखकर लेनेवाले थे; अऱिया वकै–ऐसा पहचाना न जा सके, ऐसा; अयिल् वाळियिन् अऱुत्तात्–तीक्ष्ण अपने शरों से छिन्न-भिन्न कर दिया। ४५१

कोदण्डपाणी श्रीराम ने सब राक्षसों को मार दिया। उनमें दल बाँधकर आनेवाले, पृथक-पृथक आनेवाले, क्रुद्ध राक्षस, भाग जाकर वैर-प्रेषित हो लौट आनेवाले और अन्यायी सभी थे। इस तेजी से वे हत हुए कि यह जानना भी कठिन हो गया कि कौन क्या कर रहा था। अस्त्र चलानेवाले, शस्त्र चलानेवाले, चलाने के लिए चुनाव में लगे रहनेवाले सभी थे। वे भी कुछ करने से पहले ही हत हो गये। ४५१

वानत्तन कडलिन्बुऱ वलयत्तन मदिशूऴ्
मीनत्तन मिळिर्हॊण्डलिन् मिशैयत्तन मिडल्वॆम्
कानत्तन मलैयत्तन तिशैमुऱ्ऱिय करियिन्
तानत्तन काहुत्तन शरमुन्दिय शिरमे 452

काकुत्तन–काकुत्स्थ के; चरम् उन्तिय–शरों द्वारा उकसाये गये; चिरमे–राक्षसों के सिर; वानत्तन–आकाश में गये; कटलिन् पुऱ वलयत्तन–समुद्र के पार के चक्रवाल में गये; मति चूऴ्–चन्द्रवलयित; मीनत्तन–नक्षत्र-मण्डल में गये; मिळिर् कॊण्टलिन्–दृश्यमान मेघमण्डलों के; मिचैयत्तन–ऊपर वाले हो गये; मिटल् वॆम् कानत्तन–घने भयंकर वनों में गये रहे; मलैयत्तन–पर्वतों पर के हुए; तिचै मुऱ्ऱिय–दिशाओं के छोर में रहनेवाले; करियिन्–करियों के; तानत्तन–स्थानों पर गये। ४५२

काकुत्स्थ के शरों से कटे हुए राक्षसों के सिर कहाँ-कहाँ दिखे! आकाश, समुद्र पार चक्रवाल पर्वत, चन्द्र को मध्य में लिये रहे मीनमण्डल, सुदृश्य मेघमण्डल, घने भयंकर वन, पर्वत, दिशाओं के अन्त में रहनेवाले दिग्गजों के स्थान —सभी स्थानों पर गये रहे। ४५२

मण्मेलन मलैमेलन मऴैमेलन मदितोय्
विण्मेलन नॆडुवेलैयि निडमेलन मिडलोर्
पुण्मेलन कुरुदिप्पॊरु तिरैयाऱुहळ् पॊङ्गत्
तिण्मेरुवै नहुमार्बिन युरुवुन्दॆरि शरमे 453

तिण् मेरुवै नकु–सुदृढ़ मेरु का परिहास करनेवाली; मार्पित्तै–(राक्षसों की) छातियों को; उरुवुम् तॅरि चरम्–वेध जानेवाले (श्रीराम के) चुने हुए शर; पौरु तिरै कुरुति आऱुकळ्–आपस में टकरानेवाली तरंगों से युक्त रक्त-नदियाँ; पोङ्क–उमँगकर बढ़ें, ऐसा; मण् मेलत्त–पृथ्वी में गये; मलै मेलत्त–पर्वतों पर गये; मळै मेलत्त–मेघों पर गये; मति तोय् विण् मेलत्त–चन्द्राश्रयी आकाश पर के हो रहे; नॅटु वेलैयिन् इटम् मेलत्त–विस्तृत समुद्रतलों के हो रहे; मिटलोर् पुण् मेलत्त–वली (राक्षसों) के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

जो मेरु-समान कठिन छाती वाले राक्षसों को भेद चले, वे श्रीराम के चुने हुए शर कहाँ-कहाँ पाये गये! राक्षसों के रक्त की नदियों को उमँगकर बहने देते हुए वे शर पृथ्वी पर, पर्वतों पर, मेघमण्डल पर, चन्द्राश्रयी आकाश पर, समुद्र पर और वली राक्षसों के व्रणों पर रहनेवाले बने। ४५३

पौलन्दारिन रत्तलिन्शिहै पॉळिहण्णित्त रॅवरुम्
वलन्दाङ्गिय वडिवॅम्बडै विड्डुवार्शर मळैयाल्
उलन्दारुडल् कडलोडुर वुलवारुड लुर्रार्
अलन्दार्निशि शररामॅन विमैयोरोडु मार्त्तार् 454

पौलम् तारित्तर्–मनोरम मालाधारी; अत्तलित् चिकै पॉळि कण्णित्तर्–अग्नि की ज्वालाएँ-सी निकालनेवाली आँखों के; वटि वॅम् पटै विट्टुवार्–तीक्ष्ण भयंकर हथियार चलानेवाले; अँवरुम्–सभी राक्षस; चर मळैयाल्–शर-वर्षा से; उटल् कटल् ओटु उर्–शरीर जाकर समुद्र मे मिल गये, इस रीति से; उलन्तार्–मरे; उलवा उटल् उर्रार्–अमर शरीर पाकर; इमैयोर् ओटुम्–देवों के साथ मिलकर; निचिचरर् अलन्तार् आम् ॲॅंत–निशिचर मरे, यह कहकर; आर्त्तार्–सन्तोषरव उत्पन्न किया। ४५४

मनोरम मालाधारी सभी राक्षस, जिनकी आँखों से अग्निज्वालाएँ निकलती थीं और जो भयंकर तीक्ष्ण हथियार चलाते थे, श्रीराम की शरवर्षा के सामने मर गये। उनकी लाशें समुद्र में जाकर मिल गयीं। अब उन्हें अमर शरीर मिल गया। वे देवों मे मिल गये। अब वे नीचे देखते हैं और मरते हुए राक्षसों को देखकर हर्षरव निकालते हैं कि वाह! राक्षस मर गये। ४५४

ईरड्चॅरि कमलत्तन विरदक्कुरै पुळिनम्
वीरक्करि मुदलैक्कुल विडुपाय्परि कुरम्बाप्
पारक्कुडर् मिडैपाशडै पडर्हिन्रन पलवा
मूरित्तिरै युदिरक्कुळ मुळुहिक्कळु दॅळुमे 455

ईरल्–यकृत् (रूपी); चॅरि कमलत्तत–दलसंकुल कमल वाले; इरत कुरै–टूटे रथ; पुळितम्–पुलिन; वीर करि–साहसी गज; मुतलै कुलम्–नक्रसमूह; पाय् परि–अश्व; विटु–बँधे; कुरम्पा–बाँध; पार कुटर्–भारी आँतें; मिटै–लसे

रहनेवाले; पल् पाचटै आ–अनेक ताजे पत्ते, इनसे युक्त; मूरि तिरै–बड़ी-बड़ी तरंगों वाले; उतिर कुळम्–रक्त के तालाबों में; कळुतु–भूत; मुळुकि ॲळुव–नहा उठते हैं। ४५५

युद्धभूमि में एक अनोखा तालाब बन गया। उसमें रक्त भरा था। यकृत् कमल बने, टूटे रथ पुलिन। साहस के साथ मरे गज नक्र बने और अश्व की लाशें बाँध बनीं। भारी आँतों ने विविध पत्तों का स्थान लिया! ऐसे तालाब में, जिसमें बड़ी-वड़ी तरंगें उठ रही थीं, प्रेत नहा उठते थे। ४५५

अळैत्तार्शिल रार्त्तार्शिल रळिन्दार्शिलर् कळिन्दार्
उळैत्तार्शिल रुयिर्त्तार्शिल रुरुण्डार्शिलर् पुरण्डार्
कुळैत्ताळ्दिरैक् कुरुदिक्कडर् कुळित्तार्शिलर् कॉलैवाय्
मळैत्तारैहळ् पडप्पारिडै मडिन्दार्शिल रुडैन्दार् 456

कॉलै वाय्–मारक; मळै तारैकळ् पट–शरवर्षा के लगने से; चिलर्–कुछ राक्षसों ने; अळैत्तार्–पुकार मचायी; चिलर् आर्त्तार्–कुछ ने (भीषण) गर्जन किया; चिलर् अळिन्तार्–कुछ मिटे; चिलर् कळिन्तार्–कुछ भागे; चिलर् उळैत्तार्–कुछ तड़पे; चिलर् उयिर्त्तार्–कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी; चिलर् उरुण्टार्–कुछ लोटे; चिलर् पुरण्टार्–कुछ लुढ़के; कुळै ताळ्–गहरे पंक के साथ; तिरै कुरुति कटल्–लहरों से युक्त रक्त-सागर में; चिलर् कुळित्तार्–कुछ डूबे; चिलर् पार् इटै मटिन्तार्–कुछ भूमि पर गिरकर मरे; उटैन्तार्–हारे। ४५६

श्रीराम के संहारक वर्षा-धारों के समान शरों के आकर लगने से कुछ राक्षस त्राहि! त्राहि! पुकारने लगे। कुछ राक्षसों ने घोर शब्द किया। कुछ राक्षस वहीं ढेर हो गये। कुछ जान लेकर भागे। कुछ तड़पकर रह गये। कुछ ने लम्बी साँस छोड़ी। कुछ लुढ़कते हुए गये। कुछ करवट बदलते बेचैन रहे। कुछ लोग कीच से भरे रक्त-सागर में डूबकर संकटग्रस्त हो रहे। कुछ लोग भूमि पर ही गिरकर मरे। कुछ लोग हारकर हटे। ४५६

उडैत्तारहळै नहैशॅय्दन रुरुडेरिन रुडनाय्
अडैन्दार्पडैत् तलैवीरर्हळ् पदिनाल्वरु मयिल्वाळ्
मिडैन्दार्नॅडुङ् गडर्रानैयर् मिडल्विल्लिनर् विरिनीर्
कडैन्दार्वॅरु वुर्मीदॅळु कडुवामॅनक् कॉडियार् 457

विरि नीर्–विस्तृत (क्षीर-) सागर को; कटैन्तार्–जिन्होंने मथा उन (देवों और असुरों) को; वॅरुवु उर–भयभीत करते हुए; मीतु ॲळु–ऊपर उठ आये; कटु आम् ॲन–विष के समान; कॉटियार्–निर्मम; पटै तलै वीरर्कळ् पतिन्नाल्वरुम्–सेनापति चौदहों ने; उटनाय्–एक साथ; उटैन्तार्कळै–हारकर भागनेवालों की; नकै चॅय्ततर्–हँसी उड़ाई; उरुळ् तेरितर्–पहियों वाले रथ पर सवार हो; अयिल् वाळ् मिटैन्तु आर्–भालों और तलवारों को लिये हुए मिल आनेवाली; नॅटुम् कटल्

तातैयार्–विशाल समुद्र-सम सेना के साथ; मिटल् विल्लित्तर्–सबल धनु वाले हो; उटताय्–एक साथ; अटैन्तार्–(वे) आये। ४५७

चौदहों सेनापतियों ने यह देखा तो उनका परिहास किया। देवों और असुरों को भयभीत करते हुए जो विष क्षीरसागर से उठ आया था, उस विष के समान वड़े ही भयंकर और खूनी वे सेनापति एक साथ निकलकर रथों पर युद्धभूमि में आये। उनके साथ वड़ी सेना आयी, जिसके वीर भालों और तलवारों से युक्त थे। सेना विपुल सागर के समान थी और वीरों से खूब भरी थी। ४५७

नाहत्तनि यॊरुविल्लियै नळिमुप्पुर मुन्नाळ्
माहत्तिडै वळैयुऱ्ऱन वॆन्नवळ्ळलै मदियार्
आहत्तॆळ् कनलुहण्वळि युहवॆऱ्ऱॆदि रळन्ऱार्
मेहत्तनि नॆडुविल्लियै वळैत्तार्शॆरु विळैत्तार् 458

मुन्ताळ्–प्राचीनकाल में; नाकम् तनि ऑरु विल्लियै–(मेरु) पर्वत को श्रेष्ठ धनु वनाकर जिन्होने लिया था, उन (मेरुधन्वा) को; नळि मुप्पुरम्–वड़े त्रिपुरों ने; माकत्तु इटै–आकाश में; वळैवुऱ्ऱन अॅन्न–घेर लिया हो ऐसा; मेक तनि नॆटु विल्लियै–मेघश्याम, उत्तम दीर्घ धनु के स्वामी कोदण्डपाणी; वळ्ळलै–प्रभु श्रीराम को; मतियार्–कुछ न माननेवाले; आकत्तु ऍळु कनल्–शरीर के अन्दर उठनेवाली आग को; कण् वळि उक उऱ्ऱु–आँखों द्वारा निकलने देते हुए; ऍतिर् अळन्ऱार्–सामने द्वेष करते हुए; वळैत्तार्–घेरकर; चॆरु विळैत्तार्–युद्ध किया। ४५८

वे श्रीराम का महत्त्व जान नहीं पाये। उनके मन में उनके प्रति आदर ही नहीं था। मेघसम दीर्घ धनु के साथ दृश्यमान उन उदार प्रभु श्रीराम को उन्होंने आकर ऐसा घेरा, जैसा मेरुधन्वा शिवजी को त्रिपुरों ने आकाश में घेर लिया था। उनकी आँखों से मानो उनके अन्दर की कोपाग्नि निकल रही थी। वड़े वैर के साथ वे घेर गये। ४५८

ऍय्दार्पल ऍऱिन्दार्पल ऍऴुवोच्चिनर् मऴुवाल्
पॊय्दार्पलर् पडैत्तार्पलर् किडैत्तार्पलर् पॊरुप्पाल्
पॆय्दार्मऴै पिदिर्त्तारॆरि पिऱैवाळॆयिऱ् ऱरक्कर्
वैदार्पलर् तॆऴित्तार्पलर् मलैयामॆन वळैत्तार् 459

पिऱै वाळ् ऍयिऱ्ऱु–अपूर्ण चन्द्र-सम वक्रदांत वाले; अरक्कर्–राक्षसों में; पलर्–अनेकों ने; ऍय्तार्–शर चलाये; पलर्–अनेकों ने; ऍऴु–दण्ड; ओच्चित्तर्–फेंके; पलर् मऴुवाल् पॊय्तार्–अनेकों ने परशुओं से वार किया; पलर् पुटैत्तार्–अनेकों ने मारा; पलर् किटैत्तार्–अनेक पास आये; पलर् पॊरुप्पाल् मऴै पॆय्तार्–अनेकों ने पर्वतों को वर्षा के समान लगातार फेंके; ऍरि पितिर्त्तार्–(अनेकों ने) आग बरसायी; पलर् वैतार्–अनेकों ने गाली दी; पलर् तॆऴित्तार्–अनेक डाँटे; मलै आम् ऍन वळैत्तार्–पर्वत के समान घेर लिया। ४५९

उनके साथ कितने ही राक्षस-वीर आये थे। चन्द्रकला के समान श्वेत और वक्रदाँत वाले उनमें अनेकों ने श्रीराम पर बाण चलाये। कितनों ने दण्ड फेंके। परशु और अन्य हथियार चलानेवाले भी अनेक, अनेक थे। अनेक उन पर झपटने आये। अनेक राक्षसों ने पर्वतों को उठाकर वर्षा के समान निरन्तर फेंका। अनेकों ने आग बरसायी। अनेकों ने गालियाँ दीं और अनेक डाँटे। अनेक पर्वतों के समान श्रीराम के चारों ओर आकर उनको घेर गये। ४५९

तेर्पूण्डन्न विलङ्गियावैयुम् जिलैपूण्डॅळ्ळु कणैयाल्
पार्पूण्डन्न मदमाकरि पलिपूण्डन परिमात्
तार्पूण्डन्न वुडल्पूण्डिल तलैवॅङ्गदिर् तळिवन्
दूर्पूण्डन पिरिन्दालॅन्न विरिन्दारुयि रुलन्दार् 460

चिलै पूण्टु ऍळ्ळु–(श्रीराम के) कार्मुक से छूटे हुए; कणैयाल्–शरों से; तेर् पूण्टन्न–रथों में जुते हुए; विलङ्कु यावैयुम्–जानवर सब; पार् पूण्टन्न–भूमि पर गिरकर मरे; मत मा करि–मत्त, बड़े-बड़े गज; पलि पूण्टन–बलि चढ़े; तार् पूण्टन्न परि मा–हारों से युक्त अश्व; उटल् तलै पूण्टिल–शरीरों से सिर-जुड़े नहीं रहे; चॅरु विळॅत्तार्–युद्ध करने जो आये थे, वे; वॅम् कतिर् तळि वन्तु–गरम सूर्य को घेर जो आया; ऊर् पूण्टन–उस परिवेश के; पिरिन्ताल् ॲन्न–हटने के समान; उयिर् उलन्तार्–प्राण खोकर; विरिन्तार्–सब जगह अलग-अलग पड़े रहे। ४६०

श्रीराम ने तब शर चलाये। उनके कोदण्ड से निकले बाणों के लगने से राक्षसों के रथों में जुते हुए जानवर भूमि पर गिरकर मर गये। मत्तगज बलि चढ़े। हारों से भूषित अश्व सिर से विहीन हो गये। उनको घेर आये हुए राक्षस सूर्य के परिवेश के समान, जो जल्दी दूर हो जाता है, मर गये। उनकी लाशें सर्वत्र फैली पड़ी रहीं। ४६०

माल्पोत्तिय मऱवोरुडन् मलैयोत्तुड न्ऴिशॅम्
पाल्पोत्तिन्न नदियिऱ्किळर् पडियोत्तवु पनिवान्
मेल्पोत्तिय कुऴुविण्णवर् विऴिपोत्तिन्नर् विरैवॅम्
काल्पोत्तिनर् नमन्तूदुवर् कडिदुऱ्ऱुयिर् कवर्वार् 461

माल् पोत्तिय–मूर्च्छा में पड़े रहे; मऱवोर् उटल्–वीरों के शरीर; मलै ऒत्तु–पर्वतों से तुले; उटल् अऴि–उन शरीरों से निकलनेवाले; चॅम् पाल् पोत्तिन्न–रक्त से भरी; नतियिल्–नदियों के कारण; किळर् पटि ऒत्ततु–दृश्यमान भूमि के समान लगे; पनि वान् मेल्–शीतल आकाश पर; पोत्तिय कुऴु विण्णवर्–एकत्रित हुए देवों ने; विऴि पोत्तिन्नर्–अपनी आँखें मूँद ली; नमन् तूतुवर्–यमदूतों ने; कटितु उऱ्ऱु–जल्दी आकर; उयिर् कवर्वार्–(राक्षसों के) प्राण हरकर; मिटल् वॅम्–सशक्त और भयंकर; काल् पोत्तिनर्–अपने पैरों से (युद्धभूमि को) आच्छादित कर दिया। ४६१

मूच्छित वीरों के शरीर पर्वतों के समान लगे। उनके शरीरों से निकलनेवाले रक्त की भरी नदियों के कारण भूमि शोभित लगी। आकाश में देवों ने भीड़ लगायी थी। उन्होंने यह दृश्य देखकर अपनी आँखें मूँद लीं। उस युद्धभूमि को यम के दूतों के पैरों ने ढँक दिया। वे जल्दी-जल्दी राक्षसों के प्राण लेने आ-जा रहे थे। ४६१

पेयेऱिनर् शॅरुवेट्टॅऴु पित्तेऱिन्नर् पिलवाय्त्
तीयेऱिह लरियेऱिनर् करियेऱिन्नर् शॅऱिवाय्
नायेऱिन्न तलैमेनॅडु नरियेऱिन्न वॅरिहाल्
वायेऱिय वडिवाळियिन् वान्नेऱिन्नर् वन्दार् 462

पिल वाय्–बिल के समान मुख वाले; ती एऱु इकल्–बड़ी आग के समान लड़नेवाले; अरि एऱिन्नर्–सिंहों पर सवार; करि एऱिन्नर्–गजों पर सवार; चॅरु वेट्टु ॲऴु–युद्ध चाहते हुए आये; पेय् एऱिन्नर्–भूतग्रस्त; पित्तु एऱिन्नर्–उन्मत्त (राक्षसों के); तलै मेल्–सिरों पर; चॅऱिवाय्–भीड़ लगाकर; नाय् एऱिन्न–कुत्ते चढ़े; नॅटु नरि एऱिन्न–लम्बी कतार में सियार चढ़े; ॲरि काल्–आग उगलनेवाले; वाय् एऱिय–मुखों से युक्त; वटि वाळिन्–तीक्ष्ण बाणों से; वान् एऱिन्नर्–(हत होकर) आकाश में चढ़े; वन्तार्–आये। ४६२

राक्षस, जिनके मुख बिल के समान थे, भयंकर सिंहों पर और गजों पर सवार होकर चाव के साथ भूतग्रस्त या उन्मत्त के समान युद्ध करने आये थे। पर वे मर गये। उनकी लाशों पर अब कुत्ते, सियार आदि चढ़ रहे थे। वे राक्षस श्रीराम के अग्निमुख और तीक्ष्ण बाणों से हत हुए थे। इसलिए उनकी आत्माएँ स्वर्ग पहुँच गयीं। ४६२

तलैशिन्दिन्न विऴिशिन्दिन तऴल्शिन्दिन तरैमेल्
मलैशिन्दिन पडिशिन्दिन्न वरुशिन्दुर मऴैबोल्
शिलैशिन्दिन्न कणैशिन्दिन्न तेर्शिन्दिन्न तिशैयू
डुलैशिन्दिन्न पॊऱिशिन्दिन्न वुयिर्शिन्दिन्न वुडलम् 463

मऴै पोल्–मेघ (वर्षा) के समान; चिलै चिन्तिन्न–धनु से निकले; कणै चिन्तिन्न–शर फैले; तलै चिन्तिन–सिर गिरे; विऴि चिन्तिन्न–आँखें बिखरीं; तऴल् चिन्तिन्न–आग फैली; वरु चिन्तुरम्–आगत गज; तरै मेल्–भूमि पर; मलै चिन्तिन्न पटि पोल्–पर्वत बिखरे पड़े हों, इस प्रकार; चिन्तिन्न–बिखरे पड़े थे; तेर् चिन्तिन्न–रथ टूटकर छितराये; तिचै ऊटु–दिशाओं में सर्वत्र; उलै चिन्तिन्न–भट्ठी से निकली; पॊऱि चिन्तिन्न–आग के कणों के समान अंगार बिखरे; उटलम्–शरीरों ने; उयिर् चिन्तिन्न–प्राण छोड़ दिये। ४६३

श्रीराम के कोदण्ड ने वर्षा की धारों के समान शर बरसाये। इसलिए राक्षसों के सिर छितरे; आँखें बिखरीं और उन आँखों से अंगार छितरे। उन शरों से आहत होकर गज पर्वत के समान यत्र-तत्र पड़े रहे और रथ

टूटकर गिरे। दिशाओं में अंगारे उड़े और राक्षसों के शरीरों ने प्राण त्याग दिये। ४६३

पडैत्तलै वरुमवर् पडैत्त तेर्हळुम्
उडैत्तडम् बडैहळु मॊळिय वुड्ऱॆदिर्
विडैत्तडर्न् दॆदिर्न्दवर् वीरन् वाळियाल्
मुडैत्तवॆङ् गुरुदियिन् कडलिन् मूळ्हिनार् 464

पटै तलैवरुम्–सेनापति; अवर् पटैत्त तेर्कळुम्–उनके अपने रथ; उटै तटम् पटैकळुम्–उनके अपने बड़े-बड़े युद्ध-हथियार; ऑळिय–इनको छोड़कर; उऱ्ऱु–(युद्धभूमि में) आकर; ऍतिर्–(श्रीराम के) सम्मुख; विटैत्तु–तनकर; अटर्त्तु–युद्ध करके; ऍतिर्न्तवर्–सामना जिन्होंने किया, वे सब; वीरन् वाळियाल्–वीर (श्रीराम) के शरों द्वारा; मुटैत्त–दुर्गन्धपूर्ण; कुरुतियिन्–रक्त के; कटलिन्–समुद्र में; मूळ्कितार्–डूब (मिट) गये। ४६४

सब मर-मिट गये। केवल वे चौदह सेनापति, उनके रथ और उनके पास रहे हथियार —ये ही बचे। अन्य सभी, जो दम्भ के साथ श्रीराम के सामने लड़ने आये थे, श्रीराम के बाणों से आहत हुए और दुर्गन्धपूर्ण रक्त-सागर में डूबकर मर गये। ४६४

शुऱ्ऱुऱ नोक्किनर् तॊडर्न्द शेनैयिल्, अऱ्ऱिल तलैयॆनु माक्कै कण्डिलर्
तॆऱ्ऱिन रॆयिऱुह डिरुहि नार्शिन, मुऱ्ऱिन रिरामनै मुडुहु तेरिनार् 465

चुऱ्ऱु उऱ नोक्कितर्–सिर घुमाकर देखा; तॊटर्न्त चेत्तैयिल्–अनुगामिनी सेना में; तलै अऱ्ऱिल ऍन्तुम्–सिर न कटे ऐसा कहने योग्य; आक्कै कण्टिलर्–शरीर नहीं देखे; चित्तम् तिरुकितार्–क्रोध से ऐंठे; ऍयिऱुकळ् तॆऱ्ऱितर्–दाँत चबाये; मुटुकु तेरितार्–तेजी से चलाये जानेवाले रथों के होकर; इरामतै मुऱ्ऱितर्–श्रीराम को घेर लिया (चौदहों सेनापतियों ने)। ४६५

सेनापतियों ने सिर घुमाकर चारों ओर देखा। अपनी सेना के किसी वीर को नहीं देख सके, जिसके शरीर का सिर कटा नहीं हो! उनके कोप का पारा चढ़ गया। दाँत पीसे। और रथ को सवेग चलाते हुए उन्होंने श्रीराम को चारों ओर से घेर लिया। ४६५

एळिरु तेरुम्वन् दिमैप्पिन् मुन्बिडैच्, चूळ्वन कणैहळिऱ् ऱुणिय नूऱिनान्
आळियु माणियुम् माळु मऱ्ऱवै, ऊळिवॆङ् गालॆऱि योङ्ग लॊत्तवे 466

वनुतु इटै चूळ्वत–पास आकर घेरनेवाले; एळ् इरु तेरुम्–(सात के दो) चौदहों रथों को; इमैप्पिन् मुन्–पलक मारने के अन्दर; कणैकळिल्–अपने बाणों से; तुणिय नूऱितात्–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न क दिया; आळियुम् आणियुम् आळुम्–चक्रों, धुर और सारथी से; अऱ्ऱु–हीन होकर; अवै–वे; ऊळि वॆम् काल् ऍऱि–भयंकर युगान्तकालीन झंझा द्वारा प्रताड़ित; ओङ्कल् ऒत्त–पर्वत-समान नष्ट हुए। ४६६

पल भर में श्रीराम ने उनके चौदहों रथों को अपने बाणों से तोड़कर चूर-चूर कर दिया। पहिये और धुर ही नहीं, सारथी भी नहीं बचे। युगान्त के झंझे से जर्जर हुए पर्वतों के समान वे रथ (नष्ट) हो गये। ४६६

अऴिन्दत्त तेरव रवनि कीण्डुह
इऴिन्दनर् वरिशिलै येन्दुत्त कैयिनर्
ऒऴिन्दिलर् शरङ्गळै युरुमि नॆरुप्पॆऴ
पॊऴिन्दनर् पॊऴिहनल् पॊडिक्कुङ् गण्णिनार् 467

तेर् अऴिन्तत्त अवर्—रथ-नष्ट हुए वे; अवनि कीण्टु उक—भूमि में दरार बनाते हुए (उतनी उग्रता से); इऴिन्तत्तर्—उतरे; वरि चिलै एन्तुत्त कैयित्तर्—बन्धनयुक्त धनु हाथ में लेकर; मिकु कतल् पॊटिक्कुम् कण्णितार्—अधिक अंगार निकालनेवाली आँखों के साथ; चरङ्कळै—शरों को; ऒऴिन्तिलर् पॊऴिन्तत्तर्—निरन्तर चलाये। ४६७

रथों को नष्ट-भ्रष्ट पाकर वे सेनापति जल्दी-जल्दी रथों पर से ऐसे कूदे कि भूमि पर दरार पड़ गयी! धनुर्धर उन्होंने आँखों से अंगार उगलते हुए श्रीराम पर निरन्तर बाणवर्षा की। ४६७

नूऱिय शरमॆला नुऱुङ्ग वाळियाल्
ईऱुशॆय् दवर्शिलै यॆळ्ळी रॆळ्ळैयुम्
आऱिनो डाऱुमो रिरण्डु मम्बिनाल्
कूऱुशॆय् दमर्त्तॊऴिर् कीदिप्पै नीक्किनान् 468

चरम् ऎलाम्—सभी बाण; नूऱिय नुऱुङ्क—मिटकर चूर हुए; वाळियाल् ईऱु चॆय्तु—ऐसा अपने बाणों द्वारा मिटाकर; अवर् चिलै एऴीरु एऴैयुम्—उनके चौदहों चापों को; आऱिन् ओटु आऱुम् ओर् इरण्टुम्—छः छः और दो (= चौदह); अम्पिताल्—बाणों से; कूऱु चॆय्तु—खण्ड-खण्ड करके; अमर् तॊऴिल् कीतिप्पै—उनके युद्ध-कर्म की भयंकरता को; नीक्किनान्—दूर किया (श्रीराम ने)। ४६८

श्रीराम ने न केवल उन बाणों को नहीं मिटाया बल्कि उनके चौदहों चापों के भी चौदह बाण चलाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उन वीरों के युद्धोत्साह को और युद्ध की भयंकरता को दूर कर दिया। ४६८

विल्लिऴन् दनैवरुम् वॆहुळि मीक्कॊळक्
कल्लुयर् नॆडुवरै कडिदि नॆन्दिनार्
ऒल्लैयि नुरुत्तुयर् विशुम्बि नोङ्गिनिन्
ऱॆल्लैयिल् पॊऱियुह वॆऱिदन् मेयिनार् 469

अतैवरुम्—वे सब; विल् इऴन्तु—चाप खोकर; वॆकुळि मी कॊळ—कोप के उमड़ने से; कल् उयर् नॆटु वरै—पत्थर के बड़े पर्वतों को; कटितिन् एन्तितार्—वेग के साथ उठाकर; ऒल्लैयिन्—जल्दी; उरुत्तु—कोप करके; उयर् विचुम्पिन् ओङ्कि निन्ऱु—आकाश में ऊपर स्थित होकर; ऎल्लैयिल् पॊऱि उक—अगणित अंगार छितराते हुए; ऎऱितल् मेयिनार्—फेंकने लगे। ४६९

उन सेनापतियों को धनुष-विहीन होने से अपार क्रोध हुआ। वे पत्थर के बड़े पर्वतों को उठा-उठाकर ऊपर आकाश में खड़े होकर श्रीराम पर फेंकने लगे। उनकी गति इतनी तीव्र थी कि उनसे अंगार निकले और फैले। ४६९

कलैहळिन् परुङ्गडल् कडन्द विल्लित्तान्
इलैहॉळ्वॅम् बहळिये ळिरण्डु वाङ्गित्तान्
कॉलैहॉळ्वॅञ् जिलैयॊडु पुरुवङ् गोट्टित्तान्
मलैहळुन् दलैहळुम् विळुन्द मण्णिले 470

कलैकळिन् पॅरुम् कटल्–(६४) कलाओं के बड़े सागरों को; कटन्त–जिन्होंने पार किया था (निपुण); विल्लित्तान्–उन कोदण्डपाणी ने; इलै कॉळ्–पत्र-सम फल वाले; वॅम् पकळि–भयंकर अस्त्र; एळ् इरण्टु–सात के दो; वाङ्कित्तान्–लेकर; कॉलै कॉळ् वॅम् चिलै ओटु–मारक धनुष और; पुरुवम्–भौंहों को; कोट्टित्तान्–झुकाया (कुंचित किया); मलैकळुम् तलैकळुम्–पर्वत और सिर; मण्णिले विळुन्त–भूमि पर गिर गये। ४७०

श्रीराम चौंसठ कलाओं के पारंगत धनुर्धर थे। उन्होंने चौदह पत्राकार सिर वाले बाण लिये। उन भयंकर बाणों को मारक धनु पर रखा। धनु को झुकाया जब उनकी भौंहें भी झुकीं! उसके फलस्वरूप पर्वत और सेनापतियों के सिर एक साथ भूमि पर गिर गये। ४७०

पडैत्तलै वीरर्हळ् पडलुम् बल्पडै
पुडैत्तडर्त्त् तार्त्तॅरि पुहैयुङ् गण्णित्तार्
किडैत्तन्न ररक्कर्हळ् कीळु मेलुमॊय्त्
तडैत्तन्नर् तिशैहळै यमर रञ्जित्तार् 471

पटै तलै वीरर्कळ्–सेनापति वीरों के; पटलुम्–हत हो जाने पर; अरक्कर्कळ्–(बचे रहे) राक्षस; पल् पटै पुटैत्तु–अनेक हथियारों से प्रहार करके; आर्त्तु–नारे लगाकर; ऍरि पुकैयुम् कण्णित्तार्–आग और धुएँ सहित आँखों के साथ; किटैत्तन्नर्–(श्रीराम के) समीप आकर; तिचैकळै–चारों दिशाओं में; कीळुम् मेलुम् मॊय्त्तु–नीचे और ऊपर भीड़ लगाकर; अटैत्तन्नर्–भर गए; अमरर् अञ्चित्तार्–देव डरे। ४७१

सेनापति वीर हत हो गये तो अन्य बचे हुए राक्षस क्रोध करके श्रीराम के समीप पिल पड़े और सभी दिशाओं में सर्वत्र भर गये। उनकी आँखों से आग और धुआँ-सा निकल रहा था। वे विविध प्रकार के अनेक हथियार चलाने लगे। उनकी संख्या, उनका क्रोध और युद्ध देखकर देव भी डर गये। ४७१

मुळङ्गिन पॅरुम्बणै मूरि माल्हरि
मुळङ्गिन वरिशिलै मुडुहु नाणॊलि

मुऴङ्गिऩ शङ्गॊलि पुरवि मॊय्त्तुर्
मुऴङ्गिऩ वरक्कर्दम् मुहिलि ऩार्प्परो 472

पॆरुम् पणै—बड़े-बड़े मारू ढोल; मूरि माल् करि—बड़े और बलवान करी; मुऴङ्कित्त—नाद कर उठे; वरि चिलै—बन्धनयुक्त धनुओं की; मुट्कु नाण् ऑलि—कठोर प्रत्यंचा की टंकार; मुऴङ्कित्त—उठी; चङ्कु ऑलि—शंखनाद मुऴङ्कित्त—हुए; पुरवि मॊय्त्तु उऱ—अश्व ठस मिलकर आये; अरक्कर् तम् मुकिलिऩ् आर्प्पु—राक्षसों का मेघगर्जन; मुऴङ्कित्त—उच्च स्वर में उठा। ४७२

बड़े ढोलों का नाद, गजों की चिंघाड़, भयंकर बलवान चापों की टंकार, शंखध्वनि आदि तुमुल नाद उठा। अश्व ठस जुट आये और राक्षसों का मेघ-सा गर्जन उच्च रहा। ४७२

वॆम्बडै निरुदर् वीश विण्णिडै मिडैन्द वीरऩ्
अम्बिडै यऱुक्कच् चिन्दि यऱ्ऱऩ विऴुमॆऩ् ऱञ्जि
उम्बरु मिरियल् पोऩा रुलहॆला मुलैन्दु शाय्न्द
कम्बमि ऱिशैयि निऩ्ऱ कळिऱुकण् णिमैत्त वऩ्ऱे 473

निरुतर्—राक्षसों के; वीच—फेंकने से; वॆम् पटै—(वे) भयंकर हथियार; विण् इटै मिटैन्त—जो आकाश में घने रूप से भरे; वीरऩ्—वीर श्रीराम के; अम्पु इटै अऱुक्क—शरों के मध्य घुसकर काटने से; चिन्ति अऱ्ऱऩ—छितरकर बेकार हुए; विऴुम्—वे गिरेंगे; ऎऩ्ऱु अञ्चि—ऐसा डरकर; उम्परुम्—देव; इरियल्—अलग; पोऩार्—हट गये; उलकु ऎलाम्—सारे लोक; उलैन्तु—अस्त-व्यस्त होकर; चाय्न्त—अस्थिर हुए; कम्पम् इल्—अचल; तिचैयिल् निऩ्ऱ—दिशाओं में खड़े रहे; कळिऱुम्—गजों ने भी; कण् इमैत्त—आँखें मूंद लीं। ४७३

राक्षसों ने जो भयंकर हथियार फेंके, वे आकाश में घने रूप से भरे आये। पर वीर श्रीराम ने उनको बीच में ही खण्डित कर बेकार करा दिया। 'वे बेकार खण्ड हम पर गिरेंगे' —इस डर से देव भी हटकर भाग गये। सारे लोकों के वासी भी अस्तव्यस्त होकर शिथिल पड़ गये। अचल रहनेवाले दिग्गजों ने भी डर से अपनी आँखें मूंद लीं। ४७३

❀ अत्तलैत् तानैयऩ् नळवि लाऱ्ऱलऩ्
मुत्तलैक् कुरिशिल्बॊन् मुडियऩ् मुक्कणाऩ्
कैत्तलैच् चूलमे यऩैय काट्चियाऩ्
वॆत्तलैप् पहऴियान् मऴैशॆय् विल्लिऩाऩ् 474

अ तलै—तब; अळविल् तातैयऩ्—अपार सेना वाले; आऱ्ऱलऩ्—शक्तिमान; पॊऩ् मुटियऩ्—स्वर्णकिरीटधारी; मुत्तलै कुरिचिल्—तीन सिरों का राजा त्रिशिरा; मुक्कणाऩ्—त्रिनेत्र (शिवजी) के; कै तलै—हाथ में रहनेवाले; चूलमे अतैय—त्रिशूल की ही तरह; काट्चियाऩ्—दृश्यमान; वै तलै पकऴियाऩ्—तीक्ष्ण सिर (फल) वाले बाणों का रखनेवाला; मऴै चॆय्—(शर-) वर्षक; विल्लिऩाऩ्—धनुर्धर। ४७४

तब त्रिशिरा अपनी सेना के साथ बढ़ आया। कैसा था वह? अपार सेना का स्वामी, अगाध शक्ति का नाथ; स्वर्णकिरीट-धारी और तीन सिरों वाला था वह। वह त्रिनेत्र शिवजी के हाथ के त्रिशूल के समान दृश्यमान था। उसके पास तीक्ष्णमुखी भयंकर शर थे। उसका शरासन भयंकर रूप से शरवर्षक था। ४७४

अऩ्ऩव नडुवुऱ ऊऴि याऴियी
दॆऩ्ऩवन् दॆङ्गणु मिरैत्त शेऩैयुळ्
तऩ्ऩिहर् वीरनुन् दमियन् विल्लिऩऩ्
तुऩ्ऩिरु ळिडैयदोर् विळक्किऩ् ऱोऩ्ऱिऩाऩ् 475

अऩ्ऩवऩ्–वह; नट्टुवु उऱ–मध्य में रहा; ऊऴि आऴि–युगान्त समुद्र; ईतु ऍऩ्ऩ–यह है, ऐसा; वन्तु–आकर; ऍङ्कणुम् इरैत्त–सब जगह शोर के साथ आ गई; चेऩै उळ्–उस सेना के अन्दर; तऩ् निकर् वीरनुम्–स्वोपम वीर भी; तमियऩ् विल्लिऩऩ्–अकेले, धनु के साथ; तुऩ् इरुळ् इटै–घने अन्धकार के मध्य; ओर् विळक्किल्–एक दीप के समान; तोऩ्ऱिऩाऩ्–शोभित रहे। ४७५

उसको मध्य में रखते हुए उसकी अपार सेना युगान्तकालीन समुद्र के समान उमड़ी आयी। सब स्थानों पर उसका विस्तार था। उस सेना के मध्य श्रीराम, जिनकी तुलना का वीर और कोई नहीं था, हाथ में धनुष लिये अकेले स्थित थे। वे घने अंधकार के मध्य रहनेवाले दीप के समान शोभे। ४७५

ओङ्गिय वाळिन नुरुमि नार्प्पिऩऩ्
वीङ्गिय वेहत्तन् वॆय्य कण्णिऩऩ्
आङ्गव नणिक्कॆदि रणिह ळाहनेर्
ताङ्गिन ऩिरामऩुज् जरत्तिन् ऱाऩैयाल् 476

ओङ्किय वाळिऩऩ्–उठाई हुई तलवार वाले; उरुमिऩ् आर्प्पिऩऩ्–वज्रनिनादी; वीङ्किय वेकत्तऩ्–बहुत वेगवान; वॆय्य कण्णिऩऩ्–भयंकर आँखों वाला; आङ्कु अवऩ्–वहाँ (जो आया) उस (त्रिशिरा) को; अणिक्कु–सेना भागों के; नेर्–सामने; अणिकळ् आक–सेनाओं के रूप में; चरत्तिऩ् ताऩैयाल्–शरों की सेनाओं (पंक्तियों) से; नेर् ताङ्किऩऩ्–श्रीराम ने सामना किया। ४७६

त्रिशिरा तलवार उठाये हुए तुमुल नाद के साथ नारे लगाते हुए आया। वह बड़ा वेगवान था। उसकी आँखें क्रूर और भयंकर थीं। उसकी सेना के सामने श्रीराम खड़े रहे। श्रीराम ने उसकी सेना के भागों के सामने अपने शरों की पंक्तियों को ही पलटनों के रूप में स्थापित किया और युद्ध किया। ४७६

ताळिडै यर्र्रन तलैयु मर्र्रन, तोळिडै यर्र्रन तौडैह ळर्र्रन
वाळिडै यर्र्रन मळुवु मर्र्रन, कोळिडै यर्र्रन कुडैह ळर्र्रन 477

ताळ् इटै अर्र्रन–(राक्षसों के) पैर बीच से कटे; तलैयुम् अर्र्रन–सिर अलग हुए; तोळ् इटै अर्र्रन–भुजाएँ बीच से कटीं; तौटैकळ् अर्र्रन–ऊरु कटे; वाळ् इटै अर्र्रन–तलवारें नष्ट हुईं; मळुवुम् अर्र्रन–परशु भी मिटे; कोळ् इटै अर्र्रन–उनका बल भी मध्य में बेकार हुआ; कुटैयुम् अर्र्रन–छत्र भी छिन्न हुए। ४७७

राक्षसों का क्या हाल हुआ ? पैर कटे, सिर लुढ़के, हाथ कटे और ऊरु खण्डित हुए। तलवारें कटीं, परशु मिटे और छत्र नष्ट हुए। राक्षसों का बल भी बेकार हुआ। ४७७

कौडियौडु कौडिञ्जिर्र्रप् पुरविक् कूट्टर्र्रप्
पडियौडु पडिन्दन्न परुदित् तेर्प्पणै
नैडियवॆङ् गडहरि पुरण्ड नैर्र्रिवीळ्
इडियौडु मिडिन्दुवीळ् शिहर मॆन्नवे 478

परुति तेर् पणै–चक्रव्यूह में रहे रथों के समूह; कौटि ओटु–ध्वजाओं के साथ; कौटिञ्च–'कौडिञ्जु' (रथी के स्थान के सामने रहनेवाला कमल के आकार का वह अवलम्ब, जिस पर हाथ रखकर आराम लिया जाता है); इऱ–टूटे, इसलिए; पुरवि कूट्टु अऱ–अश्व अलग हुए और मिटे, इसलिए; पटि ओटु पटिन्तन–भूमि पर गिरकर नष्ट हुए; नैर्र्रि वीळ्–अपने ऊपर गिरे; इटि ओटु–वज्र के साथ; इटिन्तु वीळ्–टूटकर गिरनेवाले; चिकरम् ॲन्नवे–पर्वतशिखरों के समान; नैटिय वॆम् कट करि–बड़े, भयंकर और मत्त गज; पुरण्ट–लोट गये। ४७८

चक्रव्यूह में रथ थे। उनकी ध्वजाएँ कटीं। उनके अन्दर रहने वाले कमलाकार अवलम्ब (जिनका रथी अपनी थकन मिटाने के लिए सहारा लिया करते हैं) खण्ड हुए। अश्व भी मरकर अलग हो गये। फलस्वरूप रथ ही भूमि पर सिर के बल गिरे और टूट गये। बड़े-बड़े भयंकर मत्तगज भी वज्राहत पर्वत-शिखरों के समान, जो वज्र के साथ ही नीचे गिरते हैं, नीचे गिरकर लुढ़क गये। ४७८

अर्र्रन शिरमॆन्न वर्रिद तेर्र्रलर्
कौर्र्रवॆञ् जिलैच्चरङ् गोत्तु वाङ्गुवार्
इर्र्रिल ताळॆन वॆळुन्दु विण्णितैप्
पर्र्रिनर् मळैयॆन्नप् पडैव ळङ्गुवार् 479

चिरम् अर्र्रन ॲन्न–सिर कट गये, यह बात; अर्रितल् तेर्र्रलर्–(जो) समझ न सके, वे; कौर्र्र वॆम् चिलै–बलवान भयंकर धनुषों में; चरम् कोत्तु वाङ्कुवार्–शर-संधान करते थे; ताळ् इर्र्रिल–पैरों को न कटा; ॲन–समझकर; ॲळुन्तु विण्णितै पर्र्रितर्–उठकर आकाश में खड़े होकर; मळै ॲन–वर्षा के समान; पटै वळङ्कुवार्–हथियार फेंके (कुछ राक्षसों ने)। ४७९

राक्षसों की विचित्र शक्ति और श्रीराम के शरों की तीव्रगति की विशेषता देखिए। सिर कटकर गिर गये तो भी राक्षस धनुष पर शर-संधान कर रहे हैं, मानो उनको विदित ही नहीं हुआ हो कि उनके सिर कट गये। कुछ राक्षसों के पैर कट गए; पर वे बिना उसकी सुध लिये ही आकाश में उछल उठे और वहाँ से वर्षा के समान हथियार बरसा रहे हैं! ।४७९

केडहत् तडक्कैय किरियिन् ऱोऱ्ऱत्त, आडहक् कवशत्त कवन्द माडुव
पाडहत् तरम्बैयर् मरुळप् पल्विद, नाडहत् तॊऴिलन नान्द हत्तन 480

कवन्तम् आटुव—कबन्ध (सिर कटे रुण्ड) जो नाच रहे थे; केटक तट कैय—ढाल सहित विशाल हाथों वाले थे; किरियिन् तोऱ्ऱत्त—पर्वत-सम आकार के थे; आटक कवचत्त—हाटक-कवच वाले थे; नान्तकत्तन—तलवारधारी थे; पाटकत्तु अरम्पैयर्—पाटक (पैंजनी ?) पहनी हुई अप्सराओं को; मरुळ—विस्मित करते हुए; पल् वित—विविध अनेक; नाटक तॊऴिलत्त—नृत्य-कर्म में लीन थे। ४८०

युद्धभूमि में कबन्ध ऐसे नाच रहे हैं कि पैंजनीविभूषित अप्सराएँ भी उनके विविध नाच देखकर विस्मय से हार मान लेती हैं! गिरि के समान उन कबन्धों के एक हाथ में ढाल और दूसरे हाथ में तलवार है। वे हाटक-कवच-धारी हैं। ४८०

कवरिवॆण् कुडैयॆनु नुरैय कैम्मलैच्, चुवरिन कवन्दमाऴ् शुऴिय तण्डुऱैप्
पवरिनप् पडुमणि कुविक्कुम् बण्णैय, उवरियैप् पुदुक्किन वुदिर वाऱरो 481

उतिर आऱु—रक्त-नदियाँ; कवरि वॆण् कुटै ऍतुम्—चँवर और छत्र रूपी; नुरैय—झागों वाली थीं; कैम् मलै चुवरिन—गज रूपी तटों की; कवन्तम् आऴ् चुऴिय—कबन्ध जिनमें डूब जायँ, ऐसे आवर्त वाली; तण् तुऱै—शीतल घाटों की; पवर् इन—विविध प्रकार के समूहों के; पटु मणि—दिखनेवाले रत्न; कुविक्कुम्—जिनमें आकर ढेरों में पाये जाते हैं, उन; पणॆणय—समीपवर्ती खेतों वाली; उवरियै पुतुक्किन—समुद्र को नया रंग-रूप देनेवाली हैं। ४८१

राक्षसों के मृत-शरीरों से जो रक्त बहा, वह नदियाँ बन गया। उन नदियों में चामर और श्वेत छत्र झाग के स्थान में थे। गज तट बने। आवर्त ऐसे थे जिनमें कबन्ध डूब जाते थे। शीतल घाट थे। उस नदी द्वारा अनेक रत्न बहते आये, जो पास के खेतों में जा पड़े रहे। उन नदियों ने समुद्र को नया रंग-रूप दिला दिया। ४८१

चण्डवॆङ् गडुङ्गणै तडियत् ताऴ्जिल
तिण्डिऱल् वळैयॆयिऱ् ऱरक्कर् तेवराय्
वण्डुऴल् पुरिहुऴल् मडन्दै मारोडुम्
कण्डनर् तम्मुडैक् कवन्द नाडहम् 482

चण्ट वॅम् कटुम् कणै–प्रचण्ड और अति कठोर (श्रीराम के) बाणों ने; ताम् तटिय–प्रहार कर हत किया, इसलिए; चिल–कुछ; तिण् तिऱल्–अति बली; वळै ऍयिऱ्ऱु अरक्कर–वक्रदाँत वाले राक्षस; तेवराय्–देव बनकर; वण्टु उळल्–भ्रमरावृत; पुरि कुळल्–वेणी वाले केशों की; मटन्तैमार् ओटुम्–(देव-) स्त्रियों के साथ; तम् उटै कवन्त–अपने ही कबन्धों के; नाटकम्–नृत्य; कण्टनर्–देखकर आनन्दित हो रहे थे। ४८२

श्रीराम के शरों का यह गुण था कि उनसे आहत शत्रु वीर-स्वर्ग पहुँच जाया करते थे। यहाँ भी उनके प्रचण्ड बाणों से आहत वक्रदाँतों वाले राक्षस स्वर्ग के देव बन गये। वे वहाँ उन अप्सराओं के साथ, जिनकी वेणी वाले केश पर भ्रमर मँड़रा रहे थे, युद्धभूमि देखने लगे। अपने ही कबन्धों को नाचते देखकर उन्हें मजा आया। ४८२

आय्वळै महळिरो डमर रीट्टत्तर्, तूयवॅङ् गडुङ्गणै तुणित्त तङ्गडोळ्
पेयॊरु तलैहॊळप् पिणङ्गि वाय्विडा, नायॊरु तलैहॊळ नहैयुऱ्ऱार्शिलर् 483

आय् वळै मकळिरोटु–चुने हुए कंकणधारिणी अप्सराओं के साथ; अमरर् ईट्टत्तार्–देवगण बने (जो थे, वे) राक्षस; तूय वॅम् कटुम् कणै–पवित्र और भयंकर (श्रीराम के) अस्त्रों से; तुणित्त–कटे; तङ्कळ् तोळ्–अपने कन्धों को; ऒरु तलै पेय् कॊळ–एक ओर प्रेत के खींचते; पिणङ्कि–उससे झगड़कर; वाय् विटा–अपने मुख से न जाने देते हुए; नाय्–कुत्ते को; ऒरु तलै कॊळ–दूसरी ओर छीनते; नकैयुऱ्ऱार्–देखकर हँस रहे थे। ४८३

चुने हुए कंकण-धारिणी अप्सराओं के साथ वे यह भी देख रहे थे कि श्रीराम के पवित्र और प्रचण्ड बाणों से कटे उनके हाथों को कुत्तों ने अपने मुख में ग्रस लिया है; और एक ओर प्रेत उनको छीनने का प्रयास करते हैं और उस ओर कुत्ते अपने मुख से छीनने न देते हुए खींच लेने के प्रयास में लगे हैं। यह देखकर उन्हें मनोरंजन हुआ। ४८३

तॆरिहणै मूळ्हलिऱ् ऱिरन्द मार्बिनर्
इरुविनै कडन्दुपो युम्ब रॆय्दिनार्
निरुदर्दम् बॆरुम्बडै नॆडिदु निन्ऱवन्
ऒरुवनॆन् ऱुळ्ळत्ति नुलैवुऱ् ऱार्शिलर् 484

तॆरि कणै–चुने हुए (श्रेष्ठ) शरों के; मूळ्कलिल्–घुस जाने से; तिऱन्त मार्पिनर् चिलर्–विदीर्ण छाती वाले कुछ राक्षस; इरु वितै कटन्तु–दोनों कर्मों का निराकरण करके; पोय् उम्पर् ऍय्तिनार्–स्वर्ग जो जा पहुँचे थे; निरुतर् तम् पॆरुम् पटै–राक्षसों की सेना; नॆटितु–अतिविशाल है; निन्ऱवन्–(सामना करके) स्थित रहनेवाले; ऒरुवन्–एकाकी हैं; ऍन्ऱु–सोचकर; उळ्ळत्तिन् उलैवु उऱ्ऱार्–मन में चिंतित हुए। ४८४

श्रीराम के उत्तम बाणों के राक्षसों के शरीर के आर-पार होने से उनकी छातियाँ विदीर्ण हो गयीं। वे पाप-पुण्य दोनों कर्मों का निराकरण हो जाने से स्वर्ग पहुँच गये। वहीं से वे देखते हैं कि युद्धभूमि की स्थिति बड़ी विषम है। राक्षसों की सेना अत्यधिक विशाल है और उनके सम्मुख श्रीराम अकेले खड़े हैं। वे श्रीराम से सहानुभूति करके दुखी हुए। ४८४

कैक्कळि इत्तैयवऩ् पहळि कण्डहर्
मॅय्क्कुलम् वेरॉडुन् दुडैत्तु वीऴ्त्तिऩ
मैक्करु मत्तत्तौरु वञ्जऩ् माण्बिलऩ्
पॉय्क्करि कूऱिय कॉडुञ्जॉऱ् पोलवे 485

मै करु मत्तत्तु—अंजन-सम काले मन के; ओरु वञ्चऩ्—एक वंचक; माण्पु इलऩ्—गुण-हीन मनुष्य को; पॉय् करि—झूठी गवाही (देते हुए); कूऱिय कॉटुम् चॉल्—जो कहा, उस घातक वचन; पॉलवे—के समान; कै कळिऱु अत्तैयवऩ्—सूँड़ वाला जानवर (गज) सम श्रीराम के; पकळि—शरों ने; कण्टकर्—लोककंटक; मॅय्कुलम्—राक्षसों के शरीरों की राशि को; वेर् ओटुम्—समूल; तुटैत्तु वीऴ्त्तिऩ—मार-मिटाया। ४८५

सूँड़ वाले जानवर करी के समान दर्शनीय श्रीराम के बाणों ने लोक-कंटक राक्षसों के शरीरों को समूल मिटा दिया। उनका क्षय होना ऐसा था जैसे अंजन के समान काले मन वाले, कपटी और नीच प्रकृति के आदमी के झूठी गवाही के वचन कहने पर उसका नाश हो जाता है। ४८५

अञ्जुदऱ् कुरुपहै यरुत्त नीदियर्
तञ्जॅऩत् तऩ्मय माक्कुन् दऩ्मैपोल्
वञ्जहत् तरक्करै वळैत्तु वळ्ळराऩ्
शॅञ्जरत् तूय्मैयाऱ् ऱेव राक्किऩाऩ् 486

वळ्ळल्—उदार प्रभु श्रीराम ने; अञ्चुतऱ्कु उरु—भयावह; पकै अरुत्त—अंतश्शत्रु के नाशक; नीतियर्—नीतिमान ज्ञानियों से; तञ्चु ॲऩ—शरण कहने पर; तऩ् मयम् आक्कुम् तऩ्मै पोल्—(ज्ञानी) अपने ही समान (शरणागतों को) बना लेते हैं, उसी प्रकार; वञ्चकत्तु अरक्करै—कपटी राक्षसों को; वळैत्तु—लपेट में लेकर; चॅम् चर तूय्मैयाल्—श्रेष्ठ शरों की पवित्रता द्वारा; तेवर् आक्किताऩ्—देव बना दिया। ४८६

सबको भयातुर करनेवाले कामादि दुर्गुण रूपी शत्रुओं को मिटाकर रहनेवाले ज्ञानियों के पास कोई जाकर यह कहे कि मैं आपकी शरण में आया हूँ, तो वे उसे अपने समान बना लेते हैं। वैसे ही श्रीराम ने उन कपटी राक्षसों को अपने शरों के दायरे के अन्दर बलात लाकर उन्हें मारा और उन्हें देव बना दिया। ४८६

वलङ्गॊळ्पोर् मानिडन् वलिन्दु कॊन्ऱमै
अलङ्गल्वे लिरावणऱ् करिविप् पामॆनच्
चलङ्गॊळ्पो ररक्करद मुरुक्क डाङ्गिन
इलङ्गैयि लुय्त्तदक् कुरुदि याऱरो 487

वलम् कॊळ्–बलशाली; पोर् मानिटन्–योद्धा, एक मनुष्य का; वलिन्तु कॊन्ऱमै–(अनेक राक्षसों को) बलात मारना; अलङ्कल्–मालाधारी; वेल्–भाला वाले; इरावणऱ्कु–रावण को; अऱिविप्पाम् ऎन–जाकर सुनायेंगे, सोचकर; कुरुति आऱु–रक्तनदी ने; चलम् कॊळ्–आवेग के साथ; पोर्–लड़नेवाले; अरक्कर् तम् उरुक्कळ्–राक्षसों के शरीरों को; ताङ्कित–वहा ले जाकर; इलङ्कैयिन्–लंका में; उय्त्ततु–पहुँचाया। ४८७

प्राण या जीव देव बन गये। पर राक्षसों के मृत शरीरों का क्या हुआ? रक्त की नदी उन्हें वहा ले गयी और वे लाशें लंका पहुँच गयीं। वे, मानो माला से भूषित और भालाधारी रावण को यह सन्देशा देने चलीं कि एक बलवान मनुष्य ने ही इन राक्षसों को बलात मारा था! । ४८७

शूऴ्न्दुयर् नॆडुम्बडै पहऴि शुऱ्ऱुऱप्
पोऴ्न्दुयिर् कुडित्तलिर् पुरळप् पॊङ्गिनान्
ताऴ्न्दिलन् मुत्तलैत् तलैवन् शोरियिन्
आऴ्न्ददे रम्बरत् तोट्टि यार्क्किन्ऱान् 488

चूऴ्न्तु उयर्–अपने को घेरकर बढ़ी; नॆटुम् पटै–विशाल सेना (के वीरों) के; पकऴि–श्रीराम के बाणों ने; चुऱ्ऱु उऱ–चारों ओर से; पोऴ्न्तु–चीरकर; उयिर् कुटित्तलिल्–प्राण हर लिये; पुरळ–वे लोट गये, इसलिए; मुत्तलै तलैवन्–त्रिशिरा नामक सेनापति; पॊङ्किनान्–उबल पड़ा; ताऴ्न्तिलन्–विलम्ब नहीं किया; चोरियिन् आऴ्न्त तेर्–रक्त में मग्न अपने रथ को; अम्परत्तु ओट्टि–अन्तरिक्ष में चलाते हुए; आर्क्किन्ऱान्–गरज उठा। ४८८

श्रीराम के बाणों ने उनको घेरे आये सभी राक्षसों को लपेटकर उनको मार दिया। वे सब लोट गये। त्रिशिरा नामक तीन सिर वाले राक्षस ने यह देखा और वह बौखला गया। बिना विलम्ब के उसने रक्त में मग्न रहे अपने रथ को ऊपर आकाश में चलाया। उसने भीषण गर्जन किया। ४८८

ऊन्ऱिय तेरिन नुरुमिन् वॆङ्गणै
वान्ऱॊडर् मऴैयॆन वाय्मै यावर्क्कुम्
शान्ऱन निन्ऱवत् तरुम मन्नवन्
तोन्ऱऱन् ऱिरुवुरु मऱैयत् तूविनान् 489

ऊन्ऱिय तेरितन्–सुस्थापित रथ वाले ने; उरुमित्–वज्र के समान; वॆम् कणै–भयंकर अस्त्र; वान् तॊटर् मऴै ऎन–मेघ-वर्षित निरन्तर धारों के समान; वाय्मै

यावर्क्कुम्–सभी सत्यप्रिय लोगों के लिए; चान्ऱ् ऑन निन्ऱ–दृष्टान्त के समान विद्यमान; तरुमम् अन्नवन्–धर्म-मूर्ति; तोन्ऱल् तन्–(दशरथ के) पुत्र श्रीराम के; तिरु उरु–श्रीशरीर को; मऱैय–आवृत करते हुए; तूविनान्–बरसाये। ४८६

अपने रथ को अन्तरिक्ष में स्थिर रूप से खड़ा करके उसने वज्र के समान शरों को मेघ-वर्षा की धारों के समान निरन्तर चलाया। उन शरों में सत्यवादियों के दृष्टान्तस्वरूप और धर्मावतार दशरथ के पुत्र श्रीराम का दिव्य शरीर छिप गया। ४८९

❀ तूविय शरमॅलान् दुणिय वङ्गणै
एविन् निरामनु मेवि येऴिरु
पूवियल् वाळियाऱ् पॊलङ्गॊ डेरळित्
ताविवॅम् बाहनै यळित्तु माऱ्ऱिनान् 490

तूविय चरम् ऍलाम्–वर्षित सभी अस्त्र; तुणिय–खण्डित करते हुए; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; वॅम् कणै एवितन्–भयंकर शर चलाये; एवि–चलाकर; एऴ् इरु–(और) चौदह; पू इयल् वाळियाल्–तीक्ष्ण शरों से; पॊलन् कॊऴ् तेर्–स्वर्ण-निर्मित रथ को; अळित्तु–नष्ट करके; वॅम् पाकनै–पराक्रमी सारथी को; आवि अळित्तु–जान से मारकर; माऱ्ऱिनान्–युद्ध की स्थिति में परिवर्तन पैदा कर लिया। ४९०

तब श्रीराम ने बाण चलाकर उन सभी तीरों को काट दिया। फिर उन्होंने चौदह अतितीक्ष्ण तीर चलाये और उसके रथ को ध्वस्त कर दिया और सारथी को भी मार दिया। तब युद्ध का रवैया ही बदल गया। ४९०

❀ अन्ऱियु मक्कणत् तमर रार्त्तॅळप्
पॊन्ऱॆरि वडिम्बुडैप् पॊरुविल् वाळियाल्
वन्ऱॊळिऱ् ऱीयवन् महुड मात्तलै
ऒन्ऱॊळित् तिरण्डैयु मुरुट्टि नानरो 491

अन्ऱियुम्–उसके अलावा; अ क्कणत्तु–उसी क्षण में; अमरर् आर्त्तु ऍऴ–देवों को हर्षरव करने देते हुए; पॊन् तॆरि–सुनहले; वटिम्पु उटै–किनारों वाले; पॊरुवु इल् वाळियाल्–अनुपम अस्त्रों से; वन् तॊऴिल् तीयवन्–नृशंसकारी क्रूर के; मकुटम् मा तलै–किरीटधारी (तीन) बड़े सिरों में; ऒन्ऱु ऒऴित्तु–एक को छोड़कर; इरण्टैयुम्–अन्य दोनों को; उरुट्टिनान्–लुढ़काया। ४९१

श्रीराम वहीं तक नहीं रुके। उसी क्षण उन्होंने अपने रुक्मपंख अस्त्र चलाकर उस नृशंस पापी के किरीटधारी बड़े सिरों में एक को छोड़कर बाकी दोनों को काट दिया। वे सिर भूमि पर गिरकर लोटने लगे। इसको देखकर देवगण सन्तोष का नाद कर उठे। ४९१

❀ तेरऴिन् दव्वऴित् तिरिशि रावॅनुम्
पेरऴिन् दॅन्ऩिनु मऱम्बि ऴैत्तिलन्
नारिऴिन् दुमिऴ्शिलै वान नाट्टुऴिक्
कारिऴिन् दालॅनक् कणैहळ् शिन्दिनान् 492

अ वऴि–उस स्थान में; तेर् अऴिन्तु–रथ खो गया; तिरिचिरा–त्रिशिरा; ॲनुम् पेर्–का नाम; अऴिन्तॅन्ऩितुम्–मिट (निरर्थक हो) गया तो भी; मऱम् पिऴैत्तिलन्–वीरता से वंचित न होकर; चिलै–धनु से; नार् इऴिन्तु उमिऴ्–प्रत्यंचा द्वारा प्रेषित; कणैकळ्–शरों को; वान नाट्टु उऴि–आकाशलोक से; कार् इऴिन्ताल् ॲन्न–मेघ (पानी) गिरता हो जैसे; चिन्तिनान्–चलाया। ४९२

अब त्रिशिरा त्रिशिरा नहीं रहा। दो सिर खोकर उसने अपना नाम ही खो दिया। उसका रथ भी बेकार हो गया। तो भी उसने अपनी वीरता और साहस नहीं छोड़ा, पर अपने धनुष के डोरे खींचकर, व्योमनगर से मेघ-वर्षा गिरती हो, ऐसा अस्त्र निरन्तर छोड़े। ४९२

❀ एऱ्ऱिय तुदलिन तिरुण्ड कार्मऴै
तोऱ्ऱिय विल्लोडुन् दॊडर मीमिशैक्
काऱ्ऱिडै यऴित्तॅनक् कार्मु हत्तॅयुम्
माऱ्ऱरुम् बहऴिया लऱुत्तु माऱ्ऱिनान् 493

एऱ्ऱिय नुतलिनन्–चढ़ी हुई भौंहों के भाल वाले (श्रीराम) ने; इरुण्ट कार्–काले मेघ ने; मऴै तोऱ्ऱिय–वर्षा कराई जैसे; विल् ओटुम्–अपने धनु से; तॊटर–शर चलाकर युद्ध किया; मी मिचै–आकाश में; काऱ्ऱु इटै अऴित्तु ॲन्न–वायु ने प्रवेश कर मिटा दिया जैसे; कार्मुकत्तॅयुम्–त्रिशिरा के धनु को भी; माऱ्ऱु अरुम् पकऴियाल्–अलंघ्य बाणों से; अऱुत्तु माऱ्ऱिनान्–काटकर ध्वस्त कर दिया। ४९३

श्रीराम की भी त्योरियाँ चढ़ीं। उन्होंने भी काले मेघ के समान जो वर्षा कराता है, अपने धनुप के साथ युद्ध किया और अपने अमोघ और अवार्य अस्त्रों से त्रिशिरा के धनुप को काट दिया। धनु बिल्कुल नष्ट हो गया। ४९३

❀ विल्लि ऴन्दन नॅन्ऩिनुम् विळङ्गुवाण् मुहत्तिन्
ॲल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् वॅङ्गद मिडिक्कुम्
शॊल्लि ऴन्दिलन् ऱोळ्वलि यिऴन्दिलन् शॊरियुम्
कल्लि ऴन्दिल निऴन्दिलन् करङ्गॊन्त तिरिदल् 494

विल् इऴन्तनन् ॲन्ऩितुम्–धनु गँवा दिया तो भी; विळङ्कु वाळ् मुकत्तिन्–शोभनेवाले उज्ज्वल चेहरे का; ॲल् इऴन्तिलन्–प्राकृतिक सौंदर्य न खोया; वॅम् कतम् इऴन्तिलन्–भयंकर क्रोध भी न गँवाया; इटिक्कुम् चॊल्–वज्र-सम बोली; इऴन्तिलन्–न गँवायी; तोळ् वलि–भुजबल; इऴन्तिलन्–न खोया; चॊरियुम्

कल्–पत्थर बरसाना; इळन्तिलन्–न छोड़ा; करङ्कु अँन–वातचक्र के समान; तिरितल्–घूमना; इळन्तिलन्–न छोड़ा। ४६४

त्रिशिरा ने अब धनुष भी गँवा दिया। तो भी उसके उज्ज्वल मुख की प्रभा नहीं गयी। उसका क्रोध दूर नही हुआ और उसके वचन की वज्र की-सी कड़क और उग्रता भी नहीं गयी। उसका भुजबल भी नहीं गया और उसने पत्थर बरसाना नहीं छोड़ा। (पतंग या) वातचक्र के समान वह घूमता हुआ लड़ा। ४९४

❀ आळि	रण्डुनू	रुळवॅन्न	वन्दरत्	तॉरुवन्
मूळि	रुम्बॅरु	मायैयिन्	शॅरुमुयल्	वान्नैत्
ताळि	रण्डैयु	मिरण्डुवॅङ्	गणैहळाऱ्	ऱडिन्दु
तोळि	रण्डैयु	मिरण्डुवॅञ्	जरङ्गळाऱ्	ऱुणित्तान् 495

अन्तरत्तु–अन्तरिक्ष में; ऑरुवन्–एकाकी; मूळ् इरुम्–छानेवाली बड़ी; पॅरु मायैयिन्–विस्तृत माया से; आळ् इरण्डु नूऱु उळ–योद्धा दो सौ हैं; अँन–ऐसा; चॅरु मुयल्वानै–युद्ध करनेवाले उसके; ताळ् इरण्डैयुम्–दोनों पैरों को; इरण्डु वॅम् कणैकळाल् तटिन्तु–दो घातक बाणों से काटकर; तोळ् इरण्डैयुम्–दोनों भुजाओ को; इरण्डु वॅम् चरङ्कळाल् दो भयंकर बाणों द्वारा; तुणित्तान्–काट लिया। ४६५

अन्तरिक्ष में एकाकी रहकर त्रिशिरा ऐसी माया के साथ लड़ा कि यह भ्रम हो जाता था कि दो सौ राक्षस एक साथ युद्ध कर रहे थे। अदम्य उत्साह के साथ वह युद्ध कर रहा था। श्रीराम ने दो-दो अस्त्र चलाकर उसके दोनों हाथों और दोनों पैरों को काटकर अलग कर दिया। ४९५

❀ अऱ्ऱ	ताळॊडु	तोळिनन्	नयिलॅयि	ऱिलङ्गप्
पॊऱ्ऱै	मामुळैप्	पुलालुडै	वायिनिऱ्	पुहुन्दु
पऱ्ऱ	वादरिप्	पान्ऱनै	नोक्किनन्	परियान्
कॊऱ्ऱ	वाऱ्शरत्	तॊळिन्ददोर्	शिरत्तैयुङ्	गुऱैत्तान् 496

अऱ्ऱ ताळ् ऑटु तोळिनन्–पैरों और हाथों से हीन; अयिल् ऍयिऱु इलङ्क–तेज दाँतों को प्रकट करते हुए; पॊऱ्ऱै मा मुळै–पर्वत की बड़ी कन्दरा के समान; पुलाल् उटै वायितिल्–मांस की गन्ध निकालनेवाले मुख में; पुकुन्तु पऱ्ऱल्–जाकर ग्रसने का; आतरिप्पात्त तनै–प्रयत्न करनेवाले उसको; नोक्कितन्–(श्रीराम ने) देखकर; परियान्–कृपा न करके; कॊऱ्ऱ वार् चरत्तु–दृढ़ एक लम्बे बाण से; ऑळिन्तत्तु ओर् चिरत्तैयुम्–बचे रहे एक सिर को भी; कुऱैत्तान्–काटकर अलग किया। ४६६

हाथ और पैर खोकर राक्षस ने अपने तीक्ष्ण दाँतों को निकालते हुए श्रीराम को अपने मांस-गन्ध-पूर्ण, बिलसदृश मुख से ग्रसने का उपक्रम किया। श्रीराम ने उसको देखा, दया नहीं की और एक लम्बा और बलवान अस्त्र चलाकर उसका बचा हुआ सिर भी धड़ से अलग कर दिया। ४९६

❀ तिरिशि	रावॅनुम्	जिहरमण्	चेर्दलुम्	जिदऱि
निरुद	रोडिनर्	तूडणन्	विलक्ककवु	निल्लार्
परुदि	वाळिनर्	केडहत्	तडक्कैयर्	परन्द
कुरुदि	नीरिडै	वार्हुळल्	कॉळ्ळुङ्गुडर्	तॉडक्क 497

तिरिचिरा ऍनम् चिकरम्–त्रिशिरा रूपी शिखर; मण् चेर्तलुम्–धराशायी हुआ तो; परुति वाळितर्–सूर्यप्रभ तलवारधारी; केटक तट कैयर्–ढाल लिये बड़े हाथ वाले; निन्र निरुतर्–विद्यमान राक्षस; चितरि–अस्तव्यस्त होकर; तूटणन् विलक्ककवुम्–दूषण के रोकने पर भी; निल्लार्–न रुके; परन्त–फैले रहे; कुरुति नीर् इटै–रक्त-प्रवाह के मध्य; कॉळुम् कुटर्–मोटी आँतों के; वार् कळल्–लम्बे पैरों से; तॉटक्क–उलझकर रोकते; ओटिनर्–(उनको भी खींचते हुए) भागे। ४९७

त्रिशिरा रूपी शिखर (शिखर-सम नेता) मरकर भूमि पर गिर गया, तो अर्क-सम प्रकाशमान तलवारें और ढाल रखनेवाले विशाल हाथों के राक्षस भय से अस्तव्यस्त होकर भागे। दूषण ने रोकना चाहा तो भी वे नही रुके। सारी युद्धभूमि रक्त और कीच से भरी थी। वे उसी में घुसकर भागे। आँतों ने उनके पैरो से उलझकर बाधा डाली। तो भी लस्टम-पस्टम वे भागे ही। ४९७

कणत्तिन्	मेनिन्ऱ	वानवर्	कैबुडैत्	तार्प्पप्
पणत्तिन्	मेनिलङ्	गुलैवुऱक्	काल्हॊडु	पऱप्पार्
निणत्तिन्	मेल्विळुन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	निवन्द
पिणत्तिन्	मेल्विळुन्	दुरुण्डन	रुयिर्हॊडु	पिळैप्पार् 498

मेल्–अन्तरिक्ष में; कणत्तिन् निन्र–दलबद्ध स्थित; वानवर्–देवों ने; कै पुटैत्तु आर्प्प–तालियाँ पीटकर आनन्दरव किया; पणत्तिन मेल् निलम्–शेषनाग पर भूमि; कुलैवु उऱ–थर्रा उठी, तब; काल् कॉटु पऱप्पार्–पैरों के सहारे उड़नेवाले; चिलर्–(राक्षसों में) कुछ; निणत्तिन् मेल् विळुन्तु–मांस-पंक में गिरकर; अळुन्तितर–मग्न हुए; चिलर्–कुछ; निवन्त पिणत्तिन् मेल् विळुन्तु–ढेर वनी रही लाशों पर गिरकर; उरुण्टतर्–लुढ़के; उयिर् कॉटु पिळैप्पार्–किसी विध जान से बचे। ४९८

वे राक्षस ऐसे दौड़े, मानो उनके पैर ही पंख हों। उनको देखकर आकाश में देवगण तालियाँ पीटकर हँसे। शेषनाग पर धृत यह भूमि राक्षसों के पदाघातों से डोल उठी। उनमें कुछ रक्त-कीच में मग्न होकर डूब गये। कुछ ढेर वनी पड़ी रही लाशों पर टकराकर गिरे और किसी तरह वचकर भागे। ४९८

वेयन्द	वाळॊडु	वेलिडै	मिडैन्दन	वॅट्ट
ओयन्दु	ळार्शिल	रुलन्दन	रुदिरनीर्	याऱिल्
पायन्दु	कालपदिन्	दळुन्दिनर्	शिलर्शिलर्	पयत्ताल्
नीन्दि	नार्नॅडुङ्	गुरुदियङ्	गडलुपुक्कु	निलैयार् 499

चिलर्–कुछ; इटै–बीच में; वेय्न्त–पड़ी रही; वाळ् ऑट्टु वेल्–तलवारों और भालों के; मिटैन्तन–जो सटे हुए थे; वॅट्ट–काटने से; ओय्न्तुळार्–(दौड़ नहीं सके) शिथिल हुए; उलन्तनर्–मरे; चिलर्–और कुछ; उतिर नीर् आऱ्ऱिल् पाय्न्तु–रक्त-नदी में गिरकर; काल् पतिन्तु–पैरों के गड़ जाने से; अळुन्तिनर्–डूब मरे; चिलर् पयतुताल्–कुछ, डरते हुए; नीन्तिनार्–तैरे; कुरुति अम् कटल् पुक्कु–रक्त-सागर में पहुँचकर; निलैयार्–चंचल रहे। ४९९

राक्षसों के मार्ग में तलवारें, भाले आदि कसरत से पड़े थे। कुछ राक्षसों के पैर उनसे कट गये और वे राक्षस निर्बल होकर गिरे और मरे। कुछ रक्त-प्रवाह में घुसे और कीच मे पैरों के गड़ जाने से मरे। कुछ भयातुर होकर उस रक्त-नदी में उतरे और वहते जाकर रक्त-सागर में पहुँचे। वहाँ वे डूब-उतराये। ४९९

※ मण्डि योडिनर् शिलर्नॅडुङ् गडहरि वयिऱ्ऱिल्
पुण्डि ऱन्दमा मुळैयिडै वाळॊडुम् बुहुवार्
तॊण्डै नीङ्गिय कवन्दत्तैत् तुणैवनी यॅम्मैक्
कण्डि लेन्नॅप् पुहलॅन्नक् कैदलैक् कॊळ्वार् 500

मण्टि ओटिनर् चिलर्–तेज जो भागे, वे कुछ; नॆटुम् कट करि वयिऱ्ऱिल्–मत्तगजों के पेट में; पुण् तिऱन्त–व्रण जो खुले थे; मा मुळै इटै–उन बिलों में; वाळ् ऑटुम् पुकुवार्–तलवारों के साथ घुसे; तॊण्टै नीङ्किय–गले से (कटकर) हीन; कवन्ततत्तै–कवन्ध को; तुणैव–मित्र; नी ऍम्मै कण्टिलेन्–तुम 'मुझे नहीं देखा'; ऍन्न–यह; पुकल् ऍन्न–(श्रीराम के बाणों से) कहो, ऐसा; कै तलै कॊळ्वार्–सिर पर हाथ (जोड़कर) रख लेते। ५००

कुछ राक्षस दौड़े। बचने का कोई स्थान नहीं मिला। वहाँ हाथी मरे पड़े थे, जिनके पेट बिलों के समान खुले थे। राक्षस अपनी तलवारों के साथ उन्हीं में घुस गये। कुछ राक्षस भागते जा रहे थे। उनको डर था कि श्रीराम के शर पीछा करके आ रहे हैं। उन्होंने कवन्धों को देखा और अंजलिबद्ध हाथ अपने सिरों पर रखते हुए उनसे प्रार्थना की कि तुम श्रीराम के बाणों से मत कहो कि तुमने हमें देखा था। ५००

※ कच्चुम् वाळुन्दङ् गाऱॊडऱन् दोर्प्पत्त काणार्
अच्च मॅन्वदोन् ऱुरुवुहॊण् डालॅन्न वळिवार्
उच्च वीरन्गैच् चुडुशर निरुदर्नॅञ्च् जुरुवित्
तच्चु निन्ऱन कण्डन रवळित् तविर्न्दार् 501

उच्च वीरन्–सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के; कै–हाथ के; चुटु चरम्–मारक बाण; निरुतर् नॆञ्चु उरुवि–राक्षसों की छाती में घुसकर; तच्चु निन्ऱन–गड़े रहे; कण्टनर्–उनको देखकर; अ वळि तविर्न्तार्–उस मार्ग को बचाकर; कच्चुम् वाळुम्–कमरबन्द और तलवार; तम् काल् तॊटर्न्तु ईर्प्पत्त–उनके पैरों को काटती

रहती है; काणार्–उसकी भी सुध न लेते हुए; अच्चम् ॲन्पतु ओर् उरुवु कॊण्टाल् ॲन्न–मानो भय नामक वस्तु ने रूप लिया हो, ऐसा; अऴिवार्–वहीं रहकर मरते। ५०१

कुछ वीरों ने देखा कि मार्ग में सर्वश्रेष्ठ वीर श्रीराम के हाथ के प्रेरित भयानक शर राक्षसों के वक्षो में घुसकर वहीं गड़े रहे। वे उस मार्ग से नहीं गये। वे इतने भयभीत हो गये कि उनके कमरबन्द और उनकी तलवारें उन्हें निरन्तर काट रही थी—इसकी भी उन्होंने सुध नहीं ली। वे बिल्कुल भय के मूर्त आकार थे। वे जहाँ-तहाँ रहकर मरने लगे। ५०१

❀ अनैय राहिय वरक्करै याण्डॊॆऴिड् कमैन्द
विनैय नीङ्गिय मनित्तरै वॆरुवन्मि नॆन्ना
नितैयु यानीन्ऱु निरप्पुव दुण्डॆन्न निन्ड्रान्
तुनैयुम् वाम्बरित् तेरिनन् रूडणन् शॊन्नान् 502

तूटणन्–दूषण; तुतैयुम्–तीव्रगामी; वाम् परि–अश्व-जुते; तेरितन्–रथ पर सवार; अतैयर् आकिय अरक्करै–वैसे भागते हुए राक्षसों को; आण् तॊऴिऱ्कु अमैन्त–पुरुष के कार्य योग्य; वितैयम् नीङ्किय–काम जिनके पास नहीं, उन; मनित्तरै–मानवों से; वॆरुवल्मिन्–मत डरो; ॲन्ऩा–कहकर; यान् नितैयुम् ऒन्ऱु–मैं सोचता हूँ एक बात; निरप्पुवतु उण्टु–जो कहती है; ॲन्न–ऐसा; निन्ड्रान्–खड़ा होकर; चॊन्तान्–बोला। ५०२

तब दूषण नामक सेनापति ने, जो तीव्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार था, भागनेवाले राक्षसों को रोकते हुए कहा कि हे वीरो! मत डरो, मत भागो। आखिर तुम्हारा शत्रु मनुष्य है। वह साहसपूर्ण वीरता युक्त (राक्षस) पुरुष का काम करने की शक्ति नहीं रखता। उससे मत डरो। फिर उसने वहीं खड़ा रहकर कहा कि मुझे तुमसे एक बात कहनी है। सुनो। ५०२

❀ वच्चै यामॆनुम् वयमनत् तुण्डॆन्न वाऴुम्
कॊच्चै मान्दरैक् कोल्वळै महळिरुङ् गूशार्
निच्च यमॆनुङ् गवशत्ता निलैनिऱ्कु मन्ड्रेल्
अच्च मॆन्नुमो दारुयिर्क् करुन्दुणै यामो 503

वच्चै आम् ॲतुम् पयम्–अपमान योग्य यह भय; मततु उण्टु ॲन्न वाऴुम्–मन में रखते हुए जो जीते हैं; कॊच्चै मान्तरै–उन क्षुद्र मनुष्यों से; कोल् वळै मकळिरुम्–सुन्दर चूड़ियाँ जो पहनती है, वे स्त्रियाँ भी; कूचार्–नहीं शरमाती हैं (आदर नहीं करतीं); निच्चयम् ॲतुम्–धैर्य रूपी; कवचत्ताल्–कवच धारण करने से ही; निलै निऱ्कुम्–प्राण स्थायी रहेगा; अन्ऱेल्–नहीं तो; अच्चम् ॲन्तुम् अतु–भय का यह गुण; आर् उयिरुक्कु–प्यारे प्राणों के लिए; अरुम् तुणै आमो–श्रेष्ठ सहायक होगा क्या। ५०३

भय अपयश है। उसके साथ रहनेवाले हैं मानव लोग। उनको

देखकर सुन्दर कंकणधारिणी स्त्रियाँ भी नहीं डरतीं, उनसे नहीं शरमातीं। और भी एक बात है। वीरता के कवच के अन्दर ही प्राण सुरक्षित रह सकते हैं। अब जो भीरुता तुम दिखा रहे हो, क्या वह तुम्हारे प्राणों का रक्षण कर सकेगी ? । ५०३

❀ पूव रावुवेऱ् पुरन्दरऩ् इऩ्नॊडु पॊऩ्ऱा
मूव रोडुदाऩ् मुऩ्निऩ्ऱु मुट्टिय मुनैयिल्
एव रोडिना रिराक्कदर् नुमक्किडैन् दोडुम्
देव रोडुहर् ऱरिऩ्दुळि रोमऩऩ् दिहैत्तीर् 504

पू अरावु वेल्–तीक्ष्ण किये हुए भाले वाले; पुरन्तरऩ् तऩ्ऩोटु–पुरन्दर के साथ और; पॊऩ्ऱा–अमर; मूवरोटु–त्रिदेवों के साथ; मुऩ् निऩ्ऱु मुट्टिय–सामने स्थित जो की; मुनैयिल्–उस युद्धभूमि में; इराक्कतर् एवर् ओटिऩार्–राक्षस कौन भागे; मऩम् तिकैत्तीर्–यहाँ चित्त-भ्रमित हुए; नुमक्कु इटैन्तु–तुमसे (हारकर) त्रस्त होकर; ओटुम्–जो भागते हैं; तेवरोटु–उन देवों से; कऱ्ऱु अऱिन्तु उळिर् ओ–सीख ले गये हो क्या। ५०४

तीक्ष्ण भालाधारी पुरन्दर से और अमर रहनेवाले त्रिदेव से भी युद्ध हुआ था न ? उनके सामने डटकर जिन राक्षसों ने युद्ध किया, उनमे कौन थे जो मैदान छोड़कर भागे ? कोई नहीं ! अब क्यो विकलमन हुए हो ? क्या यह गुण तुमने उन देवों से सीख लिया है जो तुमको देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं ? । ५०४

इङ्गॊर् माऩिडर् कित्तनै वीरर्ह ळिडैन्दीर्
उङ्गै वाळॊडु पुहऴ्विऴ वूर्पुह वुवन्दीर्
कॊङ्गै मार्बिडैक् कुऴिप्पुरक् कळिप्पुरु कॊऴुङ्गण्
नङ्गै मार्हळैप् पुल्लुदि रोनल नुहर्वीर् 505

इङ्कु ऒर् माऩिटर्कु–यहाँ एक मनुज के सामने; इत्तत्तै वीरर्कळ्–इतने वीर; इटैन्तीर्–हार मान गये; उम् कै वाळ् ऒटु–अपने हाथ की तलवार के साथ; पुकऴ् विऴ–यश को नीचे डालते हुए; ऊर् पुक उवन्तीर्–गाँव जाना पसन्द किया; नलम् नुकर्वीर्–सुख-भोग चाहते हो; कळिप्पु उऱु–मदमत्त; कॊऴुम् कण्–बड़ी आँखों की; नङ्कैमार्कळै–अपनी स्त्रियों को; कॊङ्कै–उनके स्तन; मार्पु इटै कुऴिप्पु उऱ–तुम्हारे वक्षों में दवें, ऐसा; पुल्लुतिरो–गले से लगाओगे क्या। ५०५

अकेले एक मनुज के सामने इतने राक्षस हार मानकर भागते हो ! युद्धस्थल में तलवारों के साथ अपने यश को गिराकर अपने स्थान में जा प्रविष्ट होना चाहते हो ! क्या सुख-भोग की इच्छा हो गयी और तुम जाकर उन मत्त और विशाल आँखों की अपनी स्त्रियों को इतना कसकर गले लगाना चाहते हो कि उनके पुष्ट स्तन तुम्हारे वक्षों में दव जायँ ? । ५०५

ꣳ शेंम्बु काट्टिय कण्णिणै पालनैन्न तेंळिन्दोर्
वेंम्बु काट्टिडै नुळैन्दनम् वेरिनुरप् पायन्द
कोम्बु काट्टुदि रोतर मार्विडैक् कुळित्त
अम्बु काट्टुदि रोहुल मड्गैयर्क् कम्मा 506

चेंम्बु काट्टिय-ताम्र (क्रोध से लाल) बनी; कण् इणै-आँखों के जोड़े; पाल् अन-दूध के समान; तेळिन्दोर्-स्वच्छ हो गये, ऐसी आँखों के हो गये; कुल मड्गैयर्क्कु-तुम्हारे कुल की स्त्रियों को; वेंम्बु काट्टु इडै-विकट जंगल में; नुळैन्दनम्-घुसकर दौड़ते समय; वेरिन्-पीठ में; उर पायन्द-चुभी रहीं; कोम्बु काट्टुतिरो-टहनियाँ दिखाओगे; अदु मार्बु इडै कुळित्त-(या) विशाल वक्ष में घुसे; अम्बु काट्टुतिरो-बाणों को दिखाओगे। ५०६

तुम्हारी आँखें तो लाल होना चाहिए! पर अब वे श्वेत दिखती हैं—डर से, क्रोध छोड़ देने से! जब तुम अपने-अपने आवास पर जाओगे तो अपनी पत्नियों को क्या दिखाओगे अपनी वीरता के चिह्नों के रूप में? उन टहनियों और शाखाओं को दिखाओगे जो घने वन के मध्य से भागते समय तुम्हारी पीठ में चुभ जायेंगे? या अपने वक्षस्थल पर लगे शर को? । ५०६

एक्कल मनिदर्क् मेन्नुगुण् डोविहन् मनिदर्
आक्कुन् वेंजमत् ताणसेयन् नमरर्क्कु मरिदाल्
ताक्क रुम्बुयत् तुम्कुलत् तलैमहन् ङक्कै
मूक्कौ डुन्डिनुन् मुदुहौडुम् वौमुपळि मुयन्ड्रोर् 507

इक्कल् मनिदर्क्कु आक्कुम्-मनुज-मनुष्य से जो किया जाता है; वेम् चमत्तु-उस भीषण युद्ध में; आण्मै-(तुम्हारा) पौरुष; अ अमरर्क्कुम्-उन अमरों के लिए भी; अरितु-दुर्लभ है; इदु एक्कदम् इवन् मेल् उण्डो-यहाँ तुम्हारा सन्ताप इससे बढ़कर हो सकता है क्या; ताक्कु अरुम्-जिन पर प्रहार करना कठिन है, ऐसी; पुयत्तु-भुजाओं के स्वामी; उम् कुल तलैमहन्-तुम्हारे कुल के उच्च नायक; तङ्कै-(रावण की) छोटी बहिन की; मूक्कु ओडु अन्ड्रि-नाक के साथ ही नहीं बल्कि; उम् मुदुकु ओडुम्-तुम्हारी पीठ के साथ भी; पोम् पळि-लगनेवाला अपयश; मुयन्ड्रोर्-हो, इसका उपक्रम किया है तुमने। ५०७

आखिर शत्रु मनुज के साथ जो हो रहा, इस युद्ध में तुम ऐसा पौरुष (पौरुष-हीनता) दिखा रहे हो! यह देवों के लिए भी दुर्लभ है। हन्त! इससे अधिक दुःखदायिनी बात क्या होगी? तुम कैसा कार्य कर रहे हो, उसका अर्थ क्या होगा? —मालूम है? तुम्हारे कुलनायक, जो अलभ्य भुजाबल रखते हैं, उन रावण की बहिन की नाक ही नहीं कटी, बल्कि तुम्हारी पीठ पर अपयश लगेगा! यही प्रयत्न तुम कर रहे हो। ५०७

ꣳ आर वाळ्क्कैयित् वणिहरा पमैदिरो वयिल्वेल्
वीर वाट्कोळ्ळु वेत्तमडुत् तुळुदिरो वेंड्रिप्पोर्त्

तीर वाळ्क्कैयिऱ् ऱेवरैच् चॅरुविडैप् पऱित्त
वीर वाट्कैयी रॅङ्ङऩम् वाऴ्दिरो विळम्बीर् 508

वॅऱ्ऱि पोर्–उन्मत्तकारी युद्ध में; तीर वाळ्क्कैयिल्–साहसपूर्ण जीवन के कारण; तेवरै चॅरु इटै पऱित्त–देवों से युद्ध में छीनी हुई; वीर वाळ्–वीरता की तलवारें; कैयीर्–जिनमें हैं, ऐसे हाथों के राक्षसो; वाळ्क्कैयिऩ् वणिकराय्–जीवन में व्यापारी; आर–बनकर; अमैतिरो–रहोगे क्या; अयिल् वेल्–तीक्ष्ण भाले; वीर वाळ्–वीरता की सहायक तलवारें; कॊऴु अॅत्त मट्टुत्तु–हल की फाल बनाकर भूमि में खोदकर; उऴुतिरो–जोतनेवाले हो; अॅङ्ङऩम् वाऴ्तिरो–कैसे जीवन बिताओगे; विळम्पीर्–कहो। ५०८

उन्मत्तकारी युद्ध में अपूर्व धैर्य दिखाते हुए तुमने देवों के हाथों से उनकी तलवारें छीन ली थीं। ऐसी तलवारों के धारक ! अब जीवन वणिकों का विताने का विचार किया है ? या तीक्ष्ण भालों और प्रतापी तलवारों को हल का फाल बनाकर भूमि की खेती करोगे और कृषक वनोगे ? वताओ तो सही। ५०८

❀ अॅऩ्ऱु तानुन्द नॅऱिहडऱ् चेनैयु मिऱैनीर्
निऩ्ऱु काण्डिरॅन् ऩॅडुञ्जिलै वलियॅन नेराच्
चॅऩ्ऱु ताक्किनऩ् ऱेवरु मरुळ्हॊण्डु तिहैत्तार्
नऩ्ऱु कात्तियॅऩ् ऱिरामनु मॅदिर् शॅल नडन्दान् 509

अॅऩ्ऱु–ऐसा कहकर; नीर्–तुम लोग; इऱै–कुछ देर; निऩ्ऱु–खड़े होकर; अॅऩ् नॅटुम् चिलै–मेरे लम्बे धनुष का; वलि–पराक्रम; काण्टिर्–देखो; अॅऩ–समझाकर; तानुम्–स्वयं और; तऩ् अॅऱि कटल् चेनैयुम्–उसकी तरंगाकुल समुद्र-सम सेना ने; नेरा चॅऩ्ऱु ताक्किऩऩ्–श्रीराम के सामने जाकर उन पर आक्रमण किया; तेवरुम् मरुळ् कॊण्टु–देव भी चकराकर; तिकैत्तार्–भ्रमित हुए; इरामऩुम्–श्रीराम ने भी; नऩ्ऱु कात्ति अॅऩ्ऱु–अच्छा सावधान, बचा लो कहकर; अॅतिर् चॅल–उसके सामने; नटन्तान्–चलते आये। ५०९

दूषण ने यह वचन कहा। आगे यह बोला कि तुम मत भागो। ज़रा देर खड़े रहो और मेरे धनुष का अतुल प्रताप देखो। फिर वह आगे गया और उसकी सेना भी साथ गयी। उन्होंने जाकर श्रीराम पर आक्रमण किया। देवों को भी भय हो गया कि यह राक्षस वीर अनर्थ कर देगा। तब श्रीराम भी यह कहते हुए सामने आये कि ठहरो, अपनी रक्षा के लिए तैयार हो जाओ। सावधानी से अपनी रक्षा कर लो। ५०९

ऊड ऱुप्पुण्ड मॊय्बडैक् कैयॊडु मुयर्न्द
कोड ऱुप्पुण्ड कुञ्जरङ् गॊडिञ्जॊडु कॊडियिऩ्
काड ऱुप्पुण्ड कालिय ऱेर्हदिर्च् चालि
शूड ऱुप्पुण्ड वॅन्नक्कळुत् तऱुप्पुण्ड तुरहम् 510

मॊय् पटै–सवल हथियार; ऊट्टु अऱुप्पुण्ट–बीच में कटे; कुञ्चरम्–हाथी; कै ऒट्टुम्–सूँड़ों सहित; उयर्न्त–उभर आये; कोट्टु–दाँतों के; अऱुप्पुण्ट–कटे हो गये; काल् इयल् तेर्–हवा के समान चलनेवाले रथ; कॊटिञ्चु ऒट्टु–पीठ के सामने के 'कॊंडिञ्जु' नाम के हस्तावलम्ब के साथ; कॊटियिन् काट्टु–ध्वजाओं के वन के साथ; अऱुप्पुण्ट–कटे हो गये; तुरकम्–अश्व; कतिर् चालि चूट्टु–शालि-पौधों की बालें; अऱुप्पुण्ट अॅन्न–कट गई हों, ऐसे; कऴुत्तु अऱुप्पुण्ट–गर्दन-कटे हो गये। ५१०

उस युद्ध में बलवान हथियार कटे। हाथी की सूँड़ें और दाँत कटे और वे गिर गये। रथ ध्वस्त हुए। ध्वजाएँ और पीठ के सामने के भाग आदि कटे। अश्वों के सिर धान की बालियों के समान गले से काट दिये गये। ५१०

तुरुवि　　योडिन　　वुयिर्निलै　　शुडुशरन्　　दुरन्द
करुवि　　योडुवन्　　कच्चैयुङ्　　गवशमुङ्　　गऴल
अरुवि　　योडिन　　वॅन्नविऴि　　कुरुदिया　　ऱलैप्प
उरुवि　　योडिन　　केडहत्　　तट्टॊडु　　मुडलम् 511

चुट्टु चरम् तुरन्त–तापक शर (जो श्रीराम ने) छोड़े; उयिर् निलै–राक्षसों का मर्म स्थान; तुरुवि–ढूँढ़ते हुए; ओटिन–चले; करुवि ओट्टु–हथियारों के साथ; वन् कच्चैयुम्–दृढ़ बन्दो और; कवचमुम् कऴल–कवचों को उतारते हुए; अरुवि ओटिन अॅन्न–नदियाँ बहती हों जैसे; इऴि कुरुति आऱु–(राक्षसों के शरीरों से) निकलनेवाले रक्त की नदियाँ; अलैप्प–उनको इधर-उधर हिलातीं ऐसा; केटक तट्टु ऒट्टुम्–ढालों के थालों के साथ; उटलम्–शरीरों को भी; उरुवि ओटिन–निफरकर चले। ५११

श्रीराम से प्रेरित सन्तापक बाण राक्षसों के मर्मस्थल की खोज में चले। उनके लगते ही राक्षसों के हथियार कमरबन्द और कवच आदि कटकर गिर गये। वे अस्त्र ढालों को भेदकर और राक्षसों के शरीरों के आर-पार हो गये। उनके शरीर से निकलकर रक्त बहा और उसकी नदियाँ बहीं। उन नदियों में कवच, कमरबन्द आदि उतराये और इधर-उधर चालित हुए। ५११

आय्न्द　　कङ्गपत्　　तिरङ्गऴ्पुक्　　करक्करदम्　　मावि
तोय्न्द　　तोय्विल　　पिऱैमुहच्　　चरञ्जिरन्　　दुमित्त
काय्न्द　　वॅञ्जरभ्　　निरुदर्तङ्　　गवशमार्　　बुरुवप्
पाय्न्द　　वञ्जह　　रिदयङ्गऴ्　　पिऴन्दन　　पल्लम् 512

आय्न्त–चुनकर प्रेरित; कङ्क पत्तिरङ्कऴ्–कंक-पत्र (चील के पंख से युक्त शर) बाण; पुक्कु–(राक्षसो के शरीरों के अन्दर) प्रविष्ट होकर; अरक्कर् तम् आवि तोय्न्त–राक्षसों के प्राणों में लगे; तोय्वु इल–ऐसा जो प्रविष्ट नहीं हुए वे; पिऱै मुक चरम्–अर्द्धचन्द्र बाणों ने; चिरम् तुमित्त–सिर खण्डित कर दिये; काय्न्त

वॆम् चरम्–उग्र और प्रचण्ड शर; निरुतर् तम्–राक्षसों के; कवच मार्पु–कवच-सज्जित वक्षों के; उरुव पाय्नल–आर-पार गये; पल्लम्–अन्य शरों ने; वञ्चकर्–वंचकों के; इतयङ्कळ् पिळन्तत्त–हृदय को फोड़ दिया। ५१२

श्रीराम के कंकपत्र नाम के चील के पंख से युक्त तीक्ष्ण शर राक्षसों के मर्म पर जा लगे। ऐसे जो जाकर नहीं लगे, उन अर्द्धचन्द्र बाणों ने राक्षसों के सिरों को काट दिया। कुछ उग्र वाण जो तेजी से गये कवच सहित शरीरों को निफरकर बाहर आ गये। अन्य अस्त्रों ने उनके हृदय (वक्षस्थल) को विदीर्ण कर दिया। ५१२

तूड गन्विडु शरमवै यावैयुन् दुणिया
माडु निन्ड्रवर् वळङ्गिय पडैहळु माड्रा
आडल् कॊण्डन्न नळप्परुम् बॆरुवलि यरक्कर्
कूडि निन्ड्रवक् कुरैहडल् वड्रळ्वडक् कुरैत्तान् 513

तूटणन्–दूषण ने; विटु–जो चलाया; चरम् अवै यावैयुम्–उन सभी वाणों को; तुणिया–(श्रीराम ने) छिन्न-भिन्न करके; माटु निन्ड्रवर्–पास जो खड़े रहे; वळङ्किय पटैकळुम्–उनके चलाये हुए शरों को भी; माड्रा–लौटवा देकर; अळप्पु अरुम्–अगणित; पॆरु वलि अरक्कर्–बड़े बलवान राक्षस; कूटि निन्ड्र–जिसमें मिले रहे; कुरै कटल्–उस गर्जनशील सागर-सम सेना को; वड्रळ् पट–सुखाते हुए; कुरैत्तान्–मिटाकर; आटल्–विजय; कॊण्टनन्–प्राप्त की। ५१३

श्रीराम ने दूषण-प्रेरित सभी शरों के खण्ड-खण्ड कर दिये। पास जो रहे, उन राक्षसों के प्रेरित शरों को बेकार करके फिरा दिया। इस तरह गर्जनशील सागर के समान जो सेना राक्षसों से भरी थी उसको श्रीराम ने सुखा दिया। वे विजयी हो गये। ५१३

आर्त्तॆ ळुन्दनर् वानव रुरुवरै मरत्तो
डीर्त्तॆ ळुन्दन कुरुदियिन् पॆरुनदि यिरामन्
तूर्त्त शॆञ्जरन् दिशैतॊरुन् दिशैतॊरुन् दॊडर्न्दु
पोर्त्त वॆञ्जिनत् तरक्करैप् पुरट्टिन पुवियिल् 514

वानवर्–देव; आर्त्तु ऍळुन्तनर्–हल्ला मचा उठे; कुरुतियिन् पॆरु नति–रक्त की वड़ी नदियाँ; अरु वरै–बड़े पर्वतों को; मरत्तॊटु–पेड़ों के साथ; ईर्त्तु ऍळुन्तन–बहाते हुए वहीं; इरामन्–प्रभु श्रीराम ने; तूर्त्त–जो ठूँसे; चॆम् चरम्–उन उत्तम वाणों ने; तिचै तॊरुम् तिचै तॊरुम्–दिशा-दिशा में सर्वत्र; तॊटर्न्तु–(राक्षसों का) पीछा करके जाकर; पोर्त्त–उन दिशाओं को आच्छादित करते हुए जो रहे, उन; वॆम् चिनत्तु अरक्करै–भयंकर, क्रुद्ध राक्षसों को; पुवियिल्–भूमि पर; पुरट्टिन–लुढ़का दिया। ५१४

देवगण इससे हर्षित हो गये और उन्होंने हल्ला मचाया। रक्त की वड़ी-बड़ी नदियाँ वड़े-वड़े पर्वतों को तरुओं सहित बहाते हुए वहीं।

श्रीराम लगातार शर चला रहे थे। वे हर दिशा में राक्षसों का पीछा करते गये और वहाँ भरे रहे क्रुद्ध राक्षसों के सिर कटकर भूमि पर लुढ़क गये। ५१४

तोऩ्ऱु माल्वरैत् तॊडैयॆऩत् तुवऩ्ऱिय निणच्चेऱ्
ऱाऩ्ऱ पाऴ्वयिऱ् ऱलहैयैप् पुहऴ्वदॆ ऩमर्वेट्
टूऩ्ऱि ऩारॆला मुलन्दऩ रॊल्लैयिऩ् मडिन्दार्
काऩ्ऱ वव्वुयिर्क् कालऩुम् वलित्तुमॆय् कवऩ्ऱाऩ् 515

तोऩ्ऱु माल् वरै–दृश्यमान बड़े पर्वतों के; तॊडै ऎऩ–समूहों के समान; तुवऩ्ऱिय–घने रूप से रहे; निण चेऱु–मांस-पंक; आऩ्ऱ–खूब खाकर जो रहे; पाऴ् वयिऱ्ऱु अलकैयै–उन रिक्त-पेट वाले प्रेतों की; पुकऴ्वतु ऎऩ्–प्रशंसा क्या हो; अमर् वेट्टु–युद्ध चाहकर; ऊऩ्ऱिऩार् ऎलाम्–जो रहे वे सभी (राक्षस); ऒल्लैयिऩ्–जल्दी; उलन्तऩर्–मरे; काऩ्ऱ–(प्रेतों से पेट भर जाने के कारण जो) थूके गये; अ उयिर्–उन प्राणों को; कालऩुम्–यम भी; वलित्तु–छीन ले जाते-जाते; मॆय् कवऩ्ऱाऩ्–श्रान्त-शरीर हो गया। ५१५

चर्बी के पर्वतों के समान ढेर बने रहे। उसको खाकर प्रेत बड़े ही मजे में रहे। अब तक रिक्तपेट रहे उनको मनमाने ढंग से खाने को मिल गया। उनकी प्रशसा क्या की जाय? उससे बढ़कर यम की स्थिति कहना अधिक युक्त होगा, क्योंकि उसी से युद्धभूमि की स्थिति का सच्चा रूप मिलेगा। युद्ध में मन लगाकर जो राक्षस आये वे सब मरे। उनको प्रेतों ने खाया और जो पेट के भर जाने से उनके द्वारा त्यक्त थे, उन जीवों को उठाते-उठाते यम का शरीर थक गया। ५१५

कळिऱु तेर्परि कडुत्तवर् मुडित्तलै कवन्दम्
ऒळिऱु पल्पडैत् तङ्गुलत् तरक्कर्द मुडलम्
वळिऱु शेर्निणम् पिरङ्गिय वडुक्कलिऩ् मीदिल्
कुळिऱु तेर्हडि दोट्टिऩऩ् ऱूडणऩ् कोदित्ताऩ् 516

तूटणऩ्–दूषण; कळिऱु–हाथी; तेर्–रथ; परि–अश्व; कटुत्तवर्–(साथ लेकर) क्रोध के साथ जो लड़े; तऩ् कुलत्तु अरक्कर् तम्–अपने कुल के राक्षसों के; मुटि तलै–किरीटधारी सिरों; कवन्तम्–कबन्धों; ऒळिऱु पल् पटै–शोभायमान अनेक हथियारों; वॆळिऱु चेर् निणम्–श्वेत चर्बी; पिऱङ्किय–के बने; अटुक्कलिऩ् मीते–पर्वतों पर ही; कुळिऱु तेर्–शब्दायमान रथ को; कटितु ओट्टिऩऩ्–सवेग चलाता गया; कॊतित्ताऩ्–क्रुद्ध रहा। ५१६

दूषण ने अब अपने रथ को आगे बढ़ाया। सामने हाथी, अश्व, राक्षसों के किरीटधारी सिर, उनके कबन्ध, अनेक उज्ज्वल हथियार श्वेत चर्बी आदि के पर्वतों के समान ढेर बने पड़े थे। क्रोध से उन्मत्त दूषण का रथ इन्हीं के ऊपर से चला और गरगराहट करता गया। ५१६

अऱङ्गॊळ् ळादव राक्कैह ळड्क्किय वडुक्कल्
पिऱङ्ग नीण्डन्न कणिप्पिल पॆरुङ्गडु विशैयाल्
कऱङ्गु पोन्ऱुळ दायिनुम् बिणप्पॆरुङ् गडत्तिल्
इऱङ्गु मेऱुमत् तेर्पट्ट दियादॆन्न विशैप्पाम् 517

अऱम् कॊळ्ळातवर्–अधर्मी (राक्षसों) के; आक्कैकळ्–शरीर; अट्टुक्किय अट्टुक्कल्–जिनमें परतों के रूप में चुने गये थे, वे पर्वत; पिऱङ्क नीण्टन्न–सब जगह दिखाई देते हुए विस्तृत रूप से पड़े रहे; कणप्पिल–हिसाव में नहीं आये (अगणित रहे); पिणम् पॆरुम् कटत्तिल्–लाशों के उस बड़े वन में; पॆरुम् कटुम् विचैयाल्–अधिक वेग के साथ; कऱङ्कु पोन्ऱु–लट्टू के समान; उळतु आयिनुम्–घूमता रहा तो भी; इऱङ्कुम् एऱुम्–उतरता-चढ़ता गया; अ तेर् पट्टतु–उस रथ का हाल; यातु ऎन्न–क्या (था यह); इचैप्पाम्–कहें। ५१७

अधर्मी राक्षसों की असंख्य लाशें परतों में पहाड़ों के समान पड़ी रहीं। दूषण का रथ जब उन लाशों के वन-समान युद्धभूमि में लट्टू के समान वेग से घूमता हुआ चला तो भी चढ़ावों और उतारों के कारण उसे बहुत संकट उठाना पड़ा। उसकी क्या गति हुई, उसका क्या कहा जाय? । ५१७

अरिदि नॆय्दिन्न नैयैन्दु कॊय्युळैप् परियाल्
उरुळु माळिय दॊरुदनित् तेरिनन् मेहत्
तिरुळि नीङ्गिय विन्दुविऱ् पॊलिहिन्ऱ विरामन्
तॆरुळुम् वार्हणैक् कूऱ्ऱॆवि राविशॆन् ऱॆन्न 518

ऐ ऐन्तु–(पाँच के पाँच =) पचीस; कॊय् उळै परियाल्–सुन्दर रूप से कटे अयालों से भूषित अश्वों द्वारा; उरुळुम्–(खींचकर चलने से) चलनेवाले; आळियतु ऒरु तनि तेरिनन्–चक्रों के अनुपम रथ पर आरूढ़ दूषण; मेकत्तु इरुळिन् नीङ्किय–मेघों के कारण वने अन्धकार से छूटकर जो आया है; इन्तुविल्–उस इन्दु के समान; पॊलिकिन्ऱ–शोभायमान; इरामन्–श्रीराम के; तॆरुळुम्–साफ़; वार्–दीर्घ; कणै कूऱ्ऱु ऎतिर्–बाण रूपी यम के सामने; आवि चॆन्ऱु ऎन्न–जीव पहुँचा हो, ऐसा; अरितिन् ऎय्तित्तन्–सायास पहुँचा। ५१८

उसके रथ में पचीस सुन्दर रूप से कटे (सजे) अयालों से भूषित अश्व जुते थे। उस पर आरूढ़ दूषण सायास श्रीराम के सामने, यम के सामने जानेवाले जीव के समान (अपने प्राण सौंपने के लिए) जा पहुँचा। श्रीराम मेघान्धकारनिवृत्त इन्दु के समान शोभायमान थे। ५१८

❀ शॆन्ऱ तेरैयुञ् जिलैयुडै मलैयॆनत् तेर्मेल्
निन्ऱ तूडणन् ऱन्नैयु नेडियव नोक्कि
नन्ऱु नन्ऱुनित् तिलैयॆन्न वरुळुरै नयन्दान्
ऒन्ऱ कालत्तव् वॆय्यवन् पहळिमून् ऱॆय्दान् 519

नॆटियवऩ्–विक्रमी श्रीराम ने; चॆऩ्ऱ तेरैयुम्–आगत रथ को; चिलै उटै मलै अॆऩ–धनुर्धर पर्वत के समान; तेर् मेल् निऩ्ऱ–रथ पर स्थित; तूटणऩ् तऩ्ऩैयुम्–दूषण को; नोक्कि–देखकर; निऩ् निलै नऩ्ऱु नऩ्ऱु–तुम्हारा धैर्य अच्छा है, अच्छा है; अॆऩ–ऐसा; अरुळ् उरै नयऩ्ताऩ्–कृपा-वचन कहे; अॆऩ्ऱ कालत्तु–जब उन्होंने यह कहा, तब; अ वॆय्यवऩ्–उस दुराचारी ने; पकऴि मूऩ्ऱु–शर तीन; अॆय्ताऩ्–चलाये। ५१९

विक्रमी श्रीराम ने सामने आये रथ को और उस पर आरूढ़, धनुर्धर भूधर के समान दूषण को भी देखा। उन्होंने वाहवाही की— "तुम्हारा धैर्य धन्य है, धन्य है।" जब वे कृपा के साथ यह वचन कह रहे थे, तभी उस दुराचारी दूषण ने तीन भयंकर शर लेकर उन पर चला दिये। ५१९

तूर वट्टवॆण् डिशैहळैत् तऩित्तऩि शुमक्कुम्
पार वॆट्टिऩो डिरण्डिऩि लॊऩ्ऱुपार् पुरक्कल्
पेर विट्टवऩ् करिनुद लोडैयिऱ् पिऱङ्गुम्
वीर पट्टत्तिऱ् पट्टऩ विण्णवर् वॆरुव 520

तूर वट्ट–दूर, मण्डलाकार; अॆण् तिचैकळै–आठों दिशाओं को; तऩि तऩि चुमक्कुम्—अलग-अलग धारण करनेवाले; पार अॆट्टिऩ् ओटु–बली अष्ट (दिग्गजों) के साथ; इरण्टिऩिल् ऒऩ्ऱु–और (शेष व कूर्म में) एक (शेष) अपनी पादुकाओं को; पार् पुरक्क–लोकभरणार्थ; पेर विट्टवऩ्–जिन्होंने अलग भेजा था, उन (श्रीराम) के; करि नुतल् ओटैयिल्–गज के भाल पर शोभनेवाले पट्ट के समान; पिऱङ्कुम्–मनोरम रूप से विद्यमान; वीर पट्टत्तिल्–वीरोचित पट्टी पर; विण्णवर् वॆरुव–देवों को सिहरने देते हुए; पट्टऩ–(वे तीनों शर) लगे। ५२०

वे जाकर श्रीराम के भाल की वीरपट्टी पर लगे, जिसे देखकर देवगण सहम उठे। वह पट्टी गज के भाल पर सज्जित मुखपट्ट के समान शोभायमान थी। श्रीराम कौन थे ? वे स्वयं विष्णु भगवान थे, जिन्होंने अष्टदिग्गजो के भूभार-वहन के कार्य में सहायता देने के लिए अपनी पादुकाओं को अपने से अलग करके भेजा था। वे पादुकाएँ शेषनाग के अवतार थीं, जो भूमि के भारवाही दो (शेष और कूर्म) में एक (माना जाता) है। ५२०

❀ अॆय्द कालमुम् वलियुमऩ् ऱॆऩनिऩै न्दिरामऩ्
शॆय्द शेयॊळि मुऱुवलऩ् कडुङ्गणै तॊरिन्दाऩ्
नॊय्दि नङ्गव नॊऱ्ऱिल्परित् तेर्बड नूऱिक्
कैयिल् वॆञ्जिलै यऱुत्तॊळिर् कवशमुङ् गडिन्दाऩ् 521

इरामऩ्–श्रीराम ने; अॆय्त कालमुम्–(दूषण के) शर चलाने का काल; वलियुम्–और उसका बल; नऩ्ऱु अॆऩ–श्लाघ्य, यह; निऩैन्तु–समझकर; चॆय्त चेय् ऒळि–लाल (सुन्दर) उज्ज्वल; मुऱुवलऩ्–हँसी के साथ; कटुम् कणै तॆरिन्ताऩ्–कठोर एक अस्त्र चुनकर चलाया; नॊय्तिऩ्–सुगम रीति से (या जल्दी); अङ्कु–वहाँ; अवऩ्–उसके; नॊऱ्ऱिल् परि–तीव्रगति अश्व के; तेर्–रथ को; पट नूऱि–तहस-नहस

करके; कैयिन् वॅम् चिलै अऱुत्तु–(उसके) हाथ में रहे धनुष को भी काटकर; **ऑळिर् कवचमुम्–चमकदार कवच को भी; कटिन्तान्–तोड़ दिया। ५२१**

तीनों शर श्रीराम के सिर की पट्टी पर लगे। श्रीराम मुस्कराये। उन्होंने मन में सोचा कि वाह! उसका शरप्रेषणकाल यानी उसके बाण की गति और उसका बल प्रशंसनीय है! फिर श्रीराम ने एक भयावह बाण चुन लिया और उससे उसके रथ को और उसमें जुते तीव्रगामी अश्वों को ध्वस्त किया; उसके हाथ में रहे भयंकर धनु को तोड़ा और उसके कवच को भी नष्ट कर दिया। ५२१

❀ तेव रार्त्तॅळ मुनिवर्ह डिशैतॉरुज् जिलम्बुम्
ओविल् वाळ्त्तॉलि कार्क्कडन् मुळक्कॅन्न वोङ्गक्
काव डाविडु वल्लैये नीयॅनक् कणैयॊन्
ऱेवि नानव नॅयिऱुडै नॅडुन्दलै यिळन्दान् 522

तेवर् आर्त्तु ॲळ–देवों ने उठकर कोलाहल मचाया; मुनिवर्कळ्–मुनियों का; तिचै तॊऱुम्–दिशा-दिशा में; चिलम्पुम्–कहा हुआ; ओवु इल्–निरन्तर; वाळ्त्तु ऑलि–आशीर्वाद का स्वर; कार् कटल् मुळक्कु ॲन–काले समुद्र के गर्जन के समान; ओङ्क–भर उठा; वल्लैयेल्–समर्थ हो तो; इतु का अटा नी–इसको बचा रे तू; ॲन–कहकर; कणै ऑन्ऱु–एक बाण; एवितान्–चलाया; अवन्–उसने भी; ॲयिऱुटै नॅटुम् तलै–(भयंकर वक्र) दाँतों से युक्त अपना बड़ा सिर; इळन्तान्–गँवाया। ५२२

श्रीराम ने फिर एक अस्त्र छोड़ा। छोड़ते-छोड़ते उन्होंने ललकारा कि रे दुष्ट! हो सके तो तू बचा ले इसे। दूषण बेचारा क्या करता? उसने अपना सिर गँवाया। तब देव हर्षरव मचा उठे। चारों ओर ऋषियों ने साधुवाद और आशीर्वाद किया, जिसका स्वर काले समुद्र के गर्जन के समान सब ओर भर उठा। ५२२

❀ तम्बितलै यऱ्ऱपडि युन्दय रदन्शेय्
अम्बुपडै यैत्तुणि पडुत्तडु मऱिन्दान्
वॅम्बुपडै विऱ्कैविश यक्करन् वॅहुण्डान्
कॊम्बुतलै कट्टिय कॊलैक्करि कडुप्पान् 523

कॊम्पु तलै कट्टिय–जिसके दाँत, सिर जितना ऊँचा उगे हुए थे; कॊलै करि–उस भयंकर गज की; कटुप्पान्–समता करनेवाला; वॅम्पु पटै–भयंकर हथियार; विल्–धनुष को; कै–रखनेवाले हाथ का; विचय करन्–विजयी खर; तम्पि तलै अऱ्ऱ पटियुम्–भाई (दूषण) के सिर के कटने का प्रकार; तयरतन् चेय्–दशरथ के पुत्र के; अम्पु–बाणों का; पटैयै तुणि पटुत्ततुम्–उसकी सेना का नाश करना; अऱिन्तान्–जानकर; वॅकुण्टान्–नाराज हुआ। ५२३

विजयी खर को यह समाचार मिला। खर ऐसे खूनी गज के समान

भयंकर आकार का था, जिसके दाँतों के छोर सिर तक ऊँचे उगे थे। वह अपने हाथों में बड़े ही घातक हथियार और धनुष रखता था। उसके भाई दूषण का सिर कैसे कटा ? दशरथसुत, दाशरथी श्रीराम के बाणों ने राक्षस-सेना को कैसे हत कर मिटाया ? —यह उसने सुना। उसे अपार क्रोध हुआ। ५२३

❀ अन्दहत्तु मुट्किट वरक्करहड लोडुम्
शिन्दुरम् वयप्पुरवि तेर्दिशै परप्पि
इन्दुवै वळैक्कुमॅळि लिक्कुल मॅनत्तान्
वन्दुवरि विऱ्कैमद यानैयै वळैत्तान् 524

अन्तकत्तुम् उट्किट—यम को भी भयभीत करते हुए; अरक्कर् कटल् ओटुम्—राक्षसों की सेना के सागर के साथ; चिन्तुरम्—गजों; वय पुरवि—बलवान अश्वों; तेर्—रथों को; तिचै परप्पि—चारों दिशाओं में वितरित करके; इन्तुवै वळैक्कुम्—इन्दु को घेरनेवाले; ऍळिलि कुलम् ॲन्—मेघ-समूह के समान; वरि विल्कै—बन्धन-युक्त धनुर्धर-हस्त; मत यानैयै—मत्तगज-सम (श्रीराम) को; तान् वन्तु—स्वयं आकर; वळैत्तान्—घेर लिया (खर ने)। ५२४

वह तुरन्त उठकर अपनी सेना के साथ श्रीराम के पास आया और उसने अपनी सेना के साथ उन्हें घेर लिया। उस सेना में पदाति वीरों का दल सागर के समान था। उसमें गज, बलवान अश्व, रथ आदि की सेनाएँ भी थीं। वह सेना चन्द्र को घेर आनेवाले मेघमण्डलों के समान चारों ओर फैली रही। खर ने अपने दल-बल सहित धनुर्धर, मत्तगज-सम श्रीराम को घेरा। ५२४

❀ अडङ्गलिल् कॉडुन्दॊऴि लरक्करव् वनन्दन्
पडङ्गिऴि वुऱप्पडि पडप्पल विदप्पोर्
कडङ्गलुऴ् तडङ्गळिऱु तेर्परि कडावित्
तॊडङ्गिनर् नॆडुन्दहैयुम् वॆङ्गणै तुरन्दान् 525

अटङ्कल् इल्—अदम्य; कॊटुम् तॊऴिल्—दुराचारी; अरक्कर्—राक्षसों ने; अ अनन्तन्—उस अनन्तनाग के; पटम् किऴिवु उऱ—फनों को फाड़ते हुए; पटि पट—भूमि को मेटते हुए; पल वित—विविध; कटम् कलुऴ्—मद बहानेवाले; तटम् कळिऱु—बड़े हाथियों; तेर्—रथों और; परि—अश्वों को; कटावि—चलाते हुए; पोर् तॊटङ्कितर्—युद्ध आरम्भ किया; नॆटुम् तकैयुम्—विक्रमी प्रभु ने भी; वॆम् कणै—भयंकर अस्त्र; तुरन्तान्—चलाये। ५२५

वे अदम्य दुराचारी राक्षस घोर युद्ध करने लगे। भूमि का धारण करनेवाले आदिशेषनाग का फन ही फट गया; भूमि भी ध्वस्त हो गयी ! वे राक्षस विविध बड़े-बड़े गज हाँकते आये। वे गज अपने गालों पर

मदनीर वहा रहे थे। वीर अश्वों के साथ रथ चलाते आये। विक्रमी श्रीराम ने वलवान अस्त्र छोड़े। ५२५

तुडित्तन कडक्करि तुडित्तन परित्तेर्
तुडित्तन मुडित्तलै तुडित्तन तोडित्तोळ्
तुडित्तन मणिक्कुडर् तुडित्तन तशैत्तोल्
तुडित्तन कऴ्ऱुणै तुडित्तन विडत्तोळ् 526

कटम् करि तुटित्तन–(उनके लगने से) मत्तगज तड़पे; परि तेर्–अश्व-जुते रथ; तुटित्तन–उछले; मुटि तलै–किरीटधारी सिर; तुटित्तन–छटपटाये; तोटि तोळ्–वलयभूषित कन्धे; तुटित्तन–कटकर छटपटाये; मणि कुटर्–उनकी छोटी आँतें; तुटित्तन–फड़कीं; तचै तोल् तुटित्तन–मांससहित खालें फड़कीं; कळल् तुणै–पैरों के जोड़े; तुटित्तन–फड़के; इटम् तोळ्–बायें हाथ। ५२६

मत्तगज तड़पकर गिरे। रथ उछलकर गिरे और टूटे। अश्व छटपटाते हुए गिरे। किरीटधारी राक्षसों के सिर तड़पे। वलयधारी कन्धे लुढ़के। राक्षसों की छोटी आँतें फड़कीं। दोनों पैर फड़फड़ाये। बायें हाथ फड़के। (तुडित्तन = शरीर के अंग जब शरीर से कटकर अलग होते हैं, तब कुछ देर तक उछलते-गिरते, तड़पते हैं और छटपटाते हैं। या जीवित शरीर के अंगों का फड़कना भी कहते हैं।)। ५२६

❀ वाळिन्वनम् वेलिन्वनम् वार्शिलै वनन्दिण्
तोळिन्वन मॅन्ऩविै तुवन्ऱुनिरु दप्पेर्
आळिन्वन निन्ऱदनै यम्बिन्वन मॅन्नुम्
कोळिन् मळैवन्गुळु विलिऱ्कुऱै पडुत्तान् 527

वाळिन् वनम्–तलवारों का कानन (समूह); वेलिन् वनम्–बर्छियों का जंगल; वार् चिलै वनम्–दीर्घ धनुषों का वन; तिण् तोळिन् वनम्–सुदृढ़ कन्धों का समूह; अन्नवै तुवन्ऱु–वे सब खूब मिले रहे (जिसमें), उस; निरुत पेर् आळिन् वनम्–राक्षसों के वीरों का जंगल (अनीक); निन्ऱतनै–जो सामने खड़ा था, उसे; अम्पिन् वनम् ऍन्नुम्–शरों का वन रूपी; कोळिन्–बलवान; मळैयिन्–वर्षा द्वारा; कुळुविनिल् कुऱैपटुत्तान्–दल के दल श्रीराम ने काट गिराये। ५२७

युद्ध के मैदान में तलवारों की बहुलता थी। भालों का जंगल था। लम्बे धनुषों की भरमार थी। सबल कन्धों की विपुल भीड़ थी। इनसे भरी राक्षसों के पैदल वीरों की विशाल सेना थी। उसको श्रीराम ने शरों की वर्षा से ध्वस्त कर दिया। (तमिऴ में वनम् = वन, कानन या जंगल किसी चीज़ की भीड़ या बड़े वृंद को द्योतित करता है।)। ५२७

तानुरुवु कॉण्डदरु मन्दॅरि शरन्दान्, मीनुरुवु मेरुवै विरैन्दुरुवु मेलाम्
वानुरुवु मण्णुरुवुम् वाळुरुवि वन्दार्, ऊनुरुवु मॅन्नुमि दुणर्त्तवु मुरित्तो 528

तान् उरुवु कोण्ट तरुमम्–धर्मरूप श्रीराम के; तॆरि चरम् तान्–चुने हुए शर; मीन् उरुवुम्–नक्षत्रमण्डल को भेदकर जायँगे; मेरुवै विरैन्तु उरुवुम्–मेरु को तुरन्त भेद जायँगे; मेल् आन् वान् उरुवुम्–ऊपर के आकाश के आर-पार जायँगे; मण् उरुवुम्–भूमि को भी विद्ध कर जायँगे; वाळ् उरुवि वन्तार्–तलवार लेकर आनेवाले; ऊन् उरुवुम्–राक्षसों के शरीरों को निफर जायँगे; ऍन्नुतुम् इतु–यह बात; उणर्त्तवुम् उरित्तो–कहने अर्ह है क्या। ५२८

धर्मावतार श्रीराम के चुनकर प्रेषित शर तारामण्डलों को, मेरु को, आकाश को और भूमि को भी अनायास भेद चल सकते हैं। फिर तलवार-धारी राक्षसों के शरीरों को निफर सकते हैं—यह कहना क्या उनकी प्रशंसा करना होगा क्या ? । ५२८

अन्ऱिडर् विळैत्तवर् कुलङ्गळॊ डडङ्गच्
चॆन्ऱुलै वुऱुम्बडि तॆरिन्दुहणै शिन्दा
मन्ऱिडै नलिन्दुवलि योर्हळॊळि योरैक्
कॊन्ऱनर् कवर्न्दपॊरु ळिऱ्कडिदु कॊन्ऱान् 529

अन्ऱु–तव; इटर् विळैत्तवर्–कष्ट देनेवाले राक्षसों को; कुलङ्कळ् ओटु अटङ्क–कुल के साथ एक दम; चॆन्ऱु उलैवु उऱुम्पटि–जाकर मिटाते हुए; तॆरिन्तु कणै चिन्ता–श्रीराम ने चुनकर अस्त्र छोड़े तो; मन्ऱु इटै–न्यायालय में; वलियोर्–शक्तिमन्त; ऍळियोरै–दीनों को; नलिन्तु–त्रास देकर; कॊन्ऱवर्–मारकर; कवर्न्त पॊरुळिल्–जो धन ग्रस लेते हे, उसकी (मिटने की) से भी; कटितु–अधिक तीव्र गति से; कॊन्ऱान्–मारा। ५२९

श्रीराम ने अस्त्र चुनकर उन राक्षसों पर चलाया जो इनको कष्ट देने आये थे और इस सकल्प के साथ चलाया कि राक्षसों का उनके कुलों के साथ नाश हो। समझिए कि कोई सवल आदमी गरीब आदमी को सताता है। न्यायालय में भी उसके विरुद्ध झूठा मामला चलाता है। अन्त में उसको मारकर उससे धन ग्रस लेता है। तो वह धन नहीं टिकता। वह बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है। उससे भी अधिक तेजी से राक्षसों की सेना को श्रीराम के वाणों ने मिटा दिया। ५२९

❀ कडुङ्गर नॆन्ऩप्पॆयर् पडैत्त कऴल्वीरन्
अडङ्गलु मरक्करऴि वुऱ्ऱिड वळन्ऱान्
ऒडुङ्गलि ऩिणक्कुरुदि योदमदि नुळ्ळान्
नॆडुङ्गडलिन् मन्दर मॆनत्तमिय निन्ऱान् 530

ऒटुङ्कल् इल्–अक्षय; निण कुरुति ओतम् अतिल्–मांस और रक्त के सागर में; उळ्ळान्–जो रहा; नॆटुम् कटलिल्–बड़े (क्षीर-) सागर में; मन्तरम्–मन्दरपर्वत; ऍन–के समान; तमियन् निन्ऱान्–एकाकी जो खड़ा रहा; कटुम् करन् ऍन पॆयर् पटैत्त–प्रखर खर नामक विख्यात; कऴल् वीरन्–पायलधारी वीर; अरक्कर्

अटङ्कलुम्–सारे राक्षसों के; अऴिवु उऱ्ऱिट–मर-मिटने पर; अऴन्ऱान्–क्रुद्ध हुआ। ५३०

सेना-विहीन खर अक्षय मांस और रक्त के सागर के बीच में क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरु के समान खड़ा रहा। प्रखर और खर के नाम से विख्यात उस पायलधारी वीर ने देखा कि सारी सेना मिट गयी है। उसे अपार क्रोध हुआ। ५३०

❀ शॅङ्गणॅरि शिन्दवरि विऱ्पहऴि शिन्दप्
पॉङ्गुहुरु दिपपुणरि युट्पहैयु नॆञ्जन्
कङ्गमॊडु काहमिडै यक्कडलि नोडुम्
वङ्गमॆन लायदॊरु तेरिन्मिशै वन्दान् 531

चॅम् कण्–लाल आँखों से; ऎरि चिन्त–अंगारे से उगलते हुए; विल् पकऴि चिन्त–धनुष से बाण छोड़ते हुए; पॊङ्कु कुरुति पुणरि–उमड़नेवाले रक्त का सागर और; उऴ् पुकैयुम् नॆञ्चन्–धुआँ जिसमें था, ऐसे मन के साथ; कङ्कम् ओटु काकम् मिटैय–कंक के साथ कौए भी मिल आये; कटलिन् ओटुम् वङ्कम् ऎन्नल् आयतु–समुद्र में चलनेवाले पोतोपम; ऒरु तेरिन् मिचै–एक रथ पर; वन्तान्–आया। ५३१

उसकी लाल-लाल आँखों से अंगारे छूटे। धनुष ने शर छोड़े। रक्त सागर-सा उसके मन में उमग रहा था। उसके मध्य धुआँ उठ रहा था। खर समुद्र में चलनेवाले पोत के समान एक बड़े रथ पर सवार हो आया। उसके रथ के साथ कंक और काग उड़ते आ रहे थे। ५३१

❀ शॆऱुत्तिऱुदि यिऱ्पुवनि तीयवॆऴु तीयिन्
मऱत्तिन्वयि रत्तॊरुवन् वन्दणुहु मुन्दैक्
करुत्तमणि कण्डर्हड वुट्चिलै करत्ताल्
इऱुत्तवनुम् वॆङ्गणै तॆरिन्दत्त नॆदिर्न्दान् 532

इऱुतियिल्–युगान्त में; पुवनि तीय–भुवनों को जलाते हुए; चॆऱुत्तु ऎऴु–प्रचण्डता के साथ उठनेवाली; तीयिन्–आग के समान; मऱत्तिन् वयिरत्तु ऒरुवन्–वीरता और शत्रुता में अद्वितीय (खर); वन्तु अणुकुम् मुन्तै–आकर नियराये, इसके पहले ही; करुत्त मणि कण्टर्–नीलकण्ठ श्रीशिवजी के; कटवुऴ् चिलै–दिव्य (त्र्यंबक नामक) धनु के; इऱुत्तवनुम्–भंजक ने भी; वॆम् कणै तॆरिन्तत्तन्–तापक अस्त्र लेकर; ऎतिर्न्तान्–सामना किया। ५३२

खर भुवनों का अन्त करनेवाली युगान्त अग्नि के समान क्रूरता और वैर में अद्वितीय था। उसके अपने पास पहुँचने के पूर्व ही नीलकण्ठ शिवजी के धनु के भंजक श्रीराम ने बाण चुन लिये। फिर वे युद्धसन्नद्ध हो उसके सामने आये। ५३२

तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन्न वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यरक्कर्पदि यॅय्दान्
तीयुरुव कालविशैय शॅव्वियन्न वॅव्वाय्
आयिरम् वडिक्कणै यिरामनु मरुत्तान् 533

ती उरुव–अग्नि के आकार के; काल विचैय–वायु की-सी गति के; चॅव्वि अन्न–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–भयंकर रूप से तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण शर; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; ऍय्तान्–चलाये; इरामनुम्–श्रीराम ने भी; ती उरुव–अग्नि रूपी; काल् विचैय–पवनगति; चॅव्वियन–श्रेष्ठ; वॅम् वाय्–तीक्ष्णमुख; आयिरम् वटि कणै–सहस्र तीक्ष्ण बाण; अऱुत्तान्–चलाकर उनको काट दिया। ५३३

खर ने एक सहस्र शर चलाये। वे शर ज्वलन्त अग्नि के आकार के थे। पवनसम तेज चलनेवाले और तीक्ष्णमुखी थे। श्रीराम ने वैसे ही अग्नि रूपी, पवनगति, श्रेष्ठ और तीक्ष्णमुखी, एक सहस्र शर छोड़े और खर के अस्त्रों को काटकर मिटा दिया। ५३३

❀ ऊऴियॅरि यिऱ्कॊडिय पाय्पहऴि यॊन्बान्
एऴुलहि नुक्कुमॊरु नायहनु मॅय्दान्
शूऴ्शुडर् वडिक्कणै यवऱ्ऱॆदिर् तॊडुत्ते
आऴिवरि विऱ्करनु मन्नवै यऱुत्तान् 534

ऊऴि ऍरियिल् कॊटिय–युगान्त की अग्नि से भी अधिक क्रूर; पाय् पकऴि ऑन्पान्–तेज चलनेवाले नौ अस्त्र; एऴ् उलकिनुक्कुम् ऑरु नायकनुम्–सातों लोकों के श्रेष्ठ नायक श्रीराम ने; ऍय्तान्–खर पर चलाये; आऴि–मण्डलाकार; वरि विल्–बन्धनयुक्त धनु के; करनुम्–खर ने भी; अवऱ्ऱु ऍतिर्–उनके आगे; चुटर् चऴ्–ज्वलन्त; वटि कणै–तीक्ष्ण बाण; तॊटुत्ते–चलाकर; अन्नवै–उनको; अऱुत्तान्–काट दिया। ५३४

फिर सर्वलोकनायक श्रीराम ने प्रलयकालीन अग्नि के समान तापक और तेज चलनेवाले सात बाण खर पर चलाये। खूब मण्डलाकार झुके धनुष के धारक खर ने भी उनके विरुद्ध ज्वलन्त और तीक्ष्ण अस्त्र भेजकर उन्हें काट दिया। ५३४

❀ कळ्ळविनै मायमवर् कल्वियिन् विळैत्तान्
वळ्ळलुरु वैप्पहऴि मारियिन् मऱैत्तान्
उळ्ळमुलै वुऱ्ऱमर रोडिन्न रॊऴित्तार्
वॅळ्ळॅयि ऱ्रिदऴ्प्पिऱऴ वीरनुम् वॅहुण्डान् 535

कल्वियिन्–अपनी विद्या में; कळ्ळविनै–वंचनापूर्ण; माय अमर्–मायायुद्ध; विळैत्तान्–करके; वळ्ळल् उरुवै–उदार प्रभु श्रीराम के शरीर को; पकऴि मारियिन्–शर-वर्षा से; मऱैत्तान्–छिपा दिया (खर ने); अमरर्–देव; उळ्ळम् उळैवु उऱ्ऱु–

मन में व्याकुल होकर; ओटिनर्–भागे और; ऑळित्तार्–छिप गये; वीरत्तुम्–वीर श्रीराम ने; वॅळ् ऍयिरु–श्वेत दाँतों से; इतळ् पिऱळ–अधर को दबाते हुए; वॅकुण्टान्–कोप किया। ५३५

खर माया-विद्या में निपुण था। उसने कपटपूर्ण मायायुद्ध करके श्रीराम के श्रीशरीर को शर-वर्षा से छिपा दिया। देव इसको देखकर व्याकुल हुए और दूर भागकर छिप गये। वीर श्रीराम ने भी दाँत पीसते हुए क्रोध का अवलम्बन किया। ५३५

❀ मुडिप्पॅ निन्ऱॊरु मॊय्हणै यालॅनत्, तॊडुत्तु निन्ऱुयर् तोळुऱ वाङ्गिनान्
पिडित्त तिण्शिलै पेरहल् वानिडै, इडिप्पि नोशै पडक्कडि दिऱ्ऱदे 536

इन्ऱु–अभी; ऑरु मॉय् कणैयाल्–एक सारयुक्त वाण से; मुटिप्पॅन् ॲन्न–समाप्त कर दूँगा, यह कहते हुए; तॊटुत्तु निन्ऱु–संधान करके; उयर् तोळ् उऱ–उन्नत कन्धे तक; वाङ्किनान्–डोर खींचा; पिटित्त तिण् चिलै–उनसे ग्रस्त वलवान धनुष; पेर् अकल् वान् इटै–अति विस्तृत आकाश में; इटिप्पिन् ओचै–वज्र का-सा नाद; पट–उठाते हुए; कटितु इऱ्ऱतु–शीघ्र टूट गया। ५३६

श्रीराम ने कहा कि अब एक ही सारयुक्त वाण चलाकर खर का काम तमाम कर दूँगा। उन्होंने शर संधान कर डोर को ऐसा खींचा कि धनुष का छोर उनके कन्धे को स्पर्श करे। बस, वह वलवान धनुष आकाश के वज्र के समान उच्च स्वर निकालते हुए उसी दम भग्न हो गया। ५३६

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर् वीरन्विल्, इऱ्ऱ पोदु तुणुक्कमुऱ् ऱेङ्गिनार्
मऱ्ऱु वॅञ्जिलै यिन्मै मनक्कॊळा, अऱ्ऱ दालॅम् वलियॅन वञ्जिनार् 537

वॅऱ्ऱि कूऱिय वानवर्–(श्रीराम की) विजय के प्रशंसक देव; वीरन् विल् इऱ्ऱ पोतु–वीर श्रीराम के धनुष के टूटने पर; तुणुक्कम् उऱ्ऱु–डरकर; एङ्कितार्–दुखी हुए; मऱ्ऱुम् वॅम् चिलै इन्मै–अन्य किसी धनुष का अभाव; मनम् कॊळा–मन में सोचकर; ऍम् वलि अऱ्ऱतु–हमारा वल मिटा; ॲन–ऐसा; अञ्चिनार्–भयभीत हुए। ५३७

देव श्रीराम की विजय की प्रशंसा करते रहे। अब उन्होंने देखा कि श्रीवीरराघव का धनुष टूट गया है। कोई दूसरा धनुष नहीं है। वे निस्सहाय खड़े हैं। उन्हें संशय और डर हो गया कि अब हमारा बल गया! । ५३७

❀ ऍन्नु मात्तिरत् तेन्दिय कार्मुहम्, चिन्न मॅन्ऱुन् दनिमैयुञ् जिन्दियान्
मन्नर् मन्नवन् शॅम्मल् मरबिनाल्, पिन्नु ऱत्तन् पॅरुङ्गर नीट्टिनान् 538

ऍन्तुम् मात्तिरत्तु–उनके ऐसा कहते समय; मन्तर् मन्तवन्–राजाधिराज के; चॅम्मल्–पुत्र श्रीराम ने; एन्तिय कार्मुकम्–अपना गृहीत कार्मुक; चिन्तम् ॲन्ऱुम्–टूट गया, इसकी ओर; तनिमैयुम्–अपनी (एकाकी) निस्सहाय स्थिति की;

चिन्तियान्–चिन्ता न करके; मरपिनाल्–पूर्व संकेत के अनुसार; तन् पॅरुम् करम्–अपना बड़ा हाथ; पिन् उऱ–पीछे की तरफ़; नीट्टिनान्–बढ़ाया। ५३८

देव इस प्रकार कह ही रहे थे कि उधर श्रीराम ने एक अद्भुत कार्य किया। दाशरथी ने किंचित भी चिन्ता नहीं की कि मेरा कोदण्ड टूट गया है और मैं विना हथियार के एकाकी खड़ा हूँ। उन्होंने अपना दीर्घ हाथ पीछे की ओर बढ़ाया। उसका पूर्वसंकेत का कोई अर्थ था। ५३८

❀ कण्डु निन्ऱ करुत्तुणर्न्द दानैन, अण्डर् नादन् ऱडक्कैयि नत्तुणै
पण्डु पोर्मऴु वाळियैप् पण्बिनाल्, कॉण्ड विल्लै वरुणन् कॊडुत्तनन् 539

कण्टु निन्ऱ–उस स्थिति को देखते हुए खड़ा; करुत्तु उणर्न्तान् अॅन्न–उनका अभिप्राय समझ गया हो ऐसा; पण्टु–पहले; पोर् मऴु आळियै–युद्ध में परशु का प्रयोग करनेवाले परशुराम से; पण्पिनाल्–अपने सामर्थ्य से; कॊण्ट–गृहीत; विल्लै–धनु को; अत्तुणै–तब; वरुणन् तटक्कैयिल् कॊटुत्तनन्–वरुण ने श्रीराम के विशाल हाथ में दिया। ५३९

वरुण यह सब देखते हुए पीछे खड़े थे। पहले जब श्रीराम ने युद्धोपयोगी परशु के धारक परशुराम को हराया था और अपने सामर्थ्य से उनका धनुष ले लिया था, तब उन्होंने वह कार्मुक वरुण के पास दे रखा था। वरुण ने श्रीराम का मन जान लिया और वह धनु श्रीराम के हाथ में धर दिया। ५३९

❀ कॊडुत्त विल्लैयक् कॊण्ड निऱत्तिनान्
अॅडुत्तु वाङ्गि वलङ्गॊण् डिडक्कैयिऱ्
पिडित्त पोदु नॅऱिपिऴैत् तार्क्कॅलाम्
तुडित्त वालिडक् कण्णोडुन् दोळ्हळे 540

कॊटुत्त विल्लै–वरुण-दत्त धनु को; अ कॊण्टल् निऱत्तिनान्–उन मेघश्याम ने; अॅटुत्तु–लेकर; वलम् कॊण्टु वाङ्कि–जोर से झुकाकर; इट कैयिल् पिटित्त पोतु–जब अपने बायें हाथ में धरा, तब; नॅऱि पिऴैत्तार्क्कु अॅल्लाम्–दुराचारी सभी राक्षसों के; इटम् कण् ओटु तोळ्कळ्–बाईं आँखें और उनके साथ बाईं भुजाएँ; तुटित्त–फड़क उठीं। ५४०

मेघवर्ण श्रीराम ने वरुण-दत्त धनु को हाथ में लिया। उसको झुकाकर अपने बायें हाथ मे धरा तो दुराचारी सभी राक्षसों की बायीं आँखें बायीं भुजाओं के साथ फड़क उठीं। ५४०

❀ एऱ्ऱि नाणिनै यामुन् नॅडुत्तदु, कूऱ्ऱि नारुङ् गुनिक्कक् कुनित्तॅदिर्
आऱ्ऱ लानव नाळियन् देर्शरम्, नूऱ्ऱि नानुण् पॊडिपड नूऱिनान् 541

अतु अॅटुत्तु–उस चाप को लेकर; इमैया मुन्–पलक मारती देर से पहले; नाण् एऱ्ऱि–प्रत्यंचा चढ़ाकर, कूऱ्ऱिनारुम् कुनिक्क–यमदेव को भी नाचने देते हुए;

कुनित्तु–उसको झुकाकर; अँतिर् आऱ्ऱिऩाऩ् अवऩ्–सामने लड़ने आगत उस (खर) के; आऴि अम् तेर्–चक्रसहित सुन्दर रथ को; चरम् नूऱ्ऱिऩाल्–सौ शरों से; नुण् पॊटि पट–बारीक चूर्ण करते हुए; नूऱिनाऩ्–मिटा दिया। ५४१

श्रीराम ने पलक मारने के समय के अन्दर धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायी। शर संधान करके धनु को झुकाया। यम को आनन्द-नृत्य-मग्न करते हुए सौ अस्त्र चलाये। उनके सामने आये खर का सुन्दर पहियेदार रथ चूर-चूर हो गया। रथ ध्वस्त हो गया। ५४१

❀ अँन्दि रत्तडन् देरिऴन् दानिऴिन्, दन्द रत्तिडै यार्त्तॆऴुन् दम्बॆल्लाम्
सुन्द रत्तनि विल्लिदन् ऱोळॆनुम्, मन्द रत्तिन् मऴैयिऩ् वऴङ्गिनाऩ् 542

अँन्तिर तटम् तेर्–यन्त्रचालित विशाल रथ; इऴन्ताऩ्–खोकर; इऴिन्तु–(खर) उतरकर; आर्त्तु–नारे लगाते हुए; अन्तरत्तु इटै–अन्तरिक्ष में; ॲऴुन्तु–उठ जाकर; अम्पु ऍलाम्–अपने सारे बाण; चुन्तर् तनि विल्लि तऩ्–सुन्दर कोदण्डपाणी के; तोळ् ऍनुम्–भुजाओं रूपी; मन्तरत्तिल्–मन्दरपर्वत पर; मऴैयिऩ्–वर्षा के समान; वऴङ्किनाऩ्–बरसाया। ५४२

खर का रथ यन्त्र-चालित था। वह नष्ट हो गया। खर उतरा और अन्तरिक्ष में खड़ा हो गया। भयंकर गर्जन करते हुए उसने अपने पास रहे सभी अस्त्रों को अद्वितीय सुन्दर कोदण्डपाणी पर वर्षा के समान बरसा दिया। ५४२

❀ ताङ्गि निन्ऱ तयरद रामनुम्, तूङ्गु तूणि यिडैच्चुडु शॅञ्जरम्
वाङ्गु हिन्ऱ वलक्कैयै वाळियाल्, वोङ्गु तोळॊडुम् पारिडै वीऴ्त्तिनान् 543

ताङ्कि निन्ऱ–उन अस्त्रों का सामना करते हुए जो खड़े रहे, उन; तयरतरामऩुम्–दशरथ के पुत्र, श्रीराम ने भी; तूङ्कु तूणियिटै–लटकनेवाले तूणीर में से; चुटु चॆम् चरम्–तापक और श्रेष्ठ बाण; वाङ्कुकिन्ऱ–लेनेवाले; वल कैयै–दक्षिण हस्त को; तोळ् ओटु–कन्धे के साथ; पार् इटै–भूमि पर; वीऴ्त्तिनाऩ्–काटकर गिरा दिया। ५४३

श्रीराम ने उनको धैर्य के साथ धारण किया। फिर उन्होंने खर के उस हाथ को भुजमूल से काटकर गिराया जो पीठ पर बँधे तूणीर से अस्त्र ले रहा था। ५४३

❀ वलक्कै वीऴ्दलु मऱ्ऱैक्कै याल्वॆऱ्ऱि
उलक्कै वानत् तुरुमॆन्न वोच्चिनान्
इलक्कु वऱ्कुमुन् वन्द विरामनुम्
विलक्कि नानीरु वॆङ्गदिर् वाळियाल् 544

वलम् कै–दक्षिण हस्त के; वीऴ्तलुम्–अलग हो गिरने पर; मऱ्ऱै कैयाल्–दूसरे हाथ से; वॆऱ्ऱि उलक्कै–विजयदायक मूसल को; वाऩत्तु उरुम् ॲऩ्ऩ–आकाश

में वज्र के समान; ओच्चिनान्-(खर ने श्रीराम पर) फेंका; इलक्कुवर्कु मुन् वन्त इरामतुम्-लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने भी; ऑरु वॅम् कतिर् वाळियाल्-एक भयकर ज्वलन्त वाण से; विलक्किनान्-उसको रोका। ५४४

खर का दक्षिण हस्त कटकर गिर गया। तो उसने वायें हाथ से एक विजयदायक मूसल उठाकर आकाश के वज्र के समान श्रीराम पर फेंका। लक्ष्मण के अग्रज श्रीराम ने जाज्वल्यमान और संतापक एक अस्त्र से उसको वीच में रोक दिया। ५४४

❀ विराव रुङ्गडु वॅळ्ळॅयि ऱिऱ्ऱपिन्, अराव ऴन्ऱ तनैयव नाऱ्ऱलान्
मराम रङ्गैयिन् वाङ्गि वन्दॅय्दिनान्, इराम नङ्गोर् तनिक्कणै येविनान् 545

अरा-एक सर्प; कटु विरा वरु-विष से पूरित रहनेवाले; वॅळ् ऍयिऱु-श्वेत दाँतों के; इऱ्ऱ पिन्-नष्ट हो जाने के वाद; अळऩ्ऱतु अनैयवन्-जैसे क्रुद्ध होता है, वैसा क्रुद्ध; आऱ्ऱलान्-शक्तिशाली (खर); मरामरम्-सालवृक्ष; कैयिल् वाङ्कि वन्तु-अपने हाथ में ले आकर; ऍय्तिनान्-पहुँचा; इरामन्-श्रीराम ने; अङ्कु-वहाँ; ओर् तनि-एक अद्वितीय; कणै-वाण; एविनान्-चलाया। ५४५

खर उस सर्प के समान विफर उठा, जिसका विषैला श्वेत दाँत उखाड़ लिया गया हो। उस पराक्रमी खर ने एक सालवृक्ष ले लिया। उसके साथ जब वह लड़ने आया तो श्रीराम ने अप्रमेय एक शर छोड़ा। ५४५

❀ वरम रक्कन् पटॅत्तलिन् मायैयिन्, उरमुडैत् तन्मै यालुल हेऴैयुम्
परमु ऱुत्तिय पावत्ति नाल्वलक्, करमॅ नक्करन् कण्डमुऱ् ऱानरो 546

अरक्कन्-(रावण) राक्षस की; वरम् पटॅत्तलिन्-वर-प्राप्ति से; मायैयिन्-वंचना से; उरम् उटै तन्मैयाल्-वलवान होने से; उलकु एऴैयुम्-सातों लोकों को; परम् उऱुत्तिय-वहुत त्रस्त करनेवाले; पावत्तिनाल्-पापकृत्यों से; वलम् करम् ॲन-दाहिने हाथ के समान; करन्-खर; कण्टम् उऱ्ऱान्-खण्डित हुआ। ५४६

खर रावण का दाहिना हाथ था। अब वह मर गया। यह उसी रावण के किए पाप का फल था। रावण को वर प्राप्त थे और वह मायावी राक्षस था। वर के वल पर उसने अपने कपटी स्वभाव के कारण सातों लोकों पर सितम ढाया। उसका ही फल खर की मौत था। ५४६

❀ आर्त्तॅ ळुन्दन राडिनर् पाडिनर्, तूर्त्त मैन्दनर् वानवर् तूय्मलर्
तीर्त्त नुम्बॉलिन् दानगदि रोन्ऱिशै, पोर्त्त मॅन्बनि पोक्किय पोलवे 547

वानवर्-सुरलोग; आर्त्तु ॲळुन्तनर्-हर्षरव कर उठे; आटिनर् पाटिनर्-नाचे-गाये; तूय् मलर्-पवित्र फूल; तूर्त्तु अमैन्तनर्-वरसाये और विश्रब्ध खड़े रहे; तीर्त्तनुम्-तीर्थ श्रीराम भी; कतिरोन्-सूर्य; तिचै पोर्त्त-दिशाओं को ढँके रहे; मॅन् पनि पोक्कियतु-नरम कुहरे को दूर कर शोभित रहे; ॲन्न-जैसे; पॊलिन्तान्-प्रभावान वने रहे। ५४७

खर की मृत्यु पर देव आनन्द का कोलाहल कर उठे। वे नाचे और गाये। पवित्र कल्पसुमन बरसाकर वे प्रसन्नचित्त खड़े रहे। तीर्थ श्रीराम भी दिशाओं में भरे कुहरे को दूर कर शोभनेवाले सूर्यदेव के समान प्रभावान दिखे रहे। ५४७

❀ मुनिवर् वन्दु मुऱैमुऱै मॉय्प्पुऱ, इनिय शिन्दै यिरामनु मेहिनान्
अनिह वॅञ्जमत् तारुयिर् पोहत्तान्, तनियि रुन्द वुडलन्न तैयल्बाल् 548

मुनिवर् मुऱै मुऱै वन्तु–मुनिगण बारी-बारी से आये और; मॉय्प्पु उऱ–घेरे खड़े रहे; इनिय चिन्तै–प्रसन्नचित्त; इरामनुम्–श्रीराम भी; अनिक वॅम् चमत्तु–राक्षस-सेना के साथ कठोर युद्ध में; तन् आर् उयिर् पोक–अपने प्यारे प्राणों को भेजकर; तनि इरुन्त–अलग रहे; उटल् तान् अन्न–शरीर ही के समान जो रहीं; तैयल् पाल्–उन देवी सीताजी के पास; एकिनान्–पधारे। ५४८

ऋषियों ने दलों में आकर श्रीराम को घेर लिया। तब श्रीराम वहाँ से चले और देवी सीता के पास पधारे। देवी सीता निष्प्राण शरीर के समान थीं, क्योंकि उनके प्यारे प्राण राक्षसों के साथ कठोर युद्ध में चले गये थे। ५४८

❀ विण्णि नीङ्गिय वॅय्यवर् मेनियिल्, पुण्णि नीरुम् पॉडिहळुम् बोयुह
अण्णल् वीरनैत् तम्बियु मन्नमुम्, कण्णि नीरिनिऱ् पादङ् गळुविनार् 549

विण्णित् नीङ्किय–(वीरों के प्राप्य) स्वर्ग में जो गये; वॅय्यवर्–उन आततायी राक्षसों के; मेनियिल्–शरीर पर; पुण्णित् नीरुम्–व्रणों से निकला रक्त-जल और; पॉटिकळुम्–धूलि; पोय् उक–पोंछते हुए; अण्णल् वीरनै–महिमावान वीर श्रीराम को; तम्पियुम् अन्नमुम्–उनके लघु भाई लक्ष्मण ने और हंसिनी (-सी सीताजी) ने; कण्णित् नीरिनाल्–आँखों के जल से; पातम् कळुविनार–पाद-प्रक्षालन कराया। ५४९

राक्षस वीर मरकर स्वर्ग चले गये। उनके शरीरों पर लगे व्रणों से जो रक्त-जल बहा उससे श्रीराम का शरीर लिप्त हो गया। उनके शरीर पर धूलि भी जमी हुई थी। उनके लघु भ्राता ने और उनकी देवी हंसिनी-सी सीता ने श्रीराम को देखकर भावातिरेक से अश्रुजल बहाया, जिससे श्रीराम के श्रीचरण धुल गये। ५४९

❀ मूत्त मॉन्ऱिन् मुडिन्दवर् मॉय्पुणीर्, नीत्त मोडि नॅडुन्दिशै नेरुऱक्
कोत्त वेलैक् कुरलॅन वानवर्, एत्त वीर निनिदिरुन् दानरो 550

मूत्तम् ऑन्ऱिन्–एक मुहूर्त में; मुटिन्तवर्–जो मरे; मॉय्–(उनका) एकत्रित; पुण्णीर् नीत्तम्–व्रण-जल रक्त का प्रवाह; कोत्त वेलै–मिश्रित समुद्रों के; कुरल् अॅन–घोष के समान; ओटि–बहकर; नॅटुम् तिचै–लम्बी दिशाओं के अन्तों से; नेर् उऱ–टकराकर मुड़ आया; वानवर् एत्त–देवों ने स्तुति की, इस प्रकार; वीरन्–रघुवीर श्रीराम; इनितु इरुन्तान्–ससन्तोष रहे। ५५०

एक ही मुहूर्त में सारे राक्षस मर गये थे। उनके शरीरों से इतना रक्त बहा कि सागर-सा बन गया और उससे सम्मिलित सागरों के गर्जन के समान गर्जन निकला। उसका प्रवाह सभी दिगन्त तक गया और टकराकर मुड़ आया। श्रीराम की विजय पर देव इठलाये। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। श्रीराम विश्रब्धमन और सुख के साथ रहे। ५५०

❀ इङ्गु निऩ्ऱु दुरैत्तु मिरावणऩ्, तङ्गै तऩ्गै वयिऱु तहर्त्ततऩऴ्
कङ्गु लऩ्ऩ करऩैत्त ऴीइनॆडुम्, पॊङ्गु वॆङ्गुरु दिप्पुरण् डाळरो 551

इङ्कु निऩ्ऱु–यहाँ जो स्थिति है; उरैत्तुम्–कहें; इरावणऩ् तङ्कै–रावण की बहिन ने; तऩ् कै–अपने हाथों से; वयिऱु तकर्त्ततऩऴ्–अपना पेट पीट लिया; कङ्कुल अऩ्ऩ–रात के समान काले; करऩै–खर को; तऴीइ–आलिंगन करके; पॊङ्कु नॆटुम्–उमड़नेवाले अधिक; वॆम् कुरुति–गरम रक्त में; पुरण्टाळ्–लोटी। ५५१

अब हम (कवि) यहाँ जो हुआ वह कहें। रावण की बहिन ने अपने हाथों से अपना पेट पीट लिया। रात के समान काले खर का आलिंगन किया। उसके शरीर पर, वह निकलनेवाले अधिक रक्त के प्रवाह में लोटी। ५५१

❀ आक्कि ऩेऩ्मनत् ताशैयिव् वाशैयॆऩ्, मूक्कि ऩोडु मुडिय मुडिऩ्दिलेऩ्
वाक्कि नालुङ्गळ् वाऴ्वैयु नाळैयुम्, पोक्कि ऩेऩ्कॊडि येऩ्ऩॆऩ्ऱु पोयिऩाळ् 552

मऩत्तु–अपने मन में; आचै आक्किऩेऩ्–(श्रीराम के प्रति) प्रेम किया; अ आचै–वह इच्छा; ऎऩ् मूक्किऩोटु–मेरी नाक के साथ; मुटिय–चली जाय; मुटिऩ्तु इलेऩ्–ऐसा मरी नहीं; वाक्किऩाल्–अपने वचनों से; उङ्कळ् वाऴ्वैयुम्–तुम लोगों का जीवन और; नाळैयुम्–आयु को; पोक्किऩेऩ्–समाप्त कर दिया; कॊटियेऩ्–निर्मम हूँ; ऎऩ्ऱु–कहती हुई; पोयिऩाळ्–वहाँ से चली। ५५२

वह उठी। अपने को धिक्कारने लगी। मैंने श्रीराम से प्रेम किया। वह इच्छा मेरी नाक के साथ चली जाती तो कोई बात नहीं। वहीं तक बात समाप्त करते हुए मैं मरी नहीं। अपने वचनों से मैंने तुम्हें युद्ध में प्रेरित किया और तुम्हारा जीवन और आयु खतम हो गयी। बड़ी निर्मम निकली मैं। ऐसा विलाप करती हुई वह वहाँ से चली गयी। ५५२

❀ अलङ्गल् वेऌकै यरक्करै याशऌक्
कुलङ्गळ् वेरऱुप् पाऩ्गुऱित् ताऴ्हडल्
कलङ्गु ऱैत्तॆऴु कालॆऩक् कालिऩाल्
इलङ्गै मानहर् नॊय्दिऱ्चॆऩ् ऱॆय्दिऩाळ् 553

अलङ्कल् वेल् कै अरक्करै–माला से अलंकृत भाले हाथ में लिये रहनेवाले राक्षसों को; आचु अऱ–निर्मूल करते हुए; कुलङ्कळ् वेर् अऱुप्पाऩ्–राक्षसकुलों की जड़ काटने का; कुऱित्तु–संकल्प लेकर; आऴ् कटल् कलम्–गहरे सागर में पोत को;

कुरैत्तु अॅळु—अस्त-व्यस्त कर उठनेवाले; काल् ॲन्न—झंझे के समान; कालित्ताल्—पैदल चलकर; नोय्तिन्—आयास के साथ; इलङ्कै मा नकर् चेन्ऱु—लंकानगर जा; अॅय्तित्ताळ्—पहुँची। ५५३

वहाँ कहाँ रुकी? उसका आशय माला से अलंकृत भाले लिये रहनेवाले राक्षसों को निर्मूल करने का, उनके कुलों की जड़ ही खोद लेने का था! इसलिए वह आयास के साथ पैदल चली और लंका जा पहुँची। वह इस कार्य में गहरे समुद्र में फँसे पोत को हिला देनेवाली आँधी के समान लगी। ५५३

7. शूर्प्पणहै शूळ्च्चिप् पडलम् (शूर्पणखा-योजना पटल)

इरैत्तनॅडुम् बडैयरक्क रिऱन्ददत्तै मऱन्ददळ्बो रिरामन् ऱुङ्ग
वरैप्पुयत्ति लिडैक्किडन्द पेराशै मत्तङ्गवऱ्ऱ वाऱ्ऱा ळाहित्
तिरैप्परवैप् पेरहळित् तिरुनहरिऱ् कडिदोडिच् चीदै तन्मै
उरैप्पॅनॅनच् चूर्प्पणहै वरविरुन्दा निरुन्दपरि शुरैत्तु मन्नो 554

इरैत्त नॅडुम् पडै—शोर मचाते हुए जो चली उस सेना के; अरक्कर्—(खर मिलाकर) सभी वीर; इऱन्ततु—मरे, वह बात; मऱन्तताळ्—भूल गई; पोर् इरामन्—युद्ध-चतुर श्रीराम के; तुङ्क—उन्नत; वरै पुयत्तिन् इटै—पर्वत-सम कन्धों में; किटन्त—बँधे रहे; पेर् आचै—गम्भीर प्रेम के; मत्तम् कवऱ्ऱ—मन को व्यथित करने से; आऱ्ऱाळ् आकि—असहनशील बनकर; तिरै परवै—तरंग-भरा समुद्र; पेर् अकळि—बड़ी खाई के रूप में जिसे प्राप्त था; तिरु नकरिल् कटितु ओटि—उस श्रीनगर में सवेग दौड़कर; चीतै तन्मै उरैप्पॅन्—सीता का लक्षण बताऊँगी; ॲन्न—सोचकर; चूर्प्पणकै वर—शूर्पणखा के आते समय; इरुन्तान्—वहाँ विद्यमान; इरुन्त परिचु—श्रीरावण के रहने का प्रकार; उरैत्तुम्—कहेंगे। ५५४

शूर्पणखा अब यह बात भूल गयी कि खर और बड़ी धूम मचानेवाली उसकी सेना विनष्ट हो गयी। उसका मन युद्ध-कला-प्रवीण श्रीराम के उन्नत, पर्वतसम मनोरम कन्धों से आकृष्ट हो गया। श्रीराम पर उसका प्रेम उसे व्यग्र करने लगा। वह संयम नहीं रख सकी, काम-ताप सह नहीं सकी। उसने यह सोचा कि मैं लंका में, जिसके चारों ओर तरंगाकुल समुद्र ही खाई के रूप में पड़ा है और जो श्रीसमृद्ध है, शीघ्र जाऊँगी और रावण के पास सीता की स्थिति, उसके लक्षण आदि कहूँगी। जब वह उधर आयी तब लंकेश रावण किस ठाट के साथ शोभायमान था, उसका वर्णन करेंगे। ५५४

निलैयिला वुलहिनिडै निन्ऱत्तवुन् दिरिन्दनवु नॅऱियि नीन्द
मलरिन्मे नान्मुहऱ्कुम् वहुप्परिय नुन्निप्पदॉरु वरम्बि लाद
उलैविला वहैयिळैत्त दरुममॅन निनैन्दवेला मुदवुन् दच्चन्
पुलनॅलान् दॅरिप्पदॉरु पुन्नैमणिमण् डबमदनिऱ् पॉलिय मन्नो 555

उलकिन् इटै–इस भूमि में; निलै इला–नश्वर; निन्ऱनवुम्–स्थावर; तिरिन्तनवुम्–और जंगम; नॅऱियिन् ईन्त–यथाक्रम सृष्ट करनेवाले; मलरिन् मेल्–कमल पर आसीन; नान् मुकऩ्कुम्–चतुर्मुख को; वकुप्परिय–जिसकी सृष्टि नहीं हो सकती; नुनिप्पतु ऒऩ्ऱु वरम्पु इलात–सूक्ष्म रूप से जिसकी सीमा माप करना कठिन है; तरुमम् अँन्न–उस धर्म के समान; निनैन्त ऎलाम् उतवुम्–इच्छित सभी पदार्थ देनेवाले; तच्चन्–देवशिल्पी विश्वकर्मा के; पुलन् ऎलाम् तॅरिप्पतु–सारे सामर्थ्य का प्रदर्शक; पुनै–सुन्दर; उलैवु इला वकै–अमिट रूप से; इऴैत्त–रचित; ऒऩ्ऱु मणि मण्टपम् अतऩिल्–एक मणिमण्डप में; पॊलिय–शोभायमान रहते (रावण के)। ५५५

रावण एक मणिमण्डप में विराजमान था। वह मणिमण्डप देवशिल्पी विश्वकर्मा से बनाया गया था। वह विश्वकर्मा की सारी शक्ति का, शिल्पशास्त्र के गम्भीर और सूक्ष्म ज्ञान का पूर्ण परिचायक था। नश्वर विश्व और उसमें रहनेवाले स्थावर और जंगम —सभी जीवों के सृष्टिकर्ता, कमलवासी ब्रह्मा के लिए भी वह मण्डप अभाव्य था। वह धर्म के समान सभी मनोरथ पूरा करने की शक्ति रखता था। वह बड़ा ही सुन्दर था और अक्षय रूप से शोभायमान रहनेवाला था। ५५५

पुलियिनद ळुडैयानुम् पॊन्नाडै पुनैन्दानुम् पूवि नानुम्
नलियुमनन् तारल्लर् देवरिलिङ् गियावरिनि नाट्ट वल्लार्
मॅलियुमिडै तडिक्कुमुलै वेयिळन्दोट् चेयरिक्कण् वॅन्ऱि मादर्
वलियनॅडुम् बुलवियिनुम् वणङ्गाद महुडनिरै वयङ्ग मन्नो 556

पुलियिन् अतळ् उटैयानुम्–बाघम्बरधारी; पॊन् आटै पुनैन्तानुम्–पीताम्बरधारी; पूविनानुम्–और कमलवासी; नलियुम् मनत्तार्–(रावण के पराक्रम, वैभव आदि देख) आतंकित थे; अल्लर् तेवरिल्–वे ही नहीं तो अन्य देव; इङ्कु–यहाँ; यावर्–कौन; इनि नाट्टवल्लार्–अब इसकी समता कर सकते हैं; मॅलियुम् इटै–क्षीण-कटि; तटित्त मुलै–पीन स्तन; वेय् इळम् तोळ्–बाँस के समान और बाल कन्धे; चेय् अरि कण्–लाल डोरों से युक्त आँखें, इनसे शोभित; वॅन्ऱि मातर्–मनोहारिणी स्त्रियों के; वलिय नॅटुम् पुलवियिनुम्–शान्त करने में कठिन और लम्बी रूठन के अवसर में भी; वणङ्कात–जो नहीं झुकती; मकुटम् निरै–मुकुटपंक्ति; वयङ्क–(के) शोभते। ५५६

(५५५वें पद से ५७६वें पद तक रावण की सभा में स्थिति का वर्णन है। पूर्णक्रिया पद आखिरी पद में आता है।) स्वयं बाघम्बर शिव, पीताम्बर विष्णु और कमलवासी ब्रह्मा उसके ठाट-बाट से उद्विग्न थे यानी उनका स्थान भी इसके सामने घटा हुआ लगता था। फिर कौन देव हैं जो इसकी समानता कर सकें ? वह बड़ा अभिमानी था। क्षीण-कटि, पीन-स्तना, छोटे बाँस-सी भुजाओं और लाल डोरों के साथ मनोरम आँखों से भूषित और विजयशीला स्त्रियो की लम्बी और दुर्वह रूठन के अवसर पर भी उसके किरीट (सिर) नहीं झुकते थे। ऐसे (सिरों के) किरीटों की पंक्ति दृश्यमान करते हुए रावण विराजमान था। ५५६

वण्डलङ्गु नुदर्ऱिशैय वयक्कळिर्ऱिन् मरुप्पोडिय वडर्त्त पोर्ऱोळ्
विण्डलङ्ग ळुऱवीङ्गि योङ्गुदय माल्वरैयिन् विळङ्ग मीदिल्
कुण्डलङ्गळ् कुलवरैयै वलम्वरुवा निरविहोळुङ् गदिर्शूळ् कर्ऱै
मण्डलङ्गळ् पन्निरण्डु नालैन्दाय्प् पोलिन्ददॆन्न वयङ्ग मन्नो 557

वण्टु अलङ्कु नुतल्–भ्रमरावृत भालों के; तिचैय–दिशाओं में स्थित; वय–विजयशील; कळिर्ऱिन्–हाथियों के; मरुप्पु ओटिय–दाँतों को तोड़ते हुए; अटर्त्त–(उन गजों से) जिन्होंने टकराया; पोन् तोळ्–वे मनोरम कन्धे; विण् तलङ्कळ् उऱ–आकाश के लोकों में जा लगें, ऐसा; वीङ्कि–फूलकर, बढ़कर; ओङ्कु–उन्नत; उतय माल् वरैयिन्–उदयगिरि के समान; विळङ्क–दृश्यमान रहे और; मीतिल्–उन पर; कुण्टलङ्कळ्–कुण्डल; कुल वरैयै–मेरुपर्वत को; वलम् वरुवान्–परिक्रमा करनेवाले; इरवि–सूर्य के; कोळुम्–पुष्कल; कतिर् चूळ्–किरणसंकुल; कर्ऱै–पुंज; मण्टलङ्कळ्–मण्डल; पन्निरण्टुम्–बारह; नालु ऐन्ताय्–(चार के पाँच) बीस बनकर; पोलिन्तनु अॆन्न–प्रकाशमय विद्यमान रहते हों जैसे; वयङ्क–दृश्यमान रहे। ५५७

उसके कन्धों ने दिग्गजों के साथ युद्ध करते हुए उनके दाँतों को तोड़ा था। दिग्गज इतने मदमत्त थे कि हमेशा भ्रमर उनके भालों पर मँड़राते थे। ऐसे बलवान कन्धे बहुत ही दर्शनीय और फूलकर उन्नत उदयगिरि के समान शोभ रहे थे। कानों के कुण्डल, जो उनके कन्धों को स्पर्श करते हुए हिल रहे थे, किरण-पुंज बारह आदित्यों के समान प्रकाशमान थे जो बीस बन गये हों। ५५७

वाळुला मुळुमणियिन् वयङ्गोळियिन् ऱोहैवळङ्ग वयिरक् कुन्ऱत्
तोळॆलाम् बडिशुमन्द विडवरविन् बडनिरैयिर् ऱोन्ऱ वान्ऱ
नाळॆलाम् पडैदयङ्ग नाममनी रिलङ्गैयिर्ऱा नलङ्ग विट्ट
कोळॆलाङ् गिडन्दनॆडुञ् जिरैयन्न निरैयारङ् गुलव मन्नो 558

वाळ् उलाम्–उज्ज्वल; मुळु मणियिन्–बड़े-बड़े रत्नों की; वयङ्कु ओळियिन्–छिटकनेवाली कान्ति की; तोकै–राशि; वळङ्क–दृश्यमान रही; वयिर कुन्ऱ तोळ् अॆलाम्–वज्र गिरि-सम सब कन्धे; पटि चुमन्त–भू-भार-वाही; विट अरविन्–विषैले नाग के; पट निरैयिन्–फनों की पंक्ति के समान; तोन्ऱ–दिखाई दिये; नाम नीर् इलङ्कैयिल्–भयोत्पादक समुद्रजल सहित लंका में; तान् नलङ्क विट्ट–उससे आक्रान्त; कोळ् अॆलाम्–सब (नव) ग्रह; आन्ऱ–श्रेष्ठ; नाळ् अॆलाम्–सभी नक्षत्र; पुटै तयङ्क–पास-पास रहें, ऐसा; किटन्त–(बद्ध) पड़े रहे; नॆटुम् चिऱै अन्न–बड़ी कारा के समान; निरै आरम्–रत्नमय हार; कुलव–शोभ रहा था। ५५८

रावण अनेक आभरण पहने हुए था। उनमें जड़ित रत्न बड़े-बड़े थे और बड़े ही जाज्वल्यमान थे। उनकी ज्योतियों की राशि शोभित थी। उसके वज्रगिरिसम कन्धे भूभारवाही शेषनाग के फनों के समान दर्शनीय थे (वे रत्न उन फनों के ऊपर रहनेवाली मणियों के समान थे।)

उसने एक रत्नहार पहन रखा था, जो उस कारा के समान था जिसमें उसने ग्रहों और नक्षत्रों को हराकर डाल रखा था। यानी वह हार श्रेष्ठ और ज्वलन्त रत्नों का बना था। ५५८

❀ आय्वरुम्	वॅरुवलि	यरक्क	रादियोर्
नायहर्	नळिमणि	महुड	नण्णलाल्
तेय्वुउत्	तेय्वुउप्	पॅयर्नुदु	शॅञ्जुडर्
आय्मणिप्	पॉलन्गळ	लडिनिन्	ऱार्प्पवे 559

आय्वु अरु–अकूत; पॅरु वलि–बहुत बल से युक्त; अरक्कर् आतियोर्–राक्षस आदि राजा लोगों के; नळि मणि मकुटम्–बहुमूल्य रत्न-जड़ित किरीट; नण्णलाल्–मिले आते हैं, इसलिए; तेय्वु उऱ तेय्वु उऱ—घिसते-घिसते; पॅयर्नुतु–फिर से; चॅम् चुटर्–लाल प्रकाश की; मणि पॊलन् कऴल्–मणिमण्डित पायल; अटि निन्ऱु आर्प्प–उसके पैरों में रहकर क्वणित हो रही थी। ५५९

राक्षस वीर आकर उसके पैरों पर सिर झुकाते थे। उन राक्षसों के बल का अनुमान भी नहीं हो सकता था। उनके मुकुटों के लगने से उसकी पायल घिसी हुई थी और उस पर जड़ित रत्न अधिक निखरे हुए हो गये थे। वह पायल उसके पैरों में क्वणित हो रही थी। ५५९

❀ मूवहै युलहिनु मुदल्वर् मुन्दैयोर्, ओविल रुदविय परिशि नोङ्गल्बोल्
तेवरु मवुणरु मुदलि नोर्दिशै, तूविय नरुमलर्क् कुप्पै तुन्नवे 560

मूवकै उलकित्तुम्–तीन प्रकार (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों के; मुतल्वर्–नायकों ने; मुन्तैयोर्–मैं पहले, मैं पहले करते हुए; ओविलर्–निरन्तर; उतविय–लाकर जो दिये; परिचिन्–उन उपहारों के; ओङ्कल् पोल्–पर्वत के समान; तेवरुम् अवुणरुम् मुतलिनोर्–देव, असुर और अन्यों के; तिचै–चारों दिशाओं से; तूविय–बरसाये; नऱुमलर्–सुगन्धित फूलों की; कुप्पै–राशियाँ; तुन्न–ठस भरकर पड़ी रहीं। ५६०

तीनों लोकों के नायक लोग पहले आने की स्पर्द्धा करते हुए आकर निरन्तर उपहार देते रहे। उन उपहारों के पर्वत-से ढेर हो गये थे। देवों और राक्षसों द्वारा चारों ओर से बरसाये सुवासित फूलों के ढेर सर्वत्र पाये जाते थे। ५६०

❀ इन्नवो दिव्वऴि नोक्कु मॅन्बदै, उन्नलर् करदलञ् जुमन्द वुच्चियर्
मिन्नविर् मणिमुडि विज्जै वेन्दर्हळ्, तुन्नितर् मुऱैमुऱै तुऱैयिर् चुऱ्ऱवे 561

मिन् अविर्–बिजली के समान चमकनेवाले; मणि मुटि—रत्नकिरीट-धारी; विज्चै वेन्तर्कळ्–विद्याधर राजा लोग; इन्न पोतु–कब; इ वऴि नोक्कुम् ॲन्पतै–इस तरफ़ देखेगा, यह; उन्नलर्–नहीं जानते; कर तलम् चुमन्त उच्चियर्–हाथ सिर पर रखे; तुन्नितर्–समीपस्थ होकर; मुऱै मुऱै–यथाक्रम; तुऱैयिल्—अपनी-अपनी निर्दिष्ट सेवा में लगे; चुऱ्ऱ–घेरे रहे, ऐसा। ५६१

विद्याधर राजा लोग थे। उनके रत्नकिरीट विजली के समान चमकते थे। वे अपने हाथों को जोड़े अपने सिरों पर रखे हुए थे। वे हमेशा सतर्क रहते थे, क्योंकि उन्हें मालूम नही हो सका कि रावण किस समय किस ओर दृष्टि फेंकेगा। वे अपने-अपने स्थान पर निर्दिष्ट सेवा में लगे हुए, रावण की दृष्टि की भी प्रतीक्षा करते हुए चारों ओर पाये गये। ५६१

❀ मङ्गैयर् तिऱत्तॊरु माऱ्ऱङ् गूऱिनुम्, तङ्गळै यामॆऩत् ताऴ्ज् जॆन्निियर्
अङ्गैयु मुळ्ळमुङ् गुविन्द वाक्कैयर्, शिङ्गवे ऱॆऩत्तिऱर् चित्तर् शेरवे 562

चिङ्क एऱु ऑॆन–पुरुषकेसरी के समान वलिष्ठ; चित्तर्–सिद्ध लोग; मङ्कैयर् तिऱत्तु–अपनी दासियों के प्रति; ऑरु माऱ्ऱम् कूऱिनुम्–(रावण) एक बात कहता तो भी; तङ्कळै आम् ऑॆन–अपने से कहता है, समझ; ताऴ्म् चॆन्नियर्–सिर झुकाते हैं (झुके सिर वाले होकर); अम् कैयुम्–हथेलियों; उळ्ळमुम्–और मन को जोड़कर; कुविन्त आक्कैयर्–शरीर झुकाकर (विनय की मुद्रा में); चेरवे–(रावण के चारों ओर) समीप खड़े रहे, ऐसा। ५६२

कभी सिंहसदृश रावण अपने पास स्थित किसी स्त्री से कोई बात कहता तो वहाँ रहे सिद्ध जाती के लोग सोचते कि वह हमारे प्रति ही कुछ कह रहा है! वे हाथ जोड़े। मन को एकाग्र किये और सिर झुकाये बहुत ही विनय के साथ स्थित रहे। 'सिंह-सदृश' सिद्धों पर भी लग सकता है। ५६२

अन्नव ऩमैच्चरै नोक्कि याण्डॊरु
नन्मॊऴि पहरिनु नडुङ्गुञ् जिन्दैयर्
ऍन्नैहॊल् पणियॆऩ विऱैञ्जु हिन्ऱनर्
किन्नरर् पॆरुम्बयङ् गिडन्द नॆञ्जिनार् 563

किन्नरर्–किन्नर जाति के लोग; अन्नवन्–वह (रावण); अमैच्चरै नोक्कि–मन्त्रियों को देखकर; आण्टु ऑरु नल् मॊऴि–वह एक शिष्ट-वचन; पकरिनुम्–कहता तो भी; नटुङ्कुम् चिन्तैयर्–कम्पित-मन होकर; पॆरुम्पयम् किटन्त–बहुत भयाक्रान्त; नॆञ्चिनार्–मन के साथ; ऍन्नै कॊल् पणि–क्या सेवा है; ऑॆन–ऐसा; इऱैञ्चुकिन्ऱनर्–विनय करते। ५६३

किन्नर लोग पाये गये। अगर रावण अपने अमात्यों से कोई मधुर वचन भी कहता तो वे समझ लेते कि वह हमसे कुछ कह रहा है। बस, सिहर उठते। पास आकर पूछते कि कौन सी सेवा है जो बजा लानी है? यह अत्यन्त विनय के साथ पूछते। ५६३

पिऱहर नॆडुन्दिशैप् पॆरुन्दण् डेन्दिय
करदलत् तण्णलैक् कण्णि ऩोक्किय

नरहिन रामॅन नडुङ्गु नाविनर्
उरहरुन् दम्मन मुलॅन्दु शूऴ्वे 564

उरकरुम्–नागलोकवासी; पिरकर नॅट्टुम् तिचै–(जीवों को) दण्ड जहाँ दिया जाता है, उस (दक्षिणी) दिशा के देव; पॅरुम् तण्टु एन्तिय–बड़ा कालदण्ड-धारी; करतलत्तु–हाथ के; अण्णलै–राजा (धर्मदेवता) को; कण्णिन् नोक्किय–अपनी आँखों के सामने जिन्होंने देखा हो, ऐसे; नरकर् आम् अँन–नरकवास योग्य पापियों के समान; नटुङ्कुम् नावितर्–स्खलित-वचन (लड़खड़ाती-वाणी वाले) होकर; तम् मतम् उळैन्तु–मन में व्यथित होकर; चूऴ–घेरे खड़े रहे। ५६४

नागलोकवासी रावण के सामने इतना डरे हुए खड़े रहे जितना कि नरक-योग्य जीव उस यमलोक के देव दण्डधर यम को देखकर डरते हैं, जहाँ जीवों को दण्ड का विधान हो, दण्ड दिया जाता है। उनकी जिह्वाएँ लड़खड़ातीं; मन व्यग्र रहता। वे भी रावण को घेरे खड़े रहे। ५६४

❀ तिशैयुरु करिहळैच् चॅऱ्ऱुत् तेवनुम्
वशैयुऱक् कयिलैयै मऱित्तु वानॅलाम्
अशैयुऱप् पुरन्दरऱ् कडन्द तोळ्हळिन्
इशैयिनैत् तुम्बुरु विशैयि नॅत्तवे 565

तिचै उऱु करिकळै–दिग्गजों को; चॅऱ्ऱु–हराकर; तेवनुम् वचै उऱ–परमेश्वर को भी अपयश दिलाते हुए; कयिलैयै मऱित्तु–कैलास को उखाड़कर; वान् ॲलाम् अचैवु उऱ–सारा आकाश कँपाते हुए; पुरन्तरन् कटन्त–पुरन्दर को जिन्होंने प्रताड़ित किया; तोळ्कळिन् इचैयित्तै–उन कन्धों की प्रशंसा; तुम्पुरु–तुम्बुरु; इचैयिन् एत्त–गीत गाते (रहे, ऐसा रावण सभा में विराजमान था)। ५६५

रावण ने दिग्गजों का बल दमन किया था। कैलास पर्वत को उखाड़कर परमेश्वर शिव को भी अपयश दिलाया था। पुरन्दर को हराकर आकाश भर को उद्विग्न कराया था। ऐसे रावण के पराक्रम की प्रशंसा तुम्बुरु गा रहे थे। ५६५

❀ शेणुयर् नॅऱिमुऱै तिऱम्ब लिन्ऱिये
पाणिहळ् पणिशॅयप् पळुदिल् पण्णिऱै
वीणैयि नरम्बिडै विळैन्द तेमऱै
वाणियि नारदन् शॅवियिन् वाक्कवे 566

चेण् उयर्–अत्युन्नत; नॅऱि मुऱै तिऱम्पल् इन्ऱिये–गति-विधि का उल्लंघन किये विना; पाणिकळ् पणि चॅय–ताल काल-निर्णय का काम करते हैं, ऐसा; पऴुतु इल्–त्रुटिहीन; पण् निऱै–राग-युक्त; वीणैयिन् नरम्पु इटै–वीणा की तन्त्रियों से; विळैन्त–उत्पन्न; ते मऱै–मधुर वेद-रूप संगीत; वाणियिन्–मुख-स्वर के साथ; नारतन्–नारद ऋषि; चॅवियिन् वाक्क–उसके बीसों कानों में भर रहे थे। ५६६

नारद अपनी वीणा से संगीतमय स्वर निकालते हुए ताल-मेल के साथ श्रुति-शुद्ध, लय-शुद्ध रीति से वेदसमान गन्धर्वगान कर रहे थे। रावण के बीसों कान उसे श्रवण कर रहे थे। ५६६

मेहमॅन् रुरुत्ति वीक्कि विण्णवर् तरुवुम् विज्जै
नाहमुज् जुरन्द तीन्दे नरुपुन लोड ळावित्
तोहैयर् तुहिलिड् ड्रोय्क्कु मॅन्नबदोर् तुणुक्कत् तोडुज्
जीहर महर वेलैक् कावलन् शिन्द मन्नो 567

मकर वेलै कावलन्—मकरालय के देवता वरुण; विण्णवर् तरुवुम्—देवों का कल्पतरु; विज्चै नाकमुम्—विद्याधर लोक का सुरपुन्नाग; चुरन्त—(अपने फूलों से जो) ढलकते थे; तीम् तेन्—वह मधुर शहद; नरु पुनलोटु—सुबासित जल के साथ; अळावि—मिश्रित करके; मॅकम् ॲन् तुरुत्ति वीक्कि—मेघ की मशक में भरकर; तोकैयर् तुकिलिल्—(रावण के पास रहनेवाली) स्त्रियों के वस्त्र; तोय्क्कुम्—गीला हो जायगा; ॲन्पतोर् तुणुक्कत्तोटुम्—इस डर से (अत्यन्त सावधानी के साथ); चीकरम्—जल-सीकर; चिन्त—छिड़का रहे थे। ५६७

मकरालय के अधिदेवता वरुण मण्डप में जल छिड़कने का कार्य कर रहे थे। कैसा जल था? उत्तम जल में आकाश के कल्पतरु से झरनेवाला शहद और नागलोक के सुरपुन्नाग तरुओं से मिलनेवाला शहद मिला हुआ था। मेघ की मशक में उसे भरकर सीकरो में छिड़कता था। यह भय लगा हुआ था कि कहीं रावण की नारियों के वस्त्र पर पड़ जायगा तो रावण का कोप अनर्थ कर देगा। इसलिए बहुत सावधानी से वे जल की बौछार कर रहे थे। ५६७

नरैमलरुत् तादुन् देनु नळिनॅडु महुड कोडि
मुरैमुरै यरैयच् चिन्दि मुरिन्दुहु मणियु मुत्तुम्
तरैयिडै युहाद मुन्नन् दाङ्गिनन् ऱळुवि वाङ्गित्
तुरैदोरुन् दोडरन्दु निन्रु समीरणन् रुडैप्प मन्नो 568

चमीरणन्—वायुदेव; नरै मलर् तातुम्—सुगन्धपूर्ण पुष्पों का पराग; तेनुम्—और शहद; नळि—बड़े; नॅटु—लम्बे; मकुट कोटि—किरीट-कोटि के; मुरै मुरै अरैय—बार-बार टकराने से; चिन्ति मुरिन्तु उकु—टूटकर जो गिरे, वे; मणियुम् मुत्तुम्—रत्न और मोती; तरैयिटै—भूमि पर; उकात मुन्नम्—गिरे, इसके पहले ही; ताङ्किनन्—पकड़कर; तळुवि वाङ्कि—समेट लेकर; तुरै तोरुम् तॉटर्न्तु निन्रु—हर स्थान में निरन्तर खड़े होकर; तुटैप्प—झाड़कर शुद्ध कर रहे थे। ५६८

वायुदेव का क्या काम था? सुबासित पुष्पों से मकरन्द चूते थे। उनसे शहद भी गिरता था। रावण से भेंट करने जो आये उनके किरीटों के आपस में टकराने से रत्न और मोती अलग होकर गिरते थे। समीरण

का काम था कि उनको भूमि पर गिरने से पहले ही ग्रहण कर ले। वे सर्वत्र रहकर बुहारने का काम करते रहे। ५६८

मिन्नुडै वेत्तिरक् कैयर् मॅय्बुहत्, तुन्निडु कञ्जुहत् तुहिलर् शोर्विलाप्
पॊन्नॊडु वॆळ्ळियप् पुरन्द रादियर्क्, किन्नियन् मुऱैमुऱै यिरुक्कै यीयवे 569

पॊन् ऒंडु–वृहस्पति के साथ; वॆळ्ळि–असुर-गुरु शुक्र; मिन् उटै–चमकीले; वेत्तिर कैयर्–वेत्रपाणी होकर; मॅय् पुक–शरीर जिसमें प्रविष्ट हो, ऐसा; तुन्निट्–सिये हुए; कञ्चुक तुकिलर्–कंचुक की पोशाक से अलंकृत; चोर्वु इलर्–बिना आलस्य के; पुरन्तरातियर्क्कु–पुरन्दरादि देवता लोगों को; इन् इयल्–मधुर व्यवहार के साथ; मुऱै मुऱै–उचित प्रकार से; इरुक्कै ईय–आसन की व्यवस्था कर रहे थे, ऐसा। ५६९

स्वर्णदेव बृहस्पति, शुक्लदेव शुक्राचार्य दोनों कंचुकी पहने हुए वेत्र हाथ में लेकर आलस्य त्यागकर पुरन्दर आदि को उनका योग्य स्थान दिखा रहे थे। आगतों का स्वागत करना और उनके आसन की व्यवस्था करना उनका काम था। ५६९

शूलमे मुदलिय तुऱन्दु शुऱ्ऱिय, शेलैयाऱ् चॅय्यवाय् पुदैत्त शेङ्गैयन्
तोलुडै नॆडुम्बणै तुवैक्कुन् दोरॆलाम्, कालनिन् ऱिशैक्कुनाट् कडिहै कूऱवे 570

कालन्–कालदेव (यम); चूलमे मुतलिय तुऱन्तु–शूल आदि त्यागकर; चुऱ्ऱिय चेलैयाल्–अपने शरीर पर लपेटे वस्त्र के छोर से; चॅय्य वाय्–लाल मुख को; पुतैत्त–जो ढक रहे थे; चॆम् कैयन्–उन अरुण हाथों के साथ; तोल् उटै नॆटुम् पणै–चमड़ा-मढ़े बड़े ढोलो के; तुवैक्कुम् तोऱु ऍलाम्–पिटते हर समय; इचैक्कुम् नाळ् कटिकै–निर्दिष्ट दिन की घड़ी; वन्तु कूऱ–सभा में आकर वता रहे थे। ५७०

यम का क्या हाल था? ढोल बजाकर घड़ी बतायी जाती। यम का काम था कि वे अन्दर आते और अपने वस्त्र से मुख ढाँपे विनय के साथ घड़ी बतावें। समय-सूचक का काम उनका था। वे अपना शूल आदि त्याग चुके थे। ५७०

नयङ्गिळर् नऱुविरै नान नॆय्यळाय्
वियन्गरुप् पूरमॆन् पञ्जिन् मीक्कॊळीइ
कयङ्गळिन् मरैमलर्क् काडु पूत्तॆन
वयङ्गॊरिक् कडवुळुम् विळक्क माट्टवे 571

वयङ्कु–प्रकाशमान; ऍरि कटवुळुम्–अग्निदेव ने भी; नयम् किळर्–श्रेष्ठतायुक्त; नऱु विरै–सुवासपूर्ण; नानम्–कस्तूरी को; नॆय् अळाय्–घृत से मिलाकर; वियन् करुप्पूरम्–उत्तम कर्पूर को; मॆन् पञ्चिल् मी–नरम रुई पर रख के; कॊळीई–(उस बाती को) जलाकर; कयङ्कळिल्–तालावों में; मरै मलर् काटु–कमलपुष्प-कानन; पूत्तन–फूले, जैसे; विळक्कम् माट्ट–दिये जलाये। ५७१

प्रकाशमान अग्निदेव पर दीया जलाने का जिम्मा था। उन्होंने अनेक दीये जलाये, जिनका तेल श्रेष्ठ और सुगन्धित कस्तूरी और उत्तम घृत का मिश्रण था और कर्पूर को रुई में रखकर उसकी बातियाँ जलायी गयीं। उन्होंने उन्हें जलाशयों पर विकसित कमलों के समान सजाए। ५७१

अदिशय मळिप्पदऱ् करुळ ऱिन्दुनल्, पुदिदलर् कऱ्पहत् तरुवुम् बॊय्यिलाक्
कदिर्नॆडु मणिहळुङ् गऱवै यान्गळुम्, निदिहळु मुऱैमुऱै निन्ऱु नीट्टवे 572

नल् पुतितु अलर्–अच्छे और ताजा फूले हुए; **कऱ्पक तरुवुम्**–कल्पतरु और; **पॊय् इला**–अभंग; **नॆटु कतिर्**–लम्बी ज्योति से युक्त; **मणिकळुम्**–(चिंतामणि आदि) रत्न; **कऱवै आन्कळुम्**–दुधारू गायें (कामधेनु); **नितिकळुम्**–(शंख आदि नव-) निधियाँ; **अतिचयम् अळिप्पतऱ्कु**–रावण को विस्मयगर्भित मनोरंजन करने के लिए; **अरुळ् अऱिन्तु**–उसकी कृपा की ताक में रहकर; **मुऱै मुऱै**–अपने-अपने क्रम से; **निन्ऱु**–खड़ा होकर; **नीट्ट**–अपना उपहार बढ़ातीं, ऐसे संभ्रम के साथ। ५७२

नवविकसित फूलों के साथ कल्प, संतान, मन्दार, पारिजात, हरिचन्दन के तरु, अमन्द और लम्बी ज्योतियुक्त चिन्तामणि, दुधारू कामधेनु आदि गायें, शंख, (पद्म, महापद्म, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, हीरे आदि) निधियाँ —ये सब रावण को प्रसन्न करने के लिए बारी-बारी से अपना-अपना उपहार बढ़ा रही थीं। तब। ५७२

कुण्डल मुदलिय कुलङ्गॊळ् पेरणि, मण्डिय पेरॊळि वयङ्गि वीशलाल्
उण्डुहॊ लिरविनि युलह मेऴिनुम्, ऍण्डिशै मरुङ्गिनु मिरुळिन् ऱॆन्नवे 573

कुण्टलम् मुतलिय–कुण्डल आदि; **कुलम् कॊळ् पेर् अणि**–उत्तम और बहुमूल्य आभरणों की; **मण्टिय**–परिपूर्ण; **पेर् ऒळि**–बड़ी कान्ति; **वयङ्कि वीचलाल्**–भरपूर फैलती है, इसलिए; **उलकम् एऴिनुम्**–सातों लोकों में; **इनि**–अब; **इरवु उण्टु कॊल्**–रात भी है क्या; **ऍण् तिचै मरुङ्किनुम्**–आठों दिशाओं में सर्वत्र; **इरुळ् इन्ऱु**–अन्धकार नहीं है; **ऍन्न**–कहा जाय, ऐसा। ५७३

रावण के कर्ण-कुण्डल और अन्य श्रेष्ठ आभरण घनी कान्ति बिखेर रहे थे। वह प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ था। इस वजह से ऊपर के और नीचे के सातों लोकों में क्या कभी रात हो सकेगी? आठों दिशाओं में कही अन्धकार का नाम तक नहीं था। ५७३

कङ्गैये मुदलिय कडवुट् कन्नियर्, कॊङ्गैहळ् शुमन्दिडै कॊडियि नॊल्हिडच्
चॆङ्गैयि नरिशियुम् मलरुञ् जिन्दिनर्, मङ्गल मुऱैमॊऴि कूऱि वाऴ्त्तवे 574

कङ्कैये मुतलिय–गंगाजी आदि; **कटवुळ् कन्नियर्**–(नदी की) देव-कन्याएँ; **कॊङ्ककैकळ् चुमन्तु**–स्तनों को ढोने से; **इटै**–कमर को; **कॊटियिन् ऒल्किट**–लता के समान झुकने देते हुए; **चॆम् कैयिन्**–लाल (नरम और सुन्दर) हाथों से; **अरिचियुम् मलरुम्**–अक्षत और फूल; **चिन्तिनर्**–(रावण पर) चढ़ाकर; **मङ्कल मुऱै मॊऴि कूऱि**–मंगलाशासन के वाक्य कहकर; **वाऴ्त्त**–'जय जीव' कहतीं, ऐसा। ५७४

गंगाजी आदि दिव्य जल-कन्याएँ, जिनकी कमरें भारी स्तनों के बोझ के कारण लचक-लचक जाती थीं, अपने लाल (मनोरम और कोमल) हाथों से चावल और फूल रावण पर चढ़ाकर मंगलाशासन करके स्तुति के गीत गा रही थीं। ५७४

ऊरुविऱ् ऱोऩ्ऱिय वुरुप्प शिप्पॅयरुक्, कारिहै यार्मुदऱ् कलाप मञ्ञैबोल्
वार्विशिक् करुवियोर् वहुत्त पाणियिऩ्, नारिय रुनड नडिप्प नोक्किये 575

ऊरुविल् तोऩ्ऱिय–श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न; उरुप्पचि पॅयर्–उर्वशी नाम की; कारिकैयार् मुतल्–सुरवाला आदि; नारियर्–नारियाँ; कलाप मञ्ञै पोल्–कलापी मोरों के समान; वार् विचि–फीते से कसे; करुवियोर्–मृदंग आदि के वादकों के; वकुत्त पाणियिऩ्–वादन से निर्दिष्ट ताल-लय में; अरु नटम् नटिप्प–श्रेष्ठ नाच नाचतीं, तव। ५७५

वहाँ मृदंग आदि बाजे बज रहे थे। उन्हीं के ताल-मेल में श्रीमन्नारायण के ऊरु से उत्पन्न उर्वशी आदि अप्सराएँ नाच रही थीं। उसका रसास्वादन करते हुए— (नर और नारायण बदरिकाश्रम में तपस्या कर रहे थे। देवेन्द्र ने उनके तप को भंग करने के लिए अप्सराओं को भेजा। श्रीमन्नारायण ने अपने ऊरु से उर्वशी को पैदा किया। उसका सौन्दर्य देखकर अप्सराएँ लज्जित होकर चली गयीं।)। ५७५

इरुन्दन तुलहङ्ग ळिरण्डु मॊऩ्ऱुन्दन्
अरुन्दव मुडैमैयि नळवि लाऱ्ऱलिल्
पॊरुन्दिय विरावणऩ् पुरुवक् कार्मुहक्
करुन्दडङ् गण्णियर् कण्णिऩ् वॅळ्ळत्ते 576

उलकङ्कळ् इरण्टुम् ऒऩ्ऱुम्–दो और एक (तीनों) लोकों में; तऩ् अरुम् तवम् उटैमैयिऩ्–अपने अपूर्व तपस्या के होने से; अळवु इल् आऱ्ऱल्–(प्राप्त) अपार पराक्रम का स्वामी; इरावणऩ्–रावण; पुरुव कार्मुक–भौंहें रूपी धनुओं के साथ; करुम् तटम् कण्णियर्–काली और विशाल आँखों की; कण्णिऩ् वॅळ्ळत्ते–दृष्टि रूपी प्रवाह में; इरुन्तऩऩ्–तैरता रहा। ५७६

रावण सभा मे विराजमान था। उसने ऐसा कठोर तप किया था, जैसा तीनों लोकों का और कोई नहीं कर सकता था। अतः उसे अपार बल प्राप्त था। उस पर नारियाँ बड़े प्रेम के साथ दृष्टि दिये रहती थीं। कवि कहते है कि रावण उनकी काली और दीर्घ आँखों की दृष्टि के प्रवाह में तैरता रहा। ५७६

❀ तङ्गैयु मव्वऴि तलैयिऱ् ऱाङ्गिय
शॅङ्गैयळ् शोरियिऩ् ऱारै शॆऱ्ऩ्दिऴि

कोङ्गैयळ् मूक्किलळ् कुळैयिऩ् कादिलळ्
मङ्गुलि ऩॊलिपडत् तिऱन्द वायिऩाळ् 577

अ वळि–तब; तङ्कैयुम्–(रावण की) वहिन; तलैयिल् ताङ्किय–सिर पर रखे; चॆम् कैयळ्–हाथों के साथ; चोरियिऩ् तारै–रक्त की धारा; चेऱ्न्तु इऴि–जिन पर बहती रही; कोङ्कैयळ्–उन स्तनों के साथ; कुळैयिऩ् कातु इलळ्–कुण्डल सहित कानों से रहित; मङ्कुलिऩ् ऒलि पट–मेघ-गर्जन करते हुए; तिऱन्त वायिऩाळ्–खुले मुख के साथ। ५७७

जब रावण इस ठाट-बाट के साथ राजदरबार में विराजमान रहा, तब (उसकी बहिन शूर्पणखा) हाथ सिर पर रखते हुए, स्तनों पर रक्त को बहने देते हुए नासिकाहीन मुख खोलकर मेघगर्जन-से उच्च स्वर में— । ५७७

❀ मुडैमिडै वायिनिऩ् मुऱैयिट् टार्हलि
कडैयुहत् तॆऴुमॊलि काट्टक् कान्दुवाळ्
कुडदिशैच् चॆक्करिऱ् चेन्द कून्दलाळ्
वडदिशै वायिलिऩ् वन्दु तोऩ्ऱिऩाळ् 578

मुटै मिटै–मांस-गन्ध-युक्त; वायिनिऩ्–मुख से; मुऱैयिट्टु–शिकायत करते हुए; आर् कलि–सघोष समुद्र से; कटै युकत्तु–युगान्त में; ऎऴुम् ऒलि–जो उठती है, उस ध्वनि को; काट्ट–प्रकट करते हुए; कान्तुवाळ्–जो मुरझायी रही; कुट तिचै चॆक्करिल्–पश्चिमी दिशा के गगन की लालिमा से; चेन्त कून्तलाळ्–अधिक लाल केश वाली; वट तिचै वायिलिऩ्–उत्तर के द्वार पर; वन्तु तोऩ्ऱिऩाळ्–आकर प्रकट हुई (शूर्पणखा)। ५७८

मांसगन्धयुक्त अपने मुख से प्रलाप करती हुई उत्तरी द्वार पर आ प्रकट हुई। उसने जो शोर मचाया वह युगान्त के नाद के समान भयंकर था। अग्नितप्त-सी, लाल सन्ध्या-राग से भी अधिक लाल केश के साथ वह आयी। ५७८

तोऩ्ऱलुन् दॊऩ्नह ररक्कर् तोहैयर्
ऎऩ्ऱिदिर् वयिऱलैत् तिरङ्गि येङ्गिऩार्
मून्ऱुल हुडैयवऩ् ऱङ्गै मूक्किलळ्
ताऩ्ऱऩि यवळ्वरत् तरिक्क वल्लरो 579

तोऩ्ऱलुम्–प्रकट होते ही; तॊल् नकर्–प्राचीन नगर की; अरक्कर् तोकैयर्–राक्षस-स्त्रियाँ; ऎतिर् ऎऩ्ऱु–सामने स्थित हो; वयिऱु अलैत्तु–पेट पीटते हुए; इरङ्कि एङ्किऩार्–अनुताप करके रोईं; मून्ऱु उलकु उटैयवऩ्–तीनों लोकों के पति की; तङ्कै–वहिन; मूक्कु इलळ्–नासिका से हीन; तनि अवळ् ताऩ् वर–अकेली स्वयं आए; तरिक्क वल्लरो–सह सकेंगी क्या। ५७९

उसके उस रूप में प्रकट होने पर उस प्राचीन नगर की राक्षस-नारियाँ सामने आकर (अपनी छाती) अपना पेट पीटते हुए अनुताप के साथ रोयीं।

तीनों लोकों के स्वामी की सगी बहिन थी वह। उसकी यह स्थिति! उसकी नाक कटी हुई है! अकेली आ रही है। यह देखकर कोई सब्र कर सकता है क्या ? । ५७९

❀ पॊरुक्कॆन नोक्किनर् पुहल्व दोर्हिलर्
अरक्करु मिरैत्तन रशनि येर्ऩक्
करत्तॊडु करङ्गळॆप् पुडैत्तुक् कण्गळिऩ्
नॆरुप्पॆळ विळित्तुवाय् मडित्तु निऱ्किऩ्ऱार् 580

अरक्करुम्–राक्षसों ने भी; पॊरुक्कु ऍऩ्ऩ नोक्कितर्–सहमकर देखा; पुकल्वतु ओर्किलर्–क्या कहना, नहीं जानते; अचत्ति एऱु ऍऩ्ऩ–अशनिराज के समान; करत्तु ओटु करङ्कळॆ–हाथों से हाथों को पीटकर; कण्कळिऩ् नॆरुप्पु ऍळ–आँखों से अंगार निकालते हुए; विळित्तु–आँख फाड़े देखकर; वाय् मटित्तु–दाँत पीसकर; निऱ्किऩ्ऱार्–खड़े रहे। ५८०

राक्षसों ने भी सहमकर देखा। क्या कहना —यह भी न सूझा। अशनि का-सा नाद पैदा करते हुए हाथों से हाथ मारे। उनकी आँखों से आग उगलने लगी। दाँत पीसते हुए आँखें फाड़े देखते हुए खड़े के खड़े रह गये। ५८०

❀ इन्दिरन् पालदो वुलह मीऩ्ऱपेर्, अन्दणऩ् पालदो वाळि याऩदो
शन्दिर मवुलिपाऱ् रङ्गु मेहॊलो, अन्दर मिदुवॆऩ वळल्हिन् ऱार्शिलर् 581

चिलर्–(उनमें) कुछ; इन्तिरऩ् पालतु ओ–क्या इन्द्र की तरफ़ से हुआ है; उलकम् ईऩ्ऱ–लोकों के सर्जक; पेर् अन्तणऩ् पालतो–वड़े ब्राह्मण (ब्रह्मवित) ब्रह्मा की तरफ़ से क्या; आऴियाऩ् अतो–चक्रधारी (क्षीर-) सागर-निवासी का है; चन्तिर मवुलि पाल्–चन्द्रमौलि पर; तङ्कुमे कॊलो–इसका जिम्मा रहता है; अन्तरम् इतु–सितम है यह; ऍऩ्ऩ अऴल्किऩ्ऱार्–समझकर कोप से तपते हैं। ५८१

उनमें कुछ राक्षसों ने बड़े क्रोध के साथ प्रश्न किया कि क्या यह घोर अपराध इन्द्र की तरफ़ से हुआ है ? या विश्व के सृष्टि-कर्ता ब्राह्मण (ब्रह्मवित) द्वारा हो गया ? या क्षीरसागरशायी, चक्रधर श्रीविष्णु के हाथों हो गया है ? (आऴि का अर्थ चक्र भी है, सागर भी।) या चन्द्र-मौलीश्वर पर ही यह लगेगा ? जो हो यह बड़ी आफ़त है! वे क्रोध से उबले। ५८१

पोरिलान् पुरन्दर नेवल् पूण्डनन्, आरुला नेमिया ऩाऱ्ऱ ऱोऱ्ऱुप्पोय्
नीरिऩा नॆरुप्पनान् पॊरुप्पि ऩाऩिनि, यार्हॊलो मीदॆऩ वरैहिन् ऱार्शिलर् 582

चिलर्–(और) कुछ; पुरन्तरऩ्–पुरन्दर; पोर् इलाऩ्–युद्ध छोड़कर; एवल् पूण्टनऩ्–सेवक बन गया; आर् उलाम् नेमियाऩ्–तीक्ष्ण चक्रधारी; आऱ्ऱल् तोऱ्ऱु पोय्–बल मे हारकर; नीरिऩाऩ्–(क्षीरसागर का) जलवासी हो गया है; नॆरुप्पु

अत्तात्—अग्नि-समान शिव; पोरुप्पित्तात्—पर्वतवासी हो गया; इत्ति—अब; यार् कोल् आम् ईतु—यह कौन हो सकता है; अॅन्त—ऐसा; अऱैकिन्ऱार्—पूछते। ५८२

और कुछ राक्षसों ने यों कहा— पुरन्दर तो युद्ध से एक दम विरत होकर रावण का नौकर बन गया है। तीक्ष्ण चक्र के रखनेवाले विष्णु भी रावण से हारकर (क्षीर-सागर-) जलवासी हो गये। अग्नि-सम शिवजी (डर से) पर्वत पर चढ़ बैठे हैं। फिर किसने यह काम किया होगा? । ५८२

❀ शॅप्पुदऱ् कुरियवर् तॅव्व रारुळर्
मुप्पुऱत् तुलहमु मडङ्ग मूडिय
इप्पुऱत् तण्डत्तोर्क् कियैव दन्ऱिदु
अप्पुऱत् तण्डत्ता रारॅन् ऱार्शिलर् 583

चिलर्—(और) कुछ; तॅव्वर्—शत्रु; चॅप्पुतऱ्कु उरियवर्—कहाने योग्य; यार् उळर्—कौन हैं; मु पुऱत्तु उलकमुम्—तीनों लोकों को; अटङ्क मूटिय—पूर्ण रूप से जिसने अपने में समा लिया है; इ पुऱत्तु अण्टत्तोर्क्कु—इस तरफ़ के अण्ड के वासियों का; इतु इयैवतु अन्ऱु—यह हो सकने का काम नहीं; अ पुऱत्तु—उस तरफ़ के; अण्टत्तोर् आम्—अण्ड के वासियों का ही हो सकता है; आर्—कौन हैं (वे); अॅन्ऱार्—पूछते। ५८३

और कुछ राक्षसों ने तर्क किया। हमारे रावण का शत्रु कहाने योग्य है कौन? आकाश, पाताल और भूलोक को अन्तर्निहित रखनेवाले इस अण्डगोल का कोई भी यह नहीं कर सकता? अपराण्ड (बहिरण्ड) में भी कौन है? । ५८३

अॅन्नैये यिरावणऩ् ऱङ्गै यॅन्ऱऱपिन्, अन्नैये यॅन्ऱडि वणङ्ग लन्ऱिये
उन्नवे यॊण्णुमो वॊरुव रालिवळ्, तन्नैये यरिन्दन डालॅन् ऱार्शिलर् 584

चिलर्—कुछ; अॅन्नैये—यह क्या (आश्चर्य); इरावणन् तङ्कै—रावण की बहिन; अॅन्ऱ पिन्—यह जानने के बाद भी; अन्नैये अॅन्ऱु—माताजी कहकर; अटि वणङ्कल् इन्ऱि—चरण में विनत हुए बिना; ऒरुवराल्—किसी से; उन्नवे ऒण्णुमे—(ऐसी बात) सोची भी जा सकेगी क्या; इवळ्—इसने; तन्नैये तान् अरिन्तनळ्—खुद अपने अंगों को काट लिया है; अॅन्ऱनर्—बोले। ५८४

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान लगाया। यह क्या आश्चर्य हो गया! रावण की छोटी बहिन जानने पर कोई भी 'माताजी' कहकर उसके पैरों पर झुक जायगा। इसको छोड़कर वह ऐसा काम मन में भी नहीं ला सकेगा। इसलिए अवश्य इसने स्वयं अपने अंग काट लिये हैं। ५८४

शॊऱ्पिऱन् दार्क्किदु तुणिय वॊण्णुमो
इऱ्पिऱन् दार्तमक् कियैव शॅय्दिलळ्

कऱ्पिऱऩ् दाळॅऩ्ऩक् करऩ्गॊ लामिवळ्
पॊऱ्पऱै याक्किऩऩ् पोलॆऩ् ऱाऱ्शिलर् 585

चिलर्–कुछ; चॊल् पिऱऩ्तार्क्कु–कीर्तिमानों को; इतु तुणिय ऑण्णुमो–(स्त्री के अंग काटने का) यह काम करने योग्य है क्या; इल् पिऱऩ्तार्क्कु इयॆव–कुलीन स्त्री के लिए उचित काम; चॅय्तिलळ्–इसने नहीं किया; कऱ्पु इऱऩ्ताळ्–शील को मारा है; ऍऩ–(कुछ ऐसा) देखकर; इवळ् पॊऱ्पु–इसके रूप को; अऱै आक्किऩऩ्–विकृत कर दिया; करऩ् कॊल् आम्–खर ने ही शायद; ऍऩ्ऱार्–बोले। ५८५

अन्य कुछ राक्षसों ने अनुमान किया— गौरवपूर्ण कुल में उत्पन्न किसी के लिए भी ऐसा करना सूझ सकता है क्या ? (इसलिए मेरा मत है—) इसने कुलीन स्त्रियों के लिए उचित कार्य नहीं किया होगा। अपना शील त्याग दिया होगा। इसलिए खर ने ही इसका अंग-भंग करके रूप को विकृत करा दिया है। ५८५

तत्तुऱु शिऩ्दैयर् तळरुऩ् दैवरिप्
पित्तुऱ वल्लरे पिऴैप्पिल् शूऴ्च्चियार्
मुत्तिऱत् तुलहैयु मुडिक्क वॆण्णुवार्
इत्तिऱम् बुणर्त्तऩ रॆऩ्गिऩ् ऱाऱ्शिलर् 586

तत्तु उऱु चिन्तैयार्–मन डगमगाकर; तळरुम्–निर्बल रहनेवाले; तेवर्–देव; इ पित्तु उऱ वल्लरे–यह पागलपन कर सकनेवाले है क्या; पिऴैप्पु इल् चूऴ्च्चियार्–अचूक तन्त्रशाली; मु तिऱ्त्तु उलकैयुम्–तीनों तरह (स्वर्ग, मध्य, पाताल) के लोकों को; मुटिक्क ऍण्णुवार्–मिटाना चाहनेवाले कोई; इ तिऱम् पुणर्त्तऩर्–यह काम कर चुके होंगे; ऍऩ्ऱार्–कहा; चिलर्–कुछ ने। ५८६

देव यह पागलपन नहीं कर सकते, क्योंकि उनका मन रावण के डर से हड़बड़ाता रहता है। वे निर्बल बने हुए हैं। अचूक तन्त्रशाली, तीनों लोकों के नाश को चाहनेवाले किसी ने यह काम किया है। —ऐसा कुछ राक्षसों ने कहा। ५८६

इऩ्ऩियॊरु कऱ्पमुण् डॆऩ्ऩि नऩ्ऱिये
वऩैहऴल् वयङ्गुवाळ् वीरर् वल्लरो
पऩ्ऩिवरु काऩिडैप् पऴिप्पि नोऩ्बुडै
मुऩिवरर् वॆहुळियिऩ् मुडिवॆऩ् ऱाऱ्शिलर् 587

चिलर्–(और) कुछ (राक्षसों) ने; इऩ्ऩि ऑरु कऱ्पम् उण्टु–अब किसी दूसरे कल्प में होगा; ऍऩ्ऩिल् अऩ्ऱिये–यह बात छोड़कर; वऩै कऴल्–पायल पहने हुए; वयङ्कु वाळ्–प्रकाशमान तलवार धारण किये रहनेवाले; वीरर्–(इस कल्प के) वीर; वल्लरो–समर्थ हैं क्या; पऩि वरु काऩ् इटै–शीतल कानन में; पऴिप्पु इल् नोऩ्पु उटै–अनिन्द्य व्रतधारी; मुऩिवरर्–मुनिवरों के; वॆकुळियिऩ् मुटिव–कोप का फल है; ऍऩ्ऱार्–कहा। ५८७

ऐसा काम किसी दूसरे कल्प में हो सकता है तो हो सकता है। इस कल्प का कौन पायलधारी असिहस्त होगा जो यह कर सकेगा ? इसलिए यह अवश्य उन मुनिवरों के कोप का फल है, जो ठण्डे जंगल में अनिन्द्य तपोव्रत में लगे हैं। ५८७

❀ करैयरु	तिरुनहर्क्	करुङ्ग	णङ्गैमार्
निरैवळैत्	तळिर्क्कर	नॅरित्तु	नोक्किनर्
पिरैयुरु	पालॅन	निलैयिऱ्	पिऩ्ऱिय
उरैयिन	रॊरुवर्मु	न्ऩॊरुवर्	मुन्दिनार् 588

करै अरु तिरुनकर्–असीम सम्पत्तिशाली इस श्रीनगर लंका की; करुम् कण् नङ्कैमार्–नीलाक्षी स्त्रियों ने; निरै वळै–पंक्तिबद्ध कंकणों से भूषित; तळिर् करम्–पल्लव-सम हाथों को; नॅरित्तु–मलते हुए; नोक्किनर्–देखा; पिरै उरु पाल् ॲन–जामन-लगे दूध की तरह; निलैयिल् पिऩ्ऱिय–स्खलित (अव्यवस्थित); उरैयिनर्–बोली बोलते हुए; ओरुवर् मुन् ओरुवर्–एक के आगे एक; मुन्तिनार्–पहले आईं। ५८८

राक्षस पुरुषों की यह बात थी। स्त्रियों ने क्या किया ? इसका वर्णन आगे मिलता है। असीम सम्पत्तिशाली उस नगर की वासिनी, काली आँखों की सुन्दर राक्षसियों ने पंक्ति में कंकणों से भूषित अपने हाथ मलते हुए देखा। जामन-लगे दूध के समान उनकी बोली अव्यवस्थित रही। वे एक के पहले एक दौड़ती आयीं। ५८८

❀ मुऴविनिल्	वीणैयिन्	मुरनल्	याळिनिल्
तळुविय	कुळलिनिऱ्	चङ्गिऱ्	ऱारैयिल्
ॲळुहुर	लऩ्ऱिये	यॅऩ्ऱु	मिल्लदोर्
अळुहुरल्	पिऱन्ददव्	विलङ्गैक्	कऩ्ऱरो 589

मुळविनिल्–'मत्तळम्' (मृदंग-सम बाजे) से; वीणैयिल्–वीणा से; मुरल् नल् याळिनिल्–सुरीले श्रेष्ठ 'याळ' नामक वाद्य से; तळुविय कुळलितिल्–संगीतमय बाँसुरी से; चङ्किल्–शंख वाद्य से; तारैयिल्–लगातार; ॲळु कुरल्–उठनेवाला नाद; अऩ्ऱिये–नहीं आया पर; अन्ऱु–उस दिन; अ इलङ्कैक्कु–उस लंका के लिए; ॲन्ऱुम् इल्लतु ओर्–अभूतपूर्व एक; अळुकुरल् पिऱन्ततु–रुदन-स्वर उठा। ५८९

साधारण रूप से लंका में 'मद्दल' (मृदंग-सा वाजा) सुरीला याळ, संगीतमयी बाँसुरी, शंख —इन वाद्यों का निरन्तर गान सुनाई देता था। पर आज इसके विपरीत, अभूतपूर्व रीति से रुदन का स्वर उठा। ५८९

❀ कळ्ळुडै	वळ्ळमुङ्	गळित्तु	वॅम्बिय
उळ्ळमु	मॊरुवळिक्	किडक्क	वोडिनार्
वॅळ्ळमु	नाणुऱ	विरिन्द	कण्णिनर्
तळ्ळुरु	मरुङ्गिनर्	तळीइक्कॊण्	डेहिनार् 590

वॅळ्ळमुम् नाण् उऱ–बाढ़ को भी शरमानेवाले; विरिन्त कण्णित्तर्–अश्रुप्रवाह से भरी आँखों से युक्त स्त्रियाँ; कळ् उटै वळ्ळमुम्–सुरा-भरे प्यालों और; कळित्तु वॅम्पिय उळ्ळमुम्–सुरापान से गरम हुए मनों को; ओरु वळि किटक्क–एक ओर रहने देकर; ओटित्तार्–दौड़ीं; तळ्ळुऱ–बल खानेवाली; मरुङ्कित्तर्–कमरों के साथ; तळीइ कॉण्टु–आपस में पकड़ लेते हुए; एकित्तार्–शूर्पणखा के पास गईं। ५९०

स्त्रियाँ सुरापान में लगी रहीं। उन्होंने सुरा का प्याला और पीने से उत्तप्त मन दोनों को एक ओर रख दिया। उनकी आँखें बाढ़ को भी शरमाती हुई अश्रुजल से भर गयीं। वे दौड़ीं। उनकी कमरें लचकीं। एक दूसरे को पकड़ती हुई, सहारा लेती हुई शूर्पणखा के पास गयीं। ५९०

❀ नान्दह वुळवर्मे ऩाडुन् दण्डत्तार्
कान्दिन मत्तत्तिन्र् पुलवि कॅम्मिहच्
चेन्दह णदिहमुज् जिवन्दु नीरुह
वेन्दनुक् किळैयव डाळिन् वीळ्न्दनर् 591

नान्तक उळवर् मेल्–तलवार-कृषक (अपने पतियों) को; नाट्टम् तण्टत्तार्–दण्ड देने को आतुर स्त्रियाँ; कान्तिन्न मत्तत्तिन्र्–कोपसंतप्त मन के साथ; पुलवि कॅ मिक–मान के बढ़ने से; चेन्त कण् अतिकमुम् चिवन्तु–लाल आँखों को और अधिक लाल करते हुए; नीर् उक–आँसू निकालकर; वेन्तनुक्कु इळैयवळ्–(राक्षस-) राजा की छोटी बहिन के; ताळिल् वीळ्न्तनर्–पैरों पर गिरीं। ५९१

कुछ स्त्रियाँ अपने तलवार के धनी पतियों से खीझ गयी थीं। वे उनको दण्ड देने की खोज में थीं। उनका मन गरम था और आँखें लाल थीं। अब डर के कारण उनकी आँखें अधिक तीव्र लाल हो गयीं। वे आकर अपने राजा की बहिन शूर्पणखा के पैरों पर गिरीं। ५९१

पॉऱ्ऱलै मरहदप् पूह नोवुऱच्, चुऱ्ऱिय मणिवडन् दूङ्गु मूशलिऩ्
मुऱ्ऱिय पाडलै मुऩिवुऱ् ऱेङ्गिऩार्, शिऱ्ऱिडै यलमरत् तॅरुवु शेर्हिऩ्ऱार् 592

पॉन् तलै–सिरों पर स्वर्ण-सदृश फलों से भरे; मरकत पूकम्–मरकतवर्ण पूगतरुओं को; नोवु उऱ–कष्ट देते हुए; चुऱ्ऱिय–लपेटकर बँधे हुए; मणि वटम् तूङ्कुम्–मणिमय जंजीरों से लटकनेवाले; ऊचलिऩ्–झूलों में रहकर; मुऱ्ऱिय आटलै–उच्चतम वेग से झूलना; मुऩिवु उऱ्ऱु–कोप से छोड़कर; एङ्कित्तार्–दुखित जो हुईं, वे; चिऱ् इटै अलमर–पतली कमरों को दुखने देते हुए; तॅरुवु चेर्कित्ऱार्–वीथी में आ गईं। ५९२

कुछ स्त्रियाँ पूगतरुओं से बँधे झूलों में बैठकर झूल रही थीं। वे पूगतरु मरकततरु के समान हरे और मनोहारी थे और उनके सिरों पर स्वर्ण-सम फल लगे थे। उन तरुओं को संकट देते हुए स्त्रियों का झूलना उच्चतम दशा पर था। जब उन्होंने शूर्पणखा को देखा तो उन्होंने गुस्से के

साथ झूलना छोड़ा। पतली कमर को कष्ट देती हुई वे वीथी में आ गयीं। ५९२

❀ ॲळुवॆन्न मलैयॆन्न वॆळुन्द तोळ्हळैत्
तळुविय वळैत्तळिर् नॆहिळ्ल् तामरै
मुळुमुहत् तिरुहयत् मुत्ति नालिहळ्
पॊळिदरच् चिलरुळम् पॊरुमि विम्मुवार् 593

चिलर्—(और) कुछ (राक्षसी स्त्रियाँ); ॲळु अॆन्न—स्तम्भ-सम; मलै अॆन्न—पर्वत-से; ॲळुनुत—उन्नत; तोळ्कळै—(अपने पतियों के) कन्धों से; तळुविय—लिपटे रहे; वळै तळिर्—वलय-भूषित पल्लवों (हस्तों) को; नॆकिळ—अलग करके; तामरै मुळु मुकत्तु—वदन रूपी पुष्ट कमल पर की; इरु कयल्—दो कयलों (आँखों) में; मुत्तिन् आलिकळ्—मोती-से अश्रुकण; पॊळि तर—भरते हुए; उळम् पॊरुमि—मन को दुख से भरकर; विम्मुवार्—सिसकीं। ५९३

अन्य कुछ राक्षस-नारियाँ अपने पतियों के स्तम्भ और पर्वत-सम कन्धों से लिपटी रहीं। जब उन्हें समाचार मिला तो उनके वलय-भूषित पल्लव-सम हाथ ढीले पड़ गए। पुष्ट कमल-सम मुखों में रही कयल मछली-सी आँखों में मोतियों के समान अश्रुकण ढलक आये। उनका मन दुखी हुआ और वे सिसकियाँ भरने लगीं। ५९३

नॆय्न्निलैय वेलरश न्नेरुनरै यिल्लान्
इन्निलैयु णरन्दबोळु दॆन्निलैय न्नेन्ना
मैन्निलैनॆ डुङ्गणमळै वानिलैय वाहप्
पॊय्न्निलैम रुङ्गिन्नर् पुलम्बिन्नर् पुरण्डार् 594

नेरुनरै इल्लान्—टक्कर लेनेवाला जिसकी कोई नहीं रहा; नॆय् निलैय—घृत-लगे; वेल् अरचन्—भाले का धारण करनेवाला राजा (रावण); इ निलै उणर्न्त पॊळुतु—(शूर्पणखा की) यह स्थिति जब जानेगा; ॲ निलैयन् ॲन्ना—किस स्थिति का होगा, यह सोचकर; मै निलै—अंजनयुक्त; नॆटुम् कण्—आयत आँखों के; मळै वान् निलैयतु आक—जल-वर्षक मेघ की-सी स्थिति में आते; पॊय् निलै मरुङ्कितर्—मिथ्या-कटि स्त्रियाँ; पुरण्टार् पुलम्पितर्—लोटीं और विलपीं। ५९४

कुछ स्त्रियों के मन में यह प्रश्न उठा कि अजातशत्रु धृतरंजित भाले के स्वामी, रावण को जब शूर्पणखा की स्थिति मालूम होगी तो उसकी स्थिति क्या होगी? तो उनकी काजल-लगी दीर्घ आँखें जलवर्षक मेघों के समान हो गयीं। नाम-मात्र की कटि से युक्त वे भूमि पर लोटती हुई विलाप करने लगीं। ५९४

मनन्दलै वरुङ्गत्तलि निन्शुवै मरुन्दार्
कनन्दलै वरुङ्गुळल् शरिन्दुहलै शोर

नत्तन्दलैय कौङ्गैह डदुम्बिड नडन्दार्
अनन्दलिळ मङ्गैय रळुङ्गिययर् हित्तार् 595

अत्तन्तल् इळ मङ्कैयर्–सोती रहीं (जो) वे कुछ तरुणी रमणियाँ; मत्तम् तलै–मन में इच्छा करने से; वरु–होनेवाले; कतवु इन् चुवै–सपनों का मधुर रस; मऱन्तार्–भूलकर; कतम् तलै वरुम्–घन-सदृश विशिष्ट; कुळल् चरिन्तु–केश को खुलकर बिखरने देते हुए; कलै चोर–वस्त्र को खिसकने देते हुए; नत्तम् तलैय–पृथुल; कौङ्कैकळ्–स्तनों को; ततुम्पिट–उछलने देते हुए; नटन्तार्–पैदल आईं; अळुङ्कि–दुखी होकर; अयर्कित्ऱार्–श्रांत हुईं। ५९५

कुछ स्त्रियाँ निद्रा कर रही थीं। उनका मन आनन्द के साथ स्वप्न देखने लगा था। जब उन्हें यह समाचार मिला तो स्वप्न का रस भूलकर उठीं। मेघ-सम केश खुलकर बिखर गये। वस्त्र भी ढीले हो खिसकने लग गये। जब वे पैदल चलने लगीं तो उनके बड़े-बड़े स्तन उछलने लगे। वे बहुत दुखी हुई। ५९५

अङ्गैयि नरत्तगयिलै कौण्डदिऱ लैयत्
तङ्गैनिलै चिङ्गिदुहौ लॅन्ऱुतळर् हित्ऱार्
कौङ्गैयिणै शॅङ्गैयिन् मलैन्दुकुलै कोदै
मङ्गैयर्ह णङ्गैयडि वन्दुविळु हित्ऱार् 596

कुलै कोतै मङ्कैयर्कळ्–स्त्रियाँ, जिनके केश छूटे और बिखरे थे; अम् कैयिल्–अपनी हथेलियों में; अरन् कयिलै कौण्ट–हर के कैलास को जिसने उखाड़ा था, उस; तिऱल् ऐयन्–पराक्रमी राजा की; तङ्कै निलै–बहिन की दशा; इङ्कु इतु कौल्–यहाँ यह हुई तो; ऍन्ऱु तळर्कित्ऱार्–यह सोचकर क्लान्त हुईं; कौङ्कै इणै–स्तन-द्वय पर; चॅम् कैयिल् मलैन्तु–अपने लाल हाथों से पीटती हुई; नङ्कै अटि वन्तु–उस नायिका के चरणों पर आकर; विळुकित्ऱार्–गिरती है। ५९६

कुछ स्त्रियाँ, जिनके केश खुले हुए बिखरे थे; अपनी छाती पीटते हुए रोने लगी। उन्हें दुख इस बात का था कि अपनी हथेली में जिसने हर के कैलास पर्वत को उठाया था, उस पराक्रमी स्वामी की बहिन की भी यह हालत हो गयी। रोती हुई आकर वे नायिका के पैरों पर गिरीं। ५९६

इलङ्गैयिल् विलङ्गुमिवै यॅय्दलिल वॅन्ऱुम्
वलङ्गैयि लिलङ्गुमयिन् मन्तनुळ नॅन्ना
नलङ्गैयि लहन्ऱदुहौ नम्मित्तॅन नैन्दार्
कलङ्गलिल् करुङ्गणिणै वारिहलुळ् हिन्ऱार् 597

वलम् कैयिल् इलङ्कुम् अयिल्–दाहिने हाथ में प्रकाशमान भाला रखनेवाला; मन्तन् उळन्–राजा है; ऍन्ना–यह सोचकर (डर से); ऍन्ऱुम्–सदा; इलङ्कैयिल्–लंका के; विलङ्कुम्–जानवर भी; इवै ऍय्तल् इल–ऐसी आफ़त के भागी नहीं होते थे; नम्मिन्–हमसे; नलम् कैयिल् अकन्ऱतु कौल्–भलाई छोड़कर अलग हो गई

शायद; अँत्–यह सोचकर; नैन्तार्–दुख से क्षीण होती हुई; कलङ्कलिल्–व्यथा के कारण; करुम् कण् इणै–काली दोनों आँखों से; वारि–जल को; कलुळ्कित्तार्–गिराती हैं। ५६७

अपने दाहिने हाथ में भाला लिये हुए राजा रावण विद्यमान था। उसके कारण लंका में किसी जानवर पर भी ऐसा संकट नहीं आया था। 'अब क्या हमारी सुरक्षितता चली गयी ?' यह सोचकर वे व्यथित हुई। व्याकुलता के कारण उनकी काली आँखों के जोड़ों में अश्रु भर आया। ५९७

❀ अँन्ऱितैय	वन्तुय	रिलङ्गैनह	रॅय्द
निन्ऱव	रिरुन्दवरॉ	डोडुनॅऱि	तेडक्
कुन्ऱिनडि	वन्दुपडि	कॉण्डलॅन	मन्नन्
पॉन्ऱिणि	पॉलन्गऴल्	विऴुन्दनळ्	पुरण्डाळ् 598

अँन्ऱु इत्तैय–ऐसा, ऐसा; इलङ्कै नकर्–लंका नगर; वन् तुयर् अँय्त–कठोर दुख को प्राप्त हुआ, तब; निन्ऱवर् इरुन्तवर् ओटु–सभा में जो खड़े रहे वे, जो बैठे रहे उनके साथ; ओटु नॅऱि तेट–भागने का मार्ग देखने लगे; कुन्ऱिन् अटि वन्तु पटि–पर्वत के तल में आकर जमनेवाले; कॉण्टल् अँन–घन के समान; मन्नन्–(राक्षस) राजा रावण के; पॉन् तिणि–स्वर्णमय; पॉलन् कऴल्–सुन्दर पायल से अलंकृत पैरों पर; विऴुन्तनळ्–गिरी; पुरण्टाळ्–लोटी (शूर्पणखा)। ५६८

इस तरह लंका का नगर ही व्याकुलता से भर गया। तब रावण की सभा में शूर्पणखा आयी और रावण के स्वर्णमय पायलधारी चरणों पर गिरी। जब वह वहाँ आयी तो सभा में जो खड़े रहे और जो बैठे रहे, सभी भागने का मार्ग ढूँढ़ने लगे। जब वह रावण के पैरों पर गिरी, तब पर्वत के तल में मेघ आकर पड़ा हो, ऐसा लगा। वह गिरकर लोटने लगी। ५९८

मूडिय	तिरुट्पडल	मूवुलहु	मुऱ्ऱुच्
चेडनुम्	वॅरुक्कॊडु	शिरत्तॊहै	नॅळित्तान्
आडिन	कुलक्किरि	यरक्कनु	मयिर्त्तान्
ओडिन	तिशैक्करिह	ळुम्बरु	मॊळित्तार् 599

मू उलकुम् मुऱ्ऱ–तीनों लोकों में सर्वत्र; इरुळ् पटलम् मूटियतु–अँधेरा-पटल ढँक गया; चेटनुम्–शेषनाग ने भी; वॅरु कॊटु–डरकर; चिरम् तॊकै–सिरों की राशि को; नॅळित्तान्–लचकाया; कुल किरि आटिन–कुलपर्वत हिल उठे; अरुक्कनुम् अयिर्त्तान्–सूर्यदेव भी ठिठके; तिचै करिकळ्–दिग्गज; ओटिन–भागे; उम्परुम्–देव भी; ऑळित्तार्–छिप गये। ५६६

तब तीनों लोकों को अन्धकार ढाँप गया। शेषनाग ने डरकर अपने सिरों के समूह को लचका दिया। (कैलास, हिमालय, मन्दर, विन्ध्य,

निषद; हेमकूट, नील, गन्धमादन नाम की) सातों कुलगिरियाँ हिल गयीं। सूर्य भी भयभीत और संशयसहित हो गया। दिग्गज भाग गये और देव भी छिप गये। ५९९

विरिन्दवल यङ्गण्मिडै तोळ्वडर मीदिट्
टॅरिन्दत्तय त्तङ्गळॅयिऱ् ऱिऩ्बुऱ मिम्मैप्प
नॅरिन्दपुरु वङ्गणॅडु नॅऱ्ऱियित्तै मुऱ्ऱत्
तिरिन्दपुव त्तङ्गळ्वित्तै तेवरु मयिर्त्तार् 600

विरिन्त वलयङ्कळ् मिटै–विशाल वलयों से लसे; तोळ् पटर–कन्धे फूल उठे, तव; मीतु इट्टु–ऊपर उठती; ऍरिन्त नयत्तङ्कळ्–ज्वाला के साथ जलनेवाली लाल आँखें; ऍयिऱ्ऱिऩ् पुऱम्–वक्रदाँतों के बाजू में; इमैप्प–प्रकाश फैलातीं तो; नॅरिन्त पुरुवङ्कळ्–टेढ़ी हुई भौंहें; नॅटु नॅऱ्ऱियित्तै–लम्बे भालों को; मुऱ्ऱ–ढँक गईं, तो; पुवत्तङ्कळ्–सारे भुवन; तिरिन्त–गति बदलकर घूम उठे; वित्तै–विपरीत कार्य देख; तेवरुम् अयिर्त्तार्–देवता लोग भी भय करने लगे। ६००

रावण के कन्धे, जिन पर वलय लगे थे, फूल उठे। उसकी आँखों से जो ज्वाला-सी उठी उसका प्रकाश वक्रदन्तों के बाजुओं में फैला। घनी भौंहें तनीं और भाल पर फैल गयीं। सारे भुवन डगमगा गये। यह विपरीत स्थिति देखकर देव सिहर उठे। ६००

तॅन्ऱिशै नमनऱ्ऱनोडु तेवर्हुल मॅल्लाम्
इन्ऱिऱुदि वन्दतु नमक्कॅन्ऩ विरुन्द
निन्ऱुयिर् नडुङ्गवुडल् विम्मनिलै यिल्ला
दॉन्ऱुमुरै याडलिल रुम्बरित्तॊ डिम्बर् 601

तॅन् तिचै नमन् तन् ऑटु–दक्षिणी दिशा के (अधिदेवता) यम के साथ; तेवर् कुलम् ऍल्लाम्–देवों के कुल सब; नमक्कु–हमारा; इन्ऱु–आज; इऱुति वन्ततु–अन्त आ गया; ऍन्ऩ–सोचकर; इरुन्त–रहे; उम्पर् ऑटु–देवों के साथ; इम्पर्–इस लोक के वासी भी; उयिर् नटुङ्क–काँपते प्राणों के साथ; निन्ऱु–खड़े होकर; उटल् विम्म–शरीर-स्पन्दन के साथ; निलै निल्लातु–कहीं स्थिर न रह सके; ऑन्ऱुम् उरै आटल् इलर्–एक शब्द भी नहीं बोल सके। ६०१

दक्षिण दिशा के यम से लेकर सारे देवता भयभीत हो गये कि आज हमारा अन्त आ गया। वे खड़े रह गये। आकाशवासी के साथ इहलोकवासी भी काँपने लगे। उनके प्राण सूख गये, शरीर काँपने लगे और वे अस्थिर और मौन हो रहे। ६०१

* मडित्तपिल वाय्हडॊरुम् वन्दुबुहै मुन्दत्
तुडित्ततॊडर् मीशॆहळ् शुरुक्कॊळ वुयिर्प्पक्
कडित्तहदिर् वाळॅयिरु मिन्कजल मेहत्
तिडित्तवुरु मॊत्तुरऱि यावरॊय लॆन्ऱान् 602

मटित्त पिल वाय्कळ् तीरुम्–(कोप से रावण ने जिनके) अधरों को मोड़कर दाँतों से दबा रखा था, उन मुखों में; पुकै वन्तु मुन्त–धुआँ निकल रहा था; तुटित्त–फड़कती; तोटर् मीचैकळ्–मूँछों की श्रृंखला को; चुरुक्कोळ–झुलसाते (काला बनाते) हुए; उयिर्प्प–साँसें छोड़ रहा था; कटित्त–जिनको पीसता था; कतिर् वाळ् ऍयिरु–प्रकाशमय तलवार-सम वक्र (या खड्ग) दाँतों के; मिन् कअल–विद्युत-से चमकते; मेकत्तु इटित्त उरुम् ऑत्तु–मेघ में उठनेवाले वज्र-नाद के समान; उरप्पि–स्वर में बोलते हुए; यावर् चॅयल्–किसका काम है; ऍन्ऱान्–पूछा। ६०२

रावण ओंठ चबा रहा था। उन बिल-समान मुखों से धुआँ उठ रहा था। उसकी मूँछें पंक्ति में हिल रही थीं। और उनको झुलसाते हुए वह गरम साँसें छोड़ रहा था। उसके वक्र दाँत, जो ओंठों को दबा रहे थे, बिजली के समान चमक रहे थे। मेघ में उठनेवाले वज्र के से स्वर में उसने शूर्पणखा से पूछा कि यह किसका काम है ? । ६०२

❀ कान्िडै यडैन्दुबुवि कावल्बुरि हिन्ऱार्
मीनुडै नॅडुङ्गॉडियि नोननैयर् मेल्हीळ्
ऊनुडै युडम्बुडैमै योरुवमै यिल्ला
मानिडर् तडिन्दनर्हळ् वाळुरुवि यॅन्ऱाळ् 603

पुवि कावल् पुरिकिन्ऱार्–भूपालक; मीन् उटै नॅटुम् कॉटियिन्नोन्–मकरांकित लम्बी ध्वजा वाले के; अनैयर्–समान रूप रखनेवाले; मेल् कीळ्–ऊपर और नीचे के लोकों में; ऊन् उटै–मांस सहित; उटम्पु उटैमैयोर्–शरीरधारी; ओर् उवमै इल्ला–अनुपम; मानिटर्–मनुष्य; कान् इटै अटैन्तु–कानन में आकर; वाळ् उरुवि–तलवार खींचकर; तटिन्तनर्कळ्–काट लिया; ऍन्ऱाळ्–कहा। ६०३

शूर्पणखा ने उत्तर दिया कि वे भूमि के पालक राजकुमार हैं। मकरकेतु के समान रूपवान हैं। ऊपर के सात और नीचे के सात, चौदहों लोकों में वे मांसधारी मनुष्य अनुपम हैं। वे वन में आये हैं और उन्होंने कटार निकालकर मेरा अंग-भंग कर दिया। ६०३

❀ शॅय्दनर्हण् मान्िड रॅनत्तिशै यनैत्तुम्
ऍय्दनहै वन्ददॅरि शिन्दिनह णॅल्लाम्
नोय्दवर् वलित्तॊळि नुवन्ऱमॊळि यॊन्ऱा
पॊय्तविर् पयत्तैयॊळि पुक्कपह लॅन्ऱान् 604

मानिटर् चॅय्ततर्कळ् ऍन–मानवों ने किया, यह कहने पर; तिचै अनैत्तुम् ऍय्त–दिशाओं भर में गूँजे, ऐसा; नकै–हास; वन्तत्तु–आया; कण् ऍल्लाम्–सभी आँखों ने; ऍरि–आग; चिन्तिन–बरसायी; नॉय्तवर्–अल्प (मानव); वलि तॊळिल्–बलवान का कार्य; नुवन्ऱ मॊळि–तुम्हारा कहा वचन; ऑन्ऱा–मेल नहीं खाता; पॊय् तविर्–झूठ छोड़ो; पयत्तै ऒळि–भय त्यागो; पुक्क–जो हुआ; पुकल्–बताओ (सच); ऍन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ६०४

मनुष्यों ने यह काम किया —यह सुनकर रावण को हँसी आ गयी। उसकी गूँज आठों दिशाओं में भर उठी। आँखों ने आग उगली। उसने शूर्पणखा को डाँटा कि क्या बकती हो ? वे दुर्बल मानव हैं और यह काम बड़े वीरों का काम है। दोनों में मेल नहीं है। असत्य कहना छोड़ो। भय के कारण ऐसा कहती हो तो भय त्याग दो। जो हुआ वह सच-सच बताओ। ६०४

मन्मदत्तै योप्पर्मणि मेनियिड मेरुत्
तन्मद नळिप्पर्दिर डोळिन्वलि तन्नाल्
अँन्नदनै यिप्पोळ्दु दिशैप्पदुल हेळिन्
नन्मदम ळिप्परॊरि मैप्पिनिन्नि विल्लाल् 605

मणि मेनि–सुन्दर रूप में; मन्मतत्तै ऑप्पर्–मन्मथ की समानता करते हैं; तिरळ् तोळिन् वलि तन्नाल्–पुष्ट भुज-बल के पराक्रम में; वट मेरु तन्–उत्तर के मेरु का; मतन् अळिप्पर्–घमण्ड चूर कर देंगे; विल्लाल्–धनुर्युद्ध में; ओर् इमैप्पिल्–एक पल में; उलकु एळिन्–सातों लोकों का; नल् मतन्–बड़ा बल; नति ऑळिप्पर्–खूब नष्ट कर सकेंगे; अतनै–उसको; इप्पोळ्तु–अब; इचैप्पतु ऍन्–कहना कैसा। ६०५

शूर्पणखा फिर उनके सौन्दर्य का वर्णन करने लगी। वे रूप में मन्मथ है। पुष्ट कन्धों के बल में मेरु का गर्व चूर करनेवाले हैं। एक ही धनु के बल से एक ही पल में वे सातों लोकों का बल मिटा सकनेवाले हैं। हा ! हा ! उसका अब कैसा वर्णन किया जायगा ? । ६०५

वन्दनैमु नित्तलैवर् पालुडैयर् वानत्
तिन्दुविन्मु हत्तरॅरि नीरिलॅळ् नाळक्
कन्दमल रैप्पोरुवु कण्णर्हळल् कैयर्
अन्दमिइ वत्तॊळिल रारवरै यॊप्पार् 606

मुनि तलैवर् पाल्–मुनिवरों के प्रति; वन्तनै उटैयर्–पूजा का भाव जो रखते हैं; वानत्तु इन्तुविन् मुकत्तर्–आकाश के चन्द्र के समान मुख वाले; ऍरि–तरंगाकुल; नीरिल्–जलाशय में; ऍळु–उत्पन्न; नाळ–नालसहित; कन्त मलरै–सुवासपूर्ण (कमल-) पुष्प की; पॊरुवु–समानता करनेवाली; कण्णर्–आँखों वाले; कळल्–चरण वाले; कैयर्–हाथों वाले; अन्तम् इल्–असीम; तव तॊळिलर्–तपस्या-कार्य में लीन; आर् अवरै ऑप्पार्–कौन उनकी समानता करेगा। ६०६

शूर्पणखा ने आगे कहा कि वे मुनिवरों के प्रति श्रद्धाभाव रखनेवाले हैं। आकाश के चन्द्र के समान उनके मुख प्रकाशमान और मनोरम हैं। उनकी आँखें तरंग-भरे जलाशयों में विकसित नालयुक्त सुगंधित कमल के समान हैं। हा ! हा ! वे कमल-हस्त हैं और कमल-चरण हैं। अपार

तप के कर्म में लगे हुए हैं। उनकी उपमा कहाँ ढूँढ़ी जाय ? कौन उनकी तुलना कर सकेंगे ? । ६०६

वऱ्कलैयर् वार्हळ्ळर् मार्बिलणि नूलर्
विऱ्कलैयर् वेदमुऱै नावर्तनि मॅय्यर्
उऱ्कलैय रुन्नैयोर्दु हट्टुणैयु मुन्नार्
शॊऱ्कलैयॆ न्नत्तॊलैवि ऱूणिहळ् शुमन्दार् 607

वऱ्कलैयर्—वल्कल-वसन; वार्कळ्ळर्—लम्बी पायलधारी; मार्पिल् अणि—वक्ष में धृत; नूलर्—यज्ञोपवीत वाले; विल् कलैयर्—धनुर्विद्या-विशारद; वेतम् उऱै नावर्—वेदाश्रय-जिह्वा; तत्ति मॅय्यर्—अनुपम सत्यसंध; उत् कलैयर्—कला-श्रेष्ठ; चॊल् कलै अॅत—शब्द-विद्या के समान; तॊलैवु इल्—अक्षय; तूणिकळ् चुमन्तार्—तूणीर रखनेवाले; उन्नै ऑर् तुकळ् तुणैयुम्—तुमको एक धूलि के समान भी; उन्नार्—नहीं समझते। ६०७

वे वल्कलवसन हैं। पायलधारी हैं। उनके वक्ष में यज्ञोपवीत शोभायमान हैं। युद्धविद्याविशारद हैं। उनकी जीभ वेदों का आश्रय हैं। अनुपम सत्यसंध हैं। कलाओं में उत्कृष्ट निपुण हैं। शब्द-शास्त्र के समान उनके तूणीर अक्षय हैं। वे तुमको धूलि के समान भी नहीं मानेंगे। ६०७

* माररुळ रेयिरुव रोरुयिरिन् वाळ्वार्
वीररुळ रेयवरिन् विल्लिन्वलि वल्लार्
आरॊरुव रन्नवरै यॊप्पवर्ह ळैया
ओरॊरुव रेमुदल्वर् मूवरैयु मॊप्पार् 608

ऐया—महिमावान; इरुवर् मारर् उळरे—दो मार देव है क्या; ओर् उयिरिन् वाळ्वार्—एकप्राण हो रहते हैं; विल् अमरिल्—धनुर्विद्या में; वल्लार्—कुशल; अवरिन् वीरर्—उनसे बढ़कर वीर; उळरे—हैं क्या; अन्नवरै ऑप्पवर्कळ्—उनकी समानता करनेवाले; ऑरुवर् आर्—कोई एक कौन हैं; ओर् ऑरुवरे—उनमें एक-एक; मुतल्वर् मूवरैयुम्—प्रधान त्रिदेवों की; ऑप्पार्—समानता करेंगे। ६०८

हे मेरे तात, प्रभु ! कहीं मन्मथ दो है क्या ? वे एक प्राण हो रहते है। धनुर्विद्या में वे बड़े ही समर्थ है। उनसे बढ़कर कोई वीर भी है क्या ? उनकी तुलना करनेवाले कोई कहाँ हैं ? उनमें एक-एक त्रिदेवों की समानता कर सकेंगे। ६०८

* आऱुमन मञ्जिन मरक्करै यॆनच्चॊन्
ऱेऱुनॆऱि यन्दण रियम्बवुल हॆल्लाम्
वेऱुमॆनु नुङ्गळ्हुलम् वेरॊडु मडङ्गक्
कीऱुमॆन मुन्दैयॊरु शूळुरवु कॊण्डार् 609

एऱु नॆरि अन्तणर्–उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते जानेवाले ब्राह्मणों (ऋषियों) ने; चॆन्ऱु–उनके पास जाकर; अरक्करै–राक्षसों को; आऱम् मतम्–शान्तमन वाले हम; अञ्चितम्–डरते हैं; ॲन्न इयम्प–यह कहा, तो; उलकु ॲलाम्–सारे लोक; वेऱुम् ॲन्नुम्–हराकर मिटा देंगे, कहनेवाले; उङ्कळ् कुलम्–तुम्हारे कुल का; अटङ्क–सारा; वेर् ऒटुम् कोऱुम् ॲन–समूल नाश करेंगे, ऐसा; मुन्नै–पहले; ऒरु चूळ्–एक शपथ; उऱवु कॊण्टार्–कर ली है। ६०९

उत्तरोत्तर सत्पथ में बढ़ते चलनेवाले मुनिवरों ने उन मानवों के पास जाकर बताया कि हम शान्त-प्रकृति हैं और हमें इन राक्षसों से भय है। तब उन्होंने शपथ खायी कि 'संसार का नाश कर देंगे' —यह कहनेवाले राक्षसों के कुल को ही हम समूल नाश कर देंगे। पहले की हुई उस शपथ से वे बद्ध हैं। ६०९

❀ तरावलय नेमियुळ्ळ वन्ऱयर दप्पेर्प्
परावरु नलत्तॊरुवन् मैन्दर्पऴि यिल्लार्
विरावरुम् वनत्तवन् विळम्बवुऱै हिन्ऱार्
इरामनु मिलक्कुवनु मॆन्बर्पॆय रॆन्ऱाळ् 610

तरा वलयम्–भूमण्डल का; नेमि उळवन्–चक्रवर्ती राजा; तयरत पेर्–दशरथ नाम का; परावरु नलत्तु ऒरुवन्–प्रशंसनीय गुण वाला एक; मैन्तर्–उसके पुत्र; पऴि इल्लार्–अनिन्द्य; अवन् विळम्प–उसके कहने पर; विरावु अरु वनत्तु–वास के लिए अयोग्य कानन में; उऱैकिन्ऱार्–रहते हैं; पॆयर्–नाम; इरामनुम् इलक्कुवनुम्–श्रीराम और लक्ष्मण; ॲन्पर्–कहते हैं; ॲन्ऱाळ्–कहा (शूर्पणखा ने)। ६१०

इस भूमण्डल का राजा, चक्रवर्ती दशरथ नाम का प्रशंसनीय गुणी था। ये उस श्रेष्ठ राजा के पुत्र हैं। ये अनिन्द्य हैं। दशरथ की आज्ञा से वे इस वन मे आकर ठहरते है, जहाँ स्वच्छन्द होकर वास करना कठिन है। उनके नाम राम और लक्ष्मण हैं। —शूर्पणखा ने अपनी बात समाप्त की। ६१०

मरुन्दनैय तङ्गैमणि नाशिवडि वाळाल्
अरिन्दवरु मानिड रऱिन्दुमुयिर् वाऴ्वार्
विरुन्दनैय वाळॊडुम् विऴित्तिरैयुम् वॆळ्हा
दिरुन्दन निरावणनु मित्नुयिर्हॊ डिन्नुम् 611

मरुन्तु अनैय तङ्कै–अमृत-सम छोटी बहिन की; मणि नाचि–सुन्दर नासिका को; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; अरिन्तवरुम् मानिटर्–काटनेवाले भी मानव हैं; अऱिन्तुम्–यह विदित होने पर भी; उयिर् वाऴ्वार्–जीवित हैं; इरावणनुम्–रावण भी; विरुन्तु अनैय वाळ् ऒटुम्–नई तलवार के साथ; विऴित्तु–ताकते हुए; इऱैयुम् वॆळ्कातु–किंचित भी लाज का अनुभव किये विना; इन् उयिर् कॊटु–अपने प्यारे प्राणो के साथ; इरुन्तनन्–चुप रह गया। ६११

रावण को यह सब सुनकर बड़ा बुरा लगा। वह कहने लगा— मेरी अमृत-सी प्यारी वहिन की सुन्दर नासिका को तीक्ष्ण असि से काटनेवाले हैं मनुष्य ! यह विदित होने पर भी वे जीवित हैं ! क्या अपमान है ! रावण भी अपनी नवीन तलवार के साथ, वीसों आँखों से देखता हुआ, विना शरम खाये प्यारे प्राण लेकर रहता है ! । ६११

❀ कॊऱ्ऱमदु मुऱ्ऱिवलि यालरशु कॊण्डेऩ्
उऱ्ऱपयऩ् मऱ्ऱिदुहॊ लामुरै यिऱन्देऩ्
मुऱ्ऱुवुल हत्तुमुदल् वीरर् मुडियॆल्लाम्
अऱ्ऱपॊऴु दिऱ्ऱिदुपॊ रुन्दुमॆन लामो 612

कॊऱ्ऱम् अतु मुऱ्ऱि–विजय का पक्का बनाकर; वलियाल्–अपनी शक्ति से; अरचु कॊण्टेऩ्–त्रिलोकाधिपत्य अपनाया (मैंने); उऱ्ऱ पयऩ्–उसका प्राप्त फल; इतु कॊल् आम्–यही है क्या; उरै इऱन्तेऩ्–(गौरव-) गाथा खोई; मुऱ्ऱ उलकत्तु– सारे विश्व में; मुतल् वीरर्–पहले सिरे के वीरों के; मुटि ॲल्लाम्–सिरों को; अऱ्ऱपॊऴुतु–जब काटा गया तब; इऱ्ऱ इतु–जो गया यह यश; पॊरुन्तुम् ॲऩल् आमो–फिर मिलेगा, यह माना जा सकेगा। ६१२

मैंने अपनी विजय-यात्रा पूरी करके अपने पराक्रम के बल पर तीनों लोकों का राज पाया ! उसका यही फल रहा क्या ? हाय ! यश मेरा नष्ट हो गया ! सभी लोकों के सारे प्रथम श्रेणी के वीरों के सिर काट भी लूं तो यह नष्ट हुआ यश फिर मिल सकेगा क्या ? । ६१२

❀ मूऴुमुळ दायपऴि यॆऩ्वयिऩ् मुडित्तोर्
आऴुमुळ वामवर्द मारुयिरु मुण्डाम्
वाऴुमुळ दोदविड मुण्डवऩ् वऴङ्गु
नाऴुमुळ तोऴुमुळ नाऩुमुळॆ ऩऩ्ऱो 613

ॲऩ् वयिऩ्–मेरे प्रति; उऴतु आय–स्थायी; मूऴुम् पऴि–और व्यापी अपयश का काम; मुटित्तोर्–करनेवाले; आऴुम् उळ–मनुष्य अब भी है; अवर् तम् आर् उयिरुम् उण्टाम्–उनके प्यारे प्राण अब भी है; वाऴुम् उळतु–(चन्द्रहास-) तलवार भी है; ओतम् विटम् उण्टवऩ्–समुद्र का विष के भोक्ता शिव के द्वारा; वऴङ्कु– दत्त; नाऴुम् उळ–आयु के दिन भी हैं; तोऴुम् उळ–भुजाएँ हैं; नाऩुम् उळॆऩ् अऩ्ऱो– मैं भी रहता हूँ। ६१३

वे मनुष्य भी हैं जो मेरे प्रति इतना बड़ा अपराध, मेरे इतने बड़े अपयश का काम कर चुके। और उनके प्राण अब भी बचे हैं ! मेरे हाथ मे चन्द्रहास भी है। समुद्र से निकला विप जिन्होंने खाया, उन शिवजी से वर के रूप में दत्त आयु भी है। मेरे कन्धे भी हैं। मैं भी जीवित हूँ न ! । ६१३

❀ पॉत्तुउ्र वुडऱ्पऴि पुहुन्ददॆन्न नाणित्
तत्तुऱुव दॆन्नॆमन नेतळर लम्मा
ऎत्तुय रुन्नक्कुळ दिनिप्पऴि शुमक्कप्
पत्तुळ तलैप्पहुदि तोळ्हळ् पलवन्ऱो 614

मनत्ते–रे मन; उटल् पॉत्तु उड्र–मेरे शरीर को विद्ध करते हुए; पऴि पुकुन्ततु–अपयश लग गया; ऎन्न–यह सोचकर; नाणि–शरमाकर; तत्तुऱवतु–हड़बड़ाने से; ऎन्नॆ–क्यों; इनि तळरल्–अब मत मुरझा; ऎ तुयर्–कौन सा दुःख; उन्नक्कु उळतु–तुम्हें है; इनि–आगे; पऴि चुमक्क–कलंक ढोने के लिए; तलै पकुति–मेरे सिर के अंश; पत्तु उळतु–दस हैं; तोळ्कळ् पल अन्ऱो–कन्धे भी अनेक (बीस) हैं न। ६१४

रे मन ! यह अपयश ऐसा आकर लगा है कि मेरा शरीर ही विद्ध हो गया। यह सोचकर तुम क्यों शरमाकर हड़बड़ाते हो ? तुम दुख से निर्बल मत हो जाओ। तुम्हारा क्या दुख है ? अपयश ढोने के लिए मेरे दस सिर हैं। कन्धे तो अनेक है न ! । ६१४

❀ ऎन्ऱुरै शॆयानहै शॆयावॆरि विऴिप्पान्
वन्ऱुणैयि लाविरुवर् मानिडरै वाळाल्
कॊन्ऱिलर्ह ळानॆडिय कुन्ऱुडैय कानिल्
निन्ऱकर नेमुदलि नोर्निरुद रॆन्ऱान् 615

ऎन्ऱु उरै चॆया–यह (स्वनिंदा में) कहकर; नकै चॆया–हँसकर; ऎरि विऴिप्पान्–आग के समान दृष्टि चलाते हुए; नॆटिय कुन्ऱु–उच्च पर्वत; उटैय कानिल्–जहाँ रहते हैं, उस वन में; निन्ऱ–रहनेवाले; करन् मुतलिनोर् निरुतर्–खर आदि राक्षसों ने; वन् तुणै इला–कठोर बल से रहित; इरुवर् मानिटरै–दो मनुष्यों को; वाळाल्–अपनी तलवार से; कॊन्ऱिलर्कळा–नहीं मारा था क्या; ऎन्ऱान्–यह पूछा। ६१५

इस तरह (अपनी निन्दा का वचन) कहता हुआ रावण हँस उठा। आग-सी दृष्टि करते हुए रावण ने शूर्पणखा से पूछा कि उस कानन में, जिसमें उन्नत पर्वत हैं, खर आदि राक्षस थे न ? क्या उन्होंने इन निर्बल और असहाय मानवों का अपनी तलवार से वध नहीं किया ? । ६१५

अऱ्ऱव नुरैत्त लोडु मऴुदिऴि यरुविक् कण्णाळ्
ऎऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ् पारि तिडॆविऴुन् दॆङ्गु हिन्ऱाळ्
शुऱ्ऱमुन् दॊलैन्द वैय नॊय्दॆनच् चुमन्द कैयाळ्
उऱ्ऱदु तॆरियुम् वण्ण मॊरुवहै युरैक्क लुऱ्ऱाळ् 616

अऱ्ऱु अवन् उरैत्तलोटुम्–वैसा उसके कहने पर; अऴुतु इऴि–रोने से बहनेवाले; अरुवि कण्णाळ्–सरिता-सम अश्रु-भरी आँखों के साथ; ऎऱ्ऱिय वयिऱ्ऱळ्–पेट पीटती (हुई); पारिन् इटै–भूमि पर; वीऴ्न्तु–गिरकर; एङ्कुकिन्ऱाळ्–रोती

(हुई शूर्पणखा); ऐय-प्रभु; चुऱ्ऱमुम्-हमारे बन्धु-बान्धव सभी; नोय्तु तोलैन्ततु-अनायास मिट गये; अॅऩ्-कहकर; चुमन्त कैयाळ्-सिर पर हाथ धरकर; उऱ्ऱतु तॅरियुम् वण्णम्-वृत्तान्त समझाते हुए; ओरु वकै-एक प्रकार से; उरैक्कल् उऱ्ऱाळ्-बताने लगी। ६१६

जब रावण ने यह प्रश्न किया, तब शूर्पणखा ने आँखों से सरिता के समान अश्रु की धार बहायी। पेट को पीटते हुए भूमि पर गिरी। खूब रोती हुई उसने कहा कि सारा परिवार ही अनायास मिट गया। यह कहकर उसने अपने हाथ सिर पर रख लिये। सारा वृत्तान्त समझाते हुए वह एक प्रकार से कहने लगी। ६१६

शॉल्लॅन्ऩ्ऩ् वायिऱ् केट्टार् तॉडर्न्दॅऴ् शेनै योडुम्
कल्लॅन्ऱ वॊलियिऱ् चॅन्ऱ करन्मुदऱ् काळै वीरर्
ॲल्लॉन्ऱ कमलच् चॅङ्ग णिरामनॅन् ऱियैन्द वेन्दल्
विल्लॉन्ऱिऱ् कडिहै मून्ऱि लेऱ्ऱिनन् विण्णि लॅन्ऱाळ् 617

चॉल्-बात; अॅन् तन् वायिल् केट्टार्-मेरे मुख से सुनकर; तॉटर्न्तु अॅऴु-साथ उठी; चेनै ओटुम्-सेना के साथ; कल् अॅन्ऱ ऑलियिल्-'घल्' शब्द के साथ; चॅन्ऱ-जो गये; करन् मुतल् काळै वीरर्-खर आदि ऋषभ-सम वीर; अॅल् ऑन्ऱु-किरणस्पृष्ट; कमलम्-कमल-सम; चॅम् कण्-लाल आँखों के; इरामन् अॅन्ऱु इयैन्त-श्रीराम के नाम से युक्त; एन्तल्-महिमावान ने; विल् ऑन्ऱिल-एक धनु से; कटिकै मून्ऱिल्-तीन घड़ियों में; विण्णिल्-स्वर्ग पर; एऱ्ऱिनन्-चढ़ा दिया; अॅन्ऱाळ्-शूर्पणखा ने कहा। ६१७

भाई ! मैंने उनसे यह अपना हाल कहा तो वे अपनी सेना के साथ शोर करते हुए राम से लड़ने गये। किरण-प्रफुल्लित कमल-सम आँखों के राम नाम के वीर के धनु द्वारा तीन ही घड़ियों में स्वर्ग चढ़ गये। —शूर्पणखा ने कहा। ६१७

तारुडैत् तानैयोडुन् दम्बियर् तमियन् शॅय्द
पोरिडै मडिन्दा रॅन्ऱ वुरैशॅवि पुहाद मुन्नम्
कारिडै युरुमिन् मारि कनलॊडु पिऱक्कु माबोल्
नीरॊडु नॅरुप्पुक् कान्ऱ निरैनॅडुङ् गण्ग ळॅल्लाम् 618

तमियन् चॅय्त पोर् इटै-एकाकी श्रीराम ने जो किया, उस युद्ध में; तम्पियर्-छोटे भाई; तार् उटै तानै ओटुम्-हारयुक्त वीरों की सेना के साथ; मटिन्तार्-मरे; अॅन्ऱ उरै-यह कथन; चॅवि पुकात मुन्नम्-कान में घुसा इसके पूर्व ही; कार् इटै उरुमिन्-मेघमध्य वज्र के; कनल् ओटु-अनल के साथ; मारि-वर्षा; पिऱक्कुमा पोल्-होती हो जैसे; निरै नॅटुम् कण्कळ् अॅल्लाम्-पंक्ति में रही सभी आँखों ने; नीरोटु नॅरुप्पु-जल के साथ अग्नि को; कान्ऱ-उगला। ६१८

एकाकी राम से लड़कर मेरे छोटे भाई, हारों से भूषित वीरों की

बड़ी सेना के साथ मर गये —यह बात ज्योंही रावण के कानों में पड़ी, त्योंही उसकी पंक्ति की आँखों में मेघमध्य वज्र के साथ अनल और जल जैसे भर जाता है वैसे आग और जल भर गया। ६१८

आयिडै यॆऴुन्द शीऱ्ऱत् तऴुन्दिय तुन्नव माऱ्ऱि
तीयिडै युहुत्त नॆय्यिऱ् चीऱ्ऱत्तिऱ् कूऱ्ऱञ् जॆय्य
नीयिडै यिऴैत्त कुऱ्ऱ मॆन्नवर् नित्तै यिन्ने
वायिडै यिदऴु मूक्कुम् वलिन्दत्तर् कॊय्य वॆन्ऱान् 619

अ इडै–तब; ऍऴुन्त–उभरे; चीऱ्ऱत्तु–कोप में; अऴुन्तिय–मग्न; तुन्नम् माऱ्ऱि–दुःख बदलकर; ती इडै–अग्नि में; उकुत्त नॆय्यिल्–छोड़े गये घी के समान; चीऱ्ऱत्तुक्कु–कोप को; ऊऱ्ऱम् चॆय्य–बल दिलाने पर; अवर्–उन्होंने; नित्तै–तुम्हारे; इन्ने–इस प्रकार; वाय् इडै इतऴुम्–मुख पर के अधरों को; मूक्कुम्–और नाक को; वलिन्तत्तर् कॊय्य–बलात् काटा, इसके निमित्त-रूप में; नी–तुमने; इडै इऴैत्त कुऱ्ऱम्–उनके प्रति किया (जो) अपराध; यातु–वह कौनसा; ऍन्ऱान्–पूछा। ६१९

रावण को एक साथ क्रोध आया और दुख भी। उसने कुछ देर बाद दुख छोड़ा। आग में घी छोड़ने पर भड़क उठनेवाली आग के समान क्रोध उभर आया। उसने पूछा कि इस तरह वे तुम्हारे अधर और नाक को बलात् काट दें, इसके लिए तुमने उनके प्रति क्या अपराध किया? । ६१९

⁕ ऍन्वयि नुऱ्ऱ कुऱ्ऱम् यावर्क्कु मॆऴुद वॊण्णात्
तन्मैय निराम नोडुन् दामरै तविरप् पोन्दाळ्
मिन्वयिन् मरुङ्गुल् कॊण्डाळ् वेय्वयिन् मॆन्ऱोळ् कॊण्डाळ्
पॊन्वयिन् मेनि कॊण्डाळ् पॊरुट्टिनाऱ् पुहुन्द वॆन्ऱाळ् 620

ऍन् वयिन् उऱ्ऱ कुऱ्ऱम्–मुझसे हुआ अपराध; यावरुक्कुम् ऍऴुत ऒण्णात–किसी से भी चित्र बनाना (जिसका) असम्भव है; तन्मैयन्–ऐसे रूप वाले; इरामनोटुम्–राम के साथ; तामरै तविर–(अपना वासस्थान) कमल छोड़कर; पोन्ताळ्–जो आयी है; मिन् वयिन् मरुङ्कुल् कॊण्टाळ्–बिजली से अपनी कमर पानेवाली; वेय् वयिन् मॆन्त तोळ् कॊण्टाळ्–बाँस से जिसने अपने कन्धे पाये हैं; पॊन् वयिन् मेनि कॊण्टाळ्–स्वर्ण से जिसने अपनी शोभा पाई है; पॊरुट्टिताल्–ऐसी एक स्त्री के कारण; पुकुन्ततु–हो गया; ऍन्ऱाळ्–कहा। ६२०

शूर्पणखा ने उत्तर दिया— इस अपराध के हो जाने का एक निमित्त भी है। जिसका चित्र खींचना असम्भव है, उस रूप से युक्त राम के साथ एक स्त्री आयी है! वह ऐसी लगती है कि मानो कमल पर अपना वास छोड़कर इधर आयी है। उसने बिजली से कमर पायी है, बाँस से कन्धे, और स्वर्ण से रूप-रंग। उसी स्त्री के कारण यह हुआ। ६२०

आरव ऴॅऩ्ऱ् लोडु मरक्कियु मैय वाऴि
तेरव ऴल्हुल् कॊङ्गै शॅम्बॊऩ्जॅय् कुलिहच् चॅप्पु
पारवळ् पादन् दीण्डप् पाक्कियम् बडैत्त दम्मा
पेरवळ् शीद यॅऩ्ऱु वडिवॆलाम् बेशलुऱ्ऱाळ् 621

अवळ् आर्–वह कौन; ऍन्ऩल् ओटुम्–पूछने पर; अरक्कियुम्–राक्षसी भी; ऐया–महिमावान; वाऴि–जिओ; अवळ् अल्कुल् तेर्–उसका कटि-प्रदेश रथ ही है; कॊङ्कै–स्तन; चॅम् पॊन् चॅय्–लाल स्वर्ण की बनी; कुलिक चॅप्पु–इंगुरौटियाँ हैं; पार्–भूमि ने; अवळ् पातम् तीण्ट–उसके चरण-स्पर्श का; पाक्कियम् पटैत्ततु–बड़ा भाग्य पाया है; अम्मा–मैया; अवळ् पेर् चीतै–उसका नाम सीता है; ऍन्ऱु–कहकर; वटिवु ऍलाम्–सारा रूप; पेचल् उऱ्ऱाळ्–वर्णन करने लगी। ६२१

रावण ने पूछा कि वह कौन स्त्री है? तुरन्त शूर्पणखा ने कहा। महिमावान! जिओ! क्या कहूँ? उसका कटिप्रदेश रथ है! स्तन स्वर्ण-निर्मित इंगुरौटियाँ हैं। भूमि ने बड़ा पुण्य किया है, तभी वह उसके चरणों को स्पर्श कर सकी है। मैया! उसका नाम सीता है। वह उत्साह के साथ उनके रूप का वर्णन करने लगी। ६२१

कामरम् बळुत्त पाडऱ् कळ्ळॆऩक् कऩिन्द शॅञ्जॊऱ्
तेमलर् शॅऱिन्द कून्दऱ् ऱेवर्क्कु मणङ्गा मॆऩ्ऩत्
तामरै यिरुन्द नङ्गै शेडियान् दरमु मल्लळ्
यामुरै वळङ्ग लॆऩ्ब देळैमैप् पाल दऩ्ऱे 622

पळुत्त कामरम् पाटल्–पूर्णसिद्ध 'कामर' राग के; कळ् ऍन्न कऩिन्त–मधु के समान मधुर; चॅम् चॊल्–सुन्दर बोली वाली; ते मलर्–शहद-भरे पुष्पों से; चॅऱिन्त कून्तल्–घने केश-भूषित; तेवर्क्कु अणङ्काम्–देवबाला-सी उसकी; तामरै इरुन्त नङ्कै–कमलनिवासिनी लक्ष्मी; चेटि आम् तरमुम् अल्लळ्–चेरी भी बनने योग्य नहीं; याम् उरै वळङ्कल्–हम (प्रशंसा का) वचन कहें; ऍन्पतु–यह; एळैमै पालतु–अज्ञता होगा। ६२२

(कामर एक राग है।) पूर्ण-सिद्ध कामर राग के समान मधुरबयनी है वह। केश पर शहदसहित फूल शोभित हैं। देवांगना-सी उस (सुन्दरी) की, कमला श्रीदेवी दासी बनने भी योग्य नहीं है। उसका वर्णन करने का प्रयास करना बुद्धिहीनता ही होगा। ६२२

मञ्जॊक्कु मळह वोदि मळैयॊक्कुम् वडिन्द कून्दल्
पञ्जॊक्कु मडिहळ् शॅय्य पवळत्तिन् विरल्ह ळैय
अञ्जॊऱ्क ळमुदि नळ्ळिक् कॊण्डवळ् वदन मैदीर्
कञ्जत्तिऱ् कॊण्ड देनुङ् गडलिनुम् बॆरिय कण्गळ् 623

ऐय–महिमायुक्त; अम् चॊऱ्कळ्–सुन्दर बोली को; अमुतिल् अळ्ळि कॊण्टवळ्–अमृत से उठा ली है, उसका; अळक ओति–भाल पर का छल्लेदार केश; मञ्चु

ऑक्कुम्–मेघ की समानता करता है; वटिनूत कूनूतल्–लटकता केश; मळै ऑक्कुम्–जल-भरे घन की तुलना करता है; अटिकळ्–उसके चरण; पञ्चु ऑक्कुम्–रुई की भाँति हैं; विरल्कळ् चॅय्य पवळ्त्तिन्–लाल प्रवाल की (-सी) हैं; वतनम्–आनन; मै तीर्–निष्कलंक; कञ्चत्तिल् कॉण्टतेनुम्–कमल से प्राप्त है तो भी; कण्कळ्–उसकी आँखें; कटलितुम् पॅरिय–समुद्र से भी विशाल हैं। ६२३

महिमायुक्त भाई! उसने अपनी बोली अमृत से उठा ली है। सामने का केश मेघ-सा और लटकनेवाली वेणी वर्षक घन-सी है। उसके चरण रुई के समान (कोमल) है। पैर की उँगलियाँ लाल प्रवाल की बनी-सी हैं। आनन रूपी निष्कलंक कमल पर जो आँखें हैं, वे कमल से ली गयी हैं; तो भी समुद्र से भी बड़ी हैं। ६२३

ईशतार् कण्णिन् वॅन्दा नॅन्नुमि दिळ्दैच् चॉल्लिव्
वाशना ड्रोदि याळैक् कण्डतन् वव्व लाड्रान्
पेशलान् दहैमैत् तल्लाप् पॅरुम्पिणि पिणिप्प नीण्ड
आशैया लळिन्दु वॅन्दा ननङ्गनव् वुरुव मम्मा 624

अनङ्कन्–अनंग; ईचतार् कण्णिन् वॅन्तान्–ईश्वर (शिव) की (भाल की) आँख से जला; अॅन्नुम् इतु–कही जानेवाली यह बात; इळ्तै चॉल्–अल्पज्ञ कथन है; इ वाचम् नाऱ ओतियाळै–इस सुवासित केश वाली को; कण्टतन्–देखकर; वव्वल् आऱ्ऱान्–ग्रसने की शक्ति से हीन होने के कारण; पेचल् आम् तकॅत्तु अल्ला–अवर्ण्य; पॅरुम् पिणि पिणिप्प–बड़े (काम-) रोग से पीड़ित होकर; नीण्ट आचैयाल्–लम्बी बढ़ी उस इच्छा से; अ उरुवम्–वह रूप; अळिन्तु–गला; तेय्न्तान्–वह मिटा; अम्मा–मैया री। ६२४

मन्मथ परमेश्वर से भाल-नेत्र की आग से जल गया—यह कथन असत्य है। असल में हुआ दूसरा है। उसने इस सुवासित केशिनी को देखा। उसके मन में अपार राग पैदा हुआ। वह उसे ले जा नहीं सका। अकथ्य काम-रोग ने उसे सताया। धीरे-धीरे छीजकर उसका रूप मिट गया। माँ, उतनी सुन्दर है वह!। ६२४

तॅव्वुल हत्तुङ् गाण्डि शिरत्तिनिऱ् पणत्ति नोर्हळ्
अव्वुल हत्तुङ् गाण्डि यलैहड लुलहिऱ् काण्डि
वॅव्वुलै युऱ्ऱ वेलै वाळिनै वॅन्ऱ कण्णाळ्
ॲव्वुल हत्ता ळङ्गम् यावर्क्कु मॅळ्दी णादाळ् 625

वॅम् उलै उऱ्ऱ–गरम भट्ठी में ताप कर बनाये गये; वेलै वाळिनै–भाले और असि को; वॅन्ऱ–जो जीत चुकी है; कण्णाळ्–ऐसी आँखों से शोभित है; तॅव् उलकत्तुम्–देवों के लोकों में भी; काण्टि–खोजो; चिरत्तितिल् पणत्तिनोर्कळ्–सिर पर (जिनके) फन हैं, उन; अ उलकत्तुम्–(नागों के) उस (नाग-)लोक में भी; काण्टि–खोजो; अलै कटल् उलकिल् काण्टि–तरंग-भरे समुद्र से वलयित भूतल में

खोजो; अङ्कम् यावर्क्कुम् ॲळ्ळुत ऑणाताळ्–ऐसे अंगों से युक्त है, जिनका कोई चित्रण नहीं कर सकता; ॲव्वुलकत्ताळ्–किस लोक की है। ६२५

उसकी आँखों ने उस भाले और असि को अपनी कान्ति और तीक्ष्णता में हराया है, जो भट्ठी की आग में तपाकर बनाया गया था। तुम चाहे सुरलोक में ढूँढ़ो; चाहे फणी नागों के लोक में। तरंगायमान समुद्र से वलयित भूलोक में ही क्यों न ढूँढ़ो। उसके समान स्त्री नहीं मिलेगी। उसके अंगों का चित्रण ही किसी के लिए असम्भव है! फिर वह किस लोक की होगी? नहीं जानते। ६२५

*** तोळॆये शॊल्लु हेन्नो शुडर्मुहत् तुलवु हिन्ऱ**
वाळॆये शॊल्लु हेन्नो वल्लवै वळुत्तु हेन्नो
मीळवुन् दिहैप्प दल्लाऱ् ऱनित्तनि विळम्ब लाऱ्ऱेन्
नाळॆये काण्डि यन्ऱे नानुनक् कुरैप्प दॆन्नो 626

तोळॆये चॊल्लुकेन्नो–भुजाएँ ही कहूँ; चुटर् मुकत्तु–प्रकाशमय मुख में; उलवुकिन्ऱ–चलित रहनेवाली; वाळॆये चॊल्लुकेन्नो–तलवारें (आँखें) ही बखानूँ; वल् अवै–गोटियाँ (स्तन) उनको; वळुत्तुकेन्नो–वताऊँ; मीळवुम् तिकैप्पतु अल्लाल्–फिर-फिर चक्कर खाने के सिवाय; तनि तनि–अलग-अलग; विळम्पल् आऱ्ऱेन्–कह नहीं सकूँगी; नाळॆये काण्टि अन्ऱे–कल तुम ही देख लो न; नान् उनक्कु उरैप्पतु ॲन्नो–मैं तुमको बताऊँ क्या। ६२६

हा! क्या मैं उसकी भुजाओं को कहूँ? या उज्ज्वल मुख में जो चंचल आँखें हैं, उन तलवारों का वर्णन करूँ? गोटी के समान उन स्तनों को कहूँ? (वल्+अवै का यह अर्थ होगा; अल+अवै शब्द लिये जायँ तो 'अन्य अंगों को कहूँ?' होगा।) किस अंग का वर्णन कर सकूँगी। कोई भी अंग लूँ तो फिर-फिर चक्रित होकर रुक जाना पड़ेगा। अलग-अलग किसी का उचित वर्णन नहीं कर पाऊँगी। तुम तो कल ही उसे देख लोगे न? फिर मैं क्या कहूँ तुमसे? । ६२६

*** विल्लॊक्कु नुदलॆन् ऱालुम् वेलॊक्कुम् विळियॆन् ऱालुम्**
पल्लॊक्कु मुत्तॆन् ऱालुम् बवळत्तै यिदळॆन् ऱालुम्
शॊल्लॊक्कुम् बॊरुळॊव् वादाऱ् चॊल्लला मुवमै युण्डो
नॆल्लॊक्कुम् बुल्लॆन् ऱालुम् नेरुरैत् ताह वऱ्ऱो 627

नुतल् विल् ऑक्कुम्–उसका भाल धनु की समता करेगा; ॲन्ऱालुम्–कहें तो भी; विळि–आँखें; वेल् ऑक्कुम्–भाले की समता करेंगी; ॲन्ऱालुम्–कहें तो भी; पल् मुत्तु ऑक्कुम् ॲन्ऱालुम्–दाँत मोती के समान हैं, कहने पर भी; पवळत्तै इतळ् ॲन्ऱालुम्–प्रवाल को अधर कहें तो भी; चॊल् ऑक्कुम्–कहने भर के लिए ही समानता होगी; पॊरुळ् ऑव्वातु आल्–पदार्थ देखने पर समानता नहीं पाई जायगी; आल्–इसलिए; चॊल्लल् आम् उवमै उण्टो–कहने के लिए कोई उपमा है क्या;

नॅल् ऑक्कुम् पुल्–धान घास-सा है; अॅन्ऱालुम्–कहें तो भी; नेर् उरैत्तु आक वऱ्ऱो–सही वात कही गई क्या। ६२७

भाल धनु के समान है; आँखें भालों के समान, मोती दाँत के समान। ऐसा कहा जा सकता है। प्रवाल को उसका अधर कह सकते हैं। तो भी वह क्या सही रूप में उपमा कहना बन सकेगा? केवल शाब्दिक उपमा होगी। तत्त्वतः उपमा ठीक नहीं उतरेगी। उसके अंगों से उपमेय वस्तुएँ हैं कहाँ? कहने को तो कह सकते हैं कि धान घास है! पर क्या वह सही अर्थ में सार्थक हो सकता है? । ६२७

इन्दिरन् शशियैप् पॅऱ्ऱा निरुमून्ऱु वदनत् तोन्ऱन्
तन्दैयु मुमैयैप् पॅऱ्ऱान् ऱामरैच् चॅङ्गण् मालुम्
शॅन्दिरु महळैप् पॅऱ्ऱान् शीदैयै नीयुम् पॅऱ्ऱाय्
अन्दरम् बार्क्कि नन्मै यवर्क्किल्लै युन्क्के यैया 628

ऐया–महिमावान; इन्तिरन् चचियै पॅऱ्ऱान्–इन्द्र ने शची को पाया; इरु मून्ऱु वतनत्तोन् तन्–(दो के तीन = छः) षण्मुख के; तन्तैयुम्–पिता (शिवजी) को; उमैयै पॅऱ्ऱान्–उमादेवी प्राप्त हुई; तामरै चॅम् कणात्तुम्–कमलाक्ष ने भी; चॅम् तिरु मकळै–गोरी श्रीदेवी को; पॅऱ्ऱान्–प्राप्त किया; नीयुम्–तुमने भी; चीतैयै पॅऱ्ऱाय्–सीता को प्राप्त किया; अन्तरम् पार्क्किन्–अन्तर देखा जाय तो; अवर्क्कु नन्मै इल्लै–सौभाग्य उनका नहीं है; उनक्के–तुम्हारा ही। ६२८

(शूर्पणखा रावण के मन में सीता-प्रेम जाग्रत् करती है।) इन्द्र को शचीदेवी प्राप्त हुई। षण्मुख के पिता ने उमा को प्राप्त किया। कमलाक्ष विष्णु को कमला मिली। तुम्हें सीता मिल गयी। पर अन्तर देखने पर उन सबका भाग्य उतना खरा नहीं। तुम्हारा ही सर्वश्रेष्ठ होगा। तुम्हारा भाग्य ही श्लाघनीय है। ६२८

❀ पाहत्ति लॊरुवन् वैत्तान् पङ्गयत् तिरुन्द पॊन्नै
आहत्ति लॊरुवन् वैत्ता नन्दण नाविन् वैत्तान्
मेहत्तिन् मिन्नै मुन्ने वॆन्ऱनुण् णिडैयि नाळै
माहत्तोळ् वीर पॅऱ्ऱा लॅङ्ङनम् वैत्तु वाऴ्दि 629

पाकत्तिल् ऑरुवन् वैत्तान्–एक ने अपने बायें भाग में रख लिया (शिव की पार्वती अर्धांगिनी बनी); पङ्कयत्तु इरुन्त पॊन्नै–कमला श्री को; ऑरुवन्–(त्रिदेवों में) एक (विष्णु) ने; आकत्तिल् वैत्तान्–वक्ष में रख लिया; अन्तणन्–ब्राह्मण (ब्रह्मा) ने; नाविल् वैत्तान्–जीभ में रख लिया; माक तोळ् वीर–आकाश तक उन्नत कन्धे वाले वीर; मेकत्तिन् मिन्नै–मेघ की बिजली को; मुन्ने वॆन्ऱ–जिसने पहले ही हरा दिया; नुण् इटैयिनाळै–उस क्षीण कटि-भूषित सीता को; पॅऱ्ऱाल्–पाओगे तो; ऍङ्ङनम्–कहाँ; वैत्तु वाऴ्ति–रखकर जीवन चलाओगे। ६२९

हाँ! आकाश तक उन्नत कन्धों वाले वीर भाई! त्रिदेवों में एक, शिव

ने उमा को अपने शरीर के वाम भाग में स्थान दिया। दूसरे (विष्णु) ने कमला श्रीदेवी को अपने वक्ष में रख लिया। तीसरे, ब्राह्मणोत्तम (ब्रह्मा) ने सरस्वती को अपनी जीभ में स्थान दे दिया। सीता बड़ी सुन्दरी है। उसकी कमर ने मेघ की बिजली को हरा दिया है। उस सीता को प्राप्त करके तुम कहाँ स्थान देकर उसके साथ जीवन बिताओगे ? । ६२९

❀ पिळ्ळैपोर् पेशुवाळैप् पॆऱ्ऱपिन् पिऴैक्क लाऱ्ऱाय्
कॊळ्ळैमा निदियमॆल्ला मवळुक्के कॊडुत्ति यैय
वळ्ळले युनक्कु नल्लेन् मऱ्ऱुनिन् मनैयिन् वाऴुम्
किळ्ळैबोन् मॊऴियार्क् केल्लाङ् गेडुशूऴ् हिन्ऱे नन्ऱे 630

ऐया–महिमावान; वळ्ळले–दानी; पिऴैक्कल् आऱ्ऱाय्–अचूक परिश्रमी; पिळ्ळै पोल् पेच्चिताळै–सारिका की-सी बोली वाली को; पॆऱ्ऱपिन्–पाने के बाद; कॊळ्ळै पोकिन्ऱ चॆल्वम्–लूटी जानेवाली अपनी सम्पत्ति को; अवळुक्के कॊदुत्ति–उसी को दे दो; उनक्कु नल्लेन्–तुम्हारी हितू हूँ; उन् मनैयिल् वाऴुम्–तुम्हारे महल में रहनेवाली; किळ्ळै पोल्–शुक-सम; मॊऴियार्क्कु ॲल्लाम्–बोलनेवाली सभी (स्त्रियों) को; केटु चूऴ्किन्ऱेन् अन्ऱे–अहित करती हूँ न। ६३०

महिमावान ! यह सर्वविदित है कि तुम्हारे प्रयत्न कभी असफल नहीं होते। सीता तुम्हारी हो जायगी। सारिका-वाणी को लाने के बाद तुम अपनी सारी सौभाग्यश्री को, जिसे अब तुम्हारी अन्य प्रियाएँ लूट रही हैं, उसे दे दो। देखो मैं तुम्हारा हित कर रही हूँ। पर तुम्हारे महल में तुम्हारी कृपा का पात्र बनी जो स्त्रियाँ रहती है, उनको कष्ट दिला रही हूँ न ? । ६३०

❀ तेर्तन्द वल्हुऱ् चीदै तेवर्द मुलहि लिम्बर्
वार्तन्द मुलैयि नार्दम् वयिऱुतन् दाळु मल्लळ्
तार्तन्द कमलत् ताळैत् तरुक्किनर् कडैयच् चङ्ग
नीर्तन्द ददनै वॆल्वा निलन्दनदु निमिर्न्द दन्ऱे 431

तेर् तन्त अल्कुल्–रथ-समान जघन वाली; चीतै–सीता; तेवर् तम् उलकिल्–देवों के लोक में; इम्पर्–इहलोक में; वार् तन्त कॊङ्कैयार् तम्–अँगिया-बद्ध उरोजों से शोभित स्त्रियों की; वयिऱु तन्ताळुम् अल्लळ्–कोख से आई हुई नहीं है; चङ्क नीर्–शंखकीटों से युक्त क्षीरसागर को; तरुक्किनर् कटैय–गर्वीले (देवासुरों) के मथने पर; तार् तन्त कमलत्ताळै–कमलपुष्पमाला-धारिणी को; तन्ततु–(उसने) पैदा किया; अततै वॆल्वान्–उसको हराने के लिए; निलम् तन्तु–भूमि इसे पैदा करके; निमिर्न्ततु–उत्कृष्ट हुई। ६३१

रथ के समान नितम्बयुक्त सीता स्वर्ग या भूलोक की किसी अँगिया-बद्ध उरोजों के साथ शोभनेवाली स्त्री के पेट से पैदा हुई नहीं है। शंखों से भरे क्षीरसागर ने, बलवान देवासुरों से मथने पर कमलमालाधारिणी

श्रीलक्ष्मीदेवी को उत्पन्न किया। उस क्षीरसागर को नीचा दिखाने के लिए भूमि इसको उत्पन्न करके तर्जीह् (श्रेष्ठता) पा गयी। ६३१

❀ मीन्गॊण्ड कॊडि यिन्नाऱ्कु विऴावयर्न् दुलह मेत्तत्
तेन्गॊण्ड नॆऱिमॆन् कून्दऱ् चिऱ्ऱिडैच् चीदैयॆन्नुम्
मान्गॊण्डुण् डाडु नीयुन् वाळ्वलि युलहङ् गाण
यान्गॊण्डू डाडुम् वण्ण मिरामनैत् तरुदि यॆन्बाल् 632

मीन् कॊण्ट कॊटियितार्क्कु–मत्स्य की ध्वजा वाले (मन्मथ) का; उलकम् विऴा अयर्न्तु एत्त–लोक उत्सव मनाकर उसकी स्तुति करे; उन् वाळ् वलि उलकम् काण–तुम्हारी तलवार की शक्ति भुवन देखे; तेन् कॊण्ट–मधु-भरा; नॆऱि–घुंघराला; मॆन् कून्तल्–कोमल केश; चिऱ्ऱ इटै–पतली कमर; चीतै ऎन्नुम्–(इनसे युक्त) सीता नाम की; मान्–हरिणी (-सी सीता) को; नी कॊण्टु–तुम लाकर; उण्टाटु–उसके साथ केलि करो; यान् कॊण्टु ऊटाटुम् वण्णम्–मैं लेकर खेलूं; ऎन्पाल् इरामनै तरुति–मेरे पास राम को दिला दो। ६३२

तुम मकरकेतन का उत्सव और स्तुति लोक द्वारा कराते हुए और अपनी असि का पराक्रम दिखाते हुए उस सीता को हर ले आओ। उसका केश मधुमिश्रित घुंघुराला और कोमल है। कमर पतली है और वह हरिणी-सी है। उसको लाकर तुम उसके साथ केलि करो और मुझे लेकर खेलने के लिए उस राम को मुझे दिला दो। ६३२

❀ तरुवदु विदियॆ यॆन्ऱाऱ् ऱवम्बॆरि दुडैय रेनुम्
वरुवदु वरुना ळन्ऱि वन्दुकै कूड वऱ्ऱो
ऒरुबदु मुहमु माऱ्बु मुरुवमुङ् गण्णुन् दोळ्हळ्
इरुबदुम् बडैत्त शॆल्व मॆय्दुव दिन्नी यॆन्ऱाळ् 633

तरुवतु वितियॆ–(भलाई) देनेवाली विधि ही है; ऎन्ऱाल्–कहा जाय तो; तवम् पॆरितु उटैयरेनुम्–बड़ा तपस्वी हो तो भी; वरुवतु–होनी; वरुम् नाळ् अन्ऱि–होने का काल छोड़कर; वन्तु कै कूट वऱ्ऱो–आ मिल सकनेवाली है क्या; ऒरु पतु मुकमुम्–दस मुख; मार्पुम्–वक्ष; कण्णुम् तोळ्कळ् इरुपतुम्–और बीस-बीस आँखें और कन्धे; उरुवमुम्–इनसे युक्त शरीर; पटैत्त चॆल्वम्–(और तुम्हारा) प्राप्त धन; नी ऎय्तुवतु–तुम सच्चे अर्थ में पाओगे (उसका भोग करोगे); इति–(सीता-प्राप्ति पर) आगे ही; ऎन्ऱाळ्–कहा। ६३३

विधि ही भला देनेवाली है। तो भी बड़े तपस्वी को भी तभी कुछ प्राप्त होता है, जब उचित काल आकर मिलता है। तुम्हारे दस सिर हैं, दस वक्ष और बीस नेत्र और कन्धे। तुम्हारे पास असीम सम्पत्ति है। तो भी उनके भोग का अब तक समय नहीं आया है। सीता की प्राप्ति के बाद ही वह काल आयगा। — यह सब कहकर शूर्पणखा ने रावण के मन में सीता के प्रति काम को पैदा करके उभारा। ६३३

❀ अन्नव डन्नै युन्बा लुय्प्पदंन् ऱणुह लुऱ्ऱ
अन्नैयव् विरामन् ऱम्बि यिडैबुहुन् दिलङ्गु वाळाल्
मुन्नैमूक् करिन्दु विट्टान् मुडिन्ददॅन् वाळ्वु मुन्निन्
शोन्नपि नुयिरै नीप्पान् ऱुणिन्दनॅ नॅन्नच् चॊन्नाळ् 634

अन्नवळ् तन्नै–ऐसी सीता को; उन् पाल् उयप्पतु ॲन्ऱु–तुम्हारे पास पहुँचाने का विचार करके; अणुकल् उऱ्ऱ–समीप (जो) गई; ॲन्नै–मुझे; अ इरामन् तम्पि–उस राम के छोटे भाई ने; इटै पुकुन्तु–बीच में घुसकर; इलङ्कु वाळाल्–(अपने पास रहे) कटार से; मुन्नै–(सीता को पकड़ने से) पहले ही; मूक्कु अरिन्तु विट्टान्–मेरी नाक काट दी; ॲन् वाळ्वुम् मुटिन्ततु–मेरा जीवन भी (व्यर्थ) गया; उन्निल् चॊन्न पिन्–तुमसे कहने के बाद; उयिरै नीप्पान्–प्राण छोड़ने का; तुणिन्तनॅन्–निश्चय किया; ॲन्न चॊन्नाळ्–ऐसा कहा। ६३४

आगे कहा कि भाई ! ऐसी सीता को तुम्हारे पास ले आने का निश्चय करके मैं उसके समीप जाने लगी। तभी उस राम के छोटे भाई ने बीच में घुसकर अपने पास रहे खड्ग से मेरी नासिका काट दी। मेरा जीवन उसके साथ गया, समझ लिया। पर तुम्हारे पास आकर यह कहने के बाद प्राण त्याग दूँगी —यही विचार ले इधर आयी हूँ। ६३४

कोबमु मऱनु मानक् कॊदिप्पुमॅन् ऱिनैय वॅल्लाम्
पाबनिन् ऱिडत्ति निल्लाप् पॅऱ्ऱिबोऱ् पऱ्ऱु विट्ट
तीबमोन् ऱॊन्ऱॆ युऱ्ऱा लॅन्नलाज् जॅयलिऱ् पुक्क
ताबमु नाणु मॊन्ऱा युयिरोडुन् दळीइय वन्ऱे 635

कोपमुम्–क्रोध; मऱमुम्–और वीरता; मान कॊतिप्पुम्–अपमानजनित ताप; ॲन्ऱु–आदि; इनैय ॲल्लाम्–ऐसे सभी भाव; पापम् निन्ऱिटत्तु–पाप के स्थान पर; निल्ला पॅऱ्ऱि पोल्–जो रह नहीं सकता, उस पुण्य-भाग के समान; पऱ्ऱु विट्ट–रावण का साथ छोड़ गये; तीपम् ऒन्ऱु ऒन्ऱु उऱ्ऱाल्–एक दीये से दूसरा दिया लगा तो; ॲन्नल् आम् चॅयलिल्–जो होगा ऐसी रीति से; तापमुम्–ताप; काम नोयुम्–और कामरोग; उयिरॊटु तळीय–रावण के प्राणों से मिले और बढ़े। ६३५

यह सुनने पर रावण की विचित्र दशा हो गयी। पुरुषोचित क्रोध, वीरोचित साहस, अपमानजनित सन्ताप —सभी भाव ऐसे भाग गये जैसे पाप जहाँ है वहाँ से पुण्य का सुखसौभाग्य भाग जाता है। एक से एक दीप मिल जाने पर जैसा फल होगा, उसके समान उसके प्राणों में राग का ज्वर और कामरोग मिल गये। ६३५

❀ करनैयु मऱन्दान् ऱङ्गै मूक्किनैक् कडिन्दु निन्ऱार्
उरनैयु मऱन्दा नुऱ्ऱ पळियैयु मऱन्दान् वॆऱ्ऱि
अरनैयुङ् गॊण्ड काम नम्बिनान् मुन्बु पॆऱ्ऱ
वरनैयु मऱन्दान् केट्ट मङ्गैयै मऱन्दि लादान् 636

अरत्तैयुम् वॆऱ्ऱि कॊण्ट–हर को हरानेवाले; कामन् अम्पिनाल्—काम-बाण से; केट्ट मङ्कैयै–सुनी हुई (सीता) देवी को; मऱन्तिलातान्–जो नहीं भूला; करनैयुम् मऱन्तान्–(वह) खर को भूला; तङ्कै–अनुजा की; मूक्किनै–नाक को; कटिन्तु–काटकर; निन्ऱार्–जो बचे रहते हैं, उनका; उरत्तैयुम् मऱन्तान्–बल भूला; उऱ्ऱ पऴियैयुम्–प्राप्त अपयश; मऱन्तान्–भूला; मुन्नै पॆऱ्ऱ–पहले (ब्रह्मा, शिव आदि से) प्राप्त; वरत्तैयुम् मऱन्तान्–वरों को भूल गया। ६३६

रावण हरविजयी था। पर काम का बाण बली था। उससे आहत वह देवी सीता को, जिसके सम्बन्ध में शूर्पणखा से सुना भर था, भूल नहीं सका। पर खर मरा —यह भूल गया; छोटी बहिन की नाक कटी है —यह भी भूल गया। राम का बल भी स्मरण नहीं रहा। अपने पर लगा अपयश, ब्रह्मा, शिव आदि द्वारा दत्त वर —सभी भूल गया, रावण। ६३६

शिऱ्ऱिडैच् चीदै यॆन्नु नाममुम् जिन्दै तानुम्
उऱ्ऱिरण् डॊन्ऱाय् निन्ऱा लॊन्ऱॊऴित् तॊन्ऱै युन्न
मऱ्ऱॊरु मनमु मुण्डो मरक्कलाम् वऴिमऱ् ऱियादो
कऱ्ऱऱि ञान मिन्ऱेऱ् कामत्तैक् कडक्क लामो 637

चिऱु इटै चीतै—क्षीण-कटि सीता; ऍन्नुम् नाममुम्–का नाम और; चिन्तै तानुम्–उसका मन; इरण्टुम्–दोनों; ऑन्ऱाय् उऱ्ऱु निन्ऱाल्–एक साथ मिले रहे तो; ऑन्ऱु ऑऴिन्तु–एक को छोड़कर; ऑन्ऱै उन्न–(दूसरे) एक को सोचने के लिए; मऱ्ऱु ऑरु मनमुम् उण्टो–(दूसरा) एक मन है क्या; मऱक्कल् आम् वऴि–भूलने का मार्ग; मऱ्ऱुम्–और कोई; यातो—कौन सा है; कऱ्ऱु अऱि ञानम् इन्ऱेल्–सीखकर प्राप्त ज्ञान नहीं हो तो; कामत्तै कटक्कल् आमो–काम को जीतना हो सकता है क्या। ६३७

रावण का मन और पतली कमर की सीता का नाम दोनों बहुत ही प्रबल रूप से जुड़ गये। फिर एक से रहित दूसरे का अस्तित्व असम्भव हो गया। फिर दूसरा अलग एक मन भी नहीं था, जो उनमें एक को छोड़ दूसरा स्मरण करे। भूलने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं रहा। शास्त्र पढ़कर उसके उपदेशों के कार्यान्वित अभ्यास द्वारा प्राप्त (अमली) ज्ञान जिसमें नहीं है, वह काम पर विजय पा कैसे सकेगा? । ६३७

मयिलुडैच् चाय लाळै वञ्जिया मुन्न नीण्ड
ऍयिलुडै यिलङ्गै वेन्द निदयमाञ् जिऱैयि लिट्टान्
आयिलुडै यरक्क नुळ्ळ मव्वऴि मॆल्ल मॆल्ल
वॆयिलुडै नाळि लुऱ्ऱ वॆण्णॆय्बोल् वॆदुम्बिऱ् ऱन्ऱे 638

नीण्ट ऍयिल् उटै–लम्बे प्राचीरों से आवृत; इलङ्कै वेन्तन्–लंका के राजा ने; मयिल् उटै चायलाळै–मयूरनिभ सीता को; वञ्चिया मुन्नम्–प्रवंचना से लाने से पहले

ही; इतयम् आम् चिरैयिल्–हृदय रूपी कारा में; इट्टान्–बन्द कर दिया; अयिल् उटै–भालाधारी; अरक्कन् उळ्ळम्–राक्षस का मन; अ वळि–तब; वॅयिल् उटै नाळिल्–धूप-तप्त दिन में; उऱ्ऱ–धूप में रखे; वॅण्णॅय् पोल्–मक्खन के समान; मॅल्ल मॅल्ल–धीरे-धीरे; वॅतुम्पिऱ्ऱु–गरम होकर पिघला। ६३८

प्राचीरों से आवृत लंका के राजा रावण ने मयूराभा सीताजी को वंचना द्वारा हर लाने के पूर्व ही अपने हृदय की कारा में कैद कर रख लिया! भालाधारी राक्षस का हृदय तब गरम दिन में आतपदग्ध मक्खन के समान धीरे-धीरे पसीजने लगा। ६३८

विदियदु वलियि नालु मेलुळ विळैवि नालुम्
पदियुरु केडु वन्दु कुरुहिय बयत्ति नालुम्
कदियुरु पोऱियिन् वॅय्य कामनोय् कल्वि नोक्का
मदियिलि मऱैयच् चॅय्द तीमैबोल् वळर्न्द दन्ऱे 639

वितियतु वलियित्तालुम्–विधि के बल से और; मेल् उळ–आगे की; विळैवित्तालुम्–होनी के निमित्त; पति उऱु केटु–और लंका नगर पर जो आना था, वह कष्ट; कुऱुकिय पयत्तित्तालुम्–निकट आ गया, उस भावी के फल के कारण; कति उऱु पोऱियिल्–गतियुक्त यन्त्र के समान; वॅय्य काम नोय्–पीड़क कामरोग; कल्वि नोक्का–विद्याविहीन; मति इलि–बुद्धि-रहित किसी का; मऱैय चॅय्त–छिपाकर किया; तीमै पोल्–बुरा काम-सा; वळर्न्ततु–बढ़ा; (अन्ऱु–ए)। ६३९

विधि प्रबल थी। होनी होनेवाली थी। लंका पर विनाश लाने का समय निकट आ गया था। इसलिए गतियुक्त यन्त्र के समान भयंकर कामरोग राक्षस के शरीर भर में, विद्यावंचित बुद्धिहीन आदमी से किये गये अनर्थ के समान, व्याप्त हो गया। ६३९

पोन्मय माल नङ्गै मनम्बुहप् पुन्मै पूण्ड
तन्मैयो वरक्कन् ऱन्नै ययर्त्तदोर् तहैमै यालो
मन्मदन् वाळि तूवि नलिवदोर् वलत्त नानान्
वन्मैये माऱ्ऱु माऱ्ऱल् कामत्ते वदिन्द दन्ऱे 640

पोन् मयम् आल–स्वर्णमय (आभा से) शोभायमान; नङ्कै–नायिका के; मतम् पुक–मन में प्रवेश के कारण; पुन्मै पूण्ट तन्मैयो–(रावण) बलहीनता पा गया था, या; तन्नै अयर्त्ततु ओर्–अपने को भूले रहने की; तकैमैयालो–एक स्थिति रही, इस वजह से; अरक्कन् तन्नै–राक्षस को; मन्मतन्–मनोज; वाळि तूवि–पुष्प-शर बरसाकर; नलिवतु–त्रस्त कर देनेवाला; ओर वलत्तन् आनान्–एक बली बन गया; वन्मैयै माऱ्ऱुम् आऱ्ऱल्–बल को वृथा करने की शक्ति; कामत्ते–काम में; वतिन्ततु अन्ऱे–रही न। ६४०

स्वर्णमय देवी के रावण के मन में प्रविष्ट होने से रावण दुर्बल हो

गया ? या वह अपने को भूले रहा ? अब राक्षस को मन्मथ अपने पुष्प-शरों से आहत करने में समर्थ हो गया ! हाँ ! बल को बेकार करने की शक्ति कामेच्छा में निहित रहती है न ? । ६४०

इऴिन्दन निरुक्कै निन्ऱाण् डेऴुल हत्तु ळोरुम्
मॉऴिन्दन राशि योशै मुऴङ्गिन शङ्ग मॅङ्गुम्
पॉऴिन्दनर् पूविन् मारि पोयिनर् पुऱत्तो रॅल्लाम्
अऴिन्दयर् शिन्दै योडु माडहक् कोयिल् पुक्कान् 641

इरुक्कै निन्ऱु–आसन से; इऴिन्ततन्–उतरा; आण्टु–तब वहाँ; एऴ उलकत्तुतोरुम्–सातों लोकवासी; आचि मॊऴिन्ततर्–आशीर्वचन बोले; चङ्कम् ऍङ्कुम्–शंख सर्वत्र; ओचै मुऴङ्कित–नाद कर उठे; पुऱत्तोर् ऍल्लाम्–पास रहे सभी; पूविन् मारि–पुष्पवर्षा; पॊऴिन्ततर्–करके; पोयितर्–हटे; अऴिन्तु अयर्–शिथिल होकर मुरझानेवाले; चिन्तैयोटुम्–मन के साथ; आटक कोयिल्–स्वर्णमय भवन में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुआ । ६४१

रावण आसन से उतरा । तब जो सातों लोकों के लोग वहाँ थे, उन्होंने आशीर्वचन कहे । सब स्थानों पर शंख बज उठे । पास जो रहे उन्होंने पुष्पवर्षा की । वे हट गये । रावण खिन्न और श्रांतमन होकर स्वर्णनिर्मित अपने महल में प्रविष्ट हुआ । ६४१

पूविनाल् वेय्न्दु शॅय्द पॊङ्गुपे रमळिप् पॊऱ्पिन्
देविमार् वॅळ्ळ नीङ्गिच् चेर्न्दनन् शेर्द लोडुम्
नाविना ऱोदि नव्वि नयनमुन् नलनु नण्णिप्
पावियाक् कॊडुत्त वॅम्मै पयप्पयप् परन्द दन्ऱे 642

तेविमार् वॅळ्ळम् नीङ्कि–स्त्रियों की भीड़ त्यागकर; पूविताल् वेय्न्तु चॆय्त–पुष्प छाकर निर्मित; पॊऱ्पिन्–सुन्दरता में; पॊङ्कु पेर् अमळि–अधिक उत्कृष्ट शय्या में; चेर्न्ततन्–गया; चेर्तलोटुम्–उसमें जाते ही; नावि नाऱु ओति–कस्तूरी की गन्ध से युक्त केशिनी की; नव्वि नयतमुम्–मृग की-सी आँखों; नलतुम्–और अन्य अंग-सौष्ठव ने; नण्णि–आकर; पाविया–भावना करने से; कॊटुत्त–जो दिया; वॅम्मै–वह ताप; पय पय–धीरे-धीरे; परन्ततु–(उसके शरीर भर में) व्याप्त हो गया । ६४२

पत्नियों की भीड़ का निवारण करके वह एक पुष्पशय्या पर लेटा । उस सुन्दर शय्या के ऊपर का वितान भी फूलों से सज्जित था । उस पर लेटते ही उसके मन ने कस्तूरी की सुगन्ध से भरे केश से युक्त सीतादेवी के मृग के-से नयन और अन्य अंगसौष्ठव की भावना की । उस भावना के कारण बड़ा ताप पैदा हुआ और वह धीरे-धीरे शरीर में व्यापकर पीड़ा देने लगा । ६४२

नूक्क लाह् लाद काद नूरु नूरु कोडियाय्प्
पूक्क वाश वाडै वीचु शीद नीर्बौ दिन्दमॅन्
शेक्कै वीक रिन्दु तिक्क यङ्ग ळॅट्टुम् वॅन्र्तोळ्
आक्कै तीय वुळ्ळ नैय वावि वेव दायिन्नान् 643

नूक्कल् आकलात–अनिवार्य; कातल्–कामेच्छा; नूरु नूरु कोटियाय्–शत-शत करोड़ गुना; पूक्क–विकसित हुई; वाटै वीचु–उदीची से आनेवाली; चीत नीर्–शीत जल से; पॉतिन्त–भरी; मॅन् चेक्कै–कोमल शय्या के; वाच वी–सुगन्धयुक्त पुष्प; करिन्तु–झुलस गये और; तिक्कु कयङ्कळ् अॅट्टुम्–आठों दिग्गजों को; वॅन्र–जिन्होंने हराया था, वे; तोळ् आक्कै–कन्धे और शरीर; तीय–जल उठे; आवि वेवतु–प्राण मुरझाये; आयिन्नान्–ऐसी स्थिति का हो गया। ६४३

सीता पर उसकी कामेच्छा निवार्य नहीं लगी। वह शत-शत कोटि-कोटि गुना विकसित हुई। तब उसकी शय्या के सुबासित फूल सूखने लग गये, यद्यपि उसमें उदीची हवा द्वारा लायी गयी शीतल सीकरें खूब भरी थीं। और भी उसका शरीर और उसके कंधे भी, जिन्होंने आठों दिग्गजों को हराया था, जलने लगे। प्राण भी जलते-से लगे। ऐसी विकट स्थिति में पड़ गया रावण। ६४३

तादु कॉण्डु शीद मुञ्जु मन्दु तण्णॅ न्नन्दमॅन्
पोदु कॉण्ड डुत्त पोदु पॉङ्गु तीम रुन्दिन्नाल्
वेदु कॉण्ड दॅन्न मेन्नि वॅन्दु शिन्द विम्मुदी
ऊदु वन्रु रुत्ति पोलु यिर्त्तु यिर्त्तु यङ्गिन्नान् 644

तातु कॉण्टु–मकरन्द लेकर; चीतमुम् चुमन्तु–शीतलता ढोते हुए; तण् अॅन्–शीतल; अन्त–उन; पोतु कॉण्टु–पुष्प लेकर; अटुत्त पोतु–(जब वह उदीची हवा) आई तब; पॉङ्कु ती मरुन्तिन्नाल्–भभकती आग रूपी दवा से; वेतु कॉण्टतु अॅन–सेंका गया, ऐसा; मेन्नि वॅन्तु–शरीर गरम होकर; चिन्त–छितर जाय, ऐसा; विम्मु ती–बढ़नेवाली आग को; ऊतु–फूंकनेवाली; वन् तुरुत्ति पोल्–बलवान भाथी के समान; उयिर्त्तु उयिर्त्तु–लम्बी साँसें छोड़ते-छोड़ते; उयङ्किन्नान्–श्लथ हुआ। ६४४

उदीची हवा मकरन्द, शीतल जल और कुसुमों को लेकर, स्वयं ठण्डी रहकर आयी। पर उससे भभकनेवाली ज्वाला से सेंका गया हो, ऐसा वह गरम साँसें छोड़ने लगा। वे साँसें धौंकनी की हवा के समान उसके शरीर को अंगारे छितरानेवाली आग के समान पीड़ा देने लगीं और वह छटपटाने लगा। ६४४

तावि यादु तीयें नादु तैयलाळै मॅय्युरप्
पावि याद पोदि लाद पावि माळै पान्नल्वेल्
कावि यात्त कण्णि मेन्नि काण मूळु माशैयाल्
आवि शाल नॉन्दु नॉन्द ळङ्गु वानु मायिन्नान् 645

तावियातु–स्थिर न करके; ती अँतातु–(परदारा-प्रेम) अग्नि है, यह न सोचकर; तैयलाळै–देवी को; मॅय् उऱ–सचमुच; पावियात–नहीं स्मरण किया हो, ऐसा; पोतु इलात–जिसका समय नहीं रहा; पावि–वह पापी (रावण); माळै–आम; पातल्–कुवलय; वेल्–भाला; कावि–नीलोत्पल; आऩ–ऐसे; कण्णि–नेत्रों की; मेऩि काण–(देवी का) रूप देखने के लिए; मूळम्–बढ़नेवाली; आचैयाल्–लालसा से; आवि चाल नॊन्तु नॊन्तु–प्राणों के खूब पीड़ित होते-होते; अळुङ्कुवातुम् आयिऩाऩ्–बहुत कष्ट उठाता रहा। ६४५

वह अपने मन को वश में न रख सका; न सीता को आग समझकर उनकी इच्छा करने से विरत हो सका। उस पापी के पास समय ही नहीं रहा, जब उसने सीताजी की भावना नहीं की! उसके मन में आम की फाँकें, कुवलय, भाला और नीलोत्पल —इनके समान जिनके नेत्र थे, उनका पूरा रूप देखने की दुर्दम लालसा उठी। वह बढ़ने लगी। उस कारण उसके प्राण बहुत कष्ट उठाने लगे। .वह भी बहुत कष्ट में पड़ा। ६४५

परङ्गि डन्द मादि रञ्जु मन्द पाळि यात्तैयिन्
करङ्गि डन्द कॊम्बॊ डिन्द डङ्ग वॆंऩ्ऱ कावलान्
मरङ्गु डैन्द तुम्बि पोल ऩङ्ग वाणम् वन्दुवन्
दुरङ्गु डैन्दु नॊन्दु नॊन्दु ळैन्दु ळैन्दॊ डुङ्गिनाऩ् 646

परम् किटन्त मातिरम्–भारयुक्त दिशाओं के; चुमन्त–वाहक; पाळि यात्तैयिऩ्–मोटे (दिग्-) गजों की; करम् किटन्त–सूँड़ों के बाजू में रहे; कॊम्पु ओटिन्तु–दाँत टूटकर; अटङ्क–(उसके) वक्ष में समा गये; वॆंऩ्ऱ कावलाऩ्–ऐसा विजयी राजा; अऩङ्कपाणम्–अनंग-बाणो के; वन्तु वन्तु–आ-आकर; मरम् कुटैन्त–काठ को छेदनेवाले; तुम्पि पोल्–कीड़े (भ्रमर ?) के समान; उरम् कुटैन्तु–वक्ष को छेदने से; नॊन्तु नॊन्तु–वेदना सहते-सहते; उळैन्तु उळैन्तु–बहुत दर्द पाते-पाते; ऒटुङ्किऩाऩ्–शिथिल हो गया। ६४६

रावण बली वीर था। बोझीली दिशाओं के वाही दिग्गजों से जब उसने युद्ध किया था, तब उनके दाँत उसके कठोर वक्ष से टकराकर टूट गये और उसके वक्ष में ही रह गये। ऐसे राजा के वक्ष में अब मन्मथ के पुष्पशर घुसकर छेद बनाने लगे। काठ में जैसे कीड़ा छेद बना देता है, वैसा उन शरों ने उसके वक्ष को भेद डाला। रावण वेदना के मारे थक गया। ६४६

कॊन्ऱै तुऩ्ऱु कोदै योडॊर् कॊम्बु वन्दॆ तॆंञ्जिडै
निन्ऱ दुण्डु कण्ड दॆंऩ्ऱु ळन्द ळुङ्गु नीर्मैयान्
मन्ऱ रङ्ग लङ्गऩ् मारऩ् वाळि पोल मल्लिहैत्
तॆंऩ्ऱल् वन्दॆ दिर्न्द पोदु शोरु वानु मायिऩाऩ् 647

कॊन्ऱै तुऩ्ऱु–अमलतास के फलों के समान; कोतै ओटु–केश के साथ; ओर्

कॉम्पु वन्तु–एक पुष्पशाखा आकर; ॲन् नॆञ्चु इटै–मेरे मन में; निन्ऱतु–रह गई; कण्टतु उण्टु–मैंने देखा; ॲन्ऱु–यह कहते हुए; उळन्तु अळुङ्कु नीर्मैयान्–दुखी होकर संकट उठानेवाला; मन्ऱल् तङ्कु–सुवास-निलय; अलङ्कल् मारन्–मालाधारी मन्मथ के; वाळि पोल–(पुष्प-) शरों के समान; मल्लिकै तॆन्ऱल् वन्तु–मल्लिका के बास के साथ मलयपवन आकर; ॲतिर्न्त पोतु–जब उस पर लगा, तब; चीऱ्ऱवातुम् आयितान्–कोप करनेवाला भी बना। ६४७

उसे ऐसा भान रहा कि अमलतास के फलों के समान काले केश के साथ एक पुष्पलता के समान सुन्दरी उसके दिल में आकर ठहर गयी। तब वह दुखी होकर क्लान्त रहा। पर जब मलयपवन मल्लिका के फूलों का बास ढोता हुआ मन्मथ के शरों के समान उस पर लगा तो उसने कोप दिखाया। ६४७

अन्न कालै यङ्गु निन्ऱॆ ऴुन्द ऴुङ्गु शिन्दैयान्
इन्न वाऱु शॆय्वॆ नॆन्ऱॊ रॆण्णि लानि रङ्गुवान्
पन्नु कोडि दीब मालै पालै याऴ्प्प ऴित्तशॊऱ्
पॊन्न नारॆ डुक्क वङ्गॊर् शोलै यूडु पोयिनान् 648

अन्न कालै–तब; अऴुङ्कु चिन्तैयान्–क्लान्तमन; अङ्कु निन्ऱु–(रावण) वहाँ से; ॲऴुन्तु–उठकर; इन्न आऱु चॆय्वॆन्–ऐसा करूँ; ॲन्ऱु–यह; ओर् ॲण्–किसी एक विचार; इलान्–के विना; इरङ्कुवान्–दुखी रहा; पालै याऴ्–'पालै' नाम की 'याऴ्' (वीणा) के स्वर को; पऴित्त चॊल्–परिहसित करनेवाली बोली वाली; पॊन् अनार्–स्वर्ण-सम सुन्दरियों के; पन्नु–प्रशंसित; कोटि तीप मालै ॲटुक्क–बहुसंख्यक दीप-माला लेते आते; अङ्कु–वहाँ; ओर् चोलै ऊटु–एक उद्यान में; पोयितान्–गया। ६४८

तब रावण वहाँ से उठा। उसका मन बड़ा क्लेशपूर्ण था। उसे नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाय। उससे वह और भी उद्विग्न हुआ। तब वह पास के एक उद्यान में चला। उसके साथ 'पालै याऴ्' नाम की वीणा के स्वर से भी मधुर बोली वाली सुन्दरियाँ बहुत बड़ी संख्या में दीप की मालाएँ लेते हुए चलीं। ६४८

माणिक्कम् पनशम् वाऴै मरहदम् वयिरन् देमा
आणिप्पॊन् वेङ्गै कोङ्ग मरविन्द रागम् बूगम्
शेणुऱ्ऱ नीलञ् जालङ् गुरुविन्दन् दॆङ्गु वॆळ्ळि
पाणित्तॆण् पळिङ्गु नाहम् पाटलम् पवऴ मन्नो 649

पनचम्–पनस (कटहल); माणिक्कम्–माणिक्यमय हैं; वाऴै–कदली; मरकतम्–मरकतमय; तेमा वयिरम्–मधुर आम हीरे से; वेङ्कै–'वेंगै' वृक्ष; आणिप् पॊन्–चोखे स्वर्णमय; कोङ्कु–'कोंगु' तरु; अरविन्त राकम्–पद्मराग; चेण् उऱ्ऱ पूकम्–गगनस्पर्शी पूगतरु; नीलम्–इन्द्रनील; चालम्–सालवृक्ष; कुरुविन्तम्–रत्नमय;

तेंङ्कु वॆळ्ळि–नारियल चाँदी के; नाकम्–सुरपुन्नाग; पाणि तॆळ् पळिङ्कु–जल-सम स्वच्छ स्फटिक; पाटलम्–पाटल; पवळम्–प्रवाल। ६४६

उस उद्यान के पेड़ विचित्र थे। पनस माणिक्यमय थे। केले मरकत के, आम के पेड़ हीरे के, 'वेंगै' तरु चोखे स्वर्ण के, 'कोंगु' पद्मराग के, गगनस्पर्शी पूगतरु इन्द्रनीलमय, सालवृक्ष एक तरह के रत्न के, नारियल के पेड़ चाँदी के और सुरपुन्नाग जल-स्वच्छ स्फटिक के थे। पाटल के पेड़ प्रवालमय थे। ६४९

वानुऱ निवन्द शॆङ्गेळ् मणिमरन् दुवन्ऱि वान
मीनॊडु मलर्हळ् डम्मिल् वेऱुमै तॆरिद ऱेऱात्
तेनुहु शोलै नाप्पण् शॆम्बॊन्मण् डबत्तु ळाणडोर्
पानिऱ वमळि शेर्न्दान् पैयुळुऱ् उयङ्गि नैवान् 650

पैयुळ् उऱ्ऱु–पीड़ित होकर; उयङ्कि नैवान्–दुःख-मग्न हो विगलित होनेवाला; वान् उऱ निवन्त–गगन को स्पर्श करते हुए उन्नत; चॆम् केळ्–उत्तम रंग वाले; मणि मरम् तुवन्ऱि–रत्नमय तरुओं से भरे रहकर; मलर्कळ्–उनके फूल; वान् मीन् ऒटु–आकाश के नक्षत्रों के साथ; तम्मिल्–उनसे; वेऱुमै तॆरितल् तेऱ्ऱा–भेद जानना कठिन हो ऐसा, रहकर; तेन् उकु–जहाँ शहद चूते थे; चोलै नाप्पण्–उस उद्यान के मध्य; चॆम् पॊन् मण्टपत्तुळ्–लाल स्वर्ण-मण्डप में; आण्टु–वहाँ; पाल् निऱ–क्षीरवर्ण; ओर् अमळि–एक शय्या में; चेर्न्तान्–गया। ६५०

कामवेदना से व्यग्र रावण उस उद्यान के बीच में रहे स्वर्ण-मण्डप के अन्दर दुग्ध-सम श्वेत एक शय्या पर गया। उस उद्यान में गगन को छूते हुए बढ़े और रत्नमय तरु खूब भरे थे। उनके फूलों और आकाश के नक्षत्रों में भेद जानना कठिन था। वे फूल शहद चू रहे थे। ६५०

कनिहळिन् मलरिन् वन्द कळ्ळुण्ड कळिह ळन्न
वनिदैयर् मऴलै यिन्शॊर् किळ्ळैयुङ् कुयिलुम् वण्डुम्
इनियन मिऴऱ्ऱु हिन्ऱ यावैयु मिलङ्गै वेन्दन्
मुनियुमॆन् ऱविन्द वाय मूङ्गैयर् पोन्ऱ वन्ऱे 651

कनिकळिन्–फलों से और; मलरिन्–फूलों से; वन्त–निकला; कळ् उण्ट–मधु पीकर; कळिकळ् अन्न–पियक्कड़ों के समान; वनितैयर्–स्त्रियों के-से; मऴलै इन् चॊल्–तुतलाते मधुर वचन बोलनेवाले; किळ्ळैयुम्–शुक; कुयिलुम्–पिक; वण्टुम्–भ्रमर; इनियन मिऴऱ्ऱुकिन्ऱ यावैयुम्–मधुर बोलनेवाले सभी; इलङ्कै वेन्तन्–लंकाधिपति; मुनियुम् ऎन्ऱु–कोप करेगा, यह सोचकर; अविन्त वाय–मुख बन्द कर; मूङ्कैयर् पोन्ऱ–गूँगे के समान हो रहे। ६५१

उस उद्यान में शुक, पिक, भ्रमर आदि थे। वे उस उद्यान के तरुओं के फलों और फूलों से निकलनेवाले मधु और रस पीकर पियक्कड़ों के समान मत्त हो स्त्रियों की-सी तुतलाती मधुर बोली में बोलते थे। पर

अब वे, इस डर से कि लंकेश रावण गुस्सा करेगा, मुख बन्द करके गूँगे के समान हो रहे। ६५१

परुवत्ताल् वाडै तन्द पशुम्बनि यनङ्ग बाणम्
उरुविप्पुक् कौळित्त पुण्णिर् कुळित्तलु मुळैन्दु विम्मि
इरुदुत्तान् याद डावॅन् ऱियम्बिना ऩियम्ब लोडुम्
वॅरुविप्पोय्च् चिशर नीङ्गि वेनिल्वन् दिऱुत्त दन्ऱे 652

परुवत्ताल्–ऋतु के धर्म के अनुसार; वाटै तन्त–उदीची हवा द्वारा लाई गई; पचुम् पनि–शीतल हिम; अनङ्कपाणम् उरुवि–अनंग-बाण छेदकर; पुक्कु ऑळित्त–प्रवेश कर (छिपे) जहाँ रहे; पुण्णिल्–उन व्रणों में; कुळित्तलुम्–जब पैठे तभी; उळैन्तु विम्मि–पीड़ा से व्यग्र होकर; इरुतु तान् यातटा–ऋतु कौन है, रे; ऍन्ऱु–ऐसा; इयम्पितान्–रावण ने प्रश्न किया; इयम्पलोटुम्–कहते ही; चिचिरम्–शिशिर; वॅरुवि पोय् नीङ्कि–डरकर चला, हटा और; वेनिल् वन्तु इऱुत्ततु–वसन्त आ गया। ६५२

ऋतु शिशिर की थी। इसलिए उदीची हवा द्वारा शीतल हिम आकर लग रहा था। वह काम-शर-विद्ध रावण के शरीर के व्रणों में जब पैठा, तब वह छटपटाने लगा। वेदना से हड़बड़ाकर उसने डाँटा कि क्या ऋतु है यह? यह पूछना था कि शिशिरऋतु डरकर भाग गयी। उसके स्थान पर वसन्तऋतु आ रही। ६५२

वन्बणै मरमुन् दीयुम् मलैहळुङ् गुळिर वाळुम्
मॅन्बनि यॅरिन्द दॅन्ऱाल् वेनिलै विळम्ब लामो
अन्बॅनुम् विडमुण् डारै याऱ्ऱला मरुन्दु मुण्डो
इन्बमुन् दुन्बमुन् दानु मुळ्ळत्तो डियैन्द वन्ऱे 653

वन् पणै मरमुम्–कठोर बड़े तरु भी; तीयुम्–अग्नि; मलैकळुम्–पहाड़; कुळिर–शीतल बने; वाळुम्–प्राणपूर्ण; मॅल् पनि–कोमल हिम ने; ऍरिन्ततु–जलाया; ऍन्ऱाल्–तो; वेनिलै विळम्पलामो–धूप का कहना क्या; अन्पु ऍन्नुम् विटम् उण्टारै–काम नाम का विष जिसने खाया है, उसका; आऱ्ऱल् आम् मरुन्तुम्–शमन करनेवाली दवा भी; उण्टो–है क्या; इन्पमुम् तुन्पम् तानुम्–सुख और दुःख; उळ्ळत्तोटु–मन के साथ; इयैन्त अन्ऱे–लगे हुए (अनुभव) हैं न। ६५३

वसन्त के कारण बड़े-बड़े कठोर पेड़ भी मनोरम हो गये। पर्वत भी आँखों को ठण्डक (आराम) पहुँचानेवाले हो गये। पर धूप तो थी। जिसको हिम भी ताप दे रहा था उसको धूप क्या देगी, यह कहने की आवश्यकता है क्या? काम का विष जिसने पिया है, उसके ताप को शान्त करनेवाली दवा इस लोक में कहाँ प्राप्य है? सुख व दुःख अपने-अपने मन की अनुभूत दशाएँ हैं न? फिर बाहर का उपचार क्या कर सकता है? । ६५३

मादिरत् तिरुदि काऱुन् दऩ्मनत् तॅऴुन्द मैयल्
वेदनै वॅप्पज् जॅय्य वेनिलुम् वॅंदुप्पुङ् गालै
यादिदिङ् गिदनिन् मुन्नैच् चिशिरनन् ड्रिदनै नीक्किक्
कूदिराम् बरुवन् दन्नैक् कॉणरुदिर् विरैवि नॅन्ड्रान् 654

तऩ् मनत्तु ॲऴुन्त–अपने मन में उठी; मैयल् वेतनै–प्रेम की वेदना ने; मातिरत्तु इऱुति काऱुम्–दिगन्त तक; वॅप्पम् चॅय्य–गरमी दिला दी, तब; वेनिलुम् वॅतुप्पुम् कालै–धूप ने भी ताप दिया, तो; यातु इङ्कु–कौन (सी ऋतु) यहाँ; मुन्नै चिचिरम् इततिन् नन्ऱु–पहले का शिशिर इससे बेहतर रहा; इतनै नीक्कि–इसको दूर करके; कूतिर् आम् परुवम् तन्नै–शरद ऋतु को; विरैविल् कॉणरुतिर्–तुरन्त लाओ; ॲन्ड्रान्–कहा । ६५४

रावण के मन का ताप दिगन्त तक फैलकर तपाने लगा। उस पर वसन्त की धूप भी मिल गयी। वह और भी गरम हो गया। पूछा कि अब कौन सी ऋतु आयी है यह ? पहले जो शिशिरकाल था वह इससे बेहतर था, ऐसा लगता है। उसने आज्ञा दी— हटाओ इसे। शरदऋतु को लाओ शीघ्र। ६५४

कूदिर्वन् दडैन्द कालै कॉदित्तन कुववुत् तिण्डोळ्
शीदमुज् जुडुमो मुन्नैच् चिशिरमे काणि दॅन्ड्रान्
आदिया यज्जु मन्ड्रे यरुळल दियड्र लॅन्न
यादुमिङ् गिरुदु माहा यावैयु महड्रु मॅन्ड्रान् 655

कूतिर् वन्तु अटैन्त कालै–शरद जब आया; कुववु तिण् तोळ्–पुष्ट और सुदृढ़ कन्धे; कॉतित्तन–गरम हो गये; चीतमुम् चुटुमो–शीत भी जलायगा क्या; मुन्नै चिचिरमे इतु–पहले का शिशिर ही यह; काण्–देखो; ॲन्ड्रान्–बोला; आतियाय्–नाथ; अरुळ् अलतु–आज्ञा के सिवाय; इयड्रल्–करना; अज्चुम्–डरते हैं; ॲन्न–कहा, तो; इङ्कु–यहाँ; इरुतु यातुम्–कोई भी ऋतु; आकातु–(भली) नहीं हो सकती; यावैयुम् अकड्रुम्–सबको हटाओ; ॲन्ड्रान्–कहा; (अन्ड्रु–ए)। ६५५

शरद आया। (पर क्या फल होता ?) उसके पुष्ट और सबल कंधे जल उठे। "ऐ ! शीत भी जला सकेगा क्या ? वही शिशिर यह है ! देखो !" जब रावण ने यह कहा तब उसके दासों ने विनय की कि महाराज ! हम आपकी आज्ञा के सिवा कुछ अन्य करने से डरेंगे। (आप विश्वास मानें कि यह शरद है।) तब रावण ने आज्ञा दी कि सो बात है तो कोई भी ऋतु कुछ नही करेगी। यहाँ कोई ऋतु न हो। हटाओ सबको। ६५५

ॲन्नलु मिरुदु वॅल्ला मेहलुम् यावुन् दन्दम्
पन्नरुम् बरुवज् जॅय्या योहिपोल् पड्रु नीत्त
पिन्नरु मुलह मॅल्लाम् पिणिमुदड् पाशम् वीशित्
तुन्नरुन् दवत्तो रॅय्दुन् दुड्रक्कमबोड् ड्रोन्ड्रिड् ड्रन्ड्रे 656

ऍऩ्ऩलुम्–कहते ही; **इरुतु ऍल्लाम्**–सभी ऋतुएँ; **एकलुम्**–चली गईं, तब; **यावुम्**–सभी (पदार्थ); **पन्‌ अरुम्**–अवर्ण्य; **परुवम् चॅय्या**–मौसम के अनुसार व्यापार छोड़कर; **योकि पोल्**–यतियों की तरह; **पऱ्ऱु नीत्त**–निर्लिप्त रह गये; **पिऩ्ऩरुम्**–और फिर; **उलकम् ऍल्लाम्**–सारे लोक; **पिणि मुतल् पाचम् वीचि**–रोग आदि कर्म-पाश हटाकर; **तवत्तोर् ऍय्तुम्**–तपस्वी द्वारा प्राप्य; **तुऩ्‌ अरुम् तुऱक्कम् पोल्**–दुर्गम स्वर्ग के समान; **तोऩ्ऱिऱ्ऱु**–दिखाई दिया। ६५६

उसके ऐसा कहने पर सारी ऋतुएँ चली गयीं। उनके साथ कालोचित व्यापार भी रुक गये। इसलिए उस उद्यान में रहे चल और अचल सभी पदार्थ और जीव योगी के समान अचल और निर्लिप्त रह गये। वे ही क्या सारे लोकों के सारे जीव रोग आदि कर्मबन्धन काटकर स्थिर रहे। इसलिए लोक तपस्वी द्वारा प्राप्य और साधारण रीति से दुर्गम स्वर्ग के समान दिखे। ६५६

कूलत्ता रुलह मॅल्लाङ् गॉदिप्पॉडु कुळिर्प्पु नीङ्ग
नीलत्ता ररक्कऩ्‌ मेनि नॅय्यिऩ्ऱि यॅरिन्द दऩ्ऱे
कालत्ताल् वरुव दॉऩ्ऱो कामत्ताऱ् कनलुम् वॅन्दीच्
चीलत्ता लविप्प दऩ्ऱिच् चॅय्यत्ता नाव दुण्डो 657

कूलत्तु आर्—सीमा-बद्ध; **उलकम् ऍल्लाम्**–सारे लोक; **कॉतिप्पु ऑरु कुळिर्प्पु नीङ्क**–गरमी व ठण्डी से रहित हुए, तब; **नीलत्तु आर् अरक्कऩ्‌ मेति**–नीलवर्ण राक्षस का शरीर; **नॅय् इऩ्ऱि**–घी के विना ही; **ऍरिन्ततु**–जला; **कालत्ताल् वरुवतु ऑऩ्ऱो**–ऋतु के कारण आया वह क्या; **कामत्ताल्**–काम के कारण; **कनलुम् वॅम् ती**–जलनेवाली गरम आग को; **चीलत्ताल्**–शीलगुण द्वारा; **अविप्पतु अऩ्ऱि**–बुझाना छोड़कर; **चॅय्य ताऩ्‌ आवतु उण्टो**–करने के लिए कोई दूसरा है क्या। ६५७

संसार सीमाबद्ध है। उसकी गति-विधि आदि के नियम हैं। अब वे नियम नहीं रहे। अतः न शीत था, न ताप। तब भी नीलवर्ण रावण का शरीर ताप का अनुभव करने लगा। वह विना घी के ही जलने लगा! उसका ताप काल के व्यापार के फलस्वरूप आनेवाला नहीं था! पर उसके मन की काम रूपी जलती आग से होनेवाला ताप था। उसकी शान्ति शीलगुण से ही हो सकती थी। दूसरा कोई परिहार क्या होगा? । ६५७

नारमुण् डॅळुन्द मेहन्‌ दामरै वळैय नाऩ्ऩच्
चारमुण् डिरुन्द शीदच् चन्दनऩ्‌ दळिर्मॅन्‌ ऱादो
डारमुण् डॅरिन्दु शिन्दे ययर्हिऩ्ऱा नयऩिन्‌ ऱारै
ईरमुण् डॅऩ्ब रोडि यिन्दुवैक् कॉणरु मॅऩ्ऱाऩ्‌ 658

नारम् उण्टु ऍळुन्त–जल पीकर जो उठे; **मेकम्**–वे मेघ; **तामरै वळैयम्**–कमलनालों के वलय; **नाऩ्ऩ चारम् उण्टु इरुन्त**–कस्तूरी और गन्ध-द्रव्य-मिला; **चीत चन्ततम्**–शीतल चन्दन; **तळिर्**–पल्लव; **मॅल तातॉटु**–कोमल पराग के साथ;

आरम्–मोती; उण्टु–उसके शरीर पर रखे गये; ऍरिन्तु–(पर) जलन से; चिन्तै अयर्किन्ऱान्–मन में तप्त हो थकता है; अयल् निन्ऱारै–पार्श्व में स्थित लोगों को; ईरम् उण्टु ऍन्पर्–शीतलता है, कहते; ओटि–भागो; इन्तुवै–इन्दु को; कोणर्म् ऍन्ऱान्–लाओ, कहा। ६५८

रावण के शरीर पर शीत देनेवाले पदार्थ रखे गये। जल-भरे मेघ; कमलनालों के बने वलय; कस्तूरी-मिला शीतल चन्दन; पल्लव; कोमल मकरन्द; मोती आदि उसका ताप हर नहीं रहे थे वल्कि ताप को वढ़ाने लगे। तव उसने अपने पार्श्वस्थों से कहा कि लोग कहते हैं कि चन्द्र में शीत (देने की शक्ति) है। जाकर इन्दु को पकड़ लाओ। ६५८

वॆञ्जिनत् तरक्क नाण्ड वियन्नहर् मीदु मेव
नॆञ्जयिर्त् तॊदुङ्गु हिन्ऱ निऱैमदि योनै नेडि
अञ्जलै वरुदि निन्नै यऴैत्तनन् नरश नॆन्नच्
चञ्जलन् दुऱन्दु तानच् चन्दिर नुदिक्क लुऱ्ऱान् 659

वॆम् चित्ततु–भयंकर क्रोधी; अरक्कन् आण्ट–राक्षस से पालित; वियन् नकर् मीतु–वड़े उस नगर के ऊपर; मेव–जाने से; नॆञ्चु अयिर्त्तु–मन में डरकर; ऒतुङ्कुकिन्ऱ–परे चलता जो रहा, उस; निऱै मतियोनै–पूर्णचन्द्र को; नेटि–ढूँढ़कर; अञ्चलै–मत डरो; निन्नै–तुमको; अरचन्–राजा ने; अऴैत्तनन्–बुलाया है; ऍन्न–कहने पर; अ चन्तिरन्–वह चन्द्र भी; चञ्चलम् तुऱन्तु–घवड़ाहट छोड़कर; उतिक्कल् उऱ्ऱान्–उदित हुआ। ६५९

चन्द्र तो भयंकर क्रोधी राक्षसराज से पालित वड़े नगर— लंका —के ऊपर जाने से विल्कुल डरता था। इसलिए वह उसे वचाकर कहीं घूमता रहा। राक्षसों ने उसे ढूँढ़कर पकड़ा। उससे कहा— मत डरो। राजा ने तुम्हें वुलाया है। वह चन्द्र भी कुछ अधैर्य छोड़कर धीरता का अवलंवन करके उदित हुआ। ६५९

अयिरुऱक् कलन्द तीम्बा लाऴिनिन् ऱाऴि यिन्दु
शॆयिरुऱ्ऱ करश नाण्डोर् तेय्वुवन् दुऱ्ऱ पोऴ्दिन्
वयिरमुऱ् ऱुडैन्द माऱ्ऱान् वलियऱच् चॆन्ऱ वन्ऱन्
उयिर्तॆऱ वुवन्दु वन्दा नॊत्तन नुदयञ् जॆय्दान् 660

चॆयिर् उऱ्ऱु अरचन्–अपने शत्रु राजा के; ओर् तेय्वु उऱ्ऱ पोऴ्तिल्–निर्वल रहते समय; आण्टु–तव; वयिरम् उऱ्ऱु–वैर साधकर; उटैन्त माऱ्ऱान्–वलहीन शत्रु के; वलि अऱ–वल को ध्वस्त करने; चॆन्ऱु–चढ़ जाकर; अवन् तन् उयिर् तॆऱ–उसके प्राणों का अन्त करने की; उवन्तु वन्तान्–चाह लेकर आया हो; ऒत्तनन्–उसकी तरह; अयिर् उऱ कलन्त–शर्करा (या सूक्ष्म सिकता) से युक्त; तीम् पाल् आऴि निन्ऱु–मधुर क्षीरसागर से; आऴि इन्तु–गोल चाँद; उतयम् चॆय्तान्–उदित हुआ। ६६०

कोई राजा है। उसका शत्रु निर्बल हो गया है। उस समय यह राजा अपना वैर साधने के इरादे से विकट स्थिति में रहनेवाले उस शत्रु पर आक्रमण करके उसके प्राण हरने के लिए आता हो ऐसा, शर्करा-भरे क्षीर-सागर-मध्य से गोल पूर्णचन्द्र उगकर आया। ६६०

परावरुङ् गदिर्ह ळॅङ्गुम् परप्पिमीप् पडर्न्दु वानिल्
तरादलत् तॅवरुम् बेणत् तण्मदि युदित्त तोऱ्ऱम्
अरावणैत् तुयिलु मण्णल् कालमोर्न् दऱ्ऱ नोक्कि
इरावण नुयिर्मे लुय्त्त तिहिरियु मॅन्न लान 661

परावु अरुम्–जिसकी पूरी प्रशंसा करना कठिन है; तण् मति–वह शीतल चन्द्र; कतिर्कळ् अॅङ्कुम् परप्पि–सर्वत्र किरणें फैलाते हुए; वातिल् मी पटर्न्तु–ऊपर आकाश में चलकर; तरातलत्तु अॅवरुम् पेण–धरातल के सबका स्वागत पाकर; उतित्त तोऱ्ऱम्–उदित जो हुआ वह दृश्य; अरा अणै तुयिलुम् अण्णल्–शेष-शय्या पर निद्रा करनेवाले प्रभु द्वारा; कालम् ओर्न्तु–समय विचारकर; अऱ्ऱम् नोक्कि–सन्दर्भ निश्चित कर; इरावणन्–रावण के; उयिर्मेल् उय्त्त–प्राणों पर चलाया गया; तिकिरियुम् अॅन्नल्–(सुदर्शन) चक्र-सम; आन–हुआ। ६६१

अवर्णनीय यशस्वी शीतल चन्द्र आकाश में ऊपर उदित हुआ। तब उसकी किरणें सब जगह फैलीं। भूमि के सभी लोग उसका चाव के साथ स्वागत करने लगे। तब वह दृश्य शेषशायी श्रीमन्नारायण के चक्र के समान था, जिसे उन्होंने उचित समय विचारकर और ठीक सन्दर्भ देखकर रावण पर चलाया हो। ६६१

अरुहुऱ पालिन् वेलै यमुदॅला मळैन्दु वारिप्
परुहिन परन्दु पायन्द निलाच्चुडर् पनिमॅन् कऱ्ऱै
नॅरिवुऱ पुरुवच् चॅङ्ग णरक्कऱ्कु नॅरुप्पि नाप्पण्
उरुहिय वॅळ्ळि यळ्ळि वीशिना लॊत्त दन्ऱे 662

अरुकु उऱ–पास रहे; पालिन् वेलै–क्षीरसागर के; अमुतु अॅलाम्–सारे अमृत को; अळैन्तु वारि परुकिन–(चन्द्र ने) टटोल, उठाकर खा लिया; परन्तु पायन्त–(वही अमृत) सर्वत्र फैलकर व्यापा; निला चुटर्–(उस अमृत की) चाँदनी की किरणों की; पनि मॅल् कऱ्ऱै–शीतल कोमल राशि; नॅरिवु उऱ पुरुव–तनी हुई भौंहों के; चॅम् कण् अरक्कऱ्कु–अरुणाक्ष राक्षस रावण के लिए; नॅरुप्पिन् नाप्पण्–अग्नि-मध्य; उरुकिय–पिघली हुई; वॅळ्ळि–चाँदी; अळ्ळि वीचिनाल्–उठाकर जो फेंकी गई; ऑत्ततु–उसके समान रही। ६६२

चन्द्र की चाँदनी की शीतल किरणों की राशि क्या थी! उसने अपने पास के क्षीरसागर से टटोल लेकर जो अमृत खाया था, वह मानो सब जगह फैल रहा था। लेकिन वह तनी हुई भौंहों और लाल आँखों के साथ जो रहा, उस रावण के लिए अग्निमध्य चाँदी को पिघलाकर प्राप्त द्रव के समान था जिसे उस पर उड़ेल दिया हो। ६६२

मिऩ्ऩलन् दिहऴ्ऩ् जोदि विऴुनिला मिदिलै शूऴ्न्द
शॅन्नॅलङ् गऴनि नाडऩ् ड्रिरुमहळ् शॅव्वि केळा
नन्ऩलन् दॉलैन्दु शोरु मरक्कऩै नाळुन् दोलात्
तुन्नल नॉरुवन् बॅऱ्ऱ पुहऴॅनच् चुट्ट दन्ऱे 663

मिऩ् नलम् तिकऴुम् चोति–विद्युत के गुण के साथ विद्यमान ज्योति को; विऴु निला–श्रेष्ठ चाँदनी ने; चूऴ्न्त–चारों ओर घेरे रहनेवाले; चॅम् नॅल्–लाल धान के; अम् कऴत्ति–मनोहर खेतों से युक्त; मितिलै नाटऩ्–मिथिलेश की; तिरुमकळ् चॅव्वि–दिव्य सुता सीता का रूपसौंदर्य; केळा–श्रवण कर; नल् नलम् तॉलैन्तु चोरुम्–(उसके फलस्वरूप) अपना बल सब खोकर लटनेवाले; अरक्कऩै–राक्षस, रावण को; नाळुम् तोला–कभी न हारनेवाले; तुऩ्ऩलऩ् ऑरुवऩ् पॅऱ्ऱ पुकऴ् ॲऩ–शत्रु से प्राप्त यश के समान; चुट्टतु–तपाया। ६६३

उस चाँदनी में विद्युत की-सी ज्योति भरी थी। रावण उस विदेह देश के राजा की सुपुत्री जानकीदेवी का रूपसौंदर्य सुनकर अपने सभी तरह के बल को क्षीण होने देते हुए छटपटा रहा था; जिस देश के चारों ओर लाल धान के पौधों से भरे खेत पाये जाते थे। वह चाँदनी उस रावण को इस तरह तपाने लगी, जिस तरह अजेय शत्रु का यश किसी वीर को तपाता है। ६६३

करुङ्गऴऱ् काल ऩञ्जुङ् गावलन् कऱुत्तु नोक्कित्
तरुङ्गदिर्च् चीद याक्कैच् चन्दिरऩ् ऱरुदि ॲन्ऩ
मुरुङ्गिय कऩलिन् मूरि विडत्तिनै यॊऴुक्कुञ् जीऱ्ऱत्
तरुङ्गदि ररुक्कन् ऱन्नै यारऴैत् तीर्ह ळॆन्ऱान् 664

करुम् कऴल् कालऩ्–बड़ी पायलों से भूषित यम भी; अञ्चुम्–जिससे डरता है; कावलऩ्–राक्षसराज; कऱुत्तु नोक्कि–(भृत्यों को) गुस्से के साथ देखकर; चीतम् तरुम् कतिर् याक्कै–शीत देनेवाली किरणों के शरीर के; चन्तिरऩ् तरुतिर् ॲऩ्ऩ–चन्द्र को लाओ, कहा; मुरुङ्किय कऩलिऩ्–खूब जलती हुई आग के साथ; मूरि विटत्तिनै–भयंकर विष को; ऑऴुक्कुम्–बरसानेवाले; चीऱ्ऱत्तु–क्रुद्ध; अरुम् कतिर् अरुक्कऩ् तऩ्ऩै–संतापी किरणमाली सूर्य को; यार् अऴैत्तीर्कळ्–तुम लोगों में किसने बुलाया; ॲऩ्ऱाऩ्–पूछा। ६६४

बड़ी पायलधारी यम के भी भयदायी रावण ने अपने भृत्यों को देखकर पूछा कि शीतल-किरण-शरीरी चन्द्र को लाओ —यही मैंने कहा था। लेकिन यह सर्वदाहक अग्नि के साथ भयंकर विष को बरसानेवाले और विवृद्ध कठोर किरणमाली को लाया गया है। तुम लोगों में किसने उसको बुलाया? । ६६४

अव्वऴिच् चिलद रञ्जि यादिया यरुऴिल् लारे
इव्वऴित् तरुदु मॅन्ब दियम्बला मियल्बिऩ् ऱन्ऱाल्

शॅव्वळिक् कदिरो नॅन्रुन् दैरिऩ्मे लन्ऱि वाराऩ्
अॅव्वळित् तॅनिनुन् दिङ्गळ् विमानत्तिन् मेल दॅन्ऱार् 665

अ वळि–तब; चिलतर्–भृत्यों ने; अञ्चि–डरकर; आतियाय्–नायक; अरुळ् इल्लार–आपने जिसको लाने की आज्ञा देने की कृपा नहीं की; इ वळि–(उसको) इधर; तरुतुम् अॅन्पतु–लायेंगे, ऐसा करना; इयम्पल् आम् इयल्पिऱ्ऱु अन्ऱु–कहने योग्य बात नहीं है; चॅम् वळि कतिरोन्–अपने मार्ग पर सीधे चलनेवाला सूर्य; अॅन्ऱुम्–सदा; तेर् मेल् अन्ऱि–रथ पर आना छोड़कर; वाराऩ्–नहीं आयगा; तिङ्कळ्–चन्द्र; अॅ वळित्तु अॅनितुम्–किसी भी मार्ग पर क्यों न हो; विमानत्तिन् मेलतु–यान पर ही चलेगा; अॅन्ऱार्–(उत्तर में) कहा। ६६५

तब भृत्यों ने भयभीत होकर विनय की। हे नाथ ! आपने जिसको लाने की आज्ञा कृपापूर्वक नहीं की, उसको हम लायेंगे, यह बात कथनीय नहीं है। सीधे मार्ग पर जानेवाला सूर्य कभी भी रथ पर आना छोड़कर किसी दूसरी तरह से नहीं आयगा। और चन्द्र, जहाँ भी जाये, यान पर ही जायगा। ६६५

पणन्दा ळलहुर् पनिमॉळियार्क् कऩ्बु पट्टार् पडुङ्गामक्
कुणन्दान् मुन्न मऱियादान् कॉदिया निन्ऱान् मदियाले
तणन्दा मरैयिन् ऱनिप्पहैञ नॅन्नुन् दन्मै यॉरुदाने
उणर्न्दा नुणर्वुर् ऱवन्मेलिट् टुयत्त तुन्बम् मुरैशॅय्वान् 666

पणम् ताळ् अल्कुल्–सर्पफन को उपमा में नीचे दिखानेवाला वरांग; पनि मॉळियार्क्कु–शीतल बोली, इनसे युक्त स्त्रियों के प्रति; अन्पु पट्टार्–काम के वश में जो हुए; पटुम्–उसको सतानेवाला; काम कुणन्तान्–कामरोग की स्थिति को; मुन्नम् अऱियातान्–जो पहले नहीं जानता था, वह रावण; मतियाल्–उस चन्द्र से; कॉतिया निन्ऱान्–तप्त रहा; तण् अम् तामरैयिन्–शीतल सुन्दर कमल का; तनि पकैञन्–विशेष शत्रु वह; अॅन्नुम् तन्मै–यह रीति; ऑरु ताने उणर्न्तान्–एक तरह से स्वयं जानकर; उणर्वु उऱ्ऱु–होश में आकर; उयिर् तन्तु उय्क्क–प्राण (स्वस्थता) पाकर बचने के लिए; अवन् मेलिट्टु–उस चन्द्र के प्रति; उरै चॅय्वान्–बोलने लगा। ६६६

रावण को कभी सर्प-फन के समान वरांग और शीतल, मधुर वाणी की स्त्रियों के प्रेम में फँसे हुए लोगों के काम-ताप की वेदना का प्रकार नहीं मालूम था। अब वह इस चन्द्र के कारण वेदना से तड़पने लगा। तब उसे स्मरण आया कि यह शीतल, सुन्दर कमल का अनोखा शत्रु है। तब उसे सुध आयी कि मैं इससे प्राण पाकर बचने के लिए कुछ कहूँ —यह सोचकर वह चन्द्र के प्रति कहने लगा। ६६६

तेया निन्ऱाय् मॅय्वॅळुत्ता युळ्ळङ् गरुत्ताय् निलै तिरिन्दु
काया निन्ऱा यॉरुनोयुङ् कण्डार् शॊल्लक् केट्टायो

पाया निऩ्ऱ मलर्वाळि पऱिया निऩ्ऱा रिल्लैयाल्
ओया निऩ्ऱे नुयिर्हात्तऱ् कुरिया रारे युडुवदिये 667

उट्टुपतिये–उडुपति; तेया निऩ्ऱाय्–क्षीण होता जाता है; मॅय् वॅळुत्ताय्–शरीर पाण्डुर है; उळ्ळम् कऱुत्ताय्–दिल काला है; निलै तिरिन्तु काया निऩ्ऱाय्–गुण बदलकर सूख गया; ओरु नीयुम्–अनोखी स्थिति में रहनेवाला तू भी; कण्टार् चॉल्ल–किसी के एक स्त्री को देखकर तेरे पास बताने से; केट्टायो–तूने सुन (कर प्रेम करने लग) गया क्या; पाया निऩ्ऱ–सवेग आनेवाले; मलर् वाळि–सुमन-शर; पऱिया निऩ्ऱार्–निकालनेवाले; इल्लैयाल्–नहीं हैं, इसलिए; ओया निऩ्ऱेन्–थका हूँ; उयिर् कात्तऱ्कु–मेरे प्राण बचाने का; उरियार् यारे–जिम्मा लेनेवाले कौन है। ६६७

रावण ने कहा— उडुपति ! तू दिन व दिन क्षीण होता जाता है। तेरा शरीर पाण्डुर है। दिल काला है। तेरी स्थिति बदल गयी है और तू झुलस गया है। इस विचित्र दशा में रहनेवाले तूने भी क्या किसी के द्वारा उसकी देखी हुई स्त्री के सम्बन्ध में सुनकर प्रेम किया है ? वेग से आकर मेरे ऊपर लगकर जो मन्मथ-शर मुझे सता रहे हैं उनको निकालकर मुझे बचानेवाला कोई नहीं रहा। इसलिए मैं निर्बल होकर थका हुआ हूँ। मेरी जान बचानेवाले कौन हैं ? । ६६७

आऱ्ऱा राहिऱ् ऱम्मैक्कोण् डडङ्गा रोवॅऩ् ऩारुयिर्क्कुक्
कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ कुलच्चनहि कुवळै मलर्न्द तामरैक्कुत्
तोऱ्ऱा यदऩा लहङ्गरिन्दाय् मॅलिन्दाय् वॅंदुम्बत् तॊडङ्गिऩाय्
माऱ्ऱार् शॅल्वङ् गण्डळिन्दाल् वॅऱ्ऱि याह वऱ्ऱामो 668

ऎऩ् आर् उयिर्क्कु–मेरे प्रिय प्राणों का; कूऱ्ऱाय् निऩ्ऱ–यम जो बनी खड़ी है; कुल चऩकि–उच्चकुल-जात जानकी के; कुवळै मलर्न्त–विकसित नीलोत्पलों (आँखों) सहित; तामरैक्कु–कमल (मुख) के सामने; तोऱ्ऱाय्–तू हार गया; अततால்–उस कारण; अकम् करित्ताय्–दिल का (क्रोध से) काला हो गया; मॅलिन्ताय्–पतला हो गया; वॅतुम्प तॊटङ्किऩाय्–झुलसने लगा; माऱ्ऱार् चॅल्वम् कण्टु अळिन्ताल्–अन्य मनुष्य का धन देखकर जलेगा तो; वॅऱ्ऱि आक–विजयी बनने का; वऱ्ऱु आमो–बल मिलेगा क्या। ६६८

हे चाँद ! तू उस कुलीन जानकी के कमल-सम मुख के सामने हार गया, जो मेरे प्यारे प्राणों का यम बनी है। उस जानकी के कमल-सम मुख में दो नीलोत्पल-सम आँखें हैं। हार जाने की वजह से तेरा दिल झुलस गया है। तू क्षीण होकर जल रहा है। प्रतिद्वन्द्वी का धन देखकर ईर्ष्या के कारण छीजने से विजय पाने की शक्ति मिल जायगी क्या ? । ६६८

ऎऩ्ऩप् पऩ्ऩि यिडरुळ्वा विरवो डिवऩैक् कॊण्डहऱ्ऱि
मुऩ्ऩैप् पहलुम् पहलोनुम् वरुह वॅऩ्ऱाऩ् मॊळियामुऩ्

उन्नरुकरिय वुडुवदियु मिरवु मौळित्त वीरुनोडियिल्
पन्नरु करिय पहलवनुम् पहलुम् वन्दु परन्दवाल् 669

ॲन्न पन्ति–ऐसा विलाप करके; इटर् उळवा–दुःख से पीड़ित होकर; इरवोटु इवर्न–रात के साथ इसको; कॉण्टु अकर्रि–पकड़कर दूर करो; मुन्नै पकलुम्–पहले रहा दिन और; पकलोनुम्–दिनकर को; वरुक–आने दो; ॲन्रान्–कहा; मौळियामुन्–उसके कहने के पूर्व ही; उन्नरुकु अरिय–अचिन्त्य यशस्वी; उडुपतियुम्–उडुपति और; इरवुम्–रात्रि; ऑरु नॉटियिल्–एक चुटकी भर में; ऑळित्त–छिप गये; पन्नरुकु अरिय–अवर्ण्य यशस्वी; पकलवनुम्–दिनकर और; पकलुम्–दिन; वन्तु परन्त–आकर व्याप गया। ६६९

इस तरह विविध प्रकार से रावण विलापते हुए दुखता रहा। फिर उसने कहा— रात के साथ चाँद को भी हटा देकर पहले की तरह दिन और दिनकर को आने दो। उसके कहते ही अचिन्त्य यशस्वी उडुपति रात के साथ चुटकियों में छिप गया। अवर्णनीय यशस्वी दिन और दिनकर आ गये। ६६९

इरुक्किन् मौळिया लॅरिमुहत्ति नीन्द नॅय्यि नॅरिशॅम्बॊन्
उरुक्कि यन्नैय कदिर्बाय वन्नल्बोल् विरिन्द वुयर्हमलम्
अरुक्क नॅय्द वमैन्दडङ्गि वाळा दडाद पॊरुळॅय्दिच्
चॅरुक्कि यिडैये तिरुविळन्द शिरियोर् पोन्र चेदाम्बल् 670

अरुक्कन्–सूर्य; ॲरि मुरवत्तिन्–अग्नि में; इरुक्किन् मौळियाल्–वेदमन्त्रों के साथ; ईन्त–डाले गये; नॅय्यिन्–घी के समान; ॲय्त–आ गया तब; कतिर्–उसकी किरणें; ॲरि–भट्ठी में; चॅम्पॊन् उरुक्कि अन्नैय–लाल स्वर्ण के गले हुए द्रव के समान; पाय–भूमि पर आ फैलीं; उयर् कमलम्–उत्कृष्ट कमल; अन्नल् पोल् विरिन्त–अग्निज्वालाओं के समान खिले; चेताम्पल्–लाल कुमुद; चिरियोर्–नीच लोग; अटात पॊरुळ् ॲय्ति–अनुचित रीति से धन प्राप्त करके; अमैन्तु अटक्कि वाळातु–शम-दम के साथ जीवन न बिताकर; चॅरुक्कि–गर्व करते हुए (जब रहते हैं) तब; इटैये–बीच में ही; इळन्त–खो गये हों, ऐसा; तिरु–विकास; इळन्त–खो गये (बन्द हो गये)। ६७०

सूर्य क्या आया? होमाग्नि में वेदमन्त्र के साथ पड़नेवाले घी के समान रहा वह। उसकी किरणें भट्ठी में पिघलाये हुए चोखे स्वर्ण के द्रव के समान भूमि पर फैलीं। तब श्रेष्ठ कमल अग्निज्वाला के समान विकसित हुए। लाल कुमुद उन छुद्र मनुष्यों के समान श्रीहीन हुए, जो अधार्मिक रास्तों से धन प्राप्त कर शम और दम के साथ नहीं रहते, पर गर्वीले रहते हैं और जिनकी सम्पत्ति बीच में ही लुप्त हो जाती है। ६७०

नाणि निन्र वॊळिमळुङ्गि नडुङ्गा निन्र वुडम्बिन्नायच्
चेणि निन्रुम् बुरञ्जायन्दु कङ्गुर् रारम् बिन्शॅल्लप्

पूणिऩ् वॆय्यो नीरुदिशैये पुहुदप् पोवाऩ् पुहऴ्वेऩ्दर्
आणै शॆल्ल निलैयिऴऩ्द वरशऩ् बोऩ्ऱा नल्लाण्डाऩ् 671

पूणिऩ् वॆय्योऩ्–संसार का आभरण-स्वरूप सूर्य; ऒरु तिचैये पुकुत–उत्तम एक (पूर्व) दिशा में उदय हुआ; अल् आण्टाऩ्–रात का नायक; नाणि–लजाकर; निऩ्ऱ ऒळि–अपने पास रही ज्योति के; मऴुङ्कि–मन्द पड़ते; नटुङ्का निऩ्ऱ उटम्पिऩ् आय्–काँपते शरीर का बनकर; चेणिऩ् निऩ्ऱु–आकाशमध्य से; पुऱम् चाय्न्तु–एक ओर उतरकर; कङ्कुल् तारम् पिऩ् चॆल्ल–रात रूपी पत्नी के पीछा करते; पोवाऩ्–जो गया वह; पुकऴ् वेन्तर्–विख्यात राजा के; आणै चॆल्ल–शासन में; निलै इऴन्त–अपनी स्थिति से च्युत; अरचऩ् पोऩ्ऱाऩ्–छोटे राजा के समान लगा। ६७१

संसार का आभरणरूप सूर्य उत्तम पूर्व दिशा में उदय हुआ तो रात का शासक चाँद उसको देखकर शरमाया, मन्दप्रभ हुआ और आकाश-मध्य से काँपते हुए उतरकर हट गया। उसके पीछे रात रूपी उसकी पत्नी भी चली। बड़े राजा के शासन में छोटे राजा की स्थिति जैसे बिगड़ जाती है, वैसे चन्द्र का शासन भी बिगड़ गया। ६७१

मणऩ्दपे रऩ्बरै मलरिऩ् शेक्कैयुळ्
पुणर्ऩ्दिल रिडैयोरु वॆहुळि पोङ्गलाल्
कणङ्गुऴै महळिर्हळ् कङ्गुल् वीय्ऩ्ददॆऩ्
रुणर्ऩ्दिलर् कनविनु मूड ऱीर्ऩ्दिलार् 672

कऩम् कुऴै मकळिर्कळ्–भारी कुण्डलधारिणी स्त्रियों ने; मलरिऩ् चेक्कै उळ्–पुष्पशय्या पर; मणन्त पेर् अऩ्परै–मिले रहे पतियों के साथ; इटै ऒरु वॆकुळि पोङ्कल् आल्–बीच में रोष के होने से; पुणर्न्तिलर्–सम्भोग नहीं किया था; कङ्कुल् वीय्न्तु–रात चली गई; ऎऩ्ऱु उणर्न्तिलर्–यह नहीं समझीं; कऩविलुम्–तब के स्वप्न में भी; ऊटल् तीर्न्तिलार्–रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

(अकाल में अकस्मात अर्क के आगमन से क्या-क्या हुआ, उसका रसीला वर्णन है।) कुछ राक्षस-स्त्रियाँ, जिनके कर्णों को भारी कुण्डल अलंकृत कर रहे थे, अपने पतियों के साथ पुष्पशय्या पर लेटी हुई थीं। अकस्मात उनके मन में रूठन हो गयी और रोष उभर आया था। अतः क्रीड़ा रुक गयी थी। अब उन्हें ज्ञात नहीं था कि सवेरा हो आया है। इसलिए वे स्वप्न में भी मान कर रही थीं। रूठन नहीं छोड़ी। ६७२

अणैमलर्च् चेक्कैयु ळाड ऱीर्ऩ्दऩर्
पणैहळैत् तऴुविय पवळ वल्लिबोल्
इणैमलर्क् कैहळि निरुह विऩ्ऩुयिर्त्
तुणैवरैत् तऴुविनर् तुयिल्हिऩ् ऱार्शिलर् 673

चिलर्–कुछ स्त्रियाँ; अणै मलर् चेक्कै उळ्–गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में;

आटल् तीर्न्ततर्–रतिक्रीड़ा समाप्त करके; पणैकळै तळुविय–मोटी डालों से लिपटी; पवळ वल्लि पोल्–प्रवालवल्लरी के समान; इणै मलर् कैकळिन्–जोड़े के सुमन-हस्तों से; इन् उयिर् तुणैवरै–प्राणप्यारे पतियों का; तळुवितर्–आलिंगन करती हुई; तुयिल्किन्ऱार्–सोती हैं। ६७३

और कुछ राक्षस-स्त्रियों ने रतिक्रीड़ाएँ पूरा कर ली थीं। गद्दे के समान बनी पुष्पशय्या में वे अपने प्यारे पति का आलिंगन करती हुई, स्थूल वृक्ष से लिपटी प्रवालवल्लरी के समान सो रही थीं। ६७३

तळ्ळुरु	मुयिरिनर्	तलैवर्	नीङ्गलाल्
नळ्ळिर	विडैयुरु	नडुक्क	नीङ्गलर्
कॊळ्ळैयि	नलर्दरुङ्	गुवळै	नाण्मलर्क्
कळ्ळुहु	वन्नॆन्नक्	कलुळुङ्	गण्णिनार् 674

तलैवर् नीङ्कलाल्–पतियों के चले जाने से; तळ् उरुम् उयिरितर्—चलित-प्राण होकर; नळ् इरवु इटै–अर्धरात्रि के समय; उरु–जो हुआ; नटुक्कम् नीङ्कलर्–उस भय के कम्पन से मुक्त न होकर; अलर् तरु–विकसित; कुवळै नाण् मलर्–कुवलय के नवीन पुष्पों से; कळ् कॊळ्ळैयिन् उकुवत–मधु अधिक परिमाण में ढलकता है; ऎन्न–जैसे; कलुळुम् कण्णितार्–जल बहानेवाली आँखों की बनीं। ६७४

कुछ स्त्रियों के प्रेमी पति उनको छोड़कर गये हुए थे। रात आधी बीत गयी। उनके प्राण डगमगाये। (उनका मन डोलायमान था।) उनके शरीर काँप रहे थे। उनकी आँखों से, नवीन कुवलयफूलों से शहद झरता हो, ऐसा अश्रु बहने लगे। ६७४

अळियिनन्	दडनदॊरु	मार्प्प	वाय्हदिर्
ऑळिबड	वुणर्हिल	वुऱङ्गु	हिन्ऱन
तॆळिविल	वित्तुयिल्	विळैक्कुज्	जेक्कैयुळ्
कळिहळै	निहर्त्तन	कळिहॊळ्	ळन्नमे 675

आय् कतिर् ऑळि पट–श्रेष्ठ सूर्यकिरण के लगते ही; अळि इनम्–भ्रमरकुल; तटम् तॊरुम् आर्प्प–सब स्थानों में गुंजारने लगे; कळि कॊळ् अन्नम्–मुदित हंस; कळिकळै निकर्त्तन–पियक्कड़ों के समान; इन् तुयिल् विळैक्कुम्–मधुर निद्रादायक; चेक्कै उळ्–(कमल की) शय्या में; तॆळिवु इल उणर्किल–विना सुध-बुध के; उऱङ्कुकिन्ऱन–सोते हैं। ६७५

रावण की आज्ञा से अप्रत्याशित रीति से सूर्य का उदय हो गया। अलिकुल यत्र-तत्र गुंजार कर रहे थे। मुदित हंसवृन्द पियक्कड़ों के समान मधुर निद्रादायी कमल-शय्याओं पर सुध-बुध के विना सो रहे थे। ६७५

विरिन्दुऱै	तुऱैतॊरुम्	विळक्कम्	यावैयुम्
ऎरिन्दिळु	द:(ह्)कल	वॊळियि	ळन्दवाल्

अरुन्दुरै निरम्बिय वुयिरि नन्बरैप्
पिरिन्दुरै तरुङ्गुलप् पेदै मारिन्रे 676

अरुम् तुरै निरम्पिय–मनोरम श्रृंगार-प्रकार जाननेवाले; उयिरिन् अन्पर्–प्राण-प्यारे पतियों से; पिरिन्तु उरैतरुम्–अलग होकर रहनेवाली; कुल पेतै मारिते–कुलीन स्त्रियों की तरह; विरिन्तु उरै–विशाल नगर के; तुरै तोरुम्–प्रासादों में; विळक्कम् यावैयुम्–सभी दीपक; इळुतु अँरिन्तु–घी जलकर; अ∴(ह्)कल–कम नहीं हुआ तो भी; ओळि इळन्त–मन्दप्रभ हुए। ६७६

कुछ स्त्रियों के रतिकलाविदग्ध प्रेमी पति उनको छोड़कर दूर चले गये थे और ये वियोगिनी नायिकाएँ घर पर रहीं। उन्हीं के समान बड़े-बड़े सौधों में रहे दीप भी मन्दप्रभ हो गये, यद्यपि उनमें घी अभी बाकी था (जलकर समाप्त न हुआ था)। ६७६

पुत्तैन्दिद ळुरिञ्जुरुम् वोळुदु पुल्लियुम्
वत्तैन्दिल वैहरै मलरु मामलर्
नतन्दलै यमळियिर् रुयिलु नङ्गैमार्
अतन्दलि नॆंडुङ्गणो डॊत्त वामरो 677

इतळ् पुत्तैन्तु उरिञ्चुरुम्–दलों को सुन्दर रीति से विकसित करनेवाला; पोळुतु पुल्लियुम्–समय (सूर्योदय का) आया, तो भी (अप्रत्याशित रीति से हो जाने के कारण); वैकरै मलरुम् मा मलर्–सवेरे फूलनेवाले उत्तम फूल; वनैन्तिल–मनोरम (विकसित) नहीं हुए; नतम् तलै–विशाल; अमळियिल् तुयिलुम्–शय्या पर सोनेवाली; नङ्कैमार्–स्त्रियों की; अनन्तलिन्–निद्रा में रहनेवाली; नॆंटुम् कणोटु ऑत्त आम्–दीर्घ आँखों के समान (मुकुलित रहे)। ६७७

दलों का स्पर्श कर उन्हें विकसित करनेवाली उदय-वेला आ गयी। तो भी सवेरे जिन श्रेष्ठ फूलों को विकसना था, वे मनोरम प्रकार से नहीं विकसे। विशाल शय्या में सोनेवाली स्त्रियों की निद्रामग्न आँखों के समान बन्द ही रहे। ६७७

इच्चैयिर् रुयिल्बवर् यावर् कण्गळुम्
निच्चयम् पहलुन्द मिमैह णीङ्गिल
पिच्चैयु मिड्डुमॆन् रुणर्दल् पेणला
वच्चैयर् नॆंडुमत्तै वायिन् मानवे 678

पिच्चैयुम् इट्टुम् ऎन्रु–भिक्षा देंगे, यह; उणर्तल् पेणला–भाव न रखनेवाले; वच्चैयर्–कृपणों के; नॆंटु मनै वायिल् मान–बड़े घर के द्वार के समान; इच्चैयिल्–अपनी इच्छा भर; तुयिल्पवर् यावर् कण्कळुम्–सोनेवाले सभी की आँखें; पकलुम्–दिन होने पर भी; तम् इमैकळ्–अपनी पलकें; निच्चयम् नीङ्किला–निश्चय खोलकर नहीं जागीं। ६७८

सुप्त लोगों की आँखें नहीं खुलीं। उदय होने के बाद भी निश्चित

रूप से नहीं खुलीं। उनकी पलकें उन लोभी कृपण लोगों के घरों के द्वारों के समान बन्द रहे, जो कभी याचकों को कुछ नहीं देते। ६७८

नञ्जुरु	पिरिवित्त	नळ्ळि	नीळमोर्न्
दञ्जुड़	नडुवणो	रयर्वु	ताङ्गिय
वॅञ्जिड़ै	नीङ्गिय	वित्तैयि	तोरॅत्त
नॅञ्जुड़क्	कळित्तत्त	नेमिप्	पुळ्ळॅलाम् 679

नेमि पुळ् ॲलाम्–चक्रवाक पक्षी सब; नळ्ळित्–रात में; नञ्चु उरु पिरिवित्–विष-सम वियोग में रहे; नीळम् ओर्न्तु–रात की लम्बाई का विचार करके; अञ्चुड़–भय के साथ; ओर् अयर्वु ताङ्किय–क्लेशयुक्त रहे; नडुवण्–उस दुःख के समय के बीच; वॅम् चिड़ै नीङ्किय–कठोर कारा से विमुक्त; वित्तैयित्तोर् ॲन–सुकृतों के समान; नॅञ्चु उड़ कळित्तत–मन से मुदित हुए। ६७९

चक्रवाक पक्षियों को जब मालूम हुआ कि उदय-समय आ गया, तो उनके आनन्द का ठिकाना नहीं रहा। वे रात की लम्बाई का विचार करके भय के साथ निद्रा में लगी थीं। अब उसके बीच में ही उदय हो गया। कारामुक्त सुकृत्य वाले लोगों के समान वे बहुत आनन्दित हुए। ६७९

नाणमदिक्	कल्लदु	नडुव	णॅय्दिय
आणॅयिड़्	ड़िड़क्कला	वलरिड़्	पाय्वत्त
माण्वित्तप्	पयनरु	वच्चै	वायिल्शेर्
पाणरिड़्	ड़ळर्न्दत्त	पाडड़्	ड़ुम्बिये 680

पाटल् तुम्पि–सुरीले गानेवाले भ्रमर; नाळ् मतिक्कु अल्लतु–नवोदित चन्द्र के सिवा; आणॅयिल्–रावण की आज्ञा से; नटुवण् ॲय्तिय–(अकाल में) बीच में आये दिन में; तिर्क्कला अलरिल्–जो नहीं विकसते, उन (कुवलय आदि) पुष्पों में; पाय्वत्त–सवेग आते हैं; माण् वित्तै पयन् अड़–महान सुकृत्यों से वंचित; वच्चै–कृपणों के; वायिल् चेर्–द्वार पर आये; पाणरिल्–याचकों के समान; तळर्न्तत्त–हतोत्साह हुए। ६८०

सुरीला गान गानेवाले भ्रमर बहुत शीघ्र उड़ते हुए कुवलय आदि पुष्पों के पास आये। वे तो नवोदित चन्द्र के सामने ही खिलने के आदी थे। अब तो रावणाज्ञा से सूर्य आ गया है। इसलिए वे बन्द रहे। भ्रमरों की स्थिति उन गवैये याचकों के समान हो गयी, जो कृपणों के द्वार पर जाते हैं और उसको बन्द पाते हैं। ६८०

अरुमणिच्	चाळर	मदत्ति	नूडुबुक्
कॅरिहदि	रित्तुयि	लॅळ्ळुप्प	वॅय्दवुम्
मरुळोडु	तॅरुळ्ळुरु	निलैयर्	मङ्गैयर्
तॅरुळुड़	मॅय्प्पॊरु	डॅरिन्दि	लारित्ते 681

अरु मणि चाळरम् अतनिऩ् ऊडु–श्रेष्ठ रत्नमय गवाक्षों द्वारा; पुक्कु–प्रवेश करके; ऍरि कतिर्–सूर्य की किरणें; इऩ् तुयिल् ऍळुप्प–मधुर नींद से जगाने के लिए; ऍय्तवुम्–आ गईं, आने पर; मङ्कैयर्—राक्षस-स्त्रियाँ; तॆरुळ् उऱ मॆय् पॊरुळ् तॆळिन्तिलारिऩ्–पूर्णरूप से साफ़ ज्ञान न रखनेवाले के समान; मरुळ् ऒट्टु तॆरुळ् उऱ–भ्रम और बोध (तन्द्रा और जागरण) की मिश्रित; निलैयर्–दशा में रहीं। ६८१

सूर्य की किरणें उत्तम और बहुमूल्य रत्नजड़ित गवाक्षों द्वारा अन्दर घुसकर स्त्रियों को मधुर निद्रा से जगाने लगीं। तब वे न तो पूर्णरूपेण जाग पायीं, न निद्रा में ही रहीं। उनकी निद्रा-स्थिति उन लोगों के ज्ञान की स्थिति के समान थी, जो अपूर्ण रूप से विवृद्ध है। यानी संदिग्ध अवस्था में रही। ६८१

एवलिऩ्	वऩ्मैयै	यॆण्ण	ऌेऱ्ऱलर्
नावलर्	नविऱ्ऱिय	नाळि	नामनूल्
कावलि	ऩुऩित्तुणर्	कणित	माक्कळुम्
कूवुरु	कोळियुम्	दुयिल्वु	कॊण्डवे 682

एवलिऩ् वऩ्मैयै–आज्ञा के प्रताप को (रात में दिन होने की स्थिति को); ऍण्णल् तेऱ्ऱलर्–जान नहीं सके; नावलर् नविऱ्ऱिय–विद्वानों के रचित; नाळि नाम नूल्–समय के श्रेष्ठ शास्त्र के अनुसार; कावलिऩ् नुऩित्तु उणर्–रात में सचेत रहकर काल की गणना करनेवाले; कणित माक्कळुम्–ज्योतिषी लोग और; कूवु उऱु कोळियुम्–बाँग देनेवाले मुर्गे; तुयिल्वु कॊण्ट–निद्रामग्न हो रहे। ६८२

विद्वान ज्योतिषियों से रचे शास्त्र के निष्णात काल-गणितज्ञ, जो रात के काल की गणना करते रहे, सो गये। पहरों को बताने के लिए टेर लगानेवाले मुर्गे भी सोये रहे, क्योंकि उन्हें रावण की आज्ञा और उसके प्रताप से हुआ नतीजा मालूम नहीं था। यानी सूर्योदय हो गया सो बात उन्हें विदित नहीं थी। ६८२

इऩैयन	वुलहिनि	निहळ्ळ	मॆल्वैयिल्
कऩैहळ	लरक्कऩुङ्	गण्णि	ऩोक्किऩाऩ्
निऩैवुरु	मऩत्तैयु	नॆरुप्पिऱ्	ऱीय्क्कुमाल्
अऩैयवत्	तिङ्गळे	याहुमा	लॆऩ्ऱाऩ् 683

इऩैयऩ–ऐसी बातें; उलकिऩ् निकळुम् ऍल्वैयिऩ्–जब संसार में हो रही थीं, तब; कऩै कळल् अरक्कऩुम्–क्वणनशील पायलधारी राक्षस (रावण) ने भी; कण्णिऩ् नोक्किऩाऩ्–आँखों से (सूर्य को) देखकर; निऩैवु उऱु मऩत्तैयुम्–स्मरणशील मन को भी; नॆरुप्पिल् तीय्क्कुम् आल्–आग से जला देगा; (आतलिऩ्–इसलिए;) अऩैय अ तिङ्कळे आकुम्–वही चन्द्र यह है; ऍऩ्ऱाऩ्–(अपनी धारणा) कही। ६८३

जब ये बातें हो रही थीं, तो क्वणनशील पायल-चरण रावण ने सूर्य

को अपनी आँखों से देखा। कहा कि इसके बारे में सोचनेवाले मन को भी यह जला डालेगा। इसलिए यह वही चन्द्र है (जिसको हटाने की आज्ञा मैंने दी थी)। ६८३

तिङ्गळो वन्ऱिदु शॅल्वच् चॅङ्गदिर्
पॊङ्गुळैप् पच्चैमाप् पुरवित् तेरदाल्
वॅङ्गदिर् शुडुवदे यन्ऱि मॅय्युऱत्
तङ्गुदण् कदिर्शुडत् तहादॆन्ऱार्शिलर् 684

चिलर्–कुछ (भृत्यों) ने; इतु तिङ्कळो अन्ऱु–यह चन्द्र ही नहीं है; चॅल्व चॅम् कतिर्–श्रेष्ठ लाल किरणमाली; पॊङ्कु उळै–उभरे, बढ़े अयाल वाले; पच्चै मा पुरवि–हरे बड़े अश्वों का; तेरतु आल्–रथ का है, इसलिए; वॅम् कतिर्–तापक किरणों का; मॅय्–शरीरी; उऱ चुट्टुवते अन्ऱि–खूब जलायगा, उसके सिवा; तण् तङ्कु कतिर्–शीत-भरी किरणों का चन्द्र; चुट तकातु–जला नहीं सकेगा; ॲन्ऱार्–कहा। ६८४

वहाँ जो रहे, उन किंकरों ने उत्तर में निवेदन किया कि नहीं! यह चन्द्र ही नहीं है। विश्वास मानिए। यह उत्तम और लाल किरणमाली है। उसके रथ में बड़े और हरे अश्व जुते हैं। इसी की किरणें गरम होती है और वे ही ताप देती है। चन्द्र शीतल-किरण है और वह नहीं जलाता। ६८४

नीलच् चिहरक् किरियन्नव निन्ऱ वॅय्योन्
आलत् तिनुम्वॅय्य नहऱ्ऱि यरऱ्ऱु हिन्ऱ
वेलैक् कुरलैत् तविर्हॆन्ऱु विलक्कि मेलै
मालैप् पिऱैप्पिळ्ळैयैक् कूवुदिर् वल्लै यॆन्ऱान् 685

चिकर नील किरि अन्नवन्–शिखरों-सहित नीले पर्वत के समान रावण; निन्ऱ वॅय्योन्–सामने स्थित यह सूर्य; आलत्तिनुम् वॅय्यन्–हलाहल से भी तापक है; अकऱ्ऱि–इसे दूर करके; अरऱ्ऱुकिन्ऱ–रोनेवाले; वेलै कुरलै–समुद्र के गले को; तविर्क ॲन्ऱु–चुप रहो, कहकर; विलक्कि–रोककर; मेलै–पश्चिम दिशा में उदित; मालै पिऱै पिळ्ळैयै–शाम के बालचन्द्र को; वल्लै–शीघ्र; कूवुतिर्–पुकारो; ॲन्ऱान्–आज्ञा दिलाई। ६८५

तब शिखरों सहित पर्वत-सम रावण ने आज्ञा सुनायी कि सामने जो है, वह सूर्य हलाहल से भी संतापी लगता है। उसको हटाओ। साथ-साथ उस समुद्र को भी चुप कराओ जो विलाप रहा है! फिर पश्चिम दिशा में जो उदित होता है, उस बाल-कला-चन्द्र को पुकारो। ६८५

शॊन्ना निऱुदर्क्किरै यम्मॊऴि शॊल्ल लोडुम्
अन्नाऴि निऱम्बिय वम्मदि याण्डॊर् वेलै

मुन्नाळि निळम्पिडै याहि मुळैत्त वॆन्ऱाल्
ऎन्नाळु मरुन्दव मन्ऱि यियऱ्ऱु लामो 686

निरुतरक्कु इऱै–राक्षसों के राजा ने; चॊन्नतान्–वैसा कहा; अ मॊऴि चॊल्लल् ओटुम्–वह वचन कहते ही; अ नाळिन् निरम्पिय–वह (पन्द्रह) दिनों का; अ मति–पूर्णचन्द्र; आण्टु–तब; ओर् वेलै–उसी समय; मु नाळ् इळम् पिऱै आकि–तीन दिनों का कलाचन्द्र बनकर; मुळैत्ततु–उदय हुआ; ऎन्ऱाल्–तो; अरुम् तवम् अन्ऱि–बिना कठिन तपस्या के; ऎ नाळुम्–किसी भी दिन; इयऱ्ऱल् आमो–ऐसा किया जा सकता है क्या। ६८६

राक्षसाधिपति ने यह आज्ञा सुनायी। सुनाते ही वह पूर्णचन्द्र तिरोहित हो गया। वहाँ तीन दिन का बालचन्द्र उदित हुआ। तो (कवि तपस्या की शक्ति की महिमा में कहते हैं कि) तपस्या की महिमा कितनी बड़ी है? उसके सिवा कौन सी चीज है जो ऐसा कर सकती है? (यह अर्थ भी लग सकता है कि तपस्या को छोड़ कौन कार्य है जो करने योग्य है?)। ६८६

कुडपालिन् मुळैत्तदु कण्ड कुणङ्ग डीयोन्
वडवावऩ लन्ऱॆन्निन् मण्विडर् वैत्त पाम्बिन्
विडवा ळॆयिऱन्ऱॆन्नि लॆन्नै वॆहुण्डु मालै
अडवा ळुरुविक्कॊडु तोन्ऱिय दाहु मन्ऱे 687

कुटपालिन्–पश्चिमी दिशा में; मुळैत्ततु–उदय हुआ; कण्ट–देख; कुणक्कऴ् तीयोन्–दुर्गुणी; वटवा अनल्–वड़वाग्नि है; अन्ऱु ऎनिल्–नहीं तो; मण् पिटर् वैत्त–भूमि को गले पर ढोनेवाले; पाम्पिन्–शेषनाग का; विट वाळ् ऎयिऱु–विषैला प्रकाशमय दाँत है; अन्ऱु ऎनिल्–वह भी नहीं तो; ऎन्नै वॆकुण्टु–मेरे विरुद्ध गुस्सा करके; मालै–संध्याकाल में; अट–मारने के लिए; वाळ् उरुवि कॊटु–तलवार खींच लेकर; तोन्ऱियतु आकुम्–प्रकट हुआ होगा। ६८७

दुर्गुणी रावण ने पश्चिमी दिशा में उदित कला-चन्द्र को देखा। उसने कहा कि रे, यह तो वड़वाग्नि है! अगर नहीं तो भूभारवाही शेषनाग का उज्ज्वल विषैला दाँत होगा! वह भी नहीं है तो संध्याकाल मुझसे वैर करके मुझे मारने के लिए तलवार लिये हुए प्रकट हो आया होगा!। ६८७

तादुण् शडिलत्तलै वैत्तदु तण्ड रङ्गम्
मोदुङ् गडलिऱ् किडैमुन्दु पिऱन्द पोदे
ओदुङ् गडुवैत्तन् मिडऱ्ऱि लॊळित्त तक्कोन्
ईदुङ् गडुवामॆन वॆण्णिय वॆण्ण मन्ऱो 688

ओतुम्–सबसे चर्चित; कटुवै–विष को; तन् मिटऱ्ऱिल् ऒळित्त–कण्ठ में जिन्होंने दबा रखा है; तक्कोन्–श्रेष्ठ शिवजी ने; तण् तरङ्कम् मोतुम्–शीतल तरंग-ताड़ित; कटलिऱ्कु इटै–(क्षीर-) सागर से; मुन्तु पिऱन्त पोते–पहले जब प्रकट

हुआ तभी; तातु उण्—मकरन्द-भरी; चटिल तलै—जटा से अलंकृत सिर पर; वैत्ततु—रख लिया तो; ईतुम्—यह (चाँद) भी; कटु आम्—विष है; अँत अँण्णिय—ऐसा सोचा हुआ; अँण्णम् अन्ऱो—विचार था न। ६८८

हाँ! यह भयंकर विष ही होगा। क्योंकि विषकंठ शिवजी ने शीतल तरंगाकुल क्षीरसागर पर उस विष के पहले इस चाँद को लेकर अपनी परागयुक्त जटा से अलंकृत सिर पर धारण क्यों किया? यही समझकर न कि यह भयंकर विष है? । ६८८

उरुमोत्त	वलत्तुयिर्	नुङ्गिय	तिङ्ग	ळोडित्
तिरुमिच्	चिरुमॅन्	पिऱैदीमै	कुऱैन्द	दिल्लै
करुमैक्	कऱैयॅञ्जलि	नञ्जु	कलन्द	पाम्बिन्
पॅरुमै	शिऱुमैक्कोरु	पॅऱ्ऱि	कुऱैन्द	दुण्डो 689

अँञ्चल् इल् नञ्चु—अक्षय विष; कलन्त पाम्पिन्—(से) युक्त सर्पो में; पॅरुमै चिऱुमैक्कु—बड़ा क्या, छोटा क्या; ओरु पॅऱ्ऱि—(विष के) रखने में; कुऱैन्ततु उण्टो—कमी है क्या; उरुम् ओत्त वलत्तु—वज्र-सम बल के साथ; उयिर् नुङ्किय—प्राण खानेवाला; तिङ्कळ्—पूर्णचन्द्र; ओटि—भागकर; तिरुमि—बदलकर; इ चिऱु मॅल् पिऱै—यह छोटा कोमल बालचन्द्र (जो आया); तीमै कुऱैन्ततु इल्लै—बुराई में कम नहीं है। ६८९

अक्षय विष-भरे साँपों में छोटा क्या बड़ा क्या? विष के सम्बन्ध को लेकर सोचा जाय तो कोई किसी से कम नहीं! वज्र-सम बल के साथ मेरी जान का ग्राहक जो रहा वह पूर्णचन्द्र चला, फिर इस कोमल बालचन्द्र के रूप में आया। यह उससे कम दुखदायी नहीं लगता। ६८९

कन्नक्	कतियुमिरु	ळन्नैयुङ्	गाण्डु	मन्ऱे
मुन्नैक्	कदिर्नन्ऱि	दहऱ्ऱुदिर्	मोय्म्बु	शान्ऱ
अँन्नैच्	चुडुमेलिनि	येळुल	हत्तिल्	वाळ्वोर्
पिन्नैच्	चिलरुय्वरॅन्	ऱङ्गोरु	पेच्चु	मुण्डो 690

मुन्नै कतिर् नन्ऱु—पहले आया सूर्य ही अच्छा; कन्न कतियुम्—पूर्णरूप से घना; इरुळ् तन्नैयुम्—अन्धकार भी; काण्टुम्—देख लूँगा; इतु अकऱ्ऱुतिर्—इसको हटा दो; मोय्म्पु चान्ऱ—बलवान; अँन्नै चुटुमेल्—मुझे जलायगा (यह चाँद) तो; इनि—आगे; एळु उलकत्तिल् वाळ्वोर्—सातों लोकों में रहनेवाले; पिन्नै चिलर्—फिर कुछ लोग; उय्वर् अँन्ऱु—इससे बच पायँगे, ऐसा; अङ्कु ओरु पेच्चुम् उण्टो—वहाँ वचन होगा क्या। ६९०

पहले जो सूर्य रहा वही अच्छा लगता है! पूर्णरूप से घना बना अन्धकार कैसा होगा? —यह भी देख लूँ। हटाओ इसको। बलशाली मुझे भी यह इस प्रकार जला सकता है, तो सातों लोकों के वासियों में किसी के जान से बचने की बात ही उठेगी! । ६९०

आण्डप् पिऱैनीङ्गलु मॆय्दिय वन्द कारम्
तीण्डऱ् करिदाय्प्पल तेय्प्पिनुन् देय्क्क लाहा
वेण्डिऱ् करवत्तिरप् पत्तियि नीर्न्दु वीऴ्त्तुक्
काण्डऱ् करिदाय्प्पल कन्दु तिरट्ट लाहुम् 691

आण्टु–तब; अ पिऱै नीङ्कलुम्–वह बालचन्द्र हटा तो; ऍय्तिय अन्तकारम्–आया अन्धकार; तीण्टऱ्कु अरिताय्–अस्पृश्य; पल तेय्प्पितुम्–खूब बार-बार रगड़ने पर भी; तेय्क्कल् आका–रगड़कर मिटाना कठिन था; वेण्टिल्–चाहने पर; करपत्तिर पत्तियिल्–आरे से; ईर्न्तु–काटकर; वीऴ्त्तु–गिराकर; काण्टऱ्कु अरिताय्–अदर्शनीय; पल कन्तु–अनेक खम्भों के रूप में; तिरट्टल् आकुम्–सँवारा जा सकता है। ६९१

तब बालचन्द्र हट गया। अन्धकार आ गया। वह ऐसा था कि कोई उसे स्पर्श नहीं कर सकता, न उसे रगड़कर उसका अभाव किया जा सकता था। चाहने पर शायद उसे आरे से काटकर उसके अनेक गोल खम्भे बनाये जा सकते थे। ६९१

मुरुडीर्न् दुरुट्टऱ् कॆळिदॆन्बदॆन् मुऱ्ऱ मुऱ्ऱिप्
पॊरुडीर्न्द ञानच् चुडर्बुक्कु वळङ्ग लिन्ऱिक्
कुरुडीङ्गि दॆन्नक् कुऱिक्कॊण्डहण् णोट्टङ् गुन्ऱि
अरुडीर्न्द नॆञ्जिऱ् करिदॆन्बदव् वन्द कारम् 692

मुरुटु ईर्न्तु–गाँठें आदि काट फेंककर; उरुट्टऱ्कु–गोल (खम्भों के रूप में) बनाना; ऍळितु ऍन्पतु ऍन्–आसान है, यह कहना क्या (विशेषता रखता) है; मुऱ्ऱ मुऱ्ऱि–सम्पूर्ण रूप से पक्व; पॊरुळ् तीर्न्त–असंदिग्ध तत्त्वज्ञ; ञानम् चुटर् पुक्कु–ज्ञान की ज्योति प्रवेश करके; वळङ्कल् इन्ऱि–प्रकाशमान नहीं है (जिसमें); ईङ्कु इतु कुरुटु–यहाँ यह अन्धा है; ऍन्न कुऱि कॊण्ट–ऐसा कहा जानेवाला; कण्णोट्टम् कुन्ऱि–दाक्षिण्य से हीन; अरुळ् तीर्न्त–दया से रहित; नॆञ्चिल्–(जो है उस) मन के समान; अ अन्तकारम्–वह अन्धकार; करितु ऍन्पतु–काला कहा जा सकता था। ६९२

हाँ— गाँठें आदि हटाकर उसके खम्भे बनाये जा सकते है —यह कहना कौन सी विशेषता रखता है? वह अन्धकार उस अज्ञ-जन के मन से बढ़कर काला था, जिसमें तत्त्वदर्शी पक्व ज्ञान प्रवेश नहीं कर पाया था, जो 'यह अन्धा है', इस कथन का पात्र हो गया था और जिसमें न दाक्षिण्यभाव था, न दयाभाव। ६९२

विळ्ळादु शॆऱिन्दिडै मेलुऱ् वीङ्गि यॆङ्गुम्
तळ्ळा विरुळ्वन्दहन् ञालम् विळुङ्ग लोडुम्
ऍळ्ळा वुलहियावैयुम् यावरुम् वीव दॆन्ब
वुळ्ळा दुमिळ्न्दान् विडमुण्ड वीरुत्त नॆन्ऱान् 693

विळ्ळातु–अखण्डित; इटै चॅरिन्तु–ठस; मेल् उऱ वीङ्कि–ऊपर बढ़कर; ऍङ्कुम् नळ्ळा–कहीं भी न लगनेवाला; इरुळ् वन्तु–अन्धकार आया; अकल् ञालम् विळुङ्कल् ओटुम्–और उसके विशाल संसार को निगलते ही; विटम् उण्ट ऒरुत्तन्–विषखादक शिव ने; ऍळ्ळा उलकु यावैयुम्–अनिंद्य सभी लोक; यावरुम्–और उनके वासी; वीयुम् ऍन्पतु उळ्ळातु–मिट जायँगे, यह नहीं सोचकर; उमिऴ्न्तान्–उगल लिया है; ऍन्ऱान्–कहा। ६९३

अविच्छिन्न, घना और सर्वत्र व्याप्त विपुल अन्धकार, जो कहीं चिपका नही रहता, आकर विशाल विश्व को निगल गया। रावण ने टीका की कि शिवजी ने जो पहले विष को निगल लिया था अब उसे उगल दिया है, विना यह सोचे-विचारे कि इसके फैलने से सारे लोक और उन लोकों के वासी मिट जायँगे। ६९३

वेलैत् तलैवन् दॊरुवन्वलि याल्वि ळुङ्गुम्
आलत्ति नडङ्गुव दन्ऱि दऱिन्दु णर्न्देन्
ञालत्तॊडु विण्मुदल् यावैयु नावि नक्कुम्
कालक् कनलुहार् विडमुण्डु करुत्त दन्ऱे 694

ऒरुवन्–अद्वितीय शिव ने; वेलै तलै वन्तु–समुद्र पर आकर; वलियाल्–अपने बल से; विळुङ्कुम्–(जिसको) निगला; आलत्तिन्–उस हलाहल में; इतु अटङ्कुवतु अन्ऱु–यह समाविष्ट होनेवाला नहीं; अऱिन्तु उणर्न्तेन्–जान-समझ लिया है; ञालत्तु ऒटु–भू के साथ; विण् मुतल् यावैयुम्–आकाश आदि सभी (भूतों) को; नाविन् नक्कुम्–अपनी जीभ से चाट लेनेवाला; काल कनल्–युगान्तकाल की आग; कार् विटम् उण्टु–काला विष खाकर; करुत्ततु–जो काली बनी, वह। ६९४

(फिर उसे लगा कि) यह विष उस हलाहल के समान खाया नहीं जा सकता, जिसको अद्वितीय परमेश्वर ने क्षीरसागर-तट पर आकर उस दिन ले निगल लिया। मैंने जान-बूझ लिया है। यह युगांत अग्नि है, जो भूलोकों के साथ आकाशलोकों को भी चाट ले सकती है और जो विष खाकर काली बन आयी है। ६९४

अम्बु मनलु नुळैयाक्कन वन्द कारत्
तुम्बु मळैहॊण्डय लॊप्परि दाय तुप्पिन्
कॊम्बर् कुरुम्बैक् कुलङ्गॊण्ड्दु तिङ्ग डाङ्गि
वॆम्बुन् दमियेन्मुन् विळक्कनत् तोन्ऱु मन्ऱे 695

अयल् ऒप्पु–कोई दूसरी उपमा; अरितु आय–जिसके लिए कहना कठिन है; तुप्पिन् कॊम्पर् अतु–एक प्रवालवल्लरी; अम्पुम् अनलुम् नुळैया–बाण या अनल प्रविष्ट न हो सके; कन–उतना घना; अन्तकार तुम्पु मळै कॊण्टु–अन्धकारमय मेघ ढोकर; कुरुम्पै कुलम् कॊण्टतु–दो नारियल के कच्चे फलों से युक्त; तिङ्कळ् ताङ्कि–

चन्द्र को धरकर; वॆम्पुम् तमियेऩ् मुऩ्—तप्त मेरे सामने; विळक्कु ऎऩ—दीप के समान; तोऩ्ऱुम्—दिखाई देता है; (अऩ्ऱ—ए)। ६६५

(रावण के सामने देवी का मिथ्या रूप प्रकट होता है।) यह क्या ? एक अनुपम प्रवाललता दिखाई देती है ! उसके सिर पर वाणों और अग्नि से भी अभेद्य और घना मेघ है और उसकी देह पर दो नारियल के कच्चे फल हैं। इनके साथ वह चन्द्र को भी धारण किये हुए अकेले दुःख-पीड़ित मेरे सामने दीप के समान प्रकट हुई है। ६९५

मरुळूडु वन्द मयक्कोमदि मऱ्ऱु मुण्डो
तॆरुळेमि दॆऩ्ऩो दिणिमैयिळैत् तालु मॊव्वा
इरुळूडिरु कुण्डलङ् गॊण्डु मिरुण्ड नीलच्
चुरुळोडुम् वन्दोर् शुडर्मामदि तोऩ्ऱु मऩ्ऱे 696

मरुळ् ऊडु वन्त मयक्को—चित्त-भ्रम से आया मोह; मति मऱ्ऱुम् उण्टो—दूसरा (अनोखा) चन्द्र भी है क्या; इतु ऎऩ्ऩो—यह क्या ही है; तॆरुळेम्—मेरी समझ में नहीं आता; तिणि मै इऴैत्तालुम्—अंजन को ठस भरने पर भी; ऒव्वा—वह इसकी तुलना नहीं कर सकता, ऐसा; इरुळ् ऊटु—अन्धकार-मध्य; इरु कुण्टलम् कॊण्ट—दो (कर्ण-) कुण्डलों से भूषित होकर; इरुण्ट नील चुरुळ् ओटुम्—अन्धकार-सम काले घुंघराले केश के साथ और; चुटर् मा मति तोऩ्ऱुम्—उज्ज्वल श्रेष्ठ चन्द्र दिखाई देता है। ६६६

क्या यह मेरा भ्रमजन्य मोह है ? या सचमुच ऐसा अनोखा चाँद भी तत्त्वतः है ? मैं ठीक-ठीक समझ नहीं पाता। अंजन को ठस भरकर ऐसा बनाने की कोशिश करें तो भी नहीं बन सके, ऐसे अन्धकार के मध्य वह दिखाई देता है। उसके दो कर्णकुण्डल हैं और अन्धकार-सम काला घुंघराला केश है। इस सजधज के साथ एक पूर्णचन्द्र आकर दिखाई देता है। ६९६

पुडैहॊण्डॆऴु कॊङ्गैयु मल्हुलुम् बुल्हि निऱ्कुम्
इडैहण्डिल मल्लदॆल् लावुरु वॆऩ्दॆ रिऩ्दाम्
विडनुङ्गिय कण्णुडै यारिवर् मॆल्ल मॆल्ल
मडमङ्गैय रायॆऩ् मनत्तव रायि ऩारे 697

पुटै कॊण्टु ऎऴु—वक्ष के दोनों पार्श्वों में उठे हुए; कॊङ्कैयुम्—स्तनों और; अल्कुलुम्—कटिप्रदेश से; पुल्लि निऱ्कुम्—लगी रहनेवाली; इटै कण्टिलम्—कमर नहीं देखी; अल्लतु—उसके विना; ऎल्ला उरुवुम्—सारा रूप; तॆरिन्ताम्—(मैंने) देख लिया; विटम् नुङ्किय—विषभक्षक; कण् उटैयार्—आँखों की स्वामिनी; इवर्—यह; मॆल्ल मॆल्ल—धीरे-धीरे; मट मङ्कैयर् आय्—बाला स्त्री बनकर; ऎऩ् मनत्तवर् आयिऩार्—मेरे मन की (वासिनी) हो गईं। ६६७

छाती के दोनों पार्श्वों में उठे रहनेवाले उरोजों को देखता हूँ। नीचे

नितंब देखता हूँ। पर इन दोनों के बीच दोनों से लगी रहनेवाली कमर नहीं देख पाता। धीरे-धीरे उस कटिहीना सुन्दरी का सारा रूप प्रकट हो गया है। विषभक्षक आँखों से भूषित यह बाला स्त्री हैं! वह मेरे मन में आकर बस गयी हैं। ६९७

पण्डे युलहेऴिनु मुळ्ळ पडैक्क णारैक्
कण्डे निदुबोलोरु पॅण्णुरुक् कण्डि लेन्नाल्
उण्डे यॅन्निल्वेऱिन्नि यॅङ्गै युणर्त्ति निन्ऱ
वण्डेरु कोदै मडवारिव राहु मन्ऱे 698

पण्टु ए–पहले ही; उलकु एऴितुम् उळ्ळ–सातों लोकों को; पटै कण्णारै–(भाला, तलवार आदि) हथियार-सी आँखों वालियों को; कण्टेन्–देखा है; इवर् पोल्वतु–इनके समान; ओर् पॅण् उरु–एक स्त्रीरूप; कण्टिलेन्–नहीं देखा है; वेऱु इति उण्टे ॲतिल्–दूसरी अब एक (देखी जाती) है तो; ॲङ्कै उणर्त्ति निन्ऱ–मेरी छोटी वहिन ने जिसका वर्णन किया; वण्टु एऱु कोतै मटवार्–वह भ्रमरवाही केश वाली स्त्री; इवर् आकुम्–यही होगी। ६९८

पहले ही मैंने सातों लोकों की वासिनी, भाला, तलवार आदि हथियारों से तुल्य आँखों से शोभित स्त्रियों को देखा है। पर इनकी-सी सुन्दरता को प्राप्त स्त्री को नहीं देखा है। अब जो ऐसी एक दिखाई देती हैं, तो यह अवश्य वही स्त्री होगी जिस भ्रमरवाही केश से भूषित सुन्दरी का वर्णन मेरी छोटी बहिन शूर्पणखा ने किया था। ६९८

पूण्डिप् पिणिया नुऱुहिन्ऱदु तान्बॉ ऱादाळ्
तेण्डिक् कॉडुवन्दनळ् शॅय्ववॊर् माऱु मुण्डो
काण्डऱ् किनियाळुरुक् कण्डवर् केट्कु माऱ्ऱाल्
ईण्डिप् पॊऴुदेविरैन् दॅङ्गैयैक् कूवु हॅन्ऱान् 699

इ पिणि पूण्टु–यह रोग पाकर; यान् उऱुकिन्ऱतु–जो कष्ट उठा रहा हूँ, उसे; तान् पॊऱाताळ्–खुद न सह सककर; तेण्टि कॊटु वनुतनळ्–ढूँढ़ लाई है; चॅय्वतु ओर् माऱुम् उण्टो–प्रत्युपकार क्या होगा; काण्टऱ्कु इतियाळ्–देखने में मधुर; उरु–इनका रूप; अवळ् कण्टु–वह (शूर्पणखा) देखें; केट्कुम् आऱु आल्–मैं भी पूछकर जान लूँ (कि क्या यह वही है); ईण्टु–यहीं; इ पॊऴुते–अभी; विरैन्तु–शीघ्र जाकर; ॲङ्कैयै–मेरी अनुजा को; कूवुक–बुलाओ; ॲन्ऱान्–कहा। ६९९

(मेरी बहिन भी कितनी अच्छी है!) मेरी वहिन ने मेरी व्यथा देखी और वह सह नहीं सकी। इसलिए वह उसे ढूँढ़ लायी है। उसका क्या प्रत्युपकार करूँ? जो सामने है, इस सुन्दर रूपवती को वह भी देखे और मैं प्रश्न कर ठीक-ठीक जान लूँ। उसने आज्ञा दी कि अभी यहीं मेरी बहिन को शीघ्र बुलाओ। ६९९

ऍन्ऱा नॆन्ऱलुङ् गडिदेहिऩर् कूवु मॆल्लै
वन्ऱा णिरुदक्कुलम् वेरऱ मायत्तल् शॆय्वाळ्
ऒन्ऱाद कामक् कनलुट्टॆऱ लोडु नाशि
पॊन्ऱाळ्हुळै कॊङ्गैहळ् पोक्किनळ् पोय्प्पु हुन्दाळ् 700

ऍन्ऱान्–(रावण ने) कहा; ऍनलुम्–कहते ही; कटितु एकिनर्–शीघ्र गये; कूवुम् ऍल्लै–पुकारने पर; वन् ताळ्–वली, उद्यमी; निरुत कुलम्–राक्षसकुल को; वेर् अऱ–जड़ से काटकर; माय्त्तल् चॆय्वाळ्–मिटाने में तत्पर; ऒन्ऱात–अनुचित; काम कनल्–कामाग्नि के; उळ् तॆऱल् ओटुम्–अन्दर दाहने से; नाचि–नासिका; पॊन् ताळ् कुळै–स्वर्णकुण्डल-धारी कानों और; कॊङ्कैकळ्–स्तनों को; पोक्किनळ्–(जिसने) गँवाया; पोय् पुकुन्ताळ्–(वह शूर्पणखा) जा पहुँची। ७००

रावण का यह कहना था कि किंकरों ने जाकर शूर्पणखा को बुलाया। वह तो पराक्रमी और उद्यमी राक्षसकुल को ही जड़ से काटकर मिटाने के कार्य में तत्पर रही! उसने अपने लिए बिल्कुल अनुचित प्रेम किया और उस कामाग्नि के अन्दर जलाते उसने जाकर अपनी नाक को, स्वर्णकुण्डलभूषित कानों को और स्तनों को कटवा लिया था। ऐसी शूर्पणखा रावण के पास जा पहुँची। ७००

पॊय्न्निन्ऱ नॆञ्जिऱ्कॊडि याळ्बुहुन् दाळै नोक्कि
नॆय्न्निन्ऱ कूर्वाळव नेरुऱ नोक्कि नङ्गै
मैन्निन्ऱ वाट्कण् मयिलिन्ऱॆन वन्दॆन् मुन्नर्
इन्निन्ऱवळा ङ्गॊ लियम्बिय शीदै यॆन्ऱान् 701

नॆय् निन्ऱ कूर् वाळ्–घृत-लगी तीक्ष्ण तलवार-धारी; अवन्–उस (रावण) ने; पॊय् निन्ऱ नॆञ्चिल्–असत्य जिसमें स्थायी रहा, उस मन की; कॊटियाळ्–क्रूरी; पुकुन्ताळै–जो पहुँची, उसको; नेर् उऱ नोक्कि–सामने आया देख; नङ्कै–बाले; इयम्पिय–तुमने (जिसके बारे में) कहा; चीतै–वह सीता; मै निन्ऱ वाळ् कण्–अंजनयुक्त तलवार-सी आँखों को हो; मयिल् निन्ऱतु ऍन–मोर आकर खड़ा हो, ऐसा; ऍन् मुन्नर् वन्तु–मेरे सामने आकर; इ निन्ऱवळ् आम् कॊल्–जो यह खड़ी है, यही है क्या; ऍन्ऱान्–पूछा। ७०१

घी-लगी तलवारधारी रावण ने कपटनिलय मन वाली शूर्पणखा को वहाँ आया देखकर पूछा कि बाले! तुमने किसी सीता के बारे में कहा न? इधर मेरे सामने अंजनभूषित तलवार-सम आँखें लिये, मोर-सी एक स्त्री खड़ी है। देखो और कहो कि क्या यही वह सीता है? । ७०१

शॆन्दामरैक् कण्णॊडुम् जॆङ्गनि वायि नोडुम्
शन्दार्दडन् दोळॊडुन् दाळ्दडक् कैह ळोडुम्
अन्दारह लत्तॊडु मञ्जनक् कुन्ऱमॆन्न
वन्दानिव नाहुमव् वल्वि लिराम नॆन्ऱाळ् 702

चॅम् तामरै कण् ऑटुम्–लाल कमल-सम आँखों के साथ; चॅम् कनि वायिन् ओटुम्–लाल (बिंब-) फल-सम अधरों के साथ; चन्तु आर्–सुन्दरता-भरे; तटम् तोळ् ऑटुम्–विशाल कन्धों के साथ और; ताळ् तट कैकळ् ओटुम्–दीर्घ और विशाल हाथों के साथ; अम् तार् अकलत्तु ओटुम्–सुन्दर हार-शोभित वक्ष के साथ; अञ्चन कुन्ऱम् अन्न–अंजन-पर्वत के समान; वन्तान् इवन्–जो यह आया है; अ वल् विल्–वह कठोर धनुर्धर; इरामन् आकुम्–राम ही है; ऍन्ऱाळ्–बोली। ७०२

(शूर्पणखा तो हमेशा श्रीराम के ध्यान में रहती रही। उसे श्रीराम का रूप ही दिखाई दिया।) उसने कहा कि जो रूप यह दिखाई दे रहा है, वह अंजनगिरि के समान धनु हाथ में लिये आया हुआ राम है। उसके लाल कमल के समान आँखें हैं, लाल बिम्बफल के समान अधर हैं। मनोरम विशाल कंधों और दीर्घ विशाल हस्तों के साथ वह दिखता है, देखो। ७०२

पॅण्बालुरु नान्डिदु कण्डदु पेदै नीयीण्
डॅण्बालु मिलाददो राणुरु वॅन्ऱ दॅन्ने
कण्बालुरु मायै कवऱ्ऱुदल् कऱ्ऱ नम्मै
मण्बालव रेहॉल् विळैप्पवर् मायै यॅन्ऱान् 703

पेतै–मूढ़ स्त्री; नान् कण्टतु इतु–जो मैं देख रहा हूँ, यह; पॅण् पाल् उरु–स्त्री जाति का रूप है; नी–तुम; ईण्टु–यहाँ; ॲण् पालुम् इलाततु–कहीं भी असम्भाव्य; ओर् आण् उरु–एक पुरुष का रूप; ऍन्ऱतु–कहती हो, सो; ऍन्नॆ–क्या है; कण् पाल्–आँखों के सामने ही; उरु मायै–बड़ी माया द्वारा; कवऱ्ऱतल् कऱ्ऱ–(दूसरों को) धोखा देना जो जानते हैं; नम्मै–उन हमको; मण्पालवरे–मर्त्य-मानव; मायै विळैप्पवर् कॉल्–वंचित करनेवाले हैं क्या; ऍन्ऱान्–(आश्चर्य से) पूछा। ७०३

रावण को अचम्भा हुआ। उसने कहा कि हे अबोध नारी! मेरे सामने जो दिखता है, वह तो स्त्री का रूप है। तुम तो असंभाव्य किसी पुरुष की बात कह रही हो! यह क्या बात है? हम मायाकार्य में प्रवीण हैं। हमें भी धोखा दे रहे हैं क्या ये मर्त्यलोक के मानव? । ७०३

ऊन्ऱुमुणर् वप्पुऱ मॊन्ऱिनु मोड लिन्ऱि
आन्ऱुमुळ दायॅण्डि दाशै कनऱ्ऱ निन्ऱायक्
केन्ऱुन्नॅदि रेविऴि नोक्कु मिडङ्ग डोऱुम्
तोन्ऱुमन्न याळिदु तॊन्नॅऱि याहु मॅन्ऱाळ् 704

ऊन्ऱुम् उणर्वु–सुस्थिर भावना; अ पुऱम् ऑन्ऱिनुम्–दूसरी तरफ़ कहीं; ओटल् इन्ऱि–नहीं जाती; आन्ऱुम्–बहुत; उळतु आम्–बनी है; नॅटितु आचै कनऱ्ऱ–गम्भीर काम-राग जलता है, उस स्थिति में; निन्ऱायक्कु–जो स्थित हो उस तुम्हें; उन् ऍतिरे–तुम्हारे सामने; एन्ऱु विऴि नोक्कुम्–तुम्हारी दृष्टि जहाँ गौर करती है, वहाँ; इटङ्कळ् तोऱुम्–उन सभी स्थानों में; अन्नयाळ् तोन्ऱुम्–वही दिखाई देगी; इतु–यह; तॊल् नॅऱितु आकुम्–प्राचीन (मनो-) धर्म ही है; ऍन्ऱाळ्–(शूर्पणखा ने) कहा। ७०४

शूर्पणखा ने समझाया कि भाई तुम्हारी सीता की भावना स्थिर और दृढ़ है। इसलिए तुम्हारी कल्पना दूसरी ओर नहीं जाती। तुम्हारा सीता के प्रति राग तुम्हें जला रहा है और तुम तप्त स्थिति में हो। इस स्थिति में तुम सर्वत्र सीता को ही देखो —यह कोई नई या विचित्र बात नहीं। यह तो प्राचीन और परिचित मनोधर्म ही है। ७०४

अऩ्ऩाळदु कूऱ वरक्कऩु मऩ्ऩ दाह
निऩ्नालव् विरामऩैक् काण्गुरु नीर्रॆ नॆऩ्ड्राऩ्
ऍऩ्ऩाळव नॆऩ्ऩैयित् तीर्वरु मिऩ्ऩल् शॆय्दाऩ्
अऩ्ऩाण्मुदल् यानु मयर्त्तिल नाहु मॆऩ्ड्राळ् 705

अऩ्ऩाळ्–उसके; अतु कूऱ–ऐसा कहने पर; अरक्कऩुम्–राक्षस रावण ने; अऩ्ऩतु आक–वही हो; निऩ्ऩाल्–तुमसे; अ इरामऩै काण्कुऱुम्–उस राम को देखे जाने का; नीर्–गुण; ऍऩ् ऍऩ्ड्राऩ्–कैसा, पूछा; ऍ नाळ–जिस दिन; ऍऩ्ऩै–मुझे; इ तीर्वु अरु–यह प्रत्यवायहीन; इऩ्ऩल् चॆय्ताऩ्–कष्ट दिया; अ नाळ् मुतल्–उस दिन से; यातुम्–मै भी; अयर्त्तिलऩ् आकुम्–भूली नहीं हूँ; ऍऩ्ड्राळ्–कहा। ७०५

यह सफ़ाई सुनकर रावण ने सकारा कि हाँ! वही ठीक हो सकता है। फिर पूछा कि तुम राम को ही देख रही हो, इसका रहस्य क्या है? शूर्पणखा ने यह सुनकर चातुर्य से उत्तर दिया। भाई यह क्या पूछते हो? जिस दिन राम ने यह प्रत्यवायहीन कष्ट दिया उस दिन से मैं उसे कहाँ भूल सकी हूँ? नहीं भूल पायी हूँ। ७०५

आमाम दडुक्कुमॆ ऩाक्कैयो डावि नैय
वेमाल्विऩै येऱ्किऩि यॆऩ्विडि वाहु मॆऩ्नक्
कोमाऩुल हुक्कोरु नीकुऱै हिऩ्ऱु दॆऩ्ऩे
पूमाण्गुळ लाडनै वव्वुदि पोदि यॆऩ्ड्राळ् 706

आम् आम्–हाँ, हाँ; अतु अटुक्कुम्–वह सम्भव ही है; ऍऩ् आक्कै ओटु–मेरे शरीर के साथ; आवि नैय–प्राण छीजते हैं; वेम् आल्–जलते हैं; आल्–इसलिए; विऩैयेऱ्कु–कामकार्य-तप्त मुझे; इऩि विटिवु ऍऩ्ऩ आकुम्–अब निस्सरण क्या है; ऍऩ्ऩ–पूछने पर; नी उलकुक्कु ओरु कोमाऩ्–तुम भुवनपति हो; कुऱैकिऩ्ऱतु ऍऩ्ऩे–अपने को हीन क्यों मानते हो; पू माण् कुळलाळै–पुष्पालंकृत सुकेशिनी को; वव्वुति–हर लाओ; पोति–जाओ; ऍऩ्ड्राळ्–कहा। ७०६

रावण ने उत्तर में कहा कि ओफ़ ओह! हाँ, हाँ वह सम्भव बात ही है। पर देखो। मेरा शरीर दुर्बल हो रहा है; मेरे प्राण विगलित हो रहे हैं। शरीर और प्राण जल रहे हैं। कामेच्छा अपना निर्मम कार्य कर रही है। उसके वश होकर मैं बहुत कष्ट उठा रहा हूँ! अब उससे छूटना कैसे हो? शूर्पणखा ने उसे धीरज दिया। भाई! तुम भुवनपति हो।

फिर क्यों ऐसी हीनता का अनुभव करते हो ! जाकर पुष्पालंकृत सुकेशिनी सीता को हर लाओ। अभी जाओ ! उसने भाई को उकसाया। ७०६

ॲन्ऱा ळहन्ऱाळ वरक्कनु मीड ऴिन्दान्
ऑन्ऱानु मुणर्न्दिल नावि युलैन्दु शोर्न्दान्
निन्ऱारु नडुङ्गिनर् निन्ऱुळ नाळि नाले
पॉन्ऱादुळ नायिन नत्तनै पोलु मन्ऱे 707

ॲन्ऱाळ्–कहकर; अकन्ऱाळ्–शूर्पणखा चली; अ अरक्कनुम्–वह राक्षस भी; ईटु अऴिन्तान्–अधीर हुआ; ऑन्ऱानुम् उणर्न्तिलन्–कोई सुध नहीं रही; आवि उलैन्तु–प्राणविह्वल होकर; चोर्न्तात्–थक गया; निन्ऱारुम् नटुङ्कितर्–(वहाँ जो) खड़े (थे) वे भी (भय से) काँपे; निन्ऱ उळ नाळिताल् ए–आयु शेष रही इसलिए; पॉन्ऱातु–विना मरे; उळन् आयितन्–जीवंत रहा; अ तुणै पोलुम्–वही कारण था; (अन्ऱु–ए)। ७०७

यह कहकर शूर्पणखा चली गयी। राक्षस संकट सह नहीं सका। अधीर हो गया। सुध-बुध खोयी और उसके प्राण सूखने लगे। पास जो थे वे भी उसकी स्थिति देखकर डर गये। रावण की आयु शेष थी। इसलिए वह मरा नहीं; जीवित रहा। वही कारण था ! नहीं तो आसार आशादायी नहीं लगते थे। ७०७

इऱन्दार् पिऱन्दारॅन विन्नुयिर् पॅऱ्ऱ मन्नन्
मऱन्दा नुणर्न्दानवण् माडुनिन् ऱार्रै नोक्किक्
कऱन्दा लॅननीर्दरु शन्दिर कान्तत् तालोर्
शिऱन्दार् मणिमण्डबञ् जॅयॅन्ऱॅनच् चॅप्पु हॅन्ऱान् 708

इऱन्तार् पिऱन्तार् ॲन–मृतक फिर जीवित हो आया जैसे; इन् उयिर् पॅऱ्ऱ मन्नन्–प्यारे प्राणों को फिर से पाकर राक्षसराज; मऱन्तान् उणर्न्तान्–सुध-बुध जो खोई थी, उसे फिर पाकर; अवण् माटु निन्ऱारै नोक्कि–वहाँ पास जो खड़े रहे उनको देखकर; करन्ताल् ॲन्–दुहने पर जैसे; नीर् तरु–जल बहानेवाला; चन्तिर कान्तत्ताल्–चन्द्रकान्त मणि से; ओर्–एक; चिऱन्तु आर्–श्रेष्ठ वने; मणि मण्टपम्–सुन्दर मण्डप को; चॅय्क ॲन–निर्मित करो, ऐसी; चॅप्पुक अन्ऱान्–(आज्ञा) सुनाओ, कहा। ७०८

कुछ देर के बाद रावण होश में आया। तव यही लगा कि मृतक ही जी उठा हो। राक्षसराज अब तक भूला-सा रहा। फिर से स्मरण आ गया। उसने अपने पास जो रहे उनसे कहा कि चन्द्रकान्त-शिलाओं का एक रत्नमण्डप वना लेने को कहो। उन शिलाओं से ऐसा शीतल जल निकलता रहे— मानो कोई उन्हें दुह रहा हो। ७०८

वन्दा तॅंडुवानुऱै तच्चन् मनत्तु णर्न्दान्
शिन्दा विनैयन्ऱियुङ् गैविनै यालुञ् जॅय्दान्

अन्दाम नॅडुन्दऱि यायिरत् ताल मैन्द
शन्दार् मणिमण्डबन् दामरै योनु नाण 709

नॅट्टु वान् उऱै–विस्तृत आकाशलोक का वासी; तच्चन–(विश्वकर्मा नाम का) शिल्पी; वन्तान्–वहाँ आया; मनत्तु उणर्न्तान्–मन में समझा; अम् तामम्–सुन्दर और; नॅट्टुम् तऱि आयिरत्ताल्–ऊँचे हज़ार खम्भों के साथ; अमैन्त–निर्मित; चन्तु आर् मणि मण्टपम्–सौन्दर्य-भरा रत्नमय मण्डप; तामरैयोनुम् नाण–कमलासन को भी शरम से भरते हुए; चिन्ता वित्तै अन्ऱियुम्–परिकल्पना के साथ; कै वित्तैयालुम्–हस्त-कौशल द्वारा भी; चॅय्तान्–रचा। ७०९

विस्तृत आकाशलोक का शिल्पी विश्वकर्मा आया। उसने रावण की इच्छा ध्यान से जान ली। एक सहस्र खम्भों के साथ उसने एक बड़ा मनोरम मण्डप निर्मित किया। ऐसा मण्डप बनाया कि सृष्टि-कर्म में अद्वितीय ब्रह्मा भी देखकर अपनी हीनता पर शरम खाये! उसमें उसकी भावना, कल्पना आदि का भी विशेष सामर्थ्य प्रकट होता था, बल्कि उसके हस्तकौशल की भी झाँकी मिलती थी। ७०९

कान्दम् ममुदिन्ऩुळि काल्वन काल मीनिन्
वेन्दन् नॉळियन्ऱियु मेलॊडु कीऴ्वि रित्तान्
पून्दॅन्ऱल् पुहुन्दुऱै शाळर मुम्बु तैन्दान्
एन्दुम् मणिक्कऱ्पहच् चोदळक् कावि ळैत्तान् 710

काल मीनिन् वेन्तन्–कालदर्शी नक्षत्रों के राजा; ऑळि अन्ऱियुम्–(चन्द्र की) ज्योति के बिना भी; अमुतिन् तुळि काल्वन–अमृत की बूँदें निकालनेवाले; कान्तम्–चन्द्रकान्त पत्थरों को; मेल् ओट्टु कीऴ् विरित्तान्–ऊपर-नीचे सर्वत्र बिछाया; पूम् तॅन्ऱल्–मधुर (पुष्पगन्ध-युक्त) मलयपवन; पुकुन्तु उऱै–प्रवेश कर रहे, इस निमित्त; चाळरमुम् पुतैन्तान्–गवाक्ष भी बनाये; मणि एन्तुम्–(फूल-फलों के रूप में) रत्नधारी; कऱ्पक चोतळ का–कल्पक तरुओं का शीतल उद्यान; अमैत्तान्–निर्मित किया। ७१०

उसने उस मण्डप में ऊपर और नीचे सर्वत्र ऐसे चन्द्रकान्त के पत्थर जड़े जिनसे कालदर्शी, नक्षत्रों के राजा चन्द्र के स्पर्श के बिना भी जल स्रव सकता था। फिर मण्डप में गवाक्ष निर्मित किये, जिनसे मधुर पुष्पगन्धवाही मलयपवन अन्दर आकर ठहर सके। फिर उसके चारों ओर एक कल्प-तरुओं का शीतल उद्यान बनाया जिनके फल, फूल आदि रत्नमय थे। ७१०

आणिक्कमै पॉऱ्ऱट्टिन् मणिच्चुड रार्वि ळक्कम्
शेणुऱ् ऱिरुळशीप्पन दॅय्व मडन्दै मार्हळ्
पूणिऱ् पॊलिवार्बुडै येन्दिडैप् पॊङ्गु तोळान्
माणिक्क मानत्तिडै मण्डबङ् गाण वन्दान् 711

आणिक्कु अमै–प्रामाणिक सोने (की कील) से समता रखनेवाले; पॊन् तट्टिन्–

स्वर्ण की बनी थालियों में; मणि चुटर् आर् विळक्कम्–सुन्दर रत्नप्रकाशमय दीप; चेण् उऱ्ऱु इरुळ् चीप्पत्त–जो दूर तक जाकर अन्धकार मिटानेवाले थे; पूणिल् पॉलिवार्–आभरणों से शोभित; तॅय्व मटन्लै मार्कळ्–सुरस्त्रियाँ; पुटै एन्तिट–पार्श्व में ले आयीं; पॉङ्कु तोळान्–उन्नत भुजा वाला; माणिक्क विमानत्तु इटै–माणिक्य-वाहन पर; मण्टपम् काण वन्तान्–मण्डप देखने आया। ७११

रावण उस मण्डप को देखने आया। वह माणिक्यजड़ित एक यान पर आया। पुष्ट और उन्नत कन्धों से युक्त उसके साथ अनेक सहस्र कोटि देवांगनाएँ हाथ में स्वर्णथालियों में दीप लिये आयीं। थालियों का स्वर्ण बहुत ही उच्च कोटि का था। उसका खरापन उसके लिए नियत प्रामाणिक सोने की कील से परखा जाता तो शुद्ध निकलता। दीपों की ज़्वालाएँ रत्न ही थीं। उनमें से जो प्रकाश निकलता था वह दूर-दूर तक जाकर अन्धकार को मिटाता था। वे देवांगनाएँ बहुत मनोरम भूषणों से भूषित थीं। ७११

अल्लायिर कोडि यडुक्किय दॉत्त दैनुम्
नल्लार् मुहमाम् नळिर्वानिल विन्ऱि नामप्
पल्लायिर कोडि पनिच्चुड रीन्ऱ तिङ्गळ्
ऍल्ला मुडना विरुळोडि यिरिन्द दन्ऱे 712

नळिर् वान् निलवु इन्ऱि–शीतल आकाश में चाँद नहीं रहा, तो भी; अल् आयिर कोटि–रातें हज़ारों की संख्या में; अटुक्कियतु ऑत्ततेनुम्–एक के ऊपर एक रखी गयी हों, जैसे रहने पर भी; नल्लार् मुकम् आम्–उन सुन्दरियों के मुख रूपी; नाम–श्लाघनीय; पल् आयिर कोटि–अनेक सहस्र कोटि; पनि चुटर् ईन्ऱ–शीतल प्रकाशमय; तिङ्कळ् ऍल्लाम्–चन्द्र सभी; उटना–साथ आने से; इरुळ्–अन्धकार; ओटि–भागकर; इरिन्ततु–हट गया। ७१२

उनके मुख चन्द्र-सम उज्ज्वल थे। अनेक रातों का सम्मिलित अन्धकार हो तो भी बहुत मानार्ह अनेक सहस्र शीतल प्रकाशदायी मुख रूपी चन्द्र साथ आये, इसलिए चाँद के विना भी वह अन्धकार दूर हो गया था। ७१२

पॉऱ्पुऱ्ऱन मामणि यॉन्बदुम् बूवि निन्ऱ
कऱ्पत्तरु विन्गदिर् नाणिळर् कऱ्ऱै नाऱ
अऱ्पऱ्ऱळि यप्पह लाक्किय दाल रुक्कन्
निऱ्पत्तॅरिक् किन्ऱतु नीळ्शुडर् नीर्मै यन्ऱो 713

पॉऱ्पु उऱ्ऱन–मनोहारिता से युक्त; मा मणि ऑन्पतुम्–श्रेष्ठ नवरत्न; पूविन्–फूल बने; निन्ऱ–ऐसे स्थित; कऱ्प तरुविन्–कल्पतरुओं की; कतिर्–कान्ति-किरणें; नाळ् निळल् कऱ्ऱै–दिन के-से प्रकाश की रेखाओं के समान; नाऱ–निकल

रही थीं; अल् पट्ट अऴिय–रात का सम्बन्ध मिट गया; पकल् आक्कियताल्–दिन-सा बनाने से; अरुक्कन् निऱ्प–सूर्य के (दूर) रहने पर भी; नीळ् चुटर् तॅरिक्किन्ऱतु–लम्बी प्रकाश-रेखाएँ निकालना; नीर्मै अन्ऱो–(कल्पतरुओं का) गुण है न। ७१३

उस उद्यान के कल्पतरु भी आसाधारण थे। उनके फल बहुत ही छटापूर्ण नवरत्न थे। उनसे जो प्रकाश छूटता था उससे दिन-सा प्रकाश होता था। बिना सूर्य के ही उजाला देना कल्पतरु का गुण था न? । ७१३

ऊऱोशै मुदऱ्पॊऱि यावैयु मॊन्ऱि नॊन्ऱ
तेऱानिलै युऱ्ऱदोर् शिन्दैयन् शॅय्है योरान्
वेऱाय पिऱ्प्पिडै वेट्कै विशित्त दीर्प्प
माऱोरुडल् पुक्कॅन मण्डवम् वन्दु पुक्कान् 714

ऊऱु–स्पर्शेन्द्रिय; ओचै–श्रवणेन्द्रिय; मुतला–आदि; पॊऱि यावैयुम्–इन्द्रिय सब; ऑन्ऱिऩ् ऑन्ऱु–एक सा एक; तेऱा–सतर्क नहीं रही; निलै–ऐसी स्थिति में; उऱ्ऱतु–पड़ा; ओर् चिन्तैयन्–मन वाला; चॅय्कै ओरान्–क्या करना, यह न जानकर; वेट्कै विचित्तु–राग ने उसको बाँधकर; अतुईर्प्प–खींचा; माऱु ओर् उटल् पुक्कतु ॲन्न–दूसरे एक शरीर में प्रविष्ट हुआ हो ऐसा; मण्टपम् वन्तु पुक्कान्–मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

रावण की दशा दयनीय थी। उसकी स्पर्श, शब्द आदि परखनेवाली कोई भी इन्द्रिय सतर्क नहीं थी। एक से एक बढ़कर सब इन्द्रियाँ निष्क्रिय हो गयी थीं। मन भी जड़वत हो गया। क्या करना है, यह भी निश्चय कर नहीं पाया। उधर सीता के प्रति राग उसे बलात् खींच रहा था। उससे वह मानो दूसरे शरीर में प्रवेश कर रहा हो, इस विचित्र भावना के साथ मण्डप में आ पहुँचा। ७१४

तण्डलिल् तवज्जॅय् वोर्हळ् वेण्डिन दायिन् नल्हुम्
मण्डल महर वेलै यमुदॊडुम् वन्द दॆन्नप्
पण्डरुज् जुरुम्बु शेरुम् पशुमर मुयिर्त्त पैम्बॊन्
तण्डळिर् मलरिऱ् चॅय्द शीदळच् चेक्कै शार्न्दान् 715

तण्टल् इल्–निर्बाध रूप से; तवम् चॅय्वोर्कळ्–तपस्या करते रहनेवाले; वेण्टिऩ–जो माँगते है उन्हें; तायिन् नल्कुम्–माता के समान देगा; मकर मण्टल वेलै–मण्डलाकार मकरालय (क्षीरसागर); अमुतु ओटुम्–अमृत के साथ; वन्तततु ॲन्न–आया हो जैसे; पण् तरु–संगीत-सम गुंजारशील; चरुम्पु चेरुम्–भ्रमरों से आवृत; पचु मरम्–हरे पेड़ों से; उयिर्त्त–निकले; पैम् पॊन् तण् तळिर्–ताजे स्वर्णवर्ण शीतल पल्लव; मलरिल्–और फूलों से; चॅय्त–बनी; चीतळ चेक्कै–शीतल शय्या पर; चार्न्तान्–पहुँचा। ७१५

उसमें एक पुष्पशय्या थी जो क्षीरसागर अमृत के साथ आया हो ऐसा लगती थी। क्षीरसागर तपस्वियों को उनकी याचित वस्तुओं को माता के

समान दे सकता था। यह शय्या भी वैसी थी क्योंकि कल्पतरु के ताजे स्वर्णवर्ण पल्लव और मनोरम फूल उस पर बिछे हुए थे। उस पर सुरम्य संगीत-सा गुंजार करते हुए भ्रमर मँड़रा रहे थे। रावण उस शीतल शय्या पर आया। ७१५

नेरिळै महळिर् कून्द लिऱैनऱै वाश नीन्दि
वेरियज् जरळच् चोलै वेनिलान् विरुन्दु शॅय्य
आऱ्हलि यळुवन् दन्द वमिळ्देन्न वॊरुव रावि
तीरिनु मुदवर् कॊत्त तॆन्ऱल्वन् दिऱुत्त दन्ऱे 716

ऑरुवर् आवि तीरिनुम्–एक के प्राणों के जाने की स्थिति में रहे, तो भी; उतवऱ्कु ऑत्त–प्राण रोकने में सहायता जो दे सकता था उस; आऱ्कलि अळुवम् तन्त–(क्षीर-) सागर की गहराई से प्राप्त; अमिळ्तु अॅन्न–अमृत के समान; तॆन्ऱल्–दक्षिणी (मलय-) पवन; इळै मकळिर् कून्तल्–आभरणालंकृता स्त्रियों के केश पर की; निऱै नऱै वाचम्–भरी शहद-युक्त सुगन्ध; नीन्ति–तैरकर; वेरि अम् चरळम् चोलै–शहदयुक्त, सुन्दर देवदार तरुओं के उपवन में; वेनिलान्–वसन्तकाल का राजा, मन्मथ के; विरुन्तु चॅय्य–स्वागत करते; वन्तु इऱुत्ततु–आ पहुँचा। ७१६

क्षीरसागर की गहराई से प्राप्त अमृत मरणोन्मुख मनुष्य को जिला कर उसकी सहायता कर सकता है। मलयपवन उसी अमृत के समान वहाँ संचार कर रहा था। वह आभूषणभूषिता सुन्दरियों के केशों के शहद-भरे फूलों की सुगन्धि में घुसकर बाहर आया हुआ था। शीतल देवदार तरुओं से भरे उस उद्यान में वसन्त का राजा मन्मथ उसका स्वागत कर रहा था। इस रीति से वह मलयपवन वहाँ आया। ७१६

शाळरत् तूडु वन्दु तवळ्दलुन् दरित्त ऱेऱ्ऱान्
नीळरत् तङ्गळ् शिन्द नॆरुप्पुह नोक्कु नीरान्
वाळ्मनैप् पुहुन्द दाण्डोर् माशुणम् वरक्कण् डन्न
कोळुऱक् कॊदित्तु विम्मि युळैयरैक् कूविच् चॊन्नान् 717

चाळरत्तु ऊटु वन्तु–खिड़कियों से होकर आया; तवळ्तलुम्–और मन्द-मन्द बहा; तरित्तल् तेऱ्ऱान्–तब असहनीय वेदना के साथ; नीळ् अरत्तङ्कळ् चिन्त–लम्बी रक्त-धाराएँ बहाते हुए; नॆरुप्पु उक नोक्कुम्–आग निकालते हुए देखने का; नीरान्–स्वभाव वाला; वाळ् मनै पुकुन्ततु–वास के घर में घुसा; ओर् माचुणम्–एक सर्प; आण्टु वर–वहाँ आया; कण्टु अन्न–देखा-सा; कोळ् उऱ कॊतित्तु–संकट पाकर उबला; विम्मि–सिसकते हुए; उळैयरै–समीपस्थ लोगों को; कूवि–पुकार कर; चॊन्नान्–बोला। ७१७

वह मलयपवन खिड़कियों के रास्ते से अन्दर आया। पर रावण उसे सह नहीं सका। उसकी आँखों से रक्त की बूँदें ढलक आयीं। अगार भी प्रकट हुए। वह कोप, दुःख दोनों से प्रभावित था। उसने उस मलयपवन

को वासस्थान के घर में घुस आये सर्प के रूप में देखा। उससे कष्ट हुआ और उस पर गुस्सा भी। वह उबल पड़ा। सिसकने भी लगा। समीपस्थ भृत्यों को पास बुलाकर उसने (निम्न बातें) कहीं। ७१७

कूवलि नुयिर्त्त शिऩ्ऩी रुलहिनैक् कुप्पुरु ऍऩ्नत्
तेवरि ऩॊरुव ऩॆऩ्नै यिऩ्नलुम् जॆयत्तक् काऩो
एवलि नऩ्ऱि वन्दिङ् गिव्वऴ लॆय्दिऱ् ऱॆऩ्नाक्
कावलि नुऴैयर् तम्मैक् , कॊणरुदिर् कडिदि ऩॆऩ्ऱाऩ् 718

कूवलिऩ् उयिर्त्त–(छोटे से) कुएँ में से छनकर निकला; चिल् नीर्–थोड़ा जल; उलकिनै–संसार भर को; कुप्पुरुऱ ऍऩ्ऩ–डुबो रहा हो जैसा; तेवरिऩ् ऒरुवऩ्–देवों में एक; ऍऩ्ऩै–मुझे; इऩ्ऩलुम् चॆय तक्काऩो–संकट दे सका क्या; इ अऴल्–यह आग; एवल् इऩ्ऱि–विना अनुमति के; इङ्कु वन्तु ऍय्तिऱ्ऱु–यहाँ आ पहुँची है; ऍऩ्ऱु–कहकर; कावलिऩ् उऴैयर् तम्मै–पहरेदारों को; कटिलिऩ् कॊणरुतिर्–जल्दी लाओ; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ७१८

कूप का रिसता जल क्या संसार भर को डुबो सकेगा ? वैसा देवों में एक यह मुझे इतना कष्ट दे सकता है क्या ? यह अग्निदेव मेरी आज्ञा के विना आया कैसे ? बुलाओ पहरेदारों को। ७१८

अव्वऴि युऴैय रोडि याण्डवर्क् कॊणर्द लोडुम्
वॆव्वऴि यमैन्द शॆङ्गण् वॆरुवुऱ नोक्कि वॆय्योऩ्
शॆव्वऴि दॆऩ्ऱ लाऱ्कुत् तिरुत्तिनीर् नीर्हॊ लॆऩ्ऩ
इव्वऴि यिरुन्द वालैत् तडैयवर्क् किल्लै यॆऩ्ऱार् 719

अ वऴि–तब; उऴैयर्–पास जो रहे, वे; ओटि–दौड़े; आण्टु–वही; अवर् कॊणर्तल् ओटुम्–उनको (बुला) लाये, तब; वॆय्योऩ्–आततायी राक्षस ने; वॆम् वऴि अमैन्त–क्रूर बनी; चॆम् कण्–लाल आँखों से; वॆरुवु उऱ–भयभीत करते हुए; नोक्कि–देखकर; नीर् कॊल्–तुम्हीं ने तो; तॆऩ्ऱलाऱ्कु–मलयपवन को; चॆल् वऴि तिरुत्तिनीर्–जाने का मार्ग दिखाया; ऍऩ्ऩ–पूछा, तो; इ वऴि इरुन्त कालै–यह (खिड़कियों का) मार्ग जब रहता तब; अवर्कु तटै इल्लै–उनको रोक नहीं; ऍऩ्ऱार्–कहा। ७१९

समीप जो रहे वे भृत्य दौड़े। उन्होंने पहरेदारों को बुलाया और वे आये। निर्मम रावण क्रूर आँखों से उनको भयभीत करते हुए तरेरा और पूछा कि मलयपवन को अन्दर आने का सीधा मार्ग तुम्हीं ने बना दिया न ? तब उन्होंने उत्तर दिया कि जब खिड़कियाँ है, तब उसको आने से कौन रोक सकता है ? कोई बाधा नहीं होगी। ७१९

वेण्डिय दुणर्न्दु शॆय्वाऩ् विण्णवर् वरुव रॆऩ्ऱाल्
माण्डदु पोलुङ् गॊऴ्है यात्तुडै वऩ्मै वल्लै

तेण्डिन्नीर् तिशैह डोरुज् जेणुर् विशैयिर् चॅल्हुर्
रीण्डिवन् रुन्नैप् पर्रि थिरुज्जिरै यिडुदि रॅन्ड्रान् 720

वेण्टियतु उणर्न्तु चॅय्वान्–मैं जो चाहूँ वही करने के लिए; विण्णवर् वरुवर् ऍन्ड्राल्–सुरलोकवासी आते हैं, तो; यान्टै कोंळ्कै वन्मै–मेरे (शासन-) सिद्धान्त का बल; माण्टतु पोलुम्–मिट गया शायद; वल्लै–शीघ्र; नीर् तिचैकळ् तोरुम्–तुम दिशा-दिशा में; तेण्टि–खोजकर; चेण् उर–बहुत दूर; विचैयिल् चॅल्कुरुरु–तेज जाकर; इवन् तन्नै–इसको; पर्रि–पकड़कर; ईण्टु–यहाँ; इरुम् चिरै–बड़े कारागृह में; इट्टुतिर्–डाल दो; ऍन्ड्रान्–यह हुक्म दिया। ७२०

रावण को आश्चर्य हुआ। देवता हैं तो मेरी इच्छा के अनुसार सेवा करने के लिए। आज बात विपरीत चली है। क्या मेरा शासन अपना अधिकार-बल खो गया है? दौड़ो। दिशा-दिशा में भागो और इस पवनदेव को पकड़ो और भयंकर कारागृह में डाल दो। ७२०

कार्रिनोन् रन्नै वाळा मुनिदलिर् कण्ड दिल्लै
कूर्रुम्वन् दॅन्नै यिन्ने कुरुहुमार् कुरित्त वार्राल्
वेर्ररुङ् गरुङ्गट् चीदै मॅय्यरुळ् पुनैये नॅन्ड्राल्
आर्रला लडुत्त दॅण्णुममैच्चरैक् कॊणर्दि रॅन्ड्रान् 721

कार्रिनोन् तन्नै–पवन पर; वाळा मुनितलिल्–अकारण कोप करने से; कण्टतु इल्लै–कोई लाभ नहीं देखते; कुरित्त आर्राल्–अपनी इच्छा के अनुसार; वेल् तरुम्–भाला-तुल्य; करुन् कण्–असितेक्षणा; चीतै–सीता की; मॅय् अरुळ्–सच्ची कृपा का; पुनैयेन ऍन्ड्राल्–धारक नहीं बनूँ तो; कूर्रुम् वन्तु–यम भी आकर; ऍन्नै–मुझे; इन्ने कुरुकुम्–अभी पा लेगा; आल्–इसलिए; अटुत्ततु–आगे जो करना है; आर्रलाल् ऍण्णुम्–बुद्धि-बल से सोचनेवाले; अमैच्चरै–मन्त्रियों को; कॊणर्तिर्–लाओ; ऍन्ड्रान्–कहा। ७२१

रावण ने फिर भी सोचा कि वायुदेव पर बेकार क्रोध दिखाने से क्या लाभ? कुछ नहीं देखता। अगर अपनी इच्छा के अनुसार सीताजी की कृपा पा नहीं सकूँगा तो यम भी मुझे मारने के लिए आ पहुँचेगा। इसलिए जो आगे की करनी के बारे में, अपनी बुद्धि के बल पर सोचकर मार्ग बता सकते है वे हमारे मन्त्री ही हैं। इसलिए चलकर उनको बुला लाओ। उसने भृत्यों को आज्ञा दी। ७२१

एवित्त शिलत रोडि येयॆनु मळवि लॆङ्गुम्
कूविनर् कूव लोडुङ् गुरुहिन्नर् कॊडित्तिण् डेर्मेल्
माविनिर् चिविहै तम्मेन् मळैमदक् कळिर्रिन् मीदिल्
तेवरुम् वानन् दन्निर् रिशैदोरुज् जिन्दै शिन्द 722

एवित्त चिलतर् ओटि–आज्ञापित भृत्य दौड़े और; एय् ऍनुम् अळविल्–'रे' कहने

के समय के अन्दर; अँङ्कुम् कूवित्तर्–सर्वत्र पुकारा; कूवलोट्टुम्–पुकारने पर; तेवरुम्–देव भी; वान्तम् तत्त्तिल्–आकाश में; तिचै तोरुम्–दिशा-दिशा में; चिन्तै चिन्त–चिन्ताग्रस्त हो रहे और; कॉटि तिण् तेर् मेल्–ध्वजासहित सुदृढ़ रथों पर; मावित्तिल्–अश्वों पर; चिविकै तम्मेल्–शिविकाओं पर; मळै मत कळिऱ्ऱिन् मीतिल्–मेघवर्ण मत्तगजों पर; कुऱुकित्तर्–(वे मन्त्री) रावण के पास आये। ७२२

तुरन्त कुछ भृत्य दौड़े। 'रे' कहने की जितनी देर में सब जगह दौड़कर उन्होंने टेर लगायी। तो मन्त्री लोग आये। कुछ एक मन्त्री ध्वजामण्डित रथों पर आये। कुछ घोड़ों पर और कुछ पालकियों में आये। कुछ मेघसदृश मत्तगजों पर सवार हो आये। तब देव सब आकाश में एकत्र हो गये और वे बहुत ही चिंतित दिखाई दिये। ७२२

वन्दमन् दिरिह ळोडु माशऱ मन्तति नॅण्णिच्
शिन्दैयि निन्नैन्द शॅय्युञ् जॅय्हैयन् ऱॅळिवि नॅञ्जन्
अन्दरञ् जॅल्व दाण्डोर् विमानत्ति न्नारु मिन्ऱि
इन्दिय मडक्कि निन्ऱ मारीश निरुक्कै शेर्न्दान् 723

वन्त मन्तिरिकळोटु–आगत मन्त्रियों-सह; माचु अऱ मन्तत्तिन् ऍण्णि–दोषरहित रीति से मन में सोचकर; चिन्तैयिल् नित्तैन्त–चित्त में सोचा हुआ; चॅय्युम् चॅय्कैयन्–करने में समर्थ; तॅळिविन् नॅञ्चन्–सुलझा हुआ विचारक; आण्टु–तब; अन्तरम् चॅल्वतु–आकाशचारी; ओर् विमानत्तिन्–एक (पुष्पक-) यान पर; आरुम् इन्ऱि–विना किसी को साथ लिये (अकेले); इन्तियम् अटक्कि निन्ऱ–इन्द्रिय-दमन जो किये रहा; मारीचन् इरुक्कै चेर्न्तान्–मारीच के यहाँ जा पहुँचा। ७२३

मन्त्री आये। मंत्रणा हुई। कोई त्रुटि न रहे, ऐसा उपाय सोचा गया। रावण दृढ़संकल्प था, कार्यचतुर था। वह आकाशचारी एक यान पर चढ़ा और मारीच के पास आया, जो इन्द्रियों का दमन करके तपस्या करता था। ७२३

8. मारीशन् वदैप् पडलम् (मारीच-वध पटल)

इरुन्दमा रीश नन्द विरावण नॅय्द लोडुम्
पॊरुन्दिय पयत्तिन् शिन्दै पॊरुमुऱ्ऱु वॅरुवु हिन्ऱान्
करुन्दड मलैयनानै यॅदिर्हॊण्डु कडन्गळ् यावुम्
तिरुन्दिय शॅय्दु शॅव्वित् तिरुमुहम् नोक्किच् चॅप्पुम् 724

इरुन्त मारीचन्–(तपोरत जो) रहा, वह मारीच; अन्त इरावणन् ऍय्तल् ओटुम्–उस रावण के आते ही; पॊरुन्तिय–उत्पन्न; पयत्तिन्–भय के कारण; चिन्तै पॊरुमुऱ्ऱु–व्यग्र-मन होकर; वॅरुवुकिन्ऱान्–डरते-डरते; करुम् तटम् मलै अन्नानै–काले बड़े पर्वत के समान उसको; ऍतिर् कॊण्टु–स्वागत करके; कटन्कळ् यावुम्–कर्तव्य सब; तिरुन्तिय चॅय्तु–उचित रूप से करके; चॅव्वि तिरुमुकम् नोक्कि–दर्शनीय उसका मुख देखकर; चॅप्पुम्–(यों) बोला। ७२४

तपोरत मारीच ने रावण को देखा। जब रावण आया तो उसे बड़ा भय हो गया। भय के कारण चित्त व्याकुल हो गया। उसने बड़े काले पर्वत-सम रावण की अगवानी की। फिर अतिथि-सत्कार उचित रीति से किये। बाद उसके दर्शनीय मुख को देखकर वह बोला। ७२४

शन्द मलर्त्तण् कऱ्पह नीळऱ् ऱलैवर्क्कुम्
अन्दह तुक्कु मञ्ज वडुक्कु मरशाळ्वाय्
इन्द वनत्तॆन् तिऩ्न लिरुक्कै यॆळियोरिन्
वन्द करुत्तॆन् शॊल्लुदि यॆन्ऱान् मरुळ्हिन्ऱान् 725

मरुळ्किन्ऱान्–भ्रमित; चन्तम् मलर्–सुन्दर फूलदार; तण् कऱ्पक नीळल्–शीतल कल्पतरु की छाया में रहकर शासन करनेवाले; तलैवर्कुम्–देवेन्द्र को; अन्तकन्नुक्कुम्–यम को भी; अञ्च अट्टुक्कुम्–भयभीत होने देते हुए शासन करते हुए; अरचु आळ्वाय्–राज्यपालन करनेवाले; इन्त–इस; वनत्तुतु–वन में; ऍन् इन्नल् इरुक्कै–मेरे संकट-दायक वासस्थान में; ऍळियारिन्–दीन के समान; वन्त करुत्तु–आने का अर्थ; ऍन्–क्या है; चॊल्लुति–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ७२५

मारीच के मन में संशयजनित भ्रम था। देवेन्द्र मनोरम शीतल कल्पतरु की छाया में सुख से रहकर आकाशलोक का शासन करता है। यम है। उनको भी भयभीत करते हुए शासन करनेवाले राजा! तुम इस वन में मेरे तुच्छ और कष्टदायी वासस्थान में दीन मनुष्य के समान आये हो! इसका क्या अर्थ है? बताओ। —मारीच ने जानना चाहा। ७२५

आन दनैत्तु मावि तरित्ते नयर्हिन्ऱेन्
पोनदु पॊऱ्पु मेन्मैयु मऱ्ऱॆन् पुहळोडुम्
यान दुनक्किन् ऱॆङ्ङ नुरैक्के निनियॆन्ना
वान वरुक्कु नाण वडुक्कुम् वशैमन्नो 726

आनतु अनैत्तुम्–आने के (सभी) कष्ट आ गये; आवि तरित्तेन्–(किसी तरह) प्राण धारण कर रहा हूँ; अयर्किन्ऱेन्–थक गया हूँ; ऍन् पॊऱ्पुम् मेन्मैयुम्–मेरा महत्त्व और गौरव; पुकळ् ओटुम् पोनतु–कीर्ति के साथ चले गये; इनि–अब; यान्–मैं; उनक्कु–तुम्हें; इन्ऱु ऍङ्ङन् उरैक्केन्–आज की स्थिति कैसे कहूँ; ऍन्ना–कहकर; वानवरुक्कुम्–देवों से भी; नाण–शरमाएँ; अटुक्कुम् वचै–ऐसा (जो) अपयश आया है; (मन्–ओ)। ७२६

रावण ने कहा कि मुझ पर सभी तरह के संकट आ चुके हैं। प्राण तो नहीं गये पर अत्यन्त शिथिल हूँ। मेरी महिमा, गौरव और कीर्ति सब चले गये। तुमसे मैं क्या कहूँ? देवों से भी हम शर्मायें, ऐसी निन्दा आ लगी है। ७२६

वन्मै तरित्तोर् मानिडर् मऱ्ऱङ् गवर्वाळाल्
निन्मरु हिक्कु नाशि यिळक्कु निलैनेर्न्दाल्
ऍन्मर बुक्कु निन्मर बुक्कु मिदन्मेलोर्
पुन्मै तॅरिप्पिन् वेऱिनि युण्डो पुहऴ्वेलोय् 727

पुकऴ् वेलोय्–सर्वप्रशंसित भालाधारी; मातुटर्–मानव; वन्मै तरित्तोर्–बलशाली हो गये हैं; मऱ्ऱु–और; अङ्कु–वहाँ (दण्डक वन में); अवर्–उन मानवों के द्वारा; वाळाल्–कटार से; निन् मरुकिक्कु–तुम्हारी भांजी की; नाचि इऴक्कुम्–नासिका खोने की; निलै नेर्न्ताल्–दशा हुई तो; ऍन् मरपुक्कुम्–मेरे कुल का; निन् मरपुक्कुम्–और तुम्हारे कुल का; इतन् मेल् ओर् पुन्मै तॅरिप्पिन्–इससे बढ़कर हेयता की बात; इनि वेऱु उण्टो–दूसरी है क्या। ७२७

शंसित भालाधारी मारीच! अल्प मनुष्य आज बलशाली हो गये हैं। और स्थिति ऐसी हो गयी कि दण्डकवन में एक मनुष्य ने तुम्हारी भांजी शूर्पणखा की नाक काट ली। फिर तुम्हारे और मेरे कुल का क्या मान रहा ? इससे बढ़कर हेयता हो सकती है क्या ? । ७२७

तिरुहु शिनत्तान् मुदिर मलैन्दोर् शिऱियोर्नाळ्
परुहिन्न ऍन्ऱाल् वॅन्ऱि नलत्तिऱ् पऴियन्ऱो
इरुहै शुमन्दा यिनिदि निरुन्दा यिहल्वेलुन्
मरुह रुलन्दा रॊरुवन् मलैन्दान् वरिविल्लाल् 728

तिरुकु चित्तत्ताल्–ऐंठे कोप के साथ; मुतिर मलैन्तोर्–प्रचण्ड रूप से जिन्होने युद्ध किया; चिऱियोर् नाळ् परुकिन्न–उन मेरे छोटों के प्राण पी लिये; ऍन्ऱाल्–तो; वॅन्ऱि नलत्तिन्–विजय के गौरव पर; पऴि अन्ऱो–बट्टा नहीं है क्या; इकल् वेल् उन् मरुकर्–युद्धोपयोगी भालाधारी तुम्हारे भांजे; उलन्तार्–मरे; ऒरुवन्–अकेले एक मनुष्य ने; वरि विल्लाल्–बन्धनयुक्त धनुष ले; मलैन्तान्–युद्ध करके मिटा दिया; इरु कै चुमन्ताय्–तुम (हाथ जोड़े) दोनो हाथों को सिर पर धारण किए हो; इनितु इरुन्ताय्–सुखपूर्वक रहते हो। ७२८

ऐंठे (अपार) क्रोध के साथ मेरे छोटे भाइयों ने प्रचण्डता के साथ उससे युद्ध किया पर उसने उनके प्राण पी (हर) लिये। तो हमारी विजयशीलता पर बट्टा नहीं लगा क्या ? युद्धोपयोगी भाले रखनेवाले तुम्हारे भांजे मरे; एक मनुष्य ने अपने धनुष के बल से उनसे युद्ध करके उनको मिटा दिया; और तुम इधर सिर पर जुड़े हाथ रखकर तपस्या कर रहे हो सुखपूर्वक ! । ७२८

वॅप्पऴि यादॅन् नॅञ्जु मुलन्देन् विऴिहिन्ऱेन्
ऒप्पिल ऍन्ऱे पोर्शॆय वॊल्ले नुडन्वाऴुम्
तुप्पऴि शॆव्वाय् वञ्जियै वव्वत् तुणैहॊण्डिट्
टिप्पऴि निन्निऱ् ऱीरिय वन्दे निवणॆन्ऱान् 729

वेंप्पु अळियातु–मन का ताप नहीं मिटता; नेंञ्चुम् उलन्तेन्–मन व्यग्र है; विळिकिन्ऱेन्–मर रहा हूँ; ओप्पु इलर्–समान नहीं; अन्ऱे–इसीलिए; पोर् चेय ओल्लेन्–लड़ने में सहमत नहीं हूँ; उटन् वाळुम्–उनके साथ रहनेवाली; तुप्पु अळि–प्रवाल को हरानेवाले; चेंम् वाय्–अरुणाधरा; वञ्चियै–लता (-समाना स्त्री) को; वव्व–हर लाने के लिए; तुणै कोण्टु इट्टु–तुम्हें अपना सहायक बनाकर; इ पऴि–यह अपमान; निन्तिल् तीरिय–तुम्हारे द्वारा दूर करने के लिए; इवण्–यहाँ; वन्तेन्–आया; अन्ऱान्–कहा। ७२९

इससे मेरा मन जलता है। जलन नहीं मिटती। मैं मन मारे मरणोन्मुख दशा में हूँ। वे मेरे समान नहीं हैं; इसलिए उनके साथ लड़ने को मेरा मन नहीं मानता। पर बदला तो लेना ही है। उनके साथ एक स्त्री है। उसके अधर प्रवाल को भी सुन्दरता में मात देनेवाले हैं। वह लता के समान है। उसको तुम्हारी सहायता से हर लाना चाहता हूँ, ताकि मेरा यह अपयश छूटे! इसीलिए इधर आया हूँ। —रावण ने अपना अभिप्राय कहा। ७२९

इच्चॊ लनैत्तुम् जॊल्लि यरक्क नॆरिहिन्ऱ
किच्चि नुरुक्किट् टुय्त्तन नॆन्नक् किळर्वान्मुन्
शिच्चि यॆन्तत्तन् मॆय्च्चॆवि पॊत्तित् तॆरुमन्दान्
अच्च महऱ्ऱिच् चॆऱ्ऱ मनत्तो डरैहिन्ऱान् 730

अरक्कन्–रावण ने; अॆरिकिन्ऱ किच्चिल्–जलती आग में; उरुक्कु इट्टु–इस्पात गलाकर; उय्त्तनन् अॆन्न–गरम द्रव को कानों में डाला हो, ऐसा; इ चॊल् अनैत्तुम्–यह सारा वचन; चॊल्लि–कहकर; किळर्वान् मुन्–उकसानेवाले के सामने; ची ची अॆन्न–छिः छिः कहकर; तन् मॆय् चॆवि पॊत्ति–अपने कानों पर हाथ रखकर; तॆरुमन्तान्–गड़बड़ाकर; अच्चम् अकऱ्ऱि–फिर भय त्यागा; चॆऱ्ऱ मनत्तोटु–क्रुद्ध मन के साथ; अरैकिन्ऱान्–बोला। ७३०

ये शब्द मारीच के कानों में पिघलते इस्पात के समान पड़े। रावण ने ये वचन कहकर उसको उकसाया। तब मारीच ने अपने दोनों हाथ दोनों कानों में धर लिये। कहा— छिः छिः! वह पहले गड़बड़ाया। फिर भय त्यागकर कोप के साथ वह यों बोला। ७३०

मन्ना नीयुन् वाळ्वै मुडित्ताय् मदियऱ्ऱाय्
उन्ना लन्ऱी दूळ्विनै यॆन्ऱे युणर्हिन्ऱेन्
इन्ना वेनुम् यानिदु रैप्पॆ न्निदमॆन्नाच्
चॊन्ना नन्ऱे यन्नव नुक्कुत् तुणिवॆल्लाम् 731

मन्ना–राजा; नी उन् वाळ्वै मुटित्ताय्–तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली; मति अऱ्ऱाय्–बुद्धि-हीन हो गये; ईतु उन्नाल् अन्ऱु–यह तुम्हारा कृत्य नहीं; ऊळ् विनै अन्ऱे–प्रारब्ध ही; उणर्किन्ऱेन्–समझता हूँ; इन्ना एनुम्–बुरा लगे तो भी;

यान्–मैं; इतम् इतु–हित यह; उरैप्पॅन्–बताऊँगा; ॲन्ना–कहकर; अन्तवत्तुक्कु–उसे; तुणिवु ॲल्लाम्–सारा हितकर उपदेश के वचन; चॊन्नान्–कहे; (अन्ऱु–ए)। ७३१

हे राजा ! बस ! तुमने अपनी आयु समाप्त कर ली। बुद्धि खो चुके। मैं समझता हूँ कि यह तुम्हारा काम नहीं; वरन् प्रारब्ध का तकाजा है। मेरा कहना तुमको बुरा लगेगा; तो भी तुमको हित की बात कहूँगा।—ऐसा कहकर मारीच ने रावण को अच्छी बातों का सब उपदेश किया। ७३१

अऱ्ऱ करत्तो डुत्तलै नीये यन्नमुन्निल्
पऱ्ऱिनै युयत्ताय् पऱ्पल कालम् पशिहूर
उऱ्ऱुयि रुळ्ळे तेय वुलन्दाय् पिन्नैयन्ऱो
पॅऱ्ऱनै शॅल्वम् पिन्नि दिळन्दार् पॅऱलामो 732

अऱ्ऱ–खण्डित; करत्तोटु उत् तलै–अपने हाथ के साथ सिर को; अतल् मुन्तिल्–(होम की) अग्नि में; नीये पऱ्ऱिनै उयत्ताय–स्वयं पकड़कर तुमने होम किये; पल् पल कालम्–बहुत समय तक; पचि कूर उऱ्ऱु–बहुत भूख से पीड़ित रहकर; उळ्ळै उयिर् तेय–अन्दर प्राणों के क्षीण होते; उलन्ताय्–कष्ट उठाया (तप किया); पिन्नै अन्ऱो–बाद तो; चॅल्वम् पॅऱ्ऱनै–(त्रिलोकाधिपत्य की) सम्पत्ति पायी; इऴन्ताल्–खो जाओ तो; पिन् इतु पॅऱल् आमो–फिर पाना हो सकता है क्या। ७३२

तुमने अपने ही खण्डित हाथ और सिरों को अपने ही हाथ से होमाग्नि में होम किया। कितने ही लम्बे काल तक भूखा-प्यासा रहकर, प्राणों को क्षीण होने देते हुए कठोर कष्ट सहे। तभी जाकर यह सारी विभवश्री तुम्हारी हुई ! (त्रिलोकाधिपत्य भी मिला।) तुम अब इसको खो जाओ तो पुनः प्राप्त हो सकता है क्या ? । ७३२

तिऱत्तिऱ नाले शॅय्दव मुऱ्ऱित् तिरुवुऱ्ऱाय्
मऱत्तिऱ नाले शॊल्लुदि शॊल्लाय् मऱैवल्लोय्
अऱत्तिऱ नाले यॅय्दिनै यन्ऱो वदुनीयुम्
पुऱत्तिऱ नाले पिन्नु मिऴक्कप् पुहुवायो 733

चॊल् आय् मऱै–निरुक्तांगी वेद में; वल्लोय–निपुण; तिऱम् तिऱन् आले–समर्थ सामर्थ्य से; चॅय् तवम् मुऱ्ऱि–करणीय सभी तप पूरा करके; तिरु उऱ्ऱाय्–यह सारा वैभव पाया; मऱ तिऱन् आले–धर्म-विरुद्ध बल से; चॊल्लुति–यह बात कहते हो; अऱ तिऱत्ताले–धर्म-सम्मत बल से; ॲय्तिनै अन्ऱो–(यह विभुता) पायी न; अतु–वह; पुऱ तिऱत्ताले–धर्म-विरुद्ध बल से; पिन्नुम् इऴक्क–उसको फिर से खोने के लिए; पुकुवायो–इस काम में प्रविष्ट होओगे क्या। ७३३

निरुक्त-सहित वेद के विशारद ! समर्थ सामर्थ्य के साथ, करणीय तप आदि करके तुमने यह सम्पत्ति पायी है। अब अधार्मिक बल हो गया है, उससे तुम यह बात कह रहे हो। यह सारा वैभव तुमने धर्म-मार्ग

पर चलकर ही प्राप्त किया था। अब इसे अधार्मिक कार्य करके खोना चाहोगे क्या ? । ७३३

नारङ् गॉण्डार् नाडु कवर्न्दार् नडैयिल्ला
वारङ् गॉण्डार् मऱ्ऱॊरु वऱ्काय् मनैवाऴुम्
तारङ् गॉण्डा रॆन्ऱिवर् तम्मैत् तरुमन्दान्
ईरुङ् गण्डाय् कण्डह रुय्न्दा रॆवरैया 734

ऐया–प्रभु; नारम् कॉण्टार्–जल हरनेवाले; नाटु कवर्न्तार्–राज्य छीनने वाले; नटै इल्ला–प्रथा के विरुद्ध; वारम् कॉण्टार्–प्रजा से कर लेनेवाले; मऱ्ऱु ऑरुवऱ्कु आय्–दूसरे की गृहिणी बनकर; मनै वाऴुम्–उसके घर में रहनेवाली; तारम् कॉण्टार्–उसकी पत्नी को हर लानेवाले; ऎन्ऱु इवर् तम्मै–ऐसे इन लोगों को; तरुमम् तान्–धर्मदेवता स्वयं; ईरुम्–काट कर मार देता है; कण्टकर् उय्न्तार्–पापी बचे; ऎवर्–कौन; कण्टाय्–देखा। ७३४

प्रभु ! तुम सोचो। पराया जल हरनेवाला, राज्य छीननेवाला, अक्रम कर उगाहनेवाला, परदारा ग्रसनेवाला —इनको धर्मदेवता स्वयं आकर मिटा देगा। पापी कौन नाश से बचा है अब तक, सोचो। ७३४

अन्दर मुऱ्ऱा नहलिहै पॊऱ्पा लऴिवुऱ्ऱान्
इन्दिर नॊप्पा रॆत्तनै योर्दा मियलऱ्ऱार्
शॆन्दिरु वॊप्पा रॆत्तनै योर्निन् ऱिरुवुण्बार्
मन्दिर मऱ्ऱा रुऱ्ऱ दुरैत्ताय् मदियऱ्ऱाय् 735

अन्तरम् उऱ्ऱान्—सुरलोकाधिपति; अकलिकै पॊऱ्पाल्–अहल्या के सौंदर्य से; अऴिवु उऱ्ऱान्–बिगड़ा; इन्तिरन् ऑप्पार्–इन्द्र-सम; ऎत्तनैयोर् ताम्–कितनों ही ने; इयल् अऱ्ऱार्–गौरव खोया; चॆम् तिरु ऑप्पार्–सुन्दर लक्ष्मी-सम स्त्रियाँ; ऎत्तनैयोर्–कितनी ही; निन् तिरु उण्पार्–तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं; मन्तिरम् अऱ्ऱार्–विचार-शक्ति से हीन लोगों की; उऱ्ऱतु–(सो) बात; उरैत्ताय्–कहते हो; मति अऱ्ऱाय्–बुद्धिहीन हो। ७३५

सुरलोकाधिपति इन्द्र अहल्या के सौन्दर्य से (आकृष्ट होकर) संकट में पड़ा। इन्द्र के समान कितने ही लोग अपना गौरव खो चुके हैं ! (तुम्हारे पास स्त्रियों की कमी है क्या ?) लक्ष्मी-सम कितनी ही सुन्दरियाँ तुम्हारे पास रहकर तुम्हारा वैभव भुगत रही हैं ! फिर विवेक-हीन मनुष्य की अच्छी मन्त्रणा जिसे मिली नहीं हो उसकी बात कहते हो ! साफ़ है कि तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है। ७३५

शॆय्दा येनुन् दीविनै योडुम् वऴियल्ला
दॆय्दा दॆय्दा दॆय्दि निराम नुलहीन्ऱान्

वैदा लन्न वाळिहळ् कॊण्डुन् वऴियोडुम्
कॊय्दा नन्ऱे कॊऱ्ऱ मुडित्तुन् कुऴुवॆल्लाम् 736

चॆय्ताय् एन्नुम्–यह करोगे तो भी; तीविनै ओटुम्–पाप के साथ; पऴि अल्लातु–अपयश से हीन; ऍय्तातु–जो है, वह मिले बिना; ऍय्तातु–नहीं रहेगा; ऍय्तिन्–(तुम्हारा संकल्प) पूरा होगा तो भी; उलकु ईन्ऱान् इरामन्–लोक-जनक श्रीराम ने; वैताल् अन्न–(मुनि-) शापों के समान; वाळिकळ् कॊण्टु–शरों से; उन् वऴि ओटुम्–तुम्हारी संतति के साथ; कॊऱ्ऱम् मुटित्तु–शक्ति मिटाकर; उन् कुऴु ऍल्लाम्–तुम्हारा दल और बल; कॊय्तान् अन्ऱे–मिटा दिया न, समझो। ७३६

अगर तुम यह काम करोगे तो यह निश्चित है कि पाप और अपयश के सिवा कुछ नहीं मिलेगा; नहीं ही मिलेगा। तुम्हारा मनोरथ पूरा हो गया तो भी यह निश्चय समझ लो कि लोकपिता श्रीराम ने अपने मुनि-शाप-सम अमोघ बाणों से तुम्हारी संतति के साथ तुम्हारा सारा दल-बल मिटा दिया! । ७३६

ऍन्ऱा नॆन्ने यॆण्णलै योनी करनॆन्बान्
निन्ऱा नैक्कु मेलुळ नॆन्नु निलैयम्मा
तन्ऱा नैत्तन् ऱेरॊडु माळत् तनुवॊन्ऱाल्
कॊन्ऱान् मुऱ्ऱुङ् गॊल्ल मनत्तिङ् कुऱिहॊण्डान् 737

करन् ऍन्पान्–खर जो था; निन् तानैक्कुम् मेल्–तुम्हारी सेवा का नायक; ऍन्नुम् निलै उळन्–उस पद में रहा न; तन् तानै–अपनी सेना; तन् तेर् ओटुम्–अपने रथ के साथ; माळ–मर मिटे, ऐसा; तनु ऑन्ऱाल्–एक ही धनु से; कॊन्ऱान्–श्रीराम ने मारा; मुऱ्ऱुम्–सारा वंश; कॊल्ल–मिटाने का; मनत्तिल् कुऱि कॊण्टान्–मन में संकल्प रखता है; ऍन्नै–क्या ही आश्चर्य है; ऍन् तान् नी ऍण्णलैयो–क्यों ही तुमने यह बात नहीं सोची; अम्मा–री माँ। ७३७

खर क्या मामूली राक्षस था? वह तुम्हारी सेना में नायक का पद वहन करता था। श्रीराम ने एक ही धनु की सहायता से उसका उसकी सेना और रथ सहित काम तमाम किया। और उसका यही संकल्प है कि राक्षसकुल को ही मिटा दूँ। यह क्या आश्चर्य है! तुमने यह सब क्यों नहीं सोचा? माँ! कैसी बुद्धिहीनता है! । ७३७

वॆय्योर् यारे वीर विरादन् ऱुणैवॆय्योर्
ऐयो पोना नम्बॊडु मुम्बर्क् कवनॆन्ऱाल्
उय्वार् यारे नम्मि लॆनक्कॊण् डुणर्दोऱुम्
नैया निन्ऱे नीयि दुरैत्तु नलिवायो 738

वॆय्योर्–कठोर वीरों में; वीर विरातन् तुणै–वीर विराध जितना; वॆय्योर् यारे–भयंकर कौन है; अवन्–वह भी; ऐयो–हाय; अन्पॊटुम्–राम के बाण के साथ; उम्पर्क्कु पोनान्–आकाश को चला गया; ऍन्ऱाल्–तो; नम्मिल् उय्वार्

यारे–हममें वचेगा कौन; अँन्न कौण्टु–यह सोचकर; उणर् तोऱुम्–ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ, त्यों-त्यों; नैया निन्ऱेन्–विगलित होता हूँ; नी इतु उरैत्तु–तुम यह कहके; नलिवायो–और भी सताते हो क्या। ७३८

वड़े भयंकर और क्रूर वीरों में वीर विराध के समान अति वलिष्ठ वीर कौन होगा ? हाय ! वह विराध भी श्रीराम के एक ही शर से, उस शर के साथ ही स्वर्ग पहुँच गया न ! तो हममें कौन ठहर सकता है ? यही सोच-सोचकर मैं व्यग्र हो रहा हूँ। शिथिल हो रहा हूँ। तुम यह वात कहकर और भी निर्बल कर रहे हो मुझे। ७३८

माण्डार् माण्डार् नीयिनि माळ्वार् तॊऴिल्शॅय्य
वेण्डा वेण्डा शॅय्दिडि नुय्वान् विदियुण्डो
आण्डा राण्डा रॆत्तनै यॆन्गे नऱ्ऱाळार्
ईण्डा रीण्डार् निन्ऱव रॆल्ला मिलरन्ऱो 739

माण्टार् माण्टार्–जो मरे, वे मर गये; नी इति–तुम अव भी; माळ्वार् तॊऴिल्–मरणासक्त का काम; चॅय्य वेण्टा वेण्टा–मत करो, मत करो; चॅय्तिटिन्–करोगे तो; उय्वान् विति–वचने का रास्ता; उण्टो–है क्या; आण्टार् आण्टार्–शासक (के वाद) शासक; ऍत्तनै–कितने (मरे); ऍन्कॆन्–कहूँ; अऱन् आळार्–धर्म का जिन्होंने पालन नहीं किया; ईण्टार् ईण्टार्–चिरकाल नहीं रहेंगे, नहीं रहेंगे; निन्ऱवर् ऍल्लाम्–जो रहे वे भी; इलर् अन्ऱो–अव नहीं रहे न। ७३९

जो चल वसे वे तो चले गये। तुम यह काम करके मरण का वरण मत करो। करोगे तो जीवित वचने का कोई मार्ग नहीं होगा। राजा के वाद राजा, कितने ही राजा मरे हैं, उनकी संख्या क्या कहूँ ? जो धर्म का पालन नहीं करते वे वहुत काल नहीं जीते, नहीं जीते। जो रहे वे सारे यम के मेहमान हो गये। अव नहीं रहे न ? । ७३९

ऍम्बिक् कुम्मॅ नन्नै तनक्कु मिऱुतिक्कोर्
अन्बुय्क् कुम्बोर् विल्लि तनक्कु मयनिऱ्कुम्
तम्बिक् कुम्मॅन् नाण्मै तविर्न्दे तळर्वुऱ्ऱेन्
कम्बिक् कुम्मॅन् नॆञ्जव नॆन्ऱे कवल्हिन्ऱेन् 740

ऍम्पिक्कुम्–मेरे कनिष्ठ को; ऍन् अन्नै तनक्कुम्–मेरी माता को; इऱुतिक्कु–अन्त करने के लिए; ओर् अम्पु उय्क्कुन्–जिसने एक वाण चलाया; पोर् विल्लि तनक्कुम्–उस युद्धकुशल धनुर्धर श्रीराम; अयल् निऱ्कुम्–और उसका पार्षद; तम्पिक्कुम्–कनिष्ठ भ्राता के सामने; ऍन् आण्मै तविर्न्ते–अपना पौरुष हारकर; तळर्वु उऱ्ऱेन्–शिथिल हो गया; ऍन् नॆञ्चु–मेरा मन; कम्पिक्कुम्–काँपता है; अवन् ऍन्ऱे–वही राम (तुम्हारा शत्रु हो गया, यह समझकर); कवल्किन्ऱेन्–व्याकुल हूँ। ७४०

श्रीराम वड़ा ही युद्धनिपुण धनुर्धर है। उसने मेरे छोटे भाई और

माता (ताड़का) को मौत के घाट उतारने के लिए एक-एक ही वाण चलाया था। ऐसे उसके और उसके पार्षद लक्ष्मण के सामने अपना वल हारकर मैं निर्वल हुआ। अव भी उनकी वात सोचता हूँ तो मेरा मन कम्पित हो जाता है। अव मेरी चिन्ता यही है कि वही तुम्हारा शत्रु वन गया है! । ७४०

निऩ्ऱुऩ् जॅऩ्ऱुम् वाऴ्वन यावु निलैयावाल्
पॊऩ्ऱु मॆऩ्नु मॆय्म्मै युणर्न्दोय् पुलैयाडऱ्
कॊऩ्ऱु मुऩ्ऩा यॆऩ्नुरै कॊळ्ळा युयर्शॆल्वत्
तॆऩ्ऱु मॆऩ्ऱु वैहुदि यॆया विऩ्ऩियॆऩ्ऱाऩ् 741

ऐया—तात; निऩ्ऱुम् चॆऩ्ऱुम्—अचल और चल; वाऴ्वत यावुम्—जीव सभी; निलैया—मर्त्य हैं; पॊऩ्ऱुम्—मर जायेंगे; ऎऩ्ऩुम् मॆय्म्मै—यह सत्य; उणर्न्तोय्—जानते हो; पुलै आटऱ्कु—यह नीच काम करना; ऒऩ्ऱुम् उऩ्ऩाय्—कुछ मत सोचो; ऎऩ् उरै कॊळ्ळाय्—मेरा वचन मानो; इति—आगे भी; उयर् चॆल्वत्तु—ऊँचे वैभव के साथ; ऎऩ्ऱुम् वैकुति—सदा रहो; ऎऩ्ऱाऩ्—कहा (मारीच ने)। ७४१

हे तात! इस संसार में चल या अचल कोई भी जीव या जन्तु स्थायी रूप से रहनेवाला नही है। यह तथ्य तुम जानते ही हो। ऐसे तुम यह पाप का खेल क्यो करना चाहते हो? किञ्चित भी यह वात मत सोचो। मेरी वात मान लो। अपार वैभवयुक्त पद में हो आगे भी सदा उसी में रहो। मारीच ने ये सारी वातें कही। ७४१

कङ्गैशडै वैत्तव ऩॊडुङ्गयिलै वॆऱ्पॊर्
अङ्गैयि नॆडुत्तवॆऩ दाडॆऴिन् मणित्तोळ्
इङ्गॊरॊर्मऩि दऱ्कॆळिय वॆऩ्ऱनै यॆऩत्तन्
वॆङ्गणॆरि यप्पुरुव मीदुऱ विडैत्ताऩ् 742

कङ्कै चटै वैत्तवन् ओटुम्—जटा में गंगाधारक के साथ; कयिलै वॆऱ्पु—उनके कैलासपर्वत को; ओर् अम् कैयिल्—एक हथेली पर; ऎटुत्त—जिन्होंने उठाया; ऎऩतु—मेरे; आटु—युद्धोत्साही; ऎऴिल् मणि तोळ्—सुन्दर श्रेष्ठ भुजाएँ; इङ्कु ओर् मतितऩुक्कु—यहाँ एक मनुष्य के लिए; ऎळिय ऎऩ्ऱतै—सुगम हैं, कहा; ऎऩ—कहकर; वॆम् कण् ऎरिय—भयंकर आँखों से आग निकालते हुए; पुरुवम् मीतु उऱ—भौंहों को ऊपर उठाते हुए; विटैत्ताऩ्—डाँट वतायी। ७४२

रावण को ये वातें कैसे पसन्द आती? उसने डाँट वतायी। अपनी जटा में गंगाधारक शिवजी के कैलास को उनके साथ मैंने अपनी हथेली में उठाया था। तुम कहते हो ऐसी मेरी प्रवल, सुन्दर और युद्धोत्साही भुजाएँ इस अल्प मनुष्य के सामने तुच्छ है! यह कहते वक्त उसकी आँखों से अंगार छूटे और भौंहें तनकर भाल पर चढ़ गयीं। ७४२

निहळ्न्ददै निनैक्किलैयॆन् नॆञ्जिनिलै यञ्जा
दिहळ्न्दनै यॆनक्किळैय नङ्गैमुह मॆङ्गुम्
अहळ्न्दवरै यॊप्पुर वमैत्तवरै यैया
पुहळ्न्दनै तनिप्पिळै पॊरुत्तनॆनॆ दॆन्ऱान् 743

ऐया—प्रभु; निकळ्न्ततै—जो घटा; निनैक्किलै—वह नहीं सोचते; अञ्चातु—विना डर के; ऍन् नॆञ्चिन् निलै—मेरे हृदय की स्थिति की; इकळ्न्ततै—निन्दा की; ऍनक्कु इळैय नङ्कै—मेरी छोटी बहिन के; मुकम् ऍङ्कुम्—मुख-भर में; अकळ्न्त वरै—खुदे हुए पर्वत के; ऒप्पु उऱ—समान हो, ऐसा; अमैत्तवरै—जिन्होंने बनाया, उनको; पुकळ्न्ततै—प्रशंसा की; इतु तनि पिळै—यह बहुत बड़ा अपराध है; पॊरुत्तनॆन्—क्षमा की मैने; ऍन्ऱान्—कहा। ७४३

हे तात ! तुमने जो हुआ उसका विचार नहीं किया। विना भय के मेरी चित्त-स्थिति को हेय बताया। मेरी छोटी बहिन का चेहरा खुदे हुए गढ़े-सहित पर्वत के समान हो गया। वैसा जिसने बनाया उस मनुष्य की मुझसे प्रशंसा करते हो। यह बड़ा भारी अतुलनीय अपराध है। तो भी तुम्हें क्षमा करता हूँ। ७४३

तन्नैमुनि वुऱ्ऱदऱ कट्टहवि लोनैप्
पिन्नैमुनि वुऱ्ऱिडुमॆ नत्तविर्दल् पेणान्
उन्नैमुनि वुऱ्ऱुलगु लत्तैमुनि वुऱ्ऱाय्
ऍन्नैमुनि वुऱ्ऱिलैयि दॆन्नॆन विशैत्तान् 744

तन्नै मुनिवु उऱ्ऱ—अपने पर कोप करनेवाले; तऱुकण्—निडर; तकवु इलोतै—अयोग्य को; पिन्नै मुनिवु उऱ्ऱिटुम्—फिर भी कोप करेगा; ऍन्न—यह सोचकर; तविर्तल् पेणान्—छोड़ना न चाहते हुए; ऍन्नै मुनिवु उऱ्ऱिलै—मुझ पर गुस्सा नहीं किया पर; उन्नै मुनिवु उऱ्ऱु—अपने से ही आक्रोश करते; उन् कुलत्तै मुनिवुऱ्ऱाय्—अपने वंश पर क्रोध करते हो; इतु ऍन् ऍन—यह क्या है; इचैत्तान्—कहा। ७४४

मारीच ने सोचा। रावण मुझ पर क्रोध करता है। वह निडर अयोग्य राक्षस और भी गुस्सा करेगा। तो भी भय के कारण उसने उपदेश देने से विरत होना नहीं चाहा। उसने कहा कि रावण ! अब तुम मुझ पर क्रोध जो करते हो उसका अर्थ है तुम अपने पर गुस्सा करते हो और अपने कुल पर गुस्सा करते हो ! यह कार्य तुम क्यों करते हो भाई ! । ७४४

ऍडुत्तमलै येनिनैयि नीशनिहल् विल्ला
वडित्तमलै नोयिदुव लित्तियॆन वारिप्
पिडित्तमलै नाणिडेप् पिणित्तॊरुवन् मेनाळ्
ऒडित्तमलै यण्डमुह डुऱ्ऱमलै यन्ऱो 745

अॅट्टुत मलैये–तुमने पर्वत उठाया, उसी पर्वत को; नित्तैयिऩ्–याद करते रहो तो; इतु ईचऩ् इकऩ् विल्लाय्–यह ईश्वर के युद्ध के लिए धनु; वटित्तुत मलै–बनाया गया पर्वत है; नी इतु वलित्तिति–तुम इसे झुकाओ; अॅत–कहने पर; मेल् नाळ्–पहले; ऑरुवऩ्–एक मानव से; वारि–उठाकर; पिटित्तुत मलै–हाथ में जो पकड़ा गया वह पर्वत; नाण् इटै पिणितुतु–प्रत्यंचा से बद्ध खींचने के मध्य; ऑटित्तुत मलै–तोड़ा गया पर्वत; अण्टम् मुकटु उऱ्ऱ–आकाश की चोटी तक गया; मलै अऩ्ऱो–मेरुपर्वत नहीं है क्या। ७४५

तुमने जो उठाया उसी कैलासपर्वत की याद में भूले हुए हो। ईश्वर शिव ने मेरुपर्वत का ही धनु बनाया था। उसको झुकाने की आज्ञा दी विश्वामित्र ने। तो राम ने उस पर्वत को प्रत्यंचा चढ़ाकर झुकाते वक्त तोड़ दिया था। वह पर्वत कौन सा था। जानते हो! (तुमने तो हिमालय के एक छोटे से शिखर को उठाया था!) राम ने जो उठाकर तोड़ा वह आकाश-स्पर्शी और श्रेष्ठ पर्वत था! । ७४५

यादुमऱि यायुरैहॅो ळायिहलि रामऩ्, कोदैवुत्ते यामुनुयिर् कॉळ्ळैवडु मन्ऱे
पेदैमदि यालिदुवोर् पॅण्णुरुव मॅऩ्ऱाय्, शोदैयुरु वोतिरुदर् तीविनैय दऩ्ऱो 746

यातुम् अऱियाय्–कुछ नहीं जानते; उरै कॉळाय्–उपदेश ग्रहण न करोगे; इकल् इरामऩ्–युद्धसमर्थ श्रीराम; कोतै पुत्तैयामुत्–युद्ध के लिए हाथ में दस्ताना पहनने के पूर्व ही; उयिर् कॉळ्ळै पटुम् अऩ्ऱे–हमारे प्राण छूट जायेंगे न; पेतै मतियाल्–जड़ मति के कारण; इतु ऑरु पॅण् उरुवम् ॲऩ्ऱाय्–यह स्त्री-रूप है, कहा; अतु चीतै उरुवो–वह सीता का रूप है क्या; निरुतर् ती वित्तैयतु–राक्षसों के पाप का रूप है; अऩ्ऱो–न। ७४६

तुम न खुद कुछ जानते हो, न मेरा उपदेश मानते हो! यह जान लो कि श्रीराम के, जो युद्ध-प्रवीण है, हस्तत्राण (या माला) पहनने के पूर्व ही हमारे प्राण हर लिये जायँगे। तुम अपनी मन्दमति के कारण उसको स्त्री का रूप मानते हो! वह क्या सीता का रूप है? नही हमारे पापों का मूर्त-रूप है। ७४६

उञ्जुबिळै यायुऱवि नोडुमॅन वुन्ना, नॅञ्जुबऱै पोदुमदु नीनिनैय हिल्लाय्
अञ्जुमॅन्न दारुयि रऱिन्दरुहु निन्ऱार्, नञ्जुनुहर् वारैयिदु नऩ्ऱॅन्नलु नन्ऱे 747

उऱवित्तोटम् उञ्चु–परिवारों, बन्धु-बान्धवों के साथ बचकर; पिळैयाय्–जीवित नहीं रहोगे; ॲत–यह; उन्ता–सोचकर; नॅञ्चु पऱै पोतुम्–मेरा मन ढोल की खाल के समान थर्राता है; नी अतु नित्तैय किल्लाय्–तुम वह सोच नहीं पाते; ॲत्ततु आर् उयिर्–मेरे बहुमूल्य प्राण; अञ्चुम्–डरते हैं; नञ्चु नुकर्वारै–विष-खादक को; अऱिन्तु–(विष खाता) जानकर; अरुकु निऩ्ऱार्–पार्श्व में स्थित लोगों का; इतु नऩ्ऱु–यह (तुम्हारा विष खाना) अच्छा है; ॲऩ्तलुम्–कहना भी; नऩ्ऱे–अधिक अच्छा होगा। ७४७

जब मैं विचार करता हूँ कि तुम अपने परिवारों और बन्धुजनों के

साथ नष्ट हो जाओगे और नहीं बचोगे तो मेरा चित्त थर-थर काँपता है; जैसे पिटा ढोल। तुम वह सोचने में असमर्थ हो। मेरे प्यारे प्राण भी काँपते हैं। तुमको प्रोत्साहन दूँ तो उस काम से विषखादक को पास रहने वालों के, 'यह वड़ा अच्छा है' कहकर प्रोत्साहित करना भी अधिक भला होगा। ७४७

ईशन्मुद	लाहविरै	योरुलहु	मर्रैत्
तेशमुदल्	मुर्रुमो	रिमैप्पिनुयिर्	तिन्नक्
कोशिह	नळित्तहड	वुट्पडै	कौदिप्पो
डाशिल	कणिप्पिल	विरामन्नरु	णिर्प 748

ईचन् मुतलाक–ईशानदेव आदि; इरैयोर् उलकुम्–देवों के लोकों को; मर्रै–और अन्य; तेचम् मुतल्–देश आदि; मुर्रुम्–सारा; ओर् इमैप्पिल्–एक बार पलक मारती देर में; उयिर् तिन्न–प्राण खाने (मिटाने) के लिए; कोचिकन् अळित्त कटवुळ् पटै–कौशिक से दत्त दिव्य अस्त्र; आचु इल–त्रुटिहीन; कणिप्पु इल–गणनाहीन; कौतिप्पोटु–उग्रता के साथ; इरामन् अरुळ्–श्रीराम की सेवा में; निर्प–खड़े हैं। ७४८

श्रीराम के पास कौशिक-दत्त अमोघ, त्रुटिहीन और अगणित अस्त्र हैं, जो ईशान के लोक से लेकर सारे देवताओं के लोक और अन्य लोकों को पल भर में समाप्त कर दे सकते हैं। वे श्रीराम की सेवा में उसकी आज्ञा के मुहताज खड़े हैं। ७४८

आयिरम	डर्कैयुडै	यानैमळु	वाळाल्
एयॅनुमु	रैक्कुळुयिर्	शॅर्रवॅदि	रिल्लोन्
मेयतिरल्	मुर्रुम्वरि	वॅञ्जिलैयि	नोडुम्
तायवन्व	लित्तहैमै	यामुरुत	हैत्तो 749

आयिरम्–सहस्र; अटल् कै–बलिष्ठ हाथों से; उटैयानै–युक्त कार्तवीर्य को; मळु वाळाल्–परशु के अस्त्र से; एय् ॲनुम् उरैक्कुळ्–'रे' के उच्चारण करते समय के अन्दर; उयिर् चॅर्र–जिसने प्राणहीन कर दिया; ॲतिर् इल्लोन्–उस अप्रतिद्वन्द्वी परशुराम का; मेय–प्राप्त; तिरल् मुर्रुम्–सारा वल; वरि वॅम् चिलैयिन् ओटुम्–बन्धनयुक्त धनुष के साथ; तायवन्–परास्त जो किया उसका; वलि तकैमै–वल-पराक्रम; याम् उरु तकैत्तु ओ–हमारे कहने योग्य होगा क्या। ७४९

राम ने परशुराम के सारे वल को, उसके धनुष के साथ परास्त किया था। वह परशुराम क्या मामूली मनुष्य थे। सहस्र महाबली हस्तों से युक्त कार्तवीर्य को परशुराम ने 'रे' शब्द के उच्चारण समय के अन्दर अपने परशु के प्रहार से समाप्त किया था। ऐसे श्रीराम के वल का अनुमान या कथन हम करने योग्य है क्या ? । ७४९

वेदत्तैशॅय् कामविड मेविडमें लिन्दाय्
तीदुरैशॅय् दायिनैय शॅय्हैशिदै वन्ऱो
मातुलनु मायमरविन् मुन्दैयुड़ वन्दैन्
ईदुरैशॅय् दैत्तिदनै यॅन्दैतविर् हॅन्ऱान् 750

वेतत्तै चॅय्–पीड़क; काम विटन् मेविट–काम रूपी विष चढ़ा और; मॅलिन्ताय्–क्षीण हो गये हो; तीतु उरै चॅय्ताय्–अनर्थ की बात करते हो; इत्तैय चॅय्कै–तुम्हारा यह काम; चित्तैवु अन्ऱो–नाश का है न; मातुलनुम् आय्–मामा बना हूँ और; उड़ मुन्तै वन्तेन्–बहुत पूर्व ही पैदा हुआ हूँ; ईतु उरै चॅय्तेन्–यह हितोपदेश किया; ऍन्तै–मेरे तात; इतत्तै–(सीतापहरण का) यह (विचार); तविर्क–छोड़ दो; ऍन्ऱान्–कहा। ७५०

वेदनादायी काम-विष तुम पर चढ़ा है। इसलिए तुम तन से और (बुद्धि में भी) क्षीण हो गये हो। इसलिए अनुचित बातें कह रहे हो। सीतापहरण का काम हमारे नाश का काम नहीं हो जायगा? मैं तुम्हारा मातुल हूँ; बहुत पहले पैदा हुआ, अतः तुमसे बड़ा हूँ। यह जो कहा, वह तुम्हारे हित का ही वचन है। मेरे तात! इस बुरे विचार को त्याग दो। मारीच ने उसे समझाया। ७५०

ऍन्नवुरै यित्तनैयु मॅत्तनैयु मॅण्णिच्
चॉन्नवनै येशिन नरक्कर्पदि चॉन्नान्
अन्नैयुयिर् शॅड्ड्रवनै यज्जियुड़ै हिन्ड्राय्
उन्नैयॉरु वड्कॉरुव नॅन्ऩुणर्है नन्ऱो 751

ऍन्न–(मारीच के ऐसा) कहने पर; उरै इत्तनैयुम्–सभी उपदेशों पर; ऍत्तनैयुम् ऍण्णि–सभी तरह से विचार करके; चॉन्नवनै–वक्ता की; एचिनन्–निन्दा की; अन्नै उयिर् चॅड्ड्रवनै–माता के प्राणघातक से; अज्चि उड़ैकिन्ड्राय्–डरकर (छिपे) रहते हो; उन्नै–तुमको; ऑरुवड्कु ऑरुवन् ऍन्ऱ–वीर के मुकाबले में वीर; उणर्कै–समझना; नन्ऱो–ठीक होगा क्या; अरक्कर् पति–राक्षसपति ने; चॉन्नान्–कहा। ७५१

मारीच ने जो बातें कहीं, उन पर रावण ने खूब और सब तरह से विचार किया। पर उसे उनमें कोई सार नहीं लगा और क्रोध ही आया। राक्षसपति ने उपदेशक की निन्दा की। कहा— तुम डरपोक हो! माता के मारक से डरकर तपस्या का बहाना करते हुए यहाँ छिपे रहते हो! तुम्हें वीर के समान वीर कहना मान्य कैसे हो सकता है? । ७५१

तिक्कय मॉळिप्पनिलै तेवर्हॅड वानम्
पुक्कव रिरुक्कैबुहै वित्तुलहम् यावुम्
शक्कर नडत्तुमॅन्नै योतयर दन्ड्रन्
मक्कणलि हिड्परिदु नन्ऱुमदि यन्ड्रो 752

तिक्कयम् ऒळिप्प–दिग्गजों को छिपने को विवश करते हुए; तेवर् निलै कॆट–देवों को अस्त-व्यस्त करते हुए; वानम् पुक्कु–देवलोक में जाकर; अवर् इरुक्कै पुकैवित्तु–उनके स्थान को जलाकर धुएँ से भरकर; उलकम् यावुम्–सारे लोकों पर; चक्करम् नटत्तुतुम्–आज्ञाचक चलानेवाले; ऎन्नैयो–मुझे क्या; तयरतन् तन् मक्कळ्–दशरथ के छोटे; नलिकिऱ्पर्–कष्ट देंगे; इतु नन्ऱु मति अन्ऱो–यह बड़ी अच्छी समझ है न। ७५२

मुझे दशरथ के छोटे कष्ट देंगे? मुझे, जिसने दिग्गजों को भयभीत करके छिपने को विवश किया; जिसने स्वर्गलोक में घुसकर देवों को अस्त-व्यस्त कर उनके लोक में आग और धुआँ फैला दिया और जो सारे लोकों पर आज्ञाचक्र चला रहा हूँ, ऐसे मुझे वे त्रास देंगे? यह तुम्हारी सूझ भी बड़ी भली रही न! । ७५२

मूवुलहि तुक्कुमॊरु नायह मुडित्तेन्
मेवलर् किडैक्किनिदन् मेलिनिय दुण्डो
एवल्शॆय हिऱ्ऱियॆन दाणैवऴि यॆण्णिक्
कावल्शॆ यमैच्चर्कड नीकडव दन्ऱे 753

मू उलकित्तुक्कुम्–तीनों लोकों का; ऒरु नायकम् मुटित्तेन्–निर्द्वन्द्व नायकत्व अपनाया; मेवलर् किटैक्किन्–ऐसे शत्रु मिलेंगे तो; इतन् मेल् इनियतु–इससे बढ़कर सुखद; उण्टो–कोई दूसरा है क्या; कावल् चॆय्–राज्यरक्षणकारी; अमैच्चर् कटन्–अमात्यों का कर्तव्य; नी कटवतु अन्ऱे–तुम उल्लंघन नहीं कर सकते; ऎन्तु आणै वऴि–मेरी आज्ञा के अनुसार; ऎण्णि–सोचकर; एवल् चॆय्किऱ्ऱि–सेवा करो। ७५३

मैंने तीन लोकों का निर्द्वन्द्व आधिपत्य कर लिया। ऐसे मेरे शत्रु हो जायँ तो उससे बढ़कर सुखदायी बात क्या हो सकती है? राज्यरक्षणरत अमात्यों का कर्तव्य राजा का अभिप्राय जानकर तदनुकूल कार्य करना है। तुम्हारा काम उसका अतिक्रमण करना नहीं है। मेरी आज्ञा सुनो, उसी के अनुकूल सोचकर सेवा करो। ७५३

मऱुत्तनै यॆन्पॆऱिनु निन्नैवडि वाळाल्
ऒऱुत्तुमन मुऱ्ऱुदु मुडिप्पॆन्नॊऴि हिल्लेन्
वॆऱुत्तन किळत्तलुऱु मित्तॊऴिलै विट्टॆन्
कुऱिप्पिन्वऴि निऱ्ऱियुयिर् कॊण्डुळलि यॆन्ऱान् 754

मऱुत्तनै ऎन पॆऱितुम्–इनकार भी करोगे तो; निन्नै–तुम्हें; वटि वाळाल्–तीक्ष्ण तलवार से; ऒऱुत्तु–मारकर; मनम् उऱ्ऱतु–अपना मनमाना; मुटिप्पॆन्–कर लूँगा; ऒऴिकिल्लेन्–त्यागूँगा नहीं; उयिर् कॊण्टु उळलिन्–प्राणसहित रहना चाहो तो; वॆऱुत्तन–मेरी खीझ के; किळत्तल् उऱुम्–वचन कहने का; इ तॊऴिलै विट्टु–यह काम छोड़ो; ऎन् कुऱिप्पिन् वऴि निऱ्ऱि–मेरी राय का मार्ग चलो; ऎन्ऱान्–कहा। ७५४

तुम इनकार भी करोगे तो क्या होगा ? मैं अपनी तीक्ष्ण तलवार से तुम्हारा काम तमाम कर दूँगा और अपना मनमाना कर लूँगा। यह कार्य विना किये नहीं छोड़ूँगा। इसलिए तुम जीवित फिरना चाहो तो मुझे खिझानेवाले उपदेश देना छोड़ो और मेरी इच्छा के अनुकूल सेवा करो। रावण ने निश्चित रूप से कह दिया। ७५४

अरक्कनः(ह्) दुरैत्तलोडु मऱिन्दन नडङ्गु नॆञ्जन्
तरुक्किनर् कॆडुव रॆन्ऱ ऱत्तुव निलैयिऱ् ऱन्ऱो
शॆरुक्किनिऱ् ऱीरु मॆन्बार् तम्मिलार् शॆरुक्क रॆन्ना
उरुक्किय शॆम्बॊ नुऱ्ऱ नीर्मैया नुरैक्क लुऱ्ऱान् 755

अरक्कन्–राक्षस के; अ.'.तु उरैत्तल् ओटुम्–वह वात कहने पर; अऱिन्तनन्–(रावण का मन) जाना; अटङ्कु नॆञ्चन्–संयत-मन होकर; तरुक्किनर् कॆटुवर्–घमण्डी नष्ट होंगे; ऍन्ऱल्–यह कथन; तत्तुव निलैयिऱ्ऱु अन्ऱो–सत्य बनता है न; चॆरुक्किनिल्–गर्व से; तीरुम् ऍन्पार् तम्मिन्–नाश को प्राप्त होंगे, ऐसा जिन्होंने निश्चय किया है उनसे बढ़कर; चॆरुक्कर्–गर्वीले शत्रु; आर्–कौन है; ऍन्ना–सोचकर; उरुक्किय चॆम्पॊन्–पिघले हुए स्वर्ण; उऱ्ऱ नीर्मैयान्–की स्थिति में जो रहा, वह; उरैक्कल् उऱ्ऱान्–कहने लगा। ७५५

जब राक्षसराज रावण ने यह कहा तो मारीच ने रावण का स्वभाव सोचा और उसका निश्चय जान लिया। इसलिए उसने अपने मन को संयत कर लिया। सोचा— अभिमानी लोग अवश्य नष्ट होंगे। यह कथन सत्य बन गया है ! जो गर्व के कारण अपने को नष्ट कर लेने में तुले हैं, उनका उनसे बढ़कर कोई शत्रु नहीं होता। वह स्वयं अपना नाश कर लेगा। मारीच अब पिघला-स्वर्ण-समान स्वच्छमन हो गया था। वह यों बोला। ७५५

उन्वयि नुऱुदि नोक्कि युण्मैयि नुणर्त्तित् तेन्मऱ्
ऱॆन्वयि निऱुदि नोक्कि यच्चत्ता लिशैत्ते नल्लेन्
नन्मैयुन् दीमै यन्ऱे नाशम्वन् दुऱ्ऱ नाळिल्
पुन्मैयि निन्ऱ नीराय् शॆय्वदु पुहऱि यॆन्ऱान् 756

उन् वयिन् उऱुति नोक्कि–तुम्हारा हित सोचकर; उण्मैयिन् उणर्त्तितेन्–सच्चे दिल से समझाया; मऱ्ऱु–अलावा; ऍन् वयिन् इऱुति–मेरा अन्त; नोक्कि–समझकर; अच्चत्ताल्–डर से; इचैत्तेन् अल्लेन्–कहा नहीं; नाचम् वन्तु उऱ्ऱ नाळिल्–जब नाश आता है; नन्मैयुम् तीमै अन्ऱे–भला भी बुरा हो जाता है न; पुन्मैयिन् निन्ऱ नीराय्–नीचकर्मतत्पर रावण; चॆय्वतु पुकल्ति–मेरा कार्य कहो; ऍन्ऱान्–पूछा। ७५६

रावण ! मैंने तुमसे जो कहा वह तुम्हारे भले के लिए ही साफ़ मन के साथ कहा था। अपनी मृत्यु के डर से नहीं कहा था। जब नाश का

दिन आता है तब भला भी बुरा लगता है। हे नीचकार्यतत्पर रावण ! तुम कहो— मैं क्या करूँ ? । ७५६

ऍन्ऱलु मॆळुन्दु पुल्लि येऱिय वॆंहुळि नीङ्गिक्
कुन्ऱॆनक् कुविन्द तोळाय् मारवेळ् कॉदिक्कु मम्बाल्
पॊन्ऱलि लिराम नम्बाऱ् पॊन्ऱले पुहळ्ळण् डन्ऱो
तॆन्ऱलैप् पहैयाच् चॆय्द शीदैयैत् तरुदि यॆन्ऱान् 757

ऍन्ऱलुम्–कहते ही; एऱिय वॆंकुळि नीङ्कि–उठे क्रोध को दूर करके; ऍळुन्तु पुल्लि–उठकर आलिंगन करके; कुन्ऱु ऍन्न कुविन्त तोळाय्–पर्वतोन्नत कन्धों वाले; मार वेळ्–मारदेव के; कॊतिक्कुम् अम्पाल्–सन्तापक अस्त्रों से; पॊन्ऱलिन्–मरने से; इरामन् अम्पाल्–राम-शर से; पॊन्ऱले–मरना; पुकळ् उण्टु अन्ऱो–प्रशंसा-योग्य है न; तॆन्ऱलै पकैयाय् चॆय्त–मलयपवन को जिसने मेरा शत्रु बना दिया; चीतैयै–उस सीता को; तरुति–लाओ; ऍन्ऱान्–कहा। ७५७

मारीच के ऐसा कहते ही रावण का उमँगा हुआ क्रोध थम गया। उसने उठकर मारीच का आलिंगन करके कहा— हे पर्वतोन्नत भुजाओं के मारीच ! मैं सोचता हूँ कि कामदेव के संतापक शरों से मरने से राम-शर से मरना अधिक कीर्तिदायक होगा। इसलिए उस सीता को हर लाओ, जिसने मलयपवन को मेरा शत्रु बना दिया है, और उसे मेरे पास दे दो। ७५७

ाण्डव नन्नैय कूऱ वरक्करो रिरुव रोडुम्
[ण्डॆन् मानन् दीरत् तण्डहम् पुक्क कालैत्
[ण्डिय शरङ्गळ् पायत् तुणैवर्पट् टुरुळ वञ्जि
ीण्डयान् शॆन्ऱु शॆय्युम् विनैयॆन्गोल् विळम्बु हॆन्ऱान् 758

आण्टु–तब; अवन् अन्नैय कूऱ–उसके वह कहने पर; पूण्ट ऍन् मानम् तीर–(पहले) प्राप्त अपना अपमान पोंछने के लिए; अरक्कर् ओर् इरुवर् ओटुम्–दो राक्षसों के साथ; तण्टकम् पुकुन्त कालै–जब दण्डक पहुँचा, तब; तूण्टिय चरङ्कळ् पाय–उससे प्रेरित वाणों के लगने पर; तुणैवर् पट्टु उरुळ–मेरे साथी अाहत हो लोटे और; अञ्चि मीण्ट–डरकर लौट आया; यान्–मैं; चॆन्ऱु चॆय्युम्–जाकर करूँ ऐसा; विनै ऍन् कोल्–कार्य क्या (रखा) है; विळम्पुक–कहो; ऍन्ऱान्–कहा। ७५८

यह सुनकर मारीच ने कहा कि पहले मैं राम से अपमानित हुआ। उस अपमान को पोंछने के हेतु मैं दो-एक राक्षसों को साथ लेकर वहाँ गया था। राम के शर के लगने से वे दोनों लुढ़क गये। भय से मैं लौट गया। ऐसे मेरे लिए अब करने को क्या काम रहेगा ? यह तो वताओ। ७५८

आयव ननैय कूऱ वरक्करहो तैय नोय्दुत्
तायैया रुयिरुण् डानैक् कॊल्लयान् शमैन्दु निन्ऱेन्
पोयैया पुणर्प्प दॆन्ऩै यॆन्बदु पॊरुन्दिऱ् ऱॊन्ऱो
मायैयाल् वञ्जित् तन्ऱो वव्वुद लवळै यॆन्ऱान् 759

आयवन् अतैय कूऱ–उसके ऐसा कहने पर; अरक्कर् कोन्–राक्षसराज; ऐय–श्रेष्ठ पुरुष; नोय्तु–हेय रीति से; उन् तायै–तुम्हारी माता के; आर् उयिर् उण्टानै–प्यारे प्राणों के घातक को; कॊल्ल–मारने के लिए; यान् चमैन्तु निन्ऱेन्–मैं कृत-संकल्प हूँ; पोय् ऐया पुणर्प्पतु ऍन्ऩै–जाकर तात क्या करूँ; ऍन्पतु–कहना; पॊरुन्तिऱ्ऱु ऒन्ऱो–उचित है क्या; अवळै–उसको; मायैयाल् वञ्चित्तु–वंचना से धोखा देकर; वव्वुतल् अन्ऱो–हर लाना ही है न; ऍन्ऱान्–कहा। ७५९

मारीच के ऐसा कहने पर राक्षसपति रावण ने कहा कि मामा! मैंने दृढ़ संकल्प कर रखा है कि मैं तुम्हारी माता के, हेयरीति से घातक राम को मार दूँ। तब वहाँ जाकर क्या करूँ —यह पूछना तुम्हारे लिए उचित नहीं लगता। उस सीता को वंचना से हर लाओ —यही करना उचित है न? ७५९

पुऱत्तिनि युरैप्प दॆन्ऩे पुरवलन् ऱेवि तन्नैत्
तिऱत्तुळि यन्ऱि वञ्जित् तॆय्दुदल् शिऱुमैत् तामाल्
अऱत्तुळ दॊक्कु मन्ऱे यमर्त्तलै वॆन्ऱु कॊण्डुन्
मऱत्तुऱै वळर्त्ति मन्ऩ वॆन्ऩमा रीशन् शॊन्ऩान् 760

मन्ऩ–राजा; इति पुऱत्तु उरैप्पतु ऍन्ऩे–अब और कहना क्या है; पुरवलन् तेवि तन्नै–(लोक-) रक्षक राम की देवी को; तिऱत्तु उळि अन्ऱि–अपने बल से नहीं; वञ्चित्तु ऍय्तल्–कपट से प्राप्त करना; चिऱुमैत्तु आम् आल्–नीचता का होगा, इसलिए; अऱत्तुळतु ऒक्कुम् अन्ऱे–धर्म-सम्मत नहीं होगा न; अमर् तलै वॆन्ऱु कॊण्टु–युद्ध में (राम को) जीतकर (सीता को) लेकर; उन् मऱ तुऱै–अपनी वीरता का गौरव; वळर्त्ति–बढ़ा लो; ऍन्ऩ–ऐसा; मारीचन् चॊन्ऩान्–मारीच ने कहा। ७६०

मारीच को यह हेय लगा। उसने नीति बतायी। राजा! ऐसा कहोगे तो फिर क्या कहा जाय? राजाराम की देवी सीता को अपनी वीरता से उठा लाना छोड़कर वंचना से हर लाना चाहते हो! यह तुम्हारे गौरव को हल्का कर देगा। इसलिए वह धर्मसम्मत नहीं होगा। युद्ध करो, राम को हराओ, सीता को लाओ। अपनी वीरता को बढ़ाओ। ७६०

आनव नुरैक्क नक्क वरक्करहो नवरै वॆल्लत्
तानैदान् वेण्डु मोवॆन् ऱडक्कैवा डक्क दन्ऱो
एनैय रिऱक्किऱ् ऱानुन् दमियळा यिऱक्कु मन्ऱे
मानव ळाद लाले मायैयिन् वलित्तु मॆन्ऱान् 761

आत्तवत्-ऐसे उसके; उरैक्क-कहने पर; नक्क-हँसते हुए; अरक्कर् कोन्-राक्षसाधिपति; अवरै वॅल्ल-उसको हराने के लिए; तानै तान् वेण्टुमो-सेना भी चाहिए क्या; ॲन् तट कै वाळ्-मेरे विशाल हाथ का (चन्द्रहास) खड्ग; तक्कतु अन्ऱो-योग्य नहीं है क्या; मानवळ्-वह मनुष्य स्त्री; एत्तैयर् इऱक्किन्-(उन दोनों) दूसरों के मरने पर; तानुम् तमियळाय्-स्वयं अकेली बनकर; इऱक्कुम् अन्ऱे-प्राण त्याग देगी न; आतलाले-उसी कारण; मायैयिन् वलित्तुम् ॲन्ऱान्-माया से ले आयेंगे; ॲन्ऱान्-कहा। ७६१

अपने रास्ते पर आये मारीच का कथन सुनकर राक्षसपति रावण उसकी नासमझी पर हँसते हुए बोला। राम और लक्ष्मण को हराने के लिए सेना की भी आवश्यकता पड़ेगी क्या? मेरे विशाल हाथ में जो चन्द्रहास, तलवार है वह पर्याप्त नहीं होगी क्या? पर तुमने यह नहीं सोचा। वे दोनों मर जायँगे तो वह मानवी स्त्री अपने को अकेला समझ कर प्राण त्याग देगी न? इसी हेतु कहता हूँ कि उसे माया से हर लायँगे। ७६१

तेवियैत् तीण्डा मुन्न मिवन्ऱलै शरत्तिऱ् चिन्दिप्
पोवहै पुणर्प्प नॅन्ऱु पुन्दियाऱ् पुहल्हिन् ऱेऱ्कुम्
आवहै यायिऱ् ऱिल्लै यार्विदि विळैवै योर्वार्
एविय शॅय्द लल्ला लिल्लैवे ऱॉन्ऱॆन् ऱॆण्णा 762

तेविपै तीण्टा मुन्नम्-देवी को स्पर्श करने से पहले ही; इवन् तलै-इसके सिर; चरत्तिल् चिन्ति पो वकै-शर से गिराने का उपाय; पुणर्प्पन्-राम कर लेगा; ॲन्ऱु-ऐसा; पुन्तियाल् पुकल्किन्ऱेऱ्कुम्-बुद्धि से जानकर कहता हूँ, ऐसा मेरा भी; आ वकै-भला होने का उपाय; आयिऱ्ऱु इल्लै-होता नहीं है; विति विळैवै-विधि का फल; आर् ओर्वार्-कौन जान सकता; एविय चॅय्तल् अल्लाल्-आज्ञा मानने के सिवाय; वेऱु ऑन्ऱु इल्लै-कोई दूसरा रास्ता नहीं; ॲन्ऱु ॲण्णा-ऐसा सोचकर। ७६२

मारीच बहुत दुःखी हुआ। यह मूर्ख नहीं जानता कि देवी सीता का स्पर्श करने के पूर्व ही श्रीराम ऐसा कार्य साध लेंगे कि इसके सिर उनके शरों से कटकर गिर जायँगे। यह मैं अपने अनुभव और तर्क के आधार पर कहता हूँ। तो भी मेरा भी भला अब नहीं होता दिखता। विधि का विधान कौन जाने? अब मेरे सामने रावण के आज्ञा में कहे अनुसार करने के सिवा कोई मार्ग नहीं है। ऐसा सोचकर— । ७६२

ॲन्नमा मायम् यानिङ् गियऱ्ऱुव दियम्बु हॅन्ऱान्
पॊन्निन्मा नाहिप् पुक्कप् पॊन्नैमाल् पुणर्त्तु हॅन्न
अन्नदु शॅय्वॅ नॅन्ना मारीश नमैन्दु पोनान्
मिन्नुवे लरक्कर् कोनुम् वेऱॊरु नॆऱियिऱ् पोनान् 763

इङ्कु यान् ॲन्न मा मायम् इयर्रुवतु—यहाँ मैं क्या बड़ी माया करूँ; इयम्पुक—कहो; ॲन्रान्—कहा; पॊन्निन् मान् आकि पुक्कु—स्वर्ण-हिरण वनकर वहाँ पहुँचकर; अ पॊन्नै—उस स्वर्ण-सुन्दरी को; माल् पुणर्त्तुक—मोहित कर दो; ॲन्न—कहा, तव; अन्नतु चॆय्वॆन् ॲन्ना—वह करूँगा, कहकर; मारीचन् अमैन्तु पोनान्—मारीच सम्मत होकर गया; मिन्नुम् वेल्—चमकदार भाला के; अरक्कर् कोनुम्—राक्षसराज भी; वेरु ऑरु नॆरियिल् पोनान्—दूसरे मार्ग से गया। ७६३

मारीच ने रावण से पूछा कि अव मै क्या वड़ा माया-कार्य करूँ ? तुम्हीं बताओ। तो रावण ने कहा— तुम स्वर्णमृग बनकर वहाँ जाओ। और उस स्वर्णसुन्दरी सीता को मोह में डाल दो। मारीच ने सम्मत होकर कहा कि हाँ ! वैसा ही करूँगा। चमकदार भालाधारी रावण भी दूसरे मार्ग से निकल गया। ७६३

❀ मेनाळवर् विल्वलि कण्डमैयाल्, तानाह निनैन्दु शमैन्दिलनाल्
मानाहुदि यॆन्रवन् वाळ्वलियाल्, पोनान्मन मुज्जॆय लुम्बुहल्वाम् 764

मेल् नाळ्—पहले; अवर् विल् वलि—उनके धनु की शक्ति; कण्टमै याल्—देखी थी, इसलिए; तान् आक—स्वयं; निनैन्तु चमैन्तिलन्—यह उपाय सोचकर तैयार नहीं हुआ; मान् आकुति—मृग बनो; ॲन्रवन्—यह जिसने कहा, उस रावण की; वाळ् वलियाल्—तलवार की शक्ति से (डरकर); पोनान् जो गया उसका; मनमुम्—मन और; चॆयलुम्—कार्य; पुकल्वाम्—बखानेंगे। ७६४

अब मारीच को राम-धनुष का बल खूब स्मरण रहा। उसने पहले उसका अनुभव किया था। इसलिए वह कदापि स्वयं मृग का रूप लेकर वहाँ जाने को सम्मत नहीं होता। पर रावण की तलवार का वार पड़ने का डर था। उसने कहा कि मृग बनो। इसीलिए वह सहमत हुआ। ऐसे उसका मन कैसा व्याकुल था और कार्य कैसे थे —उसका हम अब वर्णन करेंगे। ७६४

❀ वॆञ्जुर्रु निनैत्तुहुम् वीररैवे, रञ्जुर्रु मरुक्कुरु माळ्हुळिनीर्
नञ्जुर्रुळि मीनिनडुक् कुरुवान्, नॆञ्जुर्रदोर् पॆर्रि निनैप्परिदाल् 765

वॆम् चुर्रम् निनैत्तु—प्यारे बन्धु-बान्धवों की हालत सोचकर; उकुम्—विगलित हुआ; वेरु—और भी; वीररै अञ्चु उर्रु—वीर (श्रीराम और लक्ष्मण से) डरकर; मरुक्कु उरुम्—घबड़ा जाता; आळ् कुळि—गहरे गढ़े का; नीर् नञ्चु उर्रुळि—जल जब विषाक्त हो जाता है; मीनिन्—तब उसमें रही मछली-जैसा; नटुक्कु उरुवान्—छटपटाया; नॆञ्चु उर्रतु ओर् पॆर्रि—उसके मन का जो हुआ; निनैप्पु अरितु—वह सोचना भी कठिन है। ७६५

उसका मन अपने भाई-बन्धुओं का भावी नाश सोचकर बहुत व्यग्र हुआ। और भी उन वीरों की वीरता का विचार कर गिड़गिड़ाया। उसकी स्थिति उन मछलियों की-सी थी जो गहरे गढ़े मे है और उस गढ़े

का जल विषाक्त हो गया है। वह थर-थर काँपा। उसके मन की व्याकुलता की स्थिति का ज्ञान हमारी मनोशक्ति के अन्दर आनेवाला नहीं है! । ७६५

अक्कालमुम् वेळ्वियित्तन् ऱुतॉडऱ्न्, ऍक्कालु नलिन्दुमॉ रीऱुबॅऱान्
मुक्कालिन् मुडिन्दिडु वान्मुयल्वान्, पुक्कान विराहवन् वैहुपुनम् 766

अवरोटु—उन श्रीराम के साथ; **अ वेळ्वियिल् कालम्**—उस भाग के समय के; **अन्ऱु तॉटर्न्तु**—उस दिन से लेकर; **ऍ कालुम् नलिन्तुम्**—किसी भी तरह के क्लेश से; **ओर् ईऱु पॅऱान्**—जो मरकर अन्त नहीं पा सका; **मु कालिन्**—(वह मारीच) तीसरी बार; **मुटिन्तिटुवान् मुयल्वान्**—मरने को उद्यत होकर; **अ इराकवन्**—वे राघव; **वैकु पुनम्**—जहाँ रहते थे, उस वन में; **पुक्कान्**—आ पहुँचा। ७६६

(श्रीराम के साथ इसके पहले दो बार सामना हो गया था। एक बार विश्वामित्र के यज्ञ के अवसर पर हुआ। दूसरी बार वह दो मित्रों के साथ मृग का वेश धारण करके श्रीरामचन्द्र के सामने गया था। श्रीराम के शरों ने उसके दोनों मित्रों का नाश किया। मारीच बचके आ गया। उसका संकेत पद्य-संख्या ७५८ में है; फिर ७६४ में भी है, फिर इस पद्य में भी आता है। आगे ७९३वें पद में भी पाया जायगा।) जिस दिन पहले पहल उसे श्रीराम के साथ संपर्क हुआ था, उस दिन से लेकर वह बहुत क्लेश उठा रहा है। तो भी वह मरा नहीं था। अब उसने निश्चय कर लिया कि मैं तीसरी बार जाऊँगा और मर जाऊँगा। मरने की तैयारी के साथ वह, श्रीराम जहाँ रहे उस वन में आ पहुँचा। ७६६

❀ तन्मानमि लाद तयङ्गॉळिशाल्, मिन्मानमु मण्णुम् विळङ्गुवदोर्
पॊन्मानुरु वङ्गॊडु पोयिनन्ताल्, नन्मानै याडन्ै नाडुऱुवान् 767

नल् मान् अनैयाळ् तनै—उत्तम मृगनिभ उस (देवी) को; **नाटु उऱुवान्**—खोजते हुए; **तन् मानम् इलात**—अनुपम; **तयङ्कु ऑळि चाल्**—चमकदार कान्ति के साथ; **मिन् मानमुम्**—विद्युतसहित आकाश में; **मण्णुम्**—भू पर; **विळङ्कुवतु ओर्**—द्युतिमान एक; **पॊन् मान् उरुवम् कॊंटु**—स्वर्ण-मृग का रूप लेकर; **पोयिनन्**—वहाँ गया। ७६७

उत्तम हरिणी-तुल्य सीतादेवी को ढूँढ़ते हुए मारीच एक स्वर्णमृग का रूप धरकर आया। वह अनुपम मृग था। विद्युत सहित आकाश में या भू पर उससे तुल्य कोई मृग नहीं था। ७६७

कलैमान्मुद लायिन कण्डवॅलाम्, अलैमानुऱु माशैयिल् वन्दनवाल्
निलैयामन वञ्जनै नेयमिला, विलैमादर्हण् यारुम् विळुन्दॅन्नवे 768

निलैया मनम्—चंचल-मना; **वञ्चनै**—वंचक; **नेयम् इला**—स्नेहहीन; **विलै मातर् कण्**—वेश्या पर; **यारुम्**—सभी कामुक; **विळुन्तनु ऎन्नवे**—मोह में गिर (पड़) जाते हैं जैसे; **कण्ट**—उसको जिन्होंने देखा, वे; **कलै मान् मुतल् आयिन**—बारहसींगा,

हरिण, मृग आदि; अलै मात्र उरुम् आचैयिन्–तरंगों के समान उठनेवाली इच्छा के साथ; वन्तन–उसकी ओर आये । ७६८

उसको देखकर उस वन में रहे सभी वारहसींगे, हरिण, मृग आदि उसकी ओर ऐसे आकृष्ट होकर भागे, जैसे चंचलमना, कपटी और स्नेह-हीन वेश्या के मोह में पड़कर कामुक सभी दौड़ पड़ते हैं । ७६८

ॐ पॉय्यामॅन वोडु पुरञ्जॉलिनाल्, नैयाविडै नोव नडन्दन्नळाल्
वैदेविदन् वाल्वळै मॅन्गैयॅनुम्, कॉय्यामल रान्मलर् कॉय्हुरुवान् 769

वैतेवि–वैदेही; तन्–अपने; वाल् वळै–उज्ज्वल कंकणधारी; मॅल् कै ॲनुम्–कोमल हाथ रूपी; कॉय्या मलराल्–जिनको तोड़ा नहीं गया, उन कमलसुमन द्वारा; मलर् कॉय्कुरुवान्–पुष्प-चयन करने हेतु; पुरम्–अन्य दर्शक; पॉय् आम् ॲन्न ओतुम्–जिसका अभाव कहते हैं; चॉलिताल्–उस कथन के अनुसार; नैया इटै–दुःखी कमर के; नोव–संकट उठाते; नटन्ततळ्–चलकर गयी । ७६९

तब वैदेही पुष्प-चयन के लिए निकल आयीं । उसके हाथ उज्ज्वल वलय-भूषित और उन कमल-सम सुन्दर थे जो तोड़े नहीं गये थे । उसकी कमर के सम्बन्ध में दूसरे सन्देह करते थे और कहते थे कि इसके कमर नहीं है । वह ऐसी क्षीण कमर को दुःख देती हुई वैसे सुन्दर हाथों से पुष्प-चयन करने के लिए निकल पड़ी । ७६९

उण्डाहिय केट्टुडै यार्तुयिल्वाय्, ऑण्डानु मियैन्दियै यावुरुवम्
कण्डारॅन लाम्वहै कण्डनळाल्, पण्डारु मुऱाविडर्प् पाडुरुवाळ् 770

पण्टु आरुम् उऱा–इसके पूर्व किसी से अननुभूत; इटर्प्पाटु–संकट; उरुवाळ्–जिन पर आने को था, उन देवी ने; उण्टाकिय केटु उटैयार्–संकटग्रस्त लोगों ने; तुयिल्वाय्–निद्रा में; ऑण् तातुम् इयैन्तु इयैया–असंभाव्य; उरुवम् कण्टार्–रूप देख लिया हो; ॲनल् आम् वकै–ऐसा; कण्टनळ्–(मायामृग को) देखा । ७७०

सीताजी पर संकट आनेवाला था । वह भी ऐसा जैसा किसी पर पहले कभी नहीं आया था । उनकी दृष्टि में वह स्वर्णमृग पड़ा । उन्होने उसे ऐसे संकटग्रस्त स्वप्नद्रष्टा के समान देखा, जिसे निद्रा में बिलकुल असंभाव्य कोई अनोखा रूप दिखाई दिया हो । ७७०

काणाविडु कैतव मॅन्रुणराळ्, पेणाद नलङ्गॉडु पेणिन्नळाल्
वाणाळै यिरावणन् माळ्दलाल्, वीणाळि लऱम्बुवि मेवुदलाल् 771

अ इरावणन्–उस रावण की; वाळ् नाळ्–आयु के दिन; माळुतल् आल्–समाप्त होने को थे; वीळ् नाळ् इल्–जिसका मरण-दिन नहीं होता; अऱम्–उस धर्म का; पुवि मेवुतलाल्–भूमि पर उत्थान होने को था, इसलिए; काणा–(देवी ने उसको) देखकर; इतु कैतवम्–यह कैतव है; ॲन्रु उणराळ्–यह न जानकर; पेणात नलम् कॉटु–अभूतपूर्व आनन्द मानकर; पेणितळ्–उसको चाहा । ७७१

रावण की आयु को खतम होनी थी। अनश्वर धर्म के भू पर उत्थान का काल आ गया था। इसलिए देवी सीता ने उसको देख लिया। पर उन्हें मालूम नहीं था कि यह कैतव है। अब तक ऐसा आनन्द प्राप्त नहीं था। यह समझकर उन्होंने उसकी चाह की। ७७१

*** नॆऱ्ऱिप्पिऱै याण्मुन् निन्ऱिडलुम्, मुऱ्ऱिप्पॊळि कादलिन् मुन्दुरुवाळ्**
पऱ्ऱित्तरु हॆन्बॆ नॆन्नप्पदैया, वॆऱ्ऱिच्चिलै वीरनै मेविन्नाळाल् 772

नॆऱ्ऱि पिऱैयाळ् मुतम्–(चन्द्र-) कला-सम भाल से भूषित देवी के सामने; निन्ऱिटलुम्–हिरण खड़ा हुआ तो; मुऱ्ऱि पॊळि–भरकर बढ़नेवाले; कातलिन् मुन्तुरुवाळ्–इच्छा से जाती हुई वह; पऱ्ऱि तरुक–पकड़कर दीजिए; ॲन्पॆन्–कहूँगी; ॲत–सोचकर; पतैया–उतावली से; वॆऱ्ऱि चिलै वीरनै–विजय कोदण्डपाणी वीर; मेविन्नाळ्–के पास पहुँची। ७७२

वह हरिण चन्द्रललाट सीता के सामने जाकर खड़ा हुआ। तब उनके मन में उसके प्रति अपार राग उत्पन्न हुआ और उमड़ आया। 'मैं जाऊँगी और उनसे कहूँगी कि इसे पकड़कर दीजिए' —ऐसा सोचते हुए वह सवेग विजय-कोदण्ड-पाणी श्रीराम के पास जा पहुँचीं। ७७२

आणिप्पॊन्नि न्नाहिय दायहदिराल्, शेणिऱ्चुडर् हिन्नुऱु तिण्शॆविकाल्
माणिक्क मयत्तॊरु मानुळदाल्, काणत्तहु मॆन्ऱन्ऩळ् कैतॊळुवाळ् 773

कै तॊळुवाळ्–हाथ जोड़े नमस्कार करती हुई; आणि पॊत्तिल् आकियतु–उत्तम स्वर्ण-निर्मित; आय् कतिराल्–शरीर की श्रेष्ठ कान्ति के कारण; चेणिल् चुटर्किन्ऱतु–बहुत दूर तक ज्योतिर्मय दिखनेवाला; तिण् चॆवि काल्–बलवान कान और पैर; माणिक्क मयत्तु–माणिक्यमय; ऒरु मान् उळतु–एक हिरण आया है; आल्–जो; काणत्तकुम्–वह देखने योग्य है; ॲन्ऱत्तळ्–कहा (सीताजी ने)। ७७३

जाकर उन्होंने श्रीराम से हाथ जोड़कर विनय की। खरे स्वर्ण का बना, अपनी देह की कान्ति के कारण बहुत दूर तक द्युतिमान दिखता हुआ, माणिक्य के पैरों और कानों के साथ एक हिरन आया हुआ है। वह आपसे देखने योग्य है। ७७३

इम्मान्नि निलत्तिन्नि लिल्लैयॆना, ॲम्मान्नि दॆन्नच्चिऱि दॆण्णलशॆयान्
शॆम्मानवळ् शॊऱ्कॊडु तेमलरोन्, अम्मानु मरुत्तिय नायिन्नाल् 774

इ मान्–यह मृग; इ निलत्तिल् इल्लै–इस भूमि पर (प्राप्य) नहीं; ॲन्ना–यह बात; ॲ मान् इतु–यह कैसा हरिण; ॲत्त–यह बात; चिऱितु ॲण्णल् चॆयात्–कुछ भी नहीं सोचकर; ते मलरोन्–शहद-भरे कमल पर आसीन; अम्मातुम्–(ब्रह्मा के) पिता (के अवतार) श्रीराम भी; चॆम् मात्तवळ्–सुन्दर (लाल) रंग की सीताजी का; चॊल् कॊटु–वचन मानकर; अरुत्तियन् आयित्तन्–इच्छुक हुए। ७७४

श्रीराम ने यह सुना। (आश्चर्य है कि) उन्हें यह नहीं सूझा कि

ऐसा मृग अनहोनी बात है। यह भी विचार नहीं आया कि यह कैसा मृग है ? बिना किसी सोच-विचार के श्रीराम, जो शहदयुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा के भी विधाता विष्णु के अवतार थे, देवी की बात पर विश्वास करके उसको पकड़ने को इच्छुक हो गये। ७७४

आण्डङ्गिळै योनुरै याडिन्नाल्, वेण्डुम्मॆन्न लाम्बिळै वन्ऱिदॆनाप्
पूण्डुत्तुपॊ लङ्गॊडि पोयदुनाम्, काण्डुम्मॆनुम् वळ्ळल् करुत्तुणर्वान् 775

पूण् तुञ्चु–आभरण-युक्त; पॊलन् कॊटि–स्वर्ण-लता (सी देवी); पोय् अतु नाम् काण्टुम्–जाकर हम उसे देखें; ऎंतुम्–कहनेवाले का; वळ्ळल् करुत्तु–उदार प्रभु का मन; उणर्वान्–भाँपकर; इळैयोन्–लघुराज; आण्टु–तब; वेण्टुम् ऎंतल् आम्–चाहनीय; विळैवु अन्ऱु इतु–चाह के योग्य नहीं है यह; ऎंता–ऐसा सोचकर; अङ्कु–वहाँ; उरै आटितन्–वचन कहने लगे। ७७५

'हे आभरणालंकृता देवी ! हम जाकर देखेंगे' यह प्रभु ने कहा। पास जो रहे उन लघु भ्राता लक्ष्मण ने श्रीराम का विचार ताड़ लिया। तब उन्होंने सोचा कि यह चाहनीय इच्छा का विषय नहीं। इसलिए वह श्रीराम से निवेदन करने लगे। ७७५

कायङ्गन हम्मणि काल्शॆविवाल्, पायुम्मुरु वोडिदु पण्बलवाल्
मायम्मॆन्न लन्ऱि मन्नक्कॊळवे, एयुम्मिऱै येयुऱ वॆन्ऱन्नाल् 776

कायम् कत्तकम्–शरीर स्वर्णमय; काल् चॆवि वाल्–पैर, कान और दुम; मणि–माणिक्यमय; पायुम् उरुवोटु इतु–चौकड़ी भरनेवाला यह; पण्पु अल आल्–स्वाभाविक नहीं है, इसलिए; मायम् ऎंतल्–माया कहना चाहिए; अन्ऱि–दूसरा; इऱै–प्रभु; मन्नम् कॊळवे–मानना; ऐयुऱवु एयुम्–संशययुक्त होगा; ऎंऱतन्–कहा। ७७६

प्रभु ! सोचिए। शरीर स्वर्ण का, पैर, कान और दुम माणिक्य के; ऐसा मृग चौकड़ी भरता है ! यह बिलकुल अप्राकृतिक है ! इसलिए कोई माया ही माननी है ! उसके विपरीत इसको सच्चा मानना संशय-युक्त है। ७७६

निल्लावुल हिन्निलै नेर्मैयिनाल्, वल्लारु मुणर्न्दिलर् मन्नुयिर्दाम्
पल्लायिर कोडि परन्दुळवाल्, इल्लादन विल्लै यिळङ्गुमरा 777

इळम् कुमरा–बाल कुमार; नेर्मैयिताल् वल्लारुम्–सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी; निल्ला उलकिन् निलै–इस नश्वर जगत का स्वभाव; उणर्न्तिलर्–पूर्ण रूप से नहीं जानते; मन् उयिर् ताम्–अक्षय जीव-जन्तु; पल् आयिरम् कोटि–अनेक सहस्र कोटि; परन्तु उळ आल्–रूप में विस्तृत हैं; इल्लातत इल्लै–असम्भव कुछ नहीं है। ७७७

तब श्रीराम ने गम्भीर विचार व्यक्त किये। बालकुमार ! सूक्ष्मदर्शी ज्ञानी भी इस चलनशील संसार का सारा रहस्य नहीं जान पाते।

अक्षय जीव अनेक सहस्र कोटि रूपों में विपुल रीति से पाये जाते हैं। इसलिए असंभाव्य कुछ नहीं है। ७७७

ऍन्नॅन्रु नितैन्द दिळैत्तुळदाम्, कन्नङ्गळिल् वेरुळ काणुदुमाल्
पॊन्निन्कुळिर् मेनि पॊरुन्दिनवेळ्, अन्नङ्गळ् पिऱन्द दऱिन्दिलैयो 778

ऍन् ऍन्रु नितैन्तु–क्या समझकर; अतु इळैत्तु उळतु आम्–तुमने ऐसी बात कही थी; कन्तङ्कळित्–अपने कानों से; वेरु उळ काणुतुम–कितने ही अपरिचित अन्य पदार्थ देखते हैं (सुनकर जान लेते है); पॊन्तित्–स्वर्णमय; कुळिर् मेति पॊरुन्तित–मनोरम रूपधर; एळ् अन्तङ्कळ् पिऱन्ततु–सात हंस पहले जनित थे; अऱिन्तिलैयो–नहीं जानते क्या। ७७८

पर पता नही कि तुम क्या सोचकर किसके आधार पर यह कह रहे हो। कितने ही पदार्थ है, जिनके बारे में हम सुनते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। (भरद्वाज मुनि के) सात स्वर्णशरीरी हंस (पुत्रों के रूप में) पैदा हुए थे —क्या तुम यह वृत्तान्त नहीं जानते ? । ७७८

मुऱैयुमुडि वुम्मिलै मॊय्युयिरॅन्, ऱिऱैवनिळै योनॊडि यम्बिननाल्
पऱैयुन्दुणै यन्नदु पन्नॅऱिपोय्, मऱैयुम्मेन वेळै वरुन्दिनळाल् 779

इऱैवन्–(श्रीराम) प्रभु के; मॊय् उयिर्–(इस संसार को) भरनेवाले जीवों की; मुऱैयुम् मुटिवुम् इलै–उत्पत्ति का प्रकार और नाश, हम नहीं जानते; ऍन्रु–ऐसा; इळैयातॊटु–भाई से; इयम्पितन्–कहा; एळै–अबला ने; पऱैयुम् तुणै–वार्तालाप के अन्दर; अन्ततु–वह; पल् नॅऱि पोय्–बहुत दूर जाकर; मऱैयुम्–छिप जायगा; ऍन–ऐसा; वरुन्तिताळ्–दुःख के साथ बोली। ७७९

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता को समझाया कि यह संसार अक्षय जीव-जन्तुओं से भरे हैं। उन सभी के जन्म-मरण के प्रकार हम नहीं जान सकते। तब देवी ने चिन्ता व्यक्त की कि आप जब तक वार्तालाप में लगे रहेंगे तब तक यह हरिण बहुत दूर चला जायगा और आँखों से ओझल हो जायगा। ७७९

अत्तैयवळ् करुत्तै युन्ना वञ्जनक् कुन्ऱ मन्नान्
पुत्तैयिळै काट्ट ऍन्रु पोयिनान् पॊऱाद शिन्दैक्
कन्नैहळर् ऱम्बि पिन्बु शॆन्ऱनन् कडक्क वॊण्णा
विनैयॆन वन्दु निन्ऱ मानॆदिर् विळित्त दन्ऱे 780

अत्तैयवळ् करुत्तै–उनका विचार; उन्ता–सोचकर; अञ्चन कुन्ऱम् अन्तान्–अंजन-गिरि-तुल्य श्रीराम; पुत्तै इळै–आभरणभूषिता; अतु काट्टु–उसे दिखाओ; ऍन्रु–कहकर; पोयितान्–(देखने) गये; पॊऱात चिन्तै–अधीर-मन; कत्तै कळल् तम्पि–मुखरित पायलधारी भ्राता लक्ष्मण; पिन् चॆन्ऱतन्–उनके पीछे गया; कटक्क ऒण्णा–अलंघ्य; वित्तै ऍन–प्रारब्ध के समान; वन्तु निन्ऱ–जो आकर खड़ा रहा; मान्–उस हरिण ने; ऍतिर् विळित्ततु–सामने आकर उन्हें देखा। ७८०

श्रीराम ने देवी का दुःख पहचाना। अंजनगिरि-तुल्य प्रभु श्रीराम ने उनको आभरणभूषित प्यारी देवी, सम्बोधित कर कहा कि दिखाओ। सीता चलीं और श्रीराम भी चले। इसको देखकर मुखरित पायलधारी लक्ष्मण चुप नही रह सके। अधीरमन हो वह भी उनके पीछे-पीछे गये। अलंघ्य प्रारब्ध के समान उस मायामृग ने उनके सामने आकर उनको ताका। ७८०

नोक्किय मानै नोक्कि नुदियिऴै मदियि ऩीऩ्ऱुम्
तूक्किल नऩ्ऱि दॆऩ्ऱा ऩदऩ्बॊरुळ् शॊल्ल लाहुम्
शेक्कैयि नरवि ऩीङ्गिप् पिऱन्ददु तेवर् शॆय्द
पाक्किय मुडैमै यऩ्ऱो वऩ्ऩदु पळुदु पोमो 781

नोक्किय मानै–जो ताक रहा था, उस हरिण को; नोक्कि–देखकर; नुति इऴै मतियिऩ्–अपनी सूक्ष्म बुद्धि से; ऒऩ्ऱुम् तूक्किलऩ्–श्रीराम ने कुछ तर्क नहीं किया; इतु नऩ्ऱु–यह बड़ा अच्छा है; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा; अतऩ् पॊरुळ् चॊल्लल् आकुम्–उसका (गूढ़) अर्थ हम कहेंगे; अरवु चेक्कैयिऩ्–शेष-शय्या से; नीक्कि–अलग आकर; पिऱन्ततु–भू पर अवतार लेना; तेवर् चॆय्त–देवों के कृत; पाक्कियम् उटैमै अऩ्ऱो–पुण्य से प्राप्त फल है न; अऩ्ऩतु–वह; पळुतु पोमो–व्यर्थ जायगा क्या। ७८१

श्रीराम ने उस हरिण को देखा जो उनको ताक रहा था। उन्होंने कोई तर्क-वितर्क नही किया। कहा कि शाबाश! यह बहुत अच्छा है! इसका गूढ़ अर्थ क्या है? —हम कहें? वे शेषशय्या त्यागकर भूमि पर अवतरित हुए —यह देवों के पुण्य का फल था। वह वृथा जायगा क्या? 'अच्छा' का संकेत उनके पुण्य की ओर है। ७८१

ऍऩ्ऩॊक्कु मॆऩ्ऩ लाहु मिळैयव विदऩै नोक्काय्
तऩ्ऩॊक्कु मॆऩ्ब दल्लाऱ् ऱऩैयॊक्कु मुवमै युण्डो
पऩ्ऩक्क तरळ मॊक्कुम् पशुम्बुऩ्मेऱ् पडरु मॆऩ्ना
मिऩ्ऩॊक्कुञ् जॆम्बॊऩ् मेनि वॆळ्ळियिऩ् विळङ्गुम् बुळ्ळि 782

इळैयव–अनुज भैया; इततै नोक्काय्–इस पर दृष्टि डालो; ऍऩ् ऒक्कुम्–किसके समान है; ऍऩ्तल् आकुम्–कहा जा सकता है; तऩ् ऒक्कुम्–स्वोपम है; ऍऩ्पतु अल्लाल्–इसके सिवा; ततै ऒक्कुम्–उससे तुल्य; उवमै उण्टो–उपमा होगी क्या; पल्–दाँत; नक्क तरळम् ऒक्कुम्–उज्ज्वल मोती के समान हैं; पचुम् पुल् मेल् पटरुम्–(जो) हरी घास पर लगती है, वह; मॆल् ना–मृदु जीभ; मिऩ् ऒक्कुम्–विद्युत के समान है; मेति चॆम् पॊऩ्–शरीर लाल (खरा) सोना है; पुळ्ळि–बिंदियाँ; वॆळ्ळियिऩ् विळङ्कुम्–चाँदी के समान प्रकाशमान हैं। ७८२

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा। अनुज! इसको खूब देखो। इसकी तुलना में क्या कहा जा सकता है? यह स्वोपम है। यही कहना पड़ेगा।

इसके सिवाय कोई उपमा ढूँढ़े नहीं मिलेगी। इसके दाँत उज्ज्वल मोती के समान हैं। जब इसकी जीभ हरी घास पर लगती है, तब वह बिजली के समान चमकती है! इसका शरीर लाल (खरा) स्वर्ण है और बिंदियाँ चाँदी-सी हैं। ७८२

वरिशिलै मऱैव लोत्ते मान्रिदऩ् वडिवै युऱ्ऱ
अरिवैयर् मैन्दर् यारे यादरङ् गूऱ्ह लादार्
उरुहिय मऩत्त वाहि यूर्वऩ परप्प यावुम्
विरिशुडर् विळक्कङ् गण्ड विट्टिलिऩ् वीऴ्व काणाय् 783

वरि चिलै मऱैवलोत्ते–सबन्ध-धनु-विद्या-विशारद; मात् इतन्–इस मृग का; वटिवै उऱ्ऱ–रूप जिसने देखा; अरिवैयर्–वह स्त्री; मैन्तर्–या पुरुष; यारे आतरम् कूर्कलातार्–कौन इस पर आसक्त नहीं होगा; ऊर्व–रेंगनेवाले; परप्प–उड़नेवाले; यावुम्–सभी जन्तु; उरुकिय मऩत्त आकि–द्रवितमन होकर; विरि चुटर् विळक्कम् कण्ट–विस्तारशील प्रकाशमय दीप को देखकर; विट्टिलिऩ्–पतंग जैसे; वीऴ्वत–टूट पड़ते है; काणाय्–देखो। ७८३

सबन्ध धनु के प्रयोग में निष्णात लक्ष्मण! इस हरिन को जो देखेगा, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, कौन ऐसा होगा जो इसके प्रति आसक्त नहीं होगा? रेंगनेवाले, उड़नेवाले सभी जीव-जन्तु इसके आकर्षण से द्रवीभूतमन होकर प्रकाशमय दीप पर गिरनेवाले पतंग के समान इसकी तरफ़ टूट पड़ते हैं। देखो। ७८३

आरिय ननैय कूऱ वन्नदु तन्नै नोक्किच्
चीरिय दन्ऱि तेंऱु शिन्दैयिऱ् ऱॆळिन्द तम्बि
कारिय मॅन्नै योण्डुक् कण्डदु कनह मानेल्
वेरियन् दॆरियल् वीर मीळ्वते मेन्मै यॆन्ऱान् 784

आरियन् अनैय कूऱ–आर्य श्रीराम के वह कहने पर; अन्नतु तन्नै–उस हिरण को; नोक्कि–खूब देखकर; चिन्तैयिल्–मन में; तॆळिन्त तम्पि–स्पष्ट जानकर रामानुज ने; वेरि अम् तॆरियल् वीर–सुगन्ध और सुन्दरता से भरी मालाधारी वीर; ईण्टु कण्टतु कनक मान् एल्–यहाँ दुष्ट स्वर्ण-मृग ही हो तो; कारियम् ॲन्नै–उससे हमारा कार्य क्या है; मीळ्वते मेन्मै–लौट जाना ही श्रेय है; ॲन्ऱान्–कहा। ७८४

जब आर्य श्रीराम ने यह कहा, तब लक्ष्मण, जिनके मन में स्पष्ट निश्चय था, बोले। सुगन्धित और आकर्षक मालाधारी वीर! मान लें कि यह कनकमृग है। तो हमारा उससे क्या काम है? चलिए लौट जाना ही श्रेयस्कर होगा। ७८४

अऱ्ऱवन् पहरा मुन्न मऴहनै यऴहि याऴुम्
कॊऱ्ऱवन् मैन्द मऱ्ऱैक् कुऴैवुडै युऴैयै वल्लै

पऱ्ऱित्तै तरुदि यायिऱ् पदियिडै यवदि यॆय्दप्
पॆऱ्ऱुळि यिनिदुण् डाडप् पॆऱऱ्करुन् दहैत्त दॆन्ऱाळ् 785

अऱ्ऱु अवन् पकरा मुन्नम्–वैसा उनके कहने के पूर्व ही; अळकनै–सुन्दरराज श्रीराम को; अळकियाळुम्–अनिन्द्य सुन्दरी देवी सीता ने भी; कॊऱ्ऱवन् मैन्त–चक्रवर्तीतनय; कुळैवु उटै–थकनयुक्त (या लचीले); इ उळैयै–इस मृग को; वल्लै–शीघ्र; पऱ्ऱित्तै तरुति आयिल्–पकड़कर देगे तो; अवति ऎय्त पॆऱ्ऱु–वनवास की अवधि पूरा करके; पति इटै–अपने नगर में; इनितु उण्टाट–सुख से खेलने के लिए; पॆऱऱ्कु अरुम्–अलभ्य; तकैत्ततु–श्रेष्ठतायुक्त है; ऎन्ऱाळ्–कहा। ७८५

जब लक्ष्मण यह बात कह रहे थे, तब सुन्दरी सीतादेवी ने सुन्दर श्रीराम से विनय सुनायी। चक्रवर्तीकुमार! यह थकित है (या लचीला है)। अभी इस हरिण को पकड़कर दीजिए। तो वनवास की अवधि पूरा करके अयोध्या में ले जाऊँगी और उसके साथ खेलूँगी। यह दुर्लभ श्रेष्ठ वस्तु होगी। ७८५

ऐयनुण् मरुङ्गु नङ्गै यः(ह्)दुरै शॆय्य वैयन्
शॆय्वॆन्नॆन् ऱमैय नोक्कत् तॆळिवुडैत् तम्बि शॆप्पुम्
वॆय्यवल् लरक्कर् वञ्जम् विरुम्बिनार् विनैयिऱ् चॆय्द
कैदव मानॆन् ऱण्णल् काणुदि कडैयि नॆन्ऱान् 786

ऐय नुण्–बहुत ही पतली; मरुङ्कुल् .नङ्कै–कमर की नायिका के; अ.·.तु उरै चॆय्य–वह कहने पर; चॆय्वन् ऎन्ऱु–करूँगा, ऐसा कहकर; ऐयन्–प्रभु के; अमैय नोक्क–(उस मृग को) खूब देखने पर; तॆळिवु उटै–स्पष्टचित्त; तम्पि चॆप्पुम्–अनुज ने कहा; अण्णल्–महिमावान; वञ्चम् विरुम्पित्तार्–वंचना करने के इच्छुक; वॆय्य वल् अरक्कर्–कठोर बली राक्षसों के; वित्तैयिल् चॆय्त–कार्य से आया; कैतवम् मान्–मायामृग है; ऎन्ऱु–ऐसा; कटैयिन् काणुति–अन्त में देखेंगे; ऎन्ऱान्–कहा। ७८६

जब अति क्षीण-कटि नायिका ने यह इच्छा सुनायी, तब श्रीराम ने उत्तर दिया कि ठीक, वही करूँगा। वे मृग को देखने लगे। तब लक्ष्मण, जिनके मन में कोई संशय नहीं था, बोले। महात्मा! यह मायावी, कठोर और बलवान राक्षसों के मायाकार्य से आया हुआ मायामृग है। यह आप आखिर देख लेंगे। ७८६

मायमेल् मडियु मॆन्ऱन् वाळियिन् मडिन्द पोदु
काय्शिनत् तवरॆक् कॊन्ऱु कडन्गळित् तोमु मादुम्
तूयदेऱ् पऱ्ऱिक् कोडुञ् जॊल्लिय विरण्डि नॊन्ऱु
एयदे पुरिदु मॆन्ऱा निमैयव रिडुक्कण् डीर्प्पान् 787

इमैयवर् इटुक्कण तीर्प्पान्–देवों के संकटहारी ने; मायमेल्–माया हो तो; ऎन् तन् वाळियिन्–मेरे अस्त्र से; मटियुम्–यह मरेगा; मटिन्त पोतु–जब मरेगा,

तब; काय् चित्ततु अवरै–सन्तापक कोप से युक्त उन (राक्षसों) को; कौन्ऱु–मारकर; कटऩ् कऴित्ततोमुम्–कृतकृत्य भी; आतुम्–होंगे; तूयतेल्–(वह मृग) सच्चा रहा तो; पऱ्ऱि कोटुम्–पकड़कर लायेंगे; चॊल्लिय इरण्टिऩ् ऒऩ्ऱु–उक्त दो में एक; एयतु ए–उचित जो है वही; पुरितुम्–करेंगे; ऎऩ्ऱाऩ्–बोले। ७८७

देवसंकटहरणार्थ अवतरित श्रीराम ने आश्वासन दिया। अगर यह मायामृग सावित हुआ तो यह मेरे शर से मरेगा। जब वह मरेगा तो सन्तापी व क्रोधी राक्षसों को मारने का हमारा प्रण भी पूरा होगा। अगर इसके विपरीत वह सच्चा मृग है तो पकड़कर लायेंगे। उक्त इन दो में एक, जो उचित होगा वह काम करेंगे। ७८७

पिऩ्ऩिऩ्ऱा रॆऩैय रॆऩ्ऱु मुणर्हिलॆम् बिडित्त मायम्
ॲऩ्ऩॆऩ्ऱुन् दॆरिद रेऱ्ऱाम् यावदी दॆऩ्ऱु मोराम्
मुऩ्ऩिऩ्ऱ मुऱैयि निऩ्ऱार् मुऩिन्दुळ वेट्ट मुऱ्ऱल्
पॊऩ्ऩिऩ्ऱ वयिरत् तोळाय् पुहऴुडैत् तामऩ् ऱॆऩ्ऱाऩ् 788

पॊऩ् निऩ्ऱ वयिरम् तोळाय्–सौन्दर्य-निलय वज्रस्कन्ध; पिऩ् निऩ्ऱार्–इसके पीछे हैं; ऎऩ्ऩैयर्–कौन; ऎऩ्ऱुम् उणर्किलॆम्–यह भी नहीं जानते; पिटित्त मायम् ऎऩ्–संकल्पित मायाकार्य क्या है; ऎऩ्ऱुम्–यह भी; तॆळितल् तेऱ्ऱाम्–स्पष्ट नहीं जानते; ईतु यावतु–यह (मृग) क्या है; ऎऩ्ऱुम् ओराम्–यह भी नहीं समझ पाते; मुऩ् निऩ्ऱ–प्राचीन; मुऱैयिऩ् निऩ्ऱार्–नीतिमार्ग पर स्थित बड़े लोग; मुऩिन्तु उळ–जिसको धिक्कारते हैं; वेट्टम् मुऱ्ऱल्–वह मृगया-कर्म; पुकऴ् उटैत्तु आम् अऩ्ऱु–श्लाघनीय कार्य नहीं है; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ७८८

तब लक्ष्मण ने तर्क किया। सौन्दर्य-(विजय श्री-) निलय वज्रस्कन्ध! हम यह नही जानते कि इसके पीछे कैसे, कितने शत्रु हैं? उनके मन में क्या वंचना है? —यह भी नही जानते। यह मृग भी सचमुच क्या है —यह भी विदित नहीं। हमारे लिए मृगया भी श्रेयस्कर नही है, क्योंकि प्राचीन धर्मावलम्बी बड़ों ने उसे धिक्कारा है। ७८८

पहैयुडै यरक्क रॆऩ्ऱुम् पलरॆऩ्ऱुम् बयिलु मायम्
मिहैयुडैत् तॆऩ्ऱुम् पूण्ड विरदत्तै विडुदु मॆऩ्ऱाल्
नहैयुडैत् ताहु मऩ्ऱे यादलि नलऩे यऩ्ऩत्
तहैयुडैत् तम्बिक् कऩ्ऩाट् चदुमुहऩ् ऱादै शॊऩ्ऩाऩ् 789

पकै उटै अरक्कर् ऎऩ्ऱुम्–शत्रु राक्षस, यह वात; पलर् ऎऩ्ऱुम्–वे अनेक हैं, यह वात; पयिलुम् मायम्–उनका मायाकार्य; मिकै उटैत्तु–अत्यधिक है; ऎऩ्ऱुम्–यह वात कहना; पूण्ट विरतत्तै–संकल्पित व्रत को; विटुतुम् ऎऩ्ऱल्–छोड़ देंगे, यह कहना होगा; नकै उटैत्तु आकुम् अऩ्ऱे–वह परिहास का विषय होगा न; आतलिऩ्–इसलिए; नलऩे–(मेरा निश्चय) अच्छा ही है; ऎऩ्ऩ–ऐसा; अ नाळ्–तब; चतुमुकऩ् तातै–चतुर्मुख के धाता ने; चॊऩ्ऩाऩ्–कहा। ७८९

तव चतुर्मुख ब्रह्मा के धाता श्रीविष्णु के अवतार श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाया कि ये शत्रु राक्षस हैं, वे अनेक हैं, अत्यन्त मायावी हैं —यह सब कहने का अर्थ यही होगा कि हम अपनाये गये व्रत से अलग हटते हैं। वह परिहसनीय बात होगी न ? इसलिए यही, यानी मायामृग हो तो मारना, सच्चा मृग हो तो पकड़ लाना, अच्छा होगा। ७८९

❀ अडुत्तवु मॅण्णिच् चॅय्द लण्णले यमैदि यन्ऱो
विडुत्तिदन् पिन्निन् ऱार्हळ् पलरुळ रॅनिनुम् विल्लाल्
तॉडुत्तुवॅम् बहळि तूवित् तॉडर्न्दनॅन् विरैन्दु शॅन्ऱु
पडुक्कुवॅ नदुवन् ऱाहिर् पऱ्ऱिनन् कॉणर्वॅ नॅन्ऱान् 790

अण्णले–महात्मा; अटुत्तवुम् ऍण्णि चॅय्तल्–आगत कार्य भी विचारकर करना; अमैति अन्ऱो–उचित है न; विटुत्तु–(इसको) भेजकर; इतन् पिन् निन्ऱार्कळ्–इसके पीछे जो हैं; पलर् उळर् ऍतितुम्–अनेक होंगे तो भी; वॅम् पकळि–भयंकर शरों को; विल्लाल् तॉटुत्तु–धनु में संधान करके; तूवि–चलाकर; तॉटर्न्ततॅन्–अनुगमन करता हुआ; विरैन्तु चॅन्ऱु–त्वरित गति में जाकर; पटुक्कुवॅन्–मार दूँगा; अतु अन्ऱु आकिल्–वह (मायामृग) नहीं हो तो; पऱ्ऱितन् कॉणर्वॅन्–पकड़कर लाऊँगा; ऍन्ऱान्–कहा। ७९०

लक्ष्मण ने तव दूसरी वात कही। महात्मन् ! निश्चित कार्य भी सोच-विचारकर करना उचित होगा न ? इसको आगे भेजकर आड़ में जो खड़े हैं, उनकी संख्या बहुत बड़ी हो तो भी मैं अपने धनुष से शर चलाकर उन्हें मार दूँगा। अगर ऐसी वात नहीं है और यह सच्चा मृग है तो मैं पकड़ लाऊँगा। मुझे जाने दीजिए। ७९०

❀ आयिडै यन्न मन्ना ळमुदुहुत् तनैय शॅय्य
वायिडै मळलै यिन्शॉर् किळियिनुङ् गुळरि माळ्हि
नायह नीये पऱ्ऱि नल्हलै पोलु मॅन्नाच्
चेयरिक् कुवळै मुत्तम् जिन्दुबु शीऱिप् पोनाळ् 791

अ इटै–उस समय; अन्नम् अन्नाळ्–हंसिनी-सी सीतादेवी; माळ्कि–व्याकुल होकर; अमुतु उकुत्तु अनैय–अमृत रिसती हो जैसा; चॅय्य वाय् इटै–लाल मुख से; मळलै इन् चॉल्–अस्पष्ट मधुर वोली में; किळियितिल् कुळऱि–शुक के समान तुतलाती हुई; नायक–नाथ; नीये पऱ्ऱि–आप ही पकड़कर; नल्कलै पोलुम्–नहीं देंगे क्या; ऍन्ना–कहकर; चेय् अरि–लाल रेखाओं से युक्त; कुवळै–कुवलय-पुष्पों (आँखों) से; मुत्तम् चिन्तुपु–मोती (अश्रु) गिराते हुए; चीऱि पोनाळ्–रोष के साथ चलीं। ७९१

तभी हंसिनी-सी सीताजी ने दुःखाक्रान्त होकर अपना लाल मुख खोल कर अमृत रिसती-सी तुतलाती बोली में पूछा कि नाथ ! क्या आप उसे

पकड़कर नहीं देंगे ? फिर लाल डोरों से युक्त कुवलय-सम आँखों से अश्रुकण गिराती हुई वह रोष के साथ वहाँ से चलीं। ७९१

❀ पोऩवळ् पुलवि नोक्किप् पुरवलऩ् पॉलऩ्गॉ डाराय्
मादिदु नाऩे पऱ्ऱि वल्लैयिऩ् वरुवॆ ऩीयिक्
काऩियऩ् मयिलऩ् नाळैक् कात्तऩै यिरुत्ति यॆऩ्ऩा
वेऩ्हु शरमुम् विल्लुम् वाङ्गिऩऩ् विरैय लुऱ्ऱाऩ् 792

पोऩवळ्–गमनशील उनका; पुलवि नोक्कि–रोष देखकर; पुरवलऩ्–लोक-रक्षक श्रीराम ने; पॉलऩ् कॊळ् ताराय्–सुन्दर मालाधारी; माऩ् इतु–यह हरिण; नाऩे पऱ्ऱि–मैं ही जाकर पकड़कर; वल्लैयिल्–शीघ्र; वरुवेऩ्–आऊँगा; नी–तुम; इ काऩ् इयल् मयिल् अऩ्ऩाळै–इस वनमयूरनिभ देवी को; कात्तऩै इरुत्ति–रक्षा करते रहो; ऎऩ्ऩा–कहकर; वेल् नकु चरमुम्–शक्ति-सम शर और; विल्लुम्–धनु को; वाङ्कितऩ्–ग्रहण करके; विरैयल् उऱ्ऱाऩ्–शीघ्र जाने लगे। ७९२

लोकरक्षक श्रीराम ने गमनशील सीताजी का रोष देखा। उन्होंने झट लक्ष्मण से कहा— सुन्दर मालाधारी ! इस मृग को मैं ही जाकर पकड़ लाऊँगा। तब तक वन-मयूरनिभ सीता की रक्षा करते रहो। फिर वे शक्तिसदृश शर और धनुष लेकर सवेग जाने लगे। ७९२

❀ मुऩ्ऩमु माऩाय् वन्द मूवरि लॊरुवऩ् पोऩाऩ्
अऩ्ऩमा रीश ऩॆऩ्ऱे ययिऱ्ऱऩॆ ऩिदऩै यैया
इऩ्ऩमुङ् गाण्डि वाऴि येहॆऩ विरुहै कूप्पिप्
पॊऩ्ऩऩाळ् पुक्क शालै कात्तऩऩ् पुऱत्तु निऩ्ऱाऩ् 793

ऐया–प्रभु; वाऴि–चिरजीव रहिए; मुऩ्ऩमुम् माऩाय् वन्त–पहले भी हरिणों के रूप में आये हुए; मूवरिल्–तीन में; ऒरुवऩ् पोऩाऩ्–एक बचकर चला गया; अऩ्ऩ मारीचऩ् ऎऩ्ऱे–वही मारीच, ऐसा; इतऩै अयिर्त्तऩॆऩ्–इस पर संदेह करता हूँ; इऩ्ऩमुम् काण्टि–आप भी जान लेंगे; एकु ऎऩ–चलिए, ऐसा कहकर; इरु कै कूप्पि–अपने दोनों हाथ जोड़कर; पॊऩ् अऩाळ् पुक्क चालै–स्वर्ण-सी सुन्दरी सीता-देवी जिसमें प्रविष्ट हुईं, उस पर्णशाला के; पुऱत्तु–बाहर; कात्तऩऩ्–रक्षण करते हुए; निऩ्ऱाऩ्–खड़े रहे। ७९३

उस समय भी लक्ष्मण ने सचेत किया। प्रभु ! जय हो आपकी ! चिरजीव रहें। पहले तीन हरिण आये थे। उनमें दो मरे; एक बचकर भाग गया। यह वही (बचा) मारीच है —ऐसा सन्देह करता हूँ। आप भी यह सत्य जान लेंगे; जाइए। फिर वे दोनों हाथ जोड़कर स्वर्ण-सम सुन्दरी सीता जिस पर्णशाला में प्रविष्ट हुई थी, उसके बाहर जाकर द्वार पर पहरेदार के रूप में खड़े रह गये। ७९३

❁ मन्दिरत् तिळैयोन् शॊन्न वाय्मॊऴि मनत्तुट् कॊळ्ळान्
शन्दिरर् कुवमै शान्ऱ वदनत्ताळ् शलत्तै नोक्किच्
चिन्दुरप् पवळच् चॆव्वाय् मुऱुवलन् शिहरच् चॆव्विच्
चुन्दरत् तोळि नानम् मानिनैत् तॊडर लुऱ्ऱान् 794

चिकर चॆव्वि–शिखर-सम श्रेष्ठ; चुन्तर तोळितान्–और सुन्दर भुजाओं से युक्त श्रीराम ने; मन्तिरत्तु इळैयोन्–मंत्रणा में छोटे भाई के कहे; वाय् मॊऴि–सत्य वचन को; मनत्तु उळ् कॊळ्ळान्–मन में नहीं लिया; चन्तिरर्कु उवमै चान्ऱ–चन्द्र से उपमेय; वतनत्ताळ्–आनन की सीतादेवी के; चलत्तै नोक्कि–रोष का स्मरण कर; चिन्तुरम्–लाल; पवळ–प्रवाल से; चॆम् वाय्–लाल अधर पर; मुऱुवलन्–मुस्कुराहट दिखाते हुए; अ मानिनै–उस हरिण का; तॊटरल् उऱ्ऱान्–पीछा करने लगे। ७९४

पर्वतशिखरों के समान कन्धों से युक्त श्रीराम ने अच्छे सलाहकार अपने छोटे भाई का वचन स्मरण नहीं किया। पर उन्हें चन्द्रानना सीताजी का कोप ही स्मरण आया। सिंदूर-सम लाल अधर पर हँसी प्रकट करते हुए वे मृग का पीछा करने लगे। ७९४

❁ मिदित्तदु मॆल्ल मॆल्ल वॆरित्तदु वॆरुवि मीदिल्
कुदित्तदु शॆवियै नीट्टिक् कुरबद मुरत्तैक् कूट्टि
उदित्तॆऴु मूदै युळ्ळ मॆन्ऱिवै युरुवच् चॆल्लुम्
गदिक्कॊरु कल्वि वेऱे काट्टुव दॊत्त दन्ऱे 795

मॆल्ल मॆल्ल मितित्ततु–उस मृग ने पहले धीरे-धीरे डग भरे; वॆरित्ततु–टुकुर-टुकुर ताका; वॆरुवि–भयातुर-सा; मीतिल् कुतित्ततु–ऊपर उछला; चॆवियै नीट्टि–कानों को तानकर; कुरपतम्–खुरों को; उरत्तै कूट्टि–छाती से लगाकर; उतित्तु ऎऴुम् ऊतै–उठकर ऊपर बहनेवाली हवा और; उळ्ळम् ऎन्ऱु इवै–मन आदि इनको; उरुव चॆल्लुम्–जो भेदकर चलते हैं; कतिक्कु–गति में; ऒरु कल्वि वेऱे–एक नया पाठ; काट्टियतु–सिखाता हो; ऒत्ततु–ऐसा (भागा)। ७९५

उस हरिण ने पहले धीरे-धीरे डग भरे। कुछ देर खड़ा होकर ताका। फिर वह डरा हुआ-सा आकाश में उछला। कान खड़े करके खुरसहित पैरों को छाती से लगाकर वह इतनी तीव्रगति से दौड़ा कि बहती हवा और उड़ता मन भी उससे उस विषय में शिक्षा ग्रहण कर ले! । ७९५

नीट्टिना नुलह मून्ऱु निन्ऱॆडुत् तळन्द पादम्
मीट्टन्दा नीट्टर् कम्मा वेरुमो रण्ड मुण्डो
ओट्टिनान् ऱॊडरन्द दॆन्नै यॊऴिवऱ निऱैन्द तन्मै
काट्टिना नन्ऱु शॊन्ऱ कडुमैयार् कणिक्कर् पालार् 796

निन्ऱु ऎटुत्तु–(त्रिविक्रमावतार के संदर्भ में) स्थित होकर फिर उठाकर; मून्ऱु उलकम्–तीनों लोकों को; अळन्त पातम्–जिनसे नापा, उन चरणों को;

नीट्टितान्–(श्रीराम ने) बढ़ाया; मीट्टुम् नीट्टर्कु–फिर से पैर बढ़ाने (नापने) के लिए; वेऱुम् ओर् अण्टम् उण्टो–अन्य अण्ड भी है क्या; तॉटर्न्तु ओटितान् ऍन्तै–फिर पीछे लगे दौड़े क्यों; ऑऴिवु अऱ–अखण्ड; निऱैन्त तन्मै–सर्वव्यापी भाव को; काट्टितान्–दरसाया; अन्ऱु चॅन्ऱ कटुमैयै–उस दिन की उनकी गति की तीव्रता को; आर् कणिक्कर् पालार्–कौन मापने में समर्थ है । ७९६

श्रीराम अपने पैरों को बढ़ाकर उसके पीछे सर्वत्र दौड़े । उन्हीं चरणों ने त्रिविक्रमावतार के सन्दर्भ में तीनों लोकों को नापा था । कवि पूछते हैं कि अब नापने के लिए कौन सा अण्ड है कि वे चरण इस तरह बढ़ते हैं? उत्तर वे ही देते हैं कि सो बात नहीं । बल्कि वे अपने सर्वव्यापिता को दरसाने के लिए इस तरह सर्वत्र चलते हैं । उनकी तीव्र-गति ऐसी थी कि यही मालूम होता था कि वे सर्वत्र हैं । तो उनकी गति का माप कौन कर सकेगा? । ७९६

❀ कुन्ऱिडै यिवरु मेहक् कुऴुविडैक् कुदिक्कुङ् गूडच्
चॅन्ऱिडि लहलुन् दाऴिऱ् ऱीण्डलान् दन्मैत् ताहुम्
निन्ऱदे पोल नीङ्गु निदिवऴि नेय नीट्टु
मन्ऱलङ् गोदै मादर् मनमॅनत् तहैयत् तम्मान् 797

अ मान्–वह मृग; कुन्ऱु इटै इवरुम्–पर्वत पर चढ़ता; मेक कुऴु इटै कुतिक्कुम्–मेघसमूह के मध्य कूदता; कूट चॅन्ऱिटिल्–पास गये तो; अकलुम्–दूर हट जाता; ताऴिल्–देर करें तो; तीण्टल् आम् तन्मैत्तु आकुम्–स्पर्श किया जा सके, ऐसी स्थिति में रहता; निन्ऱते पोल–जैसे खड़ा था वैसे ही; नीङ्कुम्–हट जाता; निति वऴि–धन के मार्ग में; नेयम् नीट्टुम्–प्रेम बढ़ानेवाली; मन्ऱल् अम् कोतै–सुगन्धित सुन्दर मालाधारिणी; मातर् मनम् ऍन–(वार-)नारियों के मन ही; तकैयत्तु–के समान रहा । ७९७

वह हरिण पर्वतों पर चढ़ता; मेघसमूहमध्य कूदता । पास जाओ तो दूर भाग जाता । ठहर जाओ तो इतना पास आकर खड़ा रहता कि हाथ में आ जाय! पर वैसे ही वह हट जाता । वह उन वेश्याओं के मन के समान रहा, जो धन की दिशा में अपना मन बढ़ाती हैं! । ७९७

कायम्वे ऱाहिच् चॅय्युङ् गरुमम्वे ऱायिऱ् ऱन्ऱे
एयुमे यॅन्निन् मुन्न मॅण्णमे यिळवर् कुण्डे
आयुमॅय् यऱनिलाद वरक्करा नवर्हळ् शॅय्द
मायमे याय देयान् वरुन्दिय दॅन्ऱान् वळ्ळल् 798

कायम् वेऱु आकि–रूप ही अस्वाभाविक रहा; करुमम् वेऱु आयिऱ्ऱु–कार्य विपरीत दूसरा रहा; अन्ऱो–न; ऍन्निन्–तो; एयुमे–उचित है क्या; मुन्नम्–पहले ही; ऍण्णमे–यही विचार; इळवर्कु उण्टे–अनुज का रहा; यान् वरुन्तियतु–मैंने जो कष्ट उठाया; आयुम् मॅय् अऱन् इलात–विवेकशील सत्य और धर्म से

रहित; अरक्कर् आत्तवर् चॆय्त–राक्षसों के किये हुए; मायमे आयते–कपट ही बना; अॆन्ऱान्–कहा; वळ्ळल्–प्रभु ने । ७६८

अब श्रीराम पछताने लगे। इसका शरीर कुछ है और काम उससे भिन्न! यह रूप और कार्य में कोई सम्बन्ध नहीं दिखता। यह अनुज लक्ष्मण पहले ही जानता था। मुझे इतना कष्ट उठाना पड़ रहा है, इसलिए कि विवेकशील सत्य और धर्म से रहित राक्षसों की माया मैंने नहीं जानी! —प्रभु आप से आप बोले। ७९८

❀ पऱ्ऱु वातिनि यल्लन् पहळियाल्, शॆऱ्ऱु वानिऱ् चॆलुत्तलुऱ् ऱानॆन
मऱ्ऱ माय वरक्कन् मनक्कॊळा, उऱ्ऱ वेहत्ति नुम्बरि नोङ्गिनान् 799

अ माय अरक्कन्–वह मायावी राक्षस; इति पऱ्ऱुवान् अल्लन्–अब मुझे नहीं पकड़ेगा; पकळियाल् चॆऱ्ऱु–अस्त्र से मारकर; वातिल् चॆलुत्तल् उऱ्ऱान्–स्वर्ग पहुँचा देगा; ऍन्न–ऐसा; मनम् कॊळा–मन में सोचकर; उऱ्ऱ वेकत्तिन्–शक्ति-भर वेग के साथ; उम्परिन् आङ्कितान्–आकाश में उछल उठा। ७९९

मारीच ने श्रीराम के मन की गति जान ली। उसने धारणा कर ली कि अब श्रीराम मुझे नहीं पकड़ेगा। शर से मुझे स्वर्ग पहुँचा देगा। यह सोचकर अपनी सारी शक्ति लगाकर वह आकाश में उछल पड़ा। ७९९

❀ अक्क णत्तिनि लैयनुम् वॆय्यदन्, शक्क रत्तिऱ् ऱहैवरि दायदोर्
चॆक्कर् मेनिप् पहळि शॆलुत्तिनान्, पुक्क दॆयम्बुक् किन्नुयिर् पोक्कॆना 800

अ कणत्तितिल्–उसी क्षण में; ऐयनुम्–प्रभु ने भी; तन् चक्करत्तितिल्–अपने ही (सुदर्शन-)चक्र के समान; तकवु अरितु आयतु–अकाट्य; ओर्–एक; वॆय्य–भयंकर; चॆक्कर् मेति–लाल रंग के; पकळि–शर को; पुक्क तेयम् पुक्कु–यह जहाँ जाता है, वहाँ जाकर; इन् उयिर् पोक्कु–इसके प्यारे प्राण हर लो; ऍन्ना–कहकर; चॆलुत्तितान्–चलाया। ८००

तभी महात्मा श्रीराम ने अपने सुदर्शन चक्र के समान अप्रतिहत और भयंकर अरुणवर्ण अस्त्र संधान कर यह कहते हुए छोड़ा कि वह जहाँ भी जाए, पीछे जाकर उसको हत कर दो। ८००

❀ नॆट्टि लैच्चरम् वञ्जनै नॆञ्जुरप्, पट्ट दप्पॊळ्ु दॆपहु वायिनाल्
अट्ट तिक्किनु मप्पुऱ मुम्बुह, विट्ट ळैत्तॊरु कुन्ऱॆन वीळ्न्दनन् 801

नॆट्टु इलै चरम्–वह लम्बा पत्राकारफलयुक्त शर; वञ्चनै–वंचक; नॆञ्चु उऱ–हृदय पर लगा; पट्टतु–अन्दर घुसा; अ पॊळुते–तभी; पकु वायिताल्–खुले मुख से; अट्ट तिक्कुम्–आठों दिशाओं में; अ पुऱमुम्–और बाहर में भी; पुक–जाकर व्याप्त हो ऐसा; अळैत्तु–पुकारते हुए; ऒरु कुन्ऱु ऍन्न–एक पर्वत के समान; वीळ्न्ततन्–गिरा। ८०१

श्रीराम का लम्बा और पत्राकार फल का शर वंचक के वक्ष में

जा लगा और गड़ गया। तभी वह अपने खुले मुख से उन सीता और लक्ष्मण को उच्च स्वर में पुकारते हुए मरा और पर्वत के समान गिर गया। वह स्वर आठों दिशाओं और उनके बाहर भी जाकर व्यापा। ८०१

❀ वॅय्य वन्ऱ्र् ऩुरुविनिल् वीऴ्दलुम्, शॅय्य दन्ऱॅन्च् चॅप्पिय तम्बियै ऐयन् वल्लनॅन् ऩारुयिर् वल्लनान्, उय्य वन्दवन् वल्लनॅन् रुन्ऩिऩान् 802

वॅय्यवन्–क्रूर (मारीच) के; तन् उरु ऑंटु–अपने निजी रूप के साथ; वीऴ्तलुम्–गिरने पर; चॅय्यतु अन्ऱु–यह सीधा नहीं; ऍन्न चॅप्पिय–ऐसा जिसने कहा, उस; तम्पियै–अनुज को; ऐयन् वल्लन्–मेरा तात बड़ा समर्थ है; ऍन् आर् उयिर्–मेरा प्राण-सम भाई; वल्लन्–समर्थ है; नान् उय्य वन्तवन्–मुझे उबारने आया वह; वल्लन्–समर्थ है; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्ऩिऩान्–(श्रीराम ने साधुवाद के साथ) स्मरण किया। ८०२

क्रूर मारीच अपने निजी रूप में गिरा। उसको देखते ही श्रीराम के मन में भाई लक्ष्मण और उनकी दूरदर्शिता का स्मरण आया। वे बोल उठे कि हा! यह मृग सीधा नहीं है। यह मेरे भाई ने कहा था। मेरा तात सामर्थ्यवान है; मेरा प्राण-सम भाई सामर्थ्यवान है! मुझे उबारने के लिए जनित अनुज लक्ष्मण सामर्थ्यवान है! उन्होंने भाई के प्रति गौरव-बुद्धि के साथ उनका स्मरण किया। ८०२

❀ आशै नीळत् तरऱ्ऱिन्न् वीऴ्न्दवन्, नीशन् मेनियै निन्ऱुर नोक्किनान् माशिन् मादवन् वेळ्वियिन् वन्दमा, रीश.नेयिव नॅन्बदु तेरिन्ान् 803

आचै नीळत्तु–दिशा जितने लम्बे; अरऱ्ऱि–रुदन-स्वर निकालकर; वीऴ्न्त–जो गिरा; अ नीचन् मेनियै–उस नीच के शरीर को; निन्ऱु–खड़ा होकर; उऱ–खूब; नोक्किनान्–(श्रीराम ने) देखा; माचु इल्–अकलंक; मातवन् वेळ्वियिन्–महातपस्वी (विश्वामित्र के) यज्ञ में; वन्त मारीचन्–जो आया था, वही मारीच; इवन्–यह है; ऍन्पतु–यह; तेरिनान्–पहचान लिया। ८०३

श्रीराम ने नीच मारीच के मृतक शरीर को खूब ध्यान देकर देखा। उसका क्रन्दन स्वर दिशाओं का जितना लम्बा था! अकलंक महा तपस्वी विश्वामित्र के यज्ञ में यही आया था। उन्होंने उस मारीच को पहचान लिया। ८०३

❀ पुळैत्त वाळि युरम्बुहप् पुल्लियोन्, इळैत्त मायैयि नॅन्गुर लालॅडुत् तळैत्त दुण्डदु केट्टयर् वॅय्दुमाल्, मळैक्कण् णेळैयॅन् रुळ्ळम् वरुन्दिनान् 804

पुळैत्त वाळि–भेदकर जो चला, उस शर के; उरम् पुक–छाती में घुसने पर; पुल्लियोन्–उस नीच ने; इळैत्त मायैयिन्–माया करके; ऍन् कुरलाल्–मेरे-से स्वर में; ऍडुत्तु–ऊँचा; अळैत्ततु उण्टु–(सीता और लक्ष्मण को) बुलाया, यह तो है; अतु केट्टु–वह सुनकर; मळै कण् एळै–मेघ-सी (अश्रुभरी) आँखों की सीता; अयर्वु

अॅय्तुम् आल्–व्यथित हो जायगी अवश्य; अॅन्ऱु उळ्ळम् वरुन्तिनान्–यह सोचकर श्रीराम खिन्नमन हुए। ८०४

मेरे शर के उसके वक्ष में भेदकर चलने पर इस नीच ने मेरे-से स्वर में टेर लगायी है ! यह सुनकर सीता अवश्य रोती होंगी। दुःखाक्रान्त हो जायँगी। यह सोचकर श्रीराम दुःखी हुए। ८०४

❀ माऱ्ऱ मित्तनदु मायमा रीशनॅन्, ऱेऱ्ऱ मुन्नुणर्न् दानिरुन् दानॅन्
दाऱ्ऱ ऱेऱु मऱिविन् नादलाल्, तेऱ्ऱु मालिळै योॅन्नॅनत् तेऱिनान् 805

इन्ततु–ऐसे; माऱ्ऱम्–(मारीच के कहे, हा सीते, हा लक्ष्मण के) शब्दों को; मुन्–पहले ही; माय मारीचन् अॅन्ऱु–माया का मारीच, यह; एऱ्ऱम् उणर्न्तान्–जिन्होंने निश्चित रूप से जाना था; इळैयोन् इरुन्तान्–वह मेरा कनिष्ठ उधर है; अॅनतु आऱ्ऱल् तेरुम्–मेरी शक्ति को जानने में समर्थ; अऱिवितन्–बुद्धिशाली; आतलाल्–इसलिए; तेऱ्ऱुम्–वह सीता को धीरज दिलायगा; अॅन–ऐसा सोचकर; तेऱिनान्–श्रीराम आश्वस्त रहे। ८०५

उन्होंने आगे तर्क किया। इसको लक्ष्मण ने सुना होगा। उसी ने पहले इसे मारीच जान लिया था। वह मेरी शक्ति का भी परिचय रखता है। इसलिए वह सीता को धीरज बँधायगा। श्रीराम को इस विचार से कुछ आश्वासन हुआ। ८०५

❀ माळ्व देतॉळि लाहवन् दानलन्, शूळ्व दोर्पॉरु ळुण्डिवन् शॉल्लिनाल्
मूळ्व देद मदुमुडि यामुनम्, मीळ्व देन्नल नॅन्ऱवन् मीण्डनन् 806

माळ्वते तॉळिलाक–मरना ही कार्य समझकर; वन्तान् अलन्–आया नहीं है; इवन् चॊल्लिनाल्–इसके शब्दों से; चूळ्वतु ओर् पॊरुळ् उण्टु–संभवनीय उपद्रव है; मूळ्वतु एतम् अतु–संभवनीय वह हानि; मुटिया मुनम्–पूरी हो, उसके पूर्व ही; मीळ्वते नलन्–लौट जाना ही श्लाघ्य है; अॅन्ऱु–सोचकर; अवन् मीण्टनन्–वे लौट आये। ८०६

श्रीराम ने आगे सोचा। यह मारीच केवल मरने का विचार लेकर नहीं आया है। इसके शब्दों से अवश्य एक उपद्रव होगा। कुछ उपद्रव हो जाय, इसके पूर्व ही पर्णशाला में लौट जाना ही भला होगा। यह सोचकर वे लौट आने लगे। ८०६

9. शडायु उयिर्नीत्त पडलम् (जटायु प्राण-त्याग पटल)

शङ्ग डुत्त तनिक्कडन् मेनियार्, कङ्ग डुत्त निलैमै यरैन्दनॅम्
कॊङ्ग डुत्त मलर्क्कुळर् कॊम्बनाट्, किङ्ग डुत्त तहैमै यियम्बुवाम् 807

चङ्कु अटुत्त–शंखों से भरे; तनि कटल्–उत्तम समुद्र के; मेनियाऱ्कु–वर्ण के शरीरी को; अङ्कु अटुत्त–वहाँ जो रही; निलैमै अरैन्ततॅम्–वह स्थिति बतायी;

कोङ्कु अट्टुत्त मलर्-सुवासित पुष्प की; कोम्पु अत्ताट्कु-शाखा-सरीखी देवी का; इङ्कु अट्टुत्त तकैमै-यहाँ जो गति रही; इयम्पुवाम्-वह कहेंगे। ८०७

शंखों से भरे नीले समुद्र के समान जिनका सुन्दर रंग है, उन श्रीराम की जो स्थिति रही वह हमने बतायी। अब पर्णशाला में सुवासित पुष्पशाखा-सरीखी सीतादेवी का क्या हाल रहा —वह बतायेंगे। ८०७

❀ ऍयिऱ् लैत्तदु मुळैदिऱन्दु देङ्गिय, शॅयिर्द लैक्कॉण्ड शॉऱ्चॅवि शॅर्दलुम्
कुयिऱ् लत्तिडै युऱ्ऱदोर् कॉळ्हैयाळ्, वयिऱ् लैत्तु विळुन्दु मयङ्गिनाळ् 808

ऍयिऱ् अलैत्तदु-दाँतों को पीसकर; मुळै तिऱन्तु-गुफा के समान मुख खोलकर; एङ्किय-घोषित; चॅयिर् तलै कॉण्ट-कपट-भरा; चॉल्-शब्द; चॅवि चेर्तलुम्-ज्योंही कान में पड़ा त्योंही; कुयिल् तलत्तु इटै उऱ्ऱतु-कोयल नीचे गिरी हो, ऐसी; ओर् कॉळ्कैयाळ्-एक स्थिति में पड़कर; वयिऱ् अलैत्तु-पेट पीटते हुए; विळुन्तु-गिरकर; मयङ्किनाळ-मूच्छित हुईं। ८०८

दाँत पीसते हुए मारीच ने अपना कन्दरा-सा मुख खोलकर बड़े ही वंचक शब्द उच्चारे थे। जब वे देवी के कान में पड़े तो वे पेट पीटती हुई भूमि पर गिरकर मूर्च्छित हो गयीं। वे उस कोयल की-सी स्थिति में दिखाई दीं, जो तरु की उच्च शाखा से भूमि पर गिर गयी हो। ८०८

❀ पिडित्तु नल्हिव् वुळैयॅनप् पेदैयेन्, मुडित्त नॅन्मुदल् वाळ्वॅन मॉय्यळल्
कॉडिप्प डिन्द दॅन्नॅडुङ् गोळरा, इडिक्कि डैन्द दॅनप्पुरण् डेङ्गिनाळ् 809

इ उळै पिटित्तु नल्कु-यह मृग पकड़ दीजिए; ऍन्न-कहकर; पेतैयेन्-जड़मति मैंने; मुतल् वाळ्वु-जीवनाधार को; मुटित्तनॅन्-मरवा दिया; ऍन्न-कहकर; मॉय् अळल्-बड़ी आग; कॉटि पटिन्ततु ऍन-लता पर लग गयी जैसे; नॅटुम् कोळ् अरा-लम्बा, वली सर्प; इटिक्कु इटैन्ततु ऍन-वज्राहत हुआ जैसे; पुरण्टु एङ्कित्ताळ्-लोटती हुई रोयीं। ८०९

जब वे होश में आयीं तो विलाप करने लगीं कि हाय! मैंने क्या कर दिया? 'इस मृग को पकड़कर मेरे पास दीजिए' कहकर मैंने अपने जीवनाधार को ही गँवा दिया। अग्निदग्ध पुष्पलता के समान और वज्राहत दीर्घ वली सर्प के समान वह भूमि पर लोटती हुई रोयीं। ८०९

❀ कुऱ्ऱम् वीय्न्द गुणत्तिनॅङ् गोमहन्, मऱ्ऱै वाळरक् कन्बुरि मायैयाल्
इऱ्ऱु वीळ्न्दन नॅन्नुम् मॅन्नयल्, निऱ्ऱियो विळैयो यॊरुनी यॅन्ऱाळ् 810

कुऱ्ऱम् वीय्न्त कुणत्तिन्-कलंक-रहित कल्याणगुणपूर्ण; ऍन् कोमकन्-मेरे नाथ; मऱ्ऱै-पराये; वाळ् अरक्कन् पुरि मायैयाल्-क्रूर राक्षस के किये हुए कपट से; इऱ्ऱु वीळ्न्ततन्-मरकर गिर गये; ऍन्ऩवुम्-जानने के बाद भी; इळैयोय् ऒरु नी-एक अनुज, तुम भी; ऍन् अयल्-मेरे पास में ही; निऱ्ऱियो-खड़े रहते हो क्या; ऍन्ऱाळ्-पूछा (लक्ष्मण से)। ८१०

सीताजी ने देखा कि लक्ष्मण खड़े हैं। उनको कोप आया। उन्होंने कहा— मेरे अकलंक कल्याणगुणपूर्ण नाथ शत्रु राक्षस के कपट से आहत हो गिर गये। यह जानने के बाद भी तुम, उनके अनुज, इधर ही मेरे पास में खड़े रहोगे क्या ? । ८१०

❀ ऍण्मैया रुलहिऩि लिरामऩ् केऱ्ऱमोर्, तिण्मैया रुळरॆऩ्ऩल् चॆप्पऱ् पालदो
पॆण्मैया लुरैशॆय्प् पॆऱ्ऱिदि रालॆऩ्ऩ, उण्मैया ऩऩैयवट् कुणरक् कूऱिऩाऩ् 811

ऍण्मै आर् उलकिल्–लघुतायुक्त लोक में; इरामऩ्कु एऱ्ऱम्–श्रीराम से बढ़कर; ओर् तिण्मैयार्–एक बलवान; उळर् ऍऩ्ऩल्–होगा कहना; चॆप्पल् पालतो–अभिव्यक्ति के अर्ह है क्या; पॆण्मैयाल्–स्त्री-बुद्धि के कारण; उरै चॆय पॆऱ्ऱतिर्–यह कहने चलीं; ऍऩ–ऐसा; उण्मैयाऩ्–सत्यज्ञ ने; अऩैयवट्कु–उन्हें; उणर कूऱिऩाऩ्–समझाकर कहा। ८११

यह संसार लघुतापूर्ण है। इसमें श्रीराम से बढ़कर कोई बली है, यह कथन उच्चारण योग्य है क्या ? स्त्री-बुद्धि के कारण आप ऐसी बात करती हैं। लक्ष्मण अपनी सूझ-बूझ से सच्ची बात जान सके थे। उन्होंने सीताजी को समझाया। ८११

एऴुमे कडलुल हेऴु मेऴुमे, शूऴुमेऴ् मलैयवै तॊडर्न्द शूऴल्वाय्
वाऴुमे ऴैयर्शिऱु वलिक्कु वाळमर्त्, ताऴुमे यिराहवऩ् तऩिमै तैयलीर् 812

तैयलीर्–देवी; कटल् एऴुम्–सातों समुद्र; उलकु एऴुम्–(दो के) सातों लोक; चूऴुम् एऴ् मलै–घेरे हुए स्थित सात पर्वत; तॊटर्न्त चूऴल् वाय्–इनसे लगे स्थल; वाऴुम्–(यहाँ के) वासी; एऴैयर् चिऱु वलिक्कु–दुर्बल लोगों के बल के सामने; इराकवऩ् तऩिमै–श्रीराघव का एकाकी बल; वाळ् अमर् ताऴुमे–कठोर युद्ध में नीचा हो जायगा क्या। ८१२

देवी ! सात समुद्र, सात (दो) लोक, उनको घेरे रहनेवाले सात पर्वत और उनसे संयुक्त स्थानों में जो वास करते हैं, उन निर्बलों के अल्प बल के सामने एकाकी राघव की शक्ति भयंकर युद्ध में कम हो रहेगी क्या ? । ८१२

पारॆऩक् कऩलॆऩप् पुऩलॆऩप् पवऩवाऩ्
पेरॆऩैत् तवैयवऩ् मुऩियिऱ् पेरुमाल्
कारॆऩक् करियवक् कमलक् कण्णऩै
आरॆऩक् करुदियिव् विडरि ऩाऴिहिऩ्ऱीर् 813

पार् ऍऩ–भूमि; कऩल् ऍऩ–आग; पुऩल् ऍऩ–जल; पवऩम् वाऩ् पेर् ऍऩैत्तु तल् अवै–पवन, आकाश नाम का कोई भी; अवऩ् मुऩियिल्–वे कोप करेंगे तो; पेरुम् आल्–अस्त-व्यस्त होगा; कार् ऍऩ करिय–मेघसम श्यामल; कमल कण्णऩै–कमलाक्ष

को; आर् ॲऩ करुति–कौन है, समझकर; इ इटरिल् आऴ्किन्ऱीर्–इस कदर दुःख में मग्न रहती हैं। ८१३

पृथ्वी, अग्नि, जल, पवन, आकाश नाम के इनमें कोई भी (भूत) उनके कोप के सामने ठहर न सकेगा और टूटकर बिखर जायगा। उन मेघश्याम कमलाक्ष को आप कौन समझकर इतना घबड़ाती हैं ? इतने दुःखमग्न हैं ? । ८१३

※ इडैन्दुपोय् निशिशरर् किराम ॲव्वम्वन्
दडैन्दपो दळैक्कुमे वळैक्कु मामॆतिऩ्
मिडैन्दपे रण्डङ्गण् मेल कोळ्न
उडैन्दुपो ययऩ्मुद लुयिरुम् वीयुमाल् 814

इरामऩ्–श्रीराम; निचिचरर्कु–एक राक्षस से; इटैन्तु पोय्–हारकर पीछे हटकर; ॲव्वम् वन्तु अटैन्त पोतु–संकटग्रस्त होने पर; अळैक्कुमे–पुकार मचायेंगे क्या; अळैक्कुम् आम् ॲतिल्–बुलाने का मौका आ जायगा तो; मेल कीळ्न–ऊपर और नीचे; मिटैन्त–लगे रहे; पेर् अण्टङ्कळ्–बड़े-बड़े अण्डगोल; उटैन्तु पोय्–टूट जायेंगे; अयऩ् मुतल् उयिरुम्–अजादि जीव; तीयुम्–जल जायेंगे। ८१४

श्रीराम निशिचर के सामने साहस खोकर पीछे हटेंगे और सहायता के लिए पुकार मचायेंगे भी ? यह क्या कहती हैं आप ? यदि ऐसी नौबत आ गयी तो समझिए कि नीचे और ऊपर के सभी अण्डगोल फट जायेंगे, और अज से लेकर सारी जीवराशियाँ जल-भुन जायँगी। ८१४

माऱ्ऱमॆऩ् पहर्वदु मण्णुम् वाऩमुम्
पोऱ्ऱवऩ् ऱिरिपुर मॆरित्त पुङ्गवऩ्
एऱ्ऱिनिऩ् ऱॆय्दविल् लिऱ्ऱ ऱॆम्बिराऩ्
आऱ्ऱलि ऩमैवदो राऱ्ऱ लिऩ्मैयाल् 815

मण्णुम् वाऩमुम् पोऱ्ऱ–भूलोकवासियों और आकाशवासियों से प्रशंसित होकर; वऩ् तिरिपुरम् ॲरित्त–सशक्त त्रिपुरों को जिन्होंने जलाया; पुङ्कवऩ्–उन देव (शिव) के; एऱ्ऱि निऩ्ऱु–प्रत्यंचा चढ़ाकर; ॲय्त विल्–शर जिससे छोड़े गये, उस धनु का; ॲम्पिराऩ् आऱ्ऱलिऩ्–मेरे नाथ की शक्ति जितनी; अमैवतु ओर् आऱ्ऱल्–उतने से युक्त बल; इऩ्मैयाल्–नहीं रहा, इसलिए; इऱ्ऱतु–टूट गया (वह धनु); माऱ्ऱम् ॲऩ् पकर्वतु–किन शब्दों में (श्रीराम की शक्ति) कही जाय। ८१५

श्रीशिवजी ने बलवान त्रिपुरों को अपने एक धनुष की सहायता से जलाया था। उनकी बड़ी वाहवाही हुई। देवों ने और भूलोकवासियों ने उनकी बड़ी प्रशंसा की ! उस धनु में हमारे प्रभु के बल को सहने की शक्ति नहीं रही। वह टूट गया। श्रीराम की शक्ति का परिचय फिर किस बात को लेकर कहा जाय ? । ८१५

काවल तीण्डुनीर् करुदिर् ऍय्दुमेल्
मूवहै युलहमु मुडियु मुन्दुळ
तेवरु मुनिवरु मुदल शॅव्वियोर्
एवरुम् वीवर्मऱ् ऱऱमु मॅन्जुमाल् 816

कावलन्–लोकरक्षक; ईण्टु–अब; नीर् करुतिऱ्ऱु–आप जो सोचती हैं, वैसे; ऍय्तुम् एल्–(नाश को) प्राप्त होंगे तो; मूवकै उलकमुम् मुटियुम्–तीनों लोक मिट जायँगे; मुन्तु उळ–आदि रहनेवाले; तेवरुम्–देव; मुनिवरुम्–और मुनि; मुतल–आदि; चॅव्वियोर् एवरुम्–श्रेष्ठ सभी; वीवर्–मर जायँगे; मऱ्ऱु–और भी; अऱमुम् ऍञ्चुम्–धर्म भी मिट जायगा। ८१६

जैसे आप समझती हैं, वैसी हालत लोकरक्षक पर आयी होती तो तीनों लोक मिट जाते ! आदिदेव, ब्रह्मादि, मुनि और अन्य सभी श्रेष्ठ लोग मर जाते ! और भी धर्म नहीं टिकता। ८१६

❀ परक्कॅन् पहर्वदु पहळि पण्णवन्
तुरक्कवङ् गदुपडत् तॉलैन्दु शोर्हिन्ऱ
अरक्कनव् वुरैयॅडुत् तरऱ्ऱि ऩानदऱ्
किरक्कमुऱ् ऱिरङ्गलि रिरुत्ति रीण्डॅन्ऱान् 817

परक्क ऍन् पकर्वतु–विस्तार के साथ क्या कहना; पण्णवन्–हमारे नाथ ने; अङ्कु पकळि तुरक्क–वहाँ अस्त्र चलाया और; अतु पट–वह लगा; तॉलैन्तु चोर्किन्ऱ अरक्कन्–बल खोकर मिटते हुए उस राक्षस ने; अ उरै ऍटुत्तु–वे शब्द कहकर; अरऱ्ऱिऩान्–प्रलाप किया; अतऱ्कु–उससे; इरक्कम् उऱ्ऱु–दुःख मानकर; इरङ्कलीर्–मत रोइए; ईण्टु इरुत्तिर्–यहाँ रहिए; ऍन्ऱान्–कहा। ८१७

विस्तार क्या करना ? हुआ यही होगा कि श्रीराम ने बाण छोड़ा; बाण मारीच पर लगा और मारीच जान खोकर मरा। मरने से पहले उसने ऐसा स्वर करके प्रलाप किया। आप कुछ और समझकर उस दुहाई के पीछे दुःखी मत होइए और मत रोइए। निश्चित यही रहिए। —लक्ष्मण ने ढाढस दिया। ८१७

❀ ऍन्ऱव नियम्बलु मॅळुन्द शीऱ्ऱत्तळ्
कॊन्ऱन वित्तलळ् कॊदिक्कु मुळ्ळत्तळ्
निन्ऱनिन् निलैयिदु नॆरियिर् ऱन्ऱॆना
वन्ऱऱु कण्णिनाळ् वलिन्दु कूऱिनाळ् 818

ऍन्ऱु–ऐसा; अवन् इयम्पलुम्–उनके कहने पर; ऍळुन्त–उत्तेजित; चीऱ्ऱत्तळ्–क्रोधिता; कॊन्ऱु अन–मारी जायँगी, ऐसा; इन्नलळ्–संकटग्रस्त; कॊतिक्कुम् उळ्ळत्तळ–खौलते चित्त की; वल् तऱुकण्णिनाळ्–सुदृढ़ निडरता के साथ (सीताजी ने); निन्ऱ निन् निलै इतु–अपनायी हुई तुम्हारी यह स्थिति; नॆरियिऱ्ऱु

अऩ्ऱु–नीतिसम्मत नहीं; ऎऩ्ऩ–ऐसा; वलिऩ्दु–कठोर स्वर में; कूऱ्वाळ्–कहने लगीं। ८१८

लक्ष्मण का वचन सुनकर सीताजी का क्रोध और उमड़ पड़ा। स्वयं उनको कोई मार रहा हो, उतना दुःख हुआ। उबल पड़ी और अनोखे क्रूर निडरता के साथ उन्होंने कठोर शब्दों में कहा कि यह तुम्हारी स्थिति नीति-सम्मत नहीं है। ८१८

❀ऒरुपहल्	पऴहिऩा	रुयिरै	यीवराल्
पॆरुमह	ऩुलैवुऱ्ऱ	पॆऱ्ऱि	केट्टुनी
वॆरुवलै	निऩ्ऱऩै	वेऱॆऩ्	याऩिऩि
ऎरियिडैक्	कडिदुवीऴ्न्	दिऱप्पे	ऩीण्डॆऩा 819

ऒरु पकल् पऴकिऩार्–एक दिन के परिचित भी; उयिरै ईवर्–प्राण दे देंगे; पॆरुमकऩ्–हमारे नाथ; उलैवु उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–मर गये, यह गति; नी केट्टुम्–तुमने कान से सुनी, तो भी; वॆरुवलै–भीत नहीं हो; निऩ्ऱऩै–खड़े हो; वेऱु ऎऩ्–दूसरा मार्ग अब मेरे लिए क्या रहा; याऩ्–मै; इऩि–अब; ऎरि इटै–आग में; कटितु वीऴ्न्दु–जल्दी प्रवेश करके; ईण्टु–यहाँ; उयिर् इऱप्पॆऩ्–प्राण त्यागकर मर जाऊँगी; ऎऩा–कहकर। ८१९

आगे मर्मघातक शब्द में कहा कि एक ही दिन के परिचित हों, तो भी वे अपने मित्र को बचाने के लिए अपने प्राण दे देंगे। हमारे नायक पर क्या बीता, यह तुम जानते हो। जानकर भी विना किसी भय के या संशय के मेरे ही पास खड़े हो! अब मेरे पास कोई दूसरा चारा नहीं है। अब मैं शीघ्र जलती आग में कूद पड़ूँगी और मर जाऊँगी। ८१९

❀तामरै	वऩत्तिडैत्	तावु	मऩ्ऩम्बोल्
तूमवॆङ्	गाट्टॆरित्	तॊडर्हिऩ्	ऱाडऩैच्
चेमविऱ्	कुमरनुम्	विलक्किच्	चीऱडिप्
पूमुह	नॆडुनिलम्	पुल्लिच्	चॊल्लुवाऩ् 820

तामरै वऩत्तिटै–कमल-कानन में; तावुम् अऩ्ऩम् पोल्–लपकते हंस के समान; तूम वॆम् काट्टु ऎरि–धुएँ-सहित भयंकर दावाग्नि की ओर; तॊटर्किऩ्ऱाळ् तऩै–जो चलने लगीं, उनको; चेम विल् कुमरनुम्–संरक्षक धनुर्धर कुमार भी; विलक्कि–रोक कर; चिऱु अटि पू मुकम्–छोटे चरण-पंकजों के सामने; नॆटु निलम् पुल्लि–लम्बी भूमि पर गिरकर (दण्डवत करके) चॊल्लुवाऩ्–बोलने लगे। ८२०

यह कहकर सीताजी कमलकानन में लपकनेवाले कलकण्ठ (हंस) के समान धुआँ उगलती हुई जलनेवाली दावाग्नि की ओर दौड़ने लगीं। संरक्षक धनुर्धर लक्ष्मण ने उनको रोका, उनके चरण-पंकजों के सामने गिरकर दण्डवत की और कहा। ८२०

❀तुञ्जुव दॆन्नैनीर् शॊन्न शॊल्लैयान्
अञ्जुवॆन् मरुक्किलॆ नवलन् दीर्न्दिनि
दिञ्जिरु मडियने नेहु हिन्ऱन्ऱॆन्
वॆञ्जिन्न विदियिनै वॆल्ल वल्लमो 821

तुञ्चुवतु ॲन्तॆ–आप मरें क्यों; नीर् चॊन्न चॊल्लै–आपकी कही हुई बात से; यान् अञ्चुवॆन्–मै डरता हूँ; मऱुक्किलेन्–आपकी बात मानने से इनकार नहीं करूँगा; इति–अव; अवलम् तीर्न्तु–चिंता त्यागकर; इञ्चु इरुम्–यहीं रहिए; अटियेन् एकुकिन्ऱन्ऱॆन्–मैं जाता हूँ; वॆम् चिन्न वितियितै–भयंकर क्रोधी विधि को; वॆल्ल वल्लमो–हरा सकेंगे क्या । ८२१

भगवती ! आप क्यों मरें ? आपकी बात मुझे भयभीत कर रही है । मैं आपकी आज्ञा का भंग नहीं करूँगा । अब आप दुःख छोड़कर निश्चिंत यहीं रहिएगा । दास मैं जा रहा हूँ । विधि क्रूर है और क्रुद्ध है । उसको हम कैसे जीत सकेंगे ? । ८२१

❀पोहिन्ऱे नडियनेन् पुहुन्दु वन्दुके
डाहिन्ऱ दैयन्ऱ न्नाणै नीर्मऱुत्
तेहॆन्ऱि रिरुक्किन्ऱिर् तमिय रॆन्ऱुपिन्
वेहिन्ऱ शिन्दैयेन् विडैहॊण् डेन्ना 822

अटियनेन् पोकिन्ऱेन्–दास मैं जाता हूँ; केटु–वड़ा संकट; पुकुन्तु वन्तु आकिन्ऱतु–घुसकर आया हुआ है; ऐयन् तन् आणै–प्रभु श्रीराम की आज्ञा; नीर् मऱुत्तु–आप काटती है और; एकु ॲन्ऱीर्–जाओ कहती हैं; तमियर् इरुक्किन्ऱिर्–अकेली रहती है; ॲन्ऱु–कहकर; पिन्–फिर; वेकिन्ऱ चिन्तैयेन्–तप्तचित्त होकर; विटै कॊण्टेन्–विदा लेता हूँ; ॲन्ना–कहकर । ८२२

मै जा रहा हूँ । वहुत वड़ी विपदा आ रही है । प्रभु की आज्ञा का उल्लघन करके आप मुझे भेज रही है । अव एकाकिनी रहेंगी । लक्ष्मण ने यह कहा । फिर उन्होंने जारी किया । मेरा मन संतप्त है ! उसी स्थिति में मै आपसे आज्ञा ले रहा हूँ । ८२२

❀इरुप्पने लॆरियिडै यिऱप्प रालिवर्
पॊरुप्पनै यानिडैप् पोवॆ नैयॆनिल्
अरुप्पमिल् केडुवन् दडैयु मारुयिर्
इरुप्पनेर् कॆन्शॆय लॆन्ऱु विम्मिनान् 823

इरुप्पनेल्–यहाँ रहता हूँ तो; इवर्–ये; एरि इटै इऱप्पर्–आग में (कूदकर) मर जायँगी; पॊरुप्पु अनैयान् इटै–पर्वत-सम श्रीराम के स्थान पर; पोवन् ए ॲनिल्–जाऊँगा तो; अरुप्पमिल्–अनल्प; केटु वन्तु अटैयुम्–विपदा आ जायगी; आर् उयिर् इरुप्पनेर्कु–साथ लगे प्राण के साथ जो रहता हूँ मुझे; ॲन् चॆयल्–क्या करना है; ॲन्ऱु–ऐसा; विम्मिनान्–(सोच में पड़कर) दुखी हुए । ८२३

लक्ष्मण को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने सोचा कि अगर मैं रह जाऊँगा, तो ये आग में कूदकर मर जायँगी। अगर मैं पर्वत-सम श्रीराम के पास चला जाऊँ तो अनल्प, बहुत बड़ी कोई विपदा आयगी, अवश्य। हाय! दुर्भाग्य! मैं जीवित हूँ। प्यारे प्राणों के साथ हूँ। क्या करूँ मैं? । ८२३

अऱन्दन्ऩा लऴिविल दाह लाक्कलाम्
इऱन्दुपा डिवर्क्कुरु मिरुक्कि ऩिव्वऴि
तुऱन्दुपो मिदन्ऩैये तुणिवॆन् ऱॆल्विनैप्
पिऱन्दुपोन् दिदुपडुम् पेदै येॆन्ऩा 824

इ वऴि इरुक्कित्–यहीं रहूँगा तो; इवर्क्कु–इन्हें; इऱन्तुपाटु उरुम्–मरना पड़ जायगा; तॊल् विऩै पिऱन्तु–पूर्व-कर्म के फलस्वरूप जन्म लेकर; पोन्तु–इधर आकर; इतु पटुम्–इस संकट में जो पड़ा हूँ; पेतैयेऩ्–अबोध मैं; तुऱन्तु पोम् इतऩैये–इधर से जाने का यही; तुणिवॆऩ्–निश्चय करूँगा; अऱम् तऩ्ऩाल्–धर्मद्वारा; अऴिवु इलतु आकल्–न मरने का काम; आक्कलाम्–सिद्ध हो सकता है; ऎऩ्ऩा–सोचकर। ८२४

फिर भी सोचा— यहीं रह जाऊँ क्या? नहीं। यहीं रहूँ तो इनकी मर जाने की हालत आ जायगी। मैं अभागा, प्राचीन कर्म-वश जनित होकर यह संकट उठा रहा हूँ। क्षुद्र आत्मा मैं यही करूँगा— जाने का निश्चय ही ठीक लगता है। शायद धर्म सबको बचा ले और नाश होने से रुक जाय। ८२४

❀ पोवदु पुरिवऩ्ऩान् पुहुन्द दुण्डॆनिल्
कावल्शॆय् यॆरुवैयित् ऱलैवन् कण्णुरुम्
आवदु काक्कुमॆन् ऱऱिवुऱ् ऱव्वऴित्
तेवर्शॆय् दवत्तिऩाऱ् चॆम्म लेहिऩान् 825

नाऩ् पोवतु पुरिवल्–मैं गमन करूँगा; पुकुन्ततु उण्टु ऎऩिल्–(संकट कुछ) आयगा तो; कावल् चॆय् ऎरुवैयिऩ् तलैवऩ्–हमारे संरक्षण में लगे हुए गृध्रराज; कण् उरुम्–देखेंगे; आवतु काक्कुम्–भरसक रक्षा करेंगे; ऎऩ्ऱु अऱिवु उऱ्ऱु–यह जानकर; तेवर् चॆय् तवत्तिऩाल्–देवों के तप के कारण; अ वऴि–वहाँ से; चॆम्मल्–उत्तम लक्ष्मण; नीङ्किऩाऩ्–चले। ८२५

फिर लक्ष्मण ने सीताजी से कहा कि मैं गमन करता हूँ। 'गृध्रराज जटायु हमारे रक्षक हैं। वे ध्यान रखेंगे और भरसक सहायता करेंगे।' यह सोचकर वे चल पड़े। हाँ! देवताओं के तप को फलीभूत होना था। इसलिए वे उत्तम लक्ष्मण वहाँ से चले। ८२५

❀ इळैयव ऩेहलु मिऱवु पार्क्किनऱ्
वळैयॆयिऱ् ऱिरावणऩ् वञ्ज मुऱ्ऱुवान्

मुळैवरित् तण्डॊरु मून्ऱु मुप्पहैत्
तळैयरि तवत्तवर् वडिवुन् दाङ्गिनान् 826

इळैयवन् एकलुम्–लघुराज लक्ष्मण के जाने पर; इऱवु पार्क्किन्ऱ–उनके हटने की टोह में जो रहा; वळै ऎयिऱ्ऱु रावणन्–वह वक्रदाँतों का रावण; वञ्चम् मुऱ्ऱुवान्–कपटकार्य साधने के लिए; वरि–सवन्ध; मुळै तण्टु ओरु मून्ऱुम्–बाँसों का त्रिदण्ड और; मु पकै तळै अरि–(काम, क्रोध, लोभ के) तीन शत्रुवन्धन को जो काट चुका; तवत्तु अवर् वटिवुम्–ऐसे तपस्वी का वह रूप; ताङ्कितान्–ले लिया। ८२६

लघुराज लक्ष्मण के जाते ही, उसकी टोह में जो रहा, वह वक्रदन्तोरा रावण अपना कपट-कार्य साधने के हेतु संन्यासी का वेश धरकर आया। हाथ में त्रिदण्ड, और काम, क्रोध और लोभ तीनों अन्तश्शत्रुओं के जयी एक तपोधन का वेश लेकर वह प्रकट हुआ। ८२६

※ ऊणिल नामॆन वुलर्न्द मेनियन्, शेणॆऱि वन्ददोर् वरुत्तच् चॆय्हैयन्
पाणियि नळन्दिशै पडिक्किन् ऱानॆन, वीणैयि निशैपड वेदम् बाडुवान् 827

ऊण् इलन् आम् ॲन–निराहार रहा हो जैसे; उलर्न्त मेनियन्–कृश-शरीरी; चेण् नॆऱि वन्तत्तु–लम्बा मार्ग आया जैसे; ओर् वरुत्त चॆय्कैयन्–कष्ट-प्रकाशक, चेष्टा-प्रदर्शक; पाणियिन् अळन्तु–ताल-मेल के साथ; इचै पटिक्किन्ऱान् ॲन–संगीत सुनाता हो जैसे; वीणैयिन् इचैपट–वीणा-वादन के मेल में; वेतम् पाटुवान्–सामवेद-गायक। ८२७

उसका शरीर निराहार रहे मनुष्य के समान शुष्क था। उसकी चेष्टाएँ यह प्रदर्शित कर रही थीं, मानो वह बहुत दूर चलकर आया हो। ताल के मेल के साथ संगीत सुनाता जैसा वह वीणा के स्वर के मेल में सामवेदगान करता आया। ८२७

※ पूप्पॊदि यविऴ्न्दन नडैयन् पूदलम्
तीप्पॊदिन् दामॆन मिदिक्कुञ् जॆय्हैयान्
काप्परु नडुक्कुरुङ् गालन् कैयिनन्
मूप्पॆनुम् परुवमु मुनिय मुऱ्ऱिनान् 828

पू पॊति अविऴ्न्तु अन–पुष्पदल विकसित होते है जैसे; नटैयन्–मृदुचाल; पू तलम् ती पॊतिन्तत्तु आम्–भूमि पर आग भरी हो; ॲन–ऐसे; मितिक्कुम् चॆय्कैयान्–पाँव फूँक-फूँककर रखनेवाला; काप्पु अरु–अनियन्त्रित रूप से; नटुक्कु उऱुम्–काँपते हुए; कालन् कैयिनन्–पैरों और हाथों का; मूप्पु ॲनुम् परुवमुम्–वार्द्धक्य दशा में; मुनिय–घृणित रूप से; मुऱ्ऱितान्–बढ़ा रहा। ८२८

वह बहुत धीरे-धीरे पग धर रहा था, जैसे पुष्प का दल विकसता है। पैर फूँक-फूँककर रखता आया, मानो भूमि पर अंगार बिछे हों और वह

वचकर आता हो। उसके हाथ और पैर काँपते थे और रोके नहीं रुकते थे। वार्द्धक्य ने पूर्णरूप से आकर घेरा था —ऐसा जर्जर था। ८२८

❀एमुरु निलैयित्त इडुहु कण्णिनन्
आमैयि तिरुक्कैयि नमैन्द वाक्कैयन्
नामनूल् मार्बित्त नणुहि नानरो
तूमनत् तरुन्ददि यिरुन्द शूळल्वाय् 829

एम् उरु निलैयित्तन्–आकुलित-मन; इटुकु कण्णितन्–सँकरी आँखों का; आमैयित् इरुक्कैयित्–कछुए की पीठ के समान; अमैन्त–कुबड़ा बना; आक्कैयन्–शरीरी; नाम नूल् मार्पित्तन्–श्रेष्ठ (उपवीत-)सूत्रधारी वक्ष का; तू मनत्तु अरुन्तति–पवित्र-मना, अरुन्धती (सी सीता) के; इरुन्त चूळल् वाय्–रहने के स्थान में; नणुकित्तान्–आ पहुँचा। ८२९

उसका मन घबड़ाया हुआ था। आँखें सँकरी थीं। कछुए के कूबड़ के समान उसका शरीर वर्तुल था। वक्ष पर यज्ञोपवीत था। ऐसा वह कपटी पवित्रमना, अरुन्धती-सी सीतादेवी के रहने के स्थान में आ पहुँचा। ८२९

❀तोमरु शालैयित् वायि रुन्नित्तान्
नामुदल् कुळरिड नडुङ्गुज् जॊल्लित्तान्
यावरिव् विरुक्कैयु ळिरुन्दु ळोरॆन्ड्रान्
तेवरु मरुडरत् तिरिन्द मेनियान् 830

तेवरुम् मरुळ तर–देवों को भी भ्रमित करे, ऐसा; तिरिन्त मेनियान्–परिवर्तित (संन्यासी का) वेषधर; तोम् अरु–अनिन्द्य; चालैयित् वायिल्–पर्णशाला के द्वार पर; तुन्नित्तान्–पहुँचकर; ना मुतल् कुळरिट–जीभ की नोक के लड़खड़ाते; नटुङ्कुम् चॊल्लित्तान्–खण्डित बोली के साथ; यावर्–कौन; इ इरुक्कै उळ्–इस कुटीर के अन्दर; इरुन्तु उळीर्–रहते हो; ऎन्ड्रान्–पूछा। ८३०

उसका परिवर्तित वेश देखकर देव भी भ्रमित हो गये थे। वह कलंकहीन पर्णशाला के द्वार पर आ पहुँचा। लड़खड़ाती जिह्वा से अस्पष्ट बोली में उसने प्रश्न किया कि इस कुटीर के अन्दर तुम कौन रहते हो?। ८३०

❀तोहैयु मिव्विळित् तोमिल् शिन्दनैच्
चेहरु नोन्बित्त रॆन्नुज् जिन्दैयाल्
पाहियल् किळवियोर् पवळक् कॊम्बर्पोल्
एहुमि नीण्डॆन वॆदिर्वन् दॆय्दिनाळ् 831

तोकैयुम्–देवी भी; इ वळि–इस वन के; तोम् इल् चिन्तनै–अकलंकमन; चेकु अरु नोन्पित्तर्–अनिन्द्य तपोव्रती; ऎन्नुम् चिन्तैयाल्–यह विचार करके; पाकु इयल् किळवि–चासनी-सम बोली के साथ; ओर् पवळ कॊम्पर् पोल्–एक प्रवालवल्लरी

के समान; ईण्टु एकुमिऩ्–यहाँ पधारिए; ॲऩ्ऩ–कहते हुए; ॲतिर् वन्तु ॲय्तिऩाळ्–सामने आयीं। ८३१

सीताजी का विचार था कि वह पवित्र तपोधन है, जो इस वन में रहता है। इसलिए प्रवाललता-सदृश देवी ने चासनी-सम मधुर बोली में स्वागत किया कि यहाँ पधारिए। यह कहते हुए वे उस कपट तपस्वी के सामने आयीं। ८३१

❀ वॆऱ्पिडै मदमॆन वेर्क्कु मेनियन्
अऱ्पिऩिऱ् ऱिरैपुर ळाशै वेलैयऩ्
पॊऱ्पिनुक् कणियिनैप् पुहऴिऩ् शेक्कैयैक्
कऱ्पिनुक् करशियैक् कण्णि ऩोक्किऩाऩ् 832

वॆऱ्पु इटै–पर्वत पर; मतम् ॲऩ्ऩ–शिला-रस के समान (या गजमद के समान); वेर्क्कुम् मेनियऩ्–स्वेद-भरा शरीरी; अऱ्पिऩिल्–प्रेम की; तिरै पुरळ्–तरंगों से पूर्ण; आचै वेलैयऩ्–आशा-सागर में मग्न वह; पॊऱ्पिऩुक्कु अणियिऩै–सुन्दरता के अलंकार को; पुकऴिऩ् चेक्कैयै–कीर्ति-निलया को; कऱ्पिऩुक्कु अरचियै–पातिव्रत्य की रानी को; कण्णिऩ् नोक्किऩाऩ्–अपनी आँखों से (खूब) देखा। ८३२

रावण ने देवी को देखा। उसके शरीर से पर्वत से स्रवित शिलाजीत के समान स्वेद निकल रहा था। वह प्रेम की तरंगो से आकुलित आशा-सागर में मग्न था। उसने सुन्दरता की सुन्दरता, यश का आलय और पातिव्रत्य की रानी को अपनी आँखें फाड़कर देखा। ८३२

❀ तुङ्गलिन् कुयिल्हॆळ्ळु शॊल्लि नुम्बरिन्
ओङ्गिय वळ्हिऩा ळुरुवङ् गाण्डलुम्
एङ्गिनऩ् मननिलै यादॆऩ् ऱुऩ्नुवाम्
वीङ्गिन मॆलिन्दऩ वीरत् तोळ्हळे 833

तुङ्कलिऩ्–थकी अवस्था में भी; कुयिल् कॆळ्ळु–कोयल की पक्ष; चॊल्लिऩ् उम्परिल्–बोली की श्रेष्ठता में; ओङ्किय अऴकिऩाळ्–बढ़ी सुन्दरता से युक्त (देवी के); उरुवम् काण्टलुम्–रूप को देखते ही; वीर तोळ्कळ्–रावण के वीरता में बढ़े हुए कंधे; वीङ्किऩ–और भी फूल उठे; मॆलिन्तऩ–(पर मिलेगी कैसे, सोचने पर) दुबले हुए; एङ्किऩऩ्–उत्कंठित उसके; मऩ निलै–मन की स्थिति; यातु ॲऩ्ऱु–क्या थी; इयम्पुवाम्–कैसे कहें। ८३३

भगवती सीता वनवास के कारण कृश थीं। उस दुःख के कारण थकी थीं। तो भी बोली में सुन्दरता की उच्च श्रेणी में थीं। उनका रूप देखते ही रावण के कन्धे फूल उठे। फिर तरस के कारण कृश हो गये। ऐसा उत्कंठा से व्यग्र उसके मन की दशा क्या कहें? । ८३३

पुत्तमयिऱ्	चायऱ्	ऱॅळिलिऩ्	पूनऱैच्
चुनैमडुत्	तुण्डिशै	मुरलुन्	दुम्बियिन्
इन्नमॅन्नक्	कळित्तुळ	वॅन्ब	तॅन्नवन्
मन्नमॅन्नक्	कळित्तदु	कण्णिऩ्	मालैये 834

कण्णिऩ् मालैये–अक्ष-माला; पुत्त मयिल् चायल् तन्–वन्यमयूरनिभ देवी की; ॲळिलिल्–रम्यता से; पू नऱै चुनै मट्टुत्तु उण्टु–फूलों के शहद-भरे गढ़े में पड़कर उसको पीकर; इचै मुरलुम्–सुस्वर में गुंजायमान; तुम्पियिन् इन्नम् ॲन्न–भ्रमरों के समान; कळित्तुळवु ॲन्पतु ॲन्–मत्त थी, यह कहने में क्या (अर्थ) है; अवन् मनम् ॲन्न–उसी के मन के समान; कळित्ततु–मुग्ध हुई। ८३४

उसकी आँखों की माला का कैसा वर्णन हो ? वनमयूरनिभ देवी का रूप देखकर वह फूलों का शहद गढ़े में भरकर उसे पीकर उन्मत्त भ्रमरों की पंक्ति थी —यह कहें ? पर उसका क्या अर्थ निकलेगा ? कहना यही पड़ेगा कि वे भ्रमर उसके ही मन के समान मुग्ध रहे। ८३४

❀ शेयिदळ्त्	तामरैच्	चेक्कै	तीरन्दिवण्
मेयिन्नळ्	मणिनिऱ्	मेनि	काणुदऱ्
केयुमे	यिरुपदिङ्	गिमैप्पि	नाट्टङ्गळ्
आयिर	मिल्लैयॅन्	ऱवल	मॅय्दिनान् 835

चे इतळ्–लाल दलों के; तामरै चेक्कै–कमल का वास; तीरन्तु–छोड़कर; इवण् मेयिन्नळ्–यहाँ जो पधारी हैं, उनकी; मणि निऱ–सुन्दर प्रकाशमय; मेनि–देह-कान्ति; काणुतऱ्कु–देखने के लिए; इङ्कु इरुपतु नाट्टङ्कळ् एयुमे–यहाँ मेरी बीस आँखें पर्याप्त हैं क्या; इमैप्पु इल् नाट्टङ्कळ–अपलक आँखें; आयिरम् इल्लै ॲन्ऱु–सहस्र नहीं हैं, यह सोचकर; अवलम् ॲय्तिनान्–दुखी हुआ। ८३५

उसे बड़ा पछतावा हुआ। लाल दलों से लसित कमल का वास-स्थान छोड़कर जो इधर आयी थी, उन (लक्ष्मीदेवी) की कान्तिमय देह को देखने के लिए क्या बीस आँखें पर्याप्त होंगी ? वह इस अभाव को लेकर चिन्तित हुआ कि मेरे अपलक सहस्र आँखें नहीं हैं ! । ८३५

अरैकडै	यिट्टमुक्	कोडि	यायुवुम्
परैतबु	तवत्तिनान्	पडैत्त	पोदुमे
निरैवळै	मुन्नगैयिन्	निन्ऱ	नङ्गैदन्
करैयरु	नन्नलक्	कडऱ्कॅन्	ऱुन्निनान् 836

निरै वळै मुन् कै–पंक्तियों में कंकण-भूषित हाथों के साथ; इ निन्ऱ नङ्कै तन्–यहाँ जो खड़ी है, इस नायिका के; करै अऱु–तटहीन; नल् नलम् कटऱ्कु–उत्तम सौन्दर्य-सागर में क्रीड़ा करने के लिए; पुरै तपु तवत्तिन्–दोषरहित तपस्या द्वारा; नान् पटैत्त–मैंने जो पायी; अरै कटैयिट्ट–आधी जिसके पीछे लगी हुई है; ॲन् मु

कोटि–मेरी तीन करोड़ (यानी कुल साढ़े तीन करोड़) साल की; आयुवुम्–आयु के दिन भी; पोतुमे–पर्याप्त होंगे क्या । ८३६

अपने हाथों में पंक्तियों में कंकण पहने हुए ये मेरे सामने खड़ी हैं। मैंने अपराधहीन तपस्या की और साढ़े तीन करोड़ साल की आयु पायी। पर इनके सौन्दर्य रूपी सागर में क्रीड़ा करने के लिए, उतनी आयु पर्याप्त होगी क्या ? । ८३६

❀ तेवरु मवुणरुन् देवि मारुडन्, कूवल्शॅय् तॉळिलित्तर् कुडिमै शॅय्दिड़
मूवुल हमुमिवर् मुरैयि ताळयान्, एवल्शॅय् दुय्हुवॅ निन्तियॅन् ऱॅण्णिनान् 837

तेवरुम्–देव; अवुणरुम्–असुर; तेविमार् उटन्–अपनी-अपनी पत्नियों के साथ; कूवल् चॅय् तॉळिलित्तर्–बुलाने पर सेवा करने के काम में लगे हुए; कुटिमै चॅय्तिट–(दासता का काम) परम्परा से करते आते हैं; मू उलकमुम्–(मेरे अधिकाराधीन) तीनों लोकों पर; इवर् मुरैयिन् आळ–ये यथाक्रम शासन करें; इनि–आगे; यान् एवल् चॅय्तु–मैं कैंकर्य करके; उय्कुवॅन्–तर जाऊँगा; ॲन्ऱु–ऐसा; उन्तिनान्–(रावण ने) विचार किया । ८३७

अब मैं त्रिलोकाधिपति हूँ। देव और दानव अपनी पत्नियों के साथ मेरी दासता परम्परा से करते आ रहे हैं। अब वह आधिपत्य इनके सिपुर्द कर दूँगा और मै भी उनकी सेवा करके तर जाऊँगा। ८३७

❀ उळैवुरु तुयरमुहत् तॉळियि दामॅनिन्
मुळैयॅयि ऱिलङ्गिडु मुरुव लॅन्बडुम्
तळैयविळ् कुळलिवट् कण्डु तन्दवॅन्
इळैयवट् कळिप्पन्‌ नरशॅन् ऱॅण्णिनान् 838

उळैवु उरु–उद्विग्न; तुयर् मुकत्तु–दुःख-प्रदर्शक आनन की; ऑळि इतु आम् ॲनिल्–आभा यह है तो; मुळै ॲयिरु इलङ्किटुम्–अंकुर-सम दाँतों से शोभित; मुरुवल् ॲन्पटुम्–मुस्कुराहट (का वदन) कैसा (अनुपम) होगा; तळै अविळ् कुळल्–खुले केश की; इवळ् कण्टु–इनको देखकर; तन्त–मुझे जिसने (समाचार) दिया; ॲन् इळैयवट्कु–अपनी छोटी वहिन को; ॲन् अरचु–अपना राज्य; अळिप्पॅन् ॲन्ऱु–दे दूँगा, ऐसा; ॲण्णिनान्–रावण ने सोचा। ८३८

अब वह शूर्पणखा का स्मरण कृतज्ञता के साथ करने लगा। ये अब उद्विग्न है और इनका मुख-भाव दुःख का परिचायक है। इस स्थिति में भी इनकी शोभा इतनी मनोरम है। अगर इनके मुख पर अंकुर के समान हास दिखाई दे यानी ये सुखी हो जायँ, तो कितनी सुन्दर लगेंगी। इनको ढूंढ़ लेकर शूर्पणखा ने मुझे इनका समाचार दिया। खुले केश की इनको मुझे दिलाने के प्रत्युपकार में अपनी छोटी वहिन को मैं अपना राज्य ही दे दूँगा। रावण ने भावातिरेक में ऐसा सोचा। ८३८

❀आण्टैया ननैयन्न वुन्नि याशैमेल्
मूण्डॅळु शिन्दनै मुरैयि लोन्ऱनैक्
काण्डलुङ् गण्णिनीर् तुडैत्त करुपिन्नाळ्
ईण्डॅळुन् दरुळुमॅन् ऱिन्निय कूऱिनाळ् 839

आण्टैयान्–वहाँ रहकर; अतैयन्न उन्नि–वह सब सोचकर; आचै मेल् मूण्टु ॲळु–प्रबल रूप से उभरी इच्छा-सहित; चिन्ततै–मन का; नुरै इलोन् तनै–अत्याचारी को; कण्णिन् नीर् तुटैत्त–आँखों के आँसू पोंछकर; करुपिन्नाळ्–पतिव्रता ने; ईण्टु ॲळुन्तरुळुम्–यहाँ पधारिए; ॲन्ऱु–यह; इन्निय कूऱिनाळ्–मधुर (स्वागत-वचन) कहा। ८३९

वह वहाँ रहकर ऐसा सोचता रहा। उसका मन प्रबल रूप से उमँगनेवाले राग से भर गया। उधर पतिव्रता देवी सीता ने अपनी आँखों से अश्रु पोंछ लिये। उस अधर्मी अत्याचारी से मधुर स्वर में 'इधर पधारिए' कहा। ८३९

❀एत्तिन्न ळॅय्दलु मिरुत्ति रीण्डॅन्न
वेत्तिरत् ताशनम् विदियि नल्हिनाळ्
मात्तिरि तण्डयल् वैत्त वञ्जनुम्
पूत्तॊडर् शालैयि लिरुन्द पोळ्दिने 840

एत्तिनाळ्–स्वागत करके; ॲय्तलुम्–(रावण के) अन्दर आते ही; इरुत्तिर् ईण्टु ॲन्न–यहाँ विराजिए, कहकर; वेत्तिरत्तु आचनम्–वेत्रासन; वितियिन्–यथा-विधि; नल्किनाळ्–दिया; मा तिरि तण्टु–गौरवपूर्ण त्रिदण्ड; अयल् वैत्त–पास रखकर; वञ्चनम्–वंचक भी; पू तॊटर् चालैयिन्–पुष्पपूर्ण पर्णशाला में; इरुन्त पोळ्तिने–जब रहा, तब। ८४०

उन्होंने स्तुति के साथ स्वागत किया, तो वह दुराचारी पर्णशाला में आ गया। सीताजी ने 'इधर विराजिए' कहकर एक बेंत का बुना आसन डसवाकर बिठाया। वह कपटी रावण अपने आदरणीय त्रिदण्ड को पास रखकर पर्णशाला के अन्दर उस आसन पर आसीन जब हुआ, तब—। ८४०

नडुङ्गिन मलैहळु मरनु नावविन्
दडङ्गिन पऱवैयुम् विलङ्गु मञ्जिन
पडङ्गुरैन् दॊडुङ्गिन पाम्बुम् बावहक्
कडुन्दॊळि लरक्कनैक् काणुङ् गण्णिने 841

पातक कटुम् तॊळिल् अरक्कनै–पातक, कठोर अत्याचारी राक्षस को; काणुम् कण्णिन्–वहाँ देखकर; मलैकळुम्–पर्वत और; मरनुम्–वृक्ष; नटुङ्किन–काँपे; पऱवैयुम्–खग भी; ना अविन्तु–अवाक्; अटङ्किन–चुप रहे; विलङ्कुम् अञ्चिन–जानवर भी भयातुर हुए; पाम्पुम्–सर्प भी; पटम् कुरैन्तु–फन फैलाना छोड़कर; ऒटुङ्किन–ठिठुरे रहे। ८४१

पातक और कठोर दुराचारी को वहाँ देखकर पर्वत और तरु काँप उठे। खगगण अवाक् हो दब गये। जानवर भयभीत हुए। सर्प भी फन समेटकर दबे पड़े रहे। ८४१

❀ इरुन्दवन् यावदिव् विरुक्कै योङ्गुरै, अरुन्दवन् यावनीर् यारॆ यॆन्ऱलुम्
विरुन्दिन रिव्वऴि विरहि लारॆन्प्, पॆरुन्दडङ् गण्णवळ् पेशन् मेयिनाळ् 842

इरुन्तवन्–आसनस्थ हो रावण ने; इ इरुक्कै यावतु–यह वासस्थान कौन है; ईङ्कु उऱै–यहाँ का वासी; अरुम् तवन् यावन्–श्रेष्ठ तपस्वी कौन; नीर यारॆ–आप कौन हैं; ॲन्ऱलुम्–पूछा, तब; इ वऴि–(ये) यहाँ आगत; विरुन्तितर्–अतिथि हैं; विरकु इलार्–कपटहीन (साधु) हैं; ॲन–सोचकर; पॆरुम् तटम् कण् अवळ्–विशाल आयताक्षी सीताजी; पेचल् मेयिनाळ्–बोलने लगीं। ८४२

वहाँ आसनस्थ रावण ने कुतूहलप्रदर्शक प्रश्न किये। यह वास कौन सा है? यहाँ के वासी श्रेष्ठ तपस्वी कौन हैं? आप कौन हैं? तब देवी ने सोचा कि ये निष्कपट अतिथि हैं। विशाल आयताक्षी सीताजी बोलीं। ८४२

❀ तयरदन् ऱॊल्हुलत् तनयन् ऱम्बियो
डुयर्हुलत् तन्नैशॊ लुच्चि यॆन्दिनान्
अयर्विल निवऴि युऱैयु मन्नवन्
पॆयरिनैत् तॆरिहुदिर् पॆरुमै योरॆन्ऱाळ् 843

पॆरुमैयोर्–आदरणीय; तॊल् कुलम्–प्राचीन कुल के; तयरतन् तनयन्–दशरथ के पुत्र; तम्पियोटु–अपने अनुज के साथ; उयर् कुलत्तु अन्नै–श्रेष्ठकुल-जाता अपनी माता की; चॊल् उच्चि एन्तितान्–आज्ञा सिर पर धारण करके; अयर्वु इलन्–विना संताप के; इ वऴि उऱैयुम्–यहाँ वास करते हैं; अन्नवन्–उनका; पॆयरिनै–नाम को; तॆरिकुतिर्–आप जानते ही होंगे; ॲन्ऱाळ्–कहा (देवी ने)। ८४३

आदरणीय अतिथि! प्राचीन और प्रसिद्ध इक्ष्वाकुकुल के दशरथ के पुत्र अपने भाई के साथ इधर रहते हैं। वे अपनी उच्चकुलजाता माता की आज्ञा शिरोधारण करके विना किसी सन्ताप के इधर आये हैं और रहते हैं। उनका नाम आप जानते ही होंगे। ८४३

❀ केट्टनॆन् कण्डिलॆन् कॊऴुवु गङ्गैनीर्
नाट्टिडै यॊरुमुऱै नण्णि नॆन्मलर्
वाट्टडङ् गण्णिनीर् यावर् मामहळ्
काट्टिडै यरुम्बहर् कऴिक्कित् ऱॊरॆन्ऱान् 844

केट्टनॆन्–हाँ सुना है; कण्टिलॆन्–देखा नहीं है; कॊऴुवु कङ्कै नीर्–अत्यधिक गंगा-जलसमृद्ध; नाट्टिटै–(उस कोसल) देश में; ऒरु मुऱै नण्णितेन्–एक बार गया

था; मलर्—कमलपुष्प और; वाळ्—तलवार के समान; तटम्—विशाल; कण्णिन् नीर्—आँखों से शोभायमान आप; यावर् मा मकळ्—किनकी श्रेष्ठ दुहिता हैं; काट्टु इटै—वन के मध्य; अरुम् पकल् कळिक्किन्रीर्—मूल्यवान दिनों को (व्यर्थ) काट रही हैं); ॲन्ऱान्—पूछा। ८४४

रावण ने उत्तर में कहा कि हाँ ! हमने सुना है। पर समक्ष नहीं देखा है। कोसल देश में भी, जो गंगा-जल से अत्यधिक समृद्ध बना है, एक बार गया हुआ था। पर वह बात छोड़ो। कमल और तलवार के सदृश आँखों से शोभायमान आप किसकी सुपुत्री हैं ? वन में आकर अपने अच्छे दिन व्यर्थ कर रही हैं। ८४४

❀ अन्नहमा नॅरिपड रडिह णुम्मलाल्
निन्नैवदोर् दॅय्वम्वे रिलाद नॅञ्जिनान्
शन्नहन्मा मडमहळ् शन्नहि काहुत्तन्
मन्नैविया नॅन्ऱनळ् मरुविल् कऱ्पिनाळ् 845

मऱु इल् कऱ्पिनाळ्—अकलंक पतिव्रता सीतादेवी ने; अनकम् मा नॅरि पटर्—अनघ उत्तम मार्ग-गामी; अटिकळ्—साधु महात्मा; नुम् अलाल्—आप जैसों के सिवा; निन्नैवतु—स्मरण करते; ओर् तॅय्वम् वेऱु इलात—किसी और देव का (जो) नहीं; नॅञ्चितात्—वैसे मन वाले; मा चनकन्—उन महान जनक की; मट मकळ्—बाला पुत्री हूँ; चनकि—जानकी नाम की; यान्—मैं हूँ; काकुत्तन् मनैवि—काकुत्स्थ की पत्नी; ॲन्ऱनळ्—कहा। ८४५

अनिन्द्य पातिव्रत्यशीला देवी ने सहज ही उत्तर दिया कि अनघ मार्ग-गामी साधु महात्मा ! मैं उन उत्तम जनक की दुहिता हूँ, जिनके स्मरण में आप जैसे महात्माओं के अलावा कोई अन्य देव ही नहीं रहता। मैं काकुत्स्थ की पत्नी हूँ। ८४५

❀ अव्वळि यन्नैयन्न वुरैत्त वायिळै
वॅव्वळि वरुन्दिन्नीर् विळैन्द मूप्पिन्नीर्
इव्वळि यिरुविनै कडक्क वॅण्णिन्नीर्
ॲव्वळि निन्ऱुमिन् ऱॅय्दि नीरॅन्ऱाळ् 846

अन्नैयन उरैत्त—यह जिन्होंने कहा; आय् इळै—उन आभरणभूषिता ने; अ वळि—तब; विळैन्त मूप्पिन्नीर्—बहुत वृद्ध; इ वळि—इस तपस्या के जीवन में; इरु विनै कटक्क—(पाप-पुण्य) दोनों कर्मों का संतरण करने के; ॲण्णितीर्—इच्छुक; वॆम् वळि वरुन्तिनीर्—कठोर मार्ग पर सायास आये हैं; ॲ वळि निन्ऱुम्—कहाँ से; इन्ऱु ॲय्तितीर्—आज पधारे; ॲन्ऱाळ्—(सहानुभूति में) पूछा। ८४६

यह वृत्तान्त कहने के बाद देवी ने रावण से प्रश्न किया। हे अति वृद्ध संन्यासी ! पापपुण्य-सन्तरणार्थ व्रत में लगे रहे तपस्वी ! आप बहुत

दूर का कठिन मार्ग तय करके आये लगते है। आप कहाँ से पधारे हैं? । ८४६

❀ इन्दिरऱ् किन्दिर नॅळुद लाहलाच्, चुन्दर नान्मुहन् मरबिऱ् ऱोन्ऱिनान्
अन्दरत् तोडुमॅव् वुलहु माळ्हिन्ऱान्, मन्दिरत् तरुमऱै वेहु नाविनान् 847

इन्तिरऱ्कु इन्तिरन्–देवेन्द्र का भी इन्द्र; ॲळुतल् आकला–जिसका चित्रांकन कठिन है; चुन्तरन्–वैसा सुन्दर पुरुष; नान्मुकन् मरपिल् तोन्ऱिनान्–चतुर्मुख के वंश में जनित; अन्तरत्तोटुम्–आकाशलोक के साथ; ॲ उलकुम्–सभी लोकों पर; आळ्किन्ऱान्–शासन करता है; मन्तिरत्तु अरु मऱै–मंत्रकोष वेदों का; वेकुम्–निलय; नाविनान्–जिसकी जीभ है, वह । ८४७

तब कपटसंन्यासी ने रावण की महिमा सुनायी। देवेन्द्र का इन्द्र; चित्र खींचने मे कठिन हो, ऐसा रूपवान; चतुर्मुख का वंशजात; आकाशलोक के साथ सभी लोकों का राजा और मन्त्रों से पूर्ण दिव्य वेदों से अभ्यस्त जीभ का स्वामी। ८४७

❀ ईशनाण् डिरुन्दपे रिलङ्गु मालुवरै
ऊशिवे रॉडुम्बऱित् तुरुट्टु मूऱ्ऱत्तान्
आशैहळ् शुमन्दपे ररमरि यानैहळ्
पूशल्शॅय् मरुप्पिनैप् पॉडिशॅय् मार्बिनान् 848

ईचन्–शिवजी; आण्टु इरुन्त–जहाँ वास करते थे; इलङ्कुमाल् वरै–उस शानदार पर्वत को; ऊचि वेर् ओटुम्–सूची से पतली-पतली जड़ों के जालों के साथ; पऱित्तु उरुट्टुम्–उखाड़कर लुढ़काने का; ऊऱ्ऱत्तान्–बलशाली; आचैकळ् चुमन्त–दिशावाही; पेर् अमर् यानैकळ्–बड़े योद्धा गजों के; पूचल् चॅय्–युद्धोपयुक्त; मरुप्पिनै–दाँतों का; पॊटि चॅय् मार्पिनान्–चूर्णकारी वक्ष-युक्त । ८४८

शिवजी के वास के कैलासपर्वत को आमूल उखाड़कर लुढ़काने में समर्थ; दिशावाही योद्धा गजों के युद्धप्रयुक्त दाँतों का चूर्णकारी वक्षयुक्त; । ८४८

❀ निऱ्पवर् कडैत्तलै निरैन्द तेवरे, शॉऱ्पहु मऱ्ऱवन् पॅरुमै शॉल्लुङ्गाल्
कऱ्पह मुदलिय निदियङ् गैयन, पॉऱ्पदि मानन्दे रिलङ्गै पॉन्नहर् 849

कटै तलै निऱैन्तु निऱ्पवर्–उसके द्वार पर भीड़ में जो खड़े हैं, वे; तेवरे–देव ही हैं; कऱ्पकम् मुतलिय नितियम्–कल्पतरु आदि देवलोक की निधियाँ; कैयत–उसके हाथ में हैं; पॊन् पति–निधिपति का; मानम्–(पुष्पक नाम का) यान; तेर्–उसका रथ है; पॊन्नकर्–(उसकी) स्वर्णपुरी; इलङ्कै–लंका है; मऱ्ऱु–और; अवन् पॅरुमै–उसकी महिमा; चॊल्लुङ्काल्–कहते समय; चॊल् पकुम्–शब्द अपर्याप्त रह जायँगे । ८४९

उसके द्वारों पर उसकी कृपा की प्रतीक्षा में जो भीड़ लगाकर खड़े रहते है, वे देव हैं। कल्पतरु आदि देव-निधियाँ उसके अधीन है।

निधिपति कुबेर का पुष्पकयान उसका रथ है। उसकी राजधानी सोने की लंका है। उसकी महिमा कहने लगें, तो शब्द दुर्बल पाये जायँगे। ८४९

[अतिरिक्त दो पद का सार : तिलोत्तमा आदि अप्सराएँ उसके वैभव से आकृष्ट होकर लंका में आयी हैं और उसका पानदान और पादरक्षक उठाना और पैर सहलाना आदि सेवाएँ बजाती हैं। १

चन्द्र और सूर्य उसके मन के अनुसार चलते हैं। इन्द्र आदि देव उसके प्रासाद की रखवाली करते है। २]

पॊऩ्ऩह रत्तिनुम् पॊलऩ्गॊ णाहर्दम्
तॊऩ्ऩह रत्तिनुम् तॊडर्न्द मानिलत्
तन्ऩह रत्तिनु मिनिय वीण्डवन्
नन्ऩह रत्तन नवैयि लादन 850

पॊन् नकरत्तितुम्–स्वर्णपुरी, देवेन्द्र की राजधानी, अमरावती में; पॊलन् कॊळ् नाकर् तम्–सुन्दर नागों के; तॊल् नकरत्तिलुम्–प्राचीन (पाताल की) भोगवती नाम के नगर में और; मा निलत्तु तॊटर्न्त–इस विशाल भूलोक में पास-पास रहनेवाले; अँ नकरत्तितुम्–नगरों में किसी में भी; इतिय–सुखद; नवै इलातन–दोषहीन पदार्थ; ईण्टु–मिलकर; अवन् नल् नकरत्तन–उसके श्रेष्ठ नगर में प्राप्त होते हैं। ८५०

देवेन्द्र-नगर अमरावती में, सुन्दर नागों के भोगवती नामक नगर में और भूलोक के पास-पास लगातार रहनेवाले सभी नगरों में किसी भी नगर में प्राप्य सभी सुखदायी और निर्दोष विलासिता के पदार्थ सब मिलकर उसके नगर में आ गये हैं। ८५०

*ताळुडै मलरुळोन् तन्द वन्दमिल्
नाळुडै वाळ्क्कैय नारि बाहत्तन्
वाळुडै तडक्कैयन् वारि वैत्तवॆङ्
गोळुडै शिऱैयिनन् गुणङ्गण् मेयिनान् 851

ताळ उटै मलर् अळोन्–नालसहित कमल पर आसीन; तन्त–से दत्त; अन्तम् इल् नाळ् उटै वाळ्क्कैयन्–अन्तहीन आयु-प्राप्त; नारि पाकत्तन्–अर्धनारीश्वर शिव की; वाळ् उटै–(दत्त) तलवार से युक्त; तट कैयन्–विशाल-हस्त; वारि वैत्त–समेटकर एक स्थान पर रखे हुए; वॆम् कोळ् उटै–बलिष्ठ ग्रह जिसमें है, उस; चिऱैयितन्–कारागृह के पति; कुणङ्कळ् मेविनान्–उत्तम गुणी। ८५१

कमलासनदत्त अनन्त आयु प्राप्त उसके हाथ में अर्धनारीश्वर-प्रदत्त चन्द्रहास तलवार है। उसके काराग्रह में सभी ग्रह एक साथ बन्द कर रखे गये हैं, वह गुणगणपूर्ण है। ८५१

वॆम्मैदी रॊळुक्किनन् विरिनूद कॆळवियन्
शॆम्मैयोन् मन्मदन् तिहैक्कुञ् जॆव्वियान्
अॆम्मैयो रनैवरु मिरैव रॆन्नुम्
मुम्मैयोर् पॆरुमैयु मुऱ्ऱुम् पॆऱ्ऱियान् 852

वॆम्मै तीर् ऒळुक्कितन्–कठोरता-रहित आचरण का; विरिनूत कॆळवियन्–विस्तृत श्रवण-ज्ञानी; चॆम्मैयोन्–सदाचारी; मन्मतन् तिकैक्कुम् चॆव्वियान्–मन्मथ भी ठिठक से भर जाए, ऐसा रूपवान; अॆम्मैयोर् अनैवरुम्–कहीं के कोई भी; इऱैवरॆ अॆन्नुम्–जिनको आदिदेव मानते हैं; मुम्मैयोर् पॆरुमैयुम्–उन त्रिदेवों की महिमाएँ; मुऱ्ऱुम् पॆऱ्ऱियान्–सम्पूर्ण रूप से इसने पायी है। ८५२

उसका आचरण क्रूरता-रहित है। विस्तृत रूप से उसने वेद-शास्त्र पढ़े-सुने हैं। नेकचलन है। मन्मथ को भी उसका रूप-सौन्दर्य देखकर तरस होता है। जिन त्रिदेवों को सभी लोकवासी अपने आदिदेव मानते हैं, उन सभी की सम्मिलित महिमाएँ इसके पास हैं। ८५२

अनैत्तुल हित्तुमळ् हमैन्द नङ्गैयर्
अॆनैप्पल रवन्ऱन दरुळि निच्चैयोर्
निनैत्तन रुरुहवु मुदव नेर्हलन्
मनक्किनि याळॊरु मादै नाडुवान् 853

अनैत्तु उलकित्तुम्–सभी लोकों में; अळकु अमैन्त नङ्कैयर्–जो सौंदर्य-भरी वनिताएँ हैं; अवन् तन्तु अरुळिन्–उसकी कृपा की; इच्चैयार्–इच्छुक हैं; अनै पलर्–कितने ही अनेक; निनैत्तनर् उरुकवुम्–उसका स्मरण कर पिघल रही हैं; उतव नेर्कलन्–उन पर कृपा कर सहायता देने को सम्मत नहीं होकर; मनक्कु इनियाळ्–अपने मनोनुकूल; ऒरु मातै नाटुवान्–एक रमणी की खोज में है। ८५३

सभी लोकों की सभी आकर्षण नारियाँ उसकी कृपा के लिए लालायित हैं। उनमें कितनी ही उसके स्मरण में उसकी कृपा प्राप्त न होने से रो रही हैं। वह उन पर कृपा नहीं करता; पर अपने मनोनुकूल एक रमणी की खोज में है। ८५३

❀ आण्डैया नरशुवीऱ् ऱिरुनूद वन्नहर्
वेण्डियान् शिल्पह लुऱैदन् मेयिनेन्
ईण्डिया निरुन्दवऱ् पिरियु नॆञ्जिलेन्
मीण्डनॆन् ऱवनुडै विनैय मुऱ्ऱुवान् 854

आण्टैयान्–वह; अरचु वीऱ्ऱिरुन्त–जहाँ से राज करता है; अ नकर्–उस नगर में; यान् वेण्टि–मैं चाहकर; चिल पकल् उऱैतल् मेयिनेन्–कुछ दिन रहा; यान् ईण्टु इरुन्तु–मैं उसके संग रहकर; अवन् पिरियुम् नॆञ्चु इलेन्–उससे अलग होना न चाहकर; अवनुटै विनैयम् मुऱ्ऱुवान्–उसका एक कार्य साधने हेतु; मीण्टनॆन्–लौटा। ८५४

उसकी राजधानी में मैं कुछ दिन अपनी इच्छा से रहा। उसको छोड़कर आने को मेरा मन नहीं हुआ। तो भी उसका एक कार्य साधने के ही हेतु वहाँ से लौट आया हूँ। ८५४

❀ वेदमुम् वेदिय ररुळुम् वें:(ह्)कलाच्, चेदन मन्नुयिर् तिन्नुन् दीविन्नेप्
पादह वरक्कर्दम् पदियिन् वैहुदऱ्, केदुवॅन् नुडलमु मिहैयॅन् ऱॅण्णुवीर् 855

उटलमुम् मिकै ऍन्ऱु ऍण्णुवीर्–शरीर को भी अनावश्यक माननेवाले; वेतमुम्–(आप) वेदों और; वेतियर् अरुळुम्–वेदज्ञ ब्राह्मणों की कृपा को; वें·.कला–न चाहकर; चेतत–चेतन; मन् उयिर्–अक्षय जीवों (मनुष्यों) के; तिन्नुम्–खादक; ती विन्नै–पापी; पातक–पातक; अरक्कर् तम् पतियिन्–राक्षसों के नगर में; वैकुतऱ्कु–ठहरे, इसका; एतु ऍन्–कारण क्या है। ८५५

देवी को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्होंने पूछा। आप तपस्वी है। मोक्षसाधन में शरीर को भी अनावश्यक मानते हैं। आप वेदों और वेदों के ज्ञाता ऋषियों का अनुग्रह न चाहकर चेतन और अक्षय जीवधारी मनुष्यों के खादक, कुकर्मी पातक राक्षसों की नगरी में जाकर रहे —इसका कारण क्या है? । ८५५

❀ वनत्तिडै मादवर् मरुङ्गु वैहलीर्, पुनऱ्ऱिरु नाट्टिडैप् पुनिद रूर्पुह
निनैक्किली रऱनॅऱि निनैक्कि लादवर्, इनत्तिडै वैहिनी रॅन्शॅय् दीरॅन्ऱाळ् 856

वनत्तु इटै–वन में; मा तवर् मरुङ्कु–महान तपस्वियों के पास; वैकलीर्–नहीं ठहरे; पुनल् तिरु नाट्टु इटै–जलसमृद्ध उर्वर प्रदेशों में; पुनितर्–पवित्राचरण; ऊर् पुक–(लोगों के) ग्रामों में जाकर रहना; निनैक्किलीर्–नहीं सोचा; अऱम् नॅऱि निनैक्किलातवर्–धर्म-मार्ग-विमुख; इनत्तु इटै–जातियों के बीच; वैकिनीर्–रहे; ऍन् चॅय्तीर्–क्या ही (अनुचित कार्य) किया; ऍन्ऱाळ्–देवी ने पूछा। ८५६

वन में महान तपस्वी लोग वास करते हैं। उनके सत्संग में नहीं रहे। जलसमृद्ध प्रदेशों के पवित्र गृहस्थ लोग रहते हैं। न आपने उन ग्रामों में जाना पसन्द किया। धर्ममार्गविमुख राक्षसों की जाती के लोगों में जाकर रहे! यह क्या ही अनुचित काम आपने किया है! देवी ने अपना भाव व्यक्त किया। ८५६

मङ्गैय:(ह्) दुणर्त्तल् केट्ट वरम्बिलान् मरुविऱ् ऱीर्न्दाळ्
वॅङ्गणवा ळरक्क रॅन्न वॅरुवुवाळ् मॅय्मै नोक्कित्
तिङ्गळ्वाण् मुहत्ति नाळे तेवरिऱ् ऱीय रन्ऱे
ऍङ्गळ्पो लियर्क्कु नल्लार् निरुदरे पोलु मॅन्ऱान् 857

मङ्कै–देवी को; अ·.तु उणर्त्तल् केट्ट–वह समझाना सुनकर; वरम्पु इलान्–अत्याचारी; मरुविल् तोर्न्ताळ्–निर्दोष; वॅम् कण् वाळ् अरक्कर्–क्रूर राक्षस का; ऍन्न–नाम लेते ही; वॅरुवुवाळ्–भयभीत हो जो हो जाती है, उनकी; मॅय्मै नोक्कि–

सच्ची स्थिति जानकर; तिङ्कळ् वाळ् मुकत्तिताळे–चन्द्रोज्वलमुखी; तेवरिल् तीयर् अन्ऱे–देवों से अधिक बुरे नहीं तो; ॲङ्कळ् पोलियर्क्कु–हम जैसों के लिए; निरुतरे–राक्षस ही; नल्लार् पोलुम्–अच्छे हैं; ॲन्ऱान्–कहा (रावण ने)। ८५७

अत्याचारी रावण ने देवी का यह समझाना सुना। समझ गया कि ये राक्षस का नाम लेते ही भड़क उठेंगी। उनकी सच्ची स्थिति देखकर उसने कहा कि उज्ज्वल चन्द्रमुखी! राक्षस देवों से अधिक (या के समान) बुरे नही होते। खासकर हमारे लिए राक्षस ही अच्छे हैं। ८५७

शेयिऴै यन्न शॉल्लल् तीयवर्च् चेर्दल् शॅय्दाल्
तूयव रल्लर् शॉल्लिऱ् ऱॊन्नॅऱि तॊडर्न्दो रॅन्ऱाळ्
मायैवल् लरक्कर् वल्लर् वेण्डुरु वरिक्क वॅन्ब
तायव ऴऱिद ऱेऱ्ऱा ळादलि लयलॊन् ऱॅण्णाळ् 858

अन्ऩ चॊल्ल–वह कहने पर; चेय् इऴै आयवळ्–श्रेष्ठ आभरणों से अलंकृत सीताजी; मायै वल् अरक्कर्–मायावी वलिष्ठ राक्षस; वेण्टु उरु–मनमाना रूप; वरिक्क वल्लर्–लेने में समर्थ हैं; ॲन्पतु–यह बात; अऱितल् तेऱ्ऱाळ्–नहीं जान पायीं; आतलिन्–इसलिए; अयल् ऒन्ऱु–और कोई बात; ॲण्णाळ्–न सोचती; चॊल्लिल्–कहना हो तो; तॊल् नॅऱि तॊटर्न्तोर्–प्राचीनों के सन्मार्ग पर जो चलते हैं, वे; तीयवर् चेर्तल् चॅय्ताल्–बुरों से मिलते हैं तो; तूयवर् अल्लर्–पवित्र नहीं रहेंगे; ॲन्ऱाळ्–कहा। ८५८

रावण की वह वात सुनी। उत्तम आभरणों से अलंकृत सीताजी को मालूम नहीं था कि बलिष्ठ मायावी राक्षस मनमाना रूप लेने में समर्थ हैं। इसलिए उन्होंने कुछ अन्यथा नही सोचा। उन्होंने अपना मन्तव्य यों सुनाया कि प्राचीन परम्परागत सन्मार्गगामी श्रेष्ठ लोग बुरे लोगों की संगति करेंगे तो वे भी पवित्र नहीं रहेंगे। ८५८

अयिर्त्तन ळाहु मॅन्ऱो रैयुऱ वहत्तुक् कॉण्डान्
पॅयर्त्तदु तुडैक्क वॅण्णिप् पिऱिदुरप् पेश लुऱ्ऱान्
मयक्कऱु मुलह मून्ऱिल् वाऴ्बवर्क् कनैय वल्लोर्
इयऱ्कैयि निऱ्प दल्ला लियऱ्ऱला नॅऱियॆ दॆन्ऱान् 859

अयिर्त्तनळ् आकुम्–शंकित हो गयीं; ॲन्ऱु–सोचकर; ओर् ऐयुऱवु–एक संशय; अकत्तु कॊण्टान्–मन में करके; अतु–उसे; पॆयर्त्तु तुटैक्क ॲण्णि–हटाकर मिटाना चाहते हुए; पिऱितु उऱ–दूसरे प्रकार से; पेचल् उऱ्ऱान्–बोलने लगा; मयक्कु अऱुम्–निर्भ्रम; उलकम् मून्ऱिल् वाऴ्पवर्क्कु–तीनों लोकों के वासियों के लिए; अनैय–उन; वल्लोर्–बलवान राक्षसों के; इयऱ्कैयिन्–स्वभावानुसार; निऱ्पतु अल्लाल्–वर्तन के सिवा; इयऱ्ऱल् आम् नॅऱि–अनुसरण योग्य मार्ग; एतु–कहाँ; ॲन्ऱान्–कहा। ८५९

भगवती शंकितमन हो गयी हैं—ऐसा एक संशय रावण के मन में

हो गया। उसने उस शंका को निर्मूल करना चाहा। अतः कुछ दूसरे प्रकार से बात चलायी। कहा— तीनों लोकों के वासी निर्भ्रम रहना चाहें, तो उन्हें उन वलिष्ठ राक्षसों के स्वभाव के अनुरूप वर्तन के सिवा कोई चारा नहीं रहता। ८५९

तिऱन्दॆरि वञ्ज तच्चॊऱ् चॆप्पलुम् जॆप्प मिक्काळ्
अऱन्दरु वळ्ळ लीण्डिङ् गरुन्दव मुयलु नाळुळ्
मऱन्दलै तिरिन्द वाळ्क्कै यरक्करॆदम् वरुक्कत् तोडुम्
इऱन्दनर् मुडिवर् पिन्नै यिडरिलै युलहि लॆन्ऱाळ् 860

तिऱम् तॆरि वञ्चनन्–इंगितज्ञ वंचक के; अ चॊल् चॆप्पलुम्–वह कथन करते ही; चॆप्पम् मिक्काळ्–अति नेक देवी; अऱम् तरु वळ्ळल्–धर्म-संस्थापक हमारे प्रभु; ईण्टु–अब; इङ्कु–यहाँ; अरुम् तवम् मुयलुम् नाळ् उळ्–उत्तम तपस्या जितने समय करते हैं, उसके अन्दर; मऱम् तलै तिरिन्त–पापाचारी; वाळ्क्कै अरक्कर्–जीवन-यापनकारी राक्षस; तम् वरुक्कत्तोटुम् इऱन्तनर् मुटिवर्–अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे; पिन्नै–बाद; उलकिल् इटर् इलै–कोई दुःख नहीं रहेगा; ऎन्ऱाळ्–कहा। ८६०

रावण वंचक था और इंगितज्ञ था। उसकी यह बात सुनकर निष्कपट देवी ने कहा कि हमारे धर्मसंस्थापक प्रभु यहाँ तपस्या करते हैं। उनके तपस्या के दिनों के पूरे होने के अन्दर ही पापाचारी राक्षस अपने वर्गों के साथ मर मिटेंगे। फिर इस संसार में कोई कष्ट नहीं रहेगा। ८६०

मानव ळुरैत्त लोडु मानिड ररक्कर् तम्मै
मीनॆन्न मिळिरुङ् गण्णाय् वेरऱ वॆल्व रॆन्निल्
यानैयि निनत्तै यॆल्ला मिळमुयल् कॊल्लु मिन्नुम्
कूनुहिर् मडङ्ग लेऱ्ऱिन् कुळुवैमान् कॊल्लु मॆन्ऱान् 861

मानवळ्–सम्मान्य देवी के; उरैत्तलोटुम्–कहने पर; मीन् ऎन्न मिळिरुम् कण्णाय्–मछली-सदृश चंचलाक्षी; मानिटर् अरक्कर् तम्मै–मानव राक्षसों को; वेर् अऱ वॆल्वर्–जड़ से काटकर विजयी होंगे; ऎन्निल्–तो; यानैयिन् इनत्तै ऎल्लाम्–सारे गजसमूहों को; इळ मुयल् कॊल्लुम्–एक बाल शशक मार देगा; मिन्नुम्–चमकदार; कूर् उकिर्–तेज नाखूनों से युक्त; मटङ्कल् एऱ्ऱिन् कुळुवै–पुरुषसिंहों के वृन्द को; मान् कॊल्लुम्–हरिण मार देगा; ऎन्ऱान्–(व्यंग्य में) कहा। ८६१

सम्मान्य सीताजी का यह कथन सुनकर रावण ने व्यंग्य के साथ कहा कि मछली-सी चंचल आँखों से शोभित देवी! मानव राक्षसों को मिटाकर विजयी हो जायँगे, तो एक बाल शशक गजसमूहों का नाश करा देगा। एक हरिण चमकदार तेज नाखूनों से युक्त पुरुषसिंहों को मिटा देगा। ८६१

मिऩ्ऱिरण् उऩैय पङ्गि विरादऩुम् वॆंहुऴि पॊङ्गिक्
कऩ्ऱिय मऩत्तु वॆंऩ्ऱिक् करऩ्मुदऱ् कणक्कि लोरुम्
पॊऩ्ऱिय पूश लॊऩ्ऱुङ् केट्टिलीर् पोलु मॆंऩ्ऱाळ्
अऩ्ऱवऱ् 'कडुत्त दुऩ्ऩि मऴैक्कणी ररुवि शोर्वाळ् 862

मिऩ् तिरणट्टु अऩैय–विजली के पुंज के समान; पङ्कि–बालों से युक्त; विराततऩुम्–विराध और; वॆंकुऴि पॊङ्कि–बढ़ते क्रोध से; कऩ्ऱिय–उत्तप्त; मऩत्तु–मन का; वॆंऩ्ऱि–विजयी; करऩ् मुतल् कणक्कु इलोरुम्–खर आदि असंख्यक; पॊऩ्ऱिय–जब मरे, तब जो उठा; पूचल् ऒऩ्ऱुम्–वह शब्द कुछ; केट्टिलिर् पोलुम्–सुना नहीं था (आपने) शायद; ऎंऩ्ऱाळ्–कहकर; अऩ्ऱु–उस दिन; अट्टुत्तु उऩ्ऩि–जो हुआ (श्रीराम का व्रण पाना आदि) ध्यान कर; मऴै कण् नीर्–मनोरम आँखों से आँसू; अरुवि चोर्वाळ्–धारा बहायी। ८६२

सीताजी ने उत्तर देते हुए कहा। विद्युत-पुंज के समान केशी विराध मरा। क्रोधोन्मत्त विजयशील खर आदि असंख्यक राक्षस उनसे लड़कर मरे। उनके मरने का शोर आपने सुना नहीं शायद! यह कहते-कहते उन्हें श्रीराम का युद्ध के अवसर पर हुआ कष्ट स्मरण आ गया। तो उनकी (मनोरम) शीतल आँखों से अश्रु की धारा बह चली। ८६२

वाळरि वळ्ळ ऱत्नाल् मान्गण निरुद रत्नार्
केळॊडु मडियु माऱुम् वाऩवर् किळरु माऱुम्
नाळैये काण्डि रऩ्ऱे नवैयिली रुणर्हि लीरो
मीळरुन् दरुमन् दऩ्ऩै वॆंल्लुमो पाव मॆंऩ्ऱाळ् 863

नवै इलीर्–निर्दोष साधु; वाळ् अरि वळ्ळल् तऩ्ऩाल्–प्रबल सिंह-सदृश प्रभु द्वारा; मान् कणम् निरुतर् अऩ्ऩार्–मृग-वृन्द राक्षस; केळ् ऒटु मटियुम्–अपने बन्धु-बान्धवों के साथ मरेंगे; आऱुम्–वह प्रकार और; वाऩवर् किळरुम्–देवों का उत्थान होगा; आऱुम्–वह प्रकार; नाळैये काण्टिर्–अऩ्ऱे–कल ही देखिए न; मीळ् अरुम्–अनुपेक्षणीय; तरुमम् तऩ्ऩै–धर्म को; पावम् वॆंल्लुमो–पाप हरा देगा क्या; उणर्किलीरो–यह नहीं समझते क्या; ऎंऩ्ऱाळ्–पूछा। ८६३

उन्होंने उसी भावावेश में कहा कि निर्दोष साधू! भयंकर सिंह-सदृश प्रभु (श्रीराम) द्वारा राक्षस रूपी मृगवृन्द बन्धु-बान्धवों के साथ मृतक बनेंगे और देवों का उत्थान होगा। इनका होने का प्रकार आप कल ही देखेंगे। अनुपेक्षणीय धर्म को पाप हरा सकेगा क्या? क्या आप यह नहीं जानते (कि धर्म विजयी रहेगा)?। ८६३

तेऩुड ऩमुद ळाय वऩ्ऩमॆंऩ् शिलशॊऩ् मालै
तानुडैच् चॆंविह ळूडु तवऴ्वुरत् तळिर्त्तु वीङ्गुम्
ऊऩुडै युडम्बि नाऩुम् मुरुहॆंळ्ळु मान मूऩ्ऱ
मानिडर् वलिय रॆंऩ्ऱ माऱ्ऱत्ताऱ् चीऱ्ऱम् वैत्ताऩ् 864

तेऩ् उटऩ् अमुतु अळाय अऩ्ऩ–शहद के साथ अमृत मिश्रित हो, ऐसा; मॆऩ् चिल चॊल्–कोमल कुछ शब्दों की; मालै–माला (पंक्ति); ताऩ् उटै चॆविकळ् ऊटु–अपने कानों में; तवऴ्वु उऱ–घुसने पर; तळिर्त्तु वीङ्कुम्–आनन्द से प्रफुल्लित; ऊऩ् उटै उटम्पिऩाऩुम्–मांसल शरीरी रावण भी; माऩिटर् वलियर्–मनुष्य बलवान है; ऎऩ्ऩुम् माऱ्ऱत्ताल्–इस कथन से; उऱु कॊळ्ळु माऩम् ऊऩ्ऱ–स्वाभिमान के सजग होकर चुभते; चीऱ्ऱम् वैत्ताऩ्–नाराज हुआ। ८६४

सीताजी की बोली शहदमिश्रित अमृत के समान कोमल और मधुर थी। उन शब्दों की पंक्ति सुनकर आनन्द से रावण के कन्धे फूल उठे। और मांसल शरीर पुलकित हुआ। पर सीता के कहने का तात्पर्य था कि मानव वलिष्ठ हैं। उससे उसका स्वाभिमान जाग उठा और उसे चुभने लगा। तो उसे कोप हुआ। ८६४

शीऱिऩ ऩुरैशॆय् वाऩच् चिऱुवलिप् पुल्लि योर्हट्
कोऱॊरु मऩिदऩ् शॆय्दा ऩॆऩ्ऱॆडुत् तियम्बि ऩायेल्
तेऱुदि नाळै येयव् विरुबदु तिण्डोळ् वाडै
वीऱिय पॊळ्दु पूळै वीयॆऩ वीव ऩऩ्ऱे 865

चीऱिऩऩ्–कुपित रावण; उरै चॆय्वाऩ्–बोला; अ चिऱु वलि–उन क्षुद्रबली; पुल्लियोर्क्कु–अल्पों को; ऑरु मतिऩऩ्–एक मानव ने; ईऱु चॆय्ताऩ्–अन्त दिला दिया; ऎऩ्ऱु ऎटुत्तु इयम्पिऩाय् एल्–यह बात लेकर बोलेंगी तो; नाळैये तेऱुति–(फल) कल ही जान लेंगी; अ इरुपतु तिण् तोळ् वाटै–(रावण की) उन बीस बलवान भुजाओं की हवा; वीचिय पॊऴुतु–जब बहेगी, तब; पूळै वी ऎऩ–'पूळै' (नाम के) फूल के समान; वीवऩ्–वह मानव मिट जायगा। ८६५

क्रुद्ध रावण ने यों कहा— विराध आदि क्षुद्र बली अल्प राक्षस हैं। उनका एक मानव ने अन्त करा दिया, इस बात को लेकर तुम बोल रही हो। तो कल ही देखोगी कि इसका फल क्या होगा। रावण के बीस वलिष्ठ भुजाओं के पराक्रम की हवा जब बहने लगेगी, तब उसके सामने यह मनुष्य 'पूळै' फूल के समान (जो बहुत ही मृदु है) कहीं का नहीं रहेगा। ८६५

मेरुवैप् परिक्क वेण्डिल् विण्णिनै यिडिक्क वेण्डिल्
नीरिनैक् कलक्क वेण्डि नॆरुप्पिनै यविक्क वेण्डिल्
पारिनै यॆडुक्क वेण्डिऱ् पालिहर् शॊऩ्ऩ लेळाय्
यारॆनक् करुदिच् चॊऩ्ना यिरावणऱ् करिदे दॆऩ्ऱाऩ् 866

पाल् निकर् चॆम् चॊल् एळाय्–दूध-सम मधुरभाषिणी वाले; मेरुवै परिक्क वेण्टिल्–मेरु को उखाड़ना चाहो; विण्णिनै इटिक्क वेण्टिल्–आकाश को गिराना चाहो; नीरिनै कलक्क वेण्टिल्–समुद्र को विलोडित करना चाहो; नॆरुप्पिनै अविक्क वेण्टिल्–अग्नि को शांत करना चाहो; पारिनै ऎटुक्क वेण्टिल्–भूमि को खोद लेना चाहो; इरावणऱ्कु–रावण के लिए; अरितु एतु–कठिन क्या है; यार् ऎऩ करुति–(उसको) कौन समझकर; चॊऩ्ऩाय्–ऐसा बोलती हो; ऎऩ्ऱाऩ्–कहा। ८६६

पॆण्णॆऩप् पिऴैत्ता यल्लै युऩ्ऩैयाऩ् पिशैन्दु तिऩ्ऩ
ऍण्णुवॆऩ् ऍण्णिप् पिऩ्ऩै यॆऩ्ऩुयि रिऴप्प नॆऩ्ऩा 871

विण्णवर् एवल् चॆय्य–देव मेरी सेवा-टहल करते हैं; वॆऩ्ऱ–मैंने उन पर विजय पायी; ऍऩ् वीरम् पाराय्–ऐसे मेरा पराक्रम नहीं देखा; मण् इटै–भूमि पर; पुऴुविऩ् वाऴुम्–कीड़ों के समान जीवित; मातिटर् वलियर् ऍऩ्ऱाय्–नर वलिष्ठ हैं, कहती हो; पॆण् ऍऩ पिऴैत्ताय्–स्त्री हो, जीवित बच गयी हो; अल्लै–नहीं तो; उऩ्ऩै–तुम्हें; याऩ्–मैं; पिचैन्तु तिऩ्ऩ–पीसकर खाने को; ऍण्णुवॆऩ्–सोचता; ऍण्णि–सोचकर (वैसा); पिऩ्ऩै–(करने के) बाद; ऍऩ् उयिर् इऴप्पॆऩ्–अपनी जान त्याग दूंगा; ऍऩ्ऩा–कहकर। ८७१

तब रावण ने कहा कि नारी! तुमने क्या कहा? मैंने देवों पर विजय पायी और वे मेरी सेवा-टहल कर रहे हैं। ऐसा मेरा पराक्रम तुम्हारे ध्यान में नहीं आया, और कहती हो कि भूमि पर कीड़ों का जीवन जो जी रहे है, वे मानव बली हैं! तुम स्त्री हो, उसी कारण तुम यह कहने के बाद जीवित रह सकी हो! नहीं तो मैं तुमको पीसकर खा जाने का विचार करूँगा; विचार क्या करूँगा, खा जाऊँगा। हाँ! खाने के बाद मैं भी आत्महत्या कर लूँगा। ८७१

कुलैवुऱ लऩ्ऩ मुऩ्ऩम् यारैयुङ् गुम्बि डावॆऩ्
तलैमिशै महुड मॆऩ्ऩत् तऩित्तऩि यिऩिदु ताङ्गि
अलहिल्पू णरम्बै माद रडिमुऱै येवल् शॆय्य
उलहमे ऴेऴु माऴुम् जॆल्वत्तु ऴुऱैदि यॆऩ्ऱाऩ् 872

अऩ्ऩम्–हंस (की-सी चाल वाली); कुलैवु उऱल्–मत घबड़ाओ; मुऩ्ऩम्–इसके पहले; यारैयुम् कुम्पिटा–किसी के सामने विनत नहीं; ऍऩ् तलै मिचै–(वैसे) अपने सिरों पर के; मकुटम् ऍऩ्ऩ–मुकुटों के समान; तऩि तऩि–अलग-अलग; इऩितु ताङ्कि–धारण करूँगा; अलकु इल् पूण्–अगणित आभरणधारिणी; अरम्पै मातर्–अप्सराएँ; अटि मुऱै एवल् चॆय्य–तुम्हारे चरणों की यथाज्ञा सेवा करेंगी; उलकम् एऴ् एऴुम् आऴुम्–चौदहों लोकों के शासन के; चॆल्वत्तुळ्–वैभवपूर्ण जीवन में; उऱैति–सुखी रहो; ऍऩ्ऱाऩ्–कहा। ८७२

हंसिनी! तुम व्याकुल मत बनो। मेरे सिर किसी के सामने कभी नहीं झुके हैं। उन पर जो मुकुट हैं, उनके समान मैं तुमको अपने सिरों पर बारी-बारी से धारण कर लूँगा। अगणित आभरणों से भूषित अप्सराएँ तुम्हारी चरण-सेवा करेंगी और तुम्हारी आज्ञाएँ बजा लायँगी। चौदहों लोकों पर शासन करने का जो मेरा वैभव है, उसको तुम अपनाओ और सुखी रहो। ८७२

शॆविहळैत् तळिर्क्कै याले शिक्कुऱच् चेमञ् जॆय्दाळ्
कवियैयुङ् गडक्कुम् वॆऩ्ऱिक् काहुत्तऩ् कऱ्पिऩैप्

पुवियुडे यौऴुक्क नोक्काय् पौङ्गेरिप् पुनिद रीयुम्
अवियैनाय् वेट्टट दॆन्न वॆन्शौन्ना यरक्क वॆन्ना 873

चॆविकळै–दोनों कानों पर; तळिर् कैयाले–करपल्लवों को; चिक्कु उऱ–खूब दबाकर; चेमम् चॆय्ताळ्–(इन शब्दों को सुनने से) रक्षित किया; अरक्क–राक्षस; पुवि इटै ऑऴुक्कम् नोक्काय्–लोकधर्म नहीं पालते; कवियैयुम् कटक्कुम् वॆन्रि–कवियों के भी कल्पनातीत; वॆन्रि–विजयशील; काकुत्तन् कऱ्पिनेनै–काकुत्स्थ की पत्नी को; पुनितर्–पवित्र ब्राह्मणों द्वारा; पौङ्कु ऎरि–प्रज्वलित अग्नि में; ईयुम्–देवार्पित; अवियै–हवि को; नाय् वेट्टतु अन्न–कुत्ता जैसा चाहकर; ऎन्न चॊन्नाय्–क्या कहा; ऎन्ना–कहकर। ८७३

यह सुनते ही देवी ने अपने करपल्लवों को कानों पर रखकर उन शब्दों के प्रहार से अपने कानों को बचा लिया। उन्होंने रावण को डाँटा। नीच निशाचर! लोक-धर्म-विमुख! कवियों के कल्पनातीत विजयशील काकुत्स्थ की पत्नी हूँ, मैं। मुझे तुम उस कुत्ते के समान चाहते हो, जो पवित्र ब्राह्मणों के द्वारा प्रचलित अग्नि में देय हवि को चाहता हो! चाहकर तुमने क्या कहा? । ८७३

पुल्नुनै नीरि नॊय्दाय्प् पोदले पुरिन्दु निऱ्ऱ
इन्नुयि रिऴत्त लञ्जि यिऱ्पिऱ्प् पऴित्त लुण्डो
मिन्नुयिर्त् तुरुमिर् चीऱम् वॆञ्जरम् विरवा मुन्नम्
उन्नुयिर्क् कुऱुदि नोक्कि यॊऴित्तिया लोडि यॆन्ऱाळ् 874

पुल् नुनै नीरिन्–घास की नोक की जल-बूँद के समान; नॊय्ताय्–अल्प वन; पोतले पुरिन्तु निऱ्ऱ–मिटना ही जिसका गुण है; इन् उयिर्–उस प्यारे प्राण को; इऴत्तल् अञ्चि–छोड़ने से डरकर; इल् पिऱप्पु–कुलीनता को (पातिव्रत्य को); अऴित्तल् उण्टो–मिटाऊँगी क्या; मिन् उयिर्त्तु–प्रकाश फैलाता हुआ; उरुमिल् चीऱम्–वज्र के समान फुफकारते हुए चलायमान; वॆम् चरम्–भयंकर शर; विरवा मुन्नम्–आकर लगे, इसके पहले ही; उन् उयिर्क्कु उऱुति नोक्कि–अपने प्राणों का हित समझकर; ओटि ऑऴित्ति–भागकर छिप जाओ; ऎन्ऱाळ्–देवी ने कहा। ८७४

यह जीवन घास की नोक पर की जल-बिन्दु के समान है। उसका गुण ही चलने का है। ऐसे प्राणों को जाने से रोकना चाहकर क्या मैं अपनी कुलीनता का निशान, पातिव्रत्य को त्याग दूँगी? राम का शर विद्युत-सम प्रकाश के साथ वज्र के समान फुफकारते हुए आयगा! उसके आने से पहले अपने प्राण बचा लो। अपने हित में भागो, कहीं और छिप जाओ। ८७४

ऎन्ऱव ळुरैक्क निऱ्ऱ विरक्कमि लरक्क नॆय्द
उन्ऱुणैक् कणव नम्बर् वुयर्दिशै शुमन्द वोङ्गल्

वन्ऱिऱन् मरुप्पि नाऱ्ऱत् मडितत्वॆन् मार्विन् वन्दाल्
कुन्ऱिडैत् तॊडुत्तु विट्ट पूङ्गणै कॊल्ल दॆन्ऱान् 875

ऎन्ऱु अवळ् उरैप्प—ऐसा उनके कहने पर; नित्तऱ इरक्कम् इल्—स्थिर दया-रहित; अरक्कन्—राक्षस; उन् तुणै कणवन्—तुम्हारे जीवन-संगी का; ऎय्त अम्पु—प्रेषित शर; उयर् तिचै चुमन्त—उन्नत दिशा-वाहक; ओङ्कल्—पर्वत-सम गजों के; वन् तिऱल् मरुप्पिन्—कठिन सारयुक्त दाँतों का; आऱ्ऱल् मटित्त—बल-भंजक; ऎन् मार्पिन् वन्ताल्—मेरी छाती पर आयगा तो; अतु—वह; कुन्ऱु इटै—पर्वत पर; तॊटुत्तु विट्ट—संधानकर प्रेषित; पून् कणै ऎन्ऱान्—पुष्पशर (सम) होगा; ऎन्ऱान्—कहा। ८७५

देवी ने यह चेतावनी दी, तो रावण, जिसका चित्त कभी स्निग्ध न रहा और सदा क्रूर, बोला— तुम्हारे जीवन-संगी का प्रेषित शर मेरा क्या कर सकेगा? मेरा वक्ष उन्नत दिशा-भार-वाही पर्वत-सम दिग्गजों के कठोर सारयुक्त दाँतों का भंजक है! उस पर वह शर पर्वत पर लगे पुष्प के समान हो जायगा। ८७५

अणङ्गिनुक् कणङ्ग नाळे याशैनो यहत्तुट् पॊङ्ग
उणङ्गिय वुडम्बि नॆनुक् कुयिरिनै युदवि युम्बर्क्
कणङ्गुऴै महळिर्क् किल्लाप् पॆरुम्बदङ् गैक्कॊ ळॆन्ना
वणङ्गित नुलहन् दाङ्गु मलैयिनुम् वलिय तोळान् 876

उलकम् ताङ्कुम्—भूधर; मलैयितुम्—पर्वतों से भी बढ़कर; वलिय तोळान्—कठोर कन्धों के रावण ने; अणङ्किनुक्कु—श्री की; अणङ्कु अन्नाळे—श्रीदेवी-सी देवी; आचै नोय्—राग-रोग; अकत्तु उळ् पॊङ्क—मन में प्रवल है; उणङ्किय—निर्बल पड़े; उटम्पिन्ऎऩ्क्कु—शरीरी मुझे; उयिरिनै उतवि—प्राण-दान करके; उम्पर्—स्वर्गवासिनी; कणम् कुऴै—भारी कुण्डलधारिणी; मकळिर्क्कु इल्ला—देवांगनाओं के लिए भी अप्राप्य; पॆरुम् पतम्—श्रेष्ठ पद को; कै कॊळ् ऎन्ना—अपनाओ, कहकर; वणङ्कितन्—प्रणाम किया। ८७६

रावण की भूधर पर्वतों से भी अधिक बलवान भुजाएँ थीं। ऐसे भुजवली रावण ने एक बात की— श्रीदेवी की भी श्री! राग-रोग मेरे अन्दर सितम ढा रहा है! मेरा शरीर शिथिल हो रहा है। कृपा करो। मुझे प्राणदान करो। और स्वर्गवासिनी, भारी कुण्डलधारिणी देवांगनाओं को भी अप्राप्य बहुमूल्य पद अपनाओ। यह कहकर उसने देवी के चरणों पर झुककर प्रणाम किया। ८७६

तऱैवायवन् वन्दडि ताऴ्दलुम्, करैवाळ्वड वावि कलङ्गिनळ्बोल्
इऱैवाविळै योयॆन वेङ्गिनळाल्, पॊऱैतानुरु वायदॊर् पॊऱ्पुडैयाळ् 877

अवन्—उसके; वन्तु—आकर; अटि तऱैवाय्—चरणों के सामने, भूमि पर गिरकर; ताऴ्तलुम्—दण्डवत करने पर; पॊऱै तान् उरु आयतु—क्षमा ही मूर्ति बन गयी, ऐसी;

ओर् पोऱ्पु उटैयाळ्–शोभाशालिनी; करै वाळ् पट–(रक्त-)रंजित तलवार के लगने पर; आवि कलङ्कित्तळ् पोल्–प्राणाकुल हुई-सी; इऱैवा–मेरे नाथ; इळैयोय्–देवर जी; अेन–पुकारते हुए; एङ्कित्तळ्–दुखी हुईं। ८७७

जब रावण ने सीताजी के पास आकर उनके चरणों पर दण्डवत की, तब क्षमा का अवतार सीताजी रक्तरंजित तलवार से प्रहरित के समान तड़पी। 'हे मेरे नाथ! हे मेरे देवर!' की दुहाई देते हुए वे बहुत खिन्न हुईं। ८७७

❀आण्डायिडै तीयव नायिळैयैत्, तीण्डानयन् मुन्नुरै शिन्दैयॆयात्
तूण्डानॆन्न लामुयर् तोळ्वलियाल्, कीण्डानिल मोशनै कीऴ्पुडैये 878

आण्टु–तब; तीयवन्–खल ने; आय् इळैये–उत्तम आभरणों से अलंकृत देवी को; अयन् मुन् उरै–ब्रह्मा के पूर्वकथित शाप का; चिन्तै चॆया–मन में स्मरण करके; तीण्टान्–स्पर्श नहीं किया; तूण् तान् अॆन्नल् आम्–खम्भे ही मान्य; उयर् तोळ् वलियाल्–अपनी भुजाओं के बल से; आयिटै–उस स्थल में; निलम् कीऴ् पुटै–भूमि को नीचे और पार्श्वों में; ओर् ओचनै–एक योजन; कीण्टान्–खोदकर उठा लिया। ८७८

तब खल रावण ने सोचा कि क्या किया जाय। उसे ब्रह्मा-दत्त शाप का स्मरण आया, जिसके अनुसार वह परनारी का स्पर्श नहीं कर सकता था। इसलिए उसने वहाँ की भूमि को अपने स्तम्भ-सम हाथों से खोद लिया, जहाँ सीताजी थीं। नीचे और पार्श्वों में एक योजन गहरी और एक योजन विस्तार की भूमि खोदकर उठा ली। ८७८

कॊण्डानुयर् तेर्मिशै कोल्वळैयाळ्, कण्डाळन दारुयिर् कण्डिलळाल्
मण्डानुरु मीनिन् मयङ्गिनळाल्, विण्डान्वऴि यायॆऴु वान्विरैवान् 879

उयर् तेर् मिचै कॊण्टान्–ऊँचे रथ पर उन्हें रख लिया; कोल् वळैयाळ्–सुन्दर कंकणशोभिता ने; कण्टाळ्–देखा; तन्नतु आर् उयिर् कण्टिलळ्–अपनी जान न देखतीं; मण् तान् उऱु–धरती पर गिरीं; मीनिन् मयङ्कित्तळ्–मछली-सी मूच्छित हुईं; विण् तान् वऴि आ–(रावण) आकाश-मार्ग में; अॆऴुवान्–उठा; विरैवान्–तेज चला। ८७९

रावण ने सीताजी को भूमिखण्ड-सहित उठाकर अपने रथ में रख लिया। सुन्दर कंकणभूषित देवी ने इसको देखा तो मानो उनके प्राण खिसक गये। धरती पर पड़ी मछली के समान छटपटायीं। बेहोश हुईं। रावण आकाश-मार्ग में आगे बढ़ रहा था। ८७९

❀विडुतेरॆन वॆङ्गनल् वॆन्दऴियुम्, कॊडिपोल्पुरळ् वाळ्हुलै वाळयर्वाळ्
तुडियावॆऴु वाडुय रालऴुवाळ् कडियायर नेयिडु कावॆन्नुमाल् 880

विटु तेर् अॆन्–चलाओ रथ, कहने पर; कनल् वॆन्तु अऴियुम्–आग में झुलसकर म्रियमाण; कॊटि पोल्–लता के समान; पुरळ्वाळ्–छटपटातीं; कुलैवाळ्–अधीर

होतीं; अयर्वाऴ्-शिथिल होतीं; तुटिया ऍऴुवाऴ्-तड़पकर उठतीं; तुयराल् अऴुवाऴ्-दुःख के साथ रोतीं; कटिया अरने-(हमसे) अनुपेक्षित धर्मदेवता; इतु का-इससे तारो; ऍन्नुम्-कहतीं। ८८०

रावण ने सारथी को आज्ञा दी कि रथ को तेज चलाओ। तब अग्नितप्त लता के समान सीताजी लोटी; अधीर हुईं; शिथिल पड़ीं; फिर तड़पकर उठीं। दुःख से रोयी। धर्मदेवता को पुकारा। हे अनुपेक्षित धर्मदेवता! मुझे इस विपदा से बचा लीजिए। ८८०

❀ मलैयेमर नेमयि लेकुयिले, कलैयेपिणै येहळि रेपिडिये
निलैयावुयि रेनिलै तेरिन्निर्पोय्, उलैयावलि याऱुळै नीरुरैयीर् 881

मलैये-हे पर्वतो; मरने-तरुओ; मयिले-मोरो; कुयिले-कोकिलो; कलैये-हिरणो; पिणैये-हरिनियो; कळिरे-पुरुषगजो; पिटिये-हथिनियो; निलैया उयिरेन्-अस्थिरजीव; निलै तेरिन्निर् नीर्-मेरी स्थिति जानते हो तुम लोग; उलैया वलियार्-अक्षय बलशाली; उळै पोय्-(श्रीराम) के पास जाकर; उरैयीर्-कहो। ८८१

सीताजी ने सामने दिखे सब पदार्थों को बुलाकर बचाव की याचना की। हे पर्वतो, तरुओ, मोरो, कोयलो, मृगो, हरिनियो, गजो, हथिनियो! मैं कितनी अधीर हूँ। यह तुम जानते हो। तुम जाकर उन अक्षय पराक्रमी श्रीराम को समाचार दो। ८८१

शॅञ्जेवह नार्निलै नीर्तॅरिवीर्, मञ्जेपॉऴि लेवन देवदैहाळ्
अञ्जेलॅन नल्हुदि रेलडियेन्, उञ्जेनदु तानिळ वोवुरैयीर् 882

मञ्चे-मेघो; पॉऴिले-उद्यानो, वत्तैवतैकाळ्-वनदेवताओ; चॅम् चेवकत्तार् निलै-उत्तम पराक्रमी श्रीराम का जो (दुःख) होगा; नीर्-तुम लोग; तॅरिवीर्-जानते हो; अञ्चेल् ऍन्नु-मुझे अभय देकर; नल्कुतिरेल्-यह समाचार उन्हें दें तो; अटियेन् उञ्चेन्-दासी मैं बच जाऊँगी; अतुतान्-वह भी; इळवो-तुम्हारे लिए कष्टकर है क्या; उरैयीर्-जाकर कहो। ८८२

हे मेघो, उद्यानो, वनदेवताओ! महा पराक्रमी श्रीराम मुझे खोकर कैसे दुखी होंगे —यह तुम लोग जानते हो। इसलिए मुझे अभयदान देकर उनके पास जाकर कहोगे तो बच सकूँगी। इसमे आपका कोई नुकसान होगा क्या? जाओ, कहो उनसे। ८८२

❀ निरुदादियर् वेरऱ नीणमुहिल्बोल्, शरतारैहळ् वीशिनर् शारहिला
वरदाविळै योय्मऱु वेदुमिलाप्, परदाविळै योय्पऴि पूणुदिरो 883

निरुतातियर्-राक्षस आदि; वेर् अऱ-निर्मूल करने; नीळ् मुकिल् पोल्-बड़े काले मेघ के समान; चर तारैकळ् वीचितर्-शर-धाराएँ बरसाते हुए; चारकिला-जो यहाँ नहीं आये; वरता-वे वरद; इळैयोय्-उनके लघु भ्राता; मऱु एतुम् इला-निर्दोष; परता-भरत; इळैयोय्-उनके अनुज; पऴि पूणुतिरो-(मुझे न बचाकर) अपयश के भागी हो जायँगे क्या। ८८३

हे वरद श्रीराम ! आप राक्षसादि को निर्मूल करने के लिए बड़े काले मेघ के समान शर-वर्षा कराते हुए आये नहीं ! हे देवर ! निर्दोष भरत ! उनके कनिष्ठ भाई ! मेरे कारण आप सब अपयश के भागी होंगे क्या ? । ८८३

कोदावरि येहुळिर् वायुहुळैवाय्, मादावनै याय्मन नेॅतॆळिवाय्
ओदादुणर् वारुळै योडित्तैपोय्, नीदान्विनै येन्निलै शॉल्ललैयो 884

कोतावरियै–गोदावरी; कुळिर्वाय्–शीतल; कुळैवाय्–स्नेहार्द्र; गाता अनैयाय्–माता-समाना; मनत्ते तॆळिवाय्–स्वच्छ-चित्त; नी तान्–तुम ही; ओतावु उणर्वार् उळै–विना अध्ययन किये ही विद्वान बने श्रीराम के पास; ओटित्तै पोय्–दौड़ जाकर; विनैयेन् निलै–प्रारब्धवशा मेरी स्थिति; चॊल्ललैयो–नहीं कहोगी क्या । ८८४

हे गोदावरी नदी ! तुम शीतल हो, स्नेहार्द्र हो ! सबकी माता-समान हो । स्वच्छ-मना हो । तुम ही तो दौड़के जाओ और विना अध्ययन किये ही सर्वज्ञ बने मेरे पति के पास प्रारब्धवशा मेरी स्थिति नहीं कहोगी क्या ? । ८८४

मुन्नुज्जुनै काण्मुळै वाळरिहाळ्, इन्दन्निल तोडु मॆडुत्तकैनाल्
ऐन्दुन्दलै पत्तु मलैन्दुलैयच्, चिन्दुम्बडि कण्डु शिरिक्किलिरो 885

मुन्नुम्–सामने दृश्य; चुनैकाळ्–निर्झरो; मुळै वाळ्–गुफावासी; अरिकाळ्–सिंहो; इन्त निलत्तोटुम्–इस भूमि के साथ; ऍटुत्त–जिन्होंने मुझे उठाया; कै नाल् ऐन्तुम्–वे बीसों हाथ और; तलै पत्तुम्–दसों सिर; अलैन्तु उलैय–हरहराकर गिरें और मिटे और; चिन्तुम् पटि कण्टु–उनके गिरने की बात देखकर; चिरिक्किलिरो–नहीं हँसोगे क्या । ८८५

मेरे सामने दृश्यमान निर्झरो ! गुफावासी सिंहो ! मुझे भूखण्ड के साथ उठाकर रावण लिये जा रहा है ! क्या उसके बीसों हाथ और दसों सिर हिलकर नहीं गिरेंगे ? और उनको नष्ट होते देखकर तुम नही हँसोगे ? । ८८५

ऍन्ड्रिन्न पलवुम् पन्नि यिरियलुरु ऽररुवाळैप्
पॊन्ऱुन्नुम् पुणर्मॆन् कॊङ्गैप् पॊलङ्गुळै पोरि लॆन्नैक्
कॊन्ऱन्नै मीट्कुङ् गॊल्लम् मानिडर् कॊळ्ह वॆन्ना
वन्ऱिणगै यॆरिन्दु नक्कान् वाळ्क्कैनाळ् वऱितु वीळ्प्पान् 886

ऍन्ऱु–ऐसा; इन्न पलवुम्–और इस तरह की अनेक बातें; पन्नि–कहकर; इरियल् उऱु–व्यथित होकर; अरऱुवाळै–जो रो रही थीं, उनको; वाळ्क्कै नाळ्–जीवन के दिनों को; वऱितु वीळ्प्पान्–व्यर्थ करने में लगा रहा रावण; पॊन् तुन्नुम्–स्वर्णमय (आभरणावृत); पुणर् मॆल् कॊङ्कै–सटे हुए स्तनों से भूषित; पॊलन् कुळै–

(और) मनोरम कुण्डलधारिणी; अ मातिटर–वे नर; पोरिल् ॲन्नै कॉन्ड्र–युद्ध में मुझे मारकर; उन्नै मीट्पर् कॉल्–तुम्हें मुक्त करेंगे क्या; कॊळ्क–करें; ॲन्ना–कहकर; वन् तिण् कै ॲरिन्तु–कठोर बलवान हाथ पीटकर; नक्कान्–ठठाया । ८८६

सीताजी ऐसी और इस तरह की अन्य बातें कहकर अत्यधिक व्यथा के साथ विलाप रही थीं। तब व्यर्थजीवक रावण ने उनको चिढ़ाते हुए कहा कि स्वर्णमय आभरणभूषित उरोजों की, भारी कुण्डलधारिणी वाले ! अब क्या वे नर मुझे युद्ध मे मारकर तुमको रिहा कर देंगे ? करें। यह कहकर ताली बजाते हुए ठठाया । ८८६

वाक्किना लन्नाल् शॊल्ल मायैयाल् वञ्ज मानॊन्
ऱाक्किना याक्कि युन्नै यारुयि रुण्णुङ् गूऱ्ऱैप्
पोक्किनाय् पुहुन्दु कॊण्डु पोहिन्ऱाय् पॊरुदु निन्नैक्
काक्कुमा काण्डि यायिऩ् कडवलुन् तेरै यॆन्ऱाळ् 887

अन्नान्–उस (रावण) के; वाक्किनाल् चॊल्ल–अपने मुख से वह शब्द कहने पर; मायैयाल्–माया से; वञ्च मान् ऒन्ऱु–एक मायामृग; आक्किनाय्–सृष्ट किया; आक्कि–बनाकर; उन्नै आर् उयिर् उण्णुम् कूऱ्ऱै–तुम्हारे प्यारे प्राण-भक्षक यम (श्रीराम) को; पोक्किनाय्–उसके पीछे भिजवाया; पुहुन्दु–(उनके अभाव में) घुसकर; कॊण्डु पोकिन्ऱाय्–मुझे हर ले जा रहे हो; पॊरुतु–युद्ध करके; निन्नै काक्कुम् आ–अपने को बचा लेने का सामर्थ्य; काण्टि आयिल्–दिखा सको तो; उन् तेरै–अपने रथ को; कटवल्–आगे मत चलाओ; ॲन्ऱाळ्–कहा । ८८७

रावण के यह (परिहास-) वचन कहने पर सीताजी ने कहा कि तुमने एक मायामृग बनाया और उसके पीछे उनको भिजवा दिया। जब वे नहीं रहे, तब चोरी से आश्रम में घुसे और मुझे उठाये ले जा रहे हो ! अगर युद्ध में अपने को बचा लेने का सामर्थ्य सचमुच रखते हो, तो रथ को रोको। आगे मत बढ़ाओ । ८८७

मीट्टुमॊन् ऱुरैशॆय् वाणी वीरनै विरैविऩ् मऱ्ऱुन्
कूट्टमा मरक्कर् तम्मैक् कॊन्ऱुङ्गै मुलैयु मूक्कुम्
वाट्टिनार् वनत्ति लुळ्ळार् मानिड रॆन्ऱ वार्त्तै
केट्टुमिम् मायञ् जॆय्द दच्चत्तिन् किळर्च्चि यन्ऱो 888

नी वीरनै–तुम वीर हो क्या; उन् कूट्टम् आम् अरक्कर् तम्मै–तुम्हारे दलों को, राक्षसों को; विरैविल् कॊन्ऱु–शीघ्रता से मारकर; उङ्कै मुलैयुम् मूक्कुम्–तुम्हारी बहिन की छाती और नाक को; वाट्टिनार्–(जिन्होंने) काटकर दुखाया; मानिटर्–वे नर; वनत्तिल् उळ्ळार् ॲन्ऱ वार्त्तै–वन में हैं, यह समाचार; केट्टुम्–सुनने के बाद भी; इ मायम् चॆय्ततु–यह कपट करना; अच्चत्तिन् किळर्च्चि अन्ऱो–भय का विकास नहीं है क्या; मीट्टुम् ऒन्ऱु उरै चॆय्वाळ्–और एक बात कहने लगी । ८८८

सीताजी ने और एक बात कही। तुम सच्चे वीर हो ? तुममें भय नहीं है क्या ? खर-दूषणादि तुम्हारे दल के राक्षसों को प्रभु ने शीघ्रता से निहत कर दिया। तुम्हारी बहिन की छाती और नाक कटी। ऐसे पराक्रमी वन में हैं, यह सुनने के बाद तुमने यह प्रवंचना की। क्या इसका अर्थ तुम्हारे भय का विकास और प्रदर्शन नहीं है ? । ८८८

मॊऴिदरु मळवि नङ्गै केळिदु मुरणिल् याक्कै
इऴिदरु मनिद रोडे यान्शॆरु वॆदिर्प्पॆ नॆन्ऱाल्
विऴिदरु नॆऱ्ऱि यान्ऱऩ् वॆळ्ळिवॆऱ् पॆडुत्त तोट्कुप्
पऴिदरु मदनिऱ् चालप् पयऩ्ऱरुम् वञ्ज मॆन्ऱान् 889

मॊऴि तरुम् अळविल्–इतना कहने पर; **नङ्कै**–नायिका; **इदु केळ्**–यह सुनो; **मुरण् इल् याक्कै**–दुर्बल-शरीरी; **इऴि तरु मनितरोटे**–क्षुद्र नरों के साथ; **यान् चॆरु ऎतिर्प्पॆऩ् ऎन्ऱाल्**–मैं युद्ध में लगूँगा तो; **विऴि तरु नॆऱ्ऱियान् तऩ्**–भालनेत्र शिवजी के; **वॆळ्ळि वॆऱ्पु ऎदुत्त तोट्कु**–चाँदी के पर्वत के धारक, मेरे कन्धों का; **पऴि तरुम्**–अपमान होगा; **अतऩिल्**–उससे; **वञ्चम्**–प्रवंचना; **चाल**–अच्छा; **पयऩ् तरुम्**–फल देगी; **ऎन्ऱान्**–कहा (रावण ने)। ८८९

रावण ने इसके उत्तर में कहा कि नायिका ! मेरी यह बात सुनो। वे अल्प और दुर्बल शरीरी नर हैं। उनसे प्रत्यक्ष युद्ध करूँ तो वह मेरे भालनेत्र शिवजी सहित चाँदी के कैलास पर्वत के धारक कन्धों का अपमान होगा। उससे यह प्रवंचना निश्चय अधिक अच्छा फल दिलायेगी ! । ८८९

पावैयु मदनैक् कॆळात् तङ्गुलप् पहैञर् तम्बाल्
पोवदु कुऱ्ऱम् वाळिऱ् पॊरुवदु नाणम् बोलाम्
आवदु कऱ्पि ऩारै वञ्जिक्कु माऱ्ऱ लेयाम्
एवमॆऩ् पऴिदा ऩॆऩ्ऩे यिरक्कमि लरक्करुक् कॆन्ऱाळ् 890

पावैयुम्–प्रतिमा-सी देवी; **अतनै केळा**–वह सुनकर; **तम् कुल पकैञर् तम् पाल्**–अपने कुल के शत्रु के साथ; **पोवतु**–युद्ध करने के लिए जाना; **कुऱ्ऱम्**–अपराध है और; **वाळिल्**–तलवार से; **पॊरुवतु**–युद्ध करना; **नाणम् पोलाम्**–शरम की बात है क्या; **कऱ्पिऩारै**–परपुरुष की पत्नी को; **वञ्चिक्कुम् आऱ्ऱले**–धोखा देने का सामर्थ्य; **आवतु आम्**–ठीक होगा शायद; **इरक्कम् इल् अरक्कर्क्कु**–निर्दय निशाचरों के लिए; **एवम् ऎन्**–अपराध क्या है; **पऴि ताऩ् ऎन्ऩे**–निन्दनीय क्या है; **ऎन्ऱाळ्**–कहा। ८९०

चित्रप्रतिमा-सी देवी ने व्यंग्य के साथ कहा। अपने कुल-शत्रु के साथ युद्ध करना अपराध है, तलवार की वार करना शरम की बात है ! परपुरुष की पतिव्रता पत्नी को वंचना से हर ले जाना श्रेयस्कर और करने योग्य काम है। वाह ! निर्दय राक्षसों के विचार में फिर अपराध क्या है ? अपमान क्या है ? विचित्र बातें हैं। ८९०

ऍन्नुमव् वेलै यिन्ग णॅङ्गटा पोव दॅन्ऱे
निन्निलॅन् ऱिडित्त शॊल्लन् नॅरुप्पिडैप् परप्पुङ् गण्णन्
मिन्नॅन विळङ्गुम् वीरत् तुण्डत्तन् मेरु वॅन्नुम्
पॊन्नॆडुङ् गुन्ऱम् वानिल् वरुवदे पोलु मॆय्यान् 891

ऍन्नुम् अ वेलैयिन् कण्–जब वे ऐसा बोली, तब; ऍङ्कु अटा पोवतु–रे, तुम कहाँ जाते हो; निल् निल् ऍन्ऱु–खड़ा रह, खड़ा रह, ऐसा; इटित्त चॊल्लन्–वज्रस्वर; नॅरुप्पु इटै परप्पुम्–आगे को सर्वत्र फैलानेवाली; कण्णन्–आँखों के; मिन् ऍन्न विळङ्कुम्–विद्युत के समान विद्यमान; वीर तुण्टत्तन्–प्रतापी चोंच के; पॊन् नॆटुम् कुन्ऱम्–उच्च स्वर्ण-पर्वत मेरु; वानिल् वरुवते पोलुम्–आकाश में आता हो, ऐसे; मॆय्यान्–शरीरी । ८९१

वे यह कह ही रही थी कि 'रे कहाँ जा रहे हो ! खड़ा रह, खड़ा रह' का शब्द सुनाई दिया। जटायु ने यह शब्द कहा। (उनका वर्णन आगे है) उनका स्वर वज्र-सम था। आँखों से आग सब जगह बरस रही थी। उनका तुण्ड वज्र-सम कठोर था और विद्युत के समान प्रकाशमान। स्वर्ण-मेरु आकाश में उड़ता आता हो, ऐसा भ्रम पैदा करनेवाले भीमकाय थे। ८९१

पाळिवन् किरिहळ् ळॅल्लाम् परिन्दॆळुन् दॊन्ऱो डॊन्ऱ
पूळियि नुदिर विण्णिऱ् पुडैत्तुऱक् किळर्न्दु पॊङ्गि
आळियु मुलहु मॊन्ऱा यळिदर मुळ्ळुम् वीशुम्
ऊळिवॆङ् गाऱ्ऱिदॆन्न विरुज्जिऱै यूदै पॊङ्ग 892

पाळि वन् किरिकळ् ऍल्लाम्–बड़े और कठोर सभी पर्वतों को; परिन्तु ऍळुन्तु–उखाड़कर ऊपर उठाकर; ऑन्ऱु ऑटु ऑन्ऱु–एक दूसरे के साथ; पूळियिन् उतिर–चूर होकर गिराते हुए; विण्णिन् पुटैत्तु–आकाश में टकराकर; उऱ किळर्न्तु पॊङ्कि–बड़े शोर के साथ ऊपर उठकर; आळियुम् उलकुम्–समुद्र और धरती को; ऑन्ऱाय् अळि तर–एक साथ विनष्ट करते हुए; मुळ्ळुम् वीचुम्–सर्वत्र प्रवहमान; ऊळि वॆम् काऱ्ऱु इतु–युगांत का प्रभंजन है यह; ऍन्न–ऐसा विचार पैदा करते हुए; इरु चिऱै–अपने दोनों पंखों द्वारा; ऊतै पॊङ्क–पवन बनाते हुए । ८९२

उनके अपने पक्षों को हिलाने से पवन इतनी तेजी से और इतने बल के साथ विस्थापित हुआ कि पर्वत उखड़कर ऊपर उठे और आपस में टकराकर चूर हो गिर पड़े; और भूमि और आकाश को एक साथ विनष्ट करते हुए युगांतकालीन प्रभंजन प्रवृत्त हो बह रहा हो, ऐसा लगा। ८९२

शाहैवन् ऱलैयॊडु मरमुन् दाळ्न्दल्, मेहमुङ् गिरिहळुम् विण्णिन् मीच्चॆल
माहवॆङ् गलुळने वरुहिन् ऱानॆन्न, नाहमुम् पडमॊळित् तॊडुङ्गि नैयवे 893

मरमुम्–तरु भी; चाकै वन् तलैयॊटु–शाखा रूपी सिरों के साथ; ताळ्–गिर पड़े; मेल् मेकमुम्–ऊपर के मेघ और; किरिकळुम्–गिरियाँ; विण्णिन् मी चॆल–

आकाश पर चलीं; माक वॅम् कलुळत्ते–(ऐसा) बड़े और भयंकर गरुड़ ही; वरुकिन्ऱात् ॲन्–आता हो, सोचकर; नाकमुम्–सर्प भी; पटम् ऑळितुतु–फन समेट लेकर; ऑतुङ्कि नैयवे–छिपकर क्लिन्न हैं, ऐसी स्थिति पैदा करते हुए। ८६३

तरु शाखा के सिरों के साथ नीचे गिरे। ऊपर के मेघ और गिरियाँ आकाश में चलीं। बड़े और भयंकर गरुड़ ही आ रहे हैं—समझकर सर्प फनों को समेटते हुए जा छिपे और क्लिन्न रहे। ८९३

यानैयु माळियु मुदल यावैयुम्, कानॅडु मरत्तॊडु तूरु कल्लिवै
मेनिमिर्न् दिरुशिऱै विशैयि नेऱलाल्, वानमुङ् गानमु माऱु कॊण्डवे 894

यानैयुम् आळियुम् मुतल–गज, शरभ आदि; यावैयुम्–सभी प्राणी; कान् नॅटु मरत्तॊटु–वन्य, ऊँचे पेड़ों के साथ; तूऱु कल् इवै–झाड़, कंकड़ आदि; इरु चिऱैकळ् विशैयिल्–दोनों पंखों के हिलने से उत्पन्न हवा के वेग से; मेल् निमिर्न्तु एऱलाल्–ऊपर उठकर चले, इसलिए; वानमुम् कानमुम् माऱु कॊण्ट–आकाश और कानन स्थानांतरित हो गये। ८६४

गज, शरभ आदि सभी प्राणी, वन के बड़े-बड़े पेड़, झाड़, कंकड़ आदि उनके पक्षों के प्रबल पवन के कारण ऊपर उठे और उड़े। इसलिए कानन आकाश बन गया और आकाश कानन। ८९४

उत्तमन् ऱेवियै युलहॊ डोङ्गुदेर्
वैत्तनै येहुव दॅङ्गु वानिनो
डित्तनै दिशैयैयुम् मऱैप्पॅन् यानॆनाप्
पत्तिरच् चिऱैहळै विरिक्कुम् पण्बिनान् 895

उलकोटु उत्तमन् तेवियै–भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को; ओङ्कु तेर् वैत्तनै–उन्नत रथ पर रखकर; ऍङ्कु एकुवतु–कहाँ जाते हो; वानिन् ओटु इत्तनै तिचैयैयुम्–आकाश में ही नहीं, सभी दिशाओं के मार्ग को; यान् मऱैप्पॅन्–मैं रोक लूँगा; ऍना–कहकर; पत्तिर चिऱैकळै–पत्र-सम पक्षों को; विरिक्कुम् पण्पिनान्–फैलाने का कार्य करके। ८६५

जटायु ने पूछा— रे भूमि के अंश के साथ पुरुषोत्तम श्रीराम की पत्नी को ऊँचे रथ में रखकर कहाँ जाओगे? तुम आकाश में ही नहीं, किसी भी दिशा में जा नहीं पाओगे। मैं सभी मार्ग रोक लूँगा। यह कहते हुए वे पत्राकार अपने पक्षों को फैलाकर (रोकते हुए)। ८९५

वन्दन नॆरुवैयित् मन्नन् माण्बिलान्
ॲन्दिरत् तेर्च्चॅल वॊळिक्कु मॆण्णिनान्
शिन्दुरक् काल्शिरज् जॅक्कर् शूडिय
कन्दरक् कयिलैयै निहर्क्कुङ् गाट्चियान् 896

माण्पु इलान्–अश्रेष्ठ रावण के; ऍन्तिर तेर् चॅलवु–यन्त्रसहित रथ का

गमन; ऒऴिक्कुम् ऎण्णितान्–रोकने का विचार ले; विन्तुरम् काल् चिरम्–लाल पैरों और सिर से युक्त; चॆक्कर् चूटिय कन्तरम्–संध्याकाश के मेघ को अपने गले में रखते हुए; कयिलै–कैलास को; निकर्क्कुम् काट्चियान्–समानता करनेवाले; ऎरुवैयिन् मन्तन्–गीधों के राजा; वन्ततन्–आये। ८६६

अश्रेष्ठ रावण के यन्त्रयुक्त रथ को रोकने के विचार से जटायु आये। उनके पैर और सिर लाल थे। वे कैलास पर्वत के समान लगे, जिसके कण्ठ-प्रदेश पर सन्ध्यामेघ फैले हों। ८९६

❀ आण्डुउऱ्ऱ वणङ्गिनै यज्जलॆन्तात्, तीण्डुऱ्ऱिल नॆन्ऩुणर् शिन्दैयितान्
मूण्डुऱ्ऱॆऴु वॆङ्गद मुऱ्ऱिलनाय्, मीण्डुऱ्ऱुरै याडलै मेवितनाल् 897

आण्टु उऱ्ऱु–वहाँ आकर; अ अणङ्किनै–उन देवी को; अञ्चल् ऎन्ऩा–मत डरो, कहकर; तीण्टु उऱ्ऱिलन्–(रावण ने) स्पर्श नहीं किया है; ऎन्ऩु उणर् चिन्तैयितान्–यह ज्ञान मन में करके; मूण्टु उऱ्ऱु–उत्पन्न होकर; ऎऴु वम् कतम्–उठनेवाले भयंकर क्रोध को; मुऱ्ऱिलन् आय्–पूर्ण होने न देकर; मीण्टु उऱ्ऱु–उसको रोककर; उरै आटलै–वार्तालाप करना; मेवितन्–आरम्भ किया। ८६७

आकर जटायु ने सीताजी को आश्वासन दिलाया। कहा कि मत डरो। उन्होंने यह जान लिया कि रावण ने देवी का स्पर्श नहीं किया है। इसलिए उन्होंने अपने उठते क्रोध को हद से अधिक जाने नहीं दिया। उसको रोककर उन्होंने रावण को कुछ उपदेश देना चाहा। ८९७

कॆट्टायॆहिळै योडुनित् वाऴ्वैयॆलाम्, शुट्टायिदु वॆन्ऩै तॊडङ्गितैनी
पट्टायॆन वेहॊडु पत्तिनियै, विट्टेहुदि येल्विळि हित्ऱिलैयाल् 898

कॆट्टाय्–विनष्ट हुए हो; किळैयोटु उत् वाऴ्वै ऎलाम्–बन्धुवर्ग-सहित अपने जीवन को; चुट्टाय्–जला डाला; इतु ऎन्ऩ तॊटङ्कितै–यह क्या उपक्रम किया है; नी पट्टाय् ऎन्ऩ कॊट्टु–तुम मरे, यह समझकर; पत्तिनियै विट्टु एकुतियेल्–पतिव्रता सीता को छोड़कर चलो तो; विळिकिन्ऱिलै–नहीं मरोगे। ८६८

रावण! तुम अपने बन्धुजन सहित मिट गये। यह क्या उपक्रम किया है? 'अवश्य मर जाऊँगा' यह समझकर पतिव्रता देवी सीता को छोड़ जाओगे तो नहीं मरोगे। बच जाओगे। ८९८

❀ पेदाय्पिऴै शॆय्दनै पेरुलहिन्, मादावनै याळै मनक्कॊडुनी
यादाहनि नैन्दनै यॆण्णमिलाय्, आदार निनक्किनि यारुळरो 899

पेताय्–जड़मति; पिऴै चॆय्ततै–अपराध कर दिया; पेर् उलकिन्–बड़े विश्व की; माता अत्तैयाळै–सीता-सम इनको; यातु आक–कौन; मतम् कॊट्टु–मन में; नितैन्ततै–विचार रखते हो; ऎण्णम् इलाय्–विवेकहीन; निनक्कु–तुम्हें; इनि–अब; आतारम् यार् उळर्–अवलम्ब कौन है। ८६६

जड़मति! तुमने बहुत बड़ा अपराध कर दिया है! यह विश्वजननी-

सदृश हैं। इनको क्या समझकर उठा लाये हो ? अविवेकी ! अब (यह काम करने के बाद) तुम्हारा अवलम्ब कौन होगा ? । ८९९

॥ उय्यामत् मलैन्दुम राउयिरै, मॅय्याह विरामन् विरुन्दिडवे
कैयार मुहन्दुहीं डन्दहत्तार्, ऐयापुदि दुण्ड दरिन्दिलैयो 900

इरामत्–श्रीराम; उमर्–तुम्हारी जाती के राक्षसों को (खरादि को); उय्यामल्–बचने न देकर; आर् उयिरै–उनके प्यारे प्राणों को; मॅय् आक विरुन्तु इटवे–सचमुच दावत के रूप में देने से; अन्तकत्तार्–यमदेव का; कै आर मुकन्तु–हाथ भर उसे लेकर; पुतितु उण्टतु–अपूर्व भोजन के रूप में खाना; अरिन्तिलैयो–(तुमने) न जाना क्या । ९००

श्रीराम ने तुम्हारे ही राक्षसों को (खर आदि को) बचने न देकर उनके प्राणों को यम का भोजन बनाया और यम ने अपने दोनों हाथ भर-भर के अभूतपूर्व भोज खाया था। तुमने नहीं जाना क्या ? । ९००

कॉडुवॅङ्गरि कॉल्लिय वन्ददन्मेल्, विडुमुण्डै कडाव विरुम्बिनैये
अडुमॅन्ब दुणर्न्दिलै यायिनुम्वन्, कडुवुण्डुयि रिन्निलै काणुदियाल् 901

कॉटु वॅम् करि–भयंकर क्रोधी गज; कॉल्लिय वन्ततन् मेल्–जो मारने आया उस पर; विटुम् उण्टै–गुलेले; कटाव विरुम्पित्तैये–चलाना चाहा है; अटुम् ऍन्पतु–नाश कर देगा; ऍन्पतु उणर्न्तिलै–यह नहीं विचारा; आयित्तुम्–तो भी; वल् कटु उण्टु–प्रबल विष खाकर; उयिरिन् निलै–प्राण की स्थिति; काणुति–देखना चाहते हो । ९०१

तुम्हें मारने, बड़े क्रोध के साथ भयंकर गज आ रहा है। उस पर तुम गुलेले चला रहे हो ! क्या तुम नहीं जानते कि यह काम तुम्हारा घातक बन जायगा ? तो भी विष खाकर जीवित रहने की इच्छा करोगे ? । ९०१

ॲल्लावुल हङ्गळु मिन्दिरनुम्, अल्लादवर् मूवरु मन्दहनुम्
पुल्वाय्पुलि कण्डदु पोल्वरलाल्, विल्लाळरै वॅल्लु मिडुक्किन्नरो 902

ॲल्ला उलकङ्कळुम्–सभी लोकों के वासी; इन्तिरनुम्–देवेन्द्र और; अल्लातवर्–और अन्य; मूवरुम्–त्रिदेव; अन्तकनुम्–यम; पुल् वाय्–हरिण ने; पुलि कण्टतु–व्याघ्र देखा हो; पोल्वर्–ऐसा हो जायँगे; अलाल्–नहीं तो; विल्लाळरै–धन्वियों को; वॅल्लुम्–हराने के; मिटुक्कित्तरो–सामर्थ्य रखनेवाले हैं क्या । ९०२

सभी लोकों के वासी, इन्द्र, त्रिदेव और यम भी श्रीराम के सामने, व्याघ्र के सामने हरिण के समान (भयभीत) हो जायँगे ! नहीं तो प्रबल धन्वी उनको हराने का सामर्थ्य किसके पास है ? । ९०२

॥ इम्मैक्कुऱ वोडु मिऱन्दळियुम्, वॅम्मैत्तॉळि लिङ्गिदु मेवुदियाल्
अम्मैक्करु मानर हन्दरुमाल्, ॲम्मैक्किद माहवि दॅण्णितैनो 903

इम्मैक्कु—इस जन्म में; उऱवु ओट्टुम्—बन्धुजनों के साथ; इऱन्तु अऴियुम्—मर मिटने का; वॅम्मै तॊऴिल् इतु—भयावह काम इसे; इङ्कु—यहाँ; मेयुतियाल्—आरम्भ किया है, इसलिए; अम्मैक्कु—पर जीवन में भी; अरु मा नरकम्—भयंकर लम्बा नरकवास; तरुमाल्—दिलायगा, इसलिए; इतु—यह; ऍम्मैक्कु इतम्—कब के लिए हितकारी; आक—ऐसा; नी ऍण्णिनै—तुमने सोचा। ६०३

इहलोक में यह काम तुमको अपने बन्धुजनों के साथ विनष्ट करानेवाला काम है। यह तुमने आरम्भ किया है। यह आगे भी भयंकर और लम्बा नरकवास दिला देगा। फिर कहां, कब हित होगा, तमने सोचा ? । ९०३

मुत्तेवरिऩ् मूल मुदऱ्पॊरुळाम्, अत्तेवरिम् मानिड रादलिऩाल्
ऍत्तेवरो डॆण्णुव दॆण्णमिलाय्, पित्तेऱ्ऱिऩै याहप् पिऴैत्तनैयाल् 904

इ मानिटर्—ये नर (-रूप श्रीराम और लक्ष्मण); मु तेवरिऩ्—तीनों आदिदेवों के; मूल मुतल् पॊरुळ् आम्—आदि परमात्मा; अ तेवर्—वे आदिदेव हैं; आतलिऩ्—इसलिए; ऍ तेवरोटु ऍण्णुवतु—किन देवों के साथ रखकर सोचोगे; ऍण्णम् इलाय्—अविवेकी; पित्तु एऱ्ऱिऩै आक—पागलपन बढ़ गया; पिऴैत्तनै—यह अपराध किया। ६०४

ये, जो नर-रूप में आये है, श्रीराम त्रिदेवों के आदिदेव हैं। परमात्मा हैं। उनको किन देवों के साथ मिलाकर गणना की जायगी ? विवेकहीन ! पागलपन बढ़ गया है ! तभी तुमने यह अपराध किया। ९०४

※ पुरम्बऱ्ऱिय पोर्विडै योऩरुळाल्, वरम्बॆऱ्ऱवु मऱ्ऱुळ विञ्जैहळुम्
उरम्बॆऱ्ऱऩ वावऩ वुण्मैयिऩोऩ्, शरम्बऱ्ऱिय चावम् विडुन्दऩैये 905

पुरम् पऱ्ऱिय—त्रिपुरदाहक; पोर् विटैयोऩ्—योद्धा ऋषभ-वाहन शिवजी की; अरुळाल्—कृपा से; वरम् पॆऱ्ऱवुम्—वर-रूप जो प्राप्त किये हैं वे, और; मऱ्ऱु उळ विञ्चैकळुम्—और अन्य (युद्ध-)विद्याएँ; उण्मैयिऩोऩ्—सत्यसंध के; चापम् पऱ्ऱिय—धनु पर संधान कर; चरम् विटुम् तऩैये—शर छोड़ते तक ही; उरम्पॆऱ्ऱऩ आवऩ—बलशाली रहेंगे। ६०५

तुम्हारे, त्रिपुरदाहकदत्त सभी वर और तुम्हारी सारी विद्याएँ सत्यसंध श्रीराम के शरप्रेपण तक ही शक्तिमन्त रह सकेंगी। ९०५

※ वाऩाळ्बवऩ् मैन्दऩ् वळैत्तविलाऩ्, तानेवरि निऩ्ऱु तडुप्परिदाल्
नानेयव णुय्प्पॆऩिऩ् नऩ्नुदलैप्, पोनीहडि दॆऩ्ऱु पुहऩ्ऱिडलुम् 906

वाऩ् आळ्पवऩ्—अब स्वर्गभोग-रत दशरथ के; मैन्तऩ्—पुत्र श्रीराम; वळैत्त विल्लाऩ्—झुका हुआ धनुष लेकर; ताऩे वरिऩ्—खुद आयेंगे, तो; निऩ्ऱु तटुप्पु अरितु—खड़ा होकर रोकना कठिन है; इ नल् नुतलै—इन सुन्दर भाल वाली को; नाऩे अवण् उय्प्पॆऩ्—मैं ही ले जाकर वहाँ (पर्णशाला में) छोड़ूँगा; कटितु पोति—जल्दी भाग जाओ; ऍऩ्ऱु पुकऩ्ऱिटलुम्—यह कहते ही। ६०६

स्वर्ग-भोग में जो अब रहते है, उन दशरथ के पुत्र श्रीराम धनु झुका लेकर स्वयं आयँगे तो उनके सामने टिका रहकर उनको रोकना दुतस्र है (असम्भव है)। इन सुन्दर भाल वाली सीताजी को मैं पर्णशाला में स्वयं पहुँचा दूंगा। तुम शीघ्र भाग जाओ। ९०६

केट्टानिरु दरक्किरै केळ्हिळर्दन्, वाट्टारै नॅरुप्पुह वाय्मडिया
ओट्टायिनि नीयुरै शॅयुहुनरैक्, काट्टाय्हडि ऍन्रु कनन्रुरैया 907

निरुतरक्कु इरै–राक्षसाधिपति ने; केट्टान्–सुना; केळ् क्किळर्–जाज्वल्यमान; तन् वाळ्–उसकी तलवार से; तारै नॅरुप्पु उक–लगातार अंगार छूटे; वाय् मटिया–अधर काटते हुए; इति नी ओट्टाय्–आगे बात मत चलाओ; उरै चॅय् कुनरै–तुमसे कथित उनको; कटितु काट्टाय्–शीघ्र दिखाओ; ऍन्रु–ऐसा; कनन्रु उरैया–उबलकर कहकर। ९०७

राक्षसाधिपति ने यह सुना, तो उसकी तलवार से ही लगातार अंगारे निकलने लगे। मुड़े अधर को दाँतों से दबाकर उसने कहा कि बस बस! बहुत मत हाँक! जिनकी चर्चा करता है, उनको दिखा शीघ्र! यह क्रोध में उबलकर कहा। फिर। ९०७

वरुम्बुण्डर वाळियुन् मार्बुरुविप्, पॅरुम्बुण्डिर वावहै पेरुदिनी
इरुम्बुण्डनीर् मीळिनुम् मॅन्नुळैयिन्, करुम्बुण्डशॉल् मीळ्हिलळ् काणुदियाल् 908

वरुम् पुण्टर–(बाधा-स्वरूप) आगत गीध; वाळि–मेरा शर; उन् मार्पु उरुवि–तेरी छाती में घुसकर; पॅरुम् पुण्–बड़ा घाव; तिरवा वकै–नहीं खोले ऐसा; नी पेरुति–तू चला जा; इरुम्पु उण्ट नीर्–तप्त लोहे का सोखा जल; मीळिनुम्–फिर पाया जा सके तो भी; ऍन् उळैयिन्–मेरे पास से; करुम्पु उण्ट चॉल्–इक्षु(-रस) सम भाषिणी; मीळ्किलळ्–लौटेगी नहीं; काणुति–जान लो। ९०८

बाधक रूप में आगत गीध! तू यहाँ से जल्दी हट जा इसके पहले कि मेरा शर तेरी छाती में बड़ा व्रण करा दे। तप्त लोहे द्वारा सोखा जल भी शायद लौटाया जा सकेगा, पर मेरे वश में आयी यह इक्षुरस-सी मधुरभाषिणी लौट नहीं सकेगी। यह जान लो। ९०८

ऍन्नुम् मळविर् पयमुन्नि निरट्टि येय्दि
अन्नम् मयरहिन्न् रुडुनोक्कि यरक्क नाक्कै
शिन्नम् मुरुमिप् पॉळुदेशिलै येन्दि नङ्गळ्
मन्नन् महन्वन् दिलनॅन्रु वरुन्द लन्नै 909

ऍन्नुम् अळविल्–कहते ही; अन्नम्–हंसिनी (-सी सीता) का; पयम् मुन्निन् इरट्टि–दुगुना भय; ऍय्ति–पाकर; अयर्किन्रतु–क्लिन्न होना; नोक्कि–देखकर; अन्नै–माताजी; अरक्कन् याक्कै–राक्षस का शरीर; इ पॉळुते–अभी;

नॆंटु मूक्कु ॲंतुम्–लम्बी चोंच रूपी; नेमियिऩ्–चक्र से; चेम विल् काल् कोट्टुम् अळविल्–रक्षा में धनु को झुकाने से पहले ही; मणि कुण्टलङ्कळ् कॊण्टु–सुन्दर कुण्डलों को छीन लेकर; ॲळुन्ताऩ्–उठे । ९१४

जटायु फिर भी रावण के पास आये। लम्बे, और क्रूर आँखों से युक्त अनगिनत सर्पों को त्रस्त करते हुए गरुड़ के समान जटायु ने उसके सिरों पर चोंच मारी। फिर उसके अपनी रक्षा में धनु लेकर झुकाने के पूर्व ही वे उसके कुण्डलों को छीन लेकर आकाश में उछले। ९१४

ॲळुन्दाऩ् ऱडमार्बिनि लेऴिनो डेऴु वाळि
अळुन्दादु कळऩ्ऱिड वॆय्देडुत् तार्त्त रक्कऩ्
पॊऴिन्दाऩ् पुहर्वाळिहळ् मीळवुम् पोर्च् चडायु
विऴुन्दा ऩॆनविण्णव रञ्जिऩर् वॆय्दु यिर्त्तार् 915

अरक्कऩ्–राक्षस; आर्त्तु–गरजकर; ॲळुन्ताऩ्–जो ऊपर उठे थे, उनके; तट मार्पिऩिल्–विशाल वक्ष पर; एऴिऩ् ओटु एऴु वाळि–सात और सात शर; अळुन्तातु कळऩ्ऱिट–चुभे बगैर बाहर आ गये, इसलिए; मीळवुम्–फिर भी; पुकर् वाळिकळ्–स्वर्णमय शर; पॊऴिन्ताऩ्–बरसाये; पोर् चटायु–योद्धा जटायु; विऴुन्ताऩ् ॲऩ–नीचे गिर गए, यह सोचकर; विण्णवर्–देव; अञ्चिऩर्–डरे और; वॆय्तु उयिर्त्तार्–व्याकुल हुए और लम्बी साँसें छोड़ीं। ९१५

राक्षस रावण ने गर्जन किया। ऊपर उठे जटायु के वक्ष पर उसने चौदह शर चलाए, पर वे गड़े नहीं और अलग होकर गिर गये। खीझकर उसने अत्यधिक परिमाण में स्वर्णवर्ण शर चलाये, तो योद्धा जटायु भी थक गये। देवों ने सोचा कि वे भूशायी हो गये हैं। वे डरे और ठण्डी आहें भरने लगे। ९१५

पुण्णिऩ् पुदुनीर् पॊऴियप्पॊलि पुळ्ळिऩ् वेन्दऩ्
मण्णिऩ् करऩ्ऱे मुदलोरुदि रत्तिऩ् वारि
कण्णिक् कडलॆऩ्ऩ कवर्न्ददु कान्ऱु मीळ
विण्णिऩ् पॊलिहिऩ्ऱदोर् वॆण्णिऱ मेह मॊत्ताऩ् 916

पुण्णिऩ्–व्रणों से; पुतु नीर् पॊऴिय–ताजा रक्त बहा, तब; पॊलि–उसके साथ दृश्यमान; पुळ्ळिऩ् वेन्तऩ्–पक्षियों के राजा; मण्णिल्–भूमि पर; करऩ्ऱे मुतलोर्–खर आदि; उतिरत्तिऩ् वारि–(राक्षसों के) रक्त के प्रवाह को; कटल् ॲऩ्ऩ कण्णि–समुद्र समझकर; कवर्न्ततु–जिसको पहले पी गया था; मीळ काऩ्ऱु–फिर उगलकर; विण्णिल् पॊलिकिऩ्ऱतु–आकाश में शोभायमान; ओर् वॆण् निऱ मेकम्–एक श्वेत मेघ के; ऒत्ताऩ्–समान दिखाई दिये। ९१६

जटायु के शरीर में शरों के लगने से व्रण हो गये। उन व्रणों से ताजा रक्त बहने लगा। तब उनको देखने पर ऐसा लगा, मानो खर-दूषण-वध के अवसर पर जिस मेघ ने रक्त-सागर पी लिया था, वह श्वेत मेघ अब

अपना पिया रक्त उड़ेल रहा हो। जटायु श्वेतवर्ण थे और उनके शरीर पर स्थान-स्थान से रक्त निकल रहा था। ९१६

ऑत्ता नुडन्ने युयिर्त्ता नुरुत्ता नवन्नॊळ्
पत्तॊडु पत्तिन् नॆडुम्बत्तियिऱ् ऱत्ति मूक्काल्
कॊत्ता नहत्ताऱ् कुडैयाच् चिऱैयाऱ् पुडैया
मुत्तार मार्बिऱ् कवशत्तैयु मूट्ट ऱुत्तान् 917

ऑत्तान्–ऐसा श्वेत मेघ-सम जो रहे; उटन्ने–(वे जटायु) तुरन्त; उयिर्त्तान्–निःश्वास छोड़कर; उरुत्तान्–कुपित होकर; अवन् तोळ् पत्तु ओटु पत्तिन्–उसके बीसों भुजाओं की; नॆटुम् पत्तियिल्–लम्बी पंक्ति में; तत्ति–उचक बैठकर; मूक्काल् कॊत्ता–चोंचों से मारकर और; नकत्ताल् कुटैया–नाखूनों से नोचकर; चिऱैयाल् पुटैया–पक्षों से पीटकर; मुत्तु आर–मुक्ताहार-भूषित; मार्पिल् कवचत्तैयुम्–वक्ष पर के कवच के भी; मूट्टु अऱुत्तान्–सन्धि-बन्ध तोड़ दिये। ९१७

ऐसे श्वेत मेघ के समान जो दिखे, उन जटायु ने लम्बा निःश्वास छोड़ा। क्रोध के साथ वे बीसों भुजाओं की पंक्ति में उछलकर कूदे और लगे चोंचों से मारने, नाखूनों से नोचने और अपने पक्षों से पीटने। फिर उन्होंने मुक्ताहार-भूषित उसके वक्ष पर के कवच के भी संधिबन्ध तोड़ दिये। ९१७

अऱुत्तानै यरक्कनु मैम्बदॊ डैम्ब दम्बु
शॆऱित्तान् ऱडमार्बिऱ् चॆऱित्तलुन् दॆव रञ्जि
वॆऱित्तार् वॆऱियामु निरावणन् विल्लै मूक्काल्
पऱित्तान् पऱवैक्किऱै विण्णवर् पण्णै यार्प्प 918

अऱुत्तानै–कवच जिन्होंने काटा उनको; अरक्कनुम्–राक्षस ने भी; ऐम्पतु ओटु ऐम्पतु–पचास पर पचास (एक सौ); अम्पु–शर; तट मार्पिल्–विशाल वक्ष पर; चॆऱित्तान्–चुभाये; चॆऱित्तलुम्–चुभाने पर; तेवर् अञ्चि वॆऱित्तार्–देव डरे और चक्रित हुए; वॆऱियामुन्–उनके चक्रित होने से पहले ही; पऱवैक्कु इऱै–खगराज ने; विण्णवर् पण्णै आर्प्प–देवों के समूहों की वाहवाही प्राप्त करते हुए; इरावणन् विल्लै–रावण के धनुष को; मूक्काल् पऱित्तान्–चोंच से छीन लिया। ९१८

रावण के कवच को जिन्होंने खोल दिया, उन जटायु के वक्ष में रावण ने एक सौ बाण गड़ा दिये। तब देव भी डरकर उद्विग्न हो गये। तुरन्त उनकी उद्विग्नता को वाहवाही में बदलते हुए जटायु ने रावण के धनुष को अपने तुण्ड से पकड़कर छीन लिया। ९१८

ऑल्लिट्ट वॆळ्ळिक् कयिलैप्पॊरुप् पीश नॊडुम्
मल्लिट्ट तोळा लॆडुत्तान्शिलै वायिन् वाङ्गि

विल्लिट् टुयर्न्द नॆडुमेह् मॆन्नप्पॊ लिन्दान्
शॊल्लिट् टवन्ऱोळ्वलि यारुळर् शॊल्ल वल्लार् 919

ईश्वन् ओटुम्–शिवजी के साथ; ऎल् इट्ट–प्रकाशमान; कयिलै पॊरप्पु–कैलास पर्वत को; मल् इट्ट तोळाल्–बलिष्ठ भुजाओं से; ऎटुत्तान्–जिसने उठाया था, उस रावण के; चिलै–धनु को; वायिल् वाङ्कि–मुख से छीनकर; विल् इट्टु उयर्न्त–इन्द्रधनुष के साथ उठे; नॆटु मेकम् ऎन्न–बड़े मेघ के समान; पॊलिन्तान्–शोभित रहे; अवन् तोळ् वलि–उनका भुजबल; चॊल् इट्टु चॊल्ल वल्लार्–शब्दों से माप कर कह सकनेवाले; यार् उळर्–कौन हैं। ९१९

रावण का धनु छीनना साधारण बात नहीं था। रावण ने अपने भुजबल से शिवजी-सह प्रकाशमान कैलास पर्वत को उठाया था। उसके धनु को छीनकर जब जटायु ऊपर उड़े, तब वह इन्द्रधनुष के साथ उठ जानेवाले मेघ के समान शोभे। उनके भुजबल का सच्चा माप कौन अपने शब्दों से प्रकट कर सकेगा? शब्द से उनका बल वर्णित करने में समर्थ कौन होगा? । ९१९

मीळा निऱत्ता यिरङ्गणवन् विण्णि नोड
वाळा लॊऱुत्तान् शिलैवायिडै निन्ऱु वाङ्गित्
ताळा लिऱुत्तान् ऱऴल्वण्णन् ऱडक्कै विल्लैत्
तोळा लिऱुत्तान् तुणैत्तादैद नन्बिऱ् ऱोळन् 920

तऴल् वण्णन्–अग्निवर्ण शिव के; तट कै विल्लै–विशाल हस्त के (त्र्यम्बक नामक) धनु को; तोळाल् इऱुत्तान्–अपने भुजबल से जिन्होंने तोड़ा, उन श्रीराम के; तातै तुणै–पिता के साथी; अन्पिल् तोऴन्–प्रिय मित्र जटायु; मीळा निऱत्तु–युद्ध से न फिरनेवाले बली; आयिरम् कण्णवन्–सहस्रनेत्र इन्द्र को; विण्णिन् ओट–हराकर आकाश में भागने को; वाळाल् ऒऱुत्तान्–विवश करते हुए जिसने तलवार से सताया, उस रावण के; चिलै–धनु को; वाय् इटै निन्ऱु वाङ्कि–मुख में से लेकर; ताळाल् इऱुत्तान्–पैरों से तोड़कर मिटाया। ९२०

जटायु अग्निवर्ण शिवजी के हाथ के त्र्यम्बक नामक धनुष के भंजक श्रीराम के पिता दशरथ के साथी थे। अब प्रेम के कारण वे श्रीराम के भी मित्र बने थे। सहस्राक्ष इन्द्र में इतना बल था कि वह कभी लड़ाई में हारकर लौट नहीं जाते। उनको भी रावण ने युद्ध में हराकर उन्हें भागने को विवश कर दिया था। ऐसे रावण के धनुष को जटायु ने अपनी चोंच से लेकर पैरों के नीचे रखकर तोड़ दिया। ९२०

ञालम् वट्टपपान्तन दाऱ्ऱलुक् केऱ्ऱ नल्विल्
मूलम् मॊडिप्पुण्डदु कण्डु मुनिन्द नॆञ्जन्
आलम् मिडऱ्ऱान्पुर मट्टदॊ रम्बु पोलुम्
शूलम् मॆडुत्तार्त् तॆऱिन्दान्मऱन् दोऱ्ऱि लादान् 921

आलम् पट्टुप्पान्–लोक-नाशक; मऱम् तोऱ्ऱिलातान्–और वीरता जिसने नहीं खोयी थी, उस रावण ने; तत्तु आऱ्ऱलुक्कु एऱ्ऱ–अपनी शक्ति के योग्य; नल् विल्–उत्तम धनुष को; मूलम् ऑटिप्पुण्टतु कण्टु–मूल में टूटा देखकर; मुऩिन्त नॅञ्चन्–क्रुद्ध-चित्त होकर; आलम् मिटऱ्ऱान्–विषकण्ठ; पुरम् अट्ट–(शिव के) त्रिपुरदाहक; ओर् अम्पु पोलुम्–अनुपम शर के समान; चूलम् ॲटुत्तु–शूल को लेकर; आर्त्तु–गरजते हुए; ॲऱिन्तान्–फेंका। ६२१

रावण विश्वनाशक था। उसकी शक्ति क्षीण नहीं हुई थी। उसने अपने बल के योग्य धनुष को टूटा देखा। बड़ा क्रोध आ गया। उसने अपने त्रिशूल को, जो त्रिपुरान्तक के अस्त्र के समान प्रचण्ड था, जटायु पर फेंका। ९२१

आऱ्ऱा निवऩॅऩ् ऱुणरावॅऩ् दाऱ्ऱल् काणॅऩ्
ऱेऱ्ऱा नॅरुवॅक्किऱै मुत्तलै यॅ:(ह्)कै मार्बिऩ्
मेऱ्ऱा निदुशॅय्दव रारॅऩ् विण्णु ळोर्हळ्
तोऱ्ऱादु निऩ्ऱार्दम तोळ्बुडै कॉट्टि यार्त्तार् 922

ॲरुवैक्कु इऱै–गृध्रराज ने; इवऩ् आऱ्ऱान् ॲऩ्ऱु–यह शक्तिहीन ऐसा; उणरा–सोचकर; ॲऩतु आऱ्ऱल् काण्–मेरी शक्ति देख; ॲऩ्ऱु–कहते हुए; एऱ्ऱान्–जो चलाया (रावण ने); मु तलै ॲ:कै–उस त्रिशूल को; मार्पिऩ् मेऱ्ऱान्–जटायु ने वक्ष पर धारण कर लिया; विण् उळोर्कळ्–आकाशवासी देवों ने; इतु तान् चॅय्पवर् यार् ॲऩ–यह काम करनेवाला कैसा (शक्तिमान) है, कहकर; तोऱ्ऱातु निऩ्ऱार्–भ्रमित खड़े रहे; तम् तोळ् पुटै कॉट्टि–भुजाओं को ठोंकते हुए; आर्त्तार्–हल्ला मचाया। ६२२

उसने सोचा कि इसके सामने ठहरने की शक्ति जटायु में नहीं है। इसलिए उसने यह कहते हुए त्रिशूल को चलाया कि अब मेरा पराक्रम जानोगे। पर जटायु ने उसे अपने कठोर वक्ष पर धारण कर लिया। देवों को बड़ा विस्मय हो गया। हा! यह काम करनेवाला कैसे साहस का होगा? वे चकित खड़े रह गये। फिर वे अपने कन्धे ठोंककर शाबाशी का हल्ला मचाने लगे। ९२२

पॉऩ्नोक् कियर्दम् पुलऩोक्किय पुऩ्ग णोरुम्
इऩ्नोक्किय रिल्वळि यॅय्दिय नल्वि रुन्दुम्
तऩ्नोक्किय नॅञ्जुडै योहियर् तम्मैच् चार्न्द
मॅऩ्नोक्कियर् नोक्कमु मामॅऩ मोण्ड दव्वेल् 923

पॉऩ् नोक्कियर् तम्–स्वर्ण पर आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के; पुलऩ् नोक्किय–स्थान पर जानेवाले; पुऩ् कणोरुम्–दरिद्र लोग; इऩ् नोक्कियर् इल् वळि–मोठी आँखों की गृहिणी से रहित घर में; ॲय्तिय नल् विरुन्तुम्–आगत उत्तम अतिथि और; तऩ् नोक्किय–आत्मलीन; नॅञ्चुटै योकियर्–मन वाले योगियों के; तम्मै

चार्न्त–पास जो गयीं; मॅल् नोक्कियर्–उन कोमल दृष्टि वालियों की; नोक्कमुम् आम् अॅत्त–कामना के समान ही; अ वेल्–वह त्रिशूल; मीण्टतु-(वृथा हो) लौट आया। ९२३

वह शूल बेकार हो लौट आया। (उसके लिए कवि की उपमाएँ देखिए।) स्वर्ण पर ही आँख लगाये रहनेवाली वारवनिताओं के घर से पैसेविहीन दरिद्र जैसा; मधुर दृष्टि और व्यवहार के साथ आतिथ्य जो कर सकती है, ऐसी गृहिणी से विहीन घर से अतिथि जैसे; और आत्मलीन मन वाले योगियों के पास प्रेम की कामना ले जानेवाली स्त्रियाँ जैसे विफल मनोरथ होकर लौट आती हैं, वैसे ही वह शूल बेकार हो लौट आया। ९२३

वेहम्मुडन् वेलिऴन् दान्पडै वेरॅ डामुन्
माहम्मरै युम्बडि नीण्ड वयङ्गु मान्रेर्
पाहन्रलै यैप्परित् तुप्पडर् कर्पि नाऴ्बाल्
मोहम्बडैत् तानुळै वॅय्द मुहत् तॅरिन्दान् 924

वेल् इऴन्तान्–त्रिशूल को बेकार पाकर; वेकम् उटन्–वेग के साथ; पटै वेरु–अन्य अस्त्र; ॲटा मुन्–लेने से पहले; माकम् मऱैयुम् पटि–बड़े आकाश को ढँकते हुए; नीण्ट–विशाल और उन्नत; वयङ्कु मान् तेर्–दर्शनीय अश्वों से जुते रथ के; पाकन् तलैयै परित्तु–सारथी का सिर नोच लेकर; पटर् कर्पिताऴ् पाल्–गम्भीर पातिव्रत्य से युक्त देवी सीता के प्रति; मोकम् पटैत्तान्–काममोहित; उळैवु ॲय्त–(रावण को) व्याकुल करते हुए; मुकत्तु ॲरिन्तान्–उसके मुख पर फेंका। ९२४

शूल खोने पर रावण ने वेग के साथ और हथियार का प्रयोग करने का प्रयास किया। पर उसके पहले ही जटायु ने आकाश को छिपाते हुए विशाल और उन्नत जो रहा और जिससे श्रेष्ठ अश्व जुते थे, उस रथ के सारथी का सिर नोच लिया और उसे उस रावण के मुख पर फेंक दिया, जो निर्लज्ज गम्भीर पातिव्रत्यशीला सीता के प्रति काममोहित था। उससे रावण बहुत ही उद्विग्न हुआ। ९२४

ऍरिन्दान् रनैनोक्कि यिरावण नॅञ्जि नार्रल्
अरिन्दान् मुनिन्दाण्डदो राडहत् तण्डु वाङ्गिप्
पॉरिन्दाङ् गॅरियिन् शिहैपॊङ्गि यॅऴप् पुडैत्तान्
मरिन्दा नॅरुवैक्किरै माल्वरै पोल मण्मेल् 925

ऍरिन्तान् तत्तै नोक्कि–जिन्होंने फेंका, उनको देखकर; इरावणन्–रावण ने; नॅञ्चिन् आर्रल्–(जटायु के) मन की शक्ति; अरिन्तान्–जाना; मुनिन्तु–खीझकर; आण्टु ओर्–वहाँ एक; आटक तण्टु वाङ्कि–स्वर्णदण्ड लेकर; पॉरिन्तु–अंगार बरसाते हुए; ऍरियिन् चिकै–अग्निज्वाला; पॊङ्कि ऍऴ–भभक उठे, ऐसा; पुटैत्तान्–जटायु को उससे) पीटा; ऍरुवैक्कु इऱै–गीधों का राजा; मण् मेल्–भूमि पर; माल् वरै पोल–बड़े पर्वत के समान; मरिन्तान्–औंधा गिरे। ९२५

रावण ने, सारथी का सिर नोचकर उसके मुख पर जो फेंक सकते थे, उन जटायु की दिलेरी जानी। क्रोध के साथ उसने एक स्वर्णदण्ड उठाया, जिसके सिर पर अग्नि की ज्वाला अंगारे बिखेरते हुए जल रही थी। उसने उससे जटायु को पीटा। गीधों के राजा जटायु उससे आहत होकर बड़े पर्वत के समान भूमि पर अधोमुख गिर पड़े। ९२५

मण्मेल् विऴुन्दान् विऴलोडुम् वयङ्गु मान्ड्रेर्
कण्मे लॊळियुन् दॊडरावहै तान्ग डावि
विण्मे लॆऴुन्दा नॆऴमॆल्लिय लाळुम् वॆन्दीप्
पुण्मे नुऴैयत् तुडिक्किन्ड्रनळ् पोड्पु रण्डाळ् 926

मण मेल् विऴुन्तात्—भूमि पर जो गिरे उनके; विऴल् ओटुम्—गिरते ही; वयङ्कु मान् तेर्—श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ को; कण् मेल् ऑळियुम् तॉटरा वकै—(जटायु की) दृष्टि का प्रकाश भी न पीछा कर सके, इस प्रकार; तान् कटावि—स्वयं चलाते हुए; विण् मेल् ऍऴुन्तान्—आकाश में उड़ने लगा; ऍऴ—उठने पर; मॅल्लियलाळुम्—कोमलप्रकृति सीता भी; पुण् मेल्—घाव में; वॅम् ती नुऴैय—भयंकर आग के घुसने पर; तुटिक्किन्ड्रवळ् पोल्—तड़पती-सी; पुरण्टाळ्—(रथ पर गिरकर) लोटीं। ९२६

उनके गिरते ही रावण अपने रूपवान अश्वों से जुते रथ को इतनी तेज़ी से चलाते हुए ऊपर उठा कि जटायु की तीक्ष्ण दृष्टि की ज्योति भी मन्द पड़ गयी। जब उसका रथ ऊपर गया, तब कोमल-स्वभाव सीताजी व्रण में आग घुसने पर जैसे तड़प गयीं और गिरकर लोटीं। ९२६

कॊऴुन्दे यनैयाळ् कुऴैन्देङ्गिय कॊळ्है कण्डान्
अऴुन्दे लवलत्तिडै यञ्जलै यन्न मॆन्ना
ऍऴुन्दा नुयिर्त्तानड वॆङ्गिनिप् पोव दॆन्ना
विऴुन्दा नवन्ड्रेर्मिशै विण्णवर् पण्णै यार्प्प 927

कॊऴुन्ते अनैयाळ्—मृदुपल्लव-सदृश देवी का; कुऴैन्तु—क्लिन्न होकर; एङ्किय—तरसने का; कॊळ्कै कण्टान्—भाव देखा; अन्नम्—हंसिनी; अवलत्तु इटै—दुःख में; अऴुन्तेल्—मत डूबो; अञ्चलै—मत डरो; ऍन्ना—(धीरज-वचन) कहकर; उयिर्त्तान् ऍऴुन्तान्—निःश्वास छोड़ते हुए उठे; अट—रे; ऍङ्कु इनि पोवतु—कहाँ (बचकर) अब जाओगे; ऍन्ना—कहकर; विण्णवर् पण्णै—देवसमूहों के; आर्प्प—आनन्दरव करते; अवन् तेर् मिचै—उसके रथ पर; विऴुन्तान्—कूदे। ९२७

मृदु पल्लव-सम देवी का मुरझाना और रोना देखकर जटायु ने उन्हें आश्वस्त किया कि हंसिनी-तुल्य देवी! मत डरो। दुःख में डूब मत जाओ। दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए वे उठे। 'रे! कहाँ जाकर बचोगे?' यह पूछते हुए उसके रथ पर उछलकर कूद पड़े। जटायु का पराक्रम देखकर देवों का समूह आनन्दनाद कर उठे। ९२७

पाय्न्दा ऩवन्बन् मणित्तण्डु परित्तॆ रिन्दाऩ्
एय्न्दार् कदित्तेर्प् परियॆट्टिनो डॆट्टु मॆञ्जित्
तीय्न्दा शऱ्वीशियत् तिण्डिऱ्ऱ् ऱुण्ड वाळाल्
काय्न्दान् कवर्न्दानुयिर् कालनुङ् गैवि दिर्त्ताऩ् 928

पाय्न्ताऩ्–जो कूदे, उन्होंने; अवऩ्–उसका; पल् मणि तण्टु–अनेक रत्न-जड़ित दण्डायुध को; परित्तु ऎऱिन्ताऩ्–छीनकर फेंक दिया; एय्न्तु आर्–युक्तता के साथ शोभनेवाले; कति तेर्–गतिमान रथ के; परि ऎट्टिऩोटु ऎट्टु–सोलहों अश्वों को; ऎञ्चि तीय्न्तु–बलहीन होकर, ध्वस्त होकर; आचु अऱ–निपट नष्ट करते हुए; वीचि–उछालकर; अ तिण् तिऱल्–उस कठिन बलवान; तुण्ट वाळाल्–चोंच रूपी तलवार से; काय्न्ताऩ्–मिटाया; उयिर् कवर्न्ताऩ्–जान का गाहक; कालऩुम्–यम भी; कै वितिर्न्ताऩ्–हाथ मलकर काँपा। ९२८

झपटकर जटायु ने पहले उसका रत्नजटित दण्डायुध छीनकर दूर पटक दिया। उसके तीव्रगामी रथ के योग्य और उससे जुते सोलहों अश्वों को अपने कठोर तुण्ड रूपी खड्ग से दुर्बल करके बिल्कुल विध्वस्त कर दिया। उनकी जान के गाहक यम भी इसको देखकर हाथ मलते हुए काँप गये। ९२८

तिण्डे रऴित्ताङ्गवऩ् ऱिण्बुऱज् जेर्न्द तूणि
विण्डान् मऱैप्पच् चॆऱिहिऩ्ऱन विल्लि लामै
मण्डा रमर्दान् वळङ्गामैयिल् वच्चै माक्कळ्
पण्डार मॊक्किऩ्ऱन वळ्ळुहि रार्प ऱित्ताऩ् 929

तिण् तेर् अऴित्तु–कठोर रथ को ध्वस्त करके; विण्ताऩ् मऱैप्प–आकाश को ही छिपाते हुए; चॆऱिकिऩ्ऱन–जो भरे रहे; विल् आक्कु इलामै–धनुष के न होने से; मण्टु आर्–घोर रूप में चलनेवाले; अमर् वळङ्कामैयिऩ्–युद्ध में उपयोगी न होने के कारण (जो); वच्चै माक्कळ्–कंजूस लोगों के; पण्टारम् ऒक्किऩ्ऱन–भण्डार के समान हैं; अवऩ् तिण् पुऱम् चेर्न्त–उसकी बलवान पीठ पर बँधे; तूणि–तूणीरों को; वळ् उकिराल्–तेज नखों से; परित्ताऩ्–छीनकर फेंक दिया। ९२९

रावण का सबल रथ भी नष्ट हो गया। फिर जटायु ने तूणीरों पर ध्यान दिया। वे तूणीर आकाश को छिपानेवाले शरों से भरे थे। वे शर धनु के न रहने से अब कठोर युद्ध में उपयोगी नहीं रह गये थे। वे इस कारण कृपण के भण्डार के समान रहे। जटायु ने ऐसे शरों के तूणीरों को, जो रावण की बलवान पीठ पर बँधे थे, अपने तीक्ष्ण नखों से नोचकर छीन लिया। ९२९

माच्चिच् चिरल्पाय्न्दॆऩ मार्बितुन् दोळ्हण् मेलुम्
ओच्चिच् चिऱहार् पुडैत्तानुले यावि ळुन्दु

मूच्चित् तविरा वणनुम्मुडि शाय्त्ति रुन्दान्
पोच्चित् तनैपोलु निन्नाऱ्ऱ लॆन्ऱप्पु हन्ऱान् 930

मा चिच्चिरल्–बड़ा मछरंगी (मछली खानेवाले जल-पक्षी); पाय्न्तॆन–झपटा हो ऐसा; मार्पिनुम्–वक्ष पर; तोळ्कळ् मेलुम्–और कंधों पर; ओच्चि–वेग के साथ; चिऱ्काल् पुटैत्तान्–पंखों से मारा; उलैया विळुन्तु–शिथिल होकर नीचे गिरकर; मूच्चित्त–मूच्छित हुआ; इरावणनुम्–रावण भी; मुडि चाय्त्तु–सिर झुकाये; इरुन्तान्–रहा; पोच्चु–बस, गया; इत्तनै पोलुम्–इतना ही क्या; निन् आऱ्ऱल्–तुम्हारा बल; ॲन्न–ऐसा; पुकन्ऱान्–कहा। ९३०

जटायु बड़े मछरंगे के समान (जो जल-पक्षी इतनी तेज़ी से जलाशयों पर मछलियों पर झपटते हैं कि मछली को जल में डूबने को भी समय नहीं मिलता) रावण के वक्ष पर और कन्धों पर झपटे और पंखों से पीटने लगे। रावण उन प्रहारों से थक गया। मूर्च्छित-सा हुआ और सिर झुकाये रहा। तब जटायु ने चिढ़ाया कि बस, गया! इतना ही था तुम्हारा बल! ।९३०

अव्वे लैयिनै मुनिन्दान्मुनिन् दाऱ्ऱ लन्नव्
वॆव्वे लरक्कन् विडलाम्बडै वेऱु काणान्
इव्वे लैयिनै यिवनिन्नुयि रुण्व नॆन्नाच्
चॆव्वे पिळैया नॆडुवाळुऱै तीर्त्तॆ रिन्दान् 931

अ वेलैयिन् ए–उसी समय; मुनिन्तान्–क्रुद्ध हुआ; मुनिन्तु–क्रोध करके; आऱ्ऱलन्–शक्तिमान; अ वॆम् वेल् अरक्कन्–कठोर भालाधर राक्षस; विटल् आम् पटै–प्रेषण-योग्य हथियार; वेऱु काणान्–दूसरा कुछ नहीं देखा; इ वेलैयिन् ए–अभी; इवन् इन् उयिर्–इसकी प्यारी जान; उण्पॆन्–खाऊँगा; ॲन्ना–कहकर; पिळैया नॆटु वाळ्–अमोघ लम्बी तलवार को; उऱै तीर्त्तु–म्यान से निकालकर; चॆव्वे ॲऱिन्तान्–अच्छे प्रकार से चलायी। ९३१

ज्योंही रावण ने वह सुना, त्योंही वह क्रुद्ध हो उठा। शक्तिशाली कठोर भालाधारी उस राक्षस ने प्रेषणयोग्य कोई अन्य हथियार न देखकर अपनी चन्द्रहास तलवार म्यान से खींच ली। 'अभी इसका काम तमाम कर दूंगा' —यह कहते हुए उसने जटायु पर तलवार की वार की। ९३१

वलियिन् ऱलैतोऱ्ऱिलन् माऱ्ऱरुन् दॆय्व वाळाल्
नलियुन् दलैयॆन्ऱदु वन्ऱियुम् वाळ्क्कै नाळुम्
मॆलियुङ् गडैशॆन्ऱुळ दाहलिन् विण्णिन् वेन्दन्
कुलिशम् मॆऱियच्चिऱै यऱ्ऱदॊर् कुन्ऱिन् वीळ्न्दान् 932

वलियिन् तलै–रावण के बल से; तोऱ्ऱिलन्–हार नहीं खायी (जटायु ने); माऱ्ऱ अरुम्–दुर्द्धर्ष; तॆय्व वाळाल्–दैवी तलवार से; नलियुम् तलै ॲन्ऱतु–किसी का भी सिर कटेगा, इससे; अन्ऱियुम्–और भी; वाळ्क्कै नाळुम्–आयु भी; मॆलियुम् कटै चॆन्ऱु उळतु–अन्त होने को आयी थी; आकलिन्–इसलिए; विण्णिन् वेन्तन्–

सुरेन्द्र के; कुलिचम् ऍऱिय–कुलिश चलाने पर; चिऱै अऱ्ऱतु–पंख कटकर; ओर् कुन्ऱिन्–(गिरनेवाले) एक पर्वत के समान; वीऴ्न्तान्–जटायु नीचे गिर पड़े। ९३२

जटायु रावण के बल से विजित नहीं हुए। पर तलवार दैवी थी और उसको वरदान प्राप्त था कि वह किसी का भी सिर काट सकती थी। अलावा इसके, जटायु की आयु भी अन्त होने को आ गयी थी। इसलिए देवेन्द्र के वज्र से पंखकटा होकर जैसे पर्वत गिरा, वैसे अपने पक्षों के कटने पर जटायु नीचे गिर गये। ९३२

विरिन्दार् शिऱैहीऴुऱ वीऴ्न्दनन् मण्णिन् विण्णोर्
इरिन्दा रिऴन्दा डुणैयॆन्ऩ मुनिक्क णङ्गळ्
परिन्दार् पडर्विण्डुवि ऩाट्टवर् पॆम्बॊन् मारि
शॊरिन्दा रदुनोक्किय शीदै तुळक्क मुऱ्ऱाळ् 933

विरिन्तु आर् चिऱै–विवृद्ध और मनोरम पंखों के; कीऴ् उऱ–नीचे गिरने से; मण्णिन् वीऴ्न्तनन्–(जटायु भी) भूमि पर गिर गये; विण्णोर् इरिन्तार्–व्योमवासी अस्त-व्यस्त भागे; मुनि कणङ्कळ्–मुनिवृन्द; तुणै इऴन्ताळ् ऍन्ऩ–सहायक खो गयीं (देवी) यह कहकर; पटर् परिन्तार्–दुःख से आक्रांत हुए; विण्टुविन् नाट्टवर्–श्रीविष्णुलोकवासी नित्यसूरिवृन्द ने; पॆम्पॊन् मारि–स्वर्णवर्षा; चॊरिन्तार्–करायी; अतु नोक्किय चीतै–उसको देख सीताजी; तुळक्कम् उऱ्ऱाळ्–सिहर उठीं। ९३३

फैले रहे मनोरम पक्ष कटकर गिरे और वे भी भूमि पर गिर गये। यह देखकर देवगण अस्त-व्यस्त होकर भाग चले। मुनिवृन्द यह कहते हुए दुःखी हुए कि सहायतार्थ आया जटायु भी हत हो गया। श्रीविष्णु के वैकुण्ठलोकवासी नित्यसूरीवृन्द ने जटायु पर स्वर्णवर्षा करायी। (वैकुण्ठ में भगवान विष्णु के अलावा गरुड़, सुदर्शन आदि नित्यसूरी और मुक्त जीव, जो भूमि का वास पूरा करके मोक्ष को प्राप्त हुए हैं, हैं। विशिष्टाद्वैत मत के अनुसार ये नित्यसूरि विष्णु-भक्तों की मृत्यु होने पर स्वयं आकर उनको बड़े आदर के साथ लिवा ले जाते हैं।) यह देखकर सीताजी बहुत व्यथित हुईं। ९३३

वॆळ्हुम् मरक्कन् नॆडुविण्बुह वार्त्तु मिक्कान्
तॊळ्हिन् ऱलैयॆय्दिय मानॆऩच् चोर्न्दु नैवाळ्
उळ्हुम् मुयिर्क्कु मुयङ्गुम्मॊरु शार्वु काणाळ्
कॊळ्हॊम् बॊडियक् कॊडिवीऴ्न्ददु पोऱ् कुलैन्दाळ् 934

वॆळ्कुम् अरक्कन्–(जटायु के पराक्रम के सामने) जो शरम खाता था, वह राक्षस; नॆटु विण् पुक–(अब) आकाश में बहुत दूर गूँज उठे, ऐसा; आर्त्तु–शोर मचाकर; मिक्कान्–स्वाभिमान में बढ़ गया; तॊळ्किन् तलै ऍय्तिय–जाल में फँसी हुई; मान् ऍन–हरिणी के समान; चोर्न्तु नैवाळ्–थकी और क्लिन्न; उळ्कुम्–(सीताजी ने) सोचा (कि क्या किया जाय); उयिर्क्कुम्–ठण्डी आहें भरीं; उयङ्कुम्–मुरझातीं;

औरु चार्पु काणाळ्—कोई उपाय नहीं देखतीं; कोळ् कोम्पु ओटिय—अवलम्ब-तरु के टूटने पर; कोटि वीळ्न्ततु पोल्—लता गिरी जैसे; कुलैन्ताळ्—जर्जर हुई। ६३४

रावण जटायु का साहस देखकर पहले शरम से पीड़ित था। अब वह स्वाभिमान में बढ़ गया। उसने आकाश में बहुत दूर तक गुँजाते हुए गर्जन किया। सीताजी जाल में फँसी हरिणी के समान शिथिल पड़ गयीं। उद्विग्न हो गयीं। 'अब क्या करूँगी ?' यह सोचने लगीं। ठण्डी आहें भरीं। कोई सहायक नहीं रहा। अवलम्बित शाखा के टूटने पर गिरकर तड़पनेवाली लता के समान वे अस्त-व्यस्त होकर छटपटायीं। ९३४

❀ वन्रुणै युळतॆन वन्द मन्ननुम्, पॊन्ट्रिन तॆनक्किनि पुहलॆन् तॆन्गिन्राळ्
इन्रुणैप् पिरिन्दिरुन् दिन्न लॆय्दिय, अन्ट्रिलम् बॆडैयॆन वरट्रि नाळरो 935

इन् तुणै पिरिन्तु इरुन्तु—प्यारे संगी से बिछुड़कर; इन्तल् ऍय्तिय—कष्ट-प्राप्त; अन्ट्रिल् अम् पॆडै ऍन—मनोरम क्रौंची के समान; अरट्रिताळ्—सीताजी विलपीं; वल् तुणै उळन्—शक्तिमान सहायक हैं; ऍन—ऐसा; वन्त मन्ननुम्—जो आये, वे (गृध्र-) राज भी; पॊन्ट्रिनन्—मर गये; ऍनक्कु इनि पुकल् ऍन्—अब मेरे लिए शरण कहाँ; ऍन्किन्राळ्—कहतीं। ६३५

वे प्यारे जीवन-संगी से वियुक्त और दुःखी हुई मनोरम क्रौंची के समान विलाप करने लगीं। सबल सहायक आ गया —यह सोचकर मैं निश्चिन्त थी। ऐसे सहायक, गीधों के राजा भी मर गये। अब मेरे लिए शरण कहाँ होगी ? यह कहते हुए वे रोयीं। ९३५

❀ पिन्नव नुरैयितै मरुत्तुप् पेदैयेन्, अन्नवन् ट्रनैक्कडि दहट्रि नेन्बॊरु
मन्नवन् शिरैयर मयङ्गि नेन्विदि, इन्नमु मॆव्विनै यियट्रु मोवॆना 936

पेतैयेन्—जड़मति; पिन्नवन् उरैयितै—देवर का कहना; मरुत्तु—काटकर; अन्नवन् तनै—उनको; कटितु अकट्रिनेन्—शीघ्र हटा दिया; पॊरु मन्नवन् चिरै अर—(मेरी सहायता के लिए) युद्धरत गृध्रराज का पंख कटवाया; मयङ्कितेन्—अब भ्रमित हूँ; विति—कर्मगति; इन्नमुम्—और भी; ऍ विनै—कौन सा कार्य; इयट्रुमो—करायगी; ऍना—सोचती हुई। ६३६

मैं जड़मति हूँ। देवर ने बहुत समझाया। उनकी बात काटकर उनको जल्दी जाने को विवश किया। अब युद्ध करने जो आये, उनके पंख कट गये और वे गिर गये। अब मैं भ्रमित हूँ। विधि और भी क्या-क्या करेगी ? नहीं जानती। —यह कहकर वे दुःखी हुईं। ९३६

❀ अल्ललुट्र ट्रनैवन् दञ्ज लॆन्ट्रविन्
नल्लवन् ट्रोट्पदे नरहन् वॆल्वदे
वॆल्वदुम् बावमो वेदम् पॊय्क्कुमो
इल्लैयो वट्रमॆन विरङ्गि येङ्गिनाळ् 937

अल्लल् उऴ्रेनै–दुःखग्रस्त मुझे; वन्तु अञ्चल्–आकर मत डरो; ॲन्ऱ–जिन्होंने कहा; इ नल्लवन्–ये उत्तम जीव; तोऱ्पते–हार जायें क्या; नरकन् वॅल्वते–नारकी (रावण) जीत जाये; वॅल्वतुम् पावमो–पाप ही जीत पा जाय; वेतम् पॉय्क्कुमो–क्या वेद झूठे बनेंगे; अऱम् इल्लैयो–धर्म नहीं रहा क्या; ॲन–ऐसा; इरङ्कि–दुःखी होकर; एङ्कित्ताळ्–रोयीं। ९३७

दुःखपीड़ित मुझे इन उत्तम ने अभयदान किया। कहा कि मत डरो। ये भले मानुस हारें, यह क्या न्याय है? नारकी रावण जीत जाता है —यह क्या? पाप ही विजयी होगा क्या? वेद झूठे हो गये हैं क्या? ('सत्यमेव जयते' कहते हैं वेद।) क्या धर्म नहीं रहा? —ऐसा-ऐसा कहकर वे मुरझायीं, रोयीं। ९३७

❀ नाणिलेऩ् उरैकॉण्डु नडन्द नम्बिमीर्
नीणिलै यऱनॅऱि निऩ्ऱु ळोर्क्कॅलाम्
आणियै युन्दैयर्क् कमैन्द वऩ्बनैक्
काणिय वम्मॅनक् कलङ्गि विम्मिनाळ् 938

नाण् इलेन्–निर्लज्ज मेरा; उरै कॉंटु–वचन मानकर; नटन्त नम्पिमीर्–जो चले, वे गुणपूर्ण; नीळ् निलै–चिर स्थिर; अऱम् नॅऱि–धर्ममार्ग पर; निन्ऱु उळोर्क्कु ॲलाम्–जो स्थित हैं, उन सबके; आणियै–धुरंधर और; उन्तैयर्क्कु–आपके पिता के; अमैन्त नण्पनै–युक्त मित्र को; काणिय–देखने के लिए; वम्–आइए; ॲन–कहकर; कलङ्कि विम्मिनाळ्–रोयीं, सिसकीं। ९३८

मैं निर्लज्ज हूँ। मेरी बात पर जो चले, वे पूर्णपुरुष! चिरकाल से स्थिर धर्ममार्गगामियों के लिए जटायु धुरन्धर थे। वे आपके पिता के योग्य मित्र थे। उनको देखने के लिए आइए —कहती हुई वे उद्विग्न होकर सिसकीं। ९३८

ऍल्लियल् विशुम्बिडै यिरुन्द नेमियाय्
शॉल्लिय वऱनॅऱि तॉडर्न्द तोऴमै
नल्लिय लऱङ्गडन् कऴित्त नम्बियैप्
पुल्लुदि योवॅनप् पॊरुमि येङ्गिनाळ् 939

ऍल् इयल्–प्रकाशमय; विचुम्पु इटै–आकाश में; इरुन्त नेमियाय्–विद्यमान चक्रवर्ती (दशरथ); चॉल् इयल्–प्रशंसनीय; अऱ नॅऱि तॉटर्न्त–धर्ममार्गगामी; तोऴमै–मित्रता के लिए योग्य; नल् इयल् अऱम् कटन्–अच्छे शास्त्रों में कथित श्रेष्ठ कर्तव्य; कऴित्त–जो कर चुके; नम्पियै–पूर्णजीव जटायु को; पुल्लुतियो–वहाँ आलिंगन कर लेंगे क्या; ॲन–कहकर; पॊरुमि–आहें भरकर; एङ्कित्ताळ्–रोयीं। ९३९

प्रकाशमय आकाश (स्वर्ग) में विद्यमान चक्रवर्ती! प्रशंसनीय धर्मसम्मत मित्रता के शास्त्रविहित कर्तव्य जो पूरा कर चुके है, वे जटायु

उधर आ रहे हैं। उनका आलिंगन कर लेंगे न ? —सीताजी सिसकियाँ भरती हुई रोयीं। ९३९

कऱ्पऴि यामैयॆऩ् कडमै यायिऩुम्
पॊऱ्पऴि यावलम् बॊरुन्दुम् बोर्वलाऩ्
विऱ्पऴि युण्डदु विऩैयिऩेऩ् वन्द
इऱ्पऴि युण्डदॆऩ् ऱिरङ्गि येङ्गिऩाळ् 940

कऱ्पु अऴियामै–पातिव्रत्य की रक्षा; ऎऩ् कटमै–मेरा कर्तव्य है; आयिऩुम्–तो भी; पॊऱ्पु अऴिया–तेजोमय; वलम् पॊरुन्तुम्–बल से युक्त; पोर् वलाऩ्–युद्धवीर, श्रीराम का; विल् पऴि उण्टतु–कोदण्ड अपयश का भाजन हुआ; विऩैयिऩेऩ् वन्त–पापी मेरे जन्म का; इल् पऴि उण्टतु–कुल भी निन्द्य हो गया; ऎऩ्ऱु–कहकर; इरङ्कि एङ्किऩाळ्–आर्द्र होकर रोयीं। ९४०

अपने पातिव्रत्य का पालन करना मेरा कर्तव्य है, सही। तो भी अब इस कार्य से तेजोमय बलसंयुक्त युद्धवीर श्रीराम के कोदण्ड पर बट्टा लग गया है। पापिनी मैंने जिस कुल में जन्म लिया, उस जनककुल पर अपयश का धब्बा लग गया। हाय! कहती हुई सीताजी व्यग्र होकर रोयीं। ९४०

❀ एङ्गुवा डऩिमैयु मिऱहि ऴन्दवन्
आङ्गुरु निलैमैयु मरक्क ऩोक्किऩाऩ्
वाङ्गिनऩ् ऱेरिडै वैत्त मण्णोडुम्
वीङ्गुदोण् मीक्कॊडु विण्णि ऩेहिऩाऩ् 941

एङ्कुवाळ् तऩिमैयुम्–रोनेवाली सीताजी की निस्सहायता; इऱकु इऴन्तवऩ्–पंखहीन हुए जटायु की; आङ्कु उरु–वहाँ की (मरणासन्न); निलैमैयुम्–स्थिति को; अरक्कऩ् नोक्किऩाऩ्–राक्षस ने देखा; तेर् इटै वैत्त–रथ में रखी हुई; मण् ओटुम्–भूमि के अंश के साथ; वाङ्किऩऩ्–उठा लेकर; वीङ्कु तोळ् मी कॊंटु–पुष्ट और उन्नत कन्धों पर रखकर; विण्णिऩ् एकिऩाऩ्–आकाश में गया। ९४१

राक्षस ने देखा कि अब देवी निस्सहाय हो गयी हैं। उधर जटायु भी मरणोन्मुख अवस्था में थे। सन्दर्भ का लाभ उठाकर उसने सीताजी को भूमि के अंश के साथ रथ से उठाया। अपने उन्नत और स्थूल कन्धों पर धारण किये वह आकाश में चला। ९४१

❀ विण्णिडै वॆय्यव ऩेहुम् वेहत्ताल्
कण्णोडु मऩमवै चुऴऩ्ऱ कऱ्पिऩाळ्
उण्णिऱै वुणर्वऴिन् दॊऩ्ऱु मोर्न्दिलळ्
मण्णिडैत् तऩ्ऩैयु मऱन्दु शाम्बिऩाळ् 942

विण् इटै–आकाश में; वॆय्यवऩ्–क्रूर के; एकुम् वेकत्ताल्–जाने की तीव्र गति के कारण; कण् ओटु मऩम् अवै–आँखों के साथ मन भी; चुऴऩ्ऱ–चक्कित हुआ;

कऱ्पिऩाळ्-वैसी पतिव्रता सीताजी; उळ् निऱै उणर्वु अऴिन्तु-मन की प्रज्ञा खोकर; ऑन्ऱुम् ओर्न्तिलळ्-कुछ नहीं जानतीं; तऩ्ऩैयुम् मऱन्तु-अपनी सुध भी खोकर; मण् इटै-भूमि (के अंश) पर; चाम्पिऩाळ्-मूर्च्छित पड़ी रहीं। ९४२

रावण आकाश-मार्ग से अति तीव्र गति में जा रहा था। उसके कारण देवी सीता की आँखें चकरा गयीं। मन भी चक्कर खाने लगा। पतिव्रता देवी की प्रज्ञा ही निष्क्रिय हो गयी। कुछ समझ नहीं पायी। आखिर मूर्च्छित होकर वह भूमि के अंश पर गिरीं और मुरझायीं। ९४२

❀ एहिन ऩरक्कनु मॅरुवै वेन्दनुम्
मोहवॅन् दुयर्शिऱि दाऱि मुऩ्नियॆ
माहमे नोक्किऩाऩ् वञ्जन् वल्लैयिल्
पोहुदल् कण्डहम् बुलर्न्दु शॊल्लुवाऩ् 943

अरक्कनुम्-निशाचर भी; एकिऩऩ्-गया; ऍरुवै वेन्तनुम्-गीधों के राजा भी; मोक वॅम् तुयर्-मूर्च्छा के कठोर दुःख से; चिऱितु आऱि-कुछ शान्त होकर; मुऩ्नियॆ-स्मरण करते हुए; माकम् मेल् नोक्किऩाऩ्-आकाश में ऊपर देखा; वञ्चन् वल्लैयिल् पोकुतल् कण्टु-वंचक का शीघ्र जाना देखकर; अकम् पुलर्न्तु-मन में तप्त होकर; चॊल्लुवाऩ्-कुछ कहने लगे। ९४३

रावण आगे बढ़ता जा रहा था। जटायु मूर्च्छा के कठोर दुःख से बाहर आये। उनको धीरे-धीरे घटित बातें स्मरण आने लगीं। उन्होंने ऊपर देखा। रावण सीताजी को लिये जा रहा था। जटायु का मन सूख गया। वे कुछ कहने लगे। ९४३

❀ वन्दिलर् मैन्दर्दाम् मरुहिक् कॅय्दिय
वॅन्दुयर् तुडैत्तऩ रॅन्नु मॅय्प्पुहऴ्
तन्दिलर् विदियिनार् दरुम वेलियैच्
चिन्दिऩर् मेलिनिच् चॅयलॅ ऩाङ्गॊलो 944

मैन्तर् ताम्-मेरे पुत्र; वन्तिलर्-नहीं आये; मरुकिक्कु-वधू पर; ऍय्तिय-आया; वॅम् तुयर्-कठोर दुःख; तुटैत्तऩर् ऍऩ्ऩुम्-दूर कर दिया, यह; मॅय् पुकऴ्-सच्चा यश; तन्तिलर्-नहीं पाया (नहीं दिलाया उन्होंने); वितियिऩ् आर्-विधियों से विशिष्ट (या वितियिऩार्-विधि ने); तरुम वेलियै-धर्म के बाड़े को; चिन्तिऩर्-खोल दिया; मेल्-आगे; चॅयल्-करने योग्य काम; ऍऩ् आम् कॊल्-क्या होगा। ९४४

ओफ़! पुत्र नहीं आये। उन्होंने वधू का कठोर दुःख दूर करके यश नहीं लिया (न मुझे ही दिलाया)। विधिविशिष्ट धर्म के बाड़े को तोड़ दिया। आगे का कार्य क्या होगा? । ९४४

❀ वॅऱ्ऱिय दळर्रॆऩिऩ् मिऩ्ऩि ऩुण्णिडैप्
पॊऱ्ऱॊडिक् किऩ्ऩिलै पुहुदर् पालदो

उऱ्ऱदै यिन्नदॆन् ऱुणर हिऱ्ऱिलेन्
शिऱ्ऱवै वञ्जनै मुडियच् चॆय्ददो 945

वॆऱ्ऱियर्–विजयशील राम और लक्ष्मण; उळर् ऎनिल्–वहाँ रहे होते तो; मिन्निन् नुण् इटै–बिजली-सी क्षीण-कटि; पोन् तोटिकु–स्वर्ण-कंकणालंकृता (सीता) पर; इ निलै–यह दशा; पुकुतल् पालतो–आ सकती थी क्या; उऱ्ऱतै–वहाँ जो हुआ, उसे; उणरकिऱ्ऱिलेन्–समझ नहीं पाता; चिऱ्ऱवै वञ्चनै–छोटी माता की वंचना; मुटिय चॆय्ततो–सफल हो रही है क्या। ६४५

राम और लक्ष्मण पराक्रमी और विजयी हैं। वे अगर वहाँ रहते होते तो विद्युत-सी क्षीण-कटि और स्वर्ण-कंकणालंकृता देवी पर यह दशा आ सकती? उधर क्या हुआ, यह मैं जान नहीं पाता। सौतेली माता की वंचना सफलीभूत हो रही है क्या? । ९४५

❀ पञ्जणै पाम्बणै याहप् पळ्ळिशेर्
अञ्जन वण्णने यिराम नादलाल्
वॆञ्जिन वरक्कनाल् वॆल्लऱ् पालनो
वञ्जनै यिळैत्तनन् कळ्ळ मायैयाल् 946

पाम्पु–शेषनाग पर; पञ्चु अणै आक–रुई की शय्या पर जैसे; पळ्ळि चेर्–शयन जो करते हैं; अञ्चन वण्णन–वे अंजनवर्ण विष्णुदेव ही; इरामन् आतलाल्–श्रीराम हैं, इसलिए; वॆम् चिनम् अरक्कनाल्–निर्मम क्रोधी राक्षस द्वारा; वॆल्लल् पालन् ओ–जेय है क्या; कळ्ळ मायैयाल्–चोरी की माया से; वञ्चनै इळैत्तनन्–कपट किया है राक्षस ने। ६४६

वे श्रीराम शेषनाग पर रुई की शय्या पर जैसे शयनकर्ता श्रीमन्नारायण ही हैं। क्या वे निर्मम क्रोधी रावण द्वारा जेय हैं? नहीं। इसलिए उनकी कुछ हानि नहीं हुई होगी। रावण ने अवश्य माया द्वारा ही यह वंचना की है! । ९४६

वेरऱ वरक्करै वॆन्ऱु वॆम्बळि
तीरुमॆन् शिऱुवनुन् दीण्ड वञ्जुमाल्
आरियन् ऱेवियै यरक्क नम्मलर्प्
पेरुल हळित्तवन् पिळैप्पिल् शाबत्ताल् 947

ऎन् चिऱुवनुम्–मेरा बालक भी; अरक्करै वेर् अऱ वॆन्ऱु–राक्षसों को जीतकर निर्मूल करके; वॆम् पळि तीरुम्–इस क्रूर काम का बदला ले लेगा; अम् मलर्–सुन्दर कमलासन; पेर् उलकु अळित्तवन्–विश्वसर्जक के; पिळैप्पु इल् चापत्ताल्–अनिवार्य शाप के कारण; आरियन् तेवियै–पुरुषोत्तम की पत्नी को; तीण्ट अञ्चुम्–स्पर्श करने से डरेगा। ६४७

मेरा बालक, श्रीराम, राक्षसों को अवश्य जीतकर उनका मूल से नाश कर देगा और बदला ले लेगा। विश्वसृष्टा कमलासन का शाप है, वह

वृथा नही होगा, इसलिए रावण पुरुषोत्तम की पत्नी सीता का स्पर्श नहीं करेगा। डर के कारण वह उसका अपमान नही करेगा। ९४७

परुञ्जिऱै	यिन्नन	पन्नि	युन्नुवान्
अरुञ्जिऱै	युऱ्ऱन	ळामॆ	न्नामनम्
पॊरुञ्जिऱै	यिऱ्ऱदे	पूवै	कऱ्पॆनुम्
इरुञ्जिऱै	यऱादॆन	विडरि	नीङ्गिनान् 948

परुञ्चु इऱै–गीधों के राजा; अरुम् चिऱै उऱ्ऱनळ् आम्–कठोर कारा में पहुँच गयी; ऍन्ना–ऐसा; मनम् उन्नुवान्–मन में अनुमान करते; इन्नन पन्नि–ऐसी बातें कहते हुए; पॊरुम् चिऱै–युद्धोपयोगी पंख; इऱ्ऱते–कट गये तो भी; पूवै–सारिका-सी सीता का; कऱ्पॆनुम् इरुम् चिऱै–पातिव्रत्य रूपी रक्षण; अऱातु ऍन–व्यर्थ नहीं होगा, यह सोचकर; इटरिन् नीङ्कितान्–दुःखनिवृत्त हुए। ६४८

गृध्रराज जटायु अपने मन में अनुमान लगाते कि सीता कारा में रखी गयी है। यह सब कहकर वे आगे सोचते कि जिनको लेकर मैं युद्ध कर सकता था, वे पंख कट गये और मैं सीता की रक्षा नहीं कर सका। पर सारिका-सी सीतादेवी का पातिव्रत्य है —वह पंख नहीं कटेगा और उसका खूब संरक्षण करेगा। यह सोचकर वे दुःखनिवृत्त हुए। ९४८

❀ अञ्जिऱैक्	कुरुदिया	ऱऴिन्दु	शोरवुम्
वञ्जियै	मीट्टिलॆ	न्नॆन्नु	मानमुम्
शॆञ्जॆवे	मक्कण्मेऱ्	चॆन्ऱ	कादलुम्
नॆञ्जुऱत्	तुयिन्ऱन	नुणर्वु	नीङ्गलान् 949

अम् चिऱै कुरुति आऱु–श्रेष्ठ पंखों से निकली रक्त-नदी; अऴिन्तु–सूखी; चोरवुम्–बहुत दुर्बल हुए, तो भी; वञ्चियै–लता (-सी सीता) को; मीट्टिलॆन्–नहीं लौटाया; ऍन्नुम् मानमुम्–इससे उत्पन्न अपमान; मक्कळ् मेल्–और अपने बालकों पर; चॆञ्चॆवे चॆन्ऱ–सीधा लगाया; कातलुम्–प्रेम; नॆञ्चु उऱ–मन में घर किये रहे; उणर्वु नीङ्कलान्–प्रज्ञा नहीं खोकर; तुयिन्ऱनन्–निद्रित अवस्था में रहे। ६४६

जटायु के पंखों से नदी के समान रक्त जो वह रहा था, वह यथासमय सूख गया। रक्त-विहीन होकर उनका शरीर कृश हो गया और वे शिथिल पड़ गये। तब भी उनके मन में सीताजी को न लौटा सकने से उत्पन्न अपमान की ग्लानि और अपने (मित्र के) बालकों पर रखा गम्भीर प्रेम सजग था। वे प्रज्ञा को सजग रखते हुए निद्रावस्था में पड़े रहे। ९४९

❀ वञ्जियै	यरक्कनुम्	वल्लै	कॊण्डुपोय्च्
चॆञ्जॆवे	तिरुवुरुत्	तीण्ड	वञ्जुवान्
नञ्जिय	लरक्कियर्	नडुव	णायिडैच्
चिञ्जुव	मरत्तिडैच्	चिऱैवैत्	तानरो 950

अरक्कन्नुम्–राक्षस ने; वञ्चियै–लता-सी सीता को; तिरु उरु तीण्ट–शरीर-स्पर्श करने से; अञ्चुवान्–डरकर; आय् इटै–उस (लंका) में; चिञ्चुव मरत्तु इटै–शिशुपा (अशोक) तरु के तले; नञ्चु इयल्–विष-तुल्य स्वभाव वाली; अरक्कियर् नट्टुवण्–राक्षसियों के मध्य; चॅञ्चॅवे–अच्छी तरह से; चिरै वैत्तान्–बन्दी बनाकर रखा। ६५०

राक्षस रावण ने सीताजी के श्रीशरीर को स्पर्श नहीं किया। उसे भय था। उन्हें लंका में ले गया। वहाँ अशोक वन में शिशुपा वृक्ष के तले उन्हें रखा; और विष का-सा स्वभाव रखनेवाली राक्षसियों का पहरा बैठाया। ९५०

❀ इन्निलै यिन्नैयवर् शॅयलि यम्बिन्नाम्
पॉन्निलै मानिन्बिन् रॉडर्न्दु पोहिय
मन्निलै यरिहॅन् मङ्गै येविय
पिन्नवन् रन्निलै पेशु वामरो 951

इ निलै–ऐसा; इन्नैयवर् चॅयल्–इनका काम; इयम्पित्ताम्–(हमने) कहा; पॉन् निलै मानिन् पिन्–स्वर्णवर्ण मृग के पीछे; तॉटर्न्तु पोकिय–लगे हुए जो गये; मन् निलै अरिक–उन नाथ की हालत जानो; ॲन्न–कहकर; मङ्कै एविय–जिनको देवी ने भेजा, उन; पिन्नवन् तन् निलै–अनुज की स्थिति; पेचुवाम्–कहेंगे। ६५१

अब तक हम (कवि रावण, जटायु, सीताजी आदि) इनकी करनी कहते रहे। अब हम अनुज लक्ष्मण की बात करेंगे, जो सीताजी से स्वर्णमृगानुगामी प्रभु की स्थिति जानने के हेतु प्रेषित थे। ९५१

ऑरुमह डनिमैयै युन्नि युळ्ळुरुम्
परुवरल् मीदिडप् पदैक्कु नॅञ्जिनान्
पॅरुमहन् रनैत्तनिप् पिरिन्दु पेदुरुम्
तिरुनहर् तीरुमप् परदन् शॅय्हैयान् 952

ऑरु मकळ्–अकेली देवी की; तनिमैयै उन्नि–तनहाई की चिन्ता करके; उळ् उरुम् परवरल्–अन्दर का दुःख; मीतु इट–अधिक हुआ और; पतैक्कुम् नॅञ्चितान्–धड़कता दिल लेकर; पॅरु मकन् तनै–पुरुषोत्तम श्रीराम को; तनि पिरिन्तु–अकेले छोड़कर; पेतुरुम्–दुःखी रहनेवाले; तिरु नकर् तीरुम्–अयोध्या के श्रीनगर को छोड़ जानेवाले; अ परतन् चॅय्कैयान्–उन भरत की-सी स्थिति में रहे। ६५२

लक्ष्मण के मन में अकेली उत्तम देवी सीता के एकाकीपन की चिन्ता थी और तज्जनित दुःख उमड़ आ रहा था। इसलिए वे बहुत उद्विग्न हुए थे। तब उनके मन की दशा भरत की-सी थी, जो श्रीराम से विदा होकर अयोध्या नगरी को लौट रहे थे। ९५२

❀ तॅण्डिरैक् कलमॅन विरैविऱ् चॅल्हिऩ्ऱाऩ्
पुण्डरी हत्तडङ् गाडु पूत्तॊरु
कॊण्डल्वन् दिऴिन्दत्तॆ कोलत् ताऩ्ऱऩैक्
कण्डनऩ् मऩमॅनक् कऴिक्कुङ् गण्णिऩाऩ् 953

तॆळ् तिरै—स्वच्छ लहरों के समुद्र में; कलम् ॲन्न—पोत के समान; विरैविल् चॅल्किऩ्ऱाऩ्—वेग के साथ (जो) चलते हैं; ओरु कॊण्टल्—एक मेघ; पुण्टरकिम् तटम् काटु पूत्तु—कमलपुष्प कानन के समान खूब पुष्पित हैं (जिसमें); वन्तु इऴिन्त ॲऩ्ऩ—(भूमि पर) उतरा हो जैसे; कोलत्ताऩ् तनै—सौन्दर्यवान श्रीराम को; मनम् ॲन्न कऴिक्कुम् कण्णिऩाऩ्—मन ही की अरह आँखों में भी आनन्द के साथ; कण्टनऩ्—देखा (उन लक्ष्मण ने)। ९५३

लक्ष्मण साफ़ लहरों से युक्त समुद्र में पोत के समान सवेग गये। उन्होंने, पुष्पित कमलों के साथ आनेवाले मेघ के समान जो आ रहे थे, उन श्रीराम के दर्शन किये। तब उनका मन ही क्या उनकी आँखें भी आनन्द से भर गयीं। ९५३

❀ तुण्णॅनुम् मव्वुरै तॊडरत् तोहैयुम्
पॅण्णॅनुम् वेदैमै मयक्कप् पेदिऩाल्
उण्णिऱै शोरुमॅन् ऱूश लाडुमक्
कण्णनु निळवलैक् कण्णि नोक्किऩाऩ् 954

तुण् ॲन्तुम्—भय से कँपा देनेवाले; अ उरै—उस (मारीच के) शब्द को; तॊटर—अपने पास आने पर सुनकर; तोकैयुम्—कलापी (सी सुन्दर सीता) देवी भी; पॅण् ॲन्नुम् पेतैमै—स्त्री-सुलभ अबोधता के; मयक्क—भ्रमित करने से; पेतिऩाल्—भ्रम से; उळ् निऱै चोरुम्—मन का धैर्य खो जायगी; ॲन्ऩु—यह सोचकर; ऊचल् आटुम्—चंचल बने; अ कण्णनुम्—उन सुन्दराक्ष ने भी; इळवलै—अपने कनिष्ठ को; कण्णिन् नोक्किऩाऩ्—आँखों से देखा। ९५४

उधर श्रीराम ने भी अपने अनुज को देखा। जब उन्होंने मारीच का डरानेवाला दुहाई का शब्द सुना था, तभी उन्हें लग गया कि कलापी-सी सुन्दरी सीता ने उसे सुना अवश्य होगा। स्त्री-सुलभ मोह के कारण वे भ्रमित होंगी और अधीर हो जायँगी। इसलिए सुन्दराक्ष श्रीराम का मन डाँवाँडोल था। उन्होंने लक्ष्मण को देखा। ९५४

पुऩ्शॊऱ् कडन्द पहुवा यरक्क ऩुरैपॊय् यॅनादु पुलर्वाळ्
वऩ्शॊऱ् कडन्दु मडमङ्गै येव निलैदेर वन्द मरुळो
तन्शॊऱ् कडन्दु तळर्हिऩ्ऱ नॆञ्ज मुडैयेन् मरुङ्गु तनियॆ
ॲऩ्शॊऱ् कडन्दु मनमुन् दळर्न्द विळवीरऩ् वन्द वियल्बे 955

पुल् चॊऱ्कळ् तन्त—(अर्थहीन) अल्प शब्दवाची; पकु वाय् अरक्कन्—खुले मुख के राक्षस के; उरै पॊय् ॲन्ऩातु—शब्द को असत्य न मानकर; पुलर्वाळ्—शोकतप्त

होकर; वन् चॊर्कळ् तनुतु–कठोर शब्द कहकर; मट मङ्कै एव–हठी बाला के भेजने से; तन् चॊल् कटन्तु–अपना वादा तोड़कर; तळर्किन्र्–शिथिल; नॆञ्चम् उटॆयेन् मरुङ्कु–मन के मेरे पास; ॲन् चॊल् कटन्तु–मेरी आज्ञा का भी उल्लंघन करके; इळ वीरन्–छोटे वीर का; तनिये वन्त इयल्पु–अकेले आने का कार्य; निलै तेर वन्त–मेरी स्थिति जानने के लिए आने का; मरुळो–मोह का काम है क्या। ६५५

उन्हें अनुमान हुआ कि अनर्थकारी शब्दवाची, खुले मुख के मारीच के शब्दों को सत्य मानकर हठीली सीतादेवी ने कठोर शब्द कहकर लक्ष्मण को जाने को मजबूर किया होगा ! फलस्वरूप लक्ष्मण अपनी स्थिर राय को भी ताक पर रखकर संकटग्रस्त मेरे समीप, मेरी भी आज्ञा का उल्लंघन करके मेरी हालत जानने के लिए आया है ! उसका आगमन क्या इसी भ्रम का फल है ? । ९५५

ॲन्रुन्नि यॆन्नै विदियार् मुडित्त दॆन्नॆण्णि निन्र् विरैयॆप्
पॊन्रुन्नु विर्कै यिळवीरन् वन्दु पुनैता ळिरैञ्जु पॊऴुदिन्
मिन्रुन्नु नूलिन् मणिमार् बळुन्द विरैवोडु पुल्लि युरुहा
निन्रुन्नि वन्द निलैयॆन्गॊ लॆन्रु नॆडियोन् विळम्ब नॊडिवान् 956

ॲन्रु उन्नि–ऐसा सोचकर; वितियार् मुटित्ततु ॲन्नै–विधिदेव ने क्या किया; ॲन्न ॲण्णि–ऐसा विचार कर; निन्र् इरैयै–स्तब्ध खड़े रहे (श्रीराम) प्रभु के; पॊन् तुन्नु–सौन्दर्य भरे; विल् कै–धनुर्हस्त; इळ वीरन् वन्तु–कनिष्ठ भ्राता ने आकर; पुनै ताळ् इरैञ्चु पॊऴुतिल्–सुन्दर चरणों पर नत (जब) हुए, तब; मिन् तुन्नु–बिजली जुड़ी हो, ऐसा; नूलिन् मणि मार्पु–उपवीत-सहित सुन्दर वक्ष को; अळुन्त–खूब दबाकर; विरैवु ओटु पुल्लि–सवेग आलिंगन करके; उरुका निन्रु–द्रवीभूत हो, खड़े रहकर; उन्नि वन्त निलै–सोचकर आने का हेतु; ॲन् कॊल्–कौन सा है; ॲन्रु–ऐसा; नॆटियोन् विळम्प–त्रिविक्रम ने पूछा तो; नॊटिवान्–(लक्ष्मण ने) कहा। ६५६

श्रीराम ऐसा सोचते हुए स्तब्ध खड़े के खड़े रह गये। विधिदेव के इस विधान का फल क्या होगा ? —इसकी उन्हें चिन्ता हुई। तब सुन्दर धनुर्धर लक्ष्मण ने पास आकर उनके चरणों पर नमस्कार किया। श्रीराम ने अपने विद्युत-सम उपवीत से अलंकृत अपने वक्ष के साथ उन्हें कसकर आलिंगन कर लिया। फिर अधीर होकर पूछा कि क्या सोचकर तुम इधर आये ? तब लक्ष्मण ने उत्तर दिया। ९५६

इल्ला निलत्ति नियैयाद वॆञ्जॊ लॆळ्वञ्जि यॆव्व मुरयान्
वल्वा यरक्क नुरैयाहु मॆन्न मदियाण् मरुक्क मुरुवाळ्
निल्लादु मर्रि दरिपोदि यॆन्न नॆडियोय् पुयत्तिन् वलियॆन्
शॊल्लान् मनत्ति नडैयाळ् शिनत्तिन् मुनिवोडु निन्रु तुवळ्वाळ् 957

निलत्तिल् इल्ला–अलौकिक; इयैयात–असम्बद्ध; वॆम् चॊल् ॲळ्–(दुहाई के)

उन भयंकर शब्दों के उठने पर; वञ्चि अॅव्वम् उऱ–लता-सी देवी ने दुःख पाया; यान्–मैने; वल् वाय् अरक्कन् उरै आकुम्–कठोर मुख के राक्षस का शब्द है; ॲन्ऩ–कहा, तब; मतियाळ्–न मानीं; मरुक्कम् उऱुवाळ्–घवड़ाती हुई; नॅटियोय् पुयत्तिन् वलि–श्रेष्ठ आपके भुजवल पर; ॲन्नु चॉल्लाल्–मेरे कहने पर भी; मत्तत्तिन् अटैयाळ्–विश्वास न करके; चित्तत्तिन् मुत्तिवु ओटु–क्रोध और खीझ के साथ; इतु अऱि–यह जान आओ; निल्लातु पोति–खड़े मत रहो, जाओ; ॲन्ऩ–कहकर; निन्ऱु तुवळ्वाळ्–खड़ी होकर मुरझायीं। ९५७

भाई ! जव वह अलौकिक और असम्वद्ध दिल दहलानेवाला शब्द उठा, तव देवी ने उसे सुना और गहरे दुःख से अभिभूत हुईं। मैंने कहा कि यह कठोर-मुख मारीच का शब्द है। पर वे नहीं मानीं। घवड़ा गयीं। मैंने त्रिविक्रम, आपके भुजवल की महिमा कही। तो भी वे आश्वस्त नहीं हुईं और उनका मन में धैर्य नहीं हुआ। कोप और खीझ के साथ उन्होंने कहा कि जाकर पता लगा लो। खड़े मत रहो। चलो जल्दी। यह कहकर वे खड़ी रहकर मुरझायीं। ९५७

एहातु निऱ्ऱि यॅन्निन्या नॅरुप्पि निडैवीऴ्वॅ ऩॅन्ऩु मुडुहा
माहान्न हत्ति न्निडैयोड लोडु मनन्नञ्जि वञ्जि विनैयेन्
पोहादु निऱ्कि लिऱवा दिरुक्कै पुणरा ळॅन्नक्कॉ डुणरा
आहादि रुक्कै यऱनन् ऱॅनक्कॉ डिवण्वन्द दॅन्ऩ वमलन् 958

एकातु निऱ्ऱि ॲनिल्–विना गये खड़े रहोगे तो; यान्–मैं; नॅरुप्पिन् इटै वीऴ्वॅन्–आग में कूद पड़ूँगी; ॲन्ऱु–कहकर; मुटुका–सत्वर; मा कानकत्तिन् इटै–वड़े जंगल में; ओटल् ओटुम्–दौड़ीं तो; मनन् अञ्चि–मन में डरकर; विन्नैयेन्–पापी मैं; पोकातु निऱ्किल्–(आपकी खोज में) गये विना खड़ा रहा तो; वञ्चि–लता (सी देवी); इऱवातु इरुक्कै–विना मरे जीवित रहना; पुणराळ्–न धरेंगी; ॲन्न कॉटु उणरा–ऐसा सोच-जानकर; इरुक्कै आकातु–यहाँ ठहरना उचित नहीं होगा; अऱन् अन्ऱु–धर्म भी नहीं होगा; ॲन कॉटु–ऐसा मानकर; इवण् वन्ततु ॲन्ऩ–यहाँ आया, कहा तो; अमलन्–निर्मल प्रभु। ९५८

फिर उन्होंने कहा कि विना गये खड़े रहोगे, तो मैं दावाग्नि में कूदकर मर जाऊँगी। यह कहकर वे सत्वर वन की अग्नि की तरफ़ दौड़ने लगीं। मेरे मन में भय समा गया। पापी मैं खड़ा रहता तो निश्चित था कि देवी मरे विना नहीं रहतीं। यह निश्चय जानकर और यह विचार कर कि वहाँ रहना उचित नहीं है, न वह धर्म ही, यहाँ आ गया। तव निर्मल श्रीराम (ने सोचा)। ९५८

शावा दिरुत्त लिलळान दुऱ्ऱ ददैयो तडक्क मुडिया
दावा वलक्क णुऱुवा ळुरैत्त पॊरुळो वहत्ति नडैयाळ्
कावा निलत्तिऩ् वरुमेद मऱ्ऱ दॊऴियादु कॅक्कॉ डहलप्
पोवार् पिरिक्क मुयल्वार् पुणर्त्त पॊरुळा मिदॅन्ऱु तॅरुळा 959

चावातु इरुत्तल् इलळ्–जीवित न रहेगी; आन्तु उऱ्ऱतु–ऐसी स्थिति हो गयी; अतैयो तटुक्क मुटियातु–उसको तो रोक नहीं सकते; आ आ–हाय, हाय; अलक्कण् उऱुवाळ्–बहुत दुःख पा गयीं; उरैत्त पॉरुळो–लक्ष्मण के कहने का तात्पर्य; अकत्तिन् अटैयाळ्–अपने मन में न धरा; कावान् निलत्तिन्–संरक्षणहीन उस स्थान पर; एतम् वरुम्–संकट होगा; अतु ऑळियातु–वह निवार्य नहीं; पिरिक्क मुयल्वार्–अलग करने के प्रयत्न में लगे हुए लोग; कै कॉट्टु–हथियाकर; अकल पोवार्–बहुत दूर चले जायँगे; पुणर्न्त पॉरुळ्–वंचकों का षड्यन्त्र; आम् इतु–होगा यही; ॲन्ऱु तॅरुळा–ऐसा बूझकर। ९५९

हाँ! सीता जीवित नहीं रहेगी, यह स्थिति आ गयी थी। उसको रोकना असम्भव था। हाय, हाय! वह बहुत दुःखी रहेगी। इसने जो कहा, उसका सत्य उसके मन में घर कर नहीं सका। अब वहाँ उसका संरक्षण कुछ नहीं है। इसलिए वहाँ कोई विपदा आये विना नहीं रहेगी। हमको अलग करना चाहते थे लोग। उनकी वंचना का कार्य है यह! यह उन्हें सूझ गया। ९५९

वन्दाय् तिऱत्ति नुळदन्ऱु कुऱ्ऱ मडवाण् मऱुक्क मुऱुवाळ्
चिन्दा कुलत्तॉ डुरैशॅय्द शॅय्है यदुतीदु मन्ऱु तॅळिवाय्
मुन्दे तडुक्क वॉळिया दॅडुत्त विनैयेन् मुडित्त मुडिवाल्
अन्दो कॆडुत्त दॆन्नवुन्नि वुन्नि यळियाद वुळ्ळ मळिया 960

वन्ताय् तिऱत्तिन्–आगत तुम्हारे पक्ष में; कुऱ्ऱम् उळतु अन्ऱु–अपराध नहीं है; मऱुक्कम् उऱुवाळ् मटवाळ्–(मृग-ग्रहण पर) आतुर रही उस हठीली का; चिन्ता-कुलत्तु ऑटु–आतुरता के साथ; उरै चॅय्त चॅय्कै इतु–वह (पकड़ देने का) वचन कहने का काम; तीतुम् अन्ऱु–बुरा भी नहीं था; तॅळिवाय्–असंदिग्ध रूप से; मुन्ते तटुक्क–तुमने मुझे रोका, तो भी; ऑळियातु–विना माने; ॲटुत्त विनैयेन्–उस कार्य पर प्रवृत्त पापी मेरे; मुटित्त मुटिवाल्–कृत कार्य से; अन्तो कॅटुत्ततु–हाय! उस काम ने मुझे नष्ट कर दिया; ॲन–ऐसा; उन्नि उन्नि–सोच-सोचकर; अळियात उळ्ळम्–अचंचल मन के; अळिया–अधीर होते। ९६०

तब उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि तुम आ गये। इसमें तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। हरिण के प्रति इच्छा से आकुल होकर हठीली उसने जो मुझसे कहा था, वह भी बुरी बात नहीं थी। तुमने तो पहले ही निश्चित रूप से जाना था कि वह मायामृग है! तुमने मुझे रोका भी। पर पापी मैंने उसको अनसुनी करके यह काम किया। उस मेरे कृत्य ने अब सारा काम नष्ट कर दिया है। श्रीराम ये बातें बार-बार सोचने लगे। उनका अचंचल मन भी अधीर हो गया। तब श्रीराम चिन्ताकुल होकर; । ९६०

पाणित्तु निन्ऱु पयनाव दॆन्नै पयिल्पूवै यन्न कुयिलैक्
काणिऱ् कलन्द तुयर्दीरु मन्ऱि ययलिल्लै यॆन्ऱु कडुहिच

चेणुऱ् ऱहन्ऱ नॅऱियूडु शॅन्ऱ शिलैवाळि यन्न विशैपोय्
आणिप् पशुम्बॊ नन्नैया ळिरुन्द वविर्शोलै वल्लै यणुहा 961

पाणित्तु निन्ऱु–विलम्ब करके खड़े रहने से; पयन् आवतु ॲन्ऩै–फल क्या होगा; पूवै अन्न पयिल्–सारिका-सी मधुरभाषिणी; कुयिलै–कोकिला (सीता) को; काणिल्–वहाँ देखेंगे तो; कलन्त तुयर् तीरुम्–हमें हुआ यह दुःख दूर होगा; अन्ऱि–नहीं तो; अयल् इल्लै–कोई दूसरा (उपाय) नहीं है; ॲन्ऱु–कहकर; कटुकि–जल्दी; चेण् उऱु अकन्ऱ–लम्बी दूर तक बढ़ते चलनेवाले; नॅऱि ऊटु–मार्ग में; चॅन्ऱ चिलै वाळि अन्न–भेजे हुए अपने शर के समान; विचै पोय्–वेग के साथ जाकर; आणि पचुम् पॊन्–खरे स्वर्ण; अन्नैयाळ्–सदृश देवी; इरुन्त–जहाँ रहीं, उस; अविर् चोलै–विद्यमान आश्रम को; वल्लै अणुका–शीघ्र पहुँचकर। ९६१

'इधर विलम्ब करने से क्या लाभ होगा ? हम वहाँ जाकर सारिका-सम मधुरभाषिणी कोकिला-सी सीताजी को देख लेंगे तो हम पर आयी यह विपदा टलेगी। उसके सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है।' —यह कहकर श्रीराम वेग के साथ आगे बढ़े। मार्ग लम्बा था, वढ़ता हुआ जाता था। वे सत्वर अपने ही प्रेरित शर के समान अतिवेग से गये और आश्रम मे आये, जहाँ चोखे स्वर्णवर्ण-सम सीताजी रही थीं। ९६१

ॐ ओडि वन्दनन् शालैयिन् शोलैयि नुदवुम्
तोडि वर्न्दपूम् जुरिहुळ लाडनैक् काणान्
कूडु तन्नुडै यदुपिरिन् दारुयिर् कुऱिया
नेडि वन्ददु कण्डिल दामॅन्न निन्ऱान् 962

ओटि वन्तनन्–जो भागते आये, वे; चालैयिन्–पर्णशाला में; चोलैयिन्–आश्रम के उद्यान से; उतवुम्–दत्त; तोटु इवरन्त–दल-संकुल; पूम्–पुष्पालंकृत; चुरि कुळलाळ् तन्नै–घुँघराले केश की सीता को; काणान्–न देखकर; तन्नुटैयतु कूटु पिरिन्तु–अपना शरीर छोड़ जाकर; कुऱिया–लौट आने पर; आर् उयिर्–श्रेष्ठ जीव; अतु कण्टिलतु आम् ॲन्न–उसको नहीं देखता हो जैसे; निन्ऱान्–ठिठके खड़े रहे। ९६२

वे सीताजी को देखने की आशा से ही आये। उनकी कल्पना थी कि उस आश्रम के बाग के फूलों से अपने घुँघराले केश को सजाकर सीताजी उनको मिल जायँगी। पर सुकेशिनी वहाँ नहीं दिखी। कोई जीव अपने शरीर को छोड़कर जाय और फिर लौट जाकर उसको वहाँ न पाए तो उसकी स्थिति कैसी होगी ? (श्रीराम प्राण से और सीताजी शरीर से उपमित हैं।) श्रीराम उसी स्थिति में ठिठके खड़े रहे, क्योंकि सीताजी पतिप्राणा थी। ९६२

कैत्त शिन्दैयन् कनङ्गुळै यणङ्गिनैक् काणान्
उय्त्तु वाळ्दर्कु वेऱोरु पॊरुळिल नुदव

वैत्त मानिदि मण्णोंडु मरैत्तन वाङ्गिप्
पोय्त्तु ळोर्हॊळत् तिहैत्तु निन्ऱानैयुम् पोन्ऱान् 963

कन्तङ्कुळै–भारी कुण्डलधारिणी; अणङ्किनै–देवी भगवती को; काणात्–न देखकर; कैत्त चिन्तैयन्–खीज-भरे मन के होकर; उतव–सहायतार्थ; मण्णोटु मरैत्तन वैत्त–धरती में छिपाकर रखा हुआ; मा निति–बड़ा (गुप्त) धन; पोय्त्तु उळोर् वाङ्कि–वंचक चोरों ने उठाकर; कोळ्–ले लिये हों और; तिकैत्तु–भ्रमित होकर; निन्ऱानैयुम्–जो खड़ा रहा; पोन्ऱान्–उसके समान हो गये। ६६३

जब श्रीराम ने सीताजी को वहाँ नहीं देखा, तो वे बहुत खिन्न हो गये। मौके पर काम आयगा, इस विचार से किसी ने धरती के अन्दर धन गाड़ रखा था। पर उस धन को वंचक चोर उठा ले गये, तो उस मनुष्य की दशा क्या होगी? श्रीराम उसके समान तरसते रह गये। ९६३

मण्शु ळन्ऱदु माल्वरै शुळन्ऱदु मदियोर्
ऍण्शु ळन्ऱदु शुळन्ऱदु वॆरिहड लेळुम्
विण्शु ळन्ऱदु वेदमुञ् जुळन्ऱदु विरिञ्जन्
कण्शु ळन्ऱदु शुळन्ऱदु कदिरोडु मदियुम् 964

मण् चुळन्ऱतु–धरती घूमी; माल् वरै चुळन्ऱतु–बड़े पर्वत घूमे; मतियोर् ऍण् चुळन्ऱतु–ज्ञानियों का विचार चक्रित हुआ; अ ऍऱि कटल् एळुम्–तरंगाकुल सातों समुद्र; चळन्ऱतु–घूमे; विण् चुळन्ऱतु–आकाश घूमा; वेतमुम् चुळन्ऱतु–वेद भी चलित हुए; विरिञ्चन्–विरंचि की; कण्–आठों आँखें; चुळन्ऱत–चक्रित हुईं; कतिर् ओटु मतियुम्–सूर्य के साथ चन्द्र भी; चुळन्ऱतु–घूमे। ६६४

जब विश्वात्मा का मन खिन्न हो गया, तो विश्व का क्या हाल हो? सब के सब विचलित हो गये। धरती घूमी; बड़े पर्वत घूम गये। ज्ञानियों के विचार चलित हो गये। सातों तरंगाकुल समुद्र घूमे (आलोडित हुए)। आकाश, वेद —सब विचलित हो गये। विरंचि की आठों आँखें घूमने लगीं। सूर्य और चन्द्र भी चक्रित हुए। ९६४

अऱत्तैच् चीऱुङ्गॊ लरुळैयै चीऱुङ्गॊ लमरर्
तिऱत्तैच् चीऱुङ्गॊन् मुनिवरैच् चीऱुङ्गॊ ऱीयोर्
मऱत्तैच् चीऱुङ्गॊ लॆल्लॆॊलो मुडिवॆन्ऱु मऱैयिन्
निऱत्तैच् चीऱुङ्गॊ नॆंडुन्दहै योनॆन नडुङ्ग 965

नॆंटुम् तकैयोन्–अत्युन्नत श्रेष्ठ प्रभु; अऱत्तै चीऱुम् कॊल्–धर्म पर कोप करेंगे; अरुळैये चीऱुम् कॊल्–करुणा पर ही खीझ उठेंगे; अमरर् तिऱत्तै–देवों के पराक्रम पर; चीऱुम् कॊल्–उबल पड़ेंगे; मुनिवरै चीऱुम् कॊल्–मुनिगण से गुस्सा करेंगे; तीयोर् मऱत्तैये–खलों की वीरता को; चीऱुम् कॊल्–ललकारेंगे; मऱैयिन् निऱत्तैयो–वेदों के प्रकारों से; चीऱुम् कॊल्–क्रोध करेंगे; ऍन्न–सोचकर; ऍन्न् कॊल् ओ मुटिवु–क्या ही होगा फल; ऍन्ऱु–सोचकर डरते हुए; नटुङ्क–डरते। ६६५

यह स्थिति देखकर सबके मन में अपार भय हो गया। ये सर्वोन्नत श्रेष्ठ श्रीराम अब किस पर अपना कोप उतारेंगे ? धर्म पर, दया ही पर, या देवों के पराक्रम पर ? तपस्वी मुनियों पर उबल पड़ेंगे या खलों की वीरता को ललकारेंगे ? या वेदों के प्रकारों से ही अपनी खीझ दिखाने वाले हैं ? इनके क्रोध का नतीजा क्या होगा ? इस तरह डरकर, । ९६५

नील मेऩियऩ् नॆडियवऩ् मऩ्ऩिलै तिरिय
मूल कारणत् तवऩोडु मुलहॆला मुऱ्ऱुम्
काल मामॆनक् कडैयिडु कणिक्करुम् बॊरुळ्हळ्
मेल कीऴुऱ कीऴऩ मेलुऱुम् वेलै 966

नील मेऩि–नीले रंग के; अ नॆटियवऩ्–उन पुरुषोत्तम का; मऩ निलै तिरिय–मन की स्थिति बदल गयी, तब; मूल कारणत्तु अवऩ् ऑटु–(सृष्टि के) मूल कारण ब्रह्माजी के साथ; उलकॆलाम्–सभी विश्वों के; मुऱ्ऱुम् कालम् आम् अॆऩ–समाप्त हो जाने का काल आ गया-सा; कटै इटु कणिक्क अरुम्–इतना है ऐसा जिनकी गणना नहीं हो सकती; पॊरुळ्कळ्–वे सभी पदार्थ; मेल कीऴ् उऱ–ऊपर के नीचे हुए; कीऴऩ मेल् उऱुम्–नीचे के ऊपर हुए; वेलै–उस समय। ९६६

नीले वर्ण के पुरुषोत्तम श्रीराम का मन क्रोध से विकार पा गया था। तब ब्रह्माजी से लेकर सारे विश्व के नाश हो जाने का प्रलयकाल आ गया हो, ऐसा विश्व के असंख्य पदार्थ अस्त-व्यस्त हो गये। ऊपर के पदार्थ नीचे आ गये और नीचे के ऊपर चले गये। तब । ९६६

तेरि नाऴियुम् दॆरिन्दऩम् दीण्डुद लञ्जिप्
पारि नोडुङ्गॊण् डहऩ्ऱदुम् बार्त्तऩम् बयऩिऩ्
ऱोरुम् दऩ्मैयी दॆऩ्ऩॆऩ्ऩ दुरऩिला दवर्पोल्
दूरम् बोवदऩ्मुऩ् ऱॊडर्दुमॆऩ् ऱिळैयवऩ् शॊऩ्ऩाऩ् 967

इळैयवऩ्–अनुज ने; तेरिऩ् आऴियुम्–रथ का चक्र(-चिह्न) तॆरिन्तऩम्–देखते हैं; तीण्टुतल् अञ्चि–(देवी का शरीर) स्पर्श करने से डरकर; पारिऩ् ओटु–भूमि (के अंश) के साथ; कॊण्टु अकऩ्ऱतुम्–ले जाना भी; पार्त्तोम्–समझा; उरऩ् इलातवर् पोल्–निर्बलों के समान; पयऩ् इऩ्ऱि–बिना किसी लाभ के; ओरुम् तऩ्मै ईतु–सोचता रहना, यह; अॆऩ् अॆऩ्पतु–क्या कहा जाय; तूरम् पोवतऩ् मुऩ्–बहुत दूर जाने से पहले; तॊटर्तुम्–अनुगमन करेंगे; अॆऩ्ऱु–ऐसा; चॊऩ्ऩाऩ्–बोला। ९६७

अनुज लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया कि भाई ! इधर रथ के पहियों के चिह्न देखते है। यह भी देखते हैं कि शत्रु, देवी के शरीर का स्पर्श करने से डरकर भूमि के अंश के साथ लेके गया है। फिर हम निर्बलों के समान यहाँ खड़े रहकर सोचते रहें, यह क्या है ? उसके बहुत दूर जाने के पहले ही हम उसका अनुगमन करते हुए चलें। ९६७

आम	दैयिनि	यावदॅन्	ऱमलनु	समैयत्
ताम	वारहणैप्	पुट्टिलु	मुदलिय	ताङ्गि
वाम	मालवरै	मरनिवै	मडिदर	वयवर्
वूमि	मेलवन्	ऱेर्शॅन्ऱ	नॅडुनॅरिप्	पोनार् 968

अमलनुम्–पवित्र प्रभु; आम्–हाँ; अते इनि आवतु–वही अब करना है; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; अमैय–उसके अनुसार; वयवर् ताम्–विजयशील (दोनों); वार् कणै पुट्टिलुम्–शरों के तूणीर; मुतलिय ताङ्कि–आदि धारण कर; वाम माल् वरै–मनोरम और बड़े-बड़े पर्वतों और; मरन् इवै–पेड़ों आदि को; मटि तर–तोड़ते हुए; पूमि मेल्–भूमि पर; अवन् तेर् चॅन्ऱ–उसका रथ जहाँ गया था; नॅटु नॅरि पोनार्–लम्बे मार्ग में गये। ९६८

निरंजन भगवान ने स्वीकारा कि हाँ ! वही अब करना है। फिर विजयशील दोनों उसी सुझाव के अनुसार तूणीर आदि लिये हुए उस लम्बे मार्ग पर चले, जिसमें रथ उन्नत पर्वतों और तरुओं को तोड़ गिराता हुआ चला था। ९६८

मण्णिन्	मेलवन्	तेर्शॅन्ऱ	शुवडॅला	मायन्दु
विण्णि	नोङ्गिय	दॉरुनिलै	मॅय्युरु	वॅन्द
पुण्णि	नूडुरु	वेलॅन्न	मनमिहप्	पुळुङ्गि
ऍण्णि	नामिनिच्	चॅय्वदॅन्	निळवले	यॅन्ऱान् 969

अवन् तेर्–उसका रथ; मण्णिन् मेल् चॅन्ऱ–धरती पर जो गया था; चुवटु ऍलाम् मायन्तु–वह चिह्न सब लुप्त हो गया; विण्णिन् ओङ्कियतु–अन्तरिक्ष में उठने का; ऑरु निलै–एक भान; मॅय् उऱ–सत्य लगा तो; वॅन्त पुण्णिन् ऊटु–आग से हुए व्रण में; उऱु वेल् ऍन्न–भाला घुसा हो, ऐसा; मनम् मिक पुळुङ्कि–मन में अत्यधिक क्लेश लेकर; इळवले–लघु भाई; नाम् इनि ऍण्णि चॅय्वतु–हम सोचकर करें; ऍन्–क्या; ऍन्ऱान्–पूछा। ९६९

जाते-जाते उन्होंने देखा कि रथचक्र के चिह्न नहीं रह गये हैं। और ऐसा लग रहा था कि रथ ऊपर अन्तरिक्ष में उठा था। तब श्रीराम का मन ऐसा दुःख पाने लगा, मानो अग्निजनित व्रण में भाला घुस गया हो। बहुत क्लेश पाकर उन्होंने अपने भाई से पूछा कि अनुज ! अब सोचकर हम क्या काम करें ? । ९६९

तॅऱ्कु	नोक्किय	दॅनुम्बॉरु	डॅरिन्दत्	तिण्डेर्
मऱ्कु	नोक्किय	तिरळ्पुयत्	तण्णले	वानुम्
विऱ्कु	नोक्किय	पहळियि	नॅडिदनुऱु	विम्मि
निऱ्कु	नोक्किलॅन्	पयनॅन्न	विळैयव	नेरन्दान् 970

इळैयवन्–अनुज ने; मऱ्कु नोक्किय–मल्लाभिलाषी; तिरळ् पुयत्तु–पुष्ट कन्धों के; अण्णले–प्रभु; अ तिण् तेर्–वह वलवान रथ; तॅऱ्कु नोक्कियतु–दक्षिण की

तरफ़ गया है; ॲंतुम् पॊरुळ्–यह विषय; तॆरिन्ततु–जानने में आया है; वानुम्–अन्तरिक्ष भी; विऱ्कु नोक्किय–आपके धनुष से प्रेरित; पकऴियिऩ् नॆट्टितु अऩ्ऱु–शर के जाने की दूरी से अधिक नही है; विम्मि निऱ्कु नोक्किल्–तरस के साथ खड़े रहकर देखते रहने से; ॲंऩ् पयऩ्–क्या लाभ हैं; ॲंऩ्–ऐसा; नेर्न्ताऩ्–उत्तर दिया। ९७०

लक्ष्मण ने उत्तर में कहा कि मल्लाभिलाषी कन्धों से युक्त महानुभाव ! हमने यह जान लिया कि वह भारी रथ दक्षिण की ओर गया है। आकाश में ही गया हो तो क्या ? आपका शर न पहुँचे, उतनी दूर का तो नही है आकाश ! तरसते हुए निष्क्रिय रह जाने से क्या लाभ होगा ? । ९७०

आहु मऩ्ऩदे करुममॆंऩ् ऱत्तिशै नोक्कि
एहि योशनै यिरण्डुशॆंऩ् ऱारिडै यॆंदिर्न्दार्
माह माल्वरै काल्पॊर मऱिन्ददु मानप्
पाह वीणैयिऩ् कॊडियॊऩ्ऱु किडन्ददु पार्मेल् 971

अऩ्तते करुमम् आकुम्–वही करना होगा; ॲंऩ्ऱु–यह सोचकर; अ तिचै नोक्कि एकि–उस दक्षिण दिशा में जाकर; योचनै इरण्टु चॆऩ्ऱार्–दो योजन चले; इटै–मार्ग में; माक माल् वरै–गगनोन्नत वड़ा पर्वत; काल् पॊर–प्रभंजन से प्रताड़ित हो; मऱिन्ततु मान–नीचे गिर गया हो जैसे; पाक वीणैयिऩ्–टूटी वीणा की; कॊटि ऑऩ्ऱु–एक ध्वजा; पार् मेल् किटन्ततु–भूमि पर पड़ी रही; ॲंतिर्न्तार्–सामने देखा। ९७१

श्रीराम ने लक्ष्मण का आशय समझा। कहा कि चलो वही करना है। वे दोनों दक्षिण में दो योजन दूर चले। मार्ग मे उन्हें वीणांकित एक ध्वजा का अंश भूमि पर पड़ा दिखाई दिया। वह ऐसा लगा, मानो एक पर्वत ही आँधी के सामने टूटकर गिरा हो। ९७१

कण्डु कण्डह रोडुमक् कारिहै पॊरुट्टाल्
अण्ड रादियर् कारमर् विळैत्तदॆंन् ऱयिर्त्ताऩ्
तुण्ड वाळिनिऱ् चुडर्क्कॊडि तुणिन्द दॆंऩ्ऱुणराप्
पुण्ड रिहक्कण् णमलनुक् किळैयवन् पुहऩ्ऱाऩ् 972

कण्टु–देखकर; अ कारिकै पॊरुट्टाल्–उन देवी (को बचाने) के हेतु; कण्टकरोटु–उन खलों के साथ; अण्टर् आतियर्क्कु–देवों आदि लोगों को; आर् अमर् विळैन्ततु–कठोर युद्ध करना पड़ गया है; ॲंऩ्ऱु–ऐसा; अयिर्त्ताऩ्–(श्रीराम ने) संशय किया; इळैयवऩ्–अनुज ने; तुण्ट वाळिऩिल्–(जटायु की) चोंच रूपी तलवार से; चुटर् कॊटि–उज्ज्वल ध्वजा; तुणिन्ततु–कटी; ॲंऩ्ऱु उणरा–ऐसा ताड़कर; पुण्टरिक कण् अमलनुक्कु–पुण्डरीकाक्ष निर्मल प्रभु को; पुकऩ्ऱाऩ्–समझाया। ९७२

वह देखकर श्रीराम को संशय हुआ कि देवों ने सीताजी को बचाने के लिए वड़ा युद्ध किया होगा। पर लक्ष्मण को सूझा कि जटायु की

चोंच से ही शत्रु की ध्वजा खण्डित हुई है। तब वे पुण्डरीकाक्ष निरंजन श्रीराम से बोले। ९७२

नोक्कि ऩालैय नॉय्दिव णॅय्दिय नुन्दै
मूक्कि ऩालिडु मुऱिन्दमै मुडिन्दाऩ् मॉय्म्बिऩ्
ताक्कि ऩाऩडु वडुत्तदु तॅरिहिलन् दमियन्
याक्कै तेम्बिडु मॅण्णरुम् बरुवङ्ग ळिऱन्दाऩ् 973

ऐय–महिमावान; नोक्कित्ताल्–(विचार कर) देखें तो; इवण् नॉय्तु ॲय्तिय–यहाँ शीघ्र जो आये, वे; नुन्तै–आपके पिता (तुल्य जटायु); मूक्कित्ताल्–(की) चोंच से; इतु मुऱिन्तमै–इसका टूटना; मुटिन्ततु–निश्चित है; मॉय्म्पिऩ्–पूरा बल लगाकर; ताक्कित्ताऩ्–(जटायु) भिड़े हैं; नटु अटुत्ततु–मध्य में क्या हुआ, यह; तॅरिकिलम्–नहीं जानते; ॲण् अरुम्–असंख्यक; परुवङ्कळ्–वर्षों का काल; इऱन्ताऩ्–जिनका बीता है, उन; तमियऩ्–एकाकी का; याक्कै–शरीर; तेम्पिटुम्–थका पड़ा होगा। ९७३

महानुभाव! खूब ध्यान लगाकर सोचें तो मालूम होगा कि यहाँ जटायु तुरत आ गये थे और आपके पिता (तुल्य) उनकी चोंच से यह ध्वजा टूटी थी। यह निश्चित है। जटायु अपने पूरे बल के साथ उससे भिड़े होंगे। बीच में क्या हुआ, हम यह जान नहीं पाते। हाँ! जटायु वयोवृद्ध है। एकाकी लड़े थे। इसलिए उनका शरीर थक गया होगा। ९७३

नऩ्ऱु शालवु नडुक्करु मिडुक्किऩा मुऩ्ऩम्
शॅऩ्ऱु कूडलाम् बॊऴुदॅलाऩ् दडुप्पदु तिडऩाल्
वॅऩ्ऱु मीट्किनु मीट्कुमाल् वेऱुऱ वॅण्णि
निऩ्ऱु ताऴ्त्तॊरु पयऩिलै यॅऩ्ऱलु नॅडियोऩ् 974

चालवुम् नऩ्ऱु–बहुत अच्छा; नाम् नटुक्करुम् मिटुक्किऩ्–हम अप्रतिहत वेग के साथ; मुऩ्ऩम् चॅऩ्ऱु–आगे जाकर; कूटलाम्–उनसे मिलेंगे; पॊऴुतु ॲलाम्–आज सारा दिन; तटुप्पतु–जटायु का शत्रु को रोके रखना; तिटऩ्–निश्चय है; वॅऩ्ऱु–जीतकर; मीट्कितुम् मीट्कुम्–लौटायें भी, यह सम्भव है; वेऱु उऱ ॲण्णि–अन्य बातें सोचते हुए; निऩ्ऱु ताऴ्त्तु–रहकर विलम्ब करने से; ऑरु पयऩ् इलै–कोई लाभ नहीं है; ॲऩ्ऱलुम्–(लक्ष्मण के) कहने पर; नॅटियोऩ्–पुरुषोत्तम। ९७४

वह भी बहुत अच्छा हुआ। हम अप्रतिहत वेग के साथ आगे बढ़ें। हम जटायु को मिल सकेंगे। यह सम्भव है कि जटायु आज दिन भर शत्रु को रोक रखेंगे। शायद वे शत्रु को जीतकर देवी को बचा भी सकते हैं। अन्य बातें सोचते हुए यहाँ विलम्ब करने से कोई लाभ न होने का। —लक्ष्मण ने कहा। तब पुरुषोत्तम—। ९७४

तॊडर्व देनल् मामॆनप् पडिमिशैच् चुऱ्ऱिप्
पडरुङ् गालॆनक् करङ्गॆनच् चॆल्बवर् पारिऩ्
मिडल्हॊळ् वॆञ्जिलै विण्णिडु विऩ्मुऱिन् दॆऩ्नक्
कडलिन् माडुयर् तिरैयॆऩक् किडन्ददु कण्डार् 975

तॊटर्वतु ए–पीछा करते जाना ही; नलम् आम् ऎऩ–भला है, कहने पर; पटि मिचै–भूमि पर; चुऱ्ऱि पटरुम् काल्–घूमती हुई जानेवाली हवा; ऎऩ–के समान; करङ्कु ऎऩ–वातचक्र के समान; चॆल्पवर्–जो गये; विण् इटु विल्–आकाश का इन्द्रधनुष; मुऱिन्तु अऩ्ऩ–टूटा पड़ा हो जैसा; कटल् माटु–समुद्र में; उयर् तिरै–उठनेवाली लहर; ऎऩ–के समान; तरैयिल्–पृथ्वी पर; मिटल् कॊळ् वॆम् चिलै–बड़ा भारी भयंकर धनु; किटन्ततु–पड़ा रहा; कण्टार्–देखा। ६७५

बोले— हाँ ! आगे अनुगमन में जाना ही भला है। दोनों वायुवेग और (पतंग ?) वातचक्र के वेग के साथ आगे गये। तब उन्होंने एक भारी भयंकर धनुष को पड़ा देखा, जो टूटे इन्द्रधनुष के समान या समुद्र में उठती ऊँची लहर के समान था। ९७५

शिलैहि डन्ददा लिलक्कुव तेवर्नीर् कडैन्द
मलैहि डन्दऩ्ऩ वलियदु वडिविऩाऩ् मदियॆण्
कलैहि डन्दन काट्चिय दिदुकडित् तॊडित्ताऩ्
निलैहि डन्दवा नोक्कॆन नोक्किन निऩ्ऱाऩ् 976

इलक्कुव–लक्ष्मण; किटन्ततु चिलै–जो पड़ा रहता है, यह धनुष; तेवर् नीर् कटैन्त मलै–देवों ने जिससे समुद्र-मन्थन किया, उस पर्वत; ऎऩ–के समान; वलियतु–कठोर है; वटिविऩाल्–आकार में; मति ऎण् कलै–चन्द्र की आठवें दिन की कला; किटन्तु अऩ्ऩ–पड़ी रही जैसे; काट्चियतु–दृश्यमान है; इतु कटितु ऒटित्ताऩ्–इसको जिसने शीघ्र तोड़ा है; निलै किटन्तवा–उसकी शक्ति का प्रकार; नोक्कु ऎऩ–अनुमान करो, कहकर; नोक्किऩऩ्–धनु को देखते हुए; निऩ्ऱाऩ्–(श्रीराम) खड़े रहे। ६७६

उसको देखकर श्रीराम ने कहा कि यह देखो। कितना भारी और सुदृढ़ है ! देवों ने समुद्र-मन्थन के लिए जिस पर्वत का उपयोग किया था, उसी के समान यह बलवान है। इसका आकार आठवें दिन के चन्द्र के समान है। इसको जिसने तोड़ा होगा, उसका शौर्य कितना होगा ? अनुमान कर लो। यह कहकर श्रीराम उसको विस्मय के साथ देखते खड़े रहे। ९७६

निऩ्ऱु पिऩ्ऩरु नॆडुनॆऱि कडन्दुऱ निमिरच्
चॆऩ्ऱु नोक्किनर् तिरिशिहैक् कॊडुनॆडुञ् जूलम्
ऒऩ्ऱुम् पल्हणै मऴैयुऱै पुट्टिलो रिरण्डुम्
कुऩ्ऱु पोलवण् किडन्दहण् डदिशयङ् गॊण्डार् 977

निन्ऱु–वहाँ स्थित होकर; पिन्नरुम्–(चले) फिर भी; नॅट्टु नॅऱि कटन्तु–लम्बा मार्ग तय करके; उऱ निमिर चॅन्ऱु–बिल्कुल सीधे जाकर; तिरि चिकै कॉट्टु–तीन सिरों का; नॅट्टुम् चूलम् ऑन्ऱुम्–एक लम्बा शूल और; पल् कणै मळै उऱै–अनेक शरों के समूह जिनमें थे; पुट्टिल् ओर् इरण्टुम्–दो तूणीरों को; कुन्ऱु पोल्–पर्वतों के समान; अवण् किटन्त–वहाँ पड़ा हुआ; नोक्किनर्–देखा; कण्टु–देखकर; अतिचयम् कॉण्टार्–विस्मित हुए। ६७७

फिर वहाँ से वे चले। सीधे मार्ग में बहुत दूर चले। वहाँ एक लम्वा और भयंकर त्रिशूल और दो बहुत अस्त्रों से भरे तूणीर पड़े मिले। पर्वतों के समान उनको देखकर उन्हें अधिक विस्मय हुआ। ९७७

मऱित्तुम् जॅन्ऱनर् वानिडै वयङ्गुऱ वळङ्गि
ऑरिक्कुन् जोदिहळ् यावैयुन् दॉक्कन्न वॅन्नलाय्
नॅरिक्कॉळ् कान्नह मऱैदर निरुदर्हो नॅञ्जिल्
परित्तु वीशिय कवशमुङ् गिडन्ददु पार्त्तार् 978

मरित्तुम् चॅन्ऱनर्–आगे और भी गये; वान् इटै–आकाश में; वयङ्कु उऱ–शोभा प्रकट करते हुए; वळङ्कि–देकर; ऑरिक्कुम्–उससे प्रकाश छिटकाते हुए; चोतिकळ् यावैयुम्–सभी ज्योतिपुंजों का; तॉक्कन्न ॲन्नल् आय्–समूह बना हो, ऐसा; निरुतर् कोन् नॅञ्चिल्–राक्षसाधिप के वक्ष से; परित्तु वीचिय–छीनकर जो फेंका गया था; कवचमुम्–उस कवच को; नॅरि कॉळ् कान्नकम्–मार्ग के जंगल को; मऱैतर–छिपाते हुए; किटन्ततु–पड़ा हुआ; पार्त्तार्–देखा। ६७८

फिर वे आगे चले। वहाँ रावण का कवच पड़ा मिला, जिसको जटायु ने राक्षसाधिपति रावण के वक्ष से छीनकर फेंका था। वह चन्द्र-सूर्य आदि सभी ज्योतिपुंजों के समूह के समान पड़ा था, जो आकाश को भी उज्ज्वलता प्रदान कर स्वयं प्रकाशमान रहते है। वह मार्ग के सामने के वन को छिपाये हुए पड़ा था। ९७८

कान्गि डन्ददु मऱैदरक् काल्वयक् कलिमात्
तान्गि डन्दुळिच् चारदि किडन्दुळिच् चार्न्दार्
ऊन्गि डन्दॉळि रुदिरमुङ् गिडन्दुळ दुलहिन्
वान्गि डन्ददु पोल्वदु किडन्दुळि वन्दार् 979

काल् वय कलि मा–पैरों में बल और तेजी रखनेवाले अश्व; कान् मऱै तर–जंगल को छिपाते हुए; किटन्ततु–(मरे) पड़े रहे; किटन्तुळि–जहाँ पड़े रहे, उस स्थान को; चारति किटन्तुळि–और सारथी जहाँ (मरा) पड़ा रहा, वह स्थान; चार्न्तार्–गये; उलकिन्–इस पृथ्वी पर; वान् किटन्तत पोल्–व्योम पड़ा रहा हो, ऐसा; ऊन् किटन्तु–मांसखण्ड बिखरे रहे; ऑळिर् उतिरमुम् किटन्तुळ–चमकीला रक्त भी छितरा रहा; किटन्तुळि–जहाँ वह पड़ा रहा, वहाँ; वन्तार्–वे आये। ६७९

वे फिर उस स्थान पर आये, जहाँ रावण के अश्वों की लाशें पड़ी

थीं। रावण के अश्व ऐसे थे, जिनके पैरों में अपार बल था और अति तीव्र गति भी। आगे सारथी जहाँ मरा पड़ा था, वहाँ आये। फिर उस स्थान पर आये जहाँ रक्त और मासखण्ड छितरे पड़े थे, जिसके कारण अरण्य भी आकाश-सा दिख रहा था। ९७९

कण्ड लङ्गुदङ् गैत्तलम् विदिर्त्तनर् कविन्नार्
विण्ड लन्दुरन् दिरुदियिन् विरिहदिर्प् परुदि
मण्ड लम्बल मण्मिशैक् किडन्दॅन्न मणियिन्
कुण्ड लम्बल कुलमणिप् पूण्गळिन् कुप्पै 980

इरुतियिन्–कल्पान्त में; विरि कतिर् पल–व्यापक किरणों के अनेक; परुति मण्टलम्–सूर्यमण्डल; कविन् आर्–सौंदर्य भरे; विण् तलम् तुरन्तु–व्योम को छोड़कर; मण् इटै किटन्तु अॅन्न–भूमि पर गिरे पड़े हों, ऐसा; कुण्टलम् पल–अनेक कुण्डलों और; कुल मणि पूण्कळिन् कुप्पै–श्रेष्ठ रत्नाभरणों के समूहों को; कण्टु–देखकर; अलङ्कु तम् कै तलम्–(उन्होंने) अपने आकर्षक हाथों को; वितिर्त्तनर्–आश्चर्य से झटकाया। ९८०

एक स्थान पर अनेक कुण्डल पड़े मिले। वे कल्पान्तकाल के सूर्यमण्डलों के समान लगे, जो आकाश छोड़कर भूमि पर गिरे पड़े हों। अनेक श्रेष्ठ रत्नाभरणों के ढेर भी दिखाई दिये। इन सबको देखकर उन दोनों ने अपने मनोहर हाथों को झटकारा (आश्चर्य के प्रदर्शन में)। ९८०

तोळ णिक्कुलम् बलवुळ कुण्डलत् तॊहुदि
वाळि मैप्पन पलवुळ मणिमुडि पलवाल्
नाळ नैत्तयुङ् गडन्दनन् रुमियनन् दादै
आळि यॊप्पवर् पलरुळर् पॊरुदन रिळैयोय् 981

इळैयोय्–लघु भाई; तोळ् अणि कुलम् पल उळ–कन्धों के आभरण-समूह अनेक है; वाळ् इमैप्पन–प्रकाशमय; कुण्टल तॊकुति–कुण्डलवृन्द; पल उळ–अनेक हैं; मणि मुटि पल आल्–रत्नकिरीट अनेक हैं, इसलिए; नाळ् अत्तैयुम् कटन्तनन्–अनेक आयु के दिन जिनके बीते हैं, वे; नम् तातै तमियन्–हमारे पिता एक रहे; पॊरुततर्–और उनसे लड़नेवाले; आळि मॊय्म्पितर्–शरभ-बली; पलर् उळर्–अनेक रहे हैं। ९८१

श्रीराम ने अपने कनिष्ठ भ्राता से कहा कि भाई! भुजाओं के आभरणों के अनेक समूह दिखाई देते हैं। उज्ज्वल अनेक कुण्डलवृन्द देखते हैं। रत्नकिरीट भी अनेक मिलते है। इसलिए ऐसा लगता है कि वयोवृद्ध हमारे पिता एकाकी थे और उनसे जो लड़े, वे शरभ-सदृश बलशाली अनेक रहे होंगे। ९८१

तिरुवि नायह नुरैशॅयच् चुमित्तिरैच् चिङ्गम्
तरुवि नॊळिय तोळ्पल तलैपल वॅन्राल्

पॊरुदु तादैयै यित्तनै नॆऱ्ऱिक्कॊडु पोनान्
ऒरुव नेयव निरावण नामॆन वुरैत्तान् 982

तिरुविन् नायकन्–लक्ष्मीपति के; उरै चॆय–वह कहने पर; चुमित्तिरै चिङ्कम्–सुमित्रा के पुत्र सिंह (सदृश लक्ष्मण); तरुविन् नीळिय–तरु के समान लम्बे; तोळ् पल–भुजाएँ अनेक हैं; तलै पल–सिर अनेक हैं; ऍन्ऱाल्–तो; तातैयै इत्तनै पॊरुतु–पिता के साथ इतना टकराकर; नॆऱ्ऱि कॊटु पोतान्–अपने मार्ग पर जो गया; ऒरुवने–वह वही एक है; अवन् इरावणन् आम्–वह रावण ही होगा; ऍन–ऐसा; उरैत्तान्–कहा। ९८२

जब लक्ष्मीपति ने यह कहा, तब सुमित्रा-सुत सिंह-सदृश लक्ष्मण ने कहा कि प्रभु ! पेड़ के समान लम्बी भुजाएँ अनेक दिखती हैं। सिर भी अनेक दिखाई देते हैं। तो हमारे पिता से जो लड़कर अपने मार्ग पर गया है, वह एक ही हो सकता है। वह रावण ही होगा। ९८२

❀ मडलु णाट्टिय तारिळै योन्शॊलै मदिया
मिडलु णाट्टङ्ग डीयुह नोक्किनन् विरैवान्
उडलु णाट्टिय कुरुदियम् बरवैयि नुम्बर्क्
कडलु णाट्टिय मलैयनन् तादैयैक् कण्डान् 983

मटल् उळ् नाट्टिय–पुष्पदलों को अन्दर रखकर गूँथी हुई; तार्–मालाधारी; इळैयोन्–अनुज लक्ष्मण के; चॊलै–शब्द को; मतिया–मानकर; मिटल् उळ्–सुदृढ़ मन; नाट्टङ्कळ्–और आँखों से; ती उक–आग उगलते हुए; नोक्कितन् विरैवान्–अन्वेषण करते हुए गये; उटल् उळ् नाट्टिय–शरीर को अन्दर रखते हुए; कुरुति परवैयिन्–रक्त के सागर में; कटल् उळ् नाट्टिय वरै ऍन–समुद्र में गाड़े पर्वत के समान; तातैयै–पिता को; कण्टान्–देखा। ९८३

पुष्पदलबद्ध मालाधारी लक्ष्मण का कथन श्रीराम को मान्य लगा। तब उनको अपार क्रोध हुआ। उनके मन में मानो आग भर गयी और आँखों ने आग उगली। वे अन्वेषण करते हुए आगे चले और एक स्थान पर रक्त-सागर-मध्य, क्षीरसागर-मध्य स्थित मेरुपर्वत के समान जटायु के शरीर को उन्होंने देखा। ९८३

❀ तुळळि योङ्गुशॆन् दामरै नयनङ्गळ् शॊरियत्
तळळि योङ्गिय वमलनुन् ऱनियुयिर्त् तादै
वळळि योन्ऱिरु मेनियिन् ऱळनिऱ वण्णन्
वॆळळि योङ्गलि लज्जन मलैयॆन वीळन्दान् 984

ओङ्कु चॆम् तामरै नयनङ्कळ्–उत्कृष्ट लाल कमल-सम नयनों से; तुळळि चॊरिय तळळि–आँसू की बूँदें ढलकाते हुए; ओङ्किय अमलन्–दुःख में बढ़े हुए निरंजन भगवान श्रीराम; तन् तनि उयिर् तातै–अपने प्राण-सम पिता; वळळियोन्–और उदार जटायु के; तिरु मेनियिन्–श्रीशरीर पर; तळल् निऱ वण्णन्–अग्निवर्ण (शिवजी) के;

वॆळ्ळि ओङ्कलिल्–चाँदी के कैलास पर्वत पर; **अञ्चत्त मलै ॲंत**–अंजनगिरि के समान; **वीऴ्न्तान्**–जा गिरे। ६८४

उनको देखकर श्रीराम की श्रेष्ठ कमल-सम आँखों से अश्रु के कण ढलक आये। दु:ख से अभिभूत होकर अकलुष श्रीराम अपने प्राणप्रिय और उदारमन जटायु के श्रीशरीर पर ऐसे गिरे, जैसे अग्निवर्ण शिवजी के चाँदी के कैलास पर्वत पर कोई अंजन-पर्वत गिरा हो। ९८४

❀ उयिर्त्ति लन्नॊरु नाऴिहै युणर्विलन् कॊल्लॆन्
उयिर्त्त तम्बिपुक् कङ्गैयि नॆंडुत्तन नरुविप्
पुयऱ्क लन्दनीर् तॆळित्तलुम् पुण्डरी हक्कण्
पॆयर्त्तुप् पयप्पय वयर्वुतीर्न् दिन्नैयन पेशुम् 985

ऒरु नाऴिकै उयिर्त्तिलन्–एक घड़ी (उन्होंने) साँस नहीं छोड़ी; **उणर्वु इलन् कॊल्**–क्या मूर्च्छित हैं; **ॲन्ऱु अयिर्त्त तम्पि**–ऐसा सन्देह करके लघु भ्राता ने; **पुक्कु अम् कैयिन् ॲंडुत्तनन्**–पास जाकर अपने हाथों में उठा लिया; **पुयल् अरुवि कलन्त**–मेघ और सरिता के मिश्रित; **नीर् तॆळित्तलुम्**–जल को छिड़कने पर; **पुण्टरीक कण् पॆयर्त्तु**–कमल-सम आँखों को खोलकर; **पय पय**–धीरे-धीरे; **अयर्वु तीर्न्तु**–स्वस्थ होकर; **इन्नैयन पेचुम्**–यों बोले (श्रीराम)। ६८५

एक घड़ी उन्होंने साँसें नहीं छोड़ीं। लक्ष्मण को शंका हो गयी कि क्या भाई मूर्च्छित हो गये है ? उन्होने पास जाकर श्रीराम को अपने सुन्दर हाथों में लेकर उठाया। वर्षाजल और सरिता का जल दोनों का मिश्रित जल लाकर उनके मुख पर छिड़का। तव श्रीराम ने पुण्डरीक-सम नेत्र को खोलकर धीरे से (निम्नोक्त) वातें कहीं। ९८५

❀ तन्दादैयरैत् तनयर् कॊलै नेर्न्दार्
मुन्दारे युळ्ळार् मुडिन्दान् मुन्नैयॊरुवन्
ॲन्दाये वॆंऱ्काह नीयु मिऱन्दनैयो
अन्दो विनैये नरुङ्गूऱ्ऱ मानेने 986

तम् तातैयरै–अपने पिताओं की; **कॊलै नेर्न्तार्**–मृत्यु के कारण (जो) बने (वे); **तनयर्**–पुत्र; **मुन्तु आरे उळ्ळार्**–पहले कौन रहे हैं; **मुन्नै मुटिन्तान् ऒरुवन्**–पहले ही एक (दशरथ) चल वसे; **ॲन्ताय् ए**–हे मेरे पिता; **ॲंऱ्कु आक**–मेरे कारण; **नीयुम् इऱन्तनैयो**–आप भी मर गये क्या; **अन्तो**–हाय; **विनैयेन्**–पापी मैं; **अरुम् कूऱ्ऱम्**–कठोर यम; **आनेन्**–हो ही गया। ६८६

हाय ! क्या अपने ही पिताओं के घातक पुत्र पहले कभी कहीं हुए है ? पहले ही एक, चक्रवर्ती दशरथ, मृत्यु को प्राप्त हो गये। हे मेरे तात, जटायु जी ! मेरे निमित्त आप भी चल बसे ! हाय ! पापी मैं आपका मारक यम बन गया ! । ९८६

पिन्नुरुव दोरादे पेढुरुवेन् पॅण्बालाळ्
तन्नुरुव ड़ीर्प्पान् ड़नियुरुव दोरादे
उन्नुरुवु नीतीर्त्ता योरुरवु मिल्लादेन्
ॲन्नुरुवान् वेण्डि यिडरुरुवे नॅन्दाये 987

ॲन्ताये–मेरे तात; तनि उरुवतु ओराते–एकाकी होने की चिन्ता न करके; पॅण् पालाळ् तन्–स्त्री जाति का; उरुवल् तीर्प्पान्–कष्ट दूर करने के लिए; उन् उरवु नी तीर्त्ताय्–अपना रिश्ते का कर्तव्य अदा किया; पिन् उरुवतु ओराते–आगे क्या होगा, यह न जानते हुए; पेतु उरुवेन्–संकटग्रस्त और; ओर् उरवुम् इल्लातेन्–अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहा, ऐसा मै; ॲन् उरुवान् वेण्टि–किस प्रयोजन की चाह करके; इटर् उरुवेन्–कष्ट सहूँ। ६८७

मेरे तात ! आप अकेले रहे। उसका विचार न करके स्त्री जाति की एक को कष्ट में देखकर उसको बचाने के लिए आपने अपने रिश्ते का कर्तव्य अपनी जान से अदा किया है ! आगे क्या होगा ? —यह न जानते हुए मैं चिन्ताग्रस्त हूँ। अब मेरा कोई नातेदार नहीं रहे हैं ! फिर किस प्रयोजन को चाहकर मैं कष्ट सहूँगा ? । ९८७

माण्डेने यन्ड़ो मड़ैयोर् कुड़ैमुडिप्पान्
पूण्डेन् विरद मदना नुयिर्पॉरुप्पेन्
नीण्डेन् मरम्बोल निन्ड़ॊळिन्द पुन्ड़ॊळिलेन्
वेण्डेनिम् मामायप् पुन्बिड़वि वेण्डेने 988

मड़ैयोर्–वेदज्ञ ऋषियों का; कुड़ै मुटिप्पान्–चिन्ता दूर करने का; विरतम् पूण्टेन्–व्रत धारण किया है; अतनाल् उयिर् पॉरुप्पेन्–उसी कारण प्राण रख लूँगा; मरम् पोल नीण्टेन्–वृक्ष के समान ऊँचा बढ़कर; निन्ड़ु ऑळिन्त–वृथा रहनेवाला; पुन् तॉळिलेन्–क्षुद्रकर्मी मै; माण्टेने अन्ड़ो–मृतक ही (सम) हूँ न; इ माय पुन् पिड़वि–यह माया का क्षुद्र जन्म; वेण्टेन् वेण्टेने–नहीं चाहता, नहीं ही चाहता। ६८८

मैने प्रतिज्ञा की है कि वेदज्ञ ऋषियों का कष्ट दूर करूँगा और उनकी चिन्ता मिटाऊँगा। उसी कारण मैं प्राणधारण करूँगा। पेड़ के समान लम्बा बना हूँ। पर निरर्थक क्षुद्रकर्मी हो गया हूँ। मृतक (-सा) हूँ न ? यह मायाजन्य क्षुद्र जन्म नहीं चाहता। नहीं ही चाहता। ९८८

* ॲन्ड़ारम् बड़्ड़ुण्ण वेन्ड़ोयैच् चान्ड़ोयैक्
कॊन्ड़ानु निन्ड़ान् कॊलैयुण्डु नीहिडन्दाय्
वन्ड़ाट् चिलैयेन्दि वाळिक् कडल्शुमन्दु
निन्ड़ेनु निन्ड़े नॅडुमरम्बो निन्ड़ेने 989

ॲन् तारम् पड़्ड़ु उण्ण–मेरी दारा दूसरे के कैद में ग्रस्त है; एन्ड़ायै–(उसको बचाने का भार) लेनेवाले आपको; चान्ड़ोयै–गुणपूर्ण को; कॊन्ड़ानुम्–जिसने मारा,

वह भी; निन्ऱान्–जीवित रहता है; नी कॊलै उण्टु किटन्ताय्–आप मौत खाकर पड़े हैं; वल् ताळ् चिलै–सारयुक्त बाजुओं के धनुष का; एन्ति–धारण करके; वाळि कटल् चुमन्तु–शरों का सागर (अंबार) ढोते हुए; निन्ऱेनुम्–जो रहता, वह मैं भी; निन्ऱेन्–निरर्थक रहता हूँ; नॆट्टु मरम् पोल् निन्ऱेन्–लम्बे पेड़ के समान (बेकार) खड़ा हूँ। ९८९

मेरी गृहिणी किसी दूसरे की कैद में है। उसको मुक्त करने का भार आपने अपने ऊपर लिया। ऐसे श्रेष्ठ गुणपूर्ण आपको जिसने हत किया, वह अब भी जीवित रहता है! आप उसके द्वारा हत होकर पड़े हैं। मैं भी हूँ अपने सुदृढ़ और कठोर धनुष का और शरों के सागर-सम अंबार का धारण करके! हाय! लम्बे पेड़ के समान खड़ा हूँ! । ९८९

शॊल्लुडैया रॆन्बो लिनियुळरो तॊल्विनैयेन्
इल्लुडैयाळ् काण विरहुडैया यॆण्णिलाप्
पल्लुडैया युन्नैप् पडैयुडैयान् कॊन्ऱेह
विल्लुडैये निन्ऱेन् विऱलुडैये नल्लेनो 990

इल् उटैयाळ् काण–मेरी गृहिणी के देखते; विरकु उटैयाय्–बलशाली; ऍण् इला पल् उटैयाय्–असंख्य दाँत वाले; पटै उटैयान्–अनेक हथियारों का स्वामी; उन्नै कॊन्ऱु एक–आपको मारकर गया और; तॊल् विनैयेन्–पूर्वकर्म का भागी मैं; विल् उटैयेन्–धनु लेते हुए; निन्ऱेन्–खड़ा हूँ; विऱल् उटैयेन् अल्लेनो–बड़ा बलवान हूँ न; इनि–आगे; ऎन् पोल्–मेरे समान; चॊल् उटैयार्–प्रशंसा के पात्र; उळरो–होंगे क्या। ९९०

मेरी गृहिणी देखती रही और बलशाली और अनेक दाँतों से युक्त तात! अनेक हथियारों का स्वामी, शत्रु आपको मारकर चला गया। और पूर्वकर्मफल का भागी मैं धनु धारण करते हुए इधर बेकार रहता हूँ! मैं भी बलशाली हूँ न! आह! आगे मेरे समान प्रशंसा का पात्र कौन होगा? । ९९०

❀ अन्न पलपलवुम् पन्नि यळुमयङ्गुम्
तन्निह रिलादानुन् दम्बियुमत् तन्मैयताय्
उन्नु मुणर्वुशिऱि दुणमुळैप्पप् पुळ्ळरशन्
इन्नुयिर्प्पा नन्बा लिरुवरैयु नोक्किनान् 991

तन् निकर् इलातानुम्–अनुपमिल; अन्न पल पलवुम् पन्नि–वैसी अनेक बातें कहकर; अळुम् मयङ्कुम्–रोते-कलपते चकित रहे; तम्पियुम्–कनिष्ठ भी; अ तन्मैयताय्–उन्हीं की तरह; उन्नुम्–सोचते रहे; पुळ् अरचन्–पक्षियों के, राजा ने भी; उणर्वु चिऱितु–प्रज्ञा थोड़ा; उळ् मुळैप्प–जाग उठी, तब; इन् उयिर्प्पान्–सुखद श्वास निकालकर; इरुवरैयुम्–दोनों को; अन्पाल् नोक्कितान्–प्रेम से देखा। ९९१

अन्य उपमारहित श्रीराम ऐसी विविध बातें कहते हुए विलापे। उनके कनिष्ठ भ्राता भी दुःखी हुए। तब जटायु धीरे-धीरे होश में आये। सुख की साँस लेते हुए उन्होंने उन दोनों भाइयों पर प्रेम की दृष्टि फेरी। ९९१

※ उऱ्ऱ दुणरा दुयिरुलैय वॆय्दुयिर्प्पान्
कॊऱ्ऱवरैक् कण्डान्ऱन् ऩुळ्ळङ् गुळिर्प्पुऱ्ऱान्
इऱ्ऱ विरुशिऱहु मिऩ्ऩुयिरु मेऴुलहुम्
पॆऱ्ऱनत्ते यॊत्तेन् पॆयर्त्तेन् पऴियॆन्ऱान् 992

उऱ्ऱतु उणरातु–क्या हुआ, यह नहीं समझकर; उयिर् उलैय–विकल-प्राण हो; वॆय्तुयिर्प्पान्–आह भरी; कॊऱ्ऱवरै कण्टान्–राजकुमारों को देखा; तन् उळ्ळम् कुळिर्प्पु उऱ्ऱान्–उनका मन सन्तापरहित और शान्त हुआ; इऱ्ऱ इरु चिरकुम्–कटे हुए दोनों पंख; इन् उयिरुम्–मधुर प्राण; एऴ् उलकुम्–सातों लोक; पॆऱ्ऱतन्नै ऒत्तेन्–मुझे प्राप्त हो गये, ऐसा महसूस करता हूँ; पऴि पॆयर्त्तेन्–निन्दा से भी छूट जाऊँगा; ॆन्ऱान्–कहा। ९९२

जटायु को पता नहीं था सीताजी का क्या हुआ। उन्होंने ठण्डी आहें भरीं। कराहने लगे। जब उन्होंने इन राजा भाइयों को देखा तो उनका मन थोड़ा सन्तापरहित हुआ। उन्हें ऐसा लगा कि उनके कटे पंख, प्रिय प्राण और सातों लोक उन्हें प्राप्त हो गये हों। उन्होंने सोचा कि मेरी निन्दा भी (कि मैंने न सीता को बचाया, न उनका समाचार इनको दिया) अब मिट जायगी। ९९२

※ पाक्कियत्ता लिऩ्ऱॆऩ् पयनिल् पऴियाक्कै
पोक्कुहिऩ्ऱेन् कण्णुऱ्ऱेन् पुण्णियरे वम्मिनॆन्ऩु
ताक्कि यरक्कन् महुडत् तलैतहर्त्त
मूक्किऩा लुच्चि मुऱैमुऱैये मोक्किऩ्ऱान् 993

पुण्णियरे–हे पुण्यात्माओ; इन्ऱु–आज; ॆन्–अपना; पयन् इल्–निरर्थक; पऴि–निन्द्य; याक्कै–शरीर को; पोक्कुकिन्ऱेन्–त्याग रहा हूँ; पाक्कियत्ताल् कण् उऱ्ऱेन्–भाग्यवश तुमको देख पाया; वम्मिन्—आओ; ॆन्ऱु–कहकर; अरक्कन् मकुट तलै–राक्षस के किरीटशोभित सिरों को; ताक्कि तकर्त्त–आक्रमण करके छिन्न-भिन्न जिससे किया; मूक्किनाल्–उस नाक से; उच्चि–उनके सिर को; मुऱै मुऱैये–बारी-बारी से अनेक बार; मोक्किन्ऱान्–सूँघने लगे। ९९३

उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण का अभिनन्दन किया। पुण्यात्माओ ! आज मैं अपना निरर्थक और निन्द्य शरीर त्याग रहा हूँ। भाग्यवश तुम्हारे दर्शन हुए। आओ, आओ, स्वागत है। यह कहते हुए उन्होंने श्रीराम और लक्ष्मण के सिर उस नाक (चोंच) से बार-बार सूँघा, जिससे

उन्होंने रावण के किरीटधर सिरों को नोचकर छिन्न-भिन्न कर दिया था। ९९३

❀ वञ्जत्तैयाल् वन्द वरवॅन्व दॅन्नुडैय
नॅञ्जहमे मुन्ने नित्तैवित्त दात्तालुम्
अञ्जॉल् मयिलै यरुन्ददियै नीङ्गिनिरो
ॲञ्जलिला वाट्र लिरुवीरु मॅन्ऱुरैत्तान् 994

वन्त वरवु–आगत कार्य; वञ्चत्तैयाल् ॲन्पवु–(रावण के) कपट से हुआ, यह; ॲन्नुटैय नॅञ्चकमे–मेरे मन ने; मुन्ने नित्तैवित्ततु–पहले ही स्मरण (भान) कराया; आतालुम्–तो भी; अम् चॉल् मयिलै–सुन्दर बोली वाली कलापी-सी (सीता को); अरुन्ततियै–अरुन्धती-सी सीता को; ॲञ्चल् इला–अक्षय; आट्रल् इरुवीरुम्–बलशाली तुम दोनों; नीङ्कि तरो–अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या; ॲन्ऱु उरैत्तान्–ऐसा प्रश्न किया। ९९४

आगे कहा— यह जो हुआ वह रावण का वंचना द्वारा साधित कार्य है —यह मेरा मन पहले ही कह रहा था। पर एक बात पूछता हूँ। मधुरवाणी, कलापी-सी सुन्दर और अरुन्धती-सी देवी सीता को अक्षय-बलशाली तुम दोनों अकेले छोड़कर अलग हुए थे क्या ? । ९९४

❀ ॲन्ऱव नियम्बलु मिळैय कोमहन्
ऑन्ऱुमाण् डुरुपॊरु ळॊऴिवु ऱावहै
वन्ऱिऱन् मायमान् वन्द दादिया
निन्ऱदु निहऴ्न्ददु निरप्पि नान्ऱो 995

ॲन्ऱु–ऐसा; अवन् इयम्पलुम्–उनके कहने पर; इळैय कोमकन्–छोटे राजकुमार ने; आण्टु–वहाँ; उऱु पॊरुळ्–घटी हुई बातें; ऑन्ऱुम् ऑऴिवु उऱा वकै–विना कोई अंश छोड़े; वल् तिऱल् मायम् मान्–बहुत कुशल माया के हरिण के; वन्ततु आति आ–आने से लेकर; निन्ऱतु निकऴ्न्ततु–जो होकर बीतीं; निरप्पिनान्–वर्णन कीं। ९९५

जब उन्होंने यह प्रश्न किया, तब लघुराजकुमार लक्ष्मण ने अति कुशल मायामृग के आने से लेकर सारी घटनाएँ क्रमवार, विना कोई अंश छोड़े बता दीं। ९९५

❀ आट्रला नव्वुरै यरैय वाणैयाल्
एट्रुणर्न् दॅण्णियव् वॅरुवै वेन्दनुम्
माट्ररुन् दुयरिवर् मनक्कॊ ळावहै
तेट्रुद नन्ऱॆन विन्नैय शॅप्पुवान् 996

आणैयाल्–श्रीराम की आज्ञा लेकर; आट्रलान्–समर्थ लक्ष्मण के; अ उरै अरैय–वह वचन कहने पर; अ ॲरुवै वेन्ततुम्–वे गृध्रराज भी; एट्रु उणर्न्तु–हृदयंगम

करके; ऍण्णि–सोचकर; आरुरु अरुम्–अनाश्वासनीय; तुयर्–दुःख को; इवर् मतम् कॊळा वकै–ये मन में न रखें, इस तरह; तेरुरुतल्–ढाढस देना; नन्रु ॲन–अच्छा होगा, सोचकर; इन्नय चॆप्पुवान्–यों बोले। ९९६

लक्ष्मण ने वे बातें श्रीराम की आज्ञा लेकर ही कहीं। उनकी बातें सुनकर गृध्रराज ने उन्हें हृदयंगम किया। देखा कि वे अत्यधिक दुःखी हैं। कष्ट अनिवार्य हो गया था। पर यह दुःख उनके मन को न सताए, इसकी व्यवस्था करनी थी। ढाढस दिलाना था। यह सोचकर जटायु बोले। ९९६

❀ अदिशय मॊरुवरा लमैक्क लाहुमो
तुदियरु पिरविथि निन्ब तुन्बन्दान्
विदिवय मॆन्बदै मेरुकॊ ळाविडिन्
मदिवलि याल्विदि वॆल्ल वल्लमो 997

ऒरुवराल्–किसी से; अतिचयम्–अतिशय (अस्वाभाविक); अमैक्कल् आकुमो–रचा जा सकता है क्या; तुति अरु–प्रशंसा के लिए अयोग्य; पिरवियिन्–जन्म में; इन्प तुन्पम् तान्–सुख और दुःख; विति वयम् ॲन्पतै–विधिवश होते हैं, यह बात; मेल् कॊळ्ळा विटिल्–हम मानकर नहीं चलेंगे; मति वलियाल्–तो अपनी बुद्धि के बल से; विति–विधि को; वॆल्ल वल्लमो–जीत सकते हैं क्या। ९९७

कोई भी असाधारण अतिशयपूर्ण काम नहीं कर सकता। (विधि के विपरीत जाना असाधारण काम है।) यह जन्म प्रशंसा के योग्य नहीं है। इसमें जो भी दुःख-सुख आते हैं, वे सब विधि के विधान के अनुसार आते हैं। इसको मानकर चलना ही ठीक है। नहीं तो अपने बुद्धिबल से विधि को जीतने का बल हममें है क्या? । ९९७

तॆरिवुरु तुन्बमुवन् दून्रच् चिन्दयै
इरिवुशॆय् दॊळियुमो दिळ्ळै नीरदाल्
पिरिवुशॆय् दुलहॆलाम् पॆरुविप् पान्रलै
अरिवुशॆय् विदियिन्नारक् करिदुण् डाहुमो 998

उलकु ॲलाम्–लोकों के सभी जीवों को; पिरिवु चॆय्तु–विविध श्रेणियों में बाँटकर; पॆरुविप्पान्–रचनेवाले ब्रह्माजी के; तलै–पाँच शिरों में एक को; अरिवु चॆय्–जिसने काटा उस; वितियिनार्क्कु–विधिदेवता के लिए; अरितु उण्टाकुमो–कठिन कुछ हो सकता है क्या; तॆरिवु उरु–साफ़ प्रकट रहनेवाला; तुन्पम् वन्तु ऊन्र–दुःख आकर जम गया तब; चिन्तैयै इरिवु चॆय्तु–मन को जर्जर करके; ऒळियुम् ईतु–कर्तव्य से विरत रह जाना, यह; इळुतै नीरतु–अज्ञता का काम है। ९९८

ब्रह्माजी स्वयं लोक-सृजक हैं। अनेक तरह की जीवराशियों की सृष्टि का काम उन्हीं के हाथ होता है। पर उनके सिरों में से एक को शिवजी ने काट लिया था। यह काम जिस विधि ने किया था, उस विधि के लिए

कौन सा काम कठिन या असाध्य होगा ? इसलिए जो दुःख सामने आता है, उसके सामने मन हारना और मरना और कर्म-विरत हो रहना अज्ञता होगा । ९९८

अलफ्कण् मित्त्वगु मणुहु नाळवै
विलक्कुव मॅन्वतु मॅय्पिट् ट्राहुमो
इलक्कुमुप् पुरङ्गळै यॅय्द विल्लियार्
तलैक्कलत् तिरन्ददु तवत्तिन् पालदो 999

मु पुरङ्कळै–त्रिपुरों को; इलक्कु ॲय्त–लक्ष्य बनाकर जिन्होंने शर चलाया; विल्लियार्–उन धनुर्धर शिवजी का; तलै कलत्तु इरन्ददु–ब्रह्म-कपाल में भिक्षा माँगना; तवत्तिन् पालतो–उनकी तपस्या के लिए योग्य था क्या; अलक्कणुम् उत्पवमुम्–दुःख और सुख; अणुकुम् नाळ्–जब आते हैं, तब; अवै विलक्कुवम् ॲन्पतु–उनको निवार देंगे, समझना; मॅय्पिट्टु आकुमो–सचमुच हो सकता है क्या । ९९९

शिवजी बड़े ही प्रसिद्ध धनुर्धर थे । उन्होंने त्रिपुर को जलानेवाला अस्त्र छोड़ा था । पर उन्हीं को ब्रह्म-कपाल हाथ में लेकर ब्रह्महत्या दोष के पाप के कारण भिक्षा माँगते फिरना पड़ा था । पतिनाम शिवजी की तपस्या और यह संकट —दोनों में कोई मेल है क्या ? इसलिए जब दुःख या सुख आते हैं हम उनको रोक देंगे, यह कहना सचमुच साध्य हो सकेगा क्या ? । ९९९

* पोङ्गुवॅङ् गोळरा विशुम्बु पूत्तन
वॅङ्गदिर्च् चॅल्वनै विऴुङ्गि नीङ्गुमाल्
अङ्गणमा ञालत्तै विळक्कु मापदिरत्
तिङ्गळु मॊरुमुऱै वळरुम् तेयुमाल् 1000

पोङ्कु वॅम् कोळ् अरा–उबलनेवाले भयंकर (राहु-केतु के) सर्प-ग्रह; विशुम्पु पूत्तु अन–आकाश में फूल के समान; वॅम् कतिर् चॅल्वनै–उष्णकिरण सूर्यदेव को; विऴुङ्कि नीङ्कुम्–निगल जाते हैं; अम् कण् मा ञालत्तै–सुन्दर और विशाल पृथ्वी को; विळक्कुम्–प्रकाश देनेवाला; आय् कतिर् तिङ्कळुम्–श्रेष्ठ किरणों का चन्द्र भी; ऒरु मुऱै वळरुम् तेयुम्–एक बार बढ़ता है, एक बार घटता है । १०००

उबलनेवाले सर्प-रूप के ग्रह, राहु और केतु आकाश में विकसित पुष्प के समान विद्यमान, उष्णकिरण सूर्यदेव को निगल लेते हैं । इस विशाल व सुन्दर पृथ्वी को प्रकाश प्रदान करता है चन्द्रमा । श्रेष्ठ किरणों के उसका क्या हाल है ? पन्द्रह दिन उसे घटना और पन्द्रह दिन बढ़ना पड़ता है । १०००

अन्दरम् वरुदलु मनैय तीर्दलुम्
शुन्दरत् तोळिनिर् तोन्ऱुमे नीरवाल्

मन्दिर विमैयवर् गुरुविन् वाय्मॊऴि
इन्दिर नुऱ्ऱन वॆण्ण वॊण्णुमो 1001

मन्तिर–मंत्रणा में चतुर; इमैयवर् कुरुविन्–देवगुरु (बृहस्पति) का; वाय् मॊऴि–उपदेश; इन्तिरन् उऱ्ऱन–(सुनकर तदनुसार चलनेवाले) इन्द्र को जो कष्ट प्राप्त हुए; ऍण्ण ऑण्णुमो–उनको गिना जा सकता है क्या; चुन्तर तोळित्तीर्–सुन्दर-बाहु वीर; अन्तरम् वरुतलुम्–कष्टों का आना; अनैय तीर्तलुम्–और उनका हट जाना; तॊन्मै नीर–सनातन प्रकृति के हैं। १००१

सलाहें देने में समर्थ देवगुरु के उपदेशों के अनुसार चलता है देवेन्द्र। पर उसको भी (नारद, दुर्वासा, गौतम आदि द्वारा शप्त होकर) कितने कष्ट सहने पड़े —क्या उनकी गणना हो सकती है? इसलिए, सुन्दर-बाहु वीर! दिन के फेर आते-जाते हैं। यह सनातन है। १००१

❀ तडैक्करुम् वॆरुवलिच् चम्ब रप्पॆयर्क्
कडैत्तॊऴि लवुणनाऱ् कुलिशक् कैयिनान्
पडैत्तनन् पऴियदु पहऴि विल्वलाय्त्
तुडैत्तन नुन्दैतन् कुववुत् तोळिनाल् 1002

पकऴि विल् वलाय्–शर-धनुर्विद्या-विशारद; तटैक्कु अरुम्–अवार्य; वॆरु वलि–बड़ा बलशाली; चम्पर पॆयर्–शंबर नाम के; कटै तॊऴिल्–नीच कर्मी; अवुणनाल्–राक्षस द्वारा; कुलिच कैयिनान्–कुलिशपाणी (इन्द्र) ने; पऴि पटैत्तनन्–अपमान पाया; अतु–उस (अपमान) के; उन्तै–तुम्हारे पिता ने; तन् कुववु तोळिनाल्–अपनी बलवान भुजाओं के (पराक्रम के) द्वारा; तुटैत्तनन्–पोंछ दिया। १००२

शर चलाने की धनुर्विद्या में विशारद राम! अप्रतिहत अपार बली था शंबर। नीचकर्मी उसके हाथ कुलिशपाणी इन्द्र अपमानित हुआ। तुम्हारे पिता ने अपनी उन्नत भुजाओं के बल से उस अपमान को पोंछ दिया। १००२

❀ पिळ्ळैच्चॊर् किळिय नाळैप् पिरिवुऱ युऱ्ऱ पॆऱ्ऱि
तळ्ळुऱ्ऱ वऱमुन् देवर् तुयरमुन् दन्द देयाल्
कळ्ळप्पो ररक्क रॆन्नुङ् गळैहळैक् कळैन्दु वाऴ्दि
पुळ्ळुक्कुम् पुलम्बु पेयक्कुन् तायन्न पुलवु वेलोय् 1003

पुळ्ळुक्कुम्–पक्षियों को; पुलम्पु पेय्क्कुम्–(भूख से) प्रलाप करनेवाले भूतों को; ताय् अन्न–माता के समान; पुलवु वेलोय्–मांस-दायी भाला के धारक; चॊल् किळि अन्नाळै–तुतलाती और शुकी-सी सीता से; पिरिवु उऱ्ऱ पॆऱ्ऱि–बिछुड़ चुके हो, यह उपलब्धि; तळ्ळुऱ्ऱ अऱमुम्–ग्लानिगत धर्म; तेवर् तुयरमुम्–और देवों के दुःख का; तन्तते आल्–दिया हुआ है; कळ्ळ पोर् अरक्कर ऍन्नुम्–मायायुद्ध-चतुर राक्षस रूपी; कळैयित्तै–(नींद) व्यर्थ पौधों को; कळैन्तु–निरा देकर; वाऴ्ति–चिरजीव रहो। १००३

ऐसे भाले के धारक, राम ! जो माता के-से प्रेम के साथ पक्षियों और प्रलाप करनेवाले पिशाचों को भूख मिटाते हुए मांस खिलाता है। धर्म क्षीण हो गया है और देव दुःखी हैं। उन्हीं दो वातों से तोतली बोली वाली शुकी-सी सीता से वियुक्त होकर कष्ट उठाने का यह कार्य हो गया है। तुम चोर के स्वभाव वाले मायावी राक्षसों को खेत के निराने योग्य (नींद) घास-पौधों के समान काट मिटाओ और चिरजीव रहो। १००३

वडुक्कण्वार् कून्द लाळै यिरावणऩ् मण्णि ऩोडुम्
ऍडुत्तऩ ऩेहु वाऩै यॅदिर्न्दॅन दाऱ्ऱल् कॊण्डु
तडुत्तऩॆ ऩाव दॅल्लान् दवत्ताऩ् तन्द वाळाल्
पडुत्तन ऩिङ्गु वीऴ्न्दे ऩिदुविऩ्ऱु पट्ट दॆऩ्ऱाऩ् 1004

वट्टु कण्–आम के टिकोरे के समान आँखें; वार् कून्तलाळ्–और लम्बा केश; इनके साथ शोभनेवाली सीता को; इरावणऩ्–रावण जो; मण्णिऩ् ओट्टुम्–भूमि के अंश के साथ; ऍट्टुत्तु एकुवाऩै–उठाये दौड़ा जा रहा था, उसका; ऍऩ्तु आऱ्ऱल् कॊण्टु ऍतिर्न्तु–अपने वल से सामना करके; आवतु ऍल्लाम्–भरसक; तट्टुत्तऩॆऩ्–रोका (मैने); तवत्तु–तपस्या से; अरऩ् तन्त–हर की दी हुई; वाळाल्–तलवार से; पट्टुत्तऩऩ्–मुझे निहत कर दिया (रावण ने); इङ्कु वीऴ्न्तेऩ्–यहाँ गिर गया; इतु इऩ्ऱु पट्टतु–आज मेरा यह हाल हुआ; ऍऩ्ऱाऩ्–(जटायु ने) बताया। १००४

आम के टिकोरे के समान आँखों से भूषित और सुन्दर केशिनी सीता को रावण भूमि के अंश के साथ उठाये ले जा रहा था। मैंने उसका अपने वल के साथ सामना किया। उसको रोका। पर उसके हाथ में चन्द्रहास तलवार थी, जो उसे उसके तप के फलस्वरूप शिवजी द्वारा दी गयी थी। उसने उसका प्रयोग करके (अपने निजी वल से नहीं) मुझे आहत कर दिया। मेरे पंख कट गये और मैं गिर गया हूँ। यही यहाँ जो हुआ वह वृत्तान्त है। १००४

कूऱिऩ माऱ्ऱम् जॆऩ्ऱु शॆवित्तलङ् गुऱुहा मुऩ्ऩम्
ऊऱिन वुदिरम् जॆङ्ग णुयिर्त्तऩ वुयिर्प्पुच् चॆन्दी
एऱिऩ पुरुव मॆऩ्मे लिरिन्दऩ शुडर्ह ळॆङ्गुम्
कीऱिऩ दण्ड कोळङ् गिऴिन्दऩ गिरिह ळॆल्लाम् 1005

कूऱिऩ माऱ्ऱम्–(उनका) कहा वचन; चॆवि तलम् चॆऩ्ऱु–कर्ण तक जाकर; कुऱुका मुऩ्ऩम्–लग जाय, इसके पूर्व ही; चॆम् कण्–उनकी लाल आँखों में; उतिरम् ऊऱिऩ–रक्त निकल आया; उयिर्प्पु–साँसें; चॆम् ती उयिर्त्तऩ–गरम आग से मिश्रित आयीं; पुरुवम्–भौंहें; मॆऩ् मेल्–ऊपर, ऊपर; एऱिऩ–चढ़ीं; ऍङ्कुम्–सर्वत्र; चुटर्कळ् इरिन्तऩ–अंगार छितरे; अण्ट कोळम् कीऱिऩ–अण्डगोल फट पड़ा; किरिकळ् ऍल्लाम्–सारे पर्वत; किऴिन्तऩ–चिर गये। १००५

जब जटायु ने यह बात कही, तब श्रीराम कोपोद्विग्न हुए। लाल

आँखों में खून भर आया। साँसें आग से मिश्रित-सी निकलीं। भौंहें तन गयीं। कोप के अंगार सर्वत्र छितरे। सारे अण्डगोल फटे और सभी पर्वत चिरे। १००५

मण्णहन् दिरिय निन्ऱ मालवरै तिरिय मऱ्ऱैक्
कण्णहन् पुनलुङ् गालुङ् गदिरोडु तिरियक् कावल्
विण्णहन् दिरिय मेलै विरिञ्जनुन् दिरिय वीरन्
ऍण्णरुम् पॊरुळ्ह ळॆल्ला मॆन्बदु तॆरिन्द दन्ऱे 1006

मण् अकम् तिरिय–पृथ्वी विपर्य्यस्त हुई; माल् वरै तिरिय–बड़े-बड़े पर्वत घूमे; मऱ्ऱै–और; कण् अकन् पुनलुम्–विस्तृत जलाशय और; कालुम्–पवन; कतिर् ओटुम्–सूर्य व चन्द्र के साथ; तिरिय–घूम गये; कावल् विण् अकम्–सबको स्थिरता की रक्षा करनेवाला आकाश; तिरिय–घूमा; मेलै विरिञ्चनुम्–इन सबके ऊपर के ब्रह्मा भी; तिरिय–अव्यवस्थित हुए; वीरन्–(इसलिए) वीर श्रीराम; ऍण् अरुम् पॊरुळ्कळ् ऍल्लाम्–अगणित सभी पदार्थों के अन्दर हैं; ऍन्पतु–यह तथ्य; तॆरिन्ततु–विदित हुआ। १००६

धरती घूम उठी। बड़े पर्वत अस्त-व्यस्त हुए। और विस्तृत जल, अनिल, सूर्य और चन्द्र चकरा गये। सबको स्थिरता देनेवाला अन्तरिक्ष विपर्यस्त हो गया। पुरातन सर्वोपरि ब्रह्मा भी अस्थिर हो गये। इस विपर्यय से यह तथ्य साबित हुआ कि श्रीराम अगणित सभी पदार्थों के अन्तर्यामी हैं। १००६

कुऱित्तवॆङ् गोवम् यार्मेऱ् कोळुरुङ् गॊल्लॆन् ऱञ्जि
वॆऱित्तुनिन् ऱुलह मॆल्लाम् विम्मुऱ हिन्ऱ वेलै
पॊऱिप्पिदिर् पडरच् चॆन्दीप् पुहैयॊडुम् बॊडिप्पप् पॊम्मॆन्
ऱॆऱिप्पदोर् मुऱुव ऱोन्ऱ विरामनु मियम्ब लुऱ्ऱान् 1007

कुऱित्त वॆम् कोवम्–श्रीराम के मन में उदित कोप; यार् मेल् कोळुम् कॊल्–किस पर जा लगेगा; ऍन्ऱु–ऐसा सोचकर; उलकम् ऍल्लाम्–सारे लोक; अञ्चि–डरकर; वॆऱित्तु निन्ऱु–तनकर खड़े हो गये; विम् उऱुकिन्ऱ वेलै–जब अभिभूत हुए, तब; इरामनुम्–श्रीराम भी; पॊऱि पितिर् पटर–अग्निकणों के छितरते; चॆम् ती–लाल अग्नि के; पुकै ओटुम् पॊटिप्प–धुएँ के साथ उठते; ऍऱिप्पतु ओर् मुऱुवल्–दिल दहलानेवाले हास के; पॊम् ऍन्ऱु तोन्ऱ–'भम्' शब्द के साथ (फूटकर) प्रकट होते; इयम्पल् उऱ्ऱान्–बोले। १००७

अब सारे लोकवासी यह सोचते हुए भयभीत हुए कि श्रीराम का क्रोध किस पर उतरेगा ? भय से अभिभूत हो वे तनकर दुःख करते हुए खड़े रह गये। श्रीराम ने 'भम्' शब्द के साथ अट्टहास किया। तब अंगारे छितरे। लाल रंग की आग धुएँ के साथ जल उठी। वे बोले। १००७

❀ पॅण्डनि॒ यौरुत्ति तऩ्ऩैप् पेदैवा ळरक्कन् पट्रिक्
कॉण्डन॒ नेह नीयिक् कोळुट्रक् कुलुङ्गल् शॅल्ला
ऍण्डिशै यिरुदि यान वुलहङ्ग ळिवट्रै यिऩ्ऩे
कण्डवा ऩवर्ह ळोडुम् कळैयुमा ट्रिऩ्रु काण्डि 1008

तत्ति पॅण् ऑरुत्ति तऩ्ऩै—अकेली रही एक स्त्री को; पेतै वाळ् अरक्कऩ्—मतिहीन क्रूर राक्षस; पट्रि कॉण्टऩऩ् एक—पकड़ लेकर गया और; नी इ कोळ् उट्र—आप पर यह संकट आया और; कुलुङ्कल् चॅल्ला—कम्पित नहीं होता हुआ; ऍण् तिचै इरुति आन—आठों दिगन्त; उलकङ्कळ् इवट्रै—इन सारे लोकों को; कण्ट वानवर्कळोटुम्—इसके दर्शक देवों के साथ; इऩ्ऩे कळैयुम् आरु—अभी कैसे ध्वस्त करता हूँ, वह प्रकार; इऩ्ऱु काण्टि—आज देखिए। १००८

हाय ! एकाकिनी एक स्त्री को मतिहीन क्रूर राक्षस पकड़कर ले गया ! आप पर यह विपदा आयी है ! इनको देखकर आठों दिशाओं के अन्दर रहनेवाले लोकों के वासी कम्पित नही हुए। देव भी यह देखते रह गये। अब मैं इन सभी लोकों और देवों को कैसे विध्वस्त कर देता हूँ, देखिए। १००८

तारहै युदिरु माऱुन् दनिक्कदिर् पिदिरु माऱुम्
पेरहल् वाऩ मॅङ्गुम् पिट्रङ्गॅरि पिट्रक्कु माऱुम्
नीरॉडु निलनु मट्रु निऩ्ट्रवुन् दिरिन्द यावुम्
वेरॉडु पट्रियु माऱुम् विण्णवर् विळियु माऱुम् 1009

तारकै उतिरुम् आरुम्—तारे कैसे चूते हैं, वह प्रकार और; तनि कतिर् पितिरुम् आरुम्—अद्वितीय सूर्य कैसे चूर-चूर होकर गिरता है, वह और; पेर् अकल् वाऩम् ऍङ्कुम्—अति विशाल गगन में; पिट्रङ्कु ऍरि—उज्ज्वल अग्नि; पिट्रक्कुम् आरुम्—कैसे जल उठती, वह और; नीर् ऑटु निलनुम्—जल और पृथ्वी; मट्रुम्—और अन्य; निऩ्ट्रवुम् तिरिन्त यावुम्—अचल और चल सभी पदार्थ; वेर् ऑटु पट्रियुम् आरुम्—जड़ के साथ कैसे नष्ट होते है, वह प्रकार; विण्णवर् विळियुम् आरुम्—देव कैसे मिट जाते हैं, वह प्रकार। १००९

तारे चू पड़ेंगे। अद्वितीय सूर्य चूर-चूर होकर गिरेगा। विशाल गगन में सर्वत्र बड़े प्रकाश के साथ आग जल उठेगी। पृथ्वी और समुद्र और उनमें रहनेवाले अचल और चल सभी जीव निर्मूल हो जायँगे। यह सब कैसे होते है और देव कैसे विनष्ट होते है (यह प्रकार देखिए)। १००९

इक्कण मॉन्ट्रि निऩ्ट्र वेळ्ळि डेळु मेलुहोळ्
मिक्कन पोऩ्ऱु तोऩ्ऱु मुलहङ्गळ् वीयु माऱुम्
तिक्कुडै यण्ड कोळप् पुट्रत्तवुन् दीयन्दु नीरिन्
मॉक्कुळि नुडैयु माऱुङ् गाणॅन मुनिद लोडुम् 1010

मेल् कीऴ् मिक्कत पोन्ऱु तोन्ऱुम्–ऊपर और नीचे व्याप्त रहनेवाले; निन्ऱ–स्थायी; एऴिन् ओटु एऴ् उलकङ्कळ्–सात और सात चौदहों भुवन; वीयुम् आऱम्–कैसे ध्वस्त होते है, वह प्रकार; तिक्कु उटै–आठों दिशाओं के अन्दर; अण्ट कोळम्–रहनेवाले अण्डगोल; पुरत्तवुम्–अन्य बाह्याण्ड; तीय्न्तु–जलकर; नीरिन् मोक्कुळिन्–जल के बुलबुले के समान; उटैयुम् आऱम्–कैसे अदृश्य होते हैं, वह; इ कणम् ओन्ऱिल्–इसी एक क्षण में; काण् ऍन–देखिए, कहकर; मुनितल् ओटुम्–जब श्रीराम कुपित हुए, तब । १०१०

ऊपर और नीचे व्याप्त होकर जो शानदार लगते हैं, वे चौदहों भुवन अब तहस-नहस हो जायँगे। आठों दिशाओं के अन्तर्गत रहनेवाले सारे अण्डगोल और बाह्याण्ड भी जलकर जल के बुलबुले के समान अदृश्य हो जायँगे। वे सब कैसे होते हैं वह रीति अभी, इसी एक क्षण में देख लीजिए। यह कहते हुए जब श्रीराम कोप दिखा रहे थे तब— । १०१०

वॆञ्जुडर्क् कडवुण् मीण्डु मेरुविन् मऱैय लुऱ्ऱान्
ऍञ्जलि ड्रिशैयि निन्ऱ यानैयु मिरियल् पोन
तुञ्जिन वुलह मॆल्ला मॆन्बदॆन् तुणिन्द नॆञ्जन्
अञ्जिन विळैय कोवु मयलुळोर्क् कवदि युण्डो 1011

वॆम् चुटर्–गरम किरणों के; कटवुळ्–(सूर्य) देव; मीण्टु–फिर; मेरुविल् मऱैयल् उऱ्ऱान्–मेरु के पीछे छिपने लगे; ॲञ्चल् इल्–अप्रमत्त; तिचैयिन् निन्ऱ यानैयुम्–दिशाओं में स्थित गज भी; इरियल् पोन–अस्त-व्यस्त हो भागे; उलकम् ॲल्लाम् तुञ्चिन–सारे लोक के जीव स्तब्ध बने; ॲन्पतु ॲन्–ऐसा कहना क्या; तुणिन्त नॆञ्चन–सुदृढ़-मन; इळैय कोवुम्–लघुराज भी; अञ्चिनन्–भयभीत हुए; अयल् उळोर्क्कु–अन्य लोगों (के भय) को; अवति उण्टो–सीमा है क्या । १०११

गरम किरणमाली भी मेरु के पीछे जा छिपे। अचल दिग्गज भी इधर-उधर भागे। सारा विश्व निष्क्रिय हो गया —यह कहना क्या अर्थ रखता है ? अदम्य साहसी लघुराज भी डर गये तो अन्यों के भय की सीमा भी हो सकती थी क्या ? । १०११

इव्वऴि निहऴुम् वेलै यॆरुवैहट् करशन् यादुम्
शॆव्वियोय् मुनियल् वाऴि तेवरु मुनिवर् तामुम्
वॆव्वलि वीर निन्नाल् वेऱुमॆन् ऱॆमाक् किन्ऱार्
ॲव्वलि कॊण्डु वॆल्वा रिरावणन् शॆयलै यॆन्ना 1012

इ वऴि निकऴुम् वेलै–जब ऐसी बात हुई; ॲरुवैकट्कु अरचन्–गीधों के राजा; चॆव्वियोय्–पुरुषोत्तम; यातुम् मुनियल्–कुछ भी क्रोध मत करो; वाऴि–सौभाग्यवान जिओ; वॆल् वलि वीर–परंतप बली वीर; तेवरुम् मुनिवर् तामुम्–देव और मुनि; इरावणन् चॆयलै–रावण के कृत्य को; निन्नाल् वेऱुम्–तुम्हारे द्वारा जीतने (रुकवाने) का; ॲन्ऱु एमाक्किन्ऱार्–विचार करके मुदित हैं; ॲ वलि कॊण्टु–वे किस पराक्रम से; वॆल्वार्–जीतेंगे; ॲन्ना–कहकर । १०१२

जब यह सब हो रहा था, तब गृध्रराज ने श्रीराम को समझाया। नेक श्रीराम ! तुम कुछ गुस्सा मत करो। सौभाग्यमय जीवन जिओगे। विजयी पराक्रमी वीर ! देव और मुनि तो यह सोचते हुए आनन्द का अनुभव कर रहे है कि तुम्हारे द्वारा रावण के अत्याचार निरस्त होंगे। वे कौन सा बल लेकर रावण को जीत सकेंगे ? । १०१२

नाट्चॅय्द कमलत् तण्ण नल्हिन नवैयि लाड्ड्रल्
तोट्चॅय्द वीर मॅन्न्निड्ड् कण्डनै शॉल्ल वुण्डो
ताट्चॅय्य नळिनत् तोने मुदलिनर् तलैपत् तुळ्ळाड्
काट्चॅय्हिन् ड्रार्ह ळन्ड्रि यड्अ्जॅय् हिन्ड्रार्हळ् यारे 1013

नाळ् चॅय्त–आयु निर्धारित करनेवाले; कमलत्तु अण्णल्–कमलासन देव के द्वारा; नल्कित्त–दिये गये; नवैयिल् आट्ट्रल्–अमोघ शक्ति की; तोळ् चॅय्त वीरम्–भुजाओं के बल-पराक्रम को; ॲन्नितिल् कण्टतै–मेरे विषय में देखा; चॉल्ल उण्टो–फिर कहना है क्या; ताळ् चॅय्य नळिनत्तोते मुतलिनर्–नालसहित कमल पर आसीन ब्रह्मा से लेकर सभी; तलै पत्तु उळ्ळार्क्कु–दशग्रीव का; आळ् चॅय्किन्ड्रार्कळ्–कैंकर्य करते हैं; अन्ड्रि–सिवाय इसके; अड्म् चॅय्किन्ड्रार्कळ् यारे–धर्म-कर्म करनेवाले कौन हैं। १०१३

सब जीवों के आयु-विधायक ब्रह्मा ने रावण को कितना भुजबल वर के रूप में दिया है, वह कितना निर्दोष है, यह तुमने मेरी गति से जान लिया है न ? फिर उसके सम्बन्ध मे बताने को क्या है ? नाल-सहित कमलपुष्प पर रहनेवाले ब्रह्मा आदि सभी देवता दशग्रीव की सेवा टहल करते हैं। उसके सिवा अपने धर्म-कर्म करते कौन हैं ? । १०१३

तॅण्डिरै युलहन् दन्निड्ड् चॅड्डनर्माट् टेवल् शॅय्तु
पॅण्डिरित् वाळ्व रन्ड्रे यिदुवन्ड्रो देवर् पॅड्ड्रि
पण्डुल हळन्दो न्नल्हप् पाड्कड लमुद मन्नाळ्
उण्डिल राहि लिन्ना ळन्नवर्क् कुय्द लुण्डो 1014

तॅळ् तिरै उलकम् तन्त्तिल्–स्पष्ट समुद्र से घिरी पृथ्वी में; चॅड्डतर् माट्टु–अपने शत्रु रावणादि राक्षसों के यहाँ; एवल् चॅय्तु–सेवा-टहल करके; पॅण्टिरिन् वाळ्वर्–स्त्रियों का-सा जीवन बिता रहे है; तेवर् पॅड्ड्रि–देवों का भाग्य; इतु अन्ड्रो–यही है न; पण्टु उलकु अळन्तोन्–पहले (त्रिविक्रम बनकर) जिन्होंने लोको को नापा; पाल् कटल् अमुतम् नल्क–उन्होने क्षीरसागर के अमृत को देवों को दिया; अ नाळ् उण्टु इलर् आकिल्–उस दिन वे नहीं खाते तो; इ नाळ्–आजकल; अन्नवर्क्कु–उन लोगों का; उय्तल् उण्टो–जीवित रहना होता क्या। १०१४

स्वच्छ समुद्र-वलयित भूतल में, वे देव अपने शत्रु रावण की सेवा-टहल करते हुए स्त्रियों के समान जीवन बिता रहे है। यही उनकी स्थिति है ! इन देवो को अगर क्षीरमथन से क्षीरसागर से प्राप्त अमृत त्रिविक्रम

द्वारा न मिलता होता, आज रावण के शासन काल में ये जीवित रह सकते क्या ? । १०१४

❀ वम्बिळै कॉङ्गै वञ्जि वनत्तिडैत् तमियळ् वैहक्
कॉम्बिळै मानिन् पिन्बोय्क् कुलप्पळि कूट्टिक् कॉण्डीर्
अम्बिळै वरिविर् चॅङ्गै यैयन्मी रायुङ् गालै
उम्बिळै यॅन्ब दल्ला लुलहञ्जॅय् पिळैयु मुण्डो 1015

अम्पु इळै–शरासन; वीर विल् चॅङ्कै–सबन्ध धनु अपने लाल हाथ में रखनेवाले; ऐयन्मीर्–मेरे तात; वम्पु इळै–अँगिया से बद्ध; कॊङ्कै वञ्चि–स्तनों से भूषित लता(-सी सीता); वनत्तु इटै तमियळ् वैक–वन में अकेली रही, तब; कॊम्पु इळै–सींगों-सहित; मानिन् पिन् पोय्–मृग के पीछे जाकर; कुल पळि–कुल का अपमान; कूट्टि कॊण्टीर्–सम्पादित कर लिया; आयुम् कालै–विचार करने पर; उम् पिळै ऍन्पतु अल्लाल्–तुम्हारा कसूर है, इसके सिवा; उलकम् चॅय् पिळैयुम् उण्टो–संसार (के वासियों) का कोई अपराध है क्या । १०१५

सबन्ध शरासनधारी लाल हाथ के हे वीरो ! मेरे पुत्रो ! अँगियाबद्ध स्तनों वाली लता-सदृश सीता जब जंगल में एकाकिनी रही, तब तुम उसे छोड़कर शृंगसहित हरिण को पकड़ने गये और अपने कुल का अपयश ग्रहण कर आये । सोचकर देखो तो गल्ती तुम्हारी ही है । संसार का किया कोई अपराध है क्या ? । १०१५

आदलाल् मुनिवा यल्लै यरुन्ददि यनैय कर्पिन्
कादला डुयर नीक्किल् तेवर्तङ् गरुत्तु मुर्रि
वेदनून् मुरैयिन् यावुम् विदियुळि निरुवि वेरु
तीदुळ तुडैत्ति यॅन्रान् शेवडिक् कमलञ् जेर्वान् 1016

चे अटि कमलम् चेर्वान्–(श्रीमन्नारायण के) लाल (श्रेष्ठ) चरण-कमल पहुँचने को जो थे (मरणोन्मुख); आतलाल्–इसलिए; मुनिवाय् अल्लै–कोप मत करो; अरुन्तति अनैय कर्पिन्–अरुन्धती-सी पतिव्रता देवी; कातलाळ्–तुम्हारी प्रिया का; तुयरम् नीक्कि–दुःख दूर कर; तेवर् तम् करुत्तु मुर्रि–देवों की प्रार्थना पूरी करके; वेत नूल् मुरैयिन्–वेद-शास्त्र में उक्त विधि के अनुसार; यावुम् विति उळि निरुवि–सब धर्म विधिवत संस्थापित करके; वेरु तीतु उळ–अन्य जितनी भी बुराइयाँ हैं; तुटैत्ति–उनको दूर करो; ऍन्रान्–(जटायु ने) कहा । १०१६

जटायु अब श्रीविष्णु भगवान के लाल कमलचरण को पहुँचने की स्थिति में थे । उन्होंने श्रीराम को आशीष दिया । श्रीराम ! तुम किसी पर क्रोध मत करो । अरुन्धती-समान पातिव्रत्यशीला, अपनी प्रिया सीता का दुःख हरण करो । देवों की प्रार्थना पूरी करो । वेद-शास्त्र-विहित सभी धर्मों को संस्थापित करो । और अन्य कष्ट, जो भी पृथ्वी पर हों, उनका निरसन कर दो । १०१६

पुयलिऱ्‌ वण्ण ऩाण्डप्‌ पुण्णियऩ्‌ पुहऩ्ऱ्‌ शॊल्लैत्‌
तयरदऩ्‌ पणियी दॆऩ्ऩच्‌ चिन्दैयिऱ्‌ ऱऴुवि निऩ्ऱाऩ्‌
अयलिनि मुऩिव दॆऩ्ऩै यरक्करै वरुक्कम्‌ तीर्क्कुम्‌
शॆयलिऩिच्‌ चॆयलॆऩ्‌ ऱॆण्णिक्‌ कण्णिय शीऱ्ऱऩ्‌ दीर्न्दाऩ्‌ 1017

पुयल्‌ निऱ्‌ वण्णऩ्‌–मेघवर्ण ने; अ पुण्णियऩ्‌ पुकऩ्ऱ्‌ चॊल्लै–उन पुण्यात्मा के कहे वचनों को; आण्टु–तब; तयरतऩ्‌ पणि ईतु–दशरथ की आज्ञा है यह; ऍऩ्ऩ–ऐसा; चिन्तैयिल्‌ तऴुवि निऩ्ऱाऩ्‌–अपने मन में धारण कर लिया; इऩि अयल्‌ मुऩिवतु ऍऩ्ऩै–अब दूसरों पर क्रोध करना क्या है; अरक्करै वरुक्कम्‌ तीर्क्कुम्‌–राक्षसों के वर्गों का नाश करने का; चॆयल्‌ इऩि चॆयल्‌–काम ही कर्तव्य है; ऍऩ्ऱु ऍण्णि–ऐसा सोचकर; कण्णिय चीऱ्ऱम्‌ तीर्न्ताऩ्‌–अपनाया क्रोध दूर कर दिया। १०१७

मेघवर्ण श्रीराम ने उनकी आज्ञा को दशरथ की आज्ञा के समान हृदयंगम कर लिया। 'अब अन्यों से रुष्ट होना क्या अर्थ रखता है? आगे मेरा कार्य राक्षसों के वर्गों को विध्वस्त करना ही है!'—यह सोचकर श्रीराम ने अपने मन में सृष्ट क्रोध को शान्त कर लिया। १०१७

※ आयपिऩ्‌ नमलऩ्‌ ऱाऩु मैयनी यमैदि यॆऩ्ऩ
वायिडै मॊऴिन्द दऩ्ऱि मऱ्ऱॊरु शॆयलु मुण्डो
पोयदॆव्‌ वरक्क ऩॆङ्गे पुहलॆनप्‌ पुळ्ळिऩ्‌ वेन्दऩ्‌
ओय्विन नुणर्वु तेय वुरैत्तिल नुयिरुम्‌ दीर्न्दाऩ्‌ 1018

आय पिऩ्‌–(शान्त) होने के बाद; अमलऩ्‌ ताऩुम्‌–अकलुष (पवित्र) श्रीराम भी; ऐय–तात; नी–आप; अमैति–शान्त हों; वाय्‌ इटै–मुख से; ऍऩ्ऩ मॊऴिन्ततु–आपने जो कहा; अऩ्ऱि–उसके सिवा; मऱ्ऱु ऒरु चॆयलुम्‌ उण्टो–दूसरा कोई काम (मुझसे) होगा क्या; अ अरक्कऩ्‌–वह राक्षस; पोयतु ऍङ्के–गया कहाँ; पुकल्‌ ऍऩ–कहिए, कहने पर; पुळ्ळिऩ्‌ वेन्तऩ्‌–खगराज ने; ओय्विऩऩ्‌–श्लथ होकर; उणर्वु तेय–प्रज्ञा खोकर; उरैत्तिलऩ्‌–नहीं कहा; उयिरुम्‌ तीर्न्ताऩ्‌–प्राण छोड़ गये। १०१८

अपना क्रोध शान्त करने के बाद अकलुष श्रीराम ने जटायु से मधुर ढंग से कहा कि तात! आप शान्त हों। आपने जो अपने मुख से आज्ञा कही है, उसके सिवा कोई और कार्य मुझसे होगा क्या? नहीं होगा। आप यह बतायें कि वह राक्षस गया कहाँ? इसका उत्तर खगराज दें इसके पहले ही वे श्लथ होकर प्रज्ञा खोकर प्राणहीन हो गये। उत्तर दे नहीं पाये। १०१८

शीदङ्गॊण्‌ मलरु ळोऩुन्‌ देवरु मॆऩ्व दॆऩ्ऩे
वेदङ्गळ्‌ काण्गि लामै वॊळिनिऩ्ऱॆ मऱैयुम्‌ वीरऩ्‌
पादङ्गळ्‌ कण्णिऱ्‌ पार्त्ताऩ्‌ पडिवङ्गॊ णॊडिय पञ्ज
बूदङ्गळ्‌ विळियु नाळुम्‌ पोक्किला वुलहम्‌ बुक्काऩ्‌ 1019

चीतम् कॉळ् मलर् उळोनुम्–शीतलतायुक्त कमल पर आसीन ब्रह्मा; तेवरुम्–देव; ऑन्पतु ऑन्ने–उनकी बात क्या; वेतङ्कळ् काण्किलामै–वेदों ने भी नहीं देखा, ऐसे; वॅळि निन्ऱे–ज्ञानातीत हो रहनेवाले; मऱैयुन् वीरन्–और अगोचर वीर श्रीराम के; पातङ्कळ् कण्णिल् पार्त्तान्–चरणों के दर्शन करते हुए; पटिवम् कॉळ्–विविध रूपों में परिवर्तित होनेवाले; पञ्च पूतङ्कळ्–पाँच भूत; विळियुम् नाळुम्–जिस दिन में विनष्ट हो जाते हैं, उस युगान्त में भी; पोक्कु इला–अविनष्ट रहनेवाले; उलकम्–परमपद में; पुक्कान्–प्रविष्ट हुए। १०१९

शीतल कमलपुष्प पर आसीन ब्रह्मा और अन्य देव क्या ? स्वयं वेदों के लिए भी श्रीराम अगोचर थे। ऐसे परमेश्वर के चरण की अन्तिम स्मृति करते हुए जटायु ने प्राण-त्याग किया था। इसलिए वे उस परमपद श्रीवैकुण्ठ में पहुँच गये, जो सारे भूतों को विनष्ट करनेवाले युगान्त में भी अक्षय रहता है। १०१९

वीडव नॅय्दुम् वेलै विरिञ्जने मुदल मेलोर्
आडवर्क् करश नोडुन् दम्बियु मळुदु शोरक्
काडमर् मरमुम् मावुङ् गर्कळुङ् गरैन्दु शायन्द
शेडरुम् बारु ळोरुङ् गरञ्जिरज् जेर्त्ता रन्ऱे 1020

अवन् वीटु ऍय्तुम् वेलै–उनके मोक्षप्राप्ति के समय; आटवर्क्कु अरचन् ओटुम्–पुरुषोत्तम के साथ; विरिञ्चन्ने मुतल मेलोर्–विरंचि आदि स्वर्गवासी देव; तम्पियुम्–और कनिष्ठ भ्राता; अळुतु चोर–रोते-मुरझाते थे, तब; काटु अमर्–जंगल में रहनेवाले; मरमुम् मावुम्–वृक्ष और जानवर; कर्कळुम्–पर्वत भी; करैन्तु चायन्त–द्रवीभूत होकर नीचे गिर गये; चेटरुम् पार् उळोरुम्–नागलोकवासी और पृथ्वीवासी लोगों ने; करम–अपने हाथ; चिरम् चेर्त्तार्–सिर पर रख लिये। १०२०

जब जटायु को मोक्षप्राप्ति हुई, तब पुरुषोत्तम श्रीराम के साथ ब्रह्मादि देवता, श्रीराम के कनिष्ठ भ्राता सब मुख खोलकर रोये। कानन में विद्यमान तरु और जानवर और पर्वत पिघलकर धराशायी हुए। नागलोकवासियों और भूलोकवासियों ने अपने सिर पर हाथ रख लिये और मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। १०२०

अऱन्दलै निन्ऱि लाद वरक्कनि नाण्मै तीर्न्देन्
तुऱन्दनॅन् ऱुवञ्जॅय् वेनो तुऱप्पनो वुयिरैच् चॊल्लाय्
पिऱन्दनॅन् पॅऱ्ऱु निन्ऱ पॅऱ्ऱियार् पॅऱ्ऱ तादै
इऱन्दन निरुन्दु ळेन्या नॅन्ऩॆय्हे निळव लॅन्ऱान् 1021

इळवल्–छोटे भैया; अऱम् तलै निन्ऱु इलात–धर्म पर स्थित न रहनेवाले; अरक्कताल्–राक्षस के हाथों; आण्मै तीर्न्तेन्–मेरा पौरुष परास्त हो गया; पिऱन्ततॅन्–(दशरथ का) पुत्र पैदा हुआ; पॅऱ्ऱि निन्ऱ पॅऱ्ऱियाल्–मित्र-पुत्र को अपना

पुत्र मानने के जटायु के भाव के कारण; पॅट्र् तातै–पिता के स्थान-प्राप्त पिता; इऱन्ततन्–मर गये; इरुन्तु उळेन् यान्–रह गया मैं; तुऱन्ततॆन्–सभी त्यागकर; इनि तवम् चॅय्वेनो–आगे तपस्या करूँगा; उयिरै तुऱप्पॆनो–(या) प्राण त्याग दूँ; ॲन् चॅय्केन्–क्या करूँ; ॲन्ऱान्–कहा (श्रीराम ने)। १०२१

तव श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा कि छोटे भैया! उस अधर्मी रावण के हाथों मेरे पौरुष को हीनता आ गयी। दशरथ के पुत्र के रूप में पैदा हुआ। वे चल बसे। बाद जटायु ने मुझे अपना पुत्र माना। वे पिता भी चल बसे। मैं अब रह गया। सबको त्यागकर संन्यासी बनूँ और तपस्या करूँ? या अपने प्राण ही त्याग दूँ? क्या करूँ? । १०२१

ॲन्ऱलु मिळैय कोवु मिऱैवनै यिऱैञ्जि याण्डुम्
वॆन्ऱियाय् विदियिन् ऱन्मै पऴुदिल विळैन्द दन्ऱो
निन्ऱिनि निनैव दॆन्ने नॆरुक्कियव् वरक्कर् तम्मैक्
कॊन्ऱपि नन्ऱो वॆय्य कॊडुन्दुयरक् कुऴिप्प दॆन्ऱान् 1022

ॲन्ऱलुम्–कहने पर; इळैय कोवुम्–लघुराज ने; इऱैवनै इऱैञ्चि–भगवान से विनय के साथ; वॆन्ऱियाय्–विजयी; याण्टुम्–सदा; वितियिन् तन्मै–विधि का विधान; पऴुतु इल–अचूक; विळैन्ततु अन्ऱो–सफल होता है न; इनि निन्ऱु–अब खड़ा होकर; निनैवतु ॲन्ने–सोचने को क्या है; अ अरक्कर् तम्मै–उन निशाचरों को; नॆरुक्कि–आक्रमण करके; कॊन्ऱ पिन् अन्ऱो–मारने के बाद तो; वॆय्य कॊटुतुयर्–सन्तापी कठोर दुःख में; कुऴिप्पतु–मग्न रहना है; ॲन्ऱान्–कहा। १०२२

जब श्रीराम ऐसा कहते हुए क्लान्त हुए, तब लघुराज लक्ष्मण ने प्रभु को नमस्कार करके निवेदन किया। विजयी वीर! विधि का विधान अचूक है! सदा सफल होता है न? फिर चुप रहकर सोचने से क्या होगा? उन राक्षसों को हमला करके नाश करने के बाद ही न दुःख में मग्न रहने की बारी आयेगी! । १०२२

ॲन्दैयी दियम्बिऱ् ऱॆन्ने यॆळियैयै याहि यॆऴैच्
चन्दवार् कुऴलि नाळैत् तुऱन्दनै तणिदि यॆनुम्
उन्दैयै युयिरुण् डोनै युयिरुण्णु मूऱ्ऱ मिल्लाच्
चिन्दैयै याहि निन्ऱु शॆय्ववॆन् शॆय्है यॆन्ऱान् 1023

ॲन्तै–मेरे पितृसम; ईतु इयम्पिऱ्ऱु ॲन्नै–यह कहा क्यों; ॲळियैयै आकि–दीन की तरह; एऴै चन्त वार् कुऴलित्ताळै–कोमल और सुकेशिनी से; तुऱन्ततै–बिछुड़ गये; तणिति ॲनुम्–(उससे उत्पन्न क्रोध को) थाम लेंगे तो भी; उन्तैयै–आपके पिता (-समान जटायु) के; उयिर् उण्टोनै–प्राण हरनेवाले को; उयिर् उण्णुम् ऊऱ्ऱम् इल्ला–मारने के साहस से हीन; चिन्तैयै आकि निन्ऱु–मन के होकर; चॅय्वतु ॲन् चॅय्कै–जो करेंगे, वह क्या काम है; ॲन्ऱान्–कहा। १०२३

उन्होंने आगे यह भी कहा। मेरे पिता (-से भाई)! आप ऐसा

हीन वचन क्यों करते हैं ? हीन-दीन बनकर आपने अबला सुकेशिनी सीताजी से वियोग पाया है ! उसका दुःख शायद आप सह भी लें तो भी अपने पिता (सम) जटायु के घातक रावण को मारने के प्रयास से विरत मन को लेकर आप क्या करेंगे ? । १०२३

❀ अव्वळि यिळवल् कूऱ वऱिवऩु मयर्वु नीङ्गि
इव्वळि यिनैय वॆण्णि ऩॆळ्ळैमैप् पाल दॆन्ऩा
वॆव्वळि पॊऴियुङ् गण्णीर् विलक्किनन् विळिन्द तादै
शॆव्वळि युरिमै यावुन् दिरुत्तुवञ् जिऱुव वॆन्ऱान् 1024

इळवल्–कनिष्ठ के; अ वळि कूऱ–वैसा कहने पर; अऱिवऩुम्–सर्वज्ञ भी; इ वळि–अब; इत्तैय ऍण्णिल्–इस तरह सोचता रहूँ तो; एळ्ळैमै पालतु–(बुद्धि-) हीनता होगी; ऍन्ऩा–विचारकर; अयर्वु नीङ्कि–थकावट त्यागकर; वॆम् वळि–क्लेश के कारण; पॊऴियुम् कण्णीर्–बहनेवाले आँसू को; विलक्किऩऩ्–रोक लिया; चिऱुव–छोटे भैया; विळिन्त तातै–मृत पिता का; उरिमै यावुम्–कर्तव्य सब दाह-कर्म; चॆम् वळि–उचित रीति से; तिरुत्तुवम्–पूर्ण रूप से करेंगे; ऍन्ऱान्–कहा । १०२४

जब छोटे भाई ने यह बात कही, तो सर्वज्ञ श्रीराम ने यह सोचा । हाँ ! अब इस भाँति सोचता रहना बुद्धिहीनता होगा । इसलिए वे सँभले । दुःखदायी घटनाओं के कारण जो आँसू आ रहे थे, उनको भी उन्होंने रोक लिया । फिर भाई से कहा कि छोटे भैया ! पिता का दाह-कर्म यथाविधि सुसम्पन्न करें । १०२४

इन्दऩ माह वॆण्डुङ् गारहि लीट्टत् तोडुम्
शन्दनङ् गुवित्तु वेण्डु तरुप्पैयुन् दिरुत्तिप् पूवुम्
शिन्दिऩ नरणि तन्ऩार् तीक्कडैन् दियऱ्ऱित् तॆण्णीर्
तन्दऩ्ऩ् ऱादै तन्ऩैत् तडक्कैयि ऩॆडुत्तुच् चार्वान् 1025

इन्तऩम् आक वेण्टुम्–ईंधन बनने योग्य; कार् अकिल् ईट्टत्तु ओटुम्–काले अगरु के काष्ठों की राशि के साथ; चन्तऩम् कुवित्तु–चन्दन-काष्ठ सजाकर; वेण्टु तरुप्पैयुम्–आवश्यक कुश; तिरुत्ति–बना लेकर; पूवुम् चिन्तिऩऩ्–फूल भी विछाकर; अरणि तन्ऩाल्–अरणी से; ती कटैन्तु इयऱ्ऱि–मथकर अग्नि उत्पन्न करके; तॆळ् नीर् तन्तऩऩ्–स्वच्छ जल से स्नान कराके; तातै तन्ऩै–पिता के शरीर को; तट कैयाल् ऍटुत्तु–विशाल हाथों से उठा लेकर; चार्वान्–(चिता के पास) आये । १०२५

ईंधन के रूप में काली अगरु की लकड़ियाँ और चन्दन की लकड़ियाँ रखकर चिता बनायी गयी । दर्भ बिछाये गये । फूल भी छिड़काये गये । अरणि मथकर आग जलायी गयी । फिर स्वच्छ जल से जटायु के शरीर को नहलाया गया । श्रीराम जटायु को अपने हाथों से उठा ले गये । १०२५

एन्दिन निरुहै तन्ना लेऱ्ऱिन नीमन् दन्मेल्
शान्दॊडु मलरु नीरुज् जॊरिन्दनन् ऱलैयिऱ् चारक्
कान्दॆरि कजल मूट्टिक् कडन्मुऱै कडवा वण्णम्
नेऱ्न्दन निरम्बु नन्नूल् मन्दिर नॆऱियिन् वल्लान् 1026

निरम्पु नल् नूल्–समस्त श्रेष्ठ शास्त्रों में; मन्तिर नॆऱियिल्–कथित मन्त्रों के प्रयोग में; वल्लान्–समर्थ श्रीराम ने; इरु कै तन्नाल्–अपने दोनों हाथों में; एन्तिनन्–धारण करके; ईमम् तन् मेल् एऱ्ऱिनन्–चिता पर चढ़ाया; चान्तु ओटु मलरुम् नीरुम्–चन्दन के साथ फूल और जल; चॊरिन्तनन्–छिड़के; तलैयिल् चार–सिरहाने पर; कान्तु ऎरि–जलती आग को; कजल मूट्टि–खूब जले, ऐसा लगाकर; कटन् मुऱै–कर्म-क्रम; कटवा वण्णम्–न छूटे, इस प्रकार; नेऱ्न्तनन्–संस्कार किये। १०२६

श्रीराम स्वयं समस्त शास्त्रज्ञ थे। उन्होंने अपने दोनों हाथों में जटायु को धारणकर चिता पर रखा। चन्दन, फूल और जल छिड़के। सिरहाने में आग लगायी। उन्होंने सारा पितृसंस्कार यथाविधि सम्पन्न किया। १०२६

तळित्तन दनैय मेनि तामरै कॊळुमु शॆन्दॆन्
तुळित्तन वनैय वॆन्नत् तुळ्ळिशोर् वॆळ्ळक् कण्णन्
कुळित्तनन् कान याऱ्ऱिऱ् कुळित्तपिन् कॊण्ड नन्नीर्
अळित्तन नरक्कर् चॆऱ्ऱ शीऱ्ऱत्ता नवलन् दीर्प्पान् 1027

तळि तत्तु अनैय मेनि–मेघ-सम शरीर; तामरै कॊळुमु–कमल पर शोभित; चॆम् तेन्–लाल शहद; तुळित्तन अनैय ऎन्न–की बूँदें पड़ी हों, ऐसा; तुळ्ळि चेर्–अश्रुकणों से युक्त; वॆळ्ळ कण्णन्–प्रवाहमय आँखों के श्रीराम; कान याऱ्ऱिल्–जंगली नदी में; कुळित्तनन्–नहाये; कुळित्त पिन्–नहाने के बाद; अरक्कन् चॆऱ्ऱ चीऱ्ऱत्तान्–राक्षस द्वारा हारने से उत्पन्न क्रोध से आक्रान्त जटायु का; अवलम् तीर्प्पान्–दुःख दूर करने के लिए; कॊण्ट–(जल) ले आकर; नल् नीर्–श्रेष्ठ उदक-दान; अळित्तनन्–किया। १०२७

मेघवर्ण श्रीराम की कमल-सी आँखों से शहद की बूंदों के समान अश्रुजल प्रवहित हो रहा था। वे जाकर जंगली नदी में नहाये। जटायु के मन में रावण के हाथों हारने पर क्रोध रहा था। उसको शान्त करने के हेतु श्रीराम ने पवित्र जल ले आकर उदकक्रिया की। १०२७

मीट्टिनि युरैप्प दॆन्ने विरिज्जने मुदल मेल्होळ्
काट्टिय वुयिर्ह ळॆल्ला मरुन्दिन कळित्त पोलाम्
पूट्टिय कैह ळालप् पुळ्ळिनुक् करशैक् कॊळ्हॆन्
ऊट्टिय नन्नी रैय तुण्डनी रीत्त दन्ऱे 1028

पूट्टिय कैकळाल्–(अंजलि मुद्रा में) बने हाथों से; अ पुळ्ळिनुक्कु अरचै–उस खगराज को; कॊळ्कॆन्ऱु–ग्रहण कीजिए, कहकर; ऊट्टिय नल् नीर्–जो उदक दान

किया गया, वह पवित्र जल; ऐयन् उण्ट नीर् ऑत्ततु–भगवान श्रीराम के पीत जल के समान हो गया; विरिञ्चन्ते मुतल–ब्रह्मा आदि; मेल् कीऴ् काट्टिय–ऊपर और नीचे के भुवनों में रहनेवाले; उयिर्कळ् ऍल्लाम्–सभी जीवों ने; अरुन्तित्त–पीकर; कळित्त–आनन्दानुभव किया; मीट्टु–फिर; इति उरैप्पतु ऍन्ने–कहना क्या है। १०२८

जब उन्होंने अपने अंजलि-सम्पुट से जटायु को जलदान किया, तब मानो वह उनके ही उदर में पहुँच गया। उसके फलस्वरूप ब्रह्मा से लेकर ऊपर और नीचे के सभी लोकों के जीवों ने जल का अशन कर आनन्दानुभव किया! फिर कहने को क्या है? । १०२८

पल्वहैत् तुऱैयिल् वेदप् पलिक्कडऩ् पलवु मुट्रि
विल्वहैक् कुमर निऩ्ऱ वेलैयिन् वेलै शार्न्दान्
तॊल्वहैक् कुलत्तिऩ् वन्दान् ऱुन्बत्ताऱ् पुनलुन् दोय्न्दु
शॆल्वहैक् कुरिय वॆल्लाम् जॆय्हुवा ऩॆऩ्ऩ वॆय्योन् 1029

पल् वकैयिल्–(शास्त्र-विहित) विविध प्रकार से; वेत–वेदोक्त विधि के अनुसार; पलि कटन् पलवुम्–बलि आदि अनेक दान; मुट्रि–पूरा करके; विल् वकै कुमरन्–धनुर्धर कुमार; निन्ऱ वेलैयिन्–जब रहे, तब; वॆय्योन्–सूर्य; तॊल् वकै कुलत्तिन् वन्तान्–प्राचीन (काश्यप-)कुल में आये; तुन्पत्ताल्–(जटायु की मृत्यु से) उत्पन्न दुःख से; पुनलुम् तोयन्तु–जल में स्नान करके; चॆल् वकैक्कु उरिय–गम्य श्रेष्ठ गति में पहुँचाने योग्य; ऍल्लाम्–सभी (तर्पण) संस्कार; चॆय्कुवान् ऍन्न–मानो स्वयं करेंगे, ऐसा; वेलै चार्न्तान्–(पश्चिमी) सागर में मग्न हुए। १०२९

धनुर्धर श्रीराम अनेक रूप से शास्त्रों में विहित वेदसम्मत बलिदान आदि संस्कार पूरा किया। जब वे उनसे निवृत्त हुए, तब सूर्य भी पश्चिमी सागर में डूब गये। शायद वे भी प्राचीन काश्यपकुल में आये जटायु को उद्गति में पहुँचाने के लिए पितृकर्म करने के हेतु गये। सूर्य जटायु के ज्ञाति थे। १०२९

10. अयोमुहिप् पडलम् (अयोमुखी पटल)

अन्दिवन् दणुहुम् वेलै यव्वऴि यवरु नीङ्गिच्
चिन्दुरच् चॆन्नित् ताण्डोर् मैवरैच् चेक्कै कॊण्डार्
इन्दिरऱ् कडङ्गल् शॆल्ला विराक्कद रॆऴुन्द दॆन्न
वॆन्दुयरक् कूऱ्ऱ मान विरियिरुळ् वीङ्गिर् ऱन्ऱे 1030

अन्ति वन्तु अणुकुम् वेलै–जब सन्ध्यावेला आयी, तब; अवरुम्–वे भी; अ वऴि नीङ्कि–वहाँ से चलकर; आण्टु–उस वन में; चिन्तुर चॆन्नित्तु–लाल शिखरों से युक्त; ओर् मै वरै–एक काले पर्वत पर; चेक्कै कॊण्टार्–ठहरे; इन्तिरऱ्कु अटङ्कल् चॆल्ला–इन्द्र के वश में न आनेवाले; इराक्कतर् ऍऴुन्ततु ऍन्न–राक्षस

उठे हों, ऐसा; वॅम् तुयरुक्कु-असह्य (विरह-)वेदना का; ऊऱ्ऱम् आऩ-वलदायक; विरि इरुळ्-विस्तृत अन्धकार; वीङ्किऱ्ऱु-घना हो आया। १०३०

शाम आ गयी। श्रीराम और लक्ष्मण वहाँ से चलकर एक अरुण-शिखर काले पर्वत पर जाकर ठहरे। तब अन्धकार, देवेन्द्र का वश तोड़कर चले आनेवाले राक्षसों के समूह के समान घना फैला। १०३०

तेऩुह वरुवि शिऩ्दित् तॅरुमर लुरुव पोलक्
काऩमु मलैयु मॅल्लाङ् गण्णिऩी रुहुक्कुङ् गङ्गुल्
मानमुञ् जिनमुन् दादै मरणमु ममैन्द शिन्दै
ञानमुन् दुयरुन् दम्मुण् मलैन्दॅन नलिन्द दन्ऱे 1031

काऩमुम् मलैयुम् ॲल्लाम्-वन, पर्वत, सभी; तॅरुमरल् उरुव पोल-दुःखी होते हों जैसे; उकु तेऩ्-जो चूते उस शहद (कणों)को; अरुवि-(और) सरिताओं को; चिन्ति-बहाकर; कण्णिऩ् नीर् उकुक्कुम्-अश्रुजल बहानेवाला; कङ्कुल-अन्धकार; माऩमुम्-स्वाभिमान; चिऩमुम्-और क्रोध; तातै मरणमुम्-पिता (-सम जटायु का) मरण-दुःख; अमैन्त चिन्तै-इनसे भरे (श्रीराम और लक्ष्मण के) मन में; ञाऩमुम् तुयरुम्-ज्ञान और दुःख; तम्मुळ् मलैन्तु ॲऩ-आपस में टकराते हों, जैसे; नलिन्ततु-(अन्धकार ने) बढ़ती पायी। १०३१

श्रीराम और लक्ष्मण की व्यथा देखकर मानो वन और पर्वत दुःखी हुए। वन शहद रूपी आँसू बरसा रहे थे और पर्वत सरिताओं के रूप में अश्रु की धारा बहा रहे थे। अन्धकार ऐसा आक्रान्त करता हुआ बढ़ा, जैसा स्वाभिमान, क्रोध और पितृ-मरण-दुःख से भरे श्रीराम और लक्ष्मण के मन में ज्ञान और दुःख दोनों मे परस्पर टकराहट हुई थी और दुःख प्रबल हो आया था। १०३१

मॅय्युऱ वुणर्वु शॅल्ला वऱिविनै वित्तैयि नक्कुम्
पॉय्युऱु पिऱवि पोलप् पोक्करुम् बॊङ्गु कङ्गुल्
नॅय्युऱु नॅरुप्पिन् वीङ्गि निमिर्दर वुयिर्प्पु नीळक्
कैयुऱ वुऱुहिन् ऱाराऱ् काणलाङ् गरैयिऱ् ऱन्ऱे 1032

मॅय् उणर्वु उऱ चॅल्ला-सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित; अऱिविनै-बुद्धि को; वित्तैयिन् ऊक्कुम्-कर्मफलानुसार चलानेवाले; पॉय् उऱु पिऱवि पोल-अनित्य जन्म की तरह; पोक्कु अरुम्-अनिवार्य; पॊङ्कु कङ्कुल्-वर्धनशील अन्धकार; नॅय् उऱु नॅरुप्पिन् वीङ्कि-घृत-लगी अग्नि के समान बढ़कर; निमिर् तर-फैला तब; उयिर्प्पु नीळ-लम्बी साँस छोड़कर; कैयुऱवु-निष्क्रिय; उऱुकिन्ऱाराल्-बने रहे तब; काणलाम् करैयिऱ्ऱु-अदृश्य किनारा वाला हो गया। १०३२

सुदृढ़ आत्मज्ञान-रहित बुद्धि को जैसे अनित्य जन्म कर्मफल के रास्ते में हठात् चलाता है, वैसे वह दुर्दम वर्धनशील निशा घृतपीत अग्नि के

समान बढ़ती चली और निःश्वास छोड़ते हुए जो दुःखी हो रहे थे उन दोनों के लिए उसका तट (अन्त) अदृश्य हो रहा। १०३२

यामदु तॅरिद ऱॅड्ऱा मिऩ्ऩुयिर्च् चऩहि यॅऩ्ऩुम्
कामरु तिरुवै नीत्तो मुहमदि काण्गि लादो
तेमरु तॅरियल् वीरऩ् कण्णॅऩत् तॅरिन्द शॅय्य
तामरै कङ्गुर् पोदुङ् गुविऩ्दिल तऩ्मै यॅऩ्ऩो 1033

ते मरु–दिव्य गन्ध वाली; तॅरियल् वीरऩ्–मालाधारी वीर; कण् ॲऩ तॅरिन्त–के नेत्र के समान विद्यमान; चॅय्य तामरै–लाल कमलपुष्प; कङ्कुल् पोतुम्–रात में भी; कुविऩ्तिल–बन्द नहीं हुए; इऩ् उयिर्–मधुर प्राण-सम; चऩकि ॲऩ्ऩुम्–जानकी नाम की; कामरु तिरुवै–अपनी सुन्दर श्री को; नीत्तो–त्यागकर; मुक मति–मुख-चन्द्र; काण्किलातो–न देखकर; ॲऩ्ऩो–और किस कारण; याम् अतु–हम वह; तॅरितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं सकते। १०३३

दिव्यगन्धपूर्ण मालाधारी श्रीराम के नेत्रों के समान जो लाल कमल-पुष्प रहे, वे उन्मीलित नहीं हुए। रात का समय था तब भी वे बन्द नहीं हुए। क्या कारण था? उनकी श्री उनसे अलग हो गयी, इसलिए? या उनका मुख चन्द्र नहीं दिखाई दिया, इसलिए? या कोई अन्य कारण था? हमें विदित नहीं होता! । १०३३

पॅण्णियऱ् ऱीब मऩ्ऩ पेरॅऴि लाट्टि माट्टु
नण्णिय पिरिवु शॅय्द नवैयिना रवर्हळ् शिन्दै
ॲण्णिय दऱिद ऱेऱ्ऱा मिमैप्पिल विराम ऩॅऩ्ऩुम्
पुण्णियऩ् कण्णुम् वऩ्ऱोट् टम्बिहण् पोऩ्ऱ वऩ्ऱे 1034

पॅण् इयल्–स्त्री जाती की; तीपम् अऩ्ऩ–दीप के समान; पेर् ॲऴिलाट्टि माट्टु–अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति; नण्णिय–किया गया; पिरिवु–वियोग; चॅय्त–जिन्होंने करवाया; नवैयिऩार् अवर्कळ्–उन पापियों ने; चिन्तै ॲण्णियतु–मन में (क्या) सोचा, वह; अऱितल् तेऱ्ऱाम्–जान नहीं पाते हम; इरामऩ्–श्रीराम; ॲऩ्ऩुम् पुण्णियऩ् कण्णुम्–पुण्यपुरुष की आँखें; वऩ् तोळ्–बली भुजाओं के; तम्पि कण् पोऩ्ऱतु–छोटे भाई की आँखों की-सी (हालत में) रहीं। १०३४

पापी राक्षसों ने स्त्री-स्वरूप दीप-सी अत्यन्त सुन्दरी सीता के प्रति श्रीराम-वियोग का बहुत बड़ा अपराध किया था। वे लोग क्या सोचते रहे? यह जानने का सामर्थ्य हममें नहीं है। पर पुण्यपुरुष श्रीराम की आँखें और वीरबाहु लक्ष्मण की आँखें—ये निर्निमेष रहीं। १०३४

वण्डुळर् कोदैच् चीदै वाण्मुहम् बॉलिय वाऩिल्
कण्डऩॅ ऩॅऩ्ऱु वीरर् काण्डॊरु कादल् काट्टल्

तण्डमिऴ्त् तॆऩ्ड्र लॆऩ्ऩुङ् गोळरात् तवऴुम् जारल्
विण्डलम् विळङ्गुम् जॆव्वि वॆण्मदि विरिन्द दऩ्ड्रे 1035

वण्टु उळर्–भ्रमर जिसको कुरेदते हैं; कोतै चीतै–वैसी केश वाली सीता का; वाळ् मुकम्–प्रकाशमय मुख; वाऩिल् पॊलिय–आकाश में शोभा; कण्टऩॆऩ् ऎऩ्ऱु–मैंने देखा, ऐसा; वीरऱ्कु–श्रीरघुवीर को; आण्टु–तव; ओरु कातल् काट्ट–एक (मोहक भ्रम) पैदा करते हुए; तण् तमिऴ् तॆऩ्ऱल् ऎऩ्ऩुम्–शीतल मधुर मलयपवन रूपी; कोळ् अरा–भयंकर सर्प; तवऴुम् चारल्–जहाँ मन्द-मन्द चलता था, उस पर्वत तल में; विण् तलम् विळङ्कुम्–आकाश में शोभायमान; चॆव्वि–आकर्षक; वॆण् मति–श्वेत चन्द्रमा; विरिन्ततु–चाँदनी फैलाता हुआ निकला। १०३५

तब चन्द्र उदित हो आया, मानो वह वीर रघुवर श्रीराम के मन में यह मोहक प्यारा भ्रम पैदा करना चाहता था कि मैंने आकाश में सुकेशिनी सीता का मुख देखा था, जिसके केश पर भ्रमर बैठे कुरेदते है। जिस पर्वत के ऊपर यह चन्द्र दिखाई दिया, उस पर्वत-तल में शीतल मधुर (तमिऴ का अर्थ मधुर है) मलयपवन भी मन्द-मन्द वहा। पर वह श्रीराम के लिए भयंकर सर्प के समान रेंगता लगा! । १०३५

कळियुडै यनङ्गक् कळ्वऩ् करन्दुरै कङ्गुऱ् कालम्
वॆळिपडुत् तुलह मॆल्लाम् विळक्किय निलविन् वॆळ्ळम्
नळियिरुट् पिळम्बॆऩ् ड्रीण्डु नञ्जॊडु कलन्द नाहत्
तुळैयॆयिऱ् ड्रूड्र लुड्र कऩलॆऩच् चुट्ट दऩ्ड्रे 1036

कळि उटै–मत्त; अऩङ्क कळ्वऩ्–चोर अनंग; करन्तु उरै–जब छिपा रहता है; कङ्कुल् कालम्–उस रात के समय में; उलकम् ऎल्लाम्–सारे लोक को; वॆळिप्पटुत्तु विळक्किय–श्वेत प्रकट करनेवाला; निलविऩ् वॆळ्ळम्–चाँदनी का प्रवाह; ईण्टु–अव; नळि इरुळ् पिळम्पु ऎऩ्ऱु–अधिक अन्धकार के पुंज के समान मान्य; नञ्चु ओटु कलन्त–विष से मिला; नाक–सर्प के; तुळै ऎयिऱु–छिद्रसहित दाँत से; ऊऱ्ऱल् उऱ्ऱ–रिसनेवाले; कऩल् ऎऩ–(विष की) आग के समान; चुट्टतु–जलाने लगा। १०३६

उस रात को, जिसमें मत्त चोर अनंग छिपा फिरता था, चन्द्र सारे जग को उज्ज्वल करता हुआ उदित हुआ। पर वह उस विषाग्नि के समान जलाने लगा, जो अन्धकारपुंज के समान काला और विषैले नाग के दाँत के छिद्र से बाहर निकला था। १०३६

इडम्बडु मानन् दुन्नव मिरण्डुम् वन्दुड्र पोऴ्दिल्
विडम्बरन् दनैय दाय वॆण्णिला वॆंदुप्प वीरन्
पडम्बरन् दनैय वल्हुल् पाल्परन् दनैय तीञ्जॊल्
तडम्बड कण्णि नाडन् ड्रनिमैयै निन्नैय लुड्रान् 1037

इटम् पट्टु–विशाल; मानम्–अपमान; तुन्पम्–दुःख; इरण्टुम्–दोनों; वन्तु उऱ्ऱ पोऴ्तिन्–जब प्राप्त हुए, तब; विटम् परन्तु अनैय–विष फैला जैसे; वॆळ् निला वॆंतुप्प–श्वेत चन्द्रमा ने तप्त किया तो; वीरन्–श्रीरघुवीर; पटम् परन्तु अनैय–(सर्प-) फन खुला (जो है) वैसा; अल्कुल–वरांग; पाल् परन्त अनैय–दूध-भरा हो वैसी; तीम् चॊल्–मधुर बोली; तटम् पट्टु कण्णिनाळ्–विशाल आँखें, इनसे युक्त सीताजी का; तनिमैयै–एकाकीपन को; निनैयल् उऱ्ऱान्–सोचने लगे। १०३७

श्रीराम को अपमान और दुःख का अनुभव सताने लगा। इसलिए श्वेत चन्द्रमा, शरीर में विष व्याप्त हो ऐसा उन्हें तपाने लगा। तब वे श्रीरघुवीर सर्पफन के समान विशाल वरांग, दुग्धसम मधुर बोली और विशाल आँखें —इनसे शोभित सीताजी के एकाकीपन के बारे में सोचने लगे। १०३७

मडित्त वायन् वयङ्गु मुयिर्प्पिनन्
तुडित्तु वीङ्गि यॊडुङ्गुरु तोळिनन्
पॊडित्त तण्डळिर्प् पूवॊडु माल्करि
ऒडित्त कॊम्बनै याडिऱ्ऱ् तुन्नुवान् 1038

मटित्त वायन्–ओंठ चबाते हुए; वयङ्कुम् उयिर्प्पिनन–ठण्डी आह भरते हुए; तुटित्तु वीङ्कि–तड़पकर, फूलकर; ऒटुङ्कुरु तोळिनन्–फिर शिथिल पड़नेवाले कन्धों से युक्त श्रीराम; पॊटित्त तण् तळिर्–तभी प्रकट हुए शीतल पल्लवों; पूवॊटुम्–और फूलों के साथ; माल् करि–बड़े हाथी द्वारा; ऒटित्त–तोड़ी गयी; कॊम्पु अनैयाळ्–पुष्पशाखा-तुल्य; तिऱत्तु–(सीताजी) के सम्बन्ध में; उन्नुवान्–सोचने लगे। १०३८

वे ओंठ चबाते हुए दीर्घ निःश्वास छोड़ने लगे। उनके कन्धे फूल उठते फिर पतले हो जाते। वे उन सीताजी के सम्बन्ध में सोचने लगे, जो सद्यप्रकटित कोमल पल्लवों और फूलों के साथ किसी गज द्वारा तोड़ी गयी पुष्पशाखा के समान थीं। १०३८

वाङ्गु विल्लन् वरुम्वरु मॆन्ऱिरु
पाङ्गु नीणॆऱि पार्त्तन ळॊवॆन्नुम्
वीङ्गु वेलै विरितिरै यामॆन
ओङ्गि योङ्गि यॊडुङ्गु मुयिर्प्पिनान् 1039

वीङ्कु वेलै–उमगते हुए समुद्र की; विरि तिरै आम् ऎन–बढ़ती हुई तरंगों के समान; ओङ्कि ओङ्कि ऒटुङ्कुम् उयिर्प्पिनान्–फूलकर थमनेवाली साँसों के साथ; वाङ्कु विल्लन्–झुके धनुष के साथ; वरुम् वरुम्–आयेंगे, आयेंगे; ऎन्ऱु–सोचकर; इरु पाङ्कुम्–दोनों ओर; नीळ नॆऱि पार्त्तनळो–लम्बी बाट जोहती रही क्या; ऎन्नुम्–श्रीराम यह कहते। १०३९

श्रीराम की साँसें उमगते सागर की उठती लहरों के समान उठतीं

और गिरती। वे सोचते कि शायद सीता यह सोचकर कि झुके धनुप के साथ श्रीराम आ जायँगे, अवश्य आ जायँगे दोनों ओर लम्बा बाट जोह रही हों। १०३९

अन्ऩि ऩैन्दन ळेंऩ्वदु शालुमो
मिऩ्ऩि नैन्द विलङ्गु मॅयिऱ्ऱिऩाऩ्
निन्नि लॅऩ्ऱु नॆरुक्किय पोदवळ्
अॅन्ऩि नैन्दन ळॊवॅन्न वॅण्णुमाल् 1040

मिन् नित्तॅन्त–विद्युत का स्मरण दिलानेवाले; विलङ्कुम् अॅयिऱ्ऱित्ताऩ्–शोभायमान दाँत वाले; निल् निल् अॅऩ्ऱु–खड़ा रह, खड़ा रह कहते हुए; नॅरुङ्किय पोतु–(रावण) जब नियराया तब; अवळ्–(सीता) उसने; अॅन् नितॅन्तऩळो–क्या सोचा होगा; अॅऩ्पतु चालुमो–यह समझना साध्य है क्या; अॅन् नितॅन्तऩळ् ओ–क्या सोचकर चिन्तित हुई; अॅन्न अॅण्णुम्–ऐसा विचार करते (श्रीराम)। १०४०

विद्युत का स्मरण दिलानेवाले दाँतों से युक्त रावण, 'ठहर जा, खड़ी रह' कहता हुआ जब सीता के पास आया, तब सीताजी ने क्या सोचा होगा? श्रीराम यह समझने का प्रयास करते। नहीं। यह अनुमान करना साध्य नहीं है! बेचारी! क्या ही सोचा होगा? यह प्रश्न करते हुए श्रीराम दुःख का अनुभव करते। १०४०

नञ्जु कालु नहैनॆंडु नाहत्तिऩ्
वञ्ज वायिऩ् मदियॆंन्न मट्कुवाळ्
वॅञ्जि नञ्जॆं यरक्करतम्
अञ्जि नान्गॊलॅन्ऩ् ऱैयुरु मालॅन्ऩवाऩ् 1041

नञ्चु कालुम्–विष-स्रावक; नकै नॆंटु नाकत्तिऩ्–दाँतों वाले (राहु नाम के) लम्बे सर्प के; वञ्च वायिऩ्–भयंकर मुख में (ग्रस्त); मति अॅन्न–चन्द्र के समान; मट्कुवाळ–क्षीण होनेवाली सीता; वॅम् चिऩम् चॅय्–भयंकर क्रोधकारी; अरक्कर् तम् वॅम्मैयै–राक्षसों के क्रोध से; अञ्चिऩाऩ् कॊल्–श्रीराम डर गये शायद; अॅऩ्ऱु ऐयुरुम् आल्–ऐसा संशय करती होगी; अॅऩ्पाऩ्–ऐसा (श्रीराम) सोचते। १०४१

फिर सोचते— विष-स्रावक दाँतों के (राहु) सर्प के मुख में ग्रस्त चन्द्र के समान सीता क्षीण होती होगी। वह शायद ऐसा संशय करती है कि भयंकर क्रोधी राक्षसों की क्रूरता से श्रीराम भयभीत हो गये हैं। १०४१

पूण्ड मानमुम् बोक्करुङ् गादलुम्
तूण्ड निन्ऱिडै तोमुरु मारुयिर्
मीण्डु मीण्डु वॅंदुप्प वॅंदुम्बिनाऩ्
वेण्डु मोवॅन्नक् किन्नमुम् विल्लॅन्ऩबाऩ् 1042

पूण्ट मातमुम्–प्राप्त अपमान; पोक्कु अरुम् कातलुम्–और अचल (सीता-)

प्रेम (से); तूण्ट निन्ऱ-प्रेरित होकर; इटै-मध्य में; तोम् उऴम्-कष्ट उठानेवाले; आर् उयिर्-अपने प्रिय प्राणों को; मीण्टुम् मीण्टुम्-पुनःपुनः; वॆंतुप्प-तापने से; वॆंतुम्पिनान्-संतप्त श्रीराम; इन्नमुम्-अब भी; ॲन्नक्कु-मुझे; विल् वेण्टुमो-धनु चाहिए क्या; ॲन्पान्-कहते। १०४२

उनके प्राण टिके रहे तो उसका कारण अपमान का भाव और अचल (सीता-) प्रेम की प्रेरणा था। तो भी वे प्राण पुनःपुनः तप्त हो रहे थे। इसलिए वे खिन्नमन होकर यह अपने से पूछते कि क्या मुझे अब भी एक धनु रखना है ? । १०४२

विल्लै नोक्कि नहुमिह् वीङ्गुतोळ्
कल्लै नोक्कि नहुङ्गडैक् कालवरुम्
शॊल्लै नोक्कित् तुणुक्कुरुन् दॊन्मऱै
ॲल्लै नोक्किनर् यावरु नोक्कुवान् 1043

तॊल् मऱै ॲल्लै-नोक्कितर्-प्राचीन वेदों के पारंगत; यावरुम्-सभी (ज्ञानियों) द्वारा; नोक्कुवान्-वन्द्य; विल्लै नोक्कि नकुम्-धनु को देखकर हँसते; मिक वीङ्कुम्-अति पुष्ट; तोळ् कल्लै नोक्कि-कन्धों के पर्वतों को देखकर; नकुम्-हँसते; कटै काल् वरुम्-अन्त में मिलनेवाला; चॊल्लै नोक्कि-निन्दा का कथन सोचकर; तुणुक्कु ॲनुम्-सिहर उठते। १०४३

श्रीराम सनातन वेदों के पारंगत ज्ञानियों से भी अन्वेषित परमपुरुष थे। वे अपने धनु को देख (उसकी व्यर्थता पर) हँसते। अपने उन्नत पर्वत-सम कन्धों को देखकर हँसते। आखिर जो अपमान होगा, उसकी कल्पना करके सिहर उठते। १०४३

कूदिर् वाडैवॆंङ् गूऱ्ऱिनै नोक्किनान्, वेद वेळ्वि विदिमुऱै मेविय
शीदै यॆन्वयिऱ् ऱीर्न्दन ळोवॆनुम्, पोद हम्मॆनप् पॊम्मॆ नुयिर्प्पिनान् 1044

कूतिर् वाटै वॆम् कूऱ्ऱिनै-शरद की उदीची हवा रूपी निर्मम यम को; नोक्किनान्-देखकर; पोतकम् ॲन-गज के समान; पॊम् ॲन उयिर्प्पिनान्-'बम्ह' शब्द के साथ निःश्वास छोड़ते हुए; वेत वेळ्वि विति मुऱै-वेदोक्त होम आदि करके; मेविय-विवाहित; चीतै-सीता; ॲन् वयिन्-मुझसे; तीर्न्तनळो-(सदा के लिए) छूट गई क्या; ॲनुम्-कहते। १०४४

शरदकालीन ठण्डी उदीची के समान बहनेवाली वायु रूपी यम को देखकर गज के समान श्रीराम ने 'बम्ह' शब्द के साथ निःश्वास छोड़ा। फिर सोचा कि क्या वेदविहित होम आदि करके जिस सीता को मैंने ब्याहा था, वह मुझे छोड़कर सदा के लिए चली (मर) गयी ? । १०४४

निन्ऱ पल्लुयिर् काल्तऱ्कु नेर्न्दयान्, ॲन्ऱु णॆक्कुल मङ्गैयॊ रॆन्ऱिळै
तन्ऱ यर्क्कड ऱीर्क्कुञ् जदिरिलेन्, नन्ऱु नन्ऱॆन् वलियॆन नाणुमाल् 1045

निन्ऱु–राजा रहकर; पल् उयिर् कात्तऱ्‌कु–नाना जीवों की रक्षा करने हेतु; नेर्न्त यान्–नियत मैं; ॲन् तुणै–अपनी संगिनी; कुल मङ्कै–उच्च कुलीन; ओर एन्तिऴै तन्–एक रमणी को; तुयर् कटल् तीर्क्कुम्–दुःख-सागर से तारने की; चत्तिर् इलेन्–शक्ति नहीं रखता; ॲन् वलि नन्ऱु–मेरा बल बड़ा अच्छा है; नन्ऱु ॲन–अच्छा है, कहकर; नाणुम्–शरमाते। १०४५

मैं राजा बनने को हूँ और राजा का काम है अनेक जीवों की रक्षा करना। किन्तु मैं अपनी ही संगिनी को, उच्च कुलोद्‌भवा सुन्दरी स्त्री को दुःख-सागर से तारने में असमर्थ साबित हो गया। हाँ! मेरी शक्ति का भी क्या कहना? मेरा बल बड़ा अच्छा, अच्छा है! यह कहते हुए श्रीराम लज्जा प्रकट करते। १०४५

शायुन् दम्बि तिरुत्तिय तण्डळिर्, तीयु मङ्गवै तीय्दलुञ् जॅव्विरुन्
दायु मावि पुळुङ्ग वळुङ्गुमाल्, वायुम् नॅञ्जुम् बुलर मयङ्गुवान् 1046

वायुम् नॅञ्चुम्–मुख और गला; पुलर–सूख जाते; मयङ्कुवान्–वे बेहोश हो जाते; तम्पि तिरुत्तिय–अनुज के द्वारा अच्छी तरह सजाए गये; तण् तळिर्–शीतल पल्लवों पर; चायुम्–लेटते; अङ्कु अवै तीयुम्–वे तब झुलस जाते; तीय्तलुम्–झुलसते ही; चॅम् इरुन्तु–सीधे बैठे; आयुम्–मन में तर्क करते; आवि पुळुङ्क–प्राणतप्त होकर; अळुङ्कुम्–जर्जर हो जाते। १०४६

श्रीराम का मुख सूख गया। गला सूख गया। लक्ष्मण ने शीतल पल्लवों को बिछाकर अच्छी शय्या बना दी थी। श्रीराम बेहोश-से होकर उस पर लेटते। पर पल्लवों के झुलस जाने से वे उठ बैठते। बैठे हुए मन में तर्क करते। प्राणों के सूखने से शिथिल पड़ जाते। १०४६

पिरिन्द वेदुहोल् पेरवि मानङ्गोल्
तॅरिन्द दिल्लै तिरुमलर्क् कण्णिमै
पॉरुन्द वायिरङ् गऱ्पङ्गळ् पोक्कुवान्
इरुन्दुङ् गण्डिलन् कङ्गुलि नीऱ्ऱो 1047

तिरु मलर् कण् इमै–सुन्दर कमल-सम आँख के पलकों के; पॉरुन्त–लगने की उतनी देर में; आयिरम् कऱ्पङ्कळ् पोक्कुवान्–सहस्र कल्प जो मिटा सकते हैं; इरुन्तु–(वे) बैठे रहकर; कङ्कुलिन् ईऱु–रात का अन्त; कण्डिलन्–देख नहीं पाये; पिरिन्त एतु कोल्–वियोग उसका कारण था क्या; पेर् अपिमानम् कोल्–गम्भीर प्रेम क्या; तॅरिन्ततु इल्लै–विदित नहीं हुआ। १०४७

वे श्रीराम स्वयं परमात्मा थे, जिनके पलकों के लगने की उतनी देर में अनेक कल्प बीत सकते थे। पर अब वे श्रीराम काले अँधेरे की रात का अन्त न होता समझ कष्ट उठा रहे हैं! इसका क्या कारण है? सीता-वियोग है या सीता का प्रेम? विदित नहीं होता। १०४७

वॆऩ्ऱि विऱ्कै यिळैयव मेलॆलाम्
ऒऩ्ऱु पोल वुलप्पिल नाट्कडाम्
निऩ्ऱु काण्डियऩ् ऱॆऩ्ऩुङ् गङ्गुलाऩ्
इऩ्ऱु नीळ्वदऱ् कॆदुवॆऩ् ऱॆऩ्ऩुमाल् 1048

(लक्ष्मण से) वॆऩ्ऱि विल् कै–विजयी धनुर्हस्त; इळैयव–छोटे भैया; मेल् ऎलाम्–पहले सदा; ऒऩ्ऱु पोल–एक ही सम; उलप्पु इल नाट्कळ्–लम्बे दिनों में; निऩ्ऱु काण्टि अऩ्ऱे–(अनिद्र) रहकर देखते रहे न; इऩ्ऱु नॆट्टुम् कङ्कुल्–आज की यह लम्बी रात; नीळ्वतऱ्कु–इस तरह बढ़ती है, इसका; एतु ऎऩ्–हेतु क्या है; ऎऩ्ऩुम्–(श्रीराम) पूछते । १०४८

श्रीराम अपने दुःखोद्वेग में लक्ष्मण से पूछते कि छोटे भैया ! पहले समान रूप से सभी दिनों में तुम अनिद्र हो जागते रहे हो ! आज यह रात इतनी लम्बी बन रही है । इसका कारण क्या है ? । १०४८

नीण्ड मालै मदियिऩै नित्तलुम्
मीण्डु मीण्डु मॆलिन्दऩै वॆळ्हुवाय्
पूण्ड पूणवळ् वाण्मुहम् बोदर
ईण्डु शाल विळङ्गिऩै यॆऩ्ऩुमाल् 1049

मालै नीण्ट मतियितै–सन्ध्या में ही पूर्ण बने चन्द्र को; नित्तलुम्–दिने-दिने; मीण्टुम् मीण्टुम्–पुनःपुनः; मॆलिन्तऩै वॆळ्कुवाय्–(अपनी हीनता पर) घटते लजाते थे; पूण्ट पूणवळ्–आभरणभूषिता सीता के; वाळ् मुकम्–उज्ज्वल मुख के; पोतर–कहीं चले जाने से; ईण्टु चाल विळङ्कितै–यहाँ अपना ठाठ दिखाते हो; ऎऩ्ऩुमाल्–कहते । १०४९

सन्ध्या में ही श्रीराम ने पूर्णचन्द्र को देखा । तो पूछ बैठे कि चाँद ! तुम दिनोंदिन सीताजी के मुख से तुलने की शक्ति न रखने के कारण लज्जित और क्षीण हुए जाते रहे ! अब आभरणभूषित सीताजी का उज्ज्वल मुख यहाँ नहीं रहता, क्या इसी कारण अपना ठाठ दिखा रहे हो ? । १०४९

नीणि लावि निशैनिऱै तऩ्गुलत्, ताणि यऩ्ऩ पऴिवर वऩ्ऩदु
नाणि नाडु कडन्दऩ नाङ्गॊलो, शेणु लान्दनित् तेरव ऩॆऩ्ऩुमाल् 1050

चेण् उलाम्–उच्च आकाश में संचार करनेवाले; तनि तेर् अवऩ्–अनुपम (एकचक्र) रथ के रथी सूर्य; नीळ् निलाविऩ्–विस्तृत चाँदनी-सम; इचै निऱै–प्रशंसा से भरे; तऩ् कुलत्तु–अपने कुल पर; आणि अऩ्ऩ पऴि वर–कील के समान (गम्भीर गड़ा) अपयश आया, इसलिए; अऩ्नतु नाणि–उससे शरम खाकर; नाटु कटन्तऩऩ् आम् कॊलो–देश छोड़कर चला गया क्या; ऎऩ्ऩुम्–कहते । १०५०

यह सूर्य कहाँ गये ? आकाश में अप्रमेय एकचक्र-रथ में संचार करनेवाले सूर्य क्या यह सोचकर लज्जा के कारण इस देश से बाहर हो गये

कि हमारे कुल की विस्तृत चाँदनी-सम कीर्ति मिट गयी और उस पर कलंक लग गया है ? श्रीराम यह प्रश्न करते । १०५०

शुट्ट कङ्गु नॅडिदॅन्नच् चोर्हिन्ऱान्
मुट्टि ळन्द नॅडुमुडक् कोनॉडुम्
कट्टि वाळरक् कन्गदि रोन्नैयुम्
इट्ट नन्गॉ लिरुञ्जिऱै यॅन्नुमाल् 1051

चुट्ट कङ्कुल–(श्रीराम को) जिसने जलाया, वह रात; नॅटितु ॲन–लम्बी है, सोचकर; चोर्कित्ऱान्–मुरझाते है; वाळ् अरक्कन्–कठोर राक्षस ने; मुट्टु इळन्त–घुटनों से रहित; नॅटु मुट कोन् ओटुम्–बड़े लँगड़े साथी अरुण के साथ; कतिरोनैयुम्–सूर्य को भी; कट्टि–बाँधकर; इरुम् चिऱै–बड़ी कारा में; इट्टतन् कोल्–बन्द कर दिया गया; ॲन्नुम्–कहते । १०५१

यह रात लम्बी है और मुझे जलाती है ! ऐसा अनुभव करके श्रीराम बहुत वेदना से छटपटाते । वे अनुमान लगाते कि क्रूर राक्षस ने घुटनों से रहित लँगड़े अरुणदेव (सूर्य-सारथी) के साथ सूर्य को भी बाँधकर बड़ी और विकट कारा में बन्द रख दिया है ! । १०५१

तुडियि नेरिडै तोन्ऱल ळामॅनिल्
कडिय कारिरुट् कङ्गुलिन् कऱ्पम्बोय्
मुडियु माहिन् मुडियुमिम् मूरिनीर्
नॅडिय नानिल मॅन्न निनैक्कुमाल् 1052

तुटियित् नेर्–डमरू-समान; इटै–कमर वाली; तोन्ऱलळ् आम् ॲतिल्–मुझसे न देखी जायगी; कटिय–घृणित; कार् इरुळ्–काले अन्धकार की; कङ्कुलिन्–रात रूपी; कऱ्पम् पोय् मुटियुम् आकिल्–कल्प अन्त हो जायगा तो; इ मूरि नीर्–इस बलवान सागर से; नॅटिय नाल् निलम्–(घिरी) विस्तृत चतुर्विधा भूमि भी; मुटियुम्–मिट जायगी; ॲन्न निनैक्कुम्–यह विचार करते । १०५२

श्रीराम यह सोचते कि डमरू-सी कटि वाली मेरी सीता मेरे सामने प्रकट नहीं होगी और उसी स्थिति में काले अन्धकार की यह रात रूपी कल्प अन्त हो जायगा तो यह बलवान सागर से वलयित पृथ्वी भी मिट जायगी । १०५२

तिऱत्ति नादन्न शॅय्दवत् तोरुऱ, ऑऱुत्तु ञालत् तुयिर्तमै युण्डुळल्
मऱत्ति नार्हळ् वलिन्दनर् वाळ्वरेल्, अऱत्ति नालिनि यावदॆ नॅन्नुमाल् 1053

तिऱत्तु–शक्ति से; चॅय् तवत्तोर्–कर्तव्य तप के तपस्वी; इन्नातन उऱ–कष्ट पायें; ऑऱुत्तु–ऐसा उनको पीड़ित करके; ञालत्तु उयिर् तमै उण्टु–लोकों के वासी जीवों को खाकर; उळल्–घूमते हैं (जो); मऱत्तितार्कळ्–वे बली राक्षस;

वलिन्ततर् वाळ्वरेल्–(वैसे ही) अत्याचार करते जीते रहेंगे तो; इत्ति अऱ्ऱुत्तिताल् आवतु–अब धर्म से होनेवाला; ॲन्–क्या; ॲन्नुम्–कहते। १०५३

ये राक्षस अपने मनोबल के साथ कर्तव्य तपस्या में लीन रहनेवाले तपस्वियों को कष्ट देते हैं और त्रस्त करते हैं। वे विश्व के सारे जीवों को खाते फिरते हैं। वे इसी प्रकार आततायी बने जीवित रहेंगे तो धर्म से क्या होनेवाला है? —श्रीराम दुःख के साथ सोचते। १०५३

तेनिन् ऱॅय्वत् तिरुनॅडु नाण्शिलैप्, पूनिन् ऱॅय्युम् पॉरुहणै वीरनुम्
मेनिन् ऱॅय्य विमलनै नोक्किनान्, तानिन् ऱॅय्य किलान्तडु माऱुवान् 1054

तेनिन्–भ्रमरों की बनी; तॅय्व तिरु नॅटु नाण्–दिव्य सुन्दर लम्बी ज्या को; चिलै–(इक्षु-) धनु में बाँधकर; पॉरु कणै पू–संग्रामकारी पुष्प-शर; निन्ऱु ॲय्युम्–लगातार चलानेवाले; वीरनुम्–वीर मन्मथ ने भी; मेल् निन्ऱु–आकाश में स्थित होकर; ॲय्य–शर चलाते; विमलनै नोक्किनान्–विमलमूर्ति श्रीराम को निशान बनाकर देखा; तान् निन्ऱु ॲय्यकिलान्–खुद चला नहीं पाया; तटुमाऱिनान्–डगमगाया। १०५४

मन्मथ भ्रमरों की ज्यासहित इक्षु-धनु में पुष्प-शर संधानकर काम-समर करनेवाला है। उसने आकाश में स्थित होकर विमलमूर्ति श्रीराम पर शर चलाने के विचार से निशाना लगाया। पर उसमें हिम्मत नहीं रही। वह डगमगा गया। १०५४

उऴन्द योहत् तॉरुमुदल् कोबत्ताल्
इऴन्द मेनियु मॅण्णि यिरङ्गुवान्
कॅऴुन्दु णैक्कॉरु वन्मै किडैक्कुमो
पऴन्दु यरक्कुप् परिवुऱुम् पान्मैयाल् 1055

उऴन्त योकत्तु–गम्भीर योगावस्था में (जो) रहे; ऑरु मुतल्–अद्वितीय आदि-देव शिव के; कोपत्ताल्–क्रोध से; इऴन्त मेनियुम् ॲण्णि–अपना गँवाया शरीर स्मरण कर; इरङ्कुवान्–पछतानेवाले; पऴम् तुयर्क्कु–पुराने कष्ट के लिए; परिवुऱुम् पान्मैयाल्–दुःख करते रहते समय; तुणैक्कु–सहायक बनने को; ऑरु कॅऴुम् वन्मै–(नया) एक प्रबल साहस; किटैक्कुमो–प्राप्त हो सकता है क्या। १०५५

गम्भीर योगरत आदिदेव शिवजी पर उसने एक बार शर चलाया था। फलस्वरूप शिवजी के क्रोध से उसका शरीर जल गया। वह उसका स्मरण करके दिनोंदिन दुःखी हो रहा था। ऐसे पुराने दुःख में मग्न रहनेवाले उसको सहायक के रूप में साहस दिलानेवाली हिम्मत हो सकती है क्या? । १०५५

नील मान निऱत्त निनैन्दवै
शूल माहत् तॉऴैवरुम् वेलैयिन्

मूल मामलर् मुन्नवन् मुऱ्ऱुम्
काल मामॆंतक् कङ्गुल् कऴिन्ददे 1056

नीलम् आत निऱ्तत्तन्–नील; नित्तैन्तु–ऐसा सोचकर; अवै–उन विचारों के; चूलम् आक–शूल की तरह; तॊळैवु उरुम्–सालते; वेलैयिन्–समय; मूलम्–सृष्टिमूल; मा मलर् मुन्नवन्–उत्कृष्ट (नाभी-)कमल में जो प्रकट हुए थे, वे (ब्रह्मा); मुऱ्ऱु उरुम्–जब अन्त हो जाते हैं; कालम् आम् अॆंत–वह काल आ गया हो, ऐसा; कङ्कुल् कऴिन्ततु–रात बीती। १०५६

नील श्रीराम ऐसा सोच रहे थे और वे विचार उनको शूल के समान साल रहे थे। तब रात बीती और ऐसा लगा कि रात कल्पकाल तक रही हो और सृष्टि के मूल, श्रीविष्णु के नाभि-कमल-वासी ब्रह्मा का कल्प अभी पूरा हुआ हो। १०५६

वॆळ्ळञ् जिलम्बुम् पाऱ्कडलिन् विरुम्बुन् दुयिलै वॆरुत्तऴियुम्
कळ्ळुञ् जिलम्बुम् बूङ्गोदै कऱ्पिन् कडलिऱ् पडिवाऱ्कुप्
पुळ्ळुञ् जिलम्बुम् बॊऴिल्शिलम्बुम् पुनलुञ् जिलम्बुम् पुत्तैहोल
उळ्ळुञ् जिलम्बुञ् जिलम्बावे लुयिरुण् डाहुम् वहैयुण्डो 1057

वॆळ्ळम् चिलम्पुम् पाल् कटलिल्–अधिक गर्जनशील क्षीरसागर में; विरुम्पुम् तुयिलै–प्यारी निद्रा को; वॆरुत्तु–त्यागकर; अऴियुम् कळ्ळुम्–भ्रमरों और मधु से; चिलम्पुम्–शब्दायमान; पूम् कोतै–सुन्दर माला से अलंकृत; कऱ्पिन् कटलिल्–पतिव्रता सीता के प्रेम के सागर में; पटिवाऱ्कु–मग्न रहनेवाले को (समझाते हुए); पुळ्ळुम् चिलम्पुम्–पक्षी बोले; पॊऴिल् चिलम्पुम्–उद्यानों ने शोर किया; पुनलुम् चिलम्पुम्–(जलाशय का) जल शब्दित हुआ; पुत्तै कोल–(उनसे नया उत्साह तथा) नई रौनक पाकर; उळ्ळुम् चिलम्पुम्–(श्रीराम का) मन भी बोल उठा; चिलम्पा वेल्–(ये सब) शब्द नहीं करते तो; उयिर् उण्टाकुम् वकै उण्टो–(मूर्च्छा में रही) जान के लौट आने का मार्ग हो सकता है क्या। १०५७

सवेरा हो गया। शब्दायमान क्षीरसागर में शयन छोड़कर भ्रमर और शहद से शब्दित केश वाली सीताजी के पातिव्रत्य रूपी शील-सागर में जो मग्न रहते थे, उन श्रीराम को पक्षीगण, उपवन, जल आदि शब्द करके सवेरा होने का समाचार सुनाने लगे। तब श्रीराम के मन में एक उत्साह भर गया, मानो मन भी बोलने लगा। अगर ये सब शब्द नहीं होते तो श्रीराम के प्राणों के पुनः लौट आने का मार्ग कैसे होता ? । १०५७

मयिलुम् पॆडैयु मुडन्ऱिरिय मानुङ् गलैयु मरुविवरप्
पयिलुम् बिडियुङ् गडहळिरुम् वरुव तिरिव पार्क्किन्ऱान्
कुयिलुङ् गरुम्बुञ् जॆळुन्देनुम् कुऴलुम् याऴुम् कॊऴुम्बाहुम्
अयिरु ममुदुञ् जुवैतीर्त्त मॊऴियैप् पिरिन्दा लऴियानो 1058

मयिलुम् पॆटैयुम्–मोर और मोरनी; उटन् तिरिय–साथ-साथ घूमते हैं; मानुम्

कलैयुम्–हरिण और हरिणी; मरुवि वर–पास-पास आते हैं; पयिलुम् पिटियुम्–मिले रहनेवाले हथिनियाँ और; कटकरियुम्–मत्तगज; वरुव तिरिव–आते, घूमते हैं; पार्क्किन्ऱान्–(उनको) देखते हैं; कुयिलुम्–कोयल; करुम्पुम्–ईख; चॅऴुम् तेऩुम्–गाढ़ा शहद; कुऴलुम्–और वंशी; याऴुम्–वीणा; कॉऴुम् पाकुम्–गाढ़ी चाशनी; अयिरुम्–खाण्ड; अमुतुम्–अमृत; चुवै तीर्त्त–इनकी मधुरता को मात देनेवाली; मॉऴियै–वोली वाली (सीता) से; पिरिन्ताल्–विछुड़े रहें, तब; अऴियातो–घुलेंगे नहीं क्या। १०५८

श्रीराम अपने सामने देखते हैं कि मोर और मोरनी, हरिण और हरिणी और हाथी और हथिनी —इनके जोड़े साथ-साथ घूमते फिरते हैं। वे तो सीताजी से विछुड़े रहते हैं। सीताजी इतनी मधुरभाषिणी थीं कि उनकी वचन-मधुरता के सामने कोयल की कूक, ईख का रस, वाँसुरी का नाद, गाढ़े शहद का स्वाद, वीणा का स्वर, खांड की रुचि सब फीका पड़ गया था। तो फिर उनका मन नहीं घुलेगा क्या ? । १०५८

मुडिनाट् टियकोट् टुदयत्तिन् मुऱ्ऱ वुऱ्ऱान् मुतुकङ्गुल्
विडिनाट् कण्डुङ् गिळिमिऴ्ऱु मॅन्शॉऱ् केळा वीरऱ्काण्
डडिनाट् चॅन्दा मरैयॊदुङ्गु मन्न मिलळाल् यान्डैत्त
कडिनाट् कमलत् तॅन्नवविऴ्त्तुक् काट्टु वान्बोऱ् कदिर्वॅय्योन् 1059

मुटि नाट्टिय–किरीटभूषित-सी दिखती; कोट्टु उतयत्तिऩ्–शिखर-सहित उदयगिरि पर; कतिर् वॅय्योन्–गरम किरणमाली; मुतु कङ्कुल्–लम्वी रात का; विटि नाळ् कण्टुम्–अन्त और दिन का उदय देखकर भी; किळि मिऴ्ऱुम्–शुक की सी वोली वाली सीता की; मॅन् चॊल् केळा–मृदु-मधुर वोली न सुनने से (दुःखी); वीरऱ्कु–वीर श्रीराम को; आण्टु–तव; अटि नाळ्–पहले; चॅम् तामरै ऑतुङ्कुम् अन्नम्–लाल कमल पर रहनेवाली हंसिनी (सीता); यान् अटैत्त–(जिसको कल) मैंने वन्द कराया; कटि नाळ् कमलत्तु–सुगन्धित इस नवीन कमल में; इलळ् ॲन्न–नहीं हैं, कहते हुए; अविऴ्त्तु काट्टुवान् पोल्–मानो खोलकर दिखा रहे हों, ऐसा; मुऱ्ऱ उऱ्ऱान्–पूर्ण प्रकाशमय प्रकट हुए। १०५९

शिखर-किरीटी उदयगिरि पर सूर्य पूर्णरूप से प्रकट हुए। उनकी रश्मि से कमल खिले। वे कमल पिछली रात बन्द हुए थे। लम्बी रात वीत गयी और सवेरा हो गया। तो भी श्रीराम को शुक-सम मधुरभाषिणी सीताजी की मीठी वाणी सुनने को नहीं मिली थी। वे दुःखी थे। (इन सव वातों को मिलाकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि) सूर्य ने कमलों को पिछली रात वन्द कराया था और अव उनको खोलकर श्रीराम को दिखाया कि उन सुगन्धित व नवविकसित कमलों में कमलनिवासिनी, हंसिनी-सम सीताजी नहीं हैं। १०५९

पॊऴिलै नोक्कुम् पॊऴिलुडैयुम् पुळ्ळै नोक्कुम् वूङ्गॊम्बिन्
ॲऴिलै नोक्कु मिळमयिलि न्नियलै नोक्कु मियल्बानाळ्

कुळलै नोक्किक् कॉङ्गैयिणैक् कुवट्टै नोक्कि यक्कुवट्टिन्
तॉळिलै नोक्कित् तन्नुडैय तोळै नोक्कि नाट्कळिप्पान् 1060

पूम् कोम्पिन् ॲळिलै नोक्कुम्–पुष्पलता-सदृश सुन्दर; इळ मयिलिन् इयलै नोक्कुम्–बालमयूर की छटा-सदृश; इयलपु आताळ्—आभायुक्त; कुळलै नोक्कि–(सीताजी के) केश का स्मरण करके; पॉळिलै नोक्कुम्–(श्रीराम) उद्यान को देखते; इणै कॉङ्कै कुवट्टै–स्तनद्वय के पर्वतशिखरों का; नोक्कि–स्मरण करके; पॉळिल् उऱैयुम्–उद्यान में रहनेवाले; पुळ्ळै नोक्कुम्–(चक्रवाक-)पक्षियों को देखते; अ कुवट्टिन् तॉळिलै नोक्कि–उन पर (आलिंगन) का अपना व्यवहार स्मरण करके; तन्नुडैय तोळै नोक्कि–अपने कन्धों की (भाग्यहीनता) सोचकर; नाळ् कळिप्पान्–दिन बिताते। १०६०

(विरही का मन प्रिया के रूप का स्मरण करने से बहुत दुःखी होता है। कुछ वस्तुएँ उस स्मरण को उद्दीप्त करती हैं।) श्रीराम पुष्पलता-सी सुन्दर और बालमयूर-सी आभा वाली सीताजी का केश स्मरण करते और उपवन को देखते। दोनों पर्वतशिखर-सम स्तनों की याद करते और उपवन में रहनेवाले चक्रवाक पक्षी को देखते। उन स्तनों से आलिंगन करने के अपने प्रणय-व्यापार का स्मरण करते और अपने कन्धों की भाग्य-हीनता पर विचार करते। वे ऐसे ही दिन को बिताने लगे। १०६०

अन्न कालै यिळवीर नडियिन् वणङ्गि नॆडियोयप्
पॊन्नै नाडा दीण्डिरुत्तल् पॊरुळो वॆन्नप् पुहळोनुम्
शॊन्न वरक्क निरुक्कुमिडन् दुरुवियऱिदुन् दॊडरन् दॆन्न
मिन्नुञ् जिलैयार् मलैतॊडरन्द वॆयिल्वॆङ् गानम् बोयिनराल् 1061

अन्न कालै–उस समय; इळैय वीरन्–कनिष्ठ वीर लक्ष्मण के; अटियिन् वणङ्कि–पैरों पर नमस्कार करके; नॆटियोय्–महान; अ पॊन्नै नाटातु–उन स्वर्ण (-सम सीता) का अन्वेषण न करके; ईण्टु इरुत्तल्–यहाँ (व्यर्थ) रहना; पॊरुळो–अर्थ-भरा (काम) है क्या; ॲन्न–कहने पर; पुकळोनुम्–प्रशंसित श्रीराम ने भी; चॊन्न अरक्कन् (जटायु-)कथित राक्षस; इरुक्कुम् इटम्–का वासस्थान; तॊटर्न्तु–निरन्तर; तुरुवि अऱितुम्–खोज देखेंगे; ॲन्न–(कहा) कहने पर; मिन्नुम्–चमकते; चिलैयार्–धनुओं के धारक; मलै तॊटर्न्त–पर्वत से लगे; वॆयिल् वॆम् कानम्–धूप में कठोर वन में; पोयिनर्–चले। १०६१

तब लघु भाई वीर लक्ष्मण ने उनको नमस्कार किया और विनय सुनायी। महान! स्वर्ण-समाना सीताजी का अन्वेषण किये विना यहाँ बैठे रहना कोई अर्थ रखता है क्या? तब प्रशंसा योग्य श्रीराम ने भी हामी भरी। हाँ! जटायु द्वारा कथित उस राक्षस (रावण) के स्थान का अन्वेषण करें। सर्वत्र ढूँढ़कर देखें। फिर दोनों चमकदार धनुर्धर धूप में जंगल में ढूँढ़ते हुए गये। १०६१

आशै शुमन्द नॆडुङ्गरि यन्नार्, पाशिलै तुन्ऱु वनम्बल पिन्नाक्
काशऱु कुन्ऱिनॊ डाऱु कडन्दार्, ओशनै यॊन्बदॊ डॊन्बदु शॆन्ऱार् 1062

आचै चुमन्त–दिशावाही; नॆटुम् करि अन्नार्–बड़े गजों से तुल्य वे; पचुमै इलै तुन्ऱु–हरे पत्तों से पूर्ण; वतम् पल–अनेक वनों को; पिन्ना–पीछे छोड़कर; काचु अऱु–निर्दोष; कुन्ऱिन् ओटु–पर्वतों के साथ; आऱु–नदियों को; कटन्तार् पार करके; ऒन्पतु ओटु ऒन्पतु योचनै–नौ और नौ (अठारह) योजन दूर; चॆन्ऱार्–गये। १०६२

दिशावाही बड़े गजों से तुल्य वे वीर हरे पत्तों से पूर्ण अनेक वनों को पीछे छोड़ते हुए, निर्दोष पर्वतों और गहरी नदियों को पार कर अठारह योजन दूर चले। १०६२

मट्पडि शॆय्द तवत्तितिन् वन्द, कट्पडि कोदैयै नाडिनर् काणार्
उट्पडि कोब मुयिर्प्पॊडु पॊङ्गप्, पुट्पडि युङ्गुळिर् वार्पॊळिल् पुक्कार् 1063

मण् पटि चॆय्त–अणुओं से निर्मित इस भूमि के किये; तवत्तितिन् वन्त–तप के फलस्वरूप अवतरित; कळ् पटि कोतैयै–शहद-जमे केश वाली को; नाटिनर्–ढूँढ़कर; काणार्–न देख पाये; उळ् पटि कोपम्–अन्दर जमा रहा कोप; उयिर्प्पु ओटु पॊङ्क–निःश्वास के साथ निकल आया; पुळ् पटियुम्–जिसमें खग रहते थे; कुळिर् वार् पॊळिल्–उस शीतल विशाल उद्यान में; पुक्कार्–प्रविष्ट हुए। १०६३

पर सीताजी, जो अणुओं की बनी इस पृथ्वी की तपस्या के फलस्वरूप अवतरित हुई थीं, कहीं भी दिखाई नहीं दीं। उनको न पाकर उन वीरों का कोप निःश्वास के रूप में प्रकट हुआ। तब वे एक ऐसे उपवन में पहुँचे जो शीतल, विशाल और पक्षियों से पूर्ण था। १०६३

आरियर् शिन्दै यलक्क णऱिन्दान्, नारियै यॆङ्गणु नाडिन नाडिप्
पेरुल हॆङ्गु मुळन्ऱिरुळ् पिन्ना, मेरुविन् वॆङ्गदिर् मीळ मरैन्दान् 1064

आरियर्–श्रेष्ठ (श्रीराम और लक्ष्मण) के; चिन्तै अलक्कण् अऱिन्तान्–मन के दुःख के ज्ञाता; वॆम् कतिर्–गरम किरणों के सूर्य; पेर् उलकु ऎङ्कुम्–विस्तृत लोक भर में; उळन्ऱु–सायास घूमकर; नारियै–स्त्री-रत्न को; ऎङ्कणुम्–सर्वत्र; नाटितन्–खोजकर; इरुळ् पिन्ना–अँधेरे को पीछा करते आने देते हुए; मेरुविन् मीळ मरैन्तान्–मेरु के पीछे छिप गये। १०६४

तब सूर्य भी अस्त हो गये। आर्य वीर, श्रीराम और लक्ष्मण का दुःख उन्हें मालूम था। वे भी शायद सायास सब स्थानों में नारीरत्न सीताजी का अन्वेषण करके थक गये। इसलिए वे मेरु के पीछे छिप गये और अन्धकार उनके पीछे लगा हुआ आ गया। १०६४

अरण्डरु हुञ्जॆरि यञ्जन पुञ्जम्
उरण्डन पोलिरु ळॆङ्गणु मुन्दत्

तॆरुण्डऱि विऌववर् शिन्दैयिन् मुन्दि
इरुण्डन मादिर मॆट्टु मिरण्डुम् 1065

चॆऱि अञ्चत्त पुञ्चम्–घने अंजनपुंज; उरण्टत्त पोल्–मानो टकराते हों; इरुळ्–अन्धकार; अरण्टु–सहमकर; अरुकुम् ऍङ्कणुम् उन्त–पार्श्व में सब ओर ढकेलने से; तॆरुण्टु–भ्रमित हो; अऱिवु इल्लवर् चिन्तैयिन्–ज्ञान से हीन बने मनुष्य के मन के समान; मुन्ति–(समय से) पहले ही; मातिरम् ऍट्टुम् इरण्टुम्–आठों और दोनों (ऊपर और नीचे) दिशाएँ; इरुण्टन–अन्धकारमय हो गयीं। १०६५

वह अँधेरा घना था। ऐसा लगता था कि अंजनपुंज आपस में टकराकर, ढकेला जाकर और डर के कारण सब स्थानों में प्रेषित किये गये हों। दसों दिशाओं (ऊपर और नीचे की ओर मिलाकर) में वह इस प्रकार व्याप्त रहा, जिस प्रकार भ्रमित बुद्धि वाले के मन में अज्ञान व्याप्त रहता है। १०६५

इऴिक्कऱै यिन्जॊ लियॆन्दत्त पूवै
किऴिक्कऱै युम्बॊऴिऱ् किञ्जुह वेलि
ऒऴिक्कऱै मण्डिल मॊत्तुळ दङ्गोर्
पळिक्कऱै कण्डदिल् वैहल् पयिन्ऱार् 1066

इऴिक्कु–'इऴि' स्वर से; अऱै–तुल्य; इन् चॊल् इयैन्त–मधुर स्वर में बोलनेवाले; पूवै–'नाहणवाय्' नामक पक्षी; किऴिक्कु अऱैयुम्–शुकों को जहाँ बोली सिखा रहे थे; पॊऴिल्–एक उपवन में; किञ्चुक वेलि–किंशुक वृक्षों के घेरे में; अङ्कु–वहाँ; ऒऴि–प्रकाश में; कऱै मण्टिलम् ऒत्तु उळतु–कलंक-सहित चन्द्र-मण्डल के समान; ओर् पळिक्कु अऱै–एक स्फटिक-शिला; कण्टु–देखकर; अतिल्–उसमें; वैकल् पयिन्ऱार्–ठहरे रहे। १०६६

श्रीराम और लक्ष्मण एक स्फटिक-शिला पर ठहरे। वह शिला एक उपवन के मध्य में थी और कलंकसहित चन्द्रमण्डल के समान प्रकाशमान थी। उस उपवन के चारों ओर किंशुक वृक्षों का घेरा था और उसमें 'नाहणवाय्' नामक पक्षी शुकों को बोलना सिखा रहे थे। उन पक्षियों की बोली 'इऴि' स्वर के समान मीठी थी (तमिऴ की संगीत-विद्या में सात स्वर हैं, जिनके नाम इऴि, कुरल्, तुत्तम्, कैक्किऴै, उऴै, विळरि और तारम् हैं।)। १०६६

अव्विडै यॆय्दिय वण्ण लिरामन्
वॆव्विडै पोलिळ वीरनै वीर
इव्विडै नाडिनै नीर्कॊणर् हॆन्ऱान्
तॆव्विडै विल्लव नुन्दनि शॆन्ऱान् 1067

अ इटै ऎय्तिय–वहाँ जो आये; अण्णल् इरामन्–महिमायुक्त श्रीराम ने; वॆम् विटै पोल्–क्रुद्ध ऋषभ-तुल्य; इळ वीरनै–छोटे वीर को; वीर–वीर; इ इटै–अब;

नीर् नाटित्तै–जल खोजकर; कोणरक–लाओ; अॅन्ऱान्–कहा; तॅव् इटै–शत्रु को भगानेवाले; विल्लवतुम्–धनुर्धर भी; तनि चॅन्ऱान्–एकाकी चले। १०६७

वहाँ पहुँचने के बाद महिमायुक्त श्रीराम ने क्रुद्ध ऋषभ-सम छोटे वीर से कहा कि वीर ! अब जाकर कहीं से (पेय) जल ढूँढ़कर लाओ। शत्रु को भगाने की शक्ति रखनेवाले धनुर्धर लक्ष्मण भी उस रात में अकेले जल के अन्वेषण में चल पड़े। १०६७

अॅङ्गणु नाडिनन् नीरिडै काणान्
शिङ्ग मॅन्नत्तमि यन्ऱिरि वानै
अङ्ग वनत्तु ळयोमुहि यॅन्नुम्
वॅङ्ग णरक्कि विरुम्बिनळ् कण्डाळ् 1068

अॅङ्कणुम् नाटिनन्–सब कहीं ढूँढ़ा; नीर् इटै काणान्–जल का स्थान नहीं देखा; चिङ्कम् अॅन्न–सिंह के समान; तमियन्–अकेले; तिरिवानै–घूमनेवाले उनको; अङ्कु अ वनत्तुळ्–वहाँ उस वन में; अयोमुकि अॅन्नुम्–अयोमुखी नाम की; वॅम् कण् अरक्कि–क्रूर राक्षसी ने; विरुम्पिनळ्–प्यार करके; कण्टाळ्–देखा। १०६८

लक्ष्मण बहुत देर घूमे। पर जल कहीं दिखाई नहीं दिया। तब एक क्रूर राक्षसी ने उनको देख लिया। उसका नाम अयोमुखी था। उसने सिंह-समान घूमनेवाले उनको प्यार की दृष्टि से देखा। १०६८

नन्मदि योर्पुहल् मन्दिर नामच्
चॉन्मदि यावर विऱ्ऱॉडर् हिऱ्पाळ्
तन्मद नोडुदन् वॅम्मै तणित्ताळ्
मन्मद नामिव नॅन्नु मनत्ताळ् 1069

नल् मतियोर् पुकल्–श्रेष्ठ बुद्धिमानों द्वारा उच्चरित; मन्तिर नामम्–मन्त्र-नामों के; चॉल्–शब्दों को; मतिया–मानकर जो स्तम्भित होता; अरविल्–(नीच) सर्प के समान; तॉटर्किऱ्पाळ्–अनुगमन करती हुई; तन् मतन् ओटु–अपने काममद के साथ; तन् वॅम्मै–अपनी गरमी को; तणित्तु आळ्–शान्त करके वश में रखनेवाले; मन्मतन् इवन्–मन्मथ ये है; अॅन्नुम् मनत्ताळ्–ऐसा विचार करती हुई (वह)। १०६९

वह नीच सर्प के समान थी, जो निपुण ओझा के मन्त्रों से भी बद्ध और कीलित नहीं होता है। उस अयोमुखी ने उनका पीछा करते हुए यह धारणा कर ली कि ये मन्मथ हैं और ये ही मेरा काममद और काम-ताप शान्त करके मेरे ऊपर शासन कर सकते हैं। १०६९

अळुन्दिय शिन्दैय ळाहि यरक्कि
अॅळुन्दुयर् काद लुळन्ऱदिर् निन्ऱाळ्

पुऴुङ्गुमॆन् तोय्हॅंडप् पुल्लुवॅ नन्ऱि
विऴुङ्गु वॅन्नोवॅन् विम्म लुऴन्ड्राळ् 1070

अरक्कि–वह राक्षसी; अऴुन्तिय चिन्तैयळ् आकि–लक्ष्मण में मग्न मन वाली होकर; ॲऴुन्तु उयर्–उठकर उमड़नेवाले; कातलिन् उऴन्ड्र–प्रेम से अभिभूत होकर; ॲतिर् निन्ड्राळ्–सामने खड़ी रही; पुऴुङ्कुम्–तापनेवाला; ॲन् नोय् कॅट–अपना रोग दूर करते हुए; पुल्लुवॅन्–आलिंगन कर लूंगी; अन्ऱि–नहीं तो; विऴुङ्कुवॅंतो–या इसको निगल ही जाऊँ; ॲन–सोचकर; विम्मल् उऴन्ड्राळ्–आर्तता से भर गयी। १०७०

उसका मन लक्ष्मण पर अटक गया। प्रेम का ज्वर उठा और बढ़ने लगा। असाध्य पीड़ा सहते हुए वह उनके सामने आयी और आप ही आप कहने लगी कि मैं इसका ऐसा आलिंगन करूँगी कि मुझे वेदना देने वाला यह कामरोग शान्त हो जाय। या शायद अपनी इच्छा की प्रवलता के कारण उठाकर निगल जाऊँगी क्या? ऐसा सोचती हुई वह आर्तता से भर गयी। १०७०

इरन्दॅन तॅय्दिय पोदियॆ यादु
करन्दन नॅन्निऱ् कॉण्डुह उन्दॅन्
मुरज्जिनिन् मेवि मुयङ्गुवॅ नॅन्ना
विरैन्दॆदिर् वन्दन डोयिनुम् वॅय्याळ् 1071

तीयिनुम् वॅय्याळ्–आग से भी क्रूर; इरन्ततॅन्–याचना करती हुई; ॲय्तियपोतु–जाऊँ तव; इयैयातु–सम्मत न होकर; करन्ततन् ॲन्निल्–(दया से) वंचित करा देगा तो; नत्ति कॉण्टु–(इसको) वलात् लेकर; कटन्तु–यहाँ पार कर; ॲन् मुरञ्चितिल् मेवि–अपनी गुफा में जाकर; मुयङ्कुवॅन्–मिल लूंगी; ॲन्ना–निश्चय कर; विरैन्तु ॲतिर् वन्ततळ्–सवेग सामने आयी। १०७१

अग्नि से भी अधिक क्रूर उस राक्षसी ने आगे विचार किया कि जव मैं इसके पास जाकर प्रेम की याचना करूँगी तव अगर वह इनकार करके अपनी दया से मुझे वंचित करेगा, तो वलात् उसे उठा लूँगी, अपनी गुफा में ले जाकर मनमाने रूप से उससे मिल लूँगी। इस निश्चय के साथ वह उनके सामने सवेग आयी। १०७१

उयिर्प्पि नॅरुप्पुमिऴ् हिन्ड्रन वॊन्ड्र
ॲयिड्रिन् मलैक्कुल मॅण्णिल वुण्णुम्
वयिड्रळ् वयक्कॉडु माशुणम् वीशुम्
कयिड्रि नशैत्त मुलैक्कुऴि कण्णाळ् 1072

उयिर्प्पिन्–साँसों के साथ; नॅरुप्पु उमिऴ्किन्ड्र–आग उगलनेवाले; ॲयिड्रिन मलै कुलम्–दाँतों वाले गजसमूहों को; ऑन्ड्र–एक साथ; ॲण् इल उण्णुम्–अगणित

खानेवाले; वयिऱ्ऱुळ्–पेट की; वय कोंटु माचुणम्–बली भयंकर अजगर की; वीचुम् कयिऱ्ऱित्–लपेटी रस्सी से; अचैत्त–बँधे; मुलै–स्तनों और; कुऴि कण्णाळ्–खूब धँसी हुई आँखों वाली थी। १०७२

(उसका वर्णन सात पद्यों में पाया जाता है।) उसका पेट था, जो कि साँस के साथ आग निकालनेवाले पर्वत-सम गजों के अनगिनत समूहों को समा सकता था। उसके स्तन बलवान भयंकर अजगर लपेटकर बाँधे गये थे। आँखें गढ़ों के समान धँसी हुई थीं। १०७२

पऱ्ऱिय	**कोळरि**	**याळि**	**पणिक्कण्**
तॆऱ्ऱिय	**पादच्**	**चिलम्बु**	**तरित्ताळ्**
इऱ्ऱुल	**हियावैयु**	**मीरुरु**	**मन्नाळ्**
मुऱ्ऱिय	**जायिरु**	**पोलु**	**मुहत्ताळ् 1073**

पऱ्ऱिय–गृहीत; कोळरि–सिंहों; याळि–और शरभों को; पणि कण् तॆऱ्ऱिय–फणी सर्प से गूँथकर; चिलम्पु तरित्ताळ्–उसके नूपुर पहने हुए थी; यावैयुम्–सभी लोक; इऱ्ऱु ईरु उरुम्–(जिस दिन) पूर्णरूप से नष्ट होंगे; अ नाळ्–उस दिन के; मुऱ्ऱिय–पूर्णरूप से विवर्धित; जायिरु पोलुम्–सूर्य की तरह; मुकत्ताळ्–(दाहक) मुख की। १०७३

उसके पैरों के नूपुर साँपों से गुँथे हुए सिंह थे, जिनको उसने स्वयं पकड़ा था। उसका मुख उस युगान्तकालीन गर्मी में पूर्णरूप से बढ़े हुए सूर्य के समान सन्तापक था, जिस (युगान्त) में सारे लोक विनष्ट हो जाते हैं और सबका अन्त हो जाता है। १०७३

आऴि	**वऱक्क**	**मुहक्क**	**वमैन्द**
मूळै	**यॆन्नप्पोलि**	**मॊय्बिल**	**वायाळ्**
कूळै	**पुऱत्तु**	**विरिन्ददोर्**	**कॊट्पाल्**
ऊऴि	**नॆरुप्पि**	**नुरुत्तनै**	**यॊप्पाळ् 1074**

आऴि वऱक्क–समुद्र को सुखाते हुए; मुकक्क–उठा लेने के लिए; अमैन्त–बने; मूळै ॲॆत–कलछे के समान; पोलि–दृश्यमान; मॊय् पिल वायाळ्–मज़बूत, बड़ी गुफा-सदृश मुख वाली; पुऱत्तु कूळै विरिन्तत्तु–पार्श्व में केश लटकते रहे; ओर् कॊट्पाल्–उसके दृश्य से; ऊऴि नॆरुप्पिन् उरु तनै–युगान्त की अग्नि के रूप की; ऒप्पाळ्–समानता करनेवाली। १०७४

उसका गुफा-सा बड़ा मुख एक कलछे के समान था, जो कि समुद्र को एक दम शुष्क करते हुए सारा जल उठा सकता था। उसके सिर के पार्श्वों में कम लम्बे (लाल) केश लटकते थे, जिसके कारण वह युगान्तकालीन अग्नि के समान दिखाई दी। १०७४

तडितड	वप्पल	तलैतळु	वित्ताळ्
नॅडिदडै	यक्कुडर्	कॅळुवु	निणत्ताळ्
अडितड	वप्पड	वरव	मशैक्कुम्
कडिदड	वत्तित्त	ळुरुमु	कड्रिप्पाळ् 1075

तटि तटव्-मांस की खोज में; पल तलै तळुवि-अनेक स्थानों में ढूँढ़ते हुए जाकर; ताळ-उसके पैर; नॅटितु अटैय-बहुत दूर गये, इसलिए; कुटर् कॅळुवु निणत्ताळ्-मांस-भरे पेट वाली; पट अरवम् अटि तटव-फनसहित सर्प उसके पैरों को छूते रहें, ऐसा; अचैक्कुम्-(उन सर्पों की) लपेटी; कटि तटवत्तित्तळ्-कटि वाली; उरुमु कड्रिप्पाळ्-वज्रघोष के समान दाँत किटकिटानेवाली। १०७५

मांस की खोज में उसके पैर दूर-दूर तक गये थे और उसका पेट मांस से भरपूर था। उसकी कमर में सर्प बँधे थे, जिनके फन उसके पैरों को छूते थे। जब वह दाँत किटकिटाती तब वज्र का-सा नाद निकलता। १०७५

इवैयिडै	यॉप्पत्त	वॅन्त	विळिप्पाळ्
अवैकुळि	रक्कडि	तळलु	मॅयिड्राळ्
कुवैकुलै	यक्कडल्	कुमुड्र	वुरैप्पाळ्
नवैयिल्	पुवित्तिरु	नाल	नटप्पाळ् 1076

इवै इडै ऑप्पत्त-ये युगान्त की अग्नि के समान हैं; ॲन्त-ऐसा; विळिप्पाळ्-तरेरनेवाली; अवै कुळिर-उनको ठण्डे बनाते हुए; कटितु-कठोर रीति से; अळलुम् ॲयिड्राळ्-प्रज्वलित दाँत वाली; कुवै-पर्वत आदि; कुलैय-अस्त-व्यस्त करते हुए; कटल् कुमुड्र-सागर को उथल-पुथल करते हुए; उरैप्पाळ्-बोलनेवाली; नवै इल् पुवि तिरु-निर्मल भूदेवी को; नाल-धँसाते हुए; नटप्पाळ्-पग धरकर चलनेवाली। १०७६

जब वह तरेरती तब उसकी आँखें युगान्त की अग्नि के समान लगतीं। पर ज्वलन्त दाँतों के सामने उनकी उग्रता कम हो गयी लगती। जब वह बात करती, तब पर्वत जैसे ऊँचे टीले जर्जर हो जाते और सागर में उथल-पुथल मच जाता। जब वह पग रखकर चलती, तब निर्मल भूदेवी में गड्ढे पड़ जाते। १०७६

नीळर	वच्चरि	ताळ्है	निरैत्ताळ्
आळर	वप्पुलि	यार	मणैत्ताळ्
याळियि	नैप्पल	तालि	यिशैत्ताळ्
कोळरि	यैक्कॉडु	ताळ्कुळै	यिट्टाळ् 1077

नीळ् अरव चरि-लम्बे सर्प रूपी कंकणों को; ताळ् कै निरैत्ताळ्-लटकनेवाले हाथों में पहने रहती; अरवम्-गरजनेवाले; आळ् पुलि-बलवान बाघों का; आरम्-हार; अणैत्ताळ्-धारण करनेवाली; पल आळियितै-अनेक शरभों को; तालि

इचैत्ताळ्–मंगल-सूत्र से बाँधे रखनेवाली; कोळरियै कोट्टु–ताकलवर सिंहों को लेकर; ताऴ् कुऴै इट्टाळ्–लटकनेवाले कुण्डल बनाकर पहनी हुई। १०७७

उसने कंकणों के रूप में लम्बे सर्पों की पंक्ति पहन रखी थी। गरजनेवाले व्याघ्रों को गूँथकर उसने हार के रूप में पहना था। उसके मंगल-सूत्र से अनेक शरभ बँधे थे। उसके कर्ण-कुण्डल वली सिंह थे। १०७७

निन्ऱत्त ळाशैयि नीर्हलु ळुङ्गण्
कुन्ऱि निहर्प्प कुळिर्प्प विळिप्पाळ्
मिन्ऱिरि हिन्ऱ वॅयिऱ्ऱिन् विळक्काल्
कन्ऱिरु ळिऱ्ऱिरि कोळरि कण्डान् 1078

नीर् कलुळुम् कण्–जल बहानेवाली उसकी आँखें; कुन्ऱि निकर्प्प–घुँघची के समान रहतीं; कुळिर्प्प–प्रेमार्द्रता के साथ; विळिप्पाळ्–लक्ष्मण पर दृष्टि चलाती हुई वह; आचैयिन् निन्ऱत्तळ्–लगावट के साथ खड़ी रही; मिन् तिरिकिन्ऱ–बिजली के समान चमकनेवाली; ऍयिऱ्ऱिन्–दन्तपंक्तियों के; विळक्काल्–दीप से; कन्ऱु इरुळिल् तिरि–घने अँधेरे में घूमनेवाले; कोळरि–सिंह (लक्ष्मण) ने; कण्टान्–उसको देखा। १०७८

उसकी आँखें घुँघचियों के समान थीं और उनसे जल बह रहा था। वह लक्ष्मण पर प्रेमार्द्र दृष्टि डालती हुई खड़ी रही। उसके दाँतों से बिजली की चमक निकल रही थी। सिंह-सदृश लक्ष्मण ने उस घने जंगल में घूमनेवाली उसको उसके दाँतों के प्रकाश में देखा। १०७८

पण्डैयि नाशि यिळन्दु पदैक्कुम्
तिण्डिऱ लाळॊडु ताडहैच् चीराळ्
कण्डह राय वरक्कर् कणत्तोर्
ऑण्डॊडि यामिव ळॆन्ब दुणर्न्दान् 1079

पण्टैयिन्–पहले; नाचि इळन्तु–नाक आदि कटकर; पतैक्कुम्–जो छटपटायी; तिण् तिऱलाळ् ओटु–उस अत्यधिक बलयुक्त राक्षसी के साथ; ताटकै चीराळ्–ताड़का से तुल्य; कण्टकर् आय अरक्कर्–लोककंटक राक्षसों के; कणत्तु–दल से सम्बद्ध; ऑण्टॊटि आम् इवळ्–स्त्री होगी यह; ऍन्पतु उणर्न्तान्–यह विषय लक्ष्मण ने ताड़ लिया। १०७९

उन्होंने ताड़ लिया कि यह नाक खोकर जो छटपटाती रही, उस शूर्पणखा के साथ ताड़का आदि के राक्षस-कुल से सम्बद्ध स्त्री ही होगी। १०७९

पाविय रामिवर् पण्बिलर् नम्बाल्
मेविय कारणम् वेऱिलै यॆन्बान्
मावियल् कानिन् वयङ्गिरुळ् वन्दाय्
यावळ डीयुरै शॆय्हडि दन्ऱान् 1080

पण्पु इलर्–गुणहीन; पावियर् आम्–पापी; इवर्–ऐसी स्त्रियाँ; नम् पाल् मेविय कारणम्–हमारे पास आती हैं, उसका कारण; वेऱु इलै–(कामेच्छा के सिवा) दूसरा नहीं है; ऍन्ऩुपान्–ऐसा सोचकर; मा इयल् कात्तिल्–भयंकर जानवरों से भरे जंगल में; वयक्कु इरुळ् वन्ताय्–घने अन्धकार में आयी हो; यावळ् अटी–तू कौन है, री; कटितु उरै चॅय्–जल्दी उत्तर दो; ऍन्ऱान्–पूछा। १०८०

गुणहीन, पापिनी ये राक्षसनारियाँ हमारे पास एक ही कुविचार लेकर आती हैं। उनके पास उसके सिवा कोई दूसरा हेतु नहीं रहता! उन्होंने उसे डाँटकर पूछा कि री! भयंकर जानवरों से भरे इस जंगल में तू आयी है। तू कौन है? । १०८०

पेशित्त	तुक्कॅदिर्	पेशुऱ	नाणाळ्
ऊशलु	ळन्दयर्	शिन्दैय	ळुन्दान्
नेशमिल्	वन्बिन	ऩाहिय	निन्बाल्
आशैयिन्	वन्द	वयोमुहि	यॅन्ऱाळ् 1081

ऊचल् उळन्तु–दुबिधा के झूले में झूलते हुए; अयर् चिन्तैयळुम्–शिथिल-मन उसने; पेचित्तुक्कु–प्रश्नकर्ता से; तान् ऍतिर् पेचुऱ–सामने बोलने से; नाणाळ्–न लजाकर; नेचम् इल् वन्पित्तन् आकिय–मैत्री बनाने में चतुर; नित् पाल्–तुम्हारे प्रति; आचैयिन्–राग से; वन्त–आगत; अयोमुकि ऍन्ऱाळ्–अयोमुखी हूँ, कहा। १०८१

अयोमुखी का मन दुबिधा में पड़ा और वह आर्त हुई। उससे प्रश्न करनेवाले लक्ष्मण के सामने बोलते हुए उसे कोई लज्जा का अनुभव न हुआ। उसने कहा कि तुम मित्रता बनाने में चतुर हो। मैं तुम्हारे प्रति प्यार करके आयी हूँ। मेरा नाम अयोमुखी है। १०८१

पिन्ऩु मुरैप्पवळ् पेरॅऴिल् वीरा, मुन्ऩ मॊरुत्तर् तॊडामुलै योडुन्
पॊन्ऩिन् मणित्तड मार्बु पुणर्न्दॆन्, इन्ऩुयि रैक्कडि दीहुदि यॅन्ऱाळ् 1082

पिन्नुम् उरैप्पवळ्–और भी बोलती; पेर् ऍऴिल् वीर–बड़े ही सुन्दर वीर; मुन्नम् ऑरुत्तर् तॊटा मुलैयॊटु–पहले किसी के द्वारा अस्पृष्ट स्तनों के साथ; उन्–तुम्हारे; पॊन्निन्–स्वर्णवर्ण; मणि तट मार्पु–सुन्दर विशाल वक्ष से; पुणर्न्तु–लगा लेकर; ऍन् इन् उयिरै–अपने प्यारे प्राणों को; कटितु ईकुति–जल्दी दिला दो; ऍन्ऱाळ्–कहा। १०८२

उसने और भी कहा कि अति सुन्दर वीर! मेरे स्तन पहले किसी के द्वारा अभोग हैं। उनको अपने स्वर्णवर्ण सुन्दर और विशाल वक्ष से लगा लो और मुझे शीघ्र प्राणदान करो। उसने प्रार्थना की। १०८२

आडिय	शिन्दैय	ळः(ह्)दुरै	शॅय्यच्
चीड्रिय	कोळरि	कण्गळ्	शिवन्दान्

मार्रिल वार्हणै यिव्वुरै वायिल्
कूरिडि तिन्नुडल् कूरिडु मॅन्ऱान् 1083

आर्रिय चिन्तैयळ्–विश्वास के कारण आश्वस्तमना उसके; अ॰॰तु उरै चॅय्य–वह कहने पर; चीर्रिय कोळरि–कुपित सिंह (लक्ष्मण) ने; इ उरै–यह वचन; वायिल् कूरिटिन्–अपने मुख से फिर कहोगी; मार्रु इल–तो अबाध; वार् कणै–लम्बे शर; निन् उटल्–तेरे शरीर के; कूरिटुम् ॲन्ऱान्–टुकड़े-टुकड़े कर देंगे; ॲन्ऱान्–कहा। १०८३

अयोमुखी के मन में आशा का उदय हुआ था, इस कारण उसका मन आश्वस्त और शान्त था। उसका वचन सुनकर पुरुषसिंह लक्ष्मण को क्रोध आ गया। उसने डाँट बतायी— तू इस बात को दुहरायेगी तो मेरे अबाध लम्बे शर तेरे शरीर के टुकड़े कर देंगे। १०८३

मर्र्व नव्वुरै शॅप्प मनत्ताल्
शॅर्रिलळ् कैत्तुणै शॅन्नियिन् वैत्ताळ्
कॉर्र्व नीयॆन्नै वन्दुयिर् कॉळ्ळप्
पॅर्रिडि निन्रु पिरन्दन्नॆ नॆन्ऱाळ् 1084

मर्रु–और; अवन् अ उरै चॅप्प–उनके वह वचन कहने पर; मनत्ताल् चॅर्रिलळ्– मन में कुपित नहीं हुई; कै तुणै–हाथों के जोड़े को; चॅन्नियिल् वैत्ताळ्–सिर पर रखा; कॉर्र्व–नायक; नी वन्तु–तुम आओ; उयिर् कॉळ्ळ–और मेरे प्राण हरो; पॅर्रिटिन्–यह भाग्य मिलेगा तो; इन्रु पिरन्तनॆन्–आज ही मेरा जन्म (सफल) हुआ; ॲन्ऱाळ्–कहा। १०८४

लक्ष्मण का वचन सुनकर अयोमुखी के मन में कोप नहीं हुआ। उसने अपने दोनों हाथ जोड़कर सिर पर रखे और चिरौरी में कहा कि हे मेरे राजा! तुम आकर मेरे प्राण हरो, वह भाग्य मिला तो समझूँगी कि मैंने आज ही जन्म लिया!। १०८४

वॅङ्गद मिल्लवळ् पिन्नरुम् मेलोय्
इङ्गु नरुम्बुनल् नाडुदि यॅन्निन्
अङ्गै यिनालॆन्नै यञ्जलै यॆन्ऱाल्
गङ्गैयि नीर्हॊणर् वॅन्गडि दॆन्ऱाळ् 1085

वॅम् कतम् इल्लवळ्–भयंकर क्रोध न करती हुई उसने; पिन्नरुम्–फिर भी; मेलोय्–श्रेष्ठ गुण वाले; इङ्कु–यहाँ; नरुम् पुनल्–मधुर जल; नाटुति ॲन्निन्–ढूँढ़ते फिरते हो तो; अम् कैयिनाल्–अपने सुन्दर हाथ से; ॲन्नै अञ्चलै–मुझे मत डरो; ॲन्ऱाल्–कहोगे (अभयदान करोगे) तो; कङ्कैयिन् नीर्–गंगा का जल ही; कटितु कॊणर्वॆन्–बहुत जल्दी ला दूँगी; ॲन्ऱाळ्–कहा। १०८५

अयोमुखी ने, विना कठोर शत्रुता के भाव के ही आगे कहा कि

श्रेष्ठ गुण वाले ! तुम मधुर जल की खोज में ही न फिरते हो ? तुम मुझे अपने सुन्दर हाथ से अभयमुद्रा दिखाते हुए कहो कि मत डरो, तो मैं गंगा का जल ही बहुत वेग के साथ लाकर दूँगी। १०८५

सुमित्तिरैच्	चेयवळ्	शॉर्र्रन्न	शॉल्लैक्
कमित्तिल	निन्निरु	कादोडु	नाशि
तुमिप्पदन्	मुन्नह	लॅन्बदु	शॉल्ल
इमैत्तिलळ्	निन्रन्न	ळिन्न	निनैन्दाळ् 1086

सुमित्तिरै चेय्-सौमित्र के; चॉर्रन्न चॉल्लै-उसके कहे हुए वचनों को; कमित्तिलन्-क्षम्य नहीं समझकर; निन् इरु कातोटु-तेरे दो कानों के साथ; नाचि-नाक को भी; तुमिप्पतन् मुन्-काट दूँ, इसके पहले ही; अकल् ॲन्पतु-हट जाओ, ऐसा; चॉल्ल-कहने पर; इमैत्तिलळ्-निर्निमेष; निन्रनळ्-खड़ी रही; इन्न ऐसा; निनैन्ताळ्-यों सोचा। १०८६

सौमित्र ने उसकी बात को क्षम्य नहीं माना। उन्होंने कहा कि मैं तेरे दोनों कानों के साथ तेरी नाक को काट दूँ, इसके पहले ही भाग जा! यह सुनकर वह कुछ देर ताकती खड़ी रही। वह यों सोचने लगी। १०८६

ॲडुत्तनॅ	नेहिनॅ	नॅन्मुळै	तन्नुळ्
अडैत्तिवन्	वॅम्मै	यडक्किय	पिन्नै
उडर्पडु	मालुड	नॅयुरु	तन्मै
तिडत्तिडु	वेनल	नॅन्रॅदिर्	शॅन्राळ् 1087

ॲडुत्तनॅन् एकिनॅन्-इसको ले जाकर; ॲन् मुळै तन्नुळ्-अपनी गुफा में; अटैत्तु-बन्द करके; इवन् वॅम्मै-इसका क्रोध; अटक्किय पिन्नै-शान्त करने के बाद; उटन् पटुम् आल्-वह सम्मत हो जायगा, तब; नन्मै उटन्ते उरुम्-मेरा भाग्य तुरत जाग जायगा; इतुवे-यही; तिटत्तु नलम्-पक्का भला है; ॲन्रु-सोचकर; ॲतिर् चॅन्राळ्-सामने (पास) गयी। १०८७

मैं इसको बलात् उठाकर ले जाऊँगी और अपनी गुफा में रखकर उसे शान्त कर लूँगी। तब वह मेरी इच्छा पूरी करने को सम्मत हो जायगा। उसी क्षण मेरा भाग्य जाग जायगा। यही उपाय हितकारी है। यह विचारकर वह उनके सामने गयी। १०८७

मोहनै	ऍन्बदु	मुन्दि	मुयन्राळ्
माहनै	डुङ्गिरि	पोलियै	वव्वा
एहिन्न	ळुम्बरि	निन्दुवी	डेहुम्
मेहमॅ	नुम्बडि	नॉय्दिनिन्	वॅय्याळ् 1088

वॅय्याळ्–क्रूरा ने; मुन्नुति–सवेग सामने जाकर; मोकनै ऍन्नपतु मुयन्ऱाळ्–मोहिनी डालने का प्रयास किया; माक नॆट्टुम् किरि–गगनव्यापी एक बड़े पर्वत; पोलियै–समान (लक्ष्मण) को; वव्वा–पकड़ लेकर; नॊय्तितिल्–जल्दी; उम्परिन्–आकाश में; इन्तु ओट्टु एकुम् मेकम्–इन्दु के साथ दौड़नेवाले मेघ; ऍन्नुम्पटि–जैसा; एकित्तळ्–जाने लगी। १०८८

उस क्रूरा ने उन पर मोहनी डालने का कार्य करके गगनव्यापी पर्वत-सम उनको पकड़कर उठाया और सवेग आसमान में चन्द्रसहित मेघ के समान जाने लगी। १०८८

मन्दरम् वेलैयिन्न् वन्ददुम् वानत्, तिन्दिर नूर्मुहि लॅन्नलु मानाळ्
वॅन्दिऱल् वेल्हॊडु शूरडुम् वीरच्, चुन्दर नूर्दरु तोहैयु मॊत्ताळ् 1089

मन्तरम् वेलैयिन्न् वन्ततुम्–मन्दरपर्वत-सहित सागर-सम; वानत्तु इन्तिरन् ऊर्–आकाश में इन्द्र-वाही; मुकिल् ऍन्नलुम्–मेघ के समान; आनाळ्–लगी; वॆम् तिऱल् वेल् कॊट्टु–कठोर और मजबूत शक्ति लेकर; अट्टुम्–शूरपद्म को जिन्होंने मारा, उन; वीर–वीर; चुन्तरन्–सुन्दर देव षण्मुख के; ऊर् तरुम्–वाहन; तोकैयुम् ऒत्ताळ्–मोर के समान भी बनी। १०८९

तब लक्ष्मण के साथ राक्षसी कैसे लगी ? मन्दरपर्वत-सहित सागर के समान और इन्द्र को लेकर चलनेवाले मेघ के समान लगी। और भी कठोर और सारयुक्त शक्ति से जिन्होंने शूरपद्म को मारा था, उन वीर और सुन्दर षण्मुख को ले जानेवाले मयूर के समान भी लगी (मोर षण्मुख का वाहन माना जाता है। शूरपद्म ही मोर बना था।)। १०८९

आङ्गवण् मार्वॊडु कैयि नडङ्गिप्
पूङ्गळल् वार्शिलै मीळि पॊलिन्दान्
वीङ्गिय वॆञ्जिन वीळ्मद वॆम्बोर्
ओङ्ग लुरिक्कु मुरुत्तिर नॊत्तान् 1090

आङ्कु–तब; पूम् कळल्–सुन्दर पायल; वार् चिलै–लम्बा धनुष (इनसे युक्त); मीळि–वीर लक्ष्मण; अवळ् मार्पु ऒट्टु–उसके वक्ष और; कैयिन् अटङ्कि–हाथों के अन्दर समाकर; पॊलिन्तान्–शोभे, तब; वीङ्किय–बढ़ा हुआ; वॆम् चिनम्–कठोर क्रोध और; वीळ् मतम्–बहता मदजल; वॆम् पोर्–(इनके साथ) जिसने युद्ध किया; ओङ्कल्–उस गज को; उरिक्कुम्–उधेड़नेवाले; उरुत्तिरन् ऒत्तान्–रुद्र-सम लगे। १०९०

लक्ष्मण कैसे दिखे ? सुन्दर पायलधारी धनुर्धर वीर लक्ष्मण, जो उसके वक्ष पर हाथों के क्रोड के अन्दर समा गये थे, रुद्र के समान शोभे जो अति क्रुद्ध मदस्रावी योद्धा गज को उधेड़ रहे हों। १०९०

इप्पडि यन्नव ळेहिन ळिप्पाल्
अप्पिडै तेडि नडन्द वॆन्नावित्

तुप्पुडै मालवरै तोऩ्ड्रिल नॅऩ्ऩा
वॅप्पुडै मॅय्यॉडु वीरऩ् मॅलिन्दान् 1091

अऩ्ऩवळ् इ पटि एकित्तळ्–वह इस तरह गयी; इ पाल्–इस ओर; वॅप्पु उटै–पिपासा से; मॅय् उटै वीरऩ्–(तपित) श्रीशरीर के वीर श्रीराम; अप्पु इटै तेटि–जल-थल खोजते हुए; नटन्त–जो चला; ॲऩ् आवि–मेरा प्राण-सम; तुप्पु उटै–मज़बूत; माल् वरै–बड़े पर्वत के समान; तोऩ्ड्रिलऩ्–(लक्ष्मण) नहीं (आता) दिखता; ॲऩ्ऩा–सोचकर; मॅलिन्तान्–कातर हुए। १०९१

एक ओर वह लक्ष्मण को पकड़ लेकर उधर जा रही थी, तो दूसरी ओर यहाँ प्यास से तप्त शरीर के श्रीराम इस बात को लेकर दुःखी हुए कि जल-थल के अन्वेषण में जो गया, वह मेरा प्राण-सम प्यारा भाई और मज़बूत और बड़े पर्वत के समान लक्ष्मण अब भी नहीं दिखाई देता है। १०९१

वॅय्दाहिय कानिडै मेवरुनीर्, ऐदादलि ऩोवय लॊऩ्ऱुळदो
नॊय्दाय्वर वेहमु नॊय्दिलनाल्, ॲय्दादॊऴि यानिदु ॲन्ऩैहॊलाम् 1092

वॅय्तु आकिय काऩ् इटै–कठोर इस जंगल में; मेवु अरु नीर्–मिलनेवाला शुद्ध जल; ऐतु आतलिऩ्–अपूर्व है, इसलिए; अयल् ऑऩ्ऱु उळतो–और कोई (संकट) आ गया; नॊय्ताय् वर–शीघ्र आने में; वेकमुम् नॊय्तु इलऩ् आल्–मन्द-गति नहीं है; ॲय्तातु ऒऴियाऩ्–विना आये नहीं रहेगा; इतु ॲऩ्ऩै कॊल् आम्–यह किस कारण है। १०९२

वे सोचने लगे कि क्या कारण है? इस बीहड़ भयंकर वन में शुद्ध जल का मिलना अपूर्व है? या कोई अन्य संकट आ पड़ा? वह तो वेग में मन्दता न करनेवाला है। उसका स्वभाव ही ऐसा है कि जल्दी आयेगा। विलम्ब नहीं करेगा। इतनी देर तक उसे आना चाहिए था। फिर ऐसा क्यों हुआ? । १०९२

नीर्कॊण्डऩै यिव्वऴि नेडिनैपोय्, शार्हॅन्ऱऩॆ नित्तुणैच् चार्हिलनाल्
वार्कॊण्डणि कॊङ्गैयै वव्विनर्पाल्, पोर्कॊण्डऩ ऩोपॊरु ळुण्डिदॅना 1093

इ वऴि नेटित्तै पोय्–इस मार्ग में ढूँढ़ते चलकर; नीर् कॊण्टनै–जल लेकर; चार्क ॲऩ्ऱऩऩ्–आ जाओ, मैंने कहा था; इ तुणै–अब तक; चार्किलऩ् आल्–नहीं आया है, इसलिए; वार् कॊण्टु अणि–अँगिया से अलंकृत; कॊङ्कैयै–स्तनों (की सीता) को; वव्विऩर् पाल्–पकड़कर जो ले गये, उनसे; पोर् कॊण्टऩऩो–युद्ध करने लग गया क्या; इतु पॊरुळ् उण्टु–ऐसा एक कार्य हुआ होगा; ॲऩा–सोचकर। १०९३

मैंने ही उसे जल ढूँढ लाने के लिए भेजा। 'जल्दी आ जाओ' यह कहकर ही उसे भेजा था। वह तो अब तक नहीं आया। तब क्या उसे अँगियाबद्ध स्तनों की देवी को जो हर ले गये थे, उन राक्षसों के साथ

लड़ाई हो गयी ? ऐसा कुछ हुआ होगा, अवश्य ! —राम ने यह सोचा। १०९३

अञ्जॊऱ्किळि यन्न वणङ्गिनैमुन्, वञ्जित्त विरावणन् वव्विनतो
नञ्जिऱ्कॊडि यान्नड लैत्तॊऴिलाल्, तुञ्जुऱ्ऱन तोविदि यिन्ऱुणिवाल् 1094

किळि अन्न–शुक के समान; अम् चॊल् अणङ्कित्तै–मधुर-वाणी देवी को; मुन् वञ्चित्त–पहले हर ले जो गया, वह; इरावणन्–रावण; वव्वित्तो–पकड़ ले गया क्या; वितियिन् तुणिवाल्–मेरी बिधि की प्रबलता से; नञ्चिल् कॊटियान्–विष से भी हिंस्र; नटलै तॊऴिलाल्–(उस राक्षस की) वंचना के कार्य से; तुञ्चुऱ्ऱत्तो–मर गया क्या। १०९४

क्या वही रावण इसको भी पकड़ ले गया, जिसने शुकी-सी मधुर-भाषिणी सीता को धोखे से हर लिया था ? या मेरी विधि की प्रबलता से, विष से भी हिंस्र उस रावण के कपट-कार्य से वह मर गया ? । १०९४

वरिविऱ्कै यॆन्नारुयिर् वन्दिलनाल्, तरुशॊऱ्करु देन्नॊरु तैयलैयान्
पिरिवित्तनॆ न्नॆन्बदोर् पोऴैपॆरुत्, तॆरिवित्तिड वावि यिऴन्दननो 1095

वरि विल् कै–सबन्ध धनुर्हस्त; ऎन् आरुयिर्–मेरा प्राणप्यारा भाई; वन्तु इलन् आल्–आया नहीं है; यान्–मैंने; तरु चॊल् करुतेन्–उसके समयानुकूल कहे वचन को न मानकर; ऒरु तैयलै–अप्रमेय स्त्री को; पिरिवित्ततॆन्–अपने से बिछुड़वा लिया; ऎन्पतु–इस; ओर् पोऴै–एक दुःख के; पॆरुत्तु ऎरिवित्तिट–बहुत जलाने पर; आवि–प्राणों को; इऴन्तत्तो–छोड़ दिया क्या। १०९५

सबन्ध धनुर्हस्त, मेरा प्राण-प्यारा लक्ष्मण आया नहीं है। मैंने उसकी बात न मानकर अपनी अनुपम स्त्री को अलग करा दिया। यह दुःख शायद उसे बहुत सन्ताप दे रहा था। तब क्या उस दुःख के कारण उसने अपने प्राण छोड़ दिये ? । १०९५

उण्डाहिय कारिरु ळूडॊरुवेन्, कण्डानवन् वेऱॊरु कण्णिलताल्
पुण्डानुरु नॆञ्जु पुऴुङ्गुरुवेन्, ऎण्डानिल नॆङ्ङन नाडुहॆनो 1096

उण्टु आकिय–वन (जो) आया है; कार् इरुळ् ऊटु–इस घने अन्धकार में; ऒरुवेन्–एकाकी मेरी; कण् तान् अवन्–आँख वही है; वेऱु ऒरु कण्–और कोई आँख; इलॆन् आल्–मेरी नहीं है, इसलिए; पुण् तान् उऱु–पहले ही जो विक्षत है; नॆञ्चु–उस मन में; पुऴुङ्कु उऱुवेन–अधिक तप्त मैं; ऎण् तान् इलन्–विचार-विमूढ़ हो गया हूँ; ऎङ्ङनम्–किस प्रकार; नाटुकॆनो–खोजूँगा। १०९६

जो घना अन्धकार फैल आया है, उसमें मैं अकेला हूँ। वही मेरी आँख है ! उसको छोड़ कोई दूसरी आँख मेरी नहीं है। पहले से ही मेरा मन विद्ध और व्रणी है। अब मैं और भी उत्तप्त हुआ हूँ। मन

सोचता भी नहीं, विमूढ़ हो गया है। इस स्थिति में मैं क्योंकर उसको ढूँढ़ने चलूँ ? । १०९६

तळ्ळाविनै येन्ऱनि यारुयिराय्, उळ्ळायोरु नीयु मोळित्तनैयो
पिळ्ळायॅपॅरि याय्पिऴै शॅय्दनैयाल्, कोळ्ळादुल हुन्ऩैयि दोहोडिदे 1097

तळ्ळा वित्तैयेन्–अप्रतिवद्ध विधिवद्ध मेरे; तनि आर् उयिराय् उळ्ळाय्–अद्वितीय प्राण-सम रहनेवाले; ओरु नीयुम् ओळितूतनैयो–वैसे तुम भी अदृश्य हो गये क्या; पिळ्ळाय्–बेटे; पॅरियोय्–बड़े; पिऴै चॅय्तनै आल्–अपराध किया है तुमने, तदर्थ; उलकु उन्ऩै कोळ्ळातु–लोक तुमको सही नहीं मान लेगा; इतु ओ कोटितु–यह अवश्य कठोर है। १०९७

अबाध विधि से बद्ध मेरे प्यारे प्राण (-सम) हे लक्ष्मण ! तुम भी मुझे छोड़ कहीं जा छिप गये क्या ? उम्र में छोटे ! बुद्धि में बड़े ! तुमने यह काम करके एक कठोर अपराध कर दिया ! लोक इसको सही नहीं मानेगा। यह तुम्हारा कार्य अवश्य बड़ा कठोर है ! । १०९७

पेराविडर् वन्दन पेर्क्कवलाय्, तीराविडर् तन्दनै तॅव्वर्तोऴुम्
वीरावॅनै यॅङ्ङन् वॅरुत्तनैयो, वारायपुर मित्तुणै वैहुदियो 1098

वन्तत–जो हम पर आये; पेरा इटर्–उन अवार्य संकटों को; पेर्क्क–दूर करने में; वलाय्–समर्थ; तीरा इटर्–अमिट दुःख; तन्ततै–(मुझे) दिला दिया; तॅव्वर् तोऴुम् वीरा–शत्रु द्वारा भी पूज्य वीर; ॲतै ॲङ्ङन् वॅरुत्ततैयो–मुझसे क्योंकर घृणा की; इ तुणै–इतनी देर; पुरम्–बाहर; वैकुतियो–रह सके क्या; वाराय्–आ जाओ। १०९८

हमारे ऊपर आये अवार्य संकटों को दूर करने में समर्थ हे भाई ! तुमने मुझे अप्रतिवद्ध संकट दे दिया। शत्रु-शंसित वीर ! तुमने कैसे मुझसे घृणा की ? इतनी देर कहीं बाहर ठहर जाओगे क्या ? आओ, मेरे पास आ जाओ। १०९८

ॲन्नैत्तरु मॅन्दैयै यॅन्नैयरैप्, पॊन्नैप्पॊरु हिन्ऱ पॊलन्गुऴैयाळ्
तन्नैप्पिरि वेनुळ नावदुतान्, उन्नैप्पिरि याद वुयिर्प्पलवो 1099

ॲन्नै तरुम् ॲन्तैयै–अपने जनक अपने पिता को; ॲन्नैयरै–अपनी माताओं को; पॊन्नै पॊरुवुकिन्ऱ–कांचना (श्रीलक्ष्मी) से तुल्य; पॊलन् कुऴैयाळ् तन्नै–स्वर्णकुण्डल-धारिणी सीता को; पिरिवेन्–छोड़कर अलग जो रहता हूँ; आवतु तान्–जीवित रहता हूँ, वह भी; उयिर्प्पु उन्नै–अपना जीवन, तुमसे; पिरियात अलवो–विलग नहीं हुआ, उसी कारण न। १०९९

मैं अपने पिता से, अपनी माताओं से और स्वर्णकुण्डलधारिणी 'कांचना' (लक्ष्मी) सी सीता से बिछुड़कर भी जीवन धारण करता हूँ, तो वह प्राण-सम कभी विलग न होकर तुम साथ रहे —इसी कारण ! । १०९९

पॊऱ्ऱोडिवर् हिऩ्ऱ पॊलङ्गुऴैयाळ्, तऱ्ऱेडि यिरुन्दु तयङ्गिडुवेऩ्
निऱ्ऱेडि वरुन्द निरप्पित्तैयो, ॲऱ्ऱेडित्तै वन्द विळङ्गळिऱे 1100

ॲऩ् तेटित्तै वन्त–मुझे ही ढूँढ़ते हुए (प्राप्य समझकर) मेरे पीछे आये हुए; इळम् कळिऱे–कलभ; पॊऩ् तोटु इवर्किऩ्ऱ–स्वर्ण के दलों से युक्त; पॊलऩ् कुऴैयाळ् तऩ्–सुन्दर कुण्डलधारिणी को; तेटि–खोजते हुए; इरुन्तु तयङ्किटुवेऩ्–यहाँ जो हिचकता रहता हूँ; निऩ् तेटि वरुन्त–तुमको खोजकर कष्ट उठाऊँ; निरप्पित्तैयो–ऐसी लाचारी बना दी क्या। ११००

केवल मेरी सेवा का अर्जन करने के लिए मेरे साथ आये हुए कलभ-सम लक्ष्मण ! दलोंसहित कमल-समान स्वर्ण के बने कर्णाभरणों से भूषित सीता की खोज में मैं यहाँ ठहरा हुआ दुःख उठा रहा हूँ। अब क्या तुमने तुम्हें खोजने की लाचारी भी पैदा कर दी है ? । ११००

इऩ्ऱेयिऱ वादॊऴि येऩ्ऩेमरो, पॊऩ्ऱादॊऴि यार्पुहल् वारुळराल्
ऒऩ्ऱायित्ति वुन्गिळै योरैयॆलाम्, कॊऩ्ऱाय्कॊडि यायिदु वुङ्गुणमो 1101

इऩ्ऱे–आज ही; इऱवातु ऒऴियेऩ्–विना मरे नहीं रहूँगा; पुकल्वार उळराल्–(यह समाचार) सुनानेवाले होंगे, इसलिए; ॲमर् ओ पॊऩ्ऱातु ऒऴियार्–हमारे जन विना मरे नहीं रहेंगे; उऩ् किळैयोरै ॲलाम्–अपने सारे बन्धुजनों को; इति ऒऩ्ऱाय् कॊऩ्ऱाय्–तुमने अब एक साथ मरवा दिया; कॊटियाय्–निर्मम हो; इतुवुम् कुणमो–यह भी (अच्छा) गुण है क्या। ११०१

(अब इसका फल क्या होगा— जानते हो ?) मैं मरे विना नहीं रहूँगा। यह समाचार ले जानेवाले कोई अवश्य हो जायँगे। वह सुनकर हमारे बन्धुजन भी मर जायेंगे, अवश्य। तो अपने सारे बन्धु-लोगों को तुम ही एक साथ मरवानेवाले बन जाओगे। इसलिए तुम बड़े ही निर्मम बन गये। यह भी कोई श्लाघ्य गुण है क्या ? । ११०१

मान्दामुदऩ् मऩ्नवर् तम्वऴियिल्, वेन्दाहै तुऱन्दपिऩ् मॆय्युऱवोर्
तान्दामॊऴि यत्तमि येनुडऩे, पोन्दायॆऩ्ऩै विट्टऩ्ऩै पोयित्तैयो 1102

मान्ता मुतल्–मान्धाता से लेकर; मऩ्ऩवर् तम् वऴियिल्–राजाओं से अपनाये गये मार्ग में; वेन्तु आकै–राजा बनना; तुऱन्त पिऩ्–त्यागने के बाद; मॆय् उऱवोर्–सच्चे बन्धुजन; ताम् ताम् ऒऴिय–सब दूर रह गये; तमियेऩ् उटऩे–अकेले मेरे साथ; पोन्ताय्–आये; ॲऩ्ऩै–मुझे; विट्टऩ्ऩै–छोड़कर; पोयित्तैयो–चले गये क्या। ११०२

मान्धाता के काल से लेकर जो प्रथा चली आ रही थी, मैंने उसका उल्लंघन किया और राजा बनना छोड़ा। तब मेरे सभी रिश्तेदार छूट गये, पर तुम एक ही अकेले रह गये और मेरे साथ आये। ऐसे तुम अब मुझे छोड़कर चले गये क्या ? । ११०२

ऍन्ऩावुरै यावॅऴुम् वीऴ्मिरुन्, दुन्नावुणर् वोय्वुरु मॊऩ्ऱलवाल्
मिन्ऩादिडि यादिरुळ् वाय्विळैवी, दॅन्नामॆन् मॆन्ऱऩि नायहऩ्ऩे 1103

ऍन् तनि नायकन्–मेरे (कवि के) अद्वितीय ईश्वर; ऍन्ऩा उरैया–यों कहते हुए; ऍऴुम्–उठकर खड़े होते; वीऴुम्–गिर जाते; इरुन्तु–उठ बैठकर; उऩ्ऩा–(अपने कष्टों का) विचार कर; उणर्वु ओय्वु उऱुम्–सुध-बुध खो जाते; मिन्ऩातु इटियातु–(बिजली के) चमके विना वज्र नहीं गिरता; इरुळ् वाय्–अन्धकार में; विळैवु–हुआ; ईतु ऍन्ऩाम्–यह क्या है; ऍंनुम्–कहते; ऒन्ऱु अल–एक नहीं, (अनेक तरह से) दुःख का अनुभव किया। ११०३

(कवि कहते है—) इस तरह मेरे अद्वितीय परमनायक कहते हुए उठते; फिर शिथिल होकर गिर जाते। फिर उठ बैठते और अपने कष्टों का स्मरण करके सुध-बुध खो जाते। सोचते कि विना विजली की चमक के वज्र नही गिरता। अँधेरे में यह जो हुआ, उसका कारण क्या है ? (क्या और भी विपदाएँ मिलकर आनेवाली हैं ?) एक नहीं, अनेक प्रकार से वे चिन्ता करते दुःखी हो रहे थे। ११०३

नाडुम्बल शूळल्ह डोरुनडन्, दोडुम्बॅयर् शॊल्लि युळैन्दुयिर्पोय्
वाडुम्वहै शोरु मयङ्गुरुमाल्, आडुङ्गळि मामद यानैयनान् 1104

आटुम्–हिलने-डोलने के स्वभाव वाले; कळि मा मत–अति मदमत्त; यानै अऩाऩ्–गज-सम श्रीराम; पल चूळल्कळ् तोऱुम्–अनेक स्थानों में; नटन्तु नाटुम्–जाकर ढूंढ़ते; पॅयर् चॊल्लि ओटुम्–नाम लेते हुए दौड़ते; उळैन्तु–आकुल होकर; उयिर् पोय् वाटुम् वकै–प्राण जाकर मुरझा जायँ, ऐसा; चोरुम्–जर्जर बनते; मयङ्कुरुम्–मूर्च्छित हो जाते। ११०४

हिलता रहने के स्वभाव के अभिमानी और मत्तगज के समान श्रीराम अनेक स्थानों में जाकर ढूंढ़ने लगे। लक्ष्मण का नाम लेते हुए दौड़े। अधिक दुःख के कारण प्राण सूखने-से लगे। थककर मूर्च्छित हुए। ११०४

कमैयाळॊडु मॅन्नुयिर् कावलिनिन्, ऱिमैयादव नित्तुणै ताऴ्वुरुमो
शुमैयायुल हूडुऴ रॊल्विनैयेऱ्, कमैयादुहॊल् वाऴ्वऱि येनॆनुमाल् 1105

कमैयाळ् ओटुम्–क्षमाशालिनी सीता के साथ; ऍन् उयिर्–मेरे भी प्राणों की; कावलिन् निन्ऱु–रक्षा में रहकर; इमैयातवन्–अनिद्र (जो रहा) वह; इ तुणै ताऴ्वुरुमो–इतना विलम्ब करेगा; उलकु ऊटु–संसार में; चुमैयाय् उऴल्–भार बनकर घूमनेवाले; तॊल् वितैयेऱ्कु–प्राचीन विधिवद्ध मुझे; वाऴ्वु अमैयातु कॊल्–(सन्तोषमय) जीवन प्राप्त नहीं होगा क्या; अऱियेन्–कुछ नही जान पाता; ऍनुम्–कहते (पछताते)। ११०५

लक्ष्मण क्षमाशालिनी सीता के साथ मेरे प्राणों की रक्षा में दत्तचित्त अनिद्र रहा। क्या वह अपने वश से इतना विलम्ब करेगा ? संसार का भार बनकर घूमनेवाले, प्राचीन विधिविताड़ित मुझे सन्तोष का जीवन नहीं

मिलेगा क्या ? कुछ भी जान नहीं पाता। —श्रीराम ऐसा सोचते हुए वहुत शोकसंतप्त हुए । ११०५

अऱप्पालुळ देलवऩ् मुऩ्ऩवनाय्प्, पिऱप्पानुऱिल् वन्दु पिऱक्कवेंना
मऱप्पाल्वडि वाळ्हॊडु मऩ्ऩुयिरैत्, तुऱप्पानुऱु हिऩ्ऱ तॊडर्च्चियिऩ्वाय् 1106

अऱम् पाल् उळतु एल्—धर्म-पक्ष कोई है तो; अवऩ्—वह लक्ष्मण; मुऩ्ऩवताय्—मेरा अग्रज बनकर; पिऱप्पाऩ् उरिल्—जन्म ले पाये तो; वन्तु पिऱक्क अंता—आकर जन्म ले, कहकर; मऱम् पाल्—दृढ़ता के साथ; वटि वाळ् कॊटु—तीक्ष्ण करवाल लेकर; मऩ्—नाथ श्रीराम; उयिरै तुऱप्पाऩ् उऱुकिऩ्ऱ—प्राण-त्याग करने को; तॊटर्च्चियिऩ् वाय्—जब उद्यत हुए, उसके आरम्भ में । ११०६

श्रीराम ने आत्महत्या कर लेने का निश्चय कर लिया । 'अगर धर्म का पक्ष स्थिर रहा तो मेरे छोटे भाई लक्ष्मण का मेरे अग्रज के रूप में जन्म लेना साध्य हो तो हो ।' यह कहते हुए उन्होंने तलवार ली । राजाराम अपने प्राण त्यागने के लिए प्रस्तुत हुए । तब आत्महत्या के कार्य के प्रारम्भ में ही— । ११०६

पेर्ऩ्दाऩॆडु मायैयि ऩिऱ्पिरिया, ईर्ऩ्दाऩव णाशि पिडित्तिळैयोऩ्
शोर्ऩ्दाळिडु पूशल् शॆवित्तॊळैयिल्, शेर्ऩ्दार्दलु मेतिरु माऱॆरुळा 1107

इळैयोऩ्—छोटे भाई; नॆट्टु मायैयिऩिल्—लम्बे माया-मोह से; पिरिया—छूटकर; पेर्ऩ्ताऩ्—उससे अलग होकर; अवळ् नाचि पिटित्तु—उसकी नाक पकड़कर; ईर्ऩ्ताऩ्—काट दी; चोर्ऩ्ताळ्—उससे वह दुर्बल हुई; इटु पूचल्—उसने जो (रुदन-)स्वर निकाला वह; चॆवि तॊळैयिल् चेर्ऩ्तु आर्तलुम्—ज्योंही कर्ण-विवर में भरा, त्योंही; तिरुमाल्—श्रीविष्णु (के अवतार श्रीराम); तॆरुळा—सजग होकर । ११०७

उधर छोटे भाई लक्ष्मण राक्षसी की माया से मिली मोहावस्था से छूटे । उन्होंने राक्षसी के बन्धन से अलग होकर उसकी नासिका पकड़कर (करवाल से) काट दी । उससे वह राक्षसी पीड़ित हुई और बल खोकर रुदन-स्वर निकालने लगी । वह स्वर श्रीविष्णु के कर्णविवर में आकर भर गया । तभी श्रीराम अपनी भ्रमित अवस्था से सचेत हुए । ११०७

परऱ्ऱॊहु काऩहत् तरक्कर् पल्हळल्
मुरऱ्ऱॊरु वॆंज्जमर् मुयल्हिऩ् ऱारॆदिर्
उरऱ्ऱिय वोशैयऩ् ऱॊरुत्ति यूऱुपट्
टरऱ्ऱिय कुरलव ळरक्कि यामॆंऩा 1108

परल् तॊकु कानकत्तु—कंकड़-भरे जंगल में; अरक्कर्—राक्षस; पल् कळल् मुरऱ्ऱु—अनेक पायलों को बजने देते हुए; ऒरु वॆंम् चमर्—एक भयंकर युद्ध; मुयल्किऩ्ऱार्—जो करते हैं उन; ऎतिर्—के सामने; उरऱ्ऱिय—उच्च स्वर में निकाला गया; ओचै अऩ्ऱु इतु—शब्द है नहीं, यह; ऒरुत्ति—एक स्त्री का; ऊऱु पट्टु—

संकटग्रस्त होकर; अरट्रिय कुरल्–रुदन का स्वर है; अवळ्–वह; अरक्कि आम् ॲन्ता–राक्षसी ही है, यह सोचकर। ११०८

श्रीराम ने सोचा कि यह स्वर राक्षसों का स्वर नहीं है, जो कंकड़ीले जंगल में अपनी पायलों को बजने देते हुए युद्ध कर रहे हों और अपने शत्रुओं के सामने उच्च स्वर में नाद उठा रहे हों। किन्तु यह एक स्त्री का कष्ट में पड़कर निकाला हुआ रुदन-स्वर है। वह स्त्री कोई राक्षसी ही होगी। —यह सोचकर—। ११०८

अङ्गियि	न्ॅडुम्बडै	वाङ्गि	याङ्गदु
शॅङ्गैयिऱ्	करियवऩ्	ऱिरिक्कुम्	वेलैयिल्
पॉङ्गिरु	ळप्पुरत्	तुलहम्	बुक्कदु
कङ्गुलुम्	बहलॅनप्	पॉलिऩ्दु	काट्टिऱ्ऱे **1109**

करियवऩ्–नीलवर्ण; नॅट्टुम् पटै–लम्बा शर; चॅम् कैयिऩ् वाङ्कि–लाल (सुन्दर) हाथ में लेकर; आङ्कु–तव; अतु–उसको; अङ्कियिल्–आग्नेयास्त्र के रूप में; तिरिक्कुम् वेलैयिल्–प्रयोग करते समय; पॉङ्कु इरुळ्–बढ़ा हुआ अन्धकार; अ पुरत्तु उलकम्–उस तरफ़ के लोक में; पुक्कतु–जा पहुँचा; कङ्कुलुम्–रात भी; पकल् ॲन–दिन के समान; पॉलिन्तु–प्रकाशमय बनकर; काट्टिऱ्ऱु–दिखाई दिया। ११०९

नीलवर्ण श्रीराम ने एक लम्बा शर लिया, उसे आग्नेयास्त्र के रूप में अभिमन्त्रित करके प्रेषित किया। तो अन्धकार अण्ड के उस पार के लोक में चला गया। इसलिए रात भी दिन के समान प्रकाशमय बन गयी। ११०९

नॅडुवरै	पॉडिपड	निवन्द	मामरम्
ऑडिपड	निलमह	ळुळैय	वूङ्गॅलाम्
शडशड	वॅनुमॉलि	तळैप्पच्	चालवुम्
मुडुहिनऩ्	कालिऩ्वॅङ्	गालिऩ्मुम्	मैयाऩ् **1110**

वॅम् कालिऩ् मुम्मैयाऩ्–प्रतापी पवन के तिगुने वेग से; नॅटु वरै पॉटि पट–बड़े पर्वतों को चूर करते हुए; निवन्त मा मरम् ऑटि पट–ऊँचे बड़े वृक्षों को तोड़ते हुए; निल मकळ् उळैय–भूमिदेवी को दुःख देते हुए; ऊङ्कु ॲलाम्–सभी ओर; चट चट ॲन्नुम् ऑलि–'तड़', 'तड़' शब्द; तळैप्प–अधिक होने देते हुए; कालिऩ्–पैदल; चालवुम् मुटुकिऩऩ्–जल्दी-जल्दी गये। १११०

श्रीराम सवेग जाने लगे। उनकी गति प्रतापी पवन की गति की त्रिगुणी थी। उस वेग में बड़े-बड़े पर्वत चूर हुए। ऊँचे और बड़े तरु गिरे। भूदेवी भी दुःखीं। सब ओर 'तड़-तड़' शब्द भर उठा। वे इस रीति से पैदल चले। १११०

ऑरुङ्गुयर्न् दुलहिन्मे लूळिप् पेर्च्चियुळ्
करुङ्गडल् वरुवदे यनैय काट्चियान्
पॅरुन्दुणैत् तम्मुनै नोक्किप् पिन्नवन्
वरुन्दलै वरुन्दलै वळ्ळि योयॆना 1111

ऊळि पेर्च्चि उळ्–युगान्तर में; उलकिन् मेल्–पृथ्वी पर; करुम् कटल्–नीला सागर; ऑरुङ्कु उयर्न्तु–एक साथ उमँगकर; वरुवतु अनैय–आता हो जैसे; काट्चियान्–दृश्यमान; पॅरुम् तुणै–परमपालक; तम् मुनै–अपने ज्येष्ठ भ्राता को; पिन्नवन्–अनुज लक्ष्मण; वळ्ळियोय्–उदार प्रभु; वरुन्तलै वरुन्तलै ऎन्ना–कातर नहीं हों, कातर मत होइए, कहते हुए। १११1

श्रीराम युगांतर के काल में उठकर भूमि पर बढ़ते चलनेवाले समुद्र के समान प्रचण्ड वेग से जा रहे थे। परमरक्षक अपने ज्येष्ठ को उस तरह आते देखकर लक्ष्मण ने कहा कि उदार प्रभु! दुःखी मत हों! दुःखी मत हों। (ऐसा कहकर—)। ११११

वन्दनॆ नडियनॆन् वरुन्दल् वाळिनिन्
अन्दमि लुळ्ळमॆन् ऱरियक् कूऱुवान्
शन्दमॆन् मलर्पुरै शरणज् जार्न्दनन्
शिन्दिन नयनम्वन् दनैय शॆय्हैयान् 1112

चिन्तिन नयनम्—खोया हुआ नेत्र; वन्तु अनैय चॆय्कैयान्–फिर मिला हो, ऐसा कार्य करते हुए लक्ष्मण; वन्तनॆन् अटियनॆन्–आ गया, दास मैं; वरुन्तल्–दुःखी मत हों; निन् अन्तम् इल् उळ्ळम्–आपका अनन्त प्रेम-भरा मन; वाळि–जिए; ऎन्ऱु–ऐसा; अऱिय कूऱुवान्–समझाते हुए जो बोले; चन्तम् मॆन् मलर् पुरै–सुन्दर, कोमल कमल-सम; चरणम्–(श्रीराम के) चरणों पर; चार्न्तनन्–नमे। १११२

लक्ष्मण की पुनःप्राप्ति श्रीराम के लिए खोये नयन की पुनःप्राप्ति के समान अतिशय सुखदायक थी। वे, यह कहते हुए कि दास मैं आ गया। आपका अनन्त प्रेम-भरा मन जिए, जिससे श्रीराम को अपना आना विदित हो जाय, आये और सुन्दर और कोमल कमल-सम श्रीराम-चरणों पर विनत हुए। १११२

ऊऱ्ऱुऱु कण्णिनी रॉळुह निन्ऱवन्
इऱ्ऱिळङ् गन्ऱिनैप् पिरिवुऱ् ऱेङ्गिनिन्
ऱाऱ्ऱला दरऱ्ऱुव दरिदि नॆय्दिडप्
पाऱ्ऱुऱु पनिमुलै यावित् पान्मैयान् 1113

ऊऱ्ऱु उऱु–स्रोत के समान (बहनेवाले); कण्णिन् नीर् ऑळुक–आँखों के आँसू बहाते हुए; निन्ऱवन्–स्थित होकर श्रीराम; ईऱ्ऱु इळम् कन्ऱिनै–अपने ब्याये छोटे बछड़े से; पिरिवु उऱ्ऱु–अलग होकर; एङ्कि निन्ऱु–तरसते हुए रहकर; आऱ्ऱलातु–सह न सकने से; अरऱ्ऱुवतु–रँभाती रही; अरितिन् ऎय्तिट–फिर वह बछड़ा अकस्मात

मिल गया; पाल् तुरू–तब दूध से भरकर; पत्ति मुलै आवित्त्–काँपनेवाले थन की गाय की-सी; पान्मैयात्–स्थिति में आकर। १११३

श्रीराम की आँखों से आँसू स्रोत से बहनेवाले जल के समान निकल आये। वे उस गाय की स्थिति में आये, जो अपने अभी ब्याये बछड़े को खो चुकी और वियोग की असह्य वेदना से रँभाती रही हो और जिसके पास अकस्मात बछड़ा आ गया हो, जिससे उसका थन दूध से भरकर काँपने लगा हो! । १११३

तऴुवित्तन् पन्मुरै तारैक् कण्णिनीर्क्
कऴुवित्त नाण्डवन् कनह् मेन्नियै
वऴुवित्तै यामॆन्न मन्नक्कॊ डेङ्गित्तेन्
ऎऴुवॆन्न मलैयॆन्न वियैन्द तोळिनाय् 1114

आण्टु–तब; अन्नन् कनक मेनियै–उनके स्वर्ण-सम सुन्दर शरीर को; पन् मुरै तऴुवित्तन्–अनेक बार गले से लगाकर; कण्णिन् नीर् कऴुवित्तन्–अश्रुजल से नहला दिया; ऎऴु ऎन्न मलै ऎन्न–खम्भे के समान और पर्वत के समान; इयैन्त–बने; तोळिनाय्–कन्धों वाले; वऴुवित्तै आम्–खो गये; ऎन्न–ऐसा; मनम् कॊण्टु–मन में धारणा करके; एङ्कित्तेन्–आर्त रहा। १११४

श्रीराम ने लक्ष्मण के कनकवर्ण शरीर को अनेक बार अपने आलिंगन में भर लिया। अपने आँसू से उन्हें नहलाया। खम्भे-सम और पर्वत-सम कन्धों वाले! तुम खो ही गए, ऐसा मन में निश्चय करके मैं बहुत आर्त रहा। १११४

ऎन्नैयङ् गॆय्दिय दियम्बु वायॆन्न
अन्नव नः(ह्)वॆला मऱियक् कूऱलुम्
इन्नलु मुवहैयु मिरण्डु मॆय्दिनान्
तन्नल दॊरुपॊरु ळन्नक्कु मेलिलान् 1115

तन् अलतु–खुद को छोड़; ऒरु पॊरुळ्–कोई वस्तु; तन्नक्कु मेल् इलान्–जिनके ऊपर न रही, उन श्रीराम ने; अङ्कु ऎय्तियतु ऎन्नै–वहाँ क्या हुआ; इयम्पुवाय्–बतलाओ; ऎन्न–ऐसा (पूछा,) पूछने पर; अन्नवन्–लक्ष्मण के; अ:तु ऎलाम् अऱिय कूऱलुम्–समझाकर कहने पर; इन्नलुम्–दुःख; उवकैयुम्–और सन्तोष; इरण्टुम् ऎय्तिनान्–दोनों का अनुभव किया। १११५

श्रीराम ने, जिनके ऊपर उनको छोड़कर कोई नही रहा, लक्ष्मण से प्रश्न किया कि वहाँ क्या हुआ? 'बतलाओ' कहने पर लक्ष्मण ने वहाँ की घटी सारी बातें समझाकर कही। तब श्रीराम को एक साथ दुःख और सन्तोष दोनों का अनुभव हुआ। १११५

आय्वुरु पॆरुङ्गड लहत्तु ळायिऩार्
पाय्दिरै वरुन्दोरुम् बरियर् पालरो
तीय्वित्तैप् पिऱविवॆंज् जिऱैयिर् पट्टयाम्
ओय्वुरु तुयर्वर वुट्कू नोन्मैयो 1116

आय्वु उरु-विचारणीय; पॆरुम् कटल अकत्तुळ् आयित्तार्-विशाल समुद्र में जो फँस गया; पाय् तिरै-(वह) लहराती आती लहर; वरुम् तोरुम्-जब-जब आती है, तब; परियल् पालरो-क्षुब्ध हो सकता है क्या; ती वित्तै-बुरे कर्म के कारण; पिऱवि वॆम् चिऱैयिल्-जन्म रूपी (बन्धन में) कारा में; पट्ट नाम्-पड़े हमें; ओय्वु अरु-निरन्तर; तुयर् वर—कष्ट के आने पर; उट्कल्—कातर होना; नोन्मैयो-साहस का हेतु होगा क्या। १११६

लक्ष्मण ने श्रीराम को समझाया। जब कोई समुद्र-मध्य फँस गया, तो यह विचारणीय बात है कि हर लहर के आते समय उसे दुःख करना क्या कोई अर्थ रखता है? कर्मगति के अनुसार जन्म की कारा में बन्द हमें निरन्तर संकट आते रहेंगे। तब कातर होना क्या साहस का लक्षण होगा? । १११६

मूवहै यमररु मुलह मुम्मैयुम्
मेवरुम् पहैयॆलक् काह मेल्वरित्
एवरे कडप्पव रॆम्बि नीयुळै
आवदे वलियिऩि यरणुम् वेण्डुमो 1117

ऍम्पि नी उळै—भैया, तुम हो; इऩि वलि आवते—अब शक्ति मिल गयी; अरणुम् वेण्टुमो—और कोई रक्षण चाहिए क्या; मू वकै अमररुम्—त्रिदेव; उलकम् मुम्मैयुम्—त्रिलोक; मेवु अरुम् पकै—दुस्तर शत्रु; ऍऩक्कु आक-मेरे, बनकर; मेल् वरित्—चढ़ आयें तो भी; एवरे कटप्पवर्—कौन मुझे पार पा सकेगा। १११७

श्रीराम ने उत्साह के साथ उत्तर दिया। भैया! तुम मेरे कनिष्ठ सहोदर साथ हो! मेरा साहस बढ़ गया। अब मुझे और किसी रक्षण की आवश्यकता पड़ेगी क्या? (नहीं।) त्रिदेव क्या त्रिलोक भी मिलकर मेरे साथ शत्रुता करके चढ़ आयें तो क्या कोई मुझे हरा सकेगा? । १११७

पिरिबवर् यावरुम् बिरिह पेरिडर्
वरुवत्त यावैयुम् वरुह वार्हळल्
शॆरुवलि वीरनिऱ् ऱीरु मल्लदु
परुवर लॆन्वयिऩ् पयिलर् पालदो 1118

पिरिपवर् यावरुम्—छोड़नेवाले सभी; पिरिक—छोड़ जायँ; वरुवत—आनेवाले; पेर् इटर्—बड़े कष्ट; यावुम् वरुक—सब आ जायँ; चॆरु वलि—युद्धसाहसी; वार् कऴल् वीर—लम्बी पायल से शोभित वीर; परुवरल्—(मेरे सारे) दुःख; निऩ् तीरुम्—

तुम्हारे द्वारा दूर हो जायँगे; अल्लतु–नहीं तो; ॲन्न् वयिन्–मेरे पास; पयिलल् पालतो–आ सकेंगे क्या। १११८

मुझे छोड़ जानेवाले भले छोड़ जायँ ! आनेवाले सारे संकट आ जायँ। युद्ध में साहस दिखानेवाले पायलधारी वीर ! आनेवाले संकट तुम्हारे द्वारा निवारित हो जायँगे। नहीं तो वे मेरे पास आ सकेंगे क्या ? । १११८

वन्ऱॊऴिल् वीरपोर् वलिय रक्कियै
वॆन्ऱुपिन् मीण्डॆन नॆनवि ळम्बिनाय्
पुन्ऱॊऴि लन्नैयवळ् पुरिन्द शीऱ्ऱत्ताल्
कॊन्ऱिलै पोलुमाऱ् कूऱुवा यॆन्ऱान् 1119

वल् तॊऴिल् वीर–कठोर (युद्ध-)कार्य में दक्ष; पोर् वलि अरक्कियै–युद्ध में वल दिखानेवाली राक्षसी को; वॆन्ऱु–जीतकर; पिन्–फिर; मीण्टनॆन्–लौट आया; ॲन्न विळम्पिनाय्–ऐसा कहा; अन्नैयवळ्–उसके; पुन् तॊऴिल् पुरिन्त–नीच कार्य करने से उत्पन्न; चीऱ्ऱत्ताल्–कोप से; कॊन्ऱिलै पोलुम्–मारा नहीं क्या; कूऱुवाय्–कहो; ॲन्ऱान्–कहा। १११९

कठोर युद्धकार्य में दक्ष वीर ! तुमने कहा था कि युद्ध में बल दिखानेवाली राक्षसी को जीतकर लौट आया। उसने बुरा और नीच काम किया था। उससे क्रुद्ध होकर तुमने उसे मारा नहीं क्या ? बताओ— श्रीराम ने जानना चाहा। १११९

तॊळैपडु मूक्कॊडु शॆवितु मित्तुह
वळैयॆयि ऱिदळॊडु मरिन्दु माऱ्ऱिय
अळवॆयिऱ् पूशलिट् टरऱ्ऱि ऩाळॆन
इळैयवऩ् विळम्बिनिऩ् ऱिरुहै कूप्पिनाऩ् 1120

तॊळै पट्टु–छेद बने, ऐसा; मूक्कु ऒटु–नाक के साथ; चॆवि–(उसके) कान; इतळ् ऒटुम्–अधरों के साथ; वळै ॲयिऱुम्–वक्र दाँतों को; तुमित्तु उक–टुकड़े कर गिराते हुए; अरिन्तु तलवार से काटकर; माऱ्ऱिय अळवैयिल्–उसको विकृत बनाया, तब; पूचल् इट्टु–शोर मचाते हुए; अरऱ्ऱिऩाळ्–विलापी; ॲन–ऐसा; इळैयवन् विळम्पि–छोटे भाई ने कहकर; निन्ऱु–खड़े होकर; इरु कै कूप्पिनान्–दोनों हाथ जोड़े। ११२०

लक्ष्मण ने उत्तर दिया कि नहीं। मैंने उसकी नाक को, छेद बन जाय ऐसा; अधरों और वक्र दाँतों को खण्ड होकर गिर जायें, ऐसा तलवार से काटा। उसको इस तरह विकृत कर दिया। तभी वह ऊँचे स्वर में चिल्लाई। यह कहकर लक्ष्मण ने श्रीराम के सामने हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर वह स्थिर खड़े रहे। ११२०

तॉल्लिरु डन्निरुकॉलत् तॉडङ्गि ताळैयुम्
कॉल्ललै नाशियैक् कोय्दु नीक्किनाय्
वल्लैनी मनुमुदन् मरबि नोयॅन्नप्
पुल्लिन्न नुवहैयिर् पॉरुमि विम्मुवान् 1121

तॉल् इरुळ् तन्निल्—बहुत घने अन्धकार में; कॉल—तुम्हें मारने का; तॉटङ्कि-ताळैयुम्—जिसने उपक्रम किया, उसे भी; कॉल्ललै—तुमने नहीं मारा; नाचियै कॉय्तु नीक्किनाय्—नाक को काटकर अलग किया; मनु मुतल् मरपिनोय—मनु-प्रभृति के कुलोत्पन्न; नी वल्लै—तुम (उस कुल की रीति के पालन में) समर्थ निकले; ॲन्न—कहकर; उवकैयिल् पॉरुमि—सन्तोष से भरकर; विम्मुवान्—फूल उठे; पुल्लिनन्—आलिंगन कर लिया। ११२१

श्रीराम ने वह सुनकर साधुवाद दिया। इस घने अन्धकार के समय में उसने तुम्हें मारने का उपक्रम किया था। तो भी तुमने उसे केवल नाक काटकर जीवित छोड़ दिया। मनुप्रभृति कुल में उत्पन्न कुमार! तुम उस कुल की रीति के पालन में समर्थ निकले। श्रीराम अत्यधिक आनन्द से भर उठे। उन्होंने लक्ष्मण का आलिंगन कर लिया। ११२१

पेररुन् दुयरिरै पॅयर्त्तु ळारॅन
वीरनुन् दम्बियुम् विडिय नोक्कुवार्
वारुणम् निनैन्दनर् वान नीरुण्डु
तारणित् ताङ्गॉरु गिरियिर् रङ्गिनार् 1122

पेर् अरुम् तुयर्—दूर करने में कठिन दुःख से; इरै पॅयर्त्तु उळार् ॲन्न—थोड़ा निवृत्त हुए जैसे; वीरनुम् तम्पियुम्—श्रीरघुवीर और उनके छोटे भाई; विटियल् नोक्कुवार्—प्रभात की प्रतीक्षा में; वारुणम् निनैन्तनर्—वरुण-मन्त्र-जाप कर; वान नीर् उण्टु—आकाशगंगा का जल पीकर; तारणित्तु—आराम करके; अङ्कु—वहाँ; ऑरु किरियिल्—एक गिरि पर; तङ्किनार्—ठहरे। ११२२

दोनों भाइयों का कठोर और अनिवार्य दुःख थोड़ा शान्त हुआ। प्रभात की प्रतीक्षा करनी थी। उन्होंने वरुणमन्त्र का जाप किया, तो आकाशगंगा का जल प्राप्त हुआ। उसको पीकर उन्होंने अपनी प्यास बुझा ली। फिर वे वहाँ एक गिरि के थल पर ठहरे। ११२२

कल्लहल् वॅळ्ळिडैक् कानि नुण्मणल्
पल्लव मलर्हॉडु पडुत्त पायलिल्
ॲल्लैयि रुयरिन्नो डिरुन्दु शाय्न्दनन्
मॅल्लडि यिळैयवन् वरुड वीरन्न 1123

वीरन्—श्रीरघुवीर; कानिल्—जंगल में; अकल् कल् वॅळ्ळिटै—विशाल पर्वत

के खुले थल में; तुण् मणल्—बारीक बालू पर; पल्लवम् मलर् कोट्ु—पल्लवों और फूलों को; पट्टुत्त पायलित्—(लक्ष्मण द्वारा) बिछाकर बनी शय्या में; मॆल् अटि—कोमल चरणों को; इळैयवन् वरुट—कनिष्ठ के सहलाते; अॅल्लै इल् तुयरित् ओट् इरुन्तु—अपार दुःख के साथ रहकर; चाय्न्ततन—लेटे। ११२३

गिरि के ऊपर खुले थल में लक्ष्मण ने बारीक बालू बिछाया। उसके ऊपर पल्लवों और फूलों को डसाकर शय्या बनायी। श्रीराम अपार दुःख का अनुभव करते हुए उस शय्या पर लेटे। लक्ष्मण उनके कोमल चरण दाबते-सहलाते रहे। ११२३

मयिलियल् पिरिन्दपिन् मान नोयिनाल्
अयिल्विल नॊरुपॊरु ळवल मॆय्दलाल्
तुयिल्विल नॆन्बदु शॊल्लर् पालदो
उयिर्नॆडि दुयिर्प्पिडै यूश लाडुवान् 1124

मयिल् इयल् पिरिन्त पिन्—मयूर की-सी आभा वाली सीता के वियोग के बाद; मान नोयिनाल्—अपमान के रोग से; ऑरु पॊरुळ् अयिल्वु इलन्—कोई भी पदार्थ न खाकर; अवलम् अॅय्तलाल्—श्रीराम शोकातुर रहे, इसलिए; नॆटितु उयिर्प्पु इटै—लम्बी साँसों के मध्य; उयिर् नॆटितु ऊचल् आटुवान्—जिनके प्राण झूलते रहे वे; तुयिल्वु इलन्—अनिद्र रहे; ऍन्पतु—यह भी; चॊल्लर्पालतो—कहना चाहिए क्या। ११२४

मयूर की-सी छटा वाली सीताजी से वियुक्त होने के बाद श्रीराम को अपमान का रोग खाये जाता था। इसलिए वे कुछ खाते नहीं थे। दुःख सहते रहने से ठण्डी आहें भरते थे और प्राण मानो उनके कारण झूले में पड़कर डोल रहे थे। वे अनिद्र ही रहे—यह भी कहने की आवश्यकता है क्या? । ११२४

मानवळ् मॆय्यिरै मऱक्क लामैयिन्
आन्ऱदो वन्ऱॆनि लरक्कर् मायमो
कानह मुळुवदुङ् गण्णि नोक्कुङ्गाल्
शानहि युरुवॆनत् तोन्ऱुन् दन्मैये 1125

कानकम् मुळुवतुम्—जंगल भर में; कण्णित् नोक्कुम् काल्—अपनी आँखों से देखता हूँ, तब; चानकि उरु ऍन—जानकी का रूप ही; तोन्ऱुम् तन्मै—दिखाई देता है, वह प्रकार; मानवळ्—मानवती (या मानवी); मॆय्—(सीताजी) के रूप को; इऱै मऱक्कलामैयिन्—किंचित भी नहीं भूलता, इसलिए; आन्ऱतो—ऐसा होता है क्या; अन्ऱु ऍनिल्—नहीं तो; अरक्कर् मायमो—राक्षसों की माया है। ११२५

श्रीराम को सर्वत्र सीता को ही देखने का भ्रम हो रहा था। उन्होंने आप ही आप पूछा कि अपनी आँखों से जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ जंगल भर में जानकी का रूप ही दिखाई देता है। ऐसी बात क्यों? उस

माननीया का रूप मैं सदा स्मरण कर रहा हूँ, इसलिए ? या यह राक्षसों की माया से होती है ? । ११२५

करुङ्गुळऱ् चेयरिक् कण्णि कऱ्पिनोर्क्
करुङ्गल मरुङ्गुवन् दिरुप्प वाशैयाल्
ऑरुङ्गुऱत् तळुवुवॅ नूरु काण्गिलेन्
मरुङ्गुल्पो लानदो वडिवु मॅल्लवे 1126

करुम् कुळल्–काले केश से; चेय् अरि कण्णि–और लाल लकीरों से युक्त आँखों से भूषित; कऱ्पिनोर्क्कु–पतिव्रता स्त्रियों का; अरुम् कलम्–श्रेष्ठ आभरण-सम सीताजी; मरुङ्कु वन्तु इरुप्प–मेरे पार्श्व में आकर रहती; आचैयाल्–प्रेम से; ऑरुङ्कु उऱ–खूब कसकर; तळुवुवॅन्–आलिंगन करता; ऊऱु काण्किलेन्–स्पर्श का अनुभव नहीं मिलता; वटिवुम्–उसका शरीर भी; मॅल्ल–धीरे-धीरे; मरुङ्कुल् पोल् आनतो–उसकी कटि के समान (अविद्यमान) हो गया क्या । ११२६

(उन्हें अनोखा अनुभव होता है । वे कहते हैं—) काला केश, लाल डोरों से युक्त आँखें —इनसे भूषित और पतिव्रता स्त्रियों के लिए आभरण-सम जो हैं, वह सीता मेरे पास आकर रही । तब अनुराग के कारण मैंने उसे कसकर आलिंगन किया । पर वह मेरे आलिंगन में नहीं आयी । स्पर्श का अनुभव ही नहीं हुआ । तब क्या उसका शरीर भी उसकी कमर के समान अविद्यमान हो गया ? । ११२६

पुण्ड रिहप्पुदु मलरिऱ् ऱेन्बॊदि
तॊण्डैयम् जेयॊळित् तुवर्त्त वायमु
दुण्डत्ते नीण्डव ळुळैय ळल्लळाल्
कण्डुयि लन्ऱियुङ् गनवुण् डाहुमो 1127

पुतु पुण्टरिक मलरिल्–नये कमल-पुष्प में; तेन् पॊति–शहद से भरे; तॊण्टै–बिम्ब-फल के समान; अम्–सुन्दर; चेय् ऑळि–लाल प्रकाश से युक्त; तुवर्त्त–प्रवाल-सम; वाय् अमुतु उण्टत्तेन्–अधरामृत का पान किया; ईण्टु–अब; अवळ्–वह; उळैयळ् अल्लळ् आल्–पार्श्वस्था नहीं है, इसलिए; कण् तुयिल् इन्ऱियुम्–आँखें जब नहीं सोतीं, तब भी; कनवु उण्टाकुमो–स्वप्न होगा क्या । ११२७

(और एक भ्रम देखिए ।) नवविकसित कमल के समान उसके मुख में शहद-भरे अधर हैं, जो बिम्बफल-समान है, और प्रवाल के समान भी । मैंने उन अधरों का अमृत-पान किया । पर असल में वह मेरे पास नहीं पायी गयी । फिर क्या वह स्वप्न था ? मैं तो निद्रारहित समय बिताता हूँ । अनिद्र अवस्था में भी स्वप्न होगा क्या ? । ११२७

मण्णिनुम् वानिनु मऱ्ऱै मून्ऱिनुम्
ऍण्णिनुम् बॆरियदो रिडर्वन् दॆय्दिनाल्

तण्णरुङ् गरुङ्गुळऱ् चनहऩ् मामहळ्
कण्णिऩु नॅडियैयो कॉडिय कङ्गुले 1128

मण्णितुम् वातितुम्–पृथ्वी में और आकाश से; मऱ्ऱै मूऩ्ऱितुम्–अन्य तीनों भूतों से; ऍण्णिनुम्–भावना से; पॅरियतु ओर्–बड़ी एक; इटर् वनतु ऍय्तिताल्–विपदा आयगी तो; कॉटिय कङ्कुले–क्रूर रात; तण् नऱुम्–शीतल सुगन्धित; करुम् कुळल्–काली केशिनी; चतकत् मा मकळ्–जनक की श्रेष्ठ पुत्री की; कण्णितुम्–आँखों से; नॅटियैयो–अधिक बड़ी होगी क्या। ११२८

(श्रीराम रात्रि से पूछते है कि) पृथ्वी, आकाश और अन्य तीन जल, अनिल और अनल आदि भूतों से भी, मन के विचारों से वड़ी कोई व्यथा मुझे होगी तो, हे क्रूर रात ! तुम सीता की आँखों से भी बड़ी हो जाओगी क्या— जिस सीता के शीतल सुगन्धित काले केश हैं और जो जनक की महान पुत्री है ? । ११२८

अप्पुडै यलङ्गुमी नमरु मार्हलि
उप्पुडै यिनुदुवॅन् ऱुदित्त वूळित्ती
वॅप्पुडै विरिहदिर् वॅंदुपप मॅय्यॅलाम्
कॉप्पुळम् बॉडित्तदो कॉदिक्कुम् वानमे 1129

अलङ्कु मीन्–संचरणशील मछलियाँ; अमरुम्–जिसमें वास करती हैं, उस; अप्पु उटै–जल-भरे; आर् कलि–शब्दायमान समुद्र; उ पुटै–के मध्य; इनुतु ऍनुरु–चन्द्र नाम के साथ; उतितुत–उदित; ऊळि ती–युगान्त की अग्नि की; वॅप्पु उटै–गरम; विरि कतिर्–विस्तृत किरणें; वॅतुप्प–जलाती हैं, तो; कॉतिक्कुम् वातम्–तपते आकाश के; मॅय् ऍल्लाम्–शरीर पर; कॉप्पुळम् पॉटित्ततो–फफोले बने हैं क्या। ११२६

आकाश में नक्षत्र देखकर श्रीराम सोचते हैं कि क्या ये आकाश के शरीर में निकले फफोले है, जो संचरणशील मछलियों से भरे समुद्र-मध्य-उत्पन्न इन्दु नाम की युगान्त की अग्नि की गरम किरणों के तपाने से निकल आयें हैं ? । ११२९

इन्नन विन्नन पन्नि यीडळिन्दु
मन्नवर् मन्नन् मदलै मयङ्गिनान्
अन्नन कण्डन नल्हिन नॅन्नत्
तुन्निय शॅङ्गदिर्च् चॅल्वन् तोन्ऱिनान् 1130

इनुतन इनुतत–ऐसी-ऐसी बातें; पतुति–कहते हुए विलाप कर; ईटु अळिनुतु–बल खोकर; मनुतवर् मनुतत्–राजाधिराज के; मतलै–पुत्र; मयङ्कितान्–सुधिहीन हो गये; अनुतत कण्टतन्–उन (के कष्टों) को देखकर; अल्किनन् ऍनुत–(स्वयं) दुःखी हैं, समझकर; तुनुतिय–घनी; चॅम् कतिर् चॅल्वन्–लाल किरणों के सूर्य; तोनृरिनान्–(धीरज बँधाने के लिए) प्रकट हुए। ११३०

श्रीराम ऐसी-ऐसी बातें कहकर बहुत प्रलाप कर रहे थे। राजाधिराज दशरथ के पुत्र श्रीराम, सत्त्व खोकर सुधहीन हो गये। ये सारी बातें सूर्य ने देखीं। श्रीराम बहुत संकट उठा रहे हैं—यह विचार कर (उनको मानो धीरज दिलाने के लिए) लाल किरणों से घने रूप से युक्त किरणमाली प्रकट हो आये। ११३०

11. कवन्दन् वदैप् पडलम् (कबन्ध-वध पटल)

निलम्बॊऱ्ऱै यिलदॆन्न निमिर्न्द कऱ्पिनाळ्
नलम्बॊऱ्ऱै कूर्दरु मयिलै नाडिये
अलम्बुरु पऱवैयु मळुव वामॆनप्
पुलम्बुरु विडियलिऱ् कडिदु पोयिनार् 1131

निलम् पॊऱ्ऱै इलतु—भूमिदेवी क्षमाशील नहीं (इनके सामने); ऎन्न—ऐसा; निमिर्न्त—बढ़ी हुई (क्षमाशीला); कऱ्पिनाळ्—पतिव्रता; नलम् पॊऱ्ऱै—सौंदर्य-भार को; कूर्तरु—अधिक वहन करनेवाली; मयिलै—मयूराभा (सीता) को; नाटिये—खोजते हुए; अलम्पु उरु पऱवैयुम्—उड़ते रहनेवाले पक्षी भी; अऴुव आम्—रोते हैं, ऐसा कहा जाय; ऎन्न—इस रीति से; पुलम्पु उरु—पक्षियों के बोल से भरे; विटियलिल्—प्रभात समय में; कटितु पोयिनार्—सवेग गये (दोनों भाई)। ११३१

प्रभातकाल हुआ तो पक्षी शब्द करते हुए उड़ जाने लगे। तब ऐसा लगता था, मानो वे भी रो रहे थे। दोनों वेग के साथ भूमि की क्षमाशीलता को नहीं के बराबर कर देनेवाली क्षमा-भार से युक्त, अत्यन्त सुन्दरी, पतिव्रता व मयूराभा सीताजी को खोजते हुए चले। ११३१

ऐयैन् दडुत्त योशनैयि निरट्टि यडवि पुडैयुडुत्त
वैयन् दिरिन्दार् कदिरवनुम् वानि नाप्पण् वन्दुऱ्ऱान्
ऎय्युञ् जिलैक्कै यिरुवरुञ्जॆन् ऱिरुन्दे नीट्टि यॆव्वुयिरुम्
कैयिन् वळैत्तु वयिऱ्ऱडक्कुङ् गवन्दन् वनत्तिन् कण्णुऱ्ऱार् 1132

ऐ ऐन्तु अटुत्त योचनैयिन्—पाँच के पाँच (पचीस) योजन की; इरट्टि—दुगुनी (पचास योजन) दूर; अटवि पुटै उटुत्त वैयम्—जंगल में फैली भूमि में; तिरिन्तार्—खोजते फिरे; कतिरवनुम्—सूर्य भी; वानिन् नाप्पण्—आकाश-मध्य; वन्तु उऱ्ऱान्—आ पहुँचे; ऎय्युम् चिलै कै—शरप्रेषक धनुर्हस्त; इरुवरुम्—दोनों; चॆन्ऱु—चलकर; इरुन्ते नीट्टि—(एक ही स्थान पर) रहकर ही हाथ बढ़ाकर; ऎ उयिरुम्—किसी भी जीव को; कैयिल् वळैत्तु—अपने हाथों से समेटकर; वयिऱ्ऱु अटक्कुम्—अपने पेट में समा लेनेवाले; कवन्तन्—कबन्ध के; वनत्तिन् कण्—वन में; उऱ्ऱार्—आ पहुँचे। ११३२

वे उस जंगली मार्ग में पचास योजन चले। तब सूर्य भी आकाश-मध्य आ गये। धनुर्हस्त दोनों कबन्ध के वन में पहुँच गये। कबन्ध

एक ही स्थान पर रहकर अपने दोनों हाथों का घेरा बनाता और उनके क्रोड में आनेवाले सभी प्राणियों को समेट लेकर अपने पेट में डाल लेता। ११३२

ऍऱुप्पिनङ् गडेयुऱ् यानै येमुदल्
उऱुप्पुडै युयिरॆला मुलैन्दु शाय्न्दन
वॆरिप्पुरु नोक्किन वॆरुवु हिन्ऱन
पऱिप्परु वलैयिडैप् पट्ट पान्मैय 1133

यानैये मुतल्–गज से लेकर; ऍऱुम्पु इऩम् कटै उऱ–चींटियों के कुल तक; उऱुप्पु उटै–अंगों-सहित; उयिर् ऍलाम्–प्राणी सब; उलैन्तु–संकट में पड़कर; चाय्न्तऩ–मर जाते थे; वॆरिप्पु उऱु–ताकनेवाली; नोक्किऩ–आँखों के (सिंह, बाघ आदि); वॆरुवुकिऩ्ऱऩ–भयभीत होते थे; पऱिप्पु अऱु–अलग करने अयोग्य; वलै इटै पट्ट–जाल में फँसे हुए जैसे; पान्मैय–हो जाते थे। ११३३

गजसमूह से लेकर चींटीसमूह तक के सारे प्राणी इस तरह उसके वश में आ जाते और कष्ट उठाकर मर जाते। भयानक आँखों वाले जानवर (जैसे सिंह, बाघ आदि) भी डर जाते। अकाट्य जाल में फँस गये हों, ऐसी स्थिति में सभी जानवर रह जाते। ११३३

मरबुऴि निऱुत्तिलन् पुरक्कु माण्बिलन्
उरनिल नॊरुवनाट् टुयिर्हळ् पोल्वन
वॆरुवुव शिन्दुव कुविव विम्मलो
डिरिवन मयङ्गुव वियल्बु नोक्किनार् 1134

मरपु उऴि निऱुत्तिलन्–(प्रजाजनों को) उन उनके सम्प्रदाय पर नहीं स्थित रखता; पुरक्कुम् माण्पु इलन्–पालन का श्रेय नहीं रखता; उरन् इलन्–बल नहीं रखता; ऒरुवन्–ऐसे एक राजा के; नाट्टु उयिर्कळ् पोल्वन–राज्य के जनों के समान (रहनेवाले); वॆरुवुव–डरनेवाले; चिन्तुव–अस्त-व्यस्त भागनेवाले; कुविव–एक जगह पर एकत्रित होनेवाले; विम्मल् ओटु इरिवऩ–तड़पते हुए दौड़नेवाले; मयङ्कुव–मूर्च्छित पड़े हुए; इयल्पु–ऐसे रहनेवालों (प्राणियों) की स्थिति; नोक्किऩार्–देखी। ११३४

वहाँ प्राणियों की हालत ऐसे राजा के राज्य के प्रजाजनों की-सी हो गयी, जो प्रजाजनों को उनके अपने-अपने योग्य मार्ग मे स्थिर रख नहीं सकता, उनका पालन करने का श्रेय नहीं रखता और जो बली नहीं रहता। वे प्राणी भयभीत हो जाते; बिखर जाते; एक जगह पर एकत्रित होते; तड़पते हुए भागते या मूर्च्छित हो जाते। श्रीराम ने उनकी यह स्थिति देखी। ११३४

माल्वरै युरुण्डन वरुव मामरम्
काल्बऱिन् दिरुवन कान यारुहळ्

मेलुळ तिशैयोडुम् वॆळिह ळावन
शूऩ्मुदिर् मेहङ्गळ् शुरुण्डु वीऴ्वन 1135

माल् वरै–बड़े पर्वत; उरुण्टऩ वरुव–जो लुढ़कते आते हैं; मा मरम्–बड़े वृक्ष; काल् पऱिन्तु–जड़ों के कटने से; इऱुवत–टूटकर (जो) गिरते हैं; कात याऱुकळ्–जंगली नदियाँ; मेल् उळ तिचै ओंटुम्–अपने सामने की दिशाओं के साथ; वॆळिकळ् आवत–खुला मैदान जो बनी हैं; चूल् मुतिर्–जलगर्भित; मेकङ्कळ्–मेघ; चुरुण्टु वीऴ्वत–(जो) घूमकर गिर जाते हैं। ११३५

उन्होंने यह भी देखा कि प्रकृति कैसे विकृत हो रही थी। बड़े-बड़े पर्वत लुढ़क आ रहे थे। बड़े वृक्ष जड़ से उखड़कर गिर रहे थे। जंगली नदियाँ तटों के प्रदेश के साथ ऊसर मैदान बन गयी थीं। जल-भरे मेघ घूम-मुड़कर गिर रहे थे। ११३५

नाऱ्ऱिशैप् परवैयु मिऱुदि नाळुऱक्
काऱ्ऱिशैत् तॆळ्वॆळुन् दुलह मॆङ्गणुम्
एऱ्ऱिशैत् तुयर्न्दुवन् दिडुङ्गु हिऩ्ऱऩ
पोऱ्ऱिशैच् चुऱ्ऱिय करत्तुट् पुक्कुळार् 1136

नाल् तिचै परवैयुम्–चारों दिशाओं के समुद्र; इऱुति नाळ् उऱ–युगान्त के आने से; काऱ्ऱु इचैत्तु ॲळ–आँधी के शोर के साथ बहने के कारण; उलकम् ॲङ्कणुम् एऱ्ऱु–सारे लोकों को अपने अन्दर समा लेकर; इचैत्तु–बहुत ही उच्च घोष निकालते हुए; उयर्न्तु वन्तु–उमँगकर; इटुङ्कुकिन्ऱत पोल्–मिल आते हों जैसे; तिचै चुऱ्ऱिय–चारों दिशाओं में लपेटकर आनेवाले; करत्तु उळ्–(कबन्ध के) करों के घेरे में; पुक्कु उळार्–प्रविष्ट हुए हो गये। ११३६

वे कबन्ध के हाथों के घेरे के अन्दर पहुँच गये। वे हाथ युगान्त में शोर के साथ पवनोद्वेलित होकर सारे विश्व को लीलते हुए उठ आ रहे हों, ऐसा बढ़ते हुए आकर घेरा बना रहे थे। ११३६

तेमॊऴि तिऱत्तिऩा लरक्कन् शेऩैवन्
देमुऱ वळैन्ददॆऩ् ऱुवहै यॆय्दिऩार्
नेमिमाल् वरैयदु नॆरुक्कु हिऩ्ऱदै
आमॆऩ लायहै मदिट्कु ळायिऩार् 1137

नेमि माल् वरै अतु–चक्रवाल पर्वत ही; नॆरुक्कुकिन्ऱते आम्–कसकर लपेटते हों; ॲऩ्ऩल् आय–जैसे आये; कै मतिट्कु उळ्–कर रूपी चहारदीवारी के अन्दर; आयिऩार्–जो फँस गए; ते मॊऴि तिऱत्तिऩाळ्–शहद-सी बोली वाली सीता के निमित्त; अरक्कन् चेऩै वन्तु–राक्षस-सेना ने आकर; एम् उऱ वळैत्तततु–उत्साह के साथ हमें घेर लिया है; ॲऩ्ऱु–यह विचार कर; उवकै ॲय्तिऩार्–(दोनों) खुश हुए। ११३७

हाथों की चहारदीवारियाँ बन गयीं। वे चक्रवालपर्वत के समान थे। तब दोनों ने अनुमान किया कि मधु-मधुर-भाषिणी सीता के निमित्त

राक्षसप्रभु रावण की सेना उत्साह के साथ आ घेर गयी है। उन्हें इस बात से हर्ष हुआ। ११३७

इळवलै	नोक्किन	निराम	नेळैयै
उळैवुशे	यिरावण	नुरैयु	मूरुमिव्
वळवैय	दाहुद	लरिदि	येयनम्
किळर्पॅरुन्	दुयरमुङ्	गीण्ड	दामॅन्ऱान् 1138

इरामतुम्—श्रीराम ने भी; इळवलै—लघुराज को; नोक्किनन्—देखकर; ऐय—तात; एळैयै—अबला सीता को; उळैवु चॅय् इरावणन्—त्रास देता हुआ रावण; उऱैयुम् ऊरुम्—जहाँ रहता है, वह नगर भी; इ अळवैयतु आकुतल्—इसी सीमा के अन्दर है; अरिति—जान लो; नम् किळर्—हमारा उत्थानशील; पॅरुम् तुयरमुम्—बड़ा दुःख भी; कीण्टतु आम्—मिटा, हो जायगा। ११३८

श्रीराम ने अपने छोटे भाई से कहा कि तात! सीता को त्रास देने वाले रावण का वासस्थान इसी सीमा के अन्दर है। यह जान लो। तब हमारा बढ़ती पर रहनेवाला दुःख भी मिट गया समझो। ११३८

मुऱ्ऱिय	वरक्कर्द	मुळङ्गु	तानैयेल्
एऱ्ऱिय	मुरशोलि	येङ्गुज्	जङ्गोलि
पॅऱ्ऱिल	दामॅनिऱ्	पिरिदॊन्	ऱामॅनच्
चॊऱ्ऱन	निळैयवन्	ऱॊळुदु	मुन्निन्ऱान् 1139

इळैयवन्—अनुज; मुऱ्ऱिय—हमको जो घेर आयी हैं; अरक्कर् तम्—राक्षसों की; मुळङ्कु तानै—शब्दायमान सेनाएँ हैं; ॲल्—तो; ॲऱ्ऱिय मुरचु ऒलि—प्रहरित भेरियों का नाद; एङ्कुम् चङ्कु ऒलि—ध्वनित शंखों का नाद; पॅऱ्ऱु इलतु आतलिन्—नहीं पाया जाता, इसलिए; पिऱितु ऒन्ऱु आम् ॲन—दूसरी कोई वस्तु है, यह; चॊऱ्ऱनन्—कहकर; तॊळुतु मुन् निन्ऱान्—नमस्कार करते हुए सामने स्थित रहे। ११३९

तब कनिष्ठ भ्राता ने तर्क पेश किया। भैया! हमको शब्दायमान राक्षस-सेना घेरती आ रही हो तो भेरियाँ पिटेंगी और शंख बजेंगे और भेरियों का नाद और शंखों की ध्वनि सुनाई देगी। यह इन नादों से युक्त नहीं है। इसलिए यह कोई दूसरी वस्तु है। लक्ष्मण यह विनय के साथ कहकर श्रीराम के सामने अंजलिबद्ध हो खड़े हुए। ११३९

तॅळ्ळिय	वमुदॅळत्	तेवर्	वाङ्गिय
वॅळ्ळॅयिऱ्	ऱरवन्दान्	वेऱीर्	नाहन्दान्
तळ्ळरुम्	वालॊडु	तलैयि	नाल्वळैत्
तुळ्ळुऱक्	कवर्वदे	यॊक्कु	मूळियाय् 1140

ऊळियाय्—युगपुरुष; तॅळ्ळिय—स्वच्छ; अमुतु ॲळ—अमृत निकल आए; तेवर् वाङ्किय—ऐसा, देवों ने जिसको लेकर मन्थन किया; वॅळ् ॲयिऱु अरवम् तान्—

श्वेत दाँतों का नाग (वासुकी) हो; वेऱु ऑरु नाकम् तान्–या कोई दूसरा नाग हो; तळ् अरु वाल् ओटु–दुर्वार पूँछ के साथ; तलैयिताल् वळैत्तु–सिर को घुमाकर, मण्डल बनाकर; उळ् उड़–उस मण्डल के अन्दर; कवर्वते ऑक्कुम्–पकड़ लेता हो, ऐसा है। ११४०

लक्ष्मण आगे बोले— युगान्त में भी अमर रहनेवाले परमपुरुष ! यह श्वेत दाँतों से युक्त वासुकी नाग हो सकता है, जिसका उपयोग कर देवों ने सागर-मन्थन किया था। या कोई दूसरा नाग होगा, जो अपनी पूँछ और अपने सिर को मोड़कर मण्डल बना रहा है और उसके अन्दर सबको ले रहा है। ११४०

ॲन्ऱिवै विळम्बिय विळवल् वाशहम्
नन्ऱॅन नितैन्दन नडन्द नायहन्
ऑन्ऱिरण् डियोशनै युळ्पुक् कोङ्गऱान्
निन्ऱॅन विरुन्दवक् कवन्द नेर्शॅन्ऱार् 1141

ॲन्ऱु इवै–इस तरह ये; विळम्पिय–जिन्होंने कहे; इळवल् वाचकम्–उन कनिष्ठ भ्राता का वचन; नटन्त नायकन्–आगे जो जाते रहे, उन नायक श्रीराम ने; नन्ऱु ॲन नितैन्तनन्–अच्छा (ठीक) समझा; ऑन्ऱु इरण्टु योचनै–एक-दो योजन; उळ् पुक्कु–(उस घेरे के) अन्दर और जाकर; ओङ्कल् तान् निन्ऱु–पर्वत ही खड़ा है; ॲन–ऐसा; इरुन्त–जो रहा; अ कवन्तन् नेर् चॅन्ऱार्–उस कबन्ध के सामने पहुँचे। ११४१

लक्ष्मण के इन वचनों को श्रीराम ने सुना और कहा कि अच्छा कहा। दोनों आगे चले और उन्नत पर्वत के समान दृश्यमान उस कबन्ध के सामने आये। ११४१

वॅयिऱ्चुड रिरण्डिनै मेरु माल्वरैक्
कुयिऱ्ऱिय वामॅनक् कॉदिक्कुङ् गण्णिनान्
ॲयिऱ्ऱिडैक् किडैयिरु काद मीण्डिय
वयिऱ्ऱिडै वायॅनु महर वेलैयान् 1142

वॅयिल् चुटर् इरण्टिनै–धूप देनेवाले दो सूर्यों को; मेरु माल् वरै–मेरु के बड़े पर्वत में; कुयिऱ्ऱिय आम्–जटित किया गया हो; ॲन–जैसे; कॉतिक्कुम् कण्णितान्–प्रज्वलित आँखों का; ॲयिऱु इटैक्कु इटै–दाँत और दाँत के मध्य; इरु कातम् ईणटिय–दो मील-दशकों की दूरी के साथ; वयिऱु इटै–पेट में; वाय् ॲनुम्–मुख रूपी; मकर वेलैयान्–मकरालय वाला। ११४२

(भयंकर कबन्ध का वर्णन किया जाता है यों।) महामेरु पर दो गरम किरणमालियों को जटित किया गया हो, ऐसा उसकी दोनों आँखें ज्वलन्त रहीं। उसका मुख पेट के अन्दर धँसा हुआ था; उसके दाँत

और दाँत के मध्य दो योजनों का अन्तर रहा। वह मुख क्या था मकरालय (-सा) था। ११४२

ईण्डिय पुलवरो डवुण रिनुदुवैत्
तीण्डिय नॆडुवरैत् तॆय्व मत्तिन्नैप्
पूण्डुयर् वडमिरु पुडैयिन् वाङ्गलिन्
नीण्डन्न किडन्दन्न निमिर्न्द कैयिनान् 1143

ईण्टिय पुलवर् ओटु–एकत्रित देवों के साथ; अवुणर्–असुर; इनतुवै–चन्द्र को; तीण्टिय–स्थिर-स्तम्भ बनाकर; नॆटु वरै–बड़े (मेरु) पर्वत को; तॆय्व मत्तिनै–दिव्य मथानी को; पूण्टु–रखकर; उयर् वटम्–वासुकी की रस्सी से; इरु पुटैयिन् वाङ्कलिन्–दोनों पार्श्वों में बारी-बारी से खींचने से; नीण्टु अन्न–लम्बा बना पड़ा रहा जैसे; निमिर्न्त कैयिनान्–ऊपर उठे हाथों वाला। ११४३

देवों और असुरों ने एकत्रित होकर चन्द्र को स्थिर-थम्भ के रूप में गाड़ा। बड़े मन्दर को दिव्य मथानी बनाया। बड़े वासुकी नामक सर्प को उस पर लपेटकर दोनों ओर खड़े होकर बारी-बारी से खींचा। उस दिन लम्बा बनकर वासुकी जैसा दिखता था, वैसा ही कवन्ध के हाथ लम्बे और मोटे बन पड़े थे। ११४३

तॊंहैक्कनड् करुमहन् रुरुत्तित् तुम्बॆन्नप्
पुहैक्कॊडिक् कनलॊडु पॊडिक्कु मूक्किनान्
पहैत्तहै नॆडुङ्गडल् परुहुम् पावहन्
शिहैक्कॊऴुन् दॆन्नवॆदिर् तिरुहुम् नाविनान् 1144

करुमकन्–लुहार की; तॊकै कनल्–अधिक आग की भाथी में; तुरुत्ति तुम्पु अॆन्न–लगी रहनेवाली धौंकनी की नाक (नली) के समान; कनल् ओटु कॊटि पुकै–आग के साथ लताओं के आकार में फैलनेवाला धूम; पॊटिक्कुम्–निकालनेवाली; मूक्किनान्–नाक का; पकै तकै–शत्रुता के साथ; नॆटुम् कटल् परुकुम्–विशाल सागर को पी लेनेवाली; पावकन्–बड़वाग्नि की; चिकै कॊऴुन्तु अॆन्न–ज्वालाशिखा के समान; तिरुकुम्–घूमती रहनेवाली; नाविनान्–जीभ वाला। ११४४

उसकी नाक से लुहार की अधिक अग्निसहित भाथी से लगी हुई धौंकनी की नाक के समान आग और लता के आकार में धुआँ निकल रहा था। (सागर का) शत्रु बनकर विशाल सागर को जो बड़वाग्नि पी (सोख) रही थी, उस बड़वाग्नि की ज्वालाशिखा के समान घूमती रहती हुई जीभ वाला था वह कवन्ध। ११४४

पुरण्डर विडैवर वॆरुविप् पुक्कुडै
अरण्डनै नाडियो ररुवि माल्वरै

मुरण्डहु मुळैनुळै मुळ्वॅण् डिङ्गळै
इरण्डुकू रिट्टॅन विलङ्गॅ यिऱ्ऱिताऩ् 1145

अरवु पुरण्टु इटै वर–(राहु) सर्प को लोटते हुए अपने पास आते देखकर; वॅरुवि–भय खाकर; पुक्कु उऱै–घुसकर वास करने योग्य; अरण् ततै नाटि–सुरक्षित स्थान ढूंढ़कर; ओर् अरुवि माल् वरै–सरिताओं-सहित एक पर्वत पर; मुरण् तकु–प्रबल; मुळै नुळै–गुफा में प्रविष्ट; मुळु वॅण् तिङ्कळै–पूर्ण-श्वेत चन्द्र को; इरण्टु कूऱु इट्टु अॅत–दो अंशों में काट लिया गया हो, ऐसा; इलङ्कु–दृश्यमान; अॅयिऱ्ऱिताऩ्–वक्रदांतों का। ११४५

उसके वक्रदाँत उस पूर्णचन्द्र के दो टुकड़ों के समान थे, जो राहु-केतु के सर्पों को पास आते देखकर डर से भाग गया, और सरिताओं-सहित वड़े एक पर्वत की शक्तियुत गुफा में घुसा हो और वहाँ जिसके दो टुकड़े हो गये हों। ११४५

ओदनीर् मण्णिवै मुदल वोदिय
पूदमो रैन्दिनिऱ् पॉरुन्दिऱ् ऱन्ऱिये
वेदनूल् वरन्मुऱै विदिक्कु मैम्बॅरु
पादहन् दिरण्डुयिर् पडैत्त पण्बिनाऩ् 1146

ओतम् नीर्–शीतल जल; मण्–पृथ्वी; इवै मुतल–इनको आदि में रखकर; ओतिय–गणित; पूतम् ओर् ऐन्तितिल्–पाँच एक भूतों का; पॉरुन्तिऱ्ऱु अन्ऱिये–न बनकर; वेत नूल्–वेद-शास्त्रों में; वरन् मुऱै–यथाक्रम; वितिक्कुम्–विहित; ऐम् पॅरुम् पातकम्–पाँच महापातक; तिरण्टु उयिर् पटैत्त–मिलकर प्राणवन्त हो गये; पण्पिताऩ्–ऐसे प्रकार वाला। ११४६

उसका शरीर शीतल जल, पृथ्वी आदि कथित पाँचों भूतों का बना नहीं लगता था। पर वेदों और शास्त्रों में वर्जित पाँचों महापातकों (हत्या, चोरी, असत्यवाचन, सुरापान, गुरुनिन्दा या परस्त्री-प्रेम, जुआ, सुरापान, असत्यवाचन, दान देते समय रोकना —ये पंच महापातक माने जाते हैं।) का मिलकर बना और प्राणवन्त हुआ-सा था। ११४६

वॅय्यवॆङ् गदिर्हळै विळुङ्गुम् वॆव्वरा
शॅय्तॊळि लिलतुयिल् शॅवियिन् ऱॊळ्ळैयान्
पॊय्हिळर् वन्मैयिऱ् पुरियुम् पुन्मैयोर्
वॆहुरु नरहैयुम् नहुमव यिऱ्ऱिनान् 1147

वॅय्य वॅम् कतिर्कळै–गरम और प्रिय (शीतल) किरणों वाले सूर्य और चन्द्र के; विळुङ्कुम्–खादक; वॅम् अरा–भयंकर (राहु-केतु) सर्प; चॅय् तॊळिल् इल–निष्क्रिय होकर; तुयिल्–आकर जहाँ सोते हैं; चॅवियिन् तॊळ्ळैयान्–कर्ण-विवर वाला; किळर् वन्मैयिन्–बढ़ती कठोरता से; पॊय् पुरियुम्–असत्य-वादन (आदि दुष्कर्म) करनेवाले;

पुन्मैयोर्–नीच लोग; वैकुम्–जहाँ वास करते हैं; नरकैयुम्–उस नरक का भी; नकुम्–परिहास करनेवाले; वयिट्ऱिन्–पेट का। ११४७

सूर्य गरम किरणों के हैं और चन्द्र प्रिय शीतल किरणों के। इन दोनों को राहु और केतु नाम के सर्प पकड़कर निगल लेते हैं। ये दोनों अपना काम छोड़कर कबन्ध के कर्ण-विवरों में जाकर सोते रहते हों, ऐसे कानों वाला था वह। असत्य-कथन आदि नीच काम करनेवालों को जहाँ जाकर रहना पड़ता है, उस नरक को भी लजानेवाला था, उसका पेट। ११४७

मुट्ऱिय वुयिरॅला मुरुङ्ग वारित्तान्
पट्ऱिय करत्तिनन् पणैत्त पण्णैयिल्
तुट्ऱिय पुहुतरु तोट्ऱत् तान्नमन्
कोट्ऱवाय् तट्चॅयल् कुट्ऱित्त वायिन्ान् 1148

मुट्ऱिय–जिनको घेर लिया; उयिर् ॲलाम्–उन सभी प्राणियों को; मुरुङ्क–मिटाकर; तान् वारि पट्ऱिय–जिनसे पकड़ता है; करत्तिनन्–ऐसे हाथों का; पणैत्त पण्णैयिल्–मोटे झुण्डों में; तुट्ऱिय–ठूँसे हुए (प्राणी); पुकु तरुम्–घुसते हैं; तोट्ऱत्ताल्–उस दृश्य से; नमन् कोट्ऱ वाय् तन्–यम के राजद्वार का; चॅयल्–कार्य; कुट्ऱित्त–जिसकी ओर संकेत करता है (समान); वायिन्ान्–ऐसा मुख वाला। ११४८

उसके हाथ अपने क्रोड के घेरे में आये हुए सभी प्राणियों को मिटाने के काम में लीन थे। बड़े-बड़े झुण्डों में अनेक प्राणी उसके मुख में ठूँसे जा रहे थे। उस दृश्य को देखकर यम का सुरक्षित राजद्वार स्मरण आता था। ११४८

ओलमार् कडलॅन मुळङ्गु मोदैयान्
आलमे यॅनविरुण् डळन्ऱ वाक्कैयान्
नीलमाल् नेमियिऱ् ऱलैयै नीक्किय
कालने मियैप्पॅरुङ् गवन्दक् काट्चियान् 1149

ओलम् आर्–गर्जनशील; कटल् ॲन–सागर-सम; मुळङ्कुम् ओतैयान्–कोलाहलमय शब्द वाला; आलमे ॲन–हलाहल के ही समान; इरुण्टु–काले; अळन्ऱ–उष्ण; आक्कैयान्–शरीर का; नील माल् नेमियिल्–नील श्रीविष्णु के चक्रायुध से; तलैयै नीक्किय–सिर-कटे; काल नेमियिल्–कालनेमि के समान; पॅरुम् कवन्त–बड़े कवन्ध के; काट्चियान्–दृश्य वाला। ११४९

उसका बोल गर्जनशील सागर के शोर के समान था। उसका शरीर हलाहल के समान काला और गरम था। नीले वर्ण के श्रीविष्णु के क्रायुध के द्वारा सिर-कटे कालनेमि नामक राक्षस के कवन्ध के समान

उसका आकार दिखता था। (कालनेमि के सौ सिरों और हाथों को श्रीविष्णु ने अपने चक्रायुध चलाकर काटा था। वही कालनेमि पीछे कंस बना था। यह पुराणांतर में कहा गया है। इसका उल्लेख अयोध्याकाण्ड में भी आया है।)। ११४९

ताक्किय तणप्पिल्का लॅट्रियत् तन्नुडै
मेक्कुयर् कॉडुमुडि यिऴन्द मेरुनेर्
आक्कैयि न्रिरुन्दवन् ऱन्नै यव्वऴि
नोक्कित्त रिरुवरु नुणङ्गु केळ्वियार् 1150

तणप्पु इल् काल्–अप्रतिहत पवन के; ताक्किय ऍट्रिय–वेग से वहकर झटका देने से; तन् उटै–अपने; मेक्कु उयर्–ऊपर उठे हुए; कॉटु मुटि–उन्नत शृंगों को; इऴन्त–जिसने खोया है; मेरु नेर्–ऐसे मेरु के समान; इरुन्तवन्–जो रहा; तन्नै–उस कबन्ध को; नुणङ्कु केळ्वियार्–सूक्ष्म श्रवण-ज्ञान के; इरुवरुम्–(श्रीराम और लक्ष्मण) दोनों ने; अ वऴि–वहाँ; नोक्कित्तर्–देखा। ११५०

उसका शरीर उस मेरु के समान था, जिसके उन्नत शृंग दुर्धर्ष वेग से बहनेवाले पवन के झटके से टूटकर गिरे हों। सूक्ष्म श्रवणज्ञान के स्वामी दोनों, श्रीराम और लक्ष्मण ने वहाँ ऐसे कबन्ध को देखा। ११५०

नीर्पुहु नॅडुङ्गड लडङ्गु नेमिशूऴ्
पार्पुहु नॅडुम्बहु वायैप् पार्त्तनर्
शूर्पुह वरियदो ररक्कर् तॊन्मदिल्
ऊर्पुहु वायिलो विदुवॅन् ऱुन्नित्तार् 1151

नीर् पुकु–जल जिसमें प्रवेश करता है; नॅटुम् कटल् अटङ्कु–वे विशाल समुद्र जिसमें समाविष्ट हैं; नेमि चूऴ्–और (जो) चक्रवालगिरि से घिरी हुई है; पार् पुकु–वह भूमि जिसमें प्रविष्ट हो सकती है; नॅटुम् पकु वायै–उस बड़े और खुले मुख को; पार्त्तनर्–(उन्होंने) देखा; चूर् पुकल् अरियतु–सूर्य जिसमें प्रवेश नहीं कर सकता, ऐसा; ओर्–एक; अरक्कर्–राक्षसों का; तॊल् मतिल् ऊर्–प्राचीन प्राचीरों से आवृत नगर में; पुकु–प्रवेश करानेवाला; वायिलो इतु–द्वार क्या यह; ऍन्ऱु–ऐसा; उन्नित्तार्–सोचा। ११५१

श्रीराम और लक्ष्मण ने देखा कि उसके मुख के अन्दर सारी नदियों के जल को समा लेनेवाले सारे सागरों को अपने अन्दर लिये हुए चक्रवालगिरि से आवृत पृथ्वी जा सकती है! उन्होंने सन्देह किया कि क्या यह सूर्य के लिए भी अगम प्राचीन प्राचीरों से आवृत लंका नगर का द्वार है? । ११५१

अव्वऴि यिऴैयव नमैन्दु नोक्किये
वॅव्विय वीरुॅरुम् बूदम् विल्वलाय्

वव्विय तन्गैयिन् वळैत्तु वाय्प्पॅयुम्
शॅय्वदॆ न्िवणॆन्च् चॅम्मल् शॅप्पुवान् 1152

अ वळि–तव; इळैयवन्–कनिष्ठ भ्राता (के); अमैनुतु नोक्किये–खूब देखकर; विल् वलाय्–धनुर्विद्याविदग्ध; वॅव्वियतु ऑरु पॅरुम् पूतम्–भयंकर एक भूत; वव्विय–अपने द्वारा पकड़े गये प्राणियों को; तन् कैयिल् वळैत्तु–अपने हाथों से समेट लेकर; वाय् पॅयुम्–अपने मुख में डालनेवाला है; इवण् चॅय्वतु ऍन्–यहाँ करना क्या; ऍन्–कहने पर; चॅम्मल्–प्रभु श्रीराम; चॅप्पुवान्–बोले। ११५२

तब लक्ष्मण ने कवन्ध को खूब ध्यान से देखा। फिर श्रीराम से कहा कि धनुर्विद्या-निपुण! यह भयंकर भूत है, जो अपने क्रोड में आने वाले सभी प्राणियों को हाथ से लेकर अपने मुख में डाल लेता है! अब हम क्या करें? —लक्ष्मण ने यह प्रश्न किया। ११५२

तोहैयुम् बिरिन्दन ळॅन्दॆ तुञ्जिनान्
वेहवॅम् बळिशुमन् दुळल वेण्डिलेन्
आहलिन् यानिनि यिदनुक् कामिडम्
एहुदि यीण्डुनिन् ड्रिळव लाण्डॆन्ड्रान् 1153

इळवल्–छोटे भैया; तोकैयुम् पिरिन्तनळ्–मयूराभा (जानकी) बिछुड़ गयी; ऍन्तै तुञ्चितान्–मेरे पिता (जटायु) चिरनिद्रा में लग गये; वेक वॅम् पळि–अकस्मात आया यह कठोर अपयश; चुमन्तु–ढोता हुआ; उळल वेण्टिलेन्–संकट में फिरना नहीं चाहता; आकलिन्–इसलिए; यान्–मैं; इति इतनुक्कु–अब इसका; आमिटम्–(आमिश =) खाद्य मांस (या मेरा स्थान); ईण्टु निन्ड्रु–यहाँ से; एकुति–चलो; ऍन्ड्रान्–कहा। ११५३

तब श्रीराम ने नैराश्य से यों कहा— छोटे भैया! मयूर की-सी छटा वाली सीता बिछुड़ गयी। मेरे पिता (-सम) जटायु चिर निद्रा में लीन हो गये; अकस्मात आयी यह निंदा ढोता फिरना मैं नहीं चाहता। इसलिए अब मेरा स्थान उसका भोजन बनना है। (आमिटम्— आमिष का भी तमिळ रूप है; आम् इटम्— करके वननेवाला स्थान अर्थ भी किया जा सकता है।) तुम मुझे छोड़कर यहाँ से चले जाओ। ११५३

ईन्ड्रव रिडर्प्पड वॅम्बि तुन्पुऱ्च्
चान्ड्रवर् तुयरुऱ् पळिक्कुच् चान्ड्रुमाय्त्
तोन्ड्रलि नॅन्नुयिर् तुऱन्द पोदलाल्
ऊन्ड्रिय पॅरुम्बडर् तुडैक्क वॊण्णुमो 1154

ईन्ड्रवर्–मेरे जनक-जननी; इटर् पट–कष्ट भोगते हैं; ऍम्पि–मेरा कनिष्ठ भरत; तुन्पुऱ्–दुःखी है; चान्ड्रवर् तुयर् उऱ्–उत्तम (वसिष्ठ आदि) लोग संकट में पड़े हैं; पळिक्कु–अपयश के लिए; चान्ड्रुम् आय्–एक दृष्टान्त बना; तोन्ड्रलिन्–पैदा हुआ हूँ, इसलिए; ऍन् उयिर् तुऱन्त पोतु अलाल्–बिना प्राण त्यागे; ऊन्ड्रिय–

स्थिर रूप से हुए; पॅरुम् पटर्–इन बड़े दुःखों को; तुटैक्क ऑण्णुमो–मिटा सकेंगे क्या। ११५४

मेरे कारण मेरे माँ-बाप दुःखी हुए। मेरा कनिष्ठ भरत संकट में है। बड़े और आदरणीय वसिष्ठ आदि दुःख में हैं। और भी मैं अपकीर्ति का दृष्टान्त बना पैदा हुआ हूँ! इसलिए मरे विना इस बड़े और गहरे दुःख का मिटना सम्भव है क्या? । ११५४

इल्लियल् बुडैयनी रळित्त विन्शॉलाळ्
वल्लिवल् लरक्करदम् मनैयु ळाळॅनच्
चॉल्लिनन् मलैयंनच् चुमन्द तूणियन्
विल्लिनन् शॅल्वनो मिदिलै वेन्दन्बाल् 1155

इल् इयल्पु उटैय नीर्–गृहस्थ धर्म का; अळित्त–पालनकारिणी; इन् चॉलाळ्–मधुरभाषिणी; वल्लि–लता (-समाना); अरक्कर् तम् मनै उळाळ्–राक्षसों के घर में है; ॲन–ऐसा; मितिलै वेन्तन् पाल्–मिथिलापति के पास; चॉल्लि–कहता हुआ; नल् मलै–श्रेष्ठ पर्वत; ॲन चुमन्त–के समान ढोये जानेवाले; तूणियन् विल्लिनन्–तूणीरों व धनु के साथ; चॅल्वनो–जाऊँगा क्या। ११५५

गृहस्थ धर्म की अच्छी पालिका, मधुरभाषिणी और लता-समाना सीता राक्षसों के घर में है! श्रेष्ठ पर्वत के समान यह तूणीर और धनु ढोते हुए मैं क्या मिथिलेश के पास यह समाचार देने जाऊँ? । ११५५

तळैयविळ् कोदैयैत् ताङ्ग लाऱ्ऱलन्
इळैपुरन् दळित्तन्मे लिवरन्द कादलन्
उळनॅन वुरैत्तलि नुम्ब रानॅन
विळैदनन् ऱादलिन् विळिद नन्ऱॅन्ऱान् 1156

तळै अविळ् कोतैयै–प्रफुल्ल पुष्पों की मालाधारिणी सीता को; ताङ्कल् आऱ्ऱलन्–संरक्षित करने की शक्ति से हीन; इळै पुरन्तु अळित्तल् मेल्–(पर) (इला) भूमि के पालन-शासन पर; इवरन्त कातलन्–उमँगते प्रेम का; उळन्–है; ॲन–ऐसा; उरैत्तलिन्–कहे जाने से; उम्परान् ॲन विळैतल्–स्वर्गवासी कहे जाने का यह कार्य; नन्ऱु आतलिन्–अच्छा है, इसलिए; विळितल्–मरना; नन्ऱु ॲन्ऱान्–अच्छा होगा, कहा। ११५६

लोग यों कहकर मेरी निंदा करेंगे कि श्रीराम में विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीता का पालन करने की शक्ति नहीं रही। पर भूमि का पालन और शासन करने की इच्छा तो खूब रही! इस अपवाद से 'वह स्वर्गवासी हो गया' यह कहा जाना अच्छा है। इसलिए मेरा मर जाना ही श्रेयस्कर है! श्रीराम ने अपार खेद के साथ अपनी भर्त्सना के ये वचन कहे। ११५६

आण्डा निन्न पन्निड वैयर् किळवीरन्
ईण्डा युन्बिन् नेयिन शॅय्दे यिडर्वन्दु
मूण्डान् मुन्ने यारुयि रोडु मुडियादे
मीण्डे पोदर् कामेंनि नन्रॅन् विनैयॅन्रान् 1157

आण्टान्–जगद्रक्षक; इतत–इस भाँति; पन्निट–बोले, तव; ऐयर्कु–प्रभु से; इळवीरन्–छोटे वीर; उन् पिन्–आपके पीछे; ईण्टु आय्–यहाँ आकर; एयित चॅय्ते–आज्ञा-पालन करके; इटर् वन्तु मूण्टाल्–आफ़त आ गयी तो; मुन्ने–आपके पहले ही; मुटियाते–विना मरे ही; आर् उयिर् ओटु–प्रिय प्राणों के साथ; मीण्टे पोतर्कु आम्–लौट जाने ही योग्य रहा; ऍंनिल्–तो; नन्रु ऍन् विनै–वड़ी अच्छी होगी न मेरी सेवा; ऍन्रान्–कहा। ११५७

जगन्नायक ने यह सब गहरे शोक के साथ कहा। तब छोटे वीर लक्ष्मण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता से कहा कि भाई! यह भी खूब रहा। आपके साथ वन में आया आपकी अज्ञाओं का पालन करने का, आप पर संकट आया तो आपके पहले अपनी जान दे देने का संकल्प करके। अब प्रिय प्राण लेकर लौट जाने के ही लिए योग्य समझा जाऊँ, तो मेरी सेवा वड़ी श्लाघनीय होगी न? ११५७

ऍन्रा नन्नान् पिन्नु मिशैप्पा निडर्दन्नै
वॅन्रा रन्रो वीरर्ह ळावार् मेलाय
तन्राय् तन्दै तम्मु नॅनुन्दन् मैयर्मुन्ने
पॉन्रा निन्रा नीङ्गुव दन्रो पुहळम्मा 1158

ऍन्रात् अन्नान्–ऐसा कहकर लक्ष्मण; पिन्नुम् इचैप्पान्–और भी बोले; इटर् तन्नै–दुःख को; वॅन्रार् अन्रो–जीतनेवाले ही तो; वीरर्कळ् आवार्–वीर होते हैं; तन् ताय्–अपनी माता; तन्तै–पिता; तन् मुन्–अपना अग्रज; ऍनुम् तन्मैयर्–ऐसे पद में रहनेवालों को; मुन्ने पॉन्रा–अपने पहले मरने देते हुए; निन्राल्–कोई जीवित रहा तो; पुकळ् नीङ्कुवतन्रो–उसकी कीर्ति चली नहीं जायगी क्या; अम्मा–माँ। ११५८

लक्ष्मण ने और भी कहा। संकट आए तो उस पर विजय पानेवाले ही वीर कहे जायँगे न? अपनी माँ, अपने पिता और अग्रज आदि वड़ों को मरने देकर कोई जीवित रहेगा तो क्या उसकी कीर्ति मिट नहीं जायगी? । ११५८

माने यन्ना ळन्नीडु तम्मुन् वरैयारुम्
काने वॅहक् कण्डुयिल् कॉळ्ळान् इन्निहात्तर्
काना नॅन्ने यॅन्रवर् मुन्ने यवरन्रित्
ताने वन्दा नॅन्रपिन् वेरोर् तवरुण्डो 1159

माने अन्नाळ्–हरिणी ही सम; तन् ओटु–सीताजी के साथ; तम् मुन्–अपने

बड़े भाई के; वरै आरुम्–बाँसों से पूर्ण; कात्ते वैक–जंगल में ही रहते समय; कण् तुयिल् कोळ्ळान्–अनिद्र रहा; तत्ति कात्तरकु आतान्–अनुपम रक्षक रहा; ऍन्ते–क्या ही (खूब); ऍन्ऱवर्–जिन्होंने ऐसा कहा, वे; अवरे इन्ऱि–उनके विना ही; मुन्ने–उनके पहले ही; ताते वन्तान्–खुद आ गया; ऍन्ऱ पिन्–कहेंगे, फिर; वेऱु ओर् तवऱु–उससे बढ़कर कोई और दोष; उण्टो–हो सकता है क्या। ११५९

लोगों ने यह देखकर आश्चर्य के साथ मेरी सराहना की कि हरिणी-सी सीताजी के साथ जो गये, उन अपने ज्येष्ठ भ्राता के साथ लक्ष्मण जंगल गया और रक्षणकर्ता बना। अब उनको ही यह कहने का मौका मिल जाय कि लक्ष्मण उनको छोड़कर उनके आने से पहले ही लौट आ गया तो (कितना बड़ा दोष हो जायगा ?) इससे बढ़कर कोई दोष हो सकता है ? । ११५९

ऍन्ऱा युन्मुन् नेयिन यावुम् मिशैयिन्नल्
पिन्ऱा दॅय्दिप् पेरिशै याळऱ् कळिवुण्डेल्
पोन्ऱा मुन्नम् पोन्ऱुदि यॅन्ऱा ळुरैपोय्या
निन्ऱा लन्ऱो निन्ऱदु वाय्मै निलैयम्मा 1160

ऍन् ताय्–मेरी माता ने; उन् मुन्–तुम्हारा ज्येष्ठ भाई; एयिन यावुम्–जो आज्ञाएँ देगा, वह सब; इचै–पूरा करो; इन्नल्–विपदाएँ आयें तो; पिन्ऱातु–पीछे मत रहो और; ऍय्ति–आगे जाकर अपने ऊपर धारण कर लो; पेर् इचै आळऱ्कु–प्रकीर्तित उनके; अळिवु उण्टेल्–मरने की नौबत आयगी तो; पोन्ऱा मुन्नम्–उनके मरने के पहले; पोन्ऱुति–तुम मर जाओ; ऍन्ऱाळ्–यह कहा है; उरै–उनका वचन; पोय्या निन्ऱाल् अन्ऱो–असत्य नहीं होगा, तभी तो; वाय्मै निलै निऱ्पतु–सत्य स्थिर होगा; अम्मा–माँ। ११६०

मेरी माता ने मुझे आदेश दिया था कि तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता श्रीराम जो भी आज्ञाएँ देंगे, वे सब पूरा करो। विपदा आयेगी तो पीछे मत रहो, पर आगे बढ़कर तुम उसे अपने ऊपर ले लो। शायद मरने की स्थिति आने की सम्भावना देखते हो तो उनके मरने के पहले तुम मरण का वरण कर लो। उस आदेश के अनुसार चलूँ तभी न मेरा सत्यव्रत स्थिर होगा ? । ११६०

ऍऱ्पॅऱ् ऱाळुम् यानु मॅन्नैत्तोर् वहैयालुम्
निऱ्पॅऱ् ऱाट्कु निऱ्कु निन्नैप्पुम् पिळैयामल्
नऱ्पोर् ऱोळाय् नल्लवर् पेण नन्निनिऱ्कुम्
शोऱ्पॅऱ् ऱान्मऱ् ऱारुयिर् पेणित् तुऱवेमाल् 1161

नल् पोन् तोळाय्–श्रेष्ठ और सुन्दर कन्धों वाले; ऍन् पॅऱ्ऱाळुम् यानुम्–मेरी जननी और मैं; निन् पॅऱ्ऱाट्कुम्–आपकी जननी और; निऱ्कुम्–आपके प्रति; ऍन्नैत्तु ओर् वकैयालुम्–किसी भी तरह से; निन्नैप्पुम् पिळैयामल्–विना मन बदले; नल्लवर्

पेण–श्रेष्ठ लोगों द्वारा श्लाघ्य रीति से; नति निऱ्कुम्–अच्छी तरह अचल रहनेवाली; चॊल् पॆऱ्ऱाल्–(साधु-)वचन प्राप्त करेंगे तो; मऱ्ऱु–उसको छोड़कर; आर् उयिर् पेणि–अपने प्राणों के पालन में; तुऱवोम्–आपका कैंकर्य नहीं छोड़ेंगे । ११६१

उत्तम और मनोरम स्वर्ण-सम कन्धों वाले ! मेरी जननी को और मुझे यह ख्याति मिल जाय कि हम आपकी जननी और आपके प्रति उत्तम मनुष्यों से श्लाघ्य होकर स्थिरमन रहे । जब इसकी सम्भावना है, तब उसके विपरीत अपने प्राणों के लोभ से अपने कर्तव्य छोड़ देंगे क्या ? । ११६१

ओदुङ् गालप् पल्पॊरुण् मुऱ्ऱुऱ् ऱॊरुवाद
वेदञ् जॊल्लुन् देवरुम् वीयुङ् गडैवीयाय्
मादङ् गन्दिन्ऱुय्न्दिव नत्तिन् ऱलैवाऴ्म्
पूदङ् गॊल्लप् पॊन्ऱुदि यॆन्ऱिऱ् पॊरुळुण्डो 1162

ओतुम् काल्–सच कहा जाय; पल् पॊरुळ्–जग के सारे पदार्थ; मुऱ्ऱु उऱ्ऱु–जब मिट जायेंगे; ऑरुवात–अमर; अ वेतम् चॊल्लुम्–उन वेदों में कथित; तेवरुम्–देव भी; वीयुम् कटै–मिट जायेंगे, उस युगान्त में; वीयाय्–अमर रहनेवाले आप; मातङ्कम् तिन्ऱु–गजों को खाकर; उय्न्तु–जीवित; इ वनत्तिन् तलै–इस कानन में; वाऴ्म्–रहनेवाले; पूतम् कॊल्ल–भूत के द्वारा मारे जाकर; पॊन्ऱुति ऎन्ऱिल्–मर जायेंगे तो; पॊरुळ् उण्टो–उसका कोई अर्थ रहता है क्या । ११६२

सच कहा जाय, हे प्रभु ! आप कौन हैं ? जब प्रपंच की सारी सृष्टि मिट जायगी और अमर वेदों से प्रशंसित देवता लोग भी नहीं रह जायेंगे, उस युगान्तकाल में भी आप अमर रहनेवाले हैं । ऐसे आप, हाथी खाते हुए जीवित रहनेवाले इस काननवासी भूत के मारते मर जायेंगे ? इस कथन का कोई अर्थ हो सकता है क्या ? । ११६२

केट्टार् कॊळ्ळार् कण्डवर् पेणार् किळर्पोरिल्
तोट्टार् कोदैच् चोर्कुऴल् ऱन्नैत् तुवळामल्
मीट्टा नॆन्नुम् बेरिशै कॊळ्ळान् शॆरुवॆल्ल
माट्टान् माण्डा नॆन्ऱलिन् मेलुम् वशैयुण्डो 1163

केट्टार् कॊळ्ळार्–सुननेवाले नहीं मानेंगे; कण्टवर् पेणार्–देखनेवाले नहीं चाहेंगे; तोट्टु आर् कोतै–विकसित दलों के पुष्पों की मालाधारिणी; चोर् कुऴल् तन्नै–बिखरे केश की सीतादेवी को; तुवळामल्–दुःख में न छोड़कर; मीट्टान् ऎन्नुम्–मुक्त कर लाया, यह; पेर् इचै कॊळ्ळान्–बड़ा यश प्राप्त नहीं करके; चॆरु वॆल्ल माट्टान्–युद्ध में जीत न पा सका; माण्टान्–मर गया; ऎन्ऱु इलिन्–यह कथन होने के बाद; मेलुम्–उससे बढ़कर; वचै उण्टो–निंदा होगी क्या । ११६३

जो कोई सुनेगा वही नहीं मानेगा । जो कोई देखेगा वही नहीं चाहेगा । लोग यह कहें कि विकसित पुष्पों की मालाधारिणी सीतादेवी

को दुःख से निवृत्त कर लौटा नहीं लाया, न किसी युद्ध में विजय पायी; पर श्रीराम मर गया —इससे बढ़कर क्या निंदा होगी ? । ११६३

तणिक्कुन् दन्मैत् तन्रॅति लन्ऱित् तहैवाळाल्
कणिक्कुन् दन्मैत् तन्रु विडत्तिङ् कनल्बूदम्
पिणिक्कुङ् गैयुम् बॅय्पिल वायुम् पिळैयामल्
तुणिक्कुम् वण्णङ् गाणुदि तुन्बन् दुऱॅन्ऱान् 1164

विटत्तिल्–विष के समान; कनल् पूतम्–जलता यह भूत; कणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु–कुछ गण्य नहीं है; इ तकै वाळाल्–(हमारी) इन उत्तम तलवारों द्वारा; तणिक्कुम् तन्मैत्तु अन्ऱु–नहीं काटा जा सकता है; ॲतिल् अन्ऱु–ऐसा भी नहीं है; पिणिक्कुम् कैयुम्–जकड़नेवाले इन हाथों को; पॅय् पिल वायुम्–गुफा के समान मुख को, जिसमें वह सारे जीवों को समेटकर डाल लेता है; पिळैयामल्–अचूक रीति से; तुणिक्कुम् वण्णम्–काट लेता हूँ, वह रीति; काणुति–देखिए; तुन्पम् तुऱ–शोक छोड़ दीजिए; ॲन्ऱान्–कहा। ११६४

यह विष-समान जलनेवाला भूत कुछ गण्य नहीं है ! इन उत्तम तलवारों से न मारा जा सकेगा —ऐसा भी नहीं। अब देख लीजिए। मैं कैसे सभी जीवों को जकड़ लेनेवाले इसके हाथों को और गुफा के समान मुख को छिन्न-भिन्न कर देता हूँ। आप दुःख करना छोड़ दें। —लक्ष्मण ने ऐसा कहा। ११६४

ॲन्ना मुन्ने शॊल्लु मिळङ्गो विऱैयोऱ्कु
मुन्ने शॅल्ल मुन्नव नन्ना निनुमुन्दत्
तन्ने रिल्लात् तम्बि तडुप्पान् पिऱरिल्लै
यन्नो कण्ड वुम्बरुम् बॅय्दुऱ् ऱळुदाराल् 1165

ॲन्ना–ऐसा; मुन्ने चॊल्लुम्–(करने के) पूर्व ही वादा करके; इळम् को–लघुराज; इऱैयोऱ्कु–भगवान (श्रीराम) के; मुन्ने चॅल्ल–आगे गये; मुन्नवन्–ज्येष्ठ श्रीराम; अन्नानिनुम्–उनके भी; मुन्त–आगे गये; तन् नेर् इल्ला–अप्रमेय; तम्पि–छोटे भाई; तटुप्पान्–रोकने लगे; पिऱर् इल्लै–(उनको रोकने) कोई दूसरे नहीं थे; कण्ट उम्परुम्–इसको देख देव भी; पॅय्तुऱ्ऱु–शोकाकुल होकर; अळुतार्–रोये; अन्नो–हाय। ११६५

लक्ष्मण ने कार्य के पहले ही वादा कर दिया। लघुराज यह कहकर (उसको चरितार्थ करने के विचार से) श्रीराम के आगे कबन्ध के मुख की तरफ़ जाने लगे। श्रीराम भी उनको पीछे करके आगे जाने लगे। तब अनुपमेय छोटे भाई ने अपने बड़े भाई को रोका। इस तरह दोनों ने आपस में एक दूसरे को रोका। देवों ने यह देखा और यह भी देखा कि उन दोनों को रोकनेवाला कोई अन्य नहीं है। तब वे शोक से रोने लगे। ११६५

इन्नैय राहिय विरुवरु मुहत्तिरु कण्बोल्
कन्नैयुम् वार्हळल् वीरर्शॅन्रू रणुहलुङ् गवन्दन्
विन्नैयि नॅय्दिय वीरर्नीर् यावर् कॉलॅन्न
निन्नैयु नॅञ्जिन रिमैत्तिल रुरुत्तनर् निन्ऱार् 1166

इन्नैयर् आकिय–ऐसे; कन्नैयुम् वार् कळल्–क्वणनशील बड़ी पायलधारी; वीरर् इरुवरुम्–दोनों वीर; मुकत्तु इरु कण् पोल्–मुख की दोनों आँखों के समान; चॅन्ऱु अणुकलुम्–ज्योंही जाकर नियराये, त्योंही; कवन्तन्–कवन्ध के भी; विन्नैयिन् ऍय्तिय–कर्म-प्रेरित हो आये; वीरर् नीर्–वीर तुम; यावर् कॉल्–कौन हो; ऍन्न–पूछने पर; निन्नैयुम् नॅञ्चिनर्–सोचते हुए मन के साथ; उरुत्तनर्–क्रुद्ध बनकर; इमैत्तिलर्–अपलक; निन्ऱार्–(तरेरते) खड़े रहे। ११६६

क्वणनशील पायलधारी दोनों वीर एक ही मुख की दोनों आँखों के समान जाकर कबन्ध के पास पहुँचे। कवन्ध ने उनसे पूछा कि कर्म-परिपाक से इधर आगत तुम दोनों वीर कौन हो? यह सुनकर दोनों वीर क्रुद्ध हुए और कुछ सोचते हुए उसको तरेरने लगे। उस स्थिति में वे खड़े रहे। ११६६

अळिन्दु ळारल रिहळ्नदन रॅन्नैयॅन् रळन्ऱान्
पॉळिन्द कोपत्तन् पॉरिक्कनल् विळितॉरुम् बॉडिप्प
विळुङ्गु वेनॅन वीङ्गलुम् विण्णुर वीरर्
ऍळुन्द तोळ्हळै वाळ्हळा लरिन्दन रिट्टार् 1167

अळिन्तुळार् अलर्–(मुझे देखकर भी) ये भय से निस्पंद नहीं हुए; ऍन्नै इकळ्न्तनर्–मेरा अपमान करते हैं; ऍन्ऱु अळन्ऱान्–यह सोचकर खौल उठा; तन् कोप पॉरि कनल्–अपनी अंगार के साथ कोपाग्नि; विळि तॉरुम्–दोनों आँखों द्वारा; पॉटिप्प–प्रकट करते हुए; विळुङ्कुवान् ऍन–निगल लूँगा, इस विचार से; वीङ्कलुम्–शरीर को फुलाने पर; वीरर्–दोनों वीरों ने; विण् उर ऍळुन्त–आकाश से लगते हुए जो उठे, उन कन्धों को; वाळ्कळाल्–तलवारों से; अरिन्तनर्–काटकर; इट्टार्–गिराया। ११६७

कबन्ध सोचने लगा कि यह क्या नई बात है? ये मुझे देखकर भयभीत होकर मूर्च्छित नहीं हो रहे! मेरा अपमान करते हैं। उसकी कोपाग्नि अंगारों के साथ उसकी दोनों आँखों से प्रकट होने लगी। उसने उनको निगलने के विचार से अपना शरीर फुलाया। तब दोनों वीरों ने आकाश तक उठे हुए उसके हाथों को अपनी तलवारों से काटकर गिरा दिया। ११६७

कैह ळर्रुवॅङ् गुरुदिया रॊळुक्किय कवन्दन्
मॅय्यिन् मेर्कॊडु किळक्कुरप् पॅरुनदि विरवुम्

शॆय मानॆडुन् दाळ्लडत् तनिवरै तन्नो
डैय नीङ्गिय पेरॆंळि लुवमैय नानान् 1168

कॆंकळ् अऱ्ऱु–कटे हाथों का होकर; वॆम् कुरुति आऱु–गरम रक्त की नदी; ऑळुक्किय कवन्तन्–बहाता हुआ कबन्ध; मॆय्यिन्–अपने शरीर में; मेऱ्कु ऑटु किळक्कु–पश्चिम से पूर्व तक; उऱ–जाती हुई; पॆरु नति विरवुम्–बड़ी नदी (कावेरी) से युक्त; चॆय मा नॆटु–सह्य नाम के लम्बे-चौड़े और; ताळ् तट–विस्तृत तराइयों के; तनि वरै तन्नॊटु–श्रेष्ठ पर्वत के साथ; ऐयम् नीङ्किय–सन्देह-रहित; पेर् ऑळिल्–अतीव सुन्दर; उवमैयन् आतान्–तुल्य बन गया। ११६८

कटे हाथों के साथ शरीर पर रक्त की नदी बहाते हुए जो रहा, उस कवन्ध का शरीर सह्याद्रि से असंदिग्ध और सुन्दर रूप से तुल्य हो गया, जिस पर कावेरी की लम्बी नदी पश्चिम से लेकर पूर्व के छोर को छूती हुई बहती है। ११६८

आळु नायह नङ्गैयिऱ् ऱीण्डिय वदनाल्
मूळुम् शाबत्तिन् मुन्दिय तीविनै मुडित्तान्
तोळुम् वाङ्गिय तोमुडै याक्कैयैत् तुऱवा
नीळ नीङ्गिय पऱवैयिन् विण्णुऱ निमिर्न्दान् 1169

आळुम् नायकन्–लोकपालक जगन्नाथ प्रभु श्रीराम ने; अम् कैयिल्–अपने सुन्दर हस्त से; तीण्टिय अतनाल्–स्पर्श किया, उससे; मूळुम् चापत्तिन्–प्रभावपूर्ण शाप के कारण; मुन्तिय–आरब्ध; तीविनै–पाप को; मुटित्तान्–मिटाकर; तोळुम् वाङ्किय–कटी भुजाओं के साथ; तोम् उटै याक्कैयै–दोषयुक्त शरीर को; तुऱवा–छोड़कर; नीळम् नीङ्किय–नीड़ को त्यागकर आये; पऱवैयिन्–पक्षी के समान; विण् उऱ निमिर्न्तान्–आकाश को स्पर्श करते हुए बढ़ा। ११६९

उसके शरीर पर भुवनगोप्ता जगन्नायक श्रीराम के सुन्दर हाथ का स्पर्श हो गया था। इसलिए सारे पाप कट गये, जो प्रबल शाप के कारण उसे लगे थे और फल दे चुके थे। भुजाओं-रहित दोषसहित अपना शरीर छोड़कर वह नीडमुक्त पक्षी के समान आकाश में एक दिव्य रूप में खड़ा हो गया। ११६९

विण्णि निन्ऱवन् विरिञ्जनै मुदलिनर् यार्क्कुम्
कण्णि निन्ऱव निवनॆनक् करुत्तुऱ वुणर्न्दान्
ऑण्णि यन्नवन् गुणङ्गळै वाय्दिरन् दिशैत्तान्
पुण्णि यम्बयक् किन्ऱुळि यरियदॆंप् पॊरुळे 1170

विण्णिन् निन्ऱवन्–आकाश में खड़ा होकर; विरिञ्चनै मुतलिनर्–ब्रह्मादि; यार्क्कुम्–सभी की; कण्णिन् निन्ऱवन्–दृष्टि के सामने स्थित; इवन् ऍन–भगवान ये हैं, यह; करुत्तु उऱ उणर्न्तान्–मन में स्थिर रूप से जान लिया; अन्नवन् कुणङ्कळै–उनके कल्याणगुणों को; ऑण्णि–स्मरण कर; वाय् तिऱन्तु–मुख खोलकर; इचैत्तान्–

गान किया; पुण्णियम्-पुण्य; पयक्किऩ्ऱऴि-जब फलीभूत होता है, तब; ऎ पॊरुळे अरियतु-कौन सी वस्तु दुर्लभ है। ११७०

आकाश में खड़ा होकर उसने अपने मन में यह स्थिर रूप से जान लिया कि ये ही वे परमदेव हैं, जो विरंचि आदि देवताओं की (ध्यान-) दृष्टि के लक्ष्य बने हैं। वह उनके कल्याणगुणों का स्मरण करके गान करने लगा। हाँ! जब पुण्य फलीभूत होने लगता है, तब कौन सी वस्तु दुर्लभ होती है? । ११७०

ईऩ्ऱवऩो ऎप्पॊरुळु मॆल्लैतीर् नल्लऱत्तिऩ्
शाऩ्ऱवऩो तेवर् तवत्तिऩ् ऱऩिप्पयऩो
मूऩ्ऱु कवडाय् मुळैत्तॆऴुन्द मूलमो
तोऩ्ऱि यरुविऩैयेऩ् शावत् तुयर्तुडैत्ताय् 1171

तोऩ्ऱि-मेरे सामने प्रकट होकर; अरु विऩैयेऩ्-दुस्तर पापी (मेरे); चाप तुयर्-शाप का दुःख; तुटैत्ताय्-मिटानेवाले; ऎ पॊरुळुम् ईऩ्ऱवऩो-सभी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता हैं क्या; ऎल्लै तीर्-सीमाहीन; नल् अऱत्तिऩ्-श्रेष्ठ धर्म के; चाऩ्ऱु अवऩो-प्रमाण जो हैं, वे हैं क्या; तेवर् तवत्तिऩ्-देवों के तप के; तऩि पयऩो-श्रेष्ठ फलस्वरूप हैं क्या; मूऩ्ऱु कवटु आय्-त्रिशाखा में; मुळैत्तु ऎऴुन्त-प्रकट होनेवाले; मूलमो-उनके मूल हैं क्या। ११७१

मेरे सामने प्रकट होकर कठोर पापी मेरा शाप-दुःख दूर करनेवाले हे प्रभु! क्या आप ही चराचर के जनक हैं? अनन्त धर्मपथ के पथिकों के लिए प्रमाणस्वरूप आप ही हैं क्या? आप देवों के कठिन तप के फलस्वरूप अवतरित परमपुरुष हैं? या ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूपी त्रिशाखाओं के मूल परब्रह्म हैं? । ११७१

मूलमे यिल्ला मुदल्वऩे नीमुयलुम्
कोलमो यार्क्कुन् दॆरिवरिय कॊळ्हैयवाल्
आलमो वालि ऩडैयो वडैक्किडन्द
बालऩो वेलैप् परप्पो पहराये 1172

मूलमे इल्ला-अनादि; मुतल्वऩे-मूलपुरुष; नी मुयलुम्-आप जो लेते हैं; कोलमो-वे रूप; यार्क्कुम् तॆरिवु अरिय-सबके लिए अज्ञ; कॊळ्कैय-तथ्यों के आधार पर हैं; आल्-इसलिए; आलमो-(प्रलय के बाद उत्पन्न) वह वृक्ष हैं क्या; आलिऩ् अटैयो-उस वट का पत्र है क्या; अटै किटन्त पालऩो-पत्र पर पड़े रहे शिशु हैं क्या; वेलै परप्पो-(वह वट-वृक्ष जिसमें है) वह सागर-विस्तार है क्या; पकराय्-समझाइए। ११७२

अनादि आदिपुरुष! आप स्वेच्छा से जो रूप लेते हैं, उनके तथ्य किसी के ज्ञानगम्य नहीं होते। आपका मूल रूप क्या है? प्रलय के जलविस्तार के मध्य प्रकट होनेवाला वट-वृक्ष है? या उसका पत्र?

या उस पत्र के शायी शिशु ? या वही जल-विस्तार ? समझाइए कौन सा है ? । ११७२

निन्शॆय्है कण्डु नितैन्दन्नवो नीण्मरैहळ्
उन्शॆय्है यन्नवैताम् जॊन्न वॊळुक्कित्तवो
ॲन्शॆय्देन् मुन्न मिच्चॆय्है यॆय्दिनाय्
पिन्शॆय्व दिल्लाप् पॆरुञ्जॆल्व नीपॆरुराय् 1173

पिन् चॆय्वतु इल्ला–और भी जोड़ा जाय ऐसा जो नहीं; पॆरुम् चॆल्वम्–ऐसे बड़े (मोक्ष) धन के; पॆरुराय् नी–स्वामी हैं आप; नीण् मरैकळ्–अनन्त वेदों ने; निन् चॆय्कै कण्टु–आपके कार्य देखकर; नितैन्तन्नवो–स्मरण करके कहे; अन्नवै ताम्–(या) वे; उन् चॆय्कै–आपके कृत्यों को; चॊन्न ऑळुक्कित्तवो–निर्धारित कर कहनेवाले हैं; इ चॆय्कै ॲय्तित्ताय्–यह (मुझे तारने का) काम करने की कृपा की; मुन्नम् ॲन् चॆय्तेन्–(इनके योग्य) पहले मैंने क्या पुण्य किया था । ११७३

आप मोक्षनिधि के स्वामी हैं। वह निधि ऐसी है, जिसमें और जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती, न जोड़ना ही सम्भव है। वेदों ने आपके कार्य देखकर वर्णन किये हैं या उनके कहे अनुसार आप कार्य करते हैं ? आपने मेरे प्रति यह जो हित-कार्य किया है, उसके योग्य मैंने क्या पुण्य किया था ? । ११७३

काण्वार्क्कुङ् गाणप् पडुन्बॊरुट्कुङ् गण्णाहिप्
पूण्बाय्पो निऱ्ऱियाल् यादॊन्ऱुम् पूणादे
माण्बा लुलहै वयिऱ्ऱॊळितु वाङ्गुदियाल्
आण्बालो पॆण्बालो वप्पालो वॆप्पालो 1174

काण्पार्क्कुम्–दर्शकों और; काणप्पटम् पॊरुट्कुम्–दृश्य पदार्थों की; कण्णाकि–दृष्टि वनकर; यातु ऑन्ऱुम् पूणाते–विना किसी का धारण किये ही; पूण्पाय् पोल्–धारक के समान; निऱ्ऱि–स्थित हैं; उलकै–सर्वलोकों को; माण्पाल्–दिव्यशक्ति से; वयिऱ्ऱु ऑळितुतु–उदर में छिपाये रखकर; वाङ्कुति आल्–(कल्पारम्भ में) फिर से वाहर लाते हैं; आण् पालो–आप पुरुष जाति हैं; पॆण्पालो–स्त्री; अप्पालो–दोनों के परे हैं; ॲ पालो–कौन जाति हैं । ११७४

आप दर्शकों और दृश्यों की आँखें हैं ! आप सचमुच किसी का धारण नहीं करते पर देखने में धारण करते से स्थित हैं ! [यह गीता के (९-५) श्लोक का भाव है। श्लोक यह है— "न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः॥" इसको ऐसे ही मनन करके समझना है।] अपनी (शक्ति) महिमा से प्रपंच को अपने उदर में छिपा लेते हैं और बाद प्रकट करते हैं ! क्या आप पुरुष जाति के हैं या स्त्री जाति के ? या दोनों नहीं है ? या दोनों के परे कोई (नपुंसक) जाति हैं ? कौन सा लिंग है आपका ? । ११७४

आदिप् पिरमतुनी यादिप् परमनुनी
आदियॅनुम् बॉरुळुक् कप्पालुण् डायितुनी
शोदिनी शोदिच् चुडर्प्पिळम्बुम् नीयॅनुरु
वेदमुरै शॅय्दाल् वॅळ्हारो वेरुळ्ळार् 1175

आति पिरमतुम् नी–सृष्टिमूल ब्रह्मा भी आप हैं; आति परमतुम् नी–उनके भी आदि परब्रह्म भी आप हैं; आति ॲनुम् पॉरुळुक्कु–आदि कहलानेवाले तत्व के भी; अप्पाल् उण्टु आयितुम्–परे कुछ हो तो; नी–वह भी आप हैं; चोति नी–ज्योतिस्वरूप हैं आप; चोति चुटर् पिळम्पुम्–ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी; नी ॲनुरु–आप ही हैं, यह; वेतम् उरै चॅय्ताल्–वेद कहते हैं तो; वेरु उळ्ळार्–वेदवाह्य सम्प्रदायों के देव; वॅळ्कारो–नहीं शरमायेंगे क्या। ११७५

सृष्टि के मूल ब्रह्मा आप ही हैं। उनके भी आदि आप ही हैं। अगर आदि के आदि कुछ हैं तो वह भी आप ही हैं। आप ज्योतिस्वरूप सब हैं। ज्योतियों की ज्योति का पुंज भी आप ही हैं। यह वेदों का निष्कर्ष है। यह सुनकर अन्य सम्प्रदाय जिनको आदिदेव कहते हैं, वे देव कहाने पर नहीं शरमायेंगे क्या? । ११७५

ऍण्डिशैयुन् दिण्शुवरा येळॆळ् निलैयॅडुत्त
अण्डप् पॅरुङ्गोयिर् कॅल्ला मळ्हाय
मण्डलङ्गळ् मून्ड्रिन् मेलिनुरु मलराद
पुण्डरिह मॉट्टिन् पॉहुट्टो पुरैयम्मा 1176

ऍण् तिचैयुम्–आठों दिगन्त; तिण् चुवराय्–सबल भित्तियाँ बने हैं; एळ् एळ् निलै ॲटुत्त–ऐसे चौदह तल्लों में बने; अण्ट पॅरुम् कोयिर्कु ॲल्लाम्–अण्डों के बने सम्पूर्ण मन्दिर से; अळ्कु आय–अधिक सुन्दर; मण्टलङ्कळ् मून्ड्रिन् मेल् निन्रु–(सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र-) त्रिमण्डलों के ऊपर स्थित होकर; मलरात–अविकसित; पुण्टरिकम् मॉट्टिन्–कमलकली का; पॉकुट्टो–कर्णिका (परमपद); पुरै–आपका वासस्थान है क्या; अम्मा–री मैया। ११७६

चौदह लोकों का एक अण्ड है। उनमें हर एक दिगन्त की भित्तियों से आवृत है। वह अण्ड मन्दिर के समान है। उस सुन्दर मन्दिर के ऊपर सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र —तीन मण्डल हैं। उनके ऊपर अविकसित कमल की कली है। उसकी कर्णिका जो है (परमपद) क्या वही आपका वासस्थान है? । ११७६

मण्बा लमरर् वरम्बारुङ् गाणाद
ऍण्बा लुयर्न्द वॅरियोङ्गु नल्वेळ्वि
उण्बायनी यूट्टुवाय् नीयिरण्डु मॉक्कितुर
पण्बा रिरिवार् पहर्वाय् परमेट्टि 1177

परमेट्टि–परमेष्ठी; मण् पाल् अमरर्–भूसुर; आरुम्–कोई भी; वरम्पु काणात–जिसका ठिकाना नहीं देख पाते; ऍण्पाल् उयर्न्त–संख्या में बढ़े; ऍरि ओम्कु–जिनमें अग्नि पाली जाती है, उन; नल् वेळ्वि–श्रेष्ठ यज्ञों में; उण्पाय् नी–(हवि-) भोक्ता भी आप हैं; ऊट्टुवाय् नी–अन्य देवों को भोग करानेवाले भी (या हवि देनेवाले भी) आप ही हैं; इरण्टुम् ऑक्किन्ऱ–(भोजनदाता, भोजनकर्ता) दोनों के साथ रहने का; पण्पु–प्रकार; अऱिवार् यार्–जाननेवाले कौन हैं। ११७७

परमेष्ठी ! भूसुर असंख्य यज्ञ करते हैं। उनमें अग्निदेव का आवाहन होता है और उनके पास हवि अर्पित की जाती है। उस हवि के भोक्ता भी आप हैं और उसका उच्छिष्ट देवताओं को आहार करानेवाले भी आप ही हैं। (हवि के देनेवाले भी आप हैं।) भोक्ता तथा भोजनदाता दोनों आप ही एक साथ रहते हैं। यह महिमा जान सकनेवाले कौन हैं ? । ११७७

निऱ्कु नॅडुनीत्त नीरिन् मुळैत्तॅळुन्द
मॊक्कुळे पोल मुहुळित्त वण्डङ्गळ्
ऑक्कवुयरन् दुन्नुळे तोन्ऱि यॊळिक्किन्ऱ
पक्क मऱिदऱ् कॅळिदो परम्बरने 1178

परम्परने–परात्पर; निऱ्कुम् नॅटुम् नीत्तम्–विपुल महाप्रलय के; नीरिन्–जल में; मुकुळित्त–कली के समान उठे; अण्टङ्कळ्–अण्डगोल; ऑक्क उयर्न्तु–एक साथ ऊपर आकर; उन् उळे तोन्ऱि–आपके अन्दर से प्रकट होकर; ऑळिक्किन्ऱ–फिर कल्पान्त के प्रलय में छिप जाते हैं; पक्कम्–वह पक्ष; अऱितऱ्कु ऍळितो–जानने के लिए सुलभ है क्या। ११७८

परात्पर ब्रह्म ! महाप्रलय के जलविस्तार में से कली के समान अण्ड निकलकर ऊपर आते हैं। वे आप ही के अन्दर से बाहर प्रकट होते हैं, फिर यथासमय कल्पान्त के प्रलय में आप ही में समा जाते हैं ! यह आपका अतिशय पक्ष यथार्थ रूप में समझ लेना सुलभ है क्या ? । ११७८

मायप् पिऱवि मयलीक्कि माशिल्लाक्
कायत्तै नल्हित् तुयरित् करैयेऱ्ऱिप्
पेयॊत्तेन् बेदैप् पिणक्करुत्त वॅम्बॅरुमान्
नायॊत्ते नॅन्न नलनिळैत्ते नानॅन्ऱान् 1179

माय पिऱवि–वंचकमय (राक्षस-)जन्म-सुलभ; मयल् नीक्कि–मोह हटाकर; माचु इल्ला–निर्दोष; कायत्तै नल्कि–शरीर को देकर; तुयरित् करै एऱ्ऱि–दुःख (सागर) के तीर पर चढ़ाकर; पेय् ऑत्तेन्–भूत के समान; पेतै पिणक्कु–अज्ञता से गृहीत पातकमय जीवन; अऱुत्त–काटनेवाले; ऍम्पॅरुमान्–मेरे प्रभु; नाय् ऑत्तेन् नान्–श्वान-सम मैंने; ऍन्न नलन् इळैत्तेन्–क्या ही सुकर्म किया था। ११७९

मेरा वंचक राक्षस-जन्म था, उससे अत्यन्त मोह में फँसा हुआ था।

आपने उस मोह का जाल काट दिया। फिर यह निर्दोष दिव्य शरीर प्रदान किया। दु:ख-सागर के तीर पर चढ़ा दिया। भूत के समान मेरे कुजीवन का बन्धन काटकर मुझे उबारनेवाले हे प्रभु ! मैं कुत्ते का जीवन बिता रहा था। मैंने क्या ही सुकार्य किया था ? आपकी निर्हेतुक करुणा भी कितनी बड़ी है ! । ११७९

अँऩ्ऱाङ् गिऩिदियम्बि यिऩ्ऩरियक् कूरुवॅऩ्ऩेल्
ऑऩ्ऱादु तेव रुऱुदिक् कॅऩ्ऩवुऩ्ऩात्
तऩ्ऱायॅक् कण्णुऱ्ऱ कऩ्ऱऩैय तऩ्मैयऩाय्
निऩ्ऱाऩैक् कण्डा नॅऱिनिऩ्ऱार् नेर्निऩ्ऱाऩ् 1180

अँऩ्ऱाङ्कु–ऐसा; इतितु इयम्पि–सन्तोषक रीति से स्तुति करके; इऩ्ऩुरु–अब; अरिय कूऱुवॅऩ्ऩेल्–प्रकट कहूँ तो; तेवर् उऱुतिक्कु–देवों के हित में; ऑऩ्ऱातु–उचित नहीं रहेगा; अँऩ्ऩ उऩ्ऩा–यह सोचकर; तऩ् तायॅ कण् उऱ्ऱ–अपनी माँ को जिसने देखा हो, उस; तऩ्मैयऩाय्–(बछड़े की-सी) स्थिति में आकर; निऩ्ऱाऩै–जो खड़ा रहा, उस कबन्ध को; नॅऱि निऩ्ऱार्–धर्मपथिकों को; नेर् निऩ्ऱाऩ्–सामने आकर दर्शन देनेवाले (श्रीराम) ने; कण्टाऩ्–देखा। ११८०

स्तुति में इतना कहा कबन्ध ने। वह और भी कहना चाहता था। लेकिन, 'और भी कहूँ तो अवतार-रहस्य खुल जायगा। वह देवों के हित में अच्छा नहीं रहेगा।' यह सोचकर वह बिछुड़ी माता गाय से पुनः प्राप्त बछड़े की-सी हालत में अत्यन्त आनन्द के साथ चुप खड़ा रह गया। ज्ञानमार्गियों को उनके ध्यान में दर्शन देनेवाले श्रीराम ने उसको उस स्थिति में देखा। ११८०

पारा यिळैयवऩे पट्टविवऩ् वेऱॅयोर्
पेराळऩ् ऱाऩा यॊळियोङ्गु पॅऱ्ऱियऩाय्
नेराहा यत्तिऩ् निऱ्किऩ्ऱा ऩीयिवऩै
आरा यॅऩ्ऩववऩुम् यार्हॊलो नीयॅऩ्ऱाऩ् 1181

इळैयवऩे–अनुज; पाराय्–देखो; पट्ट इवऩ्–(हमारे हाथों) मरा यह; वेऱॆ ओर्–अन्य एक; पेर् आळऩ् ताऩाय्–सम्मान्य (व्यक्ति) बनकर; ऑळि ओङ्कु–तेज में उन्नति; पॅऱ्ऱियऩ् आय्–प्राप्त करके; नेर् निऱ्किऩ्ऱाऩ्–हमारे सामने खड़ा है; नी इवऩै आराय्–तुम इसको परख लो; अँऩ्–(श्रीराम के) कहने पर; अवऩुम्–उन्होंने भी; नी यार् कॊलो–तुम कौन हो तो; अँऩ्ऱाऩ्–पूछा। ११८१

तब श्रीराम ने लक्ष्मण को सुझाया कि छोटे भैया ! देखो। जिसको हमने मारा था, वह बहुत सम्मान के योग्य और तेजोमय रूप में खड़ा है। पता लगा लो कि वह सचमुच कौन है ? तब लक्ष्मण ने उससे पूछा कि तुम कौन हो तो ? । ११८१

शन्दप्पू नलङ्गल् वीरन् दनुवनु नामत् तेत्तोर्
कन्दर्प्पन् शाबत् तालिक् कडैप्पडु पिऱवि कण्डेन्
वन्दुऱ्ऱीर् मलर्क्कै तीण्ड मुन्नुडै वडिवु पॆऱ्ऱेन्
ऎन्दैक्कु मॆन्दै नीर्या निशैप्पदु केण्मि ऎन्ऱान् 1182

चन्तम् पूण्–सुन्दर आभरण; अलङ्कल् वीरन्–और मालाधारी वीर; तनु ऎंतुम् नामत्तेन्–तनु का नामधारी हूँ; ओर् कन्तर्प्पन्–एक गन्धर्व हूँ; चापत्ताल्–शाप के कारण; इ कटै पटु पिऱवि–यह नीच जन्म; कण्टेन्–प्राप्त कर चुका था; वन्तु उऱ्ऱीर्–आप पधारे; मलर् कै तीण्ट–(आपके) कमल-सम हाथों के स्पर्श से; मुन् उटै वटिवम्–मूल रूप; पॆऱ्ऱेन्–प्राप्त किया; ऎन्तैक्कुम् ऎन्तै नीर्–मेरे पिता के पिता आप; इचैप्पतु–मेरा विनय-कथन; केण्मित्–सुनिए; ऎन्ऱान्–कहा। ११८२

तब उसने उत्तर दिया। वह सुन्दर आभरणों से और हारों से भूषित था। उसने कहा कि मैं तनु नामधारी गन्धर्व हूँ। किसी शापवश इस नीच जन्म को प्राप्त हुआ था। आप कृपा करके आये और आपके कमल-हस्तों के स्पर्श से मुझे अपना पूर्वरूप प्राप्त हो गया। मेरे पिता के पिता! मैं कुछ सुनाता हूँ। आप सुनिए। ११८२

कणैयुलाञ् जिलैयिऩ्ऩीरैक् काक्कुन रिल्लै येनुम्
इणैयिला डन्नै नाडर् केयिन शॆय्दर् केर्कुम्
पुणैयिला दवर्क्कु वेलै पोक्करि दन्न दैपोल्
तुणैयिला दवर्क्कु मिन्ऱाऱ् पहैप्पुलन् दॊलैत्तु नीक्कल् 1183

कणै उलाम् चिलैयिऩ्ऩीरै–शरासन-हस्त आपको; काक्कुनर् इल्लै–रक्षित करने में समर्थ कोई नहीं है; एतुम्–तो भी; इणै इलाळ् तन्नै–अप्रमेय (सीताजी को); नाटऱ्कु–खोजने के हेतु; एयिन–आवश्यक; चॆय्तऱ्कु–(काम) करने को; एऱ्कुम्–(सहायता प्राप्त करना) उचित होगा; पुणै इलातवर्क्कु–नाव जिनके पास नहीं है, उन्हें; वेलै पोक्कु–समुद्र-तरण; अरितु–कठिन है; अन्नते पोल्–उसी तरह; पकै पुलम् तॊलैत्तु–शत्रु का समर में संहार करके; नीक्कल्–दूर करना; तुणै इलातवर्क्कुम्–सहायक-हीनों के लिए; इन्ऱु–(सम्भव) नहीं है। ११८३

यह सर्वविदित है कि शरासनधारी आपकी सहायता करने का सामर्थ्यशाली कहीं नहीं है। तो भी अनुपम देवी सीता को खोजने हेतु आवश्यक और योग्य कार्य करने के लिए कुछ लोगों को सहायक बना लेना ही उचित होगा। जिसके पास नाव नहीं, उसे समुद्र पार करना कठिन है! वैसे ही समरांगण में शत्रुओं का नाश करना हो तो निस्सहायों के लिए साध्य नहीं है। ११८३

पऴिप्परु निलैमै याण्मै पहर्वदॆन् पदुम पीडत्
तुऴिप्पॆरुन् दहैमै शान्ऱ वन्दण नुयिर्त्त वॆल्लाम्

अऴिप्पदऱ्‌ कॊरुव नात वण्णलु मऱिदि रन्ऱे
ऒऴिप्परुन्‌ दिऱल बूद गणत्तॊडु मुऱैयु मुण्मै 1184

पऴिप्पु अऱ–अनिद्य; निलैमै आण्मै–आपके स्थान और पौरुष का; पकर्वतु ऍन्‌–क्या कहना; पतुम पीटत्तु उऴि–पद्मपीठ पर (के); पॆरुम्‌ तकैमै चान्ऱ–उत्कृष्ट और शानदार; अन्तणन्‌ उयिर्‌त्त–ब्रह्मा द्वारा सृष्ट; ऍल्लाम्‌–सारे (लोकों व जीवों) को; अऴिप्पतऱ्कु–संहार करनेवाले; ऒरुवन्‌ आत अण्णलुम्‌–एक बने ईश्वर भी; ऒऴिप्पु अरुम्‌–अलग न होनेवाले; तिऱल्‌ अ–बलशाली; पूत कणत्तॊटुम्‌–भूतगणों के साथ; उऱैयुम्‌ उण्मै–रहते हैं, सो तथ्य; अऱितिर्‌ अन्ऱे–आप जानते हैं न। ११८४

आपके अनिद्य गौरव और पौरुष (वीरता) का कहना क्या? पद्मपीठासीन ब्रह्मा से सृष्ट सारे लोकों के संहारक हैं शिवजी। वे भी अपने बलशाली भूतगणों को सदा साथ रखते हैं। यह तथ्य आप जानते ही हैं न? । ११८४

आयदु शॆयहै यॆन्ब दऱत्तुऱै नॆऱियि नॆण्णित्‌
तीयवर्‌च्‌ चेर्‌हि लादु शॆव्वियोर्‌च्‌ चेरुम्‌ शॆय्है
तायिनु मुयिर्‌क्कु नल्हुञ्‌ जवरियैत्‌ तलैप्पट्‌ टन्नाळ्‌
एयदोर्‌ नॆऱियै यॆय्दि यिरलैयङ्‌ गुन्ऱ मेऱि 1185

अऱ तुऱै नॆऱियिन्‌ ऍण्णि–धर्म-मार्ग का विचार करके; तीयवर्‌ चेर्‌किलातु–बुरों से नहीं मिलकर; चॆव्वियोर्‌ चेरुम्‌ चॆय्कै–अच्छों के साथ मिलने का काम; चॆय्कै ऍन्पतु आयतु–कर्तव्य-कर्म है; उयिर्‌क्कु–जीवों को; तायिनुम्‌–माता से बढ़कर; नल्कुम्‌–सहायक; चवरियै–शबरी को; तलैप्पट्टु–मिलकर; एयतु–उनसे निर्दिष्ट; नॆऱियै ऍय्ति–मार्ग पर जाकर; इरलै अम्‌ कुन्ऱम्‌ एऱि–ऋष्यमूक पर्वत पर चढ़कर। ११८५

धर्म-मार्गों का अवलम्बन करके, विना बुरों की संगति किये अच्छों के साथ मिलना अब कर्तव्य कर्म है। आप शबरी के पास जाकर उनसे मिलिए। वे माता से भी अधिक हित करेंगी। वे मार्ग बतायेंगी। आप उनके बताये मार्ग को पकड़कर जाइए और ऋष्यमूक (ऋष्य— एक तरह का हरिण है, उसके नाम से भूषित) पर्वत पर चढ़कर—। ११८५

कदिरवन्‌ शिऱुव नान कनहवा णिऱत्ति नानै
ऍदिर्‌ऍदिर्‌ तऴुवि नट्पि निन्निदमर्‌न्‌ दवनि नीण्ड
वॆदिर्‌पॊरु तोळि नाळै नाडुदल्‌ विऴुमि दॆन्ऱान्‌
अदिर्‌कऴल्‌ वीरर्‌ तामु मन्नदे यमैव दानार्‌ 1186

कतिरवन्‌ चिऱुवन्‌ आन–सूर्य का पुत्र; कनक वाळ्‌ निऱत्तिनानै–उज्ज्वल कनक-वर्ण (सुग्रीव) को; ऍतिर्‌ ऍतिर्‌ तऴुवि–आमने-सामने मिलकर; नट्पिन्‌ इनितु अमर्‌न्तु–मित्रता में सुख से रहकर; अवनिन्‌–उसकी सहायता के साथ; ईण्ट–शीघ्र;

वेतिर् पोरु–बाँस के समान; तोळितांळै–कंधों की (सीता) को; नाटुतल्–खोजना; विळुमितु ऍन्नृरात्–श्रेयस्कर होगा, कहा; अतिर् कळल् वीरर् तामुम्–क्वणनशील पायलधारी वीर भी; अन्नते–वही; अमैवतु आतार्–करने में लगे । ११८६

वहाँ सुग्रीव से मिलिए। वह कनकवर्ण वानरनायक सूर्य का पुत्र है। उसके साथ मित्रता कर लीजिए। उसकी सहायता लेकर बाँस के समान कन्धों वाली सीतादेवी को खोजिए। वही श्रेष्ठ होगा। कबन्ध की यह सलाह मानकर क्वणनशील पायलधारी वीर श्रीराम और लक्षमण चलने लगे। ११८६

आन्पिन् रॉळुदु वाळ्त्ति यन्दरत् तवनुम् बोनान्
मानवक् कुमरर् तामु मत्तिशै वळिक्कॉण् डेहि
कान्मु मलैयु नीङ्गिक् कङ्गुल्वन् दिरुक्कुङ् गालै
आनैयि न्रिरुक्कै यॅन्नु मदङ्गन दडुक्कल् शेर्न्दार् 1187

आन्पिन्–उसके बाद; अवनुम्–वह (कबन्ध) भी; तॉळुतु वाळ्त्ति–विनय और स्तुति करके; अन्तरत्तु पोनान्–आकाश में गया; मानव कुमरर् तामुम्–मानव-कुमार भी; अ तिचै वळि कॉण्टु एकि–उस दिशा में राह बनाकर गये; कान्मुम् मलैयुम् नीङ्कि–कानन और पर्वत पार करके; कङ्कुल् वन्तु–रात आकर; इरुक्कुम् कालै–जब जम गयी, तब; आनैयिन् इरुक्कै ऍन्नुम्–गज का स्थान कहलानेवाले; मतङ्कन् अतु–मातंग ऋषि के; अटुक्कल्–पर्वत पर; चेर्न्तार्–पहुँचे । ११८७

उसके बाद कबन्ध भी उनकी विनय के साथ स्तुति करके स्वर्ग चला गया। मानव (मनुकुल-जात) वीर भी कबन्ध की निर्दिष्ट (दक्षिण) दिशा में गये। अनेक कानन और पर्वत पार करके वे जाते रहे। खूब रात हो गयी, तब वे मातंग ऋषि के पर्वत पर आये। वहाँ मातंग (हाथी) रहते थे। ११८७

12. शवरि पिरप्पु नीङ्गु पडलम् (शबरी जन्म-विमोचन पटल)

कण्णिय तरुदर् कॉत्त कर्पहत् तरुवु मॅन्न
उण्णिय नल्हुज् जॅल्व मुरुनरुज् जोलैच् चालै
ऍण्णिय विन्व मन्रित् तुन्बङ्ग ळिल्लै यान
बुण्णियम् पुरिन्दोर् वैहुन् दुरक्कमे पोलु मन्रे 1188

कण्णिय–इच्छित; तरुतर्कु ऑत्त–(पदार्थ) देने में समर्थ; कर्पक तरुवुम् ऍन्न–कल्पतरु के समान; उण्णिय–खाद्य (फलादि को); नल्कु–देनेवाले; चॅल्वम् उरुम्–समृद्ध; चोलै–उपवनों से पूर्ण; चालै–(मातंग का) आश्रम; ऍण्णिय इन्पम् अन्रि–सबसे गण्य सुख के सिवा; तुन्पङ्कळ् इल्लै आन–दुःख जहाँ नहीं है; पुण्णियम् पुरिन्तोर् वैकुम्–पुण्यपुरुष जहाँ रहते हैं; तुरक्कमे पोलुम्–स्वर्ग के समान था । ११८८

शबरी का आश्रम इच्छित सभी मनोकामनाओं को पूरा करनेवाले

कल्पतरु कहा जा सकता था। खाद्य फल आदि यथेष्ट दे सके, उतने समृद्ध उपवन उसके चारों ओर थे। उसी आश्रम में मातंग मुनि रहते थे। वह पुण्यकृतों का प्राप्ति-स्थान साक्षात् स्वर्ग ही था, जहाँ चाहे हुए सभी सुख ही सुख मिलते हैं। कोई दुःख नहीं होता। ११८८

अऩ्ऩदा मिरुक्कै नण्णि याण्डुनिऩ् ऱळविल् कालम्
तऩ्ऩैये निऩैन्दु नोऱ्कुञ् शबरियैत् तलैप्पट् टऩ्ऩाट्
किऩ्ऩुरै यरुळित् तीदिऩ् ऱिरुन्दऩै पोलु मॅऩ्ऱाऩ्
मुऩ्ऩवर् किडुवॅल् ऱॅण्ण लावदोर् मूल मिल्लाऩ् 1189

अवऱ्कु मुऩ्-उनके पूर्व; इदु-ये; ऍऩ्ऱु ऍण्णल् आवदु-ऐसा मानने योग्य; ओर्-कोई; मूलम् इल्लाऩ्-(जिनका) मूल नहीं है; अऩ्ऩदु आम्-(वे श्रीराम) ऐसे; इरुक्कै नण्णि-स्थान में पहुँचकर; आण्डु निऩ्ऱु-वहाँ रहकर; अळवु इल् कालम्-अगणित काल तक; तऩ्ऩैये-अपना (श्रीराम का) निऩैन्दु-ध्यान करके; नोऱ्कुम्-जो तपस्या करती रहीं; चबरियै तलैप्पट्टु-उन शबरी से मिलकर; अऩ्ऩाट्कु-उनको; इऩ् उरै अरुळि-मधुर उपदेश देकर; तीदु इऩ्ऱु-विना कष्ट के; इरुन्दऩै पोलुम्-रहीं, शायद; ऍऩ्ऱाऩ्-कहा। ११८९

श्रीराम आदिदेव थे। उनके पूर्व कोई नहीं रहे। वे सृष्टि के मूल थे। वे उस प्रख्यात मातंगाश्रम पर आये। वहाँ शबरी श्रीराम का ही ध्यान करते हुए अकूत काल से तपस्या कर रही थीं। श्रीराम उनसे मिले और उनका कुशल-क्षेम सम्बन्धी प्रश्न किया। आप विना किसी कष्ट के सुखी तो रहती हैं न? ११८९

आण्डव ळऩ्बि नेत्ति यऴुदिऴि यरुविक् कण्णळ्
माण्डदॆऩ् मायप् पाशम् वन्ददु वरम्बिल् कालम्
पूण्डमा दवत्तिऩ् शॆल्वम् बोयदु पिऱवि यॆऩ्ऱाळ्
वेण्डिय कॊणर्न्दु नल्हि विरुन्दुशॆय् दिरुन्द वेलै 1190

आण्डु-तब; अवळ्-शबरी; अरुवि कण्णळ्-सरिता के समान आँसू की धारा वाली आँखों के साथ; अऩ्पिऩ् एत्ति-भक्ति के साथ स्तुति करके; ऍऩ् माय पाचम्-मेरी माया का पाश; माण्टतु-मिट गया (आपके दर्शन से); वरम्पु इल् कालम्-असीम काल से; पूण्ट-मैंने जो धारण कर लिया था, उस; तवत्तिऩ् चॆल्वम्-उस तप का भाग्य; वन्ततु-आ मिला; पिऱवि पोयतु-जन्म कट गया; ऍऩ्ऱा-कहकर; वेण्टिय-निवेदनार्ह; कॊणर्न्तु-(फल आदि) लाकर; नल्कि-देकर; विरुन्तु चॆय्तु-आतिथ्य करके; इरुन्त वेलै-जब रहे, तब। ११९०

तब शबरी की आँखों से भक्ति के कारण आँसू की धारा सरिता के समान बहने लगी। उन्होंने श्रीराम की स्तुति की। कहा कि स्वामी! आपके दर्शन से मेरा मायापाश कट गया। निस्सीम काल से मैं तपस्या कर रही हूँ। उसका सुफल आज मुझे मिल गया। मेरा जन्म-मोचन हो

गया है। फिर उन्होंने उनके भोजन के योग्य फल आदि लाकर अतिथि-सत्कार किया। जब श्रीराम और लक्ष्मण विश्रांत रहे, तब— । ११९०

ईशतुङ् गमलत् तोनु मिमैयवर् यारु मॆन्दै
वाशवन् ऱानु मीण्डु वन्दनर् महिऴ्न्दु नोक्कि
आशरु तवत्तुक् कॆल्लै यणुहिय दिरामऱ् काय
पूशनै विरुम्बि यॆम्बार् पोदुदि यॆन्ऱु पोनार् 1191

ऍन्तै–मेरे पिता; ईचतुम्–शिवजी और; कमलत्तोनुम्–कमलासन; इमैयवर् यारुम्–सुर सब; वाचवन् तानुम्–वासव भी; ईण्टु–यहाँ; वन्तनर्–आये; मकिऴ्न्तु नोक्कि–सन्तोष के साथ मुझे देखकर; आचु अऱ–निर्दोष; तवत्तिऱ्कु ऍल्लै–तप का अन्त, सिद्धि का काल; अणुकियतु–निकट आ गया; इरामऱ्कु आय–श्रीराम की; पूचनै विरुम्पि–पूजा प्यार के साथ करके; ऍम् पाल् पोतुति–हमारे पास पहुँच जाओ; ऍन्ऱु पोनार्—कहके गये। ११९१

शबरी बोलीं। मेरे तात ! कमलासन, सभी देव और वासव यहाँ आये थे। उन्होंने मुझे सन्तोष के साथ देखकर कहा कि तुम्हारे निर्दोष तप का सिद्धिकाल आ गया। तुम श्रीराम की पूजा करना चाहती हो। वह पूरा करके हमारे पास आ जाओ। ११९१

इरुन्दनॆ नॆन्दै नीयीण् डॆय्दुदि यॆन्नुन् दन्मै
पॊरुन्दिड विन्ऱु तानॆन् पुण्णियम् बूत्त दॆन्ऱ
अरुन्दवत् तरशि तन्नै यन्बुर नोक्कि यॆङ्गळ्
वरुन्दुरु तुयरन् दीर्त्ता यम्मनै वाऴि यॆन्ऱान् 1192

ऍन्तै–नाथ; नी ईण्टु ऍय्तुति–आप इधर पधारेंगे; ऍन्नुम् तन्मै–यह हालत; पॊरुन्तिट–जब हुई; इरुन्तनॆन्–(प्रतीक्षा में) रही; इन्ऱु तान्–आज ही; ऍन् पुण्णियम्–मेरा पुण्य; पूत्ततु—फूला (फलीभूत हुआ); ऍन्ऱ–ऐसा जिन्होंने कहा; अरुम् तवत्तु अरचि तन्नै–कठिन तपस्या की, उन रानी को; अन्पु उऱ–कृपा के साथ; नोक्कि–देखकर; अम्मनै–माताजी; ऍङ्कळ् वरुन्तुऱु–हमें कष्ट देनेवाले; तुयरम्–श्रम-दुःख को; तीर्त्ताय्–दूर किया; वाऴि–जिओ; ऍन्ऱान्–कहा। ११९२

मेरे नाथ ! आप यहाँ पधारेंगे— जब इसका भान लगा तभी से मैं आपकी प्रतीक्षा में रह रही हूँ। आज ही मेरा पुण्य सफलीभूत हुआ। जब शबरी ने राम से यह आदरवचन कहा, तब श्रीराम ने उन तपस्विनियों में रानी से कहा कि माता ! आपने हमारा श्रम और श्रमजनित दुःख दूर किया। आप चिरजीव रहें। ११९२

अन्नहनु मिळैय कोवु मन्ऱव णुरैन्द पिन्ऱै
विन्नैयरु नोन्बि ताळु मॆय्म्मैयि नोक्कि वॆय्य

तुन्ऩैपरित् तेरोऩ् मैन्द ऩिरुन्दवत् तुळक्किल् कुन्ऱम्
निऩ्ऩैवरि दायऱ् कोत्त नॆऱियॆला निऩैन्दु शॊन्ऩाळ् 1193

अन्तकऩुम्–अनघ के; इळैय कोवुम्–और लघुराज के; अन्ऱु–उस दिन; अवण्–वहाँ; उऱैन्त पिन्ऱै–ठहरने के बाद; विऩै अऱु–कर्ममुक्त; नोऩ्पिऩाळुम्–तपस्विनी ने भी; मॆय्मैयिऩ् नोक्कि–यथार्थ रूप से देखकर; वॆय्य–गरम; तुऩै परि–शीघ्रगामी अश्वों के; तेरोऩ्–रथ पर जानेवाले (सूर्य) का; मैन्तऩ्–पुत्र, सुग्रीव; इरुन्त–जहाँ रहा; अ तुळक्कु इल्–उस अचल; कुन्ऱम्–पर्वत के; निऩैवु अरितु आयऱ्कु–मन से जानने में कठिन; ऒत्त–जो रहा; नॆऱि ऎलाम्–मार्ग सभी; निऩैन्तु चॊन्ऩाळ्–स्मरण करके बताया। ११९३

अनघ श्रीराम और उनके छोटे भाई लक्ष्मण उस दिन वहीं ठहरे। बाद कर्मभंजक तपस्विनी ने सच्चे भाव से श्रीराम और लक्ष्मण से शीघ्रगामी अश्वों के जुते रथ पर सवार दीप्तियुत सूर्य के पुत्र, सुग्रीव के वासस्थान के पर्वत के मार्ग बताए। वे इतने जटिल थे कि मन में धारण करना भी कठिन था। पर उन्होंने अपनी स्मृति से उस अचल ऋष्यमूक पर्वत को जाने के सारे मार्ग ठीक-ठीक बता दिये। ११९३

वीट्टिऩुक् कमैव दात· मॆय्न्नॆऱि वॆळियिऱ् ऱाहक्
काट्टुऱु मऱिञ् ञॆऩ्ऩ वऩ्ऩवळ् कळऱिऱ् ऱॆल्लाम्
केट्टऩ ऩॆऩ्ऩव मऩ्ऩो केळ्वियाऱ् चॆविहण् मुऱ्ऱुम्
तोट्टव रुणर्वि ऩुण्णु ममिऴ्दत्तिऩ् शुवैयाय् निऩ्ऱाऩ् 1194

केळ्वियाल्–उपदेश-श्रवण द्वारा; चेविकळ्–कर्ण (जिनके); मुऱ्ऱुम्–पूर्ण रूप से; तोट्टवर्–विद्ध हुए (भरे हुए) हैं; उणर्विऩ्–(वे ज्ञानी) अपनी अनुभूति द्वारा; उण्णुम्–(जिसको) भोगते हैं; अमुतत्तिऩ्–उस अमृत (रूपी) ज्ञान की; चुवैयाय् निऩ्ऱाऩ्–जो रुचि के रूप में स्थित हैं, उन (श्रीराम ने); वीट्टिऩुक्कु अमैवतु आत–मोक्ष के; मॆय् नॆऱि वॆळि–सच्चे मार्ग को; इऱ्ऱु आक–यही है, ऐसा; काट्टुऱुम्–दरसानेवाले; अऱिञर् ऎऩ्ऩ–ज्ञानियों (गुरुओं) के समान; अऩ्ऩवळ्–उन्होंने; कळऱिऱ्ऱु ऎल्लाम्–जो कहा, वह सब; केट्टऩऩ्–ध्यान देकर सुना; ऎऩ्प–ऐसा बड़े लोग कहते हैं। ११९४

श्रीराम कौन थे और उन्होंने किस विधि शबरी का मार्ग-दर्शन सुना? श्रेष्ठ उपदेशों से जिनके कर्ण भर गये थे, उनकी अनुभूति के लक्ष्य हैं वे। व उन ज्ञानियों से भुगते हुए ज्ञान रूपी अमृत के स्वाद थे। वे विनय के साथ ऐसे सुनते रहे, मानो शबरी कोई ज्ञानी गुरु हों, जो मोक्ष का मार्ग साफ़-साफ़ बता रहे हों। कवि कहते हैं कि ऐसा बड़े लोगों का कहना है! ११९४

पिऩ्ऩव ळुळन्दु पॆऱ्ऱ योहत्तिऩ् पॆऱ्ऱियाले
तऩ्ऩुड ऱुऱन्दु ताऩत् तऩिमैयिऩ् वीडु शार्न्दाळ्

अन्ऩदु कण्ड वीर रदिशय मळविन् रॅय्दिप्
पॉन्ऩडिक् कळलुह ळार्प्पप् पुहन्ऱमा नॅऱियिऩ् पोऩार् 1195

पिन्–उसके बाद; अवळ्–शवरी; उळन्तु पॅऱ्ऱ–परिश्रम से प्राप्त; योकत्तिन् पॅऱ्ऱियाले–योग के फलस्वरूप; तन् उटल्–अपना शरीर; तुऱन्तु–त्यागकर; अ तत्तिमैयिन्–उस अद्वितीय; वीटु–मुक्तिपद को; चार्न्ताळ्–गयीं; अन्ऩतु कण्ट–उसको देखकर; वीरर्–(श्रीराम और लक्ष्मण) वीरों ने; अळवु इन्ऱु–अपार; अतिचयम् ॲय्ति–विस्मय पाकर; पॉन् अटि–सुन्दर चरणों की; कळल्कळ् आर्प्प–पायलों को बजने देते हुए; पुकन्ऱ–शवरी-कथित; मा नॅऱियिल्–बड़े मार्ग पर; पोऩार्–गये। ११९५

यह कहने के बाद शबरी ने कठिन परिश्रम द्वारा प्राप्त योगशक्ति के बल से अपना शरीर छोड़ दिया। वे मोक्षपद को प्राप्त हो गयीं। श्रीराम और लक्ष्मण को यह देखकर अपार विस्मय हुआ। फिर वे अपने सुन्दर चरणों की पायलों को बजने देते हुए उस दुरूह और विकट मार्ग पर जाने लगे, जिसका सम्यक् वर्णन शबरी ने किया था। ११९५

तण्णॅनुङ् गानुङ् गुन्ऱु नदिहळुन् दविरप् पोऩार्
मण्णिडै वैह ऱोरुम् वरम्बिला दाडु माक्कळ्
कण्णिय विऩैह ळॅन्नुङ् गट्टळल् कळिद लाले
पुण्णिय मुरुविऱ् ऱन्ऩ पम्बैयाम् पॉय्है पुक्कार् 1196

तण् ॲन्नुम्–शीतल; कानुम् कुन्ऱुम्–वनों और पर्वतों को और; नतिकळुम्–नदियों को; तविर–पार करते हुए; पोऩार्–जो गये; मण् इटै–(वे) भूमि पर; वरम्पु इलातु–अपार वनकर; वैकल् तोऱुम्–दिने-दिने; आटुम् माक्कळ्–स्नान करनेवाले लोगों ने; कण्णिय–जान-बूझकर जो किये; विऩैकळ् ॲन्नुम्–वे कर्म रूपी; कट्टळल्–अग्निपुंज; कळितलाले–दूर हो जाते हैं, इसलिए; पुण्णियम् उरुविऱ्ऱु अन्ऩ–पुण्यस्वरूप आया जैसे; पम्पै आम्–पंपा नाम के; पॉय्कै–सर पर; पुक्कार्–पहुँचे। ११९६

वे अनेक शीतल वनों, पर्वतों और नदियों को पार कर जाते रहे और पंपासर के तीर पर आ गये। उस पंपासर में दिने-दिने असंख्य लोग आकर स्नान करते और अपने पापों को निवार देते थे। उनके पापों का अग्निपुंज वहाँ मिट जाता था। इसलिए वह सर मूर्तपुण्य के समान लगा। ११९६

॥ अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

विज्ञप्ति

विश्व-वाङ्मय से निस्रित अगणित भाषाई धारा।
पहन नागरी-पट सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा॥

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थ:—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६४ मूल्य ६०.००
२ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत १५वीं शती) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०.००
३ ,, —महाभारत-अेळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू० ६०.००
४ बँगला— कृत्तिवास रामायण (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दर)—१५वीं शती। हिन्दी पद्यानुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण पृ० ६२४ मू० २५.००
५ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० १५.००
६ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०.००
७ ,, ललद्यद—(नागरी) हिन्दी गद्य संस्कृत पद्यानु० पृ० १२० ,, १०.००
८ राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल-पदम भगत कृत। पृ० ३०० मू० १५.००
९ तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवल्लुवर कृत। २००० वर्ष से अधिक प्राचीन; नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०.००
१० ,, कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मूल्य ४०.००
११ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराण-अभिनव पम्प विरचित जैन-सम्प्रदाय रामचरित्र (११वीं शती) पृ० ६९० मू० ४०.००
१२ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मू० २०.००
१३ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०.००
१४ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ६०.००
१५ अरबी— जादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) प्रामाणिक हृदीस प्र० खण्ड पृ० ३३६ मू० १२.००
१६ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषदों की व्याख्या) हिन्दी में पृ० २८० मू० २०.००
१७ उर्दू— शरीफ़ज़ादः (मिर्जा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मू० ८.००
१८ गुरमुखी—श्री गुरुग्रन्थ साहिब पहली सैंची पृ० ९६८ मू० ४०.००
१९ ,, ,, ,, दूसरी सैंची पृ० ९९२ मूल्य ५०.००
२० ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाजः दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० ८.००
२१ ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि। मूल्य ४.००
२२ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ठ ४१५ मू० २०.००

२३ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
२४ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
२५ ओड़िआ—बैदेहीश-बिळास उपेन्द्रभञ्ज (१८वीं शती) पृ० १००० ,, ६०·००
२६ ,, तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िआ लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िआ गद्य-पद्य अनुवाद। पृ०सं० १४६४ मू० ६०.००

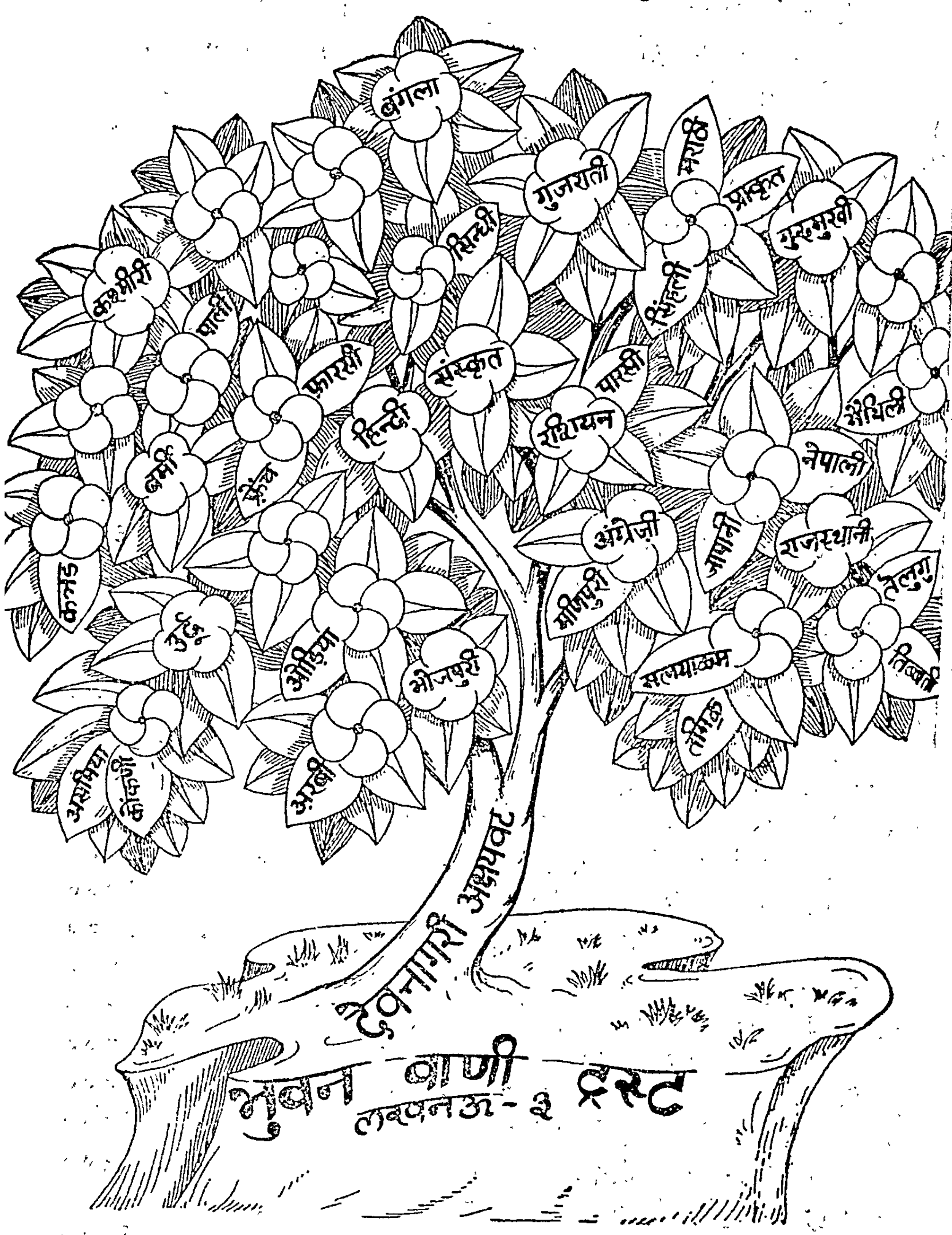
प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

२७ क़ुर्आन शरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में पृ० ५२० मू० २०.००
२८ ,, ,, तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४०.००
२९ ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मू० २०.००
३० ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मू० १०.००
३१ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १०·००

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे अन्य ग्रन्थ :—

	अनुमानित पृष्ठ
१ तमिळ— कम्बरामायण अयोध्या से लंकाकाण्ड	४०००
२ गुरमुखी—श्री गुरूग्रन्थ साहिब ३,४ सैंची	२०००
३ गुजराती—प्रेमानन्द रसामृत	६००
४ उर्दू— गुज़श्तः लखनऊ (शरर)	३५०
५ तेलुगु— पोतन्नकृत भागवतमु (१३वीं शती)	२०००
६ ओड़िआ—जगमोहन रामायण बलरामदास कृत	१०००
७ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड २-३	६००
८ ,, मुल्ला मसीही रामायण (जहाँगीर काल)	५००
९ अरबी—बुख़ारी शरीफ़ (ल.कि.घ.)	३०००
१० " क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.)	३००
११ ,, क़ुर्आन शरीफ़ तफ़्सीर माजिदी (ल०कि०घ०)	६०००
१२ मराठी—श्रीहरि-विजय (श्रीधर कृत)	१२००
१३ ,, श्री संत एकनाथ भावार्थ रामायण	३०००
१४ कोकणी—ख्रीस्त पुराण	५००
१५ कन्नड—तोरवे रामायण (१६वीं शती)	९००
१६ बँगला—कृत्तिवास रामायण उत्तरकाण्ड	५००
१७ हिब्रू— बाइबिल ओल्ड टेस्टामेण्ट	२०००
१८ ग्रीक— " निउ टेस्टामेण्ट	१०००
१९ बाइबिल-सार (सालोमन के नीति-वचन)	१००
२० संस्कृत—(तुलसी) रामचरितमानस का मूलपाठ सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद	१०००
२१ परिवर्द्धित नागरी उर्दू-हिन्दी कोश	१२००

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'



प्रतिष्ठाता— पद्मश्री नन्दकुमार अवस्थी